॥ महाभारतदर्पणः ॥

॥ शान्तिपर्वदानधर्मः ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

नमस्कार नारायणहि करि नरोत्तमहि नौमि । बन्दि गिरा व्यासहि रचत भारत भाषा सौमि ॥
सीताराम सुस्वामिप्रभु व्यापक अन्तर आमि। सेवक हनुमत सहित हित सन्तत तिन्हें नमामि ॥
पारथके स्वारथ भए सारथि परम अनूप। ते स्वारथ रचि देहि यह भारत भाषा रूप ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

बन्दौ कपिवरबीर राम परम प्रिय पारषद । मङ्गल मूरति धीर भारत स्वस्थ ध्वजस्थ वर ॥
मुनिरि उच्छिलनि अच्छ उदधि उलङ्घन समयको । भारत समुद प्रतच्छ भाषा करि चाहत तस्यो ।
दान व्याज प्रभु जौन लै त्रिलोक इन्द्रहि दयो । सो प्रभु महिमाभौन दानधर्म पूरण करौ ॥

॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

मोक्ष सुधर्म परोक्ष तेहि कर्णि युधिष्ठिर भूप ।भीषमसों बूझत भए दानधर्म को रूप ॥

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ भरे शल्यनसों सब गात । शरशय्यापर परे बिभात ॥ बिस्तर कहत तत्व सब धर्म । कथा पुरातन सहित समर्म ॥ लखि तो अम साहस अधिकार । बूझत बनत न किए विचार ॥ लहि तो बचन सुधाकी धार । मन नहि गहत तृप्तताधार ॥ ताते बूझन चाहत और । कहि नहि सकत देखि श्रम ठौर ॥ दुरयोधन को मतिमग लागि । पाप कर्म कीन्हे भ्रमत्यागि ॥ जाते यह अघ कुकरम जात । छूटै कहो तौन विधि तात ॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥ धरम शील अति पावन आप । नाहक निज यह मानत पाप ॥ सूक्ष्मगति कर मन की होति । देश काल विधि कला तमोति ॥ अब कहत पूरब इतिहास । सुनो तौन भूपति मतिरास ॥ रही गौतमी नामा एक । वृद्ध ब्राह्मणी गहे विवेक ॥जाकी रह्यो पुत्र सुकुमार । डँस्यो ताहि पन्नग विष गार । मयो तौन तब अरजुन नाम । लुब्धक अहिहि पकरि बधकाम ॥ पाशबद्ध विप्रिणि यह ल्याय । एहि विधि कहत भयो समुझाय ॥ तो सुत हा यह अधम अयान । है बध योग मत्र न हि ध्यान ॥ शासन देउ बधो मै याहि । बधब उचित अपकरमी ताहि ॥ * * * *

3995

॥ * ॥ ९।७। ॥ * ॥

दा०भ० यह सुनि बोली गौतमी याकह बधव अयोग। प्राप्त होति भवितव्यता पूर्व कर्मको भोग ॥
दुःखार्णव मधि परि किते बूडत तरत अनेक। किते लहत सुख दुख नही पूरब करम बिबेक ॥
याको मारब उचित नहि सुत जेहि मृतक न होइ। मृतक करै एहि मृतक गति लहे नरकगति सोइ ॥

॥ * ॥ व्याधउवाच ॥ * ॥

बधि शत्रुहि मेटत दुखहि सामरथो मतिमान। जैसे अरिकहँ पाइ बस बधबे उचित न आन ॥

॥ * ॥ गौतम्युवाच ॥ * ॥

कही गौतमी एहि बधे मिटिहि न मेरो शोक। विप्रहि निरदय प्रकृति को कियो चाहिये रोक ॥

॥ * ॥ व्याधउवाच ॥ * ॥

लभ्य नही मेटें मिटत औरसि लभ्य को त्याग। लहि शत्रुहि बध किए नहि हकत सबकी राह ॥

॥ * ॥ गौतम्युवाच ॥ * ॥

बधे अहिहि का लाभ अब बधे बिना का हानि। मोच्छ सुफल चाहत सुबुधि नित्य धर्म अनुमानि ॥

॥ * ॥ व्याधउवाच ॥ * ॥

दुःख एकके बधेऊँ रक्षित होहि अनेक। तौ बकृतनको रक्षिये एकहि मारि सटेक ॥
दुष्ट एकके जिए औं मारे परै अनेक। तौ तेहि खलको बध करब सतधा उचित बिबेक ॥

॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥

व्याधाके ए बचन सुनि बोलो उरग बिचारि। और काहि डँसि बधत तुम लखे मोहि निरधारि ॥
ह्वैके प्रेरित मृत्युते डँस्यो याहि हम हेरि। दोष न मम कछु मृत्युको मानो दोष निबेरि ॥

॥ * ॥ व्याधउवाच ॥ * ॥

कारय कीन्हे सर्प तुम तुम दोषी मम जान। नहि प्रेरक कह गुनत हम तुम हौ वध्य न आन ॥

॥ * ॥ सर्पउवाच ॥ * ॥

आयुध सम लगि हम किए कारय कारण सोत। आयुधको कछु दोष नहि बाहक दोषी होत ॥

॥ * ॥ व्याधउवाच ॥ * ॥

आसि वध्य तू व्याल हा व्यर्थ बनावत बैन। अपकारी अपकारको बिसुन तोहि अब चैन ॥

॥ * ॥ सर्पउवाच ॥ * ॥

व्यामकतैं प्रेरित किए कारय कछू न दोष। करता मानौ ताहि मति मोपर मानौ दोष ॥

॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥

इतनेमें आई तहा मृत्यु महादुखदानि। व्याधसों सुभाषत भई कर्म काल हत ठानि ॥

॥ * ॥ मृत्युरुवाच ॥ * ॥

प्रेरितमै हम कालतें प्रेरित कीन्हे याहि। नहि मम दोष न सर्पके काल बधत सब याहि॥
यथा वायु वस घन चरत तथा कालवश व्याध। चरत सर्प हम रोग सब कर्म कराल अबाध॥
सात्विक राजस तामस पूर्व कर्म अनुसार। करत अन्त अन्तक अवधि इहां न औरु विचार॥
स्थावर जङ्गम जग जिते कालात्मक ते सर्व। यथा प्रवृत्ति तिमि निवृत्तिहै पाइ कर्मगति पर्व॥

॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥

तदनु व्याधसों कहत भो बंधन पीड़ित सर्प। सुने मृत्युके वचन मम काटो बन्धन सर्प॥

॥ * ॥ व्याधउवाच ॥ * ॥

हम नहि मानत एक यह तुम कीन्हे अपराध। दोषी मानत तोहि हम करता पापअगाध॥

॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥

इतनेमें तह आइके काल कियो सुनु व्याध। तुम पन्नग अरु मृत्युको गुणो न कछु अपराध॥
पूर्वकर्म अनुसारको फल जो मन्द अमन्द। बिरचि देत विधि तौन हम प्रापित करत अनन्द।
हेतु मातको कर्म है मरत कर्म अनुसार। दोष न काहूको कछू विधिवत किए विचार॥

॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥

काल वचन सुनि गौतमी कहो व्याधसों बैन। दोष न काहूको कछू तजु सर्पहि गज चैन॥
पूर्वकर्मफल हम लह्यो दुसह दुःख सुतशोक। एहि बय एहि विधि सुत मर्यो नहीं कर्मको रोक॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

सुनि विप्रिणि के बैन व्याधा छोड्यो पन्नगहि। काल गयो निज ऐन गई मृत्यु पन्नग गयो॥
यहि विधि करो विचार दोष न काहूको कछू। तजो शोक सखार पावत आनो अपुन कहू।

स्वस्तिश्रीमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणसिंहाज्ञानुगामिनाश्रीबन्दीजनकाशीवासिगोकुल
नाथपार्श्वचरात्मजेन गोपीनाथेन कविना हिन्दभाषायांमहाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणि दानधर्म
प्रथमोऽध्यायः॥ *

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

महाप्राज्ञ हे पितामह सर्वशास्त्र विद दक्ष। तुमसों सुने अनेक विधि उपाख्यानके कक्ष॥
धर्मसाधिके को गृही मृत्युहि जीत्यो आप। सो अब कहिये कुल कमल भयो नृपप इस यच॥

॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥

अब पूर्व इतिहास हम कहत सुनो हे भूप। मृत्युहि जीत्यो जिमि गृही साधि सुधर्म अनूप॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

पूर्व प्रजापति मनु शुभ करमो। तासु सुवन इक्ष्वाकु सुधरमो॥ शत सुत भे इक्ष्वाकु नृपतिके।

शा॰प॰ रहे दशाश्व दशम अति यतिके ॥ तासु सुवन मदिराश्व सुकामी ।तासु सुवन द्युतिमान सुनामी ॥
दा॰ध॰ सुत द्युतिमान भूपको राजा । भयो सुवीर सु सैन समाजा ॥ तासु सुवन दु[illegible] भू भरता । तासुत दुर्योधन मखकरता ॥ रत्न शस्य धन जाके पुरमे । बरषे इन्द्र मुदित व्है उरमे । तेहि नर्मदा नदी पति कीन्ही । शुचि सुरूप रमि आनद दीन्हो ॥ शुभ सुदर्शना तनया ताके । उतपति भई आगण गुण जाके ॥ तैसी रूपवती अति दीपति । और न प्रगट भई सुनु भूपति ॥ तरुण रूप अति ताको देखी । मोहे अग्निनि अपूरब लेखो ॥ मनमे गुण्यो कौन विधि कीजे । याहि तिया करि आनद लीजे ॥ गहि द्विजरूप मागिये याही । नृपति न देइ काहुँ को ताही ॥ इमि गुणि मोह दहत भो मन मे । नृप मख करत रहो द्विजगणमे ॥ शान्तरूप तहँ व्है ने पावक । यथा अप्राण परो करि सावक ॥ सो लखि भूप दुखित अति व्है के । बोलत भए द्विजन मन ज्वै के ॥ पावक क्षुब्ध भयो केहि कारण । सो कहि करिये शोच निवारण ॥ *◆*◆*◆*◆*◆*◆*◆*◆*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

भूमिपालको वचन सुनि अग्निहि ध्यायो विप्र । तिन कह पावक प्रगट भे उग्ररूप गहि छिप्र ॥
विप्रणसौं पावक कह्यो हम तिय हित नज गौनि। चाहत हैं नृपकन्यकहि कहि दिवाइये तौनि

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

सो सुनि विप्र गोइ नहि राखे । यह बिरतान्त भूप सो भाखे ॥ सुनि नृप कहे औसि मुहलेहैं। निज तनया पावककहँ देहैं ॥ हम इतनो पावक में मागत । मम ढिग रहैं परम हित लागत ॥ यह तथास्तु इमि पावक बोले । सुनि भूपति सुख लहे अतोलें ॥ निज तनयाकह भूषित कीन्हे । वेद विहित पावककँह दीन्हे ॥ तेहि करि ग्रहण रमत भे पावक । चाहे पुत्र सुबुधि शुचि भावक ॥ कछु दिन मे भो सुत सुभरी मे। नाम सुदरशन सुखद शरीमे ॥ क्रमसौं भयो युवा जब आहिर । विद्यावान वेदविद माहिर ॥ हो नृप ओघवान शुभ ताको । ओघवती तनया हो ताको ॥ ओघवान सो सुता सयानी । दई ताहि कपिके सहुबानी ॥ ओघवती कह पाइ सुदरशन । व्है प्रसन्न करि आनद करषन ॥ कुरु क्षेत्रमे बसि छवि छाए । सजम नियम सुनीति बढाए ॥ मृत्युहि जीतनके पन करिकै । लगे अतिथि पूजन व्रतधरिकै ॥ ओघवती कहँ शासन दीन्हे । पूजहु सद अतिथि हित चीन्हे ॥ अतिथ करै अनुशासन जोई । बिना विचार कियेहु तुव सोई ॥ आत्म दान सौं तोषण कीजो । मति सकोच शोचकहु लीजो ॥ *◆*◆*◆*◆*◆*◆*◆*◆

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

रहै इहां हम गेह के रहै न काहु काज ॥ तुम अतिथिन तोषेउ सदा जो तोषे जेहि काज ॥
अतिथि पूजिबे ते न कछु अधिक गृहीकोधर्म । ताते जानेउ अतिथिको पूजन महा सु कर्म ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

अनुशासन धरि शीश ओघवती पतिसों कह्यो। देत सु आज्ञा ईश सो व्रत पालब सबन में॥

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

तहां तिनकहँ अतिथि पूजत बहुत दिन गे तात। काल आयो तहां बनि कै विप्रवेष बिभात॥ गए हे बनमें सुदर्शन समिध हित तेहि काल। कह्यो ताको तियासों तब विप्र रूपी काल॥ गृहीको शुभ धर्म औ तुम दोऊ जानत बाल। करो तौ सतकार मम हम अतिथि आए हाल॥ बचन यह सुनि राजपुत्री परम आनँद पाय। पाद्य अर्घाचमन दै शुभ ठौरपँह बैठाय॥ कही आज्ञा करऊ सो हम करब करब न देर। कह्यो ब्राह्मण देऊ रति रमि सविधि करि मनमेर॥ शोचि आज्ञा सुव तकी तब राजपुत्री तौनि। रञ्जि लज्जित भई गृहमधि सहित द्विज गजगौनि॥ तिन घस तेहि पाद खचि खीकार लाग्यो रङ्ग। अङ्ग करि सउमङ्ग ठान्यो दरोते रति ठङ्ग॥ विप्र नहि रति कियो ताको गह्यो कर सुख पाय। इतै मैं तेहि भयो टेरत सुपति द्वारे आय॥ विप्र तब कर छोडि दीन्हो तज लज्जित नारी। जानि निज हि उच्छिष्ट बोली नहीं सुधरम धारि॥ फिरि सुदर्शन भयो टेरत विप्र तब कढि आय। अग्नि सुतसों कहत भो हम विप्र अतिथि सचाय॥ भए मागत आइ हम तुव तियातें रतिदान। देन उत्सुक भई वह तब किए तुम आव्हान॥ भाषि इमि गहि दंड मुदगर चलो मारण ताहि। भए हीन प्रतिज्ञ तुम बधयोग मुदगर बाहि॥ तासु दरशन कह्यो सुरति यथेष्ट कीजै तात। अतिथिपूजन परम धरम गृहस्थको अवदात॥ प्राण दारा सुधन जो मम गेहमध्य अधार। देत सो सब अतिथिकँह नहि मोहि और बिचार॥ वायु महि अरु तेज नभ बुध बुद्धि मन सुर काल॥ सुकृत दुष्कृत रहत देखत पुरुषको सबकाल॥ जौन मिथ्या बचन भाषत होंहि हम दृढनेम। करहु रक्षण सुमन मम तौ दास जानि सप्रेम॥ भीष्मउवाच॥ इतेमें नभगिरा तेहिचर भई सो सुनि लोऊ। अतिथिपूजक सत्य दृढव्रत है सुदरशन एऊ। सुनत ही नभगिरा बोलो काल द्विज हरषाय। हम परीक्षा किए इमि तुवधर्मको सुखदाय॥ सविधि जीते मृत्युकहँ तुम अतिथि पूजि सनेम। करै गो तुव सरण सो गंर लहै गो निति खेम॥ लहोगे एहि देहतें तुम परम उत्तम लोक। जहा सुकृती बसत जेहि थल शुभं सनातन ओक॥ तिया तो पतिव्रता यह गुणवती साधक धर्म। अर्धतनतें आइ तुव सङ्ग बसिहि पावनि पर्म॥ अर्धतनतें होइगी इत नदी लहि निज नाम। करिहि मज्जन तासुमधि सो लहि हि सुधरम आम॥ इते मे तहँ आइ बासव किए पूजित ताहि। अतिथि पूजन सुकृत पूरब परम सुधरम चाहि॥ इमि सुदर्शन गृही जीत्यो मृत्युकहँ हे तात। अतिथिपूजन नेम दृढव्रत पालि पावन गात॥ गृहीको है परम सुधरम अतिथि

शां॰प॰ पूजन रूप । गृहीकहँ नहि अतिथितें है औरदेव अनूप ॥ यार पाय सु अतिथि पूजत नहीं सुगृही
दा॰ध॰ जौन । पाप दै लै पुण्य ताको जात सुअतिथि तौन ॥*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

उपाख्यान उत्तम महा पावन धन्य यशस्य । पुण्य पुष्ट धन धान्यप्रद मङ्गल मञ्जु रहस्य ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणसिंहाज्ञानुगामिना बन्दीजनकाशीवासि गोकुलनाथकवीश्वरात्मजेन गोपीनाथकविना विरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणि दान धर्मे सुदर्शनोपाख्यानोनाम द्वितीयोऽध्यायः ॥ *

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

सुनो विश्वामित्र किमि लहे श्रेष्ठ ब्राह्मण्य । सुनो चहत हैं तौन हम कहो पितामह धन्य ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥ सुनो तात सो तत्व अनूपा । भरतवंश अति पावन रूपा ॥ नृप अजमीढ प्रगट भे ताने । तासुत जन्हु अनन्त गुण जाने ॥ तासुत सिन्धुदीप भूस्वामी । तासुत बल्लाकाश्व जयकामी ॥ तासु तनय बल्लभ नयगामी । कुशिक तासु सुत अनुपम नामी ॥ तासुत गाधि भए अति भाके । भयो न पुत्र प्रसव नृप ताके ॥ तब तिय सहित बसे बनमाही ॥ तहां भई तनया सुत नाही ॥ सत्यवती तेहि भूपति भाखे । पूरित प्रेम पुत्र सम राखे ॥ जब वह सुता बालपन त्याग्यो । तब ऋचीक मुनि ताकहँ माग्यो । नृप तेहि सुता देन मुद पाने । सहस श्याम श्रुति बाजी माने ॥ देहो सहस श्याम श्रुति बाजी । तौ हम देब सुता छबि साजी ॥ सुनि ऋचीक मुनि आनद लहि कै । कहे वरुणतें सुजुगुति गहि कै ॥ सहस श्याम श्रुति बाजी नीके । देहु हमै अति शक्यो जीके ॥ कहे वरुण जेहि थल कहि देऊ । अशर्तें तहां कहँ हय लेऊ ॥ सुमुनि कहे जल उत्तम धोरे । करो प्रगट सुरसरितें घोरे ॥ सुनत वरुण अनुकम्पा कीन्हें । सहस श्यामश्रुति प्रगटित कीन्ह ॥ तुरत भए जहँ जलतें बाहिर । अश्वतीर्थ तहँ अबतक जाहिर ॥ *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

ग्राम अश्वनी बसत जहँ सुजन सराहत जाहि । विप्र बेदविद बसत जहँ उत्तम शुभ बस चाहि ॥
सुमुनि श्यामश्रुति तुरग लै दए गाधिकहँ आय । गाधि दई मुनिकहँ सुता सत्यवती सुखदाय ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

मुनि पतिनी लहि योषित अचरज लागे करन । लहि सुख सेवा तोषि उपचार सुगको करे ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

सो मुनि सत्यवतीकी माता । कही सुतातें वचन विख्याता ॥ कहि सुवचन मुनिकहँ अब राधो । मोरेऊ पुत्र होइ सो साधो ॥ सत्यवती निजपति सन भाषी । सो जननी शुभ सुत अभि

भाषी ॥ तुव प्रसाद सुत चाहति सांई । हम हमारि जननी शुभ ठांई ॥ सो सुनि मुनि शुचि हिए बसाए। होय पाचने सुचरु चढाए॥कही तियाते तुम दोउ नारी । लहि रितुदिन अवस्नान सुधारी ॥ भेटि उदुम्बर तरुकहँ सुखनैं । निज निज रुरु खावउ शुचि रहतैं ॥ मिलिउदुम्बर हि आनद पाई । सत्यवती मुनिवर पँह आई ॥ उभय पाच चरु मुनि तेहि दीन्हे। तिनको भेद प्रगट यह कीन्हे॥ यह चरु चारु तिया तुम खाएऊ । यह चरु निज जननी हि खवाएऊ॥ लै युग चरु नृप सुता सयानी । गई जननिपहँ आनद सानी ॥ चरु दै दई भेद कहि सोई । चरु विभाग मुनि भाषे जोई ॥ सुनि नृपतिया सुखी मनमाही । बिनु कछु भेद उभय चरु नाही ॥इमि बिचारि ताको चरु लीन्हो । निजचरु निजतनयाकहँ दीन्हो ॥ भोरि बूझाइ बचन बड कहि कै। बदलि लई चरु इहविधि चहि कै ॥ *⬬*⬬*⬬*⬬*⬬*⬬*⬬*⬬*⬬*⬬*⬬*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

करि निस्नानव उभय चरु भोजन करि ते तोय। गर्हि सुगर्भ राजित भई लहि शोभा कमनीय॥
सत्यवतीको गरभ लखि मुनि बोले अनुमानि। करी बिपर्यय सु चरुको मोहि परो यह आनि ॥
ब्रह्म मन्त्रतें एक चरु मन्त्रि दए हम तोहि । क्षात्रमंत्रतें मंत्रि कै दए ताहि विधि ओहि ॥
उन खाई ता चरु बदलि तुम खाई चरु तासु। क्षत्री तोसुत होइ गो तासु बिप्र तपरासु॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

सुनि यह अप्रिय बैन सत्यवती कम्पित भई । पाणि योरि भरि नैन कहत भई अति विनयकरि ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

मोसुत ऐसो होइ न सांई।तपकृत होइ तुम्हारी नांई॥ चरु प्रभाव तुम निरमे जैसो। मम पउत्र चह प्रगटै तैसो॥सुनि तथास्तु बोले मुनिमान॥तासुत भे यमदग्नि सुज्ञानि॥ भए गाधिके सुवन सुखारी। विश्वामित्र परम तपचारी ॥ इमि ब्रह्मत्व लहे भूभरता। विश्वामित्र परम तप करता ॥ तप हत भए बहुत सुत ताके। तेज पुञ्ज अति परम प्रभाके ॥ देवरात मधुछन्द कहाए । बभ्रु सुकुन्त अचीण कहाए ॥ पून कात्यायन बाटुलि नामी। याज्ञवल्क्य गालव तपकामी ॥ जंघ उलूक यमदूत आनो। अरु सैन्धवायन ऋषि मानो ॥ सालङ्कायन बज्र बिशारद। कुर्चमुखो लोला चित नारद॥ बभ्रुग्रीव मुनि मुदक मुनीशा॥ चक्रक आदि सुनो अवनीशा॥ चक्रक मारुतव्यां मयायन। नालि बातयोर्धा श्यामायन ॥ सुत गार्ग्य यावलि सुरायन । पौरवनन्त कपिल कपिलामन ॥ कोई ताड्यायन नयतन्तु । चरकाख्य ऋषि औपगहन सन्तु ॥ सूति विभूति अरालि बखाने । नाचिक नकनख अपिन बखाने ॥ चारमख्य चाम्पेय सिरीषि । उर्जय अग्नोरुह शुभऋषि ॥ *⬬*⬬*⬬*⬬*⬬

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

कोई भे अहजाकरि मुनि निरुदापक्षो नाम। सुमुनि बाभ्रवायनि कहे हिरण्याह तपधाम॥

भा०प० सेवामेंप्रति सुमुनि अरु सुमुनि नारदी चाल । विश्वामित्र मुनीमके गुन इते अभिराम ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

अब [illegible] कंने चीर होइ सुनिके भूप [illegible] । [illegible] तासु सब चीर देन तुम्हें अनुसार ज्ञ ॥

[illegible]

[illegible] बिचारे [illegible] इश्वरी [illegible] आमिर्वाद ए [illegible]

विचारसिंधोर्द्वितीयोऽध्यायः ॥ *—*—*—*—*—*—*—*—*—*

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

[illegible] कहत [illegible] अर्थ [illegible] । [illegible] कहो तासु [illegible] ॥

॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥

अब पूर्व इतिहास इक कहत सुनो नृप तौन । [illegible] सुनिये भई [illegible] ॥

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

[illegible] कहि मूर्व । [illegible] ॥

[illegible] नाम लाथ तीरथ नाहि । [illegible] ॥

[illegible] सुभक भयो [illegible] । [illegible] नृप [illegible] ॥

यह भांति [illegible] ताके कहे [illegible] भूमि । [illegible] ॥

[illegible] इक [illegible] । [illegible] ॥

[illegible] भक्ति पूरन प्रेम [illegible] । [illegible] ॥

[illegible] तुमकहं कौन । [illegible] ॥

[illegible] । सुनि जीवो [illegible] ॥

[illegible] सुनि [illegible] । [illegible] ॥

[illegible] तुमकहं एक । [illegible] ॥

[illegible] । [illegible] ॥

[illegible] । [illegible] ॥

[illegible] । [illegible] ॥

[illegible] । [illegible] ॥

[illegible] वचन सुनिके आनि भक्ति [illegible] । [illegible] ॥

[illegible] । [illegible] ॥

[illegible] तब किए [illegible] । [illegible] ॥

[illegible] । [illegible] ॥

प्रभु प्रश्नोत्तर [illegible] गुन स्तुति मन मूरत मोर । [illegible] उद्योगको किये [illegible]॥

॥ * ॥ [illegible] ॥ * ॥

जब पूर्व इतिहास इम कहन सुनो नृप तोन । [illegible] विधिते पूछे [illegible]॥

॥ * ॥ [illegible] ॥ * ॥

कहो पितामह [illegible] दैव [illegible] । [illegible] उद्योगको [illegible] कारज [illegible]॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

[illegible] ॥ * ॥ बिन [illegible] बीज [illegible] । बिना बीज नहि पावे महिमाही ॥ [illegible] बीज [illegible] ॥ बीज [illegible] जैसे । [illegible] पावत [illegible] ॥ [illegible] । तिमि उद्योग दैव बिनु जानो ॥ [illegible] करत [illegible] प्रारब्ध [illegible] ॥ [illegible] बीज संयोग भए तें । प्रगटि [illegible] ॥ [illegible] कर्मफल भोगत । [illegible] प्रारब्ध [illegible] संयोगत ॥ शुभ सुकर्म करिके सुख पावत । पाप [illegible] ॥ [illegible] नहि कबहू । सुकृत सुकर्म सुखद इत [illegible] ॥ [illegible] । [illegible] ॥ है [illegible] नृप सुमिरो । [illegible] ॥ [illegible] शुभ दोनें । होत कर्मकरि [illegible] हीं तें ॥ आपु [illegible] । प्रभु [illegible] आपु [illegible] है ॥ [illegible] पातकके कीन्हे । पातक न [illegible] ॥ [illegible] कर्मते गिरिके । पुण्य पाइ दिव [illegible] फिरिके ॥ [illegible] करि [illegible] । जो [illegible] द्विज [illegible] ते ॥ * * * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

[illegible] मिथ्या [illegible] । [illegible] नहि करि [illegible] ॥

[illegible] मिथ्या [illegible] । [illegible] पाइ [illegible] ॥

[illegible] । [illegible] प्रारब्ध नृप [illegible] पावकको [illegible] ॥

[illegible] । आपु [illegible] जिमि [illegible] न सकत बचाय ॥

[illegible] बचाय । [illegible] प्रारब्ध तिमि पाय सुकर्म सहाय ॥

[illegible] । [illegible] प्रारब्धो मिटिजात ॥

[illegible] । [illegible] ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

[illegible] ॥

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥

जिते चाहत शुभ कर्म तिनके फल कहि ये सबविधि। तुम ज्ञाता सबधर्म ज्ञानमान हे पितामह ॥

॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥

तुम बूझत जो सर्व सो हम तुमते कहत सब। सुनो भीम नृप धर्म सरधावान सुजान शुचि ॥

॥ * ॥ दोहाछन्द ॥ * ॥

करत जेहि विधि कर्म्म नर तिमि लहत ताको भोग। करत मानस करम ताकहँ होत मन सँ योग ॥ करत कायक करम जो शुभ अशुभ जेहि जेहि भाँति। त्यागि तन सो करत ताको भोग तेहि तेहि भाँति॥ जहि अवस्था बाल्य यौवन आदि जेहि जो कर्म। करत नर तेहिमें भोगत कर्मकृतको मर्म ॥ ज्याह इन्द्रिय करत कर्म न कबहु ताको नाश। इन्द्रियं अरु आतमा ए ताहु साखी पाश ॥ अन्न क्षुधितहि देत ताको लेत पुण्य महान। अतिथिपूजन अहोको शुभकर्म अति सुखदान ॥ नाम मृत्यादिक सु कर्म महान फलदातार। त्यागि कुष वाणान बल गहि होत भू भरतार॥ ताल मौनते रसनाको सौभाग्य पावत भूरि। तजें आमिष पुत्र पशु धन लहत सुखसों पूरि ॥ लहत भोजन भाषेत शुचो जे करत है अंशसेन। एक बारहि खदर ते सब लहत इच्छित पैन ॥ सुहृने वारि ओर ग्रूमत लहत अक्षय लोक। देत विधिवत दान धर्मों भरत ताको ओक॥ लहत नप करि भोग आयू ब्रह्म चर्य्यहि लागि। रूप बल आरोग्यता ऐश्वर्य हिंसा त्यागि॥ मूल फल दल पर्ण अशनी लहत दिवनै धाम। अग्निहोत्रहि साधि स्वर्गी होत पूरणकाम ॥ लहत दीक्षा तीर्थमज्जन सुजत दारण मार्ग। लहत दिवतें ब्रह्मलोको गहत जिमि व्रतकर्म ॥ करत वेदाध्ययन जे ते लहत स्वर्ग आनन्द। पालि मानस धर्म विधिवत लहत स्वर्ग अमन्द ॥ बत्स जिमि बहु गौनमें निज जननिही पैं जात। तैसहि पूरब कर्म्म करतहि होत प्रापित तात ॥ पिता माता गुरु पुरोहित विप्र कार्यिज धर्म। तेइहि पूजत तृप्ति राखत होई पावक धर्म ॥ मंच दर्भा कहि अपें अरु यज्ञ बर निशुदान। मंच विप्र को होम ए अथर्ववर्ण जानो ध्यान ॥ *====*====*====*====*====*====*====

॥ * ॥ वैशम्पायन उवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

धर्मभूप सुनि भीष्मके ऐसे वचन अनूप। केरि प्रश्न जो किय सो सुनु जनमेजय भूप ॥

इतिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशीवासि रघुनाथकवीश्वरात्मज गोकुलनाथकविना कृतभाषायां महाभारतदर्पणे अनुशासनपर्वणि दानधर्म वर्णनेनाम चतुर्थोध्यायः ॥ ====*====*====*====*====*====*====*====

॥ * ॥ युधिष्ठिर उवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

वन्दनीय अरु पूज्यके जगमें महिमा भौन। वन्दत पूजत जासु केहि पावत कहिये तौन ॥

॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥

पूज्य वंद्य ब्राह्मण सदा प्रत्यक्ष परमधन आहि। जाकहँ अतिप्रिय विप्र निति हम ध्यावतहैं ताहि॥
वेद मंत्र तप साध्य जेहि लहत माक्षको पार। सुनो भूप सब जगतको द्विज करता उद्धार॥
वन्दि पूजि निति सोई जेहि करि प्रसन्न नहि प्रीतिजन ज्ञम पावत जोइ जनद्विजपद सेइव नीति॥

॥ * ॥ युधिष्ठिर उवाच ॥ * ॥

इमि द्विज महिमा जानि सुनि भे प्रसन्न हिय भूप। जे नर नहि मानत द्विजहि कहो तासु गति भूप

॥ * ॥ भीष्म उवाच ॥ * ॥

जो नहि पूजत द्विजहि नहि देत दान अपराधि। ताको आशा अफलनिति सब नर बाढति व्याधि॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

मिलहि धनी भारतके ज्ञानी। कहत विप्र सब जनकोमाता॥ सबकहँ कुशल विप्र पद सेई। विप्रवचन रक्षत मन जेई॥ अब पूर्व इतिहास सुमंगलदायक। कहत तोम सुनियो नरनायक॥ है वन मधि शृगाल अरु वानर। ते है पूरबजन्म सखा नर॥ ते मृगाल वानर तन लहिके। हैं विहरत पुरभिन वन गहिके॥ अब्बुक मृतक पाइके दिनमे। लागो खान मसान विपिनिमे॥ सो लखि वानर बोलो ऐसे। पूर्व पाप तुम कीन्हो कैसे॥ जातें मानुषको तन खाहू। कुत्सित कर्म किएकी चाहू॥ * ॥ शृगाल उवाच ॥ * ॥ हम ब्राह्मणकी महिमा सुनिके। नहि मान्यो पूज्योहित गुनिके॥ तातें कुत्सित तन पायो। भखत जोन अभक्ष्य मनायो॥ सुनु वानर विप्रहि बिनु पूजे। बिना दान दै सुवचन कूजे॥ विचरत जनम निरत मति वैसी। द्विज प्रसादबिनु दशा अनेसी॥ * ॥ भीष्म उवाच॥ * ॥ यह इतिहास सुने हम पूरब। द्विज प्रभाव विधि कहे अपूरब॥ द्विज प्रसाद सब पावन होई। द्विजमहिमा आहिर नहि जोई॥ द्विजहि दान दीन्हे अति नीको। विबुध सुलोक सुखद सुभजीको॥ पूजत देत द्विजहि जो चारय। तिहहोत ताको शुभकारय॥

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

सुखद विप्र जो नीच कहँ करत मंत्र उपदेश। होत दोष तेहि के नहीं कहो तोम मत लेश॥

॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥

जाति हीनपहँ विप्र नहि कपट करे उपदेश। उपाध्यायकहँ होतहै दोषभयानक भेश॥
यंत्र पुर्व इतिहास इक कहत सुनो नृप तोन। हैं हिमवत ढिग मुनिनको आश्रम सुषमा भौन॥
तेजपुञ्ज रवि सरिस मुनि बसत जहाँ तप धाम। रहो एक मुनिवर तहाँ कुलपति ताको नाम॥
तपकीबस्था धारि तहँ आये शूद्र मतिमान। कुल पतितें इमि कहत भो वन्दि चरन सुखदान॥
आनन प्रावन नाथ इन तुव प्रसादतें नाथ। कर्म त्याग करि शरन गहि चाहत भयो सनाथ॥

शान्ति०
दान०

॥ * ॥ कुलपतिरुवाच ॥ * ॥

शूद्र इहि उचित न तवको साधन गहि सन्यास । करौ सुश्रूषा द्विजनको जाहिते सुगति सुपास ॥

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

सुमुनिको सुनि वचन सो चलि दूरि तहँते जाय । देवताको सदन रचिकै फिरो तहँ हरषाय ॥ निराहार जितेन्द्रि रहि तहँ लगो पूजन देव । रटत सीतारामं प्रभुको नाम अनुपम भेव ॥ अतिथि आवत तहाँ तिन कहँ सुफल मूल लगाय । करत पूजन पाय लोटत सुघर सैन कराय ॥ कछुक दिन तप कियो तहँ तब आइ सुमुनि सुजान । लगो पूजन देवतहि अभिषेक करि सविधान ॥ अभिषेक लखि शिखि तीन विधि वह शूद्र शुभ दिन जानि । जोरि कर करि विनै मुनितें कह्यो आगर बानि ॥ पितृ कारय कियो चाहत सुमुनि हम पर पोस । कृपा करि करवाइहौ जे पूरि मेरो होस ॥ सुमुनि करि स्वीकार तातनै नए आयम तास । पूजि सो फल आदि दीन्हों मुनिहि हरष सुपास ॥ ज्ञान बानी कह्यो मुनि वह सुन्यो सो मन लाय । भोर करि असनान रचन किये श्राद्ध सुभाय ॥ मन्त्रो बैठत पूर्वमुख तब कियो शीघ्रा विप्र । करौ उत्तर शीरषा तब तथा कीन्हो विप्र ॥ श्राद्ध तेहि करवाइ मुनिवर सुफल भोजन पाय । विदा है निज आश्रमहि गे सुमुनि रामहि ध्याय ॥ कछू दिन तप साधिकै वह शूद्र तहँ तन त्यागि । राज कुलमें जनम लीन्हो करम के मग लागि ॥ देह तजि मुनि भो पुरोहित ताहि नृपको आय । अभिषेक ताहि सुनाय शीघ्र सुकर्म काण्ड कराय ॥ तीन बरषहि कियेतें उपदेश ऐसो होत । तीनबरषहि आपऊ नहि उपदेश सुबुधि लगोत ॥ महा तप हत सुमुनि सो पुनि कियो नर्वं निवास । तीन बरषहि कियेतें उपदेश यह फल पास ॥ *◆*◆*◆*◆*◆*◆*◆*◆*◆*◆*◆*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

तीनि बरष लौं परखिकै करै विप्र उपदेश । चौथे बरषहि नहि करै गुणि सिद्धान्त नरेश ॥

इतिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणसिंहाज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशीवासि रघुनाथकवीश्वरात्मजेन गोकुलनाथेन कविना कृतभाषायां महाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणि दानधर्मवर्णनोनाम पञ्चमोऽध्यायः॥◆◆◆◆◆◆◆◆◆◆◆◆◆◆◆◆◆◆

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ दोहा ॥ * ॥

कैसे सुपुरुषके गृहै लछमी बसति चढ़ोत । कहो तात हे पितामह अति प्रिय वाकी बोत ॥

॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥

भूप पूर्व विरतान्त इत कहत तीन मुनि जेऊ । निकट कृष्णके रुक्मिनी में हम बूझे एऊ ॥
कैसे सुपुरुषके गृहै बसति आपु धन रूप । रमा रामपतिनी कहो सो विरतान्त अनूप ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

यह [illegible] करी [illegible] ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

॥ * ॥ [illegible] ॥ * ॥ [illegible] धीर [illegible] उपकारी [illegible] ॥ सदा देवपूजन रत [illegible] । [illegible] ॥ [illegible] जितेन्द्री [illegible] । कहै न [illegible] ॥ सन्तोषी [illegible] । [illegible] गुणग्राही [illegible] ॥ [illegible] सुभाव अनालस भोगी । वीर विवेकी [illegible] ॥ दानी दान्त अमन्द अचारी । [illegible] ॥ [illegible] । [illegible] ॥ वीर [illegible] कुमनी [illegible] । [illegible] ॥ [illegible] नाहि [illegible] ॥ [illegible] । [illegible] ॥ [illegible] । [illegible] परम प्रवीना । [illegible] ॥ [illegible] । नहि [illegible] न [illegible] ॥ [illegible] । [illegible] ॥ घर घर आव [illegible] । [illegible] ॥ [illegible] । [illegible] ताको ॥ *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

[illegible] । [illegible] ॥

[illegible] ॥

॥ * ॥ [illegible] ॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

[illegible] । [illegible] धर्म [illegible] भीषमसों [illegible] कहे ॥

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ [illegible] ॥ * ॥

[illegible] । [illegible] ॥ [illegible] तीन [illegible] । [illegible] ॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥ [illegible] पूरब [illegible] । सुनो तीन भूपति [illegible] ॥ [illegible] राजर्षि । [illegible] धार्मिक [illegible] ॥ भूप [illegible] । [illegible] ॥ [illegible] । [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] । [illegible] ॥ [illegible] । [illegible] ॥ [illegible] ताहि । [illegible] ॥ [illegible] भूप । आनि न [illegible] रूप ॥ [illegible] । [illegible] ॥ [illegible] । [illegible]

चौ०९ दो०८० [illegible] भान ॥ हय बांध्यो करिकै अरवान । तदनु पैठि कीन्हो असनान ॥ तिय ह्वै गयो करत [illegible] नाहरेनो नहि दुख [illegible] ॥ [illegible] भूरि [illegible] घटि [illegible] गेह सुधि दूरि

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

कहा कहब सब तियनतें सुत तपसिनसों जाइ । इमि सोचत निजगृह गयो चलि लज्जित नरनाह ॥ मंत्री [illegible] बन्धु प्रिय लखि बूझे [illegible] जिमि [illegible] तिय तन लह्यो तथा कह्यो नृप हाल ॥ भूपति [illegible] विचारि करि पुत्रहि जरि अभिषेक । आपु तिया ह्वै बन गई सीखि सुनीति विवेक ॥

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

आइकै सो तिया [illegible] तपसिनकौ तहँ देखि । गई करत [illegible] सो [illegible] लेखि ॥ [illegible] सो एक विप्र बिरही तौन तपाहँ पाय । लगी मैथुन करन तेहि करि सकल सुख सरसाय ॥ बहुत दिनमें सङ्ग लहि रतिरङ्ग्यो बह रङ्ग । [illegible] सुखद्भ लागी [illegible] हिय [illegible] ॥ तिया [illegible] दई दई दैयो कहो करि [illegible] कार । [illegible] दे [illegible] सी [illegible] हार ॥ [illegible] त नाही [illegible] हाहा रोस । प्रगट माहा हिए हाहो सकल नाही दोस ॥ [illegible] की जर्थ [illegible] बेवहार । [illegible] के चो [illegible] के धरा [illegible] करि आर ॥ [illegible] के करत आसन पोर । [illegible] रति लेत [illegible] देत [illegible] ओर ॥ करि [illegible] अपनो भरत मैथुन घार । करत निरदय मनो जैसें बालमी रस बार ॥ डगर मैं धनवान कह जिमि बैठि बैठि [illegible] । निधि समेटत नहीं मेठत लालचै अननेत ॥ [illegible] सो तियपाइ [illegible] के [illegible] ॥ [illegible] नहीं याको कही ताको काम ॥ [illegible] बहुत [illegible] । तहां शत सुत भए ताकह [illegible] ॥ तियासो तिन तियन लै निज पुत्र नृप यह आय । [illegible] धर्म सुनाइकै इमि कही बहुत बुझाय ॥ पुरुष पनकी पुत्र तुम ए तियापनके सर्व । देह आधोराज्य इनकह करो भोग अखर्व ॥ परम धर्मी पुत्र तिनकह दई आधी भूमि । तिया [illegible] तपसिनके बन भूमि ॥ इन्द्र करि अनुमान ताको सुघन जेसो [illegible] इमि [illegible] ताके [illegible] ॥ असुर सुर सुत कश्यपैके करत राज्यहि [illegible] दए [illegible] राज्य तुम [illegible] बन्धुगणिके [illegible] ॥ [illegible] सो सुत तापसनके [illegible] करो भोग सु राज्य अपनो [illegible] ॥ सुनत शत सुत पूर्वके ते लरे तिनसों हाकि । मरे मारे [illegible] लीन्हे राज्य अपनो [illegible] ॥ [illegible] द्विज तब गए तँह जँह तिया तापसरोनि । दुखी तेहि लखि भए [illegible] ॥ [illegible] सो जिमि भई तिय जिमि भए सुत सुख सोच । राज्य दीन्ही मयो जैसे दुखद पुत्र विरोध ॥ *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

[illegible] कह्यो हम [illegible] तुम दीन्हे [illegible] । ताते हम [illegible] ॥

यह जानिके तापसी करी वन्दना भूरि । तब सुरपति ताकों कह्यो दया हियमें पूरि ॥
पुरुषपनेके सुख तुव अरु तियपनके जोन । कहो कुमनकरि कै तिन्हैं तिनमेंते कछु कौन ॥

॥ * ॥ तापस्युवाच ॥ * ॥

दयासदन अति मयाकरि कीजै कृपा सुरेश । बालापनकेपुत्र सब जीवै पावै देश ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

सुरपति सुनि कै एह कहत भए तेहि तयहितें । काहे अधिक सनेह बालापनके सुतन सों ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

काहे इनको जीवन भाषा । उनको जीवन नहि अभिलाषी ॥ यह सुनि कै सो युवति उवाची । सुनो सुरेश कहत हम सांची ॥ गर्भभरह दुख जनम सनेको । अरु सेवा सब सहन इन्हे को ॥ तिया सहति सुतहित दुख भारी । तासे होति मया अधिकारी ॥ एहिविधि वाके सु वचन सुनिकै । इन्द्र मयाकरि बोले गुनिकै ॥ पुत्र भयो जाके हित जाही । तो करि देंउ पुरुष फिरि तोही ॥ * ॥ स्त्र्युवाच ॥ * ॥ मघ सुभाव कहत निज जीको । अबलौ मोहि युवति पन नीको ॥ यह सुनि कहे मघ प्रभु सोही । कस न पुरुषपन भावत तोही ॥ अधिक कौन सुख कुनीपन मै । जातैं चहसि युवतिपन मनमैं ॥ यह सुनि युवति सत्यगति धरिकै । बोलत भई नैन नत करिकै ॥ तियपनमै पुरुष सकल तें । होत अधिक सुख सब अनुमतें ॥ नर रतिकरि तोषत मन माहीं । नारि अधिक मनभावत नाहीं ॥ नारिहि पुरुषतें सुख अधिकी । हम लहि उभै कहत हिय अधिकी ॥ तातें हम अनुभव कन खेउ व । इमि युवती रहि तपसिन सेइव ॥ दई दई सो मिर भरि लीन्ही । ताही ने अधिकौ गुण चीन्ही ॥ तजिगुण अधिक अल्प गुणगाहै । यह अयानपन किए कहाहै ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

यह सुनिके सुरपुर गए मघ मुदित मननाह । इमि तियहि अधिको होत सुख सुनो धर्म नरनाह ॥
इति श्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणसिंहाज्ञाभिगामिना श्रीवन्दीजनकाशीनिवासि गोकुलनाथकवीश्वरात्मजेन गोपीनाथेन कविना विरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणि द्वाचत्वारिंशोऽध्यायः ॥

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

कहो तात कर्तव्य जो अमित कौन आचार । त्याज्य कहां अरु ग्राह्यको कहो तौन उपचार ॥

॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥

तीनि करम कायक कहे अरु वाचिकहूँ चारि । तीनि कर्म मानस कहे ते नित त्याज्य विचारि ॥
हिंसा तस्करता तथा अरु परदारविहार । त्याज्य तीनि कायक करम उपपाप निरधार ॥
चुगुलपनो अरु कटुवचन असत असत्य प्रलाप । त्याज्य चारि वाचिक करम परगति करत उपाप ॥

[illegible] हरदशी [illegible] । [illegible] ॥
[illegible] हरि [illegible] । [illegible] सदा [illegible] ॥
पूजब गौरीनाथको पूजब [illegible] । [illegible] प्रभुने जग भयो [illegible] सुनाम ॥

॥ * ॥ [illegible] ॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

यह सुनि धर्मनदीप [illegible] । अब कहिये कुलदीप महिमा गौरीनाथ की ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

यह सुनि [illegible] भीषम ज्ञानी । [illegible] ॥ पै विधि हरि महिमा शङ्करकी । [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] । [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] । [illegible] ॥ [illegible] । [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] । [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] । [illegible] ॥ [illegible] ॥ * ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

[illegible] ॥
[illegible] ॥
[illegible] ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

[illegible] । [illegible] ॥ [illegible] । [illegible] ॥ [illegible] । [illegible] ॥ [illegible] । [illegible] बिबहि चराची ॥ [illegible] । [illegible] भरि भरि ॥ [illegible] । [illegible] ॥ [illegible] । [illegible] कोई ॥ [illegible] । [illegible] ॥ [illegible] । [illegible] ॥ [illegible]

कृपा लखो मुदभैके ॥ मखो तीन आपुसमो लखिके। तब सुरसुचिन भए मुदभरिके ॥ रचे सहस्र सुभंड सुत तिनकों । विधि कुम्भदीप दए तब तिनकों ॥ एहिबिधि सुत विभूति मन भाए । शिवहि पूजि सहसन जन पाए ॥ तुम तौ प्रभु सुजनार्दन स्वामी । गहि नरदेह भए सुत कामी ॥ शिवहि अराधि महामुद गहिहौ । निजसम सुत चाहत सो लहिहौ ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

अब सुनिये विरतान्त मम केशव यदुकुल चन्द । व्याघ्रपाद निज पिताके हम युग पुत्र अमन्द ॥
जेठो भ्राता धौम्य मम लहुरे हम उपमन्यु । बसत विपिनमे पिता मम तपकृत अनघ अमन्यु ॥

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

बालपनमे पिताके सँग महीके घर जाय । पाय ओदन दूध खाय सु आश्रम मे आय ॥ भोर रोदन करन लागे मायतें अनखाय । दूध ओदन खाइहौं हम देहि मेरी माय ॥ माय नहि चतुराइ चाउर पीसि पीठ बनाय । घोरि जलमो मिलै ओदन दई मोहि खवाय ॥ बहुत दिन हम तौन खायो हिए आनद पूरि । यज्ञ रचि मम पिता आन्यो महा ब्राह्मण भूरि ॥ तहां आने नन्दिनी कहँ कारणकों सतकार । पियो तब हम नन्दिनीको दूधस्वाद अपार ॥ यज्ञबीते नन्दिनी जब गई तब मो माय । पूर्ववत करि पीठको पय देन लागी ल्याय ॥ कह्यो तब हम दूध मीठो होत यह तौ वारि । नहीं हम यह खाइहैं दे दूध वाकँह टारि । बचन यह सुनि माय दुखभरि मोहि अङ्क लगाय । कह्यो बनमधि मुनिनके घर छीर कह बिनु गाय ॥ बसत बनमे मूल फल दल तोरि खँनिके खात । बिना सुरभी गोत पाँए दूध दुर्लभ तात ॥ करु अराधन शंभु प्रभुको पाइहो मनकाम । छीर ओदन बसन भूषण धेनु धन अभिराम ॥ बचन यह सुनि जोरि कर हम भए बूझत ताहि । शंभु प्रभुको किमि अराधन कीजिये कछु चाहि ॥ अम्ब यह सुनि कह्यो शुभ ईशान प्रभु जगदीश । बरणि जा गुण लहत पार न गिरा सुमन फणीश ॥ जासु अगिनित रूप अरु अस्थान चारु चरित्र । कहत मुनिगण कहत आहि हृदिस्थ परम पवित्र ॥ जिते देही जगतमे विधिआदि खर्ब अखर्ब । सर्वरूप अनूप धारत सर्वतातें सर्व ॥ बसत सबके हृदयमो सब देत सबकहं काम । महा औढर दरण भू सब लोक जाको धाम ॥ आदि अन्त न जासु व्यक्त अनन्त योगी योग । एक दोय सहस्र लोचन तथा बदन सयोग ॥ तासु भक्ति अडोल गहिकै लाइ मन बुधि चित्त । भजो सेवन करो निति सुत होउगे कृतकृत्य ॥ मातुके सुनि बचन तबतें भए हम शिव भक्त । करत पूजन नाम कूजन रहत निति अनुरक्त ॥ बरिस कइक हजार धारे ध्यान मन चितलाय । भक्ति लखि करि कृपा तब प्रभु प्रगट भे तहँ आय ॥ शक्रको गहि रूप सुरगण सहित करि तहँ जौन । कहे हम परसन्न द्विजवर मागु इच्छित जौन ॥ बचन ऐसे सुनत हम तहँ कहे सुरपति पाँहि । बिना शङ्कर औरते हम कछू मागत नाँहि ॥ करै हमहि त्रिलोकपति औ बिनाशङ्कर और । नहीं चाहत तौन हम

अ०प० दृढ भक्तिको यह ठौर ॥ इतेमो तहँ प्रगटभे प्रभु शम्भु महिमाभौन । प्रथम देखे तेज चितिवे
दा०ध० सकै लखि जेहि कौन ॥ फेरि देख्यो उग्र प्रभुकँह महा उग्रस्वरूप । सङ्ग नवसमुदाय श्रोणित दिव्य अनघ अनूप ॥ गदा बाण त्रिशूल धनु अरु अस्त्र पशुपति जौन । और अगिनित अस्त्र शस्त्र प्रछन्न प्रगटित तौन ॥ मूर्तिनाम विभात प्रभुसगं ज्वलित ज्वलन समान । आदित्य विश्वे देव सेवत सिद्ध साध्य महान ॥ करत अस्तुति चन्द्रदिशिते शत एकादश रुद्र । ब्रह्म ऋषि वसु पितर सेवत यक्ष रक्ष समुद्र ॥ लसत अगञ्जत गरुडगामी विष्णु दक्षिण ओर । वामदिशि विधि हंसगामी सङ्ग सुनिधि अथोर ॥ यक्ष सुर गन्धर्वगणसह लसत आनँद पूरि । कार्तिकेय गणेश राजत भरे परमा भूरि ॥ पाइ दरशन शम्भु प्रभुको मुदित हम तेहि काल । किए अस्तुति शंभु प्रभु की पूजि अपनो भाल ॥ करि सु अस्तुति प्रार्थना दे अर्घपाद्य सनेम । जोरि कर ह्वै रहे ठाढेभूरि अति सैप्रेम ॥ लखत शोभा शम्भुकी हम रहे एकटक हेरि । सुमन बरषे सुमन तहँ सुखदाय दुंदुभि भेरि ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

मम मोपै करि अति कृपा कहे शम्भु सुदभौन । सुत तोपैं परसन्न हम मांगो इंछित जौन ॥
शङ्कर प्रभुके वचन सुनि ह्वै गदगद हम कृष्ण । किए दण्डवत बारबहु अति आनदभरि चिन्ह ॥
पाणि जोरि कै ह्वै खरो रोमांचित भरिनैन । चाव चैन हिय चौन भरि बोले सविनय बैन ॥
योगिनकहँ दुर्लभ इविधि तुवदरशन हे नाथ । सो इमि दरशन मोहि दे कीन्हे आपु सनाथ ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

तुम जगकृत जगपालनिहारे । करि विनाश फिरि सिरजनहारे ॥ सर्वग सर्व सर्वजगस्वामी । सर्वभूत भव उद्भव नामी ॥ जौं वर देत मोहि करि आदर । तौ निज भक्ति देउ दृढसादर ॥ ह्वै कालज्ञ मोहि प्रभु कीजे । नितिपय ओदन भोजन दीजे ॥ यह सुनि नाथ जु जगपति शङ्कर । एवमस्तु बोले अभयङ्कर ॥ अजर अमर दुख बरजित होहू । यशी तेजमय अतिप्रिय मोहू ॥ क्षीरोदन सागर तुव धोरैं । पूरण रही वचनतें मोरैं ॥ सोकुटुंब सह भोजन कीजो ॥ तिन्है समेत अमरपद लीजो ॥ इमि कहि भए अदृश्य गोसांई । तबतें हम विलसत एहि ठांई ॥ शंभु कृपानिधि इंछित दायक । तिन्है भजो त्रिभुवनके नायक ॥ मंत्र देत हम सो जप कीजै । छठए मास सु दरशन लीजै ॥ इमि कहि विप्र मंत्र मोहि दीन्हो दीक्षित ह्वै हम सानँद लीन्हे ॥ नहि सो मंत्र तबन तप लागे । शंभु अराधन मैं अनुरागे ॥ एकमास फल भोजन करिकै । पाँचमास सोः जलव्रत धरिकै ॥ एकचरण धरि महिमधि रहिकै । अर्धबाहु करि दृढमन गहिकै ॥ इमि षठमास किए आराधन । अनरथकै सु अरथको साधन ॥ *◆*◆*◆*◆*◆*◆*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

तब प्रसन्नह्वै शंभुप्रभु भए सु दरशन देत । यथा दए उपमन्युकँह विधि सुर ऋषिन समेत ॥
छबि श्री शोभा तेज हम दखे चकित ह्वै हेरि । निकट आइ तब शंभुप्रभु कहे कृपानिधि टेरि ॥
कृष्ण हमै तुम परम प्रिय मांगहु ईछित जौन । नौमि किए तब शंभुकी अस्तुति महिमाभौन ॥
नमो बिश्वपति बिश्वकृत बिश्वात्मा भगवान । अमघ अगोचर बेदमय सर्बद सर्व महान ॥
अस्तुति मुनि सुर गण सब शंभुहि किए प्रणाम । तब हसिकै मोसौं कहे शङ्कर महिमाधाम ॥
केशव मांगहु आठ बर तुमकँह ईछित जौन । सो सुनि सुख लहि हम कहे सुनो तौन छितिरौन ॥
भयो दृढता रिपुबिजय यशबल ज्योग महान । अचेसरता तव निकट सुत शतसहस सुजान ॥

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

यह सुनि शङ्कर आनद दानि । कहे तथास्तु परम हित मानि ॥ उमादेवि महिमाकी खानि । तब इमि कही भक्त निज जानि ॥ शांब नाम सुत परम प्रबीन । बीर बिक्रमी दाता पीन ॥ आठ ब यतीमे ह्वै है बेश । आसु देत आए एहि देश ॥ इमि बर दै प्रभु शम्भु महान । होत भए तँह अन्तर ध्यान ॥ हम उपमन्यु बिप्रपँह जाय । दीन्हे सब बिरतान्त सुनाय ॥ सुनि बोले ऋषि महिमा भौन । कृष्ण शर्वसम दाता कौन ॥ इमि कहिकै ब्राह्मण तपधाम । कहत भयो वार्त्ता अभिराम ॥ रह्यो सत्य युगमे तपभौन । तण्डि नाम ऋषि पूरित चैन ॥ अयुत बरिस सो लाइ समाधि । पेख्यो शम्भु हि सबिधि अराधि ॥ पठत आहि सांख्यक मन लाय । चिंतत योगीजन सुख दाय ॥ परम प्रधान पुरुष प्रभु जौन । उत्पति पालन कारण तौन ॥ लहि ताको दरशन सुख साज । अस्तुति कियो तण्डि मुनि राज ॥ सुनिये तौन युधिष्ठिर भूप । अघ पावन कृत परम अनूप ॥ *✿*✿*✿*✿*

तण्डिरुवाच ॥ पवित्राणां पवित्रस्त्वं गतिर्गतिमतांवर । अत्युग्रन्तेजसां तेजस्तपसां परमन्तपः ॥ विश्वावसु हिरण्याक्ष पुरुहूतनमस्कृत ॥ भूरिकल्याणद विभो परं सत्यं नमोऽस्तु ते । आर्त्तो मरण भीतानां यतीनां यततां विभो ॥ निर्वाणद सहस्रांशो नमस्तेऽस्तु सुखाश्रय ॥ ब्रह्मा शतक्रतुर्विष्णुर्विश्वेदेवा महर्षयः ॥ नविदुस्त्वां तु तत्त्वेन कुतो वेत्स्यामहे वयं ॥ त्वत्तः प्रवर्त्तते सर्वं त्वयि सर्वं प्रतिष्ठितं । कालाख्यः पुरुषाख्यश्च ब्रह्माख्यश्च त्वमेव हि । तनवस्ते स्मृतास्तिस्रः पुराणज्ञैः सुरर्षिभिः ॥ अधिपौरुष मध्यात्म मधिभूताधिदैवतं । अधिलोकाधिविज्ञानमधियज्ञस्त्वमेव हि ॥ त्वंविदित्वात्मदेहस्थं दुर्विदं विबुधै रपि । विद्वांसो यान्ति निर्मुक्ताः परंभावमनामयं ॥ अनिच्छतस्तव विभो जन्म मृत्युरनेकतः । द्वारं त्वं स्वर्गमोक्षाणामाक्षेप्ता त्वं ददासि च ॥ त्वं वै स्वर्गश्च मोक्षश्च कामः क्रोधस्त्वमेव च । सत्वं रजस्तमश्चैव अधश्चोर्ध्वंस्त्वमेव हि ॥ ब्रह्मा भवश्च विष्णुश्च स्कन्देन्द्रौ सविता यमः । वरुणेन्दू मनुर्धाता विधाता त्वं धनेश्वरः ॥ भूर्वायुः सलिलाग्निश्च खं वाग्बुद्धिस्थितिर्मतिः ॥ कर्म सत्यानृते चोभे त्वमेवास्ति च नास्ति च ॥ इन्द्रियाणीन्द्रियार्थाश्च प्रकृतिभ्यः परं ध्रुवं । विश्वाविश्वपरो भावश्चिन्त्याचिन्त्यस्त्वमेव हि ॥ यच्चैत

आं०८० त्परमं ब्रह्म यच्च तत्परमं पदं । या गतिः सांख्ययोगानां स भवान्नात्र संशयः ॥ नूनमद्य कृतार्थाः स्म
दा०६० नूनं प्राप्ताः सतां गतिं । या गतिं प्रार्थयन्तीह ज्ञाननिर्मलबुद्धयः ॥ अहो मूढाः स्म सुचिरमिमं काल
मचेतसः । अन्न विद्मः परं देवं शाश्वतं यं विदुर्बुधाः ॥ सेयमासादितः साक्षादस्माभिर्जन्मभिर्मया । भक्तानु
ग्रह कृद्देवो यं ज्ञात्वाऽमृतमश्नुते ॥ देवासुरमुनीनां तु यच्च गुह्यं सनातनं । गुहायां निहितं ब्रह्म दुर्वि
ज्ञेयं मुनेरपि ॥ स एष भगवान्देवः सर्वकृत्सर्वतोमुखः । सर्वात्मा सर्वदर्शी च सर्वगः सर्ववेदिता ॥ देह
कृद्देहभृद्देही देहभुग्देहिनां गतिः । प्राणकृत्प्राणभृत्प्राणः प्राणभूः प्राणिनां गतिः । अध्यात्मगति
निष्ठानां ध्यानिनामात्मवेदिनां । अपुनर्दारकामानां या गतिः सोऽयमीश्वरः ॥ अयं च सर्वभूतानां
शुभाशुभगतिप्रदः । अयं च जन्ममरणे विदधत्सर्वजन्तुषु । अयं च सिद्धिकामानां या गतिः सोऽयमीश्वरः ॥
भूराद्यान्सप्तभुवनान्युत्पाद्य सदिवौकसः । दधाति देवस्तनुभिरष्टाभिर्यो बिभर्तिच ॥ अतः प्रवर्तते सर्व
मस्मिन्सर्वं प्रतिष्ठितं । अस्मिंश्च प्रलयं याति सोऽयमेकः सनातनः ॥ अयं च सत्यकामानां सत्यलोकः परं
सतां । अपवर्गश्च मुक्तानां कैवल्यं चात्मवेदिनां ॥ अयं ब्रह्मादिभिः सिद्धैर्गुहायां गोपितः प्रभुः । देवासुर
मनुष्याणामप्रकाशो भवेदिति ॥ नत्वां देवासुरनरास्तत्त्वेन न विदुर्भवं । मोहिताः खल्वनेनैव हृदि
स्थेनाप्रकाशिना ॥ ये चैनं प्रतिपद्यन्ते भक्तियोगेन भारत । तेषामेवात्मनात्मानं दर्शयत्येष हृच्छयः ॥
यं ज्ञात्वा न पुनर्जन्म मरणं चापि विद्यते । यं विदित्वा परं वेद्यं वेदितव्यं न विद्यते ॥ यं लब्ध्वा परमं लाभं
नाधिकं मन्यते बुधः । यां सूक्ष्मां परमां प्राप्तिं गच्छन्त्यव्ययावहां ॥ यं सांख्यगुणतत्त्वज्ञाः सांख्यशास्त्र
विशारदाः । सूक्ष्मज्ञानरताः सूक्ष्मं ज्ञात्वा मुच्यन्ति बन्धनात् ॥ यं च वेदविदो वेद्यं वेदान्तेषु प्रतिष्ठितं ।
प्राणायामपरा नित्यं प्रविशन्ति वरे जनाः ॥ ओंकाररथमारुह्य ते विशन्ति महेश्वरं । अयं स देवयाना
नामादित्यो द्वारमुच्यते ॥ अयं च पितृयानानां चन्द्रमा द्वारमुच्यते । एष काष्ठा दिशश्चैव संवत्सर युगा
दि च ॥ दिव्यादिव्यपरो लाभः अयने दक्षिणोत्तरे । एनं प्रजापतिः पूर्वमाराध्य बहुभिः स्तवैः ॥ प्रजार्थं
वरयामास नीललोहितसंज्ञितं । ऋग्भिर्यमनुशंसन्ति तत्त्वे कर्मणि बह्वृचः ॥ यजुर्भिर्यं त्रिधा वेद्यं
जुह्वत्यध्वर्यवोऽध्वरे ॥ सामभिर्यं च गायन्ति सामगाः शुद्धबुद्धयः ॥ ऋतं सत्यं परं ब्रह्म स्तुवन्त्याथर्वणा द्विजाः ।
यज्ञस्य परमा योनिः पतिश्चायं परः स्मृतः ॥ रात्र्यहः श्रोत्रनयनः पक्षमासशिरो भुजः । ऋतुवीर्यस्तपोधैर्यो
ह्यब्दगुह्योरुपादवान् । मृत्युर्यमो हुताशश्च कालः संहारवेगवान् । कालस्य परमा योनिः कालश्चायं सना
तनः । चन्द्रादित्यौ सनक्षत्रौ ग्रहाश्च सह वायुना । ध्रुवः सप्तर्षयश्चैव भुवनं निच सप्त च ॥ प्रधानं मह
दव्यक्तं विशेषान्तं सवैकृतं । ब्रह्मादिस्तम्बपर्यन्तं भूतादि सदसच्च यत् ॥ अष्टौ प्रकृतयश्चैव प्रकृतिभ्यश्च
यः परं । अस्य देवस्य यद्भागं कृत्स्नं सम्परिवर्तते ॥ एतत्परमानन्दं तदेतत्परमं पदं । एषा गतिर्विरक्ता
नामेष भावः परः सतां ॥ एतत्पदमनुद्विग्नमेतद्ब्रह्म सनातनं । शास्त्रवेदाङ्गविदुषामेतद्ध्यानं परं पदं ॥
इयं सा परमा काष्ठा इयं सा परमा कला । इयं सा परमा सिद्धिरियं सा परमा गतिः ॥ इयं
सा परमा शान्तिरियं सा निर्वृतिः परा । यं प्राप्य कृतकृत्याः स्म इत्यमन्यन्त योगिनः ॥ इयं तुष्टि

रियं सिद्धिरियं स्तुतिरियं स्मृतिः । अध्यात्मगतिनिष्ठानां विदुषां प्राप्तिरव्यया ॥ यजतां कामय
मानां मखैर्विपुलदक्षिणैः । या गतिर्यज्ञशीलानां सा गतिस्त्वं न संशयः ॥ सम्यग्योगजपैः शान्तिनियमै
र्देहतापनैः । तप्यतां या गतिर्देव परमा सा गतिर्भवान् ॥ कर्मन्यासकृतानां च विरक्तानां तत
स्ततः । या गतिर्ब्रह्मसदने सा गतिस्त्वं सनातनः ॥ अपुनर्भवकामानां वैराग्ये वर्ततां च या । प्रकृती
नां लयानां च सा गतिस्त्वं सनातनः ॥ ज्ञानविज्ञानयुक्तानां निरुपाख्या निरञ्जना । कैवल्या या गति
र्देव परमा सा गतिर्भवान् ॥ वेदशास्त्रपुराणोक्ताः पञ्चैता गतयः स्मृताः । त्वत्प्रसादाद्धि लभ्यन्ते
न लभ्यन्तेऽन्यथा विभो ॥ इति तण्डिस्तपोराशिस्तुष्टावेशानमात्मना । जगौ च परमं ब्रह्म यत्पुरा लोक
कृज्जगौ ॥ * ॥ उपमन्युरुवाच ॥ * ॥ एवं स्तुतो महादेवस्तण्डिना ब्रह्मवादिना । उवाच भगवा
न्देव उमया सहितः प्रभुः ॥ ब्रह्मा शतक्रतुर्विष्णुर्विश्वेदेवा महर्षयः । न विदुस्त्वामिति ततस्तुष्टः प्रोवा
च तं शिवः ॥ * ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ * ॥ अक्षयश्चाव्ययश्चैव भविता दुःखवर्जितः । यशस्वी तेजसा युक्तो
दिव्यज्ञानसमन्वितः ॥ ऋषीणामभिगम्यश्च सूत्रकर्ता सुतो मम । मत्प्रसादाद्द्विजश्रेष्ठ भविष्यति न
संशयः ॥ कं वा कामं ददाम्यद्य ब्रूहि यद्वत्स काङ्क्षसे । प्राञ्जलिः स उवाचेदं त्वयि भक्तिर्दृढास्तु मे ॥
उपमन्युरुवाच ॥ एतान्दत्त्वा वरान्देवो वन्द्यमानः सुरर्षिभिः । स्तूयमानश्च विबुधैस्तत्रैवान्तरधीयत ॥
अन्तर्हिते भगवति सानुगे यादवेश्वर । ऋषिराश्रममागम्य ममैव प्रोक्तवानिदं ॥ यानि च प्रथिता
न्यादौ तण्डिराख्यातवान्मम । नामानि मानवश्रेष्ठ तानि त्वं शृणु सिद्धये ॥ दशनामसहस्राणि वेदे
ष्वाह पितामहः । सर्वेषु शास्त्रेषु तथा दशनामशतानि वै ॥ गुह्यानीमानि नामानि तण्डिर्भगवतो
ऽच्युत । देवप्रसादाद्देवेशः पुरा प्राह महात्मने ॥ इति दानधर्मे मेघवाहनपर्वणि वासुदेववरप्राप्ति
र्नाम चतुर्दशोऽध्यायः ॥ वासुदेव उवाच ॥ * ॥ ततः स प्रयतो भूत्वा मम तात युधिष्ठिर । प्राञ्जलिः
प्राह विप्रर्षिर्नामसंग्रहमादितः ॥ * ॥ उपमन्युरुवाच ॥ * ॥ ब्रह्मप्रोक्तैरृषिप्रोक्तैर्वेदवेदाङ्ग
सम्भवैः । सर्वलोकेषु विख्यातैः स्तुत्यं स्तोष्यामि नामभिः ॥ महद्भिर्विहितैः सत्यैः सिद्धैः सर्वार्थ
साधकैः । ऋषिणा तण्डिना भक्त्या कृतैर्वेदकृतात्मना ॥ यथोक्तैः साधुभिः ख्यातैर्मुनिभिस्तत्त्व
दर्शिभिः । प्रवरं प्रथमं स्वर्ग्यं सर्वभूतहितं शुभं ॥ श्रुतैः सर्वत्र जगति ब्रह्मलोकावतारितैः । यत्तद्र
हस्यं परमं ब्रह्मप्रोक्तं सनातनं ॥ वक्ष्ये यदुकुलश्रेष्ठ शृणुष्वावहितो मम । वरत्वेन भवन्देवमसक्तं पर
मेश्वर ॥ तेन ते श्रावयिष्यामि यत्तद्ब्रह्म सनातनं । न शक्यं विस्तरात्कृत्स्नं वक्तुं सर्वस्य केनचित् ॥
युक्तेनापि विभूतीनामपि वर्षशतैरपि । यस्यादिर्मध्यमन्तश्च सुरैरपि न गम्यते ॥ कस्तस्य शक्नुयाद्वक्तुं
गुणान्कार्त्स्न्येन माधव । किन्तु देवस्य महतः संक्षिप्तार्थपदाक्षरं ॥ शक्तितश्चरितं वक्ष्ये प्रसादात्तस्य
धीमतः । अप्राप्यैव ततोऽनुज्ञां न शक्यः स्तोतुमीश्वरः ॥ यदा तेनाभ्यनुज्ञातः स्तुतो वै स तदा मया ।
अनादिनिधनस्याहं जगद्योनेर्महात्मनः ॥ नाम्नां कञ्चित्समुद्देशं वक्ष्याम्यव्यक्तयोनिनः । वरद

आ०प० वरेण्यस्य विश्वरूपस्य धीमतः ॥ शृणु नाम्नां चयं कृत्स्नं यदुक्तं पद्मयोनिना । दशनामसहस्राणि
दा०ध० यान्याह प्रपितामहः ॥ तानि निर्मथ्य मनसा दध्नो घृतमिवोद्धृतं । गिरेः सारं यथा हेम पुष्प
सारं यथा मधु ॥ घृतात्सारं यथा मण्डस्तथैतत्सारमुद्धृतं । सर्वपापापहमिदं चतुर्वेदसमन्वितं
प्रयत्नेनाधिगन्तव्यं धार्य्यं च प्रयतात्मना । माङ्गल्यं पौष्टिकं चैव रक्षोघ्नं पावनं महत् । इदं भक्ताय
दातव्यं श्रद्दधानास्तिकाय च । नाश्रद्दधानरूपाय नास्तिकायाजितात्मने ॥ यश्चाभ्यसूयते देवं
कारणात्मानमीश्वरं । स कृत्स्नं नरकं याति सह पूर्वैः सहापरैः ॥ इदं ध्यानमिदं योगमिदं
ध्येयमनुत्तमं । इदं जप्यमिदं ज्ञानं रहस्यमिदमुत्तमं ॥ यज्ज्ञात्वा अन्तकालेपि गच्छेत परमां
गतिं । पवित्रं मङ्गलं मेध्यं कल्याणमिदमुत्तमं ॥ इदं ब्रह्मा पुरा कृत्वा सर्वलोकपितामहः ।
सर्वस्तवानां राजत्वे दिव्यानां समकल्पयत् ॥ तदा प्रभृति चैवायमीश्वरस्य महात्मनः । स्तवराज
इति ख्यातो जगत्यमरपूजितः ॥ ब्रह्मलोकादयं स्वर्गे स्तवराजोवतारितः । यतस्तण्डिः पुरा प्राह तेन
ताण्डिकृतो भवत् ॥ स्वर्गाच्चैवात्र भूर्लोकं तण्डिना ह्यवतारितः । सर्वमङ्गलमाङ्गल्यं सर्वपापप्रणा
शनं ॥ निगदिष्ये महाबाहो स्तवानामुत्तमं स्तवं । ब्रह्मणामपि यद्ब्रह्म पराणामपि यत्परं ॥
तेजसामपि यत्तेजस्तपसामपि यत्तपः । शान्तानामपि यः शान्तो द्युतीनामपि या द्युतिः ॥ दान्तानाम
पि यो दान्तो धीमतामपि या च धीः । देवानामपि यो देवः ऋषीणामपि यो ऋषिः ॥ यज्ञानामपि यो
यज्ञः शिवानामपि यः शिवः । रुद्राणामपि यो रुद्रः प्रभुः प्रभवतामपि ॥ योगिनामपि यो योगी
कारणानां च कारणं । यतो लोकाः सम्भवन्ति न भवन्ति यतः पुनः ॥ सर्वभूतात्मभूतस्य हरस्यामित
तेजसः । अष्टोत्तरसहस्रन्तु नाम्नां सर्वस्य मे शृणु । यच्छ्रुत्वा मनुजव्याघ्र सर्वान्कामानवाप्स्यसि ॥ * ॥
ओं स्थिरः स्थाणुः प्रभुर्भीमः प्रवरो वरदो वरः । सर्वात्मा सर्वविख्यातः सर्वः सर्वकरो भवः ॥ जटी चर्मी
शिखण्डी च सर्वाङ्गः सर्वभावनः । हरश्च हरिणाक्षश्च सर्वभूतहरः प्रभुः ॥ प्रवृत्तिश्च निवृत्तिश्च नियतः
शाश्वतो ध्रुवः । श्मशानवासी भगवान् खचरो गोचरोर्दनः ॥ अभिवाद्यो महाकर्मा तपस्वी भूत
भावनः । उन्मत्तवेषः प्रच्छन्नः सर्वलोकप्रजापतिः ॥ महारूपो महाकायो वृषरूपो महायशः । महात्मा
सर्वभूतात्मा विश्वरूपो महाहनुः ॥ लोकपालोन्तर्हितात्मा प्रसादो हयगर्दभिः । पवित्रश्च महांश्चैव
नियमो नियमाश्रितः ॥ सर्वकर्मा स्वयम्भूत आदिरादिकरो निधिः । सहस्राक्षो विशालाक्षः
सोमो नक्षत्रसाधकः ॥ चन्द्रः सूर्यः शनिः केतुर्ग्रहो ग्रहपतिर्वरः । अत्रिरत्र्या नमस्कर्ता मृग
बाणार्पणोनघः ॥ महातपा घोरतपा अदीनो दीनसाधकः । संवत्सरकरो मन्त्रः प्रमाणं परमं तपः
योगी योज्यो महाबीजो महारेता महाबलः । सुवर्णरेताः सर्वज्ञः सुबीजो बीजवाहनः ॥ दश
बाहुस्त्वनिमिषो नीलकण्ठ उमापतिः । विश्वरूपः स्वयं श्रेष्ठो बलवीरो बलो गणः ॥ गणकर्त्ता गण
पतिः १०० दिग्वासाः काम एव च । मन्त्रवित्परमो मन्त्रः सर्वभावकरो हरः ॥ कमण्डलुधरो धन्वी
बाणहस्तः कपालवान् । अशनी शतघ्नी खड्गी पट्टिशी चायुधी महान् ॥ स्रुवहस्तः सुरूपश्च तेज

तेजकरो निधिः । उष्णीषी च सुवक्त्रश्च उदग्रो विनतस्तथा ॥ दीर्घश्च हरिकेशश्च सुतीर्थः कृष्ण
एव च । शृगालरूपः सिद्धार्थो मुण्डः सर्वशुभङ्करः ॥ अजश्च बहुरूपश्च गन्धधारी कपर्द्यपि । ऊर्ध्वरेता
ऊर्ध्वलिङ्ग ऊर्ध्वशायी नभस्थलः ॥ त्रिजटी चीरवासाश्च रुद्रः सेनापतिर्विभुः । अहश्चरो नक्तचरस्ति
ग्ममन्युः सुवर्चसः ॥ गजहा दैत्यहा कालो लोकधाता गुणाकरः ॥ सिंहशार्दूलरूपश्च आर्द्रचर्माम्बरा
वृतः ॥ कालयोगी महानादः सर्वकामश्चतुष्पथः ॥ निशाचरः प्रेतचारी भूतचारी महेश्वरः ॥ बहु
भूतो बहुधरः स्वर्भानुरमितो गतिः ॥ नृत्यप्रियो नित्यनर्त्तो नर्त्तकः सर्वलालसः ॥ घोरो महातपाः पाशो
नित्यो गिरिरुहो नभः । सहस्रहस्तो विजयो व्यवसायो ह्यनिन्दितः ॥ अमर्षणो धर्षणात्मा यज्ञहा
कामनाशकः । दक्षयागापहारी च सुसहो मध्यमस्तथा ॥ तेजोपहारी बलहा मुदितोर्थो जितो
वरः । गम्भीरघोषो गम्भीरो गम्भीरबलवाहनः ॥ न्यग्रोधरूपो २०० न्यग्रोधो वृक्षकर्णस्थिति
र्विभुः । सुतीक्ष्णदशनश्चैव महाकायो महाननः ॥ विष्वक्सेनो हरिर्यज्ञः संयुगापीडवाहनः । तीक्ष्ण
तापश्च हर्यश्वः सहायः कर्मकालवित् ॥ विष्णुप्रसादितो यज्ञः समुद्रो बडवामुखः । हुताशनसहायश्च
प्रशान्तात्मा हुताशनः । उग्रतेजा महातेजा जन्यो विजयकालवित् । ज्योतिषामयनं सिद्धिः सर्व
विग्रह एव च ॥ शिखी मुण्डी जटी ज्वाली मूर्त्तिजो मूर्धगो बली । वेणवी पणवी ताली खली कालक
टङ्कटः ॥ नक्षत्रविग्रहमतिर्गुणबुद्धिर्लयोगमः । प्रजापतिर्विश्वबाहुर्विभागः सर्वगोमुखः ॥ विमोचनः
सुसरणो हिरण्यकवचोद्भवः । मेढ्रजो बलचारी च महीचारी स्रुतस्तथा ॥ सर्वतूर्यनिनादी च सर्वतोद्य
परिग्रहः । व्यालरूपो गुहावासी गुहो माली तरङ्गवित् ॥ त्रिदशस्त्रिकालधृक्कर्म सर्वबन्धविमोचनः ।
बन्धनस्त्वसुरेन्द्राणां युधि शत्रुविनाशनः ॥ सांख्यप्रसादो दुर्वासाः सर्वसाधुनिषेवितः । प्रस्कन्दनो विभा
गज्ञः अतुल्यो यज्ञभागवित् ॥ सर्ववासः सर्वचारी दुर्वासा वासवोऽमरः । हैमो हेमकरो यज्ञः सर्वधारी
धरोत्तमः ॥ लोहिताक्षो महाक्षश्च विजयाक्षो विशारदः । संग्रहो निग्रहः कर्त्ता सर्पचीरनिवासनः ॥
मुख्योऽमुख्यश्च देहश्च काहलिः सर्वकामदः । सर्वकालप्रसादश्च सुबलो बलरूपधृक् । ३०० । सर्व
कामवरश्चैव सर्वदः सर्वतोमुखः ॥ आकाशनिर्विरूपश्च निपाती ह्यवशः खगः ॥ रौद्ररूपोंऽशुरादित्यो बहु
रश्मिः सुवर्चसी ॥ वसुवेगो महावेगो मनोवेगो निशाचरः ॥ सर्ववासी श्रियावासी उपदेशकरोऽकरः ॥ मुनि
रात्मनिरालोकः सम्भग्नश्च सहस्रदः ॥ पक्षी च पक्षरूपश्च अतिदीप्तो विशाम्पतिः । उन्मादो मदनः का
मो ह्यश्वत्थोऽर्थकरो यशः ॥ वामदेवश्च वामश्च प्राग्दक्षिणश्च वामनः । सिद्धयोगी महर्षिश्च सिद्धार्थः
सिद्धसाधकः ॥ भिक्षुश्च भिक्षुरूपश्च विपणो मृदुरव्ययः । महासेनो विशाखश्च षष्टिभागो गवां पतिः ॥
वज्रहस्तश्च विष्कम्भी चमूस्तम्भन एव च ॥ वृत्तावृत्तकरस्तालो मधुर्मधुकलोचनः ॥ वाचस्पत्यो वाजसनो
नित्यमाश्रमपूजितः ॥ ब्रह्मचारी लोकचारी सर्वचारी विचारवित् ॥ ईशान ईश्वरः कालो निशाचारी
पिनाकधृक् । निमित्तस्थो निमित्तञ्च नन्दिर्नन्दिकरो हरिः ॥ नन्दीश्वरश्च नन्दी च नन्दनो नन्दि
वर्धनः । भगहारी निहन्ता च कालो ब्रह्मा पितामहः ॥ चतुर्मुखो महालिङ्गश्चारुलिङ्गस्तथैव च

प्रा०प० लिङ्गाध्यक्षः सुराध्यक्षो योगाध्यक्षो युगावहः ॥ बीजाध्यक्षो बीजकर्त्ता अध्यात्मानुगतो बलः । इति
दा०प० हासः सकल्पश्च गौतमो ४०० च निशाकरः ॥ दम्भो ह्यदम्भो वैदम्भो वश्यो वशकरः कलिः । लोक
कर्त्ता पशुपतिर्महाकर्त्ता ह्यनौषधः ॥ अक्षरं परमं ब्रह्म बलवच्छक्र एव च । नीतिर्ह्यनीतिः
शुद्धात्मा शुद्धो मान्यो गतागतः ॥ बहुप्रसादः सुस्वप्नो दर्पणो च त्वमित्रजित् । वेदकारो मन्त्रकारो
विद्वान्समरमर्दनः ॥ महामेघनिवासी च महाघोरो वशीकरः । अग्निज्वालो महाज्वालो अति
धूम्रो हुतो हविः ॥ वृषणः शङ्करो नित्यं वर्चस्वी धूमकेतनः । नीलस्तथाङ्गलुब्धश्च शोभनो
निरवग्रहः ॥ स्वस्तिदः स्वस्तिभावश्च भागी भागकरो लघुः । उत्सङ्गश्च महाङ्गश्च महागर्भ
परायणः ॥ कृष्णवर्णः सुवर्णश्च इन्द्रियं सर्वदेहिनां । महापादो महाहस्तो महाकायो महा
यशाः ॥ महामूर्द्धा महामात्रो महानेत्रो निशालयः । महान्तको महाकर्णो महोष्ठश्च महाहनुः ॥
महानासो महाकम्बुर्महाग्रीवः श्मशानभाक् । महावक्षा महोरस्को ह्यन्तरात्मा मृगालयः ॥ लम्बनो
लम्बितोष्ठश्च महामायः पयोनिधिः । महादन्तो महादंष्ट्रो महाजिह्वो महामुखः ॥ महानखो
महारोमा महाकेशो महाजटः । प्रसन्नश्च प्रसादश्च प्रत्ययो गिरिसाधनः ॥ स्नेहनो स्नेहनश्चैव अजि
तश्च महामुनिः । वृक्षाकारो वृक्षकेतुरनलो वायुवाहनः ॥ गण्डली ५०० मेरुधामा च देवाधिपति
रेव च । अथर्वशीर्षः सामास्य ऋक्सहस्रामितेक्षणः ॥ यजुःपादभुजो गुह्यः प्रकाशो जङ्गमस्तथा । अमो
घार्थः प्रसादश्च अभिगम्यः सुदर्शनः ॥ उपकारः प्रियः सर्वः कनकः काञ्चनच्छविः ॥ नाभिर्नन्दिकरो भावः
पुष्करः स्थपतिः स्थिरः ॥ द्वादशस्त्रासनश्चाद्यो यज्ञो यज्ञसमाहितः । नक्तं कलिश्च कालश्च मकरः काल
पूजितः ॥ सगणो गणकारश्च भूतवाहनसारथिः । भस्मशयो भस्मगोप्ता भस्मभूततरुर्गणः ॥ लोक
पालस्तथा लोको महात्मा सर्वपूजितः । शुक्लस्त्रिशुक्लः सम्पन्नः शुचिर्भूतनिषेवितः ॥ आश्रमस्थः क्रिया
वस्थो विश्वकर्मा मतिर्वरः । विशालशाखस्ताम्रोष्ठो ह्यम्बुजालः सुनिश्चलः ॥ कपिलः कपिशः शुक्ल
आयुश्चैव परोऽपरः । गन्धर्वो ह्यदितिस्तार्क्ष्यः सुविज्ञेयः सुशारदः ॥ परश्वधायुधो देवः अनुकारी
सुबान्धवः । तुम्बवीणो महाक्रोध ऊर्द्ध्वरेता जलेशयः ॥ उग्रो वशङ्करो वंशो वंशनादो ह्यनिन्दितः ।
सर्वाङ्गरूपो मायावी सुहृदो ह्यनिलोऽनलः ॥ बन्धनो बन्धकर्त्ता च सुबन्धनविमोचनः । स यज्ञारिः
सकामारिर्महादंष्ट्रो महायुधः ॥ बहुधा निन्दितः शर्वः शङ्करः शङ्करोऽधनः । अमरेशो ६०० महा
देवो विश्वदेवः सुरारिहा ॥ अहिर्बुध्न्योऽनिलाभश्च चेकितानो हविस्तथा । अजैकपाच्च कापाली
त्रिशङ्कुरजितः शिवः ॥ धन्वन्तरिर्धूमकेतुः स्कन्दो वैश्रवणस्तथा । धाता शक्रश्च विष्णुश्च मित्रस्त्वष्टा
ध्रुवो धरः ॥ प्रभावः सर्वगो वायुरर्यमा सविता रविः । उषङ्गुश्च विधाता च मान्धाता भूतभावनः ॥
विभुर्वर्णविभावी च सर्वकामगुणावहः । पद्मनाभो महागर्भश्चन्द्रवक्त्रोऽनिलोऽनलः ॥ बलवांश्चो
पशान्तश्च पुराणः पुण्यचञ्चुरी । कुरुकर्त्ता कुरुवासी कुरुभूतो गुणौषधः ॥ सर्वाशयो दर्भचारी
सर्वेषां प्राणिनां पतिः ॥ देवदेवः सुखासक्तः सदसत्सर्वरत्नवित् । कैलासगिरिवासी च हिमवद्गि

रिसंश्रयः ॥ कूलहारी कूलकर्त्ता बहुविद्योबहुप्रदः । वणिजोवर्द्धकीवृक्षोवकुलश्चन्दनश्छदः॥सार
ग्रीवोमहाजत्रुरलोलश्च महौषधः । सिद्धार्थकारी सिद्धार्थश्छन्दोव्याकरणोत्तरः ॥ सिंहनादः
सिंहदंष्ट्रः सिंहगः सिंहवाहनः । प्रभावात्मा जगत्कालस्थानोलोकहितस्तरुः ॥ सारङ्गोनवचक्राङ्गः
केतुमाली सभावनः । भूतालयोभूतपतिरहोरात्रमनिन्दितः ॥ वाहिता सर्वभूतानां निलयश्च
विभुर्भवः । अमोघसंयतोह्यश्वोभोजनः प्राणधारणः ॥ धृतिमान्मतिमान् ७०० दक्षः सत्कृतश्च युगा
धिपः । गोपालिर्गोपतिर्ग्रामोगोचर्मवसनोहरिः ॥ हिरण्यबाहुश्च तथा गुहापालः प्रवेशिनां ।
प्रकृष्टारिर्महाहर्षोजितकामोजितेन्द्रियः ॥ गान्धारश्च सुवासश्च तपःसक्तोरतिर्नरः । महागीतो
महानृत्योह्यप्सरोगणसेवितः ॥ महाकेतुर्महाधातुर्नैकसानुचरश्चलः । आवेदनीय आदेशः सर्वगन्ध
सुखावहः ॥ तोरणस्तारणोवातः परिधीपतिखेचरः । संयोगोवर्धनोवृद्धः अतिवृद्धोगुणाधिकः ॥ नित्य
मात्मसहायश्च देवासुरपतिःपतिः । युक्तश्च युक्तबाहुश्च देवोदिविसुपर्वणः ॥ आषाढश्च सुषाढश्च ध्रुवो
यथ हरिणोहरः ॥ वपुरावर्त्तमानेभ्योवसुश्रेष्ठो महापथः । शिरोहारी विमर्षश्च सर्वलक्षणलक्षितः ॥
अक्षश्च रथयोगीच सर्वयोगी महाबलः । समाम्नायोसमाम्नायस्तीर्थदेवो महारथः ॥ निर्ज्जीवोजीव
नोमन्त्रः शुभाक्षोबहुकर्कशः । रत्नप्रभूतोरक्ताङ्गोमहार्णवनिपानवित् ॥ मूलं विशालोह्यमृतोव्यक्ता
व्यक्तस्तपोनिधिः । आरोहणोधिरोहश्च शीलधारी महायशाः ॥ सेनाकल्पो महाकल्पो योगोयुग
करोहरिः । युगरूपो महारूपो महानागहनो वधः ॥ न्यायनिर्वपणः पादः पण्डितो ह्यचलोपमः ।
बहुमालोमहामालः शशीहरसुलोचनः ॥ विस्तारोलवणः कूपस्त्रियुगः सफलोदयः । त्रिनेत्रश्च विषा
ण्णांगो मणिविद्धोजटाधरः । बिन्दुर्विसर्गः सुमुखः ८०० शरः सर्वायुधः सहः ॥ निवेदनः सुखाजातः सुग
न्धारोमहाधनुः । गन्धपालीच भगवानुत्थानः सर्वकर्मणां ॥ मन्थानोबहुलोवायुः सकलः सर्वलोच
नः । तलस्तालः करस्थाली ऊर्द्ध्वसंहननो महान् ॥ छत्रं सुछत्रोविख्यातोलोकः सर्वाश्रयः क्रमः । मुण्डो
विरूपोविकृतोदण्डी कुण्डी विकुर्वणः ॥ हर्य्यक्षः ककुभोवज्री शतजिह्वः सहस्रपात् । सहस्रमूर्धा
देवेन्द्रः सर्वदेवमयोगुरुः ॥ सहस्रबाहुः सर्वाङ्गः शरण्यः सर्वलोककृत् । पवित्रं त्रिःककुन्मन्त्रः कनिष्ठः
कृष्णपिङ्गलः ॥ ब्रह्मदण्डविनिर्म्माता शतघ्नी पाशशक्तिमान् । पद्मगर्भो महागर्भो ब्रह्मगर्भो जलोद्भवः
गभस्तिर्ब्रह्मकृद्ब्रह्मा ब्रह्मविद्ब्राह्मणोगतिः । अनन्तरूपो नैकात्मा तिग्मतेजाः स्वयम्भुवः ॥ ऊर्द्ध्वगा
त्मा पशुपतिर्वातरंहामनोजवः । चन्दनी पद्मनालाग्रः सुरभ्युत्तरणोनरः ॥ कर्णिकारीमहास्रग्वी नील
मौलिः पिनाकधृक् । उमापतिरुमाकान्तोजाह्नवीधृगुमाधवः ॥ वरो वराहोवरदो वरेण्यः सुमहास्वनः ।
महाप्रसादोदमनः शत्रुहाश्वेतपिङ्गलः ॥ पीतात्मा परमात्माच प्रयतात्मा प्रधानधृक् । सर्वपार्श्व मुख
स्त्र्यक्षो धर्मसाधारणोवरः ॥ चराचरात्मा सूक्ष्मात्मा अमृतो गोवृषेश्वरः । साध्यर्षिर्वसुरादित्योविव
स्वान् सविताम्रृतः ॥ व्यासः सर्गः सुसंक्षेपो विस्तरः पर्ययोनरः । ऋतुः सम्वत्सरोमासः पक्षः ९०० संख्या

अ०प० समापनः ॥ कला काष्ठा पलोमात्रा मुहूर्त्तोहः क्षपाः क्षणः । विश्वक्षेत्रप्रजाबीजो लिङ्गमाद्यस्तु
दा०ध० निर्गमः ॥ सदसद्व्यक्तमव्यक्तं पिता माता पितामहः । स्वर्गद्वारं प्रजाद्वारं मोक्षद्वारं त्रिविष्टपं ॥
निर्वाणं ह्लादनश्चैव ब्रह्मलोकः परागतिः । देवासुरविनिर्माता देवासुरपरायणः ॥ देवासुर
गुरुर्देवोदेवासुरनमस्कृतः । देवासुरमहामात्रोदेवासुरगणाश्रयः ॥ देवासुरगणाध्यक्षोदेवासुर
गणाग्रणीः देवातिदेवो देवर्षिर्देवासुरवरप्रदः ॥ देवासुरेश्वरोविश्वोदेवासुरमहेश्वरः । सर्वदेव
मयोऽचिन्त्योदेवतात्मात्मसम्भवः ॥ उद्भिज्जस्त्रिविक्रमोवैद्योविरजोनीरजोऽमरः । ईड्योहस्तीश्वरो
व्याघ्रोदेवसिंहोनरर्षभः ॥ विबुधोग्रवरः सूक्ष्मः सर्वदेवस्तपोमयः । सुयुक्तः शोभनोवज्री प्रा
सानां प्रभवोऽव्ययः ॥ गुहःकान्तोनिजः सर्गः पवित्रःसर्वपावनः । शृङ्गी शृङ्गप्रियोबभ्रूराजराजोनिरा
मयः ॥ अभिरामः सुरगणो विरामः सर्वसाधनः । ललाटाक्षोविश्वदेवोहरिणोब्रह्मवर्चसः ॥ स्थाव
राणां पतिश्चैव नियमेन्द्रियवर्द्धनः । सिद्धार्थः सिद्धभूतार्थो ऽचिन्त्यः सत्यव्रतः शुचिः ॥ व्रताधिपः परं
ब्रह्म भक्तानां परमा गतिः ।विमुक्तोमुक्ततेजाश्च श्रीमान् श्रीवर्द्धनो जगत् १००० ॥ यथा प्रधानम्भगवा
निति भक्त्या स्तुतोमया । यन्न ब्रह्मादयोदेवाविदुस्तत्त्वेनमहर्षयः ॥ स्तोतव्यमर्च्यं वन्द्यञ्च कःस्तोष्यति
जगत्पतिं । भक्त्यात्वेवं पुरस्कृत्य मया यज्ञपतिर्विभुः ॥ ततोभ्यनुज्ञां संप्राप्य स्तुतोमतिमतांवरः ।
शिवमेभिस्तुवन्देवन्नामभिः पुष्टिवर्द्धनैः ॥ नित्ययुक्तः शुचिर्भक्तःप्राप्नोत्यात्मानमात्मना । एतद्धि
परमंब्रह्म परं ब्रह्माधिगच्छति । ऋषयश्चैवदेवाश्च स्तुवन्त्येतेनतत्परं ॥ स्तूयमानो महादेवः तुष्यते
नियतात्मभिः । भक्तानुकम्पी भगवानात्मसंस्थाकरोविभुः ॥ तथैवच मनुष्येषु ये मनुष्याः प्रधा
नतः । आस्तिकाः श्रद्दधानाश्च बहुभिर्जन्मभिः स्तवैः ॥ भक्त्याह्यनन्यमीशानम्परन्देवं सनातनं ।
कर्म्मणा मनसा वाचा भावेनामिततेजसः ॥ शयानाजाग्रमाणाश्च व्रजन्नुपविशंस्तथा । उन्मि
षन्निमिषंश्चैव चिन्तयन्तः पुनः पुनः ॥ शृण्वन्तः श्रावयन्तश्च कथयन्तश्च ते भवं । स्तुवन्तःस्तूयमाना
श्च तुष्यन्ति च रमन्ति च ॥ जन्मकोटिसहस्रेषु नानासंसारयोनिषु । जन्तोर्विगतपापस्य भवे भक्तिः
प्रजायते ॥ उत्पन्नाच भवे भक्तिरनन्या सर्वभावतः । भाविनः कारणे चास्य सर्वयुक्तस्य सर्वथा ॥
एतद्देवेषु दुष्प्राप्यं मनुष्येषु न लभ्यते । निर्विघ्ना निश्चला रुद्रे भक्तिरव्यभिचारिणी ॥ तस्यैवच
प्रसादेन भक्तिरुत्पद्यते नृणां । यया यान्ति परां सिद्धिं तद्भावगतचेतसः ॥ ये सर्वभावानुगताः प्रप
द्यन्ते महेश्वरं । प्रपन्नवत्सलोदेवः संसारात्तान् समुद्धरेत् ॥ एवमन्ये विकुर्वन्ति देवाः संसारमोचनं ।
मनुष्याणामृते देवं नान्याशक्तिस्तपोबलं ॥ इति तेनेन्द्रकल्पेन भगवान् सदसत्पतिः । कृत्तिवासा
स्तुतः कृष्णतण्डिना शुभबुद्धिना ॥ स्तवमेतं भगवतोब्रह्मास्वयमधारयत् । गीयते च सुबद्धेत
ब्रह्मा शङ्करसन्निधौ ॥ इदं पुण्यं पवित्रञ्च सर्वदा पापनाशनं । योगदं मोक्षदञ्चैव स्वर्गदं तोषद
न्तथा ॥ एवमेतत्पठन्तेय एकभक्त्यातुशङ्करे । या गतिः सांख्ययोगानां व्रजन्ते तांगतिन्तदा ॥ स्तव
मेतत्प्रयत्नेन सदा रुद्रस्य सन्निधौ । अब्दमेकं चरेद्भक्तः प्राप्नुयादीप्सितं फलं ॥ एतद्रहस्यम्परमं

ब्रह्मणोहृदि संस्थितं । ब्रह्मा प्रोवाच शक्राय शक्रः प्रोवाच मृत्यवे ॥ मृत्युः प्रोवाच रुद्राणां रुद्रेभ्यस्ताण्डिराप्तवान् । महता तपसा प्राप्तस्तण्डिना ब्रह्मसद्मनि ॥ तण्डिः प्रोवाच शुक्राय गौतमायच भार्गवः । वैवस्वताय मनवे गौतमः प्राह माधव ॥ नारायणाय साध्याय समाधिष्ठाय धीमते । यमाय प्राह भगवान् साध्यो नारायणोऽच्युतः ॥ नाचिकेताय भगवान् प्राह वैवस्वतोयमः ॥ मार्कण्डेयाय वार्ष्णेय नाचिकेतोऽभ्यभाषत । मार्कण्डेयान्मयाप्राप्तोनियमेन जनार्दन । तवाप्यहममित्रघ्न स्तवन्द्द्याद्यविश्रुतं॥ स्वर्ग्यमारोग्यमायुष्यं धन्यं देवेन सम्मितं। नास्यविघ्नं विकुर्वन्ति दानवा यक्षराक्षसाः॥ पिशाचायातुधानाश्च गुह्यका भुजगा तथा। यः पठेत्तु शुचिर्भूत्वा ब्रह्मचारी जितेन्द्रियः। अभग्नयोगोवर्षन्तु सोऽश्वमेधफलं लभेत् ॥ इति महाभारतान्तर्गते दानधर्मोत्तरे महादेवसहस्रनाम समाप्तं ॥ * ॥ वैशम्पायन उवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * * * * * *

कहत भए इमि व्यास मुनि सुनो युधिष्ठिर तात। शिवस्तोत्र यह तुम पढ़ो आनदकर अवदात॥ तुमपै होऊ प्रसन्न अति शङ्कर आनददानि । परम प्रज्ञ धरमज्ञ अति कीरति करण महानि ॥

॥ * ॥ रामगीती छन्द ॥ * ॥

पुत्रकाजै मेरुगिरिपै सुनी यह अवदात । पढ़त भे हम लाय मनकों सुनि युधिष्टिर तात ॥ भयो इच्छत फल सु हमकों प्राप्त यहि तें खस॥तिमिहि ह्वै हो प्राप्त तुम सब कामनाको दक्ष॥कह्यो इमि पुनि कपिल मुनिवर हम सु जन्म अनेक । शिव अराधन कियो चितकों लाय सहित विवेक॥ शम्भु होय कृपाल हमकों भए दैन सु ज्ञान। हरण भवको दुःख अरु बर करण मोद महान॥ तिहि अनन्तर धर्मशील सु चारु शीर्ष सुजान। सखा है सुरनाथको सो ज्ञानमय मतिमान॥परम दायावान अरु आलम्बनोज्ज जौन। कहत भो इमि पंडुसुतसों परम प्रज्ञाभौन॥ जाय कै गोकर्णतीरथमाहिं हम शत वर्ष। शिव अराधन कियो चितकों लाय धरि वर हर्ष॥शम्भु होय कृपाल हमकों दिए सुत शतदक्ष॥लक्ष बर्षसु आयु जिनकी इन्द्रिजित अतिस्वच्छ॥ योनितें नहिं भए ते उत्पन्न अति धरमज्ञ॥तेजवान महान सुन्दर अजर दुखदर प्रज्ञ॥कह्यो इमि पुनि पंडुसुतसों बालमीक ऋषीश। होऊ तुम बर विप्रघातक कह्यो मोहि मुनीश॥मुनिनके यह बचन सुनिकै गए शङ्कर शरण। सफल दरशन तासुको अरु परम दुखको दरण॥गए शरणे शम्भुके हम छुटे अघते भूरि। परम यातें उन्है जाने करण क्लेश हि दूरि।कह्यो ऐसे शंभु मोसों सुयश तव अतिस्वच्छ॥होयगो भूमांहि मेरे बचनसों हे दक्ष। कहत भे सुनि पंडुसुतसों परशुराम सुजान। ऋषिन्ह माहँ भानु ऐसे तेजमान महान॥बन्धुबधसों भए प्रापत क्लेशकों हम उग्र। लयो तब हम शरण शिवको ध्यायकै ह्वै शुद्ध॥ करी अस्तुति शम्भुकी हम सहस नाम हि आपि। उक्ति बर सौं गाय कै शुचि भक्ति हियमें थापि॥ शम्भु होय कृपाल मोपै दयो यह बरदान । रहित होऊ महाँन अघसों अजय होऊ सुजाँन ॥ अजर होऊ न होऊ कबऊ मृत्यु तव ऋषिराज। किए हमकों सर्व प्रापत कृपा तासु दराज॥पुनि सु विश्वामित्र

शा॰प॰ दा॰ध॰ ऐसें कहत भे बरबैंन । रहे पूरब हम सु छत्री क्रोध अतिके अन ॥ ह्वाँहूँ हम वर विप्र जीमे कै बिचार सु एह । हम अराधन कियो शिवको परम आँनदगेह ॥ भई तिनकी कृपातें मोहि प्राप्त द्विजता जान । अतिहि दुरलभ तीन है वर महा आनद भौन ॥ कहत भे पुनि पंडुसुत सों असित देवल दच्छ । अन्यथा हम कियो कबहूँ धर्ममे अति स्वच्छ ॥ पाकसासन कोपतें भो प्राप्त हमकों आप । भो हमारो नष्ट निहित परम धरम कलाप ॥ करी अस्तुति आय कै तब शम्भुकी हम भूप । प्रार्थना सो श्रवण करिकै परम आँनद रूप । आयु यश अरु धर्म मोकों दए पर्म अखर्व । हरन दुखके करण सुखके महा दाँनी सर्व ॥ गृत्समद ऋषि पुरन्दरके सखा पर्म महान । बृहस्पति सम प्रभा जिनकी धर्मबाम सुजान ॥ कहत भे ते पण्डुसुतसों गृत्समद ऋषि दच्छ । रच्यो बत्सर सहसको मघवान यज्ञ सुस्वच्छ ॥ सुनहु नृप ता यज्ञ माही सामबेद अनूप । भो उचारण मान हमसों अन्यथा हे भूप ॥

॥ * ॥ अरिल्लछन्द ॥ * ॥

मनुके सुत वरिष्ठ सो सुनि करि । कहत भए इमि हमसों गुनि करि ॥ पढ्यो आपु नहि नीकें साम हि । यातें गहि सुबुद्धि वर मामहि ॥ करहु बिचार आपु पुनि हिय महँ । यह कहि कै वरिष्ठ ह्वै क्रुध सह ॥ दियो शाप हमको तब यह तिन । होउ विप्र तुम धर्म बुद्धि बिन ॥ * ॥

॥ * ॥ चरणाकुलकछन्द ॥ * ॥

पानीसो ले नही जिहो माहीं । मारुत कबहु लागै नाहीं ॥ मिले और मृग नाही जिहिमे । होय सिंहको डर अति तिहिमे ॥ ऐसे देशमाहि दुख पैकै । कुत्सित अतिहि क्रूर मृग ह्वै कै ॥ रहो आय तजि कै सब हर्षन । ग्यारह सहस आठशत बर्षन ॥ सुनतहि आप मृगा हम भए । तासु अनन्तर शिवपै गए ॥ क्रोधित देखि मोहि शिव दानी । कहत भए कै कृपा महानी ॥ * ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

अजर अमर तुम होउ अरु होउ दुखसों दूरि । सुनहु ग्रत्समद ऋषि महत लहो अनन्दहि भूरि ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

रहो नित्य समभाव तुम्हरो अरु मघवानको । सुनहु पर्म ऋषिराव बढो योग्य आनन्द कर ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

इमि सु अनुग्रह करतहैं शङ्कर श्रीभगवान । सुनहु युधिष्ठिर भूप वर प्रज्ञावांन महांन ॥
महा मोदके करणहु हरण दुःखको दाप । श्री हर शरण महान हैं हरण तीनहु ताप ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

नित्य अगोचर स्वच्छ मनसा वाचा करमसों । उनसों कारण दच्छ देव सुनहु धरणी शरण ॥
बोले फेरि सुजांन वासुदेव आनन्द कर । जगके हेतु महांन आसुनाम अति दुख हरण ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

शिवको किए प्रसन्न हम कै तप पर्म्म महान। कहत भए ऐसैं हमैं तब शङ्कर भगवान॥

॥ * ॥ रामगीतीछन्द ॥ * ॥

लगत सबकौं आतमा निज परमप्यारो चारु। होऊ गे तिहि तुल्य प्यारे सबै आप उदारु॥ युद्धमाहीं होयगी तव पराजय कबहूँ न। अमि ऐसो होयगो तव तेज दिन दिन दून ॥ दए इमि बरदान मोकौं बहुत और अनेक। सुनहु पाण्डव धर्म्मधर वर धरैं परम बिबेक ॥ * ॥

॥ * ॥ अरिलछन्द ॥ * ॥

सुनहु प्रथम अवतारमाहिँ बर। परम सु मणि मन्याचल ऊपर ॥ लाखन वर्ष शिवहि पूजे हम। और न देव परम तिनकी सम ॥ ह्वै कृपाल तब बोले पशुपति। मागहु बर अब बेर करहु मति ॥ मन बांछित तुम्हरे जो होय सु। देहौं कृष्ण तुम्हैं अब सोई सु ॥ नाथ माथ बोले हम इमि तव। शङ्कर तुम दानी है बर सब॥ दयाकरि औ आपु सु हम पर। नित्य निरन्तर देहु भक्ति बर॥ एवमस्तु कहि शङ्कर तिहिपल। अन्तरध्यान भए ताही पल ॥ * ॥ जैगीषव्यउवाच ॥ * ॥ सुनहु युधिष्ठिर नृपति धर्म्म धर। काशीमांहि सु पूजे हम हर॥ ह्वै कृपाल मो ऊपर पशुपति। दियो मोहि ऐश्वर्य परम अति ॥ * ॥ गर्गउवाच ॥ * ॥ नदी सरस्वतीके तट बर पर। ध्याम मानसिकसौं मोपर हर ॥ होय कृपाल पर्म्म सुनि भूपति। कला ज्ञान दीन्हौं मोकौं अति॥ अरु सहस दीन्हैं मोकौं सुत। ते सब मो सम बर मेधायुत॥ * ॥ चरणादोहा ॥ *

आयु दई दशलत्त वर्षकी सुत सह मोकों सर्व। सुनहु पाण्डुसुत पर्म बर मेधावान अखर्व॥

॥ * ॥ पराशरउवाच ॥ * ॥ आभीरछन्द ॥ * ॥

शिवकौं विधिसौं पूजि। कै प्रसन्न अति कूजि ॥ मनमे चिन्तन एह। कीन्हों हम बुधिगेह॥ जोगी परम महांन। सुयशी प्रज्ञावान् ॥ दयावान् श्रीवान्। बर बेदज्ञ सुजान॥

॥ * ॥ चरणादोहा ॥ * ॥

शम्भु कृपातैं होय हमारे ऐसो सुवन अनूप। शम्भु बूझि मेम मनको मत यह बोले आनद रूप॥

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

सुनहु बिप्र चिन्तमतैं एह। ह्वै है तेरे सुत बुधि गेह ॥ कृष्ण नाम यशवांन महान। परम तेजसी प्रज्ञावांन॥ * * * * * ॥ दोहा ॥ * * * * * * *

सावर्णिक मनुके समय सात ऋषिणमे जोन। मिलि है अरु वेदज्ञ बर ह्वै है सुनि द्विजतौन॥

॥ * ॥ तोमरछन्द ॥ * ॥

कुरुवंशको करतासु। बर धर्म्मको धरतासु ॥ इतिहास कर्त्ता सच। हित सर्वजनको दच॥

शा०प०
दा०ध० अब इन्द्रको प्रिय धर्म्म । बर वीर्य्य वान अधर्म्म ॥ अरु योगवान महान ।शिवमान शुद्ध सुजान ।

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

ऐसो व्हैहै सुवन तुव पराशर सुखपोष । यह बर दै मोकों भए अन्तरध्यान निरोष ॥

॥ * ॥ पञ्झटीछन्द ॥ * ॥

माण्डव्यउवाच ॥ * ॥ हम चोर हे न पै चोरसाथ । अनसों गहि हमकों भूमिनाथ॥बिन जाने दिए सूरी चढाय। सूरीपर शिवको ध्यान लाय ॥ हम करत भए अस्तुति महान। तब व्है कृपालु शिव मुनि सुजान ॥ इमि कहत भए मोसों अनूप । अति दयावान आनद रूप ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

सूरीतें तुम छूटि हो अब मांडव बर विप्र । रहि हो सोई महांन तुम मेरे बरतें चिप्र ॥
आधि व्याधिसों रहित व्है जीहो अर्बुद वर्ष । सब तीरथमे न्हान तुम करिहो होय सहर्ष ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

अक्षय स्वर्ग महांन देहैं तुमकों विप्र हम । यह कहिके ईशान अन्तरध्यान भए सुनो ॥

॥ * ॥रामगिती छन्द ॥ ॥ * ॥

गालवउवाच ॥ * ॥ सेय विश्वामित्रको आज्ञाहि हम हे भूप । पितादरशन काज आए गेह माहिं अनूप ॥ रुदन करती मात मोसों कह्यो ऐसें बैंन । शीलमान महान मुनि सुत बुद्धिके वर अन ॥ भए तरुण सुजांन भूषित वेदसों सुखदान ।सेय आज्ञा गाधिसुतकी विनै के सु महांन ॥ पिता दरशन काज आए भरे प्रेम अनूप। हाय पै नहि लखत है तब पिता तुम्हरो रूप ॥ बचन सुनिए पिता दरशनमांहि होय निरास । गए शरणे शम्भुके हम परम आनदरास ॥ कृपा कै अति शम्भु मोपै कहत भे इमि बैंन। सुनऊँ गालव विप्र प्रज्ञावान श्रुतिके ऐंन ॥ मृत्युसों तुम रहित होगे मात पित सह विप्र। पिता दरशन पाय हो तुम आऊ म्हहमे चिप्र॥ पाय ऐसें शम्भु आज्ञा गेहमे हम जाय। परम मोदद पिताकों हम भए लखत सचाय ॥ पिता मेरे यज्ञ करि कै रहे बैठे पर्म्म। नीरसों भरि लिए लोचन मोहि देखि सधर्म्म ॥ लग्यो करण प्रणाम मे तब सुनि युधिष्ठिर भूप। अन्त लकरी कुशा तजिकै भरे प्रेम अनूप॥ चूमि मुख मो मिलि सु मोसों कृपा दै अति उद्ध । भए कहत सु मोहि ऐसें बचन प्यारे शुद्ध ॥ * * * ॥ सोरठा ॥ * * *

आयो मेरे पास विद्याकों पढि कै सुवन। लखो तुम्हें सुदरास भलो भयो हमकों हरष॥

॥ * ॥ रामगीतिछन्द ॥ * ॥

वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥मुनिन करिकै कह्यो जो है कर्म्म शिवको स्वच्छ। करत बिस्मय भयो सुनिकै नृप युधिष्ठिर दच्छ ॥ कहत भे तब कृष्ण असें पण्डुसुतसों पर्म्म। कहत जैसें विष्णु निज रनायसों बिन भर्म्म ॥ * ॥ वासुदेवउवाच ॥ * ॥ भानु ऐसे तेज सब उपमन्यु ऋषि अतिदच्छ ॥ होय सोहैं बचन मोसों कहे ऐसे स्वच्छ ॥ * * * ॥ सोरठा ॥ * * * *

भए पापसों जोन मलिन तमगुण रजगुणी । लहत कबहुँ नहि तान जन शरणो ईशानको ॥
द्विज सतोगुणी जौन लहत शम्भुको शरण ते । सुनि हे आनदभौन जग कारण बसुदेव सुत ॥

॥ ✱ ॥ महीधरीछन्द ॥ ✱ ॥

ब्रह्मपद अरु बिष्णुपद सुरराज पद शिव देत हैं। सुनहुँ हे श्रीकृष्ण शिव सब मोददानी देत हैं। भए ते परसन्न देत सु राजपद तिहुलोकको। और नाहीं देव ऐसो हरण सबही शोकको।

॥ ✱ । जयकरीछन्द ॥ ✱ ॥

मनसाहूसों होत सु जौन। शरणे शङ्करके जन तौन ॥ रहित सर्व पापनसों होय। सुरके साथ बसैं मुदभोय ॥ भे दै धाम तडाग महान। सब जगको जो हिंसावान ॥ ऐसो जन अघतें छुटि जात। शङ्करके शरणे अब दात ॥ ✱✱ ॥ रामगीतोछन्द ॥ ✱✱✱

कीट पक्षि पतङ्ग सर्पादिक सु जीव जितेक। लहैं शरण शम्भुको ते लहत भय नहि एक ॥ जान जन हैं शरणमे ईशानके जन तौन । लहत नहि संसारको भय सुनहु आनदभौन ॥ हे हमारी बुद्धि मे निश्चय सु यह अति पर्म्म । सुनहु श्रीबसुदेव नन्दन करण भूरि सधर्म्म ॥ पुनह बोल कृष्ण पण्डू नन्दसों इमि बैन । भक्तपालक दुष्टघालक महा आनद ऐन ॥ ✱ ॥ बिष्णुरुवाच ॥ ✱ ॥ भानु चन्द्र सु भूमि अप अरु अनल अनिल अकाश। शक बिश्वेदेव ब्रह्मा बेद ज्ञान प्रकाश॥ सत्य यज्ञ सु दक्षिणा अरु बेद पाठक पर्म्म। सोम बर्षी यज्ञकारक हव्य अरु बर धर्म्म ॥ मज रक्षा बिप्र बौषट काल चक्र सु जौन । सुयश स्वाहा सञ्जम सु अरु अशुभ शुभ सब तौन ॥ सप्त मुनि अरु सूक्ष्म बुद्धि सु कर्म्म कीजो सिद्धि। देवतागण उष्मपा अरु सोमपा सु प्रसिद्धि ॥ हविष्पा अरु मन्थपा आभासुरा सुर चारु। देवता सभकरहुँ पूरण यज्ञ इह सुविचारु। दरशपा अरु परम असना आज्यपा हैं जौन। और जे सब देवता हैं सुनि युधिष्ठिर तौन ।✱। पज्झटीछन्द ॥

गन्धर्ब यक्ष पन्नग सुपर्ण। दानव पिशाच माया सुधर्ण ॥ चारण सुदुष्य अरु सुख महान। अरु सांख्ययोग सुनि नृप सुजानं ॥ ए सर्ब सर्वतैं भए जानि । सब देवकी पांति सु महानि ॥ सुखदा सब जगको जानि भूप। आनद स्वरूप अरु अति अनूप ॥ आनन्द रूप शिवतैं अनूप । सब देव भए उतपन्न भूप ॥ आकाश आदि हैं भूत जौन। तिनके करता हैं सुमति भौन ॥ सब भुवननके रक्षक महान ॥ सुनि पण्डु सुवन बर ज्ञानवान ॥ ✱ ॥ चरणादोहा ॥ ✱ ॥

शुद्ध तत्वकी इच्छा जिनको ऐसे हैं जन जान। सेवा करिवे योग्य हैं तिन सों सुर सुख भौन॥

॥ ✱ ॥ रामगीतिछन्द ॥ ✱ ॥

धरणि मांहीं पैठि कै ते देव सुनिहे भूप। शम्भुकी प्राचीन जो यह सृष्टि पर्म्म अनूप ॥ करैं रक्षा तासुकी निति सहित प्रीति महान। होत जैसें बीजतें उतपन्न बीज सुजान ॥ तिमि अनादि सुसृष्टिके परवाह मांहि अनूप। परम आनंद रूप पूरब ईशतें सुनि भूप ॥ और और सु होत हे

शा॰प॰ दा॰ध॰ उतपन्न ईश अनिन्द। सुनु युधिष्ठिर धर्म्म धर बर धर्म नन्द नरिन्द॥ बीर्य्यकी शुचि शक्ति जे सें भूमिमाही शुद्ध। करति वृक्ष सु मृत्तिकाकौ कहत हैं बुध उद्ध॥ *◆* ॥ दोहा॥ *◆* ॥

ईश्वरकी जो शक्ति सो तैसें हो भूपाल। करता है चिनमात्रकौ विश्वाकार विशाल॥

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

ईश्वरको सु बिराट स्वरूप। लखत ध्यानसौं सुजन अनूप॥ मनसा बाचासो है जौन। तत्व अगोचर सुनि बुधिभौन॥ हैं हम ताके शरणें स्वत्त। सुनि हे भूप युधिष्ठिर दत्त॥ देहि हमें बांछित बरदान। सोई सदा परम भगवान॥ थिरि करि कै इन्द्रिनिकौं सर्व। धरि कै प्रेमहिं पर्म्म अखर्व॥ शिव स्तोत्रकौ पढै सु जौन। मास एक गहि नेम हि तौन॥ अश्वमेधके फलहि महांन। प्रापत होत सुनऊं मतिमान॥ जौं द्विज पढै होय सह धर्म्म। सब बेदज्ञ होय तौ पर्म्म॥ जौ क्षत्रिय सु पढै मतिमान। लहै राज्य अरु कीर्त्ति महान॥ पढै बैश्य जौं करि असनान। व्यापारक तौ होय महान॥ पढै शूद्र जौं गहिकै नेम। तौ निति रहै परम सह क्षेम॥ मरैं सुगतिकौं प्रापत होत। सुनऊं युधिष्ठिर प्रज्ञा पोत॥ शङ्करमे जो ध्यान लगाय। पढै स्तोत्रहि परम सचाय॥ तिहिके हौंहि सर्व अघ दूरि। बढै पुण्य अरु आनद भूरि॥ जितनें रोम देहके बीच। तितनें बर्ष हजार निभीच॥ रहै स्वर्गमे सुनिहे भूप। धर्म्मवान बर पर्म्म अनूप॥ *◆*◆*◆*◆*◆

स्वस्ति श्रीमहाराजाधिराजकाशीराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना बन्दीजनकाशीवासिरघुनाथकवीश्वरात्मजेन गोकुलनाथस्य शिष्येण मणिदेवेन कविना बिरचिते भाषामहाभारत दर्पणे दानधर्म्मे अष्टादशोऽध्यायः॥ *◆*◆*◆*◆*◆*◆*◆*◆*◆*

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

योग्य जानिवे जौन ईश्वर अति आनन्द कर। सुनऊं तात बुधिभौन जान्यो तुम सो तौन हम॥

॥ * ॥ * ॥ मधुभारछन्द ॥ * ॥ * ॥

संशय महांन। एक भो सुजान॥ सो करऊ दूरि। अब आप भूरि॥ *◆*◆*◆*◆

॥ * ॥ रामगीतीछन्द ॥ * ॥

करै धर्म्म हिं सहित पत्नी शास्त्रमाही एह। कह्यो है बर बृद्ध जन सुनि पितामह बुधि गेह॥ पूर्वही कर ग्रहणके सह भाव तियको जौंन। है कहा यहि मांहिं संशय होत है बुधिभौंन॥ कह्यो जो है ऋषिन्ह पूरब धर्म्म तिय सह जौन॥ कहा है यह तौन शेसौं कहो प्रज्ञाभौन। प्रकाशित यह कियो श्रुतिको मंत्रसौं मुनिराज। कियो है की प्रजापति यह धर्म्म सन्तति काज॥ *◆*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

इन्द्रिहिंके सुखहेत है की यह तिय सह धर्म्म। संशय होत महांन है मेरे हियमे पर्म्म॥

यहींलोकमे लखत है तिय सह जो यह धर्म्म। लखत नही परलोकमे सुनऊं पितामह पर्म्म॥

पूछब एके मरतहैं जीवतरहैं सु एक । कहाँ रहत यह भावहैं सुनऊ तात सविवेक ॥

॥ * ॥ रामगीतीछन्द ॥ * ॥

करत पिय तिय कर्म्म सब पै सुनऊ तात सु जान । होत निज निज वासनावों धर्म्म भेद महान ॥
बहुत विधिके धर्म्मफलसों युक्त बहु जन पर्म । कर्म्मकी बहुवासनावों युक्त बहुत अधर्म ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

साहस कपट अरु मूर्खता इस्त्रिनके ए धर्म । धर्मप्रवक्ता कहतहैं सुनिए तात अधर्म ॥
ऐसे होत सुभावहैं इस्त्रिनके जौं तात । तौ सहधर्म सु कहत किमि ज्ञानवान अवदात ॥

॥ * ॥ रामगीतीछन्द ॥ * ॥

मदोहै सहधर्म है यह धर्मको उपचार । सुनि पितामह धर्मधर बर ज्ञानवान सुढार ॥ * ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

बिनु अन्तर चिन्तन करत मोको जो यह बात । भासतिहै गम्भीर अति सुनिए भीषम तात ॥
दूरिहोय जिहि हेतसों यह संदेह महान । तौंन हेत हमसों कहो तुम हो परम सुजान ॥

॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

यहि परसङ्ग माहि सुनि भूप।कहत एक इतिहास अनूप॥ उत्तरदिशा साथ अतिस्वच्छ।अष्टावक्र ऋषीको दच्छ ॥ तामेहै सम्वाद अनूप । सुनिए तौन युधिष्ठिरभूप॥ *****

॥ * ॥ चरणाकुलकछन्द ॥ * ॥

गृह आश्रमकी इच्छा करिके। अष्टावक्र ऋषी मुदभरिके॥ ऋषि वदान्यसा मागी कन्या। नाम सुप्रभा जेहिको धन्या ॥ महा सुन्दरी परम अनूपा । लजै चन्द जिहिको लखि रूपा ॥ शील सुभाव गुणनसों सो है। ऐसी सुन्दरनैनी को है॥ अष्टावक्र ऋषीके मनकों। मोह्यो जिहिं दिखायके तनकों॥ ऋतु बसन्तके माहीं नीके। फूले फरे वृच्छ अतसीके॥ जैसें तुरितहि मनकों मेरहत।मोहि लियो तिमि ऋषिको ओहत॥ऋषि वदान्य तब बोलत भए।तपके परम तेजसो छए॥

॥ * ॥ चरण दोहा ॥ * ॥

कन्या तुमकों देहैं पर एक सुनो हमारी बात । अष्टावक्र ऋषी तपबर ज्ञानवान अवदात ॥

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥

पुण्यमई उत्तरदिशि आउ । लखिहौ तहां सुनऊँ ऋषिराउ ॥ अष्टावक्रउवाच ॥ उहाँ जाय का लखिहैं तौन । कहो मोहि रिषि प्रश्न भौंन ॥ जैसो कहिहो हमकों आप । तैसो करिहैं पुण्यकलाप ॥ वदान्यउवाच ॥ कुबेर अगार हिमाचल पर्म । उलँघि इन्हैं तुम जाऊ अभर्म ॥ अगर तहाँ शिवको अतिस्वच्छ । अमन्द बिलन्द अनूपमदच्छ ॥ *****

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

सेवित जो चारणनसों अरु सिद्धनसों पर्म । रहत जहाँ बहु पारषद बहुमुखके सहधर्म्म ॥

शा०प० युक्त तासु सुर असुर सौं शिवहि रिझावन जाय। बाँधि बाँधि शिवके सुभाव गाथि गाथि रहजाय॥
दा०ध० शिवकौ प्यारो जगत अति रहत तहाँ नित सर्व। महा दिव्य हम सुनतहैं मुनि तपवान अखर्व॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

करी शम्भुके काज तहाँ तपस्या अम्बिका। यातें जगत दराज प्यारो शिव अरु शक्तिकौं॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

पारसगिरिके पूर्व अरु शिवके उत्तर पर्व। तहँ उपासना करतहैं शिवकी देव अखर्व॥

॥ * ॥ चरणा दोहा ॥ * ॥

तामऊँ थान उलङ्घि जाइयो आगें तुम ऋषिराज। तहाँ देखिहो नीलवन घनकेसदृश दराज॥
मनहर अति रमणीयहै ता वनमें एक दार। लखिहौ अष्टावक्रतुम तपके परम अगार॥
तपसिन अरु ऋतिहों वृद्धा महा भाग्य सदृ ताम। यज्ञ क्रियामें निपुणअति सुमऊँ सुऋषि बुधिधाम॥
दरशन पूजन योग्य दारहै तौन सुऋषिवर। ताहि देखि फिरि आउ तबै तुम करऊ ग्रहण कर॥
यह सङ्केतहि सिद्धि करणकौं आज्ञ आपु अब॥ * ॥अष्टावक्र उवाच॥ * ॥तुम जो कह्यो वदान्य सुनऊ सोकरिहैं हम सब॥ * * ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ * * * * * *
जहाँ जायबेकौं कह्यो हमकौं तुम ऋषिराय। तहाँ जायहैं होऊँ तव वचन सिद्धि सुखदाय॥

॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

सुनऊ युधिष्ठिर भूप अष्टावक्र ऋषीश दर। उत्तरदिशिहि अनूप चले भरे अति हर्षसों॥

॥ * ॥ रामगीतीछन्द ॥ * ॥

आयकै हिमवानगिरिपै महातैं मुनि भूप। गए सरिता बाऊदामें भरी सलिल अनूप॥ आयकै पुनि विमल धार अशोक तीरथ बीच। न्हाय सुचिव्है देवतनकौं किए तृप्त निभीच॥ बनै आसन कुशाको तहँ बसे बर ऋषिराय। कै वितीत निसाहि उठिकै प्रात न्हाय सचाय॥ अग्निकौं प्रज्वलित करिकै करी अस्तुति सच। सुनि युधिष्ठिर परम अष्टावक्र ऋषिमतिदच॥ * * *

॥ * ॥ चरणा दोहा ॥ * ॥

आय रुद्र रुद्राणी माहीं तहाँरहे कछु बार। चले फेरि कैलाशपरवतहि ऋषिवर सुमति अगार॥

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

तहाँ धनदको काञ्चन द्वार। देख्यो ऋषिवर सुमति अगार॥ अरु मन्दाकिनि नदिका धार। लखी सलिलसोंभरी सुढार॥ नलिनीको बर बिपिनि अनूप। देख्यो तहाँ ऋषी मुद रूप॥ नलिनी वनके रक्षक जौन। मणिभद्र आदिक सब तौन॥ लखिकै ऋषिकौं उठे सचाय। सुनऊ युधिष्ठिर हे नरराय॥ मणिभद्र आदिकको पर्म। आदर कीन्हों ऋषी सधर्म॥ तब तों कह्यो ऋषी दषि

बैन । सब तुम जाय धनदके अन ॥ कहो धनदसों इमि बर बात । अष्टावक्र आय अवदात ॥

॥ * ॥ चरणाकुलकछन्द ॥ * ॥

तेराक्षस सब बोलत भए । मणिभद्र आदिक मुद छए ॥ आपुहि आवत पास तुम्हारे । भूप धनद महिमासों भारे ॥ तुम्हरो आवन कारय जाना । धनदराय बच्चवान महाना ॥ देखो इनकों तुम ऋषिराजा । तेजवांन मतिवांन दराजा ॥ यक्षराज इतनेमे आए । ऋषिसों बूझि कुशल मुद छाए ॥ पुनि ऋषिसों इमि बोलत भए । यक्षराज अति रतिसों रए ॥ आए सुखसों तुम ऋषि राजा । कहो आपु आवनको काजा ॥ जो तुम कहिहो सो हम करिहैं । औरन भाव हिएमे धरिहैं ॥ करो हमारे भौन प्रवेशा । यों कहत भयो यक्षेशा ॥ इत कारय सतकारित व्हैके । आपु आइयो मुदसों व्है के ॥ ऐसें कहि रिषिकों सँग लए । अपने महलकों आवत भए ॥ ल्याय गेहमे आसन दीन्हो । बिधिसों ऋषिको पूजन कीन्हो ॥ बैठ मोद भरे अति दोऊ । जिनकी समताको नहि कोऊ ॥ मणिभद्र आदिक गण आए । बैठत भए मोदसों छाए ॥ और यक्ष किन्नर गन्धर्वा । बैठत भए आयके सर्वा ॥ बैठे आय सबै तब नीके । बोले बचन यक्षपति नीके ॥ जौं सुहोय आज्ञा तब नीकी । नाचैं तौ सु अप्सरा वाकी ॥ * ॥ चरणा दोहा ॥ * ॥ ❁*❁*❁*❁*❁*

सुश्रूषा तव कीबो चाहो अष्टावक्र ऋषीश । इह यक्षपति ऐसें बोले पाण्डव सुनऊ महीश ॥

अष्टावक्र ऋषीश तब बोले इमि सुनि बैंन । होय नृत्य सुनि यक्षपति महा बुद्धिके ऐंन ॥

॥ रामगीती छन्द ॥ * ॥

उर्बरा रम्भा सुकेशी उर्वसी रति चारु । घृताची चित्राङ्गदा सुमुखी सु पर्भ सुदारु ॥ ❁*❁*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

अलम्बुषा अरु मनहरा चित्रा परम अनूप । प्रम्लमी दान्ता बिद्युता हासनि प्रभा सुरूप ॥

बिद्योता रुचि अप्सरा इतनी नचति सभाय । और किती नचती भई सुंदरि परम सचाय ॥

॥ * ॥ चरणादोहा ॥ * ॥

भए बजावत बहु प्रकारके बाजा बर गन्धर्व। नाच देखि अरु बाजा सुनि ऋषि मोदित भए अखर्व॥

प्रवृति भए गन्धर्वरागकी अतिही दिब्य अनूप। राग माहिं अति लीनहोय ऋषि बसे तहँ मुदरूप॥

वत्सर ऊपर बिते किते दिन नाचलखत ऋषिराय। यक्षराज तब ऐसें ऋषिसों कह्यो मोदसोंछाय॥

अहजो बिषय मनोहर अतिहै गांधर्व याकोनाम। जैसें कहो आपु यह तैसें प्रवृत रहै बुधिधाम ॥

पूजनीयहौ अतिबहो है तुम्हरो महल एह । आँन करो आज्ञा तुम हम सो करैं तीन बुधिगेह ॥

॥ * ॥ चरणाकुलक छन्द ॥ * ॥

तब ऋषि ऐसें बोलत भए । यक्षराजसों मुदसों रए ॥ तुमसों हम अति आनद पायो । रहो धाम तव मुदसों छायो ॥ यथा योग्य हम पूजित भए । तुमसों यक्षराज बुधिछए ॥ सुनऊँ

शा०प० यज्ञपति जैहैं अब हम । तुम्हैं योग्यहै कियो ज्ञान तुम ॥ ** ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ **

दा०ध० यज्ञराज तुमपै भए हम प्रसन्नहैं पर्म्म । बुद्धिमान सब योग्यहौ बरयश्मधान सधर्म्म ॥

॥ * ॥ रामगोती छन्द ॥ * ॥

आपुके परसादतें मुनि यज्ञराज सुजान । औ बदान्यरिषीशकी आज्ञा सुत मतिमान ॥ जांयंगेहम होउ तुम बर रिद्धिमांन महान । देयकै आशीस औदहि महाऋषि तपवान ॥ चले उत्तरदिशाकों आनन्दसों हिय छाय । परम गिरिकैलाश मन्दिर हेम नाघि सचाय ॥ भयो वपुष किरातको जँहँ महादेव अनूप । भए पहुंचत तहां अष्टावक्र ऋषि तपरूप ॥ मुनि युधिष्ठिर नम्रह्वै ऋषि प्रेम गहिकै पर्म । थानकी परदक्षिणा को कै प्रणाम सधर्म ॥ उतरिकै भूमांहिं परसन होतभे रिषिराय । तीन बेर प्रदक्षिणाकै अचलकी ऋषि राय ॥ परम सम भू माहि उत्तर चलेसु ऋषि सु जान । जाय आगें भए देखत परम सुन्दर थान ॥ तौंन थल रमणीय बनसों परम भूषित स्वच्छ । सर्वऋतुमे फूल फलसों युक्तजो सुनि दक्ष ॥ युक्त थरु पक्षीएसों कल शब्दबारे जौंन । तहां एक अति स्वच्छ आश्रम भए देखत तौंन ॥ लखे बिबिधाकारके गिरि हेमके अति चारु । लसैं जिनके रतन भूषित शिखर उच्च सुढारु ॥ लखीपुनि मणि भूमि माही परम बापी स्वच्छ । और थल रमणीय लखिकै सुनऊ भूपति दक्ष ॥ रमितभो मन आतिहि अष्टा वक्र ऋषिको पर्म्म । तहाँ देख्यो एक कंचन सौध सु रिषि अभर्म्म ॥ सर्ब मणिसों जडित अरुवर धनद ग्रहसों चारु । लसत चारो ओर जिहिके हेम अचल सुढारु ॥ अति हि रम्य बिमान जेहां रत्न रम्य अनेक । लखत मोदित भए अष्टावक्र ऋषि सबिबेक ॥ लसत मणि तँहँ पर्म्म परमा मई भूरि सुढारु । आपनीहीं प्रभासा जे प्रकाशित हैं चारु ॥ * ॥ चरणा दोहा ॥ * ॥ * ॥ * ॥

हीरनसोंभूषितहै तहँ कीभूमिअमन्दअनूप । धर्म्मवान यशवान बर सुनऊ युधिष्ठिर भूप ॥
हीरनके तोरणसों भूषित सोभा भरे अमन्द । चारो ओर सौधहैं जाके ऐसे परम बिलंन्द ॥
लागी मोतिनकोहै झालरि जिनमे परम सुढार । ऐसे चारु चादनी जिनसों सोहत त आगार ॥

॥ * ॥ मोतीदाम छन्द ॥ * ॥

रिषीनसों स्वच्छ बिभूषित जौंन । मनोहर पर्म्म लख्योथल तौंन ॥ तपस्वनिको सु कहा बरबास । भयो यह संशयको परकास ॥ चहूँदिशि देखि रिषीश सु आँन । भयो इमि बोलत बैंन सुठान ॥

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

अतिय इहां हम आए एह । जानै जौंन होय इहि गेह ॥ यह सुनि सप्त सु कन्या चारु । निकसीं ग्रहतें परम सुढारु ॥ सबहि मनोहरि पर्म्म सुजानि । महामनोहर जे बरखानि ॥ जिहि जिहिका देखत ऋषि राय । तेते मनकों हरति सचाय ॥ ** ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ **

ऐसो मनबिनसं लग्यो लखिकै तिनको रूप । वारण करिव योग्य नहि भए ऋषीश अनूप ॥

भए धरत अब धीरता अष्टावक्र ऋषयाश। तब कन्या बोलति भई मुनिसों बर धरणीश॥ ग्रा०८०
॥ * ॥ पञ्जकलो छन्द ॥ * ॥ द्रा०१०

करिए प्रवेश ग्रहमाँहि आप। मुनिसों ऋषीश बर तप कलाप॥ कौतुक समेत ऋषि गेह बीच। कीन्हो प्रवेश मुनि नृप निमीच॥ पैन्हें सुबसन बर अतिहि चारु। अरु सर्व परम भूषण सुढारु॥ बैठो सु पलँगपे अतिहि स्वच्छ। वृद्धा सुदार देखी सु दच्छ॥ आशीरबाद दीन्हो सु ताहि। ऋषि राय मोद सह ताहि चाहि॥ इमि कहत भई उठि दार बैंन। ऋषिराय बैठिए तेज ऐंन॥ अष्टा वक्र उवाच॥ * ॥ ओ शान्त ज्ञानवन्ती सु होय। तुम सर्वमाहि ये कहऊ शोय॥ अरु और बाम निज निज सु ऐंन। सब जाऊ हमारे सुनि सुबैन॥ ❦❦❦ ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ ❦❦❦

सुनि यह बैन ऋषीशकी कार प्रदच्छिणा सर्व। अपने अपने गृह गई वृद्धा रही अखर्ब॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

करऊ सैंन ऋषिराय यह अति सुन्दर शेयपर। वृद्धा कह्यो सभाय ऐसें अष्टावक्रसों॥
सुनि वृद्धाके बैंन ऐसे ऋषि तपनिधि कह्यो। तुमहूँ करिए सैंन बीती है रजनी बहुत॥

॥ * ॥ अन्त गुरुतोमरछन्द॥ * ॥

सुनि बैंन ऋऋषि रायके। अति स्वच्छ सुन्दर भायके॥ **❦* ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ *❦*
बैठी दूजी शेयपर वृद्धा परम सुजानि। सुखदा शोभासें भई बर रमणीय महानि॥

॥ * ॥ रामगीतीछन्द ॥ * ॥

कछुक पीछें काँपती अति दार वृद्धा ऐंन। मोहि लागो शीत है कहि बैंन ऐसें तैंन॥ जाय बैठी शेयजपर ऋषीको अति स्वच्छ। आउ बैठो कह्यो उठि कै ऋषी सादर दच्छ॥ भुजा भरि कै ऋषीजूकों लए उरसों लाय। भो विकारित नाहि ऋषिको चित्त लखि तिय भाय॥ ऋषी अष्टा वक्रजूकों काष्टवत लखि बाल। भई कहती ऋषीसों इमि होय कै बेहाल॥ कामसों हम भई मोहित सुनऊँ हे ऋषिराय। चाहती हैं तुम्हैं हमकों चहो तुमऊँ सचाय॥ होय कामी करऊ मेरे साथमाहि बिहार। कामसों हम दुखित ह्वे के कहति बुद्धि अगार॥ *❦*❦*❦*❦

॥ * ॥ अरिलछन्द ॥ * ॥

तुममे कामारत हैं हम अति। करु आलिङ्गन हमसों गहि रति॥ यह तव तपको है उत्तमफल। सुनऊँ ऋषी बर धर्मबाँन कल॥ *❦*॥*॥ दोहा ॥ * ॥ *❦*❦*❦*❦

धन आलय अरु और बसु जे देखत हो ऋषि आप। तिनके हो प्रभु आपही सुनिए धर्म कलाप॥
अरु मेरेहू आपु हीं हो प्रभु हे मतिवान। यहमे नहि संदेह है धर्मबाँन यशबाँन॥

आ०प०
दा०ध०

॥ * ॥ पज्झटीछन्द ॥ * ॥

यह औ अनूप वर बन सुढार । तिहिमाहि करो सो सबै बिहार॥सब कामदानि हैं बिपिनि एह । सुनि सुऋषि महा तप बुधिगेह ॥ हम कांमसिद्धि करिहैं तुम्हार । सब सुनऊँ ऋषोवर बुद्धि अगार॥ ॥ * ॥ सुन्दरीछन्द ॥ * ॥
सो सबमे करिये सु बिहारहि । मै बस हौं ऋषिराज तुम्हार हि ॥ देवनके अरु मानुषके सब । भोग महा मिलिहैं तुमको अब ॥ ॥ * ॥ रामगीतीछन्द ॥ * ॥ *
पुरुष सङ्ग बिहार जो सो तियनकौं सुख पर्म । और सुख न समान इहिकी सुनऊ सुऋषि सधर्म ॥ भई प्रेरित कामसौं जे बाम हे ऋषिराय । चलति इच्छा आपनी सौं बाम ते सह घाय ॥ भई प्रेरित कांमसौं ते तप्त बारू माहिं । चलतिहैं पैं उन्हैं ताती जानि आती नाहि॥ अष्टावक्र उवाच ॥ * ॥ करत नहि परदारके हम साथ माहि बिहार । धर्मशास्त्र सु माहि दूखित हे सु यह हे दार ॥ ॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥ * *
प्रह आश्रमके बीच इच्छा भई प्रवेशकी । सो मनमाहि निभीच बुद्धि धाम बर बाम सुनि ॥
हे हम अबहि अजांन बिषयमाहि हे दार सुनि । सन्तति चहत सुजांन काज धर्म सुखसाजके॥

॥ * ॥ रामगीती ॥ * ॥

धर्म जनित सु पुत्र सो शुभ लोकको हम पर्म ।प्राप्त ह्वैहैं सुनऊँ बृद्धा दार अतिहिं अधर्म । होऊ निवृतिहि प्राप्त तूं हे जानिके बरधर्म॥स्युवाच॥ अग्नि मारुत वायु आदिक देवताहैं जौन।तियनकौं नहि लगत प्यारे सुनऊँ प्रज्ञाभौन॥लगे प्यारो बामको हे परम केवल काम।बामकी रति रहति रतिहोमाहि हे बुद्धिधाम ॥ होति रतिमे निपुण एको बाम सहसनबीच। पतिब्रता एक होति लाखणमाहि सुनऊँ निभीच॥ दार नहि पित मात जांनै यो न देवर भ्रात।पतिहि जानै नाहि यौं नहि पुत्रकौं अवदात॥जानतीं हैं एक केवल कामकेलि सचाय । सरित जैसैं आपनें बर कूल देति गिराय ॥ हनति इमिही कूलहि अपने दार ते ऋषि राय । प्रजापति सब दोष लखिके कहे ए तिय भाय ॥भीष्मउवाच॥ सुनि युधिष्ठिर ऋषी अष्टावक्र सुनिकैं एह। दारदोष बिचारते इमि कहत भे बुधिगेह ॥ होय चुप के चित्त बिरतामाहि बैठो दार। आज्ञादीहो आप मन्मथ केलिको अवहार ॥ कहति इच्छा हो हमारी हेत यहि तैं घार । हम न जानै कामकेलिहि सुनऊ बृद्धा दार॥ करत इच्छा नाहिं यातैं आपकी हम पर्म। कहत भे इमिदारसौं ऋषि सुनऊ भूप सधर्म॥ जौन हे करतव्य तुमकौं कहो हमकौं तौन । बैन ए सुनि भई बोलति दार बुधिकी भौन ॥ समै पाय सु जानिहो तुम पर्मको सुख पर्म । सुनऊँ अष्टावक्र ऋषि तप तेजवांन सधर्म ॥ जौन हे करतव्य तुमकौं तौन ह्वैहे सिद्धि । कछू दिन यह थांनमाही बसो हे तपनिद्धि ॥ ऋषी अष्टावक्र सुनि के दारके ए बैन । कह्यो ऐसैं दारसौं हम रहैंगे यहिं ऐन ॥ राखिहो अवसौं रहैंगे हम सु

यहि यस माहि । कहत मैं हौं सत्य तुमसौं मानि संशय नाहि ॥ देखि वृद्धा दारकों ऋषिपर्म्म चिन्ता माहि । भए प्रापित मनहि वाके भावकों अवगाहि ॥ * ॥ चरणादोहा ॥ * ॥ * * * आ०प० दा०ध०
अौंन औंन अगँ लखत दारको तौंन तौंन न यत्न माहि। लखत नहीँ हैं चिन्त ऋषीको वृद्धापन अवगाहि ॥

॥ * ॥ रामगीतीछन्द ॥ * ॥

देवता यहि थानको है दार के यह खोर । देखि वाकौं कियो यह सन्देह ऋषि सिरमौर ॥ जानि बेके योग्य है यह हेत नीको औंन । चिप्र जान्यो चाहिए वर बुद्धिसौं अब तौंन ॥ यहीं चिन्ता माहिँ बीत्यो ऋषीको दिन सर्व । भई कहती बैन इमि तब दार पर्म अखर्व ॥ लखो परमा भानुकी ऋषिराय सबुधि सधर्म्म । अथ सायंकालको सो लखित भो है पर्म्म ॥ कहा तुमकौं चाहिए सो कहो हमकौं आप । बैन सुनिकै दारके ऋषि पर्म बुद्धि कलाप ॥ * ॥ चरणादोहा ॥ * ॥ *
ल्याउ जलहि असनान काजकौं इमि बोले ऋषि चार । मौंन होयके संध्योपासन करिहैं हम अबदार ।
स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्वाज्ञाभिगामिनाश्रीबन्दीजनकाशीवासि रघुनाथकवीश्वरात्मजेन गोकुलनाथस्याभिध्येण मणिदेवेन कविना विरचिते महाभारतदर्पणेदानधर्मे अष्टावक्रउत्तरदिगसम्वादे एकोनविंशोध्यायः ॥ * * * * * * *

॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

सुनि ऋषीशके बैंन ए बोली वृद्धादार । ल्यावति हौं अस्नानकौं अबहीं नीर सु ढार ॥

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

यह कहि ऋषिसौं वृद्धादार । सुनहु युधिष्ठिर बुद्धि अगार ॥ ल्यावति भई फुलेल अनूप । बसन पँन्हैबे काज सुरूप ॥ तिय ऋषीशकी आज्ञा पाय । अंगमें लावति भई सचाय ॥ पुनि सनान शालाके बीच । लेगई वृद्धा ऋषिहि निमीच ॥ ल्याई आसन चित्रित चारु । ऋषिहि न्हायबे काज सुदारु ॥ आसन चारु नवीन अनूप । बैठत भए ऋषी तप रूप ॥ कोमल करसौं स्नान कराय । लावति भई सुगन्ध सचाय ॥ पुनि ऋषि संध्योपासन कीन । सुनहु युधिष्ठिर परम प्रवीन ॥ सुखसौं बीति गई निशि सर्व । जानी नाहीं सुऋषि अखर्व ॥ उठिकै पूरब भानुहिँ देखि । विस्मित भए हिए अवरेखि ॥ अष्टावक्र सु करि असनान । संध्योपासन कियो सुजान ॥ पुनि तिहिँ वृद्धासौं इमि बैंन । बोलत भए ऋषी तपऐन ॥ अब हम कहा करैं हे दारु । सुनि तिय बैंन ऋषीके चारु ॥ अशत बरोबरि मीठे खच्च । ल्याई भोजन ऋषिकौं दच्च ॥ भोजन करत भए ऋषि राय । अतिहीं मीष्ट लगें सुखदाय ॥ नाही नाहि कह्यो ऋषि पर्म्म । सुनहु युधिष्ठिर तात सधर्म्म ॥ दिन बीतैं संध्या पुनि कीन । अष्टावक्र ऋषीश प्रवीन ॥ * ॥ गन्धानकछन्द ॥ * ॥ * *
पाछिभरत सुखसौं बीती सब निशा न जांनी जैसैं । भोजन रससौं बीति गयो दिन जानि गयो नहि तैसैं ॥ अष्टावक्र ऋषीश उठे अब संध्योपासन करिकै । बोली ऐसैं वृद्धादारा प्रेम माहिँ मन धरिकै ॥

॥ * ॥ तोमरछन्द ॥ * ॥

शा०प० ह्रा०ध० बरभेयपैं ऋषिराय । अब आप सूतेऊ जाय ॥ जब सोयगे ऋषिराय । निज भेयपै तव आय ॥ तिय सोयगी सुनि भूप । मणिवान पर्म अनूप ॥ जब अर्ध बीती रैनि । तब छोड़िकै निज ऐनि ॥ ऋषि भेय उपर आय । तिय बैठिगी सह चाय ॥ अष्टावक्र उवाच ॥ सुनु दार वृद्धा पर्म । हम कहत तोहि सधर्म ॥ परदारमे ममचेत । कबहूँ न करत सुहेत ॥ सुनु दारहे मतिमान । तव छोड़ मिति कस्थान ॥ * * * * * ॥ * ॥ बरवैछन्द ॥ * ॥ * * * * * *

आपुहि आऊ यहातैं वृद्धादार । ऋषि इमि कह्यो तियासों सुमति अपार ॥

॥ * ॥ रोला छन्द ॥ * ॥

॥ * ॥ स्त्र्युवाच ॥ * ॥ अष्टावक्र ऋषीश सुनऊँ बर । ज्ञानवान तपवान सुमति धर ॥ हम स्वतंत्रहैं यातें दोष न । लगिहे तुम्हें करऊ अपसोस न ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ * * *

हमहि दियो जब आपनो तन तुमकों ऋषिराज । तब किमि लगिहैं आपकों पर तिय दोष दराज ॥

॥ * ॥ अष्टावक्र उवाच ॥ * ॥

इस्त्री कहां स्वतंत्रहै सुनु हे वृद्धा बाम । पराधीन निति रहतिहैं दवी धाममें बाम ॥

॥ * ॥ रामगीती छन्द ॥ * ॥

लरिकाईमे करत रक्षा पिता सुनु हे दार । तरुणाईमे करत रक्षा नित्यही भरतार ॥ पूत रक्षा करत वृद्धापनेमे अनुमानि । प्रजापतिके बैन ए है सुनऊ तिय मतिमानि ॥ * ॥ स्त्र्युवाच ॥ * ॥ देत हमकों काम दुख अति सुनऊ हे ऋषिराज । करऊ यहिकों शान्ति मेरी भक्ति देखि दराज ॥ जो मनोरथ सिद्धि औ नहि करोगे ऋषि आपु । तौ अधर्महिं प्राप्तहो हो सुनऊ तेज कलापु ॥ ॥ * ॥ अष्टावक्र उवाच ॥ * ॥ जोई आवत चित्तमे जन करत सोई जौन । काम क्रोधादिक बसो अति लहत दुखकों तौन ॥ धीरतासों रहत हैं हम युक्त निति हे दार । आऊ अपनी भेयपै ममभेय छोड़ि सुढार ॥ * ॥ स्त्र्युवाच ॥ * ॥ सुनऊ हे ऋषिराय तुमकों करति हम परणाम । नाय मस्तक चरण माहो भक्ति गहिकै बाम ॥ रावरी हम शरणमे हैं करऊ दाया पर्म । करत पुनि पुनि जोरि कर हम सुनऊ सुऋषि सधर्म ॥ दोष परतियमांहि आमो तौ सुनो ऋषिराय । पाणि ग्रहण करावतीहै तुम्हे हमहि सचाय ॥ करो तुम कर ग्रहण आसों लगै नाही दोष । सत्य तुमसों कहति हैा मिटि आयनो अपसोस ॥ हम हमारे दानमे स्वाधीन हे ऋषिराय । कहति यासे आपुसो हम बेर बेर सचाय ॥ * ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ * * * * * * * *

पाणिग्रहण कोधर्मजो सोऊ मेरा होत । सुनिकै अष्टावक्र ऋषि तप तेजसके पोत ॥

लगो रहतहै चित्तमम तुममे हे ऋषिराय । ग्रहण हमारो कीजिये याते आपु सचाय ॥

॥ * ॥ अष्टावक्र उवाच ॥ * ॥ आ०प०

कैसे तुम स्वाधीन हो सुनो सुवृद्धा वाम। बूझत हैं हम आपसों याको कारण नाम॥ दा०ध०

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

कहूँ नहीं स्वाधीन तीनहु लोकनमाहि तिय। अष्टावक्र प्रवीन ऐसें कह्यो सु वामसों॥

॥ * ॥ रामगीतीछन्द ॥ * ॥

कुमारीको करत रक्षा पिता हे मुनि दार। परम यौवनमाहि रक्षा करत है भरतार॥ करत रक्षा पुत्र वृद्धापनेमे है बाम। कहां है स्वाधीन नारी कहत मतिसों माम॥ * ॥ ऋषुवाच ॥ नारिकाईसों नहीं हैं हम ब्रह्मचारय धर्म। सुनो ऋषि कन्याहि हैं हम हेततें यह पर्म॥ करऊ पत्नी मोहि मोपै के कृपा तुम भूरि। कहत मे कर जोरि त्रिन मम करऊ बहा दूरि॥ *॥ *

॥ * ॥ अरिल्लछन्द ॥ * ॥

॥ * ॥ अष्टावक्रउवाच ॥ * ॥ जानत कामातुरि तोको हम। ऐसें ही आनो हमको तुम॥ है अति अधर्म जानि हिय माहिं। तोसों करत सुकाम केलि नहिं॥ कन्यारूप देखि ऋषि दारहि। करत भए मनमाहिं विचारहि॥ * ॥ चरण दोहा ॥ * ॥ *

ऋषि वरुण सम करण परिक्षा भेजी है यह बामाकी यह कोई विघ्न महा है होत अचिरज माम॥ कै तो वृद्धा वामही यह मिथलाको पर्म। कै तो यह कन्या भई अति सुन्दरी सधर्म॥ किमि ह्वै है कल्याण हमारो यह स्थानके बीच। इमि मनमे गुणते भए अष्टावक्र निभीच॥

॥ * ॥ रामगीतीछन्द ॥ * ॥

अति है अीरज रही वृद्धा पूर्व यह जो दार। भई है किहिभांति कन्या अबहि पर्म सुठार॥ करै मे मन नाहि यह शुचि दारको स्वीकार। छोडि हैं नहि धर्मको अरु धीरता हि सुढार॥

इतिश्रीमहाराजाधिराजकाशीराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञानुगामिना श्रीवन्दीजन काशीवासिगोकुलनाथात्मजेन गोपीनाथेन कविना विरचितेभाषायां महाभारतदर्पणे दानधर्मे अष्टावक्रादिगसम्वादे विंशोऽध्यायः॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥ *

क्यों नहि डरी आपसों बाम। अरु फिरि आए किमि ऋषि माम॥ सुनऊँ पितामह सबुधि सधर्म। कहो हेत हमसों यह पर्म॥ भीष्मउवाच॥ सुनऊ युधिष्ठिर बुद्धि अगार। कहत हेत तुमसों अह बार। अष्टावक्र ऋषीश सधर्म। बूझत भए दारसों पर्म॥ और और किहिभांति सुरूप धरती हो तुम परम अनूप॥ याहि जानिवेकी हे तोय। है अभिलास हमारे हीय॥ हमसों कहो सत्य नहि भूरि। करऊ हमारो संशय दूरि॥ ऋषुवाच ॥ फिरि ह्वै कै ऋषि सुनऊ सधर्म। यह वृत्तान्त कहति हा पर्म॥ तियको प्रेम पुरुषके बीच। पुरुषऊको तियमाहि निभोच॥ रहत सर्व

शा०द० लोकनमे नेह । सुनु हे सुऋषि बुद्धिके गेह ॥ एक मोक्षही है निहकाम । और सर्व है लोक
दा०ध० सकाम ॥ इस्त्री धर्म यह जाँन । है सकाम पूरुषनकी नाँम ॥ जे निहकाम पुरुष है पर्म ।
तिनकों नाहीं है यह धर्म ॥ ***॥ अरिल्लछन्द ॥ * ॥******

तव थिरता कीवेके काजहि । हम ए चेष्टा करी दराजहि ॥ यह सुधीरता सों हे ऋषिवर । जीते सर्वलोक तुम तपधर ॥ सुनऊ सुलखि हम हैं उत्तरदिशि । तुमकों भाव दिखाये तिय मिसि ॥ देखे भाव तियनके तुम सब । भाव दिखाए तुमकों हम सब ॥ ****

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

सुनु हे ऋषि तपभौंन वृद्धा ऊ नारीनकों । मैथुनको ज्वर जाँन निति संतावत रहत है ॥ * ॥
अष्टवक्र ऋषिराय है तुममे यह धीरता । तवे देव समुदाय हैं तुम पे परसन्न अति ॥
आए तुम जिहिकाज भेजे सुऋषि वदान्यके । तौन काज ऋषिराज सिद्धि किए हम आपके ॥

॥ * ॥ जयकरी छन्द ॥ * ॥

तोय सुभाव दिखावन काज । अरु कामेच्छा परम दराज ॥ तुमकों भेजे हैं हम पास । सुऋषि वदान्य सुमतिके रास । ताको कियो तुम्हे उपदेश ॥ हम हे अष्टावक्र बुधेश । जावो अब घर मुदसों आप ॥ लहि हौ नही परिश्रम दाप । मिलि है तुमकों कन्या तौन ॥ जिहि कारण आए बुधिभौंन । पुत्रऊ ताके व्है है पर्म । सुनिए अष्टावक्र सधर्म ॥ ******

॥ * ॥ अरिल छन्द ॥ * ॥

जिमि सकाम बूझो हमकों तुम । तिमि सकाम दीन्हो उत्तर हम ॥ जावो ऋषि अब अपने धामहि।करि के तुम करतव्य सु कामहि॥कहा सुननकी इच्छा है अब।बूझो जाँम कहैं तुमसों सब॥

॥ * ॥ चरणाकुलकछन्द ॥ * ॥

ऋषि वदान्य हमपास पठाए । तुमकों सुनऊ सुऋषि बुधि छाए ॥ उनकों सनमाने के काजे । कीन्हों यह उपदेश दराजे ॥ * ॥ भीष्म उवाच ॥ * ॥ ** ॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥ **

सुनऊ युधिष्ठिर भूप अष्टावक्र ऋषीश वर । सुनिए बैन अनूप उत्तरदिशि तियरूपके ॥
दोउ हाथनकों जोरि बैठे सोंहे दारके । फेरि सु माथ निहोरि आज्ञा लहि निज गृह गए ॥

॥ * ॥ महिधरी छन्द ॥ * ॥

आय अपने सदनमे ऋषिराय अति मुदसों छए । कछुकदिन रहि बूझि अपने हितुनकों रहि सोरए ॥ चले सुऋषि वदान्यके गृहकों सुचाव महानसों । पऊँचि गृहमे बात करतेभए सुऋषि वदान्यसों ॥ *****॥ * ॥ चरणाकुलक छन्द ॥ * ॥ ****

ऋषि वदान्य तब बोलत भए । अष्टवक्रसो मुदसों छए । हम पठए हे तुमको जहां।अष्टावक्र गएहे तहां ॥ वह थस्थान जाय कै देख्यो । अति रमणीव प्रभासेभ भेख्यो ॥ ऋषि वदान्यकी सुनि

यह बानी । बोले अष्टावक्र ऋषि ज्ञानी ॥ सुनऊ ऋषीश बदान्य सुमतिधर । आज्ञा पाय तुम्हारी यति बर ॥ *◆*◆*◆*◆॥ * ॥ रामगीतीछन्द ॥ * ॥*◆*◆*◆*◆*◆*◆ शा०प० दा०ध०
गन्धमादन पर्वत हि हम बए धर्म सचाय। जाहि देखैं कौनको हिय हर्ष नहिं माहि छाय ॥जासु उत्तर लख्यो हम आरण्य सघन बिलन्द । तासुमाही लख्यो एक बर धाम नाम अमन्द ॥ लखी तिहि आगारमाहीं एक वृद्धा दार । करत बातैंभए तासों सुनऊ बुद्धि अगार ॥ मोदसों तिहि दार मेरो कियो आदर धर्म । कहत भी पुनि हमि सु मोसों दार तौन अधर्म॥पाय सुऋषि बदान्यकी आज्ञाहि तुम ऋषि नाम । कृपा करिकै आप आए हौ हमारे धाम ॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥ *◆*
तिहिकी आज्ञा पाय आए अपने सदनमे । फिरि बदान्य ऋषिराय आए हम तब सदनमे ॥

॥ * ॥ चरणाकुलकछन्द ॥ * ॥

॥ * ॥ बदान्यउवाच ॥ * ॥ कन्यापाणि ग्रहण अब करिए । महा मोदसों हीकों भरिए ॥ धर्म सुपात्र पाय कै तुमकों । भयो अनन्द महा है हम कों ॥ ◆ ॥ भीष्मउवाच ॥ ◆ ॥ सुनऊ युधिष्ठिर बर धरनीशा । यह सुनि अष्टावक्र ऋषीशा ॥ पाणिग्रहण कीन्हों कन्याको । जिहि को सम जगमे धन्या को ॥ * ॥ ◆*◆*◆ ॥ ॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥ ◆*◆*◆*
ऋषि कन्याकों पाय अतिहीं मोदित होय कै । निज आश्रममे आय बसत एभ भार्य्या सहित ॥

इति श्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगाभिना श्रीबन्दीजनकाशीबासिरघुरायकवीश्वरात्मजेन गोकुलनाथस्यशिष्येण मणिदेवेन कविना बिरचितेभाषायां महाभारतदर्पणे दानधर्मे अष्टावक्र दिगसम्वाद समाप्तिर्नामैक बिंशोऽध्यायः ॥ *◆*◆*◆**

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ ◆ ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

कारण गृहआश्रमको काम । जान्यो सो तुमसों बुधिधाम ॥ सुऋषि सनातन धर्म्म अमन्द ॥ जिनकी महिमा महा बिलन्द ॥ दान पात्र ते कहत सुकाहि । कहो तात अब यह अवगाहि ॥

॥ * ॥ रामगीतिछन्द ॥ * ॥

ब्रह्मचारि हि कहत हैं की यतीकों अवदात । दण्डवान हिं कहत हैं की बिप्रको हे तात ॥*॥ भीष्मउवाच ॥जीव काकों उचित बृत्ति हि करत हैं जन जौन । तौन ही है दानपात्र सु कहत प्रज्ञाभौन ॥ तौन हों है तपस्वी सुनि धर्म्मवान सुजात । ब्रह्मचारी होऊ वा द्विज दण्डवत अवदात ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ सुनि पितामह जौन जन अपवित्र होय महान । तौन जन सुर पितर काजे देय बिप्रहि दान ॥ होत तिहिकों दोष का अपवित्रताको धर्म्म ।कहो हमकों आपु भीषम ज्ञानवान अधर्म्म ॥ भीष्मउवाच । जौन जन हैं देत श्रद्धा सहित दान महान । तौन होत पवित्र श्रद्धा सोंहि हे मतिमान ॥ *◆*◆*◆* ॥ * ॥ तोमरछन्द ॥ * ॥

बर सर्वबिधिसों शुद्ध । तुम हो युधिष्ठिर बुद्ध ॥ बर धर्म्मवान अमन्द ॥ तुमसो न और नरेन्द्र ॥

हरत यमहि सुनि नृपति कलुष दर ॥ * ॥ * ॥ [illegible] ॥ * ॥

यज्ञादिक जे कर्म्म तिन्हे नाहि कबहूँ [illegible] धर्म होत [illegible] कहत हैं॥

॥ * ॥ [illegible] ॥ * ॥

अश्वमेध वर यज्ञको फल अरु [illegible] । [illegible] मतिमान ॥ अर्ध भयो नहि सत्यके अश्वमेध [illegible] । [illegible] युधिष्ठिर धर्मधर [illegible] ॥

॥ * ॥ [illegible] ॥ * ॥ [illegible] छन्द ॥ * ॥

भूमि काश्यप [illegible] । [illegible] युधिष्ठिर [illegible] ॥ युधिष्ठिर उवाच ॥ [illegible] धर्म । [illegible] भीषम नाम ताको [illegible] सुधर्म ॥ [illegible] दूषित [illegible] नाहि । बूझतो [illegible] आपुतो [illegible] ॥ भीष्मउवाच ॥ [illegible] धर्म । [illegible] नाम सधर्म ॥ [illegible] दूषित होतहै नहि कहत [illegible] ॥

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ तोमरछन्द ॥ * ॥

[illegible] धर्म । [illegible] ॥ [illegible] धर्म [illegible] । [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] धर्म [illegible] । [illegible] ॥

॥ * ॥ [illegible] गीतीछन्द ॥ * ॥

[illegible] धर्महि नाहि [illegible] निभीष ॥ [illegible] नरकमें [illegible] ॥ [illegible] विष्ठ [illegible] ॥ [illegible] धर्मधर बर कहत [illegible] अनुमानि ॥ ब्रह्मचारी [illegible] जे [illegible] नाहि । [illegible] ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ [illegible] धर्मधर [illegible] मतिमान ॥ भीष्मउवाच ॥ [illegible] आनि बर [illegible] ॥ [illegible] । [illegible] ॥ युधिष्ठिर उवाच ॥ [illegible] । [illegible] कालमाहि [illegible] धर्म ॥

॥ * ॥ [illegible] छन्द ॥ * ॥

अरु अर्थ करै किहि [illegible] निभीय ॥ भीष्मउवाच ॥ [illegible] प्रातकाल करि ए सु अर्थ [illegible] । [illegible] कहत बर हैं अधर्म ॥

हरत धर्महि सुनि नृपति कलुष दर ॥ * ॥ [illegible]

यज्ञादिक जे कर्म तिन्हे नाहि कबहूँ [illegible]

॥ * ॥ [illegible]

अश्वमेध वर यज्ञको फल यह [illegible]

व्यर्थ भयो नहि सत्यके [illegible]

॥ * [illegible] ॥

भूमि [illegible]

युधिष्ठिर [illegible]

सुधर्म ॥ [illegible]

[illegible]

॥ * ॥ चरणाकुलकछन्द ॥ * ॥

आ०प० दा०ध० गुरुकौं पूजै दिजकौं मानै। काहूसे न विरोधहि आनै ॥ सबसा कहै प्रेम मय बानी। नहि
कोमलता परम महांनी ॥ *⬭* ॥ *⬭* ॥ मधुभारछन्द ॥ * ॥ *⬭*⬭*⬭*⬭*
यह जौंन धर्म है सुखद पर्म ॥ बुध कहत सब सुनु सुवन दक्ष ॥

॥ * ॥ चरणा दोहा ॥ * ॥

जूठन्यायमे कपट गुरूसों चुगुली जौंन। द्विजहत्या सम ए औगुणहूँ कहत सु वर बुधिमौन ॥

॥ ॥ दोहा ॥ ॥

राजाकौं नहिँ मारिए औ नहि घनिए गाय। बालक हत्या सम इनकी है हत्या सुनु नरराय ॥
अग्नि हवनकौं छोडिबो अरु श्रुतिपठन अनूप। द्विजनिंदा अरु विप्रकी हत्या सम ए भूप ॥

॥ * ॥ युधिष्ठिर उवाच ॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

साधु विप्र कैसे हैँ होत। कहो पितामह प्रज्ञापोत ॥ काहि दिएँ फल होत महान। यही कहौ
हमसौं मतिमान ॥ भीष्म उवाच ॥ क्रुध सौं रहो धर्मरत पर्म। नित्यहिँ बोलै सत्य अमर्म ॥ क्रिएँ
रहै इन्द्री बस्य सर्व। ऐसे द्विज ते साधु अखर्व ॥ तिन्हैं दिएँ फल होत महांन। सुनऊ युधिष्ठिर भूप
मतिमान ॥ अरु अभिमान रहित द्विज जौंन। जीतें सबद्वन्द्वो बुधिभौन ॥ सब जीवनके मित्र महान।
सीतादिक सब सहैं सुजान ॥ ऐसे जे हैं द्विजवर भूप। तिन्हैं दिए फल होत अनूप ॥ रहित लोभसौं
अतिहीं स्वच्छ। अरु वेदज्ञ धर्मरत दक्ष ॥ सत्यमान अरु लज्यावांन। सकलमनि रत परम
मतिमान ॥ ऐसे जे द्विज सुनि भूपाल। तिन्हैं दिए फल होत बिसाल ॥ षट अङ्गनसह चारौ
वेद। पढै जौंन द्विज होय अखेद ॥ मरयादा पालन अरु दान। यज्ञ यीच अध्ययन सु ठान ॥
मदिरा आमिष तजिबो पर्म। सुनऊ युधिष्ठिर ए षट कर्म ॥ इनमे प्रवृत रहत द्विज जौंन। ताकौं
पात्र कहत बुधिभौन ॥ ऐसे जे द्विज हैं गुणवांन। तिन्हैं दिएँ फल होत महांन ॥ गुणसौं परम
योग्य द्विज जौंन। ताहि दिए सुनु प्रज्ञा भौंन ॥ सहस गुणा अधिक फल होत। दाताकौं सु कहैं
मतिपोत ॥ प्रज्ञासील युक्त द्विज जौंन। तारत है सब कुलकौं तौंन ॥ गज अरु धन औरु महान।
ताहि दिए सुनु भूप सुजान ॥ उपजै सोच न चितके माहि। कहत तुम्हैं मैं हौं अवगाहि ॥⬭*

॥ * ॥ अरिल्लछन्द ॥ * ॥

दोषहि रहित विप्रकुल तारत। परम अग्निसौं अघगण जारत ॥ पूरब उक्त गुणनसौं जो युत र
ताकी कहा बातहै सुनु सुत ॥ यहितें पात्र परिक्षाकी जिय। कहत सुबुधवर हैं गुणिके हिय ॥
गुणयुत साधु विप्रजो आनिय। कै सतकार इहिसौं आनिय ॥ सब प्रकारसौं पूजन कीजिय।
करिकै वर उतपन्न प्रेम हिय ॥ ⬭*⬭*⬭*⬭*⬭*⬭*⬭*⬭*⬭*⬭*⬭*

स्वस्तिश्री काशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञानुगामिनाश्रीवन्दीजनकाशीवासि शां०प०
रघुनाथ कवीश्वरात्मजेन गोकुलनाथस्यशिष्येण मणिदेवेन कविना विरचितेभाषायां महाभारत दा०ध०
दर्पणे दानधर्म्मेद्वाविंशोऽध्यायः ॥ ** ॥ जयकरीछन्द ॥ ** ॥ ****
॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ देवपरथ है कारज जौन। कौन कालमें कीजै तौन ॥ पितरकार्य्य सो कौने काल। करिए कहो सुबुद्धि बिसाल ॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥

॥ * ॥ महिषरीछन्द ॥ * ॥

सुनऊ पूरब काल माही देवकारज कीजिए । पितरकारज जौन सो परकालमे करि लीजिए ॥ दान सादर मनुजको मध्यान्हमाहीं दीजिए।सुनि युधिष्ठिर कहत हैं मतिमान मतिसों गुंथ जिए॥

॥ * ॥ मल्लिकाछन्द ॥ * ॥

कालहीन दान जौन। जातुधान भाग तौन ॥ जे सुबुद्धि है महान। ते कहैं सुने सुजान ॥

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

पद लंघित है वस्तु जान। कलह पूरवक कीन्हो तौन॥ रजस्वलाको दीन्हो दान। राक्षस भाग तौन कू जान ॥ ** ॥ * ॥ चरणदोहा ॥ * ॥ *****
परो होय जिहि माहि वार वाछु यो स्वानको होय।राक्षस भाग जानिए ऐसो भोज्य कहत बुधलोय॥

॥ * ॥ रामगीतीछन्द ॥ * ॥

चोरको उच्छिष्ट जो अरु दुष्ट कीन्हो जौन । देव बालक वृद्ध बिन जो कियो भोजन तौन॥ औ कियो बिन अतिथ ऐसो जौन भोजन भूप।जानि राक्षस भाग ऐसें कहत वृद्ध अनूप॥ कौणपनको भाग प्रापित कह्यो तुमसों तौन। दान पात्रनकी परिक्षा सुनो अब बुधिभौन॥ जाति बाहिर भए जे द्विज पाप कीन्हें पर्म। श्वेतकुष्टी औ नपुंसक महामूर्ख सभर्म॥पर्म कुष्टी महा रोगी अपसमारी जौन ।बैद्य औ देवल पुजेरू अन्ध दम्भी तौन॥ बाद्यकर अरु नृत्यकर अरु गानकर जे पर्म। वृथा लापी मल्ल जे अरु सुनऊ भूप सधर्म॥ मखकरावैं शूद्रकों जे औपढावें जौन। सेवकाई शूद्रकी जे करत दुर्मतिभौन ॥ निमंत्रणके योग्य नाही विप्र ऐसे तात । शास्त्रमतसों कहतहैं बरबुद्धि जे अवदात॥ देइ धन जे पढतहैं धन ले पढावें जौन। श्राद्धके नहि योग्य दोऊ सुनऊ बरबुधि भौन॥ सर्व विद्याबांचक जो दासिकापति होय। तीनऊँ द्विज नांहि नेवत योग्य कह बुधलोय॥ चोर अरु श्रुतिकर्म्मसों जे रहित सुनु भूपाल । पतित अरु जे सूतकको अति दान लेत बिसाल॥ ब्याज काजै देय जो धन अरु सुता सुत जौन। श्राद्धके नहि योग्य एऊ सुनऊ बरबुधि भौन ॥लेय सहता धर्मको द्विज जौन महगा देत। रहत वेश्या बधन मेरत जौन कुबुधि निकेत॥ चौर औ निज दारके निति रहै बशके माहि । सुनऊ नृप जो करत संध्योपासनाको नाहि ॥ निमंत्रणके योग्य नाही विप्र ऐसे जौन। कहतहैं अपरगाहिके बर बुद्धिके जे भौन ॥ जे निमंत्रण योग्य नाही श्राद्धमखके

बोध। तीनहू गुण पाय ते द्विज योग्य होत निबोध ॥ कहत मै हौं तुम्हे सो अब सुनो तात सधर्म ॥ करहि पूरण क्रिया जे सब शुद्ध गुण सो पर्म ॥ परम क्रीयावान गायत्री हि जाने औनाकरै तीनहू काल संध्या आचमको न्हे औन ॥ अग्निकारज होय जैसो विप्रजो है तात। है निमंत्रण योग्य वर बुध कहत हैं सबकाल ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] औन विप्रनाहि शुद्ध। [illegible] न्है [illegible] ॥ होय औ सुजान तौन । है सुनो सु बुद्धि भौन ॥ परम विप्र ताहि आनि । योग्य पूजिये सुआनि ॥ [illegible] औन । अग्निहोत्रवान तौन ॥ होय औ सुनो सु भूप। योग्य पूजिये अनूप ॥ आनिए करै सुबुद्ध। औन [illegible] शुद्ध ॥ तीनहू सुकाल होय गायत्री जपै निशर्म ॥ [illegible] । विप्र [illegible] ॥ पूजिये सु योग्य पर्म। ताहि आनि है सधर्म ॥ प्रातकाल द्रव्य पाय। द्रव्यवान औ सभाय ॥ [illegible] दरिद्र [illegible] । द्रव्यसो भए सु दूरि ॥ [illegible] ॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥ [illegible]

[illegible] प्रातःकाल बिना द्रव्य पावै परम। रहतै दरिद्र [illegible] सुनउ युधिष्ठिर [illegible] वर ॥ फिरि [illegible] सु [illegible] विप्र द्रव्यको पाय कै। न्हे धनवान निशीथ परम [illegible] फिरत है ॥

॥ * ॥ घरबादोहा ॥ * ॥

रहित [illegible] जे द्विज तौन। [illegible] योग्य [illegible] बुधिभौन ॥

॥ * ॥ रागगीती छन्द ॥ * ॥

दम्भसो जे रहित हैं अब योग्य [illegible] निमंत्रण योग्य द्विज हैं सुनउ भूप सचेत ॥ रहित [illegible] वैदिक कर्महि करत जे द्विज भूप। [illegible] फिरि [illegible] योग्य हैं [illegible] धनवान सुजान। [illegible] वैदिक कर्म करिहै शौरि द्रव्य [illegible] ॥ [illegible] देव भोजन पर्म। सो निमंत्रण [illegible] तात सधर्म ॥ वेद [illegible] जुरे [illegible] औन। [illegible] द्रव्य है बुधिभौन ॥ [illegible] दीजिए सो पितर श्राद्ध [illegible] करतहैं वर बुद्धिवान निशीथ ॥ [illegible] द्विज [illegible] सुजान [illegible] ताहि कहत [illegible] ॥ [illegible] द्विज पर्म। [illegible] श्राद्ध समया आनि तात सधर्म ॥ [illegible] ॥ * ॥ दोहा ॥ [illegible]

विप्र श्राद्ध [illegible] श्राद्धवार [illegible] । [illegible] श्राद्ध [illegible] ॥ [illegible] श्राद्ध [illegible] ॥ [illegible] श्राद्ध [illegible] । [illegible] पितर [illegible] ॥ [illegible] विप्र [illegible] श्राद्ध [illegible] नरराय ॥ शूद्रश्राद्धके [illegible] द्विज पर्म। [illegible] तात सधर्म ॥

॥ * ॥ अरिलछन्द ॥ * ॥

द्विजके यज्ञ माहि सुनि भुवपति । यज्ञ कार इमि कहै सु गहि रति ॥ कहु पुन्याह सर्व तुम द्विजवर । सुनि यह बैन सर्व द्विज मतिधर ॥ * * ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ * * * *

जो पुन्याह कहै सुनो यज्ञ आदिमे धर्म ।यह विधिहै द्विज यज्ञकी कहत सुबुद्ध अभर्म ॥

ओं कहै न सुनि नृपति क्षत्री मखके बोच। कहिए याही मन्त्रकों कहत सुबुद्ध निभीच ॥

होऊ प्रसन्न देव इमि कहि द्विज वैश्य यज्ञके बीच। फेरि कहै पुन्याह सुनि पाण्डव नृपति निभीच॥

जन्मादिककी जो क्रिया करत हैं सुबुध अवदात। अब हम तिहिकों कहत हैं सुनहु युधिष्ठिर तात॥

॥ * ॥ मल्लिकाछन्द ॥ * ॥

जाति कर्म आदि जौन। कर्मते सुबुद्धि भौन ॥ तीनहु सुवर्ण बीच। मंत्रसों करी निभीच ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

द्विजहि मूँजकी मेखला चाही सुनि हे तात। क्षत्री हि चाही मौरवी कहत सुबुध अवदात ॥

चाहिय वाल्वजी मेखला वैश्यहि सुनि भूपाल । तीनहु बरणके करम क्रमसों कहे विशाल ॥

अधर्म दानपात्रको जो है अरु दाताको धर्म । अब तुमसों मै कहत हों सुनिए तौन अभर्म ॥

॥ * ॥ रामगीतीछन्द ॥ * ॥

पणकै काज विप्र सु अनृत बोलत जौन ।लगत तिहिंतैं पाप जितनो द्विजहि सुनि बुधिभान ॥ लगत तिहितैं चतुर्गुण है अधिक क्षत्र हि पाप। एक पणकों अनृत बोलैं सुनहु धर्म कलाप ॥ क्षत्रिहूतैं अठगुणो अघ अधिक वैश्यहि होत । शास्त्र मतसों कहत हैं बर परम प्रज्ञापोत ॥ एक द्विजको द्वैनिमन्त्रण भए हौंहि सुजान । दुऊ निमंत्रणमाहि पहिलो छोडि तृष्णा बान ॥ दूसरेके जाय गृहमे करै भोजन जौन । जवीयान कहाव नो है तौन सुनि बुधिभौन ॥ होय पहिलो निमंत्रण औ विप्रको हे तात। ताहि तजिकै सुनहु जो द्विज दूसरेके जात ॥ वृथा पशुहिंसा किए को पूर्ण पातिक ताहि । होत है बुध कहत हैं वर बुद्धिसो अवगाहि ॥ प्रथम निवतो क्षत्रिकोजो होय हे सुनिभूप। वैश्यको वा होय तौ बर कहत बुद्ध अनूप ॥ ताहि तजि कै दूसरेके करै भोजन जौन। वृथा पशु हिंसा किए को अर्धपापी तौन ॥ देव कारजमाहि अथवा पितरकारज बीच। किएँ बिनुहिँ समान जो द्विज करत भोज्य निभीच ॥ अनृत गौ की संपथको है लगत पातिकताहि सुनि युधिष्ठिर शास्त्रमतसों कहत बुध अवगाहि॥ जौन विप्र अशौच दिजकी पाति माहि धाय लोभतैं जो करै भोजन सुनि युधिष्ठिर राय॥ अनृत गौको शपथको अघ तौनहूँको होत । शास्त्रमतसों कहत हैं बर पर्म्म प्रज्ञापोत । तीर्थ यात्राके बहानैं जौन द्विज धन लेत॥ यही पातिक होत तिहिंको प्राप्त भूप सचेत ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ देव कारजबीच अथवा पितरकारज बीच ।

१०५० महाफल किहि दिएँ होत सु कहो यात निभीत ॥ भीष्मउवाच ॥ पतीको उच्छिष्ट भोजन नके
१०५१ जिहिकी वाम । निधन ऐसें द्विजहि दीन्हें होत है फल माम ॥ भोज्यहीकों लेत जे धन करत संग्रह नाहिं । महाफल तिहिं दिए होत सु कहत हैं अवगाहिं ॥ तस्करणकी भीतिसें अति रहत पीडित जौन । भोज्य हीको अर्थ जिहिके सुनऊँ नृप बुधिभौन ॥ दिएँ ऐसे विप्रवरकों होत है फल माम। सुद्धिसें अवगाहिकै इमि कहत बुध अभिराम॥रहित जो अभिमानसें अरु दरिद्रसें दुखवान । देखि ताके पाणिमाहीं अन्न सुनि मतिमान ॥ शिष्य अरु सुत घेरि ताको कहैं ऐसें बैंन। देहु हमकों देहु हमकों अहो पित सुखदैन ॥ दिएँ ऐसे द्विजहि भोजन महाफल है होत। सुनि युधिष्ठिर धर्म्मधर बर परम प्रज्ञापोत ॥ भो उपद्रव होय जिहिके देशमाहि महान। होय हरिगो जौन द्विजको द्रव्य तिय सुखदान ॥ ताहि दीन्हे होत है फल महत कहत सुजान । और जे द्विज नेम व्रतको गहैं हैं सुखदान॥ तौन जौ व्रत पूर्ण कीबें द्रव्य मागैं आय। दीजिए तौ ताहि धन सुनि युधिष्ठिर नरराय॥ताहि दीन्हे होत है फल महा कहत सुप्रज्ञ। औ सुनौ पाषण्डपथसें दूरि जे धरमज्ञ॥करत संग्रह ताहि धनको विप्र ऐसे जौन। तिन्हें दीन्हें होत फलहै महा सुनि बुधि भौन ॥ रहि सर्बहि दोषसें अरु तजे जिन धनसर्ब। उदर पालन करैं गे भगवान पर्अदर्भं रहत जिनके चित्तमे यह विप्र ऐसे जौन । तिन्हें दीन्हें होत है फल महामुनि बुधिभौन ॥ लागि भिक्षा तपस्विन्हकों देत भोजन जौन । तिन्हें दीन्हें होत हैं फल महामुनि बुधिभौन ॥ महा फल विधि दानका हम कही तुमसें तात। नरक स्वर्गहि जानकी विधि सुनऊँ अब अवदात॥ झूठ जो है कोनहूँको प्राण रक्षा काज । औ गुरूके काज जो है झूठ सुनि नरराज ॥ छोडि इनको और झूठहि सुनऊँ बोलत जौन। कुपथ ह्वै के महत दुखकों जान नरक हि तौन ॥ रमत जो परदारकों जो रमत परतियसाथ । जो मिलावै परतिया परपुरुषसें नरनाथ ॥ मित्रता करि विस्वास पुनि भेद करतहै जौन ।जात ते जन नरकमें हैं कहत प्रज्ञाभौन ॥ हरत जो परद्रव्यकों जो करत परधन नष्ट । कहत जे परदोष तेऊ लहत दुरगति कष्ट ॥ पोसरानकों सभाको जो करत भेदन तात । औ अगारहि जौन भेदत तौन नरकै जात ॥ *॥ मोतिदामछन्द ॥*

अनाथहि दार छलैं जन जौन। सु नारकमांहि परैं जन तौन॥ सुन अरु जो जन छेदत दार। सुमित्र सुआश्र सुवृत्ति अगार॥ इन्हेंऊँ सु जो जन छेदत भूप। लहै जन नारक तौन अनूप ॥ महीपतिसें चुगली हिं महान। करैं जन जौन सुनो मतिमान ॥ सुजातनकी मरयादाहि भूरि। करै तिहिकीं जनजौन सु दूरि॥सुमित्रनके उपकार हि जौन। महि समुझै कबहूँ न तौन॥महा वखसो परवृत्ति छुडाय। करै निजवृत्ति सुनो नरराय॥ परै जन जौन सु नारकमाहि । महान सुजान कहैं अवगाहि ॥ * ॥ * ॥ तोटकछन्द ॥ * ॥

अरु जे जन निन्दक वेदनके । अरु निन्दक साधुनके गणके ॥ सुनि भूपति ते नरकै हि लहैं। सुमती मतिसें अवगाहि कहैं ॥*

॥ * ॥ रामगीतिछन्द ॥ * ॥

जन विरोधी होय जिहिकी वृत्ति अरु व्यवहार । परत सो है नरकमाहीं सुनहु बुद्धि आगार ॥ दूतरईसों करत जे व्यवहार हैं भूपाल ।प्रवृत निशिदिन रहत जे हिंसाहि माहि विशाल॥ लहत जे हैं नरकको दुख महत कहत सुजान ॥ औ सुनो जन जौन कहि यह देहिंगे हम दान । देत फेरि न ते परै हैं नरकमाहि महान ॥ आश काक्षहि देयके पुनि करत ताहि निराश। तौन जजन करत है सुनि नरकमाही बास ॥ अग्नि अतिथ सुभृत्य दारहि दिए बिन जन जौन । करत भोजन परत हैं जन नरकमाहीं तौन ॥ देवयज्ञहि पितरयज्ञहि करत जे जन नाहि । वेदबेचक वेददूषक परत नारकमाहि ॥ रहित चारौ आश्रमिणसों रहित श्रुतिमें जौन । आपको जे हन्ति दूषित महा गहि कै तौन ॥ करत जे हैं जीविका ते परत नारक बीच । सुनि युधिष्ठिर धर्मधर वर बुद्धिमान निभीच ॥ केशको अरु दूधको अरु विषहि बेचत जेसु । परत तेहैं नरकमाही कहैं परम सुपेसु ॥ द्विज गऊ अरु कन्यकाके काय माही जौन । करत बाधा परतहै जन नरक माही तौन ॥

॥ * ॥ अरिलछन्द ॥ * ॥

अस्त्र शस्त्रको जौन बनावत । अरु बेचैं ते दुरगति पावत ॥ काटनिसो जो मगको रोकत । नारकमाहि होत जन सोगत ॥ बिन अपराध गुरूको त्यागत । ते जन जाय नरकमे पागत ॥ तजत भृत्यको बिन अपराधहि । तौनऊ नारक लहत अगाधहि ॥ पशुके अण्डकोसको मरदन । करत जौन जन रोवत दरदन ॥ अरु जे छेदत पशुके नाकहि । तौन नरकमे रहत सशोकहि ॥

॥ * ॥ तोमरछन्द ॥ * ॥

जे प्रजासो करलेत । रक्षान करत सचेत ॥ अरु हैं समर्थ महान। परदेत नाही दान॥ अवनीप ऐसे जौन। सुनु लहत नारक तौन॥ * * ॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥ * * *

छमावान मतिवान रहत सङ्ग दक्ष दिमनसो । ऐसे जनहि अजान त्यागत जो नरकै लहत ॥

बाल वृद्ध बिन जौन भोजन करत महीप सुनु । जाय नरकमे तौन दुखको सहत अपारहै ॥

नरक योग्य जन जौन ते तुमसो हम सब कहे । स्वर्ग योग्य बुधिमान जनहै तिनको कहत अब ॥

सब कारजकेमाहि जौन सुयश वर विप्रको । करत उलङ्घन नाहि तौन स्वर्गको लहतहै ॥

जौन करत हैं दान सत्य बोलि करि कै सुतप । करत सुधर्म महान तौन स्वर्गको लहतहैं ॥

विद्या पढिनौ जौन कोदा प्रतिग्रह लेनको । रक्षा करत न तौन स्वर्गलोकको लहत हैं ॥

॥ * ॥ मल्लिकाछन्द ॥ * ॥

व्याधिग्रस्त जीव जौन। ताहि मोद देत तौन॥ स्वर्गलोक माहि धर्म। सेव श्रेयहैं अधर्म ॥ पाप धर्म भीति कष्ट । जीवके करैं सुनष्ट ॥ तौन स्वर्गलोकबीच। मोदसो रहैं निभीच॥ धर्म धीर क्षमावान। धर्मको करैंमहान॥ औ अचार युक्त जौन। धर्म्म मोद लेत तौन॥ मद्यमांस जो न खात। तौन स्वर्गमे

आ०प० विभात॥ और दारजे रमै न। लोभ मोहको धरै न॥ तैान स्वर्गलोक पर्म। ताहि लेत हैं अधर्म॥
दा०ध०
॥*॥ चामरछन्द॥*॥

देश ग्राम औ कुटम्बको सहाय जे करैं। तौन स्वर्गलोकमाहि भूरि मोदसो भरैं॥ औ सु आश्रमीनकी सहाय जे गहे रहैं। तौनहू सुलोकमाहि भूरि मोदको लहैं॥ बस्त्र भोज्य नीर जौन देत हैं दयाल व्है। तौन लेत स्वर्गलोक तेजमे बिशाल व्है॥ आनके बिवाहको कराय जौन देत हैं। तौन स्वर्गलोकमाहि भूरि मोद लेत हैं॥ * * ॥ ॥सोरठा॥ ॥* * *

सब हिंसासों दूरि सबके आश्रय भूतजे। तौन लेत मुद भूरि स्वर्गलोकमे प्राप्त व्है॥

॥*॥ चरणदोहा॥*॥

माताकी अरु पितरकी सु अति करत सु श्रूषा जौन। बन्धुनसों राखत जे प्रेमहि लहत स्वर्गको तौन॥

॥*॥ तोमरछन्द॥*॥

धनवान अरु बलवान। अति रूपमान सुजान॥ बर पाय यौबन पर्म। जन जौन रहत सधर्म॥ सुनि तौन स्वर्गहि जात। बुध कहत हैं अवदात॥ ॥जयकरीछन्द॥ ॥

अपराधकृ कीन्हे जन जौन। राखत परम प्रीति बुधिभौन॥ अति हो कोमल जासु सुभाव। तौन स्वर्गको जात सचाव॥ जो सेवा करिकै सुख देत। औरहि तौन स्वर्गको लेत॥ जौन देत सह सनको दान। सहसनको भोजन सुखदान॥ जे सहसनकी करैं सहाय। ते सुख लेत स्वर्गमे आय॥ अरु सुबरणको जो दातार। गज देत जो परम सुढार॥ बर जे बाहन देत सुठान। अरु सादर जे देत बिमान॥ ते जनजात स्वर्गको पर्म। सुनहु युधिष्ठिर नृपतिसधर्म॥ कन्या ब्याहमाहि जन जौन। दासी दास द्रव्य दे तौन। स्वर्गहि जात तात सुनि स्वच्छ। शास्त्र मतसो कहत सु दच्छ॥ बाग लगावत जौन सुढार। औ बनवै बनमाहि अगार॥ औ सु खनावै वनमे कूप। घाट बनावै परम अनूप॥ अरु सु पोसरालावै चारु। तौन लहतहै स्वर्ग सुढारु॥ शुद्ध सभूमि देत जे ग्राम। बास बनाय देत अभि राम॥ जौन बस्तु मागैं जन आय। तौन हि देत सुनो नरराय॥ पर्म सधर्म सुजन हैं जौन। पावत तौन स्वर्ग सुखभौन॥ करि उतपन्न धान्य रस पर्म। देत जौन दिव लहत अधर्म॥ जन्महोय कौन ऊँ कुलबीच। शतवत्सर जीवै सुनु भीच॥ जिहिके बहुत होंहि सुत स्वच्छ। आप सुदयावान अति दच्छ॥ जीतैं क्रोधहि होय महान। तौन स्वर्गको जात सुजान॥ पूरब ऋषिन्ह कहो जो पर्म। परलोकार्थ सुदान सुधर्म॥ तुमसों कहे तौन हम सर्ब। सुनहू धर्मधर नृपति अखर्ब॥ * *

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशी बासिरघुनाथकवीश्वरात्मजेन गोकुलनाथेन कविना बिरचिते भाषायांमहाभारतदर्पणे दानधर्मे त्रयोविंशोऽध्यायः॥ * * * ॥*॥ युधिष्ठिरउवाच॥*॥ रामगीतीछन्द॥*॥

बिन हने ब्रह्महत्या होति है किहि भांत। कहो हमको कृपा करि कै भूमिपति अवदात॥

भीष्मउवाच ॥ व्यासकों बुलवाय पूर्व हम सुबूझो जौन । सुनो समकों आयके [illegible] सो युधि भौंन ॥ हम सु बूझो व्याससों इमि सुनऊँ हे ऋषिराय । किनहने हू ब्रह्महत्या होति है किहि भाय ॥ बैन मेरे श्रवण करि कै धर्मवान सुजौन । कहत भे इमि व्यास मोसों सुनहु नृप मतिमान ॥ आपुही बुलवाय भिक्षा काज द्विजकों याहि । करै नाही फेरि लागै ब्रह्महत्या ताहि ॥ होय जो मध्यस्थ ब्राह्मण कहै कछु नहिँ बैन । हरै ताकी वृत्तिकों जो मना दुर्मति ऐन ॥ सुनु युधिष्ठिर होतहै सो ब्रह्महत्यावान । कहोहै अवगाहि मोसों व्यास वर मतिमान ॥ परम प्यासी [illegible] जो दूरि ते जलपास । जो न पीवन देत है जल महा दुर्मतिरास ॥ ब्रह्महत्यावान सो जन होत है भूपाल । और सुनो जो दूखतोहै वेद स्मृतिहि विशाल ॥ बिना आगी होतहै सो ब्रह्महत्यावान । [illegible] महती होय कन्या रूपवन्ति महान ॥ योग्यिकै वरयोग्य कन्या जो न करत विवाह । ब्रह्महत्यावान सो जन होतहै नरनाह ॥ देत द्विजकों शोच ऐसो अधर्मी है जौन । ब्रह्महत्यावान सुनु नृप होत है जन तौन ॥ अन्धको अरु पङ्गुजडको हरतहैं धन जौन । ब्रह्महत्यावान सो जन होत सुनु युधि भौन ॥ ग्रामने अरु विपिनके जो अग्नि लावत अन्ध । ब्रह्महत्यावान सो जन होत सुनु नृपश्रेष्ठ ॥ स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीगन्धीजनकाश्रीवासिरघुनाथकवीश्वरात्मजेन गोकुलनाथस्यानुजेन मणिदेवेन कविना विरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणि दानधर्मे ब्रह्महत्यावर्णनोनाम चतुर्विंशोऽध्याय: ॥ * * ॥

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ अरिल्लछन्द ॥ *

तिन तीर्थनको दर्शन अति वर । हे कल्याणक परम सुमति धर ॥ जो तिनको जो सबन समान सु । हे कल्याणक परम महान सु ॥ * ॥ चौपाईदोहा ॥ * ॥ * *

पुण्य तीर्थ जे हैं जे भूमे तिन्हहि सुनन्को तात । इच्छा भई हमारे हीये कहो आपु अवदात ॥

॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥ रामगीतीछन्द ॥ *

यहे गौतमऋषिहि तीरथ अङ्गिरस मुनि पर्म । सुनउ सो तुम सुनउकेही जोनक सुपन तर्म ॥ सो यह पुराण पर्म तुमको प्रसंगहै तात । तपोवन गत महामुनिवर अङ्गिरस अवदात ॥ भए कुजन गिरे गौतम पूछो इमि व्रत धाम । अङ्गिरस मुनि सुनऊँ सर्वहि तीर्थ माहि बखान ॥ होय संशय धर्मको है [illegible] सोचुँ । भई मो मन माहि इच्छा कहो सुमुनि अखर्व ॥ होतहै फल कहा तीरथ माहि कीन्हे स्नान । अन्त काल सु भए ते फल कहा होत सुजान ॥ महा गौतम ऋषीके ए बैन मुनिके पर्म भव कहत मे अङ्गिरसमुनि ज्ञानवान अखर्व ॥ मूर्तिनाशिहि [illegible] चित्रकूटके बीच । रहत बसर निराहार सु करै स्नान निमीच ॥ * ॥ तोमरछन्द ॥ * ॥ * *

[illegible] सु जो गति पर्व । अस नाहि होत अखर्व ॥

आ०प०
९२०अ०

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

काममीरकी जौन नदी सिन्धुमे मिलतिहैं। स्वर्ग लहतहै तौन तिनमे जो जन न्हातहै ॥

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

नैमिषार पुष्कर सु प्रभास । इन्द्रमार्ग वर धर्म सुरास ॥ अरु देविका नदी अति पास । सत्य बिन्दु शुचि तीर्थ सुढास ॥ इनमे जो जन करत सनान । सो बिमानपर चढि सुखदान ॥ जाय स्वर्गमे आनद रूप । लहत अप्सरा पर्म अनूप ॥ कीरति करति अप्सरा सच्छ । तिहिकी सुनु भूपति अति दच्छ ॥ तीर्थ हिरण्य बिन्दको बीच ॥ करै जौन जन स्नान निशीच ॥ अरु वर तीर्थ कुशेशय जान । तिहिमे करैं स्नान बुधिमान ॥ कल्मष दूरि होत हैं सर्व । लहत धर्म हैं पर्म अखर्व ॥ * * *

॥ * ॥ रामगीतीछन्द ॥ * ॥

इन्द्रतोया नदी है वर गन्धमादन पास । सदानीरा औ कुरङ्ग सुतीर्थ आनदरास ॥ स्नान तिनमे किएतें अरु तीन रजनी बास । विगत कल्मष पुण्यजनसो करतदिवनिबास ॥ अश्वमेध सु यज्ञको फल होत जनको पर्म । सुनु युधिष्ठिर भूपवर बुध ज्ञानवान सधर्म ॥ हरिद्वार सु नीलपर्वत औ सुक नखल सच्छ । कुशावर्तक औ सुबल्वक तीर्थ अहैं दच्छ ॥ किएतें सुनु स्नान तिनमे तीन रजनी बास । स्वर्ग प्राप्त सु होतहै बर पर्म आनद रास ॥ ब्रह्मचारी क्रोधजित अरु सत्यमान सु जौन । अपां ह्रद वर तीर्थ माहीं स्नान कीन्हें तौन ॥ अश्वमेध सु यज्ञके वर फलहि प्रापत होत । सुनउ शुचि व्रतवान भूपति परम प्रज्ञा पोत ॥ गङ्ग उत्तरवाहनी जह भई होहि सुजान । मास एक व्रत करै तामें जौन करिकै स्नान ॥ सिद्धिकों सो होत प्रापत मासहीमे पर्म । सुनउ पाण्डव नृपति बर बर ज्ञानवान सधर्म ॥ महा ह्रदमे किए तें सुनि स्नान त्रयनिशि बास । नशत द्विजहत्यादि पातक लहत आनद रास ॥ स्नान कीन्हें सच्छ बलकोतीर्थमाहीं पर्म । औ सु कन्याकूप माहीं किए स्नान सधर्म ॥ होति कीरति देवतनमे चन्द्रिकासी चारु । पर्म निर्मल सुयश सो अति लसत बुद्धि अगारु ॥ किए स्नान सु देविकावर सरितमे मतिमान । तथा सु वरिहदमाही किए स्नान सुजान ॥ लहत जन परलोक माही तेज रूप सुढार । देवतनमे रहतहैं अहि स्वर्ग माहि अपार ॥ महा गङ्गामाहिं क्रतिकाङ्गार्क माह्री पर्म । करैं व्रत एक पच्छ करिकै स्नान सुनउ सधर्म ॥ जाय निर्मल देह पावै स्वर्ग आनद धाम । सूर्य्यको सो तेज पावै रूप अति अभिराम ॥ वैमानिक तीर्थ माही स्नान करिकै पर्म । किङ्कणीकाश्रमे जाय सु करै स्नान सधर्म ॥ सुनउ सोजन स्वर्गमे अप्सरनसाथ सुढार । हर्ष सों अति छाय करिकै करै पर्म विहार ॥ प्राप्त व्है के कालिकाके धाम माही जौन । बिपासामे स्नान करिकै बसै त्रयनिशि तौन ॥ लहत नहि संसारको जो क्लेशहै अति छद्म । सुरलोकमे शुचि लहि बरोरहि मद्म ॥ प्राप्त क्रतिकाश्रममे व्है स्नान करि मैं स्नात । करै तुलन मधुको तै लहै स्वर्गहि दच्छ ॥ महा पुरमे न्हाय जे जन करत त्रयनिशि बास । अकल भय नहि धरा

चरको तीन सुनु युधिराज। देवदारु सु विपिन माही जानकै न्है पञ्ज॥ समनियम जे बसें ते जन लहे सर्ग अभर्ज॥ * * * * * ॥ ॥ चरणदोहा॥ * * * * * * * * ॥ शा०प० दा०ध०

सरस्तम्ब अरु कुशस्तम्ब शुचि द्रोणसर्म पदवीयाजे जन करत सनान स्वर्ग ते लहि करि रहत निभोच॥

॥ * ॥ चामरछन्द ॥ * ॥

जनस्थान चित्रकूटमाहि जौन न्हातहैं। लख देह पात तौन स्वर्गमे बिभातहैं॥ देविश्यामिका सु थान बीच जौन जायकै। एक पक्ष व्रत्त नेमसों करे सभायकै ॥ * ॥ मधुभारछन्द ॥ * * ॥

॥ गन्धर्व भोग। ते लहत लोग॥ सुनु नृप महान। बर सुमतिवान॥ * ॥ चामरछन्द ॥ * ॥

कौशिका नदी सु बीच जौन न्हात जायकै। शान्त भाव लेय लोलुभावको बिहायकै॥ एक विंश रात्रिवास कै सु व्रतको करै। तौन स्वर्गलोक माहि भूरि मोदसों भरै॥ श्री मतङ्ग वापिका सुमाहि जौन न्हातहैं। एक रात्रि माहि तौन सिद्धि लै बिभातहैं॥ स्वर्ग तीर्थनैमिषारमाहि एक मास ते। बासकै करैं सनान छोडिकै दिलास ते॥ * ॥ तोमरछन्द ॥ *

नरमेधको फल लेव। सुनु भूप धर्म सचेत ॥ * ॥ अरिलछन्द ॥ * ॥

गङ्गा ह्रद उत्पला बन बर। तिनमे जे जन न्हात सुमति धर॥ एक मास व्रत करिकै पूरण। लहत अश्वमख फल ते तूरण॥ गङ्गा यमुना कालञ्जर गिरि। इनमे एकमास न्है कै थिरि॥ करत सनान शांत गहि जे जन। दश हयमख फल लहत सु ते जन॥ न्हाएँ षष्टि ह्रदंम निर्मल। अन्न दानतें होत अधिक फल॥ सुनहु युधिष्ठिर नृपति सुमति धर। तीरथ परम प्रयाग माहि बर॥ तीनकोटि तीरथहैं आवत। अरु दश सहस सुफलसों भावत॥ * ॥ सोरठा॥ *

ऐसो जो अवदात तीरथ पर्म प्रयागहै। माघ मासमे न्हात तिहि मे ते स्वर्ग लहत॥ *

॥ * ॥ अयकरीछन्द ॥ * ॥

वैवस्वत तीरथके बीच। अरु पितराश्रम माहि निभीच॥ करत जौन जनजाय सनान। तौन होत शुचि पर्म सुजान॥ तिमिही किएँ मनहूद माहि। होत पवित्र कहौ अघनाहि॥ ब्रह्म सरोवर माहीं न्हाय। पुनि बर सुरसरि तामे जाय॥ करिकै स्नान होय अति स्वच्छ। मास एक व्रत कीन्हें दच्छ॥ चन्द्र लोकको प्रापत होत। सुनहु युधिष्ठिर प्रज्ञापोत॥ अष्टावक्र तीथमे न्हाय। पुनि उत्पातक माही जाय॥ करि सनान द्वादश दिन पर्म। बसिकै कीन्हें व्रतहि सधर्म॥ नरमख को फल प्रापत होत। सुनहु युधिष्ठिर प्रज्ञापोत॥ * ॥ रामगीतीछन्द ॥ * * * *

गया तीरथ माहि उत्तम प्रेत शिलपर पर्म। ब्रह्म हत्या छूटतीहै एक तात सधर्म॥ ब्रह्महत्या द्वितिय छूटति प्रेत पर्वत बीच। विष्णुपदमे तृतिय छूटति सत्य होत निभीच॥ धर्म पुरमे बासकी न्है होत उज्ज्वल पर्म। तहा बर करबीरपुरमे होत स्वच्छ सधर्म॥ देव ह्रद सुविशालमे अस्नान कीन्हेतात। होतहै जन ब्रह्मपदको प्राप्त अति अवदात॥ महा नन्दा तीर्थ अरु आवर्त नन्दा

आ०प० जौन। इन्हें सेवतन्है अहिंसक तीन सुनु बुधिभौन ॥ लहत स्वर्गहि अपसरनमे करतहैं सु विहार।
दा०ध० लहत तिहिको सुयश सुमनसमाहि सब सुढार ॥ पूर्णमासी कार्त्तिकी मे उर्वशीमे न्हाय।
करें पुनि लौहित्य तीरथ माहि स्नान सचाय ॥ होतहै फलपुंडरीक सु यज्ञको हे तात। राम
ह्रद सु विपाशामे किए स्नान विभात ॥ होतकल्मष दूरि अरु बर लहत मखफल पर्म। महा
ह्रदके माहि करि कै स्नान होय अभर्म ॥ मास एक व्रत करै करिकै चित्तकों अति शुद्ध।
लहै द्विज यमदग्निको गति सुनउ नृप बुध उद्ध ॥ जे अहिंसक किए तें तप विंध्य गिरि पर पर्म।
लहत एकहि मासमे जन सिद्ध तात सधर्म ॥ नर्मदा अरु सूर पारक माहि कीन्हें स्नान। राज
श्रीकों लहत हैं अरु पर्म तेज महांन ॥ जम्बु मारगतीर्थ मांहीं स्नान के जे स्वच्छ। मास तीन सुवन
से ते जन लहत सिद्धि सुदच्छ ॥ *❁*❁ ॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥ ❁*❁*❁*❁*

कोकामुख तीरथमे न्हाय। पुनि अञ्जलिकाश्रममे आय॥ न्हाय तहाँ अति उज्वल होय। बसै
कछुक दिन मुदसों भोय ॥ फेरि कुमारी तीरथ बीच। आय करै सुनु स्नान निभीच॥ बास करै
करि शाक अहार। पे न्हैं चीर बलकलहि धार॥ ऐसे जे जन हैं सुनु भूप। तीन स्वर्ग कों लहत
अनूप ॥ *❁*❁*❁*❁❁॥ * ॥ मधुभारछन्द ॥ * ॥ *❁*❁*❁*❁*❁

सेव सु प्रभास। बर धर्म रास ॥ तिहि मांहि स्वच्छ। लहि अमां दच्छ ॥ जन जांन न्हात। पुनि जे
विभात ॥उज्जान पर्म। तीरथ सधर्म ॥तिहिमाहिं जौन।जनन्हात तौन ॥बर धर्मधाम। होवत सु सु
जांन ॥ कल्मष प्रखर्व। मिटि जात सर्व ॥ कुल्या सनान।करि छंद विधांन ॥ कीन्हें सु आप। सुनि
बुधि कलाप ॥ हयमख सुढार। फल तासु चार॥ सो मित्र भूप। मोदद अनूप॥ *❁*❁

॥ * ॥ पज्झटीछन्द ॥ * ॥

पिण्डारक तीरथ परम स्वच्छ।तिहि माहि स्नान करि कै सुदच्छ॥ एक निशा बास कीन्हें अनूप।
अग्नीस्टोम मखको सुभूप॥फल मिलत सर्व अघकूटि जात। अवदात सुयश जगमे विभात॥ इहि
भाँति ब्रह्मसर माहि आय। कीन्हें सनान सुनु भूमिराय॥ मखं पुण्डरीक को फल महान। सो
मिलत आनि अति मोद दान॥ मैनाक अचल पर आय न्हाय। संध्या सु करै चित कों लगाय॥
कुध काम जीति एक मास बास। कीन्हें महीप सुनु सुमतिराय ॥ फल सर्व मखनको मिलत
पर्स। बर कान्ति होति शुचि मति अभर्म ॥कालोदक तीरथ नन्दि कुण्ड। तिनके सनान ते अघष
मण्ड ॥ मिटि जात होत निर्मल शरीर। सुनि सुवन धर्मधर पर्म धीर ॥ नन्दीश्वर दरशन ते
महान।अरु स्वर्गमार्गमे किए स्नान॥मिटि जात तात कल्मष बिलंद।जन सर्व जात [illegible]॥
विख्यात अचल हिमवान भूप। सब रत्न न्हको आकर अनूप ॥ सेवत सुजादि तप सिद्धि सिद्ध।
रमणीय पर्म पावन प्रसिद्ध॥ तहँ पूर्व प्रीति सों देव पूजि।अति जे प्रसन्न पंज भाँति [illegible]।[illegible]

के निज आहरि सविधि धर्म । जीवन अनित्य जाने सु समर्थ ॥ जे तजत देह सुनु सुमति ओक ॥ श्रा॰प॰
ते लहत सनातन ब्रह्म लोक ॥ * * * * ॥ * ॥ चचलाछन्द ॥ * ॥ दा॰ध॰

काम क्रोध लोभ मोह जीतिकै मनुष्य जौन । तीर्थ वासकों करै सुनो सु तात बुद्धि भौन ॥ सब ताहि होत प्राप्त पाप पर्म छूटि जात । पुण्यवान होय तेजवान भान लौं विभात ॥ * * **

॥ * ॥ चरणाकुलकछन्द ॥ * ॥

और अगम्य तीर्थहैं जेते । जाय ध्यानसे तीरथ तेते ॥ स्नान करि करै तिनकी पूजा । तिहि सो पुण्यवान नहि दूजा ॥ तीरथ सेवन कल्मष हारी । यज्ञ फलहु अतिहो सुखकारी ॥ उत्तम परम स्वरगको दांनी । महिमा तासु न जाति बखानी ॥ * * ॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

यह श्रुतिको सिद्धान्त कह्यो तोहि हम ताततो । जे जन साधु नितान्त तिनसों कहिबे योग्य है ॥
शिष्य मित्र शुचि धर्म धर्म सहित जो होय तो । सुनहु तात ब्रमर्म ताहू कोंऊ सुनाइए ॥
सुऋषि अङ्गिरा दान्त ज्ञानवान, व्रतवांन वर । यह जो श्रुति सिद्धान्त बूझें गोतमसों कह्यो ॥

॥ * ॥ मधुभारछन्द ॥ * ॥

पावन महान । यह है सुजान ॥ जे भजत याहि । विधि सहित चाहि ॥ ते स्वर्ग लोक । आनन्द ओक ॥ पावन अनूप । निज जांनि भूप ॥ यह सुनत जौंन । यहकों सु नौंन ॥ उत्तम अनूप । कुल माहि भूप ॥ सो जन्म सब । सुख लेत दब ॥ * * * * * *

इति श्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणसिंहाज्ञानुगामिना श्रीवन्दीजनकाशीवासिरघुनाथकवीश्वरात्मजेन गोकुलनाथस्यशिष्येण मणिदेवेन कविना विरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे दानधर्मे पञ्चविंशोऽध्यायः ॥ ॥ रामगीतीछन्द ॥

॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ पराक्रमले शक्र जैसे बली वीर महान । समामाहो विधाता से तेजमे जिमि भान ॥ गिरे अर्जुन बाण करिकै खेतमाहो पर्म । महा वीरनमाहि जे अति श्रेष्ठ सब सधर्म ॥ सहित बन्धुन्ह नृप युधिष्ठिर पास तिनके जाय । सेवते हैं परम जैसे भीष्म सुभटक राय ॥ देखिबेकों तिन्हहि आए महाऋषि तपवान । तेज पुञ्ज सु अग्नि जैसे ज्ञानवांन महान ॥ अत्रि भृगु सु पुलस्त्य गोतम पुलह क्रतु सव्रत । अङ्गिरस अरु सुमति जे कुषितेजसों अघहर्त ॥ गिरा स्थूल वशिष्ठ गालव च्यवन काश्यप व्यास । प्रमति विश्वामित्र दम अरु शुक्र तेजयराश ॥ रैभ्यचित अरु अवक्रीत सुभरद्वाज सुजान । सुधन्वा पर्वत सु नारद तेजवान महान ॥ वितभूत्तम धौम्य एकत आदि दै ऋषिराय । भए आवत देखि वेकों भीष्मनहि सहचाय ॥ * * ॥ मोतीदामछन्द ॥ * *

सबन्धु युधिष्ठिर भूप सुजान । ऋषीन्हकों पूजन भो तपवांन ॥ ऋषिवर पूजित बैठि सचाय । कथा शुचि भीष्मकी सुखदाय ॥ सबै करतें सु भए अतिलच । सुनो जनमेजय भूपति दक्ष ॥ कथा

शा०प० दा०ध० सुनि सोनसु भीषमबीर। भए अति पावत मोद गँभीर॥ सु औचार आनन्दमें सरबस्य। तदन्तर बैन जपो सु समस्य॥ सु अन्तर ध्यान भए तिहि बोन। सबै जन होत रहे आनन्दमोन॥ ❧✻❧

॥ ✻॥ चरणाकुलकछन्द ॥ ✻॥

अन्तरध्यान सबै ऋषि भए। तऊ युधिष्ठिर गुरुसों रए॥ पुनि पुनि करत प्रशंसा ताकी। करि कै प्रगट प्रीति शुचि होकी॥ भे प्रसन्न भीषमके पासी। बैठतभे पाण्डव सउलासी॥ होत ऋषि न्हको तपत प्रभावा। पाण्डवके हिय विषमय छावा॥ तिन ऋषिन्हको भाग्य अनूपा। चिन्तत बन्धु सहित बर भूपा॥ भीषम सह पाण्डव बर ज्ञानी। कथा ऋषिन्हकी सुभग महानी॥ कहत भए अतिही मुद पागे। तिनकी ध्यानमाहि अनुरागे॥ ✻॥ वैशम्पायन उवाच॥ ✻॥ कथा अन्तमे पाण्डव भुवपति। भरे हर्षसों धरे परम रति॥ भीषमके चरणनमे अतिबर। नाय माथको परम सुमति धर॥ बूझत भए सुप्रश्न धर्मको। पर्म मनोहर धाम शर्मको॥ ✻॥ युधिष्ठिर उवाच॥ कौन देश है श्रेष्ठ महाना। कौन अचल अरु कौन सुथाना॥ कौन श्रेष्ठ सरिता है जगमें। नशत कलुष अति तिनके मगमे॥ कहो पितामह हमको गुणिकै। आसो समुद होऊ मैं सुनिकै॥ ॥ ✻॥ भीष्मउवाच॥ ✻॥ यहि सुप्रश्नमे सुनिए भूपा। कहत एक इतिहास अनूपा॥ ❧

॥ ✻॥ रामगीतो छन्द ॥ ✻॥

शीलवृत्ति द्विज अरु सिद्धको तिहि माहि है सम्वाद। सुनि युधिष्ठिर नृप सो इतिहास छोड़ि प्रमाद॥ भूमिकी परदक्षिणा कै पुनह पुन एक सिद्धि। गेहमें शिलवृत्ति द्विजके प्राप्त भो तपनिद्धि॥ सिद्धकी शिलवृत्ति द्विजवर करी पूजा पर्म। होय हरषित बसत भो निशिमाहि सिद्ध सधर्म॥ प्रात उठि शिलवृत्ति द्विजवर प्रातकृत करि पर्म। सिद्धके भो निकट आवत सुनऊँ तात सधर्म॥ सिद्ध अरु शिलवृत्ति द्विज मिलि बैठि सुख सह उह। कथा कहते भए सुनिमन भई सुन्दर गुह॥ अन्तमाहीं कथाके शिलवृत्ति विप्र सुजान। पनसों करि सादर बर सिद्धकों मतिमान॥ तुम युधिष्ठिर भूप बूझो प्रश्न हमसों जौन। तौन प्रश्नहिं करत भो द्विज सिद्धसों कर भौन॥ ✻॥ शिलवृत्तिरुवाच॥ ✻॥ कौन होहि श्रेष्ठ आश्रम देश पर्वत पर्म। कहो हमसों कृपा करि कै सिद्ध सब सधर्म॥ ❧✻❧॥ चरणाकुलकछन्द॥ ❧✻❧॥ ❧✻❧✻❧

सिद्धउवाच॥ ✻॥ श्रेष्ठ देश गिरि आश्रम सोई। जिहिमें गङ्गा आवत होई॥ जो जिहि सुर सुरि पूजन कीन्ह। सो न मिलत है हामज़ होन्है॥ ब्रह्मचर्य्यसों जो बनजातो। न मिलत सुपथ कहाँ अवगाही॥ कीन्हें तप अरु यज्ञ महाना। मिलत नहीं फल तौन सुजाना॥ जिनको अंग जन परसे। तौन स्वर्ग मे रहत बहरसे॥ जिन्ह सनेते कबहुँ नाशी। द्विजबर आस वास जगमाहीं॥ होत गङ्गजलसों सब काजा। तिन मनुजनको सुख भुव राजा॥ भूमि छोड़ि जिन्ह नभ भागे। बसत स्वर्गमे मुदसों पागे॥ जे जन पूरब बयमे भारी। कीन्हें पाप हाथि दुखकारी॥ ते पुनि

औं गङ्गाको [illegible] जनम [illegible] पावैं ॥ [illegible] किए [illegible] ॥ [illegible] यज्ञनसों ५।४
[illegible] ॥ [illegible] जिमि तम हरि के । सोहत भासमान युति करिके ॥ तिमि ही ६।४
जे गङ्गामें न्हावे । दूरि पापकों करिके भावे ॥ जितने [illegible] मनुजनके । रहत लोम [illegible] [illegible] ॥ तितने सहस वर्ष दिवमाहीं । पूजित रहत सुरनके माहीं ॥ [illegible] बिन कुसुम [illegible] नहि जैसें । हिम [illegible] देस [illegible] बिन तैसें ॥ [illegible] बिन [illegible] न रजनी जिमि है । देस दिसा [illegible] बिन तिमि है ॥ * * * ॥ तोमरछन्द ॥ * * * * *

बरवर्ण आश्रम [illegible] । जिमि सोहत न बिन धर्म ॥ [illegible] सोम बिन जिमि यज्ञ । नहि [illegible] है मुनि प्रज्ञ ॥ तिमि सोहत न [illegible] । बिन गङ्ग भूप [illegible] ॥ जिमि अर्क बिन आकाश । नहि [illegible] ॥ बिन [illegible] भूमि सहांन । नहिँ ज्यौं [illegible] मतिमांन ॥ सुर [illegible] बिन देस । [illegible] ॥ * ॥ चरणदोहा ॥ * ॥

[illegible] तीन लोकके बीच । [illegible] प्राप्त होत तेसुनि बर नृपति निभीच ॥

॥ * ॥ अथकरिछन्द ॥ * ॥

[illegible] जौन । ताहि पियत जो जन बुधिभौंन ॥ तिहिकों जावक व्रततें पर्म्म । अधिक होत [illegible] सधर्म्म ॥ * * * ॥ * ॥ अरिल्लछन्द ॥ * ॥ * * *

[illegible] है चन्द्रायन । अरु जो गंगा स्नान सचायन ॥ ते दोऊ सम हैं धौंहैं नाहैं । होत [illegible] हियमाहैं ॥ * * * ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ * * * * * *

[illegible] रहत [illegible] जो एक पाषसा पर्म्म । जो सुरसरिमें न्हात जो एक मास सह धर्म ॥

॥ * ॥ अथकरीछन्द ॥ * ॥

ते दोऊ सम हैं [illegible] नाहैं । है सन्देह महा हियमाहैं ॥ * * ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ * *

[illegible] के गुन [illegible] जूजत है मन जौन । तिहितें अधिको श्रेष्ठ है गंगाश्रित है तौन ॥
[illegible] प्रापत भयें [illegible] होत जिमि तूल । तिमि गङ्गाश्रित जननकों पाप होत निरमूल ॥

॥ * ॥ [illegible]छन्द ॥ * ॥

[illegible] सहित [illegible] । [illegible] ज्ञान भाय ॥ [illegible] सुजीव तिनकों सुजान [illegible] ॥ * * * ॥ * ॥ रामगीतीछन्द ॥ * ॥ * * *

[illegible] जिमि [illegible] होत । तिमिहि गंगा दरसतें मिटि जात अघ बुधिपेत ॥ [illegible] नहि जौन । होत सुरसरि सरणतें हैं प्रतिष्ठित जन तौन ॥ परत जे [illegible] । [illegible] के ध्यानतें ते होत अघतें दूरि ॥ सुरसरीके सामुहें [illegible] है पर्व । [illegible] ताकों कहत सब सुधर्म ॥ बिनय अरु आचारतें जे हीन

भा०प० अनु० अघरूप। सुरसरीके सरसोंते होत सरूप अनूप ॥ बसि आरत उरगारी ज्यों अमृत दे सुख
दा०ध० दान। मरनकों तिमि सुरसरीको सलिल है अभिमान ॥ * * ॥ * ॥ चौपाईछन्द ॥ * ॥
सुधा करि आरत बालक होय। उपासत मातहि ज्यों सुख भोय ॥ सुमो तिमि श्रेय मनोरथ
काज। उपासत गङ्गहि जीव सुसाज ॥ यथेहि सुवासनमे जिमि धर्म। सत्यसुत पान सु श्रेष्ठसधर्म ॥
नदीनमिमे तिमि श्रेष्ठ अनूप। सु गंगहि जानि महा सुदरूप ॥ सुरादिकको जिमि जीवन मूल
धरा अरु धेनु समोर अनूल ॥ सबै तिमि जीवनको मतिमानि। सुजीवन भूरतु गंगहि जानि ॥
पीयूषहि ज्यों सुर पीवत धर्म। महा सुदसों सुनि विप्र सधर्म ॥ सु आनु जाल गङ्गकों तिमि चाहि।
सबै जन पीवत हैं यवमाहि ॥ * * * ॥ * ॥ सरसा दोहा ॥ * ॥ * * * *
देवधुनीकी सिकता तासों लपटे हैं जन जौन। दिव वासीसे आपुहि मानत ते जन सुनि बुधिभौन॥
॥ * ॥ भुजङ्गप्रयातछन्द ॥ * ॥
सुनो जान्हवी नीरकी दृत्तिकाकों। धरैं ते धरैं भानुकोसी प्रभाकों॥ लगे पाप भारी दुरे मुक्तकीने।
लसे स्वर्गमे कीर्तिकों के मढीने ॥ सिवोताहि जो पर्सि के वायु जाके। सुदा पापका तौन
नाषै विनासै ॥ * * * * ॥ * ॥ मधुभारछन्द ॥ * ॥ * * * *
दुर्विषम धर्म। अरु अति अधर्म ॥ तिनमाहि जौन। रत कुमति भौन ॥ दुर्विषम तासु। अरु
कलुष रासु ॥ हरि लेति नाहि। सुरसरित चाहि ॥ सुरसरित तीर। सुदमे गभीर ॥ जे करत रास।
पक्षी सचाव ॥ गन्धर्व जौन। तिन सम न तौन ॥ हंसादि सच। पक्षी सुदच्छ ॥ सुचि बोलि बोल।
करि करि किलोल ॥ जिहि माहि धर्म। नाचैं अभर्म ॥ सुरसरित कूल। जैसो अनूल ॥ सुचको
सुधाम। अतिही ललाम ॥ तहँ सुमुनि बर्ग। गे भूलि स्वर्ग ॥ * ॥ * ॥ रामगीताछन्द ॥ * ॥ *
होत जो मुद सुरसरीके पुलिनमाहि महान। होत सो नहि स्वर्गमाही भाम सुनि मतिमान॥
बचन मन अरु कर्मसों जो जनित पाप बिलन्द। मसत तिहिसों जौन जन है सुनऊ विप्र अमन्द॥
तौन जन लखि सुरसरीकों होत पावन धर्म। है न इहिमे तौन संशय सुनऊ विप्र सधर्म ॥ सुरसरी
अरु परसतें अरु पियतें जल सच्छ। करति पावन धर्म जनकों सुरसरी सुनि दच्छ ॥ सुरसरीकी
कीर्ति बरसों सुनत हैं जन जौन। मात पितके कुलहि तारत तौन सुनि बुधिभौन ॥ सुरसरीको
लखत जो नहि आय सुनि मतिमान। तौन जन है मृतक अरु अब धर्म अन्ध समान ॥ सकल ऋषि अरु
देव तिहिकों भजत नित्य सप्रेम। सुनऊ चेरी सुरसरीकों करै जौन सनेम ॥ ब्रह्मचारी ग्रही
प्रस्थ सु यती अरु बहु बान। रहत गङ्गा सरसमें जिमि सुनि मतिमान ॥ यथे माता सरिस
नहि कौन वैसो अम्ब। लखत जाकों होत हैं जन देवसम सुनि अम्ब ॥ * * *
॥ * ॥ नवपदाछन्द ॥ * ॥
अन्तकाल माहि जौन गंगकों भजै सुजान। दच्छ ताहि धर्म सच्च भाम होत ए सुजान ॥ जान्हवी

सुअन्त कालसों भजै सप्रेम जौन ।व्याघ्र आदि जीवकी सुभीतिकों लहै न तौन ॥ पाप होत नष्ट सर्व धर्म कष्ट छूटि जात । तेजमें अखण्ड होय मारतण्डलों विभात ॥ माथ मे धरैसु जाहि अंग मोदसों अखर्व । पूजते सप्रेम हैं सनेम ताहि देव सर्व ॥ गंगके वियोगतें जथा सु होत हैं कलेश।मात तात पुत्र दारके वियोगतें बुधेश ॥ होत है तथा कलेश नाहिं विप्र सत्य मानि । लेतहैं मुनीश मोद तासु कूल वास ठानि ॥ तीनपंथ चालि तीन्हु सु लोक के अमन्द । तीनन्हु सुलोक बोध कीर्तिकों करो विलन्द ॥ होत ज्यों प्रसन्न दृष्टि पूर्णचन्दको सु देखि । होति त्यों मनुष्यकी सुदृष्टि जान्हवी हि पेखि ॥गंगकों विलोकि चित्त होत ज्यों प्रसन्न धर्म ।कौन हू पदार्थ पाय त्योंन होत है सधर्म ॥ गा०प० दा०ध०

॥ * ॥ रामगीतीछन्द ॥ * ॥

सुरनमाहि सुरेश जैसे नरनमाहि नरेश । नखतनमे नखतेश जैसे श्रेष्ट है सुबुधेश ॥ तिमिहि सरितनमाहि श्रेष्ठा सुरसरी है धर्म । जाहि परशे होत जन कृत कृत्य हैं विनभर्म ॥सुरसरीकों भक्ति गहि के जपत हैं जन जौन।सुरसरीको लगत प्रिय हैं तौन सुनि बुधिभौन॥राजती है लोक तीन हु माहि कीरति जासु । सेय जाकों होतहैं कृतकृत्य जन बुधिरासु ॥ भूमिवासी व्योमवासी स्वर्गवासी सर्व । करत गङ्गास्नानहूं अति गहे मोद अखर्व ॥ प्राप्त कीन्हे सगर नृपके सुवन जिहि दिव माहि । जाय जिहि के निकटमें जन के नहीं हर्षाहि॥ सुरसरीकी लहरिसे निर्दोष भे जन जौन । तौन राजत प्रभासेहै भानलौं बुधिभौन ॥ देह छोडत जौन जनहूं सुरसरीमें जाय । देवसम ते होयकै नित रहत मुदसे छाय ॥अंध जड धनहीनहूकी करति इच्छा सिद्धि ।मोददा सुरसरीके सम और नहि बुधिसिद्धि ॥ लहत जे जन सुरसरीको शरणहूं अवदात । मोद पागे जायकै ते स्वर्ग माहि विभात ॥ करत दरशन सुरसरीको जौन वसिकै कूल । ताहि आनद देतहैं सुर भरे प्रेम अतूल ॥ प्रात आर्य भूमिमे है जान्हवी सुखदान । होतहै अति पुण्ययाते प्रात कीन्हे स्नान ॥ लोक तीनो सुरसरीसे होत भूषित धर्म। होत पावन सर्व इनतें सुनहु विप्र सधर्म ॥ सुरसरीके शरणमाहीं मनहूँ सों जे होत । ब्रह्मपदकों होत प्रापत तौन सुनु बुधिपोत ॥ होति है परसन्न जैसे जननि सुतकों देखि । होति त्यो परसन्न गङ्गा सर्वलोकन्ह पेखि ॥ चित्तकों वश किए जे जन ज्ञानवान महान । सुरसरीकों सेवतेहैं ते सबै मतिमान ॥ मोक्षकी बर कामनाकों करत जे जन धर्म । प्रेमसों ते सेवतेहै सुरसरीहि सधर्म॥ शम्भु आदिक देवतनकों कै प्रसन्न सुजान।उग्र तपसों भगीरथ नृप ज्ञानवान महान ॥ * ॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥ * * * * *

ल्याए भूके माहि जान्हवीहि अति मोददा । पावत जिहिके पाहि अमरनकी गतिकों सु नर ॥

॥ * ॥ रामगीतीछन्द ॥ * ॥

ताहि परसैं भीति दोउ लोककी मिटि जाति । बढत तेजश सुरनको सो सतमति सरमाति ॥

शा०प० दा०ध० सुरसरीके गुणनको हम कह्यो यह एक देश । बुद्धिसों अवगाहि करिकै सुनऊ विप्र बुधेश ॥ सर्व गुणके कहनको है शक्ति हममे नाहिं । सकल नहि अवगाहि जो वर अनरऊ अवगाहिं ॥ मेरु गिरिके उपलको अरु सिन्धुजलकी पर्म । होति संख्या पै न गङ्गा गुणनको यह धर्म ॥ सुनऊ तात आनि गङ्गा गुणनकों मतिमान । भक्ति मन वच कर्मसों गहि होय श्रद्धावान । मोददा अति सुर सरो वर कृपा करिकै उद्ध । धर्मयुत करि करैं तव मम मनीषाकों शुद्ध ॥ *

॥*॥ तोटकछन्द ॥*॥

॥*॥ भीष्मउवाच ॥*॥ शुचि जन्हुसुता वरके करि कै । बुधिसों अवगाहि हिए धरि कै ॥ द्विजसों बुध सिद्ध विदा लहि कै । सु गयो दिव मारगकों गहि कै ॥

॥*॥ अनुकूलोमरछन्द ॥*॥

सुनि सिद्धिके वर बैन कों । शिल वृत्ति द्विज सुख लैन कों ॥ सुर निम्नगाकहँ पूजि कै । धरि प्रेमकों हिय कूजि कै ॥ शुचि सिद्धि दुर्लभ पाय कै । रवि रूप मोद बिकाय कै ॥ तिहि भांतिहौ तुम पूजिये । सुर निम्नगाकों कूजिये ॥ गहिकै सुभक्ति महान कों । धरि हिएमे वर ज्ञान कों ॥

॥*॥ मधुभारछन्द ॥*॥

उत्तम सु सिद्धि । तुम बुद्धि निद्धि ॥ लहि हौ महान । अति मोद दान ॥ सुर सरिद्धि सेय । को मुद न लेय ॥ गङ्गा समान । सुखदान आन ॥ याते सुपूजि । बहु भांति कूजि ॥ *

॥*॥ जयकरीछन्द ॥*॥

वैशम्पायनउवाच ॥*॥ सुरसरिलव सहित इतिहास । बुद्धि प्रकाशक आनदरास ॥ बन्धुन्ह सहित युधिष्ठिर भूप । सुनि कै हर्षित भयो अनूप ॥*॥ दोहा ॥ ********

एहि इतिहासहि औंन जन पढै सुनै सह प्रेम । सबै कलुष ताके मिटैं नितिही रहै सछेम ॥

स्वस्तिश्रीमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्याज्ञानुगामिना श्रीबन्दीजनकाशीवासिरघुनाथ कवीश्वरात्मजस्य गोकुलनाथस्य शिष्येण मणिदेवेन कविना विरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणि दानधर्मे गङ्गामाहात्मे षड्विंशोऽध्यायः ॥

॥ * ॥ रामगीतीछन्द ॥ * ॥

॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ सर्वगुणसों युक्त हौ तुम सुनऊ भीषम तात । वेदधर्महि धरे हौ अरु शीलको अवदात ॥ महा प्रज्ञावान हौ बलवान अरु धनवान । धर्मधरं जे मनुज तिनमे श्रेष्ठ आपु महान ॥ धर्म बूझत आपुसों यह हेतुतें हम पर्म । धर्मवक्ता आपुसो नहि और कोइ सधर्म ॥

॥ * ॥ पञ्चमालीछन्द ॥ * ॥

क्षत्रियसु वैश्य अरु शूद्र औंन । द्विज ताहि लहत किहिं भांति मौंन ॥ तप किए लहतकी किए कर्म । श्रुति श्रवण किएकी लहत पर्म ॥ हमकों सु आपु कहिए नरेश ॥ तुम कहन योग्यहौ वर बुधेश ॥

॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥ रामगीतीछन्द ॥ * ॥ शा०प० ६।४०

क्षत्रियादिक वर्ण जे हैं तीन सुनु भूपाल । लहत हैं ब्राह्मणत्वकों अतिदुःखसोंसु बिशाल ॥ बहुत योनिन माहि पुनि पुनि जन्म लेत सुजान । जन्म आइत माहि कबहुं होतद्विज मतिमान ॥ परम यहि परसंगमे एक कहत हौं इतिहास । सुनहु सो मन लायके तुम भूपवर बुधिरास ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

ऋषि मतङ्ग अरु गर्द्दभीको तिहिमे सम्बाद । अब तोहि कहत बुझाइ कै जेहि सुनि मिटत बिषाद ॥

॥ * ॥ छन्द ॥ * ॥

रहो एक वर विप्र कोई बेदवान सुजान । संसकारित भयो ताके सुवन एक सुलदान ॥
सर्व गुणसों युक्त जो हो नाम तासु मतङ्ग । सिन्धुसो गम्भीर हो वर भरो बुद्धि तरङ्ग ॥
विप्र मख सामान काजे ताहि भेज्यो तात । चपल बालक गर्द्दभनसों युक्त रथ अवदात ॥
चढो तापै चलो ल्यावन यज्ञको सामान । लगो मारण गर्द्दभनकों सो सुनो मतिमान ॥
प्रेम पूरी ही तहां उन गर्द्दभनकी माय । देखि पीडित सुतन्हकों तिहि कह्यो इमि अकुलाय ॥
करहु शोचन पुत्र मेरे धरहु हीमे धीर । है महा चण्डाल यह पर कहा जानै पीर ॥
मित्र सबके होत है द्विज होत निर्दय नाहि । लेत शिक्षा आय कै जन सर्व तिनके पाँहि ॥
करत बालक दयाकों नहिँ देत यह बहु मार । है नहीं यह विप्र जानो याहि अघ आगार ॥
गहै अपनी जातिको यह भाव है सुनु तात । हनत यातें धरत है नहि दयाकों अवदात ॥
होत है जब आयहोमे प्रवृत जाति सुभाव । रहत नहिँ तब हिए माहो मनीषाको छाव ॥
गर्द्दभीके वचन सुनिकै ए मतङ्ग सुजान । गर्द्दभीके पास आयो छोडि रथ सुलदान ॥
कहत भो इमि बैन तासों ऋषि मतङ्ग अभर्म । मोहि किमि चण्डाल जान्यो कहहु गर्द्दभि पर्म ॥
नष्टकै सें भई मेरी विप्रता अभिराम । कहो बिधिसों सर्व मोसों बुद्धिवन्ती माम ॥

॥ * ॥ गर्द्दभीउवाच ॥ * ॥

है तुम्हारो शूद्र पितु अरु ब्राह्मणीहै मात । नष्ट यातें भई है तव बिप्रता अवदात ॥
बैन सुनि ए गर्द्दभीके ऋषि मतङ्ग अनूप । भयो आवत धाम माँहो सुनु युधिष्ठिर भूप ॥
देखि ताकों पिता ऐसें कह्यो तात सुजान । गहो क्यों नहि ल्यायबेकों यज्ञको सामान ॥
गेहमे फिरि आवनेको कौन कारण तात । कुशल है की नाहि मोसों कहो सुत अवदात ॥

॥ * ॥ मतङ्गउवाच ॥ * ॥

लेत जे हैं जन्म कुत्सित जातिमे सुनु तात । कुशल सों ते रहै गे किहि लोकमे अवदात ॥
गर्द्दभी इमि कह्योमोसों सुनहुँ पितु अवदात।पिता तेरो शूद्र है अरु ब्राह्मणी तव मात॥
सुनहु तातें करैंगे हम महत तप बन बीच।पितासों कहि बैन ऐसें ऋषि मतङ्ग निभीच॥

शां०प० दा०ध० करी ऐसी तपस्या वर विपिन माहीं आय । भए तासों तृप्त सुरको इन्द्र सह सुरराय ।
भयो तपसों विप्रताको प्राप्त वर ऋषिराय । महत तपसों युक्त लखिकै मक्त तापै आय ॥
कहत भो इमि महत तपको करत हो किहि काज । मनुज वारेछोडिकै सबभोग वारे साज ॥
आँन रचित होय तुमको देऊँ सो वर दाँन । कहहु मोसों करऊँ देर न सुनो मतंगसुजाँन ॥

॥ * ॥मतङ्गउवाच ॥ * ॥

लहे हम यहिँ विपिन माहीं विप्रताकों धर्म । है हमारे कामना यह सुनो मक्त अभर्म ॥

॥ * ॥भीष्मउवाच ॥ * ॥ चरणाकुलकछन्द ॥ * ॥

ऋषिके बैंन पुरन्दर सुनिकै । ऐसे कह्यो हिएमें गुनिकै ॥ द्विजता अति दुर्लभ है जानो । यह न मागिबेको अनुमानो ॥ तुमको प्रापति व्है है नाहीं । धरऊ न मन यह इच्छा माहीं ॥ देव दनुज मनुजन मे रूरी । धर्म पवित्र विप्रता पूरी ॥ भे चंडाल जोनिके माहीं । याते द्विजता लहिहो नाहीं ॥
स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशीवासिरघुनाथकवीश्वरात्मजेन गोकुलनाथसुतगोपीनाथस्य शिष्येण मणिदेवेन कविना विरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणि दानधर्मे मतङ्गमक्तसम्वादेसप्तविंशोऽध्यायः ॥ ****

॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥ मधुभारछन्द ॥ * ॥

चंडाल आँन । कबहूँ न तौंन । द्विजताहि लेत । सुनि है सचेत ॥ * ॥ चरणाकुलकछन्द ॥ * ॥
सुनिकै यह मघवाकी बानी । वर व्रतवांन मतङ्ग सुज्ञानी ॥ कीन्हो तप एक पदसों ठाढे ॥ शतवत्सरलौं नहि मन बाढे ॥ तदनन्तर बोले मघवा पुनि । ऋषि मतङ्गको तप छोभे गुनि ॥ द्विजता अतिही दुर्लभ जानो । लहिहो तुम न सत्य अनुमानो ॥ मति कर साहस ही के माहीं । तुम्हेरो धर्म्म मार्ग यह नाहीं ॥ द्विजताको तुम नहिँ लहि शकि हो । बहु दिनलौं तप करि करि थकि हो ॥ बार बार तुमको हम बरजे । मानत नाहि हिए हठ बरजे ॥ यह निश्चय मानो मन माहीं । मिलिहै तुम्हैं विप्रता नाहीं ॥ द्विजता लीवे औं हठ करिहो । थोरे काल माहिं तौ मरिहो ॥ तिर्यग जोनि माहिँ जत जे हैं । लहत मनुज ताको जब ते हैं ॥ तब चंडाल योनिके माहीं । लेत जन्म हैं सुनु मन पाहीं ॥

॥ ॥ रामगीतीछन्द ॥ ॥

भ्रमतहैं बहुकाललौं तिहिँ योनि माही तौन । लहत ते पुनि शूद्रताको सुनो वर बुद्धिभौंन ॥
रहत जितने वर्ष हैं चंडालजोनि सु माहिं । सुनऊँ तात सुजान तुमसों कहतहौं अवनाहि ॥
शूद्रतामें भ्रमत तात अधिक द्विगुण तौन । लहत ते पुनि वैश्यताको सुनो प्रज्ञाभौंन ॥ * ॥ * ॥

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

शूद्रयोनिमें जितने वर्ष । भ्रमत जीव सुनु तात सहर्ष ॥ त्रिंशत गुण आधिक तिहि तेसु । वैश्य योनिके माहि भ्रमेसु ॥ तौन जीव पुनि सुनु बुधिपोत । क्षत्रि योनिमे प्रापति होत ॥ जितने वर्ष

वेदव्रत कीन्ह। अजन तीनि सुनु तात निमीच ॥ पक्षियोनिमें तिहिनें तीन। पटगुण अधिक धने बुधि भौन ॥ मज्ञनसुतामें पुनि होत। तीन सुनो वर ज्ञानउदोत ॥ बज्जनकाल धमि तामें औन। कष्ट पूछता जबलग सु तीन ॥ वेदवांको रावत द्विज ओर। काटसठ दिजनहने होई ॥ बज्जन काल धमि तामें माहिं। अमता सहत कहौं थवनाहि॥ मायवी हि अये द्विज औन। अपता नाहिं कहै बुधिभौन॥ बज्जनकाल धमि तामेंवीच। वेदवांन पुनि होत निमीच ॥ वेदवांन कुलमाहि सु धर्म। वीनें कछु दिन सुनौ अधर्म॥ शोक हर्ष अरु काम महांना द्वेष बाद अरु अति अभिमान ॥ ए सब तिनिका प्रेरत आय। करत आपने बशमें छाय॥ जीति लेय अब इनकों सर्व। तब शुचिद्विजतो लहे अखर्व॥ हम तुमसों यह कह्यो विचारि। तातें तजौ याहि निर्धारि ॥ * * ॥ * ॥ दोहा ॥ * *

अति दुर्लभ ब्राह्मण्य है तजौ कामना एह। और कामनाकों करो सुनि मतङ्ग बुधिगेह॥

स्वस्ति श्रीमहाराजाधिराजकाशीराजश्रीउदितनारायणसिंहाज्ञानुगामिना काशीवासिरघुनाथकवी श्वरात्मजगोकुलनाथपुत्रगोपीनाथसहायीभूतेन मणिदेवेन कविना विरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणि दानधर्मे मतङ्गशक्रसम्वादे अष्टाविंशोऽध्यायः ॥ * * * * * * *

॥ * ॥ अन्तगुरुतोमरछन्द ॥ * ॥

॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥ सुरनायकके सुनि बैनकों। द्विजताहि दुर्लभ लैनकों ॥ पुनि एकपदसों ठाढ़ व्है। समरत्थ वर उछाह व्है॥ करि चित्तधीर्य्य महानमें। मन लाय के थिर ध्यानमें॥ तप कीन्ह वर्षहजारलों। तन सूखि भो छय दारलों॥ पुनि शक्र तापहँ आय के। अवरेखि तप मन लाय के॥ * * * * * ॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥ * * * * *

कहे तौन ही बैन सुरपति फेरि मतङ्गसों। सुनउ तात बुधिऐन औन वचन परिहरि कहें॥

॥ * ॥ रामगोती छन्द ॥ * ॥

॥ * ॥ मतङ्गउवाच ॥ * ॥ ब्रह्म चारयधर्मसों हम युक्त व्है के धर्म। सहस वत्सर एकपदसों खरे होय अभर्म॥ सुनउ हे सुरराज हम तप कियो धर्म महान। क्यों न व्है है प्राप्त हमकों विप्रता सुखदान॥ शक्रउवाच॥ भयो तुम्हरो जन्म है चण्डालयोनिसु माहिं। लहो ने यहि हेतुतें तुम विप्रताको नाहिं॥ बैन सुनि के शक्रके ए गयामाहीं जाय। वर्ष शतलों अगुंष्ठसों खरो व्है मनलाय॥ धारत भो तप महा तातें भई छय सब देह। तिनतें भो नव आय मचंचा गह्यो सहित सनेह॥ ॥ शक्रउवाच ॥ सुनु मतङ्ग सु विप्रता है तुम्हें दुर्लभ धर्म। भूलि अब जिनकरो हठको कहत तोहि सुमर्म॥ सुखको जहत द्विजकौ पूजते है औन। जे न पूजत महादुखकों लहत हैं जन तौन॥ सर्व भूतन में सुर विनिर वृत्त सु होत। श्रेष्ठ सबतें विप्रता है कहत प्रज्ञापोत॥ सर्वभूतन माहिं है उत्कृष्ट विप्र अमन्द। औन इच्छा होय सोई करत हैं निरदन्द॥ पजत योनिमाहिं

शां०प० पुनि पुनि जन्म लेत सु जीव । लहत है द्विजयोनिकों कबहुँ सु यामरसीव ॥ यतें दुर्लभ विप्रता है
दा०ध० त्यागि यातें याहि । करो थोरे कामनाकों कहत हौं अवगाहि ॥ * ॥ मतङ्गउवाच ॥ * ॥ मारते
हौ मोहिं क्यों तुम शूलक हो मै आप । दया धरिए हियमांहि करो बुद्धिकलाप ॥ कहत पुनि
पुनि बात हों उहि होय जावो पीर । दया धरत न हो हियमें हे पुरन्दर धीर ॥ क्षमा जे जन गहत
नाहीं करत हिंसा धर्म्म । करत नहि इन्द्रीनको बश करै भूरि अधर्म्म ॥ तिन्हैं दुर्लभ विप्रता है शक्र
सुनि धरमज्ञ । प्राप्त द्विजता भएँ तौ नहि सकत राखि न अज्ञ ॥ * * ॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥ *
आनत नहिँ करि जौन द्विजताकी रक्षा परम । सुनहुँ शक्र जन तौन पापिनतें पापी अधिक ॥

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

दुखत द्विजता प्रापति होत । प्रापति भएँ सुनो बुधिपोत ॥ ताकी रक्षा दुर्लभ धर्म्म । है नहि
मेरे यामे भर्म्म ॥ रक्षा करत न द्विजता पाई । ते जन अघ्र महा सुरराई ॥ मै सु करत संचयकों
नाहिँ । कबहुँ न जात क्रोधके पाँहिँ ॥ हिंसादिककों कब हौं करौं न । यह कुमार्गमें पाव धरो
न ॥ लहि हौं क्यों नहिँ द्विजता धर्म्म । सुनहुँ शक्र यशवान सधर्म्म ॥ पूरब करम महा बलवान ।
होत सुनो मघवान सुजान ॥ मै धरमज्ञ भ्रष्ट अति होय । तासौं लह्यो इन्हा यह जोय ॥ पूरब
रचवो पूरब कर्म्म । मिटत नहीं है कहत अभर्म्म ॥ द्विजता काजे यत्न महांन । कीन्हों मै नहि
लहत सुजान ॥ कृपा योग्य हम हौंहि सुरेश । तौ करि कृपा देउ वर वेश ॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥
सुनि मतङ्गके बैन सुवेश । अबहिं माँगु वर कह्यो सुरेश ॥ मघवाकी आज्ञाकों पाय । मांग्यो वर
सु मतङ्ग सचाय ॥ जो हम इच्छा करे दराज । होय सिद्धि सो सुनि सुरराज ॥ अरु हम पूजित
हौंहि अनूप । बढे सुयश मम शशिके रूप ॥ देऊँ हमे तुम यह वरदांन । हे मघवान महा यशवांन ॥

॥ * ॥ शक्रउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

पूजित है हो परम तुम तिनहुँ लोकन्हमाहिँ । कीरति अतुला होयगी मानो संशय नाहिँ ॥
यह वर देय मतङ्गकों सुरपति गो निज धाम । कोटि मतङ्ग प्राण नत कीन्हीं उत्तम नाम ॥
ऐसी होति सु विप्रता दुर्लभ परम विशाल । मघवाके इन बचनसों जान्यो तुम भूपाल ॥

स्वस्ति श्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्री उदितनारायणसिंहाज्ञाभिगामिना गोकुलनाथकाशी
वासिरघुनाथकवीश्वरात्मजनोकुलनाथस्य शिष्येण मणिदेवेन कविना विरचिते भाषायांमहाभारत
दर्पणे शान्तिपर्वणि दानधर्मे मतङ्गशक्रसम्वादवर्णनोनाम त्रिचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ * * * *

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

आपति दुखसों होति है जनकों द्विजता धर्म्म । गौन सुन्यो हम आपसों भीष्म सु [illegible] ॥

॥ * ॥ बरवादोहा ॥ * ॥

विश्वामित्र लही द्विजता अरु हैहय वर भूपाल । कौन सुमनकी हिय [illegible] ॥

कौन कर्म तप कै नर्यौ द्विजता लही अनूप । तौन कथा करिकै कहो हमको भीषम भूप ॥ शां०प०

॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥ दा०ध०

सुनि पाण्डव सु महीप जिहिँ विधिसौं द्विजता लही। हैहय नर अवनीप सो विधि तुमसौं कहत हौं॥

॥ * ॥ चौपाई छन्द ॥ * ॥

होत भयो मनुभूपतिके सुत । नाम तासु सर्जाति धर्म्म युत ॥ तिहिके कुलमें वत्समहीपति । भयो तासुको यश भूमे व्यति ॥ ताके सुवन भए द्वै मतिवर । तालजङ्घ अरु हैहय यशधर ॥ हैहयके दशरानिन्हके सुत । दशौ दश भए महा मखयुत ॥ धर्म्म सूर अरु भूरिकीर्त्तिकर । तुल्य रूप बलवान धनुर्धर ॥ पढे वेद जिन नीके मन करि। धर्व मनु जीते जिन लरि लरि॥ काशिदेशमे भो एक भूपति । नाम तासु हर्य्यश्व महामति ॥ हैहयनृपके सुत बलवान सु । गङ्गा यमुना मध्य महान सु॥ रचि कै युद्ध भूप हर्य्यश्व हि । सेना सहित मारि डास्यो महिँ॥ मारि ताहि अवनीप हि यशधर । हैहयके सुत गे अपने घर ॥ तब हर्य्यश्व महीपतिको सुत । काशिराज भो महा सु यश युत ॥ नाम सुदेव देवसम सोहत । कम्पत दुवनन्न वै वहको हत ॥ सो साक्षात धर्म्मसो लागत । जाको रूप सबै मन भावत ॥ पालत भो भूकौं सो भूपति । लीन्हें राज नीतिकी पूर्णति॥ ताहूको हैहयके सुत सुनि । मास्यो उद्ध युद्ध रचि अरिगुणि ॥ दिवोदास तब काशिदेशपति । भो कीन्हौं तिहिँ जनमें यश अति ॥ सो विचारि हैहय सुतको बल । शासन पाय शक्रको अतिकल ॥ गङ्गाके उत्तर कूलहि पर । वाराणसी बसाई मुनिवर ॥ चारिहु वर्ण बसत हैं जामहिँ । अमरावतिलौं सोहति भो जाहि ॥ * * * * * ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ * * * * * *

पुनि हैहयसुत आय कै वाराणसी हि घेरि।दिवोदास अब को न निकरि युध्यो कह्यो इमि टेरि॥

सुनि कै हैहयसुतन्हके बैन होय अह क्रुद्ध । सारदूलसौं गरजि कै निकसि भटन सह उद्ध ॥

॥ * ॥ भुजङ्गप्रयातछन्द ॥ * ॥

दिवोदास संग्राम घोरै बिराच्यो । तहां लोहु औ मेदको कीच माच्यो ॥ दुहूँओरसौं सूर बांके हकारैं । चलैं बाण औ शेल खङ्गौ कटारैं॥ परैं मुण्ड भूमे करैं रुण्ड युद्ध । चहैं जीतकौ ते भरे क्रोध उद्ध॥ लसै लाल ग्रौ सूरके रुण्ड ऐसें । कालमाल भे सांजके मेघ जैसें॥ डरे लोहकी धारमे सूरवारे। करैं रुण्ड औ मुण्ड ऐसें सुढारें । परे भारतीमे बडो रूप धारैं ॥ मनो राहु औ केतु [illegible] बिहारैं॥ जहाँ दुहूँ ओरके सूर बांके । हटैं नाहि कोऊ बली बे सलांके ॥ तहां हास कै [illegible] बिहारें । महा मोद सौं भे [illegible] निहारें ॥ परी लोहको धारमे भाति ऐसें । घटा [illegible] जैसें ॥ [illegible] कालिका [illegible] । महासूरके मुण्ड भारे सुढारें ॥ लसे [illegible] प्रभासों । बढे भानु मानो घटा घोर वासों ॥ * * ॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥ *

दिवस सहस्रलौं युद्ध कियो बली काशीधनी । चिन्ता बाढी उद्ध अब वाहन मारे गए ॥

अ०१० श्लो०
तब सुहोत्रता भाषि दिवोदास भूपाल सद । आए आपनो राखि भरद्वाजके ढिग सद ॥ *

॥ * ॥ चरणाकुलकछन्द ॥ * ॥

बोले तब नृपसों द्विजराजा । करो आशु आपनको काजा ॥ चहि हो जो बोर्द तुम करिहैं । बोर विचार हिए नहि धरिहैं ॥ * ॥ राजोवाच ॥ * ॥ हैहयनृपके सुत बलआरे । मेरे सुत सबही सब मारे ॥ मैं हो बच्यो हीनतासो नहि । आयो तब शरणे तव में चहि ॥ शिष्य आपुको रैयो चहिंहैं । कैसो करो सबै हौं जिहिहैं ॥ देवोदास नृपकी यह बानी । सुनि के बोले तबहि सुज्ञानी ॥ मति डर मति डर हे भूपाला । सब सब होने परो बिसाला ॥ *●*●*●*●*

॥ * ॥ जयकरी छन्द ॥ * ॥

तुम्हरे सुत ह्वैबेके काज । करि हौं यज्ञ सुनो नरराज ॥ सुवन बली हैहयके वंश । करिहै सो रनि युद्ध बिध्वंश ॥ कहि नृपसों ऋषि थोरें बैन । मखकी रचना करी सचैन ॥ तब तो नृपके कीन्हें यज्ञ । तासु प्रतर्दन नाम सु प्रज्ञ ॥ बढत भयो सो जन्महि बेर । मोग्रहि धनुधर भयो सुबीर ॥ * ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

देख तेज सबलोकको भरद्वाज ऋषिराय । दिवोदासके तनयके तनने परो सुभाय ॥

॥ * ॥ तोटकछन्द ॥ * ॥

अभिषेक कियो बहुभाति बली । तिहिकों लखि कांपत में सु छली ॥ धनु धारिन मध्य लख्यो गहिबे । धरि अंजन बैन लग्यों कहिबे ॥ यश गावत आसु सबै सुमुखी । बहुभौतिन बात करन हूँ सुमुखी ॥ जिमि प्रात समै रवि भ्राजत है तिमि ही सु प्रतर्दन भ्राजत है ॥ रथपैं चढि कैं सब मध्य लिए । धनुकों सु फिरावत गर्व किए ॥ बहुभाँतसु लाग्यो फिरिबैं जबही ॥ सुरसों भरि भूप रहे तबही ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

आयो मनने एह लखिकै सुवन पराक्रमी । मति है नहिं धारि भेद बधि हैं नाहि बचावनो ॥

॥ * ॥ रामगीतीछन्द ॥ * ॥

दिवोदास महीप लखि कै सुवनको परताप । राजपै बैठाय कै चाहि भयो मोहित थाप ॥ तब अनन्तर भूप हैहयसुतन्हके बध काज । प्रतर्दनकों भेजतो भो भरो हर्ष दराज ॥ उतारि कै रथ सहित गङ्ग भीम हो बलवान । आय हैहयसुतन्हको पुर घिरो बेरि महान ॥ बाजत बाजने शब्द रचको जग बेरबनन्द । रथनपै चढि सब बीन्हे भरे क्रोध निकन्द ॥ निकसि पुरतें सब दैनवों रच्यो युद्ध महान । वृष्टि करि कै शरनकी बहु हने भूप सुजान ॥ अवरज्यो तिनके ऊपर परम वर्षत नीर । तिनिहि वर्षत बाण है तब प्रतर्दनपै बीर ॥ भयो भारत अति हैहयसुतनकी संग जो नहीं । प्रतर्दन निज बाणसों ते मारि देत धरनी ॥ बलवान भए मारि तिनको भए भूमि मिटाय रहे जितने मन्द हैहयभूपके नरराय ॥ मरे शोणित परे बैस अनाय तलीन । बचे जितुन जे

अस्यौ आश्रम हुति भृगु भाग ॥ मरेतें सब सुवनहैं हय भाजि तजि पुर धर्म । आय भृगुके शरण माही रह्यो भूप सधर्म ॥ अतिहि व्याकुल देखि हैहय भूपकों ऋषिराय । कियो निर्भय बचन कहिकै परम सुदसों हाय ॥ कछुक बीतें प्रतर्दननृप आय आश्रम बीच । देखिकै पकवीर थैसे भयो कहत निभीच ॥ कौनहै एहि थाम माही शिष्य भृगुके धर्म । कहौ हमको आश्रमें हैं कहा सुमुनि अधर्म ॥ भई तिनकों देखिबेकी कामना मो माहिँ । देउ मेरी खबरिकों तुम आय भृगुके पाहिँ ॥ जानि नृपकों आनतें कढि सुमुनि बाहिर आय। सविधि पूजत भए नृपकों हर्ष हियमें छाय॥ पूजिकै इमि भए बूझत कहोतें कछुआप । कह्यो निज आगमनको नृप हेतु तेजकलाप ॥ ॥ * ॥ राजोवाच ॥ * ॥ दीजिए करि बिदा हैहय भूपनिकों मुनि आप । हन्यो मेरो बंश याके सुवन पाप कलाप ॥ करी अजर बाधिका मो पुरी यह भूपाल। है हमारो महा अरि यह सुनऊ सुमुनि बिशाल ॥ हते याते सुवन याके सर्व मै मुनिराज । याहि हनिहौं अबहि मै हौं भरो क्रोध दराज ॥ याहि हनिहौं तबै ह्वैहौं अरिण पितुसों धर्म । करऊ याते बिदा याकों सुनऊ सुमुनि सधर्म ॥ * ॥ भृगुरुवाच ॥ * ॥ है हमारे थाम माहो सर्व द्विज नहि और । बैन सुनि ए सुमुनि भृगुके महा नृप शिरमौर ॥ परसि मुनिके चरण मुद सह कहे ऐसे बैन । दई जाति छुडाय हैहय भूपकी इम चैन ॥ भयो मैं कृतकृत्य याते लह्यो मोद महान । प्रतर्दन इमि कहि सुमुनिसों गए अपने थान ॥ सुमुनि भृगु के बचन सों शुचि भूप हैहय धर्म । भयो प्रापित बिप्रताकों सुनऊ तात सुधर्म ॥ तिहि अनन्तर भये। हैहय भूपके सुत स्वच्छ। कहत ताकों ग्रन्थहैं सबदनुज परम हि दक्ष॥

॥ * ॥ बरवै छन्द ॥ * ॥

नाम स्वक्षमद ताको सुनि मतिमान । पूजत भे द्विज ताकों अति श्रीमान॥रिचा जासुकी श्रुतिमे सोहति स्वच्छ । भो सुचेत सुत ताके अतिहीं दक्ष ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ *

वर्चस भयो सुचेतके अतिहीं प्रज्ञावान । वर्चसके सु बिहव्य भो श्रुतिमे परम सुजान ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

सुनु नृप भयो बितत्य सुमति बिप्र बिहव्यके । भो बितत्यके सत्य सन्त भयो सुत सत्यक ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

श्रवा भयो सुत सन्तके भयो श्रवाके तात । नाम तासु तम तौन भो बिप्रगणमे अवदात ॥

तमके भयो प्रकाश सुत तौनकैं द्विज भो धर्म । भो बागिन्द्र प्रकाशके सो श्रुति माहिँ सुकर्म ॥

भयो तनय बागिन्द्रके सो मतिमान महान । तेजवान श्रमवान बर धर्मवान श्रुतिमान ॥

॥ * ॥ बरवादोहा ॥ * ॥

ताके भयो घृताची माही सुवन तासु बलवान । प्रमदराने सुवन भो रुरुके सो शुचिधाम ॥

शां॰प॰ दा॰ध॰

सुनक नाम ताको महा तेजवान श्रीमान। शौनक भो ताके सुवन पर्म पूज्य मतिमान ॥
कृपा पाय भृगु सुमुनिकी हैहय भूपति पर्म। ऐसें द्विजताकों लही पाण्डव सुनऊ सधर्म ॥
हैहय क्षत्रिको वंश वर वरणि कह्यो अवदात। अब आगें कावूझिहौ सुनऊ धरमधर तात ॥
स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना. श्रीवन्दीजनकाशीवासिरघुनाथकवीश्वरात्मज गोकुलनाथपुत्र गोपीनाथस्यशिष्येण मणिदेवेन कविना विरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणि दानधर्मे त्रिंशोऽध्यायः ॥ *⬬*⬬*⬬*⬬*⬬*

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

कौन मनुज यह लोकमे पूज्य नाम हैं पर्म। तौन बतावऊ मोहि तुम भीष्म सुनऊ सहधर्म ॥

॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

सुनऊ युधिष्ठिर भूप यहँ प्रसङ्गमे कहत हम। एक इतिहास अनूप सुनें तौन संशय टरत ॥

॥ * ॥ चरणादोहा ॥ * ॥

वासुदेव अरु नारद मुनिको तामेहै सम्बाद। उत्तम विप्रणकों पूजत हे नारद छोडि प्रमाद ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

केशव तिनकों देखि इमि बूझत भए सप्रेम। सुनऊ सुमनि नारद परम प्रज्ञावान सनेम ॥
पूजत हो सनमान करि जिन मनुजनकों पर्म। इच्छा तिनकों सुननकी मै हों करत सधर्म ॥
जानो सुनिबें योग्य जौ मोकों नारद आपु। तौ नीकें हमकों कहौ एहो धर्म कलापु ॥

॥ * ॥ नारदउवाच सोरठा ॥ * ॥

तुमसो को है और सुनिबे योग्य त्रिलोक मे। सुनि यादवशिरमौर जन रञ्जन भञ्जन दुवन ॥

॥ * ॥ पज्झटिकाछन्द ॥ * ॥

सुरनाथ वायु अरु भानु चन्द्र। अरु शम्भु स्वामकार्तिक सु इन्द्र॥विधि विष्णु बृहस्पति भूमिवार। अश्व्यादि और देवत उदार ॥ जन जौन इन्हैं पूजत सप्रेम। हम पूजतहैं तिनकों सनेम ॥ अरु वेदवान जन जौन पर्म। अति पूज्य लोकमे जे सधर्म ॥ तिनकों सदाहिं पूजत सप्रेम।नहिकैं सुभक्ति तिनको सनेम ॥ *⬬*⬬*⬬*⬬* ॥ सोरठा ॥ *⬬*⬬*⬬*⬬*⬬*⬬*⬬*

भोज्य किए बिन जौन जन पूजतहै देवकों। सुनिए आमदभौन पूजतहौ तिन जननकों ॥

॥ * ॥ मोतीदामछन्द ॥ * ॥

क्षमायुत जे जनहैं जगमाहिं। कबौं नहिं जात सु जे अघपाहिं ॥रहैं निति तुष्टित जे जन पर्म। तिन्हैं हम पूजत नित्य अभर्म ॥ सुनो अरु जे जन बोलत तथ्य। कबौं नहिं बोलत भूलि अतथ्य ॥ रहैं रत धर्महिं माहिं महान। करैं बिधिसों मख जौन सुजान ॥ अतीथहिं पूजतहैं बहि नेम। तिन्हैं हम पूजत है सहप्रेम ॥ कृपा लहि नित्य रहैं जन जौन। करैं नहिं सञ्चयको सुख भौन ॥ बसैं बनमाहि

भवे, फलमूल। अतीथहि जे मुद देत अतूल ॥ सु बेदहि प्रापित होय अनूप। कहैं निति बेन सुबोल स्वरूप॥ पढ़ै निति बेद रहैं निरदन्द। तिन्हैं हम पूजत आनद कन्द॥ सुदेवहि पूजि सुभोग लगाय। करै जन भोजन जौंन सचाय॥ गहैं ब्रत सुन्दर जे जन स्वच्छ। समोद सु भृत्यहि राखत दच्छ॥ गुरूहि प्रसन्न सु राखत जौंन। तिन्हैं हम पूजतहैं सुख भौंन॥ सुनो अब राखत जौंन महांन। दया सब जीवनकी सुखदांन॥ गुरूकुल माहिं तजैं अभिमान। पढ़ै जन जौंन महा मतिमांन॥ बधै कबहूँ नहिं जीवहि जौंन। तिन्हैं हम पूजतहैं मुदभौंन॥ करैं निति धर्महि भर्महि त्यागि। तिन्हैं हम पूजतहैं मुदपागि॥ सबै लहि धर्म सु अर्थ सु काम। करैं जन जौंन सुनो सुखधाम॥ महा सुकृती जनकी गहि नीति। चलैं जन जौंन गहैं सुप्रतीति॥ करैं अति मान नहीं जन जौंन। तिन्हैं हम पूजतहैं सुखभौंन॥ करैं जन जौंन सु ब्रत्त अनेक। अघस्थल नाहि गहैं सविवेक॥ तिन्हैं हम पूजतहैं मुद कन्द। गहैं तिनकी शुचि भक्ति बिलन्द॥ सुनो कमलापति मैं गहि धर्म। इते जनकों निति पूजत पर्म॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

ऐसे बिप्र सुजान सुखदायक कहँ जगतमे। तैसे जन नहिं आन बासुदेव आनन्द कर॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

पूजो तुमहूँ द्विजनकों योग्य पूजिबे जौंन। देंहै तुमकों मोद अति बिप्र सुमतिके भौंन॥

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

राखत जौंन अतिथको भाव। गज द्विजनमे सुनि हजराव॥ अरु जे जन हैं बोलत सत्य। चलत सु मारग माही नित्य॥ सो अनसूय कहैं जन जौंन। लहत पार हैं दुखको तौंन॥ औ जे अद्दा बाम सधर्म। पढत बेदकों नित्य अभर्म॥ पूजत सर्ब देव सह प्रीति। अघको पार लहत ते जीति॥

॥ * ॥ तोमरछन्द ॥ * ॥

जन जौन है ब्रत बाँन। अरु देत जौंन सुदाँन॥ द्विजकों सुरपूजि सप्रेम। सनमान करत सनेम॥ दुख पार होत सु तौंन। सुनु कृष्ण आनद भौंन॥ तपकों सु कै अति पर्म। जिन कीन्ह चित्त अभर्म॥ दुख पार ते जन जात। सुखसों भरे सु बिभात॥ अरु देव पूजत जौंन। दुख पार जात सु तौंन॥ बिधिसों सु यापि समान। मख करत जे सुखदाँन॥ अग्याइ करत सु जौंन। दुख पार जात सु तौंन॥

॥ * ॥ चरणा दोहा ॥ * ॥

मातापिता गुरूके पाँही जिमि जे जन न रहत सप्रेम। यादवराय आपुहू रहिए ऐसैं नित्य सनेम॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

ऐसैं कहिके कृष्णसों चुप ह्वै रहे क्षपीश। सुनहु धर्मधर सुयशकर पांडव बर धरणीश॥
तुमहूँ पूजत सुर पितर बिप्र अतिथिकों पर्म॥ तातें लहिहौ स्वच्छ गति पांडव सुनहु सधर्म॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराज श्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशीवासिरघुनाथकवीश्वरात्मजेन गोकुलनाथ सुतगोपीनाथस्यशिष्येण मणिदेवेन कविना विरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणि दानधर्मे नारद कृष्ण सम्वादे एकत्रिंशोऽध्यायः ॥*॥*॥

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

कहो मोहि अब धर्म शास्त्र विशारद प्राज्ञवर । आमें हैंाऊ अधर्म सुनऊँ पितामह धर्मधर ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

जो जन आवत शरणमे ताकी किएँ सहाय । होत कहा फल तौन तुम हमे कहो नरराय ॥

॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥ रामगीतीछन्द ॥ * ॥

कहत यह परसङ्गमे इतिहास सुनु भूपाल । महा प्राज्ञ सु धर्मधर वर सुयशवान विशाल ॥ बाजके डरसों कपोत सु भाजि दुखसों हाय । शरणमे वृषदर्भनृपके गयो सुनु नरराय ॥ देखि कै वृषदर्भ तिहिको कहे ऐसें बैन । हे कपोत सुडरऊ जिन अब रहऊ धर्म सचैन ॥ कहो कौनें स्थान माही का कियो है कर्म।भाजि आसों यहाँ आयो भरो भीति सभर्म॥डरऊ जिन अब धरऊ हीमे महा मोद कपोत। कह्यो इमि वृषदर्भ तासों सुनो नृप मतिपोत ॥ काशिराज्य सु छोडि दैहों अबहि मै तव अर्थ। तिमि हिँ जीवहि छोडि दैहों कहत बैन न व्यर्थ ॥ करऊ चिन्ता दूरि अब तुम धरऊ हीमे धीर। सोई करिहों होयगो जिहि सों न तोको पीर ॥ * ॥ बाजउवाच ॥ सुनऊ भूप कपोत है यह भक्ष मेरो धर्म। नित्य अण्डज खातहैं हम कहत तुमको धर्म॥ करऊ तुम रच्छा न याकी है न तुमको योग्य। किए तें अति यत्न हमको मिल्यो है यह भोग्य ॥ हमे प्रिय है पर्म याके रुधिरआमिष मेद। प्राप्त हमको होयगो तब दरि व्हे है खेद ॥ करऊ बाधा आप मति मो भक्षमे भूपाल । देत जारे हिएको मो छुधा पर्म विशाल ॥ रुधिर याको पायबेको बढी तृष्णा पर्म। तजऊ याते बेगि याको सुनो भूप सधर्म ॥ मारि नखसों करो याकी क्षतिहिँ विह्वल देह। रह्यो है कछु स्वासवाको सुनो नृप बुधिगेह ॥ मृतक जैसो व्है रह्योव्है है न रक्षा योग्य।कृपा करि कै छोडि दीजै है हमारो भोग्य ॥ हो कपोतहि के कहा प्रभु आपु हे भूपाल। हो हमारे नाँहि का प्रभु तेजमान विशाल॥ करत रक्षा आपु याकी करत मेरी नाहिँ। सुनो भूपति महापातिक होयगो यँहँ माहिँ॥ भीष्मउवाच॥ बैन सुनि ए बाजके वृषदर्भ भूप सुजान। बाजको इमि कहत भो सुनु पाण्डु सुत बुधवान॥ राजोवाच ॥ महिष सूकरकी मांस तुमको देत हैं मगँवाय । करऊ शान्त सु छुधा तासो सुनो श्येन सचाय ॥ जौन आवत शरणमे सो तजत हों नहि ताहि। है हमारो नित्य व्रत यह कहतहों अवगाहि॥नाहि मो तन तजत अण्डज भरो डरसों भूरि। आसो पातिक होय हमको किएँ याको दूरि ॥ श्येनउवाच ॥ महिष सूकरकी मांसको हम खातहैं नहि भूप। जो न दूजे विहगकी शुचि पर्म मास अनूप॥ है कपोतहि भक्ष मेरो सुनऊ भूपति पर्म। बाज

ओरे विहङ्गकों नाहिँ खात कहत अभर्म ॥ अतिहिँ प्यारो होय जो यह तुम्ह विहग सुरूप। याबरो श्लो०७०
बरि देऊ तौ तुम मांस अपनो भूप ॥ * ॥ राजोवाच ॥ * ॥ अति अनुग्रह करो हमपै सुनऊ दो०७०
श्येन सुजांन। बैंन तेरे सुनैं मेरें भयो मोद महांन ॥ जौंन हमसों कहौ गे तुम करैं गे हम तोंन। बैन ऐसें श्येनसों कहि भूप धर्म्मक भौंन ॥ काटि काटि सु मांस अपनी देहको भूपाल । लग्यो धरखें तुला ऊपर भरो मोद बिशाल ॥ सर्बराणी भूपकों सुनि करति हाहाकार । भूरि दुखसों भरी निकसीं छोडिकै आगार ॥ भृत्यउ सुनि भरे दुखसों अतिहिँ बिव्हल होय । आय भूपति पास कीन्हों रुदन अतिहीं ओय ॥ जलदको सो भयो तिनके रुदनको रव पर्म्म । छाय आए मेघ चऊँदिसि सुनऊँ तात सधर्म्म ॥ भई चलती मही ताके कर्म्मसों अवदात । छाय नभमें लगे देखन देवता हे तात ॥ काटि अपने अङ्गको नृप दियो मांस चढाय। तऊ नाहिँ कपोतके सम भयो सुनि नरराय ॥ अस्थि रहिगे शेष भो निरमांस सर्ब शरीर। धर्मकों अब गाहि कै तब चढो आपुहि धीर ॥ देखि कै सुरराज ताको धर्म्म आयो पास। फूल बर्षन लगे देवत भरे भूरि हुलास बजन लागी दुन्दभी अरु भेरि नभमें पर्म्म। गान बर गन्धर्ब लागे करण होय अभर्म्म ॥ नचन लागे अप्सरा सब भरीं मोद महांन। स्नान कीन्हों भूप बर वृषदर्भ पर्म्म सुजांन ॥ भई सुन्दर देह सब बृषदर्भकी सुनि तात। हेमके सुबिमान ऊपर बैठि कै अवदात ॥ गयो अक्षय स्वर्गकों सो स्वच्छ कीन्हें कर्म्म। सुनि युधिष्ठिर धर्म्मधर बर ज्ञानवान अभर्म्म ॥ जौंन आवै जीव तेर। शरणमें हे तात। करो ताकी तुमऊँ रक्षा धर्मगहि अवदात ॥ जौंन आश्रित जीव तिनकी किएँ रक्षा पर्म्म। होत अति परलोकमें सुख कहत तोहि अभर्म्म ॥ रहित ह्वै कै कपटसों जे करत कर्महि स्वच्छ। होत तिनकों प्राप्त का नहिँ सुनऊँ भूपति दच्छ ॥ किएतें शुचि कर्म बर बृषदर्भ भूप सुजांन। ख्यात भो तिऊँ लोकमाहीं सुनऊँ सुत मतिमांन ॥ * ॥ सोरठा ॥
शरणागत जो जीव इमि ताकी रक्षा किएँ। सुनऊँ तात बुधिसीव उत्तमगतिकों लहत जन ॥
यह जो ब्रत अति स्वच्छ भूपति बर बृषदर्भको। ताहि सुनें नृपदच्छ जन पावन अति होत हैं ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशीबासिरघुनाथकवीश्वरात्मजेन गोकुलनाथपुत्रेणोपीनाथस्य शिष्येण मणिदेवेन कविना बिरचितेभाषायां महाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणि दानधर्म्मे द्वात्रिंशोऽध्यायः ॥

॥ * ॥ युधिष्ठिर उवाच ॥ * ॥ चरणादोहा ॥ * ॥

कोंन कर्म्म है श्रेष्ठ नृपणकों कर्म्मनमें अवदात। दुहूँलोकमें मोद लहत हैं कोंन कर्म्मतें तात ॥

॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

बिप्रनको जो पूजिबो सुनो युधिष्ठिर भूप। भूपनको यह कर्म्म है अतिहीं श्रेष्ठ अनूप ॥

११।१०। पाले ज्यों निजु आतमा तिमिहीं सुसतें प्रेम । तिमिहीं पाले द्विजनकों भूपति गहि कै नेम ॥
६।१४। पूज्यमान जे अतिहिं हैं विप्रमें अवदात । तिनकों विधिसों पूजिए गहि कै भक्ति सुतात ॥
पूजि तिन्हैं हर्षित किए बढत राज्य है पर्म । तेज बढत अरु यश बढत पाण्डव सुनऊँ सधर्म ॥

॥ पतङ्गमछन्द ॥ ॥

ज्यों पितरनकों पूजिए सुअतिप्रीतिसों । विप्रनहूकों पूजिए सु तिहि रीतिसों ॥ जिन मनुजन प कोपित होत सु विप्र हैं । जिन मनुजनकों नष्ट करते क्षिप्र हैं ॥ होत विप्र अति उग्र सु यश तिनको विभात है । नाश कारण हि तिनको कहूँ दिखात है ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ *~~*~~*

उग्र अग्निसे लगत हैं करत विप्र जब क्रुद्ध । मूर्खऊ जिनसों डरत हैं कबऊँ न करत विरुद्ध ॥

॥ * ॥ राजगीतीछन्द ॥ * ॥

रहत केते गुप्त द्विज हैं सुनऊँ भूपति पर्म । प्रगट केते रहत हैं द्विज परम स्वच्छ सधर्म ॥ विप्र दुर्वासादि केते पर्म हैं हठकार । किते कोमल विप्र अति हैं गौतमादि उदार ॥ करत रच्छा गौनकी उपमन्यु आदिक पर्म । करत भिच्छ्या किते दत्तात्रेय आदि सधर्म ॥ बाल्मीक हि आदि है द्विज किते चोर अनूप । कलह कर हैं नारदादिक किते द्विज सुनि भूप ॥ किते नर्तक विप्र हैं भरतादि अतिहीं दच्छ । सर्व कर्मक किते द्विज हैं सुनऊँ भूपति स्वच्छ ॥ प्रसंशा जन करत तिनकी धरत प्रीति महान । देव राक्षस पितर मनुजनमाहिं सुनि बुधिमान ॥ पूर्वहीसों श्रेष्ठ हैं द्विज कहत श्रेष्ठ बुधेश । शकत जीति न तिन्हैं सुर गन्धर्व असुर नरेश ॥ पितर औ न पिशाच राक्षस शकत तिनकों जीति । लहत काहूकी न शङ्का रहत नित्य निभीति ॥ करत सुरकों असुर ह्व अरु असुरकों सुर पर्म । करत इच्छा होय जिहिकों भूप भूप सधर्म ॥ जौन जन अज्ञान द्विजको करत हैं अपमान । नष्ट ते जन होत हैं हम कहत सत्य सुजान ॥ होत निन्दा प्रशंसामें कुशल अतिहीं विप्र । लहत जासों दुःख तापै होत कोपित क्षिप्र ॥ करत जाकी प्रसंशा द्विज बढत ह्व जन जौन । हीनताकों लहत जाकी करत निन्दा तौन ॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥ *~~~~*

करत अनुग्रह नाहिँ जिहि जनपै विप्र वर । शूद्रयोनिके माहिँ तिनको होत सुजन्म है ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

विप्रनतें जो भाजिबो सो है अति कल्यान । विप्रनकों जो जीतिबो सो कारण दुखदान ॥

॥ * ॥ आभीर छन्द ॥ * ॥

द्विज हत्या है जौन । महा दोष है तौन ॥ द्विज हत्या सम अन्य । है न सुनो नृप धन्य ॥

॥ * ॥ तोमरछन्द ॥ * ॥

परिवाद द्विजको आन । कबहूँ न सुनिए तौन ॥ जनकतें कौन ऊ होय । सुनि बैठिए मुख गोय ॥

श्लो० ५० दा० ५१

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

करत सदा औ भूरि कौनऊँ निन्दा विप्रकी । तौ चुप व्है उठि दूरि जाय बैठिए सुनि नृपति ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

आ विरोध करि विप्रसों सुखकों खोय महान । ऐसो भयो न होय गो भूमे सुनऊँ सुजान ॥

॥ * ॥ मधुभारछन्द ॥ * ॥

जिमि मुठि माहिँ । आवत सु नाहिँ ॥ मारुत अमन्द । सुनि धर्म नन्द ॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

यथा जैसे नहि लेत परस पाणिसों चन्दको । तिमिहीं सुनऊ सचेत लहत न जय विप्रसों ॥

स्वस्तिश्रीमहाराजाधिराजकाशीराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञानुगामिना काशीवासिरघुनाथ कवीश्वरात्मजगोपीनाथस्वशिष्येण मणिदेवेन कविना विरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे शान्ति पर्वणि दानधर्मे ब्राह्मण प्रसंशायां त्रयस्त्रिंशोऽध्यायः ॥ *◈◈◈◈◈◈*◈◈◈◈*

॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

अतिहि निरन्तर पूजिए विप्रनकों अवदात । कारण हैं सुख दुखनके विप्रहि जानो तात ॥

॥ * ॥ रामगीतीछन्द ॥ * ॥

पूजिवेके योग्य हैं बहु भातिसों द्विज पर्म ॥ तृप्त जिमि नृप करै पितर हिं द्विजहि त्योंहि सधर्म ॥ आहत हैं परयेन्यंत सुख सर्व जैसें भूत।सुनऊ सुत तिमि द्विजनत सुख लहत राज्य अकूत॥ परम याते राखिए द्विज राज्यमाहिँ सुजान। होत अरिको नाश कीन्हें द्विजनको सनमान॥राखि गृहमें अतीसुकृती द्विजनकों अवदात।करै पूजा नित्य यो समधर्म और न तात॥दियो जो है द्विजनकों अति श्रेष्ठ अन्न अनूप।करत ताकों गृहण हैं सुर पितर सुनि बरभूप॥भानु ओसिस भानु मारुत भूमि अल दिशि सर्व। विप्र द्वारा होय कै ए करत भोज्य अखर्व ॥ करत जिहिके नाहि भोजन विप्रवर अव दात। होत नाही तृप्त ताके पितर सुर हे तात ॥ हनत पाप कलापकों द्विज दापवान अनूप । है न यामे तनक संशय जानि निश्चय भूप ॥ दान दीवैं द्विजनकों जे करत संचय पर्म्म। रहत नित्य समोद ते हैं सुनऊ तात सधर्म्म ॥ होत तिनके पुण्यको परलोकमे नहि नाश।लहत उत्तमगतिहि औ निति भरे रहत हुलास॥होत जिहि जिहि अन्नसों हैं तृप्त द्विज अवदात।पितर देवत होत तिँहि तिहिसों सु तृप्त सुतात ॥ *◈*◈*◈*◈ ॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥ *◈*◈*◈*◈*

होत द्विजनतें यज्ञ बढति प्रजा है यज्ञते । सुनु भूपति वरप्रज्ञ याते द्विजकों पूजिए ॥

॥ * ॥ अरिलछन्द ॥ * ॥

विप्रहि सर्व नर्कके कारण । विप्रहि दुखको करत निवारण ॥ जौन विप्रके वचन सुमानत । तौन अरिणको भय नहि आनत ॥ क्षत्रिय तेजमान बलवान सु । तिनको बल अरु तेज महान सु॥ होत शान्त विप्रनसे सुनु सुत । विप्र होत हैं सर्व हि गुणयुत ॥ *◈*◈*◈◈◈◈

शा०प०
दा०ध० ॥ * ॥ चरणाकुलकछन्द॥ * ॥

भृगुऋषि तालजंघकों जीते। डारे करि भट तासों रीते॥ जीते हैहयके सुतगणकों। भरद्वाज कुधमे धरि मनकों॥ * * * * ॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥ * * * * * *

मंत्रादिक हैं जौन सर्व द्विजनतें होत हैं। सुनहु तात बुधिभौन पापकोंकों विप्रहि हरत॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

यह प्रसङ्गमे कहत बुध एक इतिहास अनूप। सो तुमसों मैं कहत हौं सुनहु युधिष्ठिर भूप॥

तामाहो सम्वाद है आनन्दद अतिपर्म। बासुदेव अरु भूमिको हरता अतिमय भर्म॥

॥ * ॥ बासुदेव उवाच ॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

बूझत हौं संदेह तोसों धरणी एक हम कहिए। सहित सनेह माता त्राता जगतकी॥

गृहोजननको पाप अति दुखकर आनन्द हर। कौन कर्मको दाप तौन पापको हरत है॥

॥ * ॥ भूम्युवाच ॥ * ॥

ब्राह्मण सेवन जौन अति पावन उत्तम परम। सुनहु कृष्ण मुदभौन सुखदायक सबलोकके॥

॥ * ॥ तोटकछन्द ॥ * ॥

जन पूजत जे द्विजके गणको। रह प्रेम सदा थिरकै मनको॥ तिनके अवते नसि जात सबै। जगमे शुचि कीरिति भूरि फबै॥ बुधि उज्ज्वल होति सु है तिनको। समता नहि और लहै जिनको॥ सु कह्यो हमको यह नारद है। अतिही ऋषि तौन बिसारद है॥ द्विजसे सब भूत लहैं सिधि हैं। गृहमाहि महान भरे रिधि हैं॥ द्विजको जन जे दुखदेत सुहैं। कबहू नहि ते सुखलेत सुहैं॥ सुकलंक लग्यो शशिके उरमे। द्विजके क्रुधतें सु कहौं धुरमे॥ द्विजके क्रुधतें सरिता पतिसो। सुनिए हरि पार भयो अति सो॥ द्विजके क्रुधतें मघवातनमे। भग भे सु हजार कहौं पणमे॥ फिरि विप्रनकी सु कृपा लहि कै। सहसाक्ष भयो मुदको गहि कै॥ महिमा द्विजकी नहि जाय कही। हरिको यहि भांति कह्यो सुनही॥ शुचि कीरतिको जन जौन चहैं। अरु जौन विभूति सुको उमहैं॥ जन ते द्विजकों अति पूजत हैं। तिनकी शुचि कीरति कूजत हैं॥

॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

सुनिए महिके बैन कृष्ण होय मोदित अतिहि। पूजा पर्म सचैन नीको धरणीको करी॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

यह उपमा सुनि द्विजनकी पूजा करो सचाय। तुमहू विधिसो श्रेयको लहि हौ सुनि नरराय॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना काशीवासिरघुनाथ कवीश्वरात्मजगोकुलनाथात्मजगोपीनाथसम्मिश्रेण मणिदेवेन कविना विरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणि दानधर्मे भूमिकृष्णसंवादे ब्राह्मण प्रशंसायां चतुस्त्रिंशो ऽध्यायः॥

॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ अ०५०

जन्महितें। द्विज होतहैं योग्य पूजिवें धर्म । करत अर्थ सब सिद्धिहैं सुनिए नृपति सधर्म ॥ दा०ध०

जे जन पूजत द्विजनकों सहित प्रीति अभिराम । बाणी कहत समङ्गला तिनकों विप्र ललाम ॥

जे जन पूजत नाहिंहैं विप्रणकों नृप शुद्ध । तिनकों कहत अमङ्गला बाणी होय सक्रुद्ध ॥

यह प्रसङ्गमे कहतहैं बुध गाथा प्राचीन । सो गाथा हम कहतहैं तुमकों नृपति प्रवीन ॥

॥ * ॥ मुग्धविलासछन्द ॥ * ॥

रचि द्विजनकों अवदात । अतिं स्वस्थ होय सुजात ॥ मनमाहि चिन्तन एह । विधि कीन्ह सुनु बुधिगेह ॥ ॥ दोहा ॥

आन परम करतव्यह तान किये। हम सर्ब । कीवेकों अब और नहिं कारज स्वच्छ अखर्ब ॥

रचा जो है द्विजनकी सो अति उत्तम कर्म्म । तातें अति आनंद मिलत सुनु अवनीप सधर्म ॥

॥ * ॥ चरणाकुलकछन्द ॥ * ॥

किएँ सहाय द्विजनकी राजा ।मिलति द्विजनकी प्रभा दराजा ॥ मिलति बुद्धि अरु तेज महाना । अरु ऐश्वर्य्य मिलत हैं नाना ॥ श्रद्धा सह जे द्विजकों पूजैं । द्विजकी परम प्रसंशा कूजैं ॥ द्विजपै करैं क्रोध नहि कबहूँ ।परुषङ्ग बात कहैं द्विज तबहूँ ॥ होत काम तिनके सब सिधिहैं । सर्व लोकमे होत प्रसिधिहैं ॥ सर्व पदारथ सिद्धि करतहैं । विप्र महा तपनेम धरतहैं ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

यह द्विज गीता जौन रचा कीवें द्विजनकी । सुनऊ सुमतिके भवन बुद्धिवान जनहै कही ॥

यथा तपस्वी भूप होत महा बलवान हैं । तिमिही विप्र अनूप होत महाबलवान हैं ॥

॥ * ॥ रामगीतीछन्द ॥ * ॥

धरें केते बिप्रबर हैं सिंहको सु सुभाव । धरें व्याघ्र सुभावकों हैं किते द्विज नरराव ॥ धरें नीर सु भाव केते बिप्र हैं अवदात । धरें रहत सुभाव केते सर्पको हे तात ॥ किते कोपित भए द्विजवर जनहि मारत हाकि । सुनऊ भूपति किते कोपित भए मारत ताकि ॥ होत बिबिधि प्रकारके हैं द्विजनके सु सुभाव । कहत प्रज्ञावांन जन हैं सुनऊँ बर नरराव ॥ बसे असुर पतालमाहीं किएँ द्विज अपमान । स्वर्गमाहीं बसे सुरवर किएँ द्विज सनमान ॥ है अशक्य डुलायवो हिमबांनको जिमि तात । अरु अशक्य सु परश जैसें व्योमको अवदात ॥ द्विजनकों हैं जीतिवो तिमिहीं अशक्य महान । सुनऊ भूपति धर्म धर बर धर्म सुत मतिमांन ॥

॥ * ॥ मोतीदामछन्द ॥ * ॥

विरोध करैं द्विजसों नृप जौन ।न पाल्हि सकैं महिकों नृप तौन ॥सुनो द्विज हैं सुरके सुर पर्म।महान

[illegible] सु भूप । सु भोगत हैं महि तीन अनूप ॥ बढै तिनकी
दा०ध० अति कीरति स्वच्छ । कहीं अवगाहि तुम्हैं नृप दच्छ ॥ प्रतिग्रह जे द्विज लेत महान ।रहैं तिनमे नहि तेज सुजान ॥ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥

जौन प्रतिग्रह लेत नहिँ विप्र धर्म अवदात । रहो सदां तिनसों सभय सुनऊँ धर्मधर तात ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशीवासिरघुनाथकवीश्वरात्मजगोकुलनाथपुत्रगोपीनाथस्यशिष्येण मणिदेवेन कविना विरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणि दानधर्मे ब्राह्मणप्रशंसायाम्पञ्चविंशो ऽध्यायः ॥ * * * ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

यह प्रसङ्गमे कहत हम श्रोर एक इतिहास । सुनऊँ तौन तुम धर्म सुत परम बुद्धिके रास ॥

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

ता माहीं सम्वाद अनूप । मघवा सम्बरको सुनु भूप ॥ जटी होय निजरूप छपाय । शक्र दनुज सम्बरपै जाय ॥ बूझत भए प्रश्न अवदात । तासों सुनऊँ धर्मधर तात ॥ * ॥ शक्रउवाच ॥ * ॥

॥ * ॥ मुग्धविलासछन्द ॥ * ॥

किहि कर्मसों अवदात ।तुम श्रेष्ठ होय विभात ॥ हमकों कहो तुम एह । सुनु दैत्य बुद्धि सुगेह ॥

॥ ॥ सम्बरउवाच ॥ ॥ सोरठा ॥ ॥

करत असूया नाहिँ हम कबहों ह्वै विप्रको । जाय विप्रके पाहिँ पूजा करत सप्रेम हौं ॥
देहिँ मोहि जौं श्राप कोपित ह्वैके विप्रबर । तबऊँ न क्रोध प्रताप ही ते बाहिर करत हौं ॥

॥ * ॥ तोटकछन्द ॥ * ॥

सुनि श्राप अनादर नाहिँ करौं । करिवो अपराध न होय धरौं ॥ गहिकै द्विजके पद पूजत हौं । तिनकी शुचि कीरति कूजत हौं ॥ जब सोवत विप्र सुहैं सुखसों । तब जागत हौं मुदकी रुखसों ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

पालति जैसें मक्षिका चौद्रहि परम सनेम । श्रैसें पालत विप्र हैं मोहि जोहि सहप्रेम ॥
जो द्विज हमकों कहतहैं करत ग्रहण हम ताहि ।राखत हौं द्विज भक्तिकों नम्र होत हौं चाहि ॥
याते अपनी जातिमे श्रेष्ठ सु हैं हम धर्म ।जिमि नक्षत्रपति श्रेष्ठ है नखतनमाहिँ अभर्म ॥
विप्रनको जो मानिवो सो अति उत्तम काज।श्रैसो श्रौर न काजहै भूमे सुनु सुरराज ॥
यह कारणको जानि अरु देवासुर लखि युद्ध । मो पित हरषित होयकै विसमय कीन्हो उद्ध ॥
लखिकै महिमा द्विजनकी मो पित मोदित होय ।बूझत भए निशेवसों परम प्रेमसों भोय ॥
विप्र सिद्ध किमिहोत हैं महिमा भरे महान। सुनऊ निशाकर मोहि तुम कहिए यह सु निदान ॥

॥ * ॥ सोमउवाच ॥ * ॥ पद्मलोछन्द ॥ * ॥ शा०प० दा०ध०

सब विप्र लहत तप किएँ सिद्धि। जगमाहि होत भूषित प्रसिद्धि ॥ पित गेह माहि श्रुति पढत जौंन। निन्दा महान द्विज लेत तौंन ॥ * * ॥ * ॥ रामगीतीछन्द ॥ * ॥ * *

अल्पमधावाँनको श्रिय हनत है अभिमान । हनत ज्यों सु कपोतकी श्रिय बाज सुनु मति मान ॥ होति दूषित कन्यकाहे गर्भसों जिमि धर्म। होत दूषित विप्र तिमि गृहवास माहि सधर्म॥ वैन सुनि कै चन्द्रमाके मो पिता मतिमान। पूजतो भो द्विजनकों अति गहि सु भक्ति महान॥ रहे पूजत पिता मो जिमि द्विजनकों अभिराम। तिमि हि पूजत द्विजनको मैं भक्ति गहिकै साम ॥ भीष्म उवाच ॥ दानवेन्द्रके बचन सुनि अति सप्रेम व्है इन्द्र। पूजा कीन्हो द्विजनकी ताते भयो महेन्द्र ॥ *

स्वस्तिश्री काशीराजमहाराजाधिराज श्रीउदितनारायणस्याज्ञानुगामिना काशिवासिरघुनाथ कवीश्वरात्मजगोकुलनाथतात्मज गोपीनाथस्य शिष्येण मणिदेवेन कविना विरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणि दानधर्मे षडत्रिंशोऽध्याय: ॥* * * * * * *

॥ * ॥ चरणा दोहा ॥ * ॥ युधिष्ठरउवाच ॥ * ॥

अभ्यागत जे अरु अपूर्व जे अरु जे बसत सुपास । इन तानऊँमे पात्र कौंन हैं कहे सुमतिकेरास ॥

॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥ * ॥

इन तीनऊँमे जौंन क्रोधादिकसों रहित हैं। सुनऊँ तात बुधिभौंन तौंनहि पात्र प्रधान हैं ॥

॥ * ॥ मल्लिकाछन्द ॥ * ॥

वेदको प्रमाण जौंन। धर्म मोदको सु भौंन ॥ ताहि मानते सु जे न। पात्रता लहैं सु ते न ॥ *

॥ * ॥ मुग्धविलासछन्द ॥ * ॥

वर वेद निन्दक धर्म। अभिमान कार सभर्म ॥ कटु वाकवाँन महान। अरु धर्म दुर्मति वाँन॥ यहि भाँतिके द्विजजौंन । सुनु स्वानके सम तौंन ॥ ॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥ * * *

श्रेष्ठनको आचारतामे जे द्विज प्रवृत हैं । सुनु नृप बुद्धिआगार ते द्विज जीवत वर्ष वज्र ॥

॥ * ॥ रामगीतीछन्द ॥ * ॥

यज्ञ करिकै सुरनको रिण दे छुटाय सुजान। वेद पढिकै ऋषिन्हको रिण दे छुटाय महान॥ पितरको रिण पुत्र कै उत्पन्न देय छुटाय । विप्रको रिण दान दैकै सुनऊँ हे नरराय ॥ अतिथिके रिणको छुटावै देय भोजन धर्म।भर्म तजिकै कर्म शुचि कै धरि सु होमे धर्म॥ *॥ दोहा ॥ *॥

जौंन गृही एहि भाँतिसें करै कर्म अनरात। ताके धर्म न नशत हैं निश्चय जानो तात॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना बन्दीजनकाशीवासिरघुनाथकवीश्वरात्मजगोकुलनाथतात्मजगोपीनाथस्य शिष्येण मणिदेवेन कविना विरचिते भाषायांमहाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणि दानधर्मे सप्तत्रिंशोऽध्याय:॥ * * * * *

आ०प०
दा०ध०

॥ * ॥ मल्लिकाछन्द ॥ * ॥

दारके सुभाव जान। के कृपा कहोसु तौन॥ दार होति मोहमूल। दोषसों भरी अतूल॥ भीष्म उवाच॥यह प्रसङ्गमे कहत बुध एक इतिहास अनूप। सो तुमसों मैं कहतहौं सुनऊ युधिष्ठिरभूप॥

॥ * ॥ रामगीतोछन्द ॥ * ॥

पञ्चचूडा अप्सरा अरु सुऋषि नारद पर्म। दुऊनको सम्बाद तामे कहत तोहि अभर्म॥ भ्रमत लोकनमाहि नारद बर बिशारद दक्ष। पञ्चचूडा अप्सराकों भए देखत सक्ष॥ अप्सराकों देखि बूझत भए नारद ताहि। भयो संशय मो हिएँ कछु कहो सो अवगाहि॥ भीष्मउवाच॥ पञ्चचूडा अप्सरा बर सुऋषिके सुनि बैंन।भई कहती बचन ऐसे सुनऊँ नृप बुधिऐन॥ बूझिबेके योग्य मोको होय जो है विप्र। समर्था जो मोहि जानत बूजिए तो क्षिप्र॥ नारदउवाच॥ बूझिबेके योग्य व्है है बूझि हे हम जौंन। जो न बूझे योग्य व्है है बूझि हैं नहिँ तौन॥ * ॥ दोहा ॥ *

जे सुभाव हैं दारके कहो मोहि ते सर्ब। तिय सुभाव को सुननकी इच्छा भई अखर्ब॥

॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥ सोरठा॥

सुनि नारदके बैंन ऐसें बोली अप्सरा। सुनऊ भूप बुधिऐंन धर्म्मवान यशवान बर॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

दारन निन्दा करतिहै दारनकी मुनिराव। यातें मै कैसें कहौं दारनके सु सुभाव॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

जैसे दार सुभाव तैसे तुमहो जानते। सुनु नारद मुनिराव यातें बूझऊ मोहि जिनि॥

॥ * ॥ तोटकछन्द ॥ * ॥

सुनि बैंन ऋषो एहि भाति कही। सुनु हे तिय तूं कऊ मोहि सही॥ अति होत सु दोष असत्य कहें। नहि दोष सु होत सु सत्य गहें॥ सुनि कै मुनिबैंन सु मोद पगी। तियभावहितो कहिबे सु लगी॥ * * * * ॥ * ॥ भुजंगप्रयातछन्द ॥ * ॥ * * * * * *

पञ्चचूडोवाच॥ * ॥ कुलीना सनाथा सुरूपा अपारा। महाशीलवन्तो सुधाको अगारा॥ रहै चारु मर्यादमे तेउ नाहीं। सुनो दोष एतो बडो दारमाहीं॥ नहीं दारसे और कोउ सु पापी। कह्यो सत्य तोसों सुनो हे प्रतापी॥ सबै दोषको मूल हैं दार जानो। नहीं अन्यथा मैं कही सत्य मानो॥ * * * * *॥ * ॥ मुग्धविलासछन्द ॥ * ॥ * * * * * *

गुणवांन औ श्रियमान। अतिरूपमांन सुजान॥ दिनराति जो वशमाहि। सगँ कबऊँ छोडत नाहिँ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

तिय कछु अन्तर पाय ऐसे पतिकों छांडिके। और पुरुषपै जाय करति बिहार अपारहैं॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

असतकर्म्म नारीनके एहैं सुनु ऋषिपर्म्म। और पुरुषकों भजतिहै तजिकै लज्जा धर्म्म॥

शां० ३८

॥ * ॥ अरिल्लछन्द ॥ * ॥

जो जन तियसों मीठें बोलत । कछु संगें रहि हिय प्रीतिहि खोलत ॥ करति तासु संगको दा०ध०
इच्छा तिय । अधरम नाहिं विचारत हैं हिय ॥ तिय नहिं योग्य अयोग्य विचारति । मन आवत
ता संग विहारति ॥ मिलत सु अन्य पुरुष नहिं जब हैं । घरके माहिं रहति तिय तब हैं ॥ भयकों
छोडि देखि धनकों अति । नाहिं तजतहैं पर नरसों रति ॥ पुरुष मात्र नारिनकों चाहिय । रूप
कुरूप विचारति ना हिय ॥ जे जन बढ़त प्रीतिसों राखत । कबहुँ न परतियकों अभिलाषत ॥
कारण पाय ताहि तजिके तिय । और पुरुषके आय लगति हिय ॥ कुब्ज अन्ध जड़ नाहि विचा
रति । औ न पंगु बामन निरधारति ॥ है अयोग्य दारणकों कछु नहि । रमण लगें कुत्सित पुरुषो
सहि ॥ पुरुष मिलत नारिनकों नहि जब । लिंग बनाय बसनको तिय तब ॥ करति विहार
परसपर सुनि मुनि । आसन रचति अनेकनि गुणि गुनि ॥ * * ॥ दोहा ॥ * ॥ * *
प्राज्ञ पुरुषके वचनको मिलत नाहि जिमि भाव । तिमि सुभाव नहि तियनको जानिपरत ऋषिराव ॥

॥ * ॥ रामगीतीछन्द ॥ * ॥

तृप्त जैसें होत नाहीं काष्ठसों सु कृशान । नदिनसों जिमि होत नाहीं तृप्त उदधि महान ॥
तिमिहि पुरुषनसों न होतीं तृप्त नारीं धर्म्म । कहे तुमसों गुप्तनारिनके सुभाव सधर्म्म ॥ सुरनिसों
जिमि होति नारीं अतिहिं मोदित सर्ब । तिमि न मोदिति होति कौनहुँ पाय बसु अखर्ब ॥
सुनहु जसें नाश कारक बह्नि सर्पक काल । तिमिहि जानो तियनकों तुम सुऋषि बुद्ध बिशाल ॥
रची नारि सुढारि जबसों बिधाता मुनिराज । रचे तिनके दोष सबहि कहत प्राज्ञ समाज ॥
स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिनाश्रीबन्दीजनकाशीवासि
रघुनाथकवीश्वरात्मज गोकुलनाथतस्यात्मजस्य गोपीनाथस्य शिष्येण मणिदेवेन कविना विरचिते
भाषायां महाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणि दानधर्म्मे अष्टत्रिंशदध्यायः ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

नारिन मांही रहतहैं नर आसक्त नितान्त । नरनमाहिं नारी रहत कहत सत्य वृत्तान्त ॥
यामे संशय होतहै मो मन माहिँ महान । सुनहुँ पितामह प्राज्ञवर धर्म्मवान यशवान ॥

॥ * ॥ रामगीतीछन्द ॥ * ॥

करति अङ्गीकारहै किमि तियनकों नर धर्म्म । रमति किनमे विगत किनत होति नारि
सधर्म्म ॥ करति रक्षा तियनकी किमि पुरुषहैं मतिमान । योग्य कहिब आपु यातें कहो तात
सुजान ॥ रहति बशमे नारि नाहीं पुरुषके अवदात । परत जो नर नारि करमे सो न छूटत
तात ॥ गाय नव नव तृणनको जिमि करति ग्रहण अमन्द । तिमिहिं नव नव नरनको तिय

अ०८० करति ग्रहण नरिन्द॥ जौन अप्रिय पुरुष ताकों समय लहिके तीय। बोलिक प्रिय बाक्य कोमल
छं०४० लाय लेति सुहीय ॥ जौन माया नमुचिकी अरु दैत्य सम्बर तास। जानतीहैं नारि ते सब सुनऊ
वर बुधिरास॥ रुदन करतो देखि नरकां करति रुदन महान। हसत लखिके हसनलागैं तियऊ
सुन मतिमान॥ जौन छलमय शास्त्र बिरचे शुक्र अरु गुरु धर्म्म। तिनऊतें तिय अधिक छलमय
कहत प्रश्न अभर्म॥ सुनतहैं हम धर्म्म रूपा तियनकों अभिराम। परत देखि अधर्मरूपा सुनऊ
वर बुधिधाम॥ सकतहैं करि कौन रक्षा तियनकी मतिमान। भयो मो हिय माहि संशय सुनऊ
भूप महान॥ *** ॥ दोहा॥ ***
कहि बिधिसों रक्षाकरै तियकी सुनऊ सुजान। कौनकी किहि भांतिसों सो बिधि कहो महान॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराज श्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिनाश्रीबन्दीजनकाशीवासिरघुनाथकवीश्वरात्मजगोकुलनाथस्तात्मजगोपीनाथस्यशिष्येण मणिदेवेन कविना विरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणि दानधर्म्मे स्त्रीस्वभाववर्णनोनामैकोनचत्वारिंशोऽध्यायः॥

॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

जैसे कहे सुभाव नारिनके तुम हीय गुनि। सुनऊ प्रश्न नरराव तैसे होत असत्य नहि॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

यह प्रसङ्गमे कहतहौं एक इतिहास अनूप। सुनऊ धरमधर परम बर अधरमकर दर भूप॥

॥ * ॥ चरणाकलकछन्द ॥ * ॥

जिहि काजै बिधि बिरची नारी। अतिहिं मनोहरि परम सुढारी॥ कहिहैं सो तुमको हम भूपति। पाप कारिणी होति तिया अति॥ अति प्रज्वलित अग्निहे जैसी। जानऊ नारिनको तुम तैसी॥ सर्प बन्हि बिष अरु असिधारा। एक ओर एक ओर सु दारा॥ तिय देवत्वहि प्रापित भई। आपुहि सुनऊ नृपति यह नई॥ तब सब सुर ब्रह्मापै गए। भय अरु संशयसों अति रए॥ विधिकों सब बृत्तान्त सुनैकै। सर्व भए बैठत चुप ह्वैकै॥ तिनके मनकी जानि बिधाता। जगकर जगधर जगबर वाता। नर मोहनकों बिरची नारी। अतिहीं चञ्चलतासों भारी॥ पूर्व सृष्टि मे रही सुशीला। कहं सुरनके रची कुशीला॥ तिन नारिन जो इच्छा कीनी। सो ब्रह्मा पूरण करि दीन्ही॥ मथति सदा ते नरको नारी। काम कलोलनि भरी सुढारी॥ ***

॥ * ॥ मल्लिकाछन्द ॥ * ॥

कामकी सहाय काज। क्रोधकों कियो दराज॥ कामक्रोध माहि जौन। प्रश्नहैं सुनो सु तौन होय रक्त नारि माहि। नित्यहाँ रहैं सुपाहि॥ नारि शास्त्रसों बिहीन। होतिहैं कहैं प्रवीन॥ पूर्वमे सुन्यो सु एह। हे सुनो सुबुद्धि गेह॥ *** ॥ दोहा॥ ***

रक्षाकी गुरु नारिकी बिपुल सुरुचिर मतिमान। सुनऊ युधिष्ठिर भूप बर धर्मवान् बलवान॥

॥ * ॥ मुग्धविलासछन्द ॥ * ॥ शा०प०

एकहा सुऋषि अभिराम । तिहि देवशर्मा नाम ॥ तिय तासु सुन्दरि पर्म । अतिही सुआनि दा०ध०
अभर्म ॥ रुचि नाम तासु महीप । तिहिसी न कौंनऊ दीप ॥ जित जाति वह निज आय । चित
व चकोर सचाय ॥ तिहिको सुरूप अनूप । लखि देवदानव भूप ॥ निति रहत मोहित तात ।
अति जानिकै अवदात ॥ सुरराज तौ लखि जाहि । मुदवान होय सराहि ॥ अतिहीं सुमोहित
होत । सुनु धर्मधर बुधिपोत ॥ ऋषि देवशर्मा पर्म । बर ज्ञानवान अभर्म ॥ तियके सुभावहि जानि।
हिय माहि सो अनुमानि ॥ पुनि काम चारी पर्म । मघवाहि जानि अभर्म ॥ *~*~*~*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

भार्याकी रचा करण लागो ऋषि मतिमान । अप्रमत्त ह्वैकै परम भूपति सुनऊ सुजान ॥

॥ * ॥ रामगीतीछन्द ॥ * ॥

काल कौंनऊ हिमा ऋषिवर कियो यज्ञ बिचार । सुनु युधिष्ठिर धर्मधर बर पर्म बुद्धि
अगार ॥ होय रचा नारिकी किमिं करि सुचिन्ता माम । लयो शिष्य बुलाय अपनो विपुल ताको
नाम ॥ कह्यो ऋषि इमि शिष्यसौं सुनु विपुल बर बुधिगेह । करो रुचि की तुम सु रचा महा
सहित सनेह ॥ देखिकै सुरराज याको रूप मोहित होय। नैन करिकै अैन रसके जातहै निति जोय॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

अप्रमत्त अति होय रुचि की रचा करऊ तुम । तातें मुदसों भोय मखकी रचनाकों करा ॥

॥ * ॥ मधुभारछन्द ॥ * ॥

बऊ धरत रूप । मघवा अनूप ॥ सुनु विपुल दच । बुधिधर सु स्वच्छ ॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥
सुनि बिपुल बैन । ऋषिके सचैन ॥ इमि कही बात । मुनिकों बिभात ॥ * ॥ विपुल उवाच ॥ * ॥
मघवा सु माय । मायाहि छाय ॥ बपु धरत कौंन । कहि ए सु तौन ॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥

॥ * ॥ आभीरछन्द ॥

सुनि करिकै ऋषिराय । अैसें कह्यो सचाय ॥ माया महा महांन । सुरपतिकी मतिमान ॥

॥ * ॥ तोमरछन्द ॥ * ॥

बऊ धरत भेष महान । सुरनाथ सुनु मतिमान ॥ कबहू सु होत सुथूल । कबहूक छशकी तूल ॥
कबहूँवा होत सुश्याम । कबहूक गौर ललाम ॥ कबहूक होत सुरूप । कबहूक होत कुरूप ॥
कबहूक वृद्ध सुजान । कबहूक तरुण सुठान ॥ कबहूक द्विज मति पोत । कबहूक चत्रिय होत ॥
कबहूक बैश्य प्रतच्छ । कबहूँक शूद्र सुदच्छ ॥ कबहूँ सु कोकिल रूप । कबहू सु हंस अनूप ॥
कबहूँ सु वायस होत। कबहू सु शुक च्छविपोत॥ कबहू सु मैगल धार। कबहू सु सिंह उदार॥

शां०प० कबहूं सुनृप अवदात। सुनु धर्म्मधर वर तात ॥ कबहूं सु वायु स्वरूप। सुरनाह होत अनूप॥
दा०ध० इमि धरत रूप अनेक। सुनु तात हे सविवेक॥ *॥ सोरठा॥ *॥
सुनऊ विपुल मतिमान अप्रमत्तव्है के परम। तजिकै भरम महान रुचिको रक्षा कीजियो॥
ऐसें कहिकै बैन महाधर्म्मधर विपुलसों। व्हैकै परम सचैंन चलत भयो मख करणकों॥

॥ *॥ मधुभारछन्द॥ *॥

सुनि विपुल बैन। गुरुके सचैंन॥ यह किय संदेह। सुनु सुमति गेह॥ गुरुकी सुनारि। अतिही सुढारि॥ को ताहि जोय। मोहित न होय॥ *॥ *॥ बरवैछन्द॥ *॥ *
किहि विधि ताकी रक्षा होय महान। है बज्ररूपी मघवा अति बलवान॥ *॥ कबित॥ *॥
सदनकों ढांपि राखौं गुरु पतनीकों जो तो बायु बपु धैकरि परसकरै आयकै। रक्षा पुरुषारथसों होय तौ व्यरथ बल समरथ इन्द्र है कहत बुध गायकै॥ अङ्ग माहि पैठिकै सुढङ्गसों जो रक्षा करौं देय गुरु आपतो सु क्रोध दाप छायकै॥ मतिको अगार ऋषि बिपुल उदार इमि करत विचार भयो संभ्रम सायकै *॥ *॥ सोरठा॥ *॥ *
ऋषिबर बिपुल समर्थ ताको करत बिचारभे। रक्षा माहि समर्थ जानि परयो बल योगको॥

॥ *॥ बरवैछन्द॥ *॥

रुचिकी रक्षा यासों करिहौं पर्म्म। कहत भयो तब ऐसें बिपुल सधर्म्म॥ कारज जो यह करिहौं उत्तम नाम। व्हैहै तो यश भुवमे मम अभिराम॥ *॥ रामगीतीछन्द॥ *॥ *
योग बलसों बपुष धरिकै अल्प या तन बीच। बसैंगे हम करण रक्षा परम होय निभीच॥ कमलके दल माहि जैसें रहत नीर अयक्त। तिमिहि याकी देहमे हम रहैंगे सु अरक्त॥ मोहि यह शुचि हेतुते अपराधव्है है नाहि। यह बिचार सु कियो ऋषिबर बिपुल हियके माहि॥ योग बलसों छोडिकै निजदेह ऋषि मतिमान। गुरू तियकी देह माहीं कै प्रबेश सुजान॥ नेत्रन माहि मिलाय नेत्रन किए बशमे पर्म। श्रवण माहि मिलाय श्रवणहि सुनऊ तात सधर्म्म॥ घ्रान इन्द्रिय सर्व ऐसे करी बशके माह। विपुल ऋषिवर धर्म्म धर बर सुनऊ हे नरनाह॥ नारितन प्रहित चेष्टा होय बैठी आय। तिय अचेष्टित भई ताते सुनऊ धर्म्म कलाप॥ गुरूपतनी अङ्ग माहो कियो बिपुल प्रबेश। तिया कौतुक माहि आन्यो बिपुलको सुनरेश॥ आयहै जब लौं न मो गुरु यज्ञ करिकै पर्म्म। नित्य रुचिकी करौंगो रक्षा सु होय अभर्म॥ *॥ दोहा॥ *
यह कीन्हो संकल्पबर बिपुल सु ऋषि मतिमान। सुनऊ धर्म्मधर सुयशधर बुधिधर परम सुजान॥
स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञानुगामिना काशीवासिरघुनाथकवीश्वरात्मजगोकुलनाथतस्यात्मजगोपीनाथस्य शिष्येण मणिदेवेन कविना विरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणि दानधर्म्मे विपुलोपाख्याने चत्वारिंशोऽध्यायः॥ *

शा०प०
दा०ध०

॥ * ॥ रामगीतीछन्द ॥ * ॥

भीष्मउवाच ॥ * ॥ काल कानऊँमाहि सुरपति दिव्य धरि कै रूप । यज्ञ करिवें गयो ऋषिकों जानि परम अनूप ॥ जाय आश्रममाहि ऋषिके भयो मोदित पर्म । महालोलुप काममदसों भरो भूरि अधर्म ॥ चित्र ऐसी रहित चेष्टा विपुलकी लखि देह । लखी पुनि ऋषिनारि सुरपति महा सहित सनेह ॥ केश चारु सुबेष ताके गोल गोल कपोल । महासुषमा सदन जाको बदन लोचन लोल ॥ कम्बुसो गर परमछविधर चेतहर वर बैंन । पीनकुच कटिछीन जाकी छवलिका छविऐंन ॥ लसति जंघा राम कदली कमल ऐसे पाय । भयो चकित रूप ताको देखि निर्जर राय ॥ देखि कै सुरनाथकों सो भई हर्षित दार । होय विस्मित भई मोहित जानि परम सुढार ॥ कोंन हो यह बूझिबेको करी इच्छा पर्म । उठन लागी सकी उठि नहि विपुलसों सह धर्म ॥ आपुही तब कहन लागो नारिसों इमि बैंन । नारि हम तवकाज आए चारु छबिकी ऐंन ॥ काम तव सङ्कल्पभव अति देत मोकों पीर । करऊ ताकों दूरि हे तिय आय मेरे तीर ॥ काम बीत्यो जात है अब बेर करू जिन नारि । होय कै बेहाल मेरो रह्यो है हिय हारि ॥ *❦*

॥ * ॥ अन्तगुरुतोमरछन्द ॥ * ॥

सुनि बैन ए मघवानके । अति हो सुदुर्मतिवानके ॥ बशमाहि इन्द्रिणकों करी । तियको सु मन्मथसों भरी ॥ तिहितें सु बोलि सकी नही । इहि भांतिसों विपुलै गही ॥ गुरुनारिको मन जानि कै । मघवाहि दुर्मति मानि कै ॥ अति यत्न रक्षाको कियो । गुरुनारिको बश कै हियो ॥ मघवा सु रुचिकों देखिक । अति निर्विकारिणि लेखिकै ॥ इमि बोलतो भो प्रीतिसों । बर लोलुपौको रीतिसों ॥ तिय आउ ह मम पासमे । सुख लेऊ काम विलासमे ॥ सुनि बैन ए सुररायके । तिय जानि कै अति चायकें । मनमाहि मोदित होय कै । मुसकायकै तिय जोय कै ॥ *❦❦*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

बोलनकी इच्छा करी सुरपतिसों तिय पर्म । भरी मदनमदसों महा द्युतिकी सदन अधर्म ॥
बोलन लागी नारि तब दिए फेरि मुनि बैंन । बोली इमि कछु सुनु नृपति पर्म धर्मके अन ॥

॥ * ॥ भुजङ्गप्रयातछन्द ॥ * ॥

सुनो कौंन काजे इहां आपु आए । कहो शक्र मोसों महा मोद छाए ॥
इते बैंन पीछैं गयो बोलि नाहीं । भयो शक्रके भूरि संशै हि नाहीं ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

दिव्य नैनसों देखतो भो तब श्रीसुरराय । देख्यो जब ऋषि विपुल तब कम्पित भयो सकाय ॥

॥ * ॥ रामगीतीछन्द ॥ * ॥

छोडि कै गुरुनारिको ऋषि विपुल तेजश्रधाम । कियो आप प्रवेश अपनी देहमे अभिराम ॥

आ॰प॰ दा॰ध॰ महा कलुषी शक्रकों लखि बक्र करि कै नैन। श्राप देतो भयो ऋषिवर होय क्रुधको ऐन॥

॥ * ॥ विपुलउवाच ॥ * ॥

सुनऊँ हे दुरबुद्धि मघवा पापवान विशाल। होहु तव पूजा न कबहूँ लोकमें बहु काल॥
भगनसा चिन्हित सु करि कै तोहि गौतम विप्र। छोडि दीन्हो रहो सो तूँ भूलिगो का छिप्र॥

॥ * ॥ चरणाकुलकछन्द ॥ * ॥

अब सुरपति तुमकों हम जाने। हो तुम पापी परम महाने॥ सुनहु मूढ इच्छा हम जाकी। नित्य करत ताकों तुम ताकी॥ सुनऊँ शक्र आए तुम जैसें। जाऊ चले अबहीं तुम तैसे॥ क्रोध अग्निसों जारे नाहीं। सो तुम भल जानो मनमाहीं॥ सुनि मुनिबैन शक्र भो ऐसो। हिमको मारो भूरुह जैसो। काँपन लगो भीतसों छायो। जैसें मनुज पूषमे न्हायो। ऐसें विकल भयो हिय माही। जान्यो चोर सेंदके पाही॥ दशा देखि सुरपतिकी मुनिवर। कह्यो जाऊ अब वेगि सुपवि धर॥ हे सुरपति औ मो गुरु ऐहै। तो तुमकों क्षणमाहि जरै हैं॥ तुम्हें योग्य करतब्य न ऐसो। सुनो शक्र कीन्हो तुम जैसो॥ * ॥ * ॥ रामगीतोछन्द ॥ * ॥ *〰〰〰〰〰〰〰〰*

भीष्मउवाच ॥ * ॥ बैन सुनिकै विपुल मुनिके शक्र आरत होय। कह्यो कछु नहिँ भए अन्तर ध्यान दुखसोंभोय॥ कछुक बीतें यज्ञ करिके देवशर्म्मा पर्म। भए आवत सदनमाहीं सुनऊ तात सधर्म॥ पूजन के गुरुदेवको विपुल महातपवान। हर्षित ह्वै बैठत भयो लखि कै धर्म महान॥ 〰

॥ * ॥ तोटकछन्द ॥ * ॥

गत काल भए कछु मोद पग्यो। मघवाकृतकों कहिबैं सु लग्यो॥ सुनिकै मुनिको सब भै सु भग्यो। टरिगो दुख सर्ब सुखै उमग्यो॥ * ॥ मल्लिकाछन्द ॥ * ॥ 〰〰〰〰〰〰〰〰〰*
शिष्यकी सुभक्ति देखि। चारु हीयमाहिँ लेखि॥ यों कह्यो सु पुत्र धन्य। तो समान है न अन्य॥

॥ * ॥ रामगीतो छन्द ॥ * ॥

होय तुष्टित देवशर्मा कहे ऐसैं बैन। मागु अब बरदान मोसों विपुल बरबुधिऐन॥ बचन मुनि के विपुल ए गुरुदेवके अवदात। भयो मागत यह सु बर बरदान हे सुनु तात॥ धर्ममे थिति रहे मेरी नित्यहीं अभिराम। देऊ यह बरदान मोकों सुमऊँ गुरु बुधिधाम॥ देवशर्मा चाहि कै भरि मोद हामे माम। कह्यो ऐसें होऊ थिति तव धर्म माँहि ललाम॥ पाय कै बरदान गुरुसों विपुल मुनि मतिमान। लग्यो तपकी क्रियामाहीं सुनऊँ भूप सुजान॥ सहित नारी देवशर्मा ऋषिऊँ बनमे जाय। होय निर्भय करत भो तप हर्ष हियमे छाय॥ 〰〰〰〰〰〰〰〰〰〰

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञानुगामिना श्रीबन्दीजनकाशी बासिरघुनाथकवीश्वरात्मजगोकुलनाथतस्यात्मजगोपीनाथस्य शिष्येण मणिदेवेनकविना बिरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणि दानधर्म्मे विपुलोपाख्यानेएकचत्वारिंशोऽध्यायः॥ *〰*

॥ * ॥ पज्झटीछन्द ॥ * ॥ शा०प० दा०ध०

॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥ तप कीन्ह विपुल ऋषिवर महांन । अति तेजवांन भो सो सुजान॥ गुण जासु लगे गावन सुविप्र । जिहिको सुदर्श अघ हरत क्षिप्र ॥ *

॥ * ॥ रामगीतीछन्द ॥ * ॥

जानतो भो आपुकों सो विपुल वर तपवांन । सुनु युधिष्ठिर धर्मधर वर ज्ञानवान महांन ॥ काल तीनहिँ माहि रुचिकी अगनि काके चारु। भयो उत्सव उङ्ग हे सुनु भूप उङ्ग उदारु ॥ *

॥ * ॥ अरिलछन्द ॥ * ॥

तीनहि समयमाहिँ सुनु भूपति । एक अङ्गना रूपमई अति ॥ जाति उती नभमारगकों गहि । तासु देहतें पुष्प गिरे महि ॥ निकरि गेहतें ते चुनिके रुचि । धारण किए समुद सिरमे शुचि ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

रुचिकी भगिनी जे सटा तासु प्रभावति नाम । अङ्गदेशपति चित्ररथ तासु बाम अभिराम ॥

॥ * ॥ चरणाकुलकछन्द ॥ * ॥

रुचिके गेह निमंत्रक आयो । ताके गृहतें मुदसों छायो ॥ तब रुचि आंनदमों अतिरई । अङ्गदेश पति गृहमे गई ॥ रुचिकी भगिनी सुमनहिं देखें । अतिहिँ अनूप महीमे लेखें॥ भगिनी सुमन कहां ए पाए । अतिहिँ सुगन्ध चारुसों छाए ॥ प्रभावती इमि कहती भई । सुमन लेनकी रतिसों रई ॥ भगिनीके सुबेन सुनि कै रुचि । कह्यो जाय अपने पतिसों शुचि॥ सुनि हतान्त तौन रुचि को पति । लखि मुसकाय भयो मोदित अति ॥ ॥ मधुभारछन्द ॥ ॥ * * * * *

विपुलहि बुलाय । ऋषि चोप छाय ॥ इमि कहे बैंन । सुनु सुमति ऐंन ॥ ऐसे सुफूल । मोदद अतूल ॥ तुम जाऊ लैंन । अति व्है सचन ॥ सुनि बचन चारु । गुरुके उदारु ॥ विपुल सु पयान । कीन्हों सुजान ॥ ॥ * ॥ रामगोतीछन्द ॥ * ॥

नारितनतें गिरे हैं जिहिदेश माही फूल । गए तैंनेदेशमाहीं भरे मोद अतूल ॥ गिरे हैं बऊदिन नकेप भए फूल न मन्द । देखि कै मुनि विपुल तिनकों लह्योअति आनन्द ॥ लेय फूलनि चल्यो तूरण विपुल मुनि अवदात । धरें हीमे मोदकों अति धर्मधर सुनु तात ॥ महा निर्जन बिपिनमाहीं नारि नर अभिराम । पाणिसों गहि पांणि घूमत रहे दोऊ माम ॥ सुनऊँ तिन दोऊनमाहीं चलत एक उताल । चलत एक उताल माहीं सुनऊँ भूप विशाल ॥ भयो कहतो नारिसों तब पुरुष ऐसें पर्म । शीघ्र तूहे चलत तजिकै मानको बर धर्म॥ बैंन सुनि सो भई कहती चलतितूरण नाहि। मान गहिके चलनिहैं हम मानु सत्यहिमाहि ॥ देखि दोऊ विपुलकों इमि करी शपथ सुजान । कहत जो हम होहिँ मिथ्या हिए राखि महांन ॥ जौंन गति परलोकमाहीं विपुल ऋषिकी पर्म । प्राप्त सो परलोकमाही हमै होय अधर्म ॥ मलिन भो मुख विपुल ऋषिको दुऊनके सुनि बन ।

भा०प० २१०५ नष्ट मम तप भयो ऐसेका होय अचैन ॥ कौनधौ हम कियो दुम दोऊनको अघ भाम। कहत जाते मोहि ऐसे बैन ए बुधिधाम ॥ विपुल ऋषि यह चिन्तनाके होय अति दुखवांन । भो विचारत आपनो अघ सुनऊ भूप सुजांन ॥ तेहि अनन्तर पुरुष षट अभिराम बर बुधिधाम। रहे खेलत द्यूतको ते भरे मुदसों भाम॥शपथ उनदोउन कीन्हो तीन ही दुन कीन।विकल औरउ भयो सो सुनि विपुल सु मुनि प्रवीन॥ कहत भे ते विपुल मुनिको देखि ऐसे बैन। सुनु युधिष्ठिर धर्मधर बर परमबुधिके ऐन ॥ करत हौंहि अरीति जो हम लोभको गहि थोक। प्राप्त हमको होय तो गति विपुलको परलोक ॥ बैन सुनि ए विपुल मुनि बर होय शोभित पर्म । धर्मको विभचार अपनो भयो लखत अभर्म ॥ चिन्तना बहुदिननलौं ऋषि करो होय उदास । लखि पर्यो तब हेतु अघको सुनऊ नृप बुधिरास ॥ कहत भो अवगाहिके सो विपुल मुनि अवदात । करी रक्षा गुरुस्त्रियको सब अङ्ग मिलाय । कह्यो मै यह हेतु नहिं गुरु देवसों सुखदाय ॥ मान तो भो आपने यह पाप ऋषि मतिमान । सुनि युधिष्ठिर धर्मधर बर ज्ञानवांन महान ॥ जाय चम्पापुरीमे मुनि बन्दि गुरुके पाय ॥ सुमन देतो भयो गुरुको प्रभामे सुखदाय ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराज श्रीउदितनारायणस्याज्ञानुगामिना श्रीबन्दीजन काशीवासिरघुनाथकवीश्वरात्मजगोकुलनाथपुत्रगोपीनाथस्य शिष्यण मणिदेवेन कविना विरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणि दानधर्मे द्विचत्वारिंशोऽध्यायः ॥

॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥ रामगीतीछन्द ॥ * ॥

देवशर्मा शिष्यको लखि कहत भो जो बैन । सुनऊ सो तुम नृप युधिष्ठिर महत मतिके ऐन ॥ देवशर्मोवाच ॥ लख्यो तुम कछु विपिनमाही सुनऊ सुत बुधिधाम । जानते हैं तुम्हैं तिनको लखे तुमते आम ॥ विपुलउवाच ॥ कौन हे तिय पुरुष दोउ भरे परमा भाम । सुनऊ गुरु अरु कौन हे षटपुरुष बर अभिराम ॥ देवशर्मोवाच ॥ लखे जे हे विपिनमे तुम पुरुष नारि अनूप । दिवस निशि ते रहे दोऊ धरे नर तियरूप ॥ रहे जे हे पुरुष बनमे तीन हे ऋतुपर्म । विपुल मुनि सुनु धर्मधर बर ज्ञानवांन अभर्म ॥ पापको अरु धर्मको जे करत हैं जन तात । लखत रितु दिन रैनि तिनको धर्मधर अवदात ॥ करी तुम मम नारिकी जिहि भांति रक्षा पर्म । कह्यो हमको नाहिं सो तुम सुनऊ तात अभर्म ॥ हेतु याते लोक जो पापीनको हैं पर्म । तुम्है प्रापति होय सो सो मानुसत्य अभर्म ॥ विपुल मुनि सुनि देवशर्मा सुऋषिके बर बैन । सुनु युधिष्ठिर धर्मधर बर भयो पर्म अचैन ॥ देखि शोभित विपुलको मुनि देवशर्मा भूप । कहत भो मुसकाय ऐसे व्है दयाल अनूप ॥ करी रुचिकी पर्म रक्षा धर्म गहि अवदात । सुनऊ परम प्रसन्न याते हैं सु तुमपर तात॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

अधरम जो हम देखते तव हिय माहिं सुजांन । करते और विचार नहि दते शाप महांन ॥

रक्षाको मम नारिकी तुम सचेत ह्वै पर्म । यातें रहिहौ मोदमय लहि हौ स्वर्ग सधर्म ॥ शा०प० दा०ध०

॥ * ॥ त्रिभङ्गीछन्द ॥ * ॥

मुनि देवशर्मा परम अभर्मा स्वच्छ सधर्मा सुमतिमयो । विपुलै इमि कहि कै सङ्गनि लहि कै मोद सु गहिकै स्वर्ग गयो ॥ सुनु तात यशस्वी एक तपस्वी हौ वरचस्वी श्रेय छयो । गङ्गाके तटने नीर निकटमें कुर्चि अघटमें ध्यान रयो ॥ * ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

फस्यो मोहि आख्यान यह तिन करि कृपा महान । सुनऊँ युधिष्ठिर भूप वर धर्मवान यशवान ॥

॥ * ॥ रामगीतोछन्द ॥ * ॥

पतिव्रता तिय होति केती केती कुलटा पर्म । होतिहैं द्वै भाँतिकी तिय सुनऊ तात सधर्म ॥ पतिव्रता जगमाँहिं जेती नारि हैं अवदात । लोक माता कहत तिनकों सर्व जन हे तात ॥ रहति मोदित भूमि तिनके धर्म करिकै पर्म । कीर्त्ति तिनकी होति भूमें सुनऊ तात सधर्म ॥ औन कुलटा नारि तिनकी करत निन्दा सर्व । धरति हीमें धर्म केऊ न करति पाप अखर्व ॥ योग बलसों होति रक्षा तियनको अभिराम । और भाँति न होति रक्षा कहत मतिसों नाम ॥ रहत जो नर नारि रूगमें करत काम विलाम ॥ लगत सोई परम प्यारो तियनकों बुधिराम ॥ प्राण याही देवता हैं नारि निश्चय आनि । रहत तिनतें यत्न दूरिहि परम दुखदा मानि ॥ एक विपुलै करी रक्षा नारि की अवदात । अन्य अनलों नाहिं कीन्हों गानु निश्चय तात ॥ * * * * *

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञानुगामिना श्रीबन्दीजनकाशीवासि रघुनाथ कवीश्वरात्मज गोकुलनाथस्यात्मजगोपीनाथस्य शिष्येण मणिदेवेन कविना विरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणि दानधर्मे विचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

पितर देव सुत अरु सुहृत इनको जो है मूल । कहऊ तात अब तौन तुम महिमा भरे अतूल ॥ कैसे वरकों कन्यका दीजे यह सुविचार । हे अति उत्तम सुनु नृपति मतिके चारु अगार ॥

॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥ छन्द ॥

वरकों सुजानि औन । शुचि कर्म करत कुलवौन ॥ बुधताहि कन्यादेत । सुनु तात परम सचेत ॥ यह विप्र ब्याह अनूप । बुध कहत बुद्धि स्वरूप ॥ वर योग्य जानि बुलाय । अतिहर्ष हियमे छाय ॥ सुनु देय कन्या ताहि । बुध कहत हैं अवगाहि ॥ यह क्षात्रब्याह सुढार । सुनु भूप उह्ह उदार ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

कन्या जिहि वरकों चहै कन्याकों वर औन । तिहिकों दीजे कन्यका सुनऊ तात बुधिभौन ॥ यह गान्धर्व विवाह है भरो उछाह महान । कहत वेदविद विप्र हैं जिनकी सुमति महान ॥

आ०प० दै धन कन्या लेयके जो जन करत बिवाह । आसुर तौन बिवाह है कहत सुबुध नरनाह ॥
रा०भ० अनहति कन्या लेय जे बरबस करत बिवाह । राक्षस तौन बिवाह है कहत सुबुध नरनाह ॥

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

पञ्च बिवाहनमाहि सु भूप । ब्राह्म प्राच गान्धर्व अनूप ॥ हैं बिवाह ए उत्तम धर्म । कहत सुबुध जन तात सधर्म ॥ राक्षसब्याह अरु असुर बिवाह । ए नहिँ उत्तम हैं नरनाह ॥ कीजे ए बिवाह कबहूँ न । इनतें धर्म्म होत है छीन ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ * * *

ब्राह्म प्राच गान्धर्व अरु ए बिवाह सुखदांन । मिले होंहि वा पृथकै कीबे योग्य सुजान ॥
तीनवर्णकी कन्यका ग्रहण करत द्विज धर्म्म । है बरणकी नृपि सब करत ग्रहण सह धर्म्म ॥
कन्या अपनिहिँ जातिकी बैश्य लहत सुनु भूप । कहत परम अवनाहि के प्रज्ञावान अनूप ॥
शूद्राका कीजे ग्रहण रतिकींबें अभिराम । किते कहत बुध कहत हैं कोतेनाहि ललाम ॥
शूद्रामे जो होत है पुत्र सुनऊ मतिमांन । सो न प्रसंशा लहत है साधुनमांहि महांन ॥
जौन करत उत्पन्न है शूद्रामे सुत धर्म्म । होत तौन द्विज पातकी बुधबर कहत अधर्म्म ॥
कन्या जो दशबर्षकी ताकों बर अभिराम । तीसबर्षको योग्य है कहत सुबुध बुधिधाम ॥
सप्त बर्षकी कन्यका ताकों बर अवदात । योग्य बर्ष एकबिंशको निश्चय जानऊ तात ॥
जिहि कन्याके होय नहि पित अरु भ्राता धर्म । सो बिवाहिबे योग्य नहि बुधबर कहत अधर्म ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

रजोधर्म पश्चात तीन बर्षलौं कन्यका । सुनऊ भूप अवदात पतिका संग्रह नहि करै ॥
वर्षचतुर्थमाहिँ काम क्रियामे ह्वै निपुण । आय पतीके पांहि लहै मदनके मोदकों ॥
जाकी सन्तति धर्म कबहूँ हीन न होति है सुनु अवनीप सधर्म अरु रति रति नाही टरै ॥

॥ * ॥ मधुभारछन्द ॥ * ॥

एहिँ कामहि त्यागि । रति माहिँ पागि ॥ तिय चलति जौन । दुख लहति तौन ॥ निन्दा महान । तिनकी सुजान ॥ जगमाहि होत । सुनु बुद्धिपोत ॥ * ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ *
मातको अरु पितरकों गोत्र बचाय सुजान । ब्याह कीजिए कहत बुध जिनकी सुमति महांन ॥

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

काहूँ दीन्हों होय दंत होय काउ मोलकों ॥ कोउ हठसों भोय कहत होय हम देंहि न ॥
कोउ दिखावत होय मोल कन्यका को परम । कोउ सुखसों भोय कियो होय करको ग्रहण ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

कन्या इन पाचौंनमे किहिकी भार्या होय । कहो आप अवनाहि के ज्ञान नैनसों जोय ॥

॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥ शा०प०

सुनऊ युधिष्ठिर भूप इन पँचऊ मे नारि वह।तिहिकी होय अनूप कियो होय जिहिँ करग्रहण॥ दा०ध०

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥

काहूँ लीन्ही होय मोल देइ कै कन्यका। कोउ तिहिका ओय लेइ आय निज वीर्य्यता ॥

दोष हात की नाहि ताको कन्याहरणको । कहौ आपु अवगाहि सुनऊ पितामह प्राज्ञ वर ॥

॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

मोल लेनमे होत है भार्य्याको नहि भाव । यातें कन्याहरणको दोष नहो नरराव ॥

मोल न निश्चेकार है भार्य्याको सुनु भूप। यामे कहत प्रसङ्ग एक सो सुनु परम अनूप ॥

काशीपतिकौं जीति के ताको कन्यातीन। ल्याए हम निज वीर्य्यसों सुनु अवनीप प्रवीन ॥

लखिकै तिन कन्यानकौं मो पित भ्राता पर्म। मोकौं ऐसें कहत भे पर्म सधर्म अधर्म ॥

॥ * ॥ रामगीतीछन्द ॥ * ॥

अम्बिका अम्बालिका ए दोय कन्या आँन। करऊ इनको व्याह भीषम सुनऊँ बर बुधिमाँन॥ छोडिबेके योग्य अम्बा है सु तात सुजान।छोडि अम्बहिं देऊ यातें करु न बेर महान॥भयो नहिँ कर ग्रहण यातेँ दोष व्हे है नाहिं । दईहम तब दुयो कन्या चित्ररथकौं व्याहि ॥ कह्यो ऐसें मोहि मोपित भ्रात अति अवदात। और लोक प्रसिद्धि है एक बात सो सुनु तात॥ कहत कन्या दान हूं सब कोइ जगकेमांहि । जीतिवो यह मोलि लीबो कहत कोई नाहि॥ मोल देकै लेत जे जे मोल लै कै देत। सुनऊ ते जन धर्मबान न कहंत प्राज्ञ सचेत॥ मोलि लीन्हें होत है नहिँ भारयाको भाव । होत करके ग्रहण हीतें सुनऊ बर नरराव ॥ करत ऐसे कर्मकों जन धर्मच्युतहू जाँन। धर्मसों हैं भरे ते अति पर्मदुर्मति भाँन॥ मोल लीन्ही कन्यकामे होत दासी भाव।भारयाको भाव कबहूँ होत नहिँ नरराव॥ * * ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ * *

कन्याके करको ग्रहण बिधिवत करै सु आँन। ताकी भार्य्या होति है कहत सुबुध बुधिमाँन ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञानुगामिना श्रीवन्दीजनकाशीवासि रघुनाथकवीश्वरात्मजगोकुलनाथस्यात्मजगोपीनाथस्यशिष्येण मणिदेवेन कविना बिरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणि दानधर्मे चतुश्चत्वारिंशोऽध्यायः॥ * * * * * **

॥ * ॥ रामगीतीछन्द ॥ * ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ मोल दै के कन्यकाको कोई जाय विदेश । करै व्याह न कोय ताको भांतितें सुनु देश ॥ कन्यकाको पिता गुणि तब करै कौन उपाय। कहौ यह सन्देह कहिवें योग्य हौ नरराय ॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥ कन्यकाका मोल देकै आँन जाय विदेश । सुनऊ ताके कुटुमधारे लोग जेहैं वेश ॥ कन्यकाको पिता तिनकौं देइ फेर न मोल। सकौ

शां॰प॰ करि ब्याह अनत न मानु सति मो बोल ॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ होय जिहिके पुत्र नाहीं
दा॰ध॰ द्रव्य तिहिको जौन । लेय को किहिभांतिसों सो कहहु प्रज्ञाभौन ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥ सोरठा ॥

जैसो आत्मा होत तैसोई सुत होत है । सुनहु नृपति बुधिपोत होति सुता है सुत सदृश ॥

॥ * ॥ रामगीती छन्द ॥ * ॥

पिताको धन लेय कन्या मात जौं नहि होय । लहै कोई और नाहीं कहत बर बुध लोय ॥ सुनु युधिष्ठिर मातको जो पृथक धन है पर्म । सुताहीको भाग सो है कहत प्रज्ञ अभर्म ॥ होय जाके सुवन नाहीं तासु श्राद्ध सुजान । सुताको सुत करै सोई लेय द्रव्य महान । पुत्रमे अरु पुत्रिकाके पुत्रमे नहिं भेद । कहत सुबुध महान हैं जिन पढ़ो नीके वेद ॥ प्रथम सुतवत कन्यकाकों मानि लीन्हो होय । होय फेरि सुपुत्र तौ सुनु कहत हैं बुध लोय ॥ पाच भाग सुद्रव्यके तिन मांहि ले सुत तीन । भाग द्वै ले कन्यका सुनु भूप परम प्रबीन ॥ सुता तनुजा होय अरु सुत मोल लीन्हो होय । करत ताको न्याय हैं यह धर्म शास्त्री लोय ॥ तीन भाग सु लेय कन्या भाग ले सुत दोय । सदाचार सुपर्म है यह कहत है सबकोय ॥ बेचि दीन्हों कन्यकाको सुवन जो अभिराम । लहै धनमे भाग नाहीं तौन सुनु बुधिधाम ॥ मोलि लीन्हो पुत्र सोई लेय धनको सर्व । कहत हैं अवगाहि कै बुध धर्म शास्त्र अखर्व ॥ बेचि दीन्हो कन्यकाको सुवन जो है भूप । होत धर्म बिरोधकी है कहत प्रज्ञ अनूप ॥ *

॥ ॥ दोहा ॥ ॥

निन्दा असुर बिबाहको ताके माहि महान । एकगाथा यमकी कही सो हम कहत सुजान ॥

॥ * ॥ चञ्चलाछन्द ॥ * ॥

द्रव्य लोभमाहिं पागि त्यागि लाजको सु भौन । पुत्र और कन्यकाहि बेचिदेत हैं सु तौन ॥
कालसूत्र नर्कमाहिं मूत्र औ पुरीष खात । नित्यहां रहैं सपीर खेद पाय कै सु तात ॥ *◆*◆

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

कन्या पिता सु जौन एक सुरभि एक बृषभ लै । करत ब्याह है तौन आर्ष कहावत सुनु नृपति ॥
किते कहत बुध पर्म दोष न आर्ष बिबाहमे । केते कहत अभर्म आर्षऊमाहीं दोष है ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

केचित आर्ष बिबाहकों करत सुनहु वर भूप । पै न सनातन धर्म यह मतिधर कहत अनूप ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

क्वारी कन्या जौन तासों बरबस रति करै । अन्ध नर्कको तौन परि दुख लहत अनेक है ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणसिंहाज्ञानुगामिना श्रीबन्दीजनकाशीवासिरघुनाथकवीश्वरात्मजगोकुलनाथस्यात्मजगोपीनाथस्यशिष्येण मणिदेवेन कविना बिरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणि दानधर्मे पञ्चचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ *◆*◆*◆◆*

॥ * ॥ रामगीतीछन्द ॥ * ॥ शां०प० दा०ध०

दक्षकी ए वचन हु बुध कहत हैं अवदात। ब्याहकाजे लियो जो धन मोल सो नहि तात॥ देय जो सब कन्यकाकों तनिक राखै नाहिं। सोय मोल सुद्रव्य राखैं आपने गृहमाहिं॥ जौन जन कल्याण चाहैं आपनो सु महान।तौन राखत मोदसों हैं तियनकों मतिमान॥करै कामुक पुरुषको नहिं काम करिकै भाव। बढै सन्तति नाहिं तौ हे सुनु युधिष्ठिर राव॥ रमत देवत तब हैं तिय रहति पूजित जव। जहां पूजित रहति नाहीं क्रिया बिफला तव॥ जौन कुलमे करति नारी सोच हैं अति भाम। तिय सो कुल परम हे सुनि भूप वर बुधिधाम॥ जौन गृहमे आति नाहीं कठवबांदी नारि। लहत नाही तौन है गृह प्रभा परम सुढारि॥ योग्य हैं सनमानके तिय सुनऊँ भूप सुजान। किएतें अपमान दुखकों लहत पुरुष महान॥ जनति पुत्रहि नारि हैं अब करति पालन धर्म। योग्य यातें मानके हैं सुनऊँ भूप सधर्म॥सर्व कारज होत जिनके सिद्धि हैं अवदात। करत तियको नित्य जे सनमान जन सुनु तात॥ कहति गाथा जानकी तियधर्ममे यह धर्म। सुनऊँ सो हम कहत तुमकों भूप धर्म सधर्म॥ ***********

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

नारिनको उत्तम धर्म पतिकी सेवा धर्म। पति सेवातें स्वर्गकों जीतति नारि अधर्म॥
इच्छा जो ऐश्वर्य्यकी करत तौन सतकार। नारिनको हैं लक्ष्मी नारी सुनो धर्म अगार॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञानुगामिना बन्दीजनकाशीवासि रघुनाथकवीश्वरात्मजगोकुलनाथसुतगोपीनाथस्य शिष्येण मणिदेवेन कविना विरचिते महाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणि दानधर्मे षट्चत्वारिंशोऽध्यायः॥ **********

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

तुमसो कोउ न और संशयहर अब धर्मधर।सुनु कुरुकुल शिरमौर सर्वशास्त्रविद नीतिबिद॥
भो एक संशय भूरि सुनऊँ पितामह प्राज्ञ वर। सो अब करिए दूरि धर्मधाम बुधि नाम धर॥

॥ ** ॥ रामगीतीछन्द ॥ ** ॥

विप्रके हैं बिहित नारी चारि सुनु बुधिधाम। ब्राह्मणी क्षत्रिया बैश्या और शूद्रा बाम॥होत तिन चारिनके सुत सुनऊँ बुधिधर तात। कौनके तो लेय वर धन पिताको अवदात॥ भीष्मउवाच विप्र क्षत्रिय बैश्य तीनउँ वर्ण हैं द्विज भूप। विप्रको जो धर्म तीनऊ माहिं पर्म अनूप॥ मदनकी जो कौलि ताके लोभ करि कै पर्म। शूद्रिकाको करत नारी विप्र तात अधर्म॥ जौन ब्राह्मण सोवते हैं नारिशूद्रा साथ। होत हैं ते नीचगतिकों प्राप्त सुनु नरनाथ॥ लेय बैनस वृषभ अरु हय ब्राह्मणीको तात। पिताको जो द्रव्य तामे सुनऊँ नृप अवदात॥ करै भाग समान दश धनशेष

... [illegible] अधर्म ॥ क्षत्रियाको पुत्र ताके भाग होय सु तीन।
... [illegible] भागी होत नाही शूद्रिकाको ताता। कहत हे
... [illegible] विप्र शूद्रापुत्रको अवदात। शास्त्रमें भी निपुन
[illegible] विप्रतें सुत धर्म। होत सो है विप्र पण्डित कहत
परम अधर्म ॥ देय बहुत न नारिकों औ द्रव्य होय महान। नारि धनतें देय तो धन होय भूप सु
आँन॥ पिताको औ दियो माता पास है धन तातपुत्र सो नहि लेय वर धर्म कहत बुध अवदात॥

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

ब्राह्मणतें औ पुत्र भो शूद्रामाँहिँ अनूप। सो धनभागी होत नहि काहो आपु यह भूप॥
एक अंश वह लहत पुनि कौन हेतुतें धर्म। संशय होत महान हैं याते सुनऊँ सुधर्म॥
होत ब्राह्मणीमाँहिँ औ ब्राह्मण संशय नाहिँ। ब्राह्मण ताहूकों कहत आँन क्षत्रियामाँहिँ॥
वैश्यामें औ होत सुत ब्राह्मणतें अवदात। तीनऊँ ब्राह्मण होत हैं कह्यो आपु यह तात॥
ये नहि लहत समान ए तीनऊँ भाग सुजान। सो कारेतें होत है संशय मया महान॥

॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥

कन्या तीनऊँ वर्णकी पहिलें करि निज नारि। फेरि ब्राह्मणीका करे भार्य्या परम सुधारि॥
तबहूँ ज्येष्ठा ब्राह्मणी होय न अन्या कोय। सबहि उत्तम भार्य्यामें यज्ञ रहनि है सोय॥
भूषण नाना भाँतिकों अरु भोजन अभिराम। दीजे विप्रा नारिकों अधिक धीरमें आम॥
देख्यो मनुके शास्त्रमें यह सु सनातन धर्म। करत जौन है अन्यथा सो अत्यन्त अधर्म॥
होत सु माताके सदृश पुत्र आनि निज तात। याते धनमे लहत हैं भाग समान अवदात॥
भार्य्या विप्रा क्षत्रिया वैश्या शूद्रा आँन। तिनमें श्रेष्ठ ब्राह्मणी होते सुनऊँ युधिष्ठिर॥
यातें विप्राकोसुवन भाग लहत है श्रेष्ठ। विप्राके सब सुतनमें अधिक होत है ज्येष्ठ॥

॥ * ॥ रामगोती छन्द ॥ * ॥

ब्राह्मणीके सदृश नाहो क्षत्रिया है धाम। पीन वैश्या क्षत्रियाके सदृश सुनु युधिधाम॥ वैश्य
काके सदृश नाही शूद्रिका औ दार। शास्त्र मतते कहत हैं वर ज्ञानवान उदार॥ देवतनमें देवता
हैं विप्र वर अवदात। सविधि पूजा किये तिनको लहत अन सुद तात॥ होत हैं सीतान क्षत्रिय
तेजवान विशाल। करत राज्य सु भूमिको हैं हरत अरिको जाल॥ करत रक्षा सबनिकी हैं सबै
क्षत्रिय भूप। देत दांन महांन हैं धनवान के सु अनूप॥ करत वाणिज्य सबनको रक्षा सु क्षत्रिय
धर्म। कृषि वाणिज्य गोरक्षा है वैश्यके ए धर्म॥ श्रेष्ठ वैश्यापुत्रतें है क्षत्रियाको तात। क्षत्रिय भागे
लहत याते सुनऊँ सुत अवदात॥ * ॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥ * ॥

कह्यो सर्वदृत्तान्त तुम विप्रनको हे भूप। और वर्णको अब कहो नारि पी सपा अनूप॥

॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥ शां०प०

क्षत्रिय सुतके होति हैं द्वैभार्या अभिराम । तृतीया शूद्रा होति पै शास्त्रनि न मतिधाम ॥ दा०ध०

विप्रनको जो मान कह्यौ क्षत्रियसुतको सोइ। ब्राह्मनकौं जनकादि के काहत सु वर बुधरतोर ॥

क्षत्रियधनके होत हैं अष्ट भाग सुनु भूप। तिनमें चौथी रीतिसों मानै कहत अनूप ॥

क्षत्रीयाको सुवन सो चारि अंस लै चार। अरु युद्धादिक शस्त्र सब सोई लेय उदार ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

वैश्याको सुत जान तीनभाग लै द्रव्यमें। एकभाग बुधिभौन लेय शूद्रिकाको सुवन ॥

नारि होति वैश्यके एकहि सुनु बुधिधाम। द्वितिया शूद्रा होति पै शास्त्रनि न अभिराम ॥

वैश्यद्रव्यकी होत हैं पंचभाग मतिमान। चारि भाग तिनमाहि लै वैश्यापुत्र सुजान ॥

शूद्राको जो सुवन सो एकअंस लै तात। दिएँ पिताके कहत बुध शास्त्र देखि अवदात॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

होति शूद्रके दार एकहि अपने वर्णको। सुनु नृप बुद्धिअगार अन्यवर्णकी होति नहि ॥

॥ * ॥ अथफरीछन्द ॥ * ॥

ऐसे होहि शूद्रके तात। सब समभाव लेहिँ अवदात ॥ ब्राह्मण आदि वर्ण जे तीन। तिनमें है यहरीति प्रवीन ॥ होत जेठ सुत श्रेष्ठ सचेत। तातैं अंश अधिक एक लेत ॥ मध्यम सुत जो मध्यम भाग। लेय सुनऊँ भूपति बडभाग ॥ लघु हि भाग पावै लघु तात। कहत सुबुध मतिवर अवदात॥ इति श्रीमन्महाराजाधिराजकाशिराजश्रीउदितनारायणसिंहाज्ञानुगामिना बन्दीजनकाशीवासिरघुनाथकवीश्वरात्मजगोकुलनाथतस्यात्मजगोपीनाथस्य शिष्येण मणिदेवेन कविना विरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणि दानधर्मे धनविभागवर्णनोनाम सप्तचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ **

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ रामगीतीछन्द ॥ * ॥

हीनवर्ण सु पुरुषके संग रमति जो है दार। वरणसङ्कर होत तातैं सुनऊँ बुद्धिअगार ॥ धर्म तिनको कौन है अरु कर्म तिनको कौन। कहौ तात सु कृपा करि कै परम बुधिके भौन ॥ कर्म धर्मरहित वर्णके अरु धर्म धर्मरहित कर्म। प्रजाकाजे प्रथम विरचे विधाता सद्धर्म ॥ विप्रकेहैं होति नारी चारि अति अभिराम। ब्राह्मणी क्षत्रिया वैश्या और शूद्रा नाम ॥ सुनऊ तिनमें ब्राह्मणी अरु क्षत्रिया जो दार। होत दोउनमांहि विप्रहि परम बुद्धिअगार ॥ जो सुवैश्या शूद्रिकान होत है सुतसीव। तिनके अम्ब होत ताहीं कहत प्राज्ञ प्रवीन ॥ विप्रत जो होय वैश्यामाँमहि पुत्र सु भूप। कहत हैं अंबष्ठ ताकों परम प्राज्ञ अनूप ॥ होत शूद्रामाहिँ जो सुत विप्रतें अवदात। कहत ताकौं पारसव बुध सुनऊ बुधिभर तात॥ करत सेवा परम दोऊ द्विजनकी अभिराम। दासकारक होत दोऊ सकल मेधाधाम ॥ होत क्षत्रिनतें सु क्षत्रिय दोयवर्णनि माह। हीन पुत्र सु होत

भा॰प॰ शूद्रामाहिँ सुनु नरनाह ॥ उग्र ताको नाम है वह उग्र अतिही होत। याबकाँ अवगाहि करिकै
दा॰ध॰ कहत प्रज्ञापोत ॥ वैश्यका अब शूद्रिका ए वैश्यके है दार। होत वैश्यहि दुऊनमाँही कहत
बुद्धि अगार॥ होत एकहि नारि शूद्रा शूद्रके है तात।होत तामे सुवन शूद्रहि कहत बुध अवदात॥
कह्यो सब वृत्तान्त चारिऊ वर्णको सु अनूप। वर्णबाहिर जौन तिनको कहत अब हम भूप॥ होत
क्षत्रियतेंसु जो सुत ब्राह्मणीमे पर्म। वर्णबाहिर तौन ताको सूत नाम अधर्म ॥होत विप्रा नारिमे
है वैश्यतें सुत जौन । नाम है वैदेह ताको सुनऊ वर बुधिभौन॥ नृपनके रणवासको सो करत
काज अनूप। सुनु युधिष्ठिर धर्मधर वर ज्ञानमान अनूप॥ ब्राह्मणीमे शूद्रत सुत होत है चण्डाल।
हनत चोरादिकनकाँ सो कहत जनु भूपाल ॥ ब्राह्मणीमे होत एते वर्ण सङ्कर पर्म। कह्यो हम
अवगाहि तुमसों सुनऊ भूप सधर्म ॥वैश्यतें सुत होत जो है ब्राह्मणीमे चाह।नाम मागध तासुको
सुनु भूप बुद्धि अगार ॥ क्षत्रियामे शूद्रतें उतपन्न जो है पूत । नाम तासु निषाद ओहै हनत
मत्स्य अकूत ॥ वैश्यकामे होत जो है शूद्रतें सुत पर्म। नाम आयोगव सु ताको कहत प्रज्ञ अधर्म॥
करत रचना काष्ठकी सो सुनऊ तात अजान । कहत बढ़ई नाम ताको जगतमाहि महान ॥
सुनऊ नृप अम्बष्ठ पारसव उग्रसूत विदेह। चण्डाल मागध औ निषाद सु अयोगव नव एह॥योनि
अपनीमाहि ए सुत करत आपु समान । नीच योनीमाहि इनते और होत सुजान ॥ ***
भए चारिऊवर्णतें जिमि बाह्य ए नव आम । बाह्यतर हैं होत इनतें और सुनु बुधिधाम ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

होत हीनतें हीनवर्ण पञ्चदश और नृप । बुधवर कहत प्रवीन शास्त्रनको अवगाहि कै ॥

॥ * ॥ रामगीतीछन्द॥ * ॥

मागधीमे अयोगवतें होत जो है तात। नाम है सैरंध्र ताको सुनऊ नृप अवदात॥

॥ * ॥ चरणाकुलकछन्द ॥ * ॥

भूषण भूपनको पहिरावैं। वसननकी रचना सु बनावैं॥ सैरंध्रनके कारज ए हैं। कहत शास्त्र
लखि कारज जेहैं॥ ** ** ॥ * ॥ रामगीतीछन्द ॥ * ॥ **
मागधीमे होत है वैदेहतें सुत जौन। नाम मैरेयक सु ताको करत मदिरा जौन।होत जौन निषाद
त सुत मागधीमे पर्म। नाम मद्गुर तासु जीवन नावतें सु अधर्म॥ मागधीम होत जो चण्डालतें
सुत भूप। नाम तासु श्वपाक है बुध कहत पर्म अनूप॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ ****
अयोगवीमे होत है वैदेहकतें जोन। क्रूर नाम ताको करत कपट सदा है तौन॥

॥ * ॥ प्लवङ्गमछन्द ॥ * ॥

जौन होत है निषादतें अयोगवीसु बीच । मद्रजान नाम तासु प्रज्ञते कहैं निभीच ॥ होत जो
चण्डालतें अयोगवी सु माहिँ पूत। खात है सुनो सु तौन अश्वमांसको अकूत ॥ ***

आ०प०
दा०ध०

॥ * ॥ कन्ताछन्द ॥ * ॥

पुत्र सुजान । जिहिको थ्यान ॥ जगके माह । सुनु नरनाह ॥ * ॥ आभीरछन्द ॥ * ॥

अयोगवी के बीच ।तीन वर्ण ए नीच ॥ होत कहत बुध नाम । निरखि शास्त्र अभिराम ॥

॥ ॥ सोरठा ॥ ॥

अयोगवी के माह होत औंन वेदहतें । तासु नाम नरनाह सुद्र कहत अवनादि बुध ॥

॥ ॥ रामगीतीछन्द ॥ ॥

व्यतिक्रमतें मातके अरु पिताके सुनु भूप । होत एते वर्णसङ्कर कहत प्रज्ञ अनूप ॥ शास्त्र उक्ति सु औंन विधिसो वर्ण चारिहिमाहि । वर्णसङ्करमें नहीं हैं कहत बुध अवनाहि ॥ सोरठा ॥

षट अनुलोमज होत चारिऊ वर्णनते प्रगट । सुनऊ नृपति मतिपोत और विलोमज होत षट ॥

अनुलोमज हैं औंन तीन सु क्रमते होतहैं । हैं सु विलोमज तींन होत व्यतिक्रमतें सु जे ॥

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

इनहादश ते छाछठि होत । अनुलोमज सुनु नृप बुधिपोत ॥ औ सु विलोमज छाछठि आम । होत कहत वर बुधिधर नाम ॥ इनते बहुत होत हैं और । ऐसे हीं सुनु नृप शिरमौर ॥ तिनमें किते अचल पै वास। किते करत अवसान पास ॥सत्य वचन अरु छमा महांन । इनके नित्य धर्म अभिमांन ॥ गोब्राह्मणकी किएँ सहाय । एउ सिद्धि लहत नरराय ॥ यामें संशय नाहिँ सुजान । सत्य वचन मम मानु महान ॥ ॥ * ॥ रामगीतीछन्द ॥ * ॥

धर्मपत्नीमाहि बुधवर वीर्यको आधान। करत है लहि समयकौं सुनु भूप परम सुजान ॥ वीर्यको आधान कीन्हें और नारी माहँ । होत है उतपन्न सुत दुखकार सुनु नरनाहँ ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

कामक्रोध वश औंनजन तिनका नारी पर्भ । प्राप्त करतिहँ कुपथकौं भूपति सुनऊ सधर्म ॥

॥ * ॥ अन्तगुरुतोमरछन्द ॥ * ॥

निज छाव भाव दिखाय के । वश मांहि कै सु रिजायकै ॥ नरकौं सु दूषित करतिहँ । जगमे अकीरति भरतिहै ॥ * * * * ॥ दोहा ॥ * * * * * *

बुधजन यातें करत नहिँ बहुधा तियको साथ । इहै हेतु अवगाहिकै सुनु सधर्म नरनाथ ॥

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥

होय सङ्कर वर्णमे उतपन्न जो हे तात । भेद कैसो रूप ताको होय अति अवदात ॥

कहो ताकी जाति सो किहि भांति आनीजाय ॥भीष्मउवाच॥वर्णसङ्कर योनिमे उत्पन्न जो । नरराय ॥

भेद कैसो रूप ताको होय इमिमें पर्म । किएँ चेष्टा जात जान्यो तात तात सधर्म ॥

८।४५० ... । वर्णसङ्कर जानिए तौ कहत वर बुधलोय ॥
मेहको जे वर्न तामे होहि औ अवदात। पुह वर्न सु आनिए तौ नाहि सुनु है तात ॥
॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥
अनाचार अरु दुक्रिया औरु क्रूरता औन। इनकौं आवें जात हे सङ्कर थोनिज तौन ॥
॥ * ॥ रामगीतीछन्द ॥ * ॥
वर्णसङ्कर औन ते नहिँ तजत आनि सुभाव। आत्म मततें कहत हैं बुध सुनऊ हे नरराव ॥ कर्म करि के वर्णसङ्कर आपु जाहिर होत। तुम माही रहत हैं ते सुनऊ वर बुधिपोत ॥
इतिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणसिंहाज्ञाभिगामिना श्रीवन्दीजनकाशीवासिरघुनाथकवीश्वरात्मजगोकुलनाथपुत्रगोपीनाथसहायिणेह मणिदेवेन कविना विरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणि दानधर्मे अष्टचत्वारिंशोऽध्यायः ॥
॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥
सुन पितामह हे बहुत सुजान। तामाहीं संदेह महान ॥ होत तौन नृप करिए दूरि। मेटत तुमहीं संशय भूरि ॥ कैसी नारीमाही तात। कैसो होत कहो अवदात ॥ तुम हो प्रज्ञावान महान। संशय हर तुमसो नहि आन ॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥ रामगीतीछन्द ॥ * ॥ * ✱ * ✱
आपुतें जो होत क्षत्रिया नारिमाही तात। कहत औरसपुत्र ताकौ परम बुध अवदात ॥ कहेतें निज नारिमें पर वीर्यते जो होत। नाम क्षेत्रज कहत ताको परम प्रज्ञापोत ॥ कहूँ बिन निज नारि औरे पुरुषसाथ विहार। करति तातें होत जो उत्पन्न पुत्र सुढार ॥ अर्कृत कहें नाम ताको सुनऊ भूप सुजान। कहतहै निरधारि श्रुति कह ज्ञानवान अमान ॥ होय कौनऊ देसतें जो मनुज कुलतें होन ॥ होत तातें पुत्र चौथौ तौन भूप प्रवीन। दियो काऊहि होय काहू पुत्र अति अभिराम ॥ तौन पञ्चम नाम ताको दत्त सुनु बुधिधाम। कीन ताको नाम औं सुत मोल लीन्हो होय ॥ ग्राहकौ अवगाहिके नृप कहत हैं बुधलोय ॥ ✱ * ✱ * ✱ * ✱ * ✱ * ✱
॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥
गर्भवतीको होय विवाह। ताको जो सुत है नरनाह ॥ तासु नाम अध्यूढ अनूप। यो सप्तम सुत है सुनु भूप ॥ ✱✱✱✱✱✱ ॥ * ॥ रामगीतीछन्द ॥ * ॥ ✱✱✱✱✱✱ * ✱ *
अपध्वंसज होत हैं षट ... भूप सुजान। होत सुत कानीन सप्तम कहत वर मतिमान ॥ होय क्वारी कन्यकामे पुत्र जो है तात। कहत हैं कानीन ताको नाम बुध अवदात ॥ चतुर्दश ए और अपसद पुत्र षट अभिराम। तौन आगे कहेंगे हम सुनऊ नृप बुधिधाम ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ अपध्वंसज कौन षट अरु कौन अपसद तात। कहो तुम अवगाहि हमकौ पितामह अवदात ॥
॥ ॥ भीष्मउवाच ॥ ॥ क्षत्रिया अरु वैश्यका अरु शूद्रिका जे दार। होत इनमें पुत्र द्विजके अपध्वंसज चार ॥ होत क्षत्रियकेसु वैश्या शूद्रिकामे औन। शूद्रिकामे वैश्यके जो होत सुत बुधि

भौन ॥ अपध्वंसज ए सु षट हैं कहत बुध अवदात। और अपसद पुत्रषट ते सुनऊ युधिष्ठिर तात॥ आ०प०
शूद्रके जो होत विप्रानादि सुत चण्डाल। होत है सुत क्षत्रियाने व्रात्य सो भूपाल। वैश्यकाने होत दा०प०
जो सुत शूद्रके हे तात। वैद्य ताको नाम है बुध कहत हैं अवदात ॥ होत मागध ब्राह्मणीमे वैश्य
के सुत धर्म। क्षत्रियाने होत वामक सुनऊ भूप सधर्म ॥होतहै सुत सूत विप्रानादि क्षत्रिय के सु।
होत अपसद पुत्र एते सुनऊ प्रज्ञ नरेसु ॥ * ॥ युधिष्ठिर उवाच ॥ * ॥ ****

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

पतिकी आज्ञा पाय पुत्र अर्थ जो कामिनी। और पुरुषपै आय भोग करति है समुद जो ॥
ताके जो सुत होत सो दोउनमे कौनको। कहो तात बुधिवोत धर्मवान दयवान वर ॥

॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥

जाको वीरय होय सो सुतको चाहै न जो। कहत सु वर बुधलोय क्षेत्र पतिहि को होय तो ॥
पुत्रहि चाहै वीर्य्यप्रद तौ ताहीको होय। कहत सुबुध अवगाहिकै धर्म शास्त्रको जोय ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

सुनऊ पुत्र अध्यूढको यह वृत्तान्त सुजान। वीर्य्यप्रदद जो छोडि देवै के लज्जावान ॥
क्षेत्रपतीको होय तौ सुवन सुनऊ महिपाल। जोनहि छोडै पुत्रको तजिकै लाज विशाल ॥
वीर्य्यप्रदको होय तौ पुत्र तौन मतिमान। कहत शास्त्र अवगाहिकै मतिसों प्रज्ञ सुजान ॥

॥ * ॥ आभीरछन्द ॥ * ॥

छतक पुत्र कहँ होत। सुनऊ नृपति बुधिवोत ॥ ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ ॥ कैसो होत सु
तौन। छतक पुत्र है जौन ॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥ रामगीतीछन्द ॥ * ॥ ***
जाहि माता पिता पथमे डारि दीन्हों होय। पाय ताको ल्याय गृहमे महा मुदसों भोय ॥ कहै
ताको पुत्र सोहै छतक सुत अभिराम। जांहि जानैं नांहि ताके पिता माता धाम ॥ युधिष्ठिर
उवाच ॥ **** ॥ ॥ चञ्चलाछन्द ॥ ॥ *******
संस्कार तासु कौन भांतिसों सु होय भूप। कन्यका सु होय तौ सु काहि दीजिए अनूप॥ होत है
संदेह तात सो कृपा करो महान। है न दक्ष आपुसे संदेह दूरिकार जौन ॥ ॥ भीष्मउवाच ॥

॥ * ॥ रामगीतीछन्द ॥ * ॥

परो पथमे मिलै जाको सुवन सुनु मतिमान। करै सो निज वर्णको सो संस्कार सुजान ॥ जो सु
ल्यावै मार्गतें गेह ताको जौन। होत सुतमे कहत हैं अवगाहि प्रज्ञा भौन ॥कन्यका जो मिलै तौ
निजवर्णमाही धर्म। देय विधिसों चाह वरको सुनऊ भूप सधर्म ॥ जो सुनो कानीन जो अध्यूढ
सुत अभिराम। और क्षेत्रज अपस दोउ ए चारि पुत्र ललाम ॥ इनऊ को निजवर्णको सो संस्कार
अनूप। कीजिए बुध कहतहै अवगाहि शास्त्रहि भूप ॥ ********

शा०प०
दा०६०

॥ ॥ दोहा ॥ ॥

दीन्हो उत्तर तासु हम औ बूझो तुम धर्म । कहा सुननकी इच्छा है अब भूपति सुनहु सधर्म ॥

इति श्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणसिंहस्याज्ञानुगामिना श्रीबन्दीजनकाशीवासि रघुनाथकवीश्वरात्मजेन गोकुलनाथस्यात्मजेन गोपीनाथस्य शिष्येण मणिदेवेन कविना विरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणि विवाहधर्मोनामैकोनपञ्चाशदध्यायः ॥ *

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

परकी पीडा देखि अरु बसिकै परके साथ । कैसे करै सनेह कौं अब यह कहु नरनाथ ॥
अरु महिमा सुर भीमकी कहौ सनोदित आपु । सुनहु पितामह सुखमयर युधिष्ठिर धर्म कलापु ॥

॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥ रामगीतीछन्द ॥ * ॥

कहत हौं इतिहासु याते सुनहु छोडि प्रमाद । च्यवनऋषि अरु नहुषको तिहिमाहि है सम्वाद ॥ च्यवन ऋषि मतिमान मनमे करी इच्छा एह । करै बारहवर्षलौं जलवास सुनु बुधि गेह ॥ मान क्रोधहि छोडि करिकै सुरनकौं परणाम । मध्य यमुना सुरसरीके सुऋषि तेजस धाम ॥ भए करत प्रवेश जलमे होय मोदित पर्म । बेग यमुना सुरसरीको सुनहु भूप सधर्म ॥ भए धारण करत शिरपै च्यवन ऋषि मतिमान । दुहुनि रक्षा करी ऋषिकी दया करि सु महान ॥ दई पीरा नाहि ऋषिकौं तनिकहू हे तात । पाप हारणि सुरसरी अरु कालिंदी सुखदात ॥ *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

रहत भए ऋषि काष्ठलौं जलके माँहिं सुजान । करत भए जल जीव सब तिनमे प्रेम महान ॥

॥ * ॥ मुग्धविलासछन्द ॥ * ॥

बहु काल जलमे बास । ऋषि करत भे तपरास ॥ एक समय माहि मलाह । बहु आय सुनु नरनाह ॥ जलमाहिं डारि सु जाल । बिस्तारिकै सु बिशाल ॥ सब भए खैंचत पर्म । निज जातिको महि धर्म ॥ बहु फदे जलके जन्तु । तिहिमाहिं सुनु महि कन्तु ॥ तिहि जाल माहिं महान । ऋषिरायहू मतिमान ॥ बझि गे सु जन्तुन साथ । सुनु ब्रह्म हे नरनाथ ॥ ऋषिरायकौं लखि सर्व । भयवान भे सु अखर्व ॥ मछरीनकौं ऋषिराय । लखिकै सपीर अथाय ॥ अति क्रोध मनमे कीन । सुनु भूप परम प्रवीन ॥ निषादाऊचुः ॥ बिनजान भो यह पाप । क्षमिए सु सो ऋषि आप ॥ प्रिय होय तुमकौं जौन । कहिए सु अब तुम तौन ॥ अब जो कहोगे तौन । हम करैंगे बुधिभौन ॥ ऋषिराय ए सुनि बैन । इमि भए कहत सचैन ॥ * * ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ * *

तबहीं सुनहु मलाह तुम यह मेरे प्रिय पर्म । जल जन्तुनको साथ नहिं तजिहैं कहत सधर्म ॥
मरि हैं तौ इन साथमे बिकिहै तौ इन सङ्ग । बहुदिनलौं हम सुहितमें इनके बसे अभङ्ग ॥
ऋषिके सुनि के बैन ए तजि मत्स्यनकी आस । भयहित सर्व मलाह गे गए नहुषके पास ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञानुगामिना श्रीबन्दीजन काशीवासि रघुनाथकवीश्वरात्मजगोकुलनाथपुत्रगोपीनाथवर्याग्नश्च मणिदेवेन कविना विरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणि दानधर्मे पञ्चाशदध्यायः ॥ ✻ ✻ ✻ ✻ ✻ ✻ ✻ शां०प० दा०ध०

॥ ✻ ॥ भीष्मउवाच ॥ तोमरछन्द ॥ ✻ ॥

सुनि च्यवनको वृत्तान्त। सुनि नऊष शीघ्र नितान्त॥ उठि गए सहित समाज। जहँ हो सु ऋषि शिरताज॥ ऋषिकों प्रणाम सुकीन। रुखि भूप परम प्रधीन॥ ✻ ॥ नऊषउवाच ॥✻॥ ऋषि राय सुनु मो बैन। तपवान परम सचैन॥ प्रिय होय तुमको जौन। कहिए सु हमको तौन॥ ✻ ॥

॥ ✻ ॥ वनउवाच ॥ ✻ ॥ ॥ दोहा ॥ ✻ ॥

कियो मलाहन परम श्रम यातें सुनु वर भूप। मछरिनको अरु मोल मम दीजै इन्हं अनूप॥

॥ ✻ ॥ पञ्चभङ्गीछन्द ॥ ✻ ॥

धीवरहि देऊ मुद्रा हजार। सुनु हे सु विप्रवर बुधिअगार॥ ✻ ॥ च्यवनउवाच ॥ ✻ ॥ मुद्रा हजार मम योग्य नाहिँ। अवगाहि देऊ नृप चित्तमाहिँ॥ मम सदृश मोल धीवरहि देऊ। सुनु नऊष भूमिपति सुमति गेहु॥ ॥ नऊषउवाच ॥ ✻ ॥ ऋषिके सु बैन ए सुनि अनूप। पुनि कह्यो विप्रसे नऊष भूप॥ धीवरहि देऊ मुद्रा सु लक्ष। ऋषिराय च्यवनको मोल दक्ष॥ च्यवन उवाच ॥ सुनु नऊष भूप तुम देत जौन। मम सदृश मोल है नाहिँ तौन॥✻॥ नऊषउवाच ॥ ✻॥ मुद्रा सु कोटि धीवरहि देऊ। सुनु हे सुविप्रवर बुद्धिगेह ॥ ✻ ॥ च्यवनउवाच ॥ ✻ ॥ मुद्रा सु कोटि मम सम न मोल। सुनु नऊष भूप मतिके अडोल॥ द्विज सहित आप करिके विचार। धीवरहि मोल दीजै हमार॥ ✻ ॥ नऊषउवाच ॥ ✻॥ धीवरहि देऊ मम सर्व राज। सुनु विप्र अवहि नहिँ विलम्ब काज॥ ✻ ॥ च्यवनउवाच ॥ ✻ ॥ मम मोल सदृश नहिँ राज सर्व। सुनु नऊष भूप बुधि धर अखर्व॥ मम सदृश मोल जो होय भूप। द्विज सगँ विचारि दीजै अनूप॥✻॥ भीष्मउवाच ॥ ✻ ॥ नृप नऊष च्यवन ऋषिके सु बैन। सुनिके सु होय अतिही अचैन॥ मतिमान द्विजनके साथ होय। करते विचार भे शोच भोय॥ ✻ ✻ ✻ ॥ ✻ ॥ रामगीतीछन्द ॥ ✻ ॥ ✻ ✻ ✻ ✻ ✻

समय तौनहिँ मांहि एक ऋषि विपिनतें अवदात। निकसिके नृप पास आए सुनऊ बुधिधर तात॥ गऊतें भो जन्म ताको महा तेजस धाम॥ परम प्रज्ञावान सो मन तासु अति अभिराम॥ कहत भो सो बैन ऐसें नऊष नृपसों पर्म। करेंगे परसन्न हम ऋषिच्यवनकों यह धर्म॥ सत्य तुमसों कहत हैं नरनाह हे धनवान। कहें तुमसों जौन सो तुम करो भूप सुजान॥✻॥ नऊषउवाच॥ ✻॥ सुनऊ हे ऋषिराय प्रज्ञावान तेजसधाम। कहौ हमको च्यवन ऋषिके सदृश मोल ललाम॥

आयो इक्ष्वाकु होत कुलको यह मम देशको । जातेँ नृपसों भोग हुँहैं इनको [illegible] ॥

॥ * ॥ [illegible]छन्द ॥ * ॥

॥ * ॥ श्रीसूतउवाच ॥ * ॥ नृपके सुनि सुनिके सुभाव । इमि कहत भये ऋषि तेजपाल ॥ [illegible] म सौंप अब नहुष भूप । [illegible] अनूप ॥ * ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

यम सम [illegible] [illegible] । इनिसों [illegible] सुरभी है नरनाह ॥

यातें इनको मोल तुम [illegible] यो है भूप । यह सुनिके नृप नहुष [illegible] मोद अनूप ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

जाव [illegible] यास नहुष भूप इमि कहत भे । [illegible] ॥

॥ * ॥ च्यवनउवाच ॥ * ॥

सुनहु नहुष मतिमान कियो मोल मम सहस गुन । यातें सुदिन महान है तुमपै परसन्न हम ॥

॥ * ॥ हरिगीतीछन्द ॥ * ॥

इरमनीनें नजको यह कीहैं पूजा दान । [illegible] महान ॥ [illegible] मे पूजवें यह स्वर्गकी सोपान । करत हैं सब कामनाको सिद्धि सुनु बुधिवान ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

सुरभीके सम और नहिँ कोउ सुनहु वर भूप । [illegible] तिनकी जाति महि [illegible] अनूप ॥

॥विधाहराउक॥ [illegible] आके [illegible] पद सम है [illegible] ॥ होति तासों [illegible] प्रीतिहि हाय॥

[illegible] इनको दियो दरसन को सु [illegible] । करहु यातें कृपा [illegible] ॥

[illegible] आपु हौ सब [illegible] । [illegible] सुरभी [illegible] ॥

च्यवनउवाच॥ धेनुको इन [illegible] तुम होत यातें [illegible] सुरभी की प्रभा [illegible] ॥

[illegible] स्वर्गहि और जन्तुन [illegible] । [illegible] ॥

॥ * ॥ श्रीसूतउवाच ॥ * ॥

सुनि [illegible] आयोग [illegible] भूप । [illegible] ॥

नहुष तिनको देखिके [illegible] । तत [illegible] ॥

नहुष नृपसों कहत भे इमि [illegible] । [illegible] ॥

[illegible] । भूपति [illegible] ॥

सुखपाय होउ कृपा करिके [illegible] । [illegible] ॥

च्यवन ऋषि मन भये पूरन [illegible] । [illegible] ॥

पायके वरदान भूपति नहुष [illegible] । [illegible] ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

[illegible] दीनि चार पठिके परले [illegible]। [illegible] अनुशासन ॥
गऊ कुलकी महिमा महा तुमसों कही अनूप। [illegible] सो बूझिहो सुनऊ युधिष्ठिर भूप ॥

[illegible] महाराजाधिराज [illegible] काशी [illegible] गोकुलनाथ कवी [illegible] भाषायां महाभारतदर्पणे अनुशासनपर्वणि दानधर्मे [illegible] ॥ *~*~*~*~*

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ मधुभारछन्द ॥ * ॥

संशय महान। उपजै सुजान ॥ सो करहु दूरि। मतिमान भूरि ॥ ऋषि परशुराम। तपतेज धाम ॥ [illegible] रीति। [illegible] किय [illegible] ॥ *~*~* ॥ दोहा ॥ * ॥ *~*~*~*
भए तीन उत्पन्न [illegible] कहौ पितामह धर्म। द्वै ब्राह्मण किमि लहो क्षत्रिय को जो धर्म ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

[illegible] प्रताप महान परशुराम ऋषिरायको। त्रिशिरहिं प्रताप सुजान भयो सु विश्वामित्रको ॥
दोउनको सु प्रताप ताको कारण जान है। कहो कृपाकरि आप सुनऊ तात [illegible] ॥

॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

यह प्रसङ्गमे कहत हैं एक इतिहास अनूप। यशधर मतिधर धर्मधर सुनऊ युधिष्ठिर भूप ॥
[illegible] च्यवन अरु भूप कुशिक अवदात। तामाही संवाद है इन दोउनको तात ॥

॥ * ॥ रामगीतीछन्द ॥ * ॥

च्यवनऋषि एक समय आयो कुशिक नृपपै आय। कहतभे इमि बसैंगे तव पास हम नरराय ॥ ॥ कुशिकउवाच ॥ जौन आज्ञा करौगे तुम च्यवनऋषि मतिमान। तौनही हम करैंगे तव कृपा काज महान ॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥ सुखसिंधो इमि बैन कहिकै दियो आसन चारु। धोयकै पद [illegible] पूजा करी नृप उदारु ॥ कुशिक नृप ऋषिच्यवनसों पुनि कहे मीठे बैन। राज्य सब धन सहन हैं सब तुम्हारे मय चैन ॥ तिहारे आधीन हैं हम सहित नारि अनूप। कुशिक नृपके बचन सुनि [illegible] सुखरूप ॥ कहतभे इमि बचन तिनसों सुनऊ भूप उदार। है हमारे राज्य धन [illegible] सुढार ॥ [illegible] चाहत मैनको व्रत एक अनूप। सहित रानी सबै तुमसों करौ [illegible] भूप ॥ * ॥ * ॥ चरणाकुलकछन्द ॥ * ॥ *~*~*~*~~~~

[illegible] तुम [illegible]। [illegible] सहित सु नारी ॥ यह नेमै हम कीन्हा चाहैं। भूप औ [illegible] ॥ कुदित दोउ [illegible] ॥ [illegible] ॥ ऋषिको उत्तम [illegible]। दोऊ परम प्रेमसों ल्याए ॥ [illegible] सेज ऊपर बैठाए। सुन्दर अतर मगाय लगाए ॥ [illegible] दोउ मद लागे। ऋषिसों बचन कहन इमि लागे ॥ *~*~~~*~*~*~*~*~*

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

[illegible] शेष तें सेवा चातुरी [illegible] ॥

॥ * ॥ [illegible] ॥ * ॥

[illegible] भूप चातु भोजन [illegible] निरखत भीर [illegible] भोजन [illegible] नाचै [illegible] कथा [illegible] [illegible] ऋषि [illegible] सानी ॥ भोजन होय सिद्धि [illegible] अति सिद्धि अनूपा ॥ [illegible] बैन [illegible] । भोजन होन भयो नृप तवहीं ॥ [illegible] लेय भयो नृप सोई ॥ ॥ दोहा ॥ ॥

भोजन करिके च्यवन ऋषि सुहिभाव अभिराम । [illegible] ॥

॥ * ॥ [illegible] ॥ * ॥

शयन करै ते जब हम राजा । [illegible] ॥ [illegible] । [illegible] नृप [illegible] ॥ शयन करै [illegible] नृप [illegible] बैन [illegible] बोले । रानी राजा प्रीतिहि डोले ॥ [illegible] सेवा [illegible] रानी ॥ जब ऋषि च्यवन सु सोवत भए । तब रानी [illegible] ॥ [illegible] सु [illegible] ऋषि के [illegible] ॥ निशा बीतिगे [illegible] ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

[illegible] विंशति दिवसलों शयन कियो च्यवनऋषिराय । [illegible] ॥

॥ * ॥ [illegible] ॥

तब ऋषि आपुहि उठते भए । नृपहि [illegible] भए ॥ नृपसों कही [illegible] ॥ [illegible] ऋषि [illegible] ॥ नृपक [illegible] ॥ रानी [illegible] नहिं देवें । [illegible] सेवें ॥ [illegible] ॥ तब [illegible] रानी राजा । [illegible] ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

भूपति रानी [illegible] ॥ [illegible] ॥

[illegible] भाषायां महाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणि दानधर्मे [illegible] ॥

॥ * ॥ युधिष्ठिर उवाच ॥ * ॥ [illegible]छन्द ॥ * ॥ [illegible]

[illegible] कह मुहि निधाना । [illegible] ॥ [illegible] हाई ॥ त [illegible] उपाई ॥ श्री[illegible] ॥ [illegible] राजा रानी । [illegible] चितने करी [illegible] ॥ [illegible] सुकिन [illegible] । [illegible] ॥ [illegible] राजा ॥ [illegible] ॥ [illegible] राजा ॥ राजा रानी [illegible] । [illegible] ॥ [illegible] सुनि [illegible] । [illegible] ॥ [illegible] । [illegible] ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

[illegible] रानी [illegible] भूपाल । [illegible] नहिं [illegible] निधान ॥

॥ * ॥ तोटकछन्द ॥ * ॥

[illegible] नृपको । [illegible] तपको ॥ नृप [illegible] । सुनि [illegible] ॥ [illegible] । [illegible] सुख पावत भो ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

[illegible] नाहीं ना करी [illegible] ॥

॥ * ॥ [illegible]छन्द ॥ * ॥

[illegible] नृपहि देखि के ॥ [illegible] देखि के ॥ मुनि [illegible] सु [illegible] के । उठि [illegible] ॥ [illegible] । [illegible] ॥ [illegible] नाहिं [illegible] के । नहि [illegible] के ॥ [illegible] । नृपको सु दुखद महान भो ॥ [illegible] । [illegible] ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

[illegible] करी [illegible] । [illegible] ना करत भूपति [illegible] ॥

॥ * ॥ [illegible]छन्द ॥ * ॥

[illegible] मुनि [illegible] । [illegible] सु [illegible] ॥ [illegible] । [illegible] ॥ [illegible] अनूप । [illegible] भोजन दे वरभूप ॥ [illegible] । [illegible] नारि सु [illegible] ॥ [illegible] । [illegible] ॥ [illegible] । [illegible] ॥ [illegible] सु [illegible] अनूप । [illegible] सुनो वर भूप ॥ [illegible] नाहिं सु [illegible] । [illegible] ॥ [illegible] । [illegible] नहिं भूपति [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] नृपसों [illegible] । सुनो [illegible] ॥ * ॥

[illegible]

॥ * ॥ मधुभारछन्द ॥ * ॥

रथकों मनाय । रथकों चलाय ॥ लै चलिउ नृप । वन करें तप ॥ सुनि यह [illegible] बैन ॥ रथकों मनाय । गुरुकों सु जाय ॥ रानिन सु बोल । चलि नृप सुभोर ॥ [illegible] रानी सखान ॥ अति कवि नगार । रथकों सुधार ॥ नाये चलाय । ऋषिकों सुनाय ॥ [illegible] बैन । नृप भये चैन ॥ चल कहो धर्म । नृप चले तब ॥ सुनि वचन एह । ऋषि सुमति [illegible] ॥ रनि कह्यो धर्म । सुनु नृप सुधर्म ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

सकल सरज रथ ले चलो सावधान अति होय । आगो होय न अब हमै मो सा करे दुख कोय ॥

जिन आरत नैन मिले पथने । बहुदुख मनाय भरो रथने ॥ करि [illegible] मचान सुनो । करि ले अति धीर न आपु गुनो ॥ ऋषिके सुनि बैन सु भूप कहा । किय भूपनकों नहि लोभ महा ॥ करि भौनहि औ धन त्याग चले । रथपर चले तुम आप भले ॥ सुनि भूप सु बैन गही पतिके । नृप त्यागत भे धरमा अतिके ॥ सब भैनक आन भूषनके । तिनके सब ओढ नहीं दरवे ॥ बहु कांचन भूषण रत्न मए । रथ पाव अनेकनि द्रव्य दए ॥ गजगामिनी नारि नई सुघरी दिपत चपरी जनु है उतरी ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

ए सब ऋषिहि दिखाय के रथके पाछे पर्म । मन्द मन्द चलते भए नृपके भृत्य सधर्म ॥

॥ * ॥ अरिलछन्द ॥ * ॥

हाहाकार भयो पुरमे अति । लखि रानी सह भूपतिकी गति ॥ पुरवासी [illegible] । बाहिर व्है बहुभांति पुकारत ॥ ऋषि रथ ऊपरतें बहु मारत । दोउ [illegible] ॥ स्रवत रुधिर अंगमाहिं भए घात । तबहु शीतलतामांही हैं रत ॥ [illegible] । पुरवासे सब व्याकुल बोलत ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

तबलकों देखो प्रबल कहत सबै सुनि बैन । क्रोध रोग है जाये ऋषिसों [illegible] ॥

रानीयो वर नृपको सबहु धीर्यता धर्म । ऐसो वचन [illegible] ॥

॥ * ॥ रामगीतीछन्द ॥ * ॥

भीष्मउवाच ॥ * ॥ निर्विकारित देखि तियसह भूपकों [illegible] । [illegible] ऋषिवर द्विजनको दे नाल ॥ [illegible] कांचन दिए रत्न अनेक । [illegible] मनमे कियो दुख नहिं नेक ॥ निर्विकारित देखि नृपकों [illegible] । [illegible] ताके कृपा कीन्ह महान ॥ उतरि रथतें [illegible] भूपति [illegible] । [illegible] कोमल व्है प्रसन्न सधर्म ॥ मांगि लो वरदान [illegible] । [illegible] भूपवर बुधिमान ॥ करि सु [illegible] चलत [illegible] । [illegible] बुधिधाम ॥ कहत भे तब भूप बैन सु ऋषिसों वर बैन । [illegible] ॥

॥ * ॥ छप्पय ॥ * ॥ पृ०५७ दो०६

[illegible] वन ए सुऋषि च्यवन तपधाम। चाहत हैं जोवन भए कारि यो कृपा महान ॥
[illegible] भार्या सह भूपाल। सु सुता सो निकट हम यदि हैं वसुद विशाल॥
[illegible] सुन चारथो भार्या सहित नरेश। यहि है तव कल्याण अब जाइहि सब कलेश॥

॥ * ॥ तोमरछन्द ॥ * ॥

[illegible] सुबैन अनूप। सुनि होय मोहित भूप॥ इमि कहे बैन अमन्द। सुनु सुऋषि है निरदन्द॥ [illegible] सु पावन धर्म। तुम किए भूरि सधर्म॥ हम नारि सहित सजान। अति सेय हे बुधिवान॥ [illegible] हे अवनाहिं। सखि ते परे अवनाहिं॥ तब कृपाते ऋषि राय। हम भए धर्म सचाय॥ मम नारिकी सुनि बैन। सखि परति अद्भुत नैन॥ सुनि बैन ए ऋषि राव। नृपसों [illegible]॥ सुन चारयो पुनि भूप। सह नारी घाव अनूप॥ तव भूप बुद्धि अमार। सुरसों [illegible]। [illegible] राजवे अवदात। निज धामकों भे जात ॥ *◆*◆*◆*◆

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

[illegible] भूपकी पुरवासी सुखपाय। सब सोहैं आवत भए सुनऊ युधिष्ठिर राय॥
[illegible] सह घरनवरसे भूपति कियो प्रवेश। बन्दीजन गावत सुयश पावत दान सुवेश॥
[illegible] मुदित भे धर्मधाम वरभूप। सहित वाम भोजन करि सु आनन्द लह्यो अनूप॥
[illegible] भूपवर रानी सहित अनूप। दोऊ अति सुखकों लह्यो देखि परस्पर रूप॥
[illegible] सुनि भई अनूप अमन्द। कृपा पाय ऋषि च्यवनकी भए परम निरदन्द॥
[illegible] मन सुरसरिके कूल। इन्द्रहूके वनतें अधिक छविसों भरो अतूल॥

[illegible] राजाधिराजश्रीउदितनारायणसिंहाज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशीवासि रघुनाथ[illegible] मणिदेवेन कविना विरचिते भाषायां मह।भारते [illegible] च्यवन कुशिक संवादे [illegible]ऽध्यायः ॥ *◆*◆*◆*◆

॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥ रामगीताछन्द ॥ * ॥

[illegible] भूप वर अवदात। च्यवन ऋषिके विपिनमाहीं भए हे सुनु तात॥ [illegible] मन्दिर नाम। रचे मणिके खंभ तिनमे प्रभाके अभिराम॥ [illegible] रमणीय। [illegible] तिनमे होत मोदित हीय॥ [illegible] पर्वत [illegible] आसादि सुषमाधाम॥ लपटि तिनके [illegible] वर [illegible] वरपाए॥ [illegible] सुन्दर [illegible] अनेक। [illegible] भोजन सुनऊ नृप सविवेक॥ [illegible] देखी [illegible]। नारि नर कोउ लखे सोवत सेजमाहिं सुडाह॥ परत लखि ए कबऊ

ग्रा॰प॰ [illegible] लखि नहि भूप । होत है [illegible] दिज [illegible] ॥ [illegible]
दा॰ध॰ ॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

के गुक लखि वह भूप कीन्हो [illegible] । [illegible] नाम अनूप है [illegible]

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

कैलसती यह [illegible] परस्त्री भई [illegible] । जै [illegible] जोर [illegible] के है [illegible] ॥
बरत है वह [illegible] भूप अनूप । [illegible] नारि [illegible] जुगति [illegible]
[illegible] नदि के [illegible] बिचार । [illegible] ॥
[illegible] सुन्दर [illegible] दै [illegible] । [illegible] भूप [illegible] ॥

॥ * ॥ तोटकछन्द ॥ * ॥

[illegible] अब भूपति पाव गए । [illegible] सुकारि [illegible] ॥ [illegible] भए ।
[illegible] सु भूपतिको [illegible] ॥ ॥ दोहा ॥ * ॥
तब [illegible] बनमे गए [illegible] सह भूपाल । [illegible] पुनि [illegible] बिचार ॥

॥ * ॥ श्रीराजबाच ॥ हरिगीतिछन्द ॥ * ॥

[illegible] किधो [illegible] नृपति [illegible] । [illegible] सधर्म ॥ भए अन्तरध्यान [illegible] अपरा [illegible] । [illegible] नानाभाँतिके [illegible] ॥ [illegible] सुरसरीको नीर । [illegible] बिबिध [illegible] कौतुक [illegible] भूप [illegible] होत है सब सुखभ दुर्लभ [illegible] । [illegible] कौतुक [illegible] बिबिध [illegible] तो [illegible] । [illegible] राजाने [illegible] ॥ [illegible] बिबि गए [illegible] नाहि । [illegible] नाहिं ॥ [illegible] सह [illegible] नृप [illegible] । [illegible] नृप [illegible] आय । [illegible] ॥ [illegible] नृप [illegible] अनूप । [illegible] ॥ [illegible] हमये कृपा कीन्ही नाम । [illegible] ॥ [illegible] सुनाउ [illegible] तुम । सुनाउ [illegible] ॥

[illegible] जि [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] बहुगुण [illegible] ॥

॥ [illegible] ॥

[illegible] ॥ श्री ॥ [illegible] गुन [illegible] । [illegible] कुमित नृपवर [illegible] ॥ [illegible] [illegible] भूमि । [illegible] ॥ कुमित उवाच ॥ [illegible] [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] [illegible] । [illegible] [illegible] ॥ [illegible] [illegible] । [illegible] [illegible] ॥ [illegible] [illegible] । [illegible] बैन । ताको [illegible] बैन ॥ [illegible] । ताहि [illegible] अराय ॥ पोहि [illegible] । [illegible] ॥ [illegible] गुन फिरे [illegible] ॥ [illegible] । [illegible] ॥ [illegible] बैन । [illegible] ॥ [illegible] । [illegible] ॥ [illegible] प्रात । [illegible] ॥ [illegible] । [illegible] ॥

॥ श्री ॥ दोहा ॥ श्री ॥

[illegible] । [illegible] ॥

[illegible] । [illegible] ॥

॥ श्री ॥ [illegible] ॥ श्री ॥

[illegible] । [illegible] ॥

॥ श्री ॥ [illegible] ॥ श्री ॥

[illegible] बैन । [illegible] बैन ॥ [illegible] कुमित [illegible] [illegible] [illegible] कुमित [illegible] [illegible] कुमित [illegible] [illegible] कुमित [illegible] ॥

[illegible] ॥ श्री ॥

[illegible]

[illegible]

सो विभ्रता सम बीर है नहिं भयो कहत हुतो याकु ताकी आनि सुवद धनुको [illegible] सो सिद्धि
हुतहु [illegible] नहिपाय । [illegible]
[illegible] । सब [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] । [illegible] ॥ [illegible]

॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥

होय विभ्रता प्राप्त सब सुतको धनि धनिराज । नव [illegible] धनि [illegible] ॥
[illegible] विभ्रता मेरो सुत [illegible] । [illegible] ॥
[illegible]
रघुनाथ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible]

॥ * ॥ [illegible] ॥ * ॥

सुनु [illegible] । कर्‍ [illegible] विभाग ॥ [illegible] ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

होत है भृगुवंशीनको [illegible] करि के युद्ध । देव [illegible] सुनु [illegible] ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

भृगुवंशिनमें एक [illegible] है [illegible] । [illegible] ॥
वीरव ताको नाम [illegible] है सो करि [illegible] । [illegible] नाम [illegible] है ॥
[illegible] आरत लगि है [illegible] । सब [illegible] ॥
[illegible] पुत्र रिचीक [illegible] । [illegible] ॥
पढि है सो धनुर्वेद [illegible] । [illegible] ॥
तेजोमय [illegible] है पुत्र रिचीकके । [illegible] धाम नाम ताकु जमदग्नि वर ॥
[illegible] धनुर्वेद जमदग्निको । वर रिचीक [illegible] ॥
[illegible] रिचीक [illegible] है । [illegible] ॥
[illegible] पुत्र [illegible] । विश्वामित्र [illegible] ॥
[illegible] है । [illegible] ॥

॥ * ॥ [illegible] ॥ * ॥

[illegible] ॥
सो सुतको [illegible] ॥
[illegible] ॥

[illegible] ॥ * ॥ दोहा ॥ * [illegible]

[illegible] कहूं ॥

[illegible]

[illegible] बिनु [illegible]

[illegible] ॥ * [illegible]

[illegible] ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ [illegible]

[illegible] कौन ॥ [illegible] ॥

[illegible] ॥ * ॥ दोहा ॥ * [illegible]

[illegible] सुखद [illegible] तात युधिमान ॥

[illegible] जोरि [illegible] ॥

॥ * ॥ चरणाकुलकछन्द ॥ * ॥

[illegible] दुख [illegible] हैं ॥ [illegible] मांहीं । मै बिचार कीन्हों हियमांही ॥ यह पालकवों [illegible] । करि हैं तप बनमांहि दराजे ॥ [illegible] पितामह [illegible] । [illegible] महान ॥ [illegible] ॥ भूप युधिष्ठिर की सुनि बांनी । भीष्म धर्मवान वर ग्यानी ॥ जानि निपुन इनि कहते भए । भूप युधिष्ठिर कों सुदरए ॥ [illegible] हि सो सुनो । ताकों मतिसों हीने गुनो ॥ तप कीन्हें यश मिलत महांना । [illegible] ॥ [illegible] स्वर्गकेमांहीं । तपसों रोग होत हैं नाहीं ॥ तपसें [illegible] बढति है [illegible] ॥ * [illegible] * ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ * [illegible] *

[illegible] मिलत [illegible] महांन सुनु भूप । दान दियतें मिलत हैं भोग अनेक अनूप ॥

[illegible] बढति है धर्म । सुन्दर कुलमें होत है जन्म [illegible] ॥

॥ * ॥ चरणाकुलकछन्द ॥ * ॥

[illegible] ॥ मिलत अनूप [illegible] ताकों । लखि [illegible] ॥ [illegible] सूखा । तिनें राजम [illegible] ॥ जे पय [illegible] पाली ॥ जे [illegible] । तिनें मिलत [illegible] ॥ जे जन [illegible] बनक [illegible] सुहावे ॥ [illegible] ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ [illegible] * [illegible] * [illegible]

[illegible] होत हैं [illegible] ॥

[illegible] ॥ * [illegible]

[illegible] होत है [illegible] ॥ कहत

आमिष त्याग ताकी नशति सन्तति नाहिं । सर्वको सो सहन जो अन्न बसन [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] जो सो [illegible] [illegible]
[illegible] अन्न बसन [illegible] । [illegible]
[illegible] जीवको ते भूप । [illegible] [illegible] [illegible]
किए दर्पण दॉन । [illegible] [illegible] ॥ [illegible]
अन्न देत। [illegible] [illegible] ॥ [illegible] पूजन [illegible]
[illegible] जो [illegible] है युधिष्ठिर ॥ [illegible] [illegible]
[illegible] सो [illegible] ॥ [illegible] [illegible] । [illegible] तिनने
वर्ष [illegible] है तात ॥ [illegible] [illegible]
[illegible] भूप ॥ [illegible] जो सो [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] लोक ॥ किए दान सु [illegible] [illegible] । [illegible]
है [illegible] । [illegible] देत है अन्न [illegible]
[illegible] ॥ देत भोजन नीर [illegible] द्विजनको [illegible] । [illegible] नृप सुधि
[illegible] ॥ [illegible] भूरि [illegible] पूरि [illegible] देत । [illegible] ॥
[illegible] दान ताको [illegible] । [illegible] है [illegible] सुधि [illegible]
जे वीर हैं ते पितामह सम तात । लोक सबने अधिक माने वीर नहिं [illegible] ॥

॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥

[illegible] पितामहके युधिष्ठिर [illegible] । [illegible]
जो करत [illegible] । तत अनन्तर युधिष्ठिर नृप [illegible] ॥ भीम आदिक
[illegible] जो [illegible] । [illegible] पितामहके [illegible] ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

[illegible] । [illegible] ॥

[illegible]
[illegible]
[illegible]

॥ * ॥ छन्द ॥ * ॥

जो [illegible] । [illegible] ॥
॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥ [illegible]
सुधि [illegible] ॥ ॥ * ॥ [illegible] ॥
[illegible] जो है । [illegible] सो है ॥ [illegible] । [illegible]

[illegible] ॥ देवत पितर [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] [illegible]
[illegible] करन और केते नाचाँही ॥ [illegible] पर [illegible] दाग्ध०
[illegible] ॥ [illegible] दिवके सो [illegible] विचारी ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

जोपै रचे तडागके [illegible] नीर । अग्निष्टोम फल सो लहै [illegible] ॥
जाके रचे तडागके [illegible] । तो [illegible] वो फल [illegible] ॥
रहै नीर [illegible] । ताको यह फल होत है प्राम [illegible] ॥
[illegible] होत है [illegible] । ताको फल सो होत है भाग ताहि अतिमान ॥
जाके रचे [illegible] । फल सु अग्निष्टोमको सो फल [illegible] उदार ॥
[illegible] ऋतु [illegible] । सो फल [illegible] कहत [illegible] ॥
जाके रचे तडागमें [illegible] । वाजपेय फल सो लहत कहत सुबुध हैं दच्छ ॥

॥ * ॥ हरिगीतीछन्द ॥ * ॥

[illegible] होत ताकों प्राम है अतिपुण्य [illegible] ॥ [illegible] सुर [illegible] भूरि । द्रव्य ताको किएँ जनके होत कल्मष दूरि ॥ [illegible] अग्निष्टोम अनेक । [illegible] लहत सो फल कहत हैं सविवेक ॥ [illegible] है [illegible] भूप। [illegible] ते [illegible] करत अनूप ॥ कहत हैं बुध [illegible] होत है [illegible] सर्वफल अतिमान ॥ होत [illegible] करत [illegible] होत [illegible] कहत [illegible] ॥ होत बानर भूल हैं [illegible] । [illegible] ॥ [illegible] तिनको कीर्ति होत अनूप [illegible] लों परलोकमें [illegible] भूप ॥ [illegible] करत है अभिराम [illegible] पिताको सो वंश [illegible] करत [illegible] हैं अतिमान ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

[illegible] । फलसों पितरनकों [illegible] ॥
[illegible] । [illegible] ॥
[illegible] भूप । [illegible] कीजे [illegible] है यह धर्म अनूप ॥

॥ * ॥ [illegible] ॥ * ॥

[illegible] । [illegible] भरत ते दिवके [illegible] ॥

[illegible]

॥ ॥

शा०प०
दा०ध०

इतिश्रीमन्महाराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणसिंहाज्ञानुगामिना श्रीबन्दीजनकाशी वासिरघुनाथकवीश्वरात्मजगोकुलनाथस्यात्मजगोपीनाथस्यशिष्येण मणिदेवेन कविना विरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणि दानधर्मे अष्टपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ॥ ****

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

बहु प्रकारके दान हैं तिनमें श्रेष्ठ सु कौन। कहौ हमैं श्रवणाहि कै अहो तात बुधिभौन ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

औ जो दीन्हों दान तौन मिलत परलोकमें। यामें सुनऊँ सुजान संशय होत महान है ॥

॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥ चरणाकुलकछन्द ॥ * ॥

अभय सर्व भूतनकों दीबो। दुखमें परम अनुग्रह कीबो ॥ तृषित जौन मागनको आवै। ताहि देय मुदसों अति छावै ॥ दिए दानकों दियो न मानै। बुध तिहिँदानहि श्रेष्ठ बखानै ॥ दियो दान परलोकेमाहीं। मिलत अवश्यहि संशय नाहीं ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

भूमि हेमको दानसो अति पवित्र है तात। दरत कलुष तनकी प्रभा करत परम अवदात ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

साधुनकों ए दान दीजै नित्यहिँ प्रीति सह। करि सनमान महान कहि कै कोमल वचन वर ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

जे अनय कुलकों चहत ते हियमें करि प्रेम। लोकमाहिँ प्रिय वस्तु जे द्विजको देत सनेम ॥
प्रियवस्तुनकों देत जे प्रियवस्तुहि ते लेत। रहत समुद परलोकमें बुध जन कहत सचेत ॥
जे जन मागैं आय कै सदुख दरिदसों भूर। यथा शक्ति जे देत नहिँ तिनकों ते हैं क्रूर ॥
शत्रुऊँ गहि कै दीनता आवै शरणे माहि। ताको जे रक्षा करत करत द्रोहको नाहि ॥
ते अति उत्तम पुरुष हैं परम प्रशंसावान। तिनके दरसनतैं मिटत है अघके ओघ महान ॥
विद्यावान सु विप्र जे छीन सुधासों पर्म। तिनको जे सु सुधा हरैं ते हैं सब सधर्म ॥

॥ * ॥ अरिल्लछन्द ॥ * ॥

देव मनुजसों जे नहि मागत। औ नहिँ कबऊँ कोधनमें पागत ॥ जोई लभ्य होत तिहिसों अति। महत तोषहि रहत समुद निति ॥ रावऊँ ऐसे विप्रनको डर। आपऊ तिनसों नित्य बहुत वर। तिनको करि बहु विधि सनमान सु। करिहु निमंत्रण सुनऊँ सुजान सु ॥ सब धर्मनतैं यह अति उत्तम। सुन्यो महामतिमाननसों हम ॥ रहो दान तुम देत सर्वदिन। कबऊँ चित्तमें अरुचि करहु जिन ॥ नारी पति आधीन रहति जिमि। हम द्विजके आधीन रहत तिमि ॥ लागत सबतैं तुम हमकों प्रिय। तुमहूतैं प्रिय विप्र लगत जिय। मेरे पिता गए जिहिँलोकहि। यहु सुधर्मतैं होय अशोकहि ॥ जे हैं हमऊँ सुनऊँ हे नृपवर। हे ऐसो नहि और धर्म वर ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञानुगामिना श्रीबन्दीजनकाशीवासि रघुनाथकवीश्वरात्मजगोकुलनाथस्यात्मजगोपीनाथस्यशिष्येण मणिदेवेन कविना विरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणि दानधर्म्मे उत्तमानुशासने एकोनषष्ठितमोऽध्यायः ॥ * * शा॰प॰ दा॰ध॰

॥ * ॥ रामगीतीछन्द ॥ * ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ याचमान अयाच मानहिँ दीयो जो हैं दान। दुऊनिमाहिँ कौन सो है श्रेष्ठ सुनु मतिमान ॥ भीष्मउवाच ॥ दियो जौन अयाचमानहिँ श्रेष्ठ सो है दान ॥ परम उत्तम है अयाची विप्र हे मतिमान ॥ * * ॥ दोहा ॥ * ॥

जे क्षत्रिय रक्षा करत गहैं धीरता धर्म्म । ते अति उत्तम हैं सुनहुँ कहत सुबुद्ध अभर्म ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

जे अयाचनामांहि विप्र धीर्य्यताकों गहत । तिनकी सम हैं नाहिँ याचमान जे विप्र है ॥

॥ * ॥ मल्लिकाछन्द ॥ * ॥

धीर्य्यमान विप्र जौन । श्रेष्ठ हैं सुजान तौन ॥ देवता हि तुम मर्म । ते करैं सुने सधर्म्म ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

विविधि भांतिके दुःख सहि अरु दुख दे दाताहिँ ।जौन याचना करत द्विज तौन श्रेष्ठ हैं नाहिँ ॥

तातें जे द्विज याचना करण न आवत तात । तिनको कै सनमान तुम देऊ दान अवदात ॥

दीबो ऐसे द्विजनकों सो उत्तम है यज्ञ । प्रवृत्त रहौ यामे सदा सुनऊ भूपवर प्रज्ञ ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञानुगामिना बन्दीजनकाशीवासि रघुनाथकवीश्वरात्मजगोकुलनाथपुत्रगोपीनाथस्यशिष्येण मणिदेवेन कविना विरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणि दानधर्म्मे षष्ठितमोऽध्यायः ॥ *

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

कौन कालमे कीजिए यज्ञ क्रिया अभिराम । कैसे द्विजकों दीजिए दान कहऊ बुधिधाम ॥

॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥

कर्म्म भयानक सर्व हैं क्षत्रिणके हे तात । पावन कर्म्म सु दान एक कहत सुबुध अवदात ॥

सुनऊँ भूप यह जगतमे जे नृप है अघकार । ग्रहण कछू नहिँ करत हैं तिनको साधु उदार ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

तातें कीजे यज्ञ दान दीजिए द्विजनकों । सुनऊ नृपति वरप्रज्ञ सु बुधनको सिद्धान्त यह ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

जाके धनको करत हैं ग्रहण न विप्र अनूप । ताकों साधन होत नहिँ कौनऊ सिद्धि सु भूप ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

विप्र कुटम्बी जौन तिन्हैं देऊ द्रव्य तुम । या सम सुनु बुधि जौन परम [illegible] ॥

[illegible] ॥ दोहा ॥ * ॥

[illegible] आपति गुरुको [illegible] है गुन [illegible] ॥

॥ * ॥ [illegible] ॥ * ॥

धेनु वृषभ [illegible] अभिराम । [illegible] धनको [illegible] ॥
[illegible] मर्म्मको [illegible]
[illegible] पावन [illegible] जो [illegible] तीन [illegible] ॥ [illegible] जे
[illegible] मूप यह । [illegible] द्विजनको धन
[illegible] जात
[illegible] होय
[illegible] । कूप [illegible] करति है [illegible] ॥ [illegible] ।
[illegible] दुखको [illegible] ॥ कीर्त्ति [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ।
[illegible] ॥ [illegible] राज्यमाहि [illegible] । [illegible]
[illegible] । राजमें [illegible] भूपके [illegible] नृप
[illegible] ॥ भूप [illegible] हैं [illegible] ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

प्रजाकी न रक्षा करे [illegible] भूप [illegible] । [illegible] ॥
[illegible] भूपतिकी [illegible] प्रजा [illegible] । [illegible] ॥

॥ * ॥ [illegible] ॥ * ॥

[illegible] है भाग [illegible] । [illegible] ॥
[illegible] नृपकी करति है प्रजा [illegible] । [illegible] है भाग [illegible] ॥
[illegible] परजाके [illegible] । [illegible] ॥
[illegible]

॥ * ॥ [illegible] ॥ [illegible]

[illegible]

॥ * ॥ [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible]

[illegible] करन करि विप्रनको [illegible] बढत है ताको वंश महान ॥
[illegible] कुमेत ॥

॥ [illegible] ॥

[illegible] आपनें [illegible] करत है [illegible] तात ॥ करत [illegible] तिनकों [illegible] ॥ [illegible] अनकों [illegible] नृप [illegible] ॥ [illegible] भूमि [illegible] ॥ [illegible] भूमि [illegible] नृप [illegible] ॥ [illegible] भूमि [illegible] नृप [illegible] ॥ [illegible] भूमि चाहत राज्य महान । [illegible] ॥ [illegible] भूमिको तो देय भूमि [illegible] भूमि [illegible] ॥ [illegible] चाहत हैं [illegible] । दई भूमे जाय [illegible] ॥ [illegible] भूमि [illegible] नहि जे चाहत तें [illegible] । [illegible] दिवमी समुद है ते [illegible] ॥ [illegible] ॥ ॥ मलिकाछन्द ॥ ॥ [illegible] ॥ [illegible] होत है पवित्र [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] करै [illegible] ॥ [illegible] भांति [illegible] ॥ [illegible] नृप । धरि मोद हो अनूप ॥

[illegible] ॥ दोहा ॥

[illegible] भूमिदानते [illegible] ॥

॥ [illegible] ॥

[illegible] । [illegible] करि [illegible] भूमिदको [illegible] ॥

॥ [illegible] ॥

[illegible] नहि ॥ [illegible] ॥ [illegible] भूमि देत जे [illegible] ॥ [illegible] देखति ॥ [illegible] हि [illegible] ॥ [illegible] हैं भूमिदको [illegible] । [illegible] ॥

॥ [illegible] ॥

[illegible] चाहत नहि ॥

[illegible]

[illegible] धरणी [illegible] धरनी [illegible]

[illegible] ही [illegible] ने भरत नृप लिखै आनि [illegible]

जैसैं गोकी भूमिते उत्पत्ति [illegible] । [illegible] कामना भूमिदको सुनु भूप ॥

[illegible] । [illegible] और न कोउ [illegible] ॥

होत जीव सब भूमिते होत भूमिते [illegible] ॥ [illegible] पिता भूमि हि आनि प्रवीन ॥

[illegible] ॥ [illegible] ॥

महाभूतनमाहिं और न भूमि [illegible] । [illegible] आये [illegible] ॥
[illegible] सब [illegible] । [illegible] ॥
[illegible] भए [illegible] सुनु भूप ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] सुनऊँ गुरु [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] दान [illegible]
[illegible] ॥ भूमिदान समान और न दान है [illegible] । [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] भूमि [illegible] जे देतहैं [illegible] । [illegible]
भूमि [illegible] ॥ भूमिको [illegible] मोदको [illegible] भूप ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] सब [illegible] । [illegible]
भौंन ॥ दई धरणी आपनीकों हरत जे हैं [illegible] । परत ते हैं नरकमांही [illegible] भूमि [illegible]
भूमि [illegible] । [illegible] परि [illegible]
सुरराज आलें दई वसुधा [illegible] भूप [illegible] ॥ [illegible]
भूप [illegible] । परत ताके [illegible] नरकमाहिं [illegible]
[illegible] । [illegible] भूप प्रवीन ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible] भूमिद भूपको [illegible] ॥ [illegible]
जैसो [illegible] है [illegible] ॥ [illegible]
सो [illegible] ॥ भूमिदान [illegible] । [illegible]
और [illegible] ॥ [illegible]
सुनऊँ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ दोहा ॥ [illegible]
[illegible] सुने [illegible]

[illegible] [illegible]नुकालिना श्रीमन्हीजनैकाधी [illegible] [illegible] विरचिते [illegible] दर्पणे मानिधर्म [illegible] ॥ ❀ ॥

॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥

[illegible] नात नृप सोचने [illegible] । [illegible] कोन [illegible] [illegible] मुनिनाथ ॥

॥ [illegible] ॥

कहें कोन मुनिराज धीर [illegible] । [illegible] कहो आपु अवगाहि के ॥

॥ [illegible] ॥

[illegible] ॥ [illegible] नाम पूजेम सुन जोई । [illegible] पूजो [illegible] ॥ तन जो उभर [illegible] विपयको ॥ कहत नात [illegible] । [illegible] ताहि [illegible] ॥ [illegible] न बोरे । [illegible] न होई ॥ [illegible] । [illegible] धरैं ॥ रहत सबै हैं [illegible] । [illegible] रहत [illegible] दीजै । [illegible] कीन्हें सुख लीजै ॥ [illegible] ॥ जो अपने [illegible] । [illegible] है ॥ ❀ ❀

॥ ❀ ॥ दोहा ॥ ❀ ॥

[illegible] निहि माने परलोकमे निधियों धरो [illegible] ॥

॥ [illegible] ॥ ❀ ॥

[illegible] होई । [illegible] ॥ सर्गमाहि सो सुखको पावे । भूमि [illegible] ॥ [illegible] भोजन । [illegible] महान धर्मको [illegible] ॥ [illegible] कुकर्मकी [illegible] ॥ [illegible] । [illegible] सो सुख्सो पावे ॥ सो नृप [illegible] पावे । [illegible] ॥ [illegible] महाना । सो अन्मान्तरमाहि सुजाना ॥ [illegible] ॥ [illegible] । रहत [illegible] । [illegible] अनुमानो ॥ ❀ ❀ ❀

॥ [illegible] ॥ दोहा ॥ ❀ ॥

[illegible] भूप । [illegible] और न [illegible] अनूप ॥

॥ [illegible] ॥ ❀ ॥

[illegible] । [illegible] गाना ॥ [illegible] होत जगत है । [illegible] होत धर्म हैं । [illegible] मिटत [illegible] हैं ॥ [illegible]

भा०प० रजको करत विनाशै। अग्रहिं नयके करत प्रकाशै॥ क्षीण होत नव [illegible] है। [illegible]
शां०प० भूरि महा है॥ [illegible] मारे॥ [illegible] तौ [illegible]
ताहि किरणनिसों [illegible]॥ [illegible] भूमिको नीर [illegible]॥

॥ दोहा ॥

[illegible] होत [illegible] ॥ [illegible] अपात परम [illegible]॥

॥ * ॥ [illegible] ॥ * ॥

[illegible] होत सुखारा। [illegible] सुख बढत है।
[illegible] मोद महत है॥ सुनु नृप होत सुकर्मे [illegible]॥ तामें [illegible] आनी॥ भीष्म
[illegible]॥ [illegible] को सुनि [illegible]। [illegible]
[illegible]। [illegible] हृदय हराजा॥ [illegible]॥
[illegible] जिनके। [illegible] तिनके॥ [illegible]। [illegible]
रहत तिन्हें जे [illegible]॥ यथा तिनते [illegible] अनूपा। राजन तिनके [illegible] को
पावै। [illegible] अति सुखसों छावै॥ * ॥ * ॥ दोहा ॥ *
तातें तुम यह [illegible] करो [illegible]। [illegible]॥
इति श्रीकाशीराजमहाराजाधिराज [illegible] काशी
[illegible]
भाषायां महाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणि दानधर्मे [illegible]
अध्यायः॥ *

॥ * ॥ युधिष्ठिर उवाच ॥ * ॥ [illegible]

[illegible]। [illegible] तात [illegible]॥
किहि [illegible] को कौन फल होत [illegible] मोहि [illegible] सुधि पोत॥

॥ * ॥ भीष्म उवाच ॥ * ॥

[illegible] कहत हौं इक इतिहास अनूप। [illegible]॥

॥ * ॥ [illegible] ॥

एक [illegible]। [illegible]।
सादर [illegible] पूछो [illegible]॥ [illegible]॥
नारद उवाच॥ [illegible]। [illegible] है
[illegible]॥ [illegible] है
[illegible] ॥ ता जनको [illegible]। पाप पुण्य [illegible]॥

आ०प०
दा०ध०

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

देत कृत्तिकामाहिं जे सुरभी वत्स समेत । ते दिवमाहीं लहत हैं परमामयो निकेत ॥
आर्द्रामें जे देत हैं कृसर तिलनसों धर्म । दुर्गमार्गको होत ते पार सभोद सधर्म ॥
पुनर्वसुमें देत जे पूप द्विजनकों भूप । होत महाधनवान सो कीरति लहत अनूप ॥
पायस जे जन देत हैं पुष्यनखतके बीच । स्वयं प्रकाशक लोकमें भ्रमितौं लसत निमीच ॥
अश्लेषामें देत जे द्विजहि रजतको दान । छूटत ताके सर्व भय लहत लोक सुखवान ॥
तिलसों पूरण पात्र जे देत मघाकेमाहिं । सो सुत सुन्दर लहत है लहत दुखकों नाहिं ॥

॥ * ॥ परवादोहा ॥ * ॥

पूर्वा फाल्गुनीमें जेजन मोदक देत अनन्द । तौन लहत सौभाग्य महत हैं लहत कबऊँ नहिं दन्द ॥
उफामें जे षाठी चोदन दुग्ध सु घृतसों देत । अमरलोकमें लहत तौन है परमा मयो निकेत ॥
जो जो दान देत हैं उत्तराफाल्गुनीमें धर्म । होत महाफल तिनतिनको है मैं हौं कहत अभर्म ॥
हस्तनखतमें देत जे द्विजकों हस्ती दान । परम लोकमें प्राप्त ह्वै पावत मोद महान ॥
जे जन चित्रानखतमें वृषभ सुगन्ध हि देत । तौन अपसरन संग बननन्दनको सुख लेत ॥
स्वातीमाहीं देत हैं अतिप्रिय धनकों जौन । पावत हैं दुऊँ लोकमें धर्म अरु सुखको तौन ॥
सुरभी देती दुग्ध अरु वृषभ चारु जे देत । नखत विशाखामाहिं ते कबँऊ न दुखकों लेत ॥
तासों देवन अरु पितर तृप्त रहत हैं धर्म । स्वर्गलोकमें लहत सो सुखकौ भूरि अभर्म ॥
जे जन व्रत करि देत हैं धन वसन अवदात । अनुराधामें कीर्ति अति तिनकी चारु विभात ॥
शुभ शतनों ते रहते हैं स्वर्गलोकमें सद्य । सुर जिनकों चाहत रहत कहत सुबुध हैं दच्छ ॥
ज्येष्ठामें जे देत हैं कालशाक अभिराम । वांछित गतिका होत सो प्राप्त कहत बुध नाम ॥
मूलनखतमें देत जे द्विजकों फल अरु मूल । वास पाय सो स्वर्गमें सुखकौं लहत अतूल ॥
जे जन पूर्वाषाढमें दधिसों भरो अनन्द । पात्र देत हैं द्विजनकों ते न लहत हैं दन्द ॥
दुग्धवती बछरू सहित जिहिंकुलमें सुरभी चारु । होत तौन कुल माहिं सो लहत अनन्द अपारु ॥
उत्तराषाढनखतमें मधु सुघृत दै जौन । सर्व कामना लहत है सुनऊँ देवकी तौन ॥
मधु घृत दुग्ध सु देत जे अभिजितमें अभिराम । स्वर्गलोकको होत सो प्राप्त कहत बुधिधाम ॥
कम्बल जे जन देत हैं श्रवणनखतकेमाहिं । ते विमान पै बैठि कै जात सुरनके पाहिं ॥
धनिष्ठामें जे देत हैं द्विजवरनके बीच । नरयान्तरमें मिलत हैं तिनका राज्य निमीच ॥
शतभिषमें जे देत हैं अगरादिक अभिराम । विहरत ते अपसरन सँग लहत गन्ध संग्राम ॥
पूर्वभाद्रपदमाहिं जे राजमाष शुचि देत । स्वर्गमाहिं ते प्राप्त ह्वै सर्व सुखनको लेत ॥

प्रा०प०
दा०ध०

उत्तरभाद्रपदमाहिँ जे माष देत अभिराम। भूत होत ताको पितर आयु लहत गुह्यकाम॥
नक्षतरेवतीमाहिँ वर जे अन सुरभी देत। सर्वकतुम तांको फल [illegible]॥
सर्व कामना सहित धेनु सुरभी अति अभिराम। आत होतरसातरको [illegible]॥
नक्षतअश्वनीमाहिँ जे अश्व सहित रथ देत। हाथी रथ सुवपाल ते जन्मानन्दमें होत॥
द्विजहि देत तिलधेनु जे भरणीमाहिँ उदार। बड सुरभी ताको मिलत अब वर सुयश अपार॥

॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥

नक्षतयोगमे दानको जो फल होत अनूप। कह्यो देवकीसों सरस नारदमुनि हैरूप॥
कह्यो देवकी यह सुफल पुन बधुनसों सबै। धर्म धाम अभिराम वर भूपति सुनाऊँ सबै॥
[illegible]
रघुनाथकवीश्वरात्मजगोकुलनाथविरचिते [illegible]
महाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणि दानधर्मे चतुर्षष्टितमोऽध्यायः॥ * ॥ * ॥ * ॥

॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

ब्रह्माके सुत अत्रिमुनि कही बात यह भूप। जे जन कांचन देत ते सुलहैं फल अनूप॥
सर्व कामना देनको फल जो है अभिराम। हेमदको सो होत है आस सुनाऊँ सुविश्राम॥

॥ * ॥ नलिकाछन्द ॥ * ॥

हेमदान देत जौन। मोदसों महान तौन॥ आत होत है सुजान। [illegible] महान॥
होत है पवित्र पर्व। चन्द्रसों लहैं सधर्म॥ आयुको लहैं विशाल। [illegible]॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

पितर रहत परसन्न हैं हेमदके भूपाल। कह्यो यह सु [illegible] भूपाल॥
मौक्तिकदान किएँ धृतदान सुनो मतिमान। बृहस्पति होत [illegible]॥
सुनो अब अमि प्रसन्न सु होत। लहैं [illegible] महामति पोत॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

यो [illegible] कुमार भारतश्रु धृतदानसों। होत प्रसन्न उदार [illegible]॥

॥ * ॥ रामगीतीछन्द ॥ * ॥

श्रेष्ठ है सबरसनमे घृत कहत पुनि यवदान। होत [illegible] सुफल तासों [illegible] है मात॥
कारमे जे देत घृतको दान द्विजको भूप। [illegible] अनूप॥ खीर
भोजन देत घृतयुत द्विजनको जन [illegible] भवनमाहीं [illegible] करत न भौन॥ देत है जन जे
करीरा पात्रको अभिराम। [illegible]

काह [illegible] देत। सबै ताके होत काहत [illegible] ॥ रहत [illegible] चरित में सो नित्यही भा०प०
[illegible] भूमि [illegible] ॥ [illegible] सिधाको साथ। दा०ध०
[illegible] सुनऊँ [illegible] ॥ [illegible] विधिसों [illegible] के [illegible]।
देऊ सुन्दर देवभूमे करै तहँ [illegible] ॥ * ॥ देवाऊचुः ॥ * ॥ भूमिके [illegible] प्रभु आपु हो
लोकेश। [illegible] ॥ देव [illegible] भूमिमाहीं [illegible] पर्व।
देऊ यातें कृपा करि के करैं यज्ञ [illegible] ॥ दई [illegible] है [illegible] यज्ञको फल होत। चराचर के
नाथ हो [illegible] ॥ [illegible] आज्ञा देनकी हो आपु यातें नाथ। देऊ आज्ञा कर
आसो यज्ञ सब सुरनाथ ॥ * ॥ विधिरुवाच ॥ * ॥ देत हैं हम तुम्हें कीजैं यज्ञ भूमि [illegible]।
करो [illegible] के शुभ यज्ञ के [illegible] ॥ ❁ ॥ देवाऊचुः ॥ ❁ ॥ सुनत [illegible] काज आए
[illegible] विधि [illegible] ॥ [illegible] कुरुक्षेत्र हमको देय यह
[illegible] ॥ [illegible] दै भाल ॥ यज्ञ याही देवने हम करै सो
लोकेश। [illegible] विधाताको अमर सब [illegible] ॥ [illegible] कुरुक्षेत्रमाहीं भए आवत
सर्व। [illegible] । [illegible] तब तहां आए
[illegible] ॥ कियो पूरण यज्ञ विधिवत [illegible] सुर
वृन्द। तंत अनन्तर यज्ञ भूको [illegible] ॥ [illegible] आनंद भरे भूरि [illegible]। गए
[illegible] ॥ सुनऊँ यातें महत [illegible] आज्ञा तात । यज्ञ कीजै
[illegible] ॥ ❁❁❁❁❁❁❁❁❁❁❁❁❁❁❁❁❁

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

[illegible] । सोऊ सर्वको [illegible] हैं सुनऊ युधिष्ठिर भूप ॥
[illegible] । [illegible] मास [illegible] महत सुख [illegible] ॥

॥ * ॥ छप्पय ॥ * ॥

[illegible] । [illegible] पाय अति मोदहि भावत ॥
[illegible] । [illegible] ॥ शुभ
[illegible] देत जे ते [illegible] सुख [illegible] चहत पुण्य [illegible] ॥

॥ * ॥ तोमरछन्द ॥ * ॥

[illegible] । [illegible] ॥ [illegible] ॥

॥ * ॥ [illegible] ॥ * ॥

[illegible] ॥ सुन्दर भूमिहिँ देत सु जे जन।
भूमि अनूपम पावत ते जन ॥*❁*❁*❁*❁❁*❁*❁*❁*❁❁❁❁*

॥ * ॥ चञ्चलाछन्द ॥ * ॥

औरकों सु भूमिनाहि आइकों किएँ सुजान । आइ होत व्यर्थ बुद्धिमान ते करैं प्रमान ॥ भूमि मोलि लेय पिण्डदानकों करैं सु औन । हे सुनो महीप पह पुण्यकों लहौ सु भौन ॥ * *

॥ ॥ दोहा ॥ ॥

कौंनऊ विघनन होत है ह्म पितर अति हेत । वढत वंश तिहिपुण्यतें सुनऊ नृपति बुधिपोत ॥ पर्वतकी अरु विपिनको तीर्थकूलकी धर्म । है पुण्यनी अग्नामिका बुधवर कहत अधर्म ॥

॥ ॥ सोरठा ॥ ॥

बुधवर कहत समर्थ यातें इन पुण्यभोनमे । होत आइ नहि व्यर्थ मही लोस दीन्हेंऊ विना ॥

॥ ॥ रामगीतीछन्द ॥ ॥

करति हैं सबअङ्गसों उपकार सुरभी धर्म । होति धेसी पुण्यधामा सुनऊ भूप सधर्म ॥ करति रच्छा सर्वकीहैं सुरभिका अभिराम । कहत है मुनिमान बर द्विज महा मेधाधाम ॥ तिन्हें जे अन देत विप्रहि बोलि सादर भूप । होत है परसन्न ताके पितर देव अनूप ॥ मृदका अरु नामतीकहि दीजिए नहि गाय । जो न दीजे बधनकाजे सुनऊ हे नरराय ॥ देत जे अन्न ब्राह्मन ते अन नर्कमाही बास । कबऊ निकरैं नर तरैं नहि कहत हैं बुधिरास ॥ वत्स बिनकी गाय दीजे द्विजनकों नहि भूप । अङ्गहीना दुर्बला यो कहत प्राज्ञ अनूप ॥ जोग बंध्या वत्सयुता गो दीजिए सुनि दच्छ । कहत हैं अवगाहि कै बुध बुद्धि जिनकी स्वच्छ ॥ * * ॥ * ॥ चरणाद्दोहा ॥ * ॥ * *

भूमिदान अरु अन्नदान अरगउदान तिलदान । इनको कह्यो महातिम तुम यों सर्व सुनऊ मतिमान ॥

इतिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणसिंहाज्ञानुगामिना गोकुलनाथकाशीवासि रघुनायकवोऽनराह्मजनेनाकुलनाथब्राह्मणेनोपीनाथसन्निध्येण मणिदेवेन कविना विरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणि दानधर्मे पञ्चषष्टितमोऽध्यायः ॥ * **

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

सुन्यो सर्व हम आपुसों दाननको फल स्वच्छ । तिनमें पानीदान फल कह्यो अधिक किमि दच्छ ॥ इच्छा अब यह सुननकी मो मनमे है तात । कहो आपु अवगाहि कै सबुधिअभर अवदात ॥

॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥ मधुभारछन्द ॥ * ॥

पानीयदान । तामे सुजान ॥ फल अधिक जौन । हम कहत तौन ॥

॥ * ॥ पञ्चचामरछन्द ॥ * ॥

जलातें सु अन्न उत्पन्न होत । अन्न बिन न होत कछु नृपति पोत ॥ सो नीर तेहि कारन फल । मेटन बधि अनेक तरुलता वृन्द ॥ सबहोत नीरहीतें सुजान । है सर्व जीवनको अधिक प्रान ॥ याते सु जलदानमाह । याते आधिक्य फल भूमिनाह ॥ * * * * * * *

|| [illegible] ||

[illegible] नित्य करै [illegible] | [illegible] सुजान || [illegible]

[illegible] महाराजाधिराज [illegible] श्रीमन्[illegible] रघुनाथ [illegible] सरदेवेन कविना विरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे [illegible] पञ्चविंशतितमोऽध्यायः || २५ ||

|| युधिष्ठिर उवाच || * || यथा [illegible] दोहा || * ||

धर्मदान [illegible] दीपदान [illegible] अभिराम | [illegible] कहो महातिम सुनऊ तात बुधिधाम ||

|| * || भीष्म उवाच || * || यथा दोहा || * ||

यह प्रबन्धकेमाहि कहत हम एक इतिहास अनूप | यमको यह द्विजवरको तामे है संवाद सुभूप ||

|| * || [illegible] छन्द || * ||

[illegible] ग्राम निमीच || [illegible] ताको नाम | यामुन [illegible] तीरके [illegible] | [illegible] सुमुख [illegible] || एक समयकेमाहि सधर्म || घोर दूत अपनो बुल [illegible] | तासों वचन कह्यो यमराय || [illegible] गोत्रज शरमी विप्र | जाय ल्याउ ताको तुम छिप्र || [illegible] गुणवान [illegible] || [illegible] सुत [illegible] | [illegible] || [illegible] रहत नित्य सो द्विज बुधिभौन || [illegible] गुणनकी समता नाहि | [illegible] जाय | पूजा हम करि है सुख पाय || [illegible] सो विप्रहि [illegible] || [illegible] मना कियो यमराय | [illegible] द्विजको [illegible] || तो [illegible] यमराय प्रवीन | [illegible] विधिवत पूजा कीन || [illegible] || तुमसो हम [illegible] आहि | [illegible] नाहि || [illegible] भयो [illegible] || [illegible] यहाँ पठाय || * || यम उवाच || * || [illegible] जो परमगान | ताहि न हम जानत मति [illegible] | [illegible] निज [illegible] || सुनहु विप्र [illegible] || * || ब्राह्मण उवाच || * || [illegible] कहो [illegible] || [illegible] तुम यमराज | कहिए [illegible] दराज || यम उवाच ||

|| [illegible] छन्द || * ||

सुनहु विप्र [illegible] | [illegible] अभिराम | [illegible] विधिमान || [illegible] नित्य [illegible] | सुनहु सुमुख द्विजराय || [illegible] || [illegible] | [illegible] || [illegible]

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

आ[illegible] त्रिअहारकी परम प्रशंसा होत ॥ [illegible] तिन दीजे द्विजहि सुनउ नृप सुपित्रोत ॥
पूर्णिमा वैशाखकी याके जे तिल देत । [illegible] याते नैंत बहुत सुख लेत ॥

॥ * ॥ चारि चरनछन्द ॥ * ॥

अँन जलाशयकौं सुनवावत । तौंन स्वर्गमें अति सुख पावतु । [illegible] उत्तम यदकी फल है । जल है देहु याते निति युधिष्ठर ॥ * ॥ श्रीकृष्णउवाच ॥ * ॥ [illegible] नृप होय रहे जब । लोय [illegible] द्विजहि तब ॥ विप्रहि पठायो [illegible] यायो घोरि [illegible] धर्मके पाहि सु ॥ [illegible] भर्मको [illegible] करि । दूत आय धर्मी कौं गहि करि ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ * * *

लेय गयो सो शीघ्रहीं धर्मरायके पास । धर्मराय ताकौं [illegible] गुढिन गयो [illegible] ॥

॥ * ॥ चरणाकुलकछन्द ॥ * ॥

यम धर्मीकी पूजा करि कै । कियो मंत्र कछू मोदसों भरि कै ॥ [illegible] जो या द्विज [illegible] । कीन्हो मोर द्विज धर्मीको ॥ फिरि सादर पठए निजगेहै । यमदूत [illegible] ॥ [illegible] द्विजवर धर्मी । कीन्हो जॉन कह्यो यम धर्मी ॥ * ॥ श्रीकृष्णउवाच ॥ * ॥ जो जन करत दीपको दाने । सो जन पुण्यहिं लहत महाने ॥ तौन पुण्यकौं [illegible] [illegible] ॥ दीपदानतें सब सुख लीजै । याते दीपदानकौं कीजै ॥ * ॥ [illegible] ॥ * ॥ * रत्न दिये [illegible] जॉन होत तौंन हम कहत अब । सुनउ तात बुधि [illegible]

॥ * ॥ मल्लिकाछन्द ॥ * ॥

रत्नदान देत जॉन । पुण्यकौं महान तौन ॥ प्राप्त होत हैं सुजान । [illegible] ॥ [illegible] दीजिए सुरत्न । जॉन वेचिके सुयत्न ॥ यज्ञकौं करे अनूप । तौन [illegible] ॥ * * * *

॥ * ॥ चन्द्रगुप्ततोमरछन्द ॥ * ॥

जन [illegible] देत सु जॉन हैं । सुचि कीर्ति लेत सु तौन हैं ॥ रत ते रहे [illegible] [illegible] ॥ सुचि [illegible] हैं । बहु कर्त पुण्य उदोत हैं ॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥ * * *

दान [illegible] भूप अति उत्तम है कहत बुध । याते [illegible] अनूप दीजे [illegible]

[illegible] महाराजाधिराज श्रीउदितनारायण [illegible] रघुनाथ [illegible] विरचित [illegible] भाषायां महाभारतदर्पणे [illegible] दानधर्म [illegible] ॥ * * * *

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

[illegible] विधि दानकी [illegible] [illegible]

[illegible]

॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥

[illegible] भारती [illegible] ए तीनऊँ अभिराम । देति [illegible] है कहत सुबुध सुनऊ [illegible] ॥ दा॰ ५॰ दा॰ ६॰

॥ * ॥ रोलानीतीछन्द ॥ * ॥

भारती जे देत शिष्यहि प्रेमसों अन्न जौन । गऊ भूके दानको फल लहत हैं जग तौन ॥ तिनि हि जो पुन देत सुरभी प्रेमसों अभिराम ॥ भारती भूदानको फल लहत ते हैं नाम ॥ उपजती सुचि भूमिकाको देत हैं अन्न जौन । लहत सुरभी भारतीके दानको फल तौन ॥ सर्व भूतनकी सु माता सुरभिका है भूप । करत तिनकी जे प्रदच्छिन लहत वृद्धि अनूप ॥ गऊ [illegible] [illegible] नहि नाम । [illegible] कबहूँ न वदवौ गऊको अपदान ॥ पूजिवेके योग्य सुरभी नित्य हैं भूपाल । [illegible] हैं गऊ हरति [illegible] विसाल ॥ कष्ट पावति होय जेहि [illegible] नाहि सोकों पर्म । [illegible] नहि [illegible] तिहि [illegible] नाहिं कहत सधर्म ॥ लेय जात सु जौन सुरभी बन्न [illegible] । [illegible] जहां सुरभी [illegible] अन्न नाहिं ॥ होय तो जन तीनकों [illegible] [illegible] । [illegible] ताकों हनति सुरभी कहत हैं मतिमान ॥ होत आसु पुरीषतें हैं परम पावन [illegible] । देव [illegible] पितर वृद्ध सुध कहत हैं अपदान ॥ सुनऊँ यातें [illegible] सुरभी [illegible] [illegible] । [illegible] जिनके [illegible] रज कों न पावन होय ॥ देत [illegible] गऊकों जे [illegible] घास । [illegible] न कबहूँ हिरमाहीं वास ॥ सर्व कामद [illegible] व्रतको लहत हैं फल तौन । [illegible] सुधिको भौन ॥ मिटत सर्व अरिष्ट हे [illegible] सम्पति पर्म । लहत होय [illegible] नहिं कहत मघ्र अधर्म ॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ कौन लछनकी सुसुरभी [illegible] । कहौ कैसे विप्रकों सो दीजिए अपदान ॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥ विप्र [illegible] दीजिए नहि [illegible] । देवकारज पितरकारज करै जोन सचाय ॥ [illegible] नहि दीजिए सो सुनऊ हे नरराय । होय विप्र कुलीन ताके दीजिहिं सुत बऊ भूप । पितर कारज देव [illegible] ॥ [illegible] दीजे सुरभिका अभिराम । दिए [illegible] विप्रकों [illegible] [illegible] । [illegible] करत यज्ञ सुधर्म । लहत [illegible] दाता तासु [illegible] । [illegible] है [illegible] जौन । भीतते जो करत रक्षा तौन सुनु सुधि [illegible] सोक सुजान । किए [illegible] इनकी होत दोष [illegible] ॥ [illegible] [illegible] । [illegible] होय [illegible] सुनिप्रान [illegible] ॥ सुनहु [illegible] । [illegible] होय तो [illegible] होय [illegible] ॥ सुधासे [illegible] होय पाचित [illegible] कुलीन । [illegible] नृपके [illegible] प्रवीन ॥ तौन नृपको [illegible] । [illegible] सुनहु भूप [illegible] ॥ दिएँ सुरभी दान जे सो [illegible] अभिराम । विप्रको धन हरै तेतो होत पातक नाम ॥ सुनहु यातें विप्रको धन

१०४० हूँ कुमरऊ न भूप। यो न हारा जाहि कबहूँ विप्रको धन अनूप ॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥ विप्रके
१०५० धन हरनमाहीं प्रगजन अवदात । कहत हैं आख्यान नृगको सुनहु सो तुम तात ॥ विप्रके धन
हरणमें नृप सहो दुःख विशाल। सुनऊ याते विप्रको धन लीजिए न नृपाल ॥ द्वारिकाके माहिं
हो एक कूप अति गम्भीर । ढपो सो तृण लतनसो सो सुनऊ भूपति धीर ॥ लगे कौतुक माहिं
यादव गए ताके पास । हेरि तब तृण देरि कीन्हें लखें अति प्यास ॥ परो हो ककलास एक ता
कूपमें सुनु भूप। महा दीरघ देह ताकी घोर रूप अनूप॥ करत में बहु यत्न ताके काढ़िबेको पर्व।
काढ़ि पै नहिं सके यादव थके सर्व सधर्म ॥ पास यादवरायजूके गए यादव सर्व। कहत में कक
लासको वृतान्त हरिसों सर्व ॥ यादवा ऊचुः ॥ सुनहु यादवरायजू अतिदीर्घ एक ककलास। घोर
रूप अनूप कीन्हें कूपमें हैं बास॥सर्व कूपहि रोकि राख्यो कढ़त काहू नाहिं।सुनि ए कृष्ण आवत
भए ताके पाहिं॥कियो ताहि उद्धार ताको कृष्ण पाय छुवाय। ताहिवृभत भये ऐसे कृष्ण त्रिभुवन
राय॥कहो तुम अवगाहि अपनो पूर्वको वृत्तान्त।बैन सुनि ए कृष्णके नृग भरो मोद नितान्त।कहन
न लागो पूर्वको वृत्तान्त नृप नृग पर्व॥नृगउवाच॥सुनऊ हरि हम किए हे गर्व यश सहित स्वधर्म॥
कह्यो इमि तब कृष्ण सुनि ए बैन नृगके भूप। सुनऊँ नृग शुभ कर्मकर हो धर्मधर सु अनूप॥कहो
तुम किमि लही ऐसी दशा दुखदा भाम। दई कोटिन्ह द्विजन्हकों तुम पै अनेक अपार॥ सुन
भो गत कहां सो तव महत है नृगदत्त । कहत भो तब कृष्णजूसों नृग सु भूप प्रशस्त ॥ अथि होत्री
विप्र हो एक महातेजसधाम । मिलो ताकी छूटि गो गउ गोगनमें अभिराम ॥ तैंतरोहित किये
हों सहस्र सम यदुराय । सहस सुरभी देनको अति हर्ष हियमें छाय ॥ सहस सुरभिनमाहिँ
तैंनऊँ सुरभिकाकों ग्वाल । सोय आयो पास मेरे सुनऊ कृष्ण कृपाल ॥ दई सुरभी द्विजनकों
न सर्व सहित सनेह। गऊ सो ले समुद द्विज सब गए अपने गेह॥ अग्निहोत्री खोजि गउहित माहिँ
ढूढत गाय। दई हो जिहि विप्रकों हम गाय तापै जाय ॥ कहत भो इमि गाय तौ यह है हमारी
विप्र । लरत दोऊ भए आवत पास मेरे छिप्र ॥ कहत भे ते बैन ऐसे मोहि हे गुरु भूप । हैत
तुमही गऊको फिरि लेत तुमहीं भूप ॥ दई हो जिहिं विप्रकों हम गाय हे यदुराय । कह्यो
तौन विप्रसों हम जोरि कर गहि पाय ॥ लेऊ तुम यह गऊ बदले सहस दुग्ध सुगाय । बैन
मेरे श्रवण करि कै कह्यो द्विज इहिं भाय ॥ आपनी गहि दई मोसों गाय यह अभिराम । सुनति
मोकों परम प्यारी देति दुग्ध ललाम॥ जात भो निज धामकों द्विज मोहि रति करि एव। कह्यो
हम तब अग्निहोत्रीविप्रसों मृदु बैन ॥ लेऊ तुम यह गऊ बदले सुवर्ण हम सो देव। कहत है
कर जोरि तुमसों सुनऊ बुद्धि अगाध ॥ कहत भो तब विप्र मोसों बैन ऐसे पर्व ॥ ताम्रस उवाच॥
लेत हम नहिं गऊ नृपकी सुनऊ भूप अधर्म ॥ जात भो निज धामको सो मोहि कहि इमि
बैन । काल तौनहिंमाहिं हे श्रीकृष्ण आनन्दऐन ॥ मृत्युके बस होय कै हम गए धर्मके

पास ॥ कहत भे यम मोहि यैस पूजि सहित उलास ॥ है न संख्या पुण्यकी तव सुनऊँ नृग महि आ०प०
पाल । कियो तुम है पाप सोऊ बिना जाय बिशाल ॥ **** दा०ध०

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

करि हरणा द्विजनसों कहि इमि तुम नहिँ कीन । धोर ब्राह्मणको धन हर्‍यो तुम नृपनृपति प्रवीन ॥

॥ * ॥ पमञ्झरीछन्द ॥ * ॥

तुम पाप कीन्ह ए है विशाल । अरु बहुत पुण्य कीन्हें नृपाल ॥ करि हो सुभोग तिनको सु
जाय । यहमाहिँ जासु सनभो न ऑम ॥ *** ॥ दोहा ॥ * ॥ ****

चाहो पूरब भोगिए पुण्यहि सुखद अनूप । चाहउ भोगो पापकों हे नृग सुनऊ सु भूप ॥

॥ * ॥ तोमरछन्द ॥ * ॥

यमके सु ए सुनि बैन । हम कृष्ण आनद ऐन ॥ इमि कह्यो यमसों पर्म । पहिले सु भोगि अधर्म ॥
हम भोगि हैं सुखदाय । फिरि पुण्यकों सह चाय ॥ सुनि बैन ए यमराज । इमि कह्यो हे महराज ।

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

आऊ भोगिए पापकों प्रथमहि हे नृप भूप । फेरि भोगिये पुण्यकों सुखद महान अनूप ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

फेरि कह्यो इमि मोहि भूमे जब मै गिरत भो ॥ कृष्ण तारि हैं तोहि जगदाधार सु मोदमय ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

वर्षसहस्रमे होय जो यह तव पातक छीन । पुण्य लोककों प्राप्त तव व्है हो नृपति प्रवीन ॥
तबसों मै कृकलास व्है परो रह्यो यहकूप । स्मृति रही वँहँ जन्मकी मोकों सर्व अनूप ॥
परम पाय तव चरणको भो मेरो उद्धार । स्वर्गलोकको जात हो मैं अब मोद अगार ॥
प्रदक्षि णाय यदुराजको पाय मोदकों पर्म । चढि बिमान पै जात भो दिवकों सुनृग सधर्म ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

तिहीँ समयकेमाहि कहत भए इमि बैन हरि । धन बिप्रनको नाहिँ कबऊँ न हरिए सुनु नृपति ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

दान दिएँ जैसो सुफल होत सुनऊँ महिपाल । द्रोह किएँ द्विजसों कुफल तैसो होत बिशाल ॥

सकलश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञानुगामिना बन्दीजनकाशीवासि
रघुनाथकवीश्वरात्मजगोकुलनाथस्यात्मजगोपीनाथस्यशिष्येणमणिदेवेन कविना विरचिते भाषायां
महाभारतदर्पणे दानधर्मे कृष्णनृगोपाख्याने अष्टषष्टितमोऽध्यायः ॥ ****

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

१।०५० सुरभी दीन्हें जिहिं फलहि होत प्राप्त जन धर्म । कहौ ताहि विस्तारि कै हमसों तात सुधर्म ॥

१।०५० अब सुरभीके दानको कह्यौ आपु बहु बार । इति ये के मै अवहि मो सुनऊँ सुमति उदार ॥

॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥ करलादोहा ॥ * ॥

एक इतिहास कहत हम यामे सुनु सो छोडि प्रमाद । उद्दालक औ नाचिकेतको तामे है सम्वाद ॥

॥ * ॥ चरणाकुलकछन्द ॥ * ॥

नाचिकेतसों बोले बानी । कहत भए उद्दालक ज्ञानी ॥ करहु सु सेवा तात हमारी । करि है हम बहु रचना भारी ॥ कहि इमि मख रचनामे लागे । उद्दालक ऋषि मुदको पागे ॥ पूरन कै मख रचना नीकी । कीन्ही सिद्धि कामना ही की ॥ ऋषिवर आय और थल नाहीं । लखि कै नाचिके तका पाहीँ ॥ कह्यो बचन इमि हे सुनु राजन । काष्ठ दर्भ अरु सुमन सुभाजन ॥ नदिका तीर भूलि हम आए । ल्यावो जाय शीघ्रता छाए ॥ * ॥ दोहा ॥

नाचिकेत ए बचन सुनि गए नदीके कूल । तहां नहीं देखो कछू समय भरे अतूल ॥

॥ * ॥ चरणाकूलकछन्द ॥ * ॥

नाचिकेत अति श्रमसो छाए । पास उद्दालक ऋषिके आए ॥ कहत भए इमि बचन पिताने ॥ हाय रहे अतिहिं भै भासों ॥ बहि गे सबै नदीके माहीं । काष्ठादिक देखे हम नाहीं ॥ नाचिकेतको सुनि यह बानी । कै चिन्ता मनमाहिं महानी ॥ इमि करि क्रोध कह्यो ऋषिराई । यमको अवहिँ लखो तुम जाई ॥ नाचिकेत यह बाणी सुनिकै । कह्यो जोरि कर भीतहि धुनिकै ॥ होऊ प्रसन्न करहु कुध नाहीं । कहतहि यह सु गिरो महिमाहीं ॥ सुतको मृतक देखि हा कहि कै उद्दालक शुक पिलिसों दहिकै ॥ * * * * ॥ दोहा ॥ * * * *

गिर गिरि भूमे कहत इमि हाय कहा हम कीन । जिमि जिमि सुतको लखत हैं होत दुख अति पीन ॥

पुत्र शोककेमाहिँ ऋषि भो बिम्हल अति भूप । बीति गयो दिन कष्टदा आई निशा अनूप ॥

॥ * ॥ अरिलछन्द ॥ * ॥

रोवत हाय हाय ऋषि कहि कहि । नाचिकेत तन हियमे गहि गहि ॥ निशीतमय भो जीवत ऋषि सुत । सोवत उठ्यो मनहुँ चेष्टायुत ॥ जीवत सुत शुक जात भयो इमि । अशु उदय तें जात तिमिर जिमि ॥ नाचिकेतको हियमें ऋषि बर । लाय कह्यो तुम हो सुवर्ण धर ॥ * ॥

जीते तुम शुभ कर्मसों शुभ लोकनको तात । तातें तुमसों और नहिं तुमते तुमहि बिभात ॥

॥ * ॥ चरणाकुलकछन्द ॥ * ॥

नाचिकेत इमि कहते भए । जोरि पाणि अति आनँद छए ॥ तात सु आज्ञा पाय तुम्हारी । हम अन्तककी पुरी निहारी ॥ योजन सहस प्रमाण सु जाको । काऊ हि बिसात वाह नहिँ ताको ॥

मोको देखि कह्यो यमराई । स्यावहु आसन मुनि सुखदाई ॥ सो सुनि भृत्य सुआसन स्यायो । ग्रा॰पु॰
जोलस्य अर्घ्यअभासों छायो ॥ यन्तक आदि कै पूजा मेरी । आदर कीन्हीं तात घनेरी ॥ तदनन्तर दा॰भ॰
हम यमसों भाखे । सब वृत्तान्त हियके तोखे ॥ ॥ दोहा ॥

भेरि कह्यो यमरायसों हम इमि तात अधर्म । कौंन लोकके योग्य हम कह विचार है धर्म ॥

॥ * ॥ तोमरछन्द ॥ * ॥

सुनि बैन ए यमराय । हमसों कह्यो यहि भाय ॥ तुम हौ न मृतक सुजांन । बर धर्मवांन महांन ॥ तव तात चाय समुद्र । तुमसों कह्यो इमि युद्ध ॥ तुम आइ यमके भौंन । किमि होय अमृत सुनौंन ॥ * * * * ॥ दोहा ॥ * * * * * *

आए तुम तिहि आपते धाम हमारे मांहि । अब तुम मेरे बचनसों आउ पिताके पांहि ॥

॥ * ॥ चञ्चलाछन्द ॥ * ॥

जौन होय कामना सुचित्तमांहि नाचिकेत । तौन मर्थ है कहो सुनो सुबुद्धिके निकेत ॥ यों कह्या सप्रेम होय धर्मराज तात मोहि । बैन ए सुने सुधर्म मै कह्यो सु ताहि ओहि ॥ दुःखसों निवर्त्य होत है सुरादरो सुलोका नाहि प्राप्त भो सु मै सुनो सुधर्म धर्मलोक ॥ पुण्यलोक देखिबेकि कामना भई महान । अब तौन तौन विहि कीजिए सुधर्मवान ॥

॥ * ॥ मोक्तिकदामछन्द ॥ * ॥

सुने मम बैन बिमान मगाय । चढाय सुतापर मोहि सचाय ॥ दिखावत भा सबलोक अमन्द । लखे तहँ मै धरम भाव विलन्द ॥ शशीसम शुभ्र महार्घ्यबिमान । लगे तिनमे मणिखंभ महान ॥ सु हेम कपाट लगे अतिचारु । रची मुकुताखर भूमि सुढारु ॥ सरोवर स्वच्छ लसैं तिन पास । बसैं तिनमे जलजन्तु बिलास ॥ रहे बहु फूलि सु कुञ्ज अनूप । फिरैं तिन पै अलि भौंरि सुरूप ॥ लसैं बहुभांति सु तौन प्रसून । मसे सखिकों मनु हैं तमदून ॥ बहैं नदिका सुभरी जल स्वच्छ । लसैं तिनके चहुंओर सुवृक्ष ॥ किती पयकी नदिका अभिराम । किती घृतकी सुख हैं छविधाम ॥ लखो हम भोजन वस्तु अपार । अनेक बिमान महान सुढार ॥ लखें सब ए अति मोदहि पाय । यमै हम पूछत भे ऋषिराय ॥ ॥ * ॥ पज्झटीछन्द ॥ * ॥ * *

इनको सुभोग कहु कवन कांम । सुनु धर्मराय बर धर्म भौंन ॥ सुनि कै सु बैन मम धर्मराय । इमि कह्यो सुनहु पितके सचाय ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ * * * *

विधिवत पात्र विचारि जे गऊ देत अभिराम । प्रीति सहित ते करत है इनकों भोग ललाम ॥

॥ * ॥रामगीतीछन्द ॥ * ॥

श्रोत्रमान सु तपस्वी ब्रतवान अरु श्रुतिमान । विप्र ऐसे पात्र हैं गोदानके मतिमान ॥ शुद्ध व्है चयातिव्रतके भूमिमाही सैंन । चतुर्थदिनतें सु गोरस पान कै बुधिश्रैन ॥ बोलि कै श्रुतिमान

१।३५० बिप्रहि सहित आदर माम। बत्सयुत सह कांस्य दोहनि सुरभिका अभिराम ॥ तीन दिनलौं
१।४५० देत एक एक प्रेमसो अन जौन। जहा सुखहि देत ते अब भाग ह युधिष्ठौन ॥ गऊको सींग मढि
सौं रौन राहि सुजान । रहत तेते बर्ष ते हैं स्वर्गलोकहि बखान ॥ तिनिहि बूफी देत सौंप सुख
बीरजमान। धेनु प्रदके लोककौं ते जात होत सुजान ॥ नाचिकेत उबाच॥ कह्यो यम आनंदयुत के
ए बैंन सुनि हमितात। कहोबिन गोदान ए किमि लहैं लोक विभात॥ बचन मेरे श्रवण करिकै
कहत भे धमराय। चाहत जन गोदान बिनहूँ लोक ए सुखदाय॥यद्यबिन जे देत घृतकी धेनु थाप
बनाय।चाहत ते जन बरी घृतकी रहत नित्य सचाय॥घृत बिना जे देत हैं तिल धेनुकों अभिराम॥
चीर सरिता मध्यके ते रहत सुदर्शो नाम ॥ देत जे जल धेनुकों तिल बिना पाय धर्म। कामदा ते
लहत नदिका सुनऊ तात सधर्म॥ धर्मके ए बचन सुनि मे भयो मोहित बाम।सुनऊ तबसों आन
तोहीं दान यह बचदात ॥ * ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ * * * * *
जौन भाप हमको दयो तुम हीने करि क्रुद्ध। तौन अनुग्रहसो भयो बड़ सुखदायक उद्ध॥

॥ * ॥ अमृतसुधाछन्द ॥ * ॥

भाप जौन देत मोहि आपुकी सुकुद्ध । तौन मे बिलोकतो सु पुण्यलोक शुद्ध ॥

॥ * ॥ गमकछन्द ॥ * ॥

फेर फेरि। हेरि हेरि॥ धर्मरायान्हे सचाय ॥ कह्योएह। कै सनेह ॥ गऊदान। कोसमान ॥
दान अन्य। हैन धन्य॥ * * ॥ * ॥ आभीरछन्द ॥ * ॥ * * * * *
तात हे तुम तात। गऊ देऊ बचदात॥ अहङ्कारकौं त्यागि। परम प्रेममे पागि॥सुरभी देत सु जौन।
लहत लोक सुभ तौन ॥ * * ॥ * ॥ सुन्दरीछन्द ॥ * ॥ * * * * * *
गोरसको रस चीर नदी बर । ताहि दिए सुनुहे शुभधीधर ॥ पावतहे जन लोक सुपावन।
मावतहे लहिके अति भावन ॥ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ * * * *
हमको लोक दिखाय सब धर्मराय मतिमान । कह्यो सर्व गोदानको यह फल तात सुजान॥
सुनिके हम गोदान फल लखि शुभलोक बिलास।करि प्रणाम यमको सु हम आए फिरि तबपास॥
इतिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराज श्रीउदितनारायणसिंहाज्ञानुगामिना श्रीबन्दीजनकाशी
वासि रघुनाथकबीश्वरात्मजगोकुलनाथस्यात्मजगोपीनाथमणिदेव सहितेन कविना विरचिते
भाषायां महाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणि दानधर्मे एकोन सप्ततितमोऽध्यायः ॥ * * *

॥ * ॥ रामगीतीछन्द ॥ * ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ कह्यो फल गोदानको सब महातिम अभिराम । बिना जाने एक
गौके हरणत अतिमान॥ कह्यो दुख महिपाल नृग परि कूपमाहि गँभीर।ताहि ताको द्वारिकामे
कृपा करि यदुबीर॥सर्व हम सो सुन्यो हे मतिमान तात सुजान।जात हैं दुख्खोर जौने लोकमाहि

सुठान ॥ कहैं तिनमे लोकको वृत्तान्त हमसों सर्व ॥भीष्मउवाच ॥सुनऊँ यक पद ग्रन्थमे इतिहास मा०अ०
एक अपर्व ॥ ब्रह्म बूझत भए इन्द्र लोकेशसों हे भूप । सर्व ते ऊँचो अन हैं भरे तेज अनूप॥ दा०अ०
तिन्है हम गोलोकवासी तिन्हैं प्रीति सुजान । भूरि अपने तेजसों ते भरे मोद विभान ॥ *ॐ*

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

कैसे हैं गोलोक तिनमे हे वर कौन गुण । सुनऊँ इन्द्रिय सुरलोक अन तिनकों किमि लाहलैं॥
करत कौन आहार ते तिनमे कबलौं रहत । मो मन मांहि महान इच्छा है यह सुनन की॥

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

दीन्हे बहु सुरभी अभिराम । कहु फल कैसो होत ललाम॥ अल्प दान सुरभिनको कौन।
ताको फल कैसो बुधिभौन ॥ * ॥ * ॥ चरणाकुलकछन्द ॥ * ॥ ॐॐॐॐॐॐॐ*
बहु दाता लघु दाता होऊ । लघु दाता बहु दाता सोऊ ॥ किहि विधि होत समान बखानो ।
भो मो हिय संदेह महानो ॥ औ सुरभी किहिं विधिसों दीजै । कौन विशेष दक्षिणा कीजै॥ॐ*

॥ * ॥ रामगीतीछन्द ॥ * ॥

पितामहउवाच ॥ * ॥ सुनऊ हे सुरराज यह तुम प्रश्न पूछो कौन । याहि पूछे योग्य तुमहीं हो सु हे बुधिभौन ॥ बहुत विधिके लोकहूँ नहि लखत तिनकों आप । लखतहैं हम तिन्हैं हे सुनु मर्म बुद्धिकलाप ॥ लखतिहैं औ कामिनी जे पतिव्रता अभिराम । लहत तिनको विप्र ह यज्ञ किए कर्म ललाम॥जरा औ सन्ताप अन्तक रमै तिनमे नाहि। रहत नित्य सनेह हैं जे बसत तिनके माहि ॥ व्याधिको अरु पापको नहिं तहाँ नेकहु लेश। करति इच्छा जऊ जो सो सिद्धि होति सुरेश॥सर्व सुन्दर वस्तु हैं गोलोकमे सुरराज । और ऐसो लोक है नहिं भरो मोद दराज॥ शान्त जिनकी प्रकृति है अरु दयावान महान । रहत रत गुरुभक्तिमे जे परम प्रज्ञावान ॥ अरु झारहिं छांडिकै वर करत हैं निति धर्म । करत सेवा मातुकी औ पिताकी जे पर्म ॥ करत निन्दा द्विजनकी नहिं किएहूँ अपराध । करत पूजन गऊ को जे भरे प्रीति अबाध ॥ कहैं कोमल वचन जे अरु सत्य बोलत बैन । देव पूजन करत जे निति देत दीनहिं चैन ॥ जात ते गोलोककों हैं भरे आनद भूरि । रमत जे परनारिकों ते रहत हैं निति दूरि ॥ मित्रद्रोही छली औ गुरुभक्त हैं नहि जान । धर्मद्रोही ब्रह्मघाती महा अघके भौन ॥ लहत हैं गोलोककों ते कबहुँ नहि याम देश । सुनऊँ अब हम कहत हैं गोदानको फल वेश ॥ कियो जो उत्पन्न धन है कर्म करि शुभ लहु । तौन धनसों लेय सुरभी प्रीति करिकै वहु॥ बोलि सादर विप्रकों जे देत हैं सुरराज । लहत हैं गोलोकमे बसि तौन मोद दराज॥ द्यूतमे धन जीतिकै जे लेय सुरभी देत । अयुत वत्सर तौन जन गोलोकको सुख लेत ॥ पाय जो द्विज चोरसों गो देत मनसों मह । रहत सो गोलोकमे है

शां०प० सदा सुदर्सी उह्ह॥ सदा जे जन सत्य बोलत नित्य रहत धर्मके। विप्र औ गुरुको करैं जे सदा दोष
दा०ध० वर्जके ॥ लहत तीरथ जोर बसि गोलोकमे अभिराम । नवऊँ धाे जे करत तीरथ ... नहि
नाम ॥ देत जे सुरभीनकौं हैं यास कोमल लाय। धर्मने यह ब्रह्मचारी रहत तन परदुख ...
गौ के दानकौ फल मिलत नाहि सधर्म । होहि क्षत्रियमाहि औ ए सुगुण अतिही पर्म॥ विप्रसे
लहत तौ फल कहैं सत्य अनन्द । वैश्यमे औ होहिंगो फल कहै वर्ष सुनिन्द ॥ शूद्रमाहु होहि
औ ए सुगुण लख सुरेश। आनु निश्चय लहै तौ वह भाग चतुरथ वेश॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

सुरभीकौं लखि मुदित ह्वै जे जन करत प्रणाम। यज्ञ किए को फल मिलत तिनकौं अति अभिराम॥

* ॥ सोरठा ॥ * ॥

मत्त परम बलवान वृषभ देत जे द्विजनकौं । तिनकौं मिलत सुजान फल दश सुरभीदानकौ ॥

॥ * ॥ कान्ताछन्द ॥ * ॥

बनके माहँ। हे सुरनाहँ॥ वर बुधिभौन। गो की जौन॥ रक्षा करत। मुद सौं भरत॥ इच्छा सर्व।
तासु अखर्व॥ सिद्धि सु होत। हे बुधिपोत॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञानुगामिना बन्दीजनकाशीवासिरघु
नाथकवीश्वरात्मजगोकुलनाथस्यात्मजगोपीनाथस्य शिष्येण मणिदेवेन कविना विरचिते भाषायां
महाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणि दानधर्मे गोलोकप्रश्ने पितामहशक्रसम्वादे सतसितमोध्यायः॥

॥ इन्द्रउवाच ॥ * ॥ स्वागतछन्द ॥ * ॥

आनिकै सुरभी गाय बेचते सु जे हैं। सुनऊ दुखित कौन गतिहि अंत होतजे हैं॥

॥ * ॥ मल्लिकाछन्द ॥ * ॥ पितामहउवाच ॥ * ॥

भक्ष्य काज हरत जौन। नर्कमाहि परत तौन॥ रोम गायके जितेक। होहि वर्ष सो तितेक॥
होत है उधार नाहिं। मानु सत्य चित्तमाहि॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥
बेचनको यह दानकौं हरत जौन जन गाय। तिनहूँ की एही दशा कहति तुमसौं सुरराय॥
सुख्यात जे जन देत हैं गऊ वधनको पर्म। यह जे कबन हनत हैं पापी पावहिं विधर्म॥
रोम होहि गो अङ्गमे तितने वर्ष हजार। नरक माहि परि रहत ते ... ...॥

॥ * ॥ आभीरछन्द ॥ * ॥

हरि कै सुरभी जौन। देत विप्रकौं तौन। परत नरकमे ... ... सुखलोह॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

गौ प्रदानमे दक्षिणा दीजै सुवरन लाय। सुवरन है पावक वरन निश्चय जानु अमाय॥

॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥ रामगीतीछन्द ॥ * ॥ दा॰ध॰

कह्यो विधि सुरनाथ सों यह धर्म अति अवदात । कह्यो श्रीसुरनाथ नृप दशरथ सों है तात ॥ दा॰ध॰
कह्यो दशरथ राम सों यह धर्म अति अभिराम । राम करि के कृपा लक्ष्मण सो कह्यो बुधि धाम ॥ कह्यो लक्ष्मण विपिनमें वर ऋषिन सों यह धर्म । भए धारण करत जाको सुऋषि ते सब पर्म ॥ ऋषिन से मुनि श्रेष्ठ भूपन किये धारण भूप । सोहि मम गुरु कह्यो करि कै कृपा परम अनूप ॥ सुमति द्विज जनमें सोहामें हिम श्रौन । पढत यह जो स्वर्गको सो लहत है बुधि भौन ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

मनका सों ब्रह्मा कह्यो अब सुधर्म अवदात । जे यहिमें रत रहत ते भरिसे सब विभात ॥

इति श्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणसिंहाज्ञानुगामिना श्रीवन्दीजनकाशीवासि रघुनाथकवीश्वरात्मजेन गोकुलनाथस्यात्मजगोपीनाथस्य शिष्येण मणिदेवेन विरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणि दानधर्मे पितामहयुधिष्ठिरसम्वादे एकसप्ततितमोऽध्यायः ॥

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

सुनऊं तात बुधिधाम धर्मअवज्ञा हो तुमहि । संशय है एक काम दूरि करऊ सो कै कृपा ॥

॥ * ॥ रामगीतीछन्द ॥ * ॥

होत का फल किएँ व्रत अरु नेम कीन्हें धर्म । कहा फल अध्ययन कीन्हें होत तात सधर्म ॥ सर्व इन्द्री जीतिबेको कहा फल है सत्य । वेदधारण किए तें फल होत कौन प्रतत्त ॥ कौन विद्या दान कीन्हें होत फल अवदात । जे प्रतिग्रह लेत नहि ते लहत का फल तात ॥ कहा फल श्रुति दानमें अरु शूरताके कौन । कहा फल है शौच मांहीं सुनऊँ वर बुधिभौन ॥ ब्रह्मचारज माहि का फल होतहै अभिराम । किएँ सेवा पिताकी अरु मातकी सुखधाम ॥ होत का फल गुरुसेवा कियो सह प्रेम । दया कीन्हे होत का फल सुनऊँ तात सनेम ॥ किएँ पर दुख दूरि का फल होत है वे तात । कहौ तुम अवगाहि इनसों सर्व फल अवदात ॥ भीष्मउवाच ॥ करत विधिवत ग्रौन व्रत ते लहत उत्तम लोक । नेमको फल मिलत है परलोकमें बुधिओक ॥ किएतें अध्ययन विद्या विधि होत सु अर्थ । मिलत है परलोकमाहीं मोद भूरि समर्थ ॥ सर्व इन्द्री जीतिबेते होत है फल ग्रौन । सुनऊँ सो विचार करिकै कहत हम बुधिभौन ॥ ग्रौन जीते सर्व इन्द्री लहत सुख सरवत्र । आय वेको होत दुख आन है ते तत्र ॥ होति तिनकी कामना हैं सर्व विधि सुजान । ताके कीर्ति मांहीं लहत मोद महान ॥ जीतिबो इन्द्रीएको जो कहत है दम ताहि । दान तें सो श्रेष्ठहै अति कहत बुध अवगाहि ॥ देत दानहि करत दानी कबऊँ मनमें क्रुद्ध । काल कबऊँ न क्रुद्ध है दमवान मनमें युद्ध ॥ सुनऊँ याते श्रेष्ठहै दम दान ते अवदात । लहत है दमवान दम ते लोक उत्तम तात ॥ ब्रह्म लोकै होत प्रापत ग्रौन विद्या देत । प्रशंसा जो

आ॰प॰ करत गुरुकी लहत स्वर्ग सचेत ॥ करत जे अध्ययन क्षत्रिय देत दान महांन । युद्ध माहीं करत
दा॰ध॰ रक्षा औरकी मतिमान ॥ प्राप्तव्है ते स्वर्ग माहीं लहत मोद निबन्द । रहत रत निज कर्ममें जे
वैश्य सुनऊँ नरिन्द ॥ देतहैं अरु दांन बिधिसों लहत ते दिवलोक । शूद्र औ रहैं रत निज
धर्ममें बुधि ओक ॥ लहै तौ सुरलोक माहीं परम पावन धाम । शूर बऊपरकार कै हैं सुनऊ नृप
अभिराम ॥ यज्ञमें हैं शूरकेते युद्धमे हैं पर्म । सत्यमे हैं शूरकेते दांन मांहि सधर्म ॥ किते इन्द्री
जीतिबेमे शूरहैं अवदात । योगमे हैं शूरकेते सांख्यमें हैं तात ॥ किते बडवी बास मांहीं शूरहैं
अभिराम । शान्तमे हैं शूरकेते सुनऊँ नृप बुधिधाम ॥ क्षमामें हैं शूरकेते बास ग्रहके माहँ ।
किते कोमल बचन माहों शूर हे नर नाहँ ॥ बेदके अध्ययनमे हैं शूर केते पर्म । गुरुसेवा मांहि के
ते शूरतात सधर्म ॥ किते सेवा पिताकीमे शूरहैं महिपाल । किते माताकी सु सेवा मांहिं शूर
बिशाल ॥ अतिथि पूजन मांहि केते शूरहैं अवदात । किते बिद्या दानमें हैं शूर हे सुनु तात ॥
लहत ए सब शूरहैं नृप महत उत्तम लोक । होति इनकी कीर्ति जगमे रहत नित्य अशोक ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

जग फल उत्तम लहत हैं सत्य बचन ते पर्म । और धर्म नहि सत्य सम भूपति सुनऊँ अधर्म ॥
बेद धरण तीरथ करण हैं नहि सत्य समांन । सत्य धर्म सो सत्यहै जानऊ सत्य सुजांन ॥
अश्वमेध सहसन नहीं सत्य बचनसम तात । सत्य करत जे जग नृपति ते जग चांतिहि बिभात ॥

॥ * ॥ भुजङ्गप्रयातछन्द ॥ * ॥

तपै सत्यसों भानु शोभा प्रकाशै । बहै सत्यसों बायु यो अग्नि भासै ॥ सहो सर्व संसारको
भार धारै । फली सत्य सों भूरि भूको सम्हारै ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

पितर होत परसन्न अरु निर्जर सर्व सुजांन । तिनिहीं होत प्रसन्न हैं बिप्र सु बिद्यावान ॥
रहत निरत निति सत्यमे सर्व सु मुनि अवदात । तातें तिनमे होतहै महत पराक्रम तात ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

सत्यवान जग जौन तौन लहत मुद स्वर्गमें । तातें हे बुधिभौन सत्य कबऊँ नहिं त्यागिए ॥

॥ * ॥ मल्लिकाछन्द ॥ * ॥

नीति वांन भूप जौन । स्वर्ग लोक मांहि तौन ॥ प्राप्त होतहैं सुजांन । मोदको लहैं महांन ॥

॥ * ॥ उकवाछन्द ॥ * ॥

ब्रह्म चार्य्यको जौन । फलसो सुनु बुधिभौन ॥

॥ * ॥ अरिल्लछन्द ॥ * ॥

ब्रह्मचार्य्यको जौन निबाहत । ताको सब बऊ भांति सराहत ॥ ताहि अप्राप्ति कछू नहिं
आंनऊ । ब्रह्म लोकको लहत सु मानऊ ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

[illegible] सब पापकों दूरि करतहै भूप। तेज बढावत अग्निमें परमा करत अनूप ॥ शा०पु०

इति श्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणसिंहाज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशीवासिरघुनाथकवीश्वरात्मजगोकुलनाथस्यात्मजस्य गोपीनाथस्य शिष्येण मणिदेवेन कविना विरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणि दानधर्मे द्विसप्ततितमोऽध्यायः ॥ * * * दा०ध०

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

जो विधि सुरभी दानकी अति उत्तम है भूप। सो मन ताकों सुननकी इच्छा भई अनूप ॥
जिहिकों कीन्हें लहतहै जन अति उत्तम लोक। कहो आपु अवगाहिकै ताहि सुनहु बुधिओक ॥

॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥

सुनहु तात गोदानतें उत्तम और न धर्म। विधिवत जे गो देत ते कुलकों तारत पर्म ॥
विधि वर सुरभी दान की मान्धाता भूपाल। बूझत मे बागीशसों करि सनमान विशाल ॥

॥ * ॥ अथकरीछन्द ॥ * ॥

मान्धाताके सुनिकै बैन। कहत भए बागीश सचैन ॥ विप्रणको करिकै सतकार। देय निसंशय बुद्धि अपार ॥ आपु गो शालामे जाय। पढै मंत्र यह शुभ सुखदाय ॥ सुरभी मो माता अभिराम। पिता वृषभ सुददायक नाम ॥ देहिँ हमै सुरलोक अनन्द। औ यहि लोक मांहि सुखवृन्द ॥ अपि यह मंत्र करैँ तहँ वास। मौन होयकै भरो हुलास ॥ जिहि विधि रहैँ भूमिमे गाय। तिमिहीं आपुहु रहै सभाय ॥ * * ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ * * *

दूजे दिन गोदानके समय माहिँ है भूप। बोलै कोमलताभरे बचन समोद अनूप ॥
गजदानमें प्रथम दिन को है व्रत यह भूप। याकों करिकै प्रातहीं दीजै गज अनूप ॥

॥ * ॥ रामगीतीछन्द ॥ * ॥

फेरि सुरभी की प्रशंसा करै ऐसी रीति। देति तिहिकों स्वर्गहो जो करत तुममे प्रीति ॥ यज्ञ को हो तुमहि साधन पाप हरणी पर्म। सुरभि तुमकों पूजिकै जनको न होत सधर्म ॥ देति ऐश्वर्य्य तुमहीं परम आनंद उद्ध। बरनि वत्सल विप्रको करुणामयी तुम शुद्ध ॥ करहु माता ला हमारी नित्य रक्षा पर्म। हरहु मेरे पापकोविद करहु मोहि सधर्म ॥ धेनुकों जो लेय सो द्विज कहै ऐसे बैन। सुरभि हे तुम मोहि औ दाताहि करहु सचैन ॥ सर्व पूरण कामना तुम कीजिए अभिराम। भरहु दाताके सुखहमे आपु आनंद धाम ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ * * *

मोल देत जे धेनुको सादर द्विजहि बुलाय। धेनु दानको फल लहत तेऊ जन नरराय ॥
नर्स धेनु जे देत अरु हेम धेनु अभिरामतिनहु जन गोदानके फलकों लहत हुलास ॥

भा०५० ॥ * ॥ अरिल्लछन्द ॥ * ॥
दा०५० विधिसों देत एक जो सुरभिय । होत कामना सब सिधि तिहिं किय ॥ विधियुक्त...
दे जो जन । तिनके फलहि सबै कहि को जन ॥ ◆*◆ ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ ◆*◆◆◆
जे जन व्रतकों करत नहिं औ दुर बुद्धी जान । परम गुप्त यह धर्म जो कहिए तिन्हैं कबौं न ॥
॥ * ॥ महादीपकछन्द ॥ * ॥
सर्व ठौर यह सुधरम कहिय कबहूँ नाहीं । पाप मानहूँ मनुष्य बहुत लोकन मांहीं ॥
धेनु दान सुनैं तिन्हैं लागत ना नीको । आनन है याहि भूरि क्षेमकार हीको ॥
॥ * ॥ रामगीतीछन्द ॥ * ॥
बृहस्पतिके बचन सुनि ए प्रेम युत न्है धर्म । देय सुरभीदान विधिसों न्है सुलभ सधर्म ॥
पुण्य लोकन्हकों सु जे जे भए नृप मतिमान । कहत तिनके नामहैं हम सुनहु तात सुजान ॥
उशीनर औ विश्वगश्व सुभूप नृप धरमज्ञ । भगीरथ औ यौवनाश्वक मान्धाता प्रज्ञ ॥ भूरिद्युम्न
पुरूरवा मुचुकुन्द सोमक भूप । चक्रवर्त्ती भरत औ नृप रामचन्द्र अनूप ॥ औ दिलीप नहीष
वर धरमज्ञ प्रज्ञ महान । गए सब दिव लोककों ए सविधिके गोदान ॥ सुनहु तातें नृप युधि
ष्ठिर तुमहूँ करिके छेम । बृहस्पतिके बचन धारण करि सु सविधि सनेम ॥ बोलि सादर द्विज
न्हकों तुम करहु सुरभी दान ॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ ◆ ॥ वैन सुनि ए पितामहके युधिष्ठिर
मतिमान ॥ करत भो गोदान विधिसों नेम गहिहके धर्म । महा कीरति भई तातें भए आपु सधर्म ॥
इतिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणसिंहाज्ञानुगामिना श्रीबन्दीजनकाशी
वासिरघुनाथकवीश्वरात्मजगोकुलनाथस्यात्मजगोपीनाथस्य शिष्येण मणिदेवेन कविना विरचिते
भाषायां महाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणि दानधर्मे त्रिसप्ततितमोऽध्यायः ॥ *◆*◆*◆◆*
॥ * ॥ चरणाकुलकछन्द ॥ * ॥
वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ भूप युधिष्ठिर आनद पागे । बैठि पितामहजू के आगे ॥ जोरि
पाणि बिनती बहु करिके । कहत भए पुनि इमि रति धरिके ॥ ◆*◆*◆*◆*◆*◆
॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * दोहा ॥ * ॥
धेनु दानको सर्व गुण कह्यो आपु पुनि तात । तबहिं तृप्त हम ना भए सुनहु वीर अवदात ॥
॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥
नृपति युधिष्ठिरके बचन सुनि ए भीषम भूप । कहत भए गोदानके फलकों परम अनूप ॥
॥ * ॥ छन्द * भीष्मउवाच ॥ * ॥
शीलवती तरुणी गुण पूरी । अरु वर दुग्धवती अति रूरी ॥ सब दोषनते रहित सुगाया ॥ छम

घती बलवती विशाला ॥ दीन्हें ऐसी सुरभी विप्रहि । पाप सर्व कठिजात सु छिप्रहि ॥ सब सरित मा०प०
नमें ज्यों सुरसरिता । अति उत्तम पापनकी हरिता ॥ तिमि कपिला सब सुरभिन माहीं । भूप दा०ध०
सुन्यो हम बुधजन पाहीं ॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

सब सुरभिनके दानतें कपिलाको जो दान । सो किमि उत्तम है कहो करिके कृपा महान ॥

॥ ॥ भीष्मउवाच ॥ ॥

यह प्रसङ्गमे पूर्व हम सुन्यो बुधनसों जान । सो तुमसों हम कहतहैं सुनऊ तात बुधिमान ॥

॥ * ॥ रामगीतीछन्द ॥ * ॥

दक्षकों इमि कह्यो ब्रह्मा स्वच्छ बोलि सुबैन । प्रजाकों उतपन्न करिए सुनऊ दक्ष सचैन ॥ बैन
सुनि लोकेशके ए दक्ष करि सु विचार । इक्ष्मि पूर्वहिं प्रजाकाजै भयो करत सुढार ॥ अमृत आ
श्रित रहत जैसे देवता है तात । रहतिहै तिमि वृत्ति आश्रित प्रजा सब अवदात ॥ इमि प्रथमहिं
विरञ्चि की वर प्रजापति अभिराम । फेरि विरची प्रजाकों बहु भरे आनद धाम ॥ प्रजा इच्छा
वृत्तिकीं करि हिए माहिं महान। दक्षको आव्हान कीन्हों सुनऊ भूप सुजान ॥ प्रजाकों तब भयो
प्रापित श्रीप्रजापति आय । प्रजा लखिकै प्रजापतिकों भई परम सचाय ॥ वृत्ति दीवे प्रजाकों
वर प्रजापति मतिमान । भए पीवत अमृतकों सुनु तात परम सुजान ॥ तृप्त भे अति अमृत पीकै
प्रजापति धर्म्मज्ञ । अमृतकी शुचि सुरभि लागी कढन मुखते प्रज्ञ ॥ सुरभिके सँग कढो मुखते
एक सुरभी पर्म्म । दक्ष ताहिकों भए दखत भर हर्ष सधर्म्म ॥ करी तिहिं उतपन्न कपिला किती
धेनु ललाम । लगीं वर्षन दुग्धकों ते सर्व अति अभिराम ॥ बहन लागो दुग्ध ताते भए फेन अनूप ।
होत जैसे नदिनमाहीं लहरि परम सु भूप ॥ ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

बछनके मुखते गिरो दुग्ध फेन अभिराम । परो शंभुके शीशपै तौन सुनहु बुधिधाम ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

करिकै क्रोध महान तब ललाटके नेत्र सों । देखत भे ईशान सह बछन कपिलानकों ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

तिहिं लोचनके तेजसों कपिलनकों रँग पर्म्म । विवर्णताकों प्राप्त भो भूपति सुनऊ सधर्म्म ॥
भरए भई तब सोमके सुरभी कपिला सर्व । ताते सब कपिलानको भो निज वर्ण अखर्व ॥

॥ ॥ अथकरीछन्द ॥ ॥

यह वृत्तान्त जानिकै दक्ष । करि विचार मनमाहीं स्वच्छ ॥ शीघ्र आय शङ्करके पास । कहत
भए इमि सहित हुलास ॥ दुग्ध होत उच्छिष्ट कबौं न । बछनको पीएँ सुदभौंन ॥ ताते क्रोध न करऊ
अखर्व । करो दया कपिलनपै सर्व ॥ कपिला अपनी सन्तति चाह । भरिहैं लोकन्हमाहिं सुढार ॥
ताते लोकन माहिं अनन्द । बढि है महा सुनऊ निर्द्वंद ॥ इनको जो ऐश्वर्य महान । चाहैंगे सो सब

आ०प० ईशान ॥ यह कहि वृषभ दयो अभिराम । [illegible] कहिके नाम ॥ भए प्रसन्न पाय सो धर्म।
दा०ध० [illegible] ॥ [illegible] ॥ दोहा ॥ [illegible]

धारण कीन्हे । वृषभको ध्वजामाहिं [illegible] बाहन अपनो कियो शङ्कर हे सुजान ॥

॥ * ॥ चरणादोहा ॥ * ॥

यातें वृषभध्वज औ पशुपति भयो [illegible] नाम ॥ [illegible] किए स्थान गुणिधाम ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

प्रथम भई उतपन्न हैं कपिला यहि विधि तात । याते उत्तम [illegible] ॥
यही धेनुते श्रेष्ठ है इनको दान सुजान । सर्वकामना देतिहै [illegible] ॥
धेनुन्हकी उत्पत्तिको यह विधान जो धर्म । पढ़त सुनत शुचि होय औ तिनके [illegible] ॥
सम्पति सन्तति मिलतिहै रहत निरोगित गात । औ आयुर्बल [illegible] ॥

॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ रामगीतीछन्द ॥ * ॥

पितामहके वचन सुनिके युधिष्ठिर महिपाल । इनन [illegible] कपिलानको भे दान [illegible] । दई सुरभी धीरबोती हर्षसहित महान । यथोचित हे दक्षिणा [illegible] ॥ *◆*
इति श्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणसिंहाज्ञानुगामिना श्रीबन्दीजनकाशीवासिगोकुलनाथकवीश्वरात्मजगोपीनाथकविना विरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे अनुशासनपर्वणि दानधर्मे गोदान प्रसंग वर्णने चतुःसप्ततितमोऽध्यायः ॥ *◆*◆*◆*◆*◆**

॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥ आभीरछन्द ॥ * ॥

सुनु सपने नरनाह । एक समयके माह ॥ नरभूपति सौदास । [illegible] ॥ [illegible] वशिष्ठसों धर्म । पूछत भए सधर्म ॥ * ॥ सौदासउवाच ॥ * ॥ [illegible] ॥ * ॥
तीनउँ सुलोक मांहि श्रेष्ठ है कहा अनूप । [illegible] ॥
के कथा कहो सु आपु मोहि हे वशिष्ठदेव । पूछिये सु योग्य और आपु सों भले भेव ॥ *◆*

॥ * ॥ मधुभारछन्द ॥ * ॥

सुनिकैं एह । ऋषि बुधिगेह ॥ गोमान सु [illegible] ॥

॥ * ॥ रामगीतीछन्द ॥ * ॥

[illegible] ॥ पाप सागर पार करनको धेनुहैं अभिराम । परे [illegible] ॥ [illegible] धेनुहीतें [illegible] ॥ [illegible] देतिहैं [illegible] *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

[illegible] धेनुके गुणको है नहि अन्त । याते जो समता करै धेनुनकी तिनि कन्त ॥

॥ * ॥ पज्झटीछन्द ॥ * ॥

जिहिके सुहोंहि दशधेनु भूप । द्विजकों सु देय सो एक अनूप ॥ जिहिके सुहोंहि शतधेनु पर्न । दशदेय द्विजनको सो [illegible] ॥ जिहिके सुहोंहि एक सहस गाय । शत एक [illegible] दे [illegible] सुभाय ॥ यह [illegible] धर्मदै हे नरेश । अवगाहि कहत नरबुध सुवेश ॥ * ॥ रामगीतीछन्द ॥ * ॥

अग्निहोत्र सु करै जाके होंहि शत गो पर्न । होंहि जाके सहसगो सो करै यज्ञ अधर्म ॥ करै जो नहि होंहि तौ वह पूजनीय न भूप । कहतहैं अवगाहिके बुध शास्त्र देखि अनूप ॥ * ॥

॥ * ॥ तोमरछन्द ॥ * ॥

[illegible] धेनुको हिय ध्यान । जपिके सुनाम सुजान ॥ करिए सुचैन सचैन । सुनु भूप बुद्धि सुचैन ॥ यह प्रात हूं उठिपर्न । जपि धेनुनाम सधर्म ॥ धरिए सु भूमह पाय । वरधर्म यह नरराय ॥ निति प्रात सायंकाल । करिए प्रणाम विशाल ॥ ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

गोके मूत्र पुरीषको करिय उलंघन नाहि । पावनह्वैके आइए गोशालाके माहि ॥

॥ * ॥ अरिलछन्द ॥ * ॥

विप्रनको घृतहीजे पावन । जो जनिए जिहि माहि सभावन ॥ भूपति सुनउ धर्म यह भावन । याहि किए वपुहोत सुहावन ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

गोकपिलाके दानको देत सविधिहै जौन । सबदाननको फल लहत रहत समुद्रहै तौन ॥

इतिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणसिंहाज्ञानुगामिना काशीवासिरघुनाथकवीश्वरात्मजगोकुलनाथात्मजगोपीनाथस्य शिष्येण मणिदेवेन कविना विरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणिहि दानधर्मे पञ्चसप्ततितमोऽध्याय: ॥ * ॥

॥ * ॥ तोमरछन्द ॥ * ॥

शत सहस वर्ष महान । हमकीन्ह तप धरि ध्यान ॥ तबहू मिली नहि मान । शुचि श्रेष्ठता अभिराम ॥ सुरभी जतें सो पर्म । हमको मिली सु सुधर्म ॥ यहतें सु उत्तम जानि । अतिप्रीति हियमे आनि ॥ निति धेनुकी अभिराम । हम करत सेवा नाम ॥ * ॥ रामगीतीछन्द ॥ * ॥

कहत हैं [illegible] भांति सुरभी सुनउ नृप बुधिभौन । दक्षिणा जे सर्व तिनमे है हमारी जौन ॥ परम उत्तम दक्षिणा है करत जे जन जाहि । परम परमा लहत ते जन देत यश बल दाहि ॥ किएँ [illegible] सम होय जन सु पवित्र । भूमिमें श्रमि सकल जैसें व्योम माहि सचित्र ॥ करत [illegible] सु पुरोगमें हैं धाम [illegible] । देवता अरु मनुज जेते सुमतिमान समर्थ ॥ देत हमकें

१०४० औरं जनम संहत उत्तम जोय । मनुज [illegible] पापकारिकै रहत नित्य [illegible]
१०५० के [illegible] सुरभिन्ह [illegible] अभिराम । आय भे तब तिन्हैं ब्रह्मा [illegible] तमके [illegible] ॥ [illegible]
सुरभीन्ह सों विधि जौन ईप्सित होय । माँगिए वरदान तुमकों देंउँगो मैं सोय ॥ [illegible]
भये ए सुरभिका सुह पाय । भई यह वरदान माँगति भई परम [illegible] ॥ करैं [illegible]
अरु लोकको उद्धार । हेतु यह वरदान हमको सुमहुं दुहिया उद्धार ॥ [illegible] सुरभीनके [illegible]
दुहित हर्षितहोय । [illegible] ऐसें दयो यह वरदान तुमको जोय ॥ परम पावन लोक [illegible]
करोगी उद्धार । [illegible] वरदान सुरभी उठी मुदित अपार ॥ [illegible] वरदानतें [illegible] भई
पावन धेन । श्रेष्ठ [illegible] कहत तिनकों तिन्हैं पूजत जेन ॥ प्रात उठि [illegible] करत
प्रणाम । पुष्टिकों ते होत प्रापित [illegible] रोग महान ॥ महा हूधो दुग्धवन्ती वत्स सहिता धाय ।
तुल्यवत्सा धेनु कपिला देत जौन सु छाय ॥ ब्रह्मलोकै माहिं ते जन पूज्य होय विभात । होतहैं
अवदात शोभा तौन निति सरसात ॥ तुल्यवत्सा [illegible] दुग्धवन्ती धर्म । शीलवन्ती
वत्स सहिता देत जौन सधर्म ॥ भास्करके लोकसे ते होत पूज्य सुजान । [illegible]
माँही परम तेज महान ॥ तुल्यवत्सा शीलवन्ती वत्सवन्ती [illegible] । [illegible] धेनुकों जे देतहैं
सुनु [illegible] ॥ पाय ते जन चन्द्रमाकें लोककों अभिराम । होतहैं अति पूज्य [illegible] परम
[illegible] ॥ तुल्यवत्सा श्वेतवर्णा दुग्धवन्ती नाम ॥ शीलवन्ती वत्स सहिता दिएं जो छविधाम ॥
होय सुरपतिलोकमाँही पूजनीय अमन्द । प्रशंसा सुर [illegible] आकी प्रभा [illegible] ॥
तुल्यवत्सा दुग्धवतिका शीलवतिका धर्म । वत्स सहिता धेनु [illegible] देत जौन [illegible] । होत [illegible]
लोक माँही प्राप्त जन तौन । देखि [illegible] कहतहैं बुध सुनउ नृप [illegible] ॥ धेनु [illegible]
फेण जैसी श्वेत अति अभिराम । शीलवतिका दुग्धवतिका [illegible] नाम ॥ तुल्यवत्सा धेनु
कों सह [illegible] दोहन पात्र । देत जेते [illegible] प्राप्त होत [illegible] ॥ [illegible]
वर्ष ताके होय । तुल्यवत्सा हर्ष सौमे होय ताकों [illegible] ॥ [illegible] उढायकै तिहि धेनुकों अभि
राम । देत जे जन [illegible] मे हैं धाम ॥ [illegible] तुल्यवत्सा [illegible] ॥ [illegible]
चार उढायकै तिहि धेनुकों सु अभर्म ॥ देत जे जन [illegible] ॥ [illegible]
कीसी [illegible] महाव ॥ होय [illegible] अभिराम । [illegible]
जाके नैन पीरे चारु सुषमा धाम ॥ [illegible] चार उढायकै
तिहि धेनुकों सु अभर्म ॥ [illegible]
परम [illegible] ॥ [illegible]
गुण [illegible] ॥ वत्स युत तिहि धेनुको [illegible] पितरके जनहोत [illegible]
तौन ॥ होय [illegible]

सत्तजुत कांस्यदोहनसहित जैसी गाय । दिएँ विप्रदेवको शुचि लहत लोक सबीय ॥ गोट श्रा०अ०
कर्षी कृष्णाजिनका मौक्तमुक्ता सच । तुल्यफलको ताहि कहिये नकसुखद कच ॥ देत जे जन कांस्य दा०ध०
दोहन सहित धेनि अभिराम । प्राप्त है वसुलोककों ते लहतहैं सुद भाम ॥ धाम्नु कम्बल की सु
बाछा होत जाके माहिँ । तुल्यफल होय जाके भेजतु कुच नाहि ॥ यहिविधि जैसी धेनु दीन्हें
विप्रकों अवदात । साध्य सुर जे लोककों ते प्राप्त होय विभात ॥ पोठि जाकी होय हढ अरु
होहि अंग सब मुद्द । होय कम्बल भार जाको मीजमव बल उद ॥ करि सुभूषित रत्नसों तिहि
वृषभकों अभिराम । देत जे ते लहतलोकहि लहतहैं बुधिधाम ॥ होय भारी अङ्ग जाको चारु
वैस नवीन । लहत अन गन्धर्वलोकहि दिएँ ताहि प्रवीन ॥ होय जिहँ बर वृषभको अति चारु
कम्बल खत्त । रत्नसों करि ताहि भूषित देत जे जन दत्त ॥ प्रजापतिके लोकमे ते प्राप्त होत सुजान
विगतश्रैके लोकसों ते लहत मोद महान ॥ रंहलहिं गोदानमे रत आन जन॰ अवदात । भानुसे
सुविमानपै चढि स्वर्गकों ते जात ॥ करति नाहि प्रसन्नहैं निति देवतनकी दार ॥ चाहि लोचन
कोरसों छबि करैं भाव अपार ॥ धेनुके अँग माहिँ जते होहि रोम सुवेष । स्वर्गमांहीं रहत
तेते वर्ष सुनऊ नरेश ॥ ◆◆◆◆◆◆ ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ ◆◆◆◆◆◆◆◆◆

दिवतेँ च्युत अब होतहै भूमि माहिँ तब आय । विप्र वर्णमे जन्मसो निश्चि दिन रहत सचाय ॥
किए धेनुके दानको जन जैसो फल लेत । धेनु दानसो और नहि भूपति सुनऊ सचेत ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञानुगामिना श्रीबन्दीजनकाशीवासि
रघुनाथकवीश्वरात्मजगोकुलनाथस्यात्मजगोपीनाथस्य शिष्येण मणिदेवेन कविना विरचिते भाषायां
महाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणि दानधर्मे षट्सप्ततितमोऽध्यायः ॥ ◆*◆*◆*◆*◆*◆

॥ * ॥ वसिष्ठउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

सुरभी प्रति कारिकै कथा रहो धाम मम माहिं । मै निशि दिन सुरभीनके रहो पावसो पाहिं ॥

॥ * ॥ अरिल्लछन्द ॥ * ॥

सुरभी पविरा और रही अन । धरै सर्वदा सुर जिनने छन ॥ सायंकाल अपै यहँ मच्चहि । तिमिहिँ
प्रात उठि होय सतचहि ॥ निशि दिन माहिँ किए जे अघ अति । ते सब छूटिजात ताको सति ॥
एक सहस्र देत गो जो जन । पावत सुर लहत स्वर्गते वो जन ॥ * ॥ तोमरछन्द ॥ * ॥ ◆◆*

एक लच्छ सुरभी आन । जन देतहै बुधिमान ॥ द्विज बोलि सादर मर्म । विधि सहित होय
अधर्म ॥ अरु होइ लोकदुअ जाय । सुर पास रहत अमोघ ॥ सम सुचि तारि कु लोकते मुनिकुल
लहिमौन ॥ यह दानको सबग्रन्थ बहि और दान अधर्म ॥ *◆*◆*◆*◆*◆*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

सुरभी जैसो सुरभिको वहँ जगमाहि विख्यात । वैर भयो नहि होय सो सुरभी सम अवदात ॥

शा०प० माता है सब जगतकी सबतें उत्तम धर्म। कीन्हें तिनको बन्दना अनघण होत सधर्म॥

दा०ध० धेनुदानफल कों कह्यो तुमसों हम एक देस। श्रेष्ठ और गोदान सम है नहि सुनऊ नरेस॥

॥ * ॥ मधुभारछन्द ॥ * ॥

॥ भीष्मउवाच ॥ ऋषिके सु बैन। नृप सुनति अन॥ मुनि भे सचाय। द्विजवर बुलाय॥ सुरभी सुढार। गुणकी अगार॥ भो सविधि देत। भे के सचेत॥ *◆*◆*◆*◆*◆*◆**

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशीवासिरघुनाथकवीश्वरात्मजगोकुलनाथस्यात्मजगोपीनाथस्य शिष्येण मणिदेवेन कविना विरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणि दानधर्मे गोप्रशंसायां सप्तसप्ततितमोऽध्यायः ॥*◆◆*

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

श्रेष्ठ कौनहै जगतमें अरु अति पावन कौन। कहहु मोहि श्रवणादिके सुनऊ तात बुधिभौन॥

॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

तिहुँ लोकनके माहिं सुरभी पावन परम है। सुरभी की सम नाहिं और कोय तिहुलोकमे॥

॥ * ॥ रामगीतीछन्द ॥ * ॥

नहुष भूप ययाति अरु वर मान्धाता भूप। निरन्तर गोदानकरिके सहित प्रेम अनूप॥ सुरनहूकों परम दुर्लभ जौन लोक सुहान। प्राप्त भे तिहि लोककों ते भरे मोद महान॥ धेनु दान प्रसङ्गमे हम और एक इतिहास। कहतहैं सो सुनऊ नृप तुम लाय मन बुधिरास॥ भए बूझत पितासों शुक सुमतिमान महान। कौन सो है श्रेष्ठ मख सब मखनमाहिँ सुजान॥ औ कहो किहिँ कर्मसों जन लहत उत्तम थान। स्वर्गको किहि कर्मसों सुर करत भोग सुहान॥ कहां थिति है यज्ञकी कहु मोहि तात प्रबन्ध। कहा उत्तम देवननको वस्तुहै अति खन्ध॥ अति पवित्र सु कहाहै सो कहौ हमकों तात। व्यास सुनि ए बचन सुतके कहत भे दृष्टांत॥ * ॥ व्यास उवाच ॥ * ॥ रचो पूरब प्रजापति गो सुनऊ सुत मतिमान। कामनाते गुरुकी करि दिए माहिं महान॥ **◆*◆** ॥ * ॥ परवाकुलकछन्द ॥ * ॥ ◆◆◆◆◆◆◆

करति भई आराधन विधिको। गहिके नेम कामना निधिको॥ तब प्रसन्न है ब्रह्मा आए। शृङ्ग दिए तिनको मन भाए॥ सुरभी शृङ्ग पायके नीके। मुदित भई अति मारीं हीके॥ विधिसों वर लहि होय सशृङ्गा। भई पवित्रा अति शुभअङ्गा॥ विधिवत तिन्हैं देतहैं जे जन। परम होत हैं सुकृती ते जन॥ *◆*◆*◆* ॥ * ॥ तोमरछन्द ॥ * ॥ ◆◆◆◆◆◆◆*

जहँ भूमि मणिमय चारु। वन बाग पर्ण सुढारु॥ वर जलाशय अभिराम। मणिकी सिढी सु ललाम॥ तिनमाहिं कञ्ज सुहान। शुचि रचे भूमि सुजान। बहु कल्पतरु अवदात। अति फूलि फलि सुविभात॥ गिरि हेमके सु अमन्द। मणिमुक्तमाल विमन्द॥ सरिता अनूप अनेक। कछ

बढ़ति अई सविवेक ॥ यह भांतिके जे लोक । तिनमाहिं होय अशोक ॥ सुरभीद जन अवदात । शां०प०
गिति रमत हैं सुनु तात ॥ * * * ॥ * ॥ अहीरछन्द ॥ * ॥ * * दा०ध०

सुरभीको जन जौन । सेवत हैं बुधिभौन ॥ तिनपै होय दयाल । सुखदा धेनु कृपाल ॥ दुर्लभ वर अभिराम । देती हैं बुधिधाम ॥ मनहूसों गो माहिं । करिय द्रोहको नाहिं ॥

॥ * ॥ रामगीतीछन्द ॥ * ॥

पीवै त्र्यदिन सुरभिकाको उष्ण मूत्र सुढार । उष्ण पयको पिवै त्र्यदिन सुनऊ बुद्धि अगार ॥ उष्णघृतको पिवै त्र्यदिन औ सु त्र्यदिन वायु । परम व्रत यह कहत हैं अवगाहि कै सुखदाय ॥ किएँ यह व्रत भोगते हैं स्वर्गको सुरसर्व । परम पावन है सुव्रत यह सुखद स्वच्छ अखर्व ॥ कढ़त गोमयमाहिं जे यव तासु भोज्य बनाय । खात जे जन सर्व तिनके महत अघ नशिजाय ॥ लहैं दानववृन्दसों सबदेव हारि महान । कियो यहव्रत नेम गहि कै सुनऊ तात सुजान ॥ लहे तिहिते दनुजगणसों फेरि श्रीति निखन्द । दिवऔको भए प्रापत छए भूरि अनन्द ॥ *

॥ ॥ जयकरीछन्द ॥ ॥

करि सुआचमन निर्मल होय । परम हर्षका हीमे भोय ॥ गज वृन्दके माहिँ सुजान । जपै गोमती मंत्र सुठान ॥ ब्राह्मण प्रज्ञावान अमन्द । ह्वैके निर्मल परम अदन्द ॥ धेनुमाहिं अरु पावक पाहिँ । अरु वर विप्र सभाके माहिँ ॥ मख सम मंत्र गोमती स्वस्त । शिष्यणको सु पढावै दस्त ॥ तीनराति व्रत करिकै पर्म । जपै गोमती मंत्र सधर्म ॥ लहै अपुत्री पुत्रहि चाह । औ धनको निर्धनी अथाह ॥ नारी पाय चाह भरतार । तिनहीं लहै अनन्द सुढार ॥ मानव लहैं कामना सर्व । करै जौन हियमाहिं अखर्व ॥ सेवनतें तुष्टित ह्वै गाय । देति कामना सर्व सचाव ॥ यह तुम निश्चय जानऊ तात । गोसम वस्तु न और विभात ॥ सुनि युक ए सुपिताके बैन । सुरभीपूजन लगे सचैन ॥

इति श्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञानुगामिना श्रीवन्दीजनकाशीवासि रघुनाथकवीश्वरात्मजगोकुलनाथस्यात्मजगोपीनाथस्य शिष्येण मणिदेवेन कविना विरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणि दानधर्मे अष्टसप्ततितमोऽध्यायः ॥ * * *

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ रामगीतीछन्द ॥ * ॥

कियो धर्मपुरीपको लक्ष्मी सुवेवत पर्म । सुनत यह हम सुनु पितामह सुमतिमान सुकर्म ॥ तात है यह भारि संशय करऊ सो तुम दूरि । आपुसो नहि और कोऊ हरण संशय भूरि ॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ कौ कहत हौं इतिहास एक सो सुनऊ छोडि प्रमाद । लक्ष्मी अरु गवनको तासोंहि है संवाद ॥ धारि वपु ये रमा सोभनमाहिं कीन्ह प्रवेश । भई सुरभी चकित ताको देखि रूप अशेष ॥ गोरुवाच ॥ कौन हवू देवि भारे कहातें भूमाहिं । सो हमारे हिय अचिरज

भा०प० रूप तेरो चाहि ॥ करति हैं हम परम इच्छा [illegible] तोहि । आपनो तू कहा हमको [illegible]

दा०व० सत्य हि ओहि ॥ * ॥ [illegible]ोवाच ॥ * ॥ [illegible] ॥ [illegible]

लोकमाहि। और नाहिं ॥ जो हमानि। रूप नाहि ॥ [illegible] ॥ मोद रूप [illegible] ॥

॥ * ॥ [illegible]छन्द ॥ * ॥ [illegible]

[illegible] ऐसा देव हैं ते नित्य मोदहि लेत । [illegible] ॥ वायु इन्द्र उपेंद्र और विचित्र ऐसी पर्म । सिद्धिको ते चहत हैं तिति [illegible] ॥ [illegible] होंत जिनमें करति मैं न प्रवेश । अर्थ धर्म सु काम मोसों विहि [illegible] ॥ [illegible] निज सुनऊ सुरभी सर्व । बसति जिनमें मैं सु तिनमें बसत मोद अपर्व ॥ [illegible]

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

इच्छा तुममें बसनको मैंहीं करति महान । [illegible] ॥

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

॥ [illegible]वाच ॥ कबहु थिरति तूं कबहू नाहिं । [illegible] ॥ [illegible] एक पै आति । ऐसी तो सुवाणि सरसानि ॥ याते चाहत ताको नाहि । [illegible] नाहिं ॥ रूपवती हम हैं सब देवु। का कारज है तोसों लेवु ॥ [illegible] ॥ [illegible] सर्व । [illegible] प्रज्ञावती [illegible] ॥ कहिवे योग्य नही ए बैन । [illegible] मोहि [illegible] ॥

॥ * ॥ चरणाकुलकछन्द ॥ * ॥

काहे [illegible] करति नहि मेरो । परम [illegible] मैं हरो । [illegible] ॥ [illegible] और पिशाच [illegible] ॥ [illegible] महत उग्रतप करि कै । [illegible] ॥ [illegible] लोक चराचरमाही । मैं हौं परिभव योग्या नाही ॥ * * ॥ * ॥ [illegible]

आन आन काहू पे सादर । आपुहि सो चाहि [illegible] निरादर ॥ [illegible] नियं । सो हम सत्य [illegible] जानिय ॥ * * ॥ * ॥ [illegible]वाच ॥ [illegible]

सुनऊ देवि हम करत अनादर तेरो नाहीं । [illegible] ॥ बरजति याते तोहि न आवऊ पास हमारे । [illegible] बारता लाल [illegible] नाहिं । अरे मन [illegible] सुनऊ सुरनि सब [illegible] नाहि मेरो आदर । [illegible]

॥ * ॥ [illegible]छन्द ॥ [illegible]

तुम सब दोऊ [illegible] । [illegible] ॥ [illegible] तुम । [illegible] तुम्हरो [illegible] ॥ [illegible]

॥ * ॥ मधुभारछन्द ॥ * ॥

सुनु सुरनि सबै सिव तात चवै । रक्षा हमार । कीजै हरार ॥ मा०५०

॥ * ॥ पत्तीपत्तीछन्द ॥ * ॥ दा०५०

कल्याण रूप तुम सुरभी सबै । चव मोर कारिबो है अबै ॥ तुमसौं सु नित्य पीवैं नाम । इच्छा सु धरति हम है महान ॥ * ॥ * ॥ परवाकुलकछन्द ॥ * ॥ * ॥

दर्शन पावनजनाहि तुम्हारे । आनि इच्छा भई हमारे ॥ तुम्हरे सव अङ्गनिकेमाहो । एक कुलिन आवो माहो ॥ आज्ञा देउ जिहिसु जगमाहो । धवियेकी हम वसैं तहांहो ॥ कमलाकी यह बानी सुनिकै । सबी सुरभी हीमैं गुनिकै ॥ कहति भई इमि बोली बानी । अतिहो करुणा रसवो सानी ॥ * * ॥ * ॥ दोहा अर्धचरण ॥ * ॥ * * *

करि कै देव कल्याण सब लिखे बास हियमाहिं । पावन मुख पुरीष हमारो याने संशयनाहिं ॥

॥ * ॥ तोमरछन्द ॥ * ॥

तिहिकोहि तू सु प्रवेस । करि है सुदेवि सुवेस ॥ श्रीउवाच ॥ तुम्हरी कृपा मुद्रित पाय । हम मद्र परैं संचाय ॥ हमसों कह्यो तुम आन । करि है सु अर्घहिं तान ॥ सुरभीनसा इमि बैन । कहि के रमा सुद पैन ॥ * ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ *

सब सुरभीनकी देव तें कमला अन्तरध्यान । भई तहां ही सुनऊ नृप प्रज्ञावान महान ॥

कही महातिम वर्षि के गोपुरीषको आन । फेरि महातिम कहत हैं सुरभिनको सुनु तान ॥

इति श्रीमन्महाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञानुगामिना श्रीवन्दीजनकाशीवासि रघुनाथकविकुलतनयगोकुलनाथपुत्रगोपीनाथस्य शिष्येण मणिदेवेन कविना विरचिते भाषायां महाभारते अनुशासनपर्वणि दानधर्मे एकोनाशीतितमोऽध्यायः ॥

॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ।

वेदीजनकी है इते वे बाहर विप्र बुलाय । तिनकों मिल्यहि यज्ञ है सुनऊँ प्रभु नरराय ॥

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

इमि सुनतमिन तीर्ते देति यज्ञ । सुनहु युधिष्ठिर भूपति प्रज्ञ ॥ याते यज्ञ मूल तूं जानि । सुरभि जिमि सब जगमानि ॥ सेवत इन्हें पुष्टिके काज । जर इनमानि पाय न्यराज ॥ प्रजा बिलखि सबभरनि । तोप सनीक्षण हे सुखधाज ॥ भई लोकउ परलोकउ नाहि । कोउ गज मूल कोउ नाहि ॥ परत नेह है लिनी उर । सुनहु भूप आगत धर धर ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

परमउत्तम कहत हौं सबै लोकहित बनाइ । प्रजाको यह इन्द्रको ताने है समाद ॥

॥ * ॥ रामगीतीछन्द ॥ * ॥

आ०प० दा०ध० पराजयमे दैत्यगनकी मन्न अरु सुर सर्व । उरग औ गन्धर्व किन्नर असुर तिनिहिं अखर्व ॥ गरुड नारद और ऋषि वर प्रजा मुदिता पर्म्म । काल कौनऊमाहि ए सब सुनऊ तात अभर्म्म ॥ रहे पूजत पितामहकों भरे हर्ष अपार । रहे गावत राग हाहा औ सु हूहू चारु ॥ करत हो तहँ प्राप्त भाइत फूल परम अनूप । ऋतुन्ह चारु सुगन्धकों बगराय राख्यो भूप ॥ चतुर्विधि जहँ रहे बाजा बजत अति अभिराम । रही नाचति अप्सरा रम्भादि गाय ललाम ॥ तिहि समैमे भए बूझत द्रुहिणकों सुरराय ॥ सुरराजउवाच ॥ हे पितामह रहो कौने हेतसों सुखदाय ॥ देवतनके लोक पै गोलोक है अभिराम । जानिवे यह भई मेरे हिए इच्छा माम ॥ ब्रह्म चर्य्य सु कियो को इन कियो है तप भूरि । सुरन ऊपर बास करि कै रहीं सुखसों पूरि ॥ * * * * * *

॥ * ॥ अन्तगुरुतोमरछन्द ॥ * ॥

सुनि बैन ए सुररायके । अतिहीं सुसंभ्रम भायके ॥ यहि भांति विधि कहते भए । सुर राजकी मतिसों रए ॥ * * ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ * * * * * नित्य अनादर तुम कियो सुरभिनको सुरराय । याते इनको महातिम जान्यो नाहीं जाय ॥ सुरभिनको परभाव अरु परम महातिम जौन । सो मै तुमसों कहत हों सुनऊ लाय मन तौन ॥

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

गोके पुत्रनसों अभिराम । कृषी करत हैं जगजन माम ॥ तातें विविधि बीज उतपन्न । होत औ सु जगमे बहु अन्न ॥ तिहितें प्रजा रहति मुद छाय । निश्चय जानऊ हे सुरराय ॥ तितिहिं मुनिनको करति निबाह । तिमिहि प्रजाको हे सुरनाह ॥ यातें बसिके धेनु बिभात । स्वर्गलोक ऊपर अवदात ॥ अमरन पर बसिवेको जौन । सुरभिनको कारण है तौन ॥ बर्नि कह्यो तुमकों हम सर्व । हे सुरपति सुखमान अखर्व ॥ जौन अर्थको गो भूमाहँ । आइ तौन सुनऊ सुरनाह ॥ पूर्व भयो वृत्तान्त सु एक ॥ कहत तुम्हे सो हम सविवेक ॥

॥ * ॥ रामगीतीछन्द ॥ * ॥

करत हो सुरराय रक्षा लोककी अभिराम । आय कै बलि दैत्यपति तहँ युद्ध रचि कै माम ॥ जीति रणमे अमरपतिको छीनि लीनो राज । अदितिके हियमाहँ तासों भयो दुःख दराज ॥ लखी कश्यपकों सु ऐसें कहन सो दुख छाय । हाय मोसों सुतन्हको दुख सह्यो नाहीं जाय ॥ अदितिके सुनि बचन कश्यप कहे ऐसें बैन । करु अराधन विष्णु प्रभुको चित्त लाय सचैन ॥ बचन कश्यपके सुन ए अदिति मुदसों छाय । करण लागी महत तपकों चित्त थिरिकै लाय ॥ अदिति की वर तपस्यातें व्है प्रसन्न अनूप । विष्णु आए गर्भमाहीं अदितिके मुद रूप ॥ अदितिको तप देखि सुरभी हर्ष हियमे छाय । करण लागी महत तपकों चित्त थिरिकै लाय ॥ शिखर पै

कैलास गिरिको जाय करिकै पर्म। एक पदसों होय ठाढी करि सुविक्त अभर्म ॥ सहस ग्यारह बर्ष कीन्हें महत तप अभिराम। तेजसों बड़ रयो ताको भयो तन अतिछाम ॥ सुनऊ ताके महत तपसों देवऋषि अरु दर्प। गए ताके पास मेरे साथ होय अदर्प ॥ देखि ताकों होय मोदित कियो पूजन तास। ता अनन्तर ताहि पूछत भए हम सउल्लास ॥ सुरभि काऊ किहिँ अर्थ यह तप कियो घोर महान। देखि तव तप भए हम परसन्न अतिहि सुठान ॥ मागु तूँ बर अबहिँ बांछित सुरभि सुनु तप धाम ॥ *॥ सुरभीउवाच ॥ *॥ कृपा जो है रावरी सो परम बर अभिराम ॥ जानती नहिँ तव कृपा सम और हम बरदान ॥ *॥ ब्रह्मोवाच ॥ *॥ कह्यो हम दर्मि सुरभिका के बैंन सुनि मतिमान ॥ काममासों रहित तेरी तपस्यासों पर्म। भए अतिहि प्रसन्न हम कहत तोहि अभर्म ॥ देहिंगे अमरत्व तातें तोहि बर अभिराम। बसोगी तुम लोक तीनऊँ उपरि सुरभि ललाम ॥ परम धन्या तव सुकन्या बसेंगी भू माहि। नसैंगे सब पाप जनके गए तिनके पाहि ॥ सुरनके अरु देवतनके भोग जे हैं सर्व। प्राप्त ताकों होहिंगे ते सुनऊ देवि अखर्व ॥ सुनऊ हे सुरराज सुरभी लोक अति अभिराम। जातिहै कबहूँ न तेहां मृत्यु वर बलधाम ॥ जरा औ सन्ताप तेहां कछु नाहि दिखात। तासु महिमा सर्व लोकन मांहि है बिख्यात ॥ परम दिव्य अरण्यहैं जहँ अशुभको नहि लेश। प्रसंशा नहि जाति ताकी कहों सुनऊ सुरेश ॥ ब्रह्मचर्य्य सु ब्रतसों अरु सत्यसों अभिराम। महत तपसों दानसों अरु पुण्यसों सु ललाम॥ तीर्थ सेवन किएतें अरु चारु कीन्हें कर्म। होतहै गोलोक प्रापित सुनऊ शक्र सशर्म ॥ अनादर सुरभीनको कबहूँ न करु सुरराय। करऊ आदर सर्वदा हैं गऊ अति सुखदाय ॥ तोमरछन्द ॥ *॥*॥*॥**

हमसों सु पूछो जौन। सब कह्यो तुमसों तौन ॥ भीष्मउवाच ॥ सुनि बैंन बिधिके पर्म। सुरराय होय अभर्म ॥ सुरभीनको सनमान। करिकै सु नित्य महान ॥ बिधि सहित पूजन कीन। सुनु पण्डुनन्द प्रवीन ॥ सुरभीनको अवदात। तहँ महातिम सुनु तात ॥ सब पाप मोचन पर्म। अतिहै पवित्र सधर्म ॥ *॥*॥*॥ *॥ दोहा ॥ *॥ *॥*॥*॥*॥**

तजि प्रमाद यहको पढत श्राद्ध माहिँ जन जौन। अम्र रहत ताके पितर नित्य सुनऊ बुधि भौन ॥
जो जो इच्छा करतहैं गोके भक्त सुजान। सिद्धि होत ते हैं सुनऊ हे भूपति मतिमान ॥
गो सेवातें लहतहैं सुत अर्थी सुत स्वच्छ। कन्या अर्थी लहतहैं कन्या हे नृप दच्छ ॥
धन अर्थी धन लहतहैं धर्म सु अर्थी धर्म। बिद्या अर्थी लहतहैं बिद्या उत्तम पर्म ॥
आनँद अर्थी लहतहैं आनन्दको अवदात। दुर्लभ गोके भक्तको कछू नहीं है तात ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञानुगामिना श्रीबन्दीजनकाशीवासिरघुनाथकवीश्वरात्मजगोकुलनाथस्यात्मजगोपीनाथस्य शिष्येण मणिदेवेन कविना बिरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणि दानधर्मे अशीतितमोऽध्यायः ॥ *॥*॥*॥*

शा०प०
दा०ध०

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ रामगीतीछन्द ॥ * ॥

कह्यो विधि गोदान करिबो नृपनकों सु विशेश । सुन्यो तुमसों तौन हम सब सविधि सुनउ नरेश ॥ नृपनकों नहि होति बऊधा प्राप्त शुभगति पर्णहीन पावन भूमि गोको किए दान सधर्म ॥ सत्यहै सो कह्यो दानिशों भूप नृग अवदात । यो कह्योहै परम ऋषिवर नाचिकेत सु तात ॥

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

सब यज्ञनके माहीतात । भूमि हेम सुरभी अवदात ॥ होत दक्षिणा कहत सुजान । तिनके माहि सुनऊ मतिमान ॥ सुनत सु हेम दक्षिणा श्रेष्ठ । सो किमि कहिए आपु यथेष्ठ ॥ कौन वस्तु है सुबरण भूप । भो किहिविधि उतपन्न अनूप ॥ कौन देवता कोहै तात । किएदान ताको अवदात ॥ मिलत कहाफलहै अभिराम । बर किमि उत्तमहै यह नाम ॥ हेमदानकी अतिहिं महान । करत प्रशंसाहैं मतिमान ॥ गो भू तें यह पावन पर्म । कौन हेतुसों भयो सधर्म ॥ मखके माहि दक्षिणा तासु । किमि प्रशस्तहै कऊ बुधिरासु ॥ भीष्मउवाच ॥ याहि जानिबेको जोहेतु । है बिस्तरित महीप सचेत ॥ सुबरणकीउत्पतिहै जौन । अरु मोकों भो अनुभव तौन ॥ तुम्है कहत हो मै नरराय । सुनऊ चित्त थिर करिके लाय ॥ * * * ॥ अरिलछन्द ॥ * * * *

पिता हमारे शान्त भए जब । गो हरद्वार श्राद्धकीबें तब ॥ तहाँजाय कीन्हो आरम्भहि । श्राद्ध कर्मके तजिके दम्भहि ॥ तब सुरसरिता मात हमारिय । कारती भई सहाय सुढारिय ॥ तदनन्तर हम हर्षित ह्वै कारि । अतिहि शान्तिता हियरेमें धरि ॥ आदर करिकै बऊत सु ऋषिबर । श्राद्धमाहि बुलवाय सुमतिधर ॥ जलदानादि कार्य जो है बर । कियो तास आरम्भ सुमति धर ॥ करि समाप्त हम पूरवकर्महि । हियरें धारि श्राद्धके धर्महि ॥ लागे पिण्डदान दीबें अब । तहाँ एक आश्चर्य भयोतब ॥ भूषणसों भूषित अति सुन्दर । सुनु नृप पिता हमारेको कर ॥ निकसत भयो सुदर्भ भेदि करि । ताहि देखि हम बिस्मयकों धरि ॥ ह्वै असमंप जानिकै अद्भुत । बऊत बेरलों चाहि रहे सुत ॥ तदनन्तर हमकरिकै चिन्तन । संज्ञा सहित कियो अपनोमन ॥ दीजै पिण्ड सु पितरहस्त महि । यह विधि है बरबेद बिहित नहि ॥ पिण्डदान दीजै कुश ऊपर । बेद बिहित यह शुचि बिधिहै बर ॥ ॥ * ॥ चरणाकुलकछन्द ॥ * ॥

यह बिचारकों होमे धरिकै । पितु करको सु अनादर करिकैं ॥ पिण्डदेत भो कुशके माहीं । पितुकर देखि परयो तब नाहीं ॥ ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

तदनन्तर मोहि स्वप्नमे मो पितु परे सु देखि । कहत भए ऐसे बचन धर्म सु मेरो पेखि ॥
सुनहु तात तव ज्ञानसों मै प्रसन्न भो पर्म । शास्त्र प्रमाणहि मानिबो तौन श्रेष्ठहै धर्म ॥

॥ * ॥ रामगीतीछन्द ॥ *

धर्मको अरु बेदको अरु शास्त्रको अभिराम । पितामह अरु गृहस्तिनको दयको सु ललाम ॥

पितरको। अरु ऋषिन्हको परमान राख्यो तात। सुनहु यातें मोहि एमे प्रेम तव सरसात॥ रहो ऐसो ज्ञान तरे हिए माहि सदाहि। क्रिया लखिकै याहुको सुखभयो मो हिय माहि॥ देतहौं उपदेश तोकौं एक मैं हे तात। मिलैगो उपदेशसों तिहि तेहि फल अवदात॥ हरननाको गऊके अरु भूमिके अभिराम। देहु सुवरण सुनहु सुत तुम महत मेधाधाम॥ प्रेमसों यहि नेम कीन्हे हेमको शुचिदान। सर्व पावन होहिगे मम पितामह मतिमान॥ ********* भा०प० दा०ध०

॥ * ॥ तोमरछन्द ॥ * ॥

जन जौन सुवरण देत। विधिसौं सु होय सचेत॥ दश पुरिष तारत तौन। सुनु तात बर बुधिभौन॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

तदनन्तरमे आनिकै विस्मित होय सुजान। सुवरण दानहि करत भो मतिसौं सविधि महान॥
यह प्रसङ्गमे कहतहौं और एक इतिहास। अति पावन प्राचीन है सुनहु तौन बुधिरास॥

॥ * ॥ पञ्झटिकाछन्द ॥ * ॥

ऋषि परस एकइस बार। कीन्ही निचत्रिया भू अपार॥ बलसौं अखर्व सब भूमि जीति॥ हय मेध कीन्ह गहिकै सुरीति॥ ****** ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ ********

अश्वमेधके सुफलसौं रहित पापसों पर्म। होत भयो यमदग्निसुत भूमिप सुनो सधर्म॥
तदनन्तर बर ऋषिन्हकों अरु देवनकों नाम। पूछत भो यमदग्नि सुत यहि विधिसों बुधधाम॥
उग्र कर्म्म जे नरनके तिनमे पावन कौन। कहो मोहि अवणाहिकै सर्व आपु बुधिभौन॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

परशुरामके बैन सुनिकै सर्व महान ऋषि॥ सुनहु तात बुधिऐन कहत भए ऐसे बचन॥

॥ * ॥ आभीरछन्द ॥ * ॥

बिप्रणको सतकार। कर्म्मनमाहि सुढार॥ है अति पावन कर्म्म। निश्चय जानु अभर्म॥
कर्म न ताही नाम। कर्म जौन अभिराम॥ ते पुनि पूछोराम। बिप्रणसौं बुधधाम॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

परशुराम ए ऋषिन्हके सुनिकै बचन सुढार। ऋषि अगस्त्य सु बसिष्ठ अरु काश्यपकौं सु उदार॥
पूछत भो ऐसे बचन कोशल कहिकै पर्म। जन पावन किमि होतहै कहिए आपु अभर्म॥
करो अनुग्रह आपुऔ मोपै परम महान। तौ कहिए किमि होऊंगो मै पावन मतिमान॥

॥ * ॥ छप्पयछन्दः ॥ * ॥

भूमि गऊ अरु वित्तको दीन्हे दान ललाम। पापी पावन होतहैं सुनतेहैं हम राम॥
औरऊ पावन होनको सुनत परम हम हेत। सो तुमसो हम कहतहै सुनिए होय सचेत॥

श्लो०५०
दो०४०

॥ * ॥रामगीतीछन्द ॥ * ॥

दिव्य बहुत रूप पावक सुबन अति अभिराम । लोकमे विख्यात ताको नाम सुबरण नाम ॥ विधिको सुम धाम मे जो किये ताको दान । और याके दान सम नहिं दान है मतिमान ॥ अग्नि ते उतपन्न सुबरण भयो है हे राम । नहा याते तेजके पद हेतुने अभिराम ॥ देवता पितु मनुज राक्षस उरग जो गन्धर्व ॥ शुद्ध ह्वैके ताहि धारत जो पिशाच अखर्व ॥ महिदि भूषण विविधि विधि के करके अवदात । देवतादिक सर्व निज निज लोक मांहि विख्यात ॥ देवतादिक सर्व याको धरत शिरपर पर्व । हेम याते है पवित्रन ते पवित्र सधर्म ॥ यंक याको हेतु को है भूमि गो ते हेम । है प्रथम सुदक्षिणा मे देत जन गहि नेम ॥ सविधि जो जन देत सुबरण प्रेम गहिके नाम । सर्व दानहिं कियेको फल लहत ते जन राम ॥ महामुनि पुनि कहतहैं मै हेमको अभिराम । सुनहु सो तुम राम भृगवर धाम परम ललाम ॥ सुन्यो हम सु पुराणमे यह कहत मुनिवर सुजान । भूमिधर हिम वान पर शिव शिवाको सुखदान ॥ व्याहके पश्चात जब भो समागम सह प्रीति । भए व्याकुल देव सब तब शंभु पास सभीति ॥ देखि बैठे दुहुनको सब देवलोक नवाय । पेखिके हमि भए कहते शम्भुको सुखदाय ॥ तपस्वी हो आपु तैसो तपस्विन्या गोरि । जेउ तुम दोउनको शक्ति कहत हम कर जोरि ॥ होयगो बलवान तुम्हरे पुत्र परम महेश । तौन हनिहै लोक तीन उ राखिहै नहिं शेष ॥ सुनहु याते अपत्यारथ तेज जो है पर्व । रहो रोके नाहि करिकै कृपा आपु सधर्म ॥ अपत्यारथ तेज ताको रोकिहो जौ नाहि । होयगो सन्ताप तौ अति लोक तीनहु मांहि ॥ करैगो सुर पराजयको आपुको सु अपत्य । कहत हम अबनाहिके ध्रुव मानिए न असत्य ॥ धारि सकत न तेज तव भू औ न स्वर्ग अकाश । सुनहु तातें तेजको परभाव तव सुदराश ॥ जारि डारिहै सर्व जगतहि महत हे भूतेश । तेज तातें रोकिए निज परम यश विशेष ॥ होय देवी माहिं जिहि तें पुत्र तुम्हरे नाहि । कहे देवन्ह बैन ऐसे बैठि शिवके पाहि ॥ बचन सुनि ए प्रभु वीरजहि लियो ऊर्ध चढ़ाय । उर्ध्वरेता भए तबसों शम्भु जन सुखदाय ॥ करि सु गिरिजा कोप सन्ततिको भएँ उच्छेद । देवतन्हको कहे निष्ठुर वचन होय सखेद ॥ कियो मम सु अपत्यको उच्छेद तुम सुर वृन्द । सुनहु तातें तुमहूँ तिनरे लहोगे नहि मन्द ॥ दियो गिरिजा शाप यह जब सुरनको जानि मान । तबतें तौने कालमे नहि तहां पावक राम ॥ शापतें गिरिसुताके सब देवता अभिराम । रहित सन्ततिसों भए सुनु राम मेधाधाम ॥ ऊर्ध्व धारण करत भे जब तेजको शिव काम । निकसिके कछु तेज तब शिव अङ्गतें हे दक्ष ॥ भूमिकामे अपि माह्वों गिरत भो सो पर्व । तेज माह्वो पूत ह्वैके तेज तौन सधर्म ॥ अग्नि कारण ताहि आपित भयो होत प्रकाश । समय ताअहि माहिं सब शक्रादि सुर अभिराम ॥ भए पीड़ितघोर तारक दैत्यसों बलवान । रहत नहि कोउ सकत ताके अयमे सु महान ॥ अश्विनी सुत रुद्र मारुत भानु जो वसु आठ । पराक्रम तें दैत्यके हन

कह्यो सबहित कछ ॥ छीनि लीन्हें देवतनके थान औ सु विमान। तिन्हिहँ आश्रम छीनि लीन्हें भा॰अ॰
ऋषिन्हके बलवान॥ इन्द्र आदिक देवता यह कही जे वे सर्व। भए आपत विधाता पै होय दीन
अखर्व ॥ जोरि करिके विधाताको कहत भे इमि बैन। बली तारकदैत्य हमको किए परम अचैन॥
करउ रचा हमारी तुम मारि अरि कै ताहि । करउ दाया हमारी तुम दीनजनको चाहि ॥
॥ ब्रह्मोवाच ॥ सुनउँ मैं तो जानतो हौं सर्व भूत समान । होयगो तातें न मोतें वध सु पाप
महान॥ करो तारकदैत्यको वध तुमहि मिलि कै सर्व । होउ अहित नेकु मति तुम हौ सबल
अखर्व ॥ देवाऊचुः ॥ देव और अदेव राक्षस वर्त्तमान जितेक। सबके कबहुँ नाहि मोको मारि
सकै तितेक ॥ दैत्यतारक आपुसों माग्यो सु यह वरदान । दयो करि कै कृपा तब तुम ताहि
सुखद महान ॥ सुनउँ तातें तार कहि हम जीति सकि हैं नाहिँ। कहत हैं हम आपुको वरदान
गुणि हियमाहिँ॥ पूर्व हमको प्रजाको उछेद कीन्हो पर्व। दयो गिरजा शाप करि कै कोप सुनउँ सगर्व॥
होति सन्तति नाहि तातें हमारे लोकेश । ब्रह्मोवाच । दयो गिरजा शाप तुमको करि सु क्रोध
अशेष॥ हुतो तौने कालमें नहि तहां पावक पर्व। करै सो उतपन्न तातें बली पुत्र सधर्म ॥ अधिक
सबते होय सो सो गुणनसों अभिराम । सुरनके जे शत्रु तिनको मारि है सो नाम ॥ उई धारत
तेज शिवको कछु पावकमाहि । गिरो है सो लियो पावक चाहि करि कै ताहि ॥ अग्नि तौने
तेजसों सुरसरीमाहि अमन्द। भरो तेजस भानुसो उतपन्न करि है नन्द ॥ अग्निको नहि भयो
शापत शाप हे सुरवृन्द । देवभयहर होयगो तिहिते सु ताके नन्द ॥ अबहु सुरसब ज्वलन है
कहँ करहु तासु तलाश । जाय ताके पास तुम यह कहो कारण खासु ॥ दैत्यतारक बधनको
यह है उपाय सु आन। कही हम यथगाहि करि कै सर्व तुमको तान॥ कहे औ यह सर्व तुम है
अमिह तौ देव । शाप गिरजाको न लाग्यो याहि क्यों कछु भेव ॥ सुनहु तौ मैं कहत हौं यह
हेतको अभिराम। शाप तेजस्वीनको जो क्रोधसों अतिबाम ॥ लगत तेजस्वीनमें नहि जानु निश्चय
पर्व। नेकु संशय है न यामें कहत होय अधर्म॥ अग्निको सु तलाश शीघ्रहि करो तुम सुर सर्व ।
कामनाको सिद्धि करि हैं तुम्हारी सु अखर्व ॥ सर्व देवत विधाताके परम सुनि ए बैन।
खोजिबेको उतायलको चले होय सचैन ॥ तत अनन्तर सुरन सह ऋषि सर्व लोकन्हमाह।
भए फिरते अग्निकाजै भरे अतिहिँ उछाह ॥ आपुहो ने शाप जोहै अग्नि ताको नाहि । सबके
आनि सु फिरें ढूँढत सर्व लोकन्हमाहिं ॥ तपित पावक तेजसों मण्डूक एक अखर्व । अग्नि
दरशन लालसासों युक्त सुर ऋषि सर्व ॥ देखि सो मंडूक तिनको कहत भो इमि बैन। बसत
है पातालमें शिखि किए अपने चैन ॥ तपित ताके तेजसों हम होय कै सु बिहाल। भाजि
आए भूमि ऊपर छोड़ि कै पाताल॥ नाहि देख्यो चहत हौ तौ जाउ सब तुम तत्र । जात हैं

आ०प० हम अग्नि भयत रहे मैं नाहिँ अब ॥ कहि सु मण्डुक बचन ये सुर ऋषिन्हको अभिराम । त्वरित
दा०ध० ही सक्रोध करतो भयो अग्नि नाम ॥ आनि कै मण्डूककी चूगलीहि पावक उद्ध । देत भो यह
श्राप भेकहि महत करि कै क्रुद्ध॥ आनि है जिह्वा न तेरी रसनको अवदात ॥ श्रापसों करि युक्त
भेकहि भयो त्वरितहि जात ॥ आपुकों सु छपायवेकों कियो अन्तहि बास । तत अनन्तर सुनऊँ
हे धनदग्निसुत बुधिरास ॥ आय मण्डुक सुरन पै यह कहत भे वृत्तान्त । सुरन सुनि इमिकह्यो
भेकहि कृपा करि सु नितान्त ॥ ❁❁❁❁*॥ दोहा ॥*❁❁❁*❁❁*❁*❁*

रहित भई रस ज्ञानसों तव जिह्वा अभिराम । उह कुद्ध यह अग्निको लहैं श्राप अतिमाम ॥

॥ * ॥ अरिल्लछन्द ॥ * ॥

तवऊँ बहुविधा वाणी कों वर । बोलेगी जिह्वा तव दर्दुर ॥ सब सुर ऋषि कहिकै इमि भेकहि । भोजन लागे पुनि सविवेकहि॥ कछू दूरि जब गे ऋषि अब सुर। मिल्यो द्विरद एक तासु महत उर ॥ ऐरावतहूतें अति सुन्दर । चकित भयो लखि ताहि पुरन्दर ॥ कहत भयो ऐसें सो मदधर । अग्नि दरुमाहिँ रहत है शिखि बर ॥ * ॥ दोहा बरवा ॥ *❁*❁******

द्विरदहूकों तब श्राप दियो यह अग्नि क्रोध करिउद्ध।होय जायगी उलटी जिह्वा सब द्विरदनकी शुद्ध

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

श्राप देय यह द्विरदकों गयो समीके मांहि । तदनन्तर पुनि सो द्विरद गयो सुरणके पांहि ॥

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

कह्यो श्रापको सब वृत्तान्त । दीन होय कै द्विरद नितान्त ॥ सो सुनि कै ऋषि देवत सर्व । तास समुझि उपकार अखर्व ॥ देत भए जो बर बरदांन । सुनऊँ तौन तुम राम सुजांन ॥ * ॥ देवाऊचुः ॥ * ॥ उलटी जिह्वाहूसों धाय । करि हो भैगज सर्व अहार ॥ मन्द होयगो नव अतिउद्ध । यह बर दे निर्जर ऋषि शुद्ध ॥ ❁ ॥ दोहा ॥ *❁*❁*❁*❁*❁*❁**

लगे अग्निके खोजमे गए कछू अब दूरि । मिलत भयो तब एक शुक परम बुद्धिको भूरि ॥

॥ * ॥ मौक्तिकदामछन्द ॥ * ॥

शुकउवाच ॥ * ॥ लख्यो हम बन्हिँ समी द्रुममाहि । लखो अबहीं चलि कै तिहिँ पांहि ॥ कह्यो ऋषि देवनकों शुक पर्न । सुने सब देव भए सह धर्न ॥ गयो शुक यों कहि कै कछु दूरि । मिल्यो तहं अग्नि भरो क्रुध भूरि ॥ दयो शुककों यह श्राप महान । तुँ होऊ सु वाकविहीन अजांन ॥ सु पावकको लहि कै यह श्राप । मलीन सु होत भरो दुख दाप ॥ गयो तदनन्तर देवन पास । ह्यो सुरसों सब श्राप प्रकाश ॥ दयायुत ह्वै तब देवन सर्व । दयो बरदान सु एह अखर्व ॥ सुनो शुक तो बर वाक सुठान । न होय हि नष्ट नितान्त सुजान ॥ सबै पण्माहि सु तो बर बैन । बनो हि है कल्य अद्भुत अैन ॥ सु दै बरदान शुकै यह सर्व । समी महि देखत भे सु अखर्व ॥ पलो

जाहि अग्नि सनीतरमाहि । लखैं ऋषि औ सुरवृन्दहि पांहि ॥ भयो अति पीड़ित पावक पर्म । आ०प०
सुनो ऋषिराय महान अभर्म ॥ कह्यो तदनन्तर यों सु कृशान । कहौ तुम आगम हेतु महांन ॥ द०अ०
सुने यह पावकके वर बैंन । सबै सुर औ ऋषि होय सचैंन ॥ भए कहते इमि बैंन सुठांन । सुनो
ऋषिराय महान सुजान ॥ ❋ ॥ ❋ ॥ सोरठा ॥ ❋ ॥ ❋ ❋ ❋ ❋ ❋ ❋
करिबेकों एक काज कह्यो चहत तुमकों सु हम । कारज तौंन दराज तुम हीं करिबे योग्य हो ॥
कीन्हें कारज तौंन तुमऊँ कों सुख होय गो । ऋषि अरु सुर बुधिभौंन कहत भए इमि अग्निसों ॥

॥ अग्निरुवाच ॥ दोहा ॥

कहिहौ कारज जौंन तुम करिहैं सो हम सर्व । कहो कृपा करि शीघ्रहीं करऊ न देर अख ॥

॥ ❋ ॥ देवाऊचुः ॥ ❋ ॥ तोमरछन्द ॥ ❋ ॥

एक दैत्य अति बलधाम ॥ तिहिको सुतारक नाम ॥ अति पराक्रम तिहिँमाहि ॥ सम तास कोऊ नाँहि ॥

॥ ❋ ॥ आभीरछन्द ॥ ❋ ॥

ताहि बधन काज । तेजस भरो दराज ॥ परम बीर बलवान । महा बाऊ मतिमान ॥

॥ ❋ ॥ दोहा ॥ ❋ ॥

करऊ पुत्र उत्पन्न तुम औसो होय कृपाल । तासों ऋषि अरु सुरणको साध्वस मिटै बिशाल ॥

देवता अरु ऋषिन्हके सुनि बैंन पावक पर्म । जाय सुरसरिमाहि मिलि सो सुनऊँ राम सधर्म ॥ तेज धरतो भयो शिवको परम उग्र अमन्द । गर्भ सो भो सुरसरीमे सुनऊ ऋषि निरद्वन्द ॥ बढन भे सो गर्भ अतिहीं परम उग्र अनूप । सहो सकी नहि तेज ताको सुरसरी सुदरूप ॥ बिह्वलों अति होय सुरसरि कह्यो औसें बैंन । स्वस्थ मेरो चित्त है नहिँ सुनऊँ तेजसऐंन ॥ प्राप्त भो यह गर्भसों अति दुखः मोकों नाम । तजति हौं मै अबहिँ यातें याहि पावक आम ॥ बैंन सुनि ए सुरसरीके कह्यो इमि सुकृशान । करऊ धारण तजऊ मति तुम गर्भकों गुणवान ॥ रह्यो पावक बरज तै सुरसरी मान्यो नाहि । डारि दीन्हां गर्भकों बर मेरुगिरिके माहि ॥ भयो पूछत सुरसरीकों तब कृशान अनूप ॥ गर्भको है बर्ण कैसो औ सु कैसो रूप ॥ तेज है तिहिमांहि कैसो कहो यह सब मोहि । सुरसरी तब कहन लागी अग्नि सोहैं जोहि ॥ ❋ ॥ गंगोवाच ॥ ❋ ॥ तेजसों है लसत तमसो बर्ण सुन्दर तास । बिमल ताको रूप है अति भरो परम प्रकाश ॥ कदम्बनके फूलकीसी गन्ध जामे पर्म । सुरसरी इमि कह्यो शिखिसों सुनऊ राम सधर्म ॥ परो जिन जिन पदारथ पर तासु तेज अखर्व । परम कंचन भए तेते पदारथ बर सर्व ॥ लोक तीनऊमाहि फैल्यो तासु तेज बिलन्द । रूप जैसो है तुम्हारे नन्दको सु अमन्द ॥ सुरसरी इमि अग्निसों कहि भई अन्तर्ध्यान । गयो अग्निऊ देवननको करि सु काज महांन ॥ कर्म यहि सों भयो शिखिको हेम रेता नाम । भई पुऊमी बसुमती सुनु राम ऋषि अभिराम ॥ ❋ ❋ ❋ ❋ ❋ ❋ ❋

आ०प०

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

दा०प० गर्भी सुरशरीरसों तजित धरके बनमे पर्म । बढत भयो अद्भुत सुनजा ऋषिवर राम अधर्म ॥

॥ * ॥ पज्झटीछन्द ॥ * ॥

कृत्तिका सकल तिहिँको सु देखि । लीन्हो उठाय अति बाल लेखि ॥ निज सु स्तनको वर पय पियाय । पोषति सु भईन्हे के सचाय ॥ भो कार्त्तिकेय तनसों सु तौन । सुनु परशुराम ऋषि सुमतिभौन ॥ उतपन्न भयो यहिविधि हिरन्य । तिहिमाहि जाम्बुनद सो न अन्य ॥ हैं तासु देव शिव औ कृशान । तिहितेंसु हेम महिमा महान ॥ * ॥ वशिष्ठउवाच ॥ इतिहास और हम कहत पर्म । सुवर्ण प्रसङ्गमे सुनु अभर्म ॥ आचरण द्रुहिणको जो ललाम । वृत्तान्त तासु तिहि माहि नाम ॥ एकसमयमाहि शङ्कर सधर्म । वपु धरयो वरुणको सुनु अभर्म ॥ तिहि समयमाहि मुनि महत सर्व । अरु द्रुहिण आदि देवत अखर्व ॥ सब मुदित भए शिव पास जात । सुनु सुमति नाम यमदग्नि तात ॥ चारौ सुवेद वर मूर्त्तिमान । अरु अङ्ग सर्वमखके सुजान ॥ ओंकार मंत्र अरु वषटकार । भे मूर्त्तिमान सुषमा अगार ॥ ए शम्भुपास भे जात सर्व । इन सबनको सु आदर अखर्व ॥ कीन्हों गिरीश भगवान पर्म । सुनु परशुराम ऋषिवर अभर्म ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

विरच्यो तौन हि समयमे यज्ञ शंभु भगवान । शिव प्रभावसों यज्ञ सो शोभित भयो महान ॥

॥ * ॥ रामगीतीछन्द ॥ * ॥

आवते तेहि यज्ञमे भे दिशा औ दिगपाल । देवमाता देवकन्या औ वरा सुरबाल ॥ महत मुदसा भरीं आवति भईं मखके माहि । शम्भुको करि दरश सबही भईं बैठति पाहि ॥ रजोगुण उतपन्न भो हियमाहि विधिके पर्म । देखि के तिनसबनकों सुनु रामसु ऋषि सधर्म ॥ गिरए लागो वीर्य्य तातैं द्रुहिणको सुपधाम । गिरो जेतो भूमिमाहीं वीर्य्य परम ललाम ॥ दयो पूषा होमि ताकों सहित धूरि उठाय । अग्निके वर कुण्डमाही सुनज सुऋषि सचाय ॥ भए तातैं ऋषभज औ जरा युज अभिराम । तिनिहि खेदज अण्डजौ भे होत परम ललाम ॥ तत अनन्तर गिरो बङ्कतहि वीर्य्य विधिको पर्म । ताहि गिरत हिँ लयो सुर वामहि द्रुहिण सधर्म ॥ होमि दीन्हौं ताहि घृतवत मंत्र पढि के पर्म । तमोगुण भे होत ताके तेजतें सु सधर्म ॥ सत्वगुण भो तिनिहि ताते भरो तेज महान ॥ सत्वे गुणतें होत भो आकाश महतसुजान ॥ होतभे आकाशतें सब वायु आदिक भूत । तास धी सब तमोगुणतें भए परम अकूत ॥ भए होमत अग्निमे जब वीर्य्यकों लोकेश । तीन पुरुष सु होत भे तब सुनज सुऋषि सुवेश ॥ ज्वालतें भो होत भृगुवर भरो तेजस पर्म । अङ्गिरा अङ्गारत भो होत स्वच्छ अभर्म ॥ अल्प ज्वालाके अँगारेतें भयो कवि खास । भो मरीच सु मरीचीतें अग्निकी सुनु दास ॥ भयो ताके सुवन कश्यप भुवनमे विख्यात ॥ भए कुश समुदायते सब बालखिल्य विभात ॥

भए अचिकृ दर्भके समुदायते अभिराम । भए भस्म समूहते बरबालप्रख्य ललाम ॥ भए शिखिके अमृतहे दुग्धोदस सुबेश । स्वरणते उतपन्न भे बर प्रजा पति जे सेश॥ स्वेदतें भो बेद अरु भे रोमतें ऋषि पर्म्म । भयो वलतें होत मन सुनु परशुराम सधर्म्म ॥ भयो लोहित वर्णतें उत्पन्न सुबरण तात । तास महिमा सर्वलोकनमाहि है विख्यात॥ ता अनन्तर वरुण बपुधरि शम्भु आंनद ऐंन । मुदित ह्वैकै देवगणकों कहत भे इमि बैंन ॥ आ॰प॰ दा॰ध॰

॥ * ॥ तोमरछन्द ॥ * ॥

यह दिव्य यज्ञ हमार । अंह तीन पुत्र सुढार ॥ सुनि अग्नि ए बर बैंन । इमि भयो कहत स चैन ॥ मम अङ्गते अभिराम । उत्पन्न भे सुत श्याम ॥ अरु मम हिँ आश्रय कर्न । नहिँ अन्य आश्रय धर्न॥यहिते सु हैं मम नन्द।शिव कहत झूठ बिलन्द॥इहिंके अनन्तर पर्म्म।इमि कह्यो द्रुहिण सधर्म॥

॥ * ॥ अरिल्लछन्द ॥ * ॥

हमहीं हैं सु यज्ञके कारक । सुनहु देव सब आंनदधारक ॥ हमहीं है अरु शुक्र होम कर॥ यातें मेरे हैं ए सुत बर ॥ शुक्रहि है सन्ततिको कारण । तुम्है कहत हौं करि निरधारण ॥ जासु होय बीरज फल सो इय। लहै न और दूसरो कोइय ॥ सर्व देव बिधिकी बांणी सुनि। कहत भए बिधिकों इहि बिधि गुनि ॥ जग सब महत चराचर मय बर।अरु हम हैं आपुहिके सुदधर ॥ तातें कह्यो हमारो मानहु । आपु नेकहू हठ मति ठानहु ॥ बरुण रूप शङ्कर अरु पावक । तिन्हैं देहु ए सुत तुम चावक ॥

॥ * ॥ तोमरछन्द ॥ * ॥

सुनि देवतन्हके बैंन । बिधि परम आंनद ऐंन ॥ इमि कह्यो तिनकों जोय । कहिहौ सु करि हैं सोय ॥ तब बरुण बपुधर शर्व । सुनु राम सु प्रताप अखर्व ॥ बिधिको सु शासन पाय । अति हर्ष हियमे छाय ॥ सुत ज्येष्ठ भृगुबर ताहि । शुचि भए लेत सु जाहि ॥ अरु आंगिरसकों स्वच्छ । शिखि भयो लेत प्रतच्छ॥कबिकों लिये सह प्रेम।बिधिलोक नाथ सनेम॥शिव बरुण बपुधर पर्म । भृगुको सु लीन्ह सधर्म्म ॥ तिहि ते सु बारुण नाम । भृगुको भयो बुधिधाम ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

अग्नि अङ्गिरसको लयो आग्नेय भेसु नाम । भयो अङ्गिरसको सुनहु परशुराम ऋषिमाम ॥

॥ * ॥ आभीरछन्द ॥ * ॥

ब्रह्मा कबिको लीन । सुनु ऋषि परम प्रवीन ॥ तातें ब्राह्म सुनाम । कबिको भयो ललाम ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

ए तीनो हैं प्रजापति सर्व सृष्टिके हेतु । इनतें औंन अपत्य भे ते अब सुनहु सचेत ॥

अ॰प॰ ॥ * ॥ अरिलछन्द ॥ * ॥
८५॰ध॰ वज्र शीर्ष अरु च्यवन औौर्व शुचि। शुक्र वरेण्य सवन विभु वर रुचि॥ भृगुके भए सप्त ए सुत वर। भृगुहि समान परम सब गुणधर॥ घोर विरूप उतथ्य बृहस्पति। शान्ति पयस्य सुधन्वा वर मति॥ अरु समर्त्त महत तेजस युत। भए अङ्गिरसके ए वसु सुत॥ विरजा काव्य उग्र उसना कवि।काशी धृष्णु सुभृगु अरु वर छवि॥ अष्ट भए कविके ए सुत वर।कविहि समान अमन्द सुमतिधर॥

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

तदनन्तर इमि कहत भए सुर विधिके सनमुख।सुनऊँ लोकपति पाय कृपा तव को न लहत सुख॥ तव प्रसादतें प्रजापति सुतारैं गे लोकहि। व्हैहैं करता वंशके सु हनि हैं जग शोकहि॥ ल हिहैं तपस महांन तिमिहि वर ब्रह्मचर्य व्रत। रहिहैं विद्व महांन होय निति बेद मांहि रत॥ तुमहीं करता देवनके अरु विप्रणके सब। होत महत आनन्द अनुग्रह आपु करत जब॥ ॥ बरवैछन्द॥ यहि विधि विधिकों कहिकै देवत सर्व। जात भए निज लोकहि समुद अखर्व॥ *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

वरुण रूपधर शम्भुके यज्ञ मांहि अभिराम। यहवृत्तान्त भयो सुन्यो पूरब हम बुधिधाम॥
निश्चै अग्निहिको सुवन है सुवरण अभिराम। यामे संशय है नहीं सुनऊ सुरूपि बुधिधाम॥

॥ * ॥ रमणीतीछन्द ॥ * ॥

द्रुहिणको सुत अग्नि है अरु अग्निको सुत हेम। सुनऊ ताते श्रेष्ठ है अति हेम दान सहेम॥ सहित आदर द्विजनकों जे सविधि सुवरण देत। रहित तमसो लोक तामे महत मुदकों लेत॥ सविधि रविके उदयमे जे देत सुवरण खेत। होत तिनकों दोष नहि दुःस्वमकों सुनु दक्ष॥ हेमकों मध्यान्ह मांहीं देतहैं जन जौन। प्राप्त कबऊ होतहै नहि पापकों जन तौन॥ देत सायं कालमे जे हेमकों यवदात। महत विधि अरु अग्नि विधुके लोकमे ते आत॥ लहतहैं अति प्रतिष्ठाकों सर्व लोकन्ह बीच।पायकै यह लोकमे यश रहत नित्य निभीच॥ नित्य रविके उदय मांहीं परम गहिकै नेम। अग्निकों प्रज्वलित साखी भूत करि गहि प्रेम॥विप्र वरकों सहित आदर देत सुवरण जौन। कामना सब लहतहै जन तौन वर बुधिभौन॥ *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

कार्त्तिकेय अरु हेमकी उत्पति औ अभिराम।तुम्हें कही सो सविधि हम सुनऊ सुरूपि बुधिधाम॥
कार्त्तिकेय बऊ दिननमे भयो महत बलवांन। सेनापति सब देवतन कीन्हौ ताहि सुजांन॥
आज्ञा लहि सुररायकी कार्त्तिकेय करि क्रुद्ध। मारयो तारक दैत्यकों विरचि युद्ध अति उद्ध॥
सुवरणमे हैं महत गुण ते हम कहे बखांनि। विप्रणकों तुम देऊ अति निश्चय हीमे आंनि॥

॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥ भा०५०
दा०६०

परशुराम ए बचन सुनि ऋषि वशिष्ठके पर्म । हेम देत भो द्विजनकों तातें छूटो अधर्म ॥
देऊ तुमऊ बर द्विजनकों हेम दान अवदात । सब पापनतें छूटिहौ निश्चय जानऊँ तात ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञानुगामिना श्रीबन्दीजनकाशीवासि रघुनाथकवीश्वरात्मजगोकुलनाथस्यात्मजगोपीनाथस्यशिष्येण मणिदेवेन कविना विरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणि दानधर्मे सुवर्णोत्पत्तौ एकाशीतितमोऽध्यायः॥*—*—*—*

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

गुण सुबरणके दानको कह्यो बिस्तरित आप । अरु ताको उत्पत्तिको कह्यो हेतु स प्रताप ॥
देवनसों नहि बध्यहो तारक दैत्य महान । ताको बध कैसें भयो कहौ मोहि बुधिमान ॥
तारक नामा दनुजको मरण भएतें भूरि । संशय मो हिय माहिँ भो सो तुम कीजै दूरि ॥

॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥ अरिलछन्द ॥ * ॥

गङ्गा गर्भहि डारि दियो जब । ऋषि अरु सुर सब बिकल भए तब ॥ भरे भीति अरु शोच महासों । कहत भए ऐसें कृतिकासों ॥ *—* ॥ दोहा ॥ * ॥ *—*—*—*—*—*

सब देवनमे देव कोउ ऐसो नाहिँ दिखात । धारण शिखिके गर्भकों करै जौन अवदात ॥
धारणं कोँ योग्य हो तुमहि समर्था पर्म । यातें शिखिके गर्भको पोषण करो सशर्म ॥
देवनके अरु ऋषिनके कृतिका सुनि ए बैंन । धारण शिखिके गर्भको करतीं भई सचैंन ॥
धारण कीन्हें गर्भको भयो प्रसन्न कृशान । अरु देवता ऋषिबर सरब मोदित भए महान ॥

॥ * ॥ चरणाकुलकछन्द ॥ * ॥

बढो गर्भ जब कृतिका सर्बा । तासु तेजसों परम अखर्बा ॥ अतिहीं व्याकुलतासों छाई । बनमे जरत मृगी की नाई ॥ कृतिका काल बितीत भयो जब । गर्भ भई जन्मावति सम तब ॥ तीन सुगर्भ एकठ्ठा व्हैके । शोभित भयो प्रभासों स्वैके ॥ तिहिँ बालकको सर्व सहा । धारण कियो मोदसों महा ॥ प्राप्त होय सो सरके बनमे । बढत भयो अति थोरे दिनमे ॥ ताहि देखि कृतिका मुद पागीं । होय सप्रेम पेािबें लागीं ॥ **—* ॥ दोहा ॥— ॥ *—*—*—*—*—*

तदनन्तर ताको लखन ब्रह्मा विष्णु महेश । आवत भए सहर्ष अरु अमरन सह अमरेश ॥
हाहा हूहू आदिदै रहे जिते गन्धर्व । तेऊ सब आवत भए आनद भरे अखर्ब ॥
आप वायु नभ चन्द रबि अरु नक्षत्रके वृन्द । कार्तिकेयको देखिबें आवत भे सानन्द ॥

॥ * ॥ चरणाकुलकछन्द ॥ * ॥

षट आनन भुज द्वादश नीके । भारतखडके कर से ठीके ॥ द्वादश नैंन जौन बरभाके । लसत कर्ण लौं तेज महाके ॥ ऐसो बपु अग्निजको देखें । सिद्धि कामकी हीमे लेखें ॥ परम हर्ष सों हीको

आ०प०
दा०ध०
सान्यो । तारकको वध निश्चय जान्यो ॥ तदनन्तर सब आनद पाये । ताहि खिलौना दीबें लागे ॥ दयो गरुड अपनो सुत नीको । तासु मयूर नाम अति सीको ॥ बरुण दियो कुक्कुट अति सुन्दर । दियो सिंह बर बली पुरन्दर ॥ औ दीन्हो एक उन्नत हाथी । सुन्दर ऐरावतको साथी ॥ मारतण्ड दीन्ही भा नीकी । सुरभी दीत भई गो थीकी ॥ दयो चन्द्रमा मेष सु अद्भुत । अग्नि देत भो छाग प्रभा युत ॥ दिए सुधन्वा सकट अनोखे । औ दीन्हें बङ्क रथ अति चोखे ॥ *⁕*⁕*⁕*⁕

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

तदनन्तर तहँ आयके तारक दैत्य महान । कार्तिकेयको जानिकै मद्दत भयो बलवान ॥

॥ * ॥ पज्झलीछन्द ॥ * ॥

बङ्क बधन काज कीन्ही उपाय । पै बधि सक्यो न बर दैत्य राय ॥ तदनन्तर ऋषि अरु अमर सर्व । हिय माहि शोच करिकै अखर्व ॥ अग्निजहि सेनपहि करि सुजान । तारक सुदैत्य तिहिको महान ॥ कहि दीन्ह पूर्व बृतान्त सर्व । सुनि तीन बीर बह्निज अखर्व ॥ चढि सज्जि गज्जि करि क्रुद्ध उद्ध । चल्यो बीर कीनें सु युद्ध ॥ इमि लसत बीररससों महान । अतिभरो तेज मनु हैं कृशान ॥ उतते झपट्टि तारक सुभट्ट । लीन्हे प्रचण्ड दानव सघट्ट ॥ आयो करन्त अति घोर शब्द । गज्जत सघन मनु उद्ध अब्द ॥ बलवान बीर दोऊ सुजान । संग्राम घोर बिरच्यो महान ॥ हूटत न कोय दे जन बीच । कट्टत अनेक भट्टै निभीच ॥ बर रुंड मुण्ड बिचि परिय खग्ग । इमि लसति तास उपमा अदग्ग ॥ मिल्यो चहन्त मनु राहु केत । रवि किरण तिन्हहि नहि मिलन देत ॥ बिन हस्त रुधिर मय रुंड दर्स । मनु जरे अग्नि सो तार बृन्द ॥ लखि कार्तिकेयको रण अतूल । हरषत सुदेव बरषत सु फूल ॥ बढि कार्त्तिकेय गहि शक्ति उद्ध । तारकहि हन्यो अति ह्वै सक्रुद्ध ॥⁕⁕⁕॥*॥ दोहा ॥ * ॥ ⁕*⁕*⁕

तारकको वध देखिकै ऋषि अरु सुर सानन्द । ह्वै समीप इमि कहतभे धन्य धन्य शिखिनन्द ॥ कार्त्तिकेय पुनि इन्द्रको राज्य माहि बैठाय । हनिकै भयकर निकरको कीन्हो परम सचाय ॥

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

तबसो सुर सेनापति नाम । कार्त्तिकेयको भो बुधिधाम ॥ भयो सदाशिवको प्रिय पर्म । सुनऊ भूप मतिमान सधर्म ॥ *⁕*⁕*⁕* ॥ दोहा ॥ *⁕*⁕*⁕*⁕*⁕*⁕*⁕*

कार्त्तिकेय ऐसो बली भो सुवर्ण तिहि साथ । ताते उत्तम परमहै सुनु सधर्म नरनाथ ॥ ⁕⁕

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

परशुराम ए बैन सुनि ऋषि परम बशिष्ठके । ह्वै कै परम सचैन सुबरण दानहि देत भे ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

सर्व पापसों छूटिकै दीन्हें सुबरण दान । स्वर्गलोकको प्राप्त भो परशुराम मतिमान ॥

इति श्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञानुगामिना श्रीवन्दीजनकाशीवासि ग्रा०प०
रघुनाथकवीश्वरात्मजगोकुलनाथस्यात्मजगोपीनाथस्य शिष्येण मणिदेवेन कविना विरचिते भाषायां दा०ध०
महाभारतदर्पणे दानधर्मे सुवर्णदान प्रसंगोनामह्यशीतितमोऽध्यायः॥ ****

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

चतुर्वर्णको जिमि कह्यो आपु धर्म अवदात। कहो तिमि हि अब श्राद्धकी सम्पूरण विधि तात ॥

॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥

भूप युधिष्ठिरके वचन सुनि सुरसरितानन्द । सम्पूरण विधि श्राद्धकी कहत भए सानन्द ॥

॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥ तोमरछन्द ॥

सुन श्राद्धकी विधि जौन। अति मोद दायक तौन॥ सुत दायका अभिराम। शुभकारिणी बुधिधाम॥ सुर असुर अरु गन्धर्व। अहि औ पिशाच अखर्व॥ नर किन्नरो सह प्रीति। सब करत श्राद्ध सनीति॥ **** ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ ******

तातें श्राद्ध करै सदा स्वत होय मनलाय। श्राद्ध किएँ यश मिलत अरु बढ़त बंश सुखदाय॥

पितर रहत परसन्न है किएं श्राद्ध निति धर्म। ताते श्राद्ध करै सदा भूमिप सुनऊँ सधर्म॥

तिथि नक्षत्र अरु पर्बमे किएं श्राद्ध अभिराम। जो फल जनकों मिलत सो कहत भूप हम आम॥

॥ * ॥ रामगीतीछन्द ॥ * ॥

प्रतिपदामे श्राद्ध विधिसों करत है जन जौन। नारि सुन्दरि लहत हैं अरु लहत सुत बहु तौन॥ श्राद्ध दितियामाहिं कीन्हे सुता होति अनूप॥ श्राद्ध तृतियामे किएँ बहु मिलत अश्व सु रूप॥ चतुर्थीमें श्राद्ध कीन्हे मिलत पशु सु बहु धर्म। मिलत बहु सुत पञ्चमीमे किएं श्राद्ध सधर्म॥ किए षष्ठीमाहिं श्राद्ध हि मिलति दीप्ति सुढार। सप्तमीमे किएं श्राद्ध हि कृषी होति अपार॥ श्राद्ध कीन्हें अष्टमीमे सहित विधि अभिराम। होत है वाणिज्यमांहि लाभ अतिहीं नाम॥ श्राद्ध नौमीमाहि कीन्हें मिलत हय बहु धर्म। किएँ दशमीमाहि सुरभी मिलति बहुत सधर्म॥ सविधि एकादशीमाहीं किएँ श्राद्ध अनूप। मिलत हैं बहुरत्न निश्चय जानु हे बरभूप॥ परम तेजस्वी सु जाके होंहि सुत अभिराम। द्वादशीमे श्राद्ध कीन्हें सुनऊँ नृप बुधिधाम॥ मिलत है बहु रजत अरु बहु मिलत सुबरण धर्म। मिलत है अरु और धन बहु सुनऊ भूप सधर्म॥ त्रयो दशिकामांहिं जे जन करत श्राद्ध सुजान। ज्ञातिमे ते होत श्रेष्ठ सु कहत हैं मतिमान॥ मरै ताके गेहवारे तरुण ह्वौ मर धार। है न हियमे नेक संशय सुनऊ बुद्धिअगार॥ श्राद्ध जे जन करत हैं तिथि चतुर्दशिकामांहि। युद्धमे ते मरत हैं हम सुन्यो बुधजन पांहि॥ अमावस्यामांहि जे जन करत श्राद्ध सुजान। आशा सब होति तिनकी सिद्धि सुन बुधिमान॥ ****

॥ * ॥ चरणादोहा ॥ * ॥

शा०ध० कृष्णपक्षकी दशमी आदिक पञ्चतिथिनके मांहि । है प्रशस्त सब श्राद्धकर्ममें चतुर्दशी है नांहि ॥

श्राद्धमें पूर्वाह्नतें है अपरान्ह विशेष ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञानुगामिना श्रीबन्दीजनकाशीवासि रघुनाथकवीश्वरात्मजगोकुलनाथस्यात्मजगोपीनाथस्य शिष्येण मणिदेवेन कविना विरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणि दानधर्मे श्राद्धकल्पेत्र्यशीतितमोऽध्यायः ॥ *****

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

दीन्हें कौन पदार्थको पिण्ड परम अभिराम । पितर लहत अक्षय तृप्ति कहो मोहि बुधिधाम ॥ औ कछु कौन पदार्थको दिएं पिण्ड हे तात । महत तृप्तिकों पाय के बहुदिन पितर विभात ॥ किहिं पदार्थके श्राद्धसों दिनअनन्तलौं धर्म । पितर तृप्तिकों लहत हैं कहिए तात सधर्म ॥

॥ * ॥ रामगीतछन्द ॥ * ॥

भीष्मउवाच ॥ * ॥ तिलनसों अरु ब्रीहि यवसों मूल फलनसों धर्म । मांससों अरु नीरसों वर किएँ श्राद्ध सधर्म ॥ पितर तृप्त सु रहत हैं एकमासलौं हे तात । शाल्मनसों कहत हैं यव गाहि बुध अवदात ॥ बहुततिलसों श्राद्ध कीन्हें सहित प्रीति विशाल । लहत अक्षय तृप्तिकों हैं पितर सुनु भूपाल ॥ मत्स्य आमिषसों किएतें श्राद्ध सविधि सुजान । पितर तृप्ति सुर लहत हैं द्विमासलों मतिमान ॥ सविधि कीन्हें श्राद्ध शशके मांससों अभिराम । पितर तृप्त सु रहत हैं त्रय मासलौं बुधिधाम ॥ श्राद्ध कीन्हें सविधि अजके मांससों सह प्रेम । तृप्ति लहि कै रहत पितर सु पञ्चमास सक्षेम ॥ श्राद्ध मांस बराहकेसों किएतें सुनु भूप । मास षटलौं रहत मोदित तृप्ति पाय अनूप ॥ श्राद्ध कीन्हें विहगके बरमाससों अभिराम । सप्त महिना रहत तृप्त सु पितर सुनु बुधिधाम ॥ श्राद्ध कीन्हें चित्रमृगके मांससों सह प्रेम । अष्टमास सु तृप्ति लहिकै रहत पितर सक्षेम ॥ श्राद्ध कीन्हें रोजके बर मांससों सुनु भूप । रहत मोदित मासदशलौं तृप्ति पाय अनूप ॥ श्राद्ध कीन्हें महिषकें बर मांससों महिपाल । लहत एकादश महीना पितर तृप्ति विशाल ॥ श्राद्ध कीन्हे गऊके बर मांससें अभिराम । पितर मोदित रहत बत्सर तृप्ति लहि कै नाम ॥ लहत जैसे एक बत्सर गव्यसों हे तात । तिमिहिं घृतयुत खीरसों अति तृप्ति पाय विभात ॥ श्राद्ध कीन्हें खड्गके बरमांससों सह प्रेम । पाय तृप्ति अनन्तबासर रहत पितर सक्षेम ॥ पिण्ड दीन्हें फूलको कचनारिको अभिराम । तिमिहिं दीन्हे चूकको सह प्रेम पिण्ड ललाम ॥ पाय तृप्ति अनन्तवासर रहत पितर सक्षेम । सुनऊ तातें भूप करिए श्राद्ध गहि कै नेम ॥ कही पितरनकी कथा भगवान सनत्कुमार । पूर्व मोकों कही ही सो सुनऊ भूप उदार ॥ *****

॥ * ॥ चरणादोहा ॥ * ॥ आ०प०

होय हमारे कुलमें ऐसो कोऊ वर मतिमान। जौन सप्रेमऊ ससी होमे करि विप्रनको सनमान॥ दा०७५

आरञ्जनकी त्रयोदशीमें मघा नखतको पाय। हमको घृतयुत पायसताकें पिण्डा देय सचाय॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

ऐसे कहत सुपितर सब इच्छा करि के धर्म। सुनऊ भूप कुन्तीतनय प्रज्ञावान सधर्म॥

श्राद्ध करै अजमांससों मघानखतके मांहि। विधि सह अरु सह प्रेम अति चल दल तरकी छांहि॥

॥ * ॥ चरणादोहा ॥ * ॥

गयातीर्थमें अक्षय वटतर कीन्हें श्राद्ध सप्रेम। दिन अनन्तलों तृप्ति पाय के पितर सु रहत सनेम॥

मधुमिलायफलमूलअन्नजल दिएँ पितरतिथिमाँहा। दिनअनन्तलों तृप्तरहत हैं पितर सुनऊ नरनाह॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञानुगामिना श्रीबन्दीजनकाशीवासि रघुनाथकवीश्वरात्मजगोकुलनाथस्यात्मजगोपीनाथस्य शिष्येण मणिदेवेन कविना विरचित भाषायां महाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणि दानधर्म श्राद्धकल्पे चतुरशीतितमोऽध्यायः॥ *॥*॥

॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

नखतनमें जो मिलत फल किएँ श्राद्ध अभिराम। कहत भयो शशबिन्दको धर्मराज सो याम॥

तौन तुम्हें हम कहत हैं पृथक पृथक नरराय। तजि प्रमादता सुनहु तुम थिरि कै चित्त लगाय॥

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

श्राद्ध करत कृत्तिकामें जौन। स्वजतैं विगत होत है तौन॥ कीन्हें श्राद्ध रोहणी बीच। अनुपम खिलत अपत्य निभीच॥ नखत मृगशिरा माहिँ सप्रेम। कीन्हें श्राद्ध सविधि गहि नेम॥ प्रापत होत सु तेज महान। सुनऊ युधिष्ठिर भूप सुजान॥ क्रूर जगतमें है जन जौन। श्राद्ध किएँ आर्द्रामें तौन॥ कोमल होत परम मतिमान। छूटत क्रूरस्वभाव महान॥ कीन्हे श्राद्ध पुनर्बसुमाहि। धनी होति बऊ सुत नरनाहि॥ कीन्हे श्राद्ध पुष्यमें धर्म। पुष्टि पायतन होत सशर्म॥ अश्लेषामें किएँ सनेम। श्राद्ध मिलैं सुत धीर सप्रेम॥ कीन्हे श्राद्ध मघाके बीच। होत ज्ञातिमें श्रेष्ठ निभीच॥ किएँ श्राद्ध फल्गुनिमें धर्म। प्राप्त होत ऐश्वर्य्य सधर्म॥ कीन्हे श्राद्ध उत्तरामाह। मिलत अपत्य सुनऊ नरनाह॥ किए हस्तमें श्राद्ध अनूप। इच्छा होति सिद्धि सब भूप॥ श्राद्ध किए चित्रामें चारु। प्राप्त होत सुत परम सुढारु॥ श्राद्ध किए स्वातीमें भूप। प्राप्ति वणिजमें होति अनूप॥ सह विधि नखत विशाखामाह। किए श्राद्ध सुनु हे नरनाह॥ प्राप्त होत बऊ पुत्र सुढार। सुह प्रभाके वृद्धि अपार॥ किए श्राद्ध अनुराधामाहि। रहै सदा राजाके पाहि॥ नियत कै इन्द्रिनिको सर्व। श्रद्धा करि हिय मांहि अखर्व॥ श्राद्ध किए ज्येष्ठामें धर्म। आधिपत्य लहि होत सशर्म॥ कीन्हें श्राद्ध मूलकेमाहि। कौनऊँ व्याधि होति है नाहि॥ पूर्वाषाढमाहि

श्रा॰प॰ सुनु दच्छ। कीन्हे श्राद्ध मिले यश सच्छ ॥ सविधि उत्तराषाढामाह। कीन्हे श्राद्ध सुनहु नरनाह ॥
दा॰ध॰ बिगत शोकसों व्हैके पर्म । रहत महीके माहि सधर्म ॥ किए श्राद्ध अभिजितमे चारु । विद्या प्राप्त सु होत सुढारु ॥ श्राद्ध श्रवणमे कीन्हे तात। नर मरि कै सद्गतिकों जात ॥ नखत धनेष्ठा माहि सप्रेम । कीन्हे श्राद्ध सविधि गहि नेम ॥ होत राज्यभागी नर पर्म। निश्चय जानहु भूप सधर्म ॥ किए श्राद्ध शतभिषमे तात । होत सुवैद्य परम अवदात ॥ पूर्वभाद्र पदमे जन जौन। सह विधि करै श्राधकों तौन॥ अज अरु आविक लहत अनेक । निश्चय जानहुँ नृप सविवेक ॥ कीन्हे श्राद्ध रेवती बीच। मिलत रत्न बहु नरहि निर्भीच॥ किएँ श्राद्ध अश्विनिमे पर्म ।अश्व मिलत बर सुनहु सधर्म ॥ श्राद्धकिए भरणीके माह। आयु बढति है सुनु नरनाह ॥ सुने श्राद्धकी विधि यह चारु। भूपति बर शशबिन्दु उदार॥श्राद्ध करत भो सविधि सप्रेम।सुनहु युधिष्ठिर भूप सक्षेम॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

श्राद्ध किएके पुण्यसों जीतत भो भू सर्ब। भई प्रभा अति अङ्गमे बाढो तेज अखर्ब ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशीवासिरघुनाथकवीश्वरात्मजगोकुलनाथस्यात्मजगोपीनाथस्य शिष्येण मणिदेवेन कविना बिरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणि दानधर्मे श्राद्धकल्पपञ्चाशोतीतमो ऽध्यायः ॥ *

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

श्राद्धमाहि अभिराम कैसे बिप्र बुलाइए । कहो तात बुधिधाम तुमही कहिवे योग्य हौ ॥

॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥ तोमरछन्द ॥ * ॥

कुलवांन होय सुजान । अरु शीलवान महान ॥ बय होय जासु नवीन । अरु पिता जास प्रवीन॥बर रूप होय अमन्द।तन शुद्ध होय नरेन्द॥बर बिप्र ऐसे ताहि। बुलवाइए नृप चाहि॥

॥ * ॥ रामगीतोछन्द ॥ * ॥

द्विजनमाही जिते काणा अन्ध हैं सुनु भूप । निमंत्रणके योग्य ते नहि श्राद्धमाहि अनूप ॥ द्यूत खेलत जौंन द्विज अरु जौंन हैं रुजवान।गर्भघाती जौंन द्विज अरु करत जो द्विज गांन॥ग्रामके जे भृत्य हैं अरु मूर्ख जे द्विजपर्म। जौंन जारत गेहकों हैं बिप्र सुनहुँ सधर्म ॥ गरल जे द्विज देत हैं अरु राजभृत्य सु जान । पिताकों जो देत उत्तर महा दुर्मतिभौंन ॥ जौंन बेचत सोमबल्ली धरत जो बहुरूप। सर्व बस्तुहि जान बेचत बिप्र हु सुनु भूप ॥ द्यूत पणसों द्रव्यलीबें हिएमे ललचाय। अन्यकी तिय अन्य पै द्विज देत जे पहुचाय ॥ रमत जो परदार सँग अरु ते ल बेचत जौंन। कपट को जो करतहै द्विज परम दुर्मतिभौंन ॥ करत चूगली मित्रसों जो द्रोह दारुन बिप्र। हलया श्री जान अरु जे बचन छोडत छिप्र॥ धारि शस्त्रहि जीबि काजे करत द्विज महिपाल । जात जे गुरु मारि पै धरि हिए पाप बिशाल ॥ स्वानगणकों राखि मृगया करत है द्विज जौंन। क्रोध जो बहु

करतहै द्विज परम दुर्मतिभौंन॥ जीविका जो करतहैं द्विज चित्र लिखि अभिराम। करत चोरी हेम कीहैं जौंन द्विज अघधाम॥ करत जो द्विज जीविका तिथिपत्रकों निति बाधि।छोडिकै निज कर्म्म जे द्विज लेतहैं धन नाचि॥ जौंन हैं द्विज शूद्रके ज पुरोहित भूपाल। देवताके चढो जो द्विज द्रव्य लेत बिशाल॥ श्वान कुटं होय जौने बिप्रको नरनाथ। रमति जाको होय नारी और पतिके साथ॥ पढि समुद्रिक जीविकाकों करत हैं द्विज जौंन। पांति बाहिर इते द्विजहैं सुनऊ नृप बुधिभौंन॥ जौन द्विजके बन्धु लघुको भयो होय बिबाह। होय अपनो नाहिं भो द्विज तौनऊ नरनाह॥ जाति बाहिरहे कहैं बुध परम अज्ञावांन। वेदमे जे रहतहै रत धर्मवांन महांन॥ कहतहैं इहि भांति ते द्विज पांति बाहिर जौंन। निमंत्रणके योग्य नाहीं श्राद्ध माहीं तौन॥ करैं भोजन बिप्र जो ए श्राद्ध माहीं तात। राक्षसनकों होय तौ फल श्राद्धको अवदात॥ पढै जौं द्विज श्राद्धमे करि भोज्य सुनु बुधिराय। बसै बिष्टा माहि ताको पितर तौ एकमाय॥ श्राद्धमे करि भोज्य जौं द्विज जाय शूद्री पास। पितर तौ यजमानके सब निरयमें एक मास॥ बसैं बिष्टा माहि तौमे बिप्रको निज जानि। शास्त्रकों अवलोकिकै बुध कहत हैं अनुमानि॥ जौन बेचत सोमवल्ली तौन द्विज बुलवाय। श्राद्धमे जे देत भोजन ताहि सुनु नरराय॥ होति बिष्टा प्राप्त ताके पितरकों हे तात। वैद्यकों ते देत भोजन श्राद्धमे अवदात॥ होत ताके पितरकों हैं प्राप्त श्रोणित पीप। सुनऊ तातें वैद्यकों बुलवाइए न महीप॥ व्याजकों जे लेतहैं द्विज लोभके आगार। श्राद्धमे बुलवाइए नहि तिन्हैं भूप उदार॥ श्राद्धमाही तिन्हें भोजन दिए ते अभिराम। पितरकों नहि होत प्रापित श्राद्धफल बुधिधाम॥ करत जो वाणिज्यकों द्विज जीविकाकों काज। श्राद्धमे बुलवाइए नहि ताहि हे नरराज॥ तिन्हें भोजन दिए तें नहि मिलत कछु फल भूप। दुऊ लोकन्ह माहि निजुकै कहत प्रज्ञ अनूप॥ धर्म्मसों जो रहितहै द्विज श्राद्ध माहीं ताहि। दियो जोहै भोज्य तातें मिलत कछु फल नांहि॥ जानि एते द्विजनकों जो अल्प बुद्धी पर्म। देत भोजन श्राद्ध माहीं सुनऊ भूप सधर्म॥ खात ताके पितर बिष्टा कहत बुध अवदात। है नहीं सन्देह यामे जानु निश्चय तात॥ अंत जे द्विज अल्पबुद्धी शूद्र जनकों देत। श्राद्धके नहि योग्य तेऊ सुनऊ भूप सचेत॥ दिए भोजन श्राद्धमे एकाद्ध द्विजकों तात। ताहि द्विजके भोज्यको फल मिलत नहि अवदात॥ दिए भोजन श्राद्ध माही खञ्ज द्विजकों भूप। एकशत द्विज भोज्यको फल मिलत नाहि अनूप॥ पांति मांही बिप्र कुष्ठी लखै बिप्र जितेक। तितेकनके भोज्यको फल मिलत नहि सबिबेक॥ किएँ भोजन राखि शिरपै बस्त्रकों हे नन्द। औ अवाची ओर मुखकै किएँ भोज्य अमन्द॥ असुरगणकों होत प्रापित भोज्यकों फल पर्म। कहतहैं अवगाहिकै बुध सुनऊ भूप सधर्म॥ रहित श्रद्धा श्राद्ध माही दियो भोजन जौंन। प्राप्त सो सब दनुजपतिकों होतहै बुधि

हा०प० जौंन ॥ असूया करि दियो भोजन द्विजनको जो भूप। तौंनहूँ सब दनुजपतिको प्राप्त होत अनूप॥
ा०ष० कहत हैं यहि भाँति बुधवर श्राद्धविधिके माहिं। श्वान औ काणादि द्विजको लखन दीजै नाहिं॥
रहित तिलसों श्राद्ध कीन्हें औ किएँ सक्रोध। भूत राचस लूटि ताको लेत कहत सुबोध ॥
पंक्ति बाहिर जिते द्विजहैं कहे तुमको तौंन। सुनहु अब हम कहतहैं नृप पंक्ति पावन जौंन॥
अग्निहोत्री विप्र औ व्रतवांन विद्यावांन। वेदमे निति रहत तत्पर धर्मशील सुजांन ॥ त्रिसुपर्णी
जब होय भारी जाय तब तिहि पाय। कबहूँ नहि परनारि देखै करै ज्ञान प्रकाश॥वेदके षट अङ्ग
तिनकों पढै जो द्विज पर्म। पढावै जो वेदगावै सामवेद अधर्म ॥ पिताको अरु मातुको जो भक्त
वर बुधिधाम। ब्रह्मचारी जौंन द्विज अरु सत्यवादी नाम॥ रहै सुकरम माहि जो रत परम प्रज्ञा
भौंन।दियो अन्न जिहिं होय करिकै तीर्थ यात्रा गौंन॥होहिं इन्द्री जासु बस अरु रहित क्रुधसों
जौंन। होय श्रोत्रिय जौंन द्विज दशपुरुखसों बुधिभौंन॥ चपलतासों रहित जो अरु छमा युत
जो पर्म। पंक्ति पावन इते द्विजहैं कहत प्रज्ञ अधर्म॥ दीजिए इनकों निमंत्रण श्राद्ध मांहीं तात।
दिए इनको पितर अच्चय तृप्ति पाय बिभात॥ औरउहैं पंक्ति पावन विप्र हे नरराय। तौन तुमसों
कहतहैं हम सुनहु चित्त लगाय॥ करत सेवा गुरुन्हको जो भरे हर्ष महान। मोच धर्महिं जान
तेहुँ विप्र जे मतिमान॥ रहत जे व्याकरणमे रत नित्य आलस त्यागि। पढत जौंन पुराणहैं द्विज
ज्ञान बरसों पागि॥ धर्मशास्त्रहिं जाँनिकै जे करत विधिवत काज। वेद मांही श्रेष्ठ जे वर विप्रहैं
नरराज ॥ जहालौं ए विप्र देखैं पंक्तिको अभिराम। करत पावन तहालौ हैं सुनहु नृप
बुधिधाम ॥ करत पावन पंक्तिकोहैं विप्र ए मतिमान। पंक्तिपावन कहत याते इन्हैं मनुज
सुजांन॥ पढावत जे वेदहैं द्विज सुवन तिनके पर्न ॥ दूरिहूसो सुनैं पावन करत पंक्ति सधर्म॥
रहित जो द्विज होय तिनमो दोष जे हैं सर्व। पतित होय न परम निर्मल होय कहत अखर्ब॥
सुनहु भूमिप विप्र ऐसो पढै अल्पहु वेद। पंक्तिपावन द्विजन्हसों सो रहत होय अभेद॥
पंक्ति बाहिर जितेहैं अरु जिते पावन पर्म। कहे तुमसों तिते हम सब विप्र सुनहु सधर्म॥
परीक्षा बिन किएँ द्विजको जे निमंत्रण देत। पितर ताके लहत दुख अति कहत बुद्धिनिकेत॥
देत भोजन मित्रको जे श्राद्धमे बुलवाय। पितर ताके होत तृप्त न जानु निजु नरराय॥ मित्रताको
भाव करिकै श्राद्धमे अन्न जौंन। देत जे अन्योन्य भोजन लहत स्वर्ग न तौंन॥जांय कौंनहुँ पुण्यसों
जो स्वर्गमे अभिराम। होय तोच्युत शीघ्रही यह कहत वर बुधिधाम॥सुनहुँ तातें मित्रको बुलवाइ
ए नहिं तात। श्राद्ध माहीं श्राद्ध विधिविद कहतहै अवदात॥ शत्रु होय न मित्र ऐसो विप्र जो
नरनाह। ताहि भोजन दीजियै वर श्राद्धमे करि चाह॥ श्राद्ध माहीं दिएं भोजन मूर्ख द्विजको
चाह। होत कछु फल नाहिं दोउ लोक मांहिं सुढाह॥होत नहिं उत्पन्न जैसें बीज ऊसर मांहिं॥
तिमिहिं दीन्हें मूर्ख द्विजकों होतहै फल नांहिं ॥ श्राद्ध मांही परसपर वर दक्षिणा जे देत। होत

प्राप्त न पितरकों सो कहत बुद्धिनिकेत ॥ धमनति याही लोकमे सो दक्षिणा नरराय। धमे श्रासा मांहिं जैसें नष्टवत्सा गाय ॥जौंन मतक विप्रहैं अरु गान कारक जौंन । श्राद्ध माहीं तिन्हे दीन्ही दक्षिणा है तौंन ॥ देत जो है तास पितरहि देति दिवतें डारि। है नहीं सन्देह यामे तुम्हें कहत बिचारि ॥ देत जो अरु लेत जो है करति तिनको नास। जगतमाहीं करति तिनके बंशको उपहास॥ऋषिन्हको आचार जे निति करतहैं सुनु भूप।औ सु जानत सर्व धर्म्महिं धर्म रहित अनूप॥ देवता वर तिन्हें जानत विप्र अन्यहिं नाहिं। बढत तिनसों मोदहै सब सुरन्हके हिय मांहिं॥पठनमे रत रहत जे अरु ज्ञानमे रत जौंन। कर्म्ममे रत औ सुतपमे जौन रत बुधिभौंन॥ चारि बिधिके विप्र ए तिन माहिं सुनु वर भूप। ज्ञानमे रत जौंन सोहै श्रेष्ठ परम अनूप ॥ताहि भोजन दीजिए वर श्राद्धमे बुलवाय।तासु आदर कीजिए अति बचन कहि सुखदाय॥करत निन्दा जौंन द्विज है द्विजनकी सुनु तात। ताहि भोजन दीजिए नहिं श्राद्धमे अवदात ॥ करै जो द्विज कबहुँ निंदा द्विजनकी महि भूप। ताहि भोजन दीजिए वर श्राद्ध मांहिं अनूप ॥ बेदपारग विप्र तिनकी परीक्षा छितिकन्त । दूरिहीतें कीजिए इमि बुद्धिमान भणन्त ॥ श्राद्ध भोजन योग्य नृप अनहितुऊ औ द्विज होय। श्राद्धमे बुलवाइए तौ परम सादर सोय ॥ दिएँ भोजन लक्ष मूरख द्विजनकों फल जौंन। एक बुधकों दिएँ भोजन मिलतहै फल तौंन ॥ ✻✻✻

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञानुगामिना श्रीवन्दीजनकाशीबासिरघुनाथकवीश्वरात्मजगोकुलनाथस्यात्मजगोपीनाथस्य शिष्येण मणिदेवेन कविना बिरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणि दानधर्मे श्राद्धकल्पे षष्ठासीतितमोऽध्यायः ॥ ✻

॥ ✻ ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ ✻ दोहा ॥ ✻ ॥

कौंन समयमे किहिँ कियो प्रथम श्राद्ध अभिराम ।कहौ श्राद्धको रूपहै कैसो सुनै बुधिधाम ॥
कौंन अन्न अरु कौंन फल कौंन मूल अरु कर्म।श्राद्ध मांहिं नहिं ग्रहण हैं कहिये तास सधर्म ॥

॥ ॥ भीष्मउवाच ॥ ॥

प्रवृति भई जिमि श्राद्धकी जौंन समयके माहिं । कीन्हों जिहिँ अरु रूपहै जैसो सुनु नरपाहिं ॥

॥ ✻ ॥ अरिल्लछन्द ॥ ✻ ॥

अत्रि सु ऋषि वर ब्रह्माके सुत। परम प्रतापवांन मेधा युत ॥ तिनके वंशमांहिं शुचि बुधिधर। दत्तात्रेय भए सुनु नृपवर ॥ होत भए तिनके नंदन निमि । कश्यपके तेजस्वी रवि जिमि ॥ राम होत भो ऋषि निमिके सुत। परम प्रतापवान शोभायुत ॥ करिकैं सो तप सहस वर्ष वर ॥ भयो मृत्युको प्राप्त सुमतिधर ॥ तब ऋषिवर निमि शौच सविधि करि। बिकल भयो अति शोक माहिं परि ॥ चतुर्दशी तिथिमे तदनन्तर। करिकै सज्यादांन सविधि बर ॥ मन बढोरि तजि शोक

दा०भ० बर उत्तम अति ॥ तजि प्रमाद भो नाहि विचारत । अरु ताको भोजन निरधारत ॥ अन्न मूल अरु फल ताके बर । सब विचारि हिय माँहि सुमतिधर ॥ सुतिथि अमावस्यामें उत्तम । विप्र बुलाय श्राद्ध गुरुकी सम ॥ ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

आसन रुचिर बिछायकै सप्त द्विजनकों स्वच्छ। साँवांको भोजन दयो लवण बिना निमि दच्छ ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

करिकै दहिनी ओर अग्रभाग बर दर्भके । शुचि बिष्टरकी ठौर विप्रणके पदतर धरे ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

दक्षिण दिशि कुश अग्र करि तिन ऊपर बुधिधाम। मोचनाम उच्चारिकै दीन्हें पिण्ड ललाम ॥

॥ * ॥ तोमरछन्द ॥ * ॥

करि श्राद्ध निमि बुधिधाम। करि शोच हियमें भाम ॥ इमि भयो करत विचार। सुनु भूप बुद्धि अगार ॥ मुनिवृन्द परम प्रवीन । नहिं श्राद्ध पूरब कीन ॥ तिहिँ सु ब्राह्मण कोहि ॥ नहिं आरिडारैं मोहि ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

करिकै हियमें शोचयह कियो अत्रिको ध्यान । ध्यान करतहीं आयगे ऋषिबर अत्रि सुजान ॥

पुत्र शोकसों दौखकै निमिकों कर्सित पर्म । समुझावत भो ज्ञानके कहिकै बचन सुधर्म ॥

विधिको बिरच्यो धर्म यह कीन्होंहै तुम आँन। बिना स्वयंभू श्राद्धको बिरचि सकै विधि कौंन॥

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

बिधिकी कही श्राद्धविधि आँन। तुमको कहत तात हम तौंन ॥ प्रथम स्थापि अग्निकों पूजि। सोहँ तास मंत्रकों कूजि ॥ तदनन्तर पावक अरु सोम। वरुण निमित्ति करै बर होम । करि बज्र भाँति स्तुति बुधिधाम ॥ पाणि जोरिकै करै प्रणाम ॥ ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

पुनि करि विश्वेदेवको पितरन सह आव्हान। द्विज बुलाय तिनके निमिति पूजा करै सुजाँन ॥

तदनन्तर दै द्विजनकों भोजन परम ललाम । पिण्डदानदै पितरको अस्तुति करै बुधिधाम ॥

करै बिसर्जन श्राद्धको तदनन्तर हे तात । निर्मल ह्वै बैठारदै करि शुभाव अवदात ॥

निजु बर्जितहैं श्राद्धमें अन्न मूल फल आँन। ते तुमको अब कहतहैं सुनहु तात बुधि भाँन ॥

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

कछू धान्य युत तण्डुल आँन। श्राद्ध माँहि बर्जितहैं तौंन ॥ हिंग, प्याज अरु श्यामल लौन । लहसुन औ गरज्जन बुधिभौंन ॥ कूषमांण्ड सित जीरा श्याम । बर्जित श्राद्ध माँहिँ बुधि धाम ॥ विषको मत्स्य लगें पशु जान। मरत तासु आमिषहै तौंन॥ श्राद्ध माँहि बर्जित है तात।

प्रज्ञावान कहत अवदात॥ रहत बराह ग्राममें तास। आमिष बर्जित है बुधिरास॥ औ गृञ्जरको शाक सु जान। औ अलाबु अम्बूफल तौंन॥ श्राद्ध माँहि ए बर्जित सर्ब। सुनऊ तात मतिमान अखर्ब॥ कोविदारफल औ बिट नौन।श्राद्ध माँहि बर्जित बुधिभौन॥ सिंघाडा पुनि हृदम सुजान। बर्जितहै ऋषि भणत महान॥ जौ ए सर्ब श्राद्धके माँहि। होहिँ पितर तौ मोदित नाँहि॥ श्राद्ध माँहि बर्जित है जौन। कहे अन्न आदिक हम तौंन॥ *॥ रामगीतीछन्द॥ *

विप्रकों जे हनत हैं अरु करत मदिरा पान।करत चोरी हेमकी हैं जौन द्विज अज्ञान॥ पाप सों गुरुनारि पै द्विज जौन कुमती जात। करे इन चारौंनसों जो मित्रता हे तात॥ पाँच ए हैं पतित प्रज्ञावाँन कहत महान। इन्हें दीजे होन निकट न श्राद्धके मतिमान॥ विप्र कुष्ठी दरणहर ब्रह्मघाती जौन। श्वपच औ चाण्डाल तिमिहीं सुनऊ बर बुधिभौन॥ श्राद्धके आगारके नहिं निकट दीजे हौन। अत्रि कहि इहिभांति निमिकों गए विधिके भौन॥ *

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञानुगामिना श्रीबन्दीजनकाशीवासि रघुनाथकवीश्वरात्मजगोकुलनाथपुत्रगोपीनाथस्य शिष्येण मणिदेवेन कविना विरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणि दानधर्मे श्राद्धकल्पेसप्तासीतितमोऽध्यायः॥

॥ * ॥ तोमरछन्द ॥ * ॥

॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥ सुनि पितामहके बैंन। निमि सुऋषि प्रज्ञाऐन॥बर श्राद्धकी विधि बीच। भो प्रवृत होत निभींच॥ * ॥ दोहा ॥ *

प्रवृत भएतें श्राद्धकी विधिमे निमिकों पर्म। पितर यज्ञ करते भए ऋषिवर सर्ब सधर्म॥

॥ * ॥ रामगीतीछन्द ॥ * ॥

ता अनन्तर बरणधारिऊ भरे अतिहि उछाह। श्राद्ध कीबें लगे विधिसों सुनऊँ हे नरनाह॥ पितरके अरु सुरनके तब भो अजीरण पर्म। देत भो दोऊनकों सो दुःख सुनऊ सधर्म।ता अनन्तर अतिहिँ पीडित पितर सह सुरबृन्द। सोमके गे पास सबही सुनऊँ कुन्तीनन्द॥ प्राप्त ह्वै कै सोमकों इमि भए कहते सर्ब। श्राद्धके बऊ अन्नसों हम लखो दुःख अखर्ब॥ आपु करिकै कृपा अतिहीँ करि अजीरण दूरि। जानि हमकों शरणमे तुम देऊ आनंद भूरि॥ पितर सहित सुदेव तनके सोम सुनि ए बैंन। कह्यो इमि तुम जाऊ विधिके पास आनद ऐन॥ तिहारो दुख हरैंगे सब करैंगे कल्याण।जाऊ तातें शीघ्रही तुम दुखित पै मुदमान॥बचन सुनि ए पितर सह सुर गए विधिके पास। देखि तिनको मेरुगिरिके शृङ्गपै सऊलास॥ पितर सह सुर बचन ऐसें कहे हे भूपाल। श्राद्धकों बऊ अन्न हमकों ब्यथा देत बिशाल॥ सो ब्यथा हरि कृपा करिकै देऊ हमकों चैन। दयासागर सुनऊ हे लोकेश आनदऐन॥ बैन सुनि ए कह्यो

आ०प० दा०ध० बिधि इमि कृपा करि कै भूरि। अग्नि देहै मोद तुमकों व्यथा करि कै दूरि॥ ता अनन्तर कह्यो ऐसें अग्नि हे नरनाथ। श्राद्ध अब जब होयगो तब सर्व हम तुम साथ॥ तास भोजन करैंगे सुनु पितर सह सुर सर्व। जायगी मम सङ्ग मे मिटि व्यथा परम अखर्व॥ अजीरणकी व्यथा तुमकों फेरि व्है है नाहिँ। बचन सुनि ए अग्निके वर बिधाताके पाँहि॥ पितर सह सुर भए मोदित परम हे नरराय। अजीरण जो हुतो सो सब गयो मिटि दुखदाय॥ श्राद्धमे यहि हेतुतें जन परम प्रज्ञावान। भाग पूर्वहि देत शिखिकों सुनहु भूप सुजान॥ दिएँ पूर्वहि भाग शिखिकों पितर कारजमाहिँ। ब्रह्म राक्षस आय करिकै करत बाधा नाहिँ॥ और राक्षस जिते तेते सकत पास न आय। अग्नि ऐसो देतहै फल भाग पूरब पाय॥ सुनहु तातें भाग पूर्वहि देय शिखिकों पर्म। पिण्ड दीजे पिताकों सह प्रीति तात सधर्म॥ ता अनन्तर पितामहकों देत पिण्ड सुठांन। पितामहके पिताकों पुनि दीजिए मतिमान॥ *॥*॥ दोहा ॥*॥ *

मनसों गायत्री जपे पिण्ड पिण्डके माहिं। रजस्वलाकों श्राद्धमे आवन दीजे नाहिं॥
भङ्ग होहिं जिहिं नारिके दोऊ कांन सुजान। सोऊ आवन दीजिए श्राद्धमे न मतिमान॥

॥*॥ सुधाछन्द ॥*॥

अल्प नीर पार लेय पितरको सुनाम। नदी पार होय करै तर्पण बुधिधाम॥ तर्पणके प्रथम पितर अपनेको चारु। जोरि पाणिके प्रणाम ध्यानके सुढारु॥*॥ दोहा॥*॥**

सम्बन्धिन्हके पितरको तदनन्तर हे भूप। तर्पण करै सु विधि सहित मतिमत कहत अनूप॥
लगे शकटम हूँ वृषभ चित्रवर्ण अभिराम। तिन्हें पाय उतरत नदी सुनहु तात बुधिधाम॥
कीन्ह तिनकी पुच्छपर तर्पण सह विधि पर्म। पितर मोद अति लहतहैं भूपति सुनहु सधर्म॥
आयु बढति बीरज बढत सम्पति बढति महान। पितर भक्तितें सुनहु नृप पण्डु सुवन मतिमान॥
प्रेत पिण्ड सम्बन्धतें होत पितरहै भूप। छूटतहै प्रेतत्वतें बुधवर कहत अनूप॥

भई श्राद्ध उत्पत्ति जिमि कही तुम्हें तिमि तात। दान बिधिहि अब कहत हम सुनहु तीन अवदात॥
स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञानुगामिना श्रीवन्दीजनकाशीवासि रघुनाथकवीश्वरात्मजेन गोकुलनाथेन कविना विरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणि दानधर्मे श्राद्धकल्पे अष्टाशीतितमोऽध्यायः॥*********

॥*॥ दोहा ॥*॥ युधिष्ठिरउवाच ॥*॥

सुनहु पितामह कहत तुम श्राद्धमाहिं अभिराम। ब्रती बिप्र बुलवाय कै दीजै भोज्य ललाम॥
भोजन कीन्हें श्राद्धमे ब्रती द्विजनको चारु। रहिहै ब्रत किहि भातिसों कहिए बुद्धिअगारु॥

॥*॥ भीष्मउवाच ॥*॥ सोरठा ॥*॥

यज्ञको सु ब्रत जौन भोजन कीन्हें श्राद्धमे। तौनहि सुनु बुधिभौन नष्ट होत नहिं अन्य ब्रत॥

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ आ०५० दा०ध०

जौन दानकों देत अरु जान दानकों लेत । तिनमैं को जन श्रेष्ठ हैं कहिए बुद्धिनिकेत ॥

॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥

दान लिएँ गुणवानसों अल्प दोषहै होत । निगुर्णतें लीन्हें महा दोष होत वधिपोत ॥

तिमिहिँ दिए गुणवानकों होत सु पुण्य महान । निगुणीकों दीन्हें अलप होत पुण्य मतिमान ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

ताते दोउनमाहिं जे गुणवत ते श्रेष्ठहै । यामें संशय नाहिं निस्चय करि कै कहत हो ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

यह प्रसंगमे कहत हौं एक इतिहास अवाद । वृषादर्भ अरु सप्त ऋषि तिनकों है सम्वाद ॥

॥ * ॥ रामगीतीछन्द ॥ * ॥

अत्रि कश्यप भरद्वाज सु औ वशिष्ठ सदार । सु ऋषि विश्वामित्र औ यमदग्नि पुण्य अगार ॥ अरु सु गौतम सुऋषि ए वर सप्त अति अभिराम । हुती दासी एक तिनकी तास गण्डा नाम । हुतो भर्ता तास पशुसख शूद्र सुनु नरनाहँ । कामनाके ब्रह्मलोक हि प्राप्तकी ही माहँ ॥ तपस्याकों करत ते सब फिरत हैं भू बीच । भानुकीसी प्रभा तिनको सुनऊँ तात निभीच ॥ कछू दिनमे भई होती अनावृष्टि महान । अतिहिं पीडित भयो तातें लोक यह मतिमान ॥ समय तौन हिं माहि एक वर विप्र मेधाधाम । कामना करि यज्ञकी वर सहित आदर माम ॥ बोलि सप्तऊ ऋषिन्हकों विधि सहित करिकै यज्ञ । दक्षिणामे ऋषिनकों सो देत भो सुत प्रज्ञ ॥ काल तौनहि माहिँ सो बस कालके भो होत । क्षुधासों सन्तप्त ऋषि सर्व प्रज्ञा पोत ॥ भए ठाढे होत तिहिकों चहूँदिशिसोंघेरि । परस्पर ते लगे देखन मृतक ताकों हेरि ॥ ता अनन्तर खण्डिताके अङ्ग ऋषिवर सर्व । भए चरवत क्षुधासों अति पाय दुःख अखर्व । वृषादर्भि महीप तिनकों देखि कै मग माहिँ । भयो कहतो बैन ऐसें जाय तिनके पाहिँ ॥ वृषादर्भिरुवाच ॥ पुष्टिकाजै लेऊ धन तुम करऊ यह मति कर्म । याच्यमान सु विप्र मोको लगत हैं प्रिय पर्म ॥ तुम्हें देहौं वृषभ वर दश सहस अति बलवान । परम सूधे श्वेत रँगके सन्त सुषमावान । धेनु बऊ अरु रत्न देहौं और बऊ धन चारु । करऊ भक्षण आपु मति यह है अभक्ष उदारु ॥ * ॥ *

॥ * ॥ ऋषयउचुः ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

लेत प्रतिग्रह नृपनको लागत है प्रिय पर्म । पै दुखकर फल कार है भूपति सुनहु सधर्म ॥

जौन प्रतिग्रह लेत नहि ते निर्मल वर विप्र । तपसों करत प्रसन्नहैं आदित्यनको छिप्र ॥

विप्रणके तपको महत दहत प्रतिग्रह भूप । नहीं प्रतिग्रह लेनहैं तातें प्रज्ञ अनूप ॥

दीजै अर्थी द्विजनको भूप प्रतिग्रह आप । कहिकै इमि वृषदर्भिकों ऋषिवर धर्मकलाप ॥

आ०प० दा०ध० करत भए प्रज्वलित अति पावकको हे तात । पै न पक्व भो मांस तब भए बिपिनको जात ॥

॥ * ॥ अरिलछन्द ॥ * ॥

वृषादर्भिके मंत्री मतिवर । आसन पाय सर्व कारजकर ॥ बनमे जाय उदुम्बर चुनि करि । तिनके माहिँ हेमकों गुण्ए भरि ॥ दए ऋषिन्हके आगें धरि जब । जानि गरू इमि अत्रि कह्यो तब ॥ उदुम्बरनमे सुवरण भरि तुम । ल्याए सो छल जानि लियो हम ॥ * * * *

॥ ॥ दोहा ॥ ॥

जो ए फल हम लेंहि अति तृष्णा करि हिय माहि । पावैं तो परलोकमे उत्तम फलकों नाहि ॥ इच्छा जे परलोकमे सुखकी करत महान ।ते न प्रतिग्रह लेत हैं निजु के कहत सुजान ॥

॥ * ॥ चरणाकुलकछन्द ॥ * ॥

॥ * ॥ वशिष्ठ उवाच ॥ * ॥ जिमि जिमि द्रव्य मिलत अभिमानी । तिमि तिमि तृष्णा होति महानी ॥ तिहितें जन दुर्गतिके माहीं । निश्चय परत अनिश्चय नाहीं ॥ * ॥ कश्यपउवाच ॥ *॥ भूके माहिँ बसुहै जेती । लोभ न छुटत लहेंहूँ तेती ॥ तातें सुज्ञ गहै संतोषै । तृष्णाकों कबहूँ नहि पोषै ॥ * ॥ भरद्वाज उवाच ॥ * ॥ है प्रमाण तृष्णाको नाहीं । तातें तजें रहै सुखमाहीं ॥

॥ * ॥ गौतम उवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

ऐसी कोउ बस्तु नहि लोकमाहि अभिराम । जौन बस्तुकों पाय कै होय न तृष्णा माम ॥ तृष्णा जनकों सिन्धु सम कबहु भरति है नाहि । तातें सन्तोषै गहें होत मोद हियमाहि ॥

॥ * ॥ विश्वामित्र उवाच ॥ * ॥

पूर्ण भए एक कामना द्वितिय कामना होति । सिद्धि होय जो द्वितिय तौ तिसरी करति उदोति ॥ तातें सुवरण लेनकी करि हैं तृष्णा नाहि । यह तृष्णातें होति बड़ तृष्णा हीके माहि ॥

॥ * ॥ यमदग्निरुवाच ॥ * ॥

ते बुध तप धारण करत जे न प्रतिग्रह लेत । धारण ते नहि करि सकत जे द्विज लेत अचेत ॥ प्राप्त होत है विप्रकों दानमाहि धन जौन । इन निश्चय करि कहत हैं रहत नही है तौन ॥

॥ * ॥ अरुन्धत्युवाच ॥ * ॥

धनको संचय धर्मकों कोउ कहत सु कोय । तपके संचय समन पै धनको संचय होय ॥ धन संचयतें श्रेष्ठ है तपको संचय पर्म । तपके संचयकों किए को नहि होत सधर्म ॥

॥ * ॥ गण्डोवाच ॥ * ॥

डरत प्रतिग्रहतें बली ए ऋषि निबल समान । तातें अतिही डर भयो मोहियमाहि महान ॥

॥ * ॥ पशुसख उवाच ॥ * ॥

बगे लोभमे मिलत नहि उत्तम पद अभिराम । तातें ब्राह्मण कहत हैं लोभ त्याग धन माम ॥

सिद्धारथ इन ऋषिन्हके लगो रहत है पास । यथा योग्यमें करतहैं सेवा सहित हुलास ॥ अ०प० दा०प०

॥ * ॥ ऋषयऊचुः ॥ * ॥

रह्यो कुशलसों दान सह वृषादर्भि महिपाल । जाके शासनसों कियो तुम हल इतो विशाल ॥

॥ * ॥ मधुभारछन्द ॥ * ॥

इमि कहि सुबैंन । ऋषि सुमति ऐंन ॥ फल त्यागि तौन । सुनु सुमति भौन ॥ बनमाहि अन्य । गे सर्व धन्य ॥ वृषदर्भि भूप । तिहिके अनूप ॥ मंत्री अपार । छलके अगार ॥ वृषदर्भि पासु । ते जाय आसु ॥ इमि कहे बैंन । नतकै सु नैन ॥ मंत्रिणो ऊचुः । अध्यादि सर्व । ऋषिवर अखर्व ॥ छलकों सु आनि ॥ छल भीति मानि ॥ फल तौन त्यागि ॥ तहतेसु भागि ॥ बनमाहि अन्न । ते गए धन्य ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

मंत्रिणके ए बचन सुनि वृषादर्भि महिपाल । जातभयो निजधामकों करिकै कोप विशाल ॥

॥ * ॥ चरणाकुलकछन्द ॥ * ॥

महने होमहि करतो भयो । वृषादर्भि भूपति क्रुधरयो ॥ कढी अग्निते एक कराला । लोक भयकरी नारि विशाला ॥ ताहि देखि भूपति हरषानो । जान्यो कार्य्य भयो मन मानो ॥ नाम जातुधानी तिहि केरो । राख्यो नृप मुद पाय घनेरो ॥ अतिहि कराल काल रजनीसी । ठाढी होय मृत्यु सजनीसी ॥ नृपकों कहति भई इमि बाणी । सोहँ आय जोरि दोउ पाणी ॥ करौं कौन कारज मै कहिए । कहत आपु संदेह न गहिए ॥ वृषादर्भि यह बाणी सुनिकै । कहत भए ताकों इमि गुणिकै ॥ वृषादर्भिरुवाच ॥ सह अरुन्धती सप्त ऋषिनके । दासो अरु दासीपति तिनके ॥ नाम अर्थको गुणि हिय माहीं । जाय बिपिनिमे तिनके पाहीं ॥ ◆◆ ॥ दोहा ॥ ◆◆◆ *

मारि सकै जो तिन्हहि तू तौ तिनको करनाश । मन आवै तँह जाईयो करि मम मोद प्रकाश ॥

सुनि भूपतिके बचन ए करिकै क्रोध अखर्व । तिहि बनकों जाती भई जते जहां ऋषि सर्व ॥

॥ * ॥ चरणाकुलकछन्द ॥ * ॥

॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥ सह अरुन्धती सप्तऋषी वर । बिचरत हे जिहि बनमे बुधिधर ॥ बासव बनि सन्यासी आयो । तहां पीनपरमासों छायो ॥ अङ्ग स्थूल श्वानकौं लीन्हें । आंनद भरो मन्द गति कीन्हें ॥ देखि अरुन्धति सती महानी । कहो ऋषिन्हकौं ऐसें बानी ॥ जैसो पीन अङ्ग सन्यासी । अतिहीं भरो प्रभासौं खासी ॥ तैसे तुम व्हैहो की नाहीं । कहो मोहि गुणिकै हिय माहीं ॥ * ॥ वशिष्ठउवाच ॥ * ॥ नित्य कर्म कीबे की भारी । चिन्ता हमै होति हे नारी ॥ सो चिन्ता याकेहै नाहीं । कहत तोहि हम गुणि हिय माहीं ॥ तातें श्वान सहित सन्यासी । धरैं पीनता परमा खासी ॥ ◆ ॥ अत्रिरुवाच ॥ ◆ ॥ भयो क्षुधासों नष्ट वीर्ज मम । ताते वेदहि

... ता याके है माहीं ॥ तातें ज्ञान सहित सन्यासी। धरें पीनता परमा खासी ॥ ॥ विश्वामित्रउवाच ॥ ॥ धर्म हमारो श्रोण भयोहै। तातें अति हिय शोच छयोहै ॥ तीन शोच याके है नाही । मिलत भोज्य अरु करत तहांही ॥ आलस युत अरु मूर्ख महाहै। तहंही जात अंहां मन चाहै ॥ तातें ज्ञान सहित सन्यासी। धरें पीनता परमा खासी ॥ ॥ यमदग्निरुवाच ॥ ॥ दुःखन अरु सुखन सबनकी। चिन्ता निति अति दुखदा मनकी ॥ हमको प्राप्त रहतिहै ऐसी । याको प्राप्त नहीहै तैसी॥ तातें ज्ञान सहित सन्यासी। धरें पीनता परमा खासी ॥ ॥ कश्यपउवाच ॥ ॥ जिमि कुटम्बके लोग हमारे। कोऊ नही टरतहैं टारे ॥ देऊ भोज्य यह भाँति पुकारैं। तातें हम अति चिन्ता धारैं॥ सो चिन्ता याके है नाही । कहत तोहि हम गुणि हिय माही ॥ तातें ज्ञान सहित सन्यासी । धरें पीनता परमा खासी ॥ * ॥ भरद्वाजउवाच ॥ * ॥ नारीको निन्दा हम सुनिकै। सो कहि प्राप्त होत शिर धुनिकै॥ तीन शोक याके है नाही। कहत तोहि हम गुणि हिय माही ॥ तातें ज्ञान सहित सन्यासी। धरें पीनता परमा खासी ॥ ॥ गौतमउवाच ॥ ॥ हमको एक धर्मको राखें। तीन वर्णलों वीचिन नाखें ॥ तास कष्ट हमको है जैसो। याको कष्ट प्राप्त नहि तैसो ॥ तातें ज्ञान सहित सन्यासी। धरें पीनता परमा खासी ॥ ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥ सोरठा ॥ ॥

ज्ञान सहित सुरराय तिन ऋषीमको देखिकै। तिनके निकटै आय चरण छुवत सो पाथिवौ ॥

॥ * ॥ चरणाकुलकछन्द ॥ * ॥

तदनन्तर फल मूलन काजे। बनमे गे ऋषि सह परिव्राजे ॥ बनके माहि बीनि चढ़ धारे। लये सबै फल मूल बटोरे ॥ तेहां एक सरोवरि देखी। चारु घने वृक्षसो मेली ॥ एकहि आउ बन्यो जिहिं माही । विहग विहार करैं तिहिं पाही ॥ स्वच्छ नीर नीरज बहु फूले। तिनपै गुञ्जत मधुप अतूले ॥ वृषादर्भि छलकर अहिपाला। तास प्रेरिता परम कराला ॥ नाम जातुधानी तिहिं केरो। करिके सो तिहिं पास बसेरो ॥ तीन सरोवरिकी दिन राती । रक्षा करति कहूँ नहिं जाती ॥ तामे नीरज चिनके काजे। गए सुऋषि सब सह परिव्राजे ॥ तेहा देखि जातुधानीको । कहत भए ऐसी वाणीको ॥ को तू है तव नाम कहाहै। बैठी तु किहि काम रहाहै ॥ सुनिकै जातु धानि यह बानी। बोली बैन क्रूर महानी ॥ ॥ जातुधान्युवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ *

जो मै हौं सो हौं कहा बूझत हो तुम मोहि। सरोवरीकी रक्षका मै हौं परत न जोहि ॥

॥ * ॥ ऋषयऊचुः ॥ * ॥

है न हमारे पास कछु हैं हम क्षुधित विशाल। जो तू आज्ञा दे अबै तो हम लोहिं मृणाल ॥

॥ * ॥ जातुधान्युवाच ॥ * ॥

तुम सब निज निज नामको मोको अर्थ बताय। लेऊ मृणालनको परम सरोवरीमे आय ॥

ग्रा०प०
दा०ध०

॥ * ॥ तोमरछन्द ॥ * ॥

तिहिँ यातुधानिहि जानि । इमि कह्यो ऋषि बखानि ॥ ॥ अत्रिरुवाच ॥ ॥

यद्गृत्युको अभिधान । हरि लेत सबके प्राण ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

तातें रक्षा करत हम तीन हेतुतें स्वच्छ । अत्रि नाम मो ख्यातहै लोकन माँहि प्रतच्छ ॥

॥ * ॥ जातुधान्युवाच ॥ * ॥

भारद्ध करिबे योग्य नहिँ मन अतिसों तवनाम । जाऊ सरोवरि माहि तुम विषसींवैं अभिराम ॥

॥ * ॥ वशिष्ठउवाच ॥ * ॥

मै वसुमान महान अरु सब मेरे वस माहिँ । यातैं नाम वशिष्ठहै मै काहू वश नाहिँ ॥

॥ * ॥ जातुधान्युवाच ॥ * ॥

सो तुनाम व्युत्पत्तिको धारि सकत मे नाहिँ । तातैं तुमहूं लेत विष जाऊ सरोवरि माहिँ ॥

॥ ॥ रामगीतीछन्द ॥ ॥

कश्यपउवाच ॥ * ॥ कश्य नाम शरीरको है ताहि पालत जौन । ताहि कश्यप कहतहैं अब जाहिके बुधिभौन ॥ है हमारे नामकी व्युत्पत्ति यह अभिराम । है हमारो नाम यहितें ख्यात कश्यप नाम ॥ * ॥ जातुधान्युवाच ॥ * ॥ कठिन अति तव नामकी व्युत्पत्ति जो है पर्म ॥ समुझि सो नहिँ परत मोको सुनऊ सुव्रत सधर्म ॥ कमल लावैं जाऊ शीघ्रहि सरोवरिके माहिँ । नेकु ठाढे होऊ मति तुम सुव्रत मेरे पाहि ॥ भरद्वाजउवाच ॥ करत पोषण सुतनको अरु शिष्यगणको धर्मनीतिनिहि पोषण नारिको करि करत नित्य सधर्म ॥ सुरनहूं को करत पोषण नित्य होय अधर्म । औरतैं मै भयो औरहि कियो पालन पर्म ॥ नामहै विख्यात यातैं भरद्वाज हमार । नामकी व्युत्पत्ति सुनिकै जातुधानि सुढार ॥ कह्यो इमि तवनामकी व्युत्पत्ति समुझि न जाय सरोवरिमैं आयकै तुमलेऊ विषसुखदाय ॥ गौतमउवाच ॥ कहत बुधवर भूमिको अरु स्वर्गको गो नाम । इमन तिनको करत तातैं मम सु गौतम नाम ॥ गौतमहिको कहत गौतम जातुधानि सुजानि । है हमारे नामकी व्युत्पत्ति यह तू जानि ॥ * ॥ जातुधान्युवाच ॥ * ॥ कठिनहै तव नामकी व्युत्पत्ति समुझि न आय । सरोवरिमे आयकै तुम लेऊ विष सुखदाय ॥ विश्वामित्रउवाच ॥ मित्र विश्वेदेवको हौं परम तातैं ख्यात । नाम विश्वामित्र मेरो भयोहै अवदात ॥ * ॥ जातुधान्युवाच ॥ कठिनहै तव नामकी व्युत्पत्ति समुझि न जाय ॥ सरोवरिमे आयकै तुम लेऊ विष सुखदाय जमदग्निरुवाच ॥ याज हविको मांसहै वह सर्वविहि भषत जौन । जमन तिनको नामहै हौं देवते मुदभौन ॥ अग्नि जाहीं अर्नि प्रगटत जातु धानि सुजानि । तिमिहि प्रगटत अग्निमे हम सत्य मनमे मानि ॥ नाम मेरो ख्यातहै जमदग्नि यातें स्वच्छ । अग्निकीसी प्रभा मेरी लसति देखु प्रतच्छ ॥ जातुधान्युवाच ॥ कठिनहै तव नामकी व्युत्पत्ति समुझि न आय । सरोवरिमे आयकै तुम लेऊ विष

आ॰प॰ सुखदाय ॥ अरुन्धत्युवाच ॥ * ॥ करतिहौं अनुरोध पतिके चित्तको अवदात । है हमारो नाम
दा॰ध॰ याते अरुन्धति विख्यात ॥ जातुधान्युवाच ॥ कठिनहै तव नाम की व्युत्पत्ति समुझिन जाय । सरो
वरिमे जाय कै तुम लेऊ बिष सुखदाय ॥ गण्डोवाच ॥ है हमारे बदनके एक देश माहीं गण्ड ।
ख्यातहै गण्डा हमारो नाम यातैं चण्ड ॥ जातुधान्युवाच ॥ कठिनहै तव नामकी व्युत्पत्ति समुझि
न जाय । सरोवरिमे आयकै तुम लेऊ विषसुखदाय ॥ पशुसखउवाच ॥ करत रक्षा पशुनकी
लखि पशुनको अभिराम । पशुनको हौं सखा याते मम सु पशुसख नाम॥ जातुधान्युवाच॥ कठिन
है तव नामकी व्युत्पत्ति समुझि न जाय । सरोवरिमे जाय कै तुम लेऊ बिष सुखदाय ॥ शुनःसख
उवाच ॥ कही अपने नामकी व्युत्पति इन जिहि भाति । नामकी व्युत्पत्ति मोसों कही तिमि नहि
जाति ॥ नामहै शुन धर्मको मुनिसखा ताके आम । मुनिनको मै सखा यातैं शुनःसख मम नाम
॥ जातुधान्युवाच ॥ कहो अपने नामकी व्युत्पत्तिकों तुम फेरि । बचन सुनि ए शुनःसख इमि कह्यो
ताकों हेरि ॥ कही अपने नामकी व्युत्पत्ति मै एक बार । ग्रहण ते नहि करी याते मारिहौं तोहि
दार ॥ शुनःसख इमि बचन कहिकै दण्डसों करि क्रुद्ध । जातुधानिहिँ मारिडारी भूमिमे नृपबुद्ध ॥
मारि ताकों शुनःसुख वर टेकि भू मे दण्ड । खरे होते भए बनमे धरे तेजस चण्ड ॥ ता अनन्तर
सर्व मुनिवर लेयकै बिष पर्न । सरोवरिके कूलपै धरि स्नान करि सह धर्म॥ सविधि तर्पण करि सु
आए कूल ऊपर सर्व । तहां बिषदेखे न तातैं भयो दुःख अखर्व ॥ क्षुधारत हमखने बिष बड़ महत
श्रमसों चारु । कूलपतैं अवहिते सब लए किहि अपकारू ॥ बचन ते इहि भांति कहिकै होय
शङ्कामान । लगे पूछन परसपर तब सर्व मुनि मतिमान॥ दूरि कोवे शङ्क कीवैं लगे सपथ सु आन ।
क्षुधासों अति भए पीडित धरैं धीर महान ॥ * ॥ अत्रिरुवाच ॥ * ॥ * * * * *

॥ * ॥ चरणाकुलकछन्द ॥ * ॥

परस करैं सुरभीको पदसों। तजैं बेद दुर्मतिके मदसों॥ मूत्रपुरीष किए रबि ओरैं। अनध्याय
मे पढैं सबोरैं ॥ होत प्राप्त पातकहै जैसो । होय कमलके चोरहि तैसो ॥ वसिष्ठ उवाच ॥ होय
शरणमे ताकों मारें । सन्यासी ह्वै नारि निहारैं ॥ अरु धन अधिक प्रजासों लीन्हें । राखिश्वान नए
मृगया कीन्हें॥ अन्तकालमे प्राणीकेरो। लिए लोभसों द्रव्य घनेरो॥ होत प्राप्त पातकहै जैसो। होय
कमलके चोरहि तैसो ॥कश्यप उवाच॥ धरी अन्यकी बस्तु छपाए । दिनमे रति कीन्हें मद छाए॥
वृथा मांसको भोजन कीन्हें।अरु कुपात्रको दानहि दीन्हें। होत प्राप्त पातक है जैसोहोय कमलके
चोरहि तैसो ॥ भरद्वाजउवाच ॥ नारी ज्ञाति अरु सुरभी माही । दाया करै जौन जन नाही ॥
अरु जो ब्राह्मणकों संघारै । हियमे अधरम कों न बिचारै ॥ ताहि होतहै पातक जैसो । होय
कमलके चोरहि तैसो ॥ गुरुके नामहि नीचे करिकै । पढै वेदगर्वै बड़ धरिकै ॥ ताहि होत
पातकहै जैसो । होय कमलके चोरहि तैसो ॥ * ॥ यमदग्निरुवाच ॥ * ॥ किए पुरीष सुनीर कि

मार। करिके द्रोह गऊको मारे ॥ होत प्राप्त पातक है जैसो। होय कमलको चोर हि तैसो ॥ करो तास पोषण निति नारी। सबसों होऊ द्वेषता भारी ॥ ज्ञाति माहि तें आय निकारो। लयो होय जिहिँ कमल तिहारो ॥ गौतमउवाच ॥ बेचें सदा सोमलतिकाको। अरु छोडे वर वेद पढाको ॥ होत प्राप्त पातक है जैसो। होय कमलके चोर हि तैसो ॥ तास भृत्य सह सब गृहवारे। रहो सदा ही परम दुखारे॥ तिनकों पाले जन कोउ औरै। जो नव कमल कन्दको चोरै ॥ * ॥ दोहा ॥ *

पढै अशुद्ध सुवेदको होत पाप है जौन। जो चोरी नव कमलकी करै लहै सो तौन ॥

॥ * ॥ छन्द ॥ * ॥

॥ अरुन्धत्युवाच ॥ पतिको तोनं प्रसन्न नराखो। निति हिँ कुबैन श्वासुको भाखो ॥ रहो जन्म भरि परम दुखारी। लयो होय बिष जोने नारी ॥ गण्डोवाच ॥ मोल लेय कन्याको दीन्हे। पतिसों परम बिरोध हि कीन्हे ॥ होत प्राप्त पातकहै जैसो। होय कमलकेचोरहितैसो॥ पशुसख उवाच ॥ पुत्र जन्मको मुद मतिपावो। निधनी रहो दुःखसो छावो ॥ लहो दासताके अप माने। करो होय बिस चोरी आने ॥ * ॥ शुनःसखउवाच ॥ * ॥ धर्ममार्गमे नितिही चालो। राजा होय प्रजाको पालो ॥ निति रत रहो वेदके माही। धरो कुमारगमे पद नाही ॥ वेद वान द्विजको निजु कन्या। बिधिवत देऊ सुरूपा धन्या ॥ पावो जीति तौन दशदिशिकी। करी होय जिहि चोरी बिषकी ॥ ऋषयऊचुः ॥ जो तुम करी शपथ सो नीकी। है शुद्धि जनको दायक ओकी ॥ याते हमको जानि पर्यो है। चोर कर्म यह तुमहि कर्यो है ॥ शुनःसख उवाच ॥ सत्य कही बाणी जो तुम है। बिषकी चोरी कीन्ही हम है ॥ कीन्हे बिष हम गुप्त तिहारे। ते सब देखऊ पास हमारे ॥ कीबे हम सु तुम्हार परीक्षा। बिषकी चोरी करी अनिच्छा ॥ जानऊ मोको मघवा हौं मै मारी जातुधानिकाको मै ॥ जो मै याको हनतो नाही। हनतो तुम्है सरोवर माही ॥ मै तुम्हार रक्षारथ आयो। मारि जातुधानि हि सुख पायो ॥ तुम अलोभतें अक्षय लोकहि। रहि हौ प्रापत होय यशोकहि ॥ ॥ दोहा ॥ *

उठिके तुम सब बिप्र बिष अपने अपने लेऊ। सप्त ऋषिन्हको कहत भे मघवा सहित सनेऊ ॥

॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥ चरणाकुलकछन्द ॥ * ॥

मुनिवर सुनि मघवाकी बानी। लै बिष भे प्रसन्न शुचि ज्ञानी ॥ तदनन्तर आनदसों रए। मघवा सह मुनि दिवको गए ॥ आमि ऋषिनको अति गुणवाना। वृषादर्भि महिपाल सुजाना ॥ महत पुण्य इनको दीन्हें ते। न्है है यह बिचार कीन्हे ते ॥ पथमे लखि धनदीबे लाग्यो। सादर परम मोदसो पाग्यो ॥ सप्त ऋषिन्ह अब धन नहि लीन्हो। धन दीबे नव नृप हठ कीन्हो ॥ ताते दान गुणहिको। दीजै है यह नृप बिद्वान्स प्रतीजै ॥ यह आख्यान पढै जो कोई। ताके अर्थसिद्धि सब होई

शा०प० स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञानुगामिना श्रीबन्दीजनकाशीवासि
दा०ध० रघुनाथकवीश्वरात्मजगोकुलनाथस्यात्मजगोपीनाथस्य शिष्येण मणिदेवेन कविना विरचिते भाषायां
महाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणि दानधर्मे एकोनणवतितमोऽध्यायः ॥ *****

॥ *॥ चरणदोहा ॥ * ॥

यहि प्रसङ्गमे कहत हौं एक इतिहास अनूप । तामे है वृत्तान्त शपथको सुनऊ युधिष्ठिर भूप ॥

॥ *॥ अरिलछन्द ॥ *॥

पश्चिम दिशामाहि नर नायक । तीर्थ प्रभास परम अघ घायक ॥ तामधि आय सुऋषि मिलि मतिवर । करत भए यह मंत्र सुमुदकर ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ ******

पुण्य मई यह भूमि जो दायक मोद अखर्व । तीरथ जात्राकों चले तामे मिलि कै सर्व ॥

॥ * ॥ चरणाकुलकछन्द ॥ * ॥

भृगु वशिष्ठ गौतम हरषानें । भरे तेजसों परम महानें ॥ शुक्र अङ्गिरा पर्वत नारद । बरत तेजसों रबिकी भारद ॥ कवि कश्यप गालव मतिमाना । भरद्वाज अष्टक मुदवाना ॥ बालखिल्य आंनद सों पागे । बिश्वामित्र तिमहि अनुरागे ॥ तिमिहि दिलीप नहुष शिबिराजा । धुन्धमार पुरु समुद दराजा ॥ नृप ययाति अरु अम्बरीष बर । अधर्मदर मिलि परम धर्मधर ॥ ए सब इन्द्रहि करि कै आगे । तीरथ करण चले मुद पागे ॥ तीरथ करत करत भूमाहीं । आए नदी कौशिकी पाहीं ॥ सबिधि स्नान तामाहीं करि कै । गए ब्रह्म सरकों मुद धरि कै ॥ करि सनान तामे बड भागे । कमल कन्दकों खोदन लागे ॥ * ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ ******

खोदि खोदिकै कन्द तब धरत भए तटमाहि । तहँ अगस्त्य अपनो खन्यो कन्द लखत भे नाहि ॥

॥ * ॥ चरणाकुलकछन्द ॥ * ॥

तब अगस्त्य चिन्तासों छाए । ऋषि गणकों इमि बैन सुनाए ॥ कमलकन्द मेरो किहि लीन्हों । सबमे यह अधर्म किहि कीन्हों ॥ चोरीकरण योग्य तुम नाहीं । सत्य कहत हों ऋषिगण माहीं ॥ तातें कन्द हमारो दीजै । अधर्म गुण के लोभ न कीजै ॥ कुत्सित काल धर्मकों नाशै । कल्मषको सो करत प्रकाशै ॥ सुनत रहे सोई अब आयो । याते दुःख मम होमे छायो ॥ व्है है अब अधर्म भूमाहीं । लखि हैं भूपति धर्महि नाहीं ॥ बिप्र लोभ होमे बक्र धरि कै । ग्राममाहि जबैश्वर करि कै ॥ बद सुनावैं गे शूद्रनकों । धर्ममे नहीं धरि हैं मनकों ॥ करि हैं सब सबके अपमानें । धरि हैं छल हियमाहि महानें ॥ ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

बली निर्बल हि लूटि है दया करैं गे नाहिँ । तातें अब हम जाय गे सुर परलोकै माहिँ ॥

॥ * ॥ चरणाकुलकछन्द ॥ * ॥

बचन सुऋषि अगस्त्यके सुनि कै । कहत भए सब ऋषि गिर धुनि कै ॥ चोरयो हम नहि कमल

तिहारो। आप न यह हियमाहिँ बिचारो ॥ कहि अगस्त्यसों औसें बानी। हिए शपथकी इच्छा आ०प०
आनी॥ पुत्र पौत्रनसह दुख पावे। शपथ करण ऋषि अरु नृप लागे॥ ॥ भृगुरुवाच ॥ ॥ दा०ध०
जिहिँ तव पुष्कर लीन्हो व्है है। सो अपमान दुःख सों भ्वै है॥ वृषादिकनको सो दल लैहै। तेज
तास तनमे नहिं रैहै॥ ॥ बशिष्ठउवाच ॥ ॥ लयो होय जिहि कमल तिहारो। होऊ
सदा सो दुर्मतिवारो॥ होय नगरमे सो सन्यासी। घर घर फिरि कै लहऊ उदासी॥ *

॥ * ॥ कश्यपउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

लयो होय जिहि कलम तव यह तीरथके कूल। बेचो सो सब बस्तुको धरि कै लोभ अतूल॥
धरी अन्यकी बस्तु जो करो लोभ तिहिँमाहिँ। झूठो साची होऊ अरु करो धर्मकों नाहिँ॥

॥ * ॥ गौतमउवाच ॥ * ॥ चरणाकुलकछन्द ॥ * ॥

कामक्रोधमाहीं रत रहो। द्विज व्है शर्षा कर्मको गहो॥ होऊ मत्सरी दुर्मति धारो। लयो होय
जिहि कलम तिहारो॥ ॥ अङ्गिरउवाच॥ ॥ बेदमाहि झूठहि निति भाखो। पास
सदा श्वानको राखो॥ रहो अपावन द्विजको मारो। लयो होय जिहि कमल तिहारो॥
॥ धुन्धमारउवाच॥ शूद्रमाहि पुत्र उपजावो। हितु उपकारण मनमे लावो॥ आपुहि भोजन करै
बिरायो॥ लयो होय जिहि कमल तिहायो॥ पुरुरुवाच॥ करो भोज्य नारीको त्यायो॥ रहो
आपु आलससों छायो। होऊ बैद्य सो दुर्मति बायो॥ लयो होय जिहि कमल तिहायो॥ दिलीप
उवाच॥ एकहि कूप होय जामाहीं। होय न सरिता ताकै पाहीं॥ औसो ग्राम बसै द्विज तामे।
नितिहि बिहार करै शूद्रामे॥ तिहिको गतिको सो पद धारो॥ लयो होय जिहि कमल तिहारो॥
शुक्रउवाच॥ भोजन करो बृषापल केरो॥ होऊ भूमिनायकको चेरो। रति कीबो दिनमाहि बिचा
रो॥ लयो होय जिहि कमल तिहारो॥ यमदग्निरुवाच॥ पढो अनध्ययनके माहीं। करो सर्वदा
बैन बृथाहीं॥ शूद्र श्राद्धमे भोजन करो। अधर्मसों कबहूँ मति डरो॥ कहूँ न सुमगे पग धारो॥
लयो होय जिहि कमल तिहारो॥ * * ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ शिबिरुवाच ॥ * ॥ * *
करो अन्यके यज्ञमे बिप्र होय कै अज्ञ। लयो होय जिहि चोरि तव कमल सुनऊ ऋषिप्रज्ञ॥

॥ * ॥ ययातिरुवाच ॥ * ॥

किएँ अनादर बेदको होत प्राप्त अघ जौन। करी होय जिहिं कमलकी चोरा लहै सु तौन॥

॥ * ॥ चरणाकुलकछन्द ॥ * ॥

लै धन जो बिद्या हि पढावै। अतिथि होय पुनि गृहमे आवै॥ ताहि होत है पातक जोई। होय
कमलकै चोर हि सोई॥ अम्बरीषउवाच॥ नारि ज्ञाति अरु गोके माहीं। दया करै जान जग
माहीं॥ अरु जो ब्राह्मणको संघारै। हियमे अधर्मको न बिचारै॥ ताहि होत है पातक जैसो।
होय कमलके चोरहि तैसो॥ नारदउवाच॥ श्रेष्ठनकी निन्दाको कीन्हे। अरु निर्बलको धन हरि

आ०प० लीन्हें ॥ होत प्राप्त है पातक जैसो । होय कमलके चोरहि तैसो ॥ * ॥ अङ्गिराउवाच ॥ * ॥
अ०अ० झूठहि कहत रहै दिन राती । भूरि गर्वसों करि मति माती ॥ साधु जननसों करै विरोधै । कब
हू सुमारगको नहि सोधै ॥ देय कन्यकाको लै मोलै । करत रहै निति पाप अतोलै ॥ तिहिकों
प्राप्त होति गति जैसी ॥ होय कमलके चोरहि तैसी ॥ कश्यपउवाच ॥ रवि दिशि विष्ठा मूत्रहि कीन्हे ।
आए अतिथि हि भोजन न दीन्हे ॥ जोकोउ होय मरणके माही ॥ कीन्हे ताकी रक्षा नाही ॥ ताउ
पर अनाथ सुरभीको कीन्हे बहुत लोभमे जीको ॥ प्राप्त होत जनको गति जैसी । होय कमल
के चोरहि तैसी ॥ विश्वामित्र उवाच ॥ शूद्रनके सबके करवाएँ । तिनको दियो बहुत धन पाएँ ॥
प्राप्ति होति जनको गति जैसि । होय कमलके चोरहि तैसि ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ *
होय पुरोहित नृपनको कमल लयो जिहि होय । बढो अनादर सर्वदा रहो दुखसों भोय ॥
॥ * ॥ पर्वतउवाच ॥ छन्द ॥ * ॥ राखो ग्राम जीविका काजे । भाखो नित्य असत्य दराजे ॥ फिरो
चकुँधा खर पै चढिके । गिरो कूपमे मदसों माते ॥ ग्रामाध्यक्ष होउ यम द्वारो । लयो होय जिहि
कमल तिहारो ॥ भरद्वाज उवाच ॥ झूठ बोलि सब पाप बटोरे । चलै सुमारगके नहिं थोरे ॥ अरु जो
गहै क्रूरताभार ॥ कमल चोर लाउ ... ॥ अष्टकउवाच ॥ होउ सदा सो परतिय गामी ।
होउ मूर्ख अरु अघकृत नामी ॥ मूलं ह्वै लहु मग पग धारो ॥ लयो होय जो कमलनिहारो ॥ पालक
उवाच ॥ दिए दानको नित्य बखानी । देव कार्यमे चित मति आनी ॥ होउ पाप रत अयश
पसारो ॥ लयो होय जो कमल तिहारो ॥ अरुन्धत्युवाच ॥ करो सासुकी नित्य अवज्ञा । पति प्यारी मति
होउ अप्रज्ञा ॥ प्रियको भोजन बिना दिएँ ही । भोजन करो आपु पहिलेंही ॥ रहो जनम भरि दुखसों
भारी । लीन्हो होय कमल जिहि नारी ॥ बालखिल्याऊचुः ॥ काज जीविकाके दुख भारे । रहि
करि कै सु ग्रामके द्वारे ॥ रहो एक पदसों निति ठाढो । धर्म छोडि अधरममे बाढो ॥ क्रूर भावको
नित्य पसारो ॥ लयो होय जो कमल तिहारो ॥ शुनःसख उवाच ॥ ह्वै सन्यासी राखउ नारी ।
जग विख्यात होउ अघकारी ॥ प्रात अग्निहोत्र हि तजि सोवो । निशि दिन व्यर्थायनमे खोवो ॥
धर्म गति हि कबहू न विचारो ॥ लयो होय जो कमल तिहारो ॥ * * * * *

॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

धारी ऋषिणकी शपथ सुनि ह्वै सकुच सुरराय । ऋषि अगस्त्यकों देखि कै कोपित कह्यो कषाय ॥

॥ * ॥ शक्रउवाच ॥ * ॥ छन्द ॥ * ॥

शुचि ह्वै पढो सदाही वेदै । होउ धर्मकर रक्षक अखेदै ॥ मोक्ष मान सो होउ महानै । देउ
सुता वर द्विज हि सुजानै ॥ समुद सु ब्रह्मलोकको जाओ । बहु प्रकारके आनँद पाओ ॥ अरु
सुमारग सुयश पसारो । लयो होय जिहि कमल तिहारो ॥ अगस्त्यउवाच ॥ जो तुम शपथ करी सुर
राजा । सो तो आशीर्वाद दराजा ॥ ... ॥ इन्द्र

कमल अवहौं तुम मेरो । चीन्हें तुम्हें कहा अघि हेरो ॥ इन्द्रउवाच ॥ सुनिवे धर्म कमल हम ली आ०प०
न्हों । लोभ नेक हीमें नहि कीन्हो ॥ ताते क्रोध न मनमे कीजे । कमल आपनो यह तुम लीजे ॥ दा०ध०
सुनि मैं धर्म महत सुख पायो । शपथ व्याज ऋषिगणको गायो ॥ करऊ क्षमा अपराध हमारो ।
लागत डर है मोहि तिहारो ॥ सुनि अगस्त्य मघवाकी बानी । अति प्रसन्नता हीमे आनी ॥ लेत
भए नीरज ऋषि अपनो । ताते मिटा क्षोभको तपनो ॥ तदनन्तर ते ऋषि बड़भागे । अन्य तीर्थको
गे मुदपागे ॥ बिधिवत पर्व पर्वके माहीं । तीर्थमाहिँ वा देवत पाहीं ॥ यह आख्यान पढ़ै जो कोई ।
ताके मूरख सुत नहि होई ॥ कौनऊँ आपत पास न आवै । जरा अवस्था नहिँ नगिचावै ॥ नष्ट
होति कलुषता भारो । सम्पति ग्रहतें टरति न टारी ॥ ॥ दोहा ॥
अन्तकाल जब होय तब जाय स्वर्गके माहिँ । भरो भूरि आनन्दसों रहै सुरगणके पाहिँ ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञानुगामिना श्रीबन्दीजनकाशी
वासिरघुनाथकवीश्वरात्मजगोकुलनाथस्यात्मजगोपीनाथस्य शिष्येण मणिदेवेन कविना विरचिते
भाषायां महाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणि दानधर्म्मे शपथविधौ नवतितमोऽध्यायः ॥

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

श्राद्धकर्ममे करत जन उपानहनको दान । तिमिहि छत्रको करत हैं श्रद्धा सहित महान ॥
तीरथ औ व्रतकनमे देत सविधिहैं पर्म । ताते पूछत हौं तुम्हें कहिए मोहि सधर्म ॥
उपानह औ छत्रकी प्रवृति कही है कौन । औ किहिविधि उत्पन्न भे कहो तात बुधिभौन ॥
श्राद्ध तीर्थ अरु व्रतनमे इन्हें देत किहि अर्थ । कहो मोहि विस्तार कै सुनिए तात समर्थ ॥

॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

जिहिँविधिसों उतपन्न भे उपानह औ छत्र । अरु जिहिविधिसों प्रवृत भे भे प्रसिद्ध सरवत्र ॥
सो विधि तुमसों कहत हौं मैं विस्तरित महान । तजि प्रमादताको सुनऊ पंडुसुवन मतिमान ॥
यह प्रसङ्गमे कहत हौं एक इतिहास अवाद । दिनकर औ यमदग्निको तामे है सम्वाद ॥

॥ * ॥ चरणाकुलकछन्द ॥ * ॥

ऋषि यमदग्नि मोदसों पागे । धनु गहि क्रीडा करण लागे ॥ शर ऋषिबर सु चलावत ज्यौं ज्यौं ।
दौरि रेणुका ल्यावति त्यौं त्यौं ॥ जब मध्यान्ह भयो तब भारी । तपति भई ताते सो नारी ॥ भई
विकल ह्वै ठाढी तरुतर । तिहितें भए अवेर महत डर ॥ भयो रेणुकाके हियमाहीं । आई
काँपति ऋषिके पाहीं ॥ तब ऋषि क्रुद्धो ताहि कुधसेनी । लाई बार कहाते एती ॥ रेणुकोवाच ॥
सुनु ऋषिराय क्रोध जिन कीजे । कारण देरीको सुनि लीजे ॥ तप्त भए शिर अरु पद मेरे । परम
तेजसो दिनकर केरे ॥ ताते गई वृक्षतर भागी । भूरि विकलताईसों पागी ॥ जबलौं गई विकलता

आ०प० नाहीं । तबलौं आय सकि न तब पाहीं ॥ यह कारण है देरीकेरो । है अपराध कछू नहिं मेरो ॥
दा०ध० सुनि कै यह नारीकी बानी । रिसि करिकै ऋषिराय महानी ॥ ॥ दोहा ॥ ॥
कहत भए इमि नारिसों गहि निषङ्ग कोदण्ड । मैं गिराय दैहौं रविहि वर शरगणसों चण्ड ॥

॥ * ॥ चरणाकुलकछन्द ॥ * ॥

कहि इमि सुऋषि चढाय सु भौंहें । बैठत भए भानुके सोहें ॥ अमि सरिस यमदग्निहिं देखें । ऋषिको क्रोधदाप हिय लेखें ॥ मारतण्ड द्विजको बपु धरि कै । आय कह्यो इमि विनती करि कै ॥ मारतण्ड तब कहा बिगास्यो । तातें इतो क्रोध तुम धास्यो ॥ भानु किरणसों जलकों करषै । ताहि फेरि बर्षामे बरषै ॥ अन्न होत है भूमे तातें । रहत समुद मनुजादिक जातें ॥ होत धर्म बहु विधि सुमहीमे । पढत शास्त्र श्रुति द्विज सुखहीमे ॥ होति विप्र सत्रयता भारी । बहु विधि दान करत नर नारी ॥ तिहितें भानु पै न तुम रोषो । मेरे कहे रोषकों मोषो ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

कीन्ह चहत प्रसन्न हम तुम्हैं सुनहु ऋषि पर्म । मिलि है भानु निपाततें तुमकों कहा सधर्म ॥

॥ ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ ॥

भासमानके सुनि वचन ऋषि यमदग्नि सुजान । कहा करत भे सो हमैं कहिए तात सुजान ॥

॥ * ॥ चरणाकुलकछन्द ॥ * ॥

॥ भीष्मउवाच ॥ ॥ भासमानकी सुनि कै बानी । ऋषि न शान्त ताहीमे आनी ॥ तब रवि नौमि जोरि कै पाणी । कहत भए इमि ऋषिकों बाणी ॥ चलत रहत है भानु सदाही । कैसें अचल जानि हो ताही ॥ अचल विना जाने तुम एजू । करि हो किमि निपात रविके जू ॥ यमदग्निरुवाच ॥ सुनहु भानु थिरताकों तेरी । देखति ज्ञानआँखि हैं मेरी ॥ अर्ध मेषमधि दिनके माहीं । तब थिरता है होति सदाहीं ॥ सूर्य्यउवाच ॥ निश्चय तुम जानो गे सोही । यातें कहत ऋषे हम तोही ॥ जानहु मोहि आपु अपकारो । करहु कृपा हौं शरण तिहारी ॥ भीष्मउवाच ॥ तब यमदग्नि कह्यो इमि हसि कै । होहु बिकल जिनडरमे फसिकै ॥ नम्रताहि अब देखि तुम्हारी । मिटी रोषता सर्व हमारी ॥ तव किरणनसों युत पथमाही । दुःख होय जीवनकों नाहीं ॥ असो कछू विचार विचारो । मिटे रोष तब सर्व हमारो ॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * * ॥

ऐसें कहि चुप ह्वै रहे ऋषि यमदग्नि सुजानु । छत्र उपानह देत भे तब ऋषिवरकों भानु ॥
छत्र उपानह देय कै ऋषि यमदग्निहिं पर्म । मारतण्ड इमि कहत भे भूपति सुनहु सधर्म ॥
शिरकी रक्षा छत्रसों ह्वै है हे ऋषिराय । उपानहनसों होयगी चरणनकी सुखदाय ॥
अबसों ह्वै है लोकमे इनको ऋषे प्रचार । ह्वै है इनको दान फल अक्षय सुमति अपार ॥

॥ भीष्मउवाच ॥

छत्र उपानहकी प्रवृति कीन्ही रवि इमि तात।उत्तम इनके दानको पुण्य लोक विख्यात॥ आ०प० दा०ध०

॥ * ॥ रामगीतीछन्द ॥ * ॥

उपानह अरु छत्रको तुम करहु तातैं दान। धर्म अक्षय प्राप्त तुमको होय गो मतिमान॥ छत्र ये जन देत द्विजको शुभ्र सुषमा औन। प्राप्त ताको होत है परलोकमे बहु चैन॥ बसत सुर पति लोकमाहीं देवतनकेसाथ। है न यामे नेक संशय सुनहु हे नरनाथ॥ देत द्विजको तपनि माहीं उपानह जन जौन। लहत तौनहु देवतनको लोक आनदभौन॥ वास बहुदिन स्वर्गमे करि ता अनन्तर पर्म। जात सो गोलोकमाहीं सुनहु तात सधर्म॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ *

छत्र उपानह दानको फल जो है अभिराम। सो संपूरण हम कह्यो तुमको नृपबुधिधाम॥

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥

छत्र उपानह दानको सुन्यो सर्व फल तात। अब गृहस्थ धर्महि कहो हमको तुम अवदात॥ कहा किएसो मनुजके होय ऋद्धि बहु पर्म। सोऊ तुम हमको कहो करिकैं कृपा सधर्म॥

॥ ॥ भीष्मउवाच ॥ ॥

यह प्रसङ्गमे कहतहौं एक वृत्तान्त महान। बासुदेव अरु भूमिको है सम्बाद सुजान॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

हमसो पूछे जौन सुनहु धर्मधर प्रश्न तुम। बासुदेव मुदभौन पूछत भे सो भूमिसों॥

॥ * ॥ चरणाकुलकछन्द ॥ * ॥

वासुदेवकी सुनिकै बानी। कहति भई इमि धरणि सुजानी॥करिकै यज्ञ नेम गहि अतिहीं। करै प्रसन्न सुरन्हको नितिहीं॥ आदर करि सुप्रीति हियमाहीं। अतिथहि करै प्रसन्न सदाहीं॥ करिकै श्राद्धसविधि सह प्रेमै। पितर प्रसन्न करै गहि नेमै॥ ऋषिवर होहि प्रसन्न सु जैसे। तिनको करै सुमतिसों तैसे॥ बासुदेव यह धर्म गृहीको। आनँददायक है अति नीको॥ ऋद्धि मिलित बहु कीन्हे याको। गृही लहतहै परम प्रभाको॥ धरणीकी यह बाणी सुनि कै। कृष्ण प्रतापवान वर गुणि कै॥ धरणि कह्यो यहिं धर्महि जैसे। करत भए वर विधिसो तैसे॥ *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

किएँ धर्म यह मनुज वर पाय सुयश यहिँलोक। स्वर्गलोकमे प्राप्त व्है निशिदिन रहत अशोक॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशीवासिरघुनाथकविश्वरात्मजगोकुलनाथस्यात्मजगोपीनाथस्य शिष्येण मणिदेवेन कविना विरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणि दानधर्मे एकनवतितमोऽध्यायः॥ * * **

आ॰प॰ ॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥
दा॰ध॰ गन्ध धूप अरु दीपको किए दान अभिराम । होत कहा फल मनुजकों कहहु तात बुधिधाम ॥

॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥

यहि प्रसङ्गमे कहत हैं एक इतिहास सुभूप । मनु औ सुबरण बिप्रको है सम्वाद अनूप ॥ हो सम सुबरणबर्णके ताको वर्ण बिभात । तातें सुबरण नाम भो तिहिँ द्विजको बिख्यात ॥

॥ * ॥ रामगीतीछन्द ॥ * ॥

समय कौनऊँमाहिँ सो द्विज गयो मनुके पास । बूझि कै अन्योन्य दोऊ कुशल सहित हुलास ॥ मेरु पर्वतमाहि सुन्दर शिलापर ते पर्म । भए बैठत भए मुदसों सुनऊ तात सधर्म ॥ ब्रह्मऋषि अरु देवदैत्यनकी कथा अभिराम । करत दोऊ भए तिहिँ बर शिलापर अभिराम ॥ ता अनन्तर कह्यों मनुकों वाक्य सुवर्ण एह । मनुजके हित अर्थ कहिए धर्म हे बुधिगेह ॥ धूप दीप सुगन्धसों बर मनुज पूजत देव । होत तिनकों कहा फल है कहहु याको भेव ॥ * ॥ मनु उवाच ॥ कहत यहि परसङ्गमे इतिहास एक सधर्म । शुक्र अरु बलिदैत्यको सम्वाद तामे पर्म ॥ सुनऊँ द्विजबर शुक्र आवतभए बलिके पास । देखि तिनकों दनुजपति बलि उठ्यो सहित हुलास ॥ सहित आदर पूजि आसन चारु पै बैठाय । आपु बैठत भयो सोऊ शुक्रको सुख पाय ॥ ता अनन्तर कथा पूछी आपु इमसों जौन । भयो सोई पूछतो बलि शुक्रसों मतिभौन ॥ * ॥ बलिरुवाच ॥ * ॥ सुमन दीप सधूप दानहि किएते फल कौन । मिलत है तुम कहौ भार्गव कृपा करि बुधिभौन ॥ * ॥ शुक्रउवाच ॥ * ॥ देत मनकों मोद अरु प्रिय देत है अभिराम । नाम सुमनस कहत तातें पुष्पको बुधिधाम ॥ सुमन जो जन देवतनकों देत है दैत्येश । देव तुष्टित होय ताकों पुष्टि देत अशेष ॥ सुमन जिहिँ जिहिँ देवको उद्देश करि जो देत । देत सो सो ताहि मङ्गल सुनऊ बुद्धिनिकेत ॥ वृक्ष जेते यज्ञमाहीं ग्रहण हैं अभिराम । सुमन तिनके देवतनकों लगत है प्रिय नाम ॥ वृक्ष जे नहि ग्रहण मखमे सुमन तिनके जौन । असुर राक्षस यक्षगणकों लगत हैं प्रिय तौन ॥ होय सुमननमांहि जिन जिन परम चारु सुवास । सुमन ते सब देवतनके जानु हे बुधिरास ॥ श्वेत तिनके सुमन अैसे अकण्टक जे वृक्ष । देवतनकों लगत हैं प्रिय सुमन तिनके स्वच्छ ॥ जलजजे कमलादि तिनके सुमन हे सुनु तात । यक्ष औ गन्धर्व नागहि देत बुध अवदात ॥ रक्त तिनके फूल अति तरु सकण्टक हैं जौन । प्रेतकेहैं योग्य तिनके फूल सुनु बुधि भौन ॥ कृष्णतिलके फूल अैसे वृक्ष जे भूमांहि । तिनऊके हैं फूल भूतहि योग्य संशय नाहिँ ॥ देत जे आनंद मनकों सुमन कोमल चारु । मनुष्यनके योग्य तेहैं सुनऊ सुमति अगारु ॥ लता तरु उतपन्न भे श्मशानमाहीं जौन । औ भए देवायतनमे जौन सुनु बुधिभौन ॥ विवाहादिकके नहीं है योग्य तिनके फूल ।कहत हौं मैं तुम्है निजु के करत अशुभ अतूल॥लता औ तरु भए जे उत्पन्न

गिरिसे पर्भ । सुरनकेहैं योग्य तिनके सुमन दैत्य सुधर्म ॥ सुमन पहिलें अमल जलसों धोयकै अभिराम । मंत्रसों पुनि करै मोक्षण सहित बिधि बुधिधाम ॥ सहित कण्टक रक्त जिनके सुमन कटु फल पर्भ । औंन ऐसे वृक्ष तिनके सुमन दैत्य सधर्म ॥ देवताकों अर्पए अभिवधन कारज माहिँ । अथर्वणमे लिखी बिधि यहमांहि संशय नाहि ॥ देवननकों करत जे परसन्न सुमन चढाय ॥ करत तिनकी कामनाहैं सिद्धि देव सचाय ॥ पूजि करिकै देवननको करत जे सनमान। करतहैं सनमान तिनको देवता सुखदाम । अवज्ञा जे देवननकी करत दुर्मतिवांन ॥ भस्म ताकों करतहैं करिकोप देव महान ॥ ॥ दोहा ॥ शा०प० दा०ध०

सुमन दानको फल कह्यो तुम्है बर्णि हम सर्व । धूपदानको अब सुनो फल उत्कर्ष अखर्ब ॥
एक सारिण निर्जास एक औ है कृत्रिम एक । त्रय प्रकारकी होतहैं धूप सुनऊ सबिबेक ॥
चन्दनादिकी धूप जे ताको सारिण नाम । अष्टगन्धको कहतहैं कृत्रिम धूप ललाम ॥
नाम कहत निर्जासहै गुग्गुलादिको चारु । इन तीन ऊ मे श्रेष्ठहै गुग्गुल धूप उदारू ॥
सल्लईके निर्जास बिन हैं निर्जास जितेक । तिनकी प्रिय अति धूपहै देवनको सबिबेक ॥
यक्ष सर्प राक्षसनकों सुनु दैत्येश अनूप । सब सारिणमे अगरकी लागतिहै प्रिय धूप ॥
सल्लईके निर्जासको दैत्यनको प्रिय धूप । यक्षादिकको प्रिय नहीं तिसुकै कहत अनूप ॥
मल्लिकादिके सुरससों युक्त राल रस चारु । मनुजनकों प्रिय लगतिहै तिनको धूप उदारु ॥
देव दनुज अरु भूतहू यहि सुधूपसों पर्म । शीघ्रहि तुष्टित होतहै सुनु दैत्येश सधर्म ॥
मनुजनही के योग्यहैं अतरादिक जे सर्ब । हम निश्चय करि कहतहै सुनु दैत्येन्द्र अखर्ब ॥
औंन सुमनके दानको उत्तम फलहै तात । सोई धूप प्रदानको फलहै अति अवदात ॥
दीपदानको कहतहैं अब हम फल अभिराम । दीपदान किन्हैं परम तेज बढतहै माम ॥
प्रभा बढतिहै अङ्गमे होत निरोगित नैंन । आधि व्याधि नहि होतिहै नितिही रहत सचैंन ॥
दीप चढायो देवको लीजे पुनि नहि ताहि । ताकी रक्षा कीजिए निकट बैठिकै चाहि ॥
औंन हरतहै दीपको तौन अन्ध जन होत । होति नष्ट ताकी प्रभा अघको करत उदोत ॥
लसत दीपसौं स्वर्गमे दीपप्रद दैत्येश । चाहतहै ताकों सदा अमरनसह अमरेश ॥
घृतको दीपक दीजिए प्रेम सहित अभिराम । मिलै न घृत तौ तैलको दीजै दीप ललाम ॥
इच्छा जे ऐश्वर्य्यकी करै परम हिय माहिँ । दीप धरत ते चतुष्पथ बनमे अरु गिरि पाहिँ ॥
होत आतमा शुद्ध अरु करति सुबुद्धि प्रकाश । दीपदान ते होतहै ऐसो फल बुधिराश ॥
सुवरण द्विजकों मनु कह्यो यह फल अति अभिराम॥सुवरण नारदकों कह्यो नारद मोकों आम॥
यह जो बिधिसों जानि तुम करऊ नित्य महिपाल। पूर्ब उक्त फल तुमऊ कों ह्वै है प्राप्त बिशाल॥

शा०प०
दा०ध०

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥

सुमन दीप अरु धूपकों जो जन देत सहर्ष। ताकों जो फल होत सो सुन्यो परम उत्कर्ष ॥
धूपदान किहिँ अर्थ अरु दीपदान किहिँ अर्थ। औ बलिदान किमर्थ जन विधिसों देत समर्थ ॥
कहहु मोहि अवगारिकै सुनहु तात मतिमांन। तुमही कहिबे योग्यहौ बक्ता परम सुजांन ॥

॥ ॥ भीष्मउवाच ॥ ॥

कहत एक इतिहास है यह प्रसङ्गमे भूप। ऋषि अगस्त्य अरु नहुषको है सम्वाद अनूप ॥

॥ ॥ चरणाकुलकछन्द ॥ ॥

सुकृत कर्म सों नहुष सुनीको। पायो देव राज्य शुभ श्रीको ॥ तहाँ मानुषी अरु देवनकी। क्रिया करत भो सो निशिदिनकी ॥ विधि सों करत भयो बलिदाने। तिमिही सविधि होम जप ध्याने ॥ धरणि माहिँ पूजत हो जैसेँ। देवनकों पूजत भो तैसेँ ॥ धूपदीप दानहिँ सह प्रीती। नहुष करत भो गहिकै रीती ॥ तदनन्तर अपनेकों जाने। इन्द्र करत भो गर्ब महाने ॥ तातें क्रिया भई सब हींनी। महत प्रमाद तास मति छीनी ॥ रथके माहि लगाय ऋषिनकों। तापै चढि मुदमे धरि मनकों ॥ फिरत भयो वसुधा मद पागो। ताहि ऋषिनको डर नहि लागो ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥
बीतत भो बहु काल तब मदसों भयो अखर्ब। भो बुलावतो ऋषिनकों बारी बांधि सुगर्ब ॥

॥ ॥ चरणाकुलकछन्द ॥ ॥

आई पारी कुम्भज ऋषिकी। परम प्रतापमान सम शिखिकी ॥ तब तिन पास सुकृति भृगु आए। तिनकों ऐसेँ बैन सुनाए ॥ नहुष करत अपमान दराजे। सो हम सहैं सुमुनि किहिँ काजे ॥
॥ * ॥ अगस्त्यउवाच ॥ * ॥ मम सुदृष्टिमे आवे जोई। होय हमारे बशमे सोई ॥ विधिसों नहुष यह सु बर माग्यो। पायो सो तातें भय भाग्यो ॥ यहितें ऋषिकै हम तुम दोऊ। और मुख्य ऋषिगणहै सोऊ ॥ नहुषहि दग्ध सकत करि नाही। यह निश्चय मानहुँ मनमाँही ॥
॥ * ॥ भृगुरुवाच ॥ * ॥ मै ब्रह्माके पास गयोहो। परिभवके अति दुखरोयोहो ॥ तिनकों सब बृत्तान्त सुनाय्यो। कियो नहुषको दुर्मति छायो ॥ चतुरानन मम बाणी सुनिकै। कहत भए मोकों इमि गुणिकै ॥ बली नहुषके हैं अपकारी। कुम्भज ऋषि बर तेजसधारी ॥ तिहिँ तें आयो पास तुम्हारे। भयो मोद बर तुम्हे निहारे ॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥
अवहि तुम्हे बुलवाय नहुष इन्द्र दुर्मति सदन। रथके माहि लगाय सिरमे हनिहैँ चरणसों ॥

॥ * ॥ चरणाकुलकछन्द ॥ * ॥

तातें अवहि यनिन्द्र करैँगो। नहुषहि नेकुन डर हि धरैंगो ॥ देहु स्राप यह क्रुध करि भारी। होहु सर्प तू अति दुख धारी ॥ तदनन्तर मै ताहि महीमे। हौं गिराय जानो अति छोभे ॥ सुनि यह

ऋषिवर भृगुकी बानी । मनमे अति प्रसन्नता आनी ॥ ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ ॥ भयो शा०प० अनिन्द्र नहुष कहु कैसे । अब किमि परो भूमिमे भे से ॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥ चरणदोहा ॥ * ॥ दा०ध० देवलोक अरु मनुज लोकमे सदा चारसों चाह। महत बृद्धकों पाय इही बर पावत मोद अपार॥

॥ * ॥ चरणाकुलकछन्द ॥ * ॥

सविधि सप्रीति किएँ बलिदाने। देवत होत प्रसन्न महाने। धूपदीप दानहिं तिमि कीन्हें। होत प्रसन्न देव मुदलीन्हें ॥ यातें धूपदीप बलिदानहि। करत सविधिहैं नित्य सुजानहि॥ सुर अरु पितर सुऋषि हैं जेते। पूजें होत प्रसन्न सु तेते ॥ यह मति यापि नहुष मुद पाग्यो। होय इन्द्र सब करनेलाग्यो ॥ ॥ दोहा ॥ नहुष कौं नहुष कालमे भाग्य भएतें छीन। प्रापित भयो प्रमादकों भूपति सुनहु प्रवीन ॥

॥ * ॥ चरणाकुलकछन्द ॥ * ॥

सो प्रमादता भए महाने। भूलो धूप दीप बलिदाने ॥ कुत्सित कर्म्म करण सब लाग्यो। गर्व माहि दुर्मतिसों पाग्यो ॥ तदनन्तर सु नहुष सुरराजा। रथके माहि लगावन काजा ॥ तटन नदी सरस्वति केरे। शीघ्र सुमुनि कुम्भजकों टेरे ॥ तब कुम्भजकों ऐसी बानी। कहत भए भृगु ऋषि बरज्ञानी ॥ शापदेनकों नहुष सुरेसै। जटा माहि तव करत प्रवेसै ॥ करौं प्रवेश जटामे जबलौं। रहो नैन मूदें तुम तबलौं ॥ कुम्भजकों इमि बाणी कहि करि। तास जटामे बैठ क्रुध धरि॥ नहुष पास कुम्भजके आयो। तब कुम्भज इमि बैन सुनायो ॥ रथमे हमकों बेगि लगावो। ज्यों मन आवै त्यों सु चलावो ॥ जहा आयबेकी हम पावैं। आज्ञा तहां तुम्हें पहुचावैं ॥ सुनिकै यह कुम्भजको बानी। दिए लाय रथमे अभिमानी ॥ जब कुम्भज रथके तर आने। तब भृगु ऋषिबर अति हरषाने ॥ नहुष सुरेश बैठ रथ ऊपर। चलत बेग अतिसों भो कूपर ॥ कछू दूरि चलि मोदसों हेरत। भो प्रतादसों मुनिकों प्रेरत ॥ तबहु कुंभज परम तपोधन। नेकहु मनमे कीन्हो क्रोध न ॥ * * * ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ * * * * * * *

तदनन्तर सुरपति नहुष सुनहु युधिष्ठिर प्रज्ञ। कुंभजके शिरप हन्यो वामपादसों अज्ञ ॥

॥ * ॥ चरणाकुलक छन्द ॥ * ॥

तब सक्रोध भैकैं भृगु मुनिबर। नहुषहि शाप दियो यह दुखकर ॥ भूमे जाउ सर्प तुमह्वैकै। तहा रहो बहु दुखसों ह्वैकै ॥ शाप पाय मुनि भृगुके पाहीं। गिरो सर्पह्वै भूके माही ॥ भृगुकों नहुष नेकु जो तकतो। नहुषहि भृगु गिराय नहि सकतो ॥ बलिदानादि कर्म्म शुभ कीन्हें। रह्यो पूर्व वृत्तान्तहि चीन्हें ॥ तदनन्तर इमि कहतो भयो। भृगुकों नहुष दुःखसों रयो ॥ शाप अन्तह्वैहै कब मुनिबर। कहहु कृपाकरि मोपै मुदकर ॥ * ॥ भृगुरुवाच ॥ * ॥ भूप युधिष्ठिर ह्वैहै सुनु अब। ह्वैहै मोक्ष नहुष तेरी तब ॥ भृगु नहुषको ऐसें कहिकै। विधिके फांस गयो मुद लहिकै ॥

शा०प० दा०ध० सुकृदि अगस्त्यउ परम तपस्वी। गे निजु आश्रमकौं सु जसस्वी ॥ पास आय विधिके इहि विधिसौं। कहत भए भृगु भरि सुख निधिसौं॥ **॥*॥दोहा॥*॥**

लखि प्रमादता नहुषकी हम महान दुखपाय। शाप देय करिकै सरप भूमे दयो गिराय॥

॥*॥चरणाकुलकछन्द॥*॥

भृगुके वचन विधाता सुनिकै। भए बुलावन शक्रहि गुनिकै॥ तदनन्तर अमरणके वृन्दहि भए बुलावत सहित अनन्दहि॥ जब संपूरण देवन आए। तब तिनकों इमि वचन सुनाए॥ नहुषहि भृगु अगस्त्य क्रुधधरिकै। भूमे डारि दयो अहि करिकै॥ कार्य न कछू होत बिन राजा। भयो परम संदेह दराजा॥ तातें शक्रहि पुनि बैठावो। देव राज्यपर सुख सरसावो॥ सब सुर सुनि यह विधिकी वानी। पाय हर्षता परम सहानी॥ कहत वचनभे विधिकौं इहि विधि। अबकी करो कार्य यह तुम सिधि। सुनि बाणी यह विधि मुदछायो। शक्रहि राज्य माहि बैठायो॥ शक्र पूर्व राजतहे जैसें। राज्य पाय राज्यो पुनि तैसें॥ नहुषहु दरश तुम्हारो पाएँ। छूटि शापसों मुदसों छाए॥ बलिदानादि फेरि बहु करिकै। ब्रह्मलोककों गे सुख धरिकै॥ देव राज्य लहि नहुष नृपाला। कीन्ही परम अनीति बिशाला॥ तातें अतिहि कुमता पाई। ऋषिको लहिकै रिसि दुखदाई॥ बलिदानादिकके फलसों बर। पुनिहू होतभो समुद धर्म कर॥ ********॥*॥दोहा॥*॥*********

धूप दीप बलिदानको ऐसो फल है पर्भ। तातें गृहो करै सदा भूपति सुनहु सधर्म॥

॥*॥ आभीरछन्द॥*॥

धूपदीप बलिदान। जे जन करत सुजान॥रूपमान बलवान। ते जन होत महान॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञानुगामिना श्रीबन्दीजनकाशीवासिरघुनाथकवीश्वरात्मजगोकुलनाथस्यात्मजगोपीनाथस्य शिष्येण मणिदेवेन कविना विरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणि दानधर्मे उत्तमानुशासने द्विनवतितमोऽध्यायः॥*

॥*॥युधिष्ठिरउवाच॥*॥तोमरछन्द॥*॥

धनहर्ते द्विजको जौन। जन लहत ते गति कौन॥*॥भीष्मउवाच॥*॥ इहिप्रश्नमें इतिहास। एक कहतहौं बुधिरास॥ ***॥*॥ रामगीतीछन्द॥*॥***

वृद्ध एक चाण्डालहो सो सुनु तात सुजान। परे गो के चरणकी रज करै तबही न्हान॥ ताहि लखि एक भूपको सुत कहतभो इमि बैन। परें गोरज करत कोहि न्हान दुर्मति चैन॥ चण्डाल उवाच॥ अधम एक महिपाल कोउ विप्रको हरि गाय। आतहो निज धामकों अघमान होय सचाय॥ मार्ग ऊपर करत हे महिपाल कोउ यज्ञ। चरणकी तिन गोनके रज परी तिहिमे प्रज्ञ॥ भयो रजमय सोम ताको भए पीवत जौन। नरकमाही परे ते द्विज सहित नृप बुधिभौन॥

गौरज जे यज्ञमाही कते जन ते सर्व । भए जाते नरकको सुनु सुमति मान अखर्व ॥ इन्द्रिजित ग्रा०प०
ह्वै ब्रह्मचारय धर्मकों अभिराम । धरें मे हो वसत तबहि कतो बुध मे माम ॥ धरी भिक्षा ल्याय दा०ध०
मै हो परी तिहिके माहिं । हरी गोके चरणकी रज कढै ह्वै कै पांहिं ॥ तास भोजन किएतें
मै भयो हौं चाण्डाल । छीन मेरो ह्वै गयो वर धर्म तेज बिशाल ॥ हरी गोके चरणकी रज परी
जवसों वुद्ध । वेंचिवेके योग्य सोम न कहत मतिवर शुद्ध ॥ जौन बेचत सोमको ते जात रौरव
माहिं । सुबुध ताकी करत निन्दा नित्य संशय नांहिं ॥ परें गौरज भयो हौं चण्डाल मै मतिमांन ।
सुनऊ याते करत हौं मै पर्व गौरजस्नान ॥ छूटि हौं किहिभांति हो मै चण्डालतातैं पर्म । होत
निश्चय नाहि हमकों भूप तात सधर्म ॥ राजसुतउवाच ॥ विप्रके धनअर्थ छोडो युद्धमे तुम प्रांन ।
है तुम्हारी मोक्षको यह हेतु हे मतिमान ॥ बचन सुनि चण्डाल ए महिपाल सुतके पर्म । विप्रके
धनअर्थ लरि कै युद्धमाहि सधर्म ॥ प्राण तजि कै मोक्षको सो भयो प्रापत होत । करऊ तातें
तुमऊ कारज यह सु प्रज्ञापोत ॥ **********

स्वस्तिश्रीकाश्मीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञानुगामिना श्रीबन्दीजनकाशीवासि
रघुनाथकवीश्वरात्मजगोकुलनाथस्यात्मजगोपीनाथस्य शिष्येण मणिदेवेन कविना विरचिते
भाषायां महाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणि दानधर्मे नृपसुतचाण्डालसम्वादे त्रिनवतितमोऽध्यायः॥

॥*॥ युधिष्ठिरउवाच ॥*॥ दोहा ॥*॥

एकहि है सुकृतीनको लोक परम अभिराम । भिन्न भिन्नकी है कहो मोकों हे बुधिधाम ॥

॥*॥ भीष्मउवाच ॥*॥

कर्म कर्मके लोक है अथक प्रथक महिपाल । पुण्यलोककों जात है सुकृती जौन बिशाल ॥
पापमान ते जात हैं पापलोककों तात । यामे संसय है नहीं कहत सुबुध अवदात ॥
कहत एक इतिहास हौं यहि प्रसङ्गमे भूप । गौतमको अरु इन्द्रको है सम्वाद अनूप ॥

॥*॥ तोमरछन्द ॥*॥

मतिमांन गौतम पर्म । बनमांहि तात सधर्म ॥ एक हस्तिको सुत चारु । लखि परो मृतक
उदारु ॥ तिहिकों जिवाय सप्रेम । ऋषि कीन्ह दीर्घ सनेम ॥ कछु दिननमाहि महांन । गिरि सो
भयो बलवांन ॥ धृतराष्ट्रको धरि रूप । तहं आय इन्द अनूप ॥ गहतें भए गज तांन । तब देखि
ऋषि बुधिभांन ॥ धृतराष्ट्रकों इमि बैंन । कहते भए मतिऐंन ॥ मम पुत्रवत है एह । गज चारु
हे अघगेह ॥ गज याहि तूं तिहि तैंन । मम जीव होत अचैंन ॥ यह दुग्ध अरु जल ल्याय ॥ निति
देत सोहि सचाय ॥ प्रिय अति हि लागत मोहि । सुख लहा इहिकों जोहि ॥ धृतराष्ट्रउवाच ॥

आ॰प॰ शत दासिका अभिराम । अरु गो सहस ललाम ॥ बहुरत्न चारु अनन्द । अरु और वित्त
दा॰ध॰ विलन्द ॥ हम तुम्हें दैहैं पर्म ।सुनुऊ हे ऋषे सह धर्म॥ जा चाहिए द्विज कौंन। निजु जानु हे बुधि
भौंन ॥ गौतमउवाच ॥ तव दासिका अरु गाय । बर रत्न बऊ सुखदाय ॥ अरु और ऊ धन औंन ।
चहिए न हमकों तौंन ॥ *॥ धृतराष्ट्रउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ *

बाहन कुञ्जर नृपणको होत कहत बुध पर्म । यातें मैं लेजात हौं है नहि नेकु अधर्म ॥
कुञ्जरको अब मोह तुम छोडि देऊ बुधिधाम । इसो योग्य न राखिबो विप्रणकों अभिराम ॥
सुने बचन धृतराष्ट्रके ए गौतम मतिमान । कहत भए ऐसें बचन करि कै क्रोध महान ॥

॥ *॥ गौतमउवाच ॥ * ॥ रामगीतीछन्द ॥ * ॥

पुण्यकर्मा जाय कै जहँ रहत हैं सानन्द । पापकर्मा जाय कै जहँ सहत हैं अतिदन्द ॥ सुन ऊ ऐसो सदन है यमरायको तहँ भूरि ।दिवै हो मे जातना तुम रहे का सुख पूरि॥ धृतराष्ट्रउवाच धर्मसो जे रहित हैं अरु रहित श्रद्धा जौंन। विषयमे जे रहत रत हैं महत अघकेभौंन ॥ जातना ते सहत हैं अति जाय यमके धाम।जांयगे हम तहाँ नहिं निजु जानु ऋषि बुधिधाम।।गौतमउवाच॥ जाऊ गे जौं धनदके तुम लोकमे नरराय। जातना मन्दाकिनीमे दिवै हौं तौ जाय॥धृतराष्ट्रउवाच देत भोजन अतिथिकों जे गहें ब्रत अभिराम। देत आश्रय द्विजनकों जे परम प्रज्ञाधाम ॥ प्रथम भोजन देय तिनकों जौंन आश्रित होय। करत भोजन धनाधिपके जात लोकहि सोय।। हम न जैहैं धनाधिपके लोककों ऋषि पर्म । दिवै हौ किमि जातना तुम मोहि प्रज्ञ सधर्म ।। गौतमउवाच ॥ मेरु आगे फूलफल युत विपिन चारु विभात । भरे आनँद गान किन्नर करत जहँ अवदात ॥ बहति जम्बूनदी है जहँ महति जल गँभीर। तहाहूँ जौ आपु जै हौ सुनऊ भूमिप धीर ॥ दिवै हौ तौ जातना मै हरें मोगज चारु। तुम्हें निजु कै कहत संशय है न भूप उदारु॥ धृतराष्ट्रउवाच॥ पढत जे द्विज प्रज्ञ हैं इतिहास सहित पुरान। सत्यवक्ता बऊश्रुत अरु धर्मवान महान ॥ समधु भोजन देत द्विजकौं जौंन जन बुधिधाम। जात जंबूनदीकों ते कहत बुध अभिराम।। तहां मैं जैहौं न तातें जातना किमि मोहि। दिवै हौ हे ऋषे मतिवर सुनऊ इत तुम जोहि ।। गौतमउवाच ॥ प्रिय सु नारद ऋषीकों फलफूलसों युत पर्म ।अप्सरा गन्धर्वगणको तिमिहिँ प्रिय सह शर्म ।।करत किन्नर राज तामे नित्य समुद विहार। इन्द्र तामे जाय कै अति मुदित होत उदार॥ सुनऊँ ऐसो विपिन नन्दन तौनमाही तोहि । दिवावैं गे जातना हम महत का इत जोहि ॥ धृतराष्ट्रउवाच ॥ नृत्यमे अरु गीतमाहीं कुशल हैं द्विज जौंन । कबऊँ काहूको न जाचत जौंन द्विज बुधिभौन॥ जात नन्दन विपिनकों ते और कोउ न जात। तहां हम जै हैं न जानो सत्य ऋषि अवदात ॥ गौतमउवाच ॥ * ॥ जहाँ अग्निज बसत हैं अरु पर्वतज हैं यत्र ।जलज जन जहँ रहत हैं सह देव गण एकत्र॥सिद्धि सर्व सुकामना बर करत है जहँ शक्र। नारि नर गणमे न कोऊ कबऊँ बोलत

यज्ञ॥ नाम उत्तर कुरुसुताको लोक ऐसो औंन। आतना तुमकों दिवैं हौं मै तहां करि गान॥ आ०प० धृतराष्ट्रउवाच॥ *॥ कामना करि आत जे नहि कबहूँ कोऊ पास। जे न भक्षत मांस धारैं दा०ध० ध्यान सहित हुलास॥ जिते जङ्गम सथावर हैं भूत तिनके माहिं। कबहूँ हिंसा भावकों जे जन बिचारत नाहिं॥ लाभमे औ अलाभहूमे रहत एकहि भाय। सुती निन्दा करत काहूकी न सुखदुखछाय॥ उत्तराकुरुलोकमाहीं जात हैं जन तौंन। सुनहु ऋषिबर तहाँको हम करैंगे नहि गौंन॥ दिवै हो किमि आतना तुम मोहि करि कै युद्ध। छोडि हौं मै नाहि जै हौं लै सुगज यह उद्ध॥ *॥ गौतमउवाच॥ *॥ चन्द्रहूके लोकमे जौ जाहुगे महिपाल। दिवैं हौं तौ तहां हमे आतना सुविसाल॥ *॥ धृतराष्ट्रउवाच॥ *॥ जे प्रतिग्रह लेत नाही देत हैं नितिदान॥ औंन मागत विप्र सोई बस्तु देत सुजान। जिते आवैं अतिथि तिनको भूरि करि सनमान॥ देत भोजन प्रीतिसों जे परम प्रज्ञावान। छोडि रोसहि सदा कोमल औंन बोलत बैंन। निरन्तर जे करत यज्ञहि सुनहु सुऋषि सचैंन॥ जात ते हैं चन्द्रमाके लोककों सुख औंन। दिवै हो तुम आतना किमि तहां हम जै हैं नं॥ *॥ गौतमउवाच॥ *॥ रजोगुण औ तमोगुणसों रहित अति अभिराम। शोकहूसों रहित तेजस भरो अतिहीँ माम॥ लोक ऐसो भानुको जौ जाय हौ तिहिं माहि। दिवै हैं तौ आतना हम तोहि संशय नाहि॥ *॥ धृतराष्ट्रउवाच॥ *॥ करत सेवा गुरुकी जो प्रीति सहित विशाल। शास्त्र श्रुतिमे रहत जे रत महत औंन दयाल॥ तपस्याकों करत जे अरु गहैं सुब्रतहि औंन। सत्य जे जन नित्य बोलत चारु प्रज्ञाभौंन॥ दिवाकरके लोक माँही जात ते हैं पर्म। तहाँ हम जैहैं न जानहु सत्य सुऋषि सधर्म॥ *॥ गौतमउवाच॥ *॥ बरुणके तुमलोकमे जौ आयहो भूपाल। दिवै हु तौ तहांहूँ हम आतना सुविशाल॥ *॥ धृतराष्ट्रउवाच॥ *॥ बेदविधिसों अग्निहोत्र हि करै जो त्रयबर्ष। यज्ञ त्रय वर वर्षमाहीं करै औंन सहर्ष॥ सुमारगमे चलै जो निति करै नित्य सुधर्म। बरुणके सो लोकमाँही जात सुऋषि सधर्म॥ तहाँ हम जैहैं न यातें आतना तुम मोहि। दिवै हौं किहिभांतिसों ऋषि सुनो मोतन जोहि॥ *॥ गौतमउवाच॥ *॥ जायवेकी तहाँ मानव करत इच्छा पर्म। शोकसों है रहित ऐसो इन्द्रलोक सधर्म॥ तहाँ तुमकों आतना मै दिवै हौं अति भूरि। कहा गजकों लेय कै तुम रहे सुखसों पूरि॥ *॥ धृतराष्ट्रउवाच॥ *॥ युद्ध मे जे सूर है अरु पढत जे निति बेद। जिये जो शतवर्षलौं वर करै धर्म अखेद। इन्द्रवारे लोकमाहीं जाय हैं जन तौंन। दिवै हौ किमि आतना नहि करैंगे तहँ गौन॥ *॥ गौतमउवाच॥ *॥ स्वर्गहूके लसत ऊपर प्रजापतिको लोक। जायवेकी तहां इच्छा करत सब बुधि ओक॥ तहाँ तुमकों आतना मैं दिवैं हौं महिपाल। कहा कुञ्जर लेय मोरा भरे हर्ष बिसाल॥ *॥ धृतराष्ट्रउवाच॥ *॥ अश्वमेध हि करत जे अरु प्रजा पालत औंन। प्रजापतिके लोककों ते जात हैं बुधिभौंन॥ तहाँ हम जैहैं न यातैं आतना

आ०प० तुम मोहि । दिवै हौ किहिँभाँतिसों ऋषि कहत हैं हम तोहि ॥ * ॥ गौतमउवाच ॥ * ॥
दा०ध० शोकसों है रहित औ है परम दुर्लभ चार । जाय कै तहँ लहत अक्षय मोद सुमतिअगार ॥
सुनहु शुचि गोलोक है इहिभाँतिको अभिराम । तहाँ तुमकों जातना मै दिवै हौं अतिमाम ॥
धृतराष्ट्रउवाच ॥ * ॥ सहस गो जो देत विधिसों वर्षगाहि ललाम । सहित आदर द्विजनकों बुलवायकै बुधिधाम ॥ हौंहिं गृहमे आस शत गो देत जो दश गाय ॥ होंहि जाके गऊ दश सो देय एक सचाय ॥ ब्रह्मचर्य्यहि माहि जे जन वृद्ध होत सुजान । करत रक्षा धर्मकी जो विप्रवर मतिमान ॥ गोमती अरु कौशिकीमे करत जौन सनान । तिमिहि यमुना सुरसरीमे करत स्नान सुजान ॥ विपासा अरु बाहुदामे तिमिहि पंपामाहि । प्रेमसों जे जाय कै जन करत स्नान सदाहि ॥ और उत्तम तीर्थ जे हैं भूमिमे अभिराम । सविधि तिनमे स्नान जे जन करत हैं बुधिधाम ॥ जात ते गोलोककों है है न संशय यत्र । दिवै हौ किमि जातना हम जायगे नहि तत्र ॥ * ॥ गौतम उवाच ॥ * ॥ उष्णता अरु शीतको है नेक जँहँ भय नाहि । क्षुधा प्यास न लगति है नहि होत दुख सुख पाहि ॥ राग द्वेष न जहां है अरु जरा मरण न होय । शत्रुता अरु मित्रता जहँ परत है नहि जोय ॥ पाप पुण्य न जहा ऐसो लोक विधिको पर्म । जातना मै दिवै हौं तहँ कहा लखत सशर्म ॥ * ॥ धृतराष्ट्र उवाच ॥ * ॥ करत काहूको न जे जन सङ्ग हैं करि मोह । नेमसों जे करत हैं व्रत करत कबहु न कोह ॥ स्वर्ग गतिकों प्राप्त ह्वै कै तौन जनअभिराम । विधाताके लोक वरकों जात हैं बुधिधाम ॥ तहां हम जे हैं न यातें जातना तुम मोहि । दिवै हौ किहिभातिसौं मुनि कहा जोहत कोहि ॥ * ॥ गौतम उवाच ॥ * ॥ पुण्डरीकंसु कंजकी जहँ होति वेदी चारु । जहां गायो जात है निति सामवेद सुढारु ॥ जातना मै दिवै हौं धृतराष्ट्र है तहँ तोहि । कहा गजकों लेय कै मुसकात मोतन जोहि ॥ तत अनन्तर जानि गौतम शक्रकों हे तात । कहत भे इमि बैन प्रज्ञाऐंन मुनि अवदात ॥ लए तुमकों जानि हे सुरराज अब हम आम । तुम न मनसा वाकहूसों करत अघ मुदधाम ॥ शतक्रतुरुवाच ॥ हम सु निजरनाथ हैं तुम लए हमकौं जानि । तुम्है करत प्रणाम हैं हम जोरि दोऊ पानि ॥ आजमे गजहरणके हम सुनी अद्भुत बात । जो कहौ सो करैं अब हम सुनहु मुनि अवदात ॥ गौतम उवाच ॥ * ॥ वर्षदशलौं हरि हमारे गज हि राखो अन्त । देहु सो तुम कृपा करि कै सुनहु हे सुरकन्त ॥ * ॥ इन्द्रउवाच ॥ * ॥ लखहु आवत आपुको यह सुवन वारण पर्म । चरण उपटे रावरेके भूमिमाहि सधर्म ॥ हर्षि तिनकों चायसों सो रह्यो सुखसों पूरि । प्रेम बरख्यो जात है नहि तास हियको भूरि ॥ करहु वारण लेहु वारण आपनों अभिराम । दया धारण करहु धारण श्रेय मम मतिधाम ॥ * ॥ गौतमउवाच ॥ * ॥ चहत हैं कल्याण तेरो सदा हम सुरराय । पाय वारण आपनो मै भयो परम सचाय ॥ * ॥ इन्द्रउवाच ॥ * ॥ कहैं विन

तुम आनि लीन्हों मोहि मुनि मतिधाम । भयो हौं परसन्न तातें भयो मुदमे भाम ॥ चलऊ तुम शुभलोककों गज सहित ऋषि अवदात । कहे ऐसे बचन मुनि सों मक्त सुनु हे तात ॥ ता अनन्तर करि सु आगे मुनिहिं गज सह पर्म्म । सुराधिप सुरलोककों भो जात होय सधर्म्म ॥ दोहा ॥ * ॥ शा०प० दा०ध०

पढिहै जो आख्यान यह मढिहै मुदसों भूरि । जैहै विधिके लोककों गैतमलों सुख पूरि ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणाज्ञानुगामिना श्रीबन्दीजनकाशीवासि रघुनाथकवीश्वरात्मजेन गोकुलनाथेन कविना विरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणि दानधर्म्मे आद्यकल्पे चतुर्नवतितमोऽध्यायः ॥ *❧*❧*❧*❧*❧*❧*❧*❧

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

शान्ति अहिंसा सत्य अरु बहु प्रकारके दान । अपनी तियमें तुष्टि अरु दान सुफल सुखदान ॥ बरणि सुनायो मोहि तुम सुनऊ तात बुधिधाम । पूछतहौं एक हेतु अब कहऊ तौन तुम आम ॥ तपबलतें तुम और का जानत श्रेष्ठ सुजान । कहऊ श्रेष्ठ जो होय सो बक्ता आपु महान ॥

॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥

जितनेतप तिनमाहि है अनसन तप अभिराम । अनसन तप सम और तप है न कहत बुधिधाम ॥

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

यह प्रसङ्गके माही भूप । सुनऊँ एक इतिहास अनूप ॥ विधि औ नृपति भगीरथ पर्म्म । तिनका है सम्बाद सधर्म्म ॥ अमरलोक गो लोकहि पर्म्म । अरु ऋषिलोक उलङ्घि सधर्म्म ॥ गये भगीरथ विधिके लोक । देखि ताहि विधि आनद ओक ॥ कहत भए ऐसे बर बैंन । सुनऊँ युधिष्ठिर प्रज्ञा ऐंन ॥ आए कौंनभांति तुम भूप । इहिं सुलोकके माहिं अनूप ॥ नर अरु अमर तिमिहिं गन्धर्व । किएँ तपस्या बिना अखर्व ॥ आय सकतहै कोऊ नाहिँ । मम उत्तम सुलोकके माहिँ ॥ ॥ * ॥ भगीरथउवाच ॥ * ॥ सुबरणको मुद्रा एक लक्ष । दई द्विजनकों सादर स्वक्ष ॥ कहे बेदमे जे ब्रत चारु । कीन्हें तेमे सबिधि उदारु ॥ तिनके फलतें मै इहिं लोक । आयो हौं नहि सुनु मुद ओक ॥ होत एकदिनमे मख जौन । कीन्हें तेमे दश मुदभौन ॥ होत पक्षदिनमे जे यज्ञ । तेऊ दश कीन्हें सुनु प्रज्ञ ॥ एकादशदिनमे मख जौन । होत किए एकादश तौन ॥ ज्योतिष्टोम यज्ञ शत एक । कीन्हे हैं हम सहित बिबेक ॥ बसिके सुरसरितट शत बर्ष । कीन्हों तप हम महत सहर्ष ॥ तहां खबरी सहस सुढार । दीन्ही हम सुनु मोद अगार ॥ औ कन्या दीन्ही अभिराम । भूषण परम पिन्हाय ललाम ॥ तिन्हहूँके फलतें हम नाहिँ । आए इहिं सुलोकके माहि ॥ अश्व दिए सुन्दर एक लक्ष । अरु गो बीस सहस अति स्वक्ष ॥ दीन्हीं पुष्कर तीरथ माहिँ । बिप्र बुलाय बिज्ञ हम पांहिँ ॥ सुबरणके आभरण पिन्हाय । साठि सहस कन्या छबिछाय ॥ विधिवत

अा०प० हम दीन्हीं लोकेश । भरे हर्षसों परम असेश ॥ तीन दानहूके फल सों न । आए दुहिए तुम्हारे
दा०ध० भौन ॥ गोमख माहिँ सुनऊँ लोकेश । करि सनमान द्विजनके वेश ॥ एक एक द्विजकों हम गाय ।
दश दश अर्बुद दईसचाय ॥पहिले ब्याई ओ है गाय । स्रष्टी ताहि कहत बुधराय॥ दोय कोटि
हम दीन्हीं तीन । सुनु हे दुहिए परम सुखभौन ॥ तीन दान फल सों हम पर्म । नाहि लह्यो
तव लोक सुशर्म॥ बाल्हिदेशके बाजी चारु। श्वेत वर्णके प्रभा अगारु॥सुवरण भूषण सों अभिराम।
भूषित लसैं चारुके नाम ॥ दीन्हे मै सादर एक लक्ष । बायु बेगवारे अतिदक्ष ॥ एक एक नखमे
लोकेश। कोठि कोटिबर मोर सुवेश॥ बेदवान बिप्रणकों दीन्ह ।तिनको बिधिवत आदर कीन्ह॥
तीनऊँ फलसों आए नाहि । ब्रह्मा लोक तुम्हारे माहिँ ॥ श्यामकर्ण बाजी अभिराम । अरु बर
हरितबर्ण छबिधाम ॥सुवरण माला तिन्हैं पिन्हाय ।सत्रह कोटि दिए सुखदाय ॥सुवरण माल
बिशाल सुढांन। तिनसों भूषित अति बलवांन ॥ तिनके दन्त सु उन्नत शुभ्र । मनु बकमाल धरे है
अभ्र ॥ तिनके कुम्भनि ऊपर पर्म । चिन्ह पद्मके लसत सशर्म॥ ऐसे सुन्दर मैंगल नाम ।सत्रहको
टि दिए छबिधाम ॥ अरु सुवर्णके रथ रमणीय। तिन्हैं देखि मोदित व्है जीय॥मुकता लर लागी
तिन मांहि । इन्द्रहूके ऐसें रथ नांहि ॥ सत्रह कोटि दिए हम तान । युक्त सु बाजिनसों बल
भौंन ॥ अरु दच्छिणाके सु जितेक । बेदमाहि हैं कहे तितेक ॥ बाजपेय दश यज्ञ सुवेश। करि
दीन्हे हम सब लोकेश ॥ बलसों जीति सर्व महिपाल । राजसूय करि यज्ञ बिशाल ॥ भूषण सों
भूषित अभिराम । मघवा सम बिक्रमसों नाम ॥ ऐसे भूपति एक हजार । दिए दच्छिणा माहि
सुढार ॥ ॥ पज्झ्भलीछन्द ॥

हम दीन्ह तीन शत चारु ग्राम।अरु षट हजार बाजी ललाम ॥ सङ्कल्प नीरको भो प्रवाह।
सुर सरित सोतहू तें अथाह ॥ तिहि दानतें सु हम अब आय । नहि प्राप्त भए सुनु लोकराय ॥
सुरसरित ल्यायबेकों महान । हिमवान भूमिधर पै सुठान ॥ हम कियो भूरि तप महत काल।
थिरिकै सुचित्त चञ्चल बिशाल ॥ तिहिते ऊँ लोक तव माहि आय । हम भए प्राप्त नहिँ लोक
राय ॥ दिन द्वादशने मख होत जौन । हम कीन्ह त्रयोदश यज्ञ तौन ॥ बर सहस अष्ट बलके
उतङ्ग ।सुवरण मढाय एक एक शृङ्ग॥हम दिए द्विजनकों बृषभ चार। आए न तीनहूतें उदार॥
बर हेम रत्नके निचय उद्ध । हम दीए द्विजनकों बोलि शुद्ध ॥ धनधान्य युक्त अभिराम ग्राम ।
दीन्हें सहस्र बिधिसों सुनाम ॥ अरु अश्वमेध बहु यज्ञ कीन । तिनमाहि दच्छिणा भूरि दीन ॥
मढवाय हेमसों तरु सुढार । करि भूषित रत्ननसों अपार॥ तिन्ह तरुनको सु योजन प्रमान । निर्ज
रित बिपिन अति बर सुठान ॥ बर बेदवान बिप्रण बुलाय । बिधि सहित तौन दीन्हो सचाय ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

फलतें तीनऊँ दानके सुनु लोकेश सशर्म । आए नहि तव लोकमे निश्चय जानऊं पर्म ॥

॥ * ॥ अरिल्लछन्द ॥ * ॥ शां०प० दा०ध०

तीसवर्ष ब्रत कियो सुरायन। होति प्रमाद क्रोध सह घायन॥ गो नैशत हम दीन्ही दिन दिन। मुदित भए अति पाई जिन जिन॥ तीन दानहूके फलतें वर। लोकमे न तव आए मुदकर॥ तीन सु चयन यज्ञ कीन्हें हम। अरु नरमेध सप्त कीन्हें सम॥ सविधि सु अष्टादश अरु एक शत। किए विश्वजित मख लहि श्रुति मत॥ नदी बाऊदा सरजू सुरसरि। नैमिषार औ तिनमे विधि करि॥ दश हजार गो दई दुग्ध वति। तीनऊतें न लई हम यह गति॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

राख्यो हियमे गुप्त करि अनसन ब्रत सुरराय। ताकों आन्यो शुक्र करि तप महांन सुखदाय॥
ताहि जानिकै शुक्र जिमि साधत भए सुजांन। तिमिहीं अनसन ब्रतहि मै साधत मो सुखदान॥
साधें अनसन सुब्रतकों व्है प्रसन्न ऋषि सर्व। जितेऊते मम धाममे तेजस भरे अखर्व॥
ब्रह्मलोककों जाऊ तुम महत मोदके धाम। कहत भए ऐसैं बचन मोहि दया करि माम॥
ताते मै तव लोककों प्राप्त भयो लोकेश। नमस्कारमै करतहौं होऊ प्रसन्न अशेश॥
अनसन ब्रत सम और नहि सुखदायक तप पर्म। ताहि किएतें मै लह्यो बर तव लोक सुशर्म॥

॥ * ॥ तोमरछन्द ॥ * ॥

भीष्मउवाच ॥ * ॥ नृप भगीरथके बैंन। सुनि लोकनाथ सचैंन॥ अति व्है प्रसन्न सुजान। सुर वृन्द सहित महांन॥ ○○○○○ ॥ दोहा ॥ ○○○○○○○○○○○○○○

भगीरथहि पूजत भए आदरसौं बैठाय। अनसन ब्रत फल देतहै ऐसो है नरराय॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञानुवर्त्तिना श्रीवन्दीजनकाशीवासि रघुनाथकवीश्वरात्मजगोकुलनाथस्यात्मजगोपीनाथस्य शिष्येण मणिदेवेन कविना विरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणि दानधर्म्मे ब्रह्माभगीरथसम्वादे पञ्चनवतितमोऽध्यायः॥ *○○

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥

लिखी वेदमे पुरुषकी आयु वर्षशत तात। बाल तरुण किमि मरतहैं कहिए करि विख्यात॥
आयु बढतिहै मनुजको किएँ कर्म्मको कौंन। अल्प आयु किहि कर्म्मसों होत कहो बुधिभौंन॥
कौन कर्म्मसों लहतहैं कीरति मनुज महांन। कौंन कर्म्म कीन्हें लहत श्रिय सुखदा मतिमान॥

॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥ ॥ रामगीतीछन्द ॥ * ॥

लहतहैं जिहिं कर्म्मसों जन महत कीरति तात। औ लहैं जिहिं कर्म्मसों श्रिय मोददा अवदात॥ मनुजको जो कर्म कीन्हें आयु होति महान। होतिहै औ कर्मसों जिहि अल्प आयु सुजान॥ कहतहौं ते कर्म तुमको सुनऊ तजिकै भर्म। प्रश्न ऐसो करे तुम बिन कौन तात सधर्म्म॥ आय होति महांन जनको किए मैं आचार। लहत हैं आचारही सों श्रियऊ तात उदार॥ कीर्ति प्राप्तऊ होनको आचारही है हेत। तुम्हे निजुकै कहतहौं मै सुनऊ बुद्धि निकेत॥ हनत

अ०५० अनके पापको आचारहै अभिराम । सुनऊँ ताते योग्यहै आचार कीबो नाम ॥ कियासों जे
दा०५० रहित हैं नास्तीक है जन जौंन । दुराचारी पातकी अरु जौंन सुनु बुधिभौंन॥ होतहैं अल्पायु ते
जन कहत बुध अवदात। नेकु नहि सन्देह यामे जानु कुन्ती तात ॥तजत जे मर्यादकों अरु शील
छोडत जौंन। रहत मैथुनमाहि जे रत नित्य दुर्म्मति भौंन॥ शास्त्रकों अरु गुरूको जो बचन मानत
नाहि । होत हैं अल्पायुते संशय न याके माहि ॥ नित्य बोलत सत्यहैं अरु जौंन करत न क्रुद्ध ।
कबऊँ हिंसा करत जे नहि धरि प्रमादहि उद्ध ॥ करत कबऊ न असूया जे धरत श्रद्धा भूरि ।
आयु तिनकी बढतिहै निति रहत सुखसों पूरि ॥ दशन सों जे नित्य काटत नखनकों हे तात।
धारि दुर्जन ताहि जे जन क्रोधकों सरसात ॥ तृणनकों जे नित्य तोरत लोष्ट फोरत जौंन। सहत
आयुहि तौंन प्राप्त न होतहैं बुधिभौंन ॥ करत चुगली जौंन तिनको शीघ्र होत बिनाश। हैं नही
सन्देह यामे नेक नृप बुधिराश ॥ रहे निशि जब चारि घटिका तब सु आलस त्यागि। धर्म्मको
अरु अर्थको नित करे चिन्तन लागि ॥ प्रात उठिकै स्नान संध्या करै बिधिवत पर्म्म । तिमिहि
सायंकाल संध्या करै तात सधर्म्म ॥ अर्थ उद्यत मारतण्डहि कबऊ लखिए नाहिं। औ न लखिए
मारतण्डहि कबऊ जलके माहिं॥ देहि जब नभ मध्य गत कबहू न लखि ए तात। होत जनकों
दोष देखैं कहत बुध अवदात॥किएँ संध्या बढति आयु सु ऋषिनको अभिराम। करै तातैं सविधि
संध्या मौंन ह्वै बुधिधाम॥ प्रातसंध्या करै जे नहि औ न सायंकाल।कर्म्म तिन सों शूद्रके करवाइ
ए महिपाल ॥ कबऊ नहि परनारि ताही रमण कीजै भूप । धर्म्म चारिऊ वर्णको यह कहत
प्रज्ञ अनूप ॥ सुनऊँ परतिय गमन जैसो आयु नाशक पर्म्म। और ऐसो आयु नाशन हेत है न
सधर्म्म ॥ सुनऊ नृप परनारिके अँगमाहि रोम जितेक । रमत जो परनारि सेवत नरक बर्षनि
तेक॥ दन्त धावन केशधोवन देव पूजन जौंन । प्रात ए सब कार्य्य करिए कहत बर बुधिभौंन॥
मुत्र बिष्टा देखिए कबहू न तात सधर्म। औ उलङ्घनकीजिए नहि कहत प्रज्ञ अधर्म ॥ अतिहि
प्रातःकाल औ नहि अतिहि सायंकाल। औ नही मध्यान्हमे चलिए सु धरणी पाल॥ शूद्र जनके
साथसे औ बिजातीके साथ । गमन कबहूँ नाही कीजै सुनऊ बर नरनाथ॥ भूपको औ बिप्रकों
अरु बृद्धजनकों पर्म। औ गऊकों दीजिए पथ कहत प्रज्ञ अधर्म ॥ गर्भवतिका नारिकों अरु
जौंन होय सभार। तिनिहि निबलहि दीजिए पथ दया करि सु अपार ॥ पिप्पलादिक वृक्ष
जेपै पूजनीय सुजान । कीजि ए तिनकी प्रदक्षिण निकै अंह मतिमान ॥ अर्ध निशि
मध्यान्हमे औ दुओ संध्या माहिं । चतुष्पथमे जाइए नहिं सुन्यो बुधजन पाहिं ॥ अन्यको
पहिरी उपानह पहिरिए नहि तात । औन ओढोवस्त्र लीजै कहत बुध अवदात ॥ चरण
ऊपर चरणकों कबहूँ न धरि ए भूप । मुत्र बिष्टा किजिए तरु छाहमे न अनूप ॥ अष्टमी औ
अमावस्या पूर्णिमाके माहि। औचतुर्दशि माहि तियके जाइ ए नहि पाहिं॥ कबऊँ काहूको न

चुगली कीजिए दुखदाय । औ अनादर कीजिए नहिं दुखद बैन सुनाय ॥ आपु सों जो होय नीचो बढ़िये तिहिसों नाहिँ ॥ क्रूरताकों राखिए नहिं आपने हियमाहिँ । कबऊँ काहूँकों न कहिए तात ऐसे बैन। सुनें जिनकों होय हियके माहि भूरि अचैन ॥ लगें शायक होत जो है देह माहीं घाव । पूरि आवत तौन है कछु दिननमें नरराव ॥ बाक शायक लगेसों जो घाव होत महान। कबऊँ पूरत नाहिँ सो है आनु निशु मतिमान ॥ युद्धमें जो लगत शायक सकत काढि है तौन। बचन शायक सकत काढि नहिं आनु निज बुधिभौन ॥ प्रज्ञ तातैं कहत काहूसों न हैं कटु बैन । औ न काहूकों करैं परिहास प्रज्ञाऐन ॥ रूप बिनके जौन हैं अरु हीन अँगके जौन। कीजिए अपमान तिनको कबऊँ नहिँ बुधिभौन ॥ जौन विद्या हीन हैं अरु जौन हैं धनहीन। कीजिए अपमान तिनहूँ को न तात प्रवीन ॥ पुत्रकों अरु शिष्यकों शिक्षार्थ ताडन देय। अन्य और उठाइए नहि दण्ड करमें लेय ॥ प्रात अनुदय माहि उठिकै देवको करि ध्यान। मात औ पितकों सु करिए निति प्रणाम सुजान॥ तिमिहि गुरुकों और जेठे होहि तिनकों भूप। नमस्कारसु कीजिए निति यह सुधर्म अनूप ॥ बढति है यह धर्म कीन्हें आयु तात सधर्म। है नही सन्देह यामें कहत प्रज्ञ अभर्म ॥ शास्त्रमाहीं कही जेतीं वस्तु भक्ष नृपाल । तिनहिको निति करिय भक्षण कहत दक्ष विशाल ॥ बैठि उत्तरदिशा मुख कै शौच करिए तात । मौन ह्वै कै दन्तधावन करै निति अवदात ॥ वृद्ध ढिग औ गुरुके ढिग तिमि विचक्षण पास । देवपूजा किएँ बिनहूँ जाइए बुधिरास ॥ देवपूजा किएँ बिन नहिँ जाइए अन्यत्र । होम नित्यहिं कीजिए यह धर्म भूप पवित्र ॥ मूत्र और पुरीष करि कै धोईए निति पाय। तिमिहिँ जौ कहुँ जाइए तौ धोइए नरराय॥ भोज्य औ अध्ययन कीजे पदनकों निति धोय । नित्यको यह धर्म कीन्हें रहत सुखसों भोय ॥ देवताके अर्थ भोजन विरचिए हे तात । स्नान करिकै शुद्ध ह्वैकै भनत बुध अवदात ॥ मलिन जो आदरश ताकों देखिए कबहूँ न । औ निशामें देखिए नहि होति परमायू न ॥ शिरहि उत्तर वोर करिकै शयन कीजे नाहिँ। तिमिहि पश्चिम वोर कै हम सुन्यो बुधजन पाहिँ ॥ पूर्बदक्षिणवोर शिरकै नित्य कीजे शैन । अतिअँधेरे माहि शैन न कीजि ए मतिऐन॥ होहि जौने सदनमाही शोवती परदार । जाइए नहि शोयबेकों तहा भूप उदार ॥ शोइए कबहू न जीरण भग्न गृहके माहि । औन तिरछो शोईए हम सुन्यो बुधजन पाहि ॥ कीजिए कबहू न भूपति नास्तिकनको सङ्ग । सङ्ग कीन्हें होत अपनो धर्मनष्ट उतङ्ग ॥ बैठि आसन पायसों नहि बैठिए भूपाल । नग्न ह्वैकै न्हाइए नहि कहत सुबुध बिशाल ॥ औ निशाके माहि कबहूँ कीजिए नहि स्नान। स्नान करिकै अङ्गकों नहि पोंछिए मतिमान ॥ बिना कीन्हें स्नान चन्दन लाइए नहि भाल। स्नान करि कै बस्त्रकों फटकारिए न नृपाल ॥ बस्त्र भीजो राखिए कबहूँ न तनके

आ०प० माहि। स्नानके विन किए पूजा बोलिए है नाहि ॥ इ वता पै चढी माला पाइ तिहिकोँ धर्म।
दा०ध० धरेन सो लेघिए कबऊ न तात सधर्म्म ॥ पंन्हि ताकों आइए नहि बाहिरे सुनु तात। परसिए
नहि पातकीकोँ कहत बुध अवदात ॥ रजस्वलिका नारिसों कबहू न कहिए बैंन। ग्रामके
नहि निकट विष्टा कीजिए मतिऐंन ॥ मूत्र विष्टा कीजिए नहि कबऊ जलकेमाहि। खेत
माहों अन्नके अरु औा न सुरगृह पाहि ॥ अन्न भोजन करत जल नहि पीजिए बहुबार। करिसु
भोजन धोइए मुख तीनबार उदार ॥ पूर्व मुख ह्वै नित्य भोजन कीजिए ह्वै मौंन। कबऊँ भोजनकी
न निन्दा कीजिए बुधिभौन ॥ करि सु भोजन राखिए कछु अन्न भाजनमाहि। बढति जनकी
आयु है ए किए धर्म सदाहि ॥ पूर्वमुख ह्वै किए भोजन बढति आयु सु भूप। बदन दक्षिणओर
करिके किए भोज्य अनूप ॥ होत है यश भूमिकामे चन्दसो अभिराम। बदन पश्चिमओर
करि के किएँ भोज्य सलाम ॥ धन्य जगमे होत है मति पाय के अवदात। बदन उत्तरओर करि के
किए भोजन तात ॥ होत है कल्याण प्रापित कहत बुध अभिराम। सुनऊ कुन्तीनन्द वर अरि
वृन्ददर बुधिधाम ॥ करि सुभोजन परम शिखिको करि सु मनसो भूप। लाइए जल नाक कानसु
चक्षुमाहि अनूप ॥ मूर्द्धमाही तिमिहि जलको परस कीजे तात। ता अनन्तर देहमे सब
कीजिए अवदात ॥ अस्थि भस्म अलार जहँ बऊ परो होय सुजान। तहाँ ठाढो ह्जिए नहि कहत
प्रज्ञ महान ॥ अन्यजनके स्नानतें जो बच्यो है कीलाल। कीजिए नहि स्नान तासों कहत बुद्ध
विशाल ॥ अन्न पथमे चलत कबहूँ खाइए नहि तात। ओखरो ह्वै खाइए नहि कहत बुध अवदात ॥
मूत्र कीजे भस्मसे औा गजगृहमे नाहि। औा न ठाढो होय कीजे औा न सुरगृह पाहि ॥ जाय भोजन
करतकोँ तब धोय करि कै पाय। पोंछिए नहि चरण आले राखिए नरराय ॥ शयन कीजे धोय
करि कै पोंछि पाय सुखदायु। किए यह विधि नित्य नृपबर बढति है बऊ आयु ॥ खाय के कछु
बिना धोएँ बदनकोँ अभिराम। विप्र गो अरु अग्निकों जु छुवत नहि बुधिधाम ॥ भानु औा सित
भानुकोँ औा नखत वृन्दहि धर्म। जे न देखत होत ते अल्पायु नाहि सधर्म ॥ वृद्ध आवे पास जब तब
नम्र ह्वै बुधिधाम। जोरि कर उठि जाय सों है सविधि करि परनाम ॥ हाथ अपने चाह आसनकोँ
बिछाय नरेश। वृद्धकोँ बैठाइए यह धर्म सुखदअशेष ॥ कांस्य भाजन भग्नमे करिए न भोजनतात।
भग्न आसनपै न कबऊ बैठिए अवदात ॥ कीजिए भोजन न तनमे राखि कै एकवास। औा न कीजे
शैंन ह्वैके नग्न सुनु बुधिरास ॥ औा सुनो उच्छिष्ट मुखऊँ कीजिए नहि शैंन। औान शिरकोँ परसिए
उच्छिष्ट मुख मतिऐंन ॥ रहत शिरके सर्व आश्रय प्राण हैं नरराय। केशतेँ लैविए नहि कहत बर
बुधराय ॥ औा न कबहू घाव दीजे हाँ न शिरके माहिँ। शिरहि अपने पाणि दोउनसों खुजाइय नाहिँ ॥
औा न पुनिपुनि स्नान कीजे सहितशिर महिपाल। किएँ यह विधिहोति जनकी आयु परम विशाल ॥
जो लगायो तेल शिरमे रह्यो ताने औान। अङ्गमे लगवाइए नहिं तौंन सुनु बुधिभौन। औान

भूखे तिनकों कबहूं न भखत तात। होत हैं अल्पायु ते नहि कहत बुध अवदात॥ बेदकों उच्छिष्ट आप्ण॰ मुख कबहूँ न पढिए भूप। औ पढाईये न कबहूँ कहत बुध अनुरूप॥ बेदकों पढिए न तब जब दा॰ध॰ चले वायु महान। औ तहां पढिए न जहं दुर्गन्ध होय महान॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ ✻
बाणी श्री यमरायकी कही परम अभिराम। यह प्रसङ्गमे कहतहों सुनऊं तौंन बुधिधाम॥
॥ * ॥ रामगीतीछन्द ॥ *
पढंत जे उच्छिष्ट मुख अरु पढावत जन जौंन। होत हैं अल्पायु अरु नहि लहत सन्तति तौन॥ अनध्यायनमाहिँ जे जन पढत अज्ञ सुवेद। बेदकों ते लहत हैं नहिँ रहत नित्य सखेद॥ होत हैं अल्पायु ते यहमाहि संशय नाहि। कही बाणी धरमकी हम सुनो बुधजन पाहि॥ चञ्चलाछन्द॥
भानु अग्नि गाय विप्र सामुहें अजान जौंन। मुत्र औ पुरीष कर्त होत हैं अनायु तौंन॥ जेन कर्त ते सुप्राप्त होत आयुकों महान। नित्य ते अनन्दकों लहैं नरिन्द्र हे सुजान॥ * ॥ दोहा॥ * ॥
विष्ठा मुत्रहि करत जे उत्तरमुख दिनमाहिं। दक्षिणमुख निशिमाहि ते हैं अल्पायू नाहिं॥
॥ * ॥ तोमरछन्द ॥ * ॥
हठ कीजिए गुरु साथ। कबहूँ न हे नरनाथ॥ अब होय गुरु सह क्रुद्ध। तब नम्र ह्वै अति शुद्ध॥ करि कै बिनै परि पाय। करिए प्रसन्न सचाय॥ गुरुकी सुनिन्दा जौंन। जन करत दुर्मति भौंन॥ निहचै हि तिनकी आय। नशि जाति है नरराय॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥ ✻
चरण धोयबे काज लयो भोजनमे जो जल। दूरि डारिए बच्यो होय जिहिँ माहि जितो जल॥ भोजन करि कै आय दूरि कछु बऊजल लै बर। बदन कीजिए शुद्ध नित्य सुनु भूप सुमतिधर॥
॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥
दूरि कीजिए धामतें मूत्र आय कै तात। धाममाहिँ नहिँ कीजीए भनत सुबुध अवदात॥
कबऊँ न धारण कीजिए रक्त पुष्पकी माल। शुक्लपुष्पकी मालकों धरिए सदा नृपाल॥
रक्त सुमन जे बिपिनके औ नीरज हैं जौंन। ते तौ धारण कीजिए सदा तात बुधिभौन॥
कचमारिपुके सुमनकी माला दूषित नहिं। सुन्यो तात सिद्धान्त यह हम बर बुधजन पाहिँ॥
॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥
जो जन करि कै न्हान आवैं पूजा समयमे। शिरमे तास सुजान चन्दन चारु लगाइए॥ ✻
॥ * ॥ रामगीतीछन्द ॥ * ॥
ओढिबेके बस्त्र तिनकों पेन्हिए नहिं तात। ओढिए नहिँ पेन्हिबेके बस्त्रकों अवदात॥ दशी हीने बसनमाहीं होय नाहीं भूप। कीजिए नहिँ तहि धारण कहत प्रज्ञ अनूप॥ देव पूजा सम सके अरु शयनके बरबास। शिशिहि बाहिर आयबेके बसन नृप बुधिरास॥ पृथक पृथक सु राखिए मतिमान भनत हमेश। राखिए नहि काप्ध सबमे एक बसन नरेश॥ रहै दिनभर ब्रह्मचारी भयो

शा०प० करि कै स्नान।ब्रह्मचारी होय औ सब पर्बमाहिँ सुजान॥एक भाजनमाहिं जन द्वै चारि मिलि कै
दा०ध० तात। कीजिए कबहूँ न भोजन भनत बुध अवदात॥ गऊ औ मञ्जारको सूघ्यों सु भोजन औंन।
तिमिहिं सूघ्यों श्वानको करिए न भोजन तौंन॥ लवण करमे खाइए नहि औ न निशिके माह।
शक्तु दधिसँग खाइए कबहूँ न हे नरनाह॥ तौंन भोजन कीजिए नहिं कढे जामे बाल। मांस सूखो
औ न बासो खाइये महिपाल॥ मांस गाय मयूरको है नित्य बर्जित तात। खाइए कबहूँ न ताते
भनत बुध बिख्यात॥भूमिमे धरि कीजिए कबहूँ न भोजन पर्म।औ सु भोजन शब्दवत कीजै न तात
सधर्म॥ पंक्तिमाहीं सबनकों दीजै सु भोज्य समान। दीजिए नाहँ कबऊँ न्यूनाधिक्य तात सुजान॥
भक्ष्य जेती बस्तु तिनकों भक्षि करिकै प्रेम। कबऊँ काहूकों न दीजै भनत सुबुध सुक्षेम॥ उदुम्बर
सणशाक पिप्पल बटनके फल औंन। चहत जे कल्याण ते नहिँ खात हैं बुधिभौंन॥ करि सु भोजन
आचमन करि कहत बुध अवदात। चरण दक्षिणके अंगुष्ठ हि धोय उठिए तात॥ ता अनन्तर
शुद्ध ह्वै कै पाणिसों शिर पर्शि। परस करिए अग्निको ह्वै खरो सो है दर्शि॥ किए यह बिधि रहत
मोदित पचत अन्न सुजान। प्रसंशा है होति जनकी ज्ञातिमाहिँ महान॥ज्ञातिको जो बृद्ध अपनी औ
दरिद्री मित्र।इन्है राखे गेहमाहीं होत गेह पवित्र॥ औंन राखत धन्य तेहैं बढति तिनकी आयु।
कढति बाधा गेहते सब रहत आनन्द छायु॥सारिक शुक औ परेवा राखिए ग्रहमाहि।बृद्धि कारक
सर्ब ए है अत्र संशय नाहि॥ गृध्र उद्दीपक तथा अलि तिमिहि भूप कपोत। सर्ब आए धाममे ए
करत अशुभ उदोत। कीजिए निन्दा न कबहूँ महतजनको तात। छोडि कपटहि प्रसंशा निति
कीजिए अवदात॥ नृपतिकी अरु बैद्यकी अरु बृद्धकी तिय भूप। बिप्रकी अरु बन्धुकी अरु भृत्य
नारी अनूप॥ बालकी औ शरणमे जो होय ताका दार। नारि सम्बन्धीजको औ है अगम्या चार॥
गमन इनमे करत जे नहि महत तिनकी आयु। होति निश्चय कहत हैं बुध सुनऊ बर नरराय॥
शास्त्र मतसों शुद्ध जो वर बनो होय अगार। बास तामे कीजिए बुधिराशि भनत सुढार॥ शयन
औ अध्ययन संध्यामाँहि कीजे नाहिँ। औ न भोजन कीजिए हम सुन्यो बुधजन पाँहि॥ किएँ यह
बिधि होति जनकी आयु महत सुजान। नित्य यामे रहत रत हैं परम प्रज्ञावान॥ धोइए नहिँ
केश कबऊँ करि सु भोजन तात। औ न कीजै श्राद्ध निशिमे भनत बुध बिख्यात॥ बऊत
भोजन कीजिए नहिँ कबऊँ रजनीमाहिँ। बिहङ्गनकों मारिए महिपाल कबऊँ नाहिँ॥
बैन अप्रिय भूप कहिए कबऊ काहू कौं न। औ न काहूको सशोकै कीजिए बुधिभौंन॥
कीजिए निन्दा न काहूकी परोक्ष सुजान। घटति जनकी आयु ए सब कीएतें मतिमान॥
पतितसों नहि बोलिए कबहूँ न हे महिपाल। दर्श पर्शऊ कीजिए नहिँ कहत प्रज्ञ बिशाल॥
पतितको संसर्गसो है आयुहर्ता पर्म। है नही सन्देह यामे सुनऊँ तात सधर्म॥ किएतें दिन
माँहि मैथुन होत जन अल्पायु। तिमिहिँ कन्या गमनतें जनहोतो है अल्पायु॥ रमण कुलटा
माँहि कीन्हें होति आयुष क्षीन। औ किएतें स्नान पुनि पुनि कहत परम प्रवीन॥ रजोदर्शन

भए बिन नहिँ जाइए तिय पास। हेतु दीरघ आयुको यह भणत बर बुधि रास॥ होय जाको जन्म आ०८५०
भो कुलमाहिँ उत्तम पर्म। होहि जाके अङ्ग सुन्दर सर्ब तात सधर्म ॥ होय जाकी बरोबरि बय दा०५०
तिहिँ सु कन्या साथ। व्याह कीबो योग्यहै सुनु धर्मधर नरनाथ॥ बंश राखन हेत करि उत्पन्न पुत्र
सुजाँन। सबिधि ताहि पढायकै करि भूरि बर मतिमान॥ परम उत्तम बंश माही तास कीजे
व्याह। राखिए नित धर्ममाँहि प्रबृत्त हे नरनाह॥ पुत्रिका उत्पन्न करिकै सहित बिधि अभि
राम। सुकुलमे उत्पन्न शुचि धीमान परमाधाम॥ दीजिए ऐसे सु बरको हर्ष सहित बिशाल।
धर्मधर बर कीर्तिकर बर प्रश्न सुनु महिपाल॥ सबिधि सह शिरस्नान करिकैं बिमल मन अभिराम।
देव कारज पितर कारज कीजिए बुधिधाम॥ होय जाँनें नखत माहीं जन्म सुनु हे तात। श्राद्ध
तिहिमे कीजिए नहिँ भनत बुध बिख्यात॥ पूरवा अरु उत्तरामे श्राद्ध कीजे नाहिँ। तिमिहि श्राद्ध
कीजिए नहि नखत कृतिका माँहि॥ और ज्योतिष माँहि बर्जितहैं जितेक नक्षत्र। श्राद्ध तिनमे
कीजिए नहि भणत प्रश्न पवित्र॥ पूर्व मुख औ उदीची मुख जे करावत छौर। बढति तिनकी
आयुहै बर भणत बुधशिरमौर॥ होय जौने बंशमे रुज मृगी कुष्ट महान। व्याह तौने
बंशमे नहि कीजिए मतिमान॥ चारु लक्षण जिते तिनसो होय युक्ता जौन। दर्शनीया प्र
शस्ता औ होय औ बुधिभौंन॥ होय जामे कुटिलता नहिं नेकहू नरनाथ। व्याह कीजे चाहि
ऐसी कंन्यकाके साथ॥ ईरषा कबहूँ न कीजे नारिमे नृप प्रश्न। हेतु है अल्पायुको यह कहत बर
धरमज्ञ॥ उदयमाहीं भानुके अरु दिवस माही सैन। किए तें जन होत हैं अल्पायु नृप मतिऐन॥
औ किएँ उच्छिष्ट मुखनिशि माँहि शयन सुजांन। तिमिहिं संध्यामे किएँ अल्पायु होत अजान॥
स्नान भोजन पठन संध्या माहिँ कीजे नाहि। औ न कबहूँ गमन कीजे पर सु नारी माँहिँ॥ करत
जे ते होतहैं अल्पायु हे महिपाल। है नही सन्देह यामे भणत बिप्र बिशाल॥ छौरकों करवाय
करिकै तबहि कीजे स्नान। घटतिहै आयुष्य कीन्हें देर हे मतिमांन॥ द्विजनकी अरु देवतनकी
तिमिहिँ गुरुको पर्म। स्नान करिकै किएँ पूजा बढति आयु सधर्म॥ निमंत्रण बिन जाइए नृप
बिबाहादिक मै न। निमंत्रणहूँ बिना मखमे जाइए बुधिऐन॥ आयु एकहि करि सु साहस जाइ
ए न बिदेश। औ निशामे चालिए नहिं बिना सङ्ग नरेश॥ मातको अरु पिताको अरु गुरुनको
अवदात। हितऊ औ अनहितऊ शासन मानिए हे तात॥ बेद औ धनुबेद पढिए यतसों अभिराम।
तिमिहिं अश्वादिकन पै चढिए सु नृप बुधिधाम॥ नीति शास्त्रहि तथा बर गन्धर्व शास्त्रहि पर्म।
शब्द शास्त्रहि तिमिहिं पढिए यत सहित सधर्म॥ शास्त्रमे हैं कही जेती कलानेती सर्ब। जानिए

आ०प० दा०ध० कर विप्र अनसों सु मतिमान अखर्व ॥ नित्य सुनिए चोपसों इतिहास सहित पुराण।नीतिसों निति प्रजा पालन कीजिए मतिमान ॥ ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

रजसला जब होय तब आइए न तिय पास । दिन चतुर्थमें आय जब करै स्नान सकुलास ॥
रमे सु पँचई रातिमें तियके सङ्ग सुनु भूप। निश्चय पुत्री होतिहै मतिवर भनत अनूप ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

छठई निशिको माहि रमे नारिमे होत सुत। यामे संशय नाहि निश्चय करिकै कहतहौं ॥

॥ * ॥ अर्धचरणदोहा ॥ * ॥

इमिहीं षोडश दिवसलौं रमे नारिमे भूप । समदिनमे सुत होत विषममे पुत्री होति अनूप ॥

॥ ॥ दोहा ॥ ॥

सबवेदनमे श्रेष्ठहै आचारहि नरराय । होत धर्म आचारतें बढति धर्मतें आयु ॥
कह्यो विधाताको महा यह आख्यान सुजान । पढ़ै सुनै याको मिलै यश अरु आयु महान ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञानुगामिना श्रीबन्दीजनकाशीवासि रघुनाथकवीश्वरात्मजगोकुलनाथपुत्रगोपीनाथस्य शिष्येण मणिदेवेन कविना विरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणि दानधर्मे उत्तमानुशासने आयुराख्याने चतुश्चत्वारिंशत्तमोऽध्यायः ॥

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

मानै किमि सुत निष्ठकों जेष्ठ बन्धु मतिदान । औ कनिष्ठ किमि जेष्ठकों मानै कहहु सुजान ॥

॥ ॥ भीष्मउवाच ॥ ॥

जेष्ठसु बन्धु कनिष्ठकी नितिहीं करै सहाय। आज्ञामे निति जेष्ठकी रहै कनिष्ट सचाय ॥
चाहै भलो कनिष्ठको जेष्ठ बन्धु जो नाहि । पाप लोककों जाय तो यामे संशय नाहि ॥

॥ * ॥ चरणदोहा ॥ * ॥

मरै पिता तब जेष्ठ बन्धुकों मानै पिता समान । रहै सदाही आश्रित ह्वैकै बन्धु कनिष्ट सुजान ॥
तिमिही जेष्ठ बन्धुकी तियकों आनै मात समान। औ जेष्ठा भगनीकों मानै बन्धु कनिष्ठ सुजान॥

॥ ॥ सोरठा ॥ ॥

कियो प्रश्न तुम जौन ताको उत्तर हम दयो । सुनऊँ तात बुधिमान अब आगें का पूछिहो ॥

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ इच्छा उपवासनकी पर्म । वर्ण चारिहु करत सधर्म ॥ तिमिही म्लेच्छ करतहं तात। तासु हेतु नहि आन्यो जात ॥ यह हम सुन्यो बुधनसों दच्छ। नेम सु उपवास नको स्वच्छ ॥ करै विप्र क्षत्रियहि सप्रीति । और न कोऊ करै सनीति ॥ याको कहिए मोकों हेत। आपुहि कहिबे योग्य सचेत ॥ औ उपवासनको फल जौन। तातऊ कहौ तात बुधि भौन।

औ उपवास करत अवदात। गतिकों कौंन तौंन जन जात॥ कौंन धर्म्म कीन्हें अभिराम। जम छूटै शां०प०
अधर्मसों माम॥ औ कछु कान कर्म्मसों पर्म्म। मिलै स्वर्गमे धाम सशर्म्म॥ जे जन करत सविधि दा०ध०
उपवास। करै दान का ते बुधिरास॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ सुनें युधिष्ठिरके ए बैंन।
कहत भए भीषम मतिऐंन॥ ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ ॥ * * * *

सुन्यो जौंन हम श्रेष्ठ गुण उपवासनके माहिँ। सुनऊँ तौंन हम कहतहैं भूप तुम्हारे पाहिँ॥
पूछ्यो जो यह प्रश्नहै हमसों तुम अवदात।सोइ अङ्गिरस विप्रकों पूछ्यो हो हम तात॥
सुनिकै ऋषिवर अङ्गिरस मम सुप्रश्नकों पर्म। कहत भए उपवासके फलको तात सधर्म॥

॥ * ॥ अङ्गिराउवाच ॥ * ॥

एक रात्रि द्वै रात्रिको तीन रात्रिकों पर्म। ब्राह्मण औ क्षत्री करैं वर उपवास सशर्म॥
इन उपवासनकों करैं वैश्य शूद्र जो भूप। मिलै न कछु फल अचलहै यह सिद्धान्त अनूप॥
तिथि सु पञ्चमी षष्ठीमे औ पूरणमासी माहिं।एक बेर भोजन करैं होत दरिद्री नांहिँ॥
क्षमा मिलति सन्तति मिलति होत रूप अभिराम।यामे है संशय नहीं सुनऊँ भूप बुधिधाम॥
वैश्य शूद्र जो यज्ञकी इच्छा करैं नरेश। तौ कुलवांन बुलाय वर सादर विप्र सुवेश॥
तिन्हें देय भोजन सविधि खरो होयकै पाहिं। कृष्णपक्षकी पञ्चमी षष्ठी अष्टमि माहिँ॥
यज्ञं यहीहै वैश्यको तिमिहिं शूद्रको पर्म। व्याधि कढै वीरजबढै कीन्हें याहि सधर्म॥

॥ * ॥ पञ्चलाछन्द ॥ * ॥

मार्गशीर्ष मास माहि विप्र इन्द्रकों बुलाय।देय भोज्य दक्षिणा समेत कै विदा सचाय॥नित्य
एक बेर भोज्य जो करै सुनो सुजांन। तास व्याधि पापको विनाश होतहै महांन॥ सर्व मोदको
उदोत होत गेह मांहिं भूप।होतिहै सुशांद्ध प्राप्त कीर्ति भूमिमे अनूप॥ पौष माहि एक बेर भोज्य
जे करैं सुबुद्ध।होत ते सकीर्ति भूतिमान रूप गांन शुद्ध॥एक बेर भोज्य माघ मांहि जो करै सचेत।
होय भूतिमान वंशमाहिँ सो महत्व लेत॥ * * ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ *

एक बेर भोजन करत फाल्गुणमे जन जौंन।ताके वशमे होहि तिय दऊ तिय वल्लभ भौंन॥

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

चैत माहि भोजन एकबार। करै जौंन जन सुमति अगार॥ बऊ धनवांन वंशमे तौंन। लेत
जन्महैं सुनु बुधिभौंन॥ औ वैशाखऊ माँही भूप। किएँ एक बर भोज्य अनूप॥ होऊ नारि
वा नर नरनाह। श्रेष्ठहि होत ज्ञातिके माँह॥ ज्येष्ठ मासमे भूप सुढार। कीन्हेंतें भोजन एक
बार॥ मिलत अतुल ऐस्वर्य्य महांन। होऊ नारि वा नर मतिमांन॥ आषाढऊ मे जो जन एक।
बार करै भोजन सविवेक॥ लहै पुत्र बऊ अरु धन भूरि। रहै सदा आनदसों पूरि॥ श्रावणहूमे
जो एकबार। भोजन करै सु बुद्धिअगार॥ अरु तीर्थनमे करै सनान। बढै वंश ताको मतिमाँन॥

आ०प० तिथिहिँ भाद्रपद माँहि उदार। भोजन करै जौन एक बार॥ ताहि अचल ऐश्वर्य महान। प्राप्त
८१०४० होतहै सुनऊ सुजान॥ अरु बऊ प्राप्तहोतहै गाय। रहै नित्य आनंदसौं छाय॥ क्वारमासमे
जो एक बार। भोजन करै सु बुद्धिअगार॥ मिलै ताहि वाहन अभिराम। अरु बऊ पुत्र होत
बुधिधाम॥ एक बार भोजन जन जौन। कार्त्तिक माँहि करै बुधिभौन॥ प्राप्त होति ताको बऊ
नारि। भरी सुगुणसौं परम सुढारि॥ होत सूर अरु कीरति मान। रूपमान अरु वर बलवान॥

॥ * ॥ चरणदोहा ॥ * ॥

अगहन आदिक मासमे कीन्हैं ते उपवास। जे फल जनकों मिलत ते कहे तुम्है बुधिरास॥
कीन्हेतें उपवास नृप तिथिनमाहिँ फल जौन। जनकों प्रापित होत अब सुनऊ तौन बुधिभौन॥
पक्ष गत भए जौन जन भोजन करैं सुजान। दीर्घ आयु सो होत बऊ पुत्र होत मतिमान॥
कहे पूर्व उपवास जे तिनको गहिकै नेम। कीन्हें द्वादश वर्षलौं जन गए होत सचेम॥

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

जे जन हिंसामे रत नाहिँ। दयाधरैं भूरि हियमाहिँ॥ प्रातकाल औ सायंकाल। भोजन
करै सविधि महिपाल॥ करैं होम निति आलस त्यागि। विधिवत चारु क्रियामे पागि॥ ते जन
षट वर्षहिके माहिं। लहैं सिद्धिकों संशयनाहिं॥ औ मख अग्निष्टोम अनूप। लहत तास फल
हे सुनु भूप॥ धाम अप्सरनको अभिराम। तामे बाम सहस्र ललाम॥ रमण करत तिनमे
सानंद। सुनऊँ धर्मधर कुन्तीनंद॥ रमि करिकै तिनमे बऊकाल। तदनन्तरसो सुनु महिपाल॥
सुवरण वर्ण ललाम विमान। तामे चढि लहि मोद महान। सानंद ब्रह्मलोककों आय। वर्ष
सहस्र रहत मुदछाय॥ ◆◆◆◆◆◆॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ ◆◆◆◆◆◆◆◆

तदनन्तर इहिलोकमे आय तौन सुनुभूप। उत्तम घरमे जन्म लहि लहत महत्व अनूप॥

॥ * ॥ तोमरछन्द ॥ * ॥

जन जौन करत अहार। एक वर्ष लौं एकबार॥ अतिरात्र मखको पर्म। फल लेत तौन
सुधर्म॥ दश सहस वर्ष सुजान। बसि स्वर्गमाहिँ महान॥ सुख लहतहै महिपाल। वर प्राप्त
भवन विशाल॥ सुरलोकतें पुनि आय। भुवलोकमे नरराय॥ निति सो महत्वहि लेत। गहि
धर्म राह सचेत॥ ◆◆◆◆◆◆◆◆॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ ◆*◆*◆*◆*◆*◆*◆

भोजन चतुर्थ प्रहरमे जौन करत एक वर्ष। हिंसा तजि गहि सत्यको इन्द्रीजीति सहर्ष॥
वाजपेय मखके फलहि लहि सो जन महिपाल। वर्ष सहस दश स्वर्गमे आमद लहै विशाल॥
दिनके छठए भागमे करत सु भोजन जौन। एक वर्ष लौं नेम गहि क्रोध छोडि बुधिभौन॥
अश्वमेधके फलहि वर लहि महत्व मतिमान। चक्रवाक जामे लगे ऐसो चारु विमान॥
तापै चढिकै स्वर्गकों जात तौन अवदात। वर्ष सहस्र चालीसलौं बसिकै समुद बिभात॥

दिनके अष्टमभागमे एकबर्षलों नेम । गहि भोजन जो करत गोमखफल लहत सछेम ॥ आ॰प॰
जामे सारस हंस बर लागे परम अनूप । तिहि बिमान पै बैठि सो जात स्वर्गको भूप ॥ दा॰ध॰
बर्ष सहस्र पचासलौं स्वर्गमाहि करि बास । पावत है आनन्दकों सुनऊ तात बुधिरास ॥

॥ * ॥ चरणादोहा ॥ * ॥

करत जौ न जन भोजनकों हैं मासमाहि द्वैबार । अमावास्या पुरणमासी मांही सुमति अगार ॥
अनशन ब्रत षटमासको ताको जो फल शर्म । ताकों ते जन होत हैं प्रापत सुनऊ सधर्म ॥

॥ ◆ ॥ चरणादोहा ॥ ◆ ॥

साठिसहस सम्बत्सरलौं सो बसत स्वर्गकें माहि । करि कै भाव अनेकनि नाचति रम्भादिक तिहिपाहि ॥
एकबर्षलौं मास मासमे जो जन जल एकवार । पीवत सो है लहत बिश्वजित मखको सुफल उदार ॥

॥ * ॥ हंसादोहा ॥ * ॥

सिंह व्याघ्रसों युक्त बर ऐसो जौन बिमान । स्वर्गलोककों जात है तापै चढि मतिमान ॥
बर्ष सु सत्तरिसहसलौं स्वर्गमाहि करि बास । पावत मोद महानको सुनऊँ तात बुधिरास ॥
अनशन ब्रत कोजै सुबिधि आनदकर अवदात । सो बिधि तुमकों कहत हौं सुनऊ तौन तुम तात ॥

॥ ◆ ॥ रामगीतीछन्द ॥ ◆ ॥

व्याधिसों जे रहित हैं अरु जौन आरत नाहि । ते किए अनशन हि मखफल लहत पद पद माहि ॥ हंस युक्त बिमान पै चढि स्वर्गमे ही जाय । करत है एकलच्छ बत्सर तहां बास सचाय ॥ अप्सरनको चारु कन्या रहति ताके पांहि । राखतो है ताहि मोदित सदा कौतुक मांहि ॥ व्याधि युत औ आरतऊ जौ अनशनहि ब्रत धर्म । करैं तौ आनन्दको अति हौंहि प्राप्त सधर्म ॥ हंससहसन लगे जामे प्रभामान बिमान । बैठि तामे स्वर्गकों सो जात है मतिमान ॥ लच्छबत्सर स्वर्गमे करि बास बर बुधिरास । करत सुन्दरि तियन संग सुबिलास सहित हुलास ॥ सुब्रत अनशन माहि जाकी देह छूटति तात । भानुकीसी पाय कै सो प्रभा चारु बिभात ॥ जडित मणि मुकतानसों छबिमान स्वच्छ बिमान । बैठि तामे स्वर्गकों सो जात है मतिमान ॥ रोम जेते देहमाही बर्षसहस तितेक । बसत है सुरलोकमाही सुनऊँ नृप सबिबेक ॥ श्रेष्ठ लाभ सुधर्मते नहि और है मतिमान । औ नही है बेदतें नृप श्रेष्ठ शास्त्र सुजान ॥ मात सम नहिं और गुरु है श्रेष्ठ सुखद बिशाल । तिमिहि अनशन सुब्रतसम तप और नहि महिपाल ॥ बिप्र सम नहि और पावन दुहुलोकनमाहि । करत जे उपबास हैं यहँमाहि संशय नाहि ॥ देवतन उपबासहीसों लह्यो है सुरलोक । सिद्धि लहि उपबासहीसों भए सुऋषि अशोक ॥ कियो भोजन बार एक दिनमाहि बिश्वामित्र । सहस एक सुरबर्षलो गहि छमा भूरि पवित्र ॥ भए तातें बिप्रताको प्राप्त अति अभिराम । कह्यो

आ०प० हमसों अङ्गिरस ऋषि परम प्रज्ञाधाम ॥ च्यवन भृगु यमदग्नि गौतम ऋषि वशिष्ठ सुजान। सबन
दा०ध० इन उपवासहीसों लह्यो दिव मुदवान ॥ कह्यो यह उपवासके आख्यान क्रमसों धर्म ॥ कृपा
करि कै अङ्गिरस मुनि सुनऊ तात सधर्म ॥ *** ॥ दोहा ॥ ****
पढि है याको जौन अरु सुनि है याको जौन। छूटि तौन कलमषनसों करिहै दिवको गौन ॥
लहि है कीरति भूमिमे अति अभिराम महान। सब धर्मनको आनि है राष्ट्र सुनऊ बुधिधाम ॥
स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञानुगामिना श्रीवन्दीजनकाशी
वासिरघुनाथकवीश्वरात्मजगोकुलनाथस्यात्मजगोपीनाथस्य शिष्येण मणिदेवेन कविना विरचिते
भाषायां महाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणि दानधर्मे उपवासविधौ सप्तनवतितमोऽध्यायः ॥ **

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

कहे सविधि उपवास अरु कहे सविधि सब यज्ञ। अरु यज्ञनके जे सुगुण तेज कहे सुप्रज्ञ ॥
धन बिन होत न यज्ञ है याते तात प्रवीन। यज्ञ नही करि सकत हैं जे जन हैं धनहीन ॥
धनहीननकों जौन विधि प्राप्त यज्ञ फल होय। कहऊ तात तुम तौन विधि ज्ञान नेमसों जोय ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

अरु जो होय समान मखफलको तौनऊ कहौ। सुनऊ तात मतिमान धर्म गेह सन्देह दर ॥

॥ * ॥ रामगीतीछन्द ॥ * ॥

॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥ लहत हैं धनहीन मखफल किए ते उपवास। यज्ञके सम उपाय
ही है सुनऊ नृप बुधिरास ॥ करत भोजन जौन जन वयवर्षलौं एकवार। धर्मपत्नी माहि जो रत
रहै सुमति अगार ॥ यज्ञ अग्निष्टोमको फल लहत है सो तात। कही हमकों यह सुविधि ऋषि
अङ्गिरा अवदात ॥ छमा धारैं सत्य बोलत नित्य जे जन धर्म। दान औ उपवासमे रत रहत जौन
सधर्म ॥ हंस जामे लगे ऐसो शुभ्र चारु बिमान। बैठि तामे स्वर्गको सो जात व्है मुदवान ॥ वर्ष
हैं शतकोटिलौं दिवमाहि करि कै वास। रमत है अपसरनके सँग भरो भूरि ऊलास ॥ दूसरे
दिन करत भोजन जौन जन एकवार। वर्षलौं एक औ करै निति होम सुमतिअगार ॥ सोउ
अग्निष्टोम मखको लहत फल अभिराम। अङ्गिरा ऋषि कह्यो हमको सुनो दर बुधिधाम ॥
हंस सारस युक्त लहिकै प्रभामान बिमान। बैठि तामे जाय दिवमे लहत मोद महान ॥ वर्षलौं
एक तीसरेदिन करत भोजन जौन। करै होम सु नित्य आलस छोडि कै बुधिभौन ॥ लहत
सो अतिरात्रिमखको सुफल परम सुजान। युक्त हंस मयूरसों अभिराम पाय बिमान ॥
बैठि तामे इन्द्रलौं लसि प्रभासों अभिराम। जात सप्त ऋषीनके वर लोकमाहि ललाम ॥
वास कै त्रयपद्म वत्सर तहाँ आनद लेत। अपसरनके साथ रमि कै सुनऊ बुद्धिनिकेत ॥ चतुर्थे
दिन जौन भोजन करत है हे तात। वर्षलौं एक करै होमहि नेमसों अवदात ॥ वाजपेय सु यज्ञको

फल लहत तौंन सधर्म। बैठि चाव विमान ऊपर अप्सरन सह पर्म ॥ जाय सुरपतिलोकमाही देव आ०प०
तनके साथ। रहत हैं चौपद्म बत्सर हर्ष सह नरनाथ ॥ जौंन पञ्चमदिवसमाहीं वर्षलौं एकबार। दा०ध०
करै भोजन होमकों निति करै सुमतिअगार ॥ होत द्वादशदिवसमाहीं यज्ञ जो अवदात। होत ताके फलहि प्रापत तौंन जन देवतात ॥ भानुकोसो भास जामे हंसयुक्त बिमान। बैठि तापै जात हैं सुर,लोककों सुदवान॥ पद्म इक्यावन सुवत्सर तहा करि कै बास। लहत है अरु महत आनंद सुनऊ नृप बुधिराश॥ करत भोजन दिवस छठए वर्षलौं जन जौंन। औ करै निति होम थिरि कै चित्तकौं बुधिभौंन ॥ लहत है गोमेधको फल तौंन जन महिपाल । है नहीं सन्देह यामे कहत बिप्र बिशाल ॥ हंस औ बरहींनसों युत हेमको सु बिमान। अग्निकीसी प्रभा जामे सुनऊ तात सुजांन ॥ ब्रह्म लोकहि जात है सो बैठि ताके माहि। लहत है आनन्द अतिही अप्सरनके पाहि॥ सहस कोटि सु पद्म अष्टादश पताका दोय । रोमके शतचर्ममाहीं रोम जेते होय॥ रहत तेते वर्ष सो है ब्रह्मलोके माहि। सुन्यो यह फल भूप हम है अङ्गिरस मुनि पाहि॥ दिवस सप्तम माहि भोजन करै जो एकवर्ष। करै होमन्हि नित्य तजि कै क्रोध होय सहर्ष ॥ ब्रह्मचर्य्य हि धरै बिद्या करै शुभ कबौं न। मांस मदिरा कबऊ भक्षण करै नहि बुधिभौंन॥होय जोनें यज्ञमाहीं महत सुबर्णन दांन। लहत हैं तिहि यज्ञको फल तौंन जन मतिमान॥मरुतके अरु इन्द्रके सो लोकमाहीं आय। रहत है बऊवर्षलौं सहहर्ष सो नरराय ॥ परमसुन्दरि देवकन्या पूजती हैं ताहिँ । करति मोदित राखिबेकों भाव ते बऊधाहि ॥ दिवस अष्टम माहि भोजन करै जो जन तात ।वर्षलौं एक करै होमहि नेमसों अवदात ॥ पौंडरीक सु यज्ञकोफल लहत सो अभिराम। है नही सन्देह यामे भणत मतिवर माम॥ पद्मवर्ण विमानको लहि जाय दिवके माहि । लहत है बऊ नारिसो यहमाहि संशय नाहि॥ करत जो जन नवम बासरमाहि भोजन भूप। वर्षलौं एक करै होमहि धरैं धैर्य्यअनूप ॥ अश्वमेध सहस्रको फल लहत सो जन दत्त। पुण्डरीक सु कमल कीसी प्रभा जामे लच ॥ व्योमजान सु पाय ऐसो सुनऊ भूप उदार । बैठि तामे जाय दिवमे लहत मोद अपार ॥ कल्प एक औ वर्ष अष्टादशसहस्र नरेश। शत सहस्र सु कोटि औ सो बसत तत्र सु वेश॥ करत जो जन दशमदिनके माहि भोजन तात । वर्षलौं एक करै होमहि नेम गहि अवदात॥ अश्वमेध सहस्रको फल लहत तौंन सुजान । है नही संदेह यामे भणत बिप्र महांन॥ लगीलर मोतीनकी जिहिं माहिं अति अभिराम। जरे हीरा चारु जामे भरे परमा माम॥ लगे अनगिन खम्भ जामे मणिनके छबिमान। कोकनदके वर्ण सो है परम परमा वान॥ हंस सारस बंश जामे करै नाद अनूप। पाय ऐसे व्योमजान हि बैठि तामे भूप ॥ जाय कै सुरलोक माही रहत है बऊ काल। अप्सरनके साथ रमि कै लहत मोद बिशाल ॥ वर्षलौं एक ग्यारहें दिन करत भोजन

आ०प० जौंन। छोड़ि आलस नित्य होमहि करै सुनु बुधिभौंन ॥ लखै नहिं परनारि औ बोलै न मिथ्या
दा०ध० वैन। देय काहुजीवकौं कबहूं न भूप अचैन ॥ पिताको अरु मातको उद्धार कीवे काज। महा
देव सु महाबलको प्रीति सहित दराज ॥ करै दरशन जाय करि कै तीन जन है तात। अश्वमेध
सहस्रको फल लहत है अवदात॥बिधाताको लहत पावन महत चारु बिमान। बैठि तामे जात
दिवकों भरो मोद महान ॥ मिलति हैं तहं हेमवर्णा ताहि सुन्दरि दार । करत तिनके साथ
माही नित्य सुमुद बिहार॥ दश हजार सु कोटि औ शतकोटि दशशत वर्ष। करत है तहं बास
सो बुधिरास तात सहर्ष॥ नित्य शङ्कर जात ताकों देखिवेके काज। अङ्गिरस मुनि कह्यो हमकों
सुनऊ बर नरराज ॥ करत द्वादशदिवसमे जन जौंन भोजन तात। वर्षलौं एक करै होमहि
नेम गहि अवदात॥ लहत सो सब यज्ञको फल महत सुनु महिपाल। चारु जामे जरी मणि औ
भरो मुकता माल॥ हंस बरही बंश जामे करैं शब्द सचैन। व्योमजान सु पाय ऐसो सुनुऊ नृप
बुधिऐन॥ बैठि तामे भानुवारे लोकमांही जाय।तहां करिकै वास सो वऊकाल लौं सुख पाय।
लहत है पुनि ब्रह्म लोकहि महत मोद निकेत। है न यामे नेक संशय कह्यो सु मुनि सचेत॥त्रयो
दश दिनमाहिं भोजन करत जो एक बार। वर्षलौं निति करै होम हि सहित नेम उदार॥ देव
मखको महत सो फल लहत है अभिराम। अग्निको सो तेज तनमे होत हैं अतिमाम॥ लगी मुक
तामाल औ मणिजाल तामे चारु। देव कन्या परम धन्या भरी रूप अपारु॥ करति जामे गान
ऐसो पाय कै सु बिमांन। बैठि तामे जात है सुरलोकमाहिं सुजांन॥ शंकु एक औ पताका
द्वै कल्प एक अरु दत्त। कोटि औ एकपद्मवत्सर बसत सो तहं दत्त॥ करत ताकं सामुहें हैं गान
निति गन्धर्व॥ देवकन्या देति ताको नित्य मोद अखर्व॥ चतुर्दश दिनमाहि भोजन करत जो एक
बार। बर्षलौं निति करै होमहि गहि सु नेम सुढार॥ देवकन्या लसति जामे परम सुन्दरि भूप।
हंस सारस जूह कूजत भरे मोद अनूप ॥ व्योमजान सु पाय ऐसो बैठि तामे पर्म। देवकन्याके सु
गेहमे जात लौन सशर्म॥चारु बालूकण जिते है सुरसरीके मांहि।तिते बत्सर रहत सो है देवकन्या
पाहिँ॥ पत्त जब गत होय तब जो करै भोजन भूप। बर्षलौं एक करै होमहि नितिसनेम अनूप॥
राजसूय सु यज्ञको फल लहत सो अभिराम। है न यामे नेक संसय सुनऊ नृप बुधिधाम॥
चारु एकस्तम्भ जामे चारिद्वार सुढार। सप्तपर्ण अभिराम तामे लगी सुमणि अपार॥ लुरै लर
मोतीनकी अति प्रभा मे नरराय।ध्वजा जामे लगीं सहसन जुंगी छबिसो छाय॥प्रभा जामे दामि
नीकी लसति परम अनूप। व्योमजान सु पाय ऐसो बैठि तामे भूप॥ जात है सुरलोककों अवदात
सो जन पर्म। सहस युगलौं रहत है तहँ महंत प्रज्ञ सशर्म ॥ करत षोडस दिवसमाहीं जौंन
भोजन एक। बर्षलौं एक करैं होमहि नित्य सहित विवेक ॥ चन्द्रकन्याके सु गेहमे करत सो
है वास। जहां इच्छा होय सो तहं जात सहित हुलास ॥ प्रभावारी चारु नारी नित्य पूजति

नाहि। नित्य राखति मुदित ते बक्ष भाव करिकै चाहि ॥ पद्मशत औ बिधाताकै वर्षशत सो तब। बसतहै सो सुनञ्ज भूपति है न संशय अब॥ सप्तदश दिनमाहिं भोजन करत जो एकबार। वर्षलौं निति करै होमहि सहित नेम उदार॥ बरुणके औ चन्द्रमाके लोकमाहीं तौन। प्राप्त व्हैके आतहै पुनि रुद्रके बुधिभौन॥ तिमिहिँ मारुत शुक्रवारे लोकमाहीं जाय। आतहै पुनि ब्रह्मलोकै माहि सो नरराय ॥ तहाँ भूषण सहित कन्या इन्द्रकी अभिराम। राखतीहैं ताहि मोदित नित्य बर बुधिधाम॥ चलत जबलौं गगणमाहीं चन्द्रमा औ भान। रहत तबलौं ब्रह्मलोकै माहि सो मतिमान ॥ अठारहदिनमाहिँ जो अन करत भोजन तात। वर्षलौं एक करै होमहि नेम गहि अवदात॥ देवकन्या चढी जापै महीं सुषमा पर्म। चलत पीछें तास ऐसे रथ अनूप सधर्म॥ अब्दकोसो शब्द जाको भूरि आनदकार। व्याघ्र सिंह सुयुक्त ऐसो लहि बिमान सुढार॥ बैठि तामे लहत है आनंद तौन अपार। देवकन्या सहित तिहिमे बसत कल्पह आर॥ देवता जो करत भोजन करत सोई खच्च। है नही संदेह यामे सुनञ्ज भूपति दच्च॥ करत भेजन जौन जन उनईस दिनमे तात। वर्षलौं एक करै होमहि नेम गहि अवदात॥ लखतहै बर लोक सातञ्ज तौन जे बुधिधाम। रहति तामे अप्सराहैं लहत सो शुचिधाम॥ करतहैं गन्धर्व ताके सामुहें निति गान। भानु ऐसो कान्ति मय सो लहत चारु बिमान॥ राखतीहैं ताहि बर सुर नारि निति सानन्द। रहतहैं तहँ कोटिबत्सर सुनञ्ज कुलीनन्द॥ बीसदिनमे करत भोजन जौन जन एकबार। करै द्वादशमासलौं निति होम सुमति अगार॥ जातसो आदित्यवारे लोकको अभिराम। लहत है बक्ष मोदकों तहँ सुनञ्ज नृप बुधिधाम॥ अप्सरा गन्धर्वके नभ आन ताके धाय। चलतहैं निति जात जहँ तहँ सुनञ्ज बर नरनाथ॥ जौन जन इकईश दिनमे करत भोजन एक। करै द्वादश मासलौं निति होय सहित बिबेक॥ शुक्रके अरु मरुतके सो लोकमाहीं जात। जात सो तिमि अश्वनीसुत लोकमे अवदात॥ सुखहिमे रत रहत है निति दुःख होत न पास। अमरलौं निति करत क्रीडा सुनञ्ज नृप बुधिरास॥ रहतिहैं बक्ष नारि ताके सङ्ग सुन्दरि पर्म। नित्य मोदित राखतीहैं सुनञ्ज तात सधर्म॥ करत भोजन जौन जन बाईसदिनमे तात। वर्षलौं निति करै होमहि नेमगहि अवदात॥ नित्य बोलै सत्य हिंसा करै कबहुँ नाहि। करै दोषारोप काहुके न गुरुके माहिं॥ प्रभामान सुभानुसो सो होतहै महिपाल। बसुनके शुभ लोकमाहीं जात समुद बिशाल॥ सुरनकी कन्यानके सँग रमत सो है भूप। अमृत भोजन करत है निति कह्यो सुमुनि अनूप॥ करत भोजन जौन जन त्रय बिंशदिनके माहिं। वर्षलौं निति करै होमहि करै हिंसा नाहिं॥ मरुतके अरु शुक्रके शुभ लोकमाही जाय। जातहैं पुनि रुद्रके शुभ लोककों सुख पाय॥ अप्सरा बर नाचतीहैं सदा सोहैं तास। होयकै एहि भाँति मोदित करतहै तहँवास॥

आ०प०
दा०ध०

आ०प० बैठिकै सुबिमान ऊपर देवकन्या साथ । रमतहै आनन्दसों सुनु धर्म्मधर नरनाथ॥ करत जो
दा०ध० चौबीस दिनके माहिँ भोजन एक। वर्षलौं निति करै होमहि नेमगहि सबिबेक॥ जायकै आदित्य
के सो लोकमे अभिराम। रहतहै बहु काललौं मुद लहतहै अतिमाम ॥ हंसयुक्त बिमान
ऊपर बैठिकै नरनाथ । सहस कन्या देवतनको रमत तिनके साथ ॥ पञ्चविंश सुदिवस माहीं
करत भोजन जौन । वर्षलौं निति करैं होमहि नेम गहि बुधिमान ॥ सिंह व्याघ्र सुलगे तिनमे
प्रभाके अभिराम। देव कन्या चढी तिनपै मढो छबिसो माम॥ बने सुन्दर हेमके रचि भांतिके
रथ तात। तास पाछैं चलतहै अति प्रभाके अवदात॥ आपु बैठि बिमानमे एक सहस नारिन माँह।
रमतहै एक सहस कल्पसु सुनऊँ बर नरनाह ॥ सुधा भोजन करतहैं तहँ सुधाहै महि अन्न।
सुनऊँ बर धरमज्ञ भूपति भणत प्रज्ञ पवित्र॥ करत भोजन जौन जन षडविंश दिनमे भूप। वर्षलौं
नितिकरै होमहि सहित नेम अनूप ॥ मरुतके औ बसुनके सो लोकमाहीं जात । लहि
बिमान स्फटिकको अति प्रभाको अवदात ॥ बैठि तामे अप्सरा गन्धर्व लैकै साथ । रमतहै है
सहस युगलौं सुनऊँ बर नरनाथ ॥ सप्तविंश सु दिवस माहीं करत भोजन जौन । वर्षलौं निति
करै होमहि नेम गहि बुधिमान॥ होत सो जन पूज्यहै सुरलोक माहीं जाय। अमृतभोजन करत
है तहँ महत मुदसों छाय।रमत सो नारीनमे तहँ रहत कल्प हजार। बैठि चारु बिमान ऊपर लहत
मोद अपार॥ जौन अष्टाविंश दिनमे करत भोजन एक । वर्षलौं नितिकरै होमहि नेम संह सु
बिबेक॥ भास्करसो तेजसें सो लसतहै महिपाल ।नारि सुकुमारीनमे रमि लहत मोदविशाल॥
भानुकीसों प्रभाको लहिकै बिमान महान । रमतहै शत सहस कल्पहि इन्द्रलौं मतिमान॥
करत भोजन जौन जन उणतीस दिनमे भूप ।वर्षलौं नितिकरै होमहि गहि सु नेम अनूप ॥ सर्व
रत्नसु लगे तामे भानुसो छबिमान। जटित मोतिन हेमको बर प्रभाको सुबिमान॥ नखत वृन्दन
सहित राजत उदय कैसो भानु। अप्सरा गन्धर्व तिहिके गाहिँ करत सुगानु॥ रमत तामे बैठिकै
सो अमरलौं महिपाल। चारु भूषण भूषिता बहु पाय करिकै बाल। बसुनके अरु मरुतके अरु
रुद्रके अभिराम । दक्षके अरु बिधाताके लोककों सुखधाम ॥ जातहै अरु साध्यके सो लोक
को मतिमान। अङ्गिरस मुनि कह्यो हमको परम प्रज्ञावान॥ मास जब गत होय तब जो करत
भोजन तात। मास द्वादश करै होमहि नेमसों अवदात॥ तेजसों अरु वपुषसों सो लसत बिरलौं
दक्ष। देखि ताको होतहै अनिमेष सुरके अक्ष॥ बिधाताके लोकमे सो प्राप्त ह्वैकै पर्म। रहतहै
आनन्दमे रत नित्य भूप सधर्म॥ आपनीहीँ प्रभासों जे रहीं शोभित होय। रमत तिन नारींनमे
नभजांन लहि सुखभोय ॥ नित्य कन्या देवतनकी पूजतीहैं ताहि । सदा मोदित राखतीहै
भाव करि बहु चाहि॥ भानु जैसो पूर्व दिशि अरु चन्दसो पश्चात । मेघ जैसो श्याम उत्तर
ओर सो सुबिभात॥ रक्त दक्षिण ओरसो अध नील उर्द्ध बिचित्र। व्योम जान सु लहत जैसो

सुनहु भूप पवित्र ॥ मेघ बर्षत बूंद जेतीं बर्ष एक हजार। रहत तेते बर्षहै विधिलोक माहि उदार शा०प० दा०ध०
॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥
जिहि विधि जन धनहीन लहत यज्ञको फल परम। सोविधि सुनहु प्रवीन कही तुम्हैं हम बरणिकै॥
॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥
सविधि करत उपवास ते उत्तम गतिकों जात। छोडि कुह्र करि शुद्ध हिय धरि सु ज्ञान अवदात॥
कही अङ्गिरस सुऋषिकी यह विधि बर भूपाल। यामे संशय है नहीं है यह सुखद विशाल॥
स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशी बासिरघुनाथकवीश्वरात्मजनेकुलनाथस्यात्मजगोपीनाथस्य शिष्येण मणिदेवेन कविना बिरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणि दानधर्म्मे उपवासविधौ अष्टनवतितमोऽध्यायः ॥
॥ ॥ जयकरीछन्द ॥ ॥
॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ सब उपवासन माही जौन। होय महत फलदायक तौन॥ कहौ मोहि उपवास सुजान। धर्म प्रवक्ता आपु महान ॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥
अगहनकी एकादशी तामे ब्रत करि जौन। केशवकों जे राति दिन पूजि भजतहैं तौन॥
छूटि जातहैं पापसों होत देह अभिराम। अश्वमेधको फल लहत सुनहु भूप बुधिधाम॥
एकादशिका पौषकी तामे ब्रत करि पूजि। निशिदिन करत प्रसन्न जे नारायणकों कूजि॥
बाजपेयके फलहि लहि ते जन मोदित होत। यामेसंशय है नही सुनहु तात बुधिपोत॥
एकादशिमे माघकी करि जे जन उपवास। पूजि माधवहि दिवस निशि कूजत बर बुधिरास॥
राजसूयको लहत फल कुलकों तारत सर्ब। यामे संशय है नही मति बर कहत अखर्ब॥
फागुनको एकादशी ब्रत करिकै मतिमान। पूजि जौन गोबिन्दकों निशिदिन करत सुध्यान॥
तौन यज्ञ अतिरात्रको लहिकै फल अवदात। सोम लोककों जातहै है नहि संशय तात॥
एकादशिका चैत्रको तामे ब्रत करि जौन। सह बिधि पूजत विष्णुकों नेम सहित बुधिभौन॥
पौंडरीक मखको सुफल तौन लहत अभिराम। देवलोककों जातहै सुनहुँ तात बुधिधाम॥
जौन मास बैशाखकी एकादशी अनूप। ब्रत करि तामे नेम सह निशिवासर सुनु भूप॥
पूजत जे मधुसूदनै भरे प्रेमसो भूरि। लहि फल अग्निष्टोमको रहत मोदसों पूरि॥
सोम लोकको जौनहैं प्रभा पाय अवदात। यामे संशय है नहीं निश्चय जानहुँ तात॥
एकादशिका ज्येष्ठकी तामे ब्रत करि तौन। पूजत सबिधि त्रिविक्रमहि शुद्ध होय बुधिभौन॥
पावत सो गोमेधको फल सुखदायक भूरि। सक्रमाहि अप्सरनके रहत मोदसों पूरि॥
एकादशि आषाढकी ब्रत करि ताके माहिं। पूजत बामनकों सु जे बोलि सु बुधजन पाहि॥
तौन लहत नरमेधको फल उत्तम है तात। रमत सक्र अप्सरनके लहि भा चारु बिभात॥

सु अनूप ॥ दोउ नखत अषाढ सुजान। धरे उरणके माहिँ सुठान॥ फाल्गुनी ताराकों पर्म॥ धरे गुदाकेमाहिं सधर्म॥ धरे मुक्तिका कटिके माहि।तिमिहिँ भाद्रपद नाभी पाँहि॥अनुराधाह धनेष्ठा दोय। धरे पंठिमे सुखसों भोय ॥ धरे रेवतीकों महिपाल । अवणमाँहि परम छवि जाल॥ बाऊनमाँहि विशाखा भूप। धरे हस्तमे हस्त अनूप ॥ पुनर्वसु अङ्गुलिनमे सत्य । अश्लेषा हिनखनमे दत्य ॥ जेष्ठा धरे ग्रीवके माँहि । धरे श्रवण काननके पाँहि॥ धरे पुष्य मुखमाँहि सधर्म।स्वाती दन्त ओष्ठमे पर्म॥ मघा शतभिषाकों महिपाल। धरे नासिकामे छबिजाल॥लोचन माहिँ मृगशिरा तात। मित्र अषाढमाहि अवदात ॥ शिरमे भरणी धरे नक्षत्र। आर्द्रा केशनमाहिँ पवित्र ॥ ह्वके शुद्ध ध्यानके माहिँ। देखि चन्द्रमा अपने पाँहिं॥इहिविधि ताके माहि नक्षत्र। धरे पदलौं भूप पवित्र॥ होय पूर्ण जब यह व्रत तात। देय द्विजनकों घृत अवदात॥ *

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

कीन्हें यह व्रत भूप अज्ञ होत है प्रज्ञवर । पावत रूप अनूप लहि विभूति बहु मुद लहत॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

सुन्यो चान्द्रव्रतको सुफल तुमसों इम हेतात। सुन्यो चहत वृत्तान्त अब मनुजनको अवदात॥

॥ * ॥तोमरछन्द॥ * ॥महिमाहि हैं जन जौन। किहि कर्मसों नृप तौन ॥ सुरलोकमाहीं जाय। मुद लेत हैं नरराय॥ किहि कर्मसों अब तात।जन नरकको हैं जात॥ अब जात जे परलोक। तजि देहकों बुधिओक ॥ कहु जात सो तिमतात। वर प्रज्ञ हे नरनाथ ॥ भीष्मउवाच॥ * ॥

॥ * ॥अडिल्लछन्द॥ * ॥

देवगुरु भूप बृहस्पति आवत। भानु समान तेजको भ्राजत॥ पूछो इन्हें प्रश्न तुम यह वर। और न इनसो वक्ता बुधिधर॥ * * ॥ वैशम्पायन उवाच॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

आए इतनहिमाहि वर भगवान सु बृहस्पति। लखि आगे चलि याहि जात भए धृतराष्ट्र सह॥

आदर तिनहिं रुचाय अनुपम पूजा करतभो। तदनन्तर मुदछाय सभासदन पूजा करी॥

तदनन्तर महिपाल धर्मतनय वर धर्मधर। करि कै विनै विशाल सुरगुरुसों पूछन भयो॥

॥ * ॥चौपाईछन्द॥ * ॥

॥ * ॥ युधिष्ठिर उवाच ॥ सुनहु बृहस्पति वर धरमज्ञ । सर्वशास्त्रविद मोदद प्रज्ञ ॥ जनको साहाय सहायक कौन। पूछत हौं तुमको बुधिभौन॥ जब जन मृत्युहि प्रापत होत। तब सुत भ्राता वन्धु सब गोत॥पित औ मात मित्रके जूह। संबन्धी औ ज्ञाति समूह॥ तास शरीर काष्ठलों क्षिप्र। छोडि जात सब मरको विप्र॥ जीव साथ परलोके माहि । कौन जात है कहु मम पाहि॥ वृह स्पतिरुवाच॥ एकहि जन्म लेत बुधिराय । तिमिहिं एकको होत विनाश ॥ एकहि जात नर

सु अनूप ॥ दीज नखत अषाढ सुजान। धरै उत्तरा माहिं सुठान॥ फाल्गुनी तारा को फल। धरै पुदाकेमाहिं सधर्म॥ धरै सुकृत्तिका काटिके सो छितिमाहिं भाद्रपद नामी पाहि॥ अनुराधा धनेष्टा होय। धरै पंठिमे सुखसों भोय ॥ धरै रेवती को नरिपाल। ... माहिं परम छवि आल॥ वाऊनमाहि विसाखा भूप। धरै ... अनूप ॥ पुनर्वसु ... ... छिनखनमे द ... ॥ ... धरै ... माहिं। धरै ... कानन के पाहि॥ धरै पुष्य ... सधर्म स्वाती ... ॥ ... नरिपाल। धरै नासिका मे छविआल॥ ... माहिँ मृगशिरा ... ॥ ... भरणी धरै ... के मनमाहिं पवित्र॥ ... ईसि चन्द्रमा आपने पाहि॥ इहिविधि ताके ... नखत। धरै ... भूप पवित्र॥ ... ... दैय द्विजन्हकों घृत अवदात ॥ * ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

कीन्हें यह ... भूप ... दान ... पावत रूप अनूप लहि विभूति बहु मुद लहत॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

सुन्यो ... सुन्यो ... मनुजनको अवदात ॥ ॥ * ॥ ... भैंसी भूप ... ॥ सुरलोकमाहीं जाय। सुर ... नरक ... ॥ जे परलोक। ... ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥

॥ * ॥

देखे ... ॥ पूछी इन्हें प्रश्न तुम यह वर। ... ॥ * ॥ ... ॥ सोरठा ॥ * ॥

आय ... भए धृतराष्ट्र ... ॥

... ॥ तदनन्तर सुदछाय सभासदन पूजा करी ॥

... करि कै विनै ... पूछन भयो॥

॥ * ॥ ... ॥ * ॥

॥ * ॥ युधिष्ठिर उवाच ॥ ... । सर्वशास्त्रविद मोदद प्रश्न ॥ ... ॥ ... ॥ अब जन मृत्युहि प्रापत होत। तब सुत माता ... ॥ ... ॥ ... शरीर ... विप्र। ... । कौन जात है कछु सुन माहि॥ ... ॥ ... ॥ एकहि जात नर

शा०प० दा०ध० कके माहिं। भूपति याने संशय नाहिं ॥ कोउ नहि करि सकत सहाय । पिता आदि मित्र आतो राय॥ अरु इनमे कोउ नहि जात। साथ जीवके हे नरनाथ॥ साथ जात है धर्म्म सुजान। करत सहाय अवश्य महान॥ तातें कीजे धर्म्म अनूप । धर्म्म हि सुखदायक है भूप॥ धर्म्म युक्त प्राणी हैं जौन। दिवकों गमन करत हैं तौन ॥ अधर्मरत जन जे महिपाल। परैं नरकके माहि विशाल॥ यातें कीजे धर्म अनूप। तजि प्रमादताकों हे भूप ॥ * ॥ सोरठा ॥ युधिष्ठिरउवाच * ॥

युक्त धर्म्मसो बैंन कहे तुम्हारे हम सुने। पै एक मोहिय चैंन संशय भो सो हरहु तुम ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

जीव तजत है देह तब परत मही है देखि। धर्म जात किमि सङ्ग है ताके कहिय सेखि॥

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

॥ * ॥ बृहस्पतिरुवाच ॥ * ॥ भू अपतेज अकाश वायु अरु अन्तक मन मति। जीवनके ए देखत हैं महिपाल धर्म्म निति ॥ सबभूतनके साखि भूत ए हैं नृप बुधिधर । इन सबंन सह धर्म जात है जीव सङ्ग बर॥ ॥ आभारछन्द ॥ *

हमकों पूछो जौन। कह्यो तुम्हैं हम तौन॥ अब जो पुछहु हेत। सो हम कहैं सचेत॥ *

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

जात जीव सँग धर्म जैसें हम तैसें सुन्यो । अब तुम कहहु सधर्म रेत होत किहि भाति है॥

॥ * ॥ बृहस्पतिरुवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

शरीरस्थ जे पञ्च हैं भूत महीप सचेत । ग्रहण करे जो अन्न है सोई होत है रेत॥

नरनारी संयोगतें होत गर्भ है तौन । जन्म पाय कै कर्मवश भूमे करत सु गौन॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

जन्म प्रभृति जे करत हैं यथाशक्ति जन धर्म्म । मनुज होय पुनि रहत हैं भूमे नित्य सधर्म॥

धर्म्म बीच जे करत जन अधर्मकों महिपाल । सुखके पाछे लहत हैं ते जन दुःख विशाल॥

अधर्ममे जे युक्त हैं ते जन यमपै जाय। महत दुःखकों लहत हैं जानहु निजु नरराय॥

पुनि भूमे सो आय कै तिर्य्यग्योनीमाहि । जन्म लेत है भूप सुनु याने संशय नाहि॥

दुरघ सु जिहि जिहि कर्मसें सुखदायनिकों जात । ते ते अब हम कहत हैं कर्म्म भूप अवदात॥

॥ * ॥ पज्झटीछन्द ॥ * ॥

पढि कै सुवेद चारो सु जौन। द्विज लेय पतितसों दान तौन॥ खर होय वर्षदशलौं महान। दुख सहत परम सुनु नृप सुजान ॥ खरयोनि छोडि कै नरेश। पुनि वृषभ होत वत्सकौं अशेष॥

रहि वृषभयोनिमें सप्तवर्ष । सुनु धर्मज्ञान भूमिप सहर्ष ॥ पुनि होय ब्रह्मराक्षस विशाल । त्रयमास रहत बनमें नृपाल ॥ ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ ३ं०प० ३ं०ध०

तदनन्तर सो होत है ब्राह्मण सुनु वरभूप । यामें संशय है नहीं निजु के कहत अनूप ॥

जोंन करावत विप्र है जन पतितनसों यज्ञ । ते ऐसी गति लहत हैं सुनऊ भूप धरमज्ञ ॥

॥ * ॥ तोमरछन्द ॥ * ॥

कृमि होय कै बुधिमौन । दशवर्ष जीवत तौन ॥ खरयोनिकों पुनि पाय । रहि वर्ष पञ्च अघाय ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

पुनि सो शूकर होत है पञ्चवर्षलौं भूप । शूकरयोनि हि छोडि पुनि कुक्कुट होत अनूप ॥

पञ्चवर्षलौं रहत है कुक्कुटयोनी माहि । पुनि सो जम्बुक होत है यामें संशय नाहि ॥

पञ्चवर्ष जम्बुकयोनिऊमें रहि कै सो बुधिपोत । श्वानयोनिमें एकवर्षलौं रहि पुनि मानव होत ॥

बिन कारण जो शिष्यकों मारत है गुरु जौन । जन्म हंसको योनिमें तासों पावत तौन ॥

॥ * ॥ अरिल्लछन्द ॥ * ॥

पितको अरु माताको जो जन । करत अनादर सुनु नृप सो जन ॥ गर्द्दभ ताकों प्रापत ह्वै करि । जीवत दश वत्सर दुखभरि करि ॥ पुनि कुम्भीर होत एक वत्सर । होत मनुज सो है तदनन्तर ॥ अरु जाके माता पित रूसत । नित्य कुचाल देखि कै दूसत ॥ ॥ दोहा ॥ *

तोभऊ गर्द्दभयोनिमें प्राप्त होय भूपाल । जीवत चौदह मासलौं रहिकै दुःख विशाल ॥

॥ * ॥ अथकरीछन्द ॥ * ॥

पुनि मांजारयोनिमें होय । जीवत सप्त वर्ष दुखभोय ॥ तदनन्तर सो मानव होत । सुनऊ युधिष्ठिर प्रज्ञापोत ॥ माताको औ पितको जौन । निन्दा करै कुमतिको भौन ॥ तौन होत सारिक है भूप । निजु के प्रज्ञ सु भणत अनूप ॥ अरु जो ताडत होय सक्रुद्ध । तौन होत कच्छप है उद्ध ॥ कच्छप ह्वै जीवत दशवर्ष । सुनऊ युधिष्ठिर भूप सहर्ष ॥ सल्यक योनिमाहि पुनि होय । तीनवर्ष जीवत दुखभोय ॥ पुनि विकराल होत है व्याल । जीवत षटमहिना भूपाल ॥ तदनन्तर नरयोनीमाहि । होत नेक संशय है नाहि ॥ ॥ दोहा ॥

धरी धरो हरि अन्यकी मनुज छपावत जौन । जन्म लहत क्रिमियोनिमें सुनऊ बार शत तौन ॥

रहत एक एक जन्ममें चौदह चौदह वर्ष । तदनन्तर सो होत है नर नृप सुनऊ सहर्ष ॥

गुणमें दूषण देय जो काहूके जन जौन । निश्चय सो पशु होत है सुनऊ भूप बुधिभौन ॥

विश्वासी ह्वै घात जो करै होय सो मीन । जीवत वत्सर आठलौं भूपति सुनऊ प्रबीन ॥

मीनयोनिते छूटि पुनि चारिमास मृग होत । मृगयोनिऊतें छूटि पुनि छाग होत बुधिपोत ॥

छाग होय जीवत रहै एकवर्ष भूपाल । कीट होय कै लहत पुनि दुख सो अतिहि विशाल ॥

आ०प० तदनन्तर सो लहत है मनुजयोनि सुनु भूप । यामे संशय हो नही निश्चय जानु अनूप॥

दा०ध० ॥ * ॥ दानधीतीच्छद ॥ * ॥

उदर जो बोधन पतित मूढ ताकुल धर्म । कहा करत्यो तिनहि करतो सुनऊँ तात सुधर्म ॥ तिन्हें बोरत जौन मूषक होत है निरव्याज । छोडि मूषकयोनि सूकर होत तौन दराज ॥ रोगसों व्है सुत सूकरयोनिकों सो जानि । वर्ष वत्सर रहे जीवत स्वान व्है दुखखानि ॥ तत स्वान नर होत मानव सुनऊँ वर महिपाल । कहत हौं मैं सुन्हे मित्र के [illegible] ॥ रमत जो परनारिसों सो होत वृक बलवान । छोडि के वृकयोनिकों सो स्वान होत [illegible] ॥ स्वानयोनिहुँ छोडि के पुनि कम्मिल होत शृगाल । तत अनन्तर गृध्र व्है के होत है [illegible] ॥ [illegible]योनिहुँ छोडि के पुनि होत है बक काक । है नहीं सन्देह याने सत्य है मम वाक ॥ [illegible] [illegible]की जो रमत दुर्मतिभौन । रहै कोकिलयोनिमाहीं एक वत्सर तौन ॥ सखाकी अरु [illegible] अरु गुरुकी तियमाहिं । रमत जो है तास सम नृप और पापी नाहिं ॥ [illegible] वत्सर तौन जीवे [illegible] सूकर होय । छोडि सूकरयोनिकों सो स्वान व्है दुखसोय ॥ रहै जीवत वर्षदशलौं सुनऊँ बुद्धि [illegible] । तत अनन्तर पञ्चवत्सर होत है मांजार ॥ छोडि के मंजारयोनिहिं होय कुक्कुट तौन । रहै जीवत वर्षदशलौं परम दुर्मति भौन ॥ तत अनन्तर व्है पिपीलक जियत है त्रयमास । कीट व्है एक मास जीवै सुनऊँ नृप बुधिरास ॥ जन्म एतौं योनिमे लहि फेरि सो महिपाल । जन्मलहि कृमियोनि माहीं लहत दुःख विशाल । मास चौदह वास करि कृमियोनि माहीं तौन ॥ * फिरत विष्ठा मुखमाहीं सुनऊ नृप बुधिभौन ॥ तत अनन्तर भए [illegible] मास है बुधिराय । करत मानव योनिमाहीं फेरि सो है वास ॥ ब्याहमे अरु यज्ञमे अरु दानमे जन तौन । करत बाधा लहत है किमियोनिकों जन तौन ॥ वर्षदश औ पञ्च सो किमियोनिमे करि वास । तत अनन्तर होत मानव सुनऊ नृप बुधिरास ॥ प्रथम कन्या दई जो सो औरकों जे देत । तौनहू किमियोनिकों लहि सहत दुखकों खेत ॥ रहत है किमियोनि माहीं वर्ष तेरह [illegible] । [illegible] सो पुनि मनुज होत [illegible] ॥ देवकारज पितरकारज किएँ बिन जन तौन । करत भोजन काक सो जन होत सुनु बुधिभौन ॥ काक व्है शतवर्ष जीवत फेरि कुक्कुट होत । छोडि कुक्कुट योनिकों पुनि तौन सुनु [illegible] ॥ व्याल योनिहि प्राप्त व्है एकमास रहि [illegible] । तत अनन्तर [illegible] मानव होत है [illegible] ॥ जीविका जो देत ताकी करत निन्दा तौन । [illegible] वर्षलौं है तौन ॥ छोडि [illegible]योनि मूषकयोनिमे पुनि होय । पञ्चवत्सर रहत जीवत [illegible] भोय ॥ छोडि मूषकयोनि जनकों होत है पुनि स्वान । स्वान व्है षट्मास जीवत पाप [illegible] ॥ करत है जन जौन जेठेबन्धुको अपमान । क्रौंचपक्षी होत सो है सुनऊ नृप मतिमान ॥ क्रौंचयोनिहि छोडि के एकवर्षमाहीं तौन । होत चीरक विहग है सुनु भूप प्रज्ञाभौन ॥ छोडि चीरकयोनिकों

तिहिके अनन्तर भूप। लहत मानव योनिकों है भवत विप्र अनूप ॥ कामबशीवे रमत जोहे मूढ़ आ०प
दुर्मतिमान। कीजए कबहूं न तत्का दरसपरस सुजान ॥ मानवै क्रिमियोनिमे सो मूढ़ बहु दा०ध
दुख पाय। श्वान सूकर योनिकै पुनि रहत दुखसों धाय ॥ कोटि सूकर योनिकों पुनि श्वान योनी
माहिँ। महा दुखको लहतहै यह माहिँ संशय नाहि ॥ तिहि अनन्तर पापकर्मी होत मानव
नीच। पापहत्यो करत सो पुनि वर्ष वंशके बीच ॥ एक सन्तति होय अरु तब मृत्यु लहिके तौन ॥
होत मूषक योनिमे है आप दुर्मतिभौन ॥ कियो काहू को न माने जौन जन उपकार। सहत है
यमदूतके तिहि दण्डकी बहु मार ॥ दूतकी यमरायके वो मार लहिके भूरि। प्राप्त व्है क्रिमि
योनिमे पुनि रहत दुखसों पूरि ॥ वर्ष पन्द्रह वासकरि क्रिमियोनि माही तौन। गर्भकों पुनि होय
प्रापित नरकदुर्मतिभौन ॥ गर्भहीमे मृत्युकों सो पाय सुनु भूपाल। गर्भकों पुनि होय प्रापित लहत
दुःख विशाल ॥ इमिहि पुनि पुनि गर्भ अन्तमे वास करि दुखपाय। होत तिर्यगयोनिमे पुनि प्राप्त
है नरराय। तौन तिर्यगयोनि माही महा दुखकों पाय। कूर्म व्हैके रहतहै बहु काल है नरराय ॥

॥ ❋ ॥ सोरठा ॥ ❋ ॥

दधिकों चोरत जौन बगुला सो जन होत है। सुनहु भूप बुधिभौन याम संशय है नही ॥
जौन मूल फल भूप चोरतहै दुर्मतिसदन। सुनिए भूप अनूप सो पिपीलिका होतहै ॥

॥ ◆ ॥ अथकरीछन्द ॥ ◆ ॥

पायसकी चोरी जन जौन। करत होत तीतिरि है तौन॥ अरु चोरै जन जौन पिसान। होत उलूक
तौन अज्ञान॥ अरु जो चोरत है कोलाल। सो पपिहा है होत नृपाल॥ कांस्यपात्र जो लेत चुराय।
हरियल पक्षी सो नरराय॥ रजत पात्रकों चोरत जौन। होत कपोत योनिमे तौन॥ अरु जो काञ्चन
पात्र चुराय। सो क्रिमियोनि पाय दुखछाय ॥ पीताम्बर जो चोरत पर्म। लहत भृत्य व्है तौन सुधर्म॥
जासे लागे लोभ बहु तौन। वसन चुरावत दुर्मतिभौन ॥ हंसयोनिमे जन्महि पाय। रहत काल बहु
है नरराय॥ अरु चोरै जन जौन कपास। क्रौंच योनिमे पावै वास॥ अंशु वस्त्र जो लेत चुराय। तौनऊ
क्रौंच होय दुखपाय॥ वल्कलसूत्र चुरावत जौन। सुनु नृप शशा होतहै तौन ॥ रङ्ग चुरावत जो जन
भूप। मोर होत है तौन अनूप ॥ रक्त पीत चन्दन अरु श्वेत। चोरी करि इनकों जो लेत ॥ तौन
छुछुन्दरि योनिहि आय। पन्द्रह वर्ष रहत दुखछाय ॥ तदनन्तर सो मानव होत। सुनहु युधि
ष्ठिर प्रजा पोत ॥ जौन चुरावत पय जो होय। बगुला रहत दुःखसों श्रोय ॥ लोभी तैल चुरावत
प्राण। तैलप जीव होतहै तौन ॥ अन अर्थी वा मधु विभाख। शस्त्र सहित व्है सुनु भूपाल ॥ अपर
क्षत्रिनको मारत जौन। कर्कश होत सत्य बहि तौन ॥ जीवत गर्भ होय विख्यात। कोटि जनकों मारो

आ०प० जात ॥ मरिके सो पुनि होत कुरङ्ग । रहै नित्य भै भरो उतङ्ग ॥ एक वर्ष जब पूरण होय । जात
दा०ध० अहेरी मारो सोय ॥ छोड़ि कुरङ्ग योनि पुनि मीन । होत जीव सुनु नृप प्रवीन ॥ जालनमाहिं
फसि बहु दुखपाय । कछू दिननमे मारो जाय ॥ ग्रावर ह्वै पुनि सो दस वर्ष । जीवत भूपति सुन
ऊँ सहर्ष ॥ व्याघ्र होयकै बनमे जौन । वत्सर पञ्च धारतहै तौन ॥ तदनन्तर सो सुनु भूपाल ।
पाप नसेतें सर्व विशाल ॥ मनुज योनिमे प्रापित होत । पै न लहत बहु [illegible] ॥ जौन हरै
काहूकी दार । ताहि देत यम त्रास अपार ॥ शीघ्र शीघ्रसो मरि दुख छाय । बीस जन्म पावत
नरराय ॥ तदनन्तर क्रिमि योनिहि पाय । बीसवर्ष लौं रहत अघाय ॥ क्रिमियोनिहि तजि
कै पुनि तात । होत मनुज है सुनु बुधिमान ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

भोजन चोरत जौन जन तौन मक्षिका होय । बहुत मासलौं रहतहै सहत दुःखहीं भोय ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

सर्व पापको नाम भए सुउज्ज्वल होत जब । सुनऊँ नृपति बुधिराय पावत मानव योनि तब ॥

॥ * ॥ अरिल्लछन्द ॥ * ॥

सुनु नृप खरी चुरावत जो जन । निश्चय ह्वै करि मूषक सो जन ॥ नित्य हेरि मनुजनको
काटत । कोऊ न मानत बहु जन डाटत ॥ मीनमांसको जौन चुरावत । काक होय सो दुखही
छावत ॥ अरु जो जन चोरत है नौनहि । सो पुनि काक होतहै भौनहि ॥ घृतहि चुरावत जौन सदा
वन । काक मद्गु सो होत भयावन ॥ धरी धरोहरि जौन छपावत । मीन योनि लहि सो दुख
पावत ॥ मीन योनिकौं तजिकै सो पुनि । मानव होत कहत तुमकौं गुनि ॥ मनुज योनिमे प्रापति
ह्वै करि । शीघ्रहि मृत्यु लहत दुख भ्वै करि ॥ प्रथम पापके पुञ्ज प्रकाशंत । समुझि तिन्हें अत
करि जे नाशत ॥ फेरि करत अघ तजिकै ज्ञानहिं । व्याधिवान ते होत महानहिं ॥ अब निति पाप
करत हैं जे जन । निश्चय म्लेच्छ होत हैं ते जन ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

करत जौन जन पाप हैं पूरब कथित अपार । तिनको जो नारिऊ करै भूपति सुनऊँ उदार ॥

तिनहीकी सो नारि ह्वै पावति दुःख अपार । यामे संशय है नहीं भाषत सुबुद्धि [illegible] ॥

इन पापनको फल कह्यो तुमकों किञ्चित भूप । और कथाके योगमे सुनिये सर्व अनूप ॥

जन्मप्रभृति जो करत नहिं कौनऊँ पाप सुजान । होत अरोगी तौन नर [illegible] धनवान ॥

सुनिकै मेरे वचन ए करो नित्य तुम धर्म । धर्म किएँ भूपाल तुम रहिहौ [illegible] ॥

स्वस्ति श्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणसिंहाज्ञानुगामिना [illegible]
रघुनाथ[illegible] विरचिते
भाषायां महाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणि दानधर्मे सप्ततमोऽध्यायः ॥ *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ शा०प०
तुमकों कही बखानि नृप आश्रमकी गति सर्व। धर्म गतिहिं अब सुननकी इच्छा भई अखर्व ॥ दा०ध०

॥ * ॥ तोमरछन्द ॥ * ॥

सुनु बृहस्पति [illegible] । करि पापकर्म महान ॥ अन चाहत शुभगति धर्म। किहि भाँति कहहु सुधर्म॥ [illegible] कीन्हे जौन। सुनु परम प्रज्ञा भौन॥ अन लेत शुभ गति सर्व। कछु मोहि आपु प्रतर्व॥ * ॥ * बृहस्पतिरुवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ *

प्रथम जौन [illegible] तें करिके पाप महान । प्राप्त होय सन्तापकों ह्वैके तौन सुजान ॥
पहि सु धीरता चित्तकों करिके थिर भूपाल। फेरि नहीं अघ करत ते शुभ गति लहत विशाल ॥

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

मानवको मन निन्दा अघकी करत सु जिमि जिमि । उज्ज्वल होत शरीर पापत छूटत तिमि तिमि ॥ जिमि जिमि मनुज सुजान करतहै बात धर्मकी। तिमि तिमि छूटत पाप होतिहै प्रवृत्ति धर्मकी ॥ अरु जे विप्र सुज्ञान वेदविद धर्मवान वर। तिनसों किए सनेह पाप छूटत है दुखकर ॥ विधिवत कीन्हें दान [illegible] सादर वर विप्रहि। शुभगति प्रापित होत पाप छूटतहै क्षिप्रहि ॥ शुभ गति मानव लहत पाप करि जौन हेतुसों । तुमकों कह्यो बखानि तौन हम सर्व चेतसों ॥ *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

अघकारी जिहिँ दानसों होत धर्म युत पर्म । तौन दान मै कहतहौं तुमकों भूप सधर्म ॥
सब दानमते श्रेष्ठहै अन्नदान अभिराम । तातें प्रथमहि दीजिए अन्नदान बुधिधाम ॥
करत प्रशंसा अन्नकी सुर ऋषि मानव सर्व। रन्तिदेव भूपाल यह करिके दान अखर्व॥
प्राप्त भए सुरलोकको [illegible] पाय आनन्द । इहि लोकमे लखतिहै ताकी कीर्ति अमन्द ॥
[illegible] जो धर्म सो तौन अन्न महिपाल। वेदवान वर द्विजनकों दीजे समुद विशाल ॥
जाके [illegible] द्विजवर एक हजार। सो नहिं तिर्यग्योनिमे परत सुबुद्धि उदार ॥
दश हजार [illegible] जो अन भोजन देय। अधरमतें सो छूटिकै लहत मोदकों श्रेय ॥
जो [illegible] अन्न ल्याय अभिराम । वेदवान वर द्विजनकों देत मोदसों नाम ॥
[illegible] लहत सुमङ्ग महिपाल । लहत ताहि सब भूमिमे कहत सुबुद्ध विशाल ॥
[illegible] अन्न अवदात। जो यचिय वर द्विजनकों मुदसों देत विख्यात॥
छूटि तौन सब [illegible] पाप। रहत नित्य आनन्दसों सुनु सधर्म [illegible]॥
जौन विप्र [illegible] भूप। [illegible] तिनकों लहत होत सुबुद्धि अनूप ॥
करि सु कर्म उत्तम [illegible] जो अन्न। शुद्ध चित्तसों द्विजनकों देत सुबुद्धि धरनन्न ॥
छूटि जातहो पापसों आनद पाय विभात। अधरमदर वरधन्कर सुमङ्ग भूप अवदात ॥

शा०प० शूद्र अन्न उत्पन्न करि करिके कोमहि भूरि। वेदवान वर द्विजनकों देत मोदसों पूरि ॥
दा०ध० छूटि जातसो पापतें परमा पाय विभात । याते संशय है नहीं भाषत सुबुध अवदात ॥
जौन अन्न उत्पन्न करि अपने बलसों धर्म। देत द्विजनकों तौन नहिं दुखकों लहत सधर्म ॥
अन्नदानको फल कह्यो तुम्हें सर्व हम भूप। सब धर्मनको मूलहै यह शुचिदान अनूप ॥
अन्नदान कीन्हें लहत जन शुभ गतिकों धर्म। याते संशय है नहीं भूपति सुनहु सधर्म ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणसिंहाज्ञानुगामिना श्रीबन्दीजनकाशीनाथ रघुनाथकवीश्वरात्मजेन गोकुलनाथेन कविना विरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणि दानधर्मे बृहस्पतियुधिष्ठिरसम्वादे एकाधिकशततमोऽध्यायः ॥ * * * * * *

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

ध्यान अहिंसा यज्ञ अरु इन्द्रिय निग्रह जौन । गुरु सुश्रूषा यो सुतप इनमे श्रेयस कौन ॥

॥ * ॥ बृहस्पतिरुवाच ॥ * ॥

ए सबहीह सुखद पै इनमाहीं भूपाल । निश्च अहिंसा धर्म है अति सुखद विशाल ॥

॥ * ॥ वैशम्पायन उवाच ॥ * ॥

ऐसे कहिकै बृहस्पति धर्म नन्दसों बैन। जात भए सुरलोककों वर आनदके ऐन ॥
तदनन्तर भूपालमणि पाण्डुनन्द बुधिगेह। पूछत भे गाङ्गेयकों करिकै यह सन्देह ॥

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥

हिंसा मनवचकर्मसों करत जौन जन तात। ते छूटत किमि दुःखसों कहो मोहि विख्यात ॥

॥ * ॥ आभीरछन्द ॥ * ॥

भीष्मउवाच ॥ * ॥ तजिकै हिंसा जौन। दया धरत है तौन ॥ छूटि दुःखसों भूरि । रहत मोदसों पूरि ॥ कुञ्जर पदमे तात । सबके पाय समात ॥ तिमिहिं अहिंसा मांह । और धर्म नरनांह ॥ निश्चय जान समाय। संशय नहि नरराय ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

मनसा वाचा कर्मसों हिंसाहोति नृपाल ।बुधजनसों मै पूछिकै निश्चय कियो विशाल ॥
तातें प्रथमहि छांडिये मनसों हिंसा धर्म। फेरि वाक अरु कर्मसों तजिए तात कुकर्म ॥
इहि विधि हिंसा छोडिकै भषत मांस न जौन। छूटत ते हैं दुःखसों सुनऊँ तात बुधिभौन ॥
करत प्रशंसा मांसकी जे जन हे अहिपाल। तिन्हें होतहै दोष अति कहत सुबुधि विशाल ॥

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥

परम अहिंसा धर्महै कह्यो आपु बहु बार । याते संशय होतहै सुनऊँ सुबुधि अपार ॥
कही सु यज्ञविधि मांससों आपु श्राद्ध विधि कर्म । मांस प्राप्त नहिं होतहै हिंसा बिना सधर्म ॥
याते मांस निषेधमे संशय भयो महान। करऊँ पितामह दूरि सो यह्णा आपु सुजान ॥

जो जन भक्षत मांसको ताहि दोष है कौंन। जो भक्षत नहिँ ताहि गुण होत कौंन बुधिभौन ॥ श्रा०प०
मृगादिकनको वध करै जो जन आमिष खाय। या काहूजन औरसोँ तिनको वध करवाय ॥ दा०ध०
अन्यारथ जे हनत अरु मोल लेत हैं जौन। तिनकों प्रापत होत हैं कौनदोष बुधिभौन ॥
यह सुनिवेकी मम हिएँ इच्छाभई महान। कहहु पितामह मोहि तुम करि कै कृपा सुजान ॥

.॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥

किए अभक्षण मांसको होत धर्म्म है जौन। तौन तुम्हे मे कहत हौं सुनहु तात बुधिभौन ॥
रूप बुद्धि बल आयु अरु वीर्य्य अरु सब शुद्ध। किए अहिंसा मिलत हैं एसव सुनु नृप बुद्ध ॥
ऋषि गणके सम्बादमे भयो जौन सिद्धान्त। सो मे तुमसोँ कहतहौं सुनिए वर क्षितिकान्त ॥
मास मासमे करत है अश्वमेधको जौन। औ मधु मांसहि तजत जो सम दोऊ बुधिभौन ॥

॥ * ॥ हरिगीतीछन्द ॥ * ॥

सप्तऋषि औ बालखिल्या औ मरीचय जौन हैँ। करत आमिष अभक्षणकी प्रसंशाकों तौनहैं॥ जे न भक्षत मांसकों अरु हनत जे कबहू न हैं। मित्रता प्राणीन कीते लहत दिन दिन दून हैं ॥ जे न भक्षत मांस ताकों करत जीव विश्वास हैं। करत ताको प्रसंशाकों साधु वर बुधिरास हैं ॥ जो बढावत मांस अपनो मांस परको खाय कै। कह्यो नारद मिलत सो जन रहत दुखसों छाय कै ॥ सदा कीन्हें यज्ञवर औ सदा कीन्हें दान है। सदा कीन्हे तपस्या फल होत जौन महान है ॥ होत सो फल त्याग मदिरा मांसको कीन्हे सुनो। कहत निश्चय तुम्हे याते भूप मति संग्रे गुनो ॥ प्रथम आमिष खाय करि कै तजत फेरिऊ जौन है। यज्ञ कीन्हें औ पढें श्रुति मिलत फल नहि तौन है ॥ खात जो जन मांस तासौं नाहि छोड्यो जात है। जौन छोडत तौन पावत अभय फल अवदात है ॥ अभय सब प्राणीनकों जन देत जो महिपाल हैं। प्राणदाता होत ते वर भक्षत विश्व विशाल हैं ॥ जोजनाकी अभय दीबो जौन सब प्राणीनकों। परम सो है धर्म वर ऋषि परत है प्राणीनकों ॥ परम प्यारो लगत जैसे जीव अपनो जानिए। तिनिहि सबकों जीव अपनो लगत प्रिय निजु मानिए ॥ मांसको जो छोडिबो सो धर्म्म सुखको धाम है। स्वर्गलोकहि जायवेको हेतु वर अभिराम है॥ अहिंसा है परम तप औ अहिंसा वर धर्म है। अहिंसा है सत्य वर नृप कहत निजु के मर्म है ॥ काठ तृण अरु उपलमांहो होत आमिष नाहि है। जन्तु मारे मिलत याते दोष अधिकनाहि है। जोन भक्षत मांस कबहू तौन देव समान है ॥ सदा आमिष खात राक्षस तौन दुर्गतिमान है। जो न भक्षत मांस निर्भय रहत सो सरबस है। होत प्राप्त न कबहुँ भयकों नाहि संशय यथ है ॥ कबहुँ काहूजीवकों उद्वेग जो नहि देत है। कबहु सो उद्वेगको नहि प्राप्त होत सचेत है॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

खादक जो नहि होहि तौ घातक होहि न तात। खादक काजे हनत हैं घातक जन विख्यात॥

॥ * ॥ परखादोहा ॥ * ॥

मृगादिकनकी हिंसाको है मानव खादक हेत। भक्षण आमिषको कीजे नहि तात बुद्धिनिकेत॥
है अभक्ष्य आमिष मनुज कहत जौन यह बैन। ताकी हिंसा होति है निवृत सुनहु बुधिऐन॥
जे जन हिंसा करत हैं तिनकी आयु नरेश। काल ग्रसत है शीघ्रही यतिवर कहत सुवेश॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

हिंसकहैं जन जौन तिनकों रक्षक मिलत नहि। सुनहु तात बुधिभौन निश्चय करि के कहत हौं॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

खाय जान परमांसको अपनो मांस बढान। जन्म जन्ममें भीतिको प्राप्त होत ते जान॥
जौन अभक्षण मांसको सो दायक कल्यान। सुयश आयु अरु स्वर्गको दाता तिनहि सुजान॥

॥ ◆ ॥ सोरठा ॥ ◆ ॥

हिंसक हैं जन जौन तिनके निकटै जो बसत। सोउ सुनु बुधिभौन निश्चय हिंसक होत है॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

यातें हिंसक जननकी सङ्गति कीजे नाहिं। सुनिए कुन्तीनन्द गुनि कहत प्रभु हियमाहिं॥
भूमिदान गोदान अरु सुवर्णको जो दान। मांस अभक्षण श्रेष्ठ है तिनहूतें मतिमान॥

॥ * ॥ हरिगीतीछन्द ॥ * ॥

करै रक्षा मांसको जो विप्र हे महिपाल। किए तो तिहि.यज्ञ भक्षण दोष है न विशाल॥यज्ञबिन
जो श्राद्धबिन विधिहीन जे जन खात। दोष तिनको होत है अति भणत बुध विख्यात॥ वृथा
मांसहिं खात जे जन नित्य हे नरराय। नरकमाहीं जात ते जन महत दुखको पाय॥ मांस जे जन
खात ताके काज जौन अबुद्ध। कहे बिनही हनत पशुको सुनहु नृप बुध उद्ध॥ महत दोष हि
चहत सो हम कहत गुनि हियमाहिं। खात ताको होत दोष न प्राप्त संशय नाहिं॥ [illegible]
प्रथम पोषित हेत जो है त्यागि। छूटि अघतें प्राप्त धर्महि होत सो सुखपागि॥ जौन [illegible] मांसको
अघ कहत नीको जौन। मोल मांसहि लेत अरु जो देत दुर्मतिभौन॥ हनत जे [illegible] जे जन
मांसको भूपाल। होत है ममवहिको सम दोष भाव विशाल॥ रक्षो [illegible]
जौन जन सरवथ। सर्व मांसहि तजत सो है सुनहु भूप पवित्र॥ सुनत हैं हम भूप पूरब कल्पमें
सतकार। व्रीहिको बलवाप के पशु आप बुद्धि अपार॥ हनत हे [illegible] वेदविधिसें
पर्व। हनत पे नहि कबहु पशुको दयावान सुपर्व॥ सुनहु आमिष [illegible]
पूरि। खात जे जन नित्य हैं ते महत दुखते पूरि॥ वर्षभरको तपस्या जो [illegible] है मतिमान। करा

आमिष त्याग औ जो दुखो आतु समान ॥ त्यागत नहि मांस मदिरा कातिकके माहिं। औ शा०प०
अवश्यहि त्यागत पितपक्षने तो नाहि ॥ धर्मकरिको योग्य कार्तिकमाहि है भूपाल । कीजिए दा०ध०
हिंसा न यातें भक्षन विप्र विशाल । माघ श्रावण भाद्रपद औ क्वार कार्तिकमाहिं । जे
नभक्षन मांस ते दुख सहत कबहूँ नाहिं ॥ कीर्ति बल अरु आयु यशको प्राप्त होत महान ।
है नहीं सन्देह यातें भक्षत नरमतिमान ॥ चारिमहिनामाहिं एकहुँ माहिं औ नहि खात।
छूटि दुखसों तौन जन सुखवान होय विभात ॥ मासहूमे पक्ष एक जन मांस खात न जौन ।
तिनहुको है होति हिंसा निवृति सुनु बुधिभौन ॥ भूपपुत्र नाभाग औ नृप अम्बरीष सुजान।
गयन नहुष ययाति औ नृप आनरण्य महान ॥ आयु नृग कृतवीर्य औ अनिरुद्ध शिबि कुव
कुन्द । युवनाश्व दिलीप प्रथु रघु रन्तिदेव नरेन्द्र ॥ विरूपाक्ष अलर्क नल निमि जनक
कश्यप सुवेश । धर्मवान महान अरु वर कीर्तिकार अशेष ॥ ऐल रैवत सुनासृंजय हरिश्चन्द्र
नृपाल । वीरसेन दुष्यन्त अज नृप रामभूप विशाल ॥ मान्धाता भरत औ इक्ष्वाकु मधु सुजान।
सगर औ वसुधाल भूपति सेत वर मतिमान ॥ इते भूपन कातिकमे मांस खायो नाहिं । तेमसों
वर भये नर्त वास दिवके माहि॥ स्वर्गते पुनि आय विधिके लोकमे भूपाल। बसत सोहैं करत हैं
गन्धर्व गान विशाल ॥ जन्मभर जे मद्य मांसहि खात हैं कबहूँ न। मुनिनकी सम तौन तिनकी
प्रभा होति नऊँन ॥ पढत जे अरु सुनत जे यहि धर्मको अभिराम ॥ जाय तौन हि नरकको जन
दुराचारि कहू नाम ॥ पापतें छुटि जात पापी है न संशय अत्र । दुःखतें दुखवान छूटत सुनहु भूप
पवित्र ॥ जन्म तिर्य्यगयोनिमा हो लेत नाही भूप । पढहि प.वत भूरि पावत पाय रूप अनूप ॥ ※
स्वस्ति श्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञानुगामिना श्रीबन्दीजनकाशीवासि
रघुनाथकवीश्वरात्मजगोकुलनाथपुत्रगोपीनाथस्य शिष्येण मणिदेवेन कविना विरचिते भाषायां
महाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणि दानधर्मे मांसाभक्षणप्रस्तावोनामैकाधिकशततमोऽध्यायः ॥ ※

॥ ※ ॥ दोहा ॥ ※ ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ ※ ॥

बहुप्रकारकी भोजन तिनको मनुज छोडि कै तात। आमिष भक्षत प्रीतिसों राक्षसलों विख्यात ॥
आमिषभक्षनकी करत जिमि जन इच्छा पर्म । अन्यभोज्यकी करत हैं इच्छा तिमि न सधर्म ॥
मुहि जानत मांससम अन्य भोज्य नहिं चारु । निश्चय करि कै कहत हौं तुमको भूप उदारु ॥
मांसअभक्षनमाहि हैं जे गुण वर बुधिधाम।औ भक्षणमे दोष जे ते पुनि कहिए आम॥

॥ भीष्मउवाच ॥ सोरठा ॥ ※ ॥

कह्यो जौन तुम भूप तामें नेक असत्य नहिं । मांस समान अनूप भोजन और न भूमिमे ॥
विपत्तमाहि रत जौन औ जिनके तनमाहि क्षत॥ सुनहु तात बुधिभौन अरु जे हारे मार्गमे ॥
तिनको मांस समान और न भोजन श्रेष्ठ है॥आमिष करत महान पुष्टि सुनहु भूपालमणि॥

आ॰प॰ मांस अभक्षणमांहिँ बहुगुण हैं भूपालमणि ॥ सुनहु भीष्म मम प्रति मैं निश्चय करि के कहत ॥
दा॰ध॰ ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥
भीष्म बढायो चहत हैं अपने मांसहि भूप । पाय अन्यके मांसकों ते हैं क्रूर अनूप ॥
सबकाहूकों और कछु प्रिय नहिँ प्राण समान । दया करै ताते मनुज हियकेमाहिँ महान ॥
॥ * ॥ अर्धचरणा दोहा ॥ * ॥
मांस होत है शुक्रतें याने संशय नाहिँ । ताके भक्षणमांहि दोष है पुण्य अभक्षणमाहिँ ॥
॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥
वेदमांहिँ विधि भीष्म आमिषभक्षणकी नृपति । तिहिविधिसोँ बुधिभीष्म भक्षणमें नहि दोष ह ॥
॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥
पशू बनाए मखके काज । यहो सुनत हम हैं नरराज॥ यज्ञविषयकी जो विधि है तात । आमिष भक्षणमें विख्यात ॥ भीष्मजू कहत तुम्हें हम धर्म । सुनहु काम दै नृपति सधर्म ॥ अपने बलसों ह नरराय । मृगया करि कै मांसहि खाय॥ भक्षण कीन्हें दोष न होत । कहत महत हैं प्रज्ञापोत ॥
॥ * ॥ चरणादोहा ॥ * ॥
यज्ञनके जे देवत है वर तिनके अर्थ नृराय । बनके पशु संकल्पि दए हैं पूर्व अगस्त्य सचाय ॥
॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥
यातें वर भूपाल मृगया काजे जात है । सुनु वर विप्र विशाल तिनकों होत न दोष है ॥
॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥
पै सब भूतनमें दया तिहिसम धर्म न और । दयावानकों होत भय कछु न भूप सिरमौर॥
॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥
सुनहु अहिंसा भीष्म लक्षण सो है धर्मको । कहत धर्मविद भीष्म धर्मनन्द अरिवृन्ददर ॥
॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥
सब भूतनकों देत जो अभय सुनहु महिपाल । सर्व भूत हैं देत नृप ताकों अभय विशाल ॥
दयावानकों होत है प्राप्त दुःख जब भूप । सर्व भूत ताको करत रक्षा परम अनूप ॥
॥ * ॥ अरिल्लछन्द ॥ * ॥
भयतें अन्य हि भीष्म छुडावत । कूंडि भीष्म भयतें मुद पावत ॥ परम प्राणके दान समान न । और दान है सुनु अरिभानन ॥ ********** ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ **********
मरण न नीको लगत है सबभूतनकों तात । मृत्युकालमें लहत भय सर्वजीव विख्यात ॥
॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥
मांस खात जन भीष्म नारक कुम्भीपाकमें । परि कै पावत भीष्म भक्षत दुःख वर बुध कहत॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ आ०प०

सब पृथीको राज्यहूँ प्रिय नहीं प्राण समान । यातें सबने कीजिए दया सुनहु मतिमान ॥ दा०ध०

॥ * ॥ अथकरीछन्द ॥ * ॥

मांस खात न कबहु जन जौन । अबलौं जीवै तबलौं तौन ॥ स्वर्गमाहिँ लहि वास अपार । बसत मोदसों नृपति उदार ॥ जिन भूतनको आमिष खात । जो जन सुनहु प्रभु अवदात ॥ ताके मांस हि ते सब भूती भखत दै कै दुख अकूत ॥ जो जन अन्यहिं मारत तात । सोउ निश्चय मारहि खात ॥ अन्यहिं सुनहु खवावत जौन । तौनहु रोवत दुर्मति भौन ॥ अरु जो जो दुख औरहि देत । सो सो आपहु लहत अचेत ॥ ॥ * ॥ हरिगीतीछन्द ॥ * ॥

अहिंसा है परम तप औ अहिंसा वर धर्म है । अहिंसा है दान वर औ अहिंसा मख पर्म है ॥
अहिंसा है परम बल औ अहिंसावर मित्र है । अहिंसा सम सुखद और न हेत तात पवित्र है ॥
यज्ञ कीन्हें होत वर फल जौन तात सुजान है । तीर्थयात्रा किए अरु फल जौन दीन्हें दानहै ॥
अहिंसा फल की न समता कै सकै ए सर्व हैं । अहिंसा फलसो अहिंसा फलहि कहत अखर्व हैं ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

कबहूँ हिंसा करत नहि जो जन वर बुधिभौन । माता औ पित सो लगत सब जीवनको तौन ॥
हिंसाको जो त्यागहै ताको फलहै जौन । शत वर्षहुमे कहि सकत ताहि न मे बुधिभौन ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञानुगामिना श्रीबन्दीजनकाशीवासि रघुनाथकवीश्वरात्मजगोकुलनाथस्यात्मजगोपीनाथस्य शिष्येण मणिदेवेन कविना विरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणि दानधर्म्मे नवाधिकशततमोऽध्यायः ॥ * * * * * *

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ चरणादोहा ॥ * ॥

सम्पतिमाहि असम्पतिमे औसुखदुखमाहीं तात । प्राणहोनका कहिए कारण आपुमोहि विख्यात ॥

॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥

सम्पति माहि असम्पति माही औ सुखदुखके मांहि । जगमांही उत्पन्नहोतहैं प्राणी समयमांहि ॥

॥ * ॥ हंसादोहा ॥ * ॥

याको कारण कहतहौं तुमसों मे भूपाल । थिर करिकै तुम सुनहु सो चञ्चल चित्त बिशाल ॥
यह प्रसङ्गमें कहतहौं एक इतिहास अवाद । कीटकको अरु व्यासको तामेहै सम्बाद ॥

॥ * ॥ रामगीतीछन्द ॥

सकटके पथ माहि एक भय भरो कीट महान । शीघ्र धावतहुतो ताको देखिकै मतिमान ॥
व्यास मुनि सरबज्ञ तासों कहत भे इमि बैन । कहा धावत कीट तू है भयो परम अचैन ॥ * ॥

शां॰प॰ दा॰ध॰ कीटकउवाच ॥ ❁ ॥ सकटके सुनि घोर घोषहि भरो भय मे पर्म । धावनाहौं शीघ्र यातें सुनऊ व्यास सुधर्म ॥ मरण सबकों लगत अप्रिय लगत जीवन प्रीय । है नहीं सन्देह यामें गुणी तुमऊं हीय ॥ ॥ दोहा ॥

छूटि मोहतें दुःखसे हौंऊन प्रापित व्यास । यह विचारि मै भजत हौं शीघ्र भरो अतित्रास ॥

॥ ❁ ॥ पभ्भटीछन्द ॥ ❁ ॥

भीष्मउवाच ॥ ❁ ॥ सुनि व्यास कीटके ए सु बैन । इमि कहत ताहि भे सुवलित चैन ॥ सुनु कीट तोहि है मोह कौन । कहु मोहि शीघ्र तू करि न गौन ॥ ❁ ॥ चरणादोहा ॥ ❁ ॥ ❁

तिर्य्यगयोनीमाहिं सुनु प्राप्त भए हैं जौन । तिनको जो है मरण मै मानत हौं सुद तौन ॥

शब्द स्पर्श सुगन्ध रस और भोग हैं जौन । तिनकों जानत तू न है यातें सुख है कौन ॥

कीटकउवाच ॥ ❁ ॥ सब योनिनमे रहत रति जीव सुनऊ हे व्यास । यहि कारणतें थोरहे मोह बर बुधिराय ॥ यहि योनिऊ के माहि मै रहत सहित आनन्द । जीवेकी इच्छा करत यातें हे निरद्वन्द ॥ ❁ ॥ ❁ ॥ पभ्भटीछन्द ॥ ❁ ॥ ❁

मै पूर्व जन्मके माहि पर्म । धनमान शूद्र हो सुनु सधर्म ॥ होक्रूर भूरिमै पापकार । अरु कृपिण महत छल कर अपार ॥ धन देय व्याज लेके अखर्व । सुनु विप्र करतहो कार्य सर्व ॥ मै कहत नित्यहो कटुक बैन । कबहूं न देत काहूहि चैन ॥ पर द्रव्य हरण हो करत नित्य । सबहा सदाहिं बोलत असत्य ॥ तजि अतिथि भृत्य गृह मांहि जाय । हो करत नित्य भोजन अघाय ॥ मै देव काज अरु पितर काज । कबहूँ न करतहो सुबुधराज ॥ जन रहत जौन मम शरण आय । मै करत हो न ताको सहाय ॥ धन धान्य अन्यके देखि चाह । अरु दार बसन भूषण सुडाह ॥ अति दुखित होतहो सुनऊँ व्यास । निति किएँ रहतहो कुह प्रकाश ॥ ❁ ॥ गन्धानकछन्द ॥ ❁ ॥ भलो अन्यको चाहतहो नहि अपनेहीके माहीं । अपनो भलो चहतहो नित्यहि कहत सत्य तुमपाहीं ॥ क्रूर कर्ममे नित करे हो बहु दुर्मतिसों छायो । ताके समरणतें अब मेरे ताप हियमे छायो ॥ ❁ ❁ ❁ ❁ ❁ ॥ दोहा ॥ ❁ ❁ ❁ ❁ ❁ ❁ ❁

पूर्व कर्म्म जेते किए तिनमे द्वै शुभ कर्म । कीन्हेहैं मै व्यास सुनि तुमकों कहत अभर्म ॥

वृद्धा माताकी करी सेवा मै निति व्यास । भक्ति राखि हिय मांहि अति नेहके सहित हुलास ॥

औ एक निर्मल विप्रकों भोजन मै एकबार । दीन्हो हो मम धाममे आएँ सुमति अपार ॥

इन दोऊ कर्मनतें मो कों पूर्व जन्मको पर्म । समरणहे सुनु व्यास मुनि मतिबर सुनऊँ सधर्म ॥

यहि सुकर्मसों होयगो पुनिऊँ प्राप्त सुख मोहि । आनि परतहे कीट इमि कह्यो व्यासकों ओहि ॥

॥ ❁ ॥ व्यासउवाच ॥ ❁ ॥ सोरठा ॥ ❁ ॥

कीट योनिमे तोहि पूर्व जन्मकी स्मृतिहे । अब भो प्रापित मोहि शुभ कर्मन दोजनवों ॥

॥ * ॥ पवङ्गमछन्द ॥ * ॥ शां०प० दा०ध०

तपके बलतें तोहि कीटमैं नाहि हो । भूरि मोदसों बूरि दुःख सब टारिहो ॥ तपके बल सम और कीट बल नाहि है । तोहि कहत हम गुणिकै निजु हिय माहि है ॥ कीटयोनि मैं भयो प्राप्त तू पापसों। तजिकै अब यह योनि धर्मके दापसों॥ ह्वैहै मोदहि प्राप्त हिऐं निजु आनितू मम वाणीमे नेकु न संशय आनितू ॥ ॥ रामगीतोछन्द ॥ मनुज ताकों प्राप्त ह्वैकै कीट तू मतिमान। धर्म माहीं प्रवृत्त ह्वैहै प्रेम सहित महान॥ करत ह्वैहै विप्र पूजा देवतनकी सब । होति ह्वैहै कथा जो जँह वैठिहै तू तब ॥ कीट सुनु वर प्राप्त ह्वैहैं भोग तोकों सर्व । पायहै तू विप्रताकों चाय सहित अखर्व ॥ वैन सुनि ए भयो ठाढो कीट मगके माहि। मेक कीन्हों शकटगणकों हियमे भय नाहि ॥ सकटगण तिहि काल हीमे भयो आवत उह। मयो तिहिके तरे सो दवि सुनऊ भूपति गुह ॥ व्यास मुनिकी कृपा तें सो कीट सुनु बुधिधाम। भयो क्षत्रिय वंशमें उत्पन्न होत ललाम ॥ ता अनन्तर व्यास ताके भए आवत पास। देखि सो करि स्तुतिः उठिकै गहे पद सउलास ॥ ॥ कीटकउवाच ॥ ॥ सुनऊ मुनिवर व्यास तव शुचि कृपा तें अभिराम। छोडिकै कीटत्व मैं भो राजपुत्र ललाम ॥ तुरगँ मैगल उष्ट्र रथ अरु और जान जितेक। प्राप्त हैं सब मोहि तेरी कृपा तें सविवेक॥ बन्धु मित्रण सहित मैं तिनि करत भोजन चारु। सोवतो हौं मोदसों मैं सुन्दरी सह दारु ॥ करत बन्दीजन सु कीरति नित्य मेरी पर्म । देत हौमें दान तिनकों नित्य होय सशर्म ॥ प्राप्त जोहै मोहि सो सब कृपातें तव व्यास। का तहौं परनाम तुमको भरो भूरि उलास ॥ करो आज्ञा कृपा करि जो करौं मै मुनि तौन। आपु मम आनन्दके हो हेतु वर बुधिभौन ॥ * ॥ व्यासउवाच ॥ * ॥ राज्यको तू प्राप्त ह्वैकै करत नहि अभिमान। भयो हौं परसन्न यातें मैं महा मतिमान ॥ क्षत्रियत्वहि छोडिकै अब विप्रता अभिराम। पायकै तू पाव है मुद परम प्रज्ञाधाम ॥ राज्यको सुख पायकै करि यज्ञ तू सविधान । गऊ ब्राह्मण अर्थ त्यागिकै युद्धमें तजि प्रान ॥ पायहै तू स्वर्ग माही महत मुद नरराय । ह्वैहैगो तू ब्रह्मपदको प्राप्त होय सचाय ॥ जीव तिर्यगयोनिको तजि शूद्रताको पाय । शूद्रताकों छोडिकै पुनि वैश्यतामें जाय ॥ वैश्यताको छोडिकै पुनि क्षत्रियत्वहि लेत । ता अनन्तर विप्रताको लहत बुद्धिनिकेत ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

रहै धर्मके माहि मन पाय विप्रता स्वस्त । पावतहै तव ब्रह्मपद सुनऊ भूमिपति दस्त ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञानुगामिना श्रीवन्दीजनकाशीवासि रघुनाथकवीश्वरात्मजगोकुलनाथस्यात्मजगोपीनाथस्य शिष्येण मणिदेवेन कविना विरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणि दानधर्मे चतुरधिकशततमोऽध्याय: ॥ * * * *

शां॰प॰
दा॰ध॰

॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

क्षत्रिय ह्वै सो कीट बर करत भयो तप पर्म । तास निकट आवत भए पुनि मुनि व्यास सधर्म ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

कहत भए इमि बैंन व्यास आयकै तास तट । सुनऊ भूप बुधिएैंन धर्म पाल अरि आल दर ॥

॥ * ॥ व्यासउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

भूतनको जो पालिबो सो क्षत्रिणको धर्म । करिकै तू तिहि धर्मकों नीति धारिकै पर्म ॥
तदनन्तर तू पायहै विप्रताहि अभिराम । क्षत्रियको तन त्यागिकै पाणि मोदकै धाम ॥

॥ * ॥ आभीरछन्द ॥ * ॥

तातें धर्म पसारि । सर्ब पापकों टारि ॥ पालु प्रजाकों सर्ब । गहिकै नीति अखर्ब ॥ भीष्मउवाच ॥ व्यास सुमुनिके बैंन । सुनिकै ए बुधि ऐंन ॥ धर्म पसारि महांन । अधरम टारि सुजांन ॥ पालि प्रजा सह नीति । निशि दिन करिकै प्रीति ॥ थोरेही दिन माह । सुनु सधर्म नरनाह ॥ पाय विप्रता पर्म । सो भो होत सधर्म ॥ तदनन्तर मुनिव्यास । आए पुनि तिहि पास ॥ व्यास उवाच ॥ पाप करत जन जौन । पाप योनिमे तौन ॥ प्राप्त होत है दच्छ । सुनऊ विप्र वर स्वच्छ ॥ पुण्य करत जो नाम । पुण्य योनिमे आम ॥ प्राप्त होयकै भूरि । रहत मोदसों पूरि ॥ अब तूँ हे द्विज पर्म । रहिहैं सदा सधर्म ॥ कीन्हैंतें अभिराम । पुण्यकर्म बुधिधाम ॥ पुण्य कर्मके माहि । रह तू प्राप्त सदाहि ॥ * कीटकउवाच ॥ * तव सु कृपातें व्यास । आनद कर बुधिरास ॥ भए पाप सब दूरि । लह्यो मोदमै भूरि ॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ ❧❧❧ *

कीट कृपातें व्यासकी पाय विप्रता पर्म । किए यज्ञ बऊ पल्लवर् बर धरमह सधर्म ॥
तदनन्तर सो जातभो विधिके लोकहि चाह । ब्रह्मपदहि प्रापित भयो सुनऊ सुबुद्धिअगार ॥

॥ * ॥ चरणादोहा ॥ * ॥

संपति मांहि असंपतिमे योसुख दुख साही पर्म्म । प्राप्त होनके पुण्य पापहैं कारण भूप सधर्म्म ॥
हमसों पूछ्यो जौन तुम कह्यो तुम्हें हम तौन । अब आगें का पूछिहो सुनऊ तात बुधिभौंन ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशीवासिरघुनाथकवीश्वरात्मजगोकुलनाथस्यात्मजगोपीनाथस्य शिष्येण मणिदेवेन कविना विरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणि दानधर्म्मे कीटोपाख्याने पञ्चाधिकशततमोध्याय: ॥ *

॥ * ॥ युधिष्ठिर उवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

विद्या अब तप दानमे श्रेष्ठ होय जो तात । पूछतहौं मै आपुसों कहौ मोहि विख्यात ॥

॥ * ॥ भीष्म उवाच ॥ * ॥

यह प्रसङ्गके माहि बर कहत एक इतिहास । सुनऊ तौन भूपाल मणि धर्मपाल बुधिरास ॥

बारवधूके गेहमें पुरी काशिका माहिं। हे मैत्रेय सुब्यासमुनि आए तिनके पाहिं॥ आ॰प॰ दां॰ध॰

॥ * ॥ हरिगीतीछन्द ॥ * ॥

देखि के मैत्रेय प्रज्ञा राशिवर मुनि व्यासकों।जाय आगें ल्याय सादर भरे भूरि हुलासकों॥ भए पूजत व्यासमुनिकों प्रेमसों बैठाय कै। तृषावान बिलोकि शीघ्रहि नीर दीन्हो ल्याय कै॥ प्याय पहिलें व्यासमुनिको आपु पीछे जल पीयो। देखि ताके धर्मवरको व्यासमुनि विस्मय कियो॥ देखि विस्मित व्यासको सो कहत भो इमि बैंन है। कहा विस्मय कियो हियमें कहो प्रज्ञा अनं है॥ *** ॥ व्यासउवाच ॥ *॥ दोहा ॥ * ॥ ***

सत्य दान अद्रोह अरु ए तीनो मैत्रय। उत्तम ब्रत है मनुजके इनतें आनद लेय॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

ए सुबेदके बैंन सुनें पूर्व हम ऋषिणसों। सुनऊ मणीषा ऐंन धर्म धुरन्धर प्रज्ञवर॥

॥*॥ रामगीतीछन्द ॥ * ॥

तृषित मोको देखि करि कै तृषित तुम मैत्रेय। मोहि मोदित कियो सादर नीर पहिले देय॥ महत तातें प्राप्त तुमको भयो पुण्य सुजान। सर्बलोकनमाहि तवगति होयगी मतिमान॥ भयो मैं परसन्न तेरो देखि पावन दान। हैन विद्या तपऊ उत्तम दानसम बुधिमान॥ * *

॥ * ॥ दोहा ॥ ॥

है हो प्राप्त महान तुम आनंदकों अभिराम। दान किएँ मनसों लहत को न हि आमद माम॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञानुगामिना श्रीबन्दीजनकाशीवासि रघुनाथकवीश्वरात्मजगोकुलनाथस्यात्मजगोपीनाथस्य शिष्येण मणिदेवेन कविना विरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणि दानधर्मे व्यासमैत्रेयसंबादे षष्ठाधिकशततमोऽध्यायः॥ *

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥ भीष्मउवाच॥ * ॥

पुनि मैत्रेय सुजान कहत भयो इमि व्यासकों॥ तुम हो परम सुजान तातें पूछत हौं कछु॥

॥ व्यासउवाच॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

जो जो इच्छा होय तुम पूछो सो सो सर्ब। जो तुम कहि हो तैंन हम सुनि हैं सुबुध अखर्ब॥

॥ * ॥ मैत्रेयउवाच ॥ * ॥ चरणादोहा ॥ * ॥

विद्या औ तपतें उत्तम तुम कहत दानकों चारु। यामें संशय है नहीं निसय भयो उदारु॥ दरश तिहारो पाय कै लाभ प्राप्त भो मोहि।हरष भयो हियमाहिँ अति कृपा रावरी जोहि॥ तव दरशनतें होय गो मेरो निति कल्यान। सुनऊँ व्यास बुधिराय बर कृपाधाम सुखवान॥ सुन्दरकुलमें जन्म अरु शास्त्र पठन तप धर्म। एकारण ब्राह्मणके हैं मुनिव्यास सधर्म॥

आ०प० दा०ध० इन तीनो वर गुणनसों युक्त होय जब दच्छ। श्रेष्ठ होत तब विप्र है सुनऊँ व्यासमुनि स्वच्छ॥

॥*॥ जयकरीछन्द ॥*॥

होत व्यक्त जब विप्र सुजान। तृप्ति लहत सुर पितर महाँन॥ जैसें चारु खेतमे पर्म। मनुज लहत फल महत सधर्म॥ तिमिही गुणवत द्विजकों चारु। दीन्हें तें सुनु बुद्धि अपारु॥ पावत दाता फलको स्वच्छ। निजुके तुमको कहत प्रतच्छ॥ ॥*॥ दोहा ॥*॥*॥

गुणयुत जौ विप्रन मिलै सुनऊँ व्यास बुधिधाम। तौ दाता धनवानको व्यर्थ होत धन नाम॥

॥*॥ सोरठा ॥*॥

जैसें ऊसर माँहि बोएँ कछु न होत है। तिमिहि कछू फल नाहिँ मिलत मूर्ख द्विजकों दिएँ॥
मूर्ख लेत जो दान तौन परत है नरकमे। सुनऊँ व्यास बुधिमान दान व्यर्थ ह्वै जात है॥

॥*॥ दोहा ॥*॥

लघु दान जो विप्रवर गुणसौं युक्त सधर्म। होय वृद्धिकों प्राप्त तौ दाताको धन पर्म॥
याते दानहि देत जो गुणवत दानहि लेत। लहत सु पुण्य समान हैं दोऊ बुद्धिनिकेत॥

॥*॥ जयकरीछन्द ॥*॥

जो कुलीन द्विज है अभिराम। तपमे रत निति रहत ललाम॥ अरु रत पठन पढावनमाँहि। मिथ्या कबहूँ बोलत नाहि॥ ऐसे ब्राह्मण सुनऊँ सधर्म। पूजन योग्य सर्वदा पर्म॥*॥

॥*॥ भीष्मउवाच ॥*॥ दोहा ॥*

सुनि करि के मैत्रयके वचन व्यास ए भूप। कहत भए मैत्रेयकौं ऐसें समुद अनूप॥
तेरी बुद्धि निहारि कै मै भो हर्षित पर्म। तेरे प्रसंसा योग्य है जिनमे सुगुह सधर्म॥

॥*॥ जयकरीछन्द ॥*॥

दानहिकी सुप्रसंसा चारु। हम हैं कर सुबुद्धि अपारु॥ तुम तौ तप शास्त्रऊकी स्वच्छ। करत प्रसंसा हो वर दच्छ॥ स्वर्ग आयवेको अभिराम। वर साधन तप है बुधिधाम॥ तपसौं मिलत महत्व सुजान। तपहीसों अघ मिटत महान॥ जो जो इच्छा करि कै पर्म। करै मनुज तप सुनऊँ सधर्म॥ सो सो इच्छा होति सु सिधि। यामे नहि संशय बुद्धिनिधि॥ गुरुतियगामी इम जन जौन। गर्भ हने जो दुर्मतिभौन॥ औ मदिरापी सुवरणचोर। ए सब सुनऊँ सुबुध मिरजोर॥ तपसौं छूटि पापसौं भूरि। रहत महत आनदसो पूरि॥ विद्या सर्व पढो जो होय। औषऊ करै कर्म जो कोय॥ तौ अपमानन कीजे तासु। तिमिहि तपस्वीकौ बुधिरासु॥ श्रुति अरु शास्त्र पठत जन जौन। अरु जे दान देत बुधिभौन॥ औ जे करत तपस्या पर्म। ते सब पूजन योग्य सधर्म्म॥ रहि सुलोकमे सम्पति पाय। रहत नित्य आनदसौं छाय॥ औ परलोकमाँहि मतिमान। पावत हैं आनन्द महान॥ अन्नदानसों उत्तम लोक। पावत हैं जन वर बुधिओक॥

॥ * ॥ अरिल्लछन्द ॥ * ॥ शा०प० दा०ध०

अरु जग जात अदाता जँह जँह। पावत दुःख महत है तँह तँह ॥ मतिवर यामे संशय है नहि। कहत तुम्है हो गुणि कै हियमहि ॥ ॥ अन्तमुक्तामरछन्द ॥

तुम बुद्धिमान महानहो । अरु श्रेष्ठ तुम कुलदान हो ॥ कृतवान औ सुदयाल हो। वर धर्म कार विशाल हो॥ ॥ दोहा ॥

यातें कैं।मऊ पापकों प्रापत व्है हो नाहि । तुमसों कोन्हें बारता भो सुख मोहियमाहि ॥ सदा सप्रेम निवाहिए अपने कुलको धर्म । यह म्हवांननको उचित सुनु मैत्रेय सधर्म ॥

॥ ॥ सोरठा ॥ ॥

ताते सधर्म मांहि प्रवृत रहो तुम निशिदिवस। सुनऊँ आपु मम पाहि यह सम और कछू नहीं ॥

॥ ॥ दोहा ॥ ॥

जो भर्ता निजनारिमे तुष्ट रहत है धर्म । औ निजपतिमे रहति जो तुष्टा नारि सधर्म ॥ तिनकों दुःख न होत है प्राप्त होत कल्याण। यामे संशय है नहीं सुनु मैत्रेय सुजान ॥ अग्नि प्रभावों जात तम जलसों ज्यों मल जात। तिमिही तप अरु दानसों कल्मष सर्व मिटात॥

॥ ॥ सोरठा ॥ ॥

यह कहि कै मुनि व्यास बुधिराय मैत्रेयसों । विदा होय सउल्लास आतभए निज धामकों ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

यह तुम मनमे राखियो कह्यो तुम्हें हम जौन। वचन सुने ए व्यासके जोरि पाणि बुधिमान ॥ मन होय परदच्छिना करि मैत्रेय प्रणाम। कहत भयो इमि व्यास सुख पायो तुमतें काम ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञानुगामिना श्रीवन्दीजनकाशीवासि रघुनाथकवीश्वरात्मजगोकुलनाथस्यात्मजगोपीनाथस्य शिष्येण मणिदेवेन कविना विरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणि दानधर्मे व्यासमैत्रेयसम्वादे सप्तमाधिकशततमोध्यायः ॥

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥जयकरीछन्द ॥ * ॥

उत्तम नारिनको आचार। कहहु पितामह बुद्धिअगार ॥ भई सुननको इच्छा धर्म। मेरे हियमे सुनऊँ सधर्म ॥ ॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

सुरलोकके माहि शाण्डिली सुलपस्विनी। ताकों लखि कै पाहि सुमनातिय पूछति भई ॥

॥ * ॥ रामगीतीछन्द ॥ * ॥

कौन तूँ आचारवरसों पापकों करि दूरि।आय कै सुरलोकमाहीं रही मुदसों पूरि।।तेजसों शिखि शिखा जैसी रही राजि सुजानि । प्रभावों शशिसुता जैसी रही भाय महानि॥ धारि निर्मल वसन बैठो चारु पाय विमान। व्है रहो मै चकित ताको प्रभा देखि महान ॥ अल्प कीन्हें दान

आ॰प॰ दा॰ध॰ तप औ सत्य कीन्हें नेम। सकल कोऊ आय नहिं यह लोकमाहि सप्रेम॥ नारि किहि शुभकर्म सों यह लोकमाहीं आय। राजती है कहो मोसों बहुत आनन्द पाय॥ यों सुमना नारिके ए शाण्डिली सुनि बैंन। ताहि ऐसें भई कहती सुनऊ प्रशस्तैंन॥ धारि कै काषाय वसनहि मैं। न वल्कल धारि। औ जटाकों राखि नहिं इहिलोक आई नारि॥ आयवेको हेतु जो है कहति हौं मैं तोहि। सुनऊँ सुमना नारि थिर कै चित्त मोतन जोहि॥ कहे कबहूँ मै न पतिकों अहित बैन कठोर। औ न ताको नैन करि क्रुध जैंन प्रियकी ओर॥ रही पुज्य पितर देवन विप्र पूजामाहि। करी काऊकी न चुगली कबऊँ काहू पांहि॥ द्वार पै आपदपारे भई ठाढी मैं न। औ न काहूसों कहे बहुवारलौं मै बैंन॥ सुनऊ सुमना औ कियो कबहू न उन्नत हास। औन काहू सङ्गमे एकान्त वागविलास॥ जाय कै कहूँ जो आवत जब सु मो भरतार। तुरि उठि बैठा वतो हौं दिके आसन चार॥ खात हो भरतार मेरो नाहि भोजन जौंन। रही खाती नाहि मैहूँ कबऊँ भोजन तौंन॥ कहत हो भरतार करिवे कार्य्य जे जे सर्व। करति हौ मै कार्य्य ते ते मुदित होय अखर्व। पतिसु कौंनोकाजको जो कतो जात विदेश। होति हौ मै बहुत मङ्गलयुक्त तब सु अशेश॥ मो सुपति परदेशते हो आवतो जबलौंन। धारती हौ अञ्जनादिक सर्व्व मै तबलौंन॥ करत हो जब शयन पति तब हौ जगावति नाहि। रहति हौ मै प्रीतिसों वर नित्यसेवामाहि॥ धन्य पियबिन अन्य मेरो लख्यो कोउ न गात। करति हौ ग्रहकाजको मै प्रीतिसों अवदात॥ करति सेवा सासुकी औ ससुरकोहौ भूरि। करतिहो जो कहत हे सों महत आनदपूरि॥ करति नारी जौन हैं यह धर्मको अभिराम। अरुन्धतिलौं लहति हैं ते स्वर्गके सुखधाम॥ किएँ याही धर्मको यह लोकमाही आय। रहति हौं मै सुनऊँ सुमना महतमुदको पाय॥

॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

वर तपस्विनी शाण्डिली कहि यहि धर्म ललाम। तँह ही अन्तरध्यान सो होति भई बुधिधाम॥
पर्व पर्वके माहिँ जो पढि हैं यह आख्यान। स्वर्गलोकमे प्राप्त ह्वै लहि हे मोद महान॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराज श्रीउदितनारायणस्याज्ञानुगामिना श्रीवन्दीजनकाशीवासि रघुनाथकवीश्वरात्मजगोकुलनाथस्यात्मजगोपीनाथस्य शिष्येण मणिदेवेन कविना विरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणि दानधर्म्मे सुमनाशाण्डिलीसंवादे षष्ठाधिकशततमोऽध्यायः॥

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

साम दान दोउनमे श्रेष्ठ होय जो तात। पूंछत हौं मै आपुसों कहैं मोहि विख्यात॥

॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥

किते सामसो होत हैं मुदित सुनऊँ महिपाल। किते दानसों होत हैं मानव मुदित विशाल॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥ शा०प० दा०ध०

यातें जानि सुभाव मनुजनकों संसारसे । कीजै एक नरराव साम दान दोउनमें ॥

॥ * ॥ अन्तगुरुतोमरछन्द ॥ * ॥

सुनु सामके गुण औनरेंद्र । तुमसों कहैं हम तौनहैं ॥ जन क्रूरताके पोतहैं । सब सामसों ते होतहैं ॥ ॥ * ॥ तोमरछन्द ॥ * ॥

इहि प्रश्नमें इतिहास । एक कहतहौं बुधिरास ॥ एक विप्रकों गहि रक्ष । बन माहि सो सुनु दक्ष ॥ तब विप्र सो मतिमान । अति लह्यो कष्ट महांन ॥ मनमें थिरता धारि । विधि सामकी सु बिचारि ॥ करतो भयो अभिराम । सुनि तौन रक्षस साम ॥ अति व्है प्रसन्न सुजांन । मनमें बिचारि सुठान । एकप्रश्न पूछो पर्म । द्विजकों जानि अधर्म ॥ * ॥ रक्षउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ।

रहित प्रभा अरु कृशितमें कौन हेतुसों विप्र । कहो मोहि यह प्रश्न तू तोहि छोडिहौ छिप्र ॥

॥ * ॥ मधुभारछन्द ॥ * ॥

सुनि ए सुबैन । द्विज सुमति ऐन ॥ व्है मुदित पर्म । सुनु नृप सधर्म ॥ विकल इहि टारि । प्रश्नहि विचारि ॥ उत्तरहि देत । भो द्विज सचेत ॥ * ॥ ब्राह्मणउवाच ॥ * ॥ आभीरछन्द ॥ * ॥

दायावान महांन । तूहै परम सुजान ॥ पै जन कहत सु जोहि । रहित दयासों तेहि ॥ यह तू हिए विचारि । रहै शोचता धारि ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

रहित प्रभा अरु कृश रहत एहि कारण सों रक्ष । यांमे संशय है नही निश्चय जानऊँ दक्ष ॥
सुने विप्रके बैंन ए राक्षस होय सहर्ष । मित्र करत भो विप्रकों जानि सुबुध उत्कर्ष ॥
राक्षसहू बस होतभो साम सुबिधिसों भूप । आनद दायक होतहै ऐसो साम अनूप ॥
धन दीवेकों होत नहि तब सुनु हे महिपाल । जीवन की सु उपाय तू सामहि जानु बिशाल ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदीतनारायणस्याज्ञाभिगामिना बन्दीजनकाशीवासिरघुनाथकवीश्वरात्मजगोकुलनाथस्यात्मजगोपीनाथस्य शिष्येण मणिदेवेन कविना बिरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणि दानधर्मे सामविधौ नवाधिकशततमोऽध्यायः ॥ *

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ छन्द ॥ * ॥

कर्म्म भूमिमाहीसुखदाय । दुर्लभ मनुज योनिकों पाय ॥ करै दरिद्री कहा सुजान । अर्थ श्रेयके परम महान ॥ दाननमें जो उत्तमदान । औ ते मान्य पूज्य मतिमान ॥ ते सब कहो मोहि बिख्यात । कहिवे योग्य आपुही तात ॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ सुनि पाण्डवके ए वर बैन । भीषम परम मनीषा ऐंन ॥ धर्मन माही परम अनूप । गुप्त धर्म भे कहत अनूप ॥ भीष्मउवाच ॥ कह्यो पूर्व हमकों मुनिव्यास । गुप्तधर्म वर सुनु बुधिरास ॥ तुमसों कहत धर्ममें तान । तजि

आ॰प॰ दा॰ध॰ प्रमादकों सुनु बुधिभौंन ॥ गाई गाथा यम अभिराम। कहे औ सुफल तपके नाम ॥रमा देवऋषि पितर सुजान। चित्रगुप्त अरु प्रज्ञावान ॥ सो गाथा सुनिकरिकै सर्व। ए प्रसन्नता लहत अखर्व ॥ तिहि गाथाके माहो पर्म। उत्तम कहे ऋषिगणके धर्म ॥सब यज्ञनके फल अभिराम।अरु वर फल दाननके नाम ॥ कहे सर्वहैं सुनु भूपाल। तिन्हें सुनें सुख होत विशाल ॥ दश पशुघ्नसम होत सु एक। तैलकार सुनु नृप सविवेक ॥ तैलकार दशसम एक होत। मदिराकार कहत बुधिपोत ॥ दश मदिराकारके सम जानि। वेश्या एक न संशय आनि ॥ दशवेश्यासम एक भूपाल। नीचकर्म जो करै विशाल ॥ तासों दान लिएतें पर्म। दोष होतहै औंन सधर्म ॥ यमगाई गाथाकों चारु। सुनैं मिटत ते दोष अपारु ॥ ताहि पढत जो मनुज अनूप। तासु होति बुधि उज्जल भूप ॥ तीर्थ किए फल औंन महान। औ कीन्हें फल जो गोदान ॥ यज्ञकिए औ विधि सह औंन। वरफल होत सुनऊ बुधिभौंन ॥ ते फलप्राप्त होत अभिराम। पढे सुने यमगाथा आन ॥ छूटतिहैं कल्मष ता सर्व। प्राप्त होतहै धर्म अखर्व ॥ यमकी गाथाको फल पर्म। पूर्वहि भूपति तुम्हें सधर्म ॥ वरणि सुनायो हम अभिराम। अब गाथाहि कहतहैं आन ॥ देवदूत एक प्रज्ञावान। कौंनऊ काल माहि मतिमान ॥ गुप्तहोयके तौंन सचैंन। कहत भयो मघवाकों बैंन ॥ * ॥देवदूतउवाच ॥ * ॥ वर भेषज अश्विनी कुमार। परम श्रेष्ठ गुणके आगार ॥ तिनकी अज्ञाकों मैं पाय ॥ नर अरु पितर देव सुखदाय ॥ तिनकों मैं भो प्राप्त सुरेश। सुनिए हे मुदकार अशेश ॥ करत श्राद्धमें भोजन औंन। औ जो श्राद्ध करत बुधिभौंन ॥ तिनकों मैथुन करण सशर्म। किहिं कारण तें वर्जित पर्म ॥ पृथक पृथक पिण्डनसों तीन। भो विभाग किहिं अर्थ प्रवीन ॥

॥ * ॥ चरणादोहा ॥ * ॥

प्रथमपिण्डदीजे किहिकों अरु मध्यम दीजे काहि। अरु सुतीसरो पिण्ड दीजिए काहिकहो अवनाहि॥

॥ * ॥ सोरठा॥ * ॥

देवदूत ए बैंन कहत भयो सुरराय सों। सुर अरु पितर सचैंन सुनिसु प्रश्न सब होत भे ॥
तदनन्तर तिहिकों पितर कहत भए इमि बैंन। देवदूत आवऊ निकट परम मनीषाचैंन ॥

॥ * ॥ आभीरछन्द ॥ * ॥

यह तुम पूछो औंन। प्रश्न परम बुधिभौंन ॥ सो है गूढ सुजांन। दायक मोद महांन ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

जो जन करिकै श्राद्धकों रमै तियाके सङ्ग। औ जो जन भोजन करि सु तियकों करै प्रसङ्ग ॥
श्राद्ध कारके पितर तौ एक माससों वास। तिन दोउनके रेतमे करैं सुनऊ बुधिरास ॥

॥ *॥ चरणादोहा ॥ * ॥

पिण्डनको विभाग यव क्रम गहि कहत ललाम। सुनऊ तौंन तुम देवदूत वरपरममनीषा धाम ॥

॥ * ॥ रामगीतीछन्द ॥ * ॥ श्रा०प० दा०ध०

प्रथम पिण्डा नीर माहीं डारिए अभिराम। द्वितिय पिण्डा दीजिए निज नारिकों बुधिधाम तृतिय पिण्डाको सु कीजे अग्नि माही होम। श्राद्धकी यह परम विधि है सुनऊँ बर बुधितोम॥ पितर होत प्रसन्न कीन्हें श्राद्ध एहि विधि धर्म्म।बढति सन्तति तिमिहि सम्पति बढत अक्षय धर्म्म॥

॥ * ॥ देवदूतउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

पिण्डनको सु भाग तुम कह्यो सु क्रम यहि थाम।पूछत हौं एक हेतुमै तीनऊँ कहौ ललाम॥

॥ * ॥ अरिल्लछन्द ॥ * ॥

प्रथम पिण्ड जल माहीं डारत। पितर सुतिहि सों किमि मुद धारत॥ तिहिसों होत प्रसन्न कौन सुर। यह तुम कहौ कृपा करिकै तुर॥ मध्यम पिण्डहि पति अज्ञालहि। पत्नी खाति भूरि रतिसों चहि॥ ताको परम कहा है कारण। कहो मोहि करिके निरधारण॥ तृतिय सुपिण्ड श्राद्ध करिकै बर। अग्नि माहिं होमतहैं बुधिधर॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

तासु कहा फल होत अरु प्राप्त होत है काहि। यह सुनि के इच्छा भई कहौ आपु अवगाहि॥

॥ * ॥ पितरउवाच ॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

तुम यह पूछो जौन सो अति उत्तम प्रश्न है। सुनऊँ परम बुधिभौन याको उत्तर देतहैं॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

करत प्रशंसा श्राद्धकी सुर मुनिके समुदाय। श्राद्ध कर्म उत्तम परम है अति आनद दाय॥
सुनि करिकै भगवान तें श्राद्ध कर्मको थाम। लह्यो मारकण्डेयहै निश्चय परम ललाम॥
और न कोऊ श्राद्धको जानत निश्चय चारु। यामे संशय है नहीं सुनऊँ सुबुद्धि अगारु॥
तीनऊँ पिण्डा होत है जिनको प्राप्त सुजान। सो मै तुमसो कहत औ जो फल होत महान॥

॥ * ॥ चरणाकुलकछन्द ॥ * ॥

पिण्ड जात जल माहीं जोहै। करै प्रसन्न चन्द्रको सोहै॥ चन्द्र प्रसन्न करै देवनको। औ तिमि ही पितरनके गणको॥ जो लहिकै भर्त्ताकी अज्ञा। पिण्ड खाति है नारि सु प्रज्ञा॥ पितर देत हैं ताहि सुनीका। पुत्र सुप्रज्ञ महान हि श्रीको॥ होमत जौन अग्निके माहीं। सुनो तासु फल मेरे पाहीं॥ पितर सु लहि प्रसन्नता भारी। करत कामना सिद्धि सुढारी॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ **

तीनो पिण्डनको सुफल बर्णि सुनायो सर्व। देवदूत हम तोहि सुनु बर मतिमान अखर्व॥
जो द्विज भोजन करतहै श्राद्ध माहि अभिराम। श्राद्ध कारकै पितरलहि सो प्राप्त होत बुधिधाम॥

॥ * ॥ चरणादोहा ॥ * ॥

मैथुनकीबो बर्जित याते श्राद्ध दिवसके माहि। होति स्वनारी परतियतुल्या यामे संशय नाहि॥
श्राद्धमाहि भोजन करै न्है शुचिकरिकै स्नान। क्रोध न आनै चित्तमे गहै सुषमा महान॥

आ॰प॰
द॰ध॰

॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥

यह विशेष है श्राद्धकी उत्तम विधि भूपाल। एहि विधिसों जनकों मिलत आनद परम विशाल ॥

॥ * ॥ रामगीतीछन्द ॥ * ॥

सरद अरु हेमन्त ऋतुमे अष्टमी तिथि माह । करत इहि विधि श्राद्धई जन सुनऊ बर नर नाह॥ अष्टकाहै नाम एहि बर श्राद्ध विधिको पर्म।किए यह विधि पितरन्है परसन्न करत सधर्म॥

॥ * ॥ उल्लासछन्द ॥ * ॥

तव प्रश्नमाहि आख्यान एक भूमिपाल औरऊ सुनो । हम कहत तोहि अवगाहिकै ताहि तुम सु हीने गुनो ॥ * * * ॥ * ॥ चरणाकुलकछन्द ॥ * ॥ * * * *

विद्युतप्रभ एक परम तपस्वी । रविसम तेजस भरो यशस्वी ॥ प्राप्तहोय मघवाकों बानी। कहत भयो ऐसें सो ज्ञानी ॥ विद्युतप्रभउवाच ॥ कीट पिपीलक अरु मृगजूहा । पक्षीगण अरु सर्प समूहा ॥ जे अज्ञानी इनकों मारैं । ते जन बहु पातककों धारैं ॥तिनको छूटत पाप महाना। कैसें कहो मोहि मघवाना ॥ विद्युतप्रभकी वाणी सुनिकै । कहत भए मघवा इमि गुणिकै ॥

॥ * ॥ शक्रउवाच ॥ * ॥ अरिल्लछन्द ॥ * ॥

गङ्गा गया प्रभास तीर्थ बर। पुष्कर औ कुरुक्षेत्र कलुषहर ॥ इन तीर्थनको करिकै ध्यानहि। ही मह धरिकै प्रीति महानहि ॥ विधिसों करत स्नानहै जो जन। छूटि जात पातकसों सोजन ॥ अरु जो जन गो के करि दरशहि ।कौरिकै तासु पीठिके परसहि ॥ पुनि गहि पुच्छ सु करत प्रणामहि । सो पावत फल व्रतके मासहि ॥ सर्वहि छूटि जातहै पातक। धर्मसु प्राप्त होत दुख घातक ॥

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

तदनन्तर बासवकों बैन। विद्युतप्रभ भो कहत सचैन ॥ अति सुक्षम एक पावन धर्म । कहत तोहि हौं सुनऊ सधर्म ॥ बटके बलकल सुन्दर ल्याय । चारु नीरमे तिन्हें पचाय ॥ प्रथम कांकुको अबटन स्वच्छ। लाय अङ्गमाहीं सुन दच्छ ॥ पुनि तिहि जलसों कीन्हें स्नान । छूटि जात सब पाप महान ॥ अरु षष्ठिक ओदन अभिराम। खाएँ पयके सङ्ग ललाम ॥ छूटत सब पापनसों भूरि । रहत परम आनदसों पूरि । औरऊ चारु धर्म एक पर्म ॥ सुनिए निर्जरनाथ सधर्म ॥ तीरथ कुरुक्षेत्रके माहिं । सुर गुरु जाय शम्भुके पाहि ॥ कहत ऊमे मै सुख्यो सुतत्र । कहत तान तव पाहि पवित्र ॥ चढिकै गिरिवर माहि महान। जहं जोरिकै पाणि सुजान ॥ व्रत करि ठाढो पदसों एक। ह्वै करिकै जो जन सबिबेक ॥ मारतण्डकों लखैं सप्रेम । सो जन नित्यहि रहत सछेम ॥ महत किएँ तप लहत सु जौन । फलसो प्राप्त होत बुधिभौन ॥ औ उपवासनको अभिराम । प्रापित होत परमफल साम ॥ दिनकरकी किरणिनसों सर्व । छूटि जात हैं पाप अखर्व ॥ प्रभा देहमे होति महान। छीन होति नहिं कबऊँ सुजान ॥ परम महान सुपरसाबान ॥

अति सुखदायक पाय विमान। लसत चन्द्रलौं ताके माह। हर्षमान ह्वै सुनु सुरनाह ॥ दोहा ॥ ग्रा०प०
तदनन्तर सुरवर्गमें देवराज सुनु भूप। सुरगुरुको पूछत भयो यह वर प्रश्न अनूप॥ दा०भ०

॥ * ॥ देवराजउवाच ॥ * ॥

मनुजनको जिहिँ धर्म सों प्राप्त होय आनन्द। तौन धर्म हमको कहौ करि के कृपा बिलन्द॥
औ ए दोष महान जे कहौ तौनहूँ सर्व। आपु श्रेष्ठ धर्मज्ञ हौ वक्ता परम अखर्व॥

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

॥ * ॥ बृहस्पतिरुवाच ॥ * ॥ जे जन विष्ठा मूत्र करत हैं मारतण्डदिशि। औ जे निन्दा उग्र वायुकी करत दिवसनिशि॥ भए विना प्रज्वलित अग्नि जे होम करत हैं। औ जे मानव अज्ञ दया नहिँ हिएँ धरत हैं॥ दुहत बालवत्सा सुधेनकों सुनहु सचीपति। कहत तौन हम तिन्हें होत है दोष जौन अति॥ गो अरु रवि अरु अग्नि वायु मनुजनको तारत। इनको सेवत जौन तौन नहिँ दुखको धारत॥ * ॥ *❦*❦*❦* ॥ * ॥ रामगीताछन्द ॥ * ॥ *❦*❦*

मूत्र विष्ठा करत जे नर नारि रविकी ओर। नरक सेवत छियासी तेवर्ष सुर थिर मौर॥ करत निन्दा वायुकी हैं जौन जन अज्ञान। गर्भतें गिरि जाति तिनकी प्रजा हे मतिमान॥ भए बिन प्रज्वलित पावक करत होम सु जौन। ग्रहण ताके हव्यको नहि करत शिखि बुधिभौन॥ बाल वत्सा धेनुको जन दुग्ध पीवत जौन। लहत हैं आनन्द सन्ततिको नहो जन तौन॥ सुनहु तातें वर्ज्य कार्य्य न कीजिए सुरराय। वर्ज्य कारय किएते जन रहत नित्य अचाय॥ ता अनन्तर देवता अरु मरुतगण ऋषि पर्म। सर्व ए मिलि सुनहु भूपति परम प्रज्ञ सधर्म॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ ❦*

पितरनको पूछत भए जो वृत्तान्त अनूप। सो मै तुमसों कहत हौं सुनहु युधिष्ठिर भूप॥
पितर होत परसन्न हैं किहिविधिसों अभिराम। औ अक्षय किमि होत है श्राद्ध प्रदान ललाम॥
औ मानव किमि होत है रहित सुऋणसों सर्व। यह सुनिबेकी है भई इच्छा परम अखर्व॥

॥ * ॥ पितरऊचुः ॥ * ॥ मधुभारछन्द ॥ * ॥

पूछो सु जौन। हमसों सु तौन॥ हम कहत सर्व। कारण अखर्व॥

॥ * ॥ मदनदीपकछन्द ॥ * ॥

वर्ण होय लोहित औ श्वेत खुर बिधान। होय बदन पाण्डुर औ पुच्छत्यों सुठान॥ वृषभ यहि सुभांतिको सुठार भीलमान। नीलषण्ढ तासु नाम है बली महान॥ * ॥ मल्लिकाछन्द ॥ * ॥
नीलषण्ढ मोक्ष धाम। श्रेष्ठ होत सो ललाम॥ तास दानके महान। भूप लै सुनो सुजान॥

॥ ❦ ॥ जयकरीछन्द ॥ ❦ ॥

जे सुआँनि विधि बुधजन पाहिं। तिथिसु अमावस्याके माहिँ॥ पितर निमित्त स प्रीति सधर्म

आ०प० नील वृषभकों छोड़त पर्म ॥ होत अक्षय ते प्रज्ञाधाम । पितर मोदता पावत नाम ॥ दीपदान
दा०ध० वर्षामे चाव।जे जन करत सुबुद्धि सभाव॥ तेऊ अक्षय होतहैं सर्व।इम निश्चय करि कहत अखर्व॥
एसु परम अक्षय हैं दान । इनतें हैं फल होत महान ॥ इम सन्तुष्ट रहत है पर्म। है नहि संशय
सुनऊ सधर्म ॥ ॥ दोहा ॥
पुत्र करत उत्पन्न जे धर्म सहित अभिराम। तोंन निकारत नरकतें पितरनकों बुधिधाम ॥
॥ *॥ सोरठा ॥ * ॥
पितरनके ए बैंन सुनि सचैंन व्हैके परम । वृद्धगार्ग्य मतिचैंन कहतभए ऐसें बचन ॥
॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥
नील वृषभ छोड़ैं गुणवान । अरु वर्षाकेमाहि सुजान ॥ दीपदान कीन्हें अभिराम । होत
महाफल परम ललाम ॥ पितरऊचुः ॥ नीलवृषभकी पुच्छ सुढार । उर्द्ध उछारत जौंन सुवार ॥
तिहिसों गार्ग्य सुनऊ बुधिधाम। साठिहजारवर्ष अतिभाम॥ पावत तृप्ति पितर हैं पर्म। संशय है
नहि सुनऊ सधर्म ॥ ॥ दोहा ॥
जौंन उठावत शृङ्गसों नदीकूलतैं पङ्क । सोमलोककों जात है तातें पितर अशङ्क ॥
दीपदान जे करत हैं वर्षामे जन जौंन। शोभित शशिलैां होत हैं परमासों जन तौंन ॥
कूलरिवारे काष्ठको वर भाजन बनवाय । तामे मधुतिल औ उदक भरि करि कै सुखदाय ॥
आमावस्यामाहि वर जे मानव द्वै देत। तिनकों प्रापित होत हैं पुत्र सुबुद्धिनिकेत ॥
अक्षय होत है तौंन जन पिण्ड देतहैं जौंन। सन्ततिसों तिनको सदा भरो रहत है भौंन ॥
देवत औ ऋषि मरुतगण पितरनके सुनि बैंन । पावत भए महान मुद सुनऊँ तात बुधिभैंन ॥
स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञानुगामिना श्रीबन्दीजनकाशीवासि
रघुनाथकवीश्वरात्मजगोकुलनाथस्यात्मजगोपीनाथस्य शिषेण मणिदेवेन कविना विरचिते
भाषायां महाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणि दानधर्मे दशाधिकशततमोऽध्यायः ॥
॥ * ॥ आभीरछन्द ॥ * ॥
तदनन्तर सुर पाल। मुदसों भरो विशाल॥ विष्णुहि ऐसें बैंन। कहत भए बुधिचैंन ॥
॥ * ॥ इन्द्रउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥
आपु होत सन्तुष्ट किमि कहऊ विष्णु सानन्द। करता हरता जगतके हरता दुःखनिकन्द ॥
सुनि सुरपतिके बचन ए विष्णु परम मुदधाम । कहत भए इमि इन्द्रकों सुनऊँ भूप अभिराम ॥
॥ ॥ विष्णुरुवाच ॥ ॥
द्विजको जे जन करत अनादर कहत हमारो जौंन। त्यो जे द्विजकों पूजत हैं जन पूजत हमकों तौंन॥
जव भोजन करि द्विज उठ तब कीजे परनाम । तिमि हो संध्याकरि पुनि मानव जन बुधिधाम॥

करे प्रणाम सु आपने चरणनकों सुरराय । मै प्रसन्न अति होत हौं यहविधि किएँ एसदाय ॥ आ०प०
अरु गोमयसों लीपि कै चक्राकार सुजान । जपि कै मंत्र सुदर्शन हि तामे दे बलिदान ॥ दा०ध०
होत परम सन्तुष्ट हौं कीन्हें यहविधि धर्म । मुददायक मानवनकों है यह सुविधि सधर्म ॥
बामन द्विजकों देखि अरु अवनितें उठो बराह । तिनकों करत प्रणाम जे मानव सुनु सुरनाह ॥
कल्मष तिन मानवनके दूरि शीघ्र ही होत । कबहूँ तिनके गेहमे होत न अशुभ उदोत ॥
गोकों औ चल दल द्रुमहिं पूजत जौन हमेश । सब जग पूजें को सुफल तिनकों होत सुरेश ॥
पूजा मै तिनकी करी अति प्रसन्न व्है लेत । परम होत सन्तुष्ट हौं सुनु बर बुद्धिनिकेत ॥

॥ ॥ चरणादोहा ॥ ॥

गोकी औ चलदलकी पूजा सोई हमारी जानि।अन्या पूजा है न हमारी यह तूं निश्चय मानि ॥

॥ * ॥ इन्द्रउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

चक्र चरण बाराह अरु ब्राह्मण बामन जौन । करत प्रसंशा आपु हो तिनकी किमि मुदभौन ॥

॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥तोमरछन्द ॥ * ॥

सुनि इन्द्रके यह बैन । बर विष्णु आनन्द ऐंन ॥ हसि कै कह्यो इमि भूप।सुनु धर्मपाल अनूप॥

॥ * ॥ रामगोतीछन्द॥ * ॥

॥ विष्णुरुवाच ॥ चक्रसों हम दैत्य मारे बक्रबलके धाम । लई बसुधा दाबि द्वै हम पदनसों अभिराम ॥ रूप धरि बाराहको हम भूमि ल्याए इन्द्र । रूप बामन धारि हम जीत्यो सुबलि दैत्येन्द्र ॥ करत इनको प्रसंशा यहि हेतुतें हौं धर्म । इन्हें पूजें अजय जनकी होति नाहि सुशर्म ॥ गुप्त यह बर धर्म तुमको कह्यो हम सुरराय । किएते यहिं महत धर्म हिं लहत सुख समुदाय ॥

॥ * ॥ अरिलछन्द ॥ * ॥

॥ भीष्मउवाच ॥ तदनन्तर सुनिए नरनायक । मनुजनकों अति आनददायक ॥ कहत भए बलदेव धर्म बर । ताहि किएँ नशि जात कलुषतर ॥ * ॥ बलदेवउवाच ॥ * ॥ प्रात करै उठि गोके दर्शहि । औ दधि घृत सरसों के परशहि ॥ तिमिहि कांकको दरश किए अति । छूटि जात सब पाप कहत सति ॥ * ॥ देवाऊचुः ॥ * ॥ गूलरिकाष्ठ पात्रकों लहि करि । निर्मल नीर ताहि तामहि भरि ॥ तौन नीर करमे लहि पावन । उत्तर मुख व्है होय सचावन ॥ ब्रत उपवासनके सङ्कल्पहि । करै प्रात तब सुफल अनल्पहि ॥ प्राप्त होत मानवहै मतिबर । कबहूँ होत नजीक न दुखतर ॥ करत जौन इमि होत तास सुर । अति प्रसन्न अरु काम सिद्धि तुर ॥ बिन सङ्कल्प किएँ फल होत न । यह निश्चय सु कियो मतिपोतन ॥ चरणा दोहा ॥ * ॥

बलिभिक्षा अरु अर्घ्यदीजिएताय पात्रसों धाय । तिमिहीदीजिएपितरनकोंबरतिल अरुउदकसुढाय ॥
ताम्रपात्रसों बिन दिए होत न फल अभिराम । गुप्त धर्म यह परम अति कह्यो देवतन नाम ॥

॥ * ॥ रामगीतोछन्द ॥ * ॥

आ०प०
दा०ध० धर्मउवाच ॥ * ॥ अतिथि आकेँ गेहत जो होय आय निरास। आय होय निरास तो मिथि पितर औ सुर तास ॥ नारि औ गो विप्रकोँ जो हनत दुर्मतिमान। औ नहीं उपकार मानत मनुज नर्वी जौन ॥ करत औ गुरुनारिके सँग जौन यज्ञ बिहार। होत जैसो तिन्हैं प्रापित पाप परम अपार ॥ होत तैसो ताहि प्रापित घोर पाप महान। अतिथिको नहि करत पूजन जौन जन अज्ञान ॥ * ॥ अग्निरुवाच ॥ * ॥ गऊको अरु बिप्रको अरु अग्निको जन जौन। करत कबहुँ परश परसोँ परम दुर्मतिमौन ॥ होत ताकोँ स्वर्गलो है अयश अतिही भूरि। पितर ताके रहत हैं अति महत डरसोँ पूरि ॥ हव्य ताको दियो पावक लेत है नहि पर्म। रहत तास उदास देवत देखि भूरि कुकर्म ॥ करत सो है वास बहुदिन नरकमाहीँ उग्र। करै तातेँ कर्म ऐसे कबहु नहि करि क्षुद्र ॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥ वशिष्ठादिक सप्त ऋषि वर आय बिधिके पास। करि प्रदक्षिण सर्व ठाढे भए सहित हुलास ॥ ता अनन्तर ब्रह्मज्ञानी ऋषिवशिष्ठ सुजान। प्रश्न पूछो द्रुहिणकोँ यह मोदकार महान ॥ जौन जन धनहीन ते जन यज्ञको फल पर्म। कौन कीन्हेँ कर्म पावत कहो द्रुहिण समर्म ॥ सुने बचन वशिष्ठके ए द्रुहिण आनदऐन। कहत भे हँसि बैन ऐसे सुनहु भूप सचैन ॥ * ॥ ब्रह्मोवाच ॥ प्रश्न मुनिवर कियो तुम यह प्रश्न अति अभिराम। सुनहु यह शुभ प्रश्नको तुम चारु उत्तर आम ॥ पौषको सितपक्षमाही रोहणी नक्षत्र। प्राप्त ह्वै तब स्नान करिकै होय परम पवित्र ॥ ओढि कै एकवस्त्र बाहिर करै भूमे सैन। रहै अवलोँ रोहिणी नृप सुनहुँ आनदऐन ॥ परे शशिकी किरणि तनमे सुधामय अभिराम। होत जनकोँ यज्ञको फल प्राप्त है बुधिधाम ॥ * ॥ भानुरुवाच ॥ * ॥ दोहा ॥

व्रत मिलाय अक्षतनमे अञ्जलिमे भरि वारि। पूरणमासीमे दिएँ शशिको प्रीति हि धारि ॥
अग्निहोत्रको महत फल लहत मनुज अभिराम। यामे संशय है नहीँ जानहु निजु बुधिधाम ॥

॥ * ॥ चरणाकुलकछन्द ॥ * ॥

जे जन आमावस्यामाहीँ। करत विचार हियमे नाहीँ ॥ काटत हैँ बहु वनसतीकोँ। सुनो मुनिनकी अशुभमतीकोँ ॥ पात कटे वृक्षणमे जेते। हत्या होय द्विजनकी तेते ॥ तिथिसु अमावस्यामे जो है। करै दन्तधावनकोँ सो है ॥ पावत पाप हनेको चन्द्रहि। मानत हैँ उर पितर विखन्दहि ॥ लेत न हव्य देव तिहिकेरो। तापे करै क्रोध बहुतेरो ॥ करत पितरउ क्रोध महाना। ताकोँ करत दुखद अघमाना ॥ तिहिको बाढत वंश नहो है। सो पावत नहि मोद कहीं है ॥ अयमीरुवाच ॥ भाजन भग्न मलिन जो राखै। दारहि हनै कुबैननि भाखै ॥ राखै आसन अतिहि मलीना। तिमि राखै भा ग्रहकी हीना ॥ ताके ग्रहतेँ जात पितर सुर। उत्सवमे जो धर्मनाहि धुर ॥ अङ्गिराउवाच ॥ जो सुनेम गहि एक वत्सतर। दीपक देय करञ्जकदुमतर ॥ तिमि सुवर्च आलतिका पावै।

दीपक धरिकै करै प्रकाशै ॥ वंश बढत है ताको नीको । बढत सुयश अरु शशिकी सीको ॥ आ०प०
॥ * ॥ गार्ग्यउवाच ॥ * ॥ होत पुण्य जो शतमख कीन्हे । तिनमे दान महान सु दीन्हे ॥ प्राप्त सु दा०ध०
पुण्य होत सो सबकों । कहत महत हम करि निश्चयकों ॥ औ श्रद्धा करिकै हिय माहीं । कियो
धर्म ताको क्षय नाहीं ॥ गुप्त बात यह हम सु बखानी । जानत याहि महत जे ज्ञानी ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

रजस्वला औ कुष्ठिका औ अपुत्रिका नारि । देव पितरके कार्य्यमे तिन्हैं दीजिए टारि ॥
देवकार्य्य औ ते लखे देवत लेत न हव्य । औ देखैं औ पितरकार्य्यकों लेत पितर नहि कव्य ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ ॥

रहत चयोदशवर्ष असन्तुष्ट ह्वै कै परम । भूपति सुनऊ सहर्ष कियो गार्ग्य सिद्धान्त यह ॥

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

॥ * ॥ धौम्यउवाच ॥ * ॥ भग्न आण्ड अरु कुक्कुट श्वान । औ खट्ट सुनु बर मतिमान ॥ अप्रसन्न
ए सर्बहि जानु । यहिमे नेकु न संशय आनु ॥ भग्न भाण्डमे कलिको बास । रहत कहत हैं बर
बुधिरास ॥ श्राद्ध कारजौ बर बुधिऐंन । सुनै कहूँ कुक्कुटको बैंन॥लेत सु पिण्ड पितर तौ नाहि।
है नहि संशय याके माहि ॥ तिमिही बैंन सुनै मखकार। तौ न देव हबि लेत सुढार ॥श्राद्धहि औ
यज्ञ हिं औ श्वान । देखै तौ सुनु बर मतिमान ॥ पितर लेत नहि कव्यहि पर्म। औ हविकों नहि
देव सधर्म ॥ ॥ * ॥ दोहा॰॥ * ॥

श्राद्धमाहि औ यज्ञमे विप्र बुलाए औंन । खट्ट दीजे बैठिबें तिनकों नहि बुधिभौंन ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

औन निमंचित विप्र बैठैं खट्ट माहि जो । नष्ट होय तौ छिप्र दाताको धन महत सब ॥

॥ * ॥ चरणादोहा ॥ * ॥ यमदग्निरुवाच ॥ * ॥

बाजपेय अरु अश्वमेध मख करै हजारन पर्म ।औ शिर नत करि करै तपस्या जो जन सुनऊँ सधर्म
होय न जाको हृदय औ शुद्ध सुनऊँ महिपाल । तौ निश्चय परि नरकमे पावै दुःख बिशाल ॥
औं न हृदयकी शुद्धता ता सम कोउ न यज्ञ । हृदय शुद्धतासौं लहत मोद महत जन प्रज्ञ ॥
अन्नु बिप्रकों देय औ शुद्ध हृदयसौं पर्म । ब्रह्मलोककों जाय तौ प्राणी होय सधर्म ॥

॥ * ॥ आभीरछन्द ॥ * ॥

वायुरुवाच ॥ * ॥ मनुजको अभिराम । आनन्ददायक माम ॥ जे हैं धर्म सुढार । ते हम कहत
उदार ॥ औ जे दोष अखर्ब । कहत तौंमऊँ सर्ब ॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥
चारिमास वर्षाके माहिँ । हीमे करै क्रोधको नाहिँ ॥ तिल जल देय सु करिकै स्नान । दीप

श्रा०प० दान अरु देय सुजान ॥ वेदवान द्विजबर बुधिधाम । तिनको भोजन देय सलाम ॥ यथा शक्तिसों
दा०ध० आदर पर्म । अरु सुबैन कहि करै सुशर्म ॥ अग्निहोत्रको करै ललाम । घी सु खीर भोजन बुधि
धाम ॥ यहि विधिसों मानव सुनु भूप । शतमखको फल लहत अनूप ॥ कह्यो धर्म हम तुम्हैं
बखानि । अब हम दोष कहत अनुमानि ॥ अग्नि शूद्रसों मखके काज । आनि बनावत मूर्ख दराज ॥
मांस बच्यो मखमाहीं आँन । देय मांस भार्याकों तौन ॥ लिप्त होय सो अघसों पर्म । कबहूँ नहि
पावत है सुशर्म । कोप करत है अग्नि महान । किए कर्म यह व्है अज्ञान ॥ सुर अरु पितर न तुष्टित
होत । करत कोपको महत उदोत ॥ तदनन्तर सो मृत्युहि पाय । शूद्रयोनि मांहि रहत अघाय ॥
यह जो अधरम अति दुखदाय । ताके छूटनकी सु उपाय ॥ अब हम कहत सुनऊँ तुम तौन ।
तजि प्रमादकों प्रज्ञाभौन ॥ गोपुरीषसों निर्मल धाम । करि के परम प्रीतिसों श्याम ॥ पी करि के
गोमुत्र हि चाव । एक वर्षलौं बुद्धिअगाव ॥ होम करै गोघृतसों पर्म । तब प्रसन्न सुर होत सुशर्म ॥
पितरऊ श्राद्ध कालकेमाहिं । आवत यामे संशय नाहिं ॥ * ॥ सोमसउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥
जे विवाह नहि करत हैं पर तियमाहि विलास । श्राद्धमाहि तिनके पितर व्है कै जात निरास ॥

॥ * ॥ रामगीतीछन्द ॥ * ॥

रमत है परनारिमाहीं जौन दुर्मतिभौन । अरु सुबंध्यानारिहीमे रहै मोदित जौन ॥ विप्रको
धन हरत जो है लोभ करि ही माहि । दोष तिन तीनऊनकों सम होत संशय नाहि ॥ पितर औ
सुर दियो तिनको नहीं कवि हवि लेत । एमै नहि परदारमे तिहितें न होय सचेत ॥ करै अपनो
व्याह दूजो तजै बंध्यानारि । विप्रको धन हरै कबऊ न लोभमा हिय धारि ॥ धर्म एक तुम सुनो
औरऊ मोददायक भूरि । बचन गुरुके सदा मानै प्रेमसों हियपूरि ॥ सघृत अघत द्वादशी औ
पूर्णिमामे देत । जौन अन बुलवाय कै द्विज परम बुद्धिनिकेत ॥ बढत ताके पुण्यसों है निशापति
सानन्द । औ महोदधि बढत सागर होत नीर अमन्द ॥ भाग चौथो देत है हयमेधको अभिराम ।
सुराधिप करि कृपा ताकों जानि वर बुधिधाम ॥ करत है नक्षत्र ताकी सिद्धि इच्छा सर्व । वीर्य
बाढत अङ्गमाहीं होत तेज अखर्व ॥ औरऊ एक धर्म तुमसों कहत हैं हम पर्म । होत हैं कलियुग
ऊमे अन किए ताहि सुशर्म ॥ प्रात उठि जो स्नान करि के पैन्हि कै सितवास । लवक अरपात्रमे
भरि तिलनकों सउल्लास ॥ शुद्ध सुन्दर बेदबिद बुलवाय ब्राह्मण पर्म । सहित आदर देत तिनकों
धारि कै हिय धर्म । समधु तिल अरु क्षसर औ तिमि दीपकों जो देत । सुनऊँ तिनको फल
हि तुमकों कहत होय सचेत ॥ करत जो भूदान सुरभी दान उत्तम भूरि । करत औ जो यज्ञ
अग्निष्टोम आनदपूरि ॥ तिन्हैं जो फल होत उत्तम कहत वासव सोय । भरो तिलसों पात्र जो
अन देत ताकों होय ॥ सदा कीन्हें श्राद्ध जैसी तृप्त पावत शुद्ध । दिएं तिल अरु तृप्त तैसी पितर
पावत उद्ध ॥ ****************

॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥ अर्धचरणा दोहा ॥ * ॥ शा०प०

तदनन्तर देवतन सह पितर सर्व सुनु भूप । पूछत भए अरुन्धतितियको यह वर धर्म अनूप ॥ दा०ध०

॥ * ॥ अरुन्धत्युवाच ॥ * ॥

कृपा तुम्हरी पाय के मोदकारिणी मान । मैं इच्छा होती भई तपहि करत अभिराम ॥

धर्म पर्ममें कहति हौं सुनऊँ तौन तुम सर्व । जिहिकों कीन्हे लहत हैं मानव मोद अखर्व ॥

मनुज अश्रद्धावान जे थे अभिमानी जौन । गुरु तियगामी ब्रह्महा हैं जे दुर्मति भौन ॥

तिन मनुजनके सामुहे कहिए कबहुँ न धर्म । शुद्ध होय जिनको हृदय कहिए तिनको पर्म ॥

॥ * ॥ अथकरोछन्द ॥ * ॥

प्रातकाल उठिकै शुचि भौन । गोके शृङ्गमाहिं जल जौन ॥ छिरकै कुशसों जलको पर्म । पाणि ओरिकै प्रथम सधर्म ॥ उतरै नीरशृङ्गतें जौन । छिरकै अपने शिरमें तौन ॥ तीर्थ जिते तिहु लोकन माहि । बसै सुमुनिवर तिनके पाहि ॥ तिनमाहीं कीन्हे तें स्नान । जैसो फल वर मिलत महान ॥ गोशृङ्गोदकसो अभिराम । मिलै सुफल तैसोई नाम ॥ सुनि अरुन्धतीके ए बैन । पितर तिमिहिं सुर आनद चैन ॥ भए प्रसन्न परम सुनु भूप । मोदकार यह धर्म अनूप ॥ पितामह उवाच ॥ * ॥ भे प्रसन्न हम सुनि यह धर्म । बढो सदा तेरो तप पर्म ॥ तदनंतर यम ऐसे बैन ॥ पितरनको वह सुर मुद चैन ॥ कहत भए सुनु कुंतीनन्द । धर्मधुरन्धर प्रज्ञ नरेन्द ॥ यमउवाच ॥ पितरनको कहो सुजान । सुनो सर्व तुम धर्म महान ॥ करत अराधन रविको जौन । वर धरमज्ञ मनीषा भौन ॥ तास होत परलोकै माहिं । शाखो सूरज संशय नाहिं ॥ दीपदान अरु पानी दान । दीजै श्रद्धा सहित महान ॥ छत्र उपानह दीजै चारु । बोलि वेदविद विप्र सुढारु ॥ पुष्करतीर्थमाहि अभिराम । दीजै कपिला बज ललाम ॥ अग्निहोत्रकों करै सदाहि । आलस ल्यावै मनमें नाहिं ॥ है यह परम धर्म अभिराम । अब याको फल सुनिए नाम ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

जात जबै परलोकमें मानव छोडि शरीर । क्षुधा प्याससों लहत तब तहां आय अति पीर ॥

अरम लगत है भाजि कहुँ आय सकत है नाहि । प्राप्त होत है महत अति अन्धकारके माहि ॥

करत सहाय महान अहँ कीन्हें जे हैं धर्म । यामें संशय है नहीं निश्चय जानऊ पर्म ॥

॥ * ॥ चरणाकुलकछन्द ॥ * ॥

जे जन देत सु उज्ज्वल पानी । नदी सु पुण्योदका महांनी ॥ प्राप्त होति है तिनकों नीकी । अक्षय वर निर्मल पाणीकी ॥ तास सुधासो पीवै वारी । पावत है अति तुष्टि सुढारी ॥ दीप दिए जिन जन न सदा हीं । तहां तिमिर ते देखत नाहीं ॥ रहत प्रकाशित सूरज जैसे । दीपद रहत प्रकाशित तैसे ॥ होत जौन यश कपिला दीन्हें । सुनऊँ तौन अब मन थिर कीन्हें ॥ पुष्कर तीर्थ माहि अति पावन । देत जौन कपिला एक पावन ॥ गो शत सवृष दीएतें जो फल । प्राप्त होत ताकौंहै सो

आ॰प॰ फल ॥ द्विजहत्या सम पातक जेहैं । एक कपिला दीन्हें नशते हैं ॥ तातें तीरथ पुष्कर माहीं ।
दा॰ध॰ बिधि सह शुक्लपक्षके माहीं ॥ अतिविद द्विजकों कपिला दीजे । तास भूरि अति आदर कीजै ॥ छत्र देत है जो जन नीको । शुभ सखौंनो शशिकी टीको ॥ सो परलोक जात मगमाहीं । पावत आनद दायक छाहीं ॥ देत उपानह द्विजकों जोहै । कंटकको दुख लहत न सो है ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

कबहुँ दीन्हें दानको नाश होत इह नाहिं । कह्यो धर्म यह धर्मबर सह सुर पितर न पाहिं ॥
चित्र गुप्तको धर्म यह यमसों सुनि कै पर्म । सुर सह पितरनकों कहत सूरय भए सशर्म ॥

॥ * ॥ उक्काछन्द ॥ * ॥

जे जन श्रद्धा वान । व्है करिकै ए दान ॥ द्विजकों देत सप्रीति । ते जन लहत न भीति ॥

॥ भीष्मउवाच ॥ दोहा ॥

तदनन्तर देवत पितर औ तिमिहीं ऋषि सर्ब । पूछत भूतनकों भए यह बर प्रश्न अखर्ब ॥
जौंन अपावन रहत है मानव शुचिता टारि । कैसैं तिनकों हनत हो कहौ हमैं निरधारि ॥
किहिं उपायसों हनि सकत मनुजनकों तुम नाहि । पूछे है हम जौंन तुम कहौ हमारे पाहि ॥

॥ * ॥ भूताऊचुः ॥ * ॥

होत अपावन मनुज है मैथुन करि अरु बान्त । करत स्नान नहि जे तिन्हैं डर हम देत नितान्त ॥
जो जन तरुतर मूलमें सोवत शिरहि लगाय । औ पायत करिकैं शिर हि करि शिरहांने पाय ॥
औ जे जन अज्ञानतें सदाहि आमिष खात । औ शिरपे धरि कै कछू आमिष जो लेजात ॥
जलमे औ जे करत है मल मूत्र हि अज्ञान । परम अपावन मनुज हैं एते दुर्मतिवान ॥
ए सब हनिबे योग्य हैं यामे संशय नाहि । यातें इनकों हनत नहि दया करत हियमाहि ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

अब तुम सुनऊ उपाय जातें हम बधि सकत नहि । है अति आंनददाय मनुजनकों निश्चय करत ॥

॥ * ॥ चरणादोहा ॥ * ॥

गोरोचन शिरमाहि लगावत बच राखे करमाहि । तास निकट हम आय कै ताहि बधि सकैं नाहि ॥
घृतयुत अक्षत अरु लगावत भालमाहि जन जौंन । अरु जो आमिष खात कबहुँ नहि मानव बरमतिभौन

॥ * ॥ अरिलछन्द ॥ * ॥

मारि सकत नहि तिनहूँकों हम । यह निश्चय मनमे मानऊ तुम ॥ अग्नि रहति निशि दिन जिनके घर । अरु सु व्याघ्रके दांत चर्म बर ॥ अरु भूधरके जलकों कूरम । होय जास ग्रहमाहि अनूपम ॥ तिनके ग्रहमाहीं हम जातन । कोहूँ पावत तिनके तात न ॥ ॥ सोरठा ॥ ॥

पीतवर्ण वा श्याम होय छाग जाके सदन । औ मांजार ललाम होय तऊ हम जात नहि ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

तातें राखे गृहस्थी धाम माहि ए सर्व। इनतें बाधा सकतहु देय न भूत खखर्व॥

॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥ सोरठा ॥ ॥

सुनऊ भूप बुधिबैंन तदनन्तर लोकेश बर। कहत भए इमि बैंन महत प्रश्न सुरराजको॥

॥ * ॥ हरिगीतिछन्द ॥ * ॥

अति भरे तेजस महत बर बलवान दिग्गज सर्वहैं। सह शैल कानन समुद भूको धरें भार अखर्वहैं॥ तुम कहो रेणुक गजहि सादर इहां ताहि बुलायके। तिन दिग्गजनकों धर्म पूछै रसा तलमे आयके॥ सुनि देव सह देवाधिपति गणि विधाताके बैंनकों। गजरेणुकहि बुलवाय करिके महत बलके अैंनकों॥ इमि कह्यो तासों जाय करिके रसातलके माहितूं। बर धर्म आवऊ पूछि करिकैं दिग्गजनके पाहि तूं॥ सुनि सुरसह सुररायके ए बैन रेणुक गज चलो। सो जाय पासै दिग्गजनके पूछतो विधिसों भली॥ * ॥ रेणुकउवाच ॥ * ॥ तुम कहो हमकों कृपा करिकै गुप्त जो बर धर्महै। हम तुम्हैं पूछत पाय आज्ञा सुराधिपकी पर्महै॥ *

॥ * ॥ दिग्गजाऊचुः ॥ धरणादोहा ॥ * ॥

कृष्ण पक्षकी अष्टमी कार्तिक बारी जांन। अश्लेषा तामे नखत होय अव सु बुधिभांन॥

॥ श्लोकः ॥ बलदेवप्रभृतयोये नागावलवत्तराः। अनंताद्यास्तथा नित्यंयोगिनः सुमहा बलाः। तेषां कुलान्वयायेच महाभूता भुजङ्गमाः॥ तें मे बलिं प्रयच्छन्तु ब्रह्मतेजोभिवृद्धये॥ यदा नारायणश्रीमानुज्जहार वसुन्धरां। तत्वसन्तस्य देवस्य धरा मुद्धरतस्तथा॥

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

करिकै यह मंत्र ललाम। गुड ओदनकी बलि अभिराम॥ नील बसनसों ढापि सुढारू। उर फूलनसो अतिही चारु॥ रविके अस्त समयमे पर्म। सर्व शोच तजि होय सपर्म॥ बर बलमीक माहिँ बलि तांम। दीजे सुनऊ मनीषाभांन॥ तिहिं बलिसों सब नाग सुजान। पावतहैं बरतुष्टि महान॥ बक्र भुजङ्गनके अभिराम। हमहूँ लहत तुष्टिहै ताम॥ सब धरणीको भार महानि। तातें परत नही है आनि॥ ब्राह्मण औ क्षत्री मतिमान। तिमिहि वैश्य अरु शूद्र सुजान॥ इमि बलिदान करैं एक बर्ष। पाय महत फल रहत सहर्ष॥ * ॥ सोरठा ॥ *

सुनि रेणुक यह धर्म धर्मज्ञसु दिग्गजनसों। ऋषि सुर पितर सपर्म तिन्हैं कहत भो आयकै॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

ऋषि सुर पितर सुधर्म सुनि लहि प्रसन्नता ताम। पूजत भे रेणुक गजहिँ सुनऊ भूप बुधिधाम॥

॥*॥ रामगीतीछन्द ॥ * ॥

शां०प० दा०ध० स्वामकार्तिकउवाच ॥ * ॥ कहत हैं एक धर्म हमहूँ सुनऊँ सो तुम सर्व । ताहि कीन्हे लहतहैं आनन्द मनुज अखर्व ॥ नीलषण्ड सुवृषभको लहि शृङ्गतें अभिराम । मृत्तिकाकों लाय तनमे तीन दिन बुधिधाम ॥ करत जोहै स्नान ताके पाप छूटत भूरि । श्रेष्ठताकों लहत दोऊ लोकमे मुद पूरि ॥ शूरता ताको न कबहूँ नष्ट होति महान । और ज एक सुनौ हमसों धर्म पर्म सुठान ॥ पाच गूलरिकाष्ठको बनवायकै अभिराम । समभु भरि पक्वान तामे प्रीतिसों अति माम ॥ पूर्णमासी सुतिथिमे जब उदयहोय निशेश । दीजिए बलि तीन नव अतिस्वच्छ मधुर अशेश ॥ अश्वनोसुत साध्य मारुत भानु औ मितभानु । रुद्र विश्वेदेव अरु बसु लेत सो बलिदान ॥ ॥

॥ * ॥ कान्ताछन्द ॥ * ॥

यह जो धर्म । है अति पर्म ॥ करिकै याहि । हियमे चाहि ॥ आनद उद्ध । होत सुबुद्ध ॥

॥ * ॥ रामगीतीछन्द ॥ *

विष्णुरुवाच ॥ * ॥ बर ऋषिनके अरु देवतनके कहे जेते धर्म हैं । निति पढत जे अरु सुनत जे जन लहत ते फल पर्म हैं ॥ नहि होत कबहू प्राप्त तिनकों विघ्न कौंनऊँ आयकै । अरु होत कबऊ न प्राप्त साध्वस रहत मुदसो छायकै ॥ सब पाप मानसि जात सुषमा होति है बर देह मे । दुख नष्ट व्है सब जात है सर सात बऊ सुख गेह मे ॥ सुर पितर तिनके दिए मुदसों हव्य कव्य सु लेत हैं । बर होत हैं बलवान औ मतिमान बुद्धि निकेत हैं ॥ सुर पितर औ ऋषि परम तिन पै प्रीति करत सु उद्ध हैं । श्रुति शास्त्रमे रत रहत औ रत धर्ममाहीं शुद्ध हैं ॥ * ॥ * * *

* ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

यह सु धर्म अवदात कह्यो मोहि मुनि व्यास बर । कह्यो तुम्हैं हम तात परम प्रश्न धरमज्ञतर ॥

॥ * ॥ अरिलछन्द ॥ * ॥

अधमे जे जन श्रद्धावानन । करत सुधर्म कथा दिशि कानन ॥ गुरुद्रोही अरु जो मतिमान न । यथा शक्ति जे करत सुदान न ॥ तिनकों कहिए धर्म महानन । ये सुखदायक दुखतर भान न ॥ इनकों किए कहूँ अपमान न । होत लसत रविलौं है आनन ॥ *

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशीवासिरघुनाथकवीश्वरात्मजगोकुलनाथस्यात्मजगोपीनाथस्य शिष्येण मणिदेवेन कविना विरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणि दानधर्मे एकादशाधिकशततमोऽध्यायः ॥ *

॥ * ॥ युधिष्ठिर उवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

विप्रकदेहिकिहिकोंभोजनअर्हकिहिंकोंचबियतातवैश्यदेहिकिहिकोंकिहिकोंशूद्रकहोविख्यात

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥ ग्रा०प० दा०ध०

भीष्मउवाच ॥ * ॥ ब्राह्मण क्षत्री वैश्य सधर्म । देहिं परस्पर भोजन पर्म ॥ दीज भोजन शूद्रहि नाहि ॥ औ लीजै न सुन्यो बुध पाहि ॥ अन्न शूद्रको जो जन खात । खात तौन विष्ठा मनु तात॥ देखि शूद्रके उत्तम कर्म । ब्राह्मण क्षत्री वैश्य विधर्म ॥ ताके करत सु भोजन जौन ।पचत नरकके माहों तौन ॥ जौन कर्म अपनेकों त्यागि । करै सु शूद्र कर्ममे लागि ॥ तौन सर्व हैं शूद्र समान । संशय नहि यामे मतिमान ॥ * ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ ** ** ** **

विप्र पुरोहित जौन अरु करत चिकित्सा जौन । कोतवाल हैं जौन अरु सुनऊँ तात बुधिभौन ॥

योतिषहीकों पढत जे और शास्त्र नहि कोय । अनध्यायमे पढत जे विप्र धर्मको गोय॥

ते सब शूद्र समान हैं यामे संशय नाहिं। निश्चय करिकै कहत हम सुन्यो सुबुधजन पाहिं॥

॥ * ॥ उकछाछन्द ॥ * ॥

जे द्विज शूद्र समान । सुनऊ तात मतिमान ॥ तिनके गृहके माहिं । भोजन कीजै नाहिं ॥ जो जन करत अजान । सो दुख लहत महान ॥ तिर्यग योनिहि पाय । निशि दिन रहत अघाय॥ अन्न वैद्यको जौन । है पुरीषवत तौन ॥ बिरचत जौन अगार । तिनको अन्न उदार ॥ होत रुधिर सम भूप । भणत सुप्रज्ञ अनूप ॥ * * * * ॥ * ॥ चरणादोहा ॥ * ॥ * * ** **

विद्यासों जे करत जीविका अन्न तिनऊको जौन । शूद्र अन्नहीके समान है यातें वर्जित तौन ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

जो जन चुगली करत है तिनको अन्न सुजान । लीन्हें द्विजहत्या लगति वर बुध भणत महान ॥

भमरीको रचा करत जो द्विज सुनु मतिमान । अन्न लिए ताको खपच होत महत अघमान ॥

गो द्विजकों जो हनत है मदिरा पीवत जौन । औ गुरुनारीमे रमै जो जन दुर्मतिभौन ॥

भोजन तिनके अन्नको कीन्हें ते महिपाल ।महत दच्छ ते कहत सो रत्तस होत विशाल॥

॥ * ॥ अरिलछन्द ॥ * ॥

धरोहरिहि जन जौन छपावत । ताको अयश जगत सब गावत । लेत अन्न ताको है जो जन । भिन्न योनिको पावत सो जन ॥ * * * ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ * * * *

कुलटा तियको अन्न जो सो है मूत्र समान । यातें कबऊन लीजिए भणत सुबुद्ध महान ॥

॥ * ॥ तोमरछन्द ॥ * ॥

द्विज मद्य धारत जौन । सम शूद्रके हैं तौन ॥ सुनु अन्न तिहितें तास । नहि लीजिए बुधिरास ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

होय अनादर यत्र तहां न भोजन कीजिए । बरबुध भणत पवित्र औ विन जाने मनुजके ॥

प्रश्न कियो तुम जौन ताको उत्तर हम दयो । सुनऊँ तात बुधिभौन अब आगे का पूछि हौ ॥

शा०प० दा०ध० स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञानुगामिना श्रीवन्दीजनकाशीवासि रघुनाथकवीश्वरात्मजगोकुलनाथस्यात्मजगोपीनाथस्य शिष्येण मणिदेवेन कविना विरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणि दानधर्मे द्वादशाधिकशततमोऽध्यायः ॥ *

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

दान लिए भोजन किए होत कलुष है जौन। सो किमि कूटत द्विजनको कहो तात बुधिभौन ॥

॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥

दान लिए भोजन किए होत कलुष है जौन। सो कूटत जिहि कर्मसों सुनऊँ कहत हम तौन ॥

* ॥ रामगीतीछन्द ॥ * ॥

अग्निको प्रज्वलित करिकै समिधसों अभिराम। करैं होमहि जपि सु गायत्री सुनो बुधि धाम॥ होत जो है कलुष द्विजको लिएँ घृत तिल दान। छूटि सो सब जातहै मतिमान कहत महान॥ दान लीन्हैं मांसको अरु लवण घृतको पर्म। होत जो है कलुष द्विजको सुनऊँ तात सधर्म॥ लेय जबसों दान तबसों रवि उदयलों तात। रहैं ठाढ़ो होत पावन पाप सो नसि जात॥ दान कञ्चनको लिएतें लहत जो अघ विप्र। दान सो विख्यात कीन्हैं जगत मांहीं छिप्र ॥ औ सु गायत्री जपेसों छूटि सो अघ जाय। होत पावन विप्रहै सुनु धर्मधर नरराय। तिमिहिं नारी दान लीन्हैं बसन दान अनूप। औ लिएँ धन और पातक होत जो है भूप॥ जपैं गायत्री सु कीन्हैं दानको विख्यात। नष्ट सो ह्वै जात पातक भणत बुध अवदात॥ लिएँ पायसदान औ बर अन्न दान सुजान। तैल दानहि लिएते अरु लिएँ इक्षुक दान॥ होत जो है पापसों त्रयकाल कीन्हें स्नान। छूटिसो सब जातहै सुनु भूपबर मतिमान॥ * * ॥ दोहा ॥ *

जावक जल फल दुग्ध दधि अरु सुफूल अभिराम। लीन्हैं इनको दान अघ होत विप्रको माम॥
सो अघ गायत्री जपे छूटि जातहै सर्व। यामे संशय है नहीं बुधबर कहत अखर्व॥
लिए क्रियामे मृतककी बस्त्र उपानह दान। होत प्राप्तहै विप्रको पातक जौन महान॥
करे तपस्या शत बरष बनमे जाय एकान्त। छूटत पातक तौनहै सुनिए बर छितिकान्त॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

लिए लेवमे दान होत दोष जो द्विजनको। सो कूटत मतिमान कीन्हें ते उपवास त्रय॥
बन्दी खानें माह सूतक प्रापति होत जो। सुनिए बर नरनाह छूटत है त्रय व्रत किए॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

कृष्णपक्षमे श्राद्धमे करत सुभोजन जौन। अष्ट प्रहरको व्रत किए छूटत अघ सो तौन॥
भोजन कीजे श्राद्धमे जिहि दिनमे नरनाह। संध्या पूजा जप नही कीजे तिहि दिन माह॥

॥ * ॥ परब्बादोहा ॥ * ॥ शां०प०

दूतियपवेर भोजन कीजै नहि कहत सुबुध अवदात। यहीहेतु अपराह्नमाहि है श्राद्ध करणको तात॥ दा०ध०

॥ * ॥ हरिगीतीछन्द ॥ * ॥

बेदमाहीं मृतकके दिन तीसरेमें जौन। करत भोजन विप्र है सो सुनहु वर बुधिभौन॥ करै द्वादशदिवसलौं नित न्हान तीनहुँकाल। होत है तब शुद्ध भूपति कहत विप्र विशाल॥ जैं हि अब गतदिवस द्वादश तब सु करि बहु न्हान। सहित आदर द्विजनको बुलवाय के मतिमान॥ दिए भोजन तिन्हैं छूटत सर्व अघसौं भूरि। सहत लहि सनमान भूमें रहत सुखसौं पूरि॥ मृतकके दशदिवसलौं द्विज करै भोजन जौन। पूर्व जो विधि कही अघसौं मुचत कीन्हे तौन॥ शूद्रसँग एकपंक्तिमें द्विज करै भोजन जौन। सहत ताको होत पातक प्राप्त सुनु बुधिभौन॥ तास पातक छूटिबेको है उपाय न भूप। करै पै स्नानादिविधिकौं कहत प्रज्ञ अनूप॥ वैश्यके सँग करै भोजन होत जो अघ तात। किएतैं उपवास त्रयदिन छूटि सो अघ जात॥ क्षत्रियनके सँग किए भोजन पंक्तिमाहीं एक। होत जो अघ प्राप्त द्विजकौं सुनहु नृप सविवेक॥ छूटि सो अघ जात है सब किए न्हान सचैल। कहत मतिवर सुनहु नरवर है न संशय फैल॥ * * *

॥ * ॥ आभीरछन्द ॥ * ॥

पूछ्यौ हमको जौन। कह्यो तुम्हें हम तौन॥ सुनहु भूप बुधिधाम। धर्मकार अभिराम॥

इतिश्रीआमेरीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणसिंहाज्ञानुगामिना श्रीबन्दीजनकाशीवासि रघुनाथकवीश्वरात्मजगोकुलनाथपुत्रगोपीनाथस्य शिष्येण मणिदेवेन कविना विरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणि दानधर्मे त्रयोदशाधिकशततमोऽध्यायः॥ * * * * *

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ दोहा ॥ * ॥

तपहू कीन्हे औ दिए दानहु उत्तम तात। स्वर्गलोकको जात जन ह्वै अशोक अवदात॥ तिन दोउनमें अति हि जो श्रेष्ठ होय भूपाल। कहौ तौन मोको सु गुनि करि के कृपा विशाल॥

॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ सोरठा ॥ * ॥

तप औ उत्तम दान है तौ दोऊसमहि पै। वर महान मतिमान करत प्रशंसा दानकी॥ जे जे उत्तम दान करि गए स्वर्गमे धर्म। ते ते तुमको कहत हौं भूपति सुनहु सधर्म॥

॥ * ॥ मल्लिकाछन्द ॥ * ॥

ऋषिपुत्र ब्रह्मज्ञान। देय शिष्यको सुजान॥ स्वर्गलोकको गएसु। भूरि मोदसों रएसु॥

॥ * ॥ तुंगाछन्द ॥

शिवि वर नरराजा। परम धरम काजा॥ सुनि सुवचननीके। शुचि द्विज सुमतीके॥

शा०प० सुतप्रिय हनिडारयो । हिय न कछु विचारयो ॥ लहि सु सरग ताते । लसत द्युति महातें ॥
दा०ध० ॥ * ॥ अमलकमलछन्द ॥ * ॥

नृपति प्रतरदन जो । वसुधि धरम वर सो ॥ द्विज हि नयन निज दै। अतुल कीरति सुचि लै ॥ छुटि अति प्रपदुखसों। महत परम सुखसों ॥ बसत अमर पुरमे। लसत अतिहिं सुरमे ॥ *

॥ * ॥ भद्रकछन्द ॥ * ॥

अम्बरीष सुद छायके। विप्र विप्र बुलवाय के ॥ राज्य दै तिन्हहिं प्रेमसों। होय युक्त अति छेमसों ॥ आपु जाय करि स्वर्गमे । बास कीन्ह सुरवर्गमे ॥ ॥ भुजङ्गप्रयातछन्द ॥

दृषादर्भि दै विप्रको रत्न नीके । भरे द्रव्यसों धाम दै नाम लीके ॥ गये मोदसों पाकि के स्वर्ग माहीं। लसे दूसरो इन्द्रसों इन्द्रपाहीं ॥ * ॥ * ॥ मालतीछन्द ॥ * ॥ * *

[illegible] अमलीकों बोलि । परम प्रेमकों खोलि ॥ सुघरि आपनी ताहि।सुबलि देत भो चाहि ॥ निमि सु भूप धीधाम । स्वरग जायके माम ॥ लहन भो सु आनन्द । सुनऊ पण्डुके नन्द ॥ * *

॥ * ॥ नन्दनी छन्द ॥ * ॥

यामदग्नि सु रामजू । जीति भू यह नाम जू॥ देय के द्विज वृन्दकों। धारि मोद बिलन्दकों॥ जाय उत्तमलोककों। प्राप्त भो तजि शोककों ॥ जास कीर्ति महांन है। लोकमाहिं कहां न है ॥

॥ * ॥ समानिकाछन्द। * ॥

ब्रह्मदत्त भूप जो। दान दै महान सो॥ प्राप्त पर्म धामकों। होत भो ललामकों ॥ चामरछन्द ॥ कल्मषेन भूमिपाल छत्रदान देय कै । स्वर्गमांहि प्राप्त भो महांन मोद लेय कै ॥ जास कीर्ति भूमिमे रही अमन्द छाय है । देत है अनन्द भूरि ताहि देवराय है ॥ * ॥ पञ्चिलीछन्द ॥ * ॥

सहस्र चित्त भूमि पाल जो । सुजानि धर्म पर्म प्रज्ञ सो ॥ सु विप्र काज छोडि प्रानकों। अमन्द कीर्ति लै महांनकों ॥ सु देवलोकमाहि जाय कै । बसो महांन मोद पाय कै ॥ * * *

॥ * ॥ तोटकछन्द ॥ * ॥

वर पौत्र महीप करन्धमको । बिलसै यश जास शशी समको ॥ तनया अपनी सुदसों भरिके ॥ ऋषि अङ्गिरसै नृप दै करिके ॥ तजि शोक महा सुरलोक लियो । तिहिको सुवखान न जात कियो ॥ परमा छबिकै तिहिको सु महा । सुरके गण चकित होय रहा ॥ * ॥ कान्ताछन्द ॥ * ॥

इते भूप । परम अनूप ॥ अरु भूपाल । और बिशाल ॥ दैके दान ॥ सविधि महान ॥ तिजि [illegible] लोक । अनदशोक ॥ पायो पर्म । सुनऊ सधर्म ॥ * *

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणसिंहाज्ञानुगामिना श्रीमन्दीजनकाशीवासि रघुनाथकवीश्वरात्मजगोकुलनाथस्यात्मजगोपीनाथस्य मिश्रेण मणिदेवेन कविना विरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणि दानधर्मे चतुर्दशाधिकशततमोऽध्यायः ॥ * * *

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ शां०प०

युक्त धर्म अरु अर्थसों अरु सुखकारक धर्म । होय महत आश्चर्य्य मुनि जाको तात सधर्म ॥ दा०५०

ऐसो वर वृत्तान्त अति सुनिवेको महिपाल । भई हमारे हृदयमें इच्छा परम विशाल ॥

नारायण आनन्दकर दुन्दहूरिकर सर्व । बैठे हैं तव पास अरु भूपति और अखर्व ॥

कहिए तिनके सातुहै पूछत हौ मैं आन । वक्ता आपु महान हौ सुनऊँ तात बुधिमान ॥

भूप युधिष्ठिरके वचन सुनि ए भीषम दच्छ । व्है प्रसन्न तिनकों कहत ऐसे भए प्रतच्छ ॥

॥ ❦❦ ॥ भीष्मउवाच ॥ ❦❦ ॥

नारायणको पूर्व वर जो हम सुन्यो प्रभाव । सो मैं तुमकों कहत हौं सुनु सुप्रज्ञ नरराव ॥

गिरिजाको अरु मोदकर पशुपतिको सम्वाद । यहि प्रसङ्गमें कहत हौं सो सुनु छोड़ि प्रमाद ॥

तपवर बारहवर्षको करत भए हरि भूप । पर्वत नारद लखनकों आए तिन्हे अनूप ॥

रवल काश्यप धौम्य अरु व्यास परम बुधिराश । और सुऋषि शिष्यन सहित आवत भे सङ्काश ॥

आसन हरित बिछाय कै कुशके चारु नवीन । बैठाए सब ऋषिणकों हरि सादर सुप्रवीन ॥

दरशन करि कै कृष्णको नारदादि ऋषि सर्व । सुनहू प्रश्न धरमज्ञ नृप आनद भरे अखर्व ॥

कछूवेरमें सुरनको अरु भूपनको धर्म । कथा करत भे सर्व ऋषि हरिके सङ्ग सशर्म ॥

तदनन्तर नृप कृष्णके मुखतें परम विशाल । अतिहि महान प्रचण्ड अति कढ़ो सुअग्नि कराल ॥

॥ * ॥ हरिगितोछन्द ॥ * ॥

तरुलता जीवन सहित शैलहि अग्निसो जारत भयो । सब करत हाहाकार भो गण जीवको दुखसों रयो ॥ तिहिके अनन्तर जारि शैलहि कृष्णपाहीं आय कै । पद परशि सोहै भयो ठाढ़ो होत शिष्य सुभायकै ॥ सुनु भूप हरि तिहिके अनन्तर दग्ध शैलहि देखि कै । करि दयो जैसो रह्यो पूरब परमआसों भेखिकै । सब मुनिन विस्मय कियो अद्भुत यह सुचरित निहारि कै ॥ हरि देखि विस्मित तिन्हें ऐसें कहत भे निर्धारि कै । तुम शास्त्रविद व्है परम मनमें महत विस्मित क्यों गहे । यह भयो है सन्देह मम हिय सर्व तुम हमको कहौ ॥ सुनि कृष्णजूके बैन ए ऋषिवृन्द आनदसों पग । यहि भांति सोहै कृष्णके सुनु भूप ते कहिबे लगे ॥ ❦ ॥ ऋषयऊचुः ॥ ❦ ॥ तुम सृजत सब ही लोककों अरु करत तुम हीं नाश हौ । जल तुमहि करषत तुमहि वरषत तुम हि करत प्रकाश हौ ॥ हे चराचर भुवमांहि तिनकें मात औ पित पर्म हौ । करि कृपा जगपर महत प्रभु वर तुमहि करत सशर्म हौ ॥ तव वदनतें जो अग्नि निकस्यो तासहेतु कृपालजू । हमकों कहौ संदेह तातें मिटै परम विशालजू ॥ ए वचन सुनि सब ऋषिणके हरि सदन वर आनन्दके । इमि भए कहने वचन तिनकों हरण जन दुखवृन्दके ॥ वासुदेवउवाच ॥ यह है हमारे तेज परम प्रचण्ड जो मुखतें कढ़ो । तिहिसों लता द्रुम दण्डजीवन सहित यह गिरि हौ दढ़ो ॥

आ०प० ऋषि ऊते गिरिके माहि ते ते भए पीडित सर्व हे। अरु तुमऊं सब ऋषिवर तपसी भए व्यथित
दा०ध० अखर्वहे॥ हम आपने मन सुमन लहिवेकी सुइच्छा करि महा। इहि थाय भूधरमांहि हम तपके सुमारमकों गहा॥ तिहिके अनन्तर आतमा मम अग्नि रूप हि धारि कै।गो वरद शिवके पास हैं अहँ महत मोद पसारि कै ॥ लखि शम्भु मेरे तेजकों यहि भांतिसों कहतो भयो। मम परम आध तेजसों तव पुत्र व्है है सुदरयो॥ वरदान लै कै शम्भुसों यह तेज मम सो आय कै। गहि शिष्यलौं मम चरण गो मम देहमाहि समाय कै॥ मम बदनतें जो कढो पावक तासु कारण जान है। तुम वरऊ मति हियमाहि नेकऊ कह्यो तुमकों तौंन है। तुम तपसी हो परम अरु वर ज्ञान धारण किए तैं। गति तुम्हारी सरवत्र है अतिधरें आनद हिए हो॥ ॥ सोरठा ॥

भूले वा दिवलाहि सुन्यो होय आसुर्य्य जो। कहऊ तौंन मम पाहि बुद्धिमान तुम सर्व हो॥
बासुदेवके बैंन सुनि कै ए वर सर्व ऋषि। सुनऊ तात बुधिबैंन होत भए हरषित परम॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

पूजाकरिकै कृष्णकों पढि कै स्तव अनूप। अति प्रसन्न करते भए सुनऊ युधिष्ठिर भूप॥
तदनन्तर ऋषि सर्व परम प्रज्ञ धरमज्ञ वर। कोविद जानि अखर्व नारदकों इमि कहत भे॥

॥ * ॥ ऋषयऊचुः ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

अचिरज जैसो होत भो कृष्णमाहिं अभिराम। तैसोई भो हो परम गिरि हिमवतमे नाम॥
कहो तौंन आसुर्य्य तुम हो तुम विज्ञ महांन। सुनि कै नारद ए वचन कहत भए मतिमान॥

॥ * ॥ नारदउवाच ॥ * ॥ रामगीताछन्द ॥ * ॥

परम उन्नत भूमिधर हिमवान वर रमणीय। जास परमा देखि किहिको मुदित होत न हीय॥ फूल फलसों युक्त औ युत औषधिनसों चारु। करति तामे अपसरा गन्धर्ववृन्द विहारु॥ यक्ष किन्नर रक्ष तामे करत केते वास। ऋक्षमुख अरु वाजिमुख हैं किते करत विलास॥ व्याघ्रमुख हे किते केते सिंहमुख तिहिमाहि। किते जम्बुकवदन ताकों कोऊ कछु नहि जाहि॥ शङ्ख भेरि मृदङ्गकी धुनि रहो जामे पूरि। करत जामे विहग हैं रव भरे आनद भूरि॥फूल फलसों युक्त जामे लसत द्रुम महान। भ्रमर गुञ्जत फिरत जामे भए अति मुदवान॥ देवतागण सकल जामे लसत भासों उद्ध। किते विषधर यक्ष केते किते मुनिगण शुद्ध॥ लोकपाल ऊ फिरत विहरत भरे भूरि अनन्द।मरुत औ वसु रहत अरु बऊ पिशाचनके वृन्द॥चारु ऐसो अचल है हिमवान तामे पर्स। तपस्या वर भए करते गौरिनाथ समर्स॥ व्याघ्रचर्महि किए धारण औ धरें बऊव्याल। असुर गणकों घातकर्त्ता भीमरूप विशाल॥ देखि तिनकों महत ऋषिवर करत भे परनाम। मन व्है कै स्तव पढि कै भरे आनंदधाम॥ तत अनन्तर शैल कन्या परम धन्या चारु। सं गुसम व्रतधारिणी संग लिए बऊ सुरदारु॥ औ लिए बऊ सङ्क माही भरी पातक हर्स। भरी निर्मल नीरसोंवर

परम पावन कर्षि॥सर्व तीर्थनके सु जलसों भरो अति अभिराम। कलस लीन्हें हेमको करमाहि शां०प०
भाभय नाम ॥ हिए हरषति सुमन बरषति शम्भुजूके पाहि । भईं आवति प्रेम धारण किए दा०ध०
हियके माहि ॥ तत अनन्तर हास्यकीजे शम्भुजूके नैन। भईं मूदति सोप्र गिरिजा महत आनद
ऐन॥ भए मुद्रित नैन तीजो भैं परम विशाल।भाल माही होत भो रविके समान कराल॥
प्रलय कीसी अग्नि जासें कढी ज्वाला भूरि। सो जरावति भई गिरि हिमवन्तहि चऊदिशि पूरि॥
दीप्त पावक सदृश तिनकों नैन ऐसे सर्व । देखि तिनकों धारि करिकै नमताहि अखर्व ॥ जोरि
कर भईं खरीसोहे भई धारति प्रणाम । जरत लखि हिमवानगिरिकों भयो दुख अति नाम ॥ जेते
जेते जीव गिरि हिमवान माही तौन। भए आवत शंभु जूके पास तुर करि गौन॥ ता अनन्तर तौन
द्वादश भानुकी सम ज्वाल। भई परसति व्योमकों अति भई चण्ड विशाल ॥ क्षणहि माही दग्ध
कीन्हो सर्व गिरि हिमवान। लता वृक्षन सहित पक्षिणके समूह महान ॥ ताहि गिरिजा देखिके
पुनि जोरि दोऊपानि। भई सोहे खरी करिकै सजल नैन सुजानि॥ देखि विकला उमाको अति
शूलपाणि दयाल। लखत भे हिमवानको करि कृपा परम विशाल॥ भयो तातें पूर्ववत हिमवान
गिरि अभिराम।फूलफल युत विपिन सह सह विहग वृन्द ललाम॥ पूर्ववत लखि गिरहि गिरिजा
अति प्रसन्नसु होय। भई कहती बैन ऐसे शंभु सोहैं जोय॥ * ॥ उमाउवाच ॥ * ॥ सुनऊ शङ्कर
भयोहै एक मो हिए सन्देह। दूरि कीजे तौन तुम कहि भूरि सहित सनेह॥ भयो तव सु ललाटमें
किहि अर्थ तीजो नैन। औ कियो किहिँ अर्थ गिरि करि दग्ध परम अचैन॥कियो पुनि किहिँ अर्थ
गिरिको पूर्ववत अभिराम।लता वृक्षण सहित पक्षिण स्वच्छ परमाधाम॥ * ॥ महेश्वरउवाच॥
बाल्यतेंते लाए लोचन मोरि मूँदि हमार। भयो ताते लोक माही तिमिर परम अपार॥ सुनऊ
गिरिजे भई तातें प्रजा विकला सर्व । नाशिवेको तिमिर तब हम तृतिय नैन अखर्व ॥ करत भे
उत्पन्न तेजस भरो अतिही भूरि। महत तास प्रकास भूमें भयो चऊधा पूरि॥ तब पिता हिमवान
तिहिकी तेजसों अतिचण्ड। दग्धहोतो भयो क्षणमें सहित वन तरु दण्ड॥ पूर्ववत पुनि कियो गिरि
हम तब सुखीके काज। ललितताकों देखिके हम भरे प्रीति दराज ॥ उमाउवाच॥ * चतुर्मुख
तुम भए कैसे कहौहे ईशान ।" अरु सु पारिऊ वदनते तव तीन वर जा वान ॥ वदन दक्षिण
ओरको सो ओरहै विभिवर्क। औ कहो किमि कण्ठमें तव प्रभा नील अखर्व॥ धरैँ रहत पिनाक
करमें नित्यहो किहि काम। औ कहो किहि अर्थहो तुम जटाधारे नाम ॥ ब्रह्मचारी रहतहौ
तुम सदाही किहि अर्थ। कहो मोको कृपाकरिके सुनऊ शंभु समर्थ ॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥
बैन सुनि गिरि सुताके ईशान ध्वज मनहराम। होतभे परवाम अतिही सुनऊ कुन्तीतात।ता अनन्तर
भए कहते गौरिसों रति बैन। रूपसागर उजागर वर शम्भु आनद ऐन ॥ भए हैं जिहि हेतु

आ०प० सों हम चतुर्मुख हैबाम । औ भयो जिमि ओर मेरो बदन दक्षिण नाम ॥ हेतु तो सों सर्व सो
दा०ध० हम कहैं ये हे बाल । सुनें सों तो प्रश्न सो हिय भयो हर्ष विशाल ॥ * * * * *

॥ महेश्वरउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

सब रत्ननको सार लै तिलभरि अभिराम । विरचीही लोकेश एक परम सुन्दरी बाम ॥
ताको नाम तिलोत्तमा धरत भए सुनु बार । भरी महत बर गुणन सों सब अङ्ग तास सुढार ॥
सोतो मनहिँ लुभावती करिकै भाव प्रकाश । सो तब करि मुसकावती भई आवती पास ॥
जिहिं जिहिं ओर फिरी सु वह मम समीप बरबाम । तिहिँ तिहिँ ओर भए बदन मेरे परम ललाम ॥
यह कारण तें मै भयो चतुर्बदन हे बाम । यामे संशय है नहीं गिरि नन्दनि अभिराम ॥
पालत हो सुरपति सदहि पूर्व बदन सों धर्म । उत्तर मुखसों रमत हौं तो सङ्ग माहिँ सुधर्म ॥
पश्चिम मुख सों देत हौं जीवनकों आनन्द । दक्षिण मुख सों हनत हौं प्रजा द्रोयकी दन्द ॥
यह कारण तें बदन चय मेरे हैं श्रीमान । औ गिरि नन्दनि घोर है दक्षिण बदन महांन ॥
लोकनके हित अर्थ मै धरें जटा हों नाम । सदा ब्रह्मचारी रहत कहत सत्य हे बाम ॥
देवनकी रक्षा अरथ मै हो धरें पिनाक । होत वृन्द दानवनके जाकों देखि अवाक ॥
पूर्व वज्र मास्यो रह्यो मो ऊपर सुरपाल । ताते मेरे कण्ठमे भई नीलता बाल ॥

॥ * ॥ उमाउवाच ॥ * ॥

वाहन तजिकै और सब प्रभामान बलवांन । क्यों वाहन अपनो कियो वृषभ कहहु मतिमान ॥

॥ * ॥ महेश्वरउवाच ॥ * ॥

करत भए उत्पन्न बर सुरभीकों लोकेश । तिहि सुरभी ते और बहु सुरभी भई सु वेश ।

॥ * बरणा दोहा ॥ * ॥

तिनके बछनको उच्छिष्ट सुफेण आयके बाम । परो हमारे ऊपर तातें दाह करिकै हम नाम ॥
दुग्ध करी सुरभीनकों तब सु प्रजापति आय । दूरि क्रोधमे मेरो कियो देकै वृषभ सुभाय ॥

॥ * ॥ बरवैछन्द ॥ * ॥

वृषभ भयो तब सों वाहन चार । कह्यो जौन हम जो तैं पूछो दार ॥ * *

॥ उमाउवाच ॥ * ॥ तोमरछन्द ॥ * ॥

दिव माहिँ अति अभिराम । शुभ मामके तव धाम ॥ तजि तौन हे तुम सर्व । समशान
माहिँ अखर्व ॥ फिरिहैं अर्थ करत सुबास । कहि ए सु आनद रास ॥ समशान होत मलीन ।
तिहिँ माहि नित्य नवीन ॥ बहु अर्त हैं मन आय । दुरगंधता बहु छाय ॥ सुनि गौरिके शिव बैन ।
कह ते भए सुदबैंन ॥ * ॥ * ॥ महेश्वरउवाच ॥ [illegible]छन्द ॥ * ॥ *
देखत पावन थान । भूके माहि महांन ॥ फिरत भयो सरवत्र । पै समशान पवित्र ॥ समस्थान

नहि कोय। कहूँ लखि परो जोय॥ समशानेके माहिँ। रहत सुभूत सदाहिँ॥ बिन भूतन इम पर्म। कोऊँ न रहत सधर्म॥ याते हम हे दारा बर सम शान सुढार॥ ताबे कीन्हो बास। हेके सहित ऊलास॥ आ०प० दा०ध०

॥ उमाउवाच ॥ * ॥ चरणाकुलकछन्द ॥ * ॥

शङ्कर जो मे संशय कीन्हों। ताकों आपु दूरि करि दीन्हों॥ चारिऊ बर्णनके अब धर्मैं। मोकों कहो कृपा करि पर्मैं॥ सुनिके यह सु उमाकी बानी। बोले शङ्कर आनद दानी॥ श्रीभगवान उवाच ॥ * ॥ ब्राह्मण हैं सु देव धरणीके। बेद शास्त्र बिद शुचि बर धीके॥ बिधिसों उपवासनको कीबो। अरु सुर पूजामे मन दीबो॥ यह सु बिप्रको नित्य धर्म है। याहि किएँ फल मिलत पर्म है॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

धर्म क्रिया उपनयन अरु ब्रत आचरण ललाम। इन सर्वनसों होत द्विज सुनु हे सुन्दरीबाम॥
ज्ञान धर्म सो युक्त द्विज तीन ब्रह्म पद लेत। रहित धर्म सो जौन द्विज सो दुख लहत अचेत॥

॥ * ॥ रामगीतीछन्द ॥ * ॥

पढे बेदहि अरु अबेदहि नम्रता गहि भूरि। करे तीनऊँ काल संध्या होय थिर मुद पूरि॥ देय जो गुरुदेव आज्ञा करे तौन सप्रेम। मागि ल्यावे नित्य भिक्षा करे होम सनेम॥ ता अनन्तर पठन करि गुरुकी सु आज्ञा पाय। ब्रह्मचारज ब्रतहि तजिके सहित बिधि सुखदाय॥ ग्रहण नारीको करे गुणसों सुढारी लेखि। सत्य बोले नित्य आदर करे अतिथिहि देखि॥ लेय अन्न न शूद्रको अरु रमे नहिँ परदार। अग्नि होत्रहि करै बिधिवत बिप्र बुधि आगार॥ कबहुँ हिंसाको करै नहि दया धरि हिय माहि। भृत्य जनकों देय भोजन करै क्रोधहि नाहि॥ देवताकी करि सु पूजा देय पुनि बलि पर्म। कह्यो हम द्विजगृहीको यह अल्प तोकों धर्म॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥
क्षत्रियको जो धर्मबर सुखदायक अभिराम। तौन धर्म अब कहत हौं मन लगाय सुनु बाम॥

॥ * ॥ भुजङ्गप्रयातछन्द ॥ * ॥

प्रजाकों सुपाले गहे नीति नीकी। नहीं हो न देई तिको भोन जोकी॥ सदाहीं प्रजासों कढो अंश लेके। सु राखे सप्रेमे महा मोद देके॥ महीपाल धर्मातमा जो बिशाले। गहें नीति आछो प्रजाकों सु पाले॥ भली होति है कीर्ति जाकी महीमे। नही तो हिया झूठबानी कहीमे॥ पढे बेद औ देय दाने महाने। करै अग्निहोत्रे यथै नित्य माने॥ महीपाल सो धर्मसों युक्त व्है कै। रहे भूमिमाहीं महामोद ल्वैके॥ क्रियाको गहेहीं रहे धर्मधारी। करै यज्ञकों रीतिसों हे सुढारी॥ सदा भृत्यके वृन्द राखे सधर्मै। तजे झूठ बोले सदा सत्य पर्मै॥ महीमांहि कोऊ करै दोष जैसो। करै राजकी नीतिसों दण्ड तैसो॥ सुरक्षा करै दीनकी धारि दाया। गहे धर्म आपै करै नित्य छाया॥ गंऊ बिप्र काजे करै युद्ध माहीं। करै जीवमे नेकहू क्षोभ नाहीं॥ * ॥ उकछाछन्द ॥

मा०प० दा०ध० यह चत्रिणको चारु । धर्म पर्म है दारु ॥ करत सु याकों जौन । लहत मोद बहु तौन ॥
अश्वमेध तें लोक । जौन सु मिलत अशोक ॥ तौन लोक अभिराम । किए मिलत यह भाम ॥ *

॥ ॥ दोहा ॥ ॥

द्विजको अरु क्षत्रीयको कह्यो धर्म इम चारु । अबतोकों में वैश्यको धर्म कहत हौं दारु ॥
पशुपाले खेती करै पढ़ै बेद दे दान । गहि सुमार्ग वाणिज्यकों करै वैश्य मतिमान ॥
इन्द्रियको निग्रह करै अतिथहि भोजन देय । विप्रनकों आए महत आदर करिकै सेय ॥
सविधि अग्निहोत्रहि करै तैलहि बेचै नाहिं । यह सुधर्म है वैश्यको कह्यो गौरि तव पाहिं ॥
सेवा तीनहुँ वर्णकी करै शूद्र है बाम । जीतै इन्द्रिनकों सदा बोलै सत्य ललाम ॥
अतिथिहुकी सेवा करै आए तें गहि प्रेम । अरु देवनको द्विजनकी पूजा करै सनेम ॥
यह सुधर्म है शूद्रको कीन्हे तें यह पर्म । शूद्र लहत है महत फल नित्यहि रहत सशर्म ॥
धर्म सुचारिहु वर्णको तोकों कह्यो बखानि । अब आगे का पूछिहै गिरि नंदनी सुजानि ॥

॥ ॥ उमाउवाच ॥ ॥

धर्म सुचारिहु वर्णको कह्यो मोहि अवदात । अब ऋषीनके धर्मकों कहौ आपु विख्यात ॥

॥ * ॥ महेश्वरउवाच ॥ * ॥

धर्म ऋषिनकों जौन है कहत तौन इम सर्व । जाहि किएसों महत ऋषि सिद्धिहि लहत अखर्व ॥
पय पीवन जब लगत हैं बछरा होय सशर्म । निकसत जिनके बदनते फेण दुहूँ दिशि पर्म ॥
तिनकों जे ऋषि पियत हैं फेणप तिनको नाम । स्वर्गमाहि ते प्राप्त ह्वै लहत मोदकों धाम ॥
ब्रह्मा पूरब तप कियो फेण पीयकै पर्म । तिहिते परम महत्वकों प्राप्ति भयो सधर्म ॥
मतिवर ऋषि फेणपनकों मिलत परम फल जौन । सुनु नंदनि हिमवानकी कह्यो तोहि इम तौन ॥
बालखिल्यगणको परम सुनु सुधर्म अब भारि । है अंगुष्ठके पर्व सम ते सब ताठि दुआरि ॥
करत भए पृथ्वीणकी वृत्ति सर्वते दच्छ । सूरज मण्डलमें रहत तिहिके फलसों स्वच्छ ॥
शुद्ध चित्तके ओर जे दया धर्मयुत पर्म । फिरत रहत भुवमाहि हैं तपकों करत सशर्म ॥
सो प्रलोकमें प्राप्त ह्वै मतिवर ते ऋषि सर्व । भच्छ सु आशु सुधांशुकी मोदित रहत अखर्व ॥
जे ऋषि भोज्य पदार्थकों राखत हैं नहि येग्र । औ प्रस्तरसों कूटि जे भोजन करत सुजेग्र ॥
औ पर्णाहारी करि रहत जे ऋषि महत सुजान । सुनु गिरिजे तिनकों मिलत लोक परम महान ॥
लोलप औ सुर असुर तिनके निकटै आय । धर्म भा कों नहि रहत हैं नाहिन ग्रहिन बसाय ॥

॥ * ॥ हरिगीतीछन्द ॥ * ॥

गिरि नंदनी सुनु औरउ वर ऋषिणको जो धर्म है । अति दुलहि नाशक शुद्ध प्रकाशक कहत तोकों तौन है ॥ वश माहि करि इन्द्रीणकों सब काम क्रोधहि जीतिकै । लखि ज्ञान लोचन सों

सुमार्गहि चलै तामहि नीतिकै ॥निति पितर औ देवतनकी विधि प्रीति सह पूजा करै ।अरु अग्नि शा०प०
होत्रहि करै अतिथिहि देय भोजन सादरै ॥ पुनि विहगलौं निति अन्न ल्यावै विपिनमाहीं दा०ध०
जाय कै । अरु करै अल्पहि शयन आसन भूमिमाहि बिछाय कै ॥ फल मूल कबहूँ खाय कबहूँ
शाक पर्ण शिवारकों । कबहू सु बायु हि करै भच्छण करै कबहूँ बारकों ॥ नहि करै गोरसमाहि
प्रीति हि और भोग्य जितेक हैं ।नहि करै तिनकों ग्रहण कबहू धारि चारु बिबेक हैं॥ शुचि धर्म
एते ऋषिणके अभिराम उत्तम पर्म हैं । इनको किएँते चारु गतिकों पाय रहत सशर्म हैं॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञानुगामिना श्रीबन्दीजनकाशीवासि
रघुनाथकवीश्वरात्मजगोकुलनाथस्यात्मजगोपीनाथस्य शिष्येण मणिदेवेन कविना बिरचिते भाषा
यां महाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणि दानधर्म्मे उमामहेश्वरसंवादे पञ्चदशाधिकशततमोऽध्यायः ॥

॥ * ॥ उमोवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

बाणप्रस्थको धर्म ओ कहहु मोहि अब तीन । हरसों इमि कहती भई गिरिजा सुनु बुधिभौन ॥

॥ * ॥ आभीरछन्द ॥ * ॥

गिरिजाके ए बैन । सुनि कै शिव सुदऐन ॥ बाणप्रस्थको पर्म । कहते भए सुधर्म ॥ *

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

॥ * ॥ महेश्वरउवाच ॥ * ॥ बाणप्रस्थको सु धर्म जौन । गिरिजे तोहि कहत हम तौन ॥ सुनु तूं
ताहि शुचित लगाय । चञ्चलताकों सर्व बिहाय ॥ * * ॥ दोहा ॥ * * ॥ * *

करै त्रिकाल सनान निति गहि करि कै बरनेम । पितरणको अरु सुरणको पूजन करै सप्रेम ॥
करै अग्निहोत्रहि सदा आलसताको त्यागि । बसै महाआरण्यमे निर्भयतामे पागि ॥
सांवा आदिक अन्न जे बिन बोए हे दार । तिनकों ल्यावै बीनि कैं भोजनकाज सुढार ॥
औ ल्यावै फल मूल बर बनमेंतैं अभिराम । दीपककों एरण्डको राखै तैल ललाम ॥
बल्कल चीर सु वृक्षको औ मृगचर्म ललाम । धारै औ इन्दीणकों राखै बसमे बाम ॥
बर्षामे जलकों लहै अपने ऊपर दार । शीतमाहि जलमे रहै ठाढो सुमतिअगार ॥
बायु भच्छ कबहूँ रहै कबहूँ भच्छ सुनीर । कबहूँ भच्छ शिवारकों रहै धारि कै धीर ॥
ग्रीषममे पञ्चाग्निसों तपै करि थिरचित्त । बनके सब प्राणीनकों जानै अपने हित्त ॥
देवयज्ञ पितृयज्ञ अरु भूतयज्ञ अभिराम । ब्रह्मयज्ञ अरु पञ्चम सु मनुज यज्ञ है बाम ॥
अग्निहोत्र सुरयज्ञ है श्राद्ध परम पितृयज्ञ । ब्रह्मयज्ञ स्वाध्यायमे पठन कहत है प्रज्ञ ॥
दोबो ओ मानवनकों मनुजयज्ञ है तौन । भूतनिमित्तक सो सुबलि भूतयज्ञ है जान ॥

आ०प० करै सु पाँचौ यज्ञ ए श्रद्धासहित महान । रहै शरणमे अग्निकी नित्यहि बर मतिमान ॥
दा०ध० करै नित्य एक होम अरु पूरणिमामे तीन । वाणप्रस्थ करि चित्तकों थिरतामाहिँ प्रवीन ॥
ब्रह्मलोक अरु सोमको लोक चारु तिहिमाहि। किए धर्म यह जात जन यामे संशय नाहि ॥
वाणप्रस्थको धर्म हम तोकों कह्यो बखानि। अब आगें का पूछि है भूधरसुता सुजानि ॥
शङ्करके ए बचन सुनि आनंद भरे ललाम। फिरि गिरजा करती भई प्रश्न भरी मुद भाम॥

॥ उमोवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

दीप्तिमान जन होयकै लहत लोक अवदात। किहिविधिसों अब मोहि यह कहो आपु विख्यात॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

सुनि गिरिजाके बैन कहत भए ऐसें बचन । शङ्कर आनंदऐन प्रश्न कियो नीको परम ॥

॥ * ॥ महादेवउवाच ॥ * ॥

जे जन है व्रतवान अरु जे इन्द्रीवश करत। बोलत सत्य सुजान हिंसा कबहू न करत है॥
करत सविधि उपवास दीप्तिमान बर होय कै। ते जन लहत हुलास गन्धर्बनके सङ्गमे ॥
शीतसमैके माहि जे जन जलमे रहत हैं । ते नागनके पाहि दीप्तिमान ह्वै मुद लहत ॥
मृगके सँगमे घास खाय रहत जो विपिनमे । दीप्तिमान ह्वै बास अमरपुरीमे करत है ॥
गिरे पात शैवाल बसि बनमे जे खात हैं । अरु हिममाहि बिशाल जो जलमाहि बसत निशि ॥
दीप्तिमान ह्वै पर्म उत्तम गतिको पाय ते। रहत सदाहि सशर्म यामे संशय है नहीं ॥
वायु हि भक्षत जौन अरु जे भक्षत नीरकों। करि सुविपिनिमें भौन जे जन भक्षत मूल फल ॥
दीप्तिमान ते होय यक्षणमे ऐश्वर्य्य लहि । रहत मोदसों भोय अप्सरानके गणन सह ॥
जे जन द्वादशवर्ष पञ्चअग्नि सों तपत है । ग्रीषममाहि सहर्ष होत तौन द्युतिमान नृप ॥
गहि सुनेम आहार करत जौन द्वादश बरष। पर्बत मेरु सुढार तामे बसि कै प्रज्ञबर ॥
परमावास महान नीतिमान धरमज्ञ अरु। भूपति होत सुजान यामे संशय है नही ॥
अनशनव्रतमे जौन बर बुध तजत शरीरको । दीप्तिमान ह्वै तौन स्वर्गमाहि सुख लहत है ॥
जो जन बारहवर्ष धरनामे आकाश तर । शोवत होय सहर्ष सुनु नन्दनि गिरिराजकी ॥
ताकों वाहन चारु मिलत औ सु शय्या मिलति। अरु बर मिलत अगार।शुभ्र प्रभामय चन्द्रसे॥
द्वादशवर्ष सुजान जौन तपस्या करत हैं। छोडि सिन्धुमे प्रान बरुणलोककौं लहत सो ॥
बारहवर्ष सुजान करत तप हि जन जौन बर। पुनि हढताहि महान धरि कै पावकमे जरत ॥
चारुदीप्ति सो पाय परम प्रज्ञ धर्मज्ञ शुचि । अग्निलोकमे जाय पूज्यमान ह्वै कै रहत ॥
अनशन व्रतके माहि तजत देह जो वीरलौं। जाय इन्द्रके पाहिँ कांतिमान ह्वैकै रहत ॥
निरत सत्वगुणमाहिँ जो सदां हिँ रहि तजत तन। तौनहूँ सुरपति पांहि दीप्तिमान ह्वै कै रहत॥

लहि विमान अभिराम इच्छा पूर्वक फिरत हैं।पावत है मुद धाम अहँ अहँ आत तहां तहां ॥ शृ०प०
स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदीतनारायणस्याज्ञाभिगामिनाश्रीबन्दीजनकाशीवासि दा०ध०
रघुनाथकवीश्वरात्मजगोकुलनाथस्यात्मजगोपीनाथस्य शिष्येण मणिदेवेनकविना विरचितेभाषायां
महाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणि दानधर्मे उमामहेश्वरसंवादे षोडशाधिकशततमोऽध्यायः ॥ * ॥

॥ * ॥ उमोवाच ॥ सोरठा ॥

है एक और सन्देह श्रीगङ्गाधर त्रिपुर हर । महत मोदके गेह करऊ तौन दूरि तुम ॥
पूर्व विधाता धर्म चारिवरण उत्पन्न किय । शङ्कर सुनऊ सधर्म दक्षयज्ञहर प्रज्ञवर ॥
तिन वर्णनके माहि कौंनकर्मसों वैश्य जो । कहऊ हमारे पाहि प्राप्त होत शूद्रत्वकों ॥
अरु क्षत्रियसो होत वैश्यताहि किहि कर्मसों । अरु किमि मोदनिकेत क्षत्रियताकों द्विज लहत ॥
किएँ कर्मको कौंन शूद्रयोनिमे होत द्विज । कहिए आनदथैंन क्षत्रियऊ अरु वैश्यहू ॥
अरु जे तीनऊँवर्ण विप्रताहि किमि लहत ते । श्रीशिव संशयहर्ण करऊ दूरि सन्देह यह ॥

॥ * ॥ श्रीमहेश्वरउवाच ॥ * ॥

प्रश्न कियो यह स्वच्छ तैं सुन हे गिरिनन्दनी । याको हेतु प्रतच्छ अबहि तोकों कहत हौं ॥
जो द्विज तजि निजधर्म क्षत्रियके कर्महि करत । द्विजताते सो पर्भ छूटि सु क्षत्रिय होत है ॥
त्यागि स्वधर्महि जौन वैश्यकर्मको करत है । हे सुनु क्षत्रिय तौंन वैश्यवर्णको लहत है ॥
शूद्रकर्मकेमाहि वैश्य रहत जौन है । यामे संशय नाहि शूद्र होत है वैश्य सो ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य अरु किएँ शूद्रके काम । निश्चय शूद्रहि होत है है नहि संशय बाम ॥

॥ * ॥ रामगीतिछन्द ॥ * ॥

सुनऊँ गिरिजे अन्न निन्दित क्रूरजनको धर्म । शूद्रको है अन्न निन्दित अतिहिँ नाशक धर्म ॥
श्राद्धमाहीं निमंत्रित हैं विप्र गिरजे जौंन । तौंन भोजन करिचुकै जब बचो जो है तौंन ॥ परम
निन्दित अन्न है इहिमाहिँ संशय नाहि । कहे हैं ए पितामहके बचन तेरे पाहिँ ॥ * * *

॥ * ॥ चरणादोहा ॥ * ॥

होय उदरमे अन्न शूद्रको मृत्युसमयके माहि । शूद्रयोनिमे जन्म होय तौ द्विजको संशय नाहि ॥
अन्न सु जिहि जिहिँ जातिको मरैं खाय द्विज जौंन। निश्चय तिहिँ तिहिँ जातिमे जन्म लहत है तौंन ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

दुर्लभ द्विजता पाय भक्षत जौंन अभक्षको । निजु द्विजता छुटि जाय तौन विप्र अज्ञानसों ॥

॥ * ॥ हरिगीतोछन्द ॥ * ॥

द्विज सुरा पीवत जौंन अरु जे नीच कर्महि करत हैं । अरु जे नहो उपकार मानत क्रूरता हिय
धरत हैं ॥ रत रहत चोरीमाहि जे अरु विप्रकों जे हनत हैं । अरु तौंन हैं द्विज पर्भ गर्वी औरकों

आ०५० नहि गणत हैं॥ अरु पठत जे नहि बेदकों निति कपटमे रत रहत हैं। अरु जौ न देखत शूद्र राख
दा०५० भूतता हिय महत हैं॥ ब्रत करत कौनऊँ नाहि जे अरु रजे शूद्रोमाहि हैं। गुरुनारिमे जे रमत हैं
अघकों विचारत नाहि हैं॥ जिहि पात्रमाहि बनाय भोजन तौनहीमे खात हैं। अरु नीचकी जे
करत सेवा पाप करि सरसात हैं॥ ब्रत कौन पूरब करत देत सु बीचहीमे त्यागि हैं। निति करत
निन्दा गुरूकी गुरुद्रोहमाहीं पागि हैं॥ ॥ सोरठा ॥ ॥ * * * * *

ऐसे द्विज जे वाल बेदवानहूँ होहि जौं। सुखदा परम बिशाल द्विजतातें गिर जात हैं॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

जौन हेतुसों लहत है शूद्र वैश्यता चारु। अरु क्षत्रियता लहत है वैश्य सुबुधि अपारु॥
पावत है बर बिप्रता क्षत्रिय वर बुधिमान। सुनु गिरिनंदनि कहत अब तोका कारण तान॥

॥ * ॥ पद्मिनीछन्द ॥ * ॥

सुबुद्धिमान शूद्र आपने। करै सुकर्म मोद चापने॥ टहैलमाहि बिप्रको रहै। कथा न उग्र बैनकों कहै॥ सुमार्गमाहि नित्यही चलै। कहै सुसत्य ना करै छलै॥ करै सुनेम बांधि भोजनै। कवौं न काऊजीवकों हनै॥ जबै होय तिय रजस्वला। करै तबै सुकामकी कला॥ दोहा * ॥
देवनको अरु द्विजनको करै सदा सतकार। भोजन देय सु अतिथिकों आदर करि सु अपार॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

बैठै बुधजन पाहिं चारु वारता सुननकों। भोजन करै सदाहिं बचो होय जो द्विजनसों॥
ऐसो बर बुधिधाम शूद्र लहत है वैश्यता। है नहि संशय बाम हे नन्दिनि हिमवानको॥

॥ * ॥ दोहा ॥ ॥

वैश्य लहत जिहि हेतुसों क्षत्रियता अभिराम। तौन हेतु मै कहत हौं गौरि तोहिं अब बाम॥

॥ * ॥ महतीछन्द ॥ * ॥

निति सत्य बैन हि कहै। कबहूँ न गर्बहि गहै॥ अरु क्रोधकों नहि करै। हियमांहि शान्ति हि धरै।

॥ * ॥ तोटकछन्द ॥ * ॥

विधिसों अरु श्राद्ध सदा हि करै। अरु दै धन दीनहिं मोद भरै॥ बलि देय सु भूतनकों नितिहीं। अरु होम करै रतिसों अतिहीं॥ शुचि ह्वै करि कै निति बेद पढै। सु गहै सब दक्षिणकों सु हढै॥ दुयकाल करै निति भोजनकों। नहि फेरि करै गहि कै पणकों॥ * ॥ दोहा ॥ *
प्रथम अतिथिकों देय कै सादर भोजन चारु। फेरि आपु भोजन करै सर्व सहित परिवारु॥

॥ ॥ सोरठा ॥ ॥

कीन्हें ऐसे कर्म क्षत्रियताकों लहत है। मतिबर वैश्य सधर्म यामे संशय है न हीं॥

॥ * ॥ रामगीतीछन्द ॥ * ॥ शां०प० रा०ध०

आनि कूर्मादिक सुजाके समत्कार सुसर्व। होंहि जो द्विज होत क्षत्रिय धर्म सहित अखर्व ॥ पालि करिकै प्रजाको सब पुत्रयो अभिराम । लेय छठयां अंशतासों सत्यबोलै माम ॥ होंहि जामे दक्षिणा बङ्ग करै ऐसो यज्ञ । पढ़ै बेदहि अग्निहोत्रहि करै बर धरमज्ञ ॥ लखै जैसो दोष तैसो दण्ड देय सधर्म । प्रजा माही देय शासन धर्मकोबें पर्म ॥ प्रीति करिकै दीन जनको करै नित्य सहाय । रमै अपनी दारमाही समय लहि सुखदाय ॥ लखैनहि परनारि कबहू जानि पाप बिशाल । अग्निहोत्रसु होय जौंने गेहमे सुनु बाल ॥ शयन तौनें गेह माही करै शुचि ह्वै पर्म । देय भोजन अतिथिकों बर प्रेम सहित सधर्म ॥ अतिथि शूद्रऊ होयतौ दीजै सु भोजन ताहि । करै विधिवत श्राद्ध राखै दुष्टभावहि नाहि ॥ होय पावन पर्म बिधिवत करै बर उपवास । गौब्राह्मण काज रणमे लरै सहित ऊलास ॥ ज्ञानवान महान बर धर्मातमा अभिराम । बिप्रताकों लहत ऐसो जौन क्षत्रियबाम ॥ धर्ममाही रहै रत तौ शूद्रहू द्विज होय । बिप्रहू जो करै अधरम धर्म अपनो गोय ॥ शूद्रताकों लहै तौ यह माहि संशय नाहि। रहै तातें नित्य तत्पर धर्म अपने माहि ॥ हेतु द्विज ताको सुधर्महि जानु निश्चय बाम । बचन ब्रह्माके कहे हम कहे ताकों आम ॥ *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

द्विजता जौंन हेतुसों पावत शूद्र सधर्म । औ द्विज जौनें हेतुसों लहत शूद्रता पर्म ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

ते सब कहत बखानि तोकों हम गिरिनन्दिनी ।अब हियमाहि सुजानि इच्छा का है सुननकी ॥
गिरिजा सुनि ए बैंन कहति भई इमि शंभुसों । पशुपति आनद ऐन एक संशय औरउ कहौ ॥

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

पापकर्म बंधनमे जौंन । सुनऊ बन्धेहै मानव तौन ॥ किहि बिधिकर्म किएसों कौन । छूटि करतहैं दिवकों गौन ॥ * ॥ महादेव उवाच ॥ * ॥ यह जो प्रश्न कियो तैं बाम । मनुजनकों सुखकर अभिराम ॥ हमसों सुनो कहत हम आम । करिहैं प्रिय यक्षिकों बुधिधाम ॥ जे रत रहत सत्यके माहि । रहैं सदा प्रश्नमके पाहि ॥ ते नहि अघबंधनके माहि । बंधे रहतहैं मुदित सदाहि ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

हिंसा मनबचकर्मसों करत नही जन जौन । अघ बन्धनसों छूटिकै करत स्वर्गको गौन ॥
इन्द्रिणकों जे बिषयमे लगन देतहैं नाहि । शत्रुता न अरु मित्रता राखत काहू माहि ॥
दया धरे शीलहि धरे अरु जे जन अभिराम। अघ बन्धनसों छूटि ते लहत स्वर्गके धाम ॥

मा०प० ॥ * ॥ हरिगीतीछन्द ॥ * ॥
दा०ध० धन औरकेमे जौन जन कबहूं न लोभहि करतहैं। अरु रमणकी परनारिमे कबहूं न इच्छा धरतहैं॥
बर आपनीही दारमाहो रहत जे जन निरतहैं। अरु धर्मतें भो जन्म जोहे प्राप्त ताको भरतहै॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

ऐसेहैं जन जौन तौन छूटि अघ फांसिसों। आय स्वर्गमे भौन लहत महत परमा भरे॥

॥ * ॥ अरिलछन्द ॥ * ॥

कबहूँ झूठ न बोलत जे जन। पाप फांसिसों छुटिकै तेजन॥ आय स्वर्गमे आनद पावत। भरे परम परमासों भावत॥ जो कबहूँ कोउ आवै घर। ताहि कहत मीठी बाणीवर॥ जो जे कहैं कठोरहि बैन न। करैं कुटिल काहू दिसि नैन ना॥ ते कुकर्म फांसीसों छुटिकरि। स्वर्गलोककों आत सुमुदधरि॥

॥ * ॥ मञ्जगीतीछन्द ॥ * ॥

चुगलीहि जौन करै नही। हिय दुष्टताहि धरै नही॥ जन औरको निदरै नही। हिय क्रोध ताहि भरैनहो॥ * * * * ॥ * ॥ आभीरछन्द ॥ * ॥ * * *

ऐसेहैं जन जौन। अघ फांसीसों तौन॥ छूटिस्वर्गको गौन। करत होय मुदभौन॥ * *

॥ * ॥ तोटकछन्द ॥ * ॥

अघ जौन विरुद्धहि नाहि करै। सठकी कहनू तिहि ना अचरैं॥ दुखहोय महा सुनिकै जिहिको। हियमे नहि बैन कहै तिहिकों॥ * * ॥ * ॥ कान्ताछन्द ॥ * ॥ * *

ऐसे जौन। जन बुधिभौन॥ स्वर्गहि जाय। रहत सचाय॥

॥ ॥ सोरठा ॥ ॥

अरु अरन्यहू माहि द्रव्य परायो देखिकै। जे जन मनमे माहिँ लोवेकी इच्छा करत॥
ते जन आनद पाय अघ बन्धनसों छूटिकै। स्वर्ग लोकमे आय ओक लहत परमामयो॥

॥ * ॥ चरणाकुलकछन्द ॥ * ॥

कामवती अति परम सुढारी। ऐसो जो पर नरकी नारी॥ ताहि देखि एकान्ते माही। जे मानव मनहू से नाहो॥ तामे रमै तौन जन ज्ञानी। अघ फांसीसों छूटि महानी॥ आय स्वर्गमे मुदसों भारे। पावत हैं बर सदन सुढारे॥ जेकाऊसों बैर न राखैं। औ करि मिचता न अभिलाखैं॥ सुपथ कुपथको जौन बिचारैं। जीवनको करि दया निहारैं॥ * * ॥ ॥ दोहा ॥ * ॥ * *

अघ फांसीसो छूटि ते आय स्वर्गके माहि। महत लहत आनन्दको यामे संशय नाहि॥

॥ * ॥ अवकरीछन्द ॥ * ॥

शास्त्र माहि रत जौन सुजान। अरु जे महादान महान॥ धर्म अधर्महि जानत जौन। गुन दोष गुणसों बुधिभौन॥ अरु जे पूजत सुरहि समेम। मानै श्रुतिपथ द्विजहि सप्रेम॥ ते जन अघफांसी

सों भूरि । छूटि महत आनदसों पूरि ॥ जाय स्वर्गमे पावत धाम । है नहि यामे संशय बाम ॥ आ०प० दा०ध०

॥ * ॥ तोमरछन्द ॥ * ॥

हमकों सु पूछ्यो जौंन । सब कह्यो तोको तौंन ॥ अब पूछिहै जो मोहि । हम कहैंगे सो तोहि ॥

॥ * ॥ उमोवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

रूपवान जन होतहैं कौंन हेतुसों धर्म । मोहि कहो करिकै कृपा अब यह आपु समर्म ॥

॥ * ॥ मोतीदामछन्द ॥ * ॥

दया सब जीवनकी हिय माहि । करै जन जो बुधिमान सदाहि ॥ लहैं वर रूप महा अभिराम । परै नहि नारकमे बुधिधाम ॥ * ॥ मधुभारछन्द ॥ * ॥ * * *

पूछ्यो सु जौंन । हमकों सु तौंन । सब तोहि बाम । हम कह्यो आम ॥

॥ * ॥ उमोवाच ॥ * ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

कौन कर्म कीन्हें मनुज जात स्वर्गके माहि । शङ्कर अब यह करि कृपा कहो आपु मम पाहि ॥

॥ * ॥ महेश्वरउवाच ॥ * ॥ हरिगोतीछन्द ॥ * ॥

वर कूप बापी धर्मशालाको बनावत जौंन हैं । अरु बसन भोजन देत दीनहि जौंन वर बुधि मौंन हैं ॥ वर द्विजनको सनमान करिकै परम मोदित करत हैं अरु देयकै गो भूमि दानहि मोद होमे धरतहैं ॥ भरि रतनसों अरु औरधनसों धाम अति अभिरामकों । जन देत जे हैं प्रीतिसों द्विज वेदविद बुधिधामकों ॥ अरु जौंन बाहन देतहैं अरु चारु आसन देत हैं । अरु देत नारा दान जे व्है मुदित बुद्धिनिकेतहैं ॥ सब अन्नकों अरु देत जे हैं परम चारु बनायकै । जन सर्व एते स्वर्गमाहीं लहत आनद आयकै ॥ बसि स्वर्गमे बहु काललौं रमि अमरनके सङ्गमे । अति चारु नन्दन बिपिन मांहीं रहत मोद उतङ्गमे ॥ अब होत च्युत है स्वर्गतें तब भूमि माहीं आयकै । लहि जन्म धनयुतवंशमाहीं रहत आनदपायकै ॥ सब होत युक्त सु गुणनसों सब होति इच्छा सिद्धिहैं । कबहूँ न आवत दरिद्र गृहमे भरी रहति सु निद्धिहैं ॥ अरु जौंन जन लखि अतिथि कों अरु भिक्षुकनके वृन्दकों । धनवांन व्हैकै देत कछु नहि धरे कुमति बिलन्दकों ॥ द्विज जौंन मागत आय तिनकों कहत बैन कठोरहै । पुनि बैठि दैकै पीठि तिनकी तकत नाहीं ओर है ॥ नहि कबहुँ कौंन हूँ दानको सब जन्म माही देत हैं । जन नरक माहीं आय तैं अति महत दुख कों लेत हैं ॥ कढि नरकतें बहु कालमे जो कबहु मानुषता लहैं । तौ जन्म लहि धनहीन कुल मे नित्य पीडितही रहैं ॥ अरु जौंन अति अभिमानसों युत मनुज जगकेमाहि हैं । जन जौंन आदर योग्य तिनको करत आदर नाहिहैं ॥ महिपालकों अरु अन्धको अरु विप्र वृद्धि अगारकों । अरु गर्भवतिबाला रिकों अरु वृद्ध जर्महि सभारकों ॥ नहि देत मारग अल्पबुद्धी महत अति मदसों भरे । अरु देखि आवत गुरूको नहि होत हर्षित व्है खरे ॥ अरु औरज सनमान कौंन

३।०५० योग्य मानव जौन हैं। नहि करत जे सनमान तिनको परम दुर्मतिभौन हैं॥ सब जात ते जन नरक
६।०५० मे यहँ माहि संशय नाहि हैं। हम सुन्यो यह वृत्तान्त पूरब लोकपतिके पाहि है॥ *ͼ*ͼ*

॥*॥ दोहा ॥*॥

कढै कबऊ जौ नरकतें तौ कुत्सित कुलमाहिँ। जन्म पायके लहत दुख अरु अघ करत सदाहि॥

॥ͼ॥ चरणाकुलकछन्द ॥ͼ॥

अरु जे जन है नहि अभिमानी। धरैं दया हियमाहि महानी॥ पूजत सुर अरु द्विजहि सदा हो। कहत मधुर वाणी सब पाहीं॥ कबहूँ द्वेष न मनमे आनै। सब जीवनकों अति प्रिय जानै॥ जौन मनुष्य निकटमे आवै। ताको अति प्रिय बचन सुनावै॥गुरु आवैं जब मोदित ह्वैके। सादर लेय प्रीतिसों ध्वैके॥ अतिथि जौन आवै ग्रह माही। करत अनादर ताको नाही॥ ऐसे बुद्धिमान जन जे है। प्रापित होत स्वर्गमे ते हैं॥स्वग माहिँ रहिके बऊकाली।पावतहैं आनन्द बिशाली॥

॥*॥ दोहा ॥*॥

तदनन्तर अब मनुजता पावत भू के माहि। उत्तम कुलमे जन्म लहि मोदित रहत सदाहिँ॥
प्राप्त होत सब भोगहै तिनकों अरु बऊ रत्न। सब प्राणिनकों होत प्रिय बिना किएँऊँ यत्न॥
धर्मंहि माही रहत रत शर्म सहित अभिराम। पर्म प्रज्ञताको लहत जात भर्म मिटि माम॥

॥*॥ मुग्धविलासछन्द ॥*॥

अरु जौन क्रूर महान। अघ भौन दुर्मतिमान॥निति रहै परम ससान। नहि करत कैंनिऊ दान॥

॥ ͼ*ͼ ॥ दोहा ॥ ͼ*ͼ ॥

कर पदसों अरु रज्जसा तिनिहि माहि कै दण्ड। जे जीवनको देतहै बाधा भूरि प्रचण्ड॥

॥*॥ आभीरछन्द ॥*॥

ते जन दुर्मति रास। लहत नरकमे बास॥ याने संशय नाहि। कहत सत्य तव पाहि॥ *ͼ*

॥*॥ दोहा ॥*॥

औं कबऊ कढि नरकतें लहे मनुजता जौन। तौ बाधायुत बंशमे जन्म लहतहै तौन॥
बिन अपराधहि करतहैं द्वेष तास जन सर्ब। औं निशि दिन तिनकी परम निंदा होति अखर्ब॥

॥*॥ सुन्दरीछन्द ॥*॥

कानऊ भांति सु जीवहि जो जन। देत व्यथा कबऊ नहि सो जन॥ जाय सु देवलोकहि भावत। चारु अनूपम आलय पावत॥ *ͼ*ͼ*ͼ*ͼ*ͼ*ͼ*ͼ*ͼ**

॥ͼ*ͼ। सोरठा ॥ͼ*ͼ॥

निर्जरलौं दिन माहि प्रभा पायके लसतहै। सुरनारी तिहि पाँहि रहि बऊ आमद देतिहै॥
पाहै मनुजता जौन कबऊ जो दऊकालमे। दुःख रहित कुल तौन पाय रहत आमंद सो॥

॥ * ॥ उमोवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ शा॰प॰

महाप्रज्ञ केते किते अल्पप्रज्ञहैं पर्म । देखि परत संसारमे पशुपति सुनहु सुमर्म ॥ दा॰ध॰

॥ * ॥ चरणादोहा ॥ * ॥

महाप्रज्ञ अरु अल्प प्रज्ञ जन कौंन कर्मसो होत। यह संसय को करहु दूरि तुम गङ्गाधर सुदयोत

॥ * ॥ हंसादोहा ॥ * ॥

कौन कर्मसो होत जन अन्धा अरु दृगवान । कौंन कर्मसो होतहैं क्लीव कहहु सुदवान ॥

॥ * ॥ महेश्वरउवाच ॥ सोरठा ॥ * ॥

विप्र धर्मविद जौंन तिन्हैं अशुभ शुभ कर्मते । पूछि जैंन बुधि भौंन करत अशुभ तजि कर्म शुभ ॥

तेजन आनद पाय परम महत यहि लोकमे । फेरि स्वर्गमे जाय रहत सुरणके सङ्गमे ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

फेरि लहै जो मनुजता महा॰ प्रज्ञ तो होय । पढत शास्त्रको शीघ्रही रहत मोदसो भोय ॥

दुष्ट चक्षुसो लखतहैं पर नारीको जौन । अन्ध जन्म लहि होतहैं तेजन दुर्मति भौन ॥

दुष्ट चितसों लखत जे नग्ना परकी दार । पीडित तेजन होतहै लहिकै रोग अपार ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

अरुजे दुर्मति भौंन पर नारीमे रमतहैं । होत क्लीवहैं तौंन यामे संशय हैं नही ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

गुरु तिय गामी जौंन अरु पशुको सेवत जौंन । व्यर्थ करत मैथुनहि जे होत क्लीवहैं तौंन ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराज श्रीउदितनारायणस्याज्ञानुगामिना श्रीबन्दीजनकाशीवासि रघुनाथकवीश्वरात्मजगोकुलनाथस्यात्मजगोपीनाथस्य शिष्येण मणिदेवेन कविना विरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणि दानधर्म्मे उमामहेश्वरसंवादे सप्तदशाधिकशततमोऽध्यायः ॥ *

॥ * ॥ नारदउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

तदनन्तर शङ्कर परम गिरिजाको बैंन । कहत भए मुसकायकै बर आनँद ऐन ॥

॥ * ॥ महेश्वरउवाच ॥ * ॥

सावित्री तिय द्रुहिणकी सची इन्द्रकी नारि । स्वाहा सिखिकी रोहिणी शशिकी नारि सुढारि ॥

तिया मारकण्डेयकी धूमार्णा सुखधाम । रिद्धि धनदकी बरुणकी गौरी तिय अभिराम ॥

सुवर्चला तिय भानुकी भरी रूपसों चारु । कश्यपकी तिय दिति अरु यशस्विनी सुढारु ॥

पतिव्रता सर्व है प्रजापती महानि । इनसों तोवों परसपर है अति प्रेम सुजानि ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

आ०प०
दा०ध० तातें पूछत तोहि मे हौं हे गिरिनंदिनी । धर्म तियनके मोहि कहक इच्छा है सुननकी ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

जे तव पूजा करत ते होत महत बलवान । होत महागुणवान अरु होत महा सुखवान ।
रचात् निति सुरनकी करति क्लेशकों दूरि । अरु तू ही मानवनकों देति मोदसों पूरि ॥
जैसो मैं व्रतवान हौं तैसो तू व्रतवानि । अति प्रिय मोकों गति तू गिरिनंदिनी सुजानि ॥
नारिनको जो धर्म सो जानति तू है सर्व । यातें तोसों सुननकी इच्छा भई अखर्व ॥

॥ * ॥ उमोवाच ॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

मोमें हैं गुण जौन तौन कृपातें रावरी । सुनिए आनद भौन भय हर सुरगण सर्वके ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

युक्ता निर्मल नीरसों ए सब नदी महानि । कीबे काजे परस तव आई पास सुजानि ॥
इनके सङ्ग बिचारिकै इसी धर्महिं पर्म । कहि हौं मैं तुमसों सुनो हे ईशान समर्थ ॥
यह जो नदी सरस्वती नदिन माहि अभिराम । जेष्ठा है अरु उत्तमा जलसों भरी ललाम ॥

॥ * ॥ रामगीतीछन्द ॥ * ॥

विपाशा अरु वितस्ता अरु चन्द्रभागा चारु । गोमती अरु कौशिकी अरु नदी सिन्धु सुढारु ॥ औ शतद्रु इरावती अरु देविका अभिराम । मोद करनी सुर सरी बर पाप हरणी नाम ॥ नदी एती हर्ष सेती प्राप्त हैं तव पास । शम्भुसों कहि बैन इमि गौर सुता सहित हुलास ॥ भई पूछति नदिनको नारीनको जो धर्म । पाय आज्ञा शम्भुकी बड़ परे हामे शर्म ॥ * ॥ उमोवाच ॥ सोरठा ॥
प्रश्न कियो शिव जौन नारिनके बर धर्मको । सङ्ग तुम्हारे तौन कहि हौं ताहि बिचारिकै ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

सुनि गिरिजाके बैन ए बर गङ्गादिक सर्व । गिरिजाको पूजति भई आनदभरी अखर्व ॥
तदनन्तर गङ्गा धरम बिनती करिकै भूरि । शैलसुताको बैन इमि कहति भई मुद पूरि ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

जो जन प्रश्न महान जिहि जनको पूछै कछू । तास होत सनमान धरमज्ञा सुनु शैलजा ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

तुम सरवज्ञा शैलजा पूछति हमसो धर्म, । याते अति सनमान है होत हमारो पर्म ॥
कहि बे योग्या तुमहि हो नारिनके बर धर्म । याते कहिए आपही बिनती सुनि मम पर्म ॥

॥ * ॥ सुमतीछन्द ॥ * ॥

गङ्गाकी सुनिकै सुढार बातें । बोलीयो गिरिजा सु मोद तातें ॥ नारीके अति स्वच्छ चारु धर्म । मैंही हे कहि हौं सुनो सुधर्म ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ शां०प०
गङ्गाको सुनि बैन कहि हैमवती अभिराम । शिवको नारिनके धरम कहति भई सोऽगम ॥ दा०ध०

॥ * ॥ उमोवाच ॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

जिहिं दिन होय बिवाह तिहि दिनहीसों नारिका । अतिही भरी उमाह पतिकी आज्ञामे रहै ॥
लखै प्रीतिसों बाम जैसें बदन सुपुत्रको । तैसेंही बरबाम पतिकों देखै निशि दिवस ॥
पतिव्रता जे नारि कथा सु तिनकी श्रवण करी । सेवा मांहि सुढारि पियकी तोयरहैं सदा ॥
कबहूँ कहै कठोर जो पिय करिकै क्रुद्ध अति । तबहू पियकी ओर प्रीति सहित चाहै सदा ॥
करै सुव्रत पिय जौन करैतौन निय आपहू । करै अहांकों मौन तहां प्रीतिसों जाय सङ्ग ॥
जानै देव समान पतिकों है मतिमान तिय । स्वपने हूमे आन पुरुष ओर देखैं नहीं ॥
होय पुरुष जो दीन अथवा रुज जुत होय कृश । तबहूँ नित्य नवीन प्रीति सहित सेवा करै ॥
पुत्र भएंहू धर्म पति कीरति राखै महत । पतिव्रतानके धर्म सुनऊ शम्भु ए सर्वहैं ॥
भोग कामके माहिँ औ तिनिही ऐश्वर्य्यमे । राखै मनकों नाहिँ पति रतिमे राखै सदा ॥
नित्यहि उठिकै प्रात करै अगारहि स्वच्छ अति । गोमयसों अवदात लीपि आपने करणसों ॥
पियके सङ्ग सदाहि अग्निहोत्र विधिवत करै । पियकी आज्ञा नाहि भङ्ग करै कबहूँ तिया ॥
देव अतिथि अरु भृत्य पति सह तिनकों तृप्त करि । प्रीति सहित अरु नित्य शेष आपु भोजन करै ॥
सेवा करिकै भूरि शासूकी अरु श्वसुरकी । महत मोदसों पूरि तिनसों निति आशीष ले ॥
पतिकी आज्ञा पाय दुर्बल दीन सुद्विजनकों । अन्नसु देति सचाय ते पतिव्रता नारिहैं ॥
राखै चित्तपति माहिँ निशिहिँ सेवा करि परम । जानै स्वर्गऊ नाहिँ पियकी कृपा समान बर ॥
जामे होय अधर्म अरु जो कीबे जोग्य नहि । कीजै तौनऊ कर्म जों आज्ञा पति देयतौ ॥
महत कष्टहू माहि पियको सङ्ग तजै नहीं । सुख दुख माहि सदाहिँ छाया लौं सँग मे रहै ॥
नारिनकेजे धर्म तुम्है सुनाए बर्णिमे । सुनिए शम्भु सधर्म रहति धर्मम पतिव्रता ॥
पतिव्रत धर्म समान नारिनकों नहि और है । जे तिय करति महान ते पावतिहैं मोदकों ॥

॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥

नारिनको जो धर्म सर्व गौरिसों शर्व सुनि । भए प्रसन्न सधर्म सुनहूँ युधिष्ठिर प्रज्ञवर ॥
तदनन्तर सब भूत नदी अप्सरा गन्धर्व । हर्षहि पाय अकूत शिवहि नौमि सब जात भे ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञानुगामिना श्रीबन्दीजनकाशीवासि रघुनाथकवीश्वरात्मजगोकुलनाथस्यात्मजगोपीनाथस्य शिष्येण मणिदेवेन कविना विरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणि दानधर्मे अष्टादशाधिकशततमोऽध्यायः ॥ * * *

॥ * ॥ ऋष्यश्रङ्गः ॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

भा०प०
दा०ध०
सुनु सम्प्रर्न हे सर्व कहङ्ग महातिम विष्णुके । दायक मोद अखर्व हम सुमिनेकों चहत है ॥

॥*॥ महेश्वरउवाच ॥ * ॥ अरिल्लछन्द ॥ * ॥

निर्ज्जर प्रभुगणके गणनायक । बासुदेव सुर मोद प्रकाशक ॥ परम महान तेज है तिन कर । सम नहि होत अनेक नदिनकर ॥ तिनकों सर्व देवता पूजत । बहु बिधि प्रेम सहित हैं कूजत ॥ सब थावर जङ्गमके नायक । हैं भक्तनके सदा सहायक ॥ * ॥ रामगीतीछन्द ॥ * ॥ भए तिनके उदर तें उत्पन्न हैं लोकेश । औ सु शिर तें भए हैं उत्पन्न हम यहि भेष ॥ केश तें उत्पन्न तिनके भए नखत समूह । औ भए हैं रोम तें बर सुरासुरके जूह ॥ रहे सबमें व्यापि हैं बह परम हैं सरबज्ञ । फिरत हैं सरबत्र तिनकों भजत जेहैं प्रज्ञ ॥ आपुही उत्पन्न करता धरा धरके सर्व । आपुही संहार करता बासुदेव अखर्व ॥ हैन तिन सों श्रेष्ठ कोऊ तिहूँ लोक न माहि । औार रक्षिक सुरगणको तिन बिनाकोऊ नाहि ॥ सुरण काजे परम थातें धरत मानव रूप । सर्व भूत सु करत जाकों नमस्कार अनूप ॥ परम नायक सर्व भूतनके सु आनद धाम । सकै नाहो बर्णिकोऊ तासु गुण अभिराम ॥ भीति सों हैं जोंन पीडित हरत तिनको भीति । दीन पालन माहि हैं रत रहत नित्य सनीति ॥ अहङ्कार न करत कबहू क्षमा वान महांन । रहत तिनके शरण जेते होत हैं सुखवान ॥ हैंहि जे उत्पन्न मनुके बंश मांही पर्ब । सुरणके कल्याणकों गोबिन्द पर्म सप्तर्न ॥ अङ्ग व्हैहै पुत्र मनुके परम मेधा वांन । पुत्र अन्तर्धा सु व्हैहै अङ्गके बलवान ॥ पुत्र ताके होय गो बर हविर्धामा स्वच्छ । हविर्धामाके सुवन प्राचीन बरही दच्छ ॥ होहिंगे प्राचीन बरहीके सु प्रज्ञावान । प्रचेतादिक चारु दश सुत परम परमा मान ॥ दच्छ तियके होय गो व्हैहै प्रजापति तौंन । पायहै सरबत्र महिमा महत प्रज्ञा भौंन ॥ दच्छके दाच्छायणी व्हैहै सुपुत्री चारु । होय गो आदित्य ताके पुत्र उग्र सुदारु ॥ होय गो आदित्यके मनु पुत्र बर अभिराम । पुत्र काजे यज्ञ करि है तौंन बिधि सों माम ॥ कहैगी सु बशिष्ठ सों तब इमि सु मनुकी नारि । करहु ऐसो काज जातें सुता होय सुढारि ॥ होय गो तिहि तें सुपुत्री इलाताको नाम । देखि ताकों कहै गे मनु क्रोध करि इमि माम ॥ सुनहु सुऋषि बशिष्ठ हम सुत काज कीन्हों यज्ञ । भई पुत्री भयो तातें दुखद हमको प्रज्ञ ॥ बैन सुनिए सुमनुके ऋषि बर बशिष्ठ सुजान । तपस्यासों करैगे सुत सुताको छबि मान ॥ नाम ताको धरैंगे सुप्रद्युम्न सुऋषि बशिष्ठ । मुदित तातें होयगो मनु भयतें दुखनष्ट । इलावर्त सुखण्ड मांहि तौंन मृगया काज । जायगो तहँ होय ऐहै नारि सहित समाज ॥ कहै गे इत्तान्त यह सुबशिष्ठ कों मनु फेरि । करैंगे तब प्रार्थना ऋषि सम्भुजूको टेरि ॥ प्रभु ऐसें कहैगे मुनि सुऋषि बरके बैंन । धर्मधर बर सुनहु ऋषिबर परम प्रज्ञा ऐन ॥ इलावर्त सुखण्ड माहीं पुरुष आवत जौंन । आपतें मम होय नारीं जात निश्चय तौंन ॥ अन्यथा सो होय गो नहिं सुनहुँ ऋषि बुधिधाम ॥

करतहौ तुम प्रार्थना यहि हेतुतें अभिराम ॥ एक महिना पुरुष ह्वै है एक महिना दार। करहु निश्चय हियमे तुम सुऋषि बुद्धिअगार ॥ मन्मुके ए बैंन मनुकों कहैं गे सुवशिष्ठ । मोदत तिहितें होयगो मनु भयतें दुख नष्ट ॥ मन्मुजूके बैंनतें सुयुम्न अति अभिराम । एक महिना पुरुष ह्वै है एक महिना बाम॥ होयगो जब बाम तब बुध प्राप्त ह्वै हैं आय। रमण ताते करैंगे लखि तास रूप सुभाय ॥ होयगो सु पुरूरवामहिपाल तिहितें पर्म। होय गो सु पुरूरवाके आयु पुत्र सधर्म ॥ नहुष ह्वै है आयुके सुत नहुषके सुयजाति । होयगो बर तास कीरति लोकमाही ख्याति ॥ होयगो सुयजातिके यदु धर्मवांन महांन। होयगो यदुके सु क्रोताष्टाके बृजिनीवांन ॥पुत्र बृजिनीवानके शुभ होयगो सुउषङ्गु । होहिंगे द्वै पुत्र ताके बली सुभट उतङ्गु ॥ चित्ररथ अरु सूर करि हैं भूरि कीरति पर्म। सूरके सुत होंहिंगे बसुदेव स्वच्छ सधर्म ॥ होंहिंगे वसुदेवके सुत बासुदेव प्रचण्ड। जरासन्धहि जीति करिकै भरो गर्व अखण्ड ॥ महीपालनकों सकें कुडवाय देहैं सर्व। जीति सको है नाहि कोउ तिन्हें सबल अखर्व ॥ ब्राह्मणनको करै गो सो नित्यही सतकार। महा दाता होयगो बर बीर्य्यवांन सुदार ॥ शूरसेन सुदेशमे उत्पन्न ह्वैके पर्म । द्वारिकामे जाय बसि भू पालिहै सह धर्म ॥ ताहि ह्वैके प्राप्त पूजा करोगे तुम तास। स्वच्छ चितसों सुनव पढिकै भरे भूरि हुलास ॥ किएँ दरशन हमारो औ बिधाताको औंन। होतहै फल तास दरशन किएँ ह्वैहैं तौंन ॥ बासुदेव सु कृपा जापै करैंगे अभिराम। कृपा जापै करैंगे सब देवता अतिमाम ॥ शरणमे बसुदेव बन्दनके रहै गो औंन। कीर्ति जय अरु आयुकों जन प्राप्त ह्वैहै तौंन ॥ धर्मको उपदेश कारक होयगो अरु पर्म। धर्महीने दुष्टे गो स्त छोडि सर्व कुकर्म ॥ कोटि ऋषि उत्पन्न करिहैं बासुदेव समर्थ । बृद्धि कोजै धर्मकी अरु प्रजाके हित अर्थ ॥ गन्धमादन स्वच्छ पर्वतमाहि परम सुडार। रहैंगे ऋषि सर्व ते बर सहित सनत्कुमार॥ श्रेष्ठ ब्रत वसुदेव सुतको एक ह्वै है स्वच्छ। सुनहु तुमकों कहतहौं मै परम तौंन प्रतच्छ ॥ पूजिहै जन औंन ताकों पूजिहै सह प्रेम । कूजिहै जन औंन ताकों कूजिहै सहनेम ॥ देखिहै जन औंन ताको देखिहै सह प्रीति । लेखिहै जन औंन ताकों लेखिहै सह नीति ॥ करैगो सनमान जो सनमान करिहै तास। प्रेम करिहै औंन तापै प्रेम करिहै आस ॥ औ सुनो जो रहैगो जन तासु सेवामाहि। कबहु कौनहु लोकमे भय तौ लहिहै नाहि॥नमस्कार सुकरतहौं मै नित्य नित्यहि ताहि।सुनहु तातें तुमहु राखो तास ध्यान सदाहि॥ होहिंगे बलदेवताके श्रेष्ठ भ्राता पर्म। चक्र लाङ्गल धरैं गे ते दुयो बन्धु सधर्म॥ *॥ दोहा ॥ *
कह्यो महातिम बर्णि इम बासुदेवको स्वच्छ। अति पावन आनंदकरि ऋषिबर तुम्हें प्रतच्छ ॥
स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञानुगामिना श्रीवन्दीजनकाशीवासि रघुनाथकवीश्वरात्मजगोकुलनाथस्यात्मजगोपीनाथस्यशिष्येण मणिदेवेनकविनाविरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणि दानधर्मे बासुदेवमाहात्म्येएकोनविंशत्यधिकशततमोऽध्यायः ॥ **

आ०प०
दा०ध०

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

तदनन्तर ऋषि सर्व नौमि नौरि सह शङ्करहि । आनंद भरे अखर्व तीर्थ करनकों जात भे ॥
ए मुहृदिनके वैन मधुसूदन सुनिके परम । वर आनंदके ऐन पूजत भए ऋषीशकों ॥
तब ऋषि मतिवर सर्व कहत भए इमि कृष्णकों । सदा दयालु अखर्व दर्शन हमकों दीजिए ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

जैसी हमकों लालसा तव दरशनकी पर्म । स्वर्गहु की तैसी नहीं हमकों नाथ सशर्म ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

कह्यो महातिम जौन शम्भु वर्णिके आपुको । परम सत्यहे तौन सुनहु कृष्ण आनंदकर ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

जो कछु तीनोलोकमे सो जानत हो सर्व । अविदित तुमसो है न कछु करुणासिन्धु अखर्व ॥
पुत्र तुम्हारे होय गो तुमहि सदृश अभिराम । स्वच्छकीर्ति कर दक्ष वर परम प्रभाको धाम ॥

॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥ सोरठा ॥ ॥

इमि कहिकै ऋषि सर्व करि प्रणाम श्रीकृष्णकों । आनद भरे अखर्व जात भए निज धामको ॥
जात भए श्रीकृष्ण ह्व द्वारावतिकों भूप ॥ सुनहु युधिष्ठिर प्रश्नवर बक्ता सत्य अनूप ॥
पूर्ण भएँ दश मास वर पुत्र परम अभिराम । रुक्मिणि माहों होत भो शूर तेजको धाम ॥
तास नाम प्रद्युम्न वर धरत भए सह प्रेम । सब भूतनमे प्राप्त सो रहत सदाहि सक्षेम ॥
शरणमाहि श्रीकृष्णकी तुम हो रहत सदाहि । यातें तुम नृप धन्य हो तुमसो कोऊ नाहि ॥
कीरति लक्ष्मी धैर्य्य अरु स्वर्गमार्ग अभिराम । जहां कृपा श्रीकृष्णकी तहां सर्व ए आम ॥

॥ * ॥ पद्धरीछन्द ॥ * ॥

तेतीस कोटि सुर वर विशाल । कृष्णहि तु जानि सुनु भूमि पाल ॥ आनन्द रूप हरि आदि देव । जानत न तास कोऊ सुभेव ॥ सब लोकनाथ आनन्दरूप । सर्वत्र तास महि है अनूप ॥ तिहिको सु नाम अघ हरत उद्ध । आनन्द देत करि चित्त शुद्ध ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ *✿*✿

तेकों कृष्णहि जय दई अरु वर कीर्ति ललाम । सुनहु युधिष्ठिर धर्मधर परम मनीषाधाम ॥
जहां कृष्णको है कृपा तहां सर्व आनन्द । यामे संशय है नहीं सुनु धरमज्ञ नरेंद्र ॥

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

तुम सु प्रतिज्ञा पालनमाहि । रहत निरत हो भूप सदाहि ॥ धारे कोमल रहत सुभाव । करत न कबहूँ क्रोधको दाव ॥ दुर्योधन आदिक महिपाल । मारे तिनहैं युद्धमे काल ॥ काल समान और बलवान । कोऊ है नहि नृप सुजान ॥ मरे समरमाहो हैं जौन । तिनको शोक करहु न बुधिभौन ॥ शिव गौरीको जो सम्वाद । सुन्यो पूर्व तें कोडि प्रमाद ॥ रहो धरें ताको हियमाहि

सुनऊँ युधिष्ठिर भूप सदाहि॥ पढि है अरु सुनि है अस जौन। तिहि सम्वाद हि प्रश्नाभौन॥ लहि है तौन परम कल्याण। ह्वैहै नहि कबहूँ दुखवान॥ ह्वैहैं सर्व कामना सिद्धि। भरी रहैगी गृह मे रिद्धि॥ भूमे करिकै धर्म सचाय। लहिहै मोद स्वर्गमे जाय॥ यहिमे है नहि संशय भूप। वर धर्मोक्ष सु प्रश्न अनूप॥ गहिकै नीति देत जे दण्ड। पालत प्रजा सप्रीति अखण्ड॥ ते नृप जात स्वर्गके माहि। निश्चय याने संशय नाहि॥ तातें पालऊ प्रजा सधर्म।गहिकै नीतिहि भूपति धर्म॥ ग्रा०५० दा०५०

॥ * ॥ मयूरमालिनीछन्द ॥ * ॥

वासुदेव बाल भावहोमे। ज्ञातिके सुरक्षणार्थ जौने॥ क्रोधकै महान कंस माऱ्यो। सर्व दुःख तात को निकाऱ्यो॥ धर्म और कर्म कीन्ह जेते। है कहे न जात सर्व तेते॥ धन्य लोक माहि जीव ते हैं॥ तास मर्णमे रहैं सु जे हैं॥ ❦*❦*❦ ॥ * ॥ दोहा॥ * ॥ ❦*❦*❦*❦*❦

ऐसे हे श्रीकृष्ण ते सखा तिहारे भूप। तिहितें निश्चय पायहौ आनंद परम अनूप॥

॥ वैशम्पायनउवाच। * ॥ धरणिमण्डनछन्द ॥ * ॥

मुनिसुबैन तातके महा।धर्मनन्दन कछू कहा॥परम उक्तमोदकों लहा। कृष्णकी सुप्रीतिको गहा॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

धृतराष्ट्रादिक सर्व अति विस्मयकों प्राप्त ह्वै। गहिकै प्रीति अखर्व पूजि पाणि जोरत भए॥

॥ * ॥ अरिलछन्द ॥ * ॥

तिनिहिं नारदादिक ऋषि मतिवर। भीषमके सुनि बैन सु मुदकर॥ कृष्णहि पूजत भए सचावन। पढिकै बहु विधि सुतव सुहावन॥ *❦* ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ ❦*❦*❦*❦

पुनि भीषमकों कहत मे कुन्तीसुत इमि बैन। कहौ महामति फेरि तुम हरिको वर बुधिऐन॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशीवासिरघुनाथकवीश्वरात्मजगोकुलनाथस्यात्मजगोपीनाथस्य मित्रेण मणिदेवेन कविना विरचित भाषायां महाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणि दानधर्मे श्रीकृष्णमाहात्म्ये विंशत्यधिकशततमोऽध्यायः॥

॥ * ॥ वैशम्पायन उवाच ॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

नृप युधिष्ठिर सुनिकै धर्म। अरु पावन सुनि सुतव अभर्म॥ फेरि पितामहकों इमि बैन। कहते भए मनीषा ऐन॥ *❦*❦ ॥ * ॥ युधिष्ठिर उवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ *❦*❦*❦

मुख्यदेवता कौन है लोकमाहि अभिराम। अरु सुपरायण है कहा कहौ मोहि बुधिधाम॥

किहिकों अरचें औ पढें किहिकी स्तुति सु अनूप। प्राप्तहोहि कल्याणकों मानव कहिए भूप॥

सब धर्मनमे परम तुम जानतहौ को धर्म। अरु सुजपे का जन्मसों रहित होहि अन धर्म॥

पाण्डवके ए वचन सुनि गङ्गासुत मतिमान। कहत भए इमि वीरवर धरिकै हर्ष महान॥

भा०प० ॥ ❀ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ❀ ॥ हरगीतीछन्द ॥ ❀ ॥ [illegible]
दा०ध० [illegible]के प्रभु हेतव [illegible] । [illegible]कों [illegible] ॥ [illegible]
सबके महेश्वर विष्णु आनंदधाम । सुनिसु तिनकी विरद कृत [illegible] ॥ विष्णुही है
सर्वके उत्पत्ति धाम नरेश । पूजिवेके भाव तेहे योग्य परम [illegible] ॥ [illegible] तिनकी
सुतिसुधीको जाँन । सर्व धर्मन माहि इनको अधिक धर्म सुजान ॥ [illegible] विष्णुही है
जानु । पावननके परम पावन और मति अनुमानु ॥ सर्व भूतनके पिता हैं [illegible] रचित अनूप ।
मङ्गलनमे परम मङ्गल विष्णुही हैं भूप ॥ विष्णुहीतें होतहैं [illegible] भूतन [illegible] । विष्णुहीतें होत
प्रापित प्रलय माहि अखर्व ॥ सुनऊनाम सहस्र तिनको पापभयको [illegible] । [illegible] हैं जे ते । छि
भूमि परम आनन्दकर्ण ॥ ✻ ✻ ✻ ✻ ✻ ✻ ✻ ✻ ✻ ✻

विश्वं विष्णुर्वषट्कारो भूतभव्यभवत्प्रभुः । भूतकृद्भूतभृद्भावो भूतात्मा भूतभावनः ॥ पूतात्मा परमात्मा च मुक्तानां परमागतिः । अव्ययः पुरुषः साक्षी क्षेत्रज्ञोऽक्षर एव च ॥ योगो योगविदां नेता प्रधानपुरुषेश्वरः । नरसिंहवपुः श्रीमान् केशवः पुरुषोत्तमः ॥ सर्वः शर्वः शिवः स्थाणुर्भूतादिर्निधिरव्ययः । संभवो भावनो भर्त्ता प्रभवः प्रभुरीश्वरः ॥ स्वयंभूः शंभुरादित्यः पुष्कराक्षो महास्वनः । अनादिनिधनो धाता विधाता धातुरुत्तमः ॥ अप्रमेयो हृषीकेशः पद्मनाभोऽमरप्रभुः । विश्वकर्मा मनुस्त्वष्टास्थविष्ठस्थविरोध्रुवः ॥ अग्राह्यः शाश्वतः कृष्णो लोहिताक्षः प्रतर्दनः । प्रभूतस्त्रिककुद्धाम पवित्रं मङ्गलं परं ॥ ईशानः प्राणदः प्राणो ज्येष्ठः श्रेष्ठः प्रजापतिः । हिरण्यगर्भो भूगर्भो माधवो मधुसूदनः ॥ ईश्वरो विक्रमी धन्वी मेधावी विक्रमः क्रमः । अनुत्तमो दुराधर्षः कृतज्ञः कृतिरात्मवान् ॥ सुरेशः शरणं शर्म विश्वरेताः प्रजाभवः । अहः संवत्सरो व्यालः प्रत्ययः सर्वदर्शनः ॥१०॥
अजः सर्वेश्वरः सिद्धः सिद्धिः सर्वादिरच्युतः । वृषाकपिरमेयात्मा सर्वयोगविनिःसृतः ॥ वसुर्वसुमनाः सत्यः समात्मा सम्मितः समः । अमोघः पुण्डरीकाक्षो वृषकर्मा वृषाकृतिः ॥ रुद्रो बहुशिरा बभ्रुर्विश्वयोनिः शुचिश्रवाः । अमृतः शाश्वतस्थाणुर्वरारोहो महातपाः ॥ सर्वगः सर्वविद्भानुर्विष्वक्सेनो जनार्दनः । वेदोवेदविदव्यंगोवेदांगोवेदवित्कविः ॥ लोकाध्यक्षः सुराध्यक्षो धर्माध्यक्षः कृताकृतः । चतुरात्मा चतुर्व्यूहश्चतुर्दंष्ट्रश्चतुर्भुजः ॥ भ्राजिष्णुर्भोजनं भोक्ता सहिष्णुर्जगदादिजः । अनघो विजयो जेता विश्वयोनिः पुनर्वसुः ॥ उपेंद्रो वामनः प्रांशुरमोघः शुचिरूर्जितः । अतीन्द्रः संग्रहः सर्गो धृतात्मा नियमो यमः ॥ वेद्यो वैद्यः सदा योगी वीरहा माधवो मधुः । अतीन्द्रियो महामायो महोत्साहो महाबलः ॥ महाबुद्धिर्महावीर्यो महाशक्तिर्महाद्युतिः । अनिर्देश्यवपुः श्रीमानमेयात्मा महाद्रिधृक् ॥ महेष्वासो महीभर्ता श्रीनिवासः सतांगतिः । अनिरुद्धः सुरानन्दो गोविन्दो गोविदां पतिः ॥ मरीचिर्दमनो हंसः सुपर्णो भुजगोत्तमः ॥२०॥ हिरण्यनाभः सुतपाः पद्मनाभः प्रजापतिः ॥ अमृत्युः सर्वदृक् सिंहः संधाता सन्धिमान् स्थिरः । अजो दुर्मर्षणः शास्ता विश्रुतात्मा सुरारिहा ॥

गुरुर्गुरुतमोधाम सत्यः सत्यपराक्रमः । निमिषोऽनिमिषः स्रग्वी वाचस्पतिरुदारधीः ॥ अग्रणी
ग्रामणीः श्रीमान्न्यायो नेता समीरणः । सहस्रमूर्द्धा विश्वात्मा सहस्राक्षः सहस्रपात् ॥ आवर्तनो ग्रा०प०
निवृत्तात्मा संवृतः संप्रमर्दनः । अहः संवर्त्तकोवह्निरनिलो धरणीधरः ॥ सुप्रसादः प्रसन्नात्मा दा०ध०
विश्वधृग्विश्वभुग्विभुः । सत्कर्ता सत्कृतः साधुर्जह्नुर्नारायणोनरः ॥ असंख्येयोऽप्रमेयात्मा विशिष्टः
शिष्टकृच्छुचिः । सिद्धार्थः सिद्धसङ्कल्पः सिद्धिदः सिद्धिसाधनः ॥ वृषाही वृषभो विष्णुर्वृषपर्वा
वृषोदरः । वर्धनो वर्धमानश्च विविक्तः श्रुतिसागरः ॥ सुभुजो दुर्द्धरो वाग्मी महेन्द्रो वसुदोवसुः नैक
रूपो बृहद्रूपः शिपिविष्टः प्रकाशनः ॥ ओजस्तेजोद्युतिधरः प्रकाशात्मा प्रतापनः । ऋद्धः स्पष्टाक्षरो
मंत्रश्चन्द्रांशुर्भास्करद्युतिः ॥ अमृतांशूद्भवो भानुः शशबिन्दुः सुरेश्वरः । औषधं जगतः सेतुः सत्यधर्म
पराक्रमः ॥ भूतभव्यभवन्नाथः पवनः पावनोऽनलः । कामहा कामकृत् कान्तः कामः कामप्रदः
प्रभुः ॥ युगादिकृद्युगावर्तो नैकमायो महाशनः । अदृश्यो व्यक्तरूपश्च सहस्रजिदनन्तजित् ॥
इष्टोविशिष्टः शिष्टेष्टः शिखण्डी नहुषोवृषः । क्रोधहा क्रोधकृत्कर्ता विश्वबाहुर्महीधरः ॥
अच्युतः प्रथितः प्राणः प्राणदोवासवानुजः । अपांनिधिरधिष्ठानमप्रमत्तः प्रतिष्ठितः ॥ ३०० ॥
स्कन्दःस्कन्दधरोधुर्य्यो वरदो वायुवाहनः । वासुदेवो बृहद्भानुरादिदेवः पुरन्दरः ॥ अशोकस्तारण
स्तारः शूरः शौरिर्जनेश्वरः । अनुकूलः शतावर्त्तः पद्मी पद्मनिभेक्षणः ॥ पद्मनाभोरविन्दाक्षः पद्म
गर्भः शरीरभृत् । महर्द्धिरृद्धो वृद्धात्मा महाक्षोगरुडध्वजः ॥ अतुलः शरभो भीमः समयज्ञो
हविर्हरिः । सर्वलक्षणलक्षण्यो लक्ष्मीवान् समितिञ्जयः ॥ विक्षरोरोहितो मार्गोहेतुर्दामोदरः
सहः । महीधरो महाभागो वेगवानमिताशनः ॥ उद्भवः क्षोभणो देवः श्रीगर्भः परमेश्वरः । करणं
कारणंकर्त्ता विकर्त्ता गहनोगुहः ॥ व्यवसायो व्यवस्थानः संस्थानः स्थानदोध्रुवः । परर्द्धिः परमः
स्पष्टः स्तुष्टःपुष्टः शुभेक्षणः ॥ रामोविरामोविरतोमार्गोनेयोनयोनयः । वीरः शक्तिमतां श्रेष्ठो
धर्मो धर्मविदुत्तमः ॥ वैकुण्ठः पुरुषः प्राणः प्राणदः प्रणवः पृथुः । हिरण्यगर्भः शत्रुघ्नो व्याप्तो वायुरधो
क्षजः ॥ ऋतुःसुदर्शनः कालः परमेष्ठी परिग्रहः । उग्रः सम्वत्सरो दक्षो विश्रामो विश्वदक्षिणः ॥ ४०० ॥
विस्तारःस्थावरः स्थाणुः प्रमाणं बीजमव्ययं । अर्थोऽनर्थोमहाकोशोमहाभोगो महाधनः ॥
अनिर्विण्णःस्थविष्ठोभूर्धर्मयूपो महामखः । नक्षत्रनेमिर्नक्षत्री क्षमः क्षामः समीहनः ॥ यज्ञइज्यो
महेज्यश्च क्रतुः सत्रं सतां गतिः । सर्वदर्शी विमुक्तात्मा सर्वज्ञोज्ञानमुत्तमं ॥ सुव्रतः सुमुखः सूक्ष्मः
सुघोषः सुखदः सुहृत् । मनोहरो जितक्रोधोवीरबाहुर्विदारणः ॥ स्वापनः स्ववशोव्यापी
नैकात्मा नैककर्मकृत् । वत्सरो वत्सलो वत्सी रत्नगर्भोधनेश्वरः ॥ धर्मगुप् धर्मकृद्धर्मी सदसत्
क्षरमक्षरं । अविज्ञाता सहस्रांशुर्विधाता कृतलक्षणः । गभस्तिनेमिः सत्त्वस्थः सिंहोभूतमहेश्वरः ।
आदिदेवो महादेवो देवेशोदेवभृद्गुरुः उत्तरो गोपतिर्गोप्ता ज्ञानगम्यः पुरातनः शरीरभूतभृद्भोक्ता

आ०प० कपीन्द्रोभूरिदक्षिणः ॥ सोमपोऽमृतपः सोमः पुरुजित्पुरुसत्तमः । विनयो जयः सत्यसन्धो
दा०ध० दाशार्हः सात्वतां पतिः ॥ ५००॥ जीवो विनयिता साक्षी मुकुन्दोऽमितविक्रमः । अम्भोनिधिरनन्तात्मा
महोदधिशयोऽन्तकः ॥ अजो महार्हः स्वाभाव्यो जितामित्रः प्रमोदनः । आनन्दो नन्दनो नन्दः
सत्यधर्मा त्रिविक्रमः ॥ महर्षिः कपिलाचार्यः कृतज्ञो मेदिनीपतिः । त्रिपदस्त्रिदशाध्यक्षो महाशृङ्गः
कृतान्तकृत् ॥ महावराहो गोविन्दः सुषेणः कनकाङ्गदी । गुह्यो गभीरो गहनो गुप्तश्चक्रगदाधरः ॥
वेधाः स्वाङ्गोऽजितः कृष्णो दृढः सङ्कर्षणोऽच्युतः । वरुणो वारुणो वृक्षः पुष्कराक्षो महामनाः ॥ भगवान्
भगहा नन्दी वनमाली हलायुधः । आदित्यो ज्योतिरादित्यः सहिष्णुर्गतिसत्तमः ॥ सुधन्वा खण्डपर
शुर्दारुणो द्रविणप्रदः । दिवस्पृक् सर्वदृग्व्यासो वाचस्पतिरयोनिजः ॥ त्रिसामा सामगः साम निर्वाणं
भेषजं भिषक् । संन्यासकृच्छमः शान्तो निष्ठा शान्तिः परायणः ॥ शुभाङ्गः शान्तिदः स्रष्टा कुमुदः कुव
लेशयः । गोहितो गोपतिर्गोप्ता वृषभाक्षो वृषप्रियः ॥ अनिवर्त्ती निवृत्तात्मा संक्षेप्ता क्षेमकृच्छिवः ।
६०० श्रीवत्सवक्षाः श्रीवासः श्रीपतिः श्रीमतांवरः ॥ श्रीदः श्रीशः श्रीनिवासः श्रीनिधिः श्रीविभावनः ।
श्रीधरः श्रीकरः श्रेयः श्रीमान् लोकत्रयाश्रयः ॥ स्वक्षः स्वङ्गः शतानन्दो नन्दिर्ज्योतिर्गणेश्वरः । विजि
तात्मा विधेयात्मा सत्कीर्तिश्छिन्नसंशयः ॥ उदीर्णः सर्वतश्चक्षुरनीशः शाश्वतस्थिरः । भूशयो भूषणो
भूतिर्विशोकः शोकनाशनः ॥ अर्चिष्मानर्चितः कुम्भो विशुद्धात्मा विशोधनः । अनिरुद्धोऽप्रतिरथः
प्रद्युम्नोऽमितविक्रमः ॥ कालनेमिनिहा शौरिः शूरः शूरजनेश्वरः ॥ त्रिलोकात्मा त्रिलोकेशः केशवः केशि
हा हरिः ॥ कामदेवः कामपालः कामी कान्तः कृतागमः । अनिर्देश्यवपुर्विष्णुर्वीरोऽनन्तो धनञ्जयः ॥
ब्रह्मण्यो ब्रह्मकृद्ब्रह्मा ब्रह्म ब्रह्मविवर्द्धनः । ब्रह्मविद्ब्राह्मणो ब्रह्मी ब्रह्मज्ञो ब्राह्मणप्रियः ॥ महा
क्रमो महाकर्मा महातेजा महोरगः । महाक्रतुर्महायज्वा महायज्ञो महाहविः ॥ स्तव्यः स्तवप्रियः
स्तोत्रं स्तुतिः स्तोता रणप्रियः । पूर्णः पूरयिता पुण्यः पुण्यकीर्तिरनामयः ॥ मनोजवस्तीर्थकरो वसुरेता
वसुप्रियः । वसुप्रदो वासुदेवो वसुर्वसुमना हरिः ॥ ७०० सद्गतिः सत्कृतिः सत्ता सद्भूतिः सत्परायणः ।
शूरसेनो यदुश्रेष्ठः सन्निवासः सुयामुनः ॥ भूतावासो वासुदेवः सर्वासुनिलयोऽनलः । दर्पहा दर्पदो
दृप्तो दुर्द्धरोऽथापराजितः ॥ विश्वमूर्तिर्महामूर्तिर्दीप्तमूर्तिरमूर्तिमान् । अनेकमूर्तिरव्यक्तः शतमूर्तिः
शताननः ॥ एकोनैकः सवः कः किं यत्तत्पदमनुत्तमं । लोकबन्धुर्लोकनाथो माधवो भक्तवत्सलः ॥
सुवर्णवर्णो हेमाङ्गो वराङ्गश्चन्दनाङ्गदी । वीरहा विषमः शून्यो घृताशीरचलश्चलः ॥ अमानी
मानदो मान्यो लोकस्वामी त्रिलोकधृक् । सुमेधा मेधजो धन्यः सत्यमेधा धराधरः ॥ तेजो वृषो
द्युतिधरः सर्वशस्त्रभृतांवरः । प्रग्रहो निग्रहो व्यग्रो नैकशृङ्गो गदाग्रजः ॥ चतुर्मूर्तिश्चतुर्बाहुश्चतुर्व्यू
हश्चतुर्गतिः ॥ चतुरात्मा चतुर्भावश्चतुर्वेदविदेकपात् ॥ समावर्तो निवृत्तात्मा दुर्जयो दुरतिक्रमः ॥ दुर्लभो
दुर्गमो दुर्गो दुरावासो दुरारिहा ॥ शुभाङ्गो लोकसारङ्गः सुतन्तुस्तन्तुवर्द्धनः । इन्द्रकर्मा महाकर्मा
कृतकर्मा कृतागमः ॥ उद्भवः सुन्दरः ८०० सुन्दो रत्ननाभः सुलोचनः ॥ अर्को वाजसनः शृङ्गी जयन्तः

सर्वविज्जयी ॥ सुवर्णबिन्दुरक्षोभ्यः सर्ववागीश्वरेश्वरः । महाह्रदो महागर्त्तो महाभूतो महानिधिः ॥ शा०प०
कुमुदः कुन्दरः कुन्दः पर्जन्यः पवनोऽनिलः । अमृतांशोऽमृतवपुः सर्वज्ञः सर्वतोमुखः ॥ सुलभः दा०ध०
सुव्रतः सिद्धः शत्रुजिच्छत्रुतापनः । न्यग्रोधोदुम्बरोऽश्वत्थश्चाणूरान्ध्रनिषूदनः ॥ सहस्रार्चिः सप्त
जिह्वः सप्तैधाः सप्तवाहनः । अमूर्तिरनघोऽचिन्त्यो भयकृद्भयनाशनः ॥ अणुर्बृहत्कृशः स्थूलोगुण
भृन्निर्गुणोमहान् । अधृतः स्वधृतः स्वास्यः प्राग्वंशोवंशवर्द्धनः ॥ भारभृत्कथितो योगी योगीशः
सर्वकामदः । आश्रमः श्रमणः क्षामः सुपर्णोवायुवाहनः ॥ धनुर्धरोधनुर्वेदोदण्डो दमयिता दमः
अपराजितः सर्वसहोनियन्ता नियमोयमः ॥ सत्ववान् सात्विकःसत्यः सत्यधर्मपरायणः । अभि
प्रायप्रियार्होऽर्हः प्रियकृत्प्रीतिवर्द्धनः ॥ विहायसगतिर्ज्योतिः सुरुचिर्हुतभुग्विभुः । रवि
र्विरोचनः सूर्यः सविता रविलोचनः ॥ अनन्तोहुतभुग्भोक्ता सुखदोनैकजोऽग्रजः । अनिर्विण्णः
सदामर्षी लोकाधिष्ठानमद्भुतः ॥ ९०० सनात्सनातनतमः कपिलः कपिरव्ययः । स्वस्तिदः स्वस्ति
कृत्स्वस्तिःस्वस्तिभुक् स्वस्तिदक्षिणः ॥ अरौद्रःकुण्डली चक्री विक्रम्यूर्जितशासनः । शब्दातिगः
सर्वसहः शिशिरःशर्वरीकरः ॥ अक्रूरः पेशलोदक्षो दक्षिणः क्षमिणाम्बरः । विद्वत्तमो वीतभयः
पुण्यश्रवणकीर्त्तनः ॥ उत्तारणो दुष्कृतिहा पुण्यो दुःस्वप्ननाशनः । वीरहारक्षणः सन्तो जीवनः
पर्य्यवस्थितः ॥ अनन्तरूपोऽनन्तश्रीर्जितमन्युर्भयापहः । चतुरश्रोगभीरात्मा विदिशोव्यादि
शोदिशः ॥ अनादिर्भूर्भुवोलक्ष्मीः सुवीरोरुचिराङ्गदः । जननोजनजन्मादिर्भीमोभीमपराक्रमः ॥
आधारनिलयो धाता पुष्पहासः प्रजागरः । ऊर्द्धगः सत्पथाचारः प्राणदः प्रणवः पणः ॥
प्रमाणं प्राणनिलयः प्राणभृत्प्राणजीवनः । तत्वं तत्वविदेकात्मा जन्ममृत्युजरातिगः ॥ भूर्भुवः
स्वस्तरुस्तारः सविता प्रपितामहः । यज्ञोयज्ञपतिर्यज्वा यज्ञाङ्गोयज्ञवाहनः ॥ यज्ञभृद्यज्ञकृद्यज्ञी
यज्ञभुग्यज्ञसाधनः । यज्ञान्तकृद्यज्ञगुह्यमन्नमन्नाद एवच ॥ आत्मयोनिः स्वयंजातो वैखानः साम
गायनः । देवकीनन्दनः स्रष्टा क्षितीशः पापनाशनः ॥ शङ्खभृन्नन्दकी चक्री शार्ङ्गधन्वागदाधरः ।
रथाङ्गपानिरक्षोभ्यः सर्वप्रहरणायुधः १००० ॥ इतिश्रीविष्णुसहस्रनाम सम्पूर्णं ॥ *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

यह जो नाम सहस्र है केशवको अभिराम । तिहिकों पढि है जौन अरु सुनि हैं जो बुधिधाम ॥
इहुँ लोकमें अशुभकों नहिं हैं प्राप्त न तौन । यामें संशय है नहीं सुनऊ तात बुधिभौन ॥
पढि है सुनि हैं याहि जो ब्राह्मण परम अनूप । वेदवान सो होय गो निश्चय जानऊ भूप ॥
क्षत्री चाहि है विजयको वैश्य द्रव्य अतिमान । शूद्र होत आनन्दकों प्राप्त सुनऊ बुधिवान ॥
चाहत जे जन धर्मकों धर्म लहत ते भाव । अर्थ चहत ते अर्थको पावत बुद्धि [illegible] ॥
अरु कामीजन कामको प्राप्त होत हैं भूप । सन्तति चाहत मनुज ते सन्तति लहत अनूप ॥

शा॰प॰
दा॰ध॰

॥ * ॥ मधुभारछन्द ॥ * ॥

हरिमाहि लाय । प्रीतिहि सचाय ॥ निति पठत जौन । बर बुद्धिभौन ॥ यश लहत लक्ष । अति होत दक्ष । अचला अनूप । श्रिय लहत भूप ॥ भय होत नांहि । कब होऊँ पांहि ॥ बाढत सुवीर्य्य। अति लहत धीर्य्य॥ कबहूँ न होत। रजको उदोत॥ बल औ सुरूप। पावत अनूप॥ द्युतिमान पर्म । होत सु सधर्म ॥ अरु ज्ञातिमांह । सुनु भूमिनांह ॥ होत सु प्रधान। बर सुमतिमान ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ ॥

बँधो होय जन जौन सो बन्धनतें छूटत है। सुनऊँ तात बुधिभौन रोगी छूटत रोगसों ॥
छूटत हैं भयवान भयसों निश्चय भूपबर। मनुज आपदावान आपदसा सो छुटत है ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

बासुदेवके भक्त ते अशुभ लहत कबहू न। पावत हैं परमा महत आनँद दिन दिन दून ॥
जन्म जरा अरु मृत्युको तिनिहिं व्याधिको पर्म। भय नहिं प्रापत होत है सुनु बर भूप सधर्म ॥
इति श्रीविष्णु सहस्रनाम माहात्म्यं ॥ * ॥ युधिष्ठिर उवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ *
सुनऊँ पितामह प्राज्ञबर सर्वशास्त्रबिद पर्म। कौन जपैं जप धर्मफल जन निति लहत अभर्म ॥

॥ * चरणा दोहा ॥ * ॥

देवकर्म अरु पितरकर्मने अरु प्रवेसने तात। औ तिनिहो प्रस्थानमें कहा जपै अवदात ॥

॥ * ॥ हंसादोहा ॥ * ॥

अरु अरिनाशन कौन जप अरु भयनाशन कौन। कहौ मोहि अवगाहि कै सुनऊँ तात बुधिभौन
कह्यो व्यासको मंत्र है तोहि कहत हौं तौन। थिरि करि कै मन सुनऊ तुम भूप मनीषाभौन ॥
मनुज सुनें जिहि मंत्रको रहित पापसों होत। महत आयुको लहत अरु मुदको लहत उदोत ॥

॥ * ॥ अथसावित्री ॥ * ॥ नमो वशिष्ठाय महाव्रताय पराशरं वेदनिधिं प्रणम्य। नमोऽस्त्वनन्ताय महोरगाय नमोऽस्तु सिद्धेभ्य इहाक्षयेभ्यः ॥ नमोऽस्त्वृषिभ्यः परमं परेषां देवेषु देवा वरदं वराणाम्। सहस्रशीर्षाय नमः शिवाय सहस्र नामाय जनार्दनाय ॥ अजैकपादहिर्बुध्न्यः पिनाकी चापराजितः। ऋतुश्च पितृरूपश्चत्र्यम्बकश्च सुरेश्वरः ॥ वृषाकपिश्च शम्भुश्च हवनोऽथेश्वरस्तथा। एकादशैते प्रथिता रुद्रास्त्रिभुवनेश्वराः ॥ शतमेतत्समाम्नातं शतरुद्रे महात्मनाम्। अंशो भगश्च मित्रश्च वरुणश्च जलेश्वरः ॥ तथा धातार्य्यमा चैव जयन्तोभास्करस्तथा। त्वष्टा पूषा तथैवेन्द्रो द्वादशो विष्णुरुच्यते ॥ इत्येते द्वादशादित्याः काश्यपेया इतिप्रभो। धरो ध्रुवश्च सोमश्च सावित्रोऽथवि लोचनः ॥ प्रत्यूषश्च प्रभासश्च वसवोऽष्टौ प्रकीर्तिताः। नासत्यश्चापि दस्रश्च स्मृतौ द्वावश्विनावपि ॥ मार्तण्डस्यात्मजावेतौ संज्ञानासाविनिर्गतौ। अतःपरं प्रवक्ष्यामि लोकानां कर्मसाक्षिणः ॥ अपि यज्ञस्य वेत्तारो दत्तस्य सुकृतस्य च। अदृश्याः सर्वभूतेषु पश्यन्ति त्रिदशेश्वराः ॥ शुभाशुभानि

कर्म्माणि मृत्युः कालश्च सर्वशः । विश्वेदेवाः पितृगणा मूर्तिमन्त स्तपोधनाः ॥ मुनयश्चैव सिद्धाश्च आ०प०
तपोमोक्षपरायणाः । शुचिस्मिताः कीर्तयतां प्रयच्छन्ति शुभं नृणाम ॥ प्रजापतिकृतानेतांल्लो दा०ध०
कान्दिव्येनतेजसा । वसन्ति सर्वलोकेषु प्रयताः कर्मकर्मसु ॥ प्राणानामीश्वरानेतान्कीर्तयन्प्रयतो
नरः।धर्मार्थकामैर्विपुलैर्युज्यते सहनित्यशः॥ लोकांश्चलभते पुण्यान्विश्वेश्वरकृतान् शुभान्।एतेदे
वास्त्रयस्त्रिंशत् सर्वभूतगणेश्वराः॥ नन्दीश्वरो महाकायो ग्रामणीर्वृषभध्वजः। ईश्वराः सर्वलोकानां
गणेश्वरविनायकाः ॥ सौम्यारौद्रागणाश्चैवयोगभूतगणास्तथा । ज्योतींषि सरितोव्योमसुपर्णाः पन्नगे
श्वरः ॥ पृथिव्यान्तपसासिद्धास्थावराश्चचराश्चह । हिमवानादयः सर्वे चत्वारश्चमहार्णवाः॥भवस्या
नुचराश्चैव हरतुल्यपराक्रमाः । विष्णुर्देवोथ जिष्णुश्च स्कन्दश्चाविकृत्यासह ॥ कीर्तयन्प्रयतः सर्वा
न्सर्वपापैः प्रमुच्यते ।अतऊर्ध्वं प्रवक्ष्यामि मानवानृषिसत्तमान्।यवक्रीतश्चरैभ्यश्च अर्वावसुपरावसू ।
औषिजश्चैवकक्षीवान्वलश्चाङ्गिरसः सुतः ॥ ऋषेर्मेधातिथेः पुत्रः कण्वो बर्हिषदस्तथा । ब्रह्मतेजो
मयासर्वे कीर्तितालोकभावनाः ॥लभन्तेहि शुभंसर्वं रुद्रानेकवसुप्रभाः। भुवि कृत्वा शुभंकर्म मोदंते
दिविदैवतैः॥ महेन्द्राः गुरवःसप्तप्राचींवैदिशमाश्रिताः।प्रयतः कीर्तयन्नेतां शक्रलोके महीयते॥उन्मुचुः
प्रमुचुश्चैव स्वस्त्यात्रेयश्चवीर्यवान्। दृढव्यश्चोर्ध्ववाहुश्चतृणसोमाङ्गिरास्तथा ॥ मित्रावरुणयोःपुत्रस्त
थागस्त्यःप्रतापवान् । धर्मराजर्त्विजःसप्तदक्षिणां दिशमाश्रिताः ॥ दृढेयश्च ऋतेयुश्च परिव्याधश्चकीर्ति
मान्।एकतश्चद्वितश्चैवत्रितश्चादित्य संनिभाः॥अत्रेःपुत्रश्च धर्मात्मा ऋषिःसारस्वतस्तथा। वरुणस्यर्त्वि
जःसप्तपश्चिमांदिशमाश्रिताः।अत्रिर्वसिष्ठोभगवान्कश्यपश्चमहानृषिः। गौतमः सभरद्वाजो विश्वामि
त्रोथकौशिकः। ऋचीकतनयश्चोग्रोजमदग्निःप्रतापवान्॥ धनेश्वरस्य गुरवःसप्तेतेउत्तराश्रिताः॥अपरे
मुनयः सप्तदिक्षुसर्वास्वधिष्ठिताः ॥कीर्तिस्वस्तिकरानृणांकीर्तितालोकभावनाः। धर्म्मःकालश्चकाम
श्चवसुर्वासुकिरेवच ॥ अनन्तः कपिलश्चैवसप्तैतेधरणीधराः। रामोव्यासस्तथाद्रौणिरश्वत्थामाच
लोमशः॥ इत्येतेमुनयोदिव्याएकैकः सप्तसप्तधा ।शान्तिस्वस्तिकरालोके दिशांपालाः प्रकीर्तिताः॥
यस्यांयस्यांदिशिह्येतेतन्मुखः शरणंव्रजेत् ।स्रष्टारः सर्वभूतानांकीर्तितालोकपावनाः॥ संवर्तो मेरुसा
वर्णो मार्कण्डेयश्चधार्मिकः।सांख्ययोगीनारदश्चपर्वतश्चमहानृषिः॥ अत्यन्ततपसोदान्तास्त्रिषुलोकेषु
विश्रुताः। अपरेरुद्रसंकाशा कीर्तिताब्रह्मलौकिकाः॥ अपुत्रोलभतेपुत्रंदारिद्रोलभतेधनम् । तथा
धर्मार्थकामेषुसिद्धिञ्चलभतेनरः॥ पृथुवैण्यंनृपवरंपृथ्वीयस्याभवत्सुता। प्रजापतिः सार्वभौमंकीर्तयेद्व
सुधाधिपम्॥ आदित्यवंशप्रभवंमहेन्द्रसमविक्रमं। पुरूरवसमैलंचत्रिषुलोकेषुविश्रुतं॥ बुधस्यदयितं
पुत्रंकीर्तयेद्वसुधाधिपं। त्रिलोकविश्रुतंवीरंभरतंचप्रकीर्त्तयेत्॥ गवामयेनयज्ञेनयेनेष्टंवैकृतेयुगे॥
रन्तिदेवंमहादेवंकीर्तयेत्परमद्युतिं ॥ विश्वजित्तपसोपेतंलक्षण्यंलोकपूजितं । तथाश्वेतंचराजर्षिं
कीर्तयेत्परमद्युतिं॥ सगरस्यात्मजायेनप्लाविताःतारितास्तथा। हुताशनसमानेतान्महारूपान्महौ

९५• स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञानुगामिना श्रीबन्दीजनकाशीवासि
९६• रघुनाथकवीश्वरात्मजगोकुलनाथस्यात्मजगोपीनाथस्य शिष्येण मणिदेवेन कविना विरचिते भाषायां
महाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणि दानधर्मे एकोनवतितमोऽध्यायः ॥ *❁*❁*❁*❁*❁

॥ *॥ चरणादोहा ॥ * ॥

यहि प्रसङ्गमे कहत हौं एक इतिहास अनूप । तामे है वृत्तान्त शपथको सुनऊ युधिष्ठिर भूप ॥

॥ * ॥ अरिलछन्द ॥ * ॥

पश्चिम दिशामाहि नर नायक । तीर्थ प्रभास परम अघ घायक ॥ तामधि आय सुऋषि मिलि मतिवर । करत भए यह मंच सु मुदकर ॥ ❁ ॥ दोहा ॥ ❁ ॥ *❁*❁*❁*❁*❁*

पुण्य मई यह भूमि जो दायक मोद अखर्व । तीरथ जात्राको चलै तामे मिलि कै सर्व ॥

॥ * ॥ चरणाकुलकछन्द ॥ * ॥

भृगु वशिष्ठ गौतम हरषानें । भरे तेजसों परम महानें ॥ शुक्र अङ्गिरा पर्वत नारद । बरत तेजसों रविकी भारद ॥ कवि कश्यप गालव मतिमाना । भरद्वाज अष्टक मुदवाना ॥ बालखिल्य आनंद सों पागे । विश्वामित्र तिमहि अनुरागे ॥ तिमिहि दिलीप नहुष शिविराजा । धुन्धमार पुरु समुद दराजा ॥ नृप ययाति अरु अम्बरीष नर । अधर्मदर निति परम धर्मकर ॥ ए इव इन्द्रहि करि कै आगे । तीरथ करण चले मुद पागे ॥ तीरथ करत करत भूमाही । आए नदी कौशिकी पाही ॥ सविधि स्नान तामाहीं करि कै । गए ब्रह्म सरको मुद धरि कै ॥ करि स्नान तामे बड भागे । कमल कन्दको खोदन लागे ॥❁*❁ ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ ❁*❁*❁*❁*❁*❁*

खोदि खोदिकै कन्द तब धरत भए तटमाहि । तहँ अगस्त्य अपनो लख्यो कन्द लखत भे नाहि ॥

॥ * ॥ चरणाकुलकछन्द ॥ * ॥

तब अगस्त्य चिन्तासों छाए । ऋषि गणको इमि बैन सुनाए ॥ कमलकन्द मेरो किहि लीन्हों । सबमे यह अधर्म किहि कीन्हों ॥चोरीकरण योग्य तुम नाहीं ।सत्य कहत हों ऋषिगण नाहीं॥ तातें कन्द हमारो दीजै । अधर्म गुणि कै लोभ न कीजै ॥ कुत्सित काल धर्मको नाशै । कालपक्षी सो करत प्रकाशै ॥ सुरत्न रहे सोई अब आयो । याते दुःख मम होमे छायो ॥ ह्वै है अब अधर्म भूमाहीं । लखि हैं भूपति धर्महि नाहीं ॥ विप्र लोभ होमे बश्च धरि कै । ग्राममाहि अर्थ ईश्वर करि कै ॥ बद सुनावैं गे शूद्रनकों । धर्ममे नहीं धरि हैं मनको॥करि हैं सब सबके अपमानै ।धरि हैं छल हियमाहि महानै ॥ ❁❁❁ ॥ *॥ दोहा ॥ *॥ ❁❁❁❁❁❁❁❁

बलो निर्बल हि लूटि है दया करैंगे नाहिं । तातें अब हम जायगे सुर परलोकी माहिं ॥

॥ * ॥ चरणाकुलकछन्द ॥ * ॥

बचन सुऋषि अगस्त्यके सुनि कै । कहत भए सब ऋषि शिर धुनि कै ॥ चोरी हम नहि कमल

तिहारो। आप न यह हियमाहिँ बिचारो ॥ कहि अगस्त्यसों ऐसें बानी। दिए शपथकी इच्छा आनी ॥ पुत्र पौत्रनसह दुख पावे। शपथ करण ऋषि अरु नृप लावे ॥ ❁ ॥ भृगुरुवाच ॥ ❁ ॥ शा०प०
जिहिँ तव पुष्कर लीन्हो व्है है। सो अपमान दुःख सों भ्वै है ॥ वृषादिकनको सो पल खैहै। तेज दा०ध०
नास तनमे नहि रैहै ॥ ❁ ॥ वसिष्ठउवाच ॥ ❁ ॥ लयो होय जिहि कमल तिहारो। होऊ सदा सो दुर्मतिबारो ॥ होय नगरमे सो सन्यासी। घर घर फिरि कै लहऊ उदासी ॥ ❁ ❁

॥ ❁ ॥ कश्यपउवाच ॥ ❁ ॥ दोहा ॥ ❁ ॥

लयो होय जिहि कमल तव यह तीरथके कूल। बेचो सो सब बस्तुकों धरि कै लोभ अतूल ॥
धरी अन्यकी वस्तु जो करो लोभ तिहिँमाहिँ। झूठो साखी होऊ अरु करो धर्मको नाहिँ ॥

॥ ❁ ॥ गौतमउवाच ॥ ❁ ॥ चरणाकुलकछन्द ॥ ❁ ॥

कामक्रोधमाहीं रत रहो। द्विज व्है शूद्री कर्मको गहो ॥ होऊ मत्सरी दुर्मति धारो। लयो होय जिहि कमल तिहारो ॥ ❁ ॥ अङ्गिरउवाच ॥ ❁ ॥ बेदमाहि झूटहि निति भाखो। पास सदा श्वानको राखो ॥ रहो अपावन द्विजको मारो। लयो होय जिहि कमल तिहारो ॥ ॥ धुन्धुमारउवाच ॥ शूद्रमाहि पुत्र उपजावो। पितु उपकारण मनमे लावो ॥ आपुहि भोजन करै मिरायो ॥ लयो होय जिहि कमल तिहायो ॥ पुरुरुवाच ॥ करो भोज्य नारीको ल्यायो ॥ रहौ आपु आलससो छायो। होऊ बैद्य सो दुर्मति वायो ॥ लयो होय जिहि कमल तिहायो ॥ दिलीपउवाच ॥ एकहि कूप होय जामाहीं। होय न सरिता ताके पाहीं ॥ ऐसो ग्राम बसै द्विज तामे। नितिहि बिहार करै शूद्रामे ॥ तिहिकी गतिको सो पद धारो ॥ लयो होय जिहि कमल तिहारो ॥ शुक्रउवाच ॥ भोजन करो वृथापल केरो ॥ होऊ भूमिनायकको चेरो। रति कीबो दिनमाहि बिचारो ॥ लयो होय जिहि कमल तिहारो ॥ यमदग्निरुवाच ॥ पढो अनध्ययनके माहीं। कहो सर्वदा बैन वृथाहीं ॥ शूद्र श्राद्धमे भोजन करो। अधर्मसों कबहूँ मति डरो ॥ कहेँहु न सुमनै पग धारो ॥ लयो होय जिहि कमल तिहारो ॥ ❁ ॥ ❁ ॥ दोहा ॥ ❁ ॥ शिबिरुवाच ॥ ❁ ॥ ❁ ❁ ❁

करो अन्यके यज्ञमे विघ होय कै अज्ञ। लयो होय जिहि चोरि तव कमल सुनऊ ऋषिप्रज्ञ ॥

॥ ❁ ॥ ययातिरुवाच ॥ ❁ ॥

किएँ अनादर बेदको होत प्राप्त अघ जौंन। करी होय जिहिं कमलकी चोरी लहै सु तौन ॥

॥ ❁ ॥ चरणाकुलकछन्द ॥ ❁ ॥

जो धन जो विद्या हि पढावै। अतिथि होय पुनि गृहमे आवै ॥ ताहि होत है पातक जोई। होय कमलके चोर हि सोई ॥ अम्बरीषउवाच ॥ नारि ज्ञाति अरु गोके माहीं। दया करै जौन अन नाहीं ॥ अरु जो ब्राह्मणको संघारै। हियमे अधर्मको न बिचारै ॥ ताहि होत है पातक जैसो। होय कमलके चोरहि तैसो ॥ नारदउवाच ॥ ब्राह्मणकी निन्दाको कीन्हैं। अरु निर्बलको धन हरि

[illegible] लीन्हे ॥ हीन प्राप्त है पातकि जैसो । होय कमलके चोरहि तैसो ॥ * ॥ अङ्गिराउवाच ॥ * ॥
[illegible] कहत रहै दिन राती । भूरि गर्वसों करि मति माती ॥ साधु जननसों करै बिरोधे । कबहू सुमारगको नहि सोधै ॥ देय कन्यकाको लै मोलै । करत रहै निति पाप अतोलै ॥ [illegible] प्राप्त होति गति जैसी । होय कमलके चोरहि तैसी ॥ कश्यपउवाच ॥ रबि दिशि विष्ठा मूत्रहि कीन्हे । आए अतिथि हि भोज्य न दीन्हे ॥ [illegible] होय शरणके माहीं । कीन्हे ताकी रक्षा नाहीं ॥ गाडे पद चलाय सुरभीको [illegible] बहुत लोभमे जीको ॥ प्राप्त होते जनको गति जैसी । होय कमलके चोरहि तैसी ॥ विश्वामित्र उवाच ॥ शूद्रनके मखको करवाई । तिनको दियो बहुत धन पाई ॥ प्राप्ति होति जनको गति जैसि । होय कमलके चोरहि तैसि ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥
होय पुरोहित नृपनको कमल लयो जिहि होय । सहो अनादर सरवदा रहो दुखसों भोय ॥
॥ * ॥ पर्वतउवाच ॥ छन्द ॥ * ॥ राखे ग्राम जीविका काजे । माखो नित्य असत्य दराजे ॥ फिरि गदहा खर पै चढिकै । गिरो श्मशान मद्य [illegible] ॥ राजाध्यक्ष होउ यश हारो । लयो होय जिहि कमल तिहारो ॥ भरद्वाजउवाच ॥ झूठ बोलि सब पाप बटोरै । चलै सुमारगके नहिं थोरै ॥ अरु जो गहै क्रूरताभारा । कमल चोर अरु गनिहि बारो ॥ अष्टकउवाच ॥ होउ सदा सो परनिंद गारी । होउ मूर्ख अरु अघजन मारी ॥ मूल छमसुमग पग धारो ॥ लयो होय जो कमल तिहारो ॥ बालकउवाच ॥ [illegible] दानको नित्य बखानो । देव कार्य्यमे चित मति आनो ॥ होउ पाप कर अधम पसारो । लयो होय जो कमल तिहारो ॥ अरुन्धत्युवाच ॥ करो सासुकी नित्य अवज्ञा । पति प्यारो मति होउ अप्रज्ञा ॥ प्रियको भोजन बिना दिएँ ही । भोजन करो आपु पहिलेंही ॥ रहो जनम भरि दुखसों भारो । लीन्हो होय कमल जिहि नारो ॥ बालखिल्याऊचुः ॥ काज जीविकाके दुख भारे । सहि करि के सु ग्रामके द्वारे ॥ रहो एक पदसों निति ठाढे । धर्म छोडि अधरममे बाढे ॥ क्रूर भावको नित्य पसारो ॥ लयो होय जो कमल तिहारो ॥ शुनःसख उवाच ॥ ह्वै सन्यासी रावउ नारी । अरु विख्यात होउ अघकारी ॥ प्रात अग्निहोत्र हि तजि सोवो । निशि दिन ह्याशयनमे खोवो ॥ धर्म गति हि कबहू न बिचारो ॥ लयो होय जो कमल तिहारो ॥ *❀*❀*❀*❀*❀*

॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

करो ऋषिगणकी शपथ सुनि ह्वै सहर्ष सुरराय । तपि अगस्त्यको देखि के कोपित कह्यो कशाय ॥

॥ * ॥ शक्रउवाच ॥ * ॥ छन्द ॥ * ॥

शुचि ह्वै पढो सदाही बेदै । होउ धर्मकर रहउ अखेदै ॥ मोक्ष मार्ग सो होउ [illegible] । देउ सुता बर द्विज हि सुजाने ॥ समुद सु ब्रह्मलोकको जावो । बहु प्रकारके आनद पावो ॥ चलाउ सुमारग सुयश पसारो । लयो होय जिहि कमल तिहारो ॥ ऋषयउवाच ॥ जो तुम शपथ करी सुरराजा । सो तो आशीर्वाद दराजा ॥ [illegible] ॥ देउ

कमल अबहीं तुम मेरो । चीन्हैं तुम्है कहा ग्रघि हेरो ॥ इन्द्रउवाच ॥ मुनिवें धर्म कमल हम ली न्हों । लोभ नेक हीमें नहि कीन्हो ॥ तातें क्रोध न मनमें कीजे । कमल आपनो यह तुम लीजे ॥ आ०प० दा०ध०
मुनि मैं धर्म महत सुख पायो । शपथ व्याज ऋषिगणको गायो ॥ करऊ क्षमा अपराध हमारो । लागत डर है मोहि तिहारो ॥ मुनि अगस्त्य मघवाकी बानी । अति प्रसन्नता हीमें आनी ॥ लोम भए नीरज ऋषि अपनो । तातें मिटो क्षोभको तपनो ॥ तदनन्तर ते ऋषि बडभागे । अन्य तीर्थको गे मुदपागे ॥ विधिवत पर्व पर्वके माहीं । तीर्थमाहिं वा देवत पाहीं ॥ यह आख्यान पढै जो कोई । ताके मूरख सुत नहि होई ॥ कौनऊ आपत पास न आवे । जरा अवस्था नहिं नगिचावे ॥ नष्ट होति कलुषता भारी । सम्पति गृहतें टरति न टारी ॥ *** ॥ दोहा ॥ ***

अन्तकाल जब होय तब जाय स्वर्गके माहिं । भरो भूरि आनन्दसों रहै सुरणके पाहिं ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञानुगामिना श्रीबन्दीजनकाशीवासिरघुनाथकवीश्वरात्मजगोकुलनाथस्यात्मजगोपीनाथस्य शिष्येण मणिदेवेन कविना विरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणि दानधर्मे शपथविधौ नवतितमोऽध्यायः ॥ ***

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

श्राद्धकर्ममें करत जन उपानहनको दान । तिमिहि छत्रको करत है श्रद्धा सहित महान ॥
तीरथ औ व्रतहूनमें देत सविधिहैं पर्म । तातें पूछत हौं तुम्हैं कहिए मोहि सधर्म ॥
उपानह औ छत्रकी प्रवृति कही है कौन । औ किहिविधि उत्पन्न भे कहो तात बुधिभौन ॥
श्राद्ध तीर्थ अरु व्रतनमें इन्हें देत किहि अर्थ । कहो मोहि विस्तार कै सुनिए तात समर्थ ॥

॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

जिहिंविधिसों उतपन्न भे उपानह औ छत्र । अरु जिहिविधिसों प्रवृत भे भे प्रसिद्ध सरवत्र ॥
सो विधि तुमसों कहत हौं मै विस्तरित महान । तजि प्रमादताको सुनऊ पंडुसुवन मतिमान ॥
यह प्रसङ्गमें कहत हौं एक इतिहास अवाद । दिनकर औ यमदग्निको तामें है सम्वाद ॥

॥ * ॥ चरणाकुलकछन्द ॥ * ॥

ऋषि यमदग्नि मोदसों पागे । धनु गहि क्रीडा करणे लागे ॥ शर ऋषिवर सु चलावत ज्यौं ज्यौं । दौरि रेणुका ल्यावति त्यौं त्यौं ॥ जब मध्यान्ह भयो तब भारी । तपति भई तातें सो नारी ॥ भई विकल व्है ठाढी तरुतर । तिहितें भए अबेर महत डर ॥ भयो रेणुकाके हियमाहीं । आई काँपति ऋषिके पाहीं ॥ तब ऋषि क्रुद्धो ताहि कुधसेती । लाई बार कहा ते एती ॥ रेणुकोवाच ॥ सुनु ऋषिराय क्रोध जिन कीजे । कारण देरीको सुनि लीजे ॥ तप्त भए शिर अरु पद मेरे । परम तेजवो दिनकर केरे ॥ तातें गई वृक्षतर भागी । भूरि विकलताईसों पागी ॥ जबलौं गई विकलता

१।०प० नाहीं। तबलौं आय सकि न तब पाहीं॥ यह कारण है देरीकेरो। है अपराध कछू नहि मेरो॥
२।०ध० सुनि कै यह नारीकी बानी। रिसि करिकै ऋषिराय महानी॥ ॥ दोहा॥ ॥
कहत भए इमि नारिसों गहि निषङ्ग कोदण्ड। मैं गिराय दैहौं रबिहि बर शरगणसों चण्ड॥

॥*॥ चरणाकुलकछन्द॥*॥

कहि इमि सुऋषि चढाय सु भौंहें। बैठत भए भानुके सौंहें॥ अपि सरिस यमदग्निहिं देखें। ऋषिको क्रोधदाप हिय लेखें॥ मारतण्ड द्विजको बपु धरि कै। आय कह्यो इमि बिनती करि कै॥ मारतण्ड तब कहा बिगास्यो। तातैं इतो क्रोध तुम धास्यो॥ भानु किरणसों जलकों करषै। ताहि फेरि बर्षामे बरषै॥ अन्न होत है भूमे तातैं। रहत समुद मनुजादिक जातैं॥ होत धर्म बहु बिधि सुमहीमे। पढत शास्त्र श्रुति द्विज सुखहीमे॥ होति बिन्न सहायता भारी। बहु बिधि दान करत नर नारी॥ तिहितैं भानु पै न तुम रोषो। मेरे कहैं रोषकों मोषो॥

॥*॥ दोहा॥*॥

कीन्ह चहत प्रसन्न हम तुम्हैं सुनऊँ ऋषि पर्म। मिलि है भानु निपाततैं तुमकों कहा सधर्म॥

॥ ॥ युधिष्ठिरउवाच॥ ॥

भासमानके सुनि वचन ऋषि यमदग्नि सुजान। कहा करत भे सो हमै कहिए तात सुजान॥

॥*॥ चरणाकुलकछन्द॥*॥

॥ भीष्मउवाच॥ ॥ भासमानकी सुनि कै बानी। ऋषि न शान्त ताहीमे आनी॥ तब रवि नौमि जोरि कै पाणी। कहत भए इमि ऋषिकों बाणी॥ चलत रहत है भानु सदाही। कैसैं अचल जानि हौ ताही॥ अचल बिना जाने तुम एजू। करि हौ किमि निपात रविके जू॥ यमदग्निरुवाच॥ सुनऊँ भानु थिरताकों तेरी। देखति ज्ञानआँखि हैं मेरी॥ अर्ध मेषमधि दिनके माहीं। तव थिरता है होति सदाहीं॥ सूर्य्यउवाच॥ निश्चय तुम जानो गे मोही। यातैं कहत ऋषे हम तोही॥ जानऊ मोहि आपु अपकारी। करऊ कृपा हौं शरण तिहारी॥ भीष्मउवाच॥ तब यमदग्नि कह्यो इमि हसि कै। हाऊ त्रिकाल जिनडरमे फसि कै॥ नम्रताहि अब देखि तुम्हारी। मिटी रोषता सर्ब हमारी॥ तब किरणनसों युत पथमाही। दुःख होय जीवनकों नाहीं॥ ऐसो कछू विचार बिचारो। मिटै रोष तब सर्ब हमारो॥*॥ भीष्मउवाच॥*॥ दोहा॥* *॥

ऐसैं कहि चुप ह्वै रहे ऋषि यमदग्नि सुजानु। छत्र उपानह देत भे तब ऋषिबरकों भानु॥
छत्र उपानह देय कै ऋषि यमदग्निहिं पर्म। मारतण्ड इमि कहत भे भूपति सुनऊँ सधर्म॥
शिरकी रक्षा छत्रसों ह्वै है हे ऋषिराय। उपानहनसों होयगी चरणनकी सुखदाय॥
अबसों ह्वै है लोकमे इनको ऋषे प्रचार। ह्वै है इनको दान फल अक्षय सुमति अगार॥

॥ भीष्मउवाच ॥

छत्र उपानहकी प्रवृति कीन्ही रवि इमि तात। उत्तम इनके दानको पुण्य लोक विख्यात॥ आं०प०

दां०ध०

॥ * ॥ रामगीतीछन्द ॥ * ॥

उपानह अरु छत्रको तुम करऊ तातें दान। धर्म अक्षय प्राप्त तुमको होय गो मतिमान॥ छत्र ये जन देत द्विजको शुभ्र सुषमा औंन। प्राप्त ताको होत है परलोकमे बहु चैन॥ बसत सुर पति लोकमाहीं देवतनकेसाथ। है न यामे नेक संशय सुनऊँ हे नरनाथ॥ देत द्विजको तपनि माहीं उपानह जन औंन। लहत तैंनऊ देवतनको लोक आनदभौंन॥ बास बहुदिन स्वर्गमे करि ता अनन्तर पर्म। जात सो गोलोकमाहीं सुनऊँ तात सधर्म॥ * ॥ दोहा॥ * ॥

छत्र उपानह दानको फल जो है अभिराम। सो संपूरण हम कह्यो तुमको नृप बुधिधाम॥

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥

छत्र उपानह दानको सुन्यो सर्व फल तात। अब ग्रहस्थ धर्महि कहो हमको तुम अवदात॥

कहा किएसो मनुजके होय ऋद्धि बहु पर्म। सोऊ तुम हमको कहो करिकै कृपा सधर्म॥

॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥

यह प्रसङ्गमे कहतहौं एक वृत्तान्त महान। बासुदेव अरु भूमिको है सम्वाद सुजान॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

हमसो पूछो जौंन सुनहु धर्मधर प्रश्न तुम। बासुदेव मुदभौंन पूछत भे सो भूमिसों॥

॥ * ॥ चरणाकुलकछन्द ॥ * ॥

बासुदेवकी सुनिकै बानी। कहति भई इमि धरणि सुजानी॥ करिकै यज्ञ नेम गहि अतिहीं। करै प्रसन्न सुरन्हको नितिहीं॥ आदर करि सुप्रीति हियमाहीं। अतिथहि करै प्रसन्न सदाहीं॥ करिकै श्राद्ध सबिधि सह प्रेमै। पितर प्रसन्न करै गहि नेमै॥ ऋषिबर होहि प्रसन्न सु जैसे। तिनको करै सुमतिसों तैसे॥ बासुदेव यह धर्म ग्रहीको। आनँददायक है अति नीको॥ ऋद्धि मिलित बहु कीन्हे याको। ग्रही लहतहै परम प्रभाको॥ धरणीकी यह बाणी सुनि कै। कृष्ण प्रतापवान बर गुणि कै॥ धरणि कह्यो यहि धर्महि जैसे। करत भए बर बिधिसो तैसे॥ *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

किएँ धर्म यह मनुज बर पाय सुयश यहिँलोक। स्वर्गलोकमे प्राप्त व्है निशिदिन रहत अशोक॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशीवासिरघुनाथकवीश्वरात्मजगोकुलनाथस्यात्मजगोपीनाथस्य शिष्येण मणिदेवेन कविना विरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणि दानधर्मे एकनवतितमोऽध्यायः॥ * * * *

आ॰प॰ ॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

दा॰ध॰ गन्ध धूप अरु दीपको किए दान अभिराम । होत कहा फल मनुजको कहहु तात बुधिधाम ॥

॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥

यहि प्रसङ्गमे कहत है एक इतिहास सुभूप । मनु औ सुवरण विप्रको है सम्वाद अनूप ॥
हो सम सुवरणवर्णके ताको वर्ण विभात । तातें सुवरण नाम भो तिहिँ द्विजको विख्यात ॥

॥ * ॥ रामगीतीछन्द ॥ * ॥

समय कौनऊँमाहिँ सो द्विज गयो मनुके पास । बूझि कै अन्योन्य दोउ कुशल सहित हुलास ॥ मेरु पर्वतमाहि सुन्दर शिलापर ते पर्म । भए बैठत मए मुदसों सुनहु तात सधर्म ॥ ब्रह्मऋषि अरु देवदैत्यनकी कथा अभिराम । करत दोउ भए तिहिँ वर शिलापर अभिराम ॥ ता अनन्तर कह्यो मनुको बाक्य सुवर्ण एह । मनुजके हित अर्थ कहिए धर्म हे बुधिगेह ॥ धूप दीप सुगन्धसों वर मनुज पूजत देव । होत तिनको कहा फल है कहहु याको भेव ॥ * ॥ मनुरुवाच ॥ कहत यहि परसङ्गमे इतिहास एक सधर्म । शुक्र अरु बलिदैत्यको सम्वाद तामे पर्म ॥ सुनहु द्विजवर शुक्र आवतभए बलिके पास । देखि तिनको दनुजपति बलि उठो सहित हुलास ॥ सहित आदर पूजि आसन चारु पै बैठाय । आपु बैठत भयो सोई शुक्रके सुख पाय ॥ ता अनन्तर कथा पूछी आपु हमसों जौन । भयो सोई पूछतो बलि शुक्रसों मतिभौन ॥ * ॥ बलिरुवाच ॥ * ॥ सुमन दीप सधूप दानहि किएते फल कौन । मिलत है तुम कहौ भार्गव कृपा करि बुधिभौन ॥ * ॥ शुक्रउवाच ॥ * ॥ देत मनको मोद अरु श्रिय देत है अभिराम । नाम सुमनस कहत तातें पुष्पको बुधिधाम ॥ सुमन जो जन देवतनको देत है दैत्येश । देव तुष्टित होय ताको पुष्टि देत अशेष ॥ सुमन जिहिँ जिहिँ देवको उद्देश करि जो देत । देत सो सो ताहि मङ्गल सुनहु बुद्धिनिकेत ॥ वृक्ष जेते यज्ञमाहीं ग्रहण हैं अभिराम । सुमन तिनके देवतनको लगत है प्रिय माम ॥ वृक्ष जे नहि ग्रहण मखमे सुमन तिनके जौन । असुर राक्षस यक्षगणको लगत हैं प्रिय तौन ॥ होय सुमननमांहि जिन जिन परम चारु सुवास । सुमन ते सब देवतनके आनु हे बुधिरास ॥ श्वेत तिनको सुमन ऐसे अकण्टक जे वृक्ष । देवतनको लगत हैं प्रिय सुमन तिनके स्वच्छ ॥ जलजजे कमलादि तिनके सुमन हे सुनु तात । यक्ष औ गन्धर्व नागहि देत बुध अवदात ॥ रक्त तिनके फूल अति तरु सकण्ठक हैं जौन । प्रेतकोहैं योग्य तिनके फूल सुनु बुधिभौन ॥ कुशतिलके फूल ऐसे वृक्ष जे भूमांहि । तिनहुके हैं फूल भूतहि योग्य संशय नाहिँ ॥ देत जे आनंद मनको सुमन कोमल चारु । मनुष्यनके योग्य तेहैं सुनहु सुमति अगारु ॥ लता तरु उतपन्न भे समानमाहीं जौन । औ भए देवायतनमे जौन सुनु बुधिभौन ॥ विवाहादिकके नहीं हे योग्य तिनके फूल । कहत हौं मै तुम्है निजु के करत अशुभ अतूल ॥ लता औ तरु मए जे उत्पन्न

गिरिमें पर्म । सुरनकेहैं योग्य तिनके सुमन दैत्य सुशर्म ॥ सुमन पहिलें अगन्ज जलसों धोयके शा०प०
अभिराम । मंत्रसों पुनि करै प्रोक्षण सहित बिधि बुधिधाम ॥ सहित कण्टक रक्त जिनके सुमन दा०ध०
कटु फल पर्म । जान ऐसे वृक्ष तिनके सुमन दैत्य सधर्म ॥ देवताकों अर्पण आरवधन कारज
माहिं । अथर्वण मे लिखी बिधि यहमाहि संशय नाहि ॥ देवतनकों करत जे परसन्न सुमन
चढाय ॥ करत तिनकी कामनाहैं सिद्धि देव सहाय ॥ पूजि कारकै देवतनको करत जे सनमान ।
करतहैं सनमान तिनको देवता सुखदान । अवज्ञा जे देवतनको करत दुर्मतिवान ॥ भस्म ताकों
करतहैं करिकोप देव महान ॥



॥ दोहा ॥

सुमन दानको फल कह्यो तुम्हें वर्णि हम सर्व । धूपदानको अब सुनो फल उत्कर्ष अखर्व ॥
एक सारिण निर्जास एक औ है कृत्रिम एक । त्रय प्रकारकी होतहैं धूप सुनऊ सबिवेक ॥
चन्दनादिकी धूप जे ताको सारिण नाम । अष्टगन्धको कहतहैं कृत्रिम धूप ललाम ॥
नाम कहत निर्जासहै गुग्गुलादिको चारु । इन तीन ऊ मे श्रेष्ठहै गुग्गुल धूप उदारु ॥
सल्लईके निर्जास बिन हैं निर्जास जितेक । तिनकी प्रिय अति धूपहै देवनको सबिबेक ॥
यक्ष सर्प राक्षसनकों सुनु दैत्येश अनूप । सब सारिणमे अगरका लागतिहै प्रिय धूप ॥
सल्लईके निर्जासको दैत्यनको प्रिय धूप । यक्षादिकके प्रिय नहीं निसुकै कहत अनूप ॥
मल्लिकादिके सुरससों युक्त राल रस चारु । मनुजनकों प्रिय लगतिहै तिनको धूप उदारु ॥
देव दनुज अरु भूतहू यहि सुधूपसों पर्म । शीघ्रहि तुष्टित होतहै सुनु दैत्येश सशर्म ॥
मनुजनहीं के योग्यहैं अतरादिक जे सर्व । हम निश्चय करि कहतहै सुनु दैत्येन्द्र अखर्व ॥
जौन सुमनके दानकों उत्तम फलहै तात । सोई धूप प्रदानको फलहै अति अवदात ॥
दीपदानको कहतहैं अब हम फल अभिराम । दीपदान किन्हें परम तेज बढतहै नाम ॥
प्रभा बढतिहै अङ्गमे होत निरोगित नैंन । आधि व्याधि नहि होतिहै नितिही रहत सचैंन ॥
दीप चढायो देवकों लीजे पुनि नहि ताहि । ताकी रक्षा कीजिए निकट बैठिकै चाहि ॥
जौन हरतहै दीपकों तौन अन्ध जन होत । होति नष्ट ताकी प्रभा अघको करत उदोत ॥
लसत दीपसौं स्वर्गमे दीपप्रद दैत्येश । चाहतहै ताकों सदा अमरनसह अमरेश ॥
घृतको दीपक दीजिए प्रेम सहित अभिराम । मिलै न घृत तौ तैलको दीजै दीप ललाम ॥
इच्छा जे ऐश्वर्य्यकी करै परम हिय माहिं । दीप धरत ते चतुष्पथ बनमे अरु गिरि पाहिं ॥
होत आतमा शुद्ध अरु करति सुबुद्धि प्रकाश । दीपदान ते होतहै ऐसो फल बुधिराश ॥
सुबरण द्विजकों मनु कह्यो यह फल अति अभिराम।सुबरण नारदकों कह्यो नारद मोकों आम॥
यह जो बिधिसों जानि तुम करऊ नित्य महिपाल। पूर्व उक्त फल तुमऊ कों ह्वै है प्राप्त बिशाल॥

आ०प०
दा०ध०

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥

सुमन दीप अरु धूपकों जो जन देत सहर्ष। ताकों जो फल होत सो सुन्यो। परम उत्कर्ष ॥
धूपदान किहिं अर्थ अरु दीपदान किहिँ अर्थ। यो बलिदान किमर्थ जन विधिसों देत समर्थ ॥
कहहु मोहि अबगारिकै सुनहु तात मतिमान। तुमही कहिबे योग्यहौ वक्ता परम सुजान ॥

॥ ❁ ॥ भीष्मउवाच ॥ ❁ ॥

कहत एक इतिहास है यह प्रसङ्गमे भूप। ऋषि अगस्त्य अरु नहुषको है सम्वाद अनूप ॥

॥ ❁ ॥ चरणाकुलकछन्द ॥ ❁ ॥

सुकृत कर्म सों नहुष सुनीको। पायो देव राज्य शुभ श्रीको ॥ तहाँ मानुषी अरु देवनकी। क्रिया करत भो सो निशिदिनकी ॥ विधि सों करत भयो बलिदानै। तिमिही सविधि होम जप ध्यानै ॥ धरणि माहिँ पूजत हो जैसे। देवनकों पूजत भो तैसे ॥ धूपदीप दानहिँ सह प्रीती। नहुष करत भो गहिकै रीती ॥ तदनन्तर अपनेकों जाने। इन्द्र करत भो गर्व महाने ॥ तातें क्रिया भई सब हीनी। महत प्रमाद तास मति छीनी ॥ रथके माहि लगाय ऋषिनकों। तापै चढि मुदमे धरि मनकों ॥ फिरत भयो बहुधा मद पागे। ताहि ऋषिनको डर नहि लागे ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥
बीतत भो बहु काल तब मदसों भयो अखर्व। भो बुलावतो ऋषिनकों बारो बारि सगर्व ॥

॥ ❁ ॥ चरणाकुलकछन्द ॥ ❁ ॥

आई पारी कुम्भज ऋषिकी। परम प्रतापमान सम शिखिकी ॥ तब तिन पास सुऋषि भृगु आए। तिनकों ऐसे बैन सुनाए ॥ नहुष करत अपमान दराजे। सो हम सहैं सुमुनि किहि काजे ॥ ॥ * ॥ अगस्त्यउवाच ॥ * ॥ मम सुदृष्टिमे आवै जोई। होय हमारे वशमे सोई ॥ विधिसों नहुष यह सु बर माग्यो। पायो सो तातें भय भाग्यो ॥ यहितें ऋषिकै हम तुम दोऊ। और मुख्य ऋषिगणहै सोऊ ॥ नहुषहि दग्ध सकत करि नाही। यह निश्चय मानहुँ मनमाही ॥ ॥ * ॥ भृगुरुवाच ॥ * ॥ मै ब्रह्माके पास गयोहो। परिभवके अति दुखरोयोहो ॥ तिनकों सब वृत्तान्त सुनायो। कियो नहुषको दुर्मति छायो ॥ चतुरानन मम बाणी सुनिकै। कहत भए मोकों इमि गुणिकै ॥ बली नहुषके हैं अपकारी। कुम्भज ऋषि बर तेजसधारी ॥ तिहिँ तें आयो पास तुम्हारे। भयो मोद बर तुम्है निहारे ॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥ ❁❁❁❁❁❁❁
अबहि तुम्है बुलवाय नहुष इन्द्र दुर्मति सदन। रथके माहि लगाय सिरमे हनिहै चरणसों ॥

॥ * ॥ चरणाकुलकछन्द ॥ * ॥

तातें अबहि अनिन्द करौंगो। नहुषहि नेकुन डर हिय धरौंगो ॥ देहु साप यह क्रुध करि भारी। होहु सर्प तू अति दुख धारी ॥ तदनन्तर मै ताहि महीमे। हौं गिराय जानो सति होमे ॥ सुनि यह

ऋषिवर भृगुकी बानी । मनमें अति प्रसन्नता आनी ॥ ❁ ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ ❁ ॥ भयो अनिन्द्र नहुष कहु कैसें । अरु किमि परो भूमिमें भैसें ॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥ चरणादोहा ॥ * ॥ देवलोक अरु मनुज लोकमें सदा भारसों चाह। महत बृहकों पाय रहो बर पावत मोद अपार ॥ शा० प० दा० ध०

॥ * ॥ चरणाकुलकछन्द ॥ * ॥

सविधि सप्रीति किएँ बलिदाने। देवत होत प्रसन्न महाने॥ धूपदीप दानहिं तिमि कीन्हें। होत प्रसन्न देव मुदलीन्हें॥ यातें धूपदीप बलिदानहि। करत सविधिहिं नित्य सुआनहि॥ सुर अरु पितर सुऋषि हैं जेते। पूजें होत प्रसन्न सु तेते॥ यह मति यापि नहुष मुद पाग्यो। होय इन्द्र सब करनेलाग्यो॥ ॥ दोहा ॥ नहुष कैं। नहु कालमें भाग्य भएतें छीन। प्रापित भयो प्रमादकों भूपति सुनहु प्रवीन॥

॥ * ॥ चरणाकुलकछन्द ॥ * ॥

सो प्रमादता भए महाने। भूलो धूप दीप बलिदाने॥ कुत्सित कर्म्म करण सब लाग्यो। गर्व माहि दुर्मतिसों पाग्यो॥ तदनन्तर सु नहुष सुरराजा। रथके माहि लगावन काजा॥ तटत नदी सरस्वति केरे। शीघ्र सुमुनि कुम्भजकों तेरे॥ तब कुम्भजकों ऐसी बानी। कहत भए भृगु ऋषि बरज्ञानी॥ शापदेनकों नहुष सुरेसैं। जटा माहि तब करत प्रवेसैं॥ करौं प्रवेश जटामें जबलौं। रहो नैन मूदें तुम तबलौं॥ कुम्भजकों इमि बाणी कहि करि। तास जटामें बैठ क्रुध धरि॥ नहुष पास कुम्भजके आयो। तब कुम्भज इमि बैन सुनायो॥ रथमें हमकों बेगि लगावो। ज्यों मन आवै त्यों सु चलावो॥ जहा जायबेकी हम पावैं। आज्ञा तहां तुम्हें पहुचावैं॥ सुनिकै यह कुम्भजकी बानी। दिए लाय रथमें अभिमानी॥ जब कुम्भज रथके तर आने। तब भृगु ऋषिवर अति हरषाने॥ नहुष सुरेश बैठ रथ ऊपर। चलत बेग अतिसों भो कूपर॥ कछू दूरि चलि मोदसों हेरत। भो प्रतादसों मुनिकों प्रेरत॥ तबहू कुंभज परम तपोधन। नेकहु मनसें कीन्हो क्रोध न॥ *❁❁*❁*॥ *॥ दोहा ॥ *॥ *❁*❁*❁*❁*❁*❁*❁

तदनन्तर सुरपति नहुष सुनहु युधिष्ठिर प्रज्ञ। कुंभजके सिरप हन्यो बामपादसों अज्ञ॥

॥ * ॥ चरणाकुलक छन्द ॥ * ॥

तब सक्रोध ह्वैकैं भृगु मुनिवर। नहुषहि शाप दियो यह दुखकर॥ भूमें जाउ सर्प तुम ह्वैकै। तहा रहो बहु दुखसों स्वैकै॥ शाप पाय मुनि भृगुके पाहीं। गिरो सर्प ह्वै भूके माही॥ भृगुकों नहुष नेकु औं तकतो। नहुषहि भृगु गिराय नहि सकतो॥ बलिदानादि कर्म्म शुभ कीन्हें। रह्यो पूर्व बृत्तान्तहि चीन्हें॥ तदनन्तर इमि कहतो भयो। भृगुकों नहुष दुःखसें रयो॥ शाप अन्त ह्वैहै कब मुनिवर। कहहु कृपाकरि मोपै मुदकर॥ * ॥ भृगुरुवाच ॥ * ॥ नृप युधिष्ठिर ह्वैहै सुनु अब। ह्वैहै मोक्ष नहुष तेरी तब॥ भृगु नहुषको ऐसें कहिकै। बिधिके पास गयो मुद लहिकै॥

शा०प० सुक्हि अगस्त्यऊ परम तपस्वी। गे निजु आश्रमकों सु जशस्वी ॥ पास जाय विधिके इहि विधिसों।
दा०ध० कहत भए भृगु भरि सुख निधिसों॥ *●●●* ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ *●●●●●*

लखि प्रमादता नहुषकी हम महान दुखपाय । श्राप देय करिकै सरप भूमे दयो गिराय ॥

॥ * ॥ चरणाकुलकछन्द ॥ * ॥

भृगुके वचन विधाता सुनिकै। भए बुलावन शक्रहि गुनिकै॥ तदनन्तर अमरणके वृन्दहि भए बुलावत सहित अनन्दहि॥ जब संपूरण देवन आए। तब तिनकों इमि वचन सुनाए॥ नहुषहि भृगु अगस्त्य क्रुधधरिकै। भूमे डारि दयो अहि करिकै॥ कार्य न कछू होत विन राजा। भयो परम संदेह दराजा॥ तातें शक्रहि पुनि बैठावो। देव राज्यपर सुख सरसावो॥ सब सुर सुनि यह विधिकी वानी। पाय हर्षता परम महानी॥ कहत वचनभे विधिकों इहि विधि। अबकी करो कार्य यह तुम सिधि। सुनि वाणी यह विधि मुदछायो। शक्रहि राज्य माहि बैठायो॥ शक्र पूर्व राजतहे जैसें। राज्य पाय राज्यो पुनि तैसें॥ नहुषऊ दरश तुह्मारो पाएँ। छूटि श्रापसों मुदसों छाए॥ बलिदानादि फेरि बऊ करिकै। ब्रह्मलोककों गो सुख धरिकै॥ देव राज्य लहि नहुष नृपाला। कीन्ही परम अनीति बिशाला॥ तातें अतिहि कुमता पाई। ऋषिकी लहिकै रिसि दुखदाई॥ बलिदानादिकके फलसों बर। पुनिऊ होतभो समुद धर्म कर ॥ *●*●*●*● ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ ●*●*●*●*●*●*

धूप दीप बलिदानको ऐसो फल है पर्म । तातें गृही करे सदा भूपति सुनहु सधर्म ॥

॥ * ॥ आभीरछन्द ॥ * ॥

धूपदीप बलिदान। जे जन करत सुजान॥ रूपमान बलवान। ते जन होत महान॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञानुगामिना श्रीवन्दीजनकाशीवासिरघुनाथकवीश्वरात्मजगोकुलनाथस्यात्मजगोपीनाथस्य शिष्येण मणिदेवेन कविना विरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणि दानधर्मे अनुशासने द्विनवतितमोऽध्यायः ॥ *●

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ तोमरछन्द ॥ * ॥

धनहर्त द्विजको जौन। जन लहत ते गति कौन॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥ इहिप्रश्नमें इतिहास। एक कहतहौं बुधिरास॥ *●*●*●* ॥ * ॥ रामगीतीछन्द ॥ * ॥ *●*●*●*

वृद्ध एक चाण्डालहो सो सुनु तात सुजान। परे गो के चरणकी रज करै तबही स्नान॥ ताहि लखि एक भूपको सुत कहतभो इमि बैन। परे गोरज करत कोहि स्नान दुर्मति ऐन॥ चण्डाल उवाच॥ अधम एक महिपाल कोउ विप्रको हरि गाय। आतहो निज धामकों अघमान होय सचाय॥ मार्ग ऊपर करत हे महिपाल कोउ यज्ञ। चरणकी तिन गौनके रज परी तिहिमे प्रज्ञ॥ भयो रजमय सोम ताको भए पीवत जौन। नरकमाही परे ते द्विज सहित नृप बुधिभौन॥

गोरज जे यज्ञमाही कृते जन ते सर्व । भए जाते नरककी सुनु सुमति मान अखर्व ॥ इन्द्रिजित शा०५०
व्है ब्रह्मचारय धर्मको अभिराम । धरें मे हो वसत तवहि कृतो बुध मे नाम ॥ धरी भिक्षा खाय दा०४०
मे हो परी तिहिके माहिं । हरी गोके चरणकी रज कढें व्हैके पांहिं ॥ तास भोजन किएतें
मे भयो हों चण्डाल । छीन मेरो व्है गयो वर धर्म तेज बिशाल ॥ हरी गोके चरणकी रज परी
जबसों शुद्ध । बेंचिवेके योग्य सोम न कहत मतिवर शुद्ध ॥ जौन बेचत सोमको ते जात रौरव
माहिं । सुबुध ताकी करत निन्दा नित्य संशय नांहिं ॥ परें गोरज भयो हों चण्डाल मे मतिमान ।
सुनऊ यातें करत हों मे पर्व गोरजस्नान ॥ छूटि हों किहिभांति हो मे चण्डालतातें पर्म । होन
निस्चय नाहि हमको भूप तात सधर्म ॥ राजसुतउवाच ॥ बिप्रके धनअर्थ छोडो युद्धमे तुम प्रान ।
है तुम्हारी मोक्षको यह हेतु हे मतिमान ॥ बचन सुनि चण्डाल ए महिपाल सुतके पर्म । बिप्रके
धनअर्थ लरि कै युद्धमाहि सधर्म ॥ प्राण तजि कै मोक्षको सो भयो प्रापत होत । करऊ तातें
तुमऊ कारज यह सु प्रज्ञापोत ॥ **********

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञानुगामिना श्रीबन्दीजनकाशीवासि
रघुनायकबीश्वरात्मजगोकुलनाथस्यात्मजगोपीनाथस्य शिष्येण मणिदेवेन कविना बिरचिते
भाषायां महाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणि दानधर्मे नृपसुतचाण्डालसम्बादे चिनवतितमोध्यायः ॥

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

एकहि है सुकृतीनको लोक परम अभिराम । भिन्न भिन्नको है कहो मोको हे बुधिधाम ॥

॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥

कर्म कर्मके लोक है प्रथक प्रथक महिपाल । पुण्यलोकको जात है सुकृती जौन बिशाल ॥
पापमान ते जात हैं पापलोकको तात । यामे संशय है नहीं कहत सुबुध अवदात ॥
कहत एक इतिहास हों यहि प्रसङ्गमे भूप । गोतमको अरु इन्द्रको है सम्बाद अनूप ॥

॥ * ॥ तोमरछन्द ॥ * ॥

मतिमान गोतम पर्म । बनमांहि तात सधर्म ॥ एक हस्तिको सुत चारु । लखि पर्यो मृतक
उदारु ॥ तिहिको जिवाय सप्रेम । ऋषि कीन्ह दीर्घ सनेम ॥ कछु दिननमाहि महान । गिरि सो
भयो बलवान ॥ धृतराष्ट्रको धरि रूप । तहं आय इन्द्र अनूप ॥ गहतें भए गज तौन । तब देखि
ऋषि बुधिभौन ॥ धृतराष्ट्रको इमि बैन । कहते भए मतिऐन ॥ मम पुत्रवत है एह । गज चारु
है अघगेह ॥ गऊ याहि तूं तिहि तौन । मम जीव होत अचैन ॥ यह इध्म अरु जल ल्याय ॥ निति
देत मोहि सचाय ॥ प्रिय अति हि लागत मोहि । सुख लहा इहिको जोहि ॥ धृतराष्ट्रउवाच ॥

पा०प० मत दासिका अभिराम । अरु गो सहस ललाम || बहुरत्न चारु अमन्द । अरु और वित्त
पा०ध० बिलन्द || हम तुम्है दै हैं पर्म ।सुनुऊ हे ऋषे सह धर्म|| सब चाहिए द्विज कौंन| निजु जानु हे बुधि
भौंन || गौतमउवाच || तव दासिका अरु गाय । बर रत्न बऊ सुखदाय ||अरु और ऊ धन जौंन ।
चहिए न हमकों तौंन || *❦* || धृतराष्ट्रउवाच || * || दोहा || * || *❦*❦*❦*❦

बाहन कुञ्जर नृपणको होत कहत बुध पर्म । यातें मैं लेजात हौं है नहि नेक अधर्म ||
कुञ्जरको अब मोह तुम छोडि देऊ बुधिधाम । इत्तो योग्य न राखिबो विप्रणकों अभिराम ||
सुनें बचन धृतराष्ट्रके ए गौतम मतिमान । कहत भए ऐसें बचन करि कै क्रोध महान ||

|| *|| गौतमउवाच || * || रामगीतीछन्द || * ||

पुण्यकर्मा जाय कै जहँ रहत हैं सानन्द । पापकर्मा जाय कै जहँ सहत हैं अतिदन्द || सुन
ऊं ऐसो सदन है यमरायको तहँ भूरि ।दिवै हो मे जातना तुम रहे का सुख पूरि|| धृतराष्ट्रउवाच
धर्मसो जे रहित हैं अरु रहित श्रद्धा जौंन । बिषयमे जे रहत रत हैं महत अघकेभौंन || जातना
ते सहत हैं अति जाय यमके धाम|जांयगे हम तहां नहिं निजु जानु ऋषि बुधिधाम| |गौतमउवाच||
जाऊ गे जो धनदके तुम लोकमे नरराय| जातना मन्दाकिनीमे दिवै हौं तौ जाय||धृतराष्ट्रउवाच
देत भोजन अतिथिकों जे गहें ब्रत अभिराम | देत आश्रय द्विजनकों जे परम प्रज्ञाधाम || प्रथम
भोजन देय तिनकों जौंन आश्रित होय | करत भोजन धनाधिपके जात लोकहि सोय|| हम न जैहैं
धनाधिपके लोककों ऋषि पर्म । दिवै हो किमि जातना तुम मोहि प्रज्ञ सधर्म || गौतमउवाच ||
मेरु आगे फूलफल युत बिपिन चारु बिभांत । भरे आनँद गान किन्नर करत जहँ अवदात ||
बहति जम्बूनदी है जहँ महति जल गँभीर । तहाहूं जो जाउ जै हो सुनऊ भूमिप धीर || दिवैं हों
तौ जातना मै हरें मोगज चारु । तुम्है निजु कै कहत संशय है न भूप उदारु|| धृतराष्ट्रउवाच ||
पढत जे द्विज प्रज्ञ हें इतिहास सहित पुरान । सत्यवक्ता बऊश्रुत अरु धर्मबान महान || समधु
भोजन देत द्विजकों जौंन जन बुधिधाम । जात जंबूनदीकों ते कहत बुध अभिराम|| तहां मे जैहौं
न तातें जातना किमि मोहि । दिवै हो हे ऋषे मतिवर सुनऊ इत तुम जोहि || गौतमउवाच ||
प्रिय सु नारद ऋषीकों फलफूलसों युत पर्म |अप्सरा गन्धर्वगणको तिमिहिं प्रिय सह शर्म ||करत
किन्नर राज तामे नित्य समुद बिहार| इन्द्र तामे जाय कै अति मुदित होत उदार|| सुनऊँ ऐसो
बिपिन नन्दन तौनमाही तोहि । दिवैंगे जातना हम महत का इत ओहि|| धृतराष्ट्रउवाच ||
नृत्यमे अरु गीतमाहीं कुशल हैं द्विज जौंन । कबऊँ काहूकों न जाचत जौंन द्विज बुधिभौन ||
जात नन्दन बिपिनकों ते और कोउ न जात.। तहां हम जै हैं न जानो सत्य ऋषि अवदात ||
गौतमउवाच || * || जहां अयिज बसत हैं अरु पर्वतज हैं यत्र |जलज जन जहँ रहत हैं सह देव
गण एकत्र||सिद्धि सर्व सुकामना वर करत हे जहँ यज्ञ | नारि नर गणमे न कोऊ कबऊँ बोलत

बक्र॥ नाम उत्तर कुरुसुताको लोक ऐसो औंन। आतना तुमकों दिवैं हौं मै तहां करि गान॥ शां०प०
धृतराष्ट्रउवाच॥ * ॥ कामना करि जात जे नहि कबहुँ कोउ पास। जे न भक्षत मांस धारैं दा०ध०
ज्ञान सहित हुलास॥ जिते जङ्गम सथावर हैं भूत तिनको माहिं। कबहुँ हिंसा भावकों जे जन
बिचारत नाहिं॥ लाभमे औ अलाभहुमे रहत एकहि भाय। स्तुती निन्दा करत काहूकी न
सुखदुखछाय। उत्तराकुरुलोकमाहीं जात हैं जन तैंान। सुनहु ऋषिवर तहांको हम करैंगे
नहि गैांन॥ दिवै हौ किमि आतना तुम मोहि करि कै कुद्ध। छोडि हौं मै नाहि जे हौं लै सुगज
यह उद्ध॥ * ॥ गैातमउवाच॥ * ॥ चन्द्रहूके लोकमे जो जाऊगे महिपाल। दिवैं हौं तो तहां
हूमे आतना सुविशाल॥ * ॥ धृतराष्ट्रउवाच॥ * ॥ जे प्रतिग्रह लेत नाही देत हैं नितिदान॥
औंन मागत विप्र सोई वस्तु देत सुजान। जिते आवैं अतिथि तिनको भूरि करि सनमान॥
देत भोजन प्रीतिसों जे परम प्रज्ञावान। छोडि रोसहि सदा कोमल औंन बोलत बैन। निरन्तर
जे करत यज्ञहि सुनहु सुऋषि सचैन॥ जात ते हैं चन्द्रमाके लोककों सुख औंन। दिवै हौ तुम
जातना किमि तहां हम जे हैं नं॥ * ॥ गैातमउवाच॥ * ॥ रजोगुण औ तमोगुणसों रहित अति
अभिराम। शोकहूसों रहित तेजस भरो अतिही धाम॥ लोक ऐसो भानुको जो जाय हौ
तिहिं माहि। दिवै हैं तो जातना हम तोहि संशय नाहि॥ * ॥ धृतराष्ट्रउवाच॥ * ॥ करत सेवा
गुरुकी जो प्रीति सहित बिशाल। शास्त्र श्रुतिमे रहत जे रत महत औंन दयाल॥ तपस्याकों
करत जे अरु गहैं सुव्रतहि औंन। सत्य जे जन नित्य बोलत धारु प्रज्ञाभैांन॥ दिवाकरके लोक
मैाही जात ते हैं पर्म। तहाँ हम जैहैं न आनहु सत्य सुऋषि सधर्म॥ * ॥ गैातमउवाच॥ * ॥
वरुणके तुमलोकमे जो आयहो भूपाल। दिवै हौ तो तहांहूँ हम जातना सुविशाल॥ * ॥ धृत
राष्ट्रउवाच॥ * ॥ बेदविधिसों अग्निहोत्र हि करै जो त्रयवर्ष। यज्ञ त्रय बर वर्षमाहीं करै
औंन सहर्ष॥ सुमारगमे चलै जो निति करै नित्य सुधर्म। वरुणके सो लोकमाँही जात सुऋषि
सधर्म॥ तहाँ हम जैहैं न यातें आतना तुम मोहि। दिवै हौं किहिभांतिसों ऋषि सुनो गैातम
ओहि॥ * ॥ गैातमउवाच॥ * ॥ जायबेकी तहाँ मानव करत इच्छा पर्म। शोकसों है रहित
ऐसो इन्द्रलोक सधर्म॥ तहाँ तुमकों जातना मैं दिवै हौं अति भूरि। कहा गजकों लेय कै तुम
रहे सुखसों पूरि॥ * ॥ धृतराष्ट्रउवाच॥ * ॥ युद्ध मे जे सूर है अरु पढत जे निति वेद। जियै जो
शतवर्षलौं बर करै धर्म अखेद। इन्द्रवारे लोकमाहीं जाय हैं जन तैान। दिवै हौ किमि जात
ना नहि करैगे तहँ गान॥ * ॥ गैातमउवाच॥ * ॥ स्वर्गहूके लसत ऊपर प्रजापतिको लोक।
जायबेकी तहां इच्छा करत सब बुधि ओक॥ तहाँ तुमकों जातना मैं दिवैं हौं महिपाल।
कहा कुञ्जर लेय मोरा भरे हर्ष बिशाल॥ * ॥ धृतराष्ट्रउवाच॥ * ॥ अश्वमेध हि करत जे अरु
प्रजा पालत औंन। प्रजापतिके लोककों ते जात हैं बुधिभैांन॥ तहाँ हम जैहैं न यातें आतना

१०५० तुम मोहि । दिवै हौ किहिँभाँतिसों ऋषि कहत हैं हम तोहि ॥ * ॥ गौतमउवाच ॥ * ॥
६०५१ शोकसों है रहित जो है परम दुर्लभ धार । जाय कै तहँ लहत अक्षय मोद सुमतिअगार ॥
सुनऊ शुचि गोलोक है इहिभाँतिको अभिराम । तहाँ तुमकों जातना मै दिवै हौं अतिमाम ॥
धृतराष्ट्रउवाच ॥ * ॥ सहस गो जो देत बिधिसों बर्षगाहि ललाम । सहित आदर
द्विजनकों बुलवायकै बुधिधाम ॥ हौहिं ग्टहमे आस ग्रंत गो देत जो दश गाय ॥ होहि
आके गज दश सो देय एक सचाय ॥ ब्रह्मचर्य्यहि माहि जे जन वृद्ध होत सुजान । करत
रक्षा धर्मकी जो बिप्रवर मतिमान ॥ गोमती अरु कौशिकीमे करत औन सनान । तिमिहि
यमुना सुरशरीमे करत स्नान सुजान ॥ बिपासा अरु बाऊद्रामे तिमिहि पंपामाहि । प्रेमसों
जे जाय कै जन करत स्नान सदाहि ॥ और उत्तम तीर्थ जे हैं भूमिमे अभिराम । सविधि
तिनमे स्नान जे जन करत हैं बुधिधाम ॥ जात ते गोलोककों हैं है न संशय यत्र । दिवै हौ किमि
जातना हम जायगे नहि तत्र ॥ * ॥ गौतम उवाच ॥ * ॥ उष्णता अरु शीतको है नेक जहँ
भय नाहि । क्षुधा प्यास न लगति है नहि होत दुख सुख पाहि ॥ राग द्वेष न जहां है अरु जरा
मरण न होय । शत्रुता अरु मित्रता जहँ परत है नहि जोय ॥ पाप पुण्य न जहा असो लोक
बिधिको पर्म । जातना मै दिवै हौं तहँ कहा लखन सशर्म ॥ * ॥ धृतराष्ट्र उवाच ॥ * ॥ करत
काहूको न जे जन सङ्ग हैं करि मोह । नेमसों जे करत हैं ब्रत करत कबऊ न कोह ॥ स्वर्ग
गतिकों प्राप्त ह्वै कै तौन जनअभिराम । बिधाताके लोक बरकों जात हैं बुधिधाम ॥ तहां हम
जे हैं न यातें जातना तुम मोहि । दिवै हौं किहिभांतिसौं मुनि कहा जोहत कोहि ॥ * ॥ गौतम
उवाच ॥ * ॥ पुण्डरीकंसु कंजकी जहँ होति वेदी चार । जहां गाये जात है निति सामवेद
सुढार ॥ जातना मै दिवै हौं धृतराष्ट्र हे तहँ तोहि । कहा गजकों लेय कै मुसकात मोतन जोहि ॥
तत अनन्तर जानि गौतम शक्रकों हे तात । कहत भे इमि बैन प्रज्ञाऐन मुनि अवदात ॥ लए तुमकों
जानि हे सुरराज अब हम आम । तुम न मनसा वाकहूसों करत अघ मुदधाम ॥ शतक्रतुरुवाच ॥
हम सु निजरनाथ हैं तुम लए हमकों जानि । तुम्हे करत प्रणाम हैं हम जोरि दोऊ पानि ॥
याजमे गजहरणके हम सुनी अद्भुत बांत । जो कहौ सो करैं अब हम सुनऊ मुनि अवदात ॥
गौतम उवाच ॥ * ॥ बर्षदशलौं हरि हमारे गज हि राखो अन्त । देऊ सो तुम कृपा करि कै
सुनऊ हे सुरकन्त ॥ * ॥ इन्द्रउवाच ॥ * ॥ लखऊ आवत आपुको यह सुवन बारण पर्म । चरण
उपटे रावरे के भूमिमाहि सधर्म ॥ हर्षि तिनकों चायसों सो रह्यो सुखसों पूरि । प्रेम बरण्यो
जात है नहि तास हियको भूरि ॥ करऊ बाहुण लेऊ बारण आपनो अभिराम । दया धारण
करु सु धारण श्रेय मम मतिधाम ॥ * ॥ गौतमउवाच ॥ * ॥ चहत हैं कल्याण तेरो सदा
हम सुरराय । पाय बारण आपनो मै भयो परम सचाय ॥ * ॥ इन्द्रउवाच ॥ * ॥ कहैं बिन

तुम जानि लीन्हों मोहि मुनि मतिधाम । भयो हौं परसन्न तातें भयो मुदमे बाम ॥ चलऊ तुम शुभलोककों गज सहित ऋषि अवदात । कहे ऐसे बचन मुनि सों शक्र सुनु हे तात ॥ ता अनन्तर करि सु आगे मुनिहिँ गज सह पर्म्म । सुराधिप सुरलोककों भो जात होय सशर्म्म ॥ दोहा ॥ * ॥ शा०प० दा०ध०

पढ़िहै जो आख्यान यह मढ़िहै मुदसों भूरि । जैहैं विधिके लोककों गौतमलौं सुख पूरि ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणआज्ञानुगामिना श्रीबन्दीजनकाशीवासि रघुनाथकवीश्वरात्मजेन गोकुलनाथेन कविना विरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणि दानधर्म्मे श्राद्धकल्पे चतुर्नवतितमोऽध्यायः ॥ *❧*❧*❧*❧**❧*❧**❧*

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

शान्ति अहिंसा सत्य अरु बहु प्रकारके दांन । अपनी तियमे तुष्टि अरु दान सुफल सुखवांन ॥ बरणि सुनायो मोहि तुम सुनऊं तात बुधिधाम । पूछतहौं एक हेतु अब कहऊ तांन तुम आम ॥ तपबलतें तुम और का जानत श्रेष्ठ सुजान । कहऊ श्रेष्ठ जो होय सो बक्ता आपु महांन ॥

॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥

जितनेतप तिनमाहि है अनसन तप अभिराम । अनसन तप सम और तप है न कहत बुधिधाम ॥

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

यह प्रसङ्गके माही भूप । सुनऊँ एक इतिहास अनूप ॥ विधि औ नृपति भगीरथ पर्म्म । तिनका है सम्बाद सधर्म्म ॥ अमरलोक गो लोकहि पर्म्म । अरु ऋषिलोक उलङ्घि सशर्म्म ॥ गये भगीरथ विधिके लोक । देखि ताहि विधि आनद ओक ॥ कहत भए ऐसें बर बैंन । सुनऊं युधिष्ठिर प्रज्ञा ऐंन ॥ आए कौंनभांति तुम भूप । इहिँ सुलोकके माहिँ अनूप ॥ नर अरु अमर तिर्मिहिँ गन्धर्व । किएँ तपस्या बिना अखर्व ॥ आय सकतहै कोऊ नाहिँ । मम उत्तम सुलोकके माहिँ ॥ ॥ * ॥ भगीरथउवाच ॥ * ॥ सुबरणकी मुद्रा एक लच्छ । दई द्विजनकों सादर स्वच्छ ॥ कहे वेदमे जे व्रत चारु । कीन्हें तेमे सविधि उदारु ॥ तिनके फलतें मे इहिँ लोक । आयो हौं नहि सुनु मुद ओक ॥ होत एकदिनमे मख जौंन । कीन्हें तेमे दश मुदभौंन ॥ होत पञ्चदिनमे जे यज्ञ । तेंऊ दश कीन्हे सुनु प्रज्ञ ॥ एकादशदिनमे मख जौंन । होत किए एकादश तौंन ॥ ज्योतिष्टोम यज्ञ शत एक । कीन्हे हैं हम सहित विवेक ॥ बसिके सुरसरितट शत बर्ष । कीन्हों तप हम महत सहर्ष ॥ तहां खचरी सहस सुढारु । दीन्ही हम सुनु मोद अगार ॥ औ कन्या दीन्ही अभिराम । भूषण परम पिन्हाय ललाम ॥ तिन्हऊँके फलतें हम नाहिँ । आए इहिँ सुलोकके माहि ॥ अश्व दिए सुन्दर एक लच्छ । अरु गो बीस सहसअति स्वच्छ ॥ दीन्हीं पुष्कर तीरथ माहिँ । बिप्र बुलाय बिज्ञ हम पाँहिँ ॥ सुबरणके आभरण पिन्हाय । साठि सहस कन्या छबिछाय ॥ विधिवत

आ॰प॰ दा॰ध॰ हम दीन्हीं लोकेश । भरे हर्ष सों परम अशेश ॥ तीन दानहूके फल सों न । आए दुहिण तुम्हारे भौंन ॥ गोमख माहिँ सुनहु लोकेश । करि सनमान द्विजनके वेश ॥ एक एक द्विजको हम गाय । दश दश अर्बुद दईसचाय ॥पहिले ब्याई जो है गाय । श्रुती ताहि कहत बुधराय॥ दोय कोटि हम दीन्हीं तीन । सुनु हे दुहिण परम सुखभौंन ॥ तीन दान फल सों हम पर्म । नाहि लह्यो तव लोक सुशर्म॥ बाल्हिदेशके बाजी चारु। श्वेत वर्णके प्रभा अगारु॥सुबरण भूषण सों अभिराम। भूषित लसैं चालके माम ॥ दीन्हे मैं सादर एक लक्ष । वायु वेगवारे अतिदक्ष ॥ एक एक नवमे लोकेश। कोटि कोटिवर मोर सुवेश॥ वेदवान बिप्रणकों दीन्ह ।तिनको विधिवत आदर कीन्ह॥ तीनहू फलसों आए नाहि । ब्रह्मा लोक तुम्हारे माहिँ ॥ श्यामकर्ण बाजी अभिराम। अरु बर हरितवर्ण छबिधाम ॥सुवरण माला तिन्हैं पिन्हाय ।सत्रह कोटि दिए सुखदाय ॥सुवरण माल विशाल सुठांन। तिनसों भूषित अति बलवांन ॥ तिनके दन्त सु उन्नत शुभ्र । मनु बकमाल धरे है अभ्र ॥ तिनके कुम्भनि ऊपर पर्म । चिन्ह पद्मके लसत सुशर्म॥ ऐसे सुन्दर मैगल माम ।सत्रहको टि दिए छबिधाम ॥ अरु सुवर्णके रथ रमणीय। तिन्हैं देखि मोदित व्है जीय॥मुकता लर लागी तिन मांहि ।इन्द्रहुके ऐसें रथ नाहि ॥ सत्रह कोटि दिए हम तान । युक्त सु बाजिनसों बल भौंन ॥ अरु दच्छिणाके सु जितेक । वेदमाहि हैं कहे तितेक ॥ वाजपेय दश यज्ञ सुवेश। करि दीन्हे हम सब लोकेश ॥ बलसों जीति सर्व महिपाल ।राजसूय करि यज्ञ बिशाल ॥ भूषण सों भूषित अभिराम। मघवा सम बिक्रमसों माम ॥ ऐसे भूपति एक हजार। दिए दच्छिणा माहि सुढार ॥ ॥ पद्धरीछन्द ॥

हम दीन्ह तीन शत चारु ग्राम।अरु षट हजार बाजी ललाम ॥ सङ्कल्प नीरको भो प्रवाह। सुर सरित सोतहु तें अथाह ॥ तिहि दानतें सु हम अब आय। नहि प्राप्त भए सुनु लोकराय ॥ सुरसरित न्यायवेकी महान। हिमवान भूमिधर पै सुठान ॥ हम कियो भूरि तप महत काल। थिरिके सुचित्त पच्छल बिशाल ॥ तिहितेऊँ लोक तव माहि आय । हम भए प्राप्त नहिँ लोकराय ॥ दिन द्वादशने मख होत जौंन। हम कीन्ह त्रयोदश यज्ञ तौंन ॥ बर सहस अष्ट बलके उतङ्ग ।सुबरण मढाय एक एक शृङ्ग॥हम दिए द्विजनकों वृषभ चार। आए न तौनहूतें उदार॥ बर हेम रत्नके निचय उद्द । हम दीए द्विजनकों बोलि शुद्ध ॥ धनधान्य युक्त अभिराम ग्राम । दीन्हें सहस्र विधिसों सु माम ॥ अरु अश्वमेध बहु यज्ञ कीन। तिनमाहि दच्छिणा भूरि दीन ॥ मढवाय हेमसों तरु सुढार। करि भूषित रत्ननसों अपार॥ तिन्ह तरुनको सु योजन प्रमान। बिस्तरित बिपिन अति बर सुठान॥ बर वेदवान बिप्रण बुलाय । विधि सहित तौंन दीन्हो सचाय ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

फलतें तौनहु दानके सुनु लोकेश सुशर्म। आए नहि तव लोकमें निश्चय जानहु पर्म॥

॥ * ॥ चरित्रछन्द ॥ * ॥ शा०प० दा०ध०

तीसवर्ष व्रत कियो सुरायन। होति प्रमाद क्रोध यह चायन॥ गो नौशत हम दीन्ही दिन दिन। मुदित भए अति पाई जिन जिन॥ तौन दानहूके फलतें बर। लोकमे न तव आए मुदकर॥ सौस सु चयन यज्ञ कीन्हें हम। अरु नरमेध सत्र कीन्हें सम॥ सविधि सु अष्टादश अरु एक शत। किए विश्वजित मख जहि श्रुति मत॥ नदी बाऊदा शरजू सुरसरि। नैमिषार औ तिनमे विधि करि॥ दश हजार गो दई दुग्ध वति। तौनऊतें न लई हम यह गति॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

राख्यो हियमे गुप्त करि अनसन व्रत सुरराय। ताकों आन्यो मुक्त करि तप महांन सुखदाय॥ ताहि जानिके मुक्त जिमि साधत भए सुजांन। तिमिहीं अनसन व्रतहि मै साधत भो सुखदान॥ साधें अनसन सुव्रतकों व्है प्रसन्न ऋषि सर्व। जितेऊते मम धाममे तेजस भरे अखर्व॥ ब्रह्मलोकको जाऊ तुम महत मोदके धाम। कहत भए ऐसें बचन मोहि दया करि नाम॥ ताते मै तव लोकको प्राप्त भयो लोकेश। नमस्कारमे करतहौं होऊ प्रसन्न अशेश॥ अनसन व्रत सम और नहि सुखदायक तप धर्म। ताहि किएतें मै लह्यो वर तव लोक सशर्म॥

॥ * ॥ तोमरछन्द ॥ * ॥

भीष्मउवाच ॥ * ॥ नृप भगीरथके बैंन। सुनि लोकनाथ सचैंन॥ अति व्है प्रसन्न सुजान। सुर वृन्द सहित महाँन॥ ॥ दोहा ॥

भगीरथहि पूजत भए आदरसों बैठाय। अनसन व्रत फल देतहै ऐसो है नरराय॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञानुगामिना श्रीवन्दीजनकाशीवासि रघुनाथकवीश्वरात्मजगोकुलनाथस्यात्मजगोपीनाथस्य शिष्येण मणिदेवेन कविना विरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणि दानधर्मे ब्रह्माभगीरथसम्वादे पञ्चनवतितमोऽध्यायः॥ *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥

लिखी वेदमे पुरुषकी आयु वर्षशत तात। बाल तरुण किमि मरतहैं कहिए करि विख्यात॥ आयु बढतिहै मनुजकी किएँ कर्मको कौन। अल्प आयुकिहि कर्मसों होत कहो बुधिभौन॥ कौन कर्मसों लहतहैं कीरति मनुज महांन। कौन कर्म कीन्हें लहत श्रिय सुखदा मतिमान॥

॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥ ॥ रामगीतोछन्द ॥ * ॥

लहतहैं जिहिं कर्मसो जन महत कीरति तात। औ लहैं जिहि कर्मसों श्रिय मोददा अवदात॥ मनुजको जो कर्म कीन्हें आयु होति महान। होतिहै औ कर्मसों जिहि अल्प आयु सुजान॥ कहतहौं ते कर्म तुमकों सुनऊ तजिकै भर्म। प्रश्न ऐसो करै तुम बिन कौन तात सधर्म॥ आय होति महांन जनकी किए तें आचार। लहत हैं आचारही सों श्रियऊ तात उदार॥ कीर्ति प्राप्तऊ होनको आचारही है हेत। तुम्हे निजुकै कहतहौं मै सुनऊ बुद्धि निकेत॥ हनत

आ॰ क॰ दा॰ भ॰ जनके पापको आचारहै अभिराम । सुनऊँ तातें योग्यहै आचार कीवो नाम ॥ क्रियासों जे रहित हैं नास्तीक है जन जौंन । दुराचारी पातकी अरु जौंन सुनु बुधिभौंन ॥ होतहैं अल्पायु ते जन कहत बुध अवदात । नेकु नहि सन्देह यामें जानु कुन्ती तात ॥तजत जे मर्यादकों अरु शीघ्र छोडत जौंन । रहत मैथुनमाहि जे रत नित्य दुर्म्मति भौंन॥ शास्त्रकों अरु गुरूकी जो वचन मानत नाहि । होत हैं अल्पायुते संशय न याके माहि ॥ नित्य बोलत सत्यहैं अरु जौन करत न क्रुद्ध । कवऊँ हिंसा करत जे नहि धरि प्रमादहि उद्ध ॥ करत कवऊ न असूया जे धरत श्रद्धा भूरि । आयु तिनकी बढतिहै निति रहत सुखसों पूरि ॥ दशन सों जे नित्य काटत नखनकों हे तात । धारि दुर्जन ताहि जे जन क्रोधकों सरसात ॥ तृणनकों जे नित्य तोरत लोष्ठ फोरत जौंन । महत आयुहि तौंन प्राप्त न होतहैं बुधिभौंन ॥ करत चुगली जौंन तिनको शीघ्र होत विनाश । हैं नहीं सन्देह यामे नेक नृप बुधिराश ॥ रहै निशि जब चारि घटिका तव सु आलस त्यागि । धर्मको अरु अर्थको नति करे चिन्तन लागि ॥ प्रात उठिकै स्नान संध्या करै विधिवत पर्म्म । तिमिहि सायंकाल संध्या करै तात सधर्म्म ॥ अर्ध उद्यत मारतण्डहि कवऊ लखिए नाहिं । औ न लखिए मारतण्डहि कवऊ अलके माहिं॥ हें.हि जब नभ मध्य गत कवहू न लखि ए तात । होत जनकों दोष देखैं कहत बुध अवदात ॥किएँ संध्या बढति आयु सु ऋषिनको अभिराम । करै तातें सविधि संध्या मौंन व्है बुधिधाम ॥ प्रातसंध्या करै जे नहि औ न सायंकाल ।कर्म्म तिन सों शूद्रके करवाइ ए महिपाल ॥ कवऊ नहि परनारि साही रमए कीजै भूप । धर्म्म चारिऊ वर्णको यह कहत प्रज्ञ अनूप ॥ सुनऊँ परतिय गमन जैसो आयु नाशक पर्म्म । और असो आयु नाशन होत है न सधर्म्म ॥ सुनऊ नृप परनारिके अँगमाहि रोम जितेक । रमत जो परनारि सेवत नरक वर्षेति तेक ॥ दन्त धावन केशधोवन देव पूजन जौंन । प्रात ए सब कार्य्य करिए कहत बर बुधिभौंन ॥ मुत्र विष्टा देखिए कवहू न तात सधर्म । औ उलङ्घनकीजिए नहि कहत प्रज्ञ अधर्म ॥ अतिहि प्रातःकाल औ नहि अतिहि सायंकाल । औ नहीं मध्यान्हमे चलिए सु धरणी पाल ॥ शूद्र मलके साथसे औ विजातीके साथ । गमन कवहूँ नाहीं कीजै सुनऊ वर नरनाथ ॥ भूपको औ विप्रकों अरु वृद्धजनकों पर्म । औ भजकों दीजिए पथ कहत प्रज्ञ अधर्म ॥ गर्भवतिका नारिकों अरु जौंन होय सभार । तिमिहि निवलहि दीजिए पथ दया करि सु अपार ॥ पिप्पलादिक वृक्ष जेपे पूजनीय सुजान । कीजि ए तिनकी प्रदक्षिण निशे अंह मतिमान ॥ अर्ध निशि मध्यान्हमे औ दुओ संध्या माहिं । चतुष्पथमे जाइए नहिं सुन्यो बुधजन पाहिँ ॥ अन्यकी पहिरी उपानह पहिरिए नहि तात । जौन ओढोवस्त्र सोजै कहत बुध अवदात ॥ चरण ऊपर चरणकों कवहूँ न धरि ए भूप । मुत्र विष्टा किजिए तरु छाहमे न अनूप ॥ अष्टमी औ अमावस्या पूर्णिमाके मांहि । औचतुर्दशि मांहि तियके जाइ ए नहि पांहिं ॥ कवऊँ काहूकी न

चुगली कीजिए दुखदाय । औ अनादर कीजिए नहि दुखद बैंन सुनाय ॥ आपु सों जो होय शा०प०
नीचो मढिये तिहिसों माहिं ॥ क्रूरताकों राखिए नहि आपने हियमाहिं । कबऊँ काहूँकों न दा०ध०
कहिए तात ऐसे बैंन। सुनें जिनकों होय हियके माहि भूरि अचैंन ॥ लगें शायक होत जो है देह
माहीं घाव । पूरि आवत तौन है कछु दिननमे नरराव ॥ वाक शायक लगेसों जो घाव होत
महांन। कबऊँ पूरत नांहिं सो है आनु निजु मतिमान ॥ युद्धमे जो लगत शायक सकत कढि है
तौंन। बचन शायक सकत कढि नहि आनु निज बुधिभौंन ॥ प्रश्न तातें कहत काहूसों न हैं कटु
बैंन । औ न काहूकों करैं परिहास प्रज्ञाचैंन ॥ रूप बिनके जौंन हैं अरु हीन अंगके जौंन।
कीजिए अपमान तिनको कबऊँ नहिँ बुधिभौंन ॥ जौंन विद्या हीन हैं अरु जौंन हैं धनहीन। की
जिए अपमान तिनहूँ को न तात प्रबीन ॥ पुत्रकों अरु शिष्यकों शिक्षार्थ ताडन देय। अन्य ओर
उठाइए नहि दण्ड करमे लेय ॥ प्रात अनुदय माहि उठिकै देवको करि ध्यान।मात औ पितकों
सु करिए निति प्रणाम सुजांन॥तिमिहि गुरुकों और जेठे होहि तिनकों भूप।नमस्कारसु कीजिए
निति यह सुधर्म अनूप ॥ बढति है यह धर्म कीन्हें आयु तात सधर्म। है नही सन्देह यामे कहत
प्रश्न अभर्म ॥ मासमाही कही जेतीं बस्तु भक्ष नृपाल । तिनहिको निति करिय भक्षण कहत
दक्ष विशाल ॥ बैठि उत्तरदिशा मुख कै शौच करिए तात । मौन ह्वै कै दन्तधावन करै निति
अवदातं ॥ वृद्ध ढिग औ गुरुके ढिग तिमि विचक्षण पास । देवपूजा किएँ बिनहूँ जाइए बुधि
रास ॥ देवपूजा किएँ बिन नहिँ जाइए अन्यत्र । होम नित्यहिं कीजिए यह धर्म भूप पवित्र ॥
मूत्र और पूरीष करि कै धोइए निति पाव। तिमिहिँ औ कऊँ जाइए तौ धोइए नरराय॥ भोज्य
औ अध्ययन कीजे पदनकों निति धोय । नित्यको यह धर्म कीन्हें रहत सुखसों भोय ॥ देवताके
अर्थ भोजन बिरचिए हे तात । स्नान करिकै शुद्ध ह्वैकै भनत बुध अवदात ॥ मलिन जो
आदरश ताकों देखिए कबहूँ न । औ निशामे देखिए नहि होति परमायू न ॥ शिरहि उत्तर
वोर करिकै शयन कीजै नाँहिँ। तिमिहि पश्चिम वोर कै हम सुन्यो बुधजन पाँहिँ ॥ पूर्वदक्षिणवोर
शिरकै नित्य कीजै शैंन । अतिअँधेरे माहि शैंन न कीजि ए मतिऐंन॥ होहि जौने सदनमाही
शोवती परदार । जाइए गृहि शोयवेकों तहा भूप उदार ॥ शोइए कबहू न जीरण भग्न
गृहके माहि । औन तिरछो शोइए हम सुन्यो बुधजन पाहि ॥ कीजिए कबहू न भूपति
नास्तिकनको सङ्ग । सङ्ग कीन्हें होत अपनो धर्मनष्ट उतङ्ग ॥ बैठि आसन पायसों नहि बैठिए
भूपाल । नग्न ह्वैकै न्हाइए नहि कहत सुबुध बिशाल ॥ औ निशाके माहि कबहूँ कीजिए
नहि स्नान। स्नान करिकै अङ्गकों नहि पोछिए मतिमान ॥ विना कीन्हें स्नान चन्दन लाइए
नाह भाल। स्नान करि कै बस्त्रकों फटकारिए न नृपाल ॥ बस्त्र भीजो राखिए कबहूँ न तनके

आ॰प॰ माहि। स्नानके बिन किए पूजा बोलिए हे नाहि ॥ देवता पै चढी माला पाइ तिहिकों धर्म।
दा॰ध॰ धरेन सो खैचिए कबऊ न तात सधर्म्म॥ पंन्हि ताकों जाइए नहि बाहिरे सुनु तात। परसिए
नहि पातकीकों कहत बुध अवदात ॥ रजस्वलिका नारिसों कबहू न कहिए बैन। ग्रामके
नहि निकट बिष्ठा कीजिए मतिऐन ॥ मूत्र बिष्ठा कीजिए नहि कबऊ जलकेमाहि। होत
माहीं अन्नके अरु यौं न सुरगृह पाहि ॥ अन्न भोजन करत जल नहि पीजिए बहुबार। करिसु
भोजन धोइए मुख तीनबार उदार ॥ पूर्व मुख ह्वै नित्य भोजन कीजिए ह्वै मौन। कबऊँ भोजनकी
न निन्दा कीजिए बुधिभौन ॥ करि सु भोजन राखिए कछु अन्न भाजनमाहि। बढति जनकी
आयु है ए किए धर्म सदाहि॥ पूर्वमुख ह्वै किए भोजन बढति आयु सु भूप। बदन दक्षिणओर
करिकै किए भोज्य अनूप॥ होत है यश भूमिकामे चन्दसो अभिराम। बदन पश्चिमओर
करि कै किएँ भोज्य ललाम॥ धन्य जगमे होत है मति पाय कै अवदात। बदन उत्तरओर करि कै
किए भोजन तात॥ होत है कल्याण प्रापित कहत बुध अभिराम। सुनऊ कुन्तीनन्द वर अरि
वृन्ददर बुधिधाम॥ करि सुभोजन परश शिखिको करि सु मनसों भूप। लाईए जल नाक कानसु
चक्षुमाहि अनूप॥ मूर्ध्नमाही तिनिहि जलको परश कीजै तात। ता अनन्तर देहमे सब
कीजिए अवदात॥ अस्थि भस्म अजार अरु बऊ परो होय सुजान। तहां ठाढो हूजिए नहि कहत
प्रश्न महान॥ अन्यजनके स्नानतें जो बच्यो है कीलाल। कीजिए नहि स्नान तासों कहत बुद्ध
विशाल॥ अन्न पथमे चलत कबहूँ खाइए नहि तात। ओखरो ह्वै खाइए नहि कहत बुध अवदात॥
मूत्र कीजै भस्ममे औ गऊगृहमे नाहि। औ न ठाढो होय कीजै औ न सुरगृह पाहि॥ आय भोजन
करनकों तब धोय करि कै पाय। पोंछिए नहि चरण आले राखिए नरराय॥ शयन कीजै धोय
करि कै पोंछि पाय सुखदायु। किए यह विधि नित्य नृपबर बढति है बऊ आयु॥ खाय कै कछु
बिना धोएँ बदनकों अभिराम। विप्र गो अरु अग्निकों जु छुवत नहि बुधिधाम॥ भानु औ सित
भानुकों औ नखत वृन्दहि धर्म। जे न देखत होत ते अल्पायु नाहि सधर्म॥ वृद्ध आवै पास जब तब
नम्र ह्वै बुधिधाम। जोरि कर उठि जाय सोंहे सविधि करि परनाम॥ हाथ अपने चाह आसनकों
बिछाय नरेश। वृद्धकों बैठाइए यह धर्म सुखदअशेष॥ कांस्य भाजन भग्नमे करिए न भोजनतात।
भग्न आसनपै न कबहू बैठिए अवदात॥ कीजिए भोजन न तनमे राखि कै एकबास। औ न कीजै
शैन ह्वैकै नग्न सुनु बुधिरास॥ औ सुनो उच्छिष्ट मुखऊँ कीजिए नहि शैन। औ न शिरकों परशिए
उच्छिष्ट मुख मतिऐंन॥ रहत शिरके सर्व आश्रय प्राण हैं नरराय। केशनातें खैचिए नहि कहत बर
बुधराय॥ औ न कबहू घाव दीजै हां न शिरके माहिँ। शिरहि अपने पाणि दोउनसों खुजाइय नाहिँ॥
औ न पुनिपुनि स्नान कीजै सहितशिर महिपाल। किएँ यह विधिहोति जनकी आयु परम विशाल॥
जो लगायो तेल शिरमे रह्यो तामे जौंन। अङ्गमे लगवाइए नहिं तौन सुनु बुधिभौन। जौंन

भूखे तिनकों कबहुँ न भखत तात। होत हैं अल्पायु ते नहि कहत बुध अवदात॥ बेदकों उच्छिष्ट आण्प॰
मुख कबहुँ न पढिए भूप। औ पढाईये न कबहुँ कहत बुध अनुरूप॥ बेदकों पढिए न तब जब दाण्ध॰
चले वायु महान। औ तहां पढिए न जहं दुर्गन्ध होय महान॥ *॥ दोहा॥ *॥
बाणी श्री यमरायकी कही परम अभिराम। यह प्रसङ्गमे कहतहौं सुनऊ तौंन बुधिधाम॥
॥ *॥ रामगीतीछन्द॥ *
पढंत जे उच्छिष्ट मुख अरु पढावत अन जौंन। होत हैं अल्पायु अरु नहि लहत सन्तति तौन॥
अनध्यायनमाहिँ जे जन पढत अन्न सुबेद। बेदकों ते लहत हैं नहिँ रहत नित्य सखेद॥ होत हैं
अल्पायु ते यहमाहि संशय नाहि। कही बाणी धरमकी हम सुनी बुधजन पाहि॥ चञ्चलाछन्द॥
भानु अग्नि गाय बिप्र सामुहें अजान जौंन। मुत्र औ पुरीष कर्त होत हैं अतायु तौंन॥ जेन
कर्त ते सुप्राप्त होत आयुकों महान। नित्य ते अनन्दकों लहैं नरिन्द्र हे सुजान॥ *॥ दोहा॥ *॥
बिष्ठा मुत्रहि करत जे उत्तरमुख दिनमाहिं। दक्षिणमुख निशिमाहि ते हैं अल्पायू नाहिं॥
॥ *॥ तोमरछन्द॥ *॥
हठ कीजिए गुरु साथ। कबहूँ न हे नरनाथ॥ जब होय गुरु सह क्रुद्ध। तब नम्र ह्वै अति
शुद्ध॥ करि कै बिनै परि पाय। करिए प्रसन्न सचाय॥ गुरुकी सुनिन्दा जौंन। अन करत दुर्मति
भौंन॥ निहचै हि तिनकी आय। नशि जाति है नरराय॥ *॥ रोलाछन्द॥ *॥
चरण धोयवे काज लयो भोजनमे जो जल। दूरि डारिए बच्यो होय जिहिँ माहि जितो जल॥
भोजन करि कै जाय दूरि कछु बऊजल लै वर। बदन कीजिए शुद्ध नित्य सुनु भूप सुमतिधर॥
॥ *॥ दोहा॥ *॥
दूरि कीजिए धामतें मूत्र जाय कै तात। धाममाहिँ नहिँ कीजीए भनत सुबुध अवदात॥
कबऊँ न धारण कीजिए रक्त पुष्पकी माल। शुक्लपुष्पकी मालकों धरिए सदा नृपाल॥
रक्त सुमन जे बिपिनके औ नीरज हैं जौंन। ते तो धारण कीजिए सदा तात बुधिभौन॥
कचमाहिहुके सुमनकी माला दूषित नाहिं। सुन्यो तात सिद्धान्त यह हम वर बुधजन पाहिँ॥
॥ *॥ सोरठा॥ *॥
जो अन करि कै स्नान आवैं पूजा समयमे। शिरमे तास सुजान चन्दन चारु लगाइए॥
॥ *॥ रामगीतीछन्द॥ *॥
ओढिवेके बस्त्र तिनकों पैन्हिए नहिं तात। ओढिए नहिँ पैन्हिबेके बस्त्रकों अवदात॥ दशी
औने बसनमाहीं होय नाहीं भूप। कीजिए नहिँ तासु धारण कहत प्राज्ञ अनूप॥ देव पूजा सम
यके अरु शयनके वरवास। निमिहि बाहिर जायबेके बसन नृप बुधिरास॥ पृथक पृथक सु राखिए
मतिमान भनत हमेश। राखिए नहि आय्धे सबमे एक बसन नरेश॥ रहे दिनभर ब्रह्मचारी भयो

अ०५० करि कै आन ब्रह्मचारी होय औ सब पर्वमाहिँ सुजान॥एक भाजनमाहिँ अन्न दै चारि मिलि कै
श्लो०४० तात। कीजिए कबहूँ न भोजन भनत बुध अवदात॥ गऊ औ मञ्जारको सूघ्यो सु भोजन जौन।
तिमिहिं सूघ्यो श्वानको करिए न भोजन तौन॥ लवण करमे खाइए नहिं औ न निशिके माह।
शक्तु दधिसंग खाइए कबहूँ न हे नरनाह॥ तैन भोजन कीजिए नहिं कढे आमे बाल। मांस सूखो
औ न बासो खाइये महिपाल॥ मांस गाय मयूरको है नित्य बर्जित तात। खाइए कबहूँ न ताते
भनत बुध विख्यात॥भूमिमे धरि कीजिए कबहूँ न भोजन पर्म।औ सु भोजन शब्दवत कीजै न तात
सधर्म॥ पंक्तिमाहीं सबनकों दीजै सु भोज्य समान। दीजिए नाहँ कबहूँ न्यूनाधिक्य तात सुजान॥
भक्ष्य जेती बस्तु तिनकों भक्ति करिकै प्रेम। कबहूँ काहूकों न दीजै भनत सुबुध सुप्रेम॥ उदुम्बर
सणशाक पिप्पल बटनके फल जौन। चहत जे कल्याण ते नहिँ खात हैं बुधिभौन॥ करि सु भोजन
आचमन करि कहत बुध अवदात। चरण दक्षिणके अंगुष्ठ हि धोय उठिए तात॥ ता अनन्तर
शुद्ध ह्वै कै पाणिसों शिर पर्शि। परस करिए अग्निको ह्वै खरो सोइ है दर्शि॥ किए यह बिधि रहत
मोदित पचत अन्न सुजान। प्रशंसा है होति जनकी ज्ञातिमाहिँ महान॥ज्ञातिको जो वृद्ध अपनो औ
दरिद्री मित्र।इन्हे राखे गेहमाहीं होत गेह पवित्र॥ जौन राखत धन्य तेहैं बढति तिनकी आयु।
कढति बाधा गेहते सब रहत आनन्द छायु॥सारिक शुक औ परेवा राखिए गृहमाहि।वृद्धि कारक
सर्ब ए है अत्र संशय नाहि॥ गृध्र उद्दीपक तथा अलि तिमिहि भूप कपोत। सर्ब आए धाममे ए
करत अशुभ उदोत। कीजिए निन्दा न कबहूँ महतजनकी तात। छोडि कपटहि प्रशंसा निति
कीजिए अवदात॥ नृपतिकी अरु वैद्यकी अरु वृद्धकी तिय भूप। विप्रकी अरु बन्धुकी अरु भृत्य
नारी अनूप॥ बालकी औ शरणमेजो होय ताका दाह। नारि सम्बन्धीजकी औ है अगम्या चाह॥
गमन इनमे करत जे नहि महत तिनकी आयु। होति निश्चय कहत हैं बुध सुनऊ वर नरराय॥
शास्त्र मतसों शुद्ध जो वर बनो होय अगार। बास तामे कीजिए बुधिराशि भनत सुढार॥ शयन
औ अध्ययन संध्यामाँहि कीजै नाहिँ। औ न भोजन कीजिए हम सुन्यो बुधजन पाँहि। किएँ यह
बिधि होति जनकी आयु महत सुजान। नित्य यामे रहत रत हैं परम प्रज्ञावान॥ धोइए नहिँ
केश कबहूँ करि सु भोजन तात। औ न कीजे श्राद्ध निशिमे भनत बुध बिख्यात॥ बहुत
भोजन कीजिए नहिँ कबहूँ रजनीमाहिँ। विहङ्गनको मारिए महिपाल कबहूँ नाहिँ॥
बैन अप्रिय भूप कहिए कबहू काहू कौ न। औ न काहूको सतावै कीजिए बुधिभौन॥
कीजिए निन्दा न काहूकी परोक्ष सुजान। घटति जनकी आयु ए सब कीएतें मतिमान॥
पतितसों नहि बोलिए कबहूँ न हे महिपाल। दर्श पर्शहु कीजिए नहिँ कहत प्रज्ञ बिशाल॥
पतितको संसर्गसो है आयुहर्ता पर्म। है नही सन्देह यामे सुनऊ तात सधर्म॥ किएतें दिन
माँहि मैथुन होत जन अल्पायु। तिमिहिं कन्या गमनतें जनहोतोहै अल्पायु॥ रमण कुलटा
माँहि कीन्हे होति आयुष छीन। औ किएतें स्नान पुनि पुनि कहत परम प्रवीन॥ रजोदर्शन

भए बिन नहिं आइए तिय पास। हेतु दीरघ आयुको यह भणत वर बुधि रास॥ होय जाको जन्म शा०८८०
भो कुलमाहिँ उत्तम पर्म। होहि जाके अङ्ग सुन्दर सर्व तात सधर्म॥ होय जाकी बरोबरि वय दा०५०
तिहिँ सु कन्या साथ। व्याह कीबो योग्यहै सुनु धर्मधर नरनाथ॥ वंश राखन हेत करि उत्पन्न पुत्र
सुजान। सविधि ताहि पढायकै करि भूरि वर मतिमान॥ परम उत्तम वंश मांहो तास कीजे
व्याह। राखिए निति धर्ममाँहि प्रवृत्त हे नरनाह॥ पुत्रिका उत्पन्न करिकै सहित बिधि अभि
राम। सुकुलमे उत्पन्न शुचि धीमान परमाधाम॥ दीजिए ऐसे सु बरको हर्ष सहित बिशाल।
धर्मधर वर कीर्तिकर वर प्रश्न सुनु महिपाल॥ सविधि सह शिरस्नान करिकैं बिमल तन अभिराम।
देव कारज पितर कारज कीजिए बुधिधाम॥ होय जामें नखत माहीं जन्म सुनु हे तात। श्राद्ध
तिहिमे कीजिए नहिँ भनत बुध विख्यात॥ पूरवा अरु उत्तरामे श्राद्ध कीजे नाहिँ। तिमिहि श्राद्ध
कीजिए नहि भणत कृत्तिका माँहि॥ और ज्योतिष माँहि वर्जितहैं जितेक नक्षत्र। श्राद्ध तिनमे
कीजिए नहि भणत प्रश्न पवित्र॥ पूर्व मुख औ उदीची मुख जे करावत क्षौर। बढति तिनकी
आयुहै वर भणत बुधशिरमौर॥ होय जाने बंशमे रुज मृगी कुष्ट महान। व्याह ताने
बंशमे नहि कीजिए मतिमान॥ चारु लक्षण जिते तिनसो होय युक्ता जान। दर्शनीया प्र
शस्ता औ होय जो बुधिमान॥ होय जामे कुटिलता नहिं नेकहू नरनाथ। व्याह कीजे चाहि
ऐसो कन्यकाके साथ॥ ईरषा कबहूँ न कीजे नारिमे नृप प्रश्न। हेतु है अल्पायुको यह कहत बर
धरमज्ञ॥ उदयमाहीं भानुके अरु दिवस माही सैन। किए तें जन होत हैं अल्पायु नृप मतिऐन॥
औ किएँ उच्छिष्ट मुखनिशि मांहि शयन सुजान। तिमिहिं संध्यामे किएँ अल्पायु होत अजान॥
स्नान भोजन पठन संध्या माहिँ कीजे नाहि। औ न कबहूँ गमन कीजे पर सु नारी मांहिँ॥ करत
जे ते होतहैं अल्पायु हे महिपाल। है नही सन्देह यामे भणत विप्र बिशाल॥ क्षौरको करवाय
करिकै तबहि कीजे स्नान। घटतिहै आयुष्य कीन्हें देर हे मतिमान॥ द्विजनकी अरु देवतनकी
तिमिहिँ गुरुको पर्म। स्नान करिकै किएँ पूजा बढति आयु सधर्म॥ निमंत्रण बिन जाइए नृप
बिवाहादिक मे न। निमंत्रणहू बिना मखमे जाइए बुधिऐन॥ आयु रक्षहि करि सु साहस जाइ
ए न बिदेश। औ निशामे चालिए नहिं बिना सङ्ग नरेश॥ मातको अरु पिताको अरु गुरुनको
अवदात॥ हितज्ञ औ अनहितज्ञ शासन मानिए हे तात॥ वेद औ धनुवेद पढिए यत्नसों अभिराम।
तिमिहिं अश्वादिकन पै चढिए सु नृप बुधिधाम॥ नीति शास्त्रहि तथा बर गन्धर्व शास्त्रहि पर्म।
शब्द शास्त्रहि तिमिहिं पढिए यत्न संहित सधर्म॥ शास्त्रमे हैं कही जेती कलाजेती सर्व। जानिए

अ॰मे॰ प॰ धारि। कहे युधिष्ठिरसों निरधारि॥ नृप सुनि सर्वधर्म्म व्यवहार। फिरि फिरि कहत कहत जिमि बार॥ वृथा बके हम परो लखाय। नहि तुम सुने नेकु मनलाय॥ युद्ध जीवकी जाकी मुद्द। ताको मरिवो कौन विरुद्ध॥ साधु असाधु कर्म्म जो पीन। पुरुष करत न्है दैवाधीन॥ याते कछु शोच को काम। निजपहँ थापत पाप अकाम॥ कीन्हे सविधि यज्ञ तप दान। मिटत पाप यह शास्त्र निदान॥ ताते अश्वमेध मख पर्म्म। करों जानि भूपनको धर्म्म॥ यह सुनि धर्म्मभूप हित जानि कहे व्याससुनिसों अनुमानि॥ मुनि हम हीनद्रव्य यहि काल। कैसे करिये यज्ञ विशाल॥ भूरि दान दीन्हे बिनु तात। सिद्ध न होत यज्ञ अवदात॥ ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ ॥ * ॥

जिनके पति सुत बधि गए घोरयुद्ध मधि आय। तिन युवतिनसों लेब धन उचित नही मुनिराय॥
ताते मुनि अनुमान करि कहो उचित जो मंत्र। जेहि प्रकार विधिवत सधै बाजिमेधको तंत्र॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

यह सुनि व्यासमुनीश सुज्ञानी। कहे धर्म्मनृपसों अनुमानी॥ पूर्व मरुत भूपति यश कारय। अश्वमेध मख कीन्हो आरय॥ तहँ लहि दान विप्र मनभाए। नहि जो चलो तौन तजि आए॥ हम कहि देत तौन ले आयो। अश्वमेध करि आनद छायो॥ ऐसो व्यासदेवसों सुनिकै। धर्म्म भूप बूझत भे गुनिकै॥ कब मख कियो मरुत नरनायक। कहो तौन सुनि मङ्गल दायक॥ सुनि मुनि कहे सुनो नरपालक। भयो मरुत जब खल कुलघालक॥ नृप कृतयुगमे पङ्कजनाता। भयो दण्डधर मनु विख्याता॥ ता सुत भौ प्रसन्धि नरनाह। तासु सुवन क्षुप दीरघ बाह॥ तासु सुवन इक्ष्वाकु महीपा। भए ताहि शत सुत कुलदीपा॥ नृपति विंश तिनमे गुर ख्याता। तासु विश्वास पुत्र महिख्याता॥ पन्द्रह सुवन प्रबल भे ताके। जेठे खनीनेत्र बर भाके॥ तासु सुवर्चस सुवन सुराजा। तासु सुवन कारन्धम राजा॥ त्रेतामे कारन्धम भूपा। सार्वभौम नृप भयो अनूपा॥ जाको सुवन मरुत धनुधारी। भयो विष्णु सम भूतल चारी॥ सो हिमगिरिके ऊपर आया। कियो यज्ञ करि धर्म्म विलासा॥ * * * * * ॥ दोहा ॥ * * * * * *

व्यासदेवके बचन सुनि कहे युधिष्ठिर भूप। कहो सुमुनि बिसतार करि यह इतिहास अनूप॥

॥ * ॥ व्यासउवाच ॥ * ॥

भए अङ्गिरसके प्रगट दोय पुत्र तपधाम। प्रथम बृहस्पति दुतिय हे मुनि सम्बर्त सुनाम॥
तिनयुग बन्धु नसो नृपति भो अतिदुखद विरोध। तब गृह तजि कै बन गयो छोटो अनुज सुबोध॥

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

तदनु असुरगण जीति बासव इन्द्रपद लहि भूप। इविधि गुरुसों कहत भे नहि और मम अनुरूप॥ मरुत नृप मम सदृश महिपर तासु हित तुम जाय। यज्ञ मति करवाइयो यह करो पण मनलाय॥ है करन्धम मरुतनृपको पितामह अभिराम। ताहि करवाए अमित मख अङ्ग

रस तपधाम ॥ तथा तेहि करवाइबो मख चहौ तुम तौ तात। आऊ अब औ रहौ इत तौ करो पण अवदात ॥ बचन यह सुनि आय बोले तुम्हहि तजि न कदापि । भूमि महँ करवाइबे मख कुण्ड बेदी थापि ॥ जीवके ए बचन सुनिके शक्र त्यागे शोच। इतै चाह्यो यज्ञ कीबो मरुत भूप अपोच ॥ यज्ञ कीबो चाहि भूपति आय सुरगुरु पास। कहे हम मख कियो चाहत करो पूरण आस ॥ कहे सुरगुरु आऊ भूपति नरपतिन कहँ याग । जाय हम करवाइबेको गहत नहि अनुराग ॥ सुरख सह सुरराजसो अपमान अनुपम पाय । नरनकहँ अपमान करिबो कौन महिमैं आय ॥ कहे नृप तो पिता ऋषि मम पितामहको पूर्व । यज्ञ करवायो तथा तुम करो सो बिधि पूर्व ॥ कहे मुनि सुरराजसों हम किए पण एहि हेत । आऊ नृप निज बिप्रसों यह कहो कारज चेत ॥ जीवके ए बचन सुनिके फिरो भूप लजाय। तहा रहि गुण रटत नारद मिले मगमै आय ॥ दीन मन लखि भूपको मुनि भए बूझत भेद। दीन मनहौ भूप कत कहु लहे हौ निरबेद ॥ मुनिके सुनि बचन भूपति कह्यो सो बिरतान्त । भूपसों तब कहत भे इमि सुमुनि नारद दान्त ॥ अङ्गिरसको पुत्र लघु सम्बर्त मुनि तपधाम । भूप तेहि तुम ल्याइकै मख करो पूरण काम ॥ भ्रमत तीरथ काशिकाकों गयो सो यहि काल। जाइ तहँ सम्बाद मम कहि ल्याइयो निज नाल ॥ ◆◆◆◆◆◆◆ ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ ◆◆◆◆◆◆◆◆◆

यह सुनि भूपति मोद लहि जाइ काशिका द्वार । लखि सम्बर्तहि जोरि कर पीछू चलो उदार ॥
लखि भूपहि सम्बर्तमुनि बढनहतर कारि गौन । कहे भूपसों भेद मम तुम्है बतायो कौन ॥
साँच कहो नहि शीशतुव फटि व्है है बज्र टूक । यह सुनि नृप सम्बर्त ते बोले बचन अचूक ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

यह उपदेश दियो मुनि नारद । मुनि तुम मम गुरुपुत्र बिशारद ॥ तुव प्रसाद लहिके है आरत । हम मख कियो चहत हित कारत ॥ यह सुनि मुनि भूपतिसों भाषे । हम मख त्यागि बिपिनि अभिलाषे ॥ प्रथम बृहस्पतिसों यह कहहू । वै न करै तब हमकहँ गहहू ॥ तब नृपसब बिरतान्त सुनाए । औ सुरगुरुसों सुनि फिरि आए ॥ यह सुनि कहत भए मुनिनायक । नृप तुम यज्ञ करो निज लायक ॥ हम चलि यज्ञ कराइब बिधिसों । जाते होऊ शक्रसम निधिसों ॥ जो हिमवान शैलबर टीको । ताढिग मुञ्जवानगिरि नीको ॥ ताके मध्य गुहा अभिरामा । तहा तपत तप शंभु सकामा ॥ सुर गन्धर्व यक्ष ऋषि जेते । तहां बिहार करै सब तेते ॥ नृप ताके ढिग है अति पावनि। जात रूपकी खानि सोहावनि ॥ तेहि कुबेरके गण सह साजा । सदा रहत रक्षत सुनु राजा ॥ ताते तुम करि शिवको पूजन । करि प्रणाम करि अस्तुति कूजन ॥ ले धन तौन करो मख रञ्जन । सुनितो कियो भूमि पुर मञ्जन ॥ सो सुधि लहि सुरगुरु अकुलाने । सुनि अति अनरथ हिए सकाने ॥ शक्र गुरुहि अति चिन्तित ज्वै कै । बूझे भेद भौतिसों भ्वै कै ॥ *◆*◆*

अ०मे० प०

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

कहे बृहस्पति शक्रसों मरुत आइ मम पास । यज्ञकरावन हेत मो याचत पूरित आस ॥
तो संमत अनुमानि हम नहि मान्यो सो बैन । अब सम्बर्तहि ल्याय सो यज्ञ करत चहि चैन ॥

॥ * ॥ बृहस्पतिरुवाच ॥ * ॥

नहि सपत्नकी वृद्धि यश काहू सोही जात । जानि वृद्धि सम्बर्तकी हम बिचरत हे तात ॥

॥ * ॥ इन्द्र उवाच ॥ * ॥

तजौ सोच हम अगिनि कहँ भेजत सो समुझाय । कहिहि भूपसों भूप मख करिहैं तुम्हे बलाय ॥
लहि अनुशासन शक्रकी अगिनि मरुत पहँ आय । अर्घ पाद्य लहि नृपतिसों कहत भए समुझाय ॥

॥ * ॥ अग्नि रुवाच ॥ * ॥

नृप हम आए शक्र को लै यह शुभद सँदेश । तजि संवर्तहि जीवकहं रित्विज करो शुभेश ॥
जौन लोक बसि जौन फल ईछत भूभरतार । तपनिधि सुरगुरु तत्वबिद जीव तासु दातार ॥
आयहुतो संवर्त मम नहि सुर गुरसु प्रयोग । व्है महेंद्रको परम गुरु नहि मम रित्विज योग ॥
तब संबर्तक अगिनिसों कहे नयन करि बक्र । भसमित करिहौं तोहि नहि शीघ्र आऊ अह शक्र ॥
यह सुनि पावक भीत भरि सुरनायक पहँ आय । निज नृप अरु संबर्तको बार्ता दए सुनाय ॥

॥ * ॥ इन्द्र उवाच ॥ * ॥

फेरि आय तुम तिमि कहो नहि मानिहि तो ताहि । हठ करि बधिहो जीवहित दुसह बज्रबर बाहि ॥

॥ * ॥ अग्निरुवाच ॥ * ॥

अगिनि कही हम जावनहि गुणि तह इतो बिशेष । कह्यो बिप्र अब तोहि लखि करिहों भसमाशेष ॥

॥ * ॥ जयकरी छन्द ॥ * ॥

सुनि सुरपति करि क्रोध अखर्ब । हो धृतराष्ट्र नाम गन्धर्ब ॥ तासों कहे मरुत पहँ आय । मम सँदेश यह कहो बुझाय ॥ अबि संवर्तहि दूरि हुराय । जीवहि रित्विज करै सचाय ॥ सुनि गन्धर्ब आय नहि चैन । कह्यो मरुत नृपसों यह बैन ॥ * ॥ मरुत उवाच ॥ * ॥ शक्रहि जीव करावहिं कर्म । सम्बर्तक मम रित्विज धर्म ॥ इतनेमे सुरपति तेहि पर्व १ नभ पहँ गरजत भए सगर्ब ॥ तब गन्धर्ब कह्यो सुनु भूप । तो बध चाहत शक्र अनूप ॥ नभ पहँ गरजत सनमुख आय । बाहन चहत बज्र हठ धाय ॥ यह सुनि मरुत महीप सचेत । सम्बर्तकहि सुनायो हेत ॥ सुनिबोल्यो सम्बर्त उदार । मति भय गहो भूमि भरतार ॥ कहा बज्र का शक्र कठोर । तप प्रभाव मम महा अघोर ॥ जैसो निरखन चहो उजास । तैसो लखो इन्द्रको त्रास ॥ सुनि नृप कह्यो शीघ्र सुरराज । इत अबि आवै सहित समाज ॥ मुनि प्रभाव लखि नृप तेहि काल । तुरित तहां आए सुरपाल ॥ मिलि नृप सुरपति मुनि मुद पूरि । किए परस्पर बार्ता भूरि ॥ सरस प्रेम नहि बैर बिहाय । सुर

पतिको अनुशासन पाय ॥ अमर किन्नर यक्ष समक्ष । वसु सुमनस गन्धर्व प्रत्यक्ष ॥ सादर तहाँ राखि चिरकाल। कीन्हो यज्ञ महत क्षितिपाल ॥ अगिनित तहां द्रव्यके ढेर । सो सो बिलसो यथा कुबेर ॥ व्यासदेवके ऐसे बैन । सुनि नृपधर्म्म पाय अति चैन ॥ राज नीतिको समुझि सुतंत्र । कृष्ण चन्द्रसों बूझे मंत्र ॥ अब हमसों कछु कह्यो न जात । अब जो उचित कहो सो तात ॥ कहे कृष्ण सुनु भूप प्रवीन । सब जग होत मृत्यु आधीन ॥ अब इतिहास कहतहौं एक । भूप सुनहु सो सहित बिबेक ॥ वृत्रासुर अति हत्यो अमान । हत्यो भूमिको गन्ध महान ॥ वज्र तज्यो तापै मघवान । धस्यो बारि मधि वृत्र अमान ॥ वज्र हन्यो फिरि तापहँ शक्र । तब रस हरि सो ईथत बक्र ॥ दुरो तेज मधि ओज बढाय । हन्यो वज्र फिरि शक्र रिसाय ॥ व्है ताडित हरि सु विषय रूप । जाय बायु मधि बीर अनूप ॥ हस्यो बायुको बिषय समाज । तहँ फिरि वज्र हन्यो सुरराज॥तब धसि नभय मध्य सो बीर । हस्यो शब्द गुण परम गम्भीर ॥ तब मघवा करि कोपित अति चण्ड । हन्यो वृत्रकहँ वज्र उदण्ड ॥ *~*~*~ ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ *~*~*~*

तब वृत्रासुर शक्र कोतनमधि प्रविशि सजोर । हस्यो विषय मोहित भए शक्र सुमन सिर मोर ॥ तब वशिष्ठ चिन्तित कियो चेतै वज्रवर बाहि । निज गाचस्थ अदृश्य तेहि बध्यो शक्र जय चाहि॥ एक पिताके पुत्र इमि सरे मरे नृप पूर्व । क्षात्र धर्म्म यह सिद्ध है शोच करो मति गूर्व ॥ ~*~

॥ * ॥ वासुदेव उवाच ॥ * ॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

दोय बिधिकी होति दुखदा व्याधि सुनिजे भूप । एक दैहिक मानसिक ए यथा नाम सरूप ॥लहे सुख दुख रहत सुमिरत सुपटु पुरुष प्रवीन। परे दुख सुख करत सुमिरन होत नाहि अधीन ॥ सभामधिमें द्रौपदीकी भई ही गति जौन । करन जो दुरबचन भाख्यो सुरतिकी जै तौन ॥ अरत वर्ष कढि लाख मटहसों सह्यो जो दुख घोर। विपिनिको दुख समुझि भूपति गुनो यह दुख घोर ॥ दोय अक्षर मृत्यु नृप अरु ब्रह्म सुवरण तीन। होति मृत्यु ममेति अरु न ममेति ब्रह्म अधीन॥ ब्रह्म भाखत सुबुधि सों गुनि त्यागि सिगरो शोच। अश्वमेध सु यज्ञ करिबेको करो अब रोच ॥ इबिधिके बहु भाँतिके सुनि कृष्ण प्रभुके बैन । धर्म्म भूपति शोक तजिकै भए समुद सचैन ॥ पूजि बिप्रन प्रजनकहँ दै धीर साहस भूप । भीष्मकी करि क्रिया लहिकै सु दिन लग्न अनूप ॥ भूरि दक्षिणा भूसुरन दै सुनत मंगलचार । सहित नृप धृतराष्ट्र प्रविसे पुरी मध्य उदार॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

यथा उचित शुचि शुभसदनि करिनिवास मतिमान ।पूजि भूसुरन देत भे गो मणि पुञ्जनी दान॥ लगे प्रजा पालन करन नीति निपुण नृप धर्म्म । शुचि बसु बन्धुन सहित पटु ज्ञाता शुद्ध सुकर्म्म ॥

अ॰ सं॰ स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणसिंहाज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशी
प॰ वासिगोकुलनाथकवीश्वरात्मजेन गोपीनाथकविना विरचिते भाषायां भारतान्तर्गते अश्वमेध
पर्व्वणि युधिष्ठिरराज्यप्राप्तिर्नाम प्रथमोऽध्यायः ॥ *******

॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

राम कृष्ण श्रीरमणकी लहिकै कृपा अनूप । लगे प्रजा पालन करन मुदित युधिष्ठिर भूप ॥

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

कछू दिन रहि तहां केशव पार्थ पूरित मोद । इन्द्रप्रस्थ सु सभामधि फिरि गए करत विनोद ॥ तहाँ केशव कहे कितने कथा अरु इतिहास । कहतभे फिरि पार्थसों इमि विशद वीर विलास प्रबल अरिसों युद्ध करिकै विहित धर्म्म नरेश । पार्थ तेरे बाहुबलसों लहे विजय सुभेश ॥ सकल पाण्डव मोहि अतिप्रिय इतो और न आन । धर्म्म भूपहि त्यागि हम नहि चहत कितहू जान ॥ द्वारिका बिनुलखे बीतो बहुत दिन इत मोहि । तुम्हे सह तहँ चलो चाहत परम आनद जोहि ॥ पार्थ तुम कहहुचे तो चलि धर्म्मनृपके पास । हमें सह उत चलन कहँ तुम कहौ तजिकै त्रास ॥ गए प्राणौ तासु अप्रिय करब हम न कदापि । जौन कहिहै धर्म्मनृप सो करब हियमें थापि ॥ पैन अब इत रहनको कछु अतिप्रयोजन तात। प्रबल भूप अशनु विलसत राज्य लहि अवदात॥ वचन यह सुनि कहे पारथ सुनो यदुकुल मौर । तत्ववार्ता सुनो चाहत कहो कछु एहि ठौर ॥ वचन यह सुनि मोदि केशव कहे करि अनुमान। पूर्वको इतिहास भाषत सुनो सो मतिभान ॥ पूर्व ब्राह्मण एक आयो स्वर्गते मम पास। पूजि विधिवत ताहि हम इमि कियो बाक विलास॥ विप्र आशय समुझि मम इमि कहत भो हे पार्थ। कृष्ण चाहत सुन्यो हमसों कहत तत्व यथार्थ ॥ परम ज्ञाता तत्वको। हो विप्रवर्य महान। जासु मति सरवच ज्ञापक सर्व कर्म्म विधान ॥तासु सेवन कियो कोउ विप्र ब्राह्मण एक। सिद्ध व्है परसन्न तासों कह्यो बुद्धि विवेक ॥ कर्म्मवस परि जीव भरमत कर्म्म फल दातार । मिलत कर्मसों लोक सिगरे कर्म्मके अधिकार ॥ पिता माता पुत्र भ्राता बन्धु हित समुदाय। जीव देखत कर्म्मबस परि योनि अगनित आय॥ आत आवत थिरत निपतत चढत भिपतत घेरि।लहत सुख दुख विविधि विधिके कर्म्म गतिसों घेरि ॥जराबाधा विसम रोग अनेक विधिके खेद।दुसह यमपुर यातना यह कर्म फलको भेद॥विप्र इमि बहुबार कुत्सित कर्म्मको करि भोग।पाय सतगुरकियो बुद्धि विचार असल प्रयोग।लहे तब हम सिद्धि ऐसी अधिक लहिहे और॥लहब उत्तम सुपद इमि करि ब्रह्म चिन्तन जोर।विप्र फिरि मम आगमन महि होय गो यहि लोक॥ब्रह्म पद अव्यक्त तामधि लहब अव्यय शोक।वचन यह सुनि विप्र काश्यप कहत भो अनुमानि॥ देह कैसे होत च्युत किमि होत कहिये आनि॥ कहते संसारके किमि छुटत कहिये तौन॥ प्रकृतिसो छुटि जीव कैसे करत परपद भौन ॥ ***॥ * ॥ दोहा ॥ **

यह सुप्रश्न सुनि सिद्ध द्विज कहत भयो समुझाय । आयु परे पतत तन कछु उपद्रव पाय ॥

देह प्राप्त जिमि होत है सुनो तीन व्याख्यान । जीव देह तजि जाय उत भोगि कर्म्म परमान ॥ अ०मे०प०
रज वीरज संयोग भव पिण्ड तासु मधि आय । सुनु द्विजात निज करमको रूप सोय सो पाय ॥
जिमि तम पूरित गेह कहँ दीपक करत प्रकाश।तथा प्रकाशत देह कहँ जीव आय करि वास॥
समै पाय ह्वै वायु बस कढ़त योनिमग पाय । एहि प्रकारते लेतहै जन्म जीव इत आय ॥
पूर्व कर्म्म अनुसार लिपि लिखि दीन्हो करतार ।भोग करत सो अशुभ शुभ सो प्रारब्ध उचार ॥
जिमि दुखसों संसारके छूटत जीव सचैन । सो सुनि विप्र विचार करु संभ्रमेकु रहै न ॥
गुनि अनित्य संसारकहँ इन्द्रिजीत रहि दक्ष । सुख दुख लाभ अलाभ महँ रहि सम भाव प्रतक्ष ॥
करै फलाशा त्याग करि विधिवत उत्तम कर्म । रहि वैराग्य सु बुद्धि गहि पालन करै सुधर्म ॥ इमि
साधन करि जीव द्विज जगदुखसों छुटि जात । अवसो सुनि व्है जीव जिमि परपद पाइ विभात
अजन अघोष सुठौरमधि कै गिरि कन्दर माह । अचल ध्यान धरि थिर रहै तिमि न चलै जिमि
छाँह ॥ जेहि प्रकार सैंन्धव शिला वारिदमै मिलि जाय । शोधि मनहि तिमि ब्रह्ममै रहै सदा
लपटाय ॥ एहि प्रकार योगस्थ रहि जीव त्यागि यह देह । अव्यय पर अस्थान लहि बिलसत
सहित सनेह ॥ सिद्ध उवाच ॥ यह प्रश्नोत्तर सुनि तहाँ काश्यप विप्र सुजान । फेरि प्रश्न इमि
करत भो सुनो कृष्ण मतिमान ॥ भोजन कीजै अन्नसों रस शोणित किमि होत । मांस रुधिर अरु
अस्थि क्रिमि होत कहो तजि ओत ॥ केहि बधि बरधत गात बल जीव बसत कित तत्र॥ सु मुनि
कहो समुझाय जिमि आत्मा बिलसत अत्र ॥ सुनो कृष्ण यह प्रश्न सुनि हम इमि कहे बुझाय ।
सविधि आत्म दरशन किए यह सुभेद लखि जाय ॥ चक्षुरादि इन्द्रियन सों है न दृश्य यह भाव ।
ज्ञानदीप दीपित भए मन यह लखत बनाव ॥ सुनो कृष्ण समुझाय इमि विदा कियो हम
ताहि । पारथ इमि कहि सिद्ध वह गुप्त भयो जय चाहि ॥ * ॥ कृष्णउवाच ॥ और एक इतिहास
हम कहत सुनऊ सो पार्थ । पूर्व विप्रदम्पति रहे ज्ञाता तत्व यथार्थ ॥ एक समै लहि ब्राह्मणी
करि हियरे अनुमान । कहत भई इमि सुपतिसों सुनो पार्थ मतिमान ॥न्यस्तकर्म जेते लहत कौन
लोक हे नाथ । कौन लोकसो जाति है भार्या पतिके साथ॥ यह सुनि पंडित विप्र हसि कहत भयो
इमि बैन॥प्रिये कर्म कीन्हे बिना कोऊ कबऊ रहै न॥वेदउक्त शुचि कर्मको करत मोहवश त्याग॥जेहि
कीन्हे बिनु ब्रतनहि बांसि रहत सो लाग॥ शब्द असपरस रूप रसगन्ध विषय जो सर्व॥ग्रहण न तिन
के स्वादको सो संन्यास अखर्व ॥प्राण अपान समान अरु व्यान उदान समस्त ।इनको शुचि व्यापार
करि चिन्तत प्रभुहि प्रसस्त ॥ घ्राता भक्षयिता तथा श्रोता द्रष्टा चार । अरु अस्पर्श इयता प्रभु हि
समुझत सु बुधि उदार ॥ घ्रेय आदि जे वस्तु है तिन्है विचारत जौन । हविषि अग्नि होतादि कह
गुणगति मानत तौन ॥ श्रवण त्वचा चख जीभि अरु नासा अरु पग पानि । अरु उपस्थ ए दश तिन्है
होता लाजै जानि ॥ बाक्य क्रिया अरु शब्द रस गन्ध असपरस रूप । रेत मूत्र मल त्याग ए हैं दश

अनु॰ हविवि अनूप ॥ दिशि नदि रवि शशि अगिनि अरु इन्द्र प्रजापति मित्र विष्णु वायु ए दश सुनो है
पं॰ सुखै अगिनि विचित्र ॥ विषय सन्निध अरु चित बुध ए विभाग मत अङ्ग । जे निरखत ते लहत
यह पर पद भरे उमङ्ग ॥ एहि प्रकार सहारता कहि सुनि करि चरितार्थ । सदल चले हास्तिन
नगर रथ चढि केशव पार्थ ॥ * ॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥ * * * * *

तहँ मगमें पारथ मतिमान । कहे कृष्णसों करि अनुमान ॥ नाथ आपुके कृपा प्रसाद । पांडव लहे विजय अहलाद ॥ कुरु दल दारुण समुद अपार । जिते पार ह्वै ताके पार ॥ लहे अकण्टक राज्य महान । प्रभु तुम जगपालक भगवान ॥ सब जग तो इच्छा अनुसार । होत नसत नहिं और विचार ॥ इविधि प्रशंसत सहित सनेह । गे धृतराष्ट्र भूपके गेह ॥ तहँ धृतराष्ट्र विदुर नृप धर्म । भीम नकुल सहदेव अभर्म ॥ गान्धारी कुन्त्यादिक बाल । आय तहां निरखे क्षितिपाल ॥ यथा उचित आशिष परनाम । कहे सुने बरबल बुधिधाम ॥ रहि तहँ करि बार्ता अभिराम । किए व्यतीत दिवस सब जाम ॥ निशि लहि नृप धृतराष्ट्र सचैन । किए बिसर्जन कहि मृदु बैन ॥ तब पारथ के गृह मधि आय । कृष्णचन्द्रसो निशा बिताय ॥ लहि प्रभात करि आन्हिक कर्म । गए पार्थसह जहँ नृपधर्म ॥ लखि केशवहि धर्म करि नेम । करि आसीन कहे गहि प्रेम ॥ प्रभु दीजै अनुशासन औन । पूरित प्रेम करैं हम तौन ॥ यह सुनि कहे पार्थ मतिमान । केशव चाहत निज पुर जान ॥ यह सुनि बोले धर्म नरेश । उचित करत जो कृष्ण निदेश ॥ आय द्वारिकापुरी बिभाति । सोहि रहेउ मनुजन दिन राति ॥ माता पिता बन्धु समुदाय । मिलि सब जनसों देखि देखाय ॥ फिरि मम अश्वमेध मख माह । आएउ श्रीयदुकुलके नाह ॥ हमें भयो जो मखहि धन चाउ । जो चाहो सो लीन्हे जाउ ॥ यह सुनि कहे कृष्ण अवदात । मम धन तुव तुव धन मम तात ॥ यह सुनि भूप केशवहि पूजि । कीन्हे बिदा सुबानी कूजि ॥ लहि नृपको सम्मत सुखदाय । कृष्ण सुभद्रहि सुरथ चढाय ॥ रथ चढि चले द्वारिका ओर । सङ्ग चले सात्यकि गहि कोर ॥ पठवन चले आरजुन भीम । बिदुर नकुल सहदेव अधीन ॥ चलि कछु दूरि कृष्ण अनुमानि । तिन्हें बिदा कीन्हे सन मानि ॥ मग मे निरखत सगुण अनेक । चले द्वारिका पावन टेक ॥ मगमें तहां मिलत भे आय । सुमुनि उतङ्क मोद सरसाय ॥ प्रभुसों पूजित ह्वै तेहि ठौर । सुमुनि भए पूजत करि गौर ॥ हे कुरु पांडव कुशल सचैन । महाराज सुत बिक्रम चैन ॥ यह सुनि कृष्णचन्द तेहि पर्व । दए सुनाय बेद स्या सर्व ॥ * * * * * * ॥ दोहा ॥ * * * * * *

सुनि बिनाश कुरुबंशको मुनि बोले अनखाय । बिनु तो चाहे नहि भयो ऐसो समर अपाय ॥
सब अपराध गुणि कृष्ण तो पूरि हिय परिताप । क्रोध रोकि नहि सकत हम/देत अहत हों शाप ॥
यह सुनि केशव कहत भे क्षमा गहो मुनिराज । बिशद तत्व अध्यात्म सुनि देउ शाप निजराज ॥
यह सुनिके उतङ्क मुनि बोले क्रोध बिहाय । यह सुतत्व अध्यात्म गुण केशव कहो बुझाय ॥

कृष्णो०
पु०

॥ * ॥ श्रीकृष्णउवाच ॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

सत्व रज तम गुणनि कहं मम भाव जानो तात । रुद्र बसु सब सुरनके हम प्रभवहैं अवदात ॥ मोहि मधि सब भूत अरु सब भूत मधि मम बास । सत असत छर अछर हम हम करत पूरण आस ॥ चारि आश्रम धर्म बैदिक ते ममात्मक सर्व । बेद चरु हबि जूप मख हम मंत्र सोम अथर्ब ॥ सकल उद्गाता सदा मम करत अस्तुति नौमि । धर्म हम हम धर्म रक्षक धर्म करता सौमि ॥ बिष्णु ब्रह्मा इन्द्र शिव हम भूतग्राम समस्त । धर्म रक्षण हेत हम अवतार लेत प्रशस्त ॥ यक्ष दैयत नाग सुर गन्धर्ब किन्नर जौन । जात हम जेहि योनि तेहि बिधि चरत हे मतिभौन ॥ धर्म त्यागि अनीति गहिकै किए कौरव युद्ध । युद्ध मधि मरि गए सुरपुर होत तुम कत क्रुद्ध ॥ मुनि उतङ्क सुबचन यह सुनि कहे हे जगदीश । तब यह सुनि आजु मम भ्रम गयो बिश्वेबीश ॥ नाथ अब दरशाइये निज बिश्वरूप अनूप । कृष्ण तब दरशाइ दीन्हे चारु बिश्व सरूप ॥ लखे हे कुरु क्षेत्र मे जो रूप अनुपम पार्थ । देखि सो उतङ्क अस्तुति किए जानि यथार्थ ॥ कृष्ण तब उतङ्क मुनि सों कहे सुनु हे बिप्र । जौन तुम बरदान मागहु देहि हम सो छिप्र ॥ बचन यह सुनि कहे मुनि उतङ्क आनंद छाय । तृषितह्वै हम रहैं जहँ तहँ दिहेउ दरशन आय ॥ कृष्ण बोलि तथास्तु तब गे द्वारिका शुभ भेश । बिप्र क्रमसों कछू दिनमें जात भे मरु देश ॥ फिरत तहँ ह्वै तृषित कृष्णहि भयो सुमिरत तौन । मिलो आगे आइ तहँ चाण्डाल बिक्रम भौन ॥ श्वान लीन्हे सङ्ग शरधनु गहे अरु दिगबास । स्त्रो लखि द्विज तासु पग तर लख्यो स्रोत प्रभास ॥ कह्यो सो चाण्डाल मुनिबर पियो जल तजि शङ्क । तासु पग तर देखि जल नहि पियो मुनि उत्तङ्क ॥ कृष्णके गुणि बचन कृष्णहि कह्यो बहु दुर बैन । कह्यो सो चाण्डाल फिरि जल पियो संशै है न ॥ पियो नहि जल बिप्र तब सो भयो अन्तरध्यान । बिष्णु तेहि थर प्रगट भे गहि शङ्ख चक्र महान ॥ बिप्र बिष्णुहि देखि बोलो उचित नहि इमि तोहि । चाण्डालके पग तरे जल करि देन लागे मोहि ॥ बचन यह सुनि बिष्णु द्विजसों कहे हम समुझाइ । कहे सुरपति सो उतङ्कहि देहु अमृत जाइ । शक्र सो सुनि कह्यो अमृत मानुषहि नहि योग । मानि आज्ञा आपुकी कछु ठानि ब्याज प्रयोग ॥ जाइ अमृत लैन भाषब जौन ले हैं तौन । प्रगट करि नहि देब तौ फिरि आइबे करि गौन ॥ सेष कुत्सित शक्र हे अरु रहो अमृत बारि । लए नहि अब कहा कीजै कहो तौन बिचारि ॥ भाषि इमि प्रभु कहे आपुहि जबहि तुम एहि देश । चाहि हो जल बृष्टि होइहि तबहि बृष्टि सुवेश ॥ होइंगे उतङ्क नामक मेघ अबते तौन । समुझि आशय आपुकी इत बृष्टि करिहै जौन ॥ अजौलो उतङ्क नामक मेघ बरषत तत्र । देश मरुमे बिष्णु बिप्रहि दए आशिष यत्र ॥ जनमेजयउवाच ॥ रह्यो कैसो किए तप उतङ्क जाके दर्प । चह्यो जाते करण कृष्णहि शाप दारुण अर्प ॥ * ॥ बैशम्पायनउवाच ॥

अश्वमे० पु० शिष्य गैातम सुऋषिको उतङ्क परम प्रबीन । गुरु सुस्रूषा करत प्रगटत नित्य भक्ति अहीन ।करत सेवा गुरूको भे केश सिगरे सेत । एक दिन गे काठ आनन गुरूके गृह हेत ॥ खिन्न ह्वै अति भारसों द्विज गिरो गृह ढिग आय । लगे रोदन करन तनमें महा पीडा पाय ॥ पाइ आज्ञा पिताकी गुरु सुता तेहि पर आय । किये धारण रुदनको नहि तज्यो विप्र अघाय ॥ आपु गैातम कहे तव कत इतो रोदत आजु । गह्यो कैसो खेद बनमें भयो कौन अकाजु ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

गैातम ऋषिके बचन सुनि कह्यो उतङ्क प्रशस्त । तो सेवा करि शत बरिस भए जरासों ग्रस्त ॥ मम आगे कैयक शतक भिन्न शिष्य इत आय । गए गेह नहि जान मोहि कहे आपु सुखदाय ॥ लह्यो न जगको स्वाद कछु भए शक्तिसों हीन । यह गुणि हम रोदन करत कहैं कहा अब दीन ॥ यह सुनि गैातम करि कृपा युवा पुरुष करि ताहि।ब्याहि दई निज कन्यका श्रुति स्मृति संमत चाहि॥ तदनु अहिल्यासों कह्यो द्विज उतङ्क अनुमानि । अब कहो गुरु दक्षिणा तौन देहिं हम आनि ॥ अहिल्योवाच ॥ * ॥ पुत्र सुश्रूषा तुम किए ताही सों हम तुष्ट । जौसि चहो जो देन तौ देऊ कहे जो पुष्ट॥जो सैादास महीपकी पतिनी कुण्डल तासु। आनि देऊ यह बिप्र सुनि तहां चलत भे आसु ॥ जाइ तहां द्विज लखत भे राक्षस रूप महीप। द्विजहि देखि इमि कहतभे नृप राक्षस कुलदीप ॥ षट दिन बीते दैव बस भोजन पायो आजु।यह सुनिके उत्तङ्क मुनि कहत भयो निज काजु॥ गुरुहि दक्षिणा देन हित याचन आयउं ताहि। दऊ तैान दे आइहै तब तुम खायऊ मोहि ॥ जो कुण्डल तव तरुणि पहँ देऊ कृपा करि तौन । यह सुनिके सैादास नृप कह्यो क्षणक रहि मैान ॥ मम तियके ढिग जाइ तुम कहि निज अरथ बुझाय । मम निदेश कहि लेऊ द्विज कुण्डल आनद छाय ॥ यह सुनिके द्विज जात भे मदयन्ती के पास । नृप निदेश अरु निज अरथ विधिवत कियो प्रकास॥ मदयन्ती सो सुनि कह्यो यक्ष असुर सुरनाग । करि उपाय कछु चहत हैं कुंडल लियो अदाग॥ नृप आज्ञा दृढ हेत कछु बार्ता ल्यावो फेरि । तौ कुंडल हम देहि तुम लेऊ अपूरब हेरि॥यह सुनि नृप पहँ जाइ द्विज यह बार्ता लै आय ।कहि सुनाय नृप बनिता कहँ चलो सु कुंडल पाय ॥ श्लोकः ॥नचैवैषा गतिः श्रेष्ठा नचान्या बिद्यते गतिः॥ एतन्मे मत माज्ञाय प्रयच्छ मणि कुंडले॥यहि राक्षस गति सुभ हित याते और न यत्न । यह मम मत गुणि दीजिये कुंडल चारु सरत्न ॥ लहि सुकुंडलहि मुदित द्विज जाय भूपके पास । करि सुवारता चलत भे गुरु ढिग गुणत सुपास ॥ कछू दूर चलि क्षुधित द्विज वृक्ष बेलको देखि । चढि तापै तोरन लगे पके सुफल अवरेखि ॥ इतने मे छुटि गिरि परो कुंडल महिपै आय । तेहि ऐरावत कुलज अहि गहि महि गयो समाय ॥ तब तेहि तरुते उतरिकै विप्र दंड गहि पानि । देखि बिबर लागे खनन कुंडल लीबो जानि ॥ भरे क्रोध पैंतिस दिवस भूमि खन्यो जब बिप्र । तब भूमिहि

व्याकुल निरखि सुरपति आए विप्र॥ द्विज उत्तङ्क सो कहत भे सुरपति करि अनुमान।नाग लोक अब इहांसों योजन सहस प्रमान ॥ विप्ररूप धरि शक्रसों यह सुनि कह्यो उतङ्क । बिनु कुंडल पाए इहां तजिहौं प्राण अशङ्क ॥ यह निहचै गुणि विप्रको शक्र दयाके तंत्र। दंडहि योजित करत भे बज्र अस्त्रके मंत्र ॥ बज्र अस्त्र परभाव ते क्षणमें बिरचि सुराह । नागलोकमें जात भो ब्राह्मण कुंडल चाह ॥ जाय तहां द्विज लखत भो नागलोकको द्वार। ऊंचो योजन पाँच अरु शत योजन बिस्तार ॥ भयो निराशा विप्र तब मिल्यो तुरंग अतिकाय । द्विजहि गुरूको शिष्य गुणि कहत भयो समुझाय ॥ मम गुद फूंको विप्र तुम तब लहिहौ निजराज। सो सुनि द्विज फूंकत भयो गुदो सिद्ध गुणि काज ॥ रोम रोम ते तुरगके कढो धूमकी धार। ताधों पूरित होत भो नाग लोक बिकरार॥ ह्वै अति व्याकुल नाग सब आइ उतङ्कहि पूजि। देत भए कुंडल बिमल विधि यत अस्तुति कूजि॥ लहि कुंडल अति मुदित ह्वै द्विज गौतमपहँ जाय । गुरु पतिनिहि कुंडल दयो सिगरी कथा सुनाय ॥ ऐसो सरस प्रभाव वर तप ब्रत तेज अनूप। मुनि उतङ्कको हम सुने कहे जनमेजय भूप॥ ***********

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशीवासिगोकुलनाथकवीश्वरात्मजेन गोपीनाथेन कविना विरचिते भाषायां भारतान्तर्गते अश्वमेध पर्वणि उतङ्कोपाख्यानोनामद्वितीयो ऽध्यायः ॥**********

॥ * ॥ जनमेजयउवाच ॥ सोरठा ॥ * ॥

विप्रहि दै बरदान कृष्ण द्वारिकौ जायकै। कीन्हे कौन विधान सो बैशम्पायन कहो ॥

॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ चौपाई ॥ * ॥

कृष्ण उतङ्क मुनिहि बरदैकै। सात्युकि सहित जाय मुद लैकै ॥ देखत चारु पुरी की शोभा। जेहि लखि बसति शक्र हिय शोभा ॥ आनद देत मिलत सब जन सों । गे निज घर सेवित यदुगणसों ॥ क्रमसों बन्दि चरण गुरजनके । बैठे हरणहार मुनि मनके ॥ कुशल प्रश्न विधिवत कहि सुनिकै। इमि बसुदेव कहत भे गुणिकै ॥ केहि बिधि भयो युद्ध अतिभारो। सो सब सविधि कहो रणचारी ॥ सो सुनि प्रभु कहिबो अभिलाषे । महि संक्षेप युद्ध सब भाषे॥ सुनि अभिमन्युबीरको मरिबो। भो तेहि समै बज्रको परिबो॥मातु देवकी अतिदुख लीन्ही। अङ्कि सुभद्रहि रोदन कीन्ही ॥ तिमि बसुदेव शोकसों भोए । दुहिता सुतके गुण कहि रोए ॥ तब केशव कहि धर्म बुझाए। ताकी तियहि सगर्व सुनाए॥सुनि बसुदेव शोक दुख त्यागे। पिंडदान कीन्हे अनुरागे॥ साठिलाख विप्रनकहँ भोजन । दीन्हे अगिनित धन करि योजन ॥ उतै व्यास कुन्तापहँ आए। यह सुहेतु कहिकै समुझाए ॥ गुर्विनि कुयरि उत्तरा बरणी। होइहि सुत पालक सब धरणी ॥ सो सुनि पाण्डव दुख तजि हरषे । बचन पितामहको हित परषे॥ *****

अ०प्र०
प०

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

अश्वमेधके हेत धन आगमको उपचार । करो भाषि इमि जात भे व्यास मुनीश उदार ॥
यह सुनि जनमेजय कहे इमि कहिगे मुनिव्यास। नृपति युधिष्ठिर तब कहा किए कहौ मति रास॥
सुनि वैशम्पायन कहे सुनु जनमेजय भूप । तदनन्तर नृपधर्म गुणि लहिके समै अनूप ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

वचन व्यासके कहि मुद धरिकै । सब बम्भनसों सम्मत करिकैं ॥ धन ल्यावनको शासन दीन्हे। सदल चलन भे आनद लीन्हे ॥ प्रभुहि नेमि करिके सब कूजन । विप्रण दानदेत करि पूजन ॥ पुनि दम्पतिहि नेमि सुभावन । सविधि सुनत स्वस्त्ययन सुहावन ॥ राखि युयुत्सुहि नृपके धोरे । सुरथ न नहि नहि चञ्चल घोरे ॥ भीम धर्म आदिक सब भाई । सदल चले अति ओज बढाई ॥ बन्दीजनसों अस्तुति रूरे । सुनत जाय अति आनद पूरे ॥ क्रमते बन गिरि सरिता तरिकै । गे तेहि गिरि ढिग कछुदिन चरिकै ॥ जेहि गिरि ढिग धन व्यास बताए । गए जासुहित आनद छाए ॥ तेहि गिरि ढिग निवास करि राजा। आगे करि सब विप्र समाजा ॥ करत शान्ति मङ्गल हित कारी। सबदिशि राखि सुभट धनुधारी ॥नृपति युधिष्ठिर मधिमे रहिकै। लसे शङ्करहि मनमे गहिकै॥ पटु विप्रणको सम्मत सुनिकै। धर्म नृपति रहि निरसन गुणिकै ॥कुश बिछाय महि शय्या कीन्हे । कामदानि प्रभु शम्भुहि ची न्हे ॥ यहि प्रकार सो निशा बिताए। भोर द्विजातन होम कराए ॥ मोदक पाय समांश सोहाए । विधिवत बलि दीन्हे मनभाए॥ ****

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

तब शुचि भद्र कुबेर अरु अह जे गण समुदाय । विधिवत तिनकहँ पूजिकै दै बलिदान सचाय ॥
व्यासआदि द्विजबरन कहँ करि आगू मतिरास। सुनत स्वस्त्ययन जात भे रतन खानिके पास ॥
पूजि धनेशहि तत्र अरु दै विप्रणकह दान। रतन खदावत भे तहा धर्म भूप मतिमान ॥
अगिनित पात्र खदाय धन लदवावत भो भूप । तिनकी संख्या कहत नृप सो गुणि लेउ अनूप ॥

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

ऊँट लदाए साठि हजार । तासु द्विगुण घोरे समचार ॥ द्विरद एकादश शत लदवाय। तितने सकटनके समुदाय ॥ खर अरु भारवाहनरजौन । संख्या तासु सकै कहि कौन ॥ इतनो द्रव्य लदाय चलाय। फेरि पूजि शम्भुहि सुखदाय ॥ विप्र भटन सह पूरित मोद ।फिरे नगरप्रति करत विनोद ॥ इतै कृष्ण दायक फल चारि । अश्वमेधको समै निहारि॥सह प्रद्युम्न सात्यकि बलराम। अरु गद साम्ब निशठ बलधाम ॥ अरु कृतवर्मा सारण सङ्ग । सहित सुभद्रा भरे उमङ्ग ॥हास्तिन पुर आए करि छेम। सुनि धृतराष्ट्र भूप गुणि चेम ॥ बिदुर युयुत्सुहि समुद पठाय । उचित करत भे बास कराय ॥ इतने मे सुनु भूपति तंत्र। द्रोणतनै को प्रेरित मंत्र ॥ प्रविशि उत्तराके

उरशोच। पीडन लागो दायक मीच ॥ तेहि क्षण सुनिकै श्रीयदुनाथ। गे अन्तहपुर सात्यकि साथ ॥ कृष्ण कृष्ण टरत तहि काल। कुन्ती आइ कह्यो सो हाल ॥ उर ताडन पूरित परिताप। करत भई आरत परलाप ॥ तुमहूँ किए प्रतिज्ञा पूर्व। रक्षण करब गर्भ हम गूर्व ॥ सो तुम भूलि गए कत तात। जाते भयो गर्भको घात ॥ तुम रक्षत पाण्डवन सप्रेम। जैसे पुतरिहि पलक सनेम ॥ प्रभुते भागिनेयको गर्भ। हायलहै यहि विधि गति खर्ब ॥ धर्म्म भीम अरजुन यहि देखि। किमि जीहै अनरथ अवरेखि ॥ यहि विधि भयो वंशको नाश। लखि यह गर्भ गह्यो सब आश ॥ सोऊ मृतक भयो अब हाय। ऐसो शोक सह्यो किमि जाय ॥ प्रभु अब निज गुरगरिमा चाहि। उत चलि वेगि जिआवो ताहि ॥ यहि विधि कहि कहि कुन्ती मोहि। महि गिरि रही कृष्ण कहँ जोहि ॥ तब कुन्तहि गहि कृष्ण उठाय। साहस देत भए समुझाय ॥ तहाँ सुभद्रा रोवत आय ॥ बोलत भई वचन दुखदाय ॥ मृतक पुत्र प्रगटित भो तात। यह दारुण दुख सह्यो न जात ॥ लखि यह गर्भ पुत्रको शोक। मै सहि रही धीर करि रोक ॥ लहितो अनुकम्पाकी रीति। पाण्डव पाए सब धर जीति ॥ द्रोण तने को अस्त्र अमान। तासो बचो भीम बलवान ॥ अब सो अस्त्र देत जयचाहि। मम पउत्रको जीवन दाहि ॥ अब सब पांडव हारे जात। जाते होत मूलको घात ॥ जाचत तोहि तात परि पाय। भागिनेय सुत देऊ जिआय ॥ द्विज सुतसों प्रण कान्हो जौन। तात करो अब पालन तौन ॥ तात आपुको जानि प्रभाव। हम हठि इतो कहति करि राव ॥ सुनि धीरज दै कृष्ण उदार। गए प्रसूत गेहके द्वार ॥ तहा गुणीजन भिषज अनेक। बैठे रक्षण हेत सटेक ॥ घृत तिल तण्डुल सरषप भूरि। लीन्हे बैठे दुखसों पूरि ॥ द्रुपदसुता उत धीरज आनि। कह्यो उत्तरासौं अनुमानि ॥ मातुल ससुर कृष्ण तो तीर। आए त्यागि शोक धरु धीर ॥ कृष्ण आगमन सुनि सुखपाय। मृतकपुत्रकह गोद लगाय ॥ कहि कहिकै शोकाकुल बैन। करो उत्तरा रुदन अचैन ॥ तब केशव करुणाके ऐन। लीन्हे करषि अस्त्र जग जैन। लहि सोहार अस्त्र वह भूप। गयो पितामहपास अनूप ॥ तब सचेत भो पिता तुम्हार। अति पूरित भे मङ्गल चार ॥ बूझि वंशक वृद्ध महान। कीन्हे नामकरण सविधान ॥ वंशक्षीण पहँ भो छविधाम। ताते कियो परीक्षित नाम ॥ नर नारी सब आनद पूरि। दिए दान मणि भूषण भूरि ॥ *❁*❁*❁*❁*❁*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

एक मासको अब भए पिता तुम्हार महीप। तब धन लै आए सदल धर्मभूप कुलदीप ॥
मिलि सबजन सो परसपर पूजि पुजाय सठौर। हास्तिन पुर राजित भया धर्मनृपति शिरमौर ॥
सजै पाय तब भूपपहँ आए व्यास मुनीश। पूजि यथोचित ताहि इमि कह्यो धर्म अवनीश ॥
अश्वमेध मख महतको कियो आपु उपदेश। अब शुभ समय विचारि प्रभु कीजै उचित निदेश ॥

अ०मे० ॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

प० इमि कहि कहे कृष्णसों सानद । आपु होउ दीक्षित प्रभु मानद ॥ मोहि सिद्धिप्रद कृपा तुम्हारी । तुव आज्ञा फल सब मखचारी॥ यह सुनि कहे कृष्ण प्रभु नागर । तुम मम कुलपति भूप उजागर ॥ तुव कर तव मम मम तुव स्वारथ । आपु करो अनुपम मख कारथ ॥ यह सुनि भूप मोद हिय राखे । पाणिजोरि मुनिवरसों भाखे ॥ प्रभु अनूप अनुकम्पा गहिये । आरम्भणको दिन गुणि कहिये ॥ यह सुनि व्यास कहे करि ईक्षित । होउ चैत पूनो लहि दीक्षित ॥ सराजाम सब योजित कीजै । विप्र बोलाइ निमंत्रण दीजै ॥ भूमि परजटन हि विधि कै कै । अश्व तजौ रक्षक सँग दैकै ॥ सब्यसाचीन पार्थ धनुधारी । सदल जाहि हय की रखवारी ॥ भीम नकुल सहदेव सुखारी । रहे गेह रक्षक मखचारी ॥ यह सुनि भूप किजै अभिलाषे । धीर फाल्गुणसों इमि भाषे ॥ अश्वहि रक्षण हेत पधारो । भूमि विजै करि यज्ञ सुधारो ॥ जो आवै कोउ भूप अकादर ॥ पहिले ताहि बुझायउ सादर ॥ जेहि न विरोध बढै सो कीजौ । नहि मानै तौ लरि जय लीजौ ॥ इमि समुझाय पार्थसों कहि कै । भूप भयो दीक्षित दिन लहि कै ॥ *❦*❦*❦*❦*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

वृद्ध भूप धृतराष्ट्रसों आज्ञा लै तेहि काल । विधिवत दीक्षित ह्वै सविधि अश्व तज्यो क्षिति पाल ॥
पारथ नृपसो ह्वै विदा कृष्णहि ध्यायन ससैन । चले अश्व रक्षण करत सुनत सुभद सचैन ॥
ह्वै उत्तर पूरब चले अश्व सुनो क्षितिपाल । अब सुनिये जेहि थल भयो युद्ध महा विकराल ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

हय आगमन अनूप सुनि त्रिगर्तपति बैर गुणि । बढि सह सेना भूप यज्ञ अश्व लाग्यो गहन ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

ताहि अश्व रोकत लखि पारथ । भयो सुनावत वचन यथारथ ॥ सुत बन्धुनको बध गुणि ताते । नहि मान्यो सो नृप रिसि राते ॥ नाम सूर्यबरमा रणचारी । बाण पार्थपर तज्यो प्रचारी ॥ अगिनित रथन सहित बढि बलसों । भिरतभयो पारथके दलसों ॥ नृपति सूर्यबरमाको भाई ॥ नाम केतुबरमा दृढ घाई ॥ भिरो पार्थसों थिर चित्त करिकै । पारथ ताहि बध्यो शरहनिकै ॥ तब धृतबरमा विदित महारथ । भिरत भयो करि भ्रकुटी पारथ ॥ अति कर लाघव करि धनु कर्ष्यो । अविरल बाण पार्थ पर बर्ष्यो ॥ अति कर लाघव लखि तेहि क्षणमें । पारथ भए सराहत मनमें ॥ धृतबरमा रिसि करि तेहि बरमें । मार्यो बाण पार्थके करमें ॥ करते धनुष गिर्यो तब राजा । देखि मुदित भे कुरुसमाजा ॥ तेहि क्षण पारथ भट अति कोप्यो । गहि गांडीव प्रलै आरोप्यो ॥ महाराज सुनिये तेहि पलमें । हाहाकार मचो अरिदलमें ॥ अरिदलके सहसन भट बधिकै । लसो कालघन पार्थ बरधिकै ॥ तहँ

पारथको विक्रम देखी । भगी शत्रुसेना भय भेखी ॥ तब त्रिगर्तपति गुणि मनमाही । शर अरु धनुष त्यागि रथपाही ॥ टेरि पार्थसों कह्यो बुझाई । हम तोवश अब तजऊ लराई ॥ अब हम करें करो जो शासन । कहे पार्थ सुनि यह समाश्वासन ॥ बन्धुन सह हस्तिनपुर आयऊ । अश्वमेध मख लखि सुख पायऊ ॥ इमि कहि पारथ भट जय ईके । स सयन चले अश्वके पीके ॥ फिरि प्राग्ज्योतिषपुर में । पहुँचत भयो तुरँग अति तुरमें ॥ अ०३३ ए० *◆*◆*◆*◆*◆*◆

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

तहाँ सुवन भगदत्तके बज्रदन्त वर नाम । कढि पट्टनते सहस्र बढि भिरत भयो बलधाम ॥
पारथ सों भिरि लरत भो बज्रदन्त रणधीर । तिमि पारथके भटनसों भिरे बीर बरबीर ॥
चढो दीह युगदन्तपहँ बज्रदन्त बलवान । पारथ बीर रथस्थ पहँ बरषो अविरल बान ॥

॥ * ॥ चौपाई * ॥

पारथ तापहँ शर झरि कीन्हे । बाणन बाण बिरथ करि दीन्हे ॥ दोऊ कर लाघवता ठाटे । अगिनित बाण परसपर काटे ॥ दोऊ दुजन प्रचारि प्रचारी । बरषे बाण प्राणहर भारी ॥ दोऊ दुजन बाण हनि डाटे । घने बाण बाणनसों काटे ॥ तहँ पारथ अति तुरता धाल्यो । तीक्षण बाण तासु उर मार्यो ॥ तासों बेधित ह्वै सो धरकस । मोहित भयो भूलि धनु तरकस ॥ क्षणमें चेति भूप रिसि छायो । मेघ जलदसम दुरद चलायो ॥ गहि करसों साँकर उलझारत । गरजत चलो द्विरद भय भारत ॥ पार्थद्विरद पद शरजरि करिकै । राख्यो दूरि रोकि पण धरिकै ॥ बज्रदन्त तब करषि शरासन । बरषत भयो बाण अरि नाशन ॥ तेहि विधि पार्थ शरासन करष्यो । बज्रदन्त नृपपहँ शर बरष्यो ॥ यहि प्रकार दोऊ भट आरज । लरे तीनिदिन जयके कारज ॥ चौथे दिन नृपबीर अतोलो । करि अट्टहास इमि बोलो ॥ लरि मम बृद्धपितहि तुम मारे । ताते बर्ष हियेमें धारे ॥ आजु तोहि बधिके जय लेहों । बन्धुवर्गकहँ आनद देहों ॥ इमि कहि गरजत गजहि चलायो । चलो द्विरद अइरावत जायो ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ *◆*◆*◆*◆*◆

मुक्तावलि उरपरसों दीरघ गहे जंजीर । जङ्गम गिरिवर सम द्विरद गयो पार्थके तीर ॥
तब पारथ अति कोप करि मारि अमोघ सुबाण । डारि देत भो भूमिपर द्विरदहि करि गत प्राण ॥
द्विरद सङ्ग नृप गिरिपरो तब इमि बोलो पार्थ । भूप भीत तजि बचन सुनु मैं यह कहत यथार्थ ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

मोकह धर्म नरेश यह निदेश दीन्हे उचित । फिरि आवो सबदेश मति कीजो बध नृपनको ॥
नृपनसों समुझाय इमि कहियो मति रणकरै । अश्वमेध में आय लेहि सु उत्सव अमित सुख ॥
ताते वैर विहाय मखदेखन आयऊ उतै । यह सुनि नृप सुखपाय कहि तथास्तु अस जात भो ॥

अं॰ से॰

॥ * ॥ तोमरछन्द ॥ * ॥

५० तब तुरँग तीन सुभेस। चलि भयो सिन्धु सुदेस ॥ सुनि तीन उनके वीर। बढि भितर भे रणधीर ॥ तहँ चले अस्त्र अघोर। भो मचत सङ्गर घोर ॥ भट अयुत तुरँग सवार। अरु रथी एक हजार ॥ बढि फाल्गुणकहँ घेरि। भे बाण बरषत टेरि ॥ सुणिजयद्रथको घात। भे करत आयुध पात ॥ जिमि विहँग पञ्जर माह। तिमि करत भे नरनाह॥यह देखि भयद प्रयोग।भे दुखित इत सबलोग॥ तेहि समै अनरथ मूरि। लखि परे असगुण भूरि ॥ घन घोर मधि तम भान। तिमि भयो पार्थ अमान ॥ तब पार्थ विक्रम ऐन।इमि सैन्धवणसों बैन ॥ भो कहत सुनहु समस्त। सुणि भूप वचन प्रशस्त ॥ नहि बधत तुमहि सटेक। मम वचन जानो नेक ॥ तुम वैरभाव विहाय। मख समै मम पुर आय ॥ यह वचन सुनि ते सर्व। इमि कहँ बचन सगर्व॥ औ गहे जियको लोभ। मम मुह लखि भो छोभ ॥ तौ जाउ रण तजि भागि। कत कहत कैतव लागि ॥ यह सुनत पार्थ अमान। भे क्रोध काल समान ॥ चलि चक्रसम भट चंड। अति चपल करि दोदंड ॥ करि धनुष मंडल रूप। भो बाण बरषत भूप ॥ प्रति भटन शायक जाल। भो रचत वीर विशाल ॥ भट तुरँग अगिणित मारि। भो देत महिपर डारि ॥ * ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ * * * * *

पार्थ अगिनिकी शर लपट सहि न सके भय पूरि। भागि चले सैन्धव सुभट बेधित पीडित भूरि ॥ तब दुःहला धृतराष्ट्रको शिशु पउत्र लै आय। रुदन करण लागी तहाँ आरत वचन सुनाय ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

तेहि लखि पारथ करुणा भरिकै। तजि लरिबो धनु रथपर धरिकै ॥ सादर इमि भगिनीसों भाषे। कहहु कहा कछु जो अभिलाषे ॥ तब दुस्सला कही सुनु भ्रातज। एहि बालकको कर हित कारज॥यह ममसुतको सुत सुनु भैया। अब याको नहि और सहैया ॥ यह सुनि पार्थ कहे ले चञ्च सो। याको पिता भयो का कञ्च सो ॥ कहो दुस्सला पुत्र हमारो। पिता मरण सुनि मरो बिचारो ॥ अब यहि बालहि आस तिहारी। अभै करो करि कृपा बिचारी ॥ इमि कहि शोक दशासों पागी। दुखित दुस्सला रोवन लागी ॥ तब पारथ तेहि आसित कीन्हे। करे आज्ञ भर आनद भीन्हे ॥ इमि कहि ताहि बिदा करि पारथ। चले अश्वके सँग सुखि स्वारथ ॥ जानता अगिनित देश सभ्रावत। गो मणिपूर देश हय धावत ॥ बभ्रुवाहना नृप सो सुनिकै। आगत पिता पार्थ कहँ गुणिकै ॥ विप्रव सहित निरायुध कढिकै। मिलन चलो पारथसों बढिकै ॥ तिमि तेहि देखि पार्थ रिसि बढिकै। निन्दा किए बचन इमि कहिकै ॥ क्रोध समान आयुध तजिकै। आवत कहा पलटि औ लजिकै ॥ मख हय रक्षत धनुट हारत। नृप क्षत्रिकको धरम बिदारत ॥ हम आवत तुम ताके धोरे। आय सुह सहित कर जोरे ॥ औ हम इहां निरायुध आवत। तौ इमि तोहि देखि सुख पाउत ॥ तब यहि विधि मम सनमुख आइब। तो हि उचित हो प्रीति बढाइब ॥

यह सुनि बभ्रुवाहना लजिकै। रह्यो शीसनत करि मद तजिकै॥ यह सुनि नागसुता तेहि पलमैं। अ०१७
भूमि बेधि प्रगटी तेहि थलमैं॥ नृपसौं कहत भई महि थारी। नागसुता हम मातु तुम्हारी॥ वीर पा०
फाल्गुण पिता तुम्हारे। युद्ध हेत इत सदल पधारे॥ युद्धकरौ तजि नेह सगाई। क्षात्र धर्मकी इहै बड़ाई॥ मातु उलूपीकी यहबानी। सुनत बभ्रुवाहन अभिमानी॥ काञ्चन कवच रोषकरि धार्यो। चर सिरत्राण सुवीर सुधार्यो॥ रथचढि महाक्रोधसौं पागो। हय गहि सायक बरषण लागो॥ धनुटङ्कारि पार्थ भट नायक। बरषण लगे पुत्र यह सायक॥ पिता पुत्र दोऊ धनुधारी। कीन्हे तहाँ युद्ध अति भारी॥ दोऊ लाघव करि धनु करषे। अविरल शर दोउनपहँ बरषे॥ दोऊ दुऊन पराक्रम परखे। अद्भुत विक्रम लखि लखि हरषे॥ दोऊ दोउनके शर हूरे। काटि दुहूँ दिशि सायक पूरे॥ ***** ॥*॥ दोहा ॥*॥ ******

अति विक्रम करिकै तहां बभ्रुवाहन बीर। पारथके भ्रूमधि हन्यो अतिसै तीक्षण तीर॥
तासौं वञ्चित पार्थ भट रहि मोहित क्षण एक। चेति धनुषटङ्कार करि बरष्यो बाण सटेक॥

॥*॥ गुरतोमर छन्द ॥ ॥*॥

तहँ पार्थपुत्रहि हेरिकै। भो कहत यहि विधि टेरिकै॥सुत साधु साधु सुधीरहै। धनु धरणिधर रणधीरहै॥ अब आशु भरि मम बाणकी। जो चूर करनि पषानकी॥ इमि भाषि शर सन्धानकै। नभ दयो बिनु रन्धानकै॥ सो भूप धनु विधि ठाटिकै। भो मदत सब शर काटिकै॥ तब पार्थ अद्भुत ठानसौं। हनि अश्व विधुवर बानसौं॥ ध्वज काटि महि पर डारिकै। भो नदत तुरवण भारिकै॥ तब भूप रथसौं कूदिकै। अति गर्व कोप असूदिकै॥ अति पाणि लाघव ठानसौं। भो बाण तजत विधान सौं॥ तहँ हन्यो पारथ घातमै। बज्र बाण ताके गातमै॥ तब बभ्रुवाहन ते खिकै। निज खिजे विधि अवरेखिकै॥ अति कठिन धनु टङ्कारिकै। थिर पार्थ पार्थ प्रचारिकै॥ बर शरनको तन आलकै। भो लसत ओज विशालकै॥तहँ पार्थ विक्रम भूरिकै। अवकाश बाणन पूरिकै॥ सब बाण बाणन वारिकै। बज्र बाण मार्यो जारिकै॥तब बभ्रुवाहन कोपिकै। निज विजयके हित चोपिकै॥ *** ॥*॥ दोहा ॥*॥ *********

बज्र समान उदग्र शर पारथके उरमाहँ। हनत भयो अति बेगसौं दारुण भट नरनाहँ॥
अति तीक्षण उदग्र शर बेधि मर्मथल तासु। पन्नग सम कढि जात भो प्रविशि भूमि मधि आसु॥
नृप तेहि शर मममाहत ह्वै परेउ पार्थ तेहि ठौर। हाहा धुनि सैनिक किए नरोपार्थ भट मौर॥
बेधित पारथके मरत बभ्रु वाहना बीर। मोहित ह्वै गिरि भूमि पर परत भयो भरि पीर॥

॥*॥ चौपाई ॥*॥

प्रियपति सुतको मरिबो सुनिकै। चित्राङ्गदा विपति बिन गुनिकै॥आय तहाँ अति दुखसा पागी।

अ॰मे॰ करि आरत धुनि रोवन लागी ॥ उर ताडन करि अनरथ अवैकी । परी भूमिपर मोहित ह्वैकै ॥
प॰ कछु क्षण परी मोहवश रहिकै । चित्राङ्गदा चेत फिरि लहिकै ॥ आकुलि शोकाम्बुधमें रहिकै । रुदन लगी पति पति सुत कहिकै ॥ तब आई तहँ नागकुमारी । नाम उलूपी पतिहि पियारी ॥ तेहि लखि चित्राङ्गदा सयानी । कहन भई यहि विधिकी बानी ॥ मम सुतके बाणनसों पातित । पतिहि देखु सबको मति रातित ॥ तो मत मानि लरो सुत मेरो । ताते भो यह अनरथ हेरो ॥ येहि जिआउ जतन कछु करिकै । कत लखि रही शोचवों भरिकै ॥ इमिभषि बधनिनी सों कहि सोई । गहि पति चरण विकल ह्वै रोई ॥ इतनेमैं अथकी विधि हेतो । बभ्रुवाहना भूपति चेतो ॥ पिता मरण लखि निज अघ चीन्हो । अति आरत ह्वै रोदन कीन्हो ॥ प्राचित चित करिके अभिलाषे । यहि विधि नाग सुतासों भाषे ॥ तो मत मानि पितासों लरिकै । हम अति पाप कहे बध करिकै ॥ अम्ब सुनो हम निश्चै भाषत । अब नहि मोहि बनत तन राखत ॥ जिये पिता तो हम तन राखव । नहि यह तन तृणके सम नाखव ॥ इमि कहि करि मरिबेको सामा । बैठत भयो भूप बलधामा ॥ यह सुनि नागसुता दुख लीन्ही । सञ्जीवन मणि सुमिरण कीन्ही ॥ तुरित तहां सञ्जीवन आयो । नागसुताके पाणि सोहायो ॥ *॥*॥ दोहा ॥*॥ *******

नाग सुता तब भूपसों कहत भई इमि एऊ । यह मणिले निज जनकके उर ऊपर धरि देऊ ॥
तब नृपमणिले पार्थके उरपर धरे सचाव । तब पारथ ठाढे भए मणिके विमद प्रभाव ॥
मोदि जनकके पग गह्यो बभ्रुवाहना भूप । पारथ लायो सुतहि उर ह्वै अति मोदित रूप ॥

॥*॥ रोलाछन्द ॥*॥

चेति पारथ उभै पतिनिन एकते तहँ देखि । भए पूछत आगमनको हेत कछु अवरेखि ॥ तब उलूपी भई भाषत नाथ तो बधजानि । विकल ह्वै हम उभै आए इहां अनरथ मानि ॥ यक्ष बरुण कुबेर यमसों तुम अजेय अमान । गए सो तुम पूजके भर बधे इत यहि मान ॥ सुनो ताको हेत हम अब देत तुम्हहि सुनाय । भीष्मको बध किए तुम जो करि अधर्म उपाय ॥ आइ गङ्गा पास बसुगण मंत्र करि तेहि हेत । दए तुमकहँ शाप जैसो सुनो सो करि चेत ॥ पार्थ अब यहि कर्मको फल पाइहैं रण माह । बधै तो यहि पुत्र याको भूप दीरघबाह ॥ आंजु सोई भयो अब तुम तजो दुखको लेश । छुटे अब योहि शापते तुम लहो आनन्द बेश ॥ बचन यह सुनि मोदि पारथ कहे सुतसों बैन । पुत्र अब हय यज्ञ उत हम आतहै यह सैन ॥ सुनो परसो चैत पूनो यज्ञ करि हैं ॥ यज्ञ करिहैं सहित मातन आइवो तेहि देय ॥ भाषि इमि ह्वै विदा पारथ तुरग पाछ अघाय । चले रक्षक सहित सेना दुन्दुभी बजवाय ॥ तहांसों चलि यज्ञ आयो राजगृह पुर पास । तहां है सहदेवको सुत भूप बल बुधिधाम ॥ मेघ संधि सुनाम सो जाकि भिरो भुजचारि । पार्थसों सो करतभो अति घोर रण घन धारि ॥ पार्थ पहँ सो कार्मुकपहँ बाणवरसे भूरि अभेदायक दुजव

दोउ हने अमरष पूरि ॥ मेघसन्धि महीपके हय सूत बधिकै पार्थ । ताहि ताहि सुरंग दीन्हो काढि अ०१०
धनु गुणि सार्थ ॥ कूदि रथसों गदा गहि तब चलो भूप अमान । काढि दीन्हो गदा सोउ पार्थ हनि प०
बरबान ॥ बिरथ बिधनु महीपतिहि करि पार्थ बधब न चाहि । दयाकरि इमि भाखि सिखवत भए
सीखन ताहि ॥ छात्रधर्म अनूपको करि भए तुम छितिपाल । कहिँ हम सो करो अब नहिं युद्ध
बैर बिशाल ॥ अश्वमेध सु यज्ञमें तुम आइयो नृपपाल । पूर्ण मख लखि आइयो इत पाइ प्रबल
सुपास ॥ भाषि इमि है सविधि पूजित ताहि अश्व चलाय । चले पारथ सहित सेना दुन्दुभी बज
वाय ॥ तहांतें चलि अश्व आयो चेदिनगर अनूप । सरभ सुत शिशुपालको तहँ कियो पूजन
भूप ॥ पाइ पूजा आइबेको यज्ञ मध्य अभर्म । देइ शासन चलो दक्षिण ओर पालक धर्म ॥ तहां
अङ्ग किरात कोशल नृपनसों पुजवाय । गयो देश दशार्णमें सहसैन ओज बढाय ॥ तहां चित्रा
ङ्गद महीपति लरो काढि सह सैन । जीति ताकहँ चलो आगे पार्थ विक्रमऐन ॥ एक लव्य
निषादके पुर गयो तब हय तैन । लरो तहँ कढि एकलव्य महीपको सुत जैन ॥ जीति ताकहँ
गए दक्षिण वारिनिधिको कूल । तहां जीत्यो द्रविडमाहिष कोलपतिन समूल ॥ आय फिरि
गोकर्ण गिरिशिव अश्व सुषमा ऐन । फेरि जाय प्रभास थल गो द्वारिका जगजैन ॥ अश्वको
सुनि आगमन तहँ तरुण यादव सर्व । नगरते कढि लरन चाहे शस्त्र पाणि अखर्व ॥ उग्रसेनहिं
आदि सिगरे वृद्ध तिनकहँ वारि । ल्याय पार्थहिं करतभे सतकार सविधि बिचारि ॥ तहांसों
चलि अश्व सो फिरि गयो पश्चिम ओर । कृष्णसों ह्वै बिदा तित गो पार्थ सुभट सजोर ॥ पञ्चनद
में आय हय सो गयो जहँ गान्धार । शकुनिको सुत अश्व गहि तहँ कियो युद्ध अपार ॥ घने कीन्हे
पार्थ बहुबिधि वचन नृपके भाखि । सुनो नहिं सो शकुनिको सुत गर्व हियमें राखि ॥ सैन सह
बढि टेरि पार्थहि कियो सङ्गर पीन । बध्यो ताके सुभट अगनित पार्थ धीरधुरीन ॥ ***

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

गनै गनै निज भटनको शकुनि पुत्रबध देखि । आपु पार्थसों भिरि भयो बरषत बाण बिशेखि ॥
फेरि ताहि बरजत भयो पारथ बीर अमान । नहिं मान्यो तब बाण हनि काटि दयो शिर जान ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

सो लखि उसके योधा सूरे । भिरे पार्थसों अमरष पूरे ॥ तोमर पट्टिस शक्ति सोहाए । चलि
रथ बरषि पार्थ पहँ धाए ॥ तहां पार्थ अति लाघव कीन्हो । अगनित धर बिनु शिर करि दीन्हो ॥
कीन्हो अगनित कर पग छेदन । कीन्हो अगनितके उर भेदन ॥ कितने धनु ध्वज काटि गिराए ।
बधे किते हय गज छबिछाए ॥ एहि बिधि शत्रु देखि तेहि छनमें । मंत्री वृद्ध सुबुधि गुणि मनमें ॥
ल्याय शकुनि भूपतिकी रानिहि । शमित किए निज नृप अभिमानिहि ॥ पुत्रहि आरत करि
नृप नारी । गई पार्थढिग लाज बिसारी ॥ पार्थ ताहि लखि धनु तजि सादर ॥ किए प्रणाम उचित

अ०मे० प० करि सादर ॥ कहे शकुनिके सुतसौं पारथ । तुम मम बन्धु सरत बिनु स्वारथ ॥ बैर बिहाय प्रीति गहि भाई । मम पुर आयऊ समुझि सगाई ॥ इमि कहि पार्थ बिदा्कै तिनसौं । चलो लेत अब हारैं किनसौं ॥ चलि तहँसौं मलहय सुख अगरो । पलटि हस्तिनापुर दिशि उगरो ॥ तब चलांक चारण चलि आए । धर्म्म नृपतिसौं खबरि सुनाए । भूमि विजै करि आनद छावत । रक्षत तुरँग पार्थ इत आवत ॥ धर्मभूप सुनि यह सम्भाषन । बन्धुन बोलि दयो अनुशासन ॥ आजु माघकी अनुपम पूनो । आवत पार्थ होत सुख दूनो ॥ ॥ दोहा ॥

शुभदयज्ञके सदन की रचना अति कमनीय। तोरणकरवावऊ शुचि वितवरित यथा उचित रमणीय॥
दूत भेजि सब नृपनकहँ सादर लेऊ बलाय । सादर आनऊ जतनसौं विप्रनको समुदाय ॥
यह निदेश सुनि नृपतिको भीमसेन अनुमानि। यथा योग सब करतभे क्रमसौं सब विधि जानि ॥
पाइ निमंत्रण मुदित ह्वै आए सिगरे भूप । यथा योग सादर दए तिनकह बास अनूप॥
पूजन करि करि द्विजन कहँ दीन्हो विशद निवास। विधिवत सब सतकारकरि दीन्हे सकल सुपास॥
कुम्भ थार आदिक सकल पात्र सौंज समुदाय। बिनु सुवरणक एक नहि लखे विप्र चिति राय॥
विता मिले दधि दूध अरु घृतके ताल भराय। भोजनके परकारके अगिनित ढेर लगाय॥
चऊदिशि ठाढे कहत जन खाऊ खाऊ मनमान । पिओ दूध दधि सबद यह पूरि रहोसुखदान ॥
जो जहँ जो चाहत भयो लह्यो तहाँ सो तौन । भरो कोलाहल मोदमय कहे न निवरत जौन ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

इतने मै तहँ केशव आए । पुत्र पउत्र सहित मन भाए ॥ सात्युकि एक साम्ब कृत बरमा । गद प्रद्युम्न सह पूरित परमा ॥ सो सुनि भीम मोदसौं छाए । सविधि पूजि नृपढिग लै आए ॥ लखि कृष्णहि नृप आनद लहिकै । बूझे कुशल बचन अजु कहिकै ॥ फिरि भूपति बूझे मन भायो । सुने पार्थ हो तो पुर आयो ॥ तासु युद्ध जय विधिवत कहिये । सो सुनि कृष्ण कहे सब लहिये ॥ इतने मे आनदसो छायो । चार पार्थके ढिगसौं आयो ॥ करि प्रणाम करजोरि सुभावन । दयो सुनाय खबरि मन भावन ॥ सो सुनि नृप अति आनद लीन्हे । आदर सहित वसन धन दीन्हे ॥ बहु दिन बिते दाय दिन बीते । पार्थ निकट आयो हित चीते ॥ धूरं भार धारं सब दिश मै लसे सूर जैसो शशि निशि मे ॥ धुनि हय हो शनि गज गुरजन की। गई पूरि सुखप्रद हित मनकी ॥ चमु ति सुनत मोदसौं पागे । गए भूपके ढिग अनुरागे ॥ कृष्ण चन्द्र नृपधर्महि आदिक । सब बढि मिले बचन प्रियबादिक ॥ बैठि सप्रेम सकल अवदातैं । लगे करन इत उत की बातैं ॥ इतने मै तहँ सहित समाजा । आयो बभ्रुवाहना राजा ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

कृष्णयुधिष्ठिर भीम अरु नकुल पार्थ सहदेव । बन्दि सबहि मातामह द्विजबन्दतभयो सुभेव ॥

सब गुरजनको नियम कहँ बन्दत भयो सप्रेम। तासु जननि सबसों मिली यथाउचित गहि नेम॥ अ॰ मे॰
यथाउचित सब करत भे तासु उचित सतकार। तेहि छण अति आनद महो सुखो भूमिभरतार॥ प॰

इतिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशीवासिगोकुलनाथकवीश्वरात्मजेन गोपीनाथेन कविना विरचितेभाषायां महाभारतदर्पणे अश्वमेधपर्वणि अर्जुनदिग्विजयोनामत्रतीयोध्यायः ॥ *********

॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

ऐहि दिन आए पार्थ जब नृप मणिपूर अधीश। नृप ताके तीजे दिवस आए व्यास मुनीश॥

॥ * ॥ अथकरीछन्द ॥ * ॥

कहे युधिष्ठिर नृपसों बैन। करो हवन आरम्भ सचैन॥ आजु मुहूर्त परम अभिराम। करो अश्व विधि विशद ललाम॥ विधिवत त्रिगुण दक्षिणा देऊ। चाह तीनिमखको फल लेऊ॥ व्यास देवको पाय निदेश। कीन्हो यज्ञ अरम्भ नरेश॥ शुचिपलाशको जूप गढाय। लागे करन कर्म समुदाय॥ खदिर पलाश बेलके तीनि। देव दारुके दोय अधीनि॥ जूप गढाए आगम नेत। रतन हेममय सुषमा हेत॥ रुक्म पुंख रचि गरुडाकार। राखे दश हस्तक इष्टार॥ यथा शास्त्र सब पसु आधार। कीन्हे ब्राह्मण विधि ज्ञातार॥ पशु पक्षी अरु जलचर तीन। जेहि जेहि देवनलेखित जौन॥ तेहि तेहि सो सब सहित विधान। दीन्हे अभि कर्मज्ञत मान॥ तीनिशतक पशुके समुदाय। जूपन नियमित कीन्हे स्याय॥ अपसर करत नृत्य तेहि पर्व। गान करत मोदित गन्धर्व॥ राजत किंनर सिद्ध समस्त। अरु ऋषि मुनि जे विप्र प्रशस्त॥ तपनिधि शिष्य व्यासके सर्व। करत यज्ञके कर्म अखर्व॥ तपनिधि सविधि अश्व पुजवाय। हिंसन किए वेदमत पाय॥ द्रुपदसुता सह धर्म नरेश। छाने अश्वयज्ञ तेहि देश॥ षोडश रित्विज पुरुष महान। हवन कराए सहित विधान॥ शिष्यन सहित व्यास तपधाम। पूर्ण कराए मख अभिराम॥ करि मख पूर्ण भूप मतिमान। कीन्हे भूरि भूमिको दान॥ भूदि दान लै व्यास मुनीश। कहत भए इमि सुनु अवनीश॥ भूमि दान दीन्हे तुम जौन। निष्क्रय तासु देऊ लै तौन॥ विप्रहि नहि प्रिय महि अधिकार। विप्रहि प्रिय धन सुखदातार॥ यह सुनि कहे धर्म छितिपाल। यह न मोहि स्वीकार कृपाल॥ विप्रहि दयो दान जो भूमि। उचित न सो फिरि लीबो घूमि॥ चारि भाग करि लिगरे विप्र। हठ तजि बाटि लेऊ अब छिप्र॥ भाइन सहित कहे इमि भूप। किए प्रशंसा सुमन अनूप॥ फिरि इमि कहे व्यास समुझाय। मोहि दए तुम भूमि सचाय॥ सो हम तुम्हे देत तुम लेऊ। निष्क्रय भूरि दक्षिणा देऊ॥ तब नृपसों सुनि कहे सुबैन॥ लेऊ देऊ कछु संशै हैन॥ व्यास कहत सो करो सप्रेम। गुर अनुशासन दायक छेम॥ यह सुनि धर्म भूप गहि चाव। भाइनसों करि सम्मत भाव॥ * ॥ दोहा ॥ ***

देत भए रितिरित्विजन कोटि कोटि धन भूप। दै दै कोटि विचारि फिरि दए यज्ञ अनरूप॥

अ॰मे॰ तेहि प्रकार सब द्विजन कहँ दिए रतन धन भूरि । सब मंडप रित्विजन कहँ दीन्हे आनद पूरि ॥
प॰ सब जनको परितोष करि करि अवभृथ असनान । सविधि नृपनको रचि सभा बैठो शक्र समान ॥
गज मणि हय भूषण बसन दै दै नृपन सप्रेम । धर्मभूप कीन्हे बिदा सविधि पालि व्रत नेम ॥
कृष्ण राम आदिकन कहँ समुद यथाविधि पूजि। बिदा कियो क्षितिपाल मणि उचित बारता कूजि॥
बभ्रुवाहनै करि बिदा सानद धर्म्मनरेश । वसुबरषत सब जनन पहँ कीन्हे नगरप्रवेश ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

वैशम्पायनसौं इमि सुनिकै । बोले जनमेजयनृप गुणिकै ॥ मखमें अचरज कोउ निरेखे। कहो तौन ममहित अवरेखे ॥ यह सुनि वैशम्पायन बोले। अचरज लखे रहे सो खोले ॥ मख पूरण सब भो तेहि थलमें । नकुल एक आयो तेहि पलमें ॥ सो अति घोर शब्द तहँ करिकै । नर सम बोलि कह्यो पण धरिकै ॥ नहि यह यज्ञ भयो तेहि बिधिको। पूर्व लखे हम जो अति अधिको। यह सुनि विप्र नकुलसौं भाषे। कहो कौन मख तुम लखि राखे ॥ यह सुनि नकुल कह्यो यति बानी। कुरुक्षेत्र मैं हो द्विज ज्ञानी ॥ तिय सुत पुत्र बधू मन भावन । रही तासु तप रुचि उप जावन ॥ अन्न खेतसो बीनि ले आवन । सो भोजनकरि काल बितावन ॥ अति दुरभिक्ष भयो तहँ सुनियै । तब द्विज अति पीडित भो गुणियै ॥ षट व्रत करि कछु जव ले आयो। तेहिदिन बीत न सिद्ध करायो ॥ सो करि चारि भाग सब लीन्हे । विधिवत बलिबैश्वादिक कीन्हे ॥ इतनेमें द्विज एक पुकारत । आयो महा क्षुधित ह्वै आरत ॥ सो सुनि वृद्ध विप्र मुद गहिकै । ल्यायो कुटी मध्य हित कहिकै ॥ अर्घ पाद्य दै विधिवत पूज्यो । आजु कृतार्थ भयो इमि कूज्यो ॥ * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

आदर करि आनद सहित देत भयो निजभाग । तृप्त भयो नहि विप्र वह गहे असन अनुराग ॥
वृद्धब्राह्मणी भाग निज तब दीन्हे हरषाय । तृप्त भयो नहि विप्र वह क्रमसौं सोऊ खाय ॥
देत भयो निज भाग तब पुत्र विप्रको दक्ष । तृप्त भयो नहि क्षुधित द्विज सोऊ खाय प्रतक्ष।
देत भई तब भाग निज पुत्र बधू परवीन । सो भोजन करि विप्र वह तृप्त भयो ह्वै पीन ॥

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

भयो तृप्त इमि बोल्यो विप्र । नभते कुसुम झरे तहँ क्षिप्र ॥ धन्य धन्य द्विज सह परिवार। कहत भए इमि सुमन उदार । सुमन कहे तेहि द्विजसो तत्र सानद चलो शक्रसुर यत्र ॥ ऐसो समै क्षुधित द्विज ताहि । तृप्त कियो तुम सुधरम चाहि ॥ षटदिनके भूखे तुम सर्व । पालन कीन्हे धर्म्म अखर्व ॥ ताते भो यह पुण्य अमेय । सब पुण्यनते दायक श्रेय ॥ सुनु द्विज समै समैको दान । होति कोटिगुण पात्र प्रमान ॥ यथाशक्ति जो देत सुदान । शत सहस्र के जल व विधान ॥ लहत तुल्य फलते लहिकाल। होत पुण्यकी सूक्षम चाल ॥ ले रथ देव भूप दीन्होवारि।

ताते लहे स्वर्ग मुदधारि ॥ नृग नृप दीन्हे लाखन गाय । एक विपरजय कियो अचाय ॥ ताते परो नरकमें जाय । सुख दुख दायक न्याय अन्याय ॥ शिबि नृप दै निज मासु सप्रेम । उत्तम लोक लहे लहि क्षेम ॥ तिमि तुम किए अनूपम कर्म्म । ताते लहे अपूरब धर्म्म ॥ चढो बिमान सहित परिवार । स्वर्ग चलो लहि शुचि मतिचार ॥ यह सुनि द्विज बिमानमधि पैठि । तिय सुत सुतपतिनी सह बैठि ॥ स्वर्ग गए लहि मोद महान । हो ऐसे वह यज्ञ बिधान ॥ सुनो तहाँ हम लोटे जाय । भयो हेम सम आधो काय ॥ अब बहुबिधि लोटे इत आय ॥ नेकु न बदल्यो रङ्गलखाय ॥ ताते साफ कहत सुनिलेऊ । नहि ओहि यज्ञ सरिस मख एऊ ॥ इमि कहि नकुल गयो बिलमाहँ । यह आचरज लखे नरनाहँ ॥ यह सुनिकै जनमेजय भूप । फेरि करतभे प्रश्न अनूप ॥ नृपति युधिष्ठिर आनद पूरि । मखकरि दए दक्षिणा भूरि ॥ शौनक जाको व्यास मुनीश । करता जासु धर्म्म अवनीश ॥ नकुल भयो निन्दित मख तौन । कहो बिप्र यह कारण कौन ॥ यह सुनि बैशम्पायन मोदि । एहि बिधि बोले महा बिनोदि ॥ सुनो भूप इतिहास पुरान । पूर्ब यज्ञ कीन्हे मघवान ॥ तहँ पशु बधको समै निहारि । दया गहे सब बिप्र बिचारि ॥ कहे इन्द्रसों करि अनुमान । रुचतन पशु बध करब बिधान ॥ हिंसा सरिस न और अधर्म्म । बिनु हिंसाको यज्ञ सुकर्म्म ॥ ताते शास्त्र रीति अनुमानि । होमो बीज धर्म्मबिधि जानि ॥ यह बिधि रुची न इन्द्रहि भूप । तेहि पर भयो बिवाद अनूप ॥ करि बिवाद तबते मति भौन । बसु भूपति सों बूझे तौन ॥ यह सुनि बसु बोलो गुणि आप्त । होमो द्रब्य होइ जो प्राप्त ॥ यह सुनि बोले बिप्रबिचित्र । बसु उत्तर दीन्हे अपबित्र ॥ नहि हिंसा उत्तम पद देत । हिंसा यज्ञ कामको हेत ॥ जेहि बिधि धन उपराजित होत । यज्ञ किए फल तथा तनोत ॥ लेकै एक अपटुको मंत्र । उचित न करिबो कर्म्म स्वतंत्र ॥ बिश्वामित्र जनक गुणि सर्ब । कीन्हे धार्मिक कर्म अखर्ब ॥ द्वादश बार्षिक यज्ञ महान । रहे अगस्ति करत सबिधान ॥ तहँ नव बरिस न बरषो बारि । तब सब ब्राह्मण कहे बिचारि ॥ अन्न देत कुम्भज अघमान । नहि जल बरषत है जलदान ॥ जौं न अन्न होइहि उतपन्न । तौ होइहि केहि भाँति प्रपन्न ॥ जस जन लहिहैं पीडा भूरि । तजो यज्ञ यह दोष बिसूरि ॥ कुम्भज यह सुनिकै मन लाय ॥ सब बिप्रणसों कहे बुझाय ॥ तजो शोच हम कहत प्रयोग । जौं नहि सधी अन्न उत योग ॥ तौ हम करब मानसिक यज्ञ । कै मख यात्रा करब कृतज्ञ ॥ मन दै सुनो कहत यह और । हम चाहैं सो करैं सठौर ॥ अब चाहैं हम करैं सुवृष्टि । उतपति करै चारि बिधि सृष्टि ॥ सब जगमै जो अन धन यत्र । अब चाहैं तब आनै अत्र ॥ सुनि अगस्तिके ऐसे बैन । किए प्रसंशा बिप्र सचैन ॥ सुनि ए बैन जानि परभाव । बरषे बारि मेघ गहि चाव ॥ ******* अ॰ मे॰ प॰

॥*॥ दोहा ॥ *॥

सहित बृहस्पति इन्द्र तहँ आए रुचि उपजाय । मख समाप्त करि मुनि द्विजन बिदा किए हरषाय ॥

अ० मे० प० यह सुनि जनमेजय नृपति फिरि इमि कहे बिचारि।नकुल रूप यह को रहो कहो तौन निरधारि॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥ * ॥

वैशम्पायन मुनि यह सुनि कै। बोले जनमेजयसों गुणिकै ॥ ऋषि यमदग्नि आद्धपण धरिकै। राखे दूध पात्र मधि करि कै ॥ तेहि घर क्रोध सतन चलि आयो। मुनिके देखत दूध गिरायो॥ सो लखि सुमुनि क्रोध नहि कीन्हो। क्रोध कहो इमि बिसमय लीन्हो ॥ मुनिवर आजु मोहि तुम जीतो।आज्ञा करउ होउ जो चीतो॥तब यमदग्नि कहै सुनु भाई।मोहि तोहि नहि बैर नितार्ई॥ हमरे पितृ कर्मके बाहक। तामधि विघ्न किए तुम नाहक ॥ हम न गहे तव दण्ड उछाह। अब तुम मम पितरन पहँ जाहु॥ वे जो कहे करो सो सादर। यह सुनि क्रोध भयो तति कादर॥ तासु पितर ढिग गयो डेरानो। तेहि लखि पितर कहे इमि आनो ॥ तू इहि लिए नकुलको कारय। ताते हो अब नकुल अनारय॥यह सुनि सो अति बिनती कीन्हो।तब तिन शाप नाश कहि दीन्हो॥ धर्म्म भूपके मखमें जै हो। तब तुम मुक्त शापसों ह्वै हो ॥ सो यह क्रोध नकुल वपुधारी। आयो तहँ अब हानि बिचारी॥ सो यह चेति आइ तेहि थलमें। छुटो शापसों ताही पलमें ॥ * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

यहि प्रकार भूपाल मणि यशी युधिष्ठिर भूप। अश्वमेध मख करत भे लहि प्रभु कृपा अनूप॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणसिंहाज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशीवासि गोकुलनाथकवीश्वरात्मजेन गोपीनाथेन कविना विरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे अश्वमेधपर्व समाप्तिर्नाम चतुर्थोऽध्यायः ॥ * ॥ इति अश्वमेधपर्व समाप्तम् ॥ * ॥ * * * * *

॥ महाभारतदर्पणः ॥

॥ आश्रमवासिकपर्व ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

नमस्कार नारायणहि करि नरोत्तमहि नोमि । बन्दि गिरा व्यासहि रचत भारत भाषा सोमि ॥
औहि रघुवरप्रभुके चरित बक शतकोटि अमन्द।ताहि सुमिरि भारत रचत भाषा बिरचि सुछन्द॥
पारथेके स्वारथ भए सारथि परम अनूप । ते सारथ रचि देहि यह भारत भाषारूप॥
जासु कृपातें सधत हैं शुभआश्रम विधि सर्व । ताहि सुमिरि भाषा रचत आश्रम वासिक पर्व ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

सुमिरि उच्छलनि अरु उदधिउलङ्घन समयको । भारतसमुद प्रतच्छ भाषा करिचाहत तरौं ॥

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

मुनि तब मम सु पितामह पूर्व । जय लहि पाय राज्य अतिगूर्व॥ किमि धृतराष्ट्रभूपको तोष । कीन्हो गोपि पुत्रबधदोष ॥ केहिविधि दम्पति बृद्धमहीप । रहे कितेदिन कहु कुलदीप॥ यह सुनि व्यासशिष्य मतिमान । कहत भए इमि सुहित विधान॥ सुनो भूप लहि भूमिअशेश। सहित सुबंधुन धर्म्मनरेश॥ बृद्ध भूपति हि बूझि सरीति । पालत प्रजा समस्त सनीति॥ रहत सु सुरुषा करत सप्रेम । निति उठि बन्दतं चरण सनेम॥ धर्म्मनृपतिको शासन पाय। संजय बिदुर युयुत्सु सचाय॥ सेवत रहत नृपहि सबयाम।शासन लहत करत सो काम॥ करि तहँ बास व्यास तपधाम। रहत सुनावत कथा ललाम॥ मंत्री शुभट सखा समुदाय। रहत पाणि जोरे ढिगआय॥ तिमि कुन्ती अरु द्रुपदकुमारि । आदि शुभद्रा सिगरी नारि॥ सेवत गान्धारि हि सबकाल। रहि बिनीत कहि बचन रसाल॥ भूमि रत्न अनधनको दान। कियो चहो धृतराष्ट्र सुजान॥ सो बिधि बत करवायो धर्म्म। औरसपुत्र सरिस करि कर्म्म॥ भूषण बसन अशन बेवहार।अरु जो शासनको अधिकार॥ रहो पूर्ववत तौन समस्त । अरु ताते कछु और प्रसस्त ॥ जाते पुत्रमरणको शोक। भूलि गए दम्पति मुद ओक॥ एहिविधि भूपचन्द्र दशबर्ष । दम्पति किए बितीत सहर्ष॥ सब दिन सब पाण्डव सुखदाय। सेवैं भूपहि दोष भुलाय॥ भीम भूपको शासन मानि। सेवत बृद्ध हि आनद आनि॥पै उनको दुरमंच प्रभाव।अरु जो कुटिलपनेको छाव॥ सो सब समुझि समाज अन खात। आदर करत हिए पछितात ॥ एक दिवस पूरब बिरतान्त। संमुझि भीम अरिसयन कृतान्त॥ बाज शब्द करि बीर अखर्व। कहत भयो इमि बचन सगर्व॥परिघोपम ममभुजा बिशाल

प्रा॰आ॰ अन्धभूपके सुतके काल ॥ चन्दन चरचित पूजन योग। है प्रसिद्ध आमत सबलोग ॥ सभासदनसों
प्रा॰प॰ इहि विधि बैन। दीरघ गरे कह्यौ बलयैन ॥ तीन सुने नृपदम्पति वृद्ध । किए हिएमें शोक
प्रवृद्ध ॥ धर्म्म नकुल पारथ सहदेव। कुन्तादिक नहिं जाने भेव ॥ गहि निरबेद बृद्ध छितिपाल।
कहे हितनसों वचन रसाल ॥ है हम सब अनरथको मूल। मम कुमंत्र मम हियको शूल ॥ **

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

दुष्ट मूढदुरयोधनहि राज्य दयो हम जौन । सकल जगतके नाशको दुसतर कारण तौन ॥
द्रोण व्यास भीषम विदुर कृप केशवके बैन। नहि मान्यौ हम मोहवश कत न होहि गतचैन ॥
धर्म्मशील पालक प्रजा सुबुधि युधिष्ठिर ताहि। रण न नहि पैतामही जगत सराहत ताहि ॥
तेहि कुमंत्रको फल लह्यौ औसो दुसह दराज। नृपतियुधिष्ठिर बाहुबल लह्यौ अनूपम राज॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

धर्म भूपकी शासन रुखसों । सेवत मोहि सकलजन सुखसों ॥ इमि कहि बृद्धभूप अनुमानी।
कहे धर्म्मभूपतिसों बानी ॥ धर्म्मशील तुम कुरुकुलनायक । हो सर्वज्ञ सकलविधि लायक ॥
तुम मम दोषनको करि गोपन। सेवँ सकलभाँतिसों चोपन ॥ तुव प्रसाद हम कीन्हे नीके। दान
आद्य बिधि भावत जीके ॥ सर्व धर्म्म शीलक तुम राजा । तुम्हे सराहत सुमुनि समाजा ॥ हम
गान्धारी संमत करि कै। तुमसों कहत उचित हिय धरि कै ॥ तुव शासनको लाभ उमाहत। हम
बनबास किया अब चाहत ॥ वलकल बसन अनूपम धारी। जाव बिपिनि हम सह गान्धारी ॥
दै अनुशासन आशिष लेहू। मोहि बिदा करि आनद देहू ॥ यह मम कुलकी रीति सदाहीं ।
सुतहि राज्य दै कानन जाहीं ॥ एहि बिधि बृद्धनृपतिसों सुनि कै।नृपति युधिष्ठिर बोले गुणि कै ॥
तुम बनबसौ सकल दुख सहि के। तो धिक मोहि राज्य सुख लहि कै ॥ भोग राज्य मख दान
महानो।तुम बिनु मोहि व्यर्थ सब मानो ॥ तुम मम पिता बन्धु गुरु माता। हम तो सुवन आपु महि
त्राता ॥ लहे श्राप करि अपयश पीछे। अब फिरि अयश देन तुम इच्छे ॥ *~*~*~*~*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

जौ बन चलिबो अवसि तौ देउ जुजुसुहि राज।बिपिनि चलब हम आपु सँग सहित सुबन्धु समाज॥
यह सुनि कै धृतराष्ट्रनृप कहे सुनो छतिपाल। उचित मोहि बनबास अब देखि बयक्रम काल ॥
सकलभाति बहुदिवस तुम किए सुसुरुषा तात। अब आज्ञा बनबासको देव न अनुचित बात ॥
बृद्ध हमहि बन उचित अब यह मम कुलकी रीति।पाणि जोरि इमि भाषि नृप मोहित भए सप्रीति॥

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

धर्मनृप अति भए खेदित दशा यह लखि तासु। बारिसों मुखहृदय ताको भए धोवत आसु॥
विदुर सञ्जय आदि सिगरे किए रोदन तत्र। आदि कुन्ती युवति रोदत परे भूपति यत्र ॥ केति

आ॰अ॰
वा॰प॰

क्षणमे वृद्ध उठिकै नृपहिं अङ्क लगाय । करे गद्‌गद गरो फिरि इमि कह्यो प्रेम बढाय॥ छोह सों भरि हियो मेरो भयो पूरित मोह। तदपि तपको भावना नहिं तजति मेरो गोह ॥सुनो ताते हियो दृढ करि देऊ शासन मोहि । जाव हम बन नीति गुणि नहि नेकु अनुचित तोहि ॥ महा रोदन शब्द तेहिथर भयो पूरित भूप । व्याससुनि तब धर्मनृपसों कहे वचन अनूप ॥ कहत कुरुकुलदीप नृपसों वारो संशय त्यागि । यह अवस्था पाय तपबिधि उचित बनमग लागि ॥ शास्त्रबिधि यह वृद्धनृप सब किए तपबन वास । भाषि इमि निज आशरम गे गुप्त ह्वै मुनिव्यास ॥ धर्मनृप सुनि घरिकै गुणि इमि कहत भो मति भौन ।औरसि सो करतव्य आज्ञा गुरजननको जौन॥करो भोजन आजु अब इतै मम कह्यो प्रभु मानि। गहो आश्रमबास तब जो किए पण अनुमानि ॥ वचन यह धृतराष्ट्र नृप सुनि करत भे स्वीकार । गए दम्पति गेहनिज सह बिदुर सब परिवार ॥ तहाँ करि सब कृत्य बिप्रन पूजि बिधि दरशाय। किए भोजन बृद्ध दम्पति सरस रुचि उपजाय॥ भोजनोत्तोर वृद्ध भूपति सहित सरस सुप्रेम । कहे नृपसों राज्य करियो सहित नीति सुनेम ॥ राजधर्म सुकर्म जो सब कहे भीषम तात। सदा तेहि अनुसार पालेऊ प्रजा भट अवदात॥प्रजा पीडित होइ नहि जेहि सैन होइ न छीन।लहै छिद्र न शत्रु जाते रहेऊ तिमि परवीन ॥राज्यके सब अङ्ग रक्षत रहेऊ सहित विधान । राखियो शुचि सुहृद मंत्री परम जो मति मान॥ मंत्र बिनु मति किहेऊ कारज किहेऊ करि अनुमान।मन्त्रको नहि भेद पावै लखन कोऊ आन॥सदा तोषत रहेऊ सुभटन करि सु दान सुमान। सैनपति अरुयूथपनकह किहेऊ मित्र समान॥ महा चतुर चलाक चारण रहेऊ राखे तात।खबरि सिगरे देशकी सुनि किहेऊ जतन बिभात ॥ सरस सुकृती सुहृद राखेऊ सहित धाकोदार। सूप पाणी पानदायक किहेऊ सुहित सप्यार॥ सदा आमद खर्च अपनो रहेऊ सुनत सनेम।अश्व गजके देखिबे मे रहेऊ राखे प्रेम॥ रहेऊ रक्षत सदा सयत्न जातिकुलको धर्म। रहेऊ पूरण करत सबमे सविधि सकल सुकर्म॥ नित्य करि ओ सुबुधि अरु कबिकोविदनको सङ्ग। नित्य सुनि ओ शास्त्र अरु निति रहेऊ गुणत सुढङ्ग॥मित्र अरि अरि मित्र अरु अरि शत्रुको अनुमान। करत रहिओ युगुतिसों जेहि होइ निति कल्यान ॥ युवा युवति शिकार आदिक विषयके आधीन।होइओ मति कबऊ ढिग केरि पुरुष मति गतिहीन॥ सदा डर परलोककी यहि लोककी अति लाज। रहेऊ राखे करत रहि यो दान पुण्य सु काज ॥ नृपतिसों नृप नीति इमि कहि नृपति बाहेर आय । दिए बिधिवत दान अगनित द्विजनकहँ बलवाय ॥ खबरि यह सुनि तहां आऐ व्यथित पुरजन सर्व। जोरि युगकर भूप तिनसों कहे वचन अखर्व॥ सुनो मम ममपुत्रके दुरमंत्रसों एहि देश। भयो अनरथ महा सो नहि कहत बनत असेश॥ नृप युधिष्ठिर संहित बन्धुन सविधिसे यो मोहि । सकल बिधि परसन्न हम गुण धर्म इनके जाहि ॥सुनो अब मम हिए प्रगटित भयो अति निरवेद । जान चाहत बिपिन सह गान्धारिजा एहि भेद ॥ सहित बन्धुन धर्मभूपति नीति सागर गुर्व। सबिधि सबको करि हि पाऊंन अब पूरन पूर्व॥ ※

आ०अ०
बा०प०

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ * ॥

ताते तुम सब मुदित ह्वै बिदा करा अब मोहि । यह सुनि सबजन बिकल ह्वै रोए अनरथ जोहि ॥
इतनेमें तह धीरधरि ब्राह्मण एक सुजान । कहत भयो धृतराष्ट्रसों सुनो भूप मतिमान ॥
नहि काहूकी कुमतिसों भयो युद्ध जननाथ । दैव चहत जो यतनसों ताको करत प्रकाश ॥
सबिधि पालिहै प्रजनकहँ पांडव नहि सदेह । भूप जाऊ तुम बिपिनिकह कौ म कहै तजि नेह ॥
इतनेमें संध्या निरखि सबको बिदा महोप । करि गान्धारीके सदन जात भयो कुरु कुलदीप ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

तहँ सो रजनि बिताय कहे बिदुरसों बृद्धनृप । धर्मनृपतिपहँ जाय कहो सदेश अदेश तजि ॥
जाव बिपिनि हम तात पाय कार्त्तिकी पुर्णिमा । किञ्चो चहत अवदात एहि अन्तरमें श्राद्धमख ॥
भीष्म द्रोण बाल्हीक दुरयोधन आदिकनको । श्राद्ध करब लखि लोक हिता सुहित भूरिधन ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

यह सुनि बिदुर मोदसों छाए । सादर धर्म्म नृपतिपहँ आए ॥ बिधिवत समाचार सब भाखे । सो सुनि भीमसेन अति माखे ॥ कहे न एहिहित देव उन्है धन । करब श्राद्ध हम यथा रुचि हि मन ॥ दुर्योधन आदिक सुत उनके । हे नहि श्राद्ध कर्म्मके गुणके ॥ अब इमि बोलत रिजुता पागे । यह मति कहां गई ही आगे ॥ यह सुनि अर्जुन अनुचित जानी । कहे कहत कत अति कटु बानी ॥ बृद्धपिताके जेठे भाई । निज आश्रित हतपुत्र सहाई ॥ दम्पति बन जैवे कहँ दीचित । करिवो उचित तासुत सब ईप्शित ॥ देव नरदेवन तुष आधोना । उचित करि हि चितिनाथ प्रबीना ॥ यह सुनि धर्म्म भूप सुख पाए । भीमसेन रुक्क मौन सुनाए ॥ तब इमि कहे बिदुरसों राजा । तासु सकल मम राज्य समाजा ॥ हय गज रजत बसन मणि जेतो । मागै भेजि देहि हम तेतो ॥ बनदुख समुझि भीम इमि माख्यो । ताते इबिधि बचन कटु भाख्यो ॥ सो यह बचन हिए मति आनै । मम धन प्राण आपनो जानै ॥ तब चलि बिदुर भूपपहँ आए । सबिधि सकल बिरतान्त सुनाए ॥ सो सुनि भूपति आनद लीन्हे । सबिधि श्राद्धकोरम्भन कीन्हे ॥ ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

तहाँ युधिष्ठिरनृपतिके भृत्यनके समुदाय । हाजिर रहि सब सौजसह शासन लखे सचाय ॥
शत सहस्र अरु अयुतधन जाहि दिआए जौन । हय गज मणि चिति बसन सब दिए ताहि ते तौन ॥
पृथक पृथक सब जननको करि करि श्राद्ध सप्रीति । भूरि दक्षिणा देत भे नृपधृतराष्ट्र सनीति ॥
यथायोग सब बरणकहँ भोजन दीन्हे भूरि । एहि प्रकार दशदिन किए श्राद्ध यज्ञ मुद पूरि ॥

॥ * । जयकरीछन्द ॥ * ॥

तब भूपति सो निशा बिताय । भोर कार्तिकी पूनो पाय ॥ प्रातकृत्य करि सतिय सचाय । प्रेम भरे पाण्डवन बलवाय ॥ करि सुबारता दम्पति भूप । गहे बिपिनको गैल अनूप ॥ पटसों बाधे चख

अभिराम । गान्धारी अति पतिव्रत वाम ॥ कुन्तीके काधें धरपाणि । धरे चली विधि गति अनुमानि ॥ आ०प०
गान्धारीके काधें हाथ । धरि भो चलत वृद्ध छितिनाथ ॥ कीन्हे अग्नि होत्र सुखदान । आगे चलो वा०प०
विप्र मतिमान ॥ रुदन करत कुरुकुलकी नारि । सङ्ग चली अति दुख विसतारि ॥ रोवत पाण्डव
करत प्रलाप । चले सङ्ग अति भरे उताप ॥ व्याकुल रोवत पुरजन सर्व । रुदत चले दुख बहे
अखर्व ॥ सुनो भूप तेहि समयकी बात । दुसह दशा कछु कही न जात ॥ चलि कछु दूरि भूप समु
झाय । फेरत भए युवति समुदाय ॥ फिरि कुआय पुरजन कहँ फेरि । चले भूप दुसतर दुख गेरि ॥
धर्म्म भीम अर्जुन दुख पूरि ॥ माद्री सुवन बहे दुख भूरि ॥ सञ्जय विदुर युयुत्सु अचैन । धौम्य आदि
बहु द्विज मतिऐन ॥ रोवत चले विकलता छाय । कहत प्रलापित वचन सुवाय ॥ ****

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

तब भूपति पाण्डवन कहँ बहुत भाँति समुझाय । आशिष दै कीन्हे विदा गहि गहि अङ्ग लगाय ॥
धर्म्म भूप अरु भीम तब मोहगए बहु बैन । निज जननीसों कहत भे व्याकुल भए अचैन ॥
सो सुनि कुन्ती रुदन करि सविधि तिन्हैं समुझाय । नहि पलटी नृप सँग चली नेह जालनि छुटाय ॥
तब दम्पति बहु विधि चहे तासु फिरनके हेत । तबहूं कुन्ती नहि फिरी गई विपिनि मत चेत ॥
रुदत प्रदक्षिण तिन्हहि करि भूपति आए गेह । विपिनि गए सञ्जय विदुर नृप सँग भरे सनेह ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

राम कृष्ण सिय राम रटत भूप अति प्रेम सों । उत्तर निशि अभिराम सुर सरितट चलि आतभे ॥
स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशी
वासिनेरकुलमाणवकवीश्वरात्मजेन गोपीनाथेन कविना विरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे आश्रम
वासिकपर्वणि धृतराष्ट्रस्याश्रमवासगमनोनाम प्रथमोध्यायः ॥ ******

॥ * ॥ वैशम्पायन उवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

सुरसरि तट धृतराष्ट्र नृप आनि सकलनिको भीर । अग्निहोत्र विधि करि निवसि रजनि बिताए धीर ॥

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

भोर विदुरको सम्मत पाय । कीन्हे तहां निवास बनाय ॥ कुन्ती सह दम्पति मतिमान ।
कीन्हे सुरसरि में अस्नान ॥ कीन्हे उचित कर्म अनुमानि । विप्रन सहित वेदविधि आनि ॥
आइ तहां मुनिगण सङ्ग । भए सुनावत कथा प्रसङ्ग ॥ इमि मुनि सङ्ग सो दिवस बिताय ।
संध्या कृत्य किए मनलाय ॥ करि उपवास डासि कुशसेज । भूप बितावत भे सो रैन ॥ प्रात
कृत्य करि विप्रन वन्दि । कुरुक्षेत्र कहँ गए अनन्दि ॥ तहां मिलो राजर्षि अनूप । केकय अधिप
भूप मतरूप ॥ सो पुत्रहि दै राज्य सधाम । सो बनवास करत तपधाम ॥ मिलि तासों नृप ताके

आ०श्र० सङ्ग । व्यासाश्रम गे भरे उमङ्ग ॥ बन्दि सविधि मुनि बरके पाय । टिके भूपके आश्रम जाय ॥
आ०प० मुनिवरके आज्ञा अनुसार । वानप्रस्थको विधि ब्यवहार ॥ भयो सुनावत कैकय राज । तिनि बिल
सोकुरुकुल शिरताज ॥ गान्धारी अरु कुन्तीवाम । सञ्जय विदुर भूप तपधाम ॥ बल्कल अजिन
मनोहर धारि । कन्द मूलको असन बिचारि ॥ करि व्रत धरत लगे गहि गीति । मन बच क्रम
सब इन्द्रिय जीति ॥ भए अस्थि अरु चर्म्मशेष । जटा मौलि अति तेज बिशेष ॥ सञ्जय बिदुर
ब्रती गहि नेम । निसुदिन सेवत नृपहि समेम ॥ भूप चरत दुस्तर व्रत चय । नारदमुनि आवत
भे तत्र ॥ अरु परवत देवल तप धाम । देखि तिन्हैं लहि आनद भाम ॥ कुन्ती करि सतकार
अहीन । करत भई आसन आसीन ॥ शिष्यन सहित व्यासमुनि आय । बैठत भे तहँ रुचि उप
जाय ॥ तहँ नारदमुनि सबै निहारि । कहे पूर्व बिरतान्त बिचारि ॥ नृपति सहस्र चित्य हौं पूर्व ।
केकय नाथ बिदित भट पूर्व ॥ हैं शतजूप भूप इत जोय । ताको रहो पितामह सोय ॥ सो पुत्रहि
दे पृथिवी तन्त । बनबसि लहि अति तपको अन्त ॥ बसो जाइ सुरपतिके लोक । सुरपति सरिस
तेजको थोक ॥ तिमि शैलालय भूमि भरतार । जो भगदत्त महीप उदार ॥ ताको रहो पितामह
तोज । तपबल लह्यो स्वर्ग मनिभौन ॥ नृप पृषध्र करि तप अधिकाय । [illegible] भयो शक्रपुर
आय ॥ मान्धाताको सुवन महीप । हो पुरु कुत्स बिदित कुलदीप ॥ सो वनमें करि तप अभिराम ।
बिलसो शक्र लोक लहि धाम ॥ हो शशलोमा नामक भूप । सो इत तपि दिव लह्यो अनूप ॥
द्वैपायन मुनिके परसाद । इत तप धरि करि हरिगुण नाद ॥ तुम दम्पति लहि धर्म बिभाग ।
करिहौ बिबुद बास अवदात ॥ धर्म्म भूपको जननि सुजानि । सुनिरत पतिहित पतिहित जानि ॥
सो आइहि निज पतिको पास । पूरण करिहि तासु प्रभु आस ॥ [illegible] लगि [illegible] । हों
इहि बिदुर धर्म्ममें लीन ॥ सुनि नारदके ऐसे बैन । पूजन कियो भूप मतिऐन ॥ यह सुनिके
शत जूप नरेश । कीन्हे मुनिको अस्तुति बेश ॥ अस्तुति करि उर आनद आनि । पूछत भयो जोरि
युग पानि ॥ **॥ *** ॥ दोहा ॥ ***॥*** ॥*॥
प्रभु सब तप ज्ञानके कहे लोक गमन तजि खेद । नहि इन दम्पतिको कहे लोक भावको भेद ॥

॥ * ॥ नारदउवाच ॥ * ॥

तीनि बरिष बप और करि ए दम्पति मतिमान । तन तजि धाम कुबेरके बसिहैं [illegible] ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

इमि कहि देव मुनीश परवत देवल दिव गए । सठपद सह अवनीश मुनि [illegible] आह ॥

॥ * ॥ वैशम्पायन उवाच ॥ * ॥ दोधाछन्द ॥ * ॥

गए भूपति बिपिनि जब तब पहित अर्जुन धर्म्म । भ्रात [illegible] करि भूमि शासन
कर्म्म ॥ देखिवेकी लालसा नहि सको रोकि नरेश । [illegible] पूरब [illegible]

तेहि देश ॥ नगर रक्षण हेत राखि युयुत्सु कहँ रणधीर । कछु दिन रहि उतरि यमुना गए आश्रम तीर ॥ दूरते लखि आसरम सब त्यागि वाहन रई । मुनिन बूझत गए नृपढिग भरे शोक अछेई ॥ वारि पूरण कलश लीन्हे तिन्है आवत देखि ॥ दौरि पाण्डव परे पायन सहा दुखसों ओखि ॥ लादके सहदेव कहँ उर लगति आँसूधार । कही कुन्ती पग आए सुनत भूप उदार ॥ भयो सबकहँ दुख लावत करत रोदन भूरि । बहु लाई सुतन कहँ गान्धारजा दुख पूरि ॥ कलश तिनकें लए निज कर सकल पांडव बच । वधुनसों पुरजननसों मिलि गए आश्रम बच ॥ आगमन सुनि पांडवनको ऋषिनके समुदाय । कहे संजै देउ सबके नाम भेद बताय ॥ वचन सो सुनि मुनिनसों इमि भया कहत सुभेव धर्म ए ए भीम अर्जुन नकुल ए सहदेव ॥ द्रोपदी वसुदेव आए उत्तरा एहि रीति । पृथक पृथक बताय दीन्हे बढे अतिसै प्रीति ॥ देखि मुनिवर गए निज निज आसरम सुखदान । वृद्ध नृप तब भयो बूझत कुशल सहित विधान ॥ भाषि सर्वविधि कुशल निज नृपधर्म इत उत जोहि । कहे कित सो विदुर नहिं लहि परत है इत मोहि ॥ कहे नृप वसि विदुर वनमें करत तप अतिघोर । मौन रहि करि वायु भक्षण भयो धूरि अघोर ॥ मुनिन कहँ लखि परत कबहूँ भ्रमत रहि दिगवास । नयो मोकहँ भूलि आवत कबहुँ नहि मम पास ॥ इतेमें नृपधर्म कहँ लखि परो विदुर महान । चलो वनमें जात धूलिन मत्त द्विरद समान ॥ देखि नृप उठि दौरिकै इमि चलो टेरत ताहि । हम युधिष्ठिर विदुर थिरकै देउ दरशन चाहि ॥ भूपके सुनि वचन लखो गहन वनमें जाय । रह सों लखि खरो रहि भो लखत एक टक लाय ॥ आय नृप भो खरो आगे गहे प्रीति अथोरि । मौन रहि सो रह्यो अनिमिष नयनसों चख जोरि ॥ योग बलसों मिलो दीन्हो प्राणमें निज प्राण । इन्द्रियनमें सकल इन्द्री दयो मिलाय सुजान ॥ बुद्धि मन चित आयु सिगरे मिलैकै परवीन । विदुर एहि विधि धर्म नृपमें होत भो तहँ लीन ॥ धर्मनृप तब विदुरको तहँ लखि अचेतन गात । तेज गुण बल अधिक निजमें लखत भो अवदात ॥ व्यास ताकह रहे योगी करे सो अनुमानि । योग विधि करि भयो मोमह लीन ऐसो जानि ॥ चहे तब नृप दग्ध करिबो तासु देह अनूप । गगनवाणी भई तहँ मति करो ऐसो भूप ॥ परम योगी किएहैं यह ज्ञान दग्ध शरीर । वचन यह सुनि पलटि आयो भूप सुमति गँभीर ॥ विदुरको सो हरष सबसों कहे भूपति जाय । सुनत सो सब रहे तपि से महादुखसों छाय ॥ वृद्ध नृप तब देनमें फल मूल भोजन ओन । असन सो करि भूमि शय्या किए सब मतिमौन ॥ कथा वार्ता करत सबते तीनि रजनि बिताय । लख करिकै वृद्ध नृपकी सरस आज्ञा पाय ॥ लखन लागे मुनिजनको आसरम रमणीय । अवनि पक्षी मृग महीरुह सों परम औ कमनीय ॥ वन्दि विप्रण देत थाली श्रुवा अजिन अनेक । [illegible]के सुमि सुखसहित विवेक ॥ इविधि मिलि सब मुनिनसों फिरि भूपकें ढिग आय ॥ कीन्ह विश्रित भए दैश्य करश आज्ञा पाय ॥ सुमन सुरपति सहित जैसे लसत सुर गुर दक्ष । पांडवन सह भूप तसे भयो लसत प्रतक्ष ॥

आश्रम० वास०

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

इतनेमें शिष्यन सहित आए व्यासमुनीश । आसनस्थ कीन्हे सविधि पूजि ताहि अवनीश ॥
आसनस्थ भे मुनिन सह व्यास मुनीश महान । तब मन सहचर ज्ञानकी बूझे कुशल विधान ॥
कुशल प्रश्न करि व्यासमुनि कहत भए समुझाय । धर्मराजहि मांडव्य ऋषि शाप दयो अनखाय ॥
दासी सुत नृप हो जनमि भयो विदुर तोहि हेत । ताहीमें नृप धर्ममें मिल्यो सुज्ञान निकेत ॥
धर्म जान सो विदुरहै विदुर जान सो धर्म । वायु आदि [illegible] सम सम य निरमल कर्म ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

इतनेमें तहँ मुनिवर आए । नारद परवत देवल गाए ॥ अरु विश्वावसु आनद [illegible] । चित्रसेन तुम्बरु मुनि भाए ॥ कुरु भूपको आज्ञा पाए । पूजि धर्म भूपति बैठाए ॥ बैठि तहां मुनिवर तप रिधिके । कथा प्रसंग करे बहुबिधिके ॥ तब मुनि व्यास कृपासों भरिके । बोलत भए दया हिय धरिके ॥ सुत धृतराष्ट्र तुम्है कछि दीखत । तुम परमार्थ काहेसो दीखत ॥ देखो सुनो चहो जो चाहो । सो फल दहि न दुख अवगाहो ॥ यह सुनि भूप चोहे हिय राखे । प्राञ्जलि जोरि मुनिवर सो भाखे ॥ यम सुत बड़ो कपट अति मनमें । ताते प्रभो होतको रखवे [illegible] चउ व सखा सम बन्धी । बन्धु पितामह जे धनबन्धी ॥ तिन्है समुझि मनधीर न धारे । जो दुख अग्निनि सरिस हिय आरे ॥ इमि कहि मौन रह्यो अतधारी । तब इमि कहत भई गान्धारी ॥ नाथ भूप हम अरु सब नारी । प्रियजनके वध परम दुखारी ॥ सहि न सके दुख हिय कराहैं । हम सब तिनकहँ देखन चाहैं ॥ यह सुनि व्यास मुनीश सुज्ञानी । कुन्ती सों बोले प्रियबानी ॥ कुन्ती तोहि परम प्रिय जोहि । सो अब मातु कहहु पुछि मोहि ॥ सो सुनि कुन्ती आनन्द भरिके । [illegible] करन जोरि करिके ॥ इमि कहि कहत भई अति सोचित । मैं गुरु [illegible] सोचित ॥ सो नहि लहे । जननि सुख मोसों । यह दुख हिय किते दिन पोसों ॥ इरमन [illegible] सुनि नायक ॥ सुन सरवज्ञ सर्व विधि दायक ॥ * ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

तब मुनि इन्हातिसों कहे शुभ सुत बधुन समेत । आज सरितातट गए लिखे चाहि सो ज्ञान निकेत ॥
सो सुनि नृप पांडव सहित अरु सब कुरकुल नारि । सुरसरिके तट आइके [illegible] निवास बिचारि ॥
परिख सरित सो दिन बिते करि संध्यादिक काज । [illegible] तिन [illegible] ॥

॥ * ॥ [illegible] ॥ * ॥

तब मुनि व्यास वारि मधि धसिके । [illegible] ॥ [illegible] धसो । भो जल मध्य शब्द अति भारी ॥ भूपतिन तहँ कुरुजरिसो निकरे । वाहन शयन सहित नृप निगरे ॥ जाको जैसो रूप सो हायन । वाहन वेष रहो [illegible] प्रगट भए [illegible] । वाहन तथा छत्र ध्वज समाजा ॥ द्रुपद विराट [illegible]

शकुनि जयद्रथ सलो शिखण्डी । सोमदत्त बाल्हीक अदण्डी ॥ भूरिश्रवा शल्य वृषसेना । धृष्ट द्युम्न केकय जगजेता ॥ द्रौपदेय अभिमन्यु सुबीरा । लक्ष्मण इरावाण रणधीरा ॥ चेकितान हैडम्ब अमाना । भट भगदत्त अलम्बुष जाना ॥ इन्हें आदि नृप सुभट घनेरे । गणे रहे जे बीर बडेरे ॥ बिनु बिरोध ते सिगरे आए । देखि परस्पर अति सुख पाए ॥ व्यास प्रसाद दिव्यचख लहि के । दम्पति वृद्ध मोद अति गहि के ॥ सादर पुत्र पउत्रन देखे । बन्धुन देखि सुदिन अब रेखे ॥ पांडव अति आनदसों फेंटे । उठि उठि पुत्रन सुहितन भेंटे ॥ निज निज सुत पति पितहि निहारी । उठि उठि मिलत भई सब नारी ॥ * ॥ दोहा ॥ *

नृप सो निशि सब कहं भई अति आनदकी खानि। युवति पतिनसों मिलि रहि महा सनारथमानि॥ एहि प्रकार मिलि परस्पर महा मोदसों पूरि । नर नारी सबहि एको शोक करत भे दूरि ॥ एहि प्रकार मिलि रहि तहां नृपसो निशा बिताय। सब सबहीसों ह्वै बिदा गए मोद दरशाय ॥ जे आए जेहि लोकसों ते नु गए तेहि लोक । तब सब तरुनिनसो कहे मुनि जलरुह तपश्रोक ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

जो चाहै पतिसङ्ग सो जलमधि धसि त्यागि तन। लहि पतिलोक अभङ्ग बिहरै पतिसङ्ग मोदभरि ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

यह सुनिके पतिबरता नारी । लहि नृपकी आज्ञा हितचारी ॥ जलमधि धधि धधि के तन तजि के। जात भई पतिढिग छबि सजि के ॥ दिव्य बिमानन चढि चढि भामिनि । निज निज पतिढिग गई सु कामिनि ॥ जनमेजय भूपति यह सुनिके । व्यास शिष्यसों बूझे गुणि के ॥ सबको देह रहो इत प्रांहि जो, सब वह देह लहे कित कहिजो॥ जनमेजयके बचन अतोले । सुनि इमि बैसम्पायन बोले॥ होत न नाश कर्म्मको जालों । नृप नहि देह नशति है तालो ॥ जौ लगि दूसर जनम न होई । तौ लगि बिलसति आकृति सोई ॥ तब जनमेजय मुनिसों भाखे । हम निज पितु दरशन अभिलाखे ॥ व्यास कृपा करि पितहि लखावे। तब हम निहचे गुणि मुद पावे ॥ तब मुनि व्यास भूपके चाहन । किए परीक्षितको आवाहन ॥ निज बय रूप भूप तहँ आए । जनमेजय लखि आनद पाए॥ बन्दि पिताके चरण सोहाए । नृप अवभृथ असनान कराए ॥ करि अवभृथ असनान सुखारे । नृपति परीक्षित स्वर्ग पधारे ॥ इतिहास सरुचि जे सुनि है। ते लहिहै जो लहिबो गुणि है॥ बैसम्पायनकी यह बानी । सुनि बोले जनमेजय ज्ञानी ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ *

पुत्र पउत्रन सखन लखि नृप धृतराष्ट्र अहीन। किए कहा सो अब कहो व्यासशिष्य परबीन ॥ बैसम्पायन मुनि कहे तब नृप आश्रम आय । पुरजन अरु सैनिकनवहँ बिदा किए समुझाय ॥ पाण्डव निज इष्टिन सहित अरु सह सेनाशेष । बैठि लखे ढिग नृपतिके मानो सुमन बिशेष॥

आ०अ० वा०प०

आ॰अ॰
ना॰प॰

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

तब मुनि व्यासदेव सुखदानि। कहे वृद्धनृपसों अनुमानि॥ नृप तुम सबविधि सरस सुजान। नारदादिसों सुने सुज्ञान॥ अवमति गहो शोकको लेस। तप व्रत करि बितवो दिनशेस॥ आयो पाण्डव नृपति अनूप। एक मास बीतो सुनु भूप॥ बिदा करो अब सविधि बुझाय। करै प्रजा पालनहित जाय॥ यह सुनि कै धृतराष्ट्र महीप। कहत भए सुनु कुरुकुल दीप॥ इत तो आगमके परसाद। हम पाया सबबिधि अहलाद॥ अब हास्तिनापुर जाऊ सप्रिती। करो प्रजा पालन गहि नीति॥ यह सुनि बोले धर्मनरेश। भूप मोहि राखो एहि देश॥ भीम आदि मम बन्धु बिशाल। करि है जाय प्रजा प्रति पाल॥ तब गान्धारी कही सचैन। पुत्र कहो मति ऐसे बैन॥ तुम कुरुकुलके नाथ महान। करो प्रजापालन सबिधान॥ मानि भूपको बचन सनेह। बन्धुन सहित जाऊ निजगेह॥ यह सुनि धर्मभूप दुख धारि। निज जननीसों कहे बिचारि॥ मातु बिसर्जत भूपति मोहि। हम नहि त्यागि सकत बन ओहि॥ बन्धु सखा सम्बन्धिन हीन। मो कहँ लगत राज्य परहीन॥ यह सुनिकै बोले सहदेव। गेह जाऊ तुम भूप सुभेव॥ हम इत रहब जननिके सङ्ग। सेवबचरण पालि व्रतअङ्ग॥ यह सुनि कै कुन्ती दुख पाय। फिरि फिरि पुत्रन अङ्क लगाय॥ बोली पुत्रनेह दुख त्यागि। पालो प्रजा नीति मगलागि॥ तुम्हरे रहे भङ्ग तपहोत। ताते जाऊ पुत्र मति पोत॥ एहि बिधि कहि कहि बचन प्रसस्त। बिदा करत भे वृद्ध समस्त॥ तजत चखनते जलकीधार। बिदा भए सब बन्धु उदार॥ करि करि पर दक्षिण सबिधान। चरण बन्दि डगरे मतिमान॥ द्रुपदसुता आदिक सबबाम। रुदत चली अति दुखसों छाम॥ चलै लखै फिरि चलै सखेद। एहि बिधि चलि पूरित निरबेद॥ हय गज तुरगण चढि चढि सर्व। आए हास्तिन नगर अखर्व॥ हास्तिन नगर आइ नृपधर्म। लागे करण नृपनके कर्म॥ ताके दोय बरिसके बाद। नारद करत बिष्णुगुणनाद॥ आए धर्म नृपतिके पास। पूछो सबिधि भूप मतिरास॥ आसनस्थ करि मान निकेत। बूझत भे आगमको हेत॥ नाथ देऊ अनु शासन जौन। सानद शीघ्र करौं मै तौन॥ *❦*❦*❦*❦*❦*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

यह सुनिकै नारद कहे सुनो युधिष्ठिर दान्त। उत्तरदिसिहम जाइ कै लख्यो एक बिरतान्त॥
नृप आश्रमसों जब इहाँ तुम आए तब भूप। कुरुक्षेत्र तजि कै गए गङ्गाद्वार अनूप॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

ताहा भूप अनशनब्रत लीन्हे। बायु अहार क्षुधाहित कीन्हे॥ जल अहार व्रत करि गान्धारी। रहत भई तहँ पतिव्रतचारी॥ कुन्ती एकमासगत करि कै। खाय कछू फल व्रतबिधि धरि कै॥ छठएदिन फल मूल अहारा। सञ्जय करै पालि व्रतधारा॥ एकदिवस सुरसरि तट बनमै। बैठे हरि इ जपत हे मनमै॥ इतनेमै तेहि बनमे राजा। लगी दवानल अनरथ साजा॥

तब बनजीव विकलता पागे। जरे असंख्यन अगिणित भागे ॥ निराहार ब्रतसों बलहीने। चलि न सके तो पितर प्रवीने ॥सञ्जयसों हँसि कहे बुझाई। अब हिय दृढ करि नेह बिहाई ॥तुम कढि जाऊ न संशय आनो ।एह यहिसमै कहो मम मानो ।यहि प्रकार सञ्जयसों कहि कै। तेचय रहे योगबिधि गहिकै ॥ सो सुनि चलि सञ्जय मेधावी। गुणि रहि घरिक बूझि कै भावी ॥ सत्वर तिन्है प्रदक्षिण करिकै। गङ्गातीर आत भे टरिकै ॥ कुन्ती भूपति अरु गान्धारी। योगी सबै योग विधि धारी ॥ जरे काठसम निश्चल रहिकै। भए न नेकु बिकल दुख लहिकै ॥ संजय यह मुनि जनसों भाषी। गे हिमवान योग अभि लाषी ॥ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ ॥ आ०म० वा०प०

सुनि मुनिजनसों यह दशा हम आए तुवपास। उचित होइ अब जो क्रिया करो तीन मातरास॥
यह अनरथ सुनि धर्मनृप गहि अति दसह उताप। कुन्ती नृप गान्धारजहि शोचि किए परलाप॥
भीम अरजुनसे प्रवल जाके सुत रणधीर। ते जरि मरे अनाथ सम समुझि होत यह पीर॥
यहि विधि कहि कहि धर्मनृप महा शोकसों पूरि। भीमादिक बन्धुन सहित रोदन कीन्हे भूरि॥

॥ ॥ चोपाई ॥ ॥

द्रुपदसुतादिक तीय यह सुनि कै। रुदत भई अति अनरथ गुणि कै॥ पुरजन सखा सुभट दुख भोए। अति आरत धुनि करि करि रोए ॥ तब नारद भूपहि समुझाए। मौन कराय सु बचन सुनाए। भूपति सुनो शोक मति धारो। बिहित अविहित विधान बिचारो ॥ कुन्ती अरु भूपति गान्धारी। है अति ज्ञानी तत्व बिचारी ॥ किए उग्र तप अतिब्रत गहि कै। हे चाहत तन त्याग उमहि कै ॥जरे न प्रकृतानलमधि परिकै। हम यह सुने मुनिनसगँ चरिकै ॥ कीन्हे होम अनलसों बढि कै। बरधित भयो तरुन पैं चढिकै ॥ तामधि जरे भूप सुनि लीजे। अब उनको कुछु शोच न कीजे ॥ गई पाण्डुढिग जननि तुम्हारी। जेहिहित तपत रही ब्रत धारी॥ शोक त्यागि अब धीरज धरिये। बिधिवत उदक क्रिया सब करिये॥यह सुनि भूपति जानि यथोचित। बन्धुन सहित दुखित अति शोचित ॥ इस्त्रिन सहित सहित पुरवासिन। एक एक पट गहे उदासिन ॥ कढि पुरते सुरसरितट आए। बैठि क्षणक फिरि पैठि अन्हाए॥ तब जुजुत्सकहं आगे करिकै। उदकदान कीन्हे बिधि धरि कै ॥ गान्धारी कुन्ती निज मातहि। अरु धृतराष्ट्र नृपतिमणि तातहि ॥ उदकदान करि मन ठहराये। सुहित बिधिज्ञ सु ज्ञानि बलाये॥ तिनसों कहत भए समुझाई। गङ्गा द्वार जाऊ तुम भाई ॥जहा जरे नृप दावानलमे। तहँ ले अस्थि प्रबाहेऊ जलमे॥ सो सुनिकै ते आनद धारे। तुरित हि गङ्गाद्वार पधारे॥ बरहे दिवस युधिष्ठिर राजा। शुद्ध होत भे सहित समाजा॥ बिधिवत श्राद्धकर्म नृप कीन्हे। दान असंख्य द्विजन कहँ दीन्हे॥

॥ ॥ दोहा ॥ ॥

तिन हमूर्तिको भूमिपति पृथक पृथक ले नाम। पिण्डदान करि द्विजनकहँ दिए द्रव्य अभिराम॥

आ०अ० बा०प० श्राद्धकर्म करि भूमिपति कीन्हे नगर प्रवेश । मोह भरे बन्धुनसहित राजे यथा प्रवेश ॥
गङ्गाद्वार गए रहे जे ते तेहीथल जाय । अस्थि बीनि एकत्र करि गन्ध सुपुष्प चढाय ॥
करि प्रवाह सुरसरित मे पलटि भूपपहँ आय । उत कीन्हे उपचार सो भूपहि दए सुनाय ॥
तब नारदमुनि भूपति हि करि आश्वासित तत्र । हरिगुण टेरत है बिदा रमे जाय अन्यत्र ॥

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

दुरयोधन के बध उपरान्त । पन्द्रह बरिस नगर रहि दान्त ॥ तीनि बरिस करि बिपिनि बिहार । मरे भूप धृतराष्ट्र उदार ॥ तदनु युधिष्ठिर भूप प्रबीन । उदासीन रहि आनद छीन ॥ धरत भयो महि भार सरीति । पाल्यो प्रजा पालि नृपनीति ॥ *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

रामचन्द्रकहँ जपत निति लखत रहत धरि ध्यान। कृष्णप्रभु हि परतच्छ लखि पावत मोद महान॥
रामकृष्णकी लहि कृपा को नहि पावत मोद । रामकृपाते शक्र सुर दिवमधि करत बिनोद ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशीबासिगोकुलनाथकबीश्वरात्मजेन गोपीनाथकविना बिरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे आश्रमबासिकपर्वसमाप्तिर्नाम द्वितीयोऽध्यायः ॥ * ॥ इति श्रीआश्रमबासिकपर्वसम्पूर्णं ॥ *

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ महाभारतदर्पण ॥

नारायणं नमस्कृत्य नरञ्चैव नरोत्तमम् । देवीं सरस्वतीञ्चैव ततोजयमुदीरयेत् ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

नमस्कार नारायणहि करि नरोत्तमहि नीकि । बन्दि गिरा व्यासहि रचत भारत भाषा ठीकि ॥
भूखत भूभृत भूभरण भूस्वामी भगवान । तेहि भरतहि भजि भनत यह भाषा भारत महान ॥
जेहि रघुबर प्रभुकी चरित बक्र सतकोटि अनन्द । ताहि सुमिरि भारत रचत भाषा बिरचि सुछन्द ॥
पारथके सारथ भए सारथ परम अनूप । ते सारथ देहैं बिरचि भारत भाषारूप ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

बन्दौ कपिबर बीर राम परमप्रिय पारथहु । मङ्गल मूरति धीर भारत लक्ष्य ध्वजस्थ बर ॥ कुशल कुशलता सदन जन आवो अगत सुजान । ताहि ध्याय भाषा रचत मुसल पर्व अभिराम ॥ **

॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ अथकरीछन्द ॥ * ॥

भूप युधिष्ठिर राज्य महान । छत्तिस बरिस भोगि मतिमान ॥ अनरथ करता अशगुन भूरि । देखि रहत भे चिन्ता पूरि ॥ सुने कछू दिनमें अतिघोर । यदुबंसिनको नाश कठोर ॥ अति व्याकुल ह्वै हत चेत । सब सखत्व भए तजि देत ॥ * ॥ जनमेजयउवाच ॥ * ॥ केहि प्रकार बिनसो यदुबंश । सब नृप मंडलके अवतंश ॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ सुनो भूमिपति अनरथ मौन । हरि की इच्छा मेटै कौन ॥ बिश्वामित्र कण्व मुनिराज । अरु नारदमुनि मुनिसिरताज ॥ आए द्वारिका मैं तप गेह । भए बिराजित सहित सनेह ॥ तिनसों सारण आदि कुमार । कौतुक कारन भए एहि चार ॥ साम्बहि गुरविणि युवति बनाय । कहे लोकबस मुनिसों जाय ॥ याके होइहि कैसो श्राप । देउ बताय सु तपके आप ॥ यह सुनिकै मुनि करि अनुमान । कहे सुनो मम तपको ज्ञान ॥ यह जो कृष्ण पुत्र छबिधाम । गहे युवतिको बेष बिधाम ॥ होइहि याके मुसल महान । जो है को किरतांत समान ॥ करिहि यदुबंसिनको नाश । होइहि बीच कछू कछु मास ॥ तब बलभद्र करुणाहो पाछि । समुद मध्य अद्दै तन त्यागि ॥ कहि पद सोवत कृष्णहि देखि । धीवर जराजन्तु अवरेखि ॥ बेधिहि कृष्णहि ऐहै नैन । मुनिबर कहे अवश करि मैन ॥ इमि तिनसों कहि हरिपहँ जाय । मुनि दीन्हे बिरतान्त सुनाय ॥ प्रभु सों सुनि भविष्य अनुसार । सबकहँ दए सुनाय सचार ॥ दूजे दिवस साम्ब मजबूत । कीन्हे श्राप अनुमव प्रभूत ॥ सो सुनिकै यदुकुलको भूप । मुसल कराषो चूरण रूप ॥ चूरन करिकै दोष बराय । दीन्हे सागर मध्य डराय ॥ सब पुरमें डौडी बजवाय । भ्रातनिसों दीन्हे जलदान ॥ ********

मु०प० ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

आशु प्रभृत कोउ करौमति आसौ सुरा सप्रेम । करिहि तौन दै आयगो सूरी सुनो सनेम ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

तबसा होतभयो पुरमाहो । असगुण होत कुशल जेहि नाही ॥ श्याम युवति वर दन्त निकारे । इत उत फिरति फिरार बिचारे ॥ नहि घर बासी विहंग घनेरे । लगे गृहनमे लेन बसेरे ॥ सारस शिवा नगर मधि बोलै । पांडु कपोत गृहन बसि डोलै ॥ मूषक लरै नकुल सौं भिरिकै । फिरै कबन्ध सूर ढिग घिरिकै ॥ कृष्णपक्ष तेरहदिन केरो । भयो शुक्ल चौदहको हेरो ॥ चामर छत्र ध्वजा आभूषण । निशिमे हरै असुर शुभ दूषण ॥ यहि प्रकारके असगुण कूरे । लखि यदुवंशी बिसमय पूरे ॥ सो लखि प्रभु भविष्य विधि चीन्हे । तीर्थ करणको शासन दीन्हे ॥ सो सुनिकै यदुवंशी सिगरे । युवतिन सहित नगरसों निकरे ॥ बसे प्रभासतीर्थतट जाई । बेष बसनके बास बनाई ॥ तहा मोक्षरति ऊधो ज्ञानी । मिलि सब जनसों भाषि सुबानी ॥ ह्वै कै बिदा समुदमधि बसिकै । गुप्तभयो योगी सम लसिकै ॥ बिप्रण हित जो अन्न बरायो । बोलि बानरन तौन खवायो ॥ तब कृतबरमा सात्युकि आदिक । मद्यपान करि भए प्रमादिक ॥ मन ममताके रङ्गमे बोरे । बैठे राम कृष्णके धोरे ॥ * * * * ॥ दोहा ॥ * * * * * * *

तह कृतवर्मासों कहे सात्युकि बचन मलान । कुत्सित कर्मा भटनमे कृतवर्मा नहि आन ॥
जो भारतके अन्तमे द्विज भटके सङ्गलागि । निशिमे सूते भटन कहँ बध वायो मुद पागि ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

सुनि कृतबरमा अमरष गहि कै । बोले क्रोधानल सौं दहिकै ॥ बाजु बिहून निरायुध चाहे । भूरि श्रवहि बध्यो तुम काहे ॥ यह सुनिकै केशव भट तीक्षण देख्यो तानि अरुण करि ईक्षण ॥ सो लखि कै सात्विकि रिस अतिसों । असिगहि उठो भटन की जतिसो ॥ जहगे द्रुपद सुताके बारे । तहाभेजि हौ तोहिगबारे ॥ इमि कहि कूदि सिंहसम डाग्यो । करतल बाहि तासु शिरकाग्यो ॥ कृतबरमहिबधि गरबित बकि बकि । चलो तासु सब पक्षिन तकि तकि ॥ तब ताको बारण करिबेको । चले कृष्ण अन रथ चढिबेको ॥ इतनेमे भोजान्धकबंशी । घेरि लिए सात्युकिहि प्रसंशी ॥ सो लखि कृष्ण काल गति जाना । चुप ह्वै खरे रहे अनुमाना ॥ ते सब अनुचित बाणी कहि कहि । जूठेपात्र परे सो गहि गहि ॥ चाहि चाहि बध कीबो मनमे । हनन लगे सात्युकिके तनमे ॥ तिमि सात्युकिहि प्रद्युम्न निहारे । बरजनलगे क्रोधसों भारे ॥ मद्यपान कीन्हे मतवारे । लगे प्रद्युम्नहि मारन सारे ॥ कृष्ण प्रद्युम्नहि व्याकुल देखो । भरे क्रोध अनरथ अवरेखो ॥ जमो रहो सरकासो चीन्हे । मूठी एक ताहि गहि लीन्हे ॥ करमे आइ भयो सो मूसल । जाके लगे रहै को कूशल ॥ सो गहि केशव ओज बढाए । बधे तिन्है जे सनमुख आए ॥ सङ्का लीन्हे सब बलवाना । भो सबके कर मुशल समाना ॥ ताहि

प्रहारि सबै मति बिगरे।छनमैं मरे परसपर सिगरे।।आता पिता पुत्र नहि जाने। बधे काल बश भए मु०प०
अथाने॥ अरे पतङ्ग अगिनि परि जैसे। तिमि यदुबंशी मरे अनैसे॥ मूशल लागि क्रष्ण रहि ठाढो।
देखत रहे तोषगहि गाढो॥ बढ़ि बढ़ि मारि परस्पर मरि मरि। अगणित लसे भूमिपर परिपरि॥
तहँ प्रदुम्न साम्बहि अनुरुद्धहिं। गद अरु चारुदेष्ण भट उद्धहि॥ मरो परो लखि अति रिसि
धरिकै।केशव मुशल चक्रसम करिकै॥ हैं हत शेष तिन्हें बधि डारे।हरे जौन बिधि हैं बिसतारे॥
दारुक बभ्रु दोय तहँ बाँचे। ते कौतुकलखि बिसमय राचे॥ तिन्हें सहित प्रभु कौतुक सागर।
गे जहँ हैं प्रभु राम उजागर॥ तहा जाय प्रभु रामहि देखे। ध्यानावस्थ योगबिधि भेखे॥ तहँ केशव
दारुकहि हो भाषे। हम अरजुनहि लखन अभिलाषे॥तुम रथचढ़ि हास्तिनपुर जाई।शीघ्र अरजुनहि
ल्यावहु भाई॥ ॥ दोहा ॥ ॥

सो सुनि दारुकि हांकि रथ चले नागपुर यत्र। तब केशव प्रभु बभ्रुसों कहत भए इमि तत्र॥
बभ्रु द्वारिका जाय तुम रखो युवति समूह। नातरु धनके लाभ धसि बधिहैं तसकरजूह॥
सो सुनिकै तहँ चलतहो पाय मुशलको घात। मरे बभ्रु तब रामसों कहे क्रष्ण अवदात॥

॥ ॥ जयकरीछन्द ॥ ॥

तुम यहि ठौर रहो मनलाय। हम फिरि आवत निजपुर जाय॥इमि कहि निजपुर जाय उदार।
कहे पितासो कुल संहार॥फिरि इमि कहे बिपिनि हम जात।मोहिन नगर रुचत अब तात॥ जौलौं
आवै पार्थप्रशस्त। तौलौं रखहु युवति समस्त॥ नृप तेहि क्षण रोदन धुनि भूरि। जात भयो महि
नभलौं पूरि॥रुदन सुनत करि हियो कठोर।केशव गए रामकी ओर॥ रामहि तहां लखे सुनु भूप।
सहसशीरषा शेष सरूप॥ तक्षक बासुकि कद्रुहि आदि। आइ तहाँसब अहि अहलादि॥
सरितन सहित सरितपति आय। सादर गए लवाय सचाय॥ तासु गवन लखि प्रभु अनुमानि।
कुरु यदुकुलकी क्षयगति जानि॥ गुणिगान्धारीको जो शाप। दुरबासाको बचन प्रलाप॥ बनमधि
जाय योगबिधि धारि। महिपै कीन्हे शयन बिचारि॥ जरानाम ब्याधा तहँ आय। मृग गुणि
तज्यो बाण धनु लाय॥ पगतलमध्य लगो सो बान। तब गो निकट जरा दुखदान॥ प्रभुहि देखि
गुणि निज अपराध। पग गहि करत भयो अवराध॥ तेहि आश्वासित करि प्रभु बैठि। बिलसे
योग युगुतिमधि पैठि॥ सुर सुरपति सब ऋषि तहँ जाय। नभ रहि अस्तुति किए सचाय॥

॥ ॥ दोहा ॥ ॥

उत दारुकि पांडवनसों कहे दशा सब जाय। सो सुनिकै अति बिकल भे धर्म्म आदि सब भाय॥
सब बन्धुन सो ह्वै बिदा शोचित पार्थ सुजान। जाय द्वारिका लखत भे हतश्री शून्य महान॥
लखि पार्थहिं ब्याकुलि महारानी रुकुमिनि आदि।घरि बैठि लागी रुदन अति आरत धुनिनादि॥
बारि धार चखसों तजत करि तिनको आश्वास। पारथ शोचित जात भे क्रष्ण जनकके पास॥

मु०प०

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

देखि पारथहि रोदन करि कै। इमि बसुदेव कहे दुख भरिकै ॥ शाप दई गान्धारी जोई। पारथ प्रगट भयो अब सोई ॥ मुनिजन शाप दयो जो पाछे। सोऊ अनरथ भयो अनाछे ॥ जब बिनाश यदुबंशी पाए। तब केशव दूत मम ठिग आए॥ कालकला कहि मोहि बुझाए। अरु एहि बिधिके बचन सुनाए॥ दारुकि गो अरजुन ढिग बलावन। सुनतहि आइहि सो मनभावन॥ जो हमसौं अरजुन सुनि लीजै। जो अरजुनसौं हम गुणि लीजै ॥ सुतन सहित युवतिनको रक्षण। अरजुन करिहि पालि सब पक्षण॥ करतब बस तो उरधदेहिक।करिहि पार्थ मम परम सनेहिक॥ पारथ जेहिदिन एहिपुर आइहि। तबसो बीति सात दिन आइहि ॥ तब बढि उदधि नगर यह बोरिहि। पुरको छोर बारि निज जोरिहि ॥ इमि कहिके गो कृष्ण प्रशंसी। मरे जहां सिगरे यद बंशी॥ पारथ मोहि लगत जग फीको। मोकह देहतजे अब नीको ॥ यह सुनि महाशोक गहि पारथ। कृष्णजनकसो कहे यथारथ॥ द्रुपदसुता अरु हम सब भाई। एहि जगमै बिनु कृष्णसहाई॥ नहि रहि सकब काल दिन आयो। कृष्णगमनसौं आगम पायो ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ ❧*❧*

बाल बृद्ध नारी जिती है व्याकुल हतचेत। इन्द्रप्रस्थले जाब हम तिनकहँ रक्षणहेत॥
इमि कहि कै दारुक सहित सभासदनमै जाय। राजकाज करता रहे तिनसो कहे बुझाय॥
गए सातदिन नगर यह बोरिहि बारिधि बारि। रथअश्व सब जनसह सादर कढो बिचारि॥

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

बचन सुनि सब करण लागे कढनको व्यापार। बसे अरजुन तहाँ तेहिनिशि गहे शोक अपार॥ राम कृष्णाह सुमिरि सबनिशि भोर लहि बसुदेव। देह तजिके गयो उरधलोक सुबुधि शुभेव॥ नगरमै अतिघोर तेहिक्षण भयो हाहाकार। पार्थ ताको किए निजकर उचित करतब चार॥ गई ताके सङ्ग जरि कै सुबुधि पतिनी चारि। देवकी अरु रोहिणी अरु शुभग मदिरा नारि॥ अरु सुपतिनी प्रिया भद्रा जरी सङ्ग सप्रेम। किए शेष कुमार कुलके उदकदान सनेम॥ देश काल बिचारि कै करि क्रिया तेहिथर पार्थ। गए यदुबंशी सकल जहँ मरे हे बिनुस्वार्थ॥ देखि सबको गात निपतित महा दुखसो पूरि। राम केशवके सुतन लखि मोहि धरिक बिसूरि॥ प्रेत कर्म बिधान करि कै भरे अतिशै शोक। भए आवत सातएदिन कृष्णप्रभुके ओक॥ रुदत ताडत शीश उर सब तियनको समुदाय। झपटि पुरते किए बाहर सहित सौज सहाय॥ अश्व गज रथ बसन मणि धन सकल दासी दास। बरण चारो दुखित पुरजन कढे पूरित त्रास॥ बज्रनाम पउत्र हरिको सहित शिशु सुकुमार। चलो रोदत युवति कोटिन गहे शोक अपार॥ बज्र सहश कठोर अतिशै हरे कीन्हे तब। लिए सबकहँ चलो पारथ धर्म भूपति जब॥ उदधिको जल उमगि तेहिदिन नगर दीन्हो बोरि। कियो माया बिसतरित सो बिष्णु लीन्हे मारि॥ जिए सबकहँ

पार्थ माँघत शैल विपिनि अनेक। पञ्चनद मैं भए निवसत राखिजनसविवेक॥ देखि तिन्हहि अभीर सुरिके किए मंत्र विशाल। एकधनुधर पार्थ सिगरे वृद्ध युवती बाल॥ घेरि सबदिशि युवतियन धन लेऊ इनसों छोरि। मंत्र यह करि परिघ गहि गहि चले पारे जोरि॥ देखि पारथ कहे हँसि फिरि जाऊ रे सब मूढ। चहो जीवन आपनों तौ तजो ममता गूढ॥ बचन सो सुनि रुके नहि ते भिरे बल कत आय। पार्थ तब गांडीव धनुष हि नीठि नीठि चढाय॥ दिव्यअस्त्रण गुणत भे असरणभे नहि एक। चोडि विधिगत बूझि लागे बाण तजन सटेक॥ होइ सूक्षम घाव ताके लगे जाके बान पार्थ तब भो लेत जबि उसाँस करि अनुमान॥ परिघ सम तब वाहि धनु पार्थके बल करि सर्व। गए अगिनित युवति हरि लै म्लेछ कुमती खर्व॥ वृष्णअन्धक भूप कुलको युवतिको समुदाय। लखत अर्जुनके गए लै खल अभीर सपाय॥ अस्त्र शस्त्र प्रभाव निजको जानि लय तेहि काल। बूझि भावी सुमिरि कृष्णहि रहे घरिक अचाल॥ धीरधरि हत शेष तियधन सहित पारथ आय। बसत भे कुरुक्षेत्रमधि अति दुसह दुखसों छाय॥ तहांसों हार्दिक्यको सुत भोज कुलकी नारि। तिन्हे राखे मार्तिकावत नगर मध्य विचारि॥ इन्द्रप्रस्थ सु ग्राममें फिरि आय पूरि कलेश। सात्युकीके सुतहि दीन्हे सरस्वतीतट देश। कृष्ण प्रभुको पौत्र हो जो बज्र तेहि सनमानि॥ भए रावत इन्द्रप्रस्थ सु ग्राम मधि अनुमानि॥ राज्य लहि जब भए राजत बज्र तब है भूप। पार्थ शोभित किए बिधिवंत राजमोति अनूप॥ अक्रूरको तिय सकल कीन्ही ग्रहण नव सन्यास। बज्रको नहि कहो मान्यो सहित दासी दास॥ रुक्मिणी गान्धारजा अरु हैमवति मतिमान। दह्यो तन जांब व्रति सुध्या अग्नि मैं धरि ध्यान॥ सत्यभाम हि आदि सिगरो कृष्णको तिय जौन। ग्रहण करि सन्यास ते सब कियो काननगौन॥ द्वारिकाको जिते पुरजन रहे तिनकहँ पार्थ। सविधि सौपे बज्र कहँ कहि यथा योग यथार्थ॥ *◇*◇*॥ *॥ दोहा॥ *॥*◇*◇*◇*◇*

शांति यथाविधि बज्र कहँ है के विदा सठौर। हास्तिन पुर प्रति चलत भे करत कालगति गौर॥ कछू दूर चलि विपिनिमधि व्यास हि बैठो देखि। निकट गए रथते उतरि निज हित मित अवरेखि॥ करि प्रणाम अति प्रेमसों बैठे आदर पाय। लखि शोकाकुल पार्थ कह कहे व्यास मुनि राय॥

॥ ◇*◇ ॥ अथकरीछन्द ॥ ◇*◇ ॥

श्रीव्यासउवाच ॥*॥ पारथ तुम अति खिन्न लखात। हत श्री सूखो बदन बिभात॥ रणमधि तौ नहि पाए हारि। भोगे तौ नहि रजयुत नारि॥ घटहमुने तर्पँ जलदान। करि तौ नहि कीन्हे असनान। बलदर्पी नख कपअल तात॥ परसे तौ नहि कछु तौ गात। कीन्हे तौ नहि द्विजको घात॥ आते हतश्री दीन लखात॥ लख्यो न कबहु तुम्हे अस दीन। शीघ्र कहो निज दशा नवीन॥ अर्जुनउवाच॥ *॥ कहा कहो कछु कहो न जात। महा अनर्थ भयो है तात॥ पङ्कज

भुप॰ लोचन प्रभु घनश्याम। महापुरुष श्रीमहिमाधाम॥ श्रीहलधर सह प्रभुता थोक। गए देह तजि अरध लोक। गान्धारीके श्राप प्रमाण। अरु लहि ऋषिको श्राप महान॥ पाय मुसलको घात कठोर॥ बिनसे यदुकुलपुरुष अघोर॥ महाशूर अतिबल रणधीर। जासु पराक्रम विदित गँभीर॥ भक्षि गदादिक आयुध जात। जाहि परस हैं जाको गात॥ ते भटवर सरकाके पात॥ मरे कालगति काहि न जात। पीवत आसव मत्त भये नृप बाढ़ि। मरे परसपर लरि उन बाढ़ि॥ घोर असम्भव मुयश प्रमाण। हारे जे तारागन सुन पाप॥ रविको पतन सिन्धुको शोष। पर्वतको चालनसम पोष॥ देखि कृष्णप्रभुको तनत्याग। भाहि दहिजात महान अभाग॥ कहि अति कष्ट कुलिशको पात। मम हिय होत बिदारत तात॥ लालन पृथ्वर्षणकी नारी। छरिलैं गए अभीर प्रचारी॥ नहि गांडीव धनुष उठ्यारि। प्रभु बिन भयो न किनकाई बारि॥ अब शस्त्र मम जे असङ्ख। सो सब तहां भए ही भङ्ग॥ परमात्मा केशव जगदीश। मम सहाय हत विश्वेशीश॥ निज रथस्थलहि आहि सहाय। हम दासा आदिक समुदाय॥ जाहि बिना मम ऐसो हाल। प्राण भयो दुख दुसह कराल॥ नाहि बिना जाको विष दाह। अब न मोहि जीवनकी चाह॥ अब जो करब मोहि शुभ भेष। सो शुभ तात करो उपदेश॥ यह सुनिकै बोले मुनि व्यास। यह भविष्य है सुनु मतिरास॥ सुनो कृष्ण प्रभु प्रभुता थोक। सकै अन्यथा करि त्रैलोक॥ विप्र श्रापको कितनो दाप। टारिसकै को विष्णु प्रताप॥ भूमि भार मेटनके हेत। दूत आए हु कृपानिकेत॥ तुमसों करि अति नेह पवार। हरि हराय अवनीको भार॥ निज अस्थान गए मुदधार। सो पात जो तुम तव बिचारि॥ **** ॥ दोहा ॥ *****॥

कृष्ण सङ्ग बन्धुन सहित तुम कीन्हे सुरकार्य। तुव सबन्धुको नाम जो जगत सुनै है आर्य्य॥
पञ्चतत्व जगबीजको मूल काल है तात। यातें करत बिनाश अरु दुरबल बली बिलात॥
निज करतब करि अचलुव गए सुभी भगवान। तिमि भए पालनाय तुम बारि करि युद्ध महान॥
अब तुमहूं बन्धुन सहित करो महाप्रस्थान। यह उपाय तुमको महा है श्रेयद कल्यान॥

॥ *** ॥ सोरठा ॥ *** ॥

व्यासदेवके बैन सुनि भे बिदा प्रणाम करि। मोचित सबै अधीर हास्तिनपुर अति चलत भे॥
कृष्णचन्द्रको ध्यान करत आप हास्तिन नगर। जहां पार्थ नृपतिमणि धर्मसुवन युधिष्ठिर हैं जहां॥
आय नृपतिके पास कहत भए बिरतान्त सब। सुनि नृपान आनन्द भाए रहे अम्बहि प्रभुहि॥

इतिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणसिंहाज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजन काशीवासि श्रीकुलनायकवीश्वरात्मजेन गोपीनाथेन कविना विरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे मूसलपर्व समाप्ति मगमत्॥ **** ॥ **** ॥ दोहा ॥ * ॥ **** ॥ ****

सीतावर श्रीराम प्रभु भक्तापन्न अवधेश। जासु कृपा अरिबै अब कीरति सुजस सुवेश॥

॥ महाभारतदर्पणः ॥

॥ महाप्रस्थानपर्व्व ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

नमस्कार नारायणहि करि नरोत्तमहि नौमि । बन्दि गिरा व्यासहि रचत भारत भाषा सैामि ॥
जेहि रघुबर प्रभुके चरित बक्र शतकोटि अमन्द। ताहि सुमिरि भारत रचत भाषा विरचि सुछन्द॥
पारथके सारथ्य भए सारथि परम अनूप । ते सारथ देहैं बिचरि भारत भाषारूप ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

बन्दैा कपिबर बीर राम परम प्रिय पारषद । मङ्गल मूरति धीर भारत स्वस्थ ध्वजस्थ बर ॥
सुमिरि उछलनि अच्छ उदधि उलङ्घनसमयकी । भारतसमुद प्रतच्छ भाषा करि चाहत तरौं ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

जाहि ध्याय मानव सकल लहत शुद्ध अस्थान । ताहि सुमिरि भाषा रचत पर्व महाप्रस्थान ॥

॥ * ॥ जनमेजयउवाच ॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

मौसलको बिरतान्त सुनि सबन्धु कौरव अधिप। किए कौन सिद्धान्त व्यास सिष्य मुनि कहहु सो ॥

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

बैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ यदुकुलको मौसल उतपात । महा कठोर कुलिषको पात ॥ सुनि सबन्धु कुरुपति छितिपाल । शोचि कालगति अमिट बिशाल ॥ करिबेको सु महाप्रस्थान । करतभए सिद्धान्त महान ॥ दै युयुत्सुकहँ भार बिबेक । किए परीछितकहँ अभिषेक ॥ कहे सुभद्रासौं समुझाय । पौत्रहि पालेउ नीति बढाय ॥ इन्द्रप्रस्थको राज्य पुनीति । बज्र हि हम दीन्हे गुणि नीति ॥ इन युगजनमै बाढै प्रेम । शोचत रहियो तथा सनेम ॥ तब कुरुपति नृप सहित बिधान । कृष्णादिकन दए जलदान ॥ राम कृष्ण सात्यकि बसुदेव । तिन्हे आदि जितने शुभदेव ॥ पिण्डदान सबकहँ करि भूप । दीन्हे मणि महि बस्त्र अनूप ॥ भोजन भूषण हय गज नारि । द्विज बृन्दनकहँ दिए बिचारि ॥ कृपाचार्य्य गुरुबरहि सराहि । नृप परीछितहि सौंपे ताहि यह बालक तुवशिष्य सुजान । पालेउ पोसेउ सहित बिधान ॥ नृप परीछित हि प्रजा समस्त । सौपे कहि कहि नीतिप्रसस्त ॥ तब सबकहँ कारण समुझाय । दीन्हे निजप्रस्थान सुनाय ॥ सो सुनि प्रजा लहे दुख भूरि । सुख उतसाह जात भो दूरि ॥ नृपसौं कहत भए सब लोग । भूपति

म०प्र० स्था०प० उचित न ऐसो योग ॥ सो सुनि नहिं माने नृपधर्म्म। ज्ञाता काल विपर्य्यय कर्म्म ॥ बहु प्रकार सबकहं समुझाय। चाहत भे प्रस्थान सचाय ॥ चारु बसन भूषण करि त्याग। बल्कल धारण किए सभाग ॥ तथा द्रौपदी तजि शुचि चोर। धारी बल्कल बसन गभीर ॥ बन्धुन सहित धारि यह भेष। कीन्हे त्याग यज्ञ सविशेष ॥ निजतन ऊपर अगिनि उतारि। जलमधि डारे विधि बिसतारि ॥ यहविधि करि कीन्हे प्रस्थान। रुदन किए नरनारि महान ॥ बन्धुन सहित हरष बिसतारि। चले पांच सँग छटई नारि। कूकुर एक चलो सँग लागि। एहिविधि सात चले अनुरागि ॥ घरजन पुरजन आनद भङ्ग। गए दूरिलौं भूपति सङ्ग ॥ चाहत पलटि चले कुलदीप। पै न सको कहि फिरो महीप ॥ थिरि भूपति पुरबासिन फेरि। फेरत भे सब नारिन हेरि ॥ भूप परीक्षित कृप आचार्य्य। अरु युयुत्सु कहँ फेरे आर्य्य ॥ सबहि फेरि नृप ज्ञान निकेत। चले बन्धु तिय श्वान समेत ॥ गए पूर्वदिशि भूप अमन्द। फिरत भए सब पूरित दन्द ॥ भो बिषाद तेहि क्षणमें जौन। भूपति कहो जतन नहि तौन ॥ ** ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ *****

तदनु धसी सुरसरितमधि युवति उलूपी धाय। नागसुता तिय पार्थकी इरावानकी माय ॥ बभ्रुवाहनाकी जननि चित्राङ्गदा सु नारि। गई नगर मणिपूरप्रति निजसुत अधिप बिचारि ॥ और रहीं जितनी तिया ते परीक्षितहि घेरि। आईं निजपुर धामप्रति रोदत दुख हिय पेरि ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

चलि पूरब पांडव सब भाई। क्रमसों लखे समुदतट जाई ॥ लोहितिधर उदयाचल धारे। गए सात ते नहि मनमोरे ॥ लीन्हे रहे पार्थ मनभावन। धनु गांडीव तुनीर सोहावन ॥ मुख्य धनु रतन ताहि हे लीन्हे। अति सनेह गहि त्याग न कीन्हे ॥ गिरि अकार पावकतँह देखे। पुरुष रूप अति सुखसों भेखे ॥ तहां अगिनि पांडवसों बोले। हम हैं अगिनि प्रभाव अतोले ॥ कृष्ण पार्थ गुणके पर भावन। हम जारो खांडववन चावन ॥ धनु गांडीव लए जो पारथ। नहि अब तासु ग्रहण ते स्वारथ ॥ एहि तजि बिपिनि जाऊ जहँ चाहो। महि दिशि सरित शैल अब गाहो ॥ पूर्व वरुणसों लैके एही। हम दीन्हे अरजुनहि सनेही ॥ सो धनु अब तुम वरुण हि देहू। जो पथ गहे तासु व्रत लेहू ॥ सुनि सब पांडव कहे जथारथ। धनुष बारिमधि डारे पारथ ॥ भे अदृश्य पावक गुण अगरे। ते नैरित्य कोन गहि डगरे ॥ गहे कूल सागरको तैसे। फिरे प्रतीची दिशि तेहि जैसे ॥ क्रमसों जाय द्वारिका देखे। सागरमधि गोपित अवरेखे ॥ करि प्रणाम जलसों भरि ईक्षण। चले उदीची करत निरीक्षण ॥ ** ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ *****

गहे कूल तेहि समुद्रको गहे प्रदक्षिण भाव। चलि क्रमते हिमबाम गिरि नाघे पूरित चाव ॥
तिनसों पाए मेरुको दरशन अनघ बनाव। अगरि बालुकाको महो देखे तुहिन प्रभाव ॥

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥ स०प० अ्या०८०

शाबिवेका नाहिं तामधि चले योगी भेव । धर्मनृप तब भीम अरजुन नकुल अनु सहदेव ॥ तासु पीछे द्रोपदी तब श्वान एहिविधि जात । द्रोपदी कछु दूरि चलिकै गिरी तँह हे तात ॥ देखि निपतित द्रोपदीकँह भीमसेन निहारि । कहत भे इमि धर्मनृपसों शोच अतिशै धारि ॥ महाराज बिलोकिशै इत गिरी द्रुपदकुमारि । किए कछु न अधर्म काहे गिरी साहस हारि ॥ * ॥ युधिष्ठिर उवाच ॥ * ॥ पार्थसों यह रही राखत अधिक हियमें नेह । गिरी इत तेहि पापसों तेहि पापको फल एह ॥ भीमसों इमि भाषि भूपति चले योग सुधारि । गिरे तब सहदेव तेहाँ दुसहहिमिसों हारि भीम भाषे गिरो अब प्रिय बन्धु तुव सहदेव । कौन पातक कियो इन सो भूप कहिशै भेव ॥ आपु सम मतिमान औरोहि गुणत हो नहि एक । गिरो अब तेहि पाप इमि कहि चलो नृप तजि नेक ॥ नकुल तब कछु दूर चलिकै गिरे सुनु छितिपाल । भीम भाषे भूपसों तब गहे शोक बिशाल ॥ हाय निरतो नकुल भूपति कहो याको पाप । कह्यौ भूपति रह्यौ यहि निज रूपको अतिदाप ॥ तदनु अरजुन गिरे बोले भीम तब बिलखाय । भूप अरजुन गिरो अब इत कौन कारण पाय ॥ भूप तब इमि कह्यौ अरजुन कहत हो बहु बार । एकदिनमें करौं मैं सब शत्रुको संहार ॥ तैान नहि करि शको हो एहि वीरताको गर्ब । तैान पातक गिरो अति अभिमानपाप अखर्ब ॥ भीम आयो धीर धरि इमि भाखि अनरो भूप । तदनु कछु चलि भयो निपतत भीम बीर अनूप ॥ टेरि भाष्यो सुनहु हमहू गिरे हे मतिभौन । हेरि ममदिशि कहो याको कठिन कारण जौ न ॥ कह्यौ भूपति तुम्है बलको रह्यो अति अभिमान । गिरे तुम तेहि पापसों लहि कालगति बलवान ॥ भाखि ऐसे चलो नृप नहि लखो तेहि करि चाह । श्वान सोई गयो नृपके सङ्ग हे नरनाह ॥ सुरथ चढि तब शक्र आए भूमिपतिके पास । कहे रथ चढि चलो समपुर भूप महिमारास ॥ ॥ * ॥ युधिष्ठिर उवाच ॥ * ॥ बन्धु मम अरु द्रुपददुहिता गिरी एहि महिमाह । तिन्है बिनु दिव जाइबेको नही मोको चाह ॥ * ॥ इन्द्र उवाच ॥ * ॥ मानषी तन त्यागि ते सब लसत दिव मधि जाय । चलो तुम यहि देहसों उत लखौ तिन्हहि सचाय ॥ * ॥ युधिष्ठिर उवाच ॥ * ॥ श्वान यह मम सङ्ग आयो ताहि इत हो त्यागि । गए दिव मोहि लगति लघुता क्रूरता अघ पागि ॥ ॥ * ॥ इन्द्रउवाच ॥ * ॥ लहे तुम अमरत्व दिव सुख परम श्री अधिकाय । तजे श्वान हि तुम्हहि लघुता लगति नहि यह न्याय ॥ * ॥ युधिष्ठिर उवाच ॥ * ॥ निन्द्य है यह कर्म आर्य्य हि नही करिबे योग । भक्त जनको त्याग करिबो चाहि श्री सुख भोग ॥ * ॥ इन्द्रउवाच ॥ * ॥ श्वान अतिशै अशुचि नहि संसर्गके अधिकार । त्याग कीन्हे अशुचिको नहि लगत लघुता चार ॥ ब्रह्महत्या सरिस पातक भक्त जनको त्याग । तजब नहि हम श्वानकँह करि स्वर्गको अनुराग ॥ आर्त अरु शरनारथी निज आसरित जो ताहि । तजत हम नहि कष्ट प्राणौ नित्य ब्रत अवगाहि ॥ ॥ * ॥ इन्द्रउवाच ॥ * ॥ श्वानको संसर्ग करता पुरष जो है तासु । दान ब्रतको हरत फल सुर

म०प्र० स्था०प० क्रोधवशमनन आसु ॥ भूप ताते स्वानको करि त्यागि चलऊ सचेत । बन्धु तियको त्याग करि कत स्वानहित हठ लेत ॥ * ॥ युधिष्ठिर उवाच ॥ * ॥ * * ॥ * ॥ दोहा ॥ * *

करिबो संग्रह त्याग अरु बैर मित्रता जौन । जीवतते अनुचित उचित मरे दोष गुण कौन ॥

मरे तज्यो हम बन्धु तिय तजब न जीयत स्वान । मित्रद्रोह द्विजधन हरब भक्तहि तजब समान ॥

॥ * ॥ वैशम्पायन उवाच ॥ * ॥

स्वानको तन त्यागि कै तब धर्म गहि निजरूप । कहत भो तहँ धर्मनृपसौं सुनो कौरव भूप ॥

नृप युधिष्ठिर धन्य तुम तुवधर्म परम अमन्द । नीति पालक भए तुम निज पिता सरिस सुछन्द ॥

किये परीक्षा पूर्व तुव द्वैतबिपिनमधि तत्र । प्रश्नोत्तर दीन्हे बिना मरे बन्धु तुव यत्र ॥

मम प्रश्नोत्तर आइ जब तुम दीन्हे तेहि ठौर ॥ यक्षरूप तब हम कहे सुनो भूप शिरमौर ॥

मरे तिहारे बन्धु ए चारि तिन्हमे एक । जाकह कहिहौ ताहि हम देहि जिआइ सटेक ॥

॥ * ॥ बसुकलाछन्द ॥ * ॥

तहँ अति अनूप । जो बचन भूप ॥ तुम कहे टेरि । सो सुनौ फेरि ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

निज जननीके जियत हम जेठ सुवन तेहि भाय । माद्रीको सुत नकुल गुरुताकहँ देऊ जियाय ॥

फिरि पेखे तुव धर्म्म अब पूरण बिश्वेबीश । स्वर्गऊ नहि राजर्षिको उतो सम हे अवनीश ॥

॥ * ॥ वैशम्पायन उवाच ॥ * ॥

तदनन्तर नृप धर्म्मकहँ यथा उचित सनमानि । लए चढाय बिमानपेहु आपु शक्र गहि पानि ॥

धर्म्मरूप भगवान अरु मरुत शक्र ब्रह्मर्षि । चलत भऐ निजलोक प्रति करत बीना हर्षि ॥

आगे ते आवत भऐ सुरराजर्षि समस्त । तहँ नारद नृपधर्म्मसौं बोले बचन प्रसस्त ॥

एहि प्रकार मानव कोऊ नहि आयो यहिदेश । जिमि आऐ तुम धर्म्म नृप भोगो स्वर्ग शुभेश ॥

भूप कहे हम चहत नहि स्वर्ग जहँके ओर । गए बन्धु नृपसुता जह जान चहत तेहिठौर ॥

यह सुनि कै सुरपति कहे सुरपद पाय अनूप । अजौ न छूटी मानुषी बुद्धि तुम्हारी भूप ॥

कौन कौनको बन्धु अरु नारि कौनको कौन । कर्म्मभूमिको सङ्ग हो मोहत जो मतिभौन ॥

यह सुनिकै भूपति कहे हम नहि चाहत स्वर्ग । मिले जहा मम बन्धु तिय उत्तम सो अपवर्ग ॥

एहि प्रकार कहि कृष्णको ध्यान धारि नृपधर्म्म । जगमङ्गल प्रभुरूप लखि रहे मोद गहि पर्म्म ॥

राम कृष्णको ध्यान धरि कोन न लहत आनद । राम कृष्ण हिय जगतके शुभ सदस्य रवि चन्द ॥

अस्तिश्रीकाशीस्वजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशी बासिगोकुलनाथकवीश्वरस्यात्मजेन गोपीनाथेन कविना बिरचिते भाषायां महाभारतदर्पणेमहा प्रस्थानपर्व सम्पूर्णंनाम प्रथमोऽध्यायः ॥ * * * * * * * * *

॥ महाभारतदर्पण: ॥

॥ स्वर्गारोहणपर्व्व ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

नमस्कार नारायणहि करि नरोत्तमहि नौमि। बन्दि गिरा व्यासहि रचत भारत भाषा सौमि ॥
सीताराम सलक्ष्मणहि रुकुमिनि कृष्ण सराम। कपि अग्रस्थ ध्वजस्थ सह धरु धारण हिय धाम ॥
राम सतिय सानुज संकपि सहित भक्त समुदाय। ध्याय चहत हौं भारतको पार लहब सुखदाय ॥
आरोहणि सबलोककी आसु नाम भवसेत। स्वर्गारोहण रचत यह ताहि ध्याय लहि चेत ॥

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

॥ * ॥ जनमेजयउवाच ॥ * ॥ दिवमधि जाइ पितामह सर्व। बसे पाइ थल कवन अखर्व ॥ किमि दिव दर्शो धर्मनरेश। वैशम्पायन कहो विशेश ॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ दिवमधि आइ युधिष्ठिर भूप। दुर्योधनहि लखे अतिरूप ॥ राजत सिंहासन लहि बेश। सिद्धि साध्य सेवत चऊँदेश ॥ लखि ताको अतिशय ऐश्वर्य्य। नहि सहिसकेउ धर्मनृप बर्य्य ॥ तेहि लखि सादर चख मन फेरि। कहत भए सुरगणसे टेरि ॥ एहि सहसा कर्मीके साथ। हम नहि निबसब हे सुरनाथ ॥ याके दोष भूप समुदाय। मरे व्यर्थ लरि ओज बढाय ॥ सभामध्य गहि कुमति दराज। पाञ्चालिहि कीन्हो हतलाज ॥ कहो दुसह दुर्बचन अनेक। नाहक युद्ध कियो गहि टेक ॥ यँइ नाशो परिवार समस्त। हित सम्बन्धी भृत्य प्रसस्त ॥ हम न शकत इतक्ष्ण एहि देखि। जान चहत जहँ बंधु विशेखि ॥ यह सुनिकै नारद मुसुकाइ। कहे न इमि भाषो कुरुराइ ॥ त्यागि बिरोध बसत सब अत्र। तजि सभ अमरष बसो एकत्र ॥ क्षात्रधर्म करि कै तन त्यागि। यह इत बिलसत आनद पागि ॥ यह दिव इहां उचित नहि बैर। त्यजो द्यूतकृत सगरो घेर ॥ मिलो भूपसों प्रीति बढाइ। राजहेतु कृत दोष दुराइ ॥ यह सुनि बोलो धर्ममहीप। इमि न कहो शुभविधि कुलदीप ॥ जो कीन्हो बहु कुतसित कर्म। सो इमि बिलसत मुदित अभर्म ॥ जे सबविधि सुकरमके ओक। ते मम बंधु बसत कहिलोक ॥ धृष्टद्युम्न आदिक मम मित्र। ते कहँ बिलसत परम पवित्र ॥ सोथर दरशावो मुनिराज। जहँ बिलसत मम सहित समाज ॥ द्रौपदेय अभिमन्यु अमान। इरावान आदिक बलवान ॥ धृष्टद्युम्न उतमौजा आदि। ये नृप बूझे जप यश नादि ॥ ते सभ

स्वर्गारो० प० पृ० बिलसत जेहि चस्थान। सो दरशावक सुमुनि सुजान ॥ सलिल दानकी समय निहारि। जो मम जननी कहो बिचारि ॥ कर्ण तिहारो सोदर भाय। सो सुनि मम हिय तपत अघाय ॥ कर्ण बसत इत लहि थल जौन। मुनि हम लखो चहत थल तौन ॥ मुनि बिनु इन्हसभके सह बास। सब दिवमधि नहि मोहि सुपास ॥ यह सुनि के सुनि सुमन समोद। कहे भूपसों गहे बिनोद ॥ लहि सुरपतिके शुभद निदेश। हमसभ तोहि तरत यह देश ॥ तुमहि रुचै यो सब्य असव्य। है हमकहँ सोई करतव्य ॥ देवदूत सँग लेउ प्रसस्त। जाउ जहां तुव बन्धु समस्त ॥ सो सुनि देवदूत ले सङ्ग। चलो भूमिपति गहे उमङ्ग ॥ ले भूपहि चलि आगे दूत। गये जवन थल अशुचि अकूत ॥ तम पूरित सो देश अस्वच्छ। मांस रुधिरको कीचक तच्छ ॥ चहुँदिशि फैलि रह्यो नर केश। भाछी भरी घनाछी बेश ॥ क्रमि अरु कीट भयानक बेष। बहुदिशि ज्वाल किये परिवेष ॥ अगणित काक गृध्र अरु प्रेत। बोलत डोलत किये निकेत ॥ पूरित मेद रुधिर सो गात। रपटत झपटत पीवत खात ॥ मांसरुधिर मज्जा अनुबन्ध। पूरित महा दुसह दुर्गन्ध ॥ अतिशै तपित बालुका बारि महा भयानि नदी निहारि ॥ असिधारा सम जाके पत्र। अबिरल बृच्छ लखत भे तत्र ॥ लोह कुण्डमें प्रतपित तेल। प्रतपित लोह शिला प्रति मेल ॥ अति दुर्गन्ध दुसहते पीडि। धर्म महीप कहत भे बीडि ॥ यह पन्था दुर्घट चहुँओर। नहि मम गमन योग अतिघोर ॥ यह पथ क्रमि पूरित दुख भूरि। अब चलबेके केतनी दूरि ॥ है यह कवन देवके देश। कित बिलसत मम बंधु शुभेश ॥ एह सुनि पलटि दूत मतिमान। भूपतिसे क्रमि कहे निदान ॥ हम अब फिरत फिरो तुम भूप। अमित भयो अति पावन रूप ॥ क्रमि आज्ञा दीन्हे बसदेव। फिरेउ देखि भूपहि श्रम भेव ॥ होइ मूर्छित लहि महा कलेश। तहँ सो पलटन भयो नरेश ॥ दुःख शोक पूरित तिहिकाल। पलटि सुनत भो गिरा अलाल ॥ हे राजर्षि भूप सिरताज। चणक थिरो मम आनद काज ॥ लहि तुव तनको गन्ध अनूप। हम सब चयन लहत हे भूप ॥ बहु दिन पै नृप तुमकहँ देखि। हम सब पाये मोद बिशेखि ॥ जबसे इत आयो तुम तात। तबसो मम दुख मिघटत जात ॥ ताते कछुछण थिरिये तत्र। हम सब पावै आनद अत्र ॥ सुनि एहि बिधिको दीन पुकार। थिरत भयो तहँ भूप उदार ॥ महा कष्ट लहि नय तेहिठौर। को तुम कहत भयो करि गौर ॥ सो सुनि कहत भये ते सर्ब। भीमार्जुन हम नकुल अखर्ब ॥ हम है द्रुपदसुता सहदेव। धृष्टद्युम्न दर्द कर्ण शुभेव ॥ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥

द्रौपदेय आदिक इबिधि बोले सब रणधीर। परे निरयमधि दैवबश पावत अतिशय पीर ॥
सो सुनि धर्ममहीप तहँ गये शोचसों पूरि। ए सब पाये देश यह किये कवनअघ भूरि ॥
पापात्मा धृतराष्ट्रसुत तिमि बिलसत गहि गौर। धर्मशील ए सब लहे ऐसो कुत्सितठौर ॥
निद्राबश होइ स्वप्न यह लखत भई की भ्रान्ति। देखि महा बिपरीत यह मोमन गहत न शान्ति ॥

इविधि चिन्ति अति सोचि नृप निन्दि सुरनकहँ भूरि। देव दूतसों कहत भय महाक्रोधसा पूरि॥ स्वर्गारो॰
आऊ शक्रके पास तुम हम इत करव निवास। कहेऊ मोहि यहियर रहे पावत बन्धु सुपास॥ ए॰ प॰

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

भूपके ए बचन सुनिकै दूत सत्वर जाय। भूमिपतिके वचन शक्रहि दयो सबिधि सुनाय॥ बचन सो सुनि शक्र सुरगण सहित नृपपहँ आय। सहित आदर धर्मनृपकहँ लखे आनद छाय॥ मेद मज्जा आदि एहियर रहे कुत्सित जौन। देवपतिके आतही तहा भये लोपित तौन॥ बहन लागो सुखद मारुत गहे निज गुण पर्म। शान्ति गहि तहँ शक्र बोले सुनऊ भूपति धर्म॥ * ॥ इन्द्रउवाच॥ सिद्धि तुमकहँ भई प्रापत महा महिमाओक। भूप प्रापत भये तुमकँह परम अक्षयलोक॥ क्रोध भूपति करो मति मम बचन मानो साँच। अवसि है द्रष्टव्य भूपन्ह नरक दुःसह आँच॥ सुकृत भोगत प्रथम पावत निरय ते पश्चात। प्रथम भोगत निरय पावत स्वर्ग ते अवदात॥ अधिक पातकहेत जाके पुण्य थोरा होत। भोगि सो कछु स्वर्ग भोगत निरयको लहि सोत॥ होत थोरो पाप जाके पुण्यको अधिकार॥ भोगि थोरो निरय सो फिरि लहत स्वर्ग उदार॥ आचार्य्यके बध समय भाखे व्याजसे कछु बैन। व्याजते लहि निरय ताते भये घरिक अचैन॥ भीम अर्जुन नकुल तिमि अरु द्रौपदी सहदेव। व्याजते सम नरक परसो भूप तैसो भेव॥ मुक्त ते सब भये अघते चलो निरखो भूप। स्वर्ग मध्य सपक्ष बिलसत अक्ष अक्षय रूप॥ तपत जाके हेतु तुम सो करण महिमा भौन। पाय पूरण सिद्धि बिलसत लखो करि उत गौन॥ भूप मांधाता भगीरथ भूमिपति हरिचन्द। भरत अरु ऋषिदेव बिलसत जौनठौर अनन्द॥ भूप सबके जहँ है तबलोक बिहरऊ तत्र। चलो निरखऊ पक्ष निज यो किये सङ्गर सत्र॥ स्वर्ग गङ्गा लखो पावन करत यो त्रैलोक। तासु मधि असनान करि कै चलो आनद ओक॥ इहाके असनानते तुव छुटिहि मानुषभाव। नाश होइ है बैर इरिषा शोकको तेहि छाव॥ कहत ऐसे शक्रके तह धर्म गहि निजदेह। प्रगट लसिकै भूमिपतिसो कहे सहित सनेह॥ क्षमा दम तो दया लखि हम भये अति परसन्न। बार त्रय तो करि परीक्षा भये मुद आसन्न॥ परम पावन बन्धु तो सब नरकके नहियोग। शक्र दरशाये तुमहि निज परम माया भोग॥ स्वर्गगङ्गामध्य चलि असनान करिये भूप। त्यागि मानुषभाव जाते लहो दिव्य स्वरूप॥ बचन यह सुनि नृपयुधिष्ठिर सहित सुमन समीर। शक्रसह अरु धर्म सह चलि गये सुरसरि तीर॥ तहाँ करि असनान भूपति मानुषी तनु त्यागि। गहे दिव्यस्वरूप अनुपम परम सुषमा पागि॥ तहासे चलि गये नृप जहँ रहे बन्धु समस्त॥ सुवन सब धृतराष्ट्रके अरु भीम आदि प्रशस्त॥ * * * * * * ॥ दोहा॥ * * * * * * * * *

आइ तहाँ गोविन्दकह भये बिलोकत भूप। चक्र आदि आयुध प्रभुहि सेवत गहे सरूप॥
यह सेवत अर्ज्जुन प्रभुहि जिमि सेवत हे अच। तिन्हहि देखि नृप मोद गहि अमरि गये अन्यत्र॥

स्वर्गारो० तहाँ जाइ कश्यपहि लखे सह द्वादश आदित्य । फेरि मरुद्गण सह लसित भीमहि लखे अचित्य ॥
स्व० प०

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

फिरि आगे चलि लखे शुभेवहि । आश्विन सहित नकुल सहदेवहि ॥ पुनि आगे चलि द्रुपद कुमारिहि । देखे रमा सदृश दिव चारिहि ॥ तह नृप कछु बूझन अभि लाखे। सो गुणि शक्र भूपसों भाखे ॥ यह दिवकी श्री परम सोहावनि । तो हित गई भूमि मन भावनि ॥ ए गन्धर्व पंच अति पावन । भये तुम्हारे सुवन सोहावन ॥ फिरि आगे चलि शक्र समीपहि । दरशाये धृतराष्ट्र महीपहि ॥ ए सवगन्धर्वन्हके स्वामी । तोपितुके गुरु बन्धु सुकामी ॥ साध्य मरुत वसुगणमधि अंशी । वृष्णि भोज अरु अन्धक बंशी ॥ सात्यकि प्रभृति लखो नरनायक । जितने महारथी रण चायक ॥ सोम समान सोम सह राजत । देखो अभिमन्युहि छबि छायत ॥ कुन्ती अरु माद्री सह शोभित । पाण्डुमहीप हि लखो अक्षोभित ॥ वसुन्ह सङ्ग भीषमकहँ पेखो । सङ्ग जीवके द्रोणहि देखो ॥ अवर जिते दुऊदिशिके पक्षी । सुभट महीप राजसुत रक्षी ॥ गुह्यक यक्ष पुण्यजन ये ते । तिनके सङ्ग लसत इत तेते ॥ यह प्रकार सुरपति फिरि फिरिकै । भूपहि दरशाये थिरि थिरिकै ॥ शक्र साथ नृपधर्म सोहाये । तिन्हहि देखि अति आनद पाये ॥ *

॥ * ॥ जनमेजय उवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

भीष्म द्रोण भूरिश्रवा शकुनि जयद्रथ भूप । जयत्सेन अरु कर्ण अरु नृपधृतराष्ट्र अनूप ॥
नृप दुर्योधन पुत्र सह सत्यसेन रणधीर । धृष्टकेतु अरु कर्णके पुत्र घटोत्कच भीर ॥
इन्हहि आदि अगणित सुभट मरे युद्ध करि जौन। ते दिवमधि कितने दिवसु बसे कहो मुनि तौन॥
स्वर्गबास करि कर्म्मके अन्त लहे गति कौन । सो सुनिबेकी लालसा हमें कहो तजि मौन ॥

॥ * ॥ सूतउवाच ॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

सो सुनिकै मुनि वैशम्पायन । भूमिपालसों कहे सचायन ॥ सो हम कहत सुनो सब कोऊ । जाहि सुने सुधरत दिशि दोऊ ॥ नृपको प्रश्न अनूपम सुनिकै । वैशम्पायन बोले गुणि कै ॥ भूप प्रश्न तू किये सोहावन । सुनो तासु उत्तर मनभावन ॥ देव गुह्य यह गुणिवे लायक । यहि विधि कहे व्यासमुनिनायक ॥ पापकर्म्मको अन्त अहीना । भे निज निज प्रकृतिन्हमधि लीना ॥ मिले वसुन्हमे भीषम ज्ञानी । गुरुमे मिले द्रोण द्विजमानी ॥ मिले मरुतगणमे कृत बरमा । रविमधि मिले करण अतिपरमा ॥ दम्पति धनदमध्य चलि संप्रति । नृपधृतराष्ट्र मिलत भे दम्पति ॥ पति निन्ह सहित पांडु मुद धारे । देवराजके सदन सिधारे ॥ सनतकुमार सु मुनि सब यामी । तिनमे मिले प्रद्युम्न सुनामी ॥ शशिमो मिले पार्थसुत बीरा । जो अभिमन्यु विदित रणधीरा ॥ द्रुपद विराट महसल राजा । उग्रसेन वसुदेव ससाजा ॥ धृष्टकेतु अरु भूरि महीपति । उत्तर भूरि श्रवा करि कीरति ॥ कंक विदूरथ भानु कहाये । साम्ब निशट अक्रूर गणाये ॥ कंस आदि

पूरित अति छबिसे । बिश्वेदेवा मधि सब प्रबिसे ॥ धृष्टद्युम्न अरु शकुनि नरेशा । कीन्हे पावक मध्य प्रवेशा ॥ यत सुबन्धु दुर्योधन आदिक । आतु धानहँ प्रबल प्रमादिक ॥ व्है पावन रणमे तन तजिकै । बसे स्वर्गमधि सुषमा सजिकै ॥ बिदुर युधिष्ठिर मुद गहि मनमैं । किए प्रवेश धर्मके तनमैं ॥ शेषरूप गृहि हलधर आरय । गए रसातल करि जग कारय ॥ कृष्णदेवकी तनय गोसाँई । बिलसत भए पूर्वकी नाईं ॥ सोरह सहस कृष्णकी रानी । रहीं जिती सुख सुषमा खानी ॥ मन बच करम माधवहि भजिकै । सरस्वती मधि धँसि तन तजिकै ॥ व्है अपसरा मिली घनश्यामहि । नारायण जगकृत जगधामहि ॥ आदि घटोत्कचराक्षस जेते । दुहुँदिशि रहे बिजै यमहेते ॥ ते गन्धर्व यक्ष अरु किन्नर । व्है व्है लहे लोक अति सुन्दर ॥ केकय मद्र आदि चहुँदिशिके । रहे जिते भट मंथि रण निशिके ॥ तेसब दिव्य देह गहि गहिकै । क्रमसौं बसे लोक लहि लहिकै ॥ जे माधवको दरशन कीन्हे । ते सब जन उत्तम पद लीन्हे ॥ जे कीन्हे सहबास सोहावन । ते कि न लहै स्वर्गमनभावन ॥ जे जन राम कृष्ण रट लावत । कहत बेदबिद ते दिव पावत ॥ *

॥ * ॥ * ॥दोहा॥ * ॥ सौतिक उवाच॥ * ॥ * ॥

व्यास शिष्य द्विजश्रेष्ठतें यह अनूप व्याख्यान । सुनि जनमेजय भूमिपति आनद लहे महान ॥ तदनु शेष मखकर्म सो किए समापन भूप । याजक पूर्णाहुति दिए पढि पढि मंत्र अनूप ॥ करि मोचित सब अहिन कहँ मुनि आस्तीक अमन्द । अति प्रसन्न कृतकृत्य व्है पढे सु आशिष छन्द ॥ जनमेजयक्षितिपाल पुनि महामोदसौं पूरि । पूजन करि सब द्विजनकहँ दए दक्षिणा भूरि ॥ अनन्तर ... बिदा दै आशिष सुखदाय । निज निज आश्रम जातभे मुदित बिप्र समुदाय ॥ श्लोक ॥ * ॥ व्यासाज्ञया समाख्यातं सर्पसत्रे नृपस्य तु । पुण्योयमितिहासाख्योपवित्रं वेदमुत्तमं ॥ कृष्णेन मुनिना बिप्र गदितं सत्यवादिना । सर्वज्ञेन विधिज्ञेन धर्मज्ञानवतासता ॥ अतीन्द्रियेण शुचिना तपसाविभूतात्मना । ऐश्वर्येवर्ततताचैव सांख्ययोगविदस्तथा ॥ नैकतंत्रविशुद्धेन दृष्टा दिव्येन चक्षुषा । कीर्तिं कथयतालोके पाण्डवानां महात्मनां ॥ अन्येषां क्षत्रियाणांच भूरिद्रविण तेजसां । यइदं श्रावयेद्विद्वान्सदा पर्वणि पर्वणि ॥ धूतपापजितस्वर्गोब्रह्मभूताय गच्छति । यश्चे मंश्रावयेच्छ्राद्धे ब्राह्मणान् पादमन्ततः ॥ अक्षय्यमानं पवनं पितृंतस्योपतिष्ठते । अन्हा यदेनं कुरु ते इन्द्रियैर्मनसापिवा ॥ महाभारतमाख्याय सायंसंध्याप्रमुच्यते। यद्रात्रौ कुरुते पापं ब्राह्मण स्त्विन्द्रियैश्चरन् ॥ महाभारत ताख्याय पूर्वसंध्यां प्रमुच्यते । धर्मेचार्थेचकामेच मोक्षेच भरतर्षभ ॥ यदिहास्ति तदन्यत्र यन्नेहास्तिन तत्क्वचित् । जयानामितिहासोयं श्रोतव्यं भूतिमिच्छता ॥ ब्राह्मणे नचराज्ञाच गर्भिण्या चैवयोषिता । स्वर्गकामोलभेत्स्वर्गं यजमानोलभेज्जयं ॥ गुर्विणी लभते पुत्रं कन्याविन्दति सत्पतिं । अनागतंचिभिर्वर्षैः कृष्णद्वैपायनप्रभुः ॥ सन्दर्भं भारतस्येमं कृतवान्

स्वर्गारो° श° प°

धर्म्मकाम्यया । षष्टींशतसहस्राणि चकारेमांचसंहितां ॥ त्रिंशत्शतसहस्राणि देवलोके प्रतिष्ठितं । पित्र पञ्चदशं ज्ञेयं नागयक्षे चतुर्दशं । एकं शतसहस्रञ्च वैशम्पायन गीयते ॥ इतिहासमिमं पुण्यं महार्थं वेदसंमितं । श्रावयेयस्तुवर्णांस्त्रीन् कृत्वाब्राह्मणमग्रतः ॥ स नरःपापनिर्मुक्तः कीर्तिं प्राप्येहसौमिक । गच्छेत्परमिकांसिद्धिं मंत्रमेननसंशयं ॥ महर्षिर्भगवान्व्यासः कृत्वेमांसंहितांपुरा । श्लोकैश्चतुर्भिर्धर्मात्मा पुत्रमध्यापयच्छुकं ॥ मातृपितृसहस्राणिपुत्रदारशतानिच । संसारेष्वनुभूतानि यांति यास्यंति चापरे॥ हर्षस्थानसहस्राणि भयस्थानशतानिच । दिवसे दिवसे मूढाःप्रविशन्ति न पण्डिताः॥ ऊर्द्ध्वबाहुर्विरौमेष नच कश्चिच्छृणोतिमे । धर्म्मादर्थश्च कामश्च स किमर्थं नसेव्यते॥न जातुकामान्नभयान्नलोभाद्धर्म्मंत्यजेज्जीवितस्यापिहेतोः॥ धर्मोनित्यः सुखदुःखे त्वनित्ये जीवोनित्योहेतुरस्यत्वनित्यः । इमां भारतसावित्रीं प्रातरुत्थाय यः पठेत् ॥ स भारतफलंप्राप्य परंब्रह्माधिगच्छति । यथा समुद्रोभगवान्यथाच हिमवान्गिरिः ॥ ख्यातावुभौरत्ननिधी तथा भारतमुच्यते । कृष्णंवेदफलंविद्वान्श्रावयित्वार्थमश्नुते ॥ स वक्तादेवलोके हि गत्वा देवैःसहाचरेत् । महाभारतमाख्यानंयः पठेत्सुसमाहितः ॥ स गच्छेत्परमां सिद्धिमितिमेनास्ति संशयः । पुस्तके पूजनंकुर्य्यात् श्रद्धाभक्तिसमन्वितः ॥ काष्ठमासन वेष्ठञ्च मुक्तादामभिरन्वितम् । धूपैर्दीपैश्च गन्धैश्च नैवेद्यैर्विधान्वितैः ॥ गीतैर्वाद्यैश्च नृत्यैश्च उत्सवेन मनोहरम् । भूयसीदक्षिणान्दद्यात्साष्टांगं प्रणमेत्ततः वाचकं पूजयेत्तत्र ग्रन्थिबन्धनसंयुतः ॥ पादप्रक्षालनञ्चैव पादपूजनमेवच । तदूर्ध्वं तिलकं कुर्य्यात्पुष्पमालासमर्प्पणम् ॥ उष्णीषोजाविकं तत्र कटिवेष्ठोत्तरीयकम् ॥ भूषयेत्तेषु कर्णेच कुण्डलाभ्यां तथोरम् । विष्णुपूजनजं पुण्यं लभते नात्रसंशयः । व्यासस्त्रीपूजनं कार्य्यं विव[illegible] ॥ सर्वाभरणभूषण्यां लक्ष्मीः स्तेन प्रपूजिता । वाचकं तोषयेद्भक्त्या वित्तशाठ्यविवर्जितः ॥ *॥*

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीवन्दीजन काशीवासिगोकुलनाथात्मजेन गोपीनाथेन कविना विरचिते भाषायां महाभरतान्तर्गते शतसहस्रसंहितायांवैयासिकांस्वर्गारोहणनाम प्रथमोऽध्यायः समाप्तः ॥ *॥*॥ इति महाभारत दर्पणः समाप्तः॥ *॥* ॥ शुभमस्तु शकाब्दाः १७५१ सम्वत् १८८६ [illegible] २१ दिवसे ॥ *॥*॥*

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ अथ हरिवंशदर्पणो लिख्यते ॥

॥ दोहा ॥

गुरुपद पदम मरंद छबि मो मन अलि तजि दंद। ध्यान पान करि हरिचरित करत गान शुभ छंद ॥
नारायण नररूप हरि व्यापक अंतरजामि। सीताराम कृपाल प्रभु संतत सदा नमामि ॥
पारथके स्वारथ भए सारथि परम अनूप। ते सारथ रचि देहिं मोहि भारथ भाषारूप ॥
नारायण व्यापक नियम नरनरोत्तमहि नौमि। बंदि गिरा व्यासहि रचत भारथ भाषा सौमि ॥
गन अलभ्य तेहि लहनको हों जु करौं यह काम। महिमा सीताराम की द्रिढ बसाय हियधाम ॥
सीताराम हि सुमिरि जन कबहुं लहै न हानि। परमानंद अंदहि अउ परशि पसारै पानि ॥

॥ सोरठा ॥

तडित श्याम घनरूप कमल बान धनुधर बिसद। सिन मुख शुभद अनूप सीताराम सुस्वामि प्रभु ॥
बंदौ कपिबर बीर राम परम प्रिय पारषद। मंगल मूरति धीर भारथ स्वस्य ध्वजस्थ बर ॥

॥ चौपाई ॥

बिधिते छंद सीखि सोहाए। पारासरसुत गुरुगुण गाए ॥ श्रुति स्मृति बेद पुराण निधाना। बंदौ व्यास बिदित भगवाना ॥ सौनकादि ऋषि तपतेज निधाना। नैमिषारण्य मैं करि अनुमाना ॥ सूत पुराणिकसो इमि बोले। प्रेम प्रशंसा बहुबिधि खोले ॥ तात कहेउ बहुभांति बुझाई। सबके बंस बिभूति बडाई ॥ कौरव बंश कहेउ मुनि ज्ञानी। जन्म कर्मकी कथा बखानी ॥ अंधक वृष्णि बंश ब्यवहारा। क्रमसों कहेउ न ज्ञान अपारा ॥ सो सुनि सूत पुराणिक हरषे। प्रश्नोत्तर कहि आनंद बरषे ॥ तात सुनहु यह प्रश्न सुबानी। जनमेजयनृप आनंदखानी ॥ बैसंपायनसो इमि बूझे। प्रेमलताकी जाल अरूझे ॥ बैसंपानि जु उत्तर दीन्हा। सो हम तहा सकल सुनि लीन्हा ॥ बैसंपानि कहा सुनु भूपा। प्रथम सृष्टिउतपत्ति अनूपा ॥ जो ईश्वर माया बिसतारी। रचत जगत बहुभांति सुधारी ॥ ब्रह्मा सोइ ईश्वर बर मागी। निर्गुण नारायण अनुरागी ॥ महत पुरुष तेहिते अहंकारा। तेहिते भूत भूत बिसतारा ॥

॥ दोहा ॥

अब जगउतपति कहउ नृप सहविसतार सहेत। हरिवंश क्रमसों बरनहिं कहिहों ज्ञान निकेत॥

॥ चौपाई ॥

जब रचना करि इच्छित ईशा। प्रथमहि आप रचेउ जगदीशा॥ तेहिमधि तजेउ बीज जग स्वामी। करि बिलास कछु अंतरजामी॥ भयउ बीजतेहि अण्ड अनूपा। अमल अपूरब सुबरन रूपा॥ तेहिमधि बिधिकहँ एक बरीसा। बसि तेहि द्विधा कीन्ह जगदीशा॥ अरध भूमि दिव कीन्हेउ आधा। तेहिमधि शून्य आकाश अबाधा॥ दशधा दिशि तेहि बिसद बनाई। ब्रह्मा निरखेउ निज निपुणाई॥ काल काम अरु क्रोध बनाए। अरु मन बाचहि रचेउ सोहाए॥ पुनि जगहित अनुकूल हित बेधा। सप्त प्रजापति रचेउ सुमेधा॥ अत्रि मरीचि पुलस्त्य सोहाए। पुलह अंगिरस अरु क्रतु आए॥ अरु वशिष्ठवर तपविधि कीन्हे। मानस पुत्र सात बिधि कीन्हे॥ विधिवत तिन्हहि पुरान बखाने। नारायण आत्मक जग जाने॥ रोषात्मक पुनि रुद्रहि जाए। सनतकुमार रचे मनभाए॥ सप्त प्रजापति उतपति कीन्हे। बहुत प्रजा अति आनंद लीन्हे॥ रुद्र प्रगट गणवंश हि कीन्हा। गणसमूह रचि आनंद लीन्हा॥ रुद्रपुत्र अरु सनतकुमारा। प्रजा प्रजननकाज हिय धारा॥ प्रगट कीन्ह तब बिधिगुण गाए। बिद्युत असनि मेघ मनभाए॥

॥ दोहा ॥

मेघाधिप रोहित धनुष पक्षी बिबिध अखेद। रचि बिधि रचेउ सप्रेम फिरि यज्ञ सुधारन बेद॥

॥ चौपाई ॥

मुखसों प्रगट कीन्ह बिधि देवन। उरसों पितर पुनीत सुसेवन॥ जंघासों उतपति मानव। कीन्हेउ जघनदेससों दानव॥ अप्सरादि सब सृष्टि अनूपा। अंग अंग प्रति प्रगटेउ भूपा॥ तब बिधि द्विधा कीन्ह निजगाता। नारी पुरुष भए सुनु ताता॥ इक तप करन लगी बहु नारी। पुरुष बिराटरूप तेइ धारी॥ व्है बिराट निज अंश निधाना। पुनि स्वयंभुवमनु रचेउ सुजाना॥ एकहत्तरि युग भोग बिधाना। तासु मन्वन्तर कहत पुराना॥ अयुत बरिस तपकरि बहु नारी। नाम सुभग सतिरूपा धारी॥ लहि स्वयंभुमनु पति परबीना। सोइ बाम सुत उतपति कीन्हा॥ कन्या कर्दमकी शुभचारी। पानिग्रहीत बीरकी नारी॥ द्वै सुत भए तासु बलवाना। उत्तानपाद प्रियव्रत जगजाना॥ मुनिवशिष्ठकी सुता सोहाई। काम्या सुपति प्रियव्रत पाई॥ प्रगटेसि चारि पुत्र शुभ चारी। ते सम्राट कुक्षि बलभारी॥ पुनि बिराट अरु प्रभु बलवाना। प्रियव्रतके पुत्र पुराना॥ उत्तानपादकंह अति सुजाना। यहएकीन पुत्रन बिधाता॥ अश्वमेध मख परम पुनीता। धरम नृपनिकय सहित सुनीता॥

॥ ❀ दोहा ❀ ॥

भई चारु कन्या प्रगट तामहते सुनु भूप । सुनीता नाम लही सुमति उत्तानपाद अनुरूप ॥

॥ ❀ ॥ चौपाई ॥ ❀ ॥

तासु भए सुत चारि अनूपा । ध्रुव अरु कीर्तिमंत वरभूपा ॥ आयुष्मंत वऊरि वसु जाने । तिनमें ध्रुव भागवत बखाने ॥ तीनिसहस्र वरिष ध्रुव ज्ञानी । कीन्ह तपस्या अति हित आनी ॥ लहि ईश्वरसो सवरनि देशा । पृथिवी पालन किएउ नरेशा ॥ शंभूनाम प्रिया लहि नीकी । सुख दायिनि अवलंबनि जीकी ॥ सृष्ट भव्य द्वै सुत उपजाई । वसे आइ पद अनुपम पाई ॥ को ध्रुवकी कहिसकै बडाई । सेस सारदा सके न गाई ॥ सप्तर्षि यह जेहि परदछिन करही । आपुहि धन्य जानि मुद भरही ॥ शिष्टनृपतिकी तिया सुहाया । तासु भए सुत पांच सहाया ॥ रित्यु रिपु जय विप्र सोहाए । वृकल नृपति वृकते अस गाए ॥ रिपुकी वृहती तिया सयानी । तासु सुवन चक्षुष गुरज्ञानी ॥ पुष्करनी चक्षुषकी घरनी । तासुत मनु नृपपालक धरनी ॥ प्रिया नडूला मनुकी प्यारी । दश सुत तासु भए सुभचारी ॥ उरू पुरू शतद्युम्न तपस्वी । सत्यवाक कवि परम जसस्वी ॥ अग्निष्टुत हरिरात्रि सोहाए । सुद्युम्न अभिमन्यु सुभाए ॥ अग्नेई तिय उरू केरी । ता सुत षट शोभा जयभेरी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दोहा ॥ ❀ ॥

अंग सुमन अरु ख्यातिक्रतु अंगिर गय भूपाल । नाम सुनीथा कालकी सुता अंगकी बाल ॥

॥ ❀ ॥ चौपाई ॥ ❀ ॥

ता सुत नाना अगुण निधाना । नाना कोगुण गहे अमाना ॥ भयो वेणु उत्पथमारगगामी । कुमती क्रोधकलित कलिकामी ॥ कियो वेदपथ लोपन नेही । निजपथ रोपेसि कुपथसनेही ॥ हठ करि सठ यह दिहेसि निदेहू । यज्ञ जाप कर रंचहु न लेहू ॥ मोहि जपहु मोहि जानहु देवा । मोसों प्रबल कौनकी सेवा ॥ धर्म लोप लखि ऋषिगण आए । अत्रि प्रभृत यह कहि समुझाए ॥ हमसबको वे यज्ञ उमाहीं । तुव सहाय सबविधिसों चाहीं ॥ तू अधर्म तजु हे नृपसांई । करु सुधर्म निज पितुकी नाई ॥ सो सुनि व्यंग हास करि बोलेसि । निजममत्वकी पदवी खोलेसि ॥ मुनिज्ञाना एहि म्होहि न चेता । तब तेहिको गहि ज्ञाननिकेता ॥ दच्छिन जानु मथो रिसिराते । ह्रस्व पुरुष प्रगट्यो यक ताते ॥ सो बहु वेणुपापको रूपा । भयो जोरि कर ठाढो भूपा ॥ कह्यो निषीद अत्रि तपराहू । बैठ अर्थ यह भपति ताहू ॥ ताते जाति निषाद बखाना । कै खभिलगण भए सयाना ॥ फिरि भुज दच्छिन मथन कीन्हे । प्रगटे पृथु कर शर धनु लीन्हे ॥ कंढत अग्नि जिमि मथे सुअरणी । तिमि दरश वरवर्चस वरणी ॥ देखि लोक मांहि भयो सुखारी । मुद मंगल पसरी दिशि चारी ॥ ❀ ❀ ❀ ❀ ❀

॥ दोहा ॥

तदनु वेणु सर्गहि भए उभ परमपद पाय । प्रगटेको सतपुत्रके परगट परम प्रभाय ॥

॥ चौपाई ॥

सागर सरित सरस सुख छाए । रत्न अमोलिक ले ले आए ॥ ऋषि दिगपाल सुमन सुरनायक । अज कीन्हेउ पृथुकर अभिषेक ॥ विधिहतमखतें उतपति जाको । ऋषि कीन्हेउ आवाहन ताको ॥ मागध सूत नाम सुभ धारी । अस्तुति करता परम विचारी ॥ बंदीजन अति अमल अचारी । भयते जेहि जायो सुख धारी ॥ तिनसों ऋषि बोले सब कोऊ । करहु भूपकी अस्तुति दोऊ ॥ किमि अस्तुति करिये मुनिराई । बिनुजाने गुण सुजस बडाई ॥ कहा मुनिन तुम हो बरज्ञानी । बरनि भविष्य कहो अनुमानी ॥ बंदीजन निज मुखसो कहिहै । सो प्रतक्ष जगजन सब लहिहै ॥ सुनि आशिष तिन अस्तुति कीन्हा । भूप मुदितमन तिनकहं दीन्हा ॥ देश अनूप सूतकहं दीन्हा । मगधाधीश मगधकरु कीन्हा ॥ प्रजन पुकार आइ तब कीन्हीं । भूमि पदारथ सब हरिलीन्हीं ॥ सो सुनि पृथु करि क्रोध अमाना । तेजराशि धरेउ धनु बाना ॥ लखि सो भूमि धेनु व्है भागी । चले तासु पीछे पृथुलागी ॥ सबलोक यसों आरत भाषी । पृथु भय कोउ सकेउ न राखी ॥ आई तबै पृथुशरण बिचारी । त्राहि त्राहि यह बचन उचारी ॥

॥ दोहा ॥

भूपति परम सुयान तुम तियबध करब अजोग । जेता तिर्यग्योनिजा कहत वेदविद लोग ॥

॥ चौपाई ॥

लागि प्रजाहित मम बध चाहा । मोहि बिना किमि प्रजा निबाहा ॥ होइ हि भूप बिचारहु जियसों । मैं जो कहउ धरहु सो हियसों ॥ कारजसिधि उपाय उपासे । कारज सधत न कारण नासे ॥ करि भूसम अरु क्रोध दुराई । करहु मोहि दोहन नृपराई ॥ सो सुनि भूप भूमिसम कीन्हा । सकल पदारथ गोदुहि लीन्हा ॥ दानव देव पितर ऋषि आदिक । दोहेउ निज निज कारज साधिक ॥ राजसूयमख नृप पुनि कीन्हा । बहु दछिणा द्विजनकहं दीन्हा ॥ छवी आदि भए पृथुभूपा । रोपे राजसूयमख भूपा ॥

॥ दोहा ॥

पृथु पुत्रनिहि पुमत्व करि सिरज्यो सब संसार । तबते भू पृथ्वी भई सोहि जानि अवतार ॥

॥ चौपाई ॥

पृथुक दोयपुत्र नृप राई । अंतर्धान पालि सुखदाई ॥ अंतर्धान शिखंडिनि दंपति । हविर्द्धान सुत जाएउ संप्रति ॥ षटसुत हविर्द्धानके जाए । आग्रेई सो भए सोहाए ॥ प्राचीन बर हि शुक गय

मयगामी । हय कुवर बर अजिन सुनामी ॥ प्राचीनबर्हि भए तेज निधाना । कोटिन किए यज्ञ सुविधाना ॥ उदधि सुता सुवरना नामा । दिय प्राचीनबोरहि कहं बामा ॥ तासु भए दश सुत तपचारी । नाम प्रचेता दशौ विचारी ॥ जलनिधि पैठि करन तप लागे । ते दश एक धर्म अनुरागे ॥ तिन्ह हि तपत तप अयुत बरीसा । भयो बितीन सुनहु अवनीशा ॥ तबते भई वृक्षमय धरणी । रही न कछु खाली बरबरणी ॥ दुखित प्रजा भे भए अकाजा । बिनसों तहां सुना सुन राजा ॥ सो सुनि ते करि क्रोप कराला । मुखते वायु अग्निको ज्वाला ॥ प्रगटित दशो प्रचेतसु कीन्हा । ताने वृक्ष नाश करि दीन्हा ॥ शेष रहे तरु जब तब भूपे । आए चंद प्रचेतस जूपे ॥ औषधीश बोले यह बानी । क्रोधहि तजहु प्रचेतस ज्ञानी ॥ देहिं तुम्है तरु तनया लेऊ । मारुत आग शमित करि देऊ ॥

॥ ❀ ॥ दोहा ॥ ❀ ॥

वृक्षनको सुचि अंशसुचिदेहिंनि निज गर्व बसाय । राख्यो जानि भविष्य यहि वंशवृद्धिके चाय ॥

॥ ❀ ॥ चौपाई ॥ ❀ ॥

कन्या रत्न मारिषा नामा । तुमसब याहि करहु निज बामा ॥ मम तुव तेज संभवि यासों । ह्वैहै पुत्र भूप फिरि तासों ॥ व्है है सोम बंश बिस्तारा । पूरिहि सुजस पयोधि पसारा ॥ दशौ प्रचेतस सुनि हिय धारी । अंगीकार कीन्ह वह नारी ॥ लहि पति तिन्ह हि भूमितलचारी । मानसगर्व मारिषा धारी ॥ तासों दक्षप्रजापति जाएं । तीनिलोक गुण गरिमा गाए ॥ चर अरु अचर दुपद चौपाए । दक्ष प्रजापति बहु विधि जाए ॥ सुता पचास मानसिक कीन्हा । दश तिन मतें धर्महि दीन्हा ॥ तेरह दयो कश्यप हि तामे । सुता सताइस सोमसकामे ॥ बहुविधि भइ सृष्टि तिन तिनसों । भयो संयोग भूप जिन जिनसों ॥ तबसों सृष्टि मैथुनी भूपा । उते मानसि करही अनूपा ॥ शौनक सुनहु परमविज्ञानी । वैसंपायनकी यह बानी ॥ सुनि जनमेजय प्रश्न उचारा । प्रथम कहेउ तुम ज्ञान अपारा ॥ उतपति देव दानवन केरी । दक्ष प्रजापतिकी सुदघेरी ॥ विधिको चरन अंगुठा चारू । तासों प्रगटे दक्ष उदारू ॥ बाए अंगुठाते गुणखानी । भई तासु पतिनि सुखदानी ॥ तब तिमि बरनेहु बुद्धिनिधाना । अब इमि कहहु दुतीय विधाना ॥

॥ ❀ ॥ दोहा ॥ ❀ ॥

चंदसुता सुत दक्षकहि कहे दुसरफिरि तासु । सो सब सुनि संशय भयउ मेटहु ज्ञानप्रकासु ॥
उत्तर वैसंपानि तब दीन्हेउ ज्ञान अपार । देह धरै तेहि नित्य नृप उतपति अरु संघार ॥
विद्यावंत [illegible] तिनकहं मोह न होत । ईश्वरकी महिमा महत निरखत ज्ञान उदोत ॥

॥ ❁ सोरठा ❁ ॥

रह्यो न कछु तेहि काल भेद नात अरु गोतको । तप गरिमा भूपाल तप प्रभाव कारण रह्यो ॥

स्वस्ति श्री काशीराजाधिराज श्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबंदीजनकाशीवासि गोकुलनाथात्मजेन गोपीनाथकविना विरचिते भाषायां भारथांतरगते हरिवंशदर्पणे दक्षोत्पत्ति नाम प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥ ❁ ❁ ❁ ❁ ❁ ❁ ❁ ❁ ❁ ❁

॥ ❁ ॥ चौपाई ॥ ❁ ॥

जनमेजय उवाच । उतपति देवनादि सबही की । बैशंपानि कहहु प्रिय जीकी ॥ बैशंपायन उवाच ॥ प्रथम दक्ष मानस बिधिधारा । बहुविधि कीन्हेउ भूत पसारा ॥ देवनादि क्रिमिलौ रचि दीन्हे । तब फिरि सृष्टि मैथुनी कीन्हे ॥ बीरन नृपकी सुता सयानी । दक्ष प्रजापतिकी प्रियरानी ॥ पांच शत सुत तासों जाए । नाम एक हर्य्यश्व सोहाए ॥ तिन मनमे जग रचना चीते । तिमि नारद मुनि कलह पिरीते ॥ कौतुक बचन सुनाइ सुदेही । तिनको नाश कीन्ह सब जेही ॥ सुनि जनमेजय बूझो ऐसे । दक्षसुतनि नाशा मुनि कैसे ॥ बैसंपायन उवाच ॥ दक्ष पुत्र जग रचना इंछे । तिन्हहि आइ नारदमुनि सीछे ॥ तुम बालक सब भूप कुमारा । चाहत कीन प्रजा बिसतारा ॥ भुव प्रमाण पहिलै लखि लेहु । रचहु प्रजा तब सहित सनेहु ॥ सो सुनि ते दशदिशा सिधारे । लिखे भूमि प्रमाण सुखारे ॥ * * * * * * * * * * * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

अबलो ते बहुरे न फिरि भूप भूरिपरताप । भए जलधिगत फिरत नहि जथा आपगा आप ॥

॥ ❁ ॥ चौपाई ॥ * ॥

तिन्ह हि गए फिरि दक्ष बिचारी । सहस पुत्र कीन्हेउ पनधारी ॥ सोई बाणी पुनि तिन्ह हि सुनावा । वाही बिधि उत उन्ह हि पठावा ॥ सो सुनि दक्षप्रजापति कोपे । नारद नाशन को प्रन रोपे ॥ ब्रह्म अंधिन लै बैधा आए । बहुत भांति कहि साप बराए ॥ दक्ष कहा तब बर ऋषि गोई । नारद मीत न यासुत होई ॥ दक्ष सुता कस्यपकह दीन्हा । बसि ता गर्भजन्म मुनि लीन्हा ॥ साप भय दक्ष हिए अनुमानी । जाए दुहिता षाठि सयानी ॥ दश तिय दक्ष धर्मकह दीन्हा । तेरह लै कस्यप तिय कीन्हा ॥ तिय सुचि सोम सताइस धारी । रिष्टिनेमि लीन्हेउ तिय चारी ॥ द्वै बहु पुत्र प्रिया परबाना । भई राय अंगिरस अधीना ॥ अब क्रशाश्वउ द्वलीन अनूपा । सबके नाम सुनहु अब भूपा ॥ अरुंधती बसुजामी लंबा । भानु मरुत्वति धर्मप्रलंबा ॥ संकल्पा सुमूहूर्त्ता कहियै साध्या बिश्वा सुनि मुद गहियै । ए दश धर्म तिया अनुमानो ॥ तिनके सुतके नाम बखानो । पृथिवी विषय अरुंधति जाए ॥ बसु सुत एवसु बसु मनभाए । नभैं नागवियी जामीके ॥ घोष पुत्र लंबा

गामीके । भानूके सुत भानु प्रकाशे ॥ मरुत्वतीके मरुत बिलासे । संकल्पा संकल्पहि जाई ॥ पुत्र मुहूर्त मुहूर्ता पाई ॥

॥ ❁ ॥ दोहा ॥ ॥ ❁ ॥

साध्या सुत साध्या सुभग सुनु जनमेजय भूप । बिश्वाके सुत प्रगट जग बिश्वदेव अनूप ॥ आठवसुनके कहत अब नाम बंश सुनु भूप । प्रथम आप ध्रुव सोम धर अनिल अनल सुभरूप ॥

॥ ❁ ॥ चौपाई ॥ ❁ ॥

अरु प्रत्युष प्रभाष बखाने । पुत्र आपके चारि सुजाने ॥ प्रथम बितंड्य बऊरि अमजानी । अंत कहत पुनि मुनि बिज्ञानी ॥ ध्रुवके पुत्र काल सुनुभूपा । बर्चस सोम तनय अनुरूपा ॥ धर सुत द्रबिन शि रहत आने । प्राण रमन ए पांच बखाने ॥ अनिल कुमार मनोजव भूपा । अबिज्ञातगति दुतिय अनूपा ॥ भए अनलके सुवन कुमारा । षट कृतिका स्तन निज सुख धारा ॥ नैगमेय अरु साख बिशाखा । तासु अनुज सुनु नृप मतिभाखा ॥ भे प्रत्युषके सुत ऋषि एकू । देवल दुतिय भए सबिबेकू ॥ देवलके तनया एक जाई । बिदित बृहस्पति ताके भाई ॥ सो प्रभासकी पतिनी प्यारी । ता सुत बिशुकरमा गुण भारी ॥ जे तेरह कश्यपकी नारी । नाम तासु सुनु भूतलचारी ॥ अदिति दिती दनु ताधा जानो । बिनता सुरसा कद्रू मानो ॥ धरा सुरभि अरु इला गनाई । बऊरि स्वसा मुनि अश्वा भाई ॥ सुरभी कश्यप दंपति भाए । तिनसों रुद्र एकादश जाए ॥ अजैकपात्त हर त्र्यंबक रैवत । अहिर्बुध्न बऊपशुदेवत ॥

॥ ❁ ॥ दोहा ॥ ❁ ॥

अपराजित अरु वृषाकपि शंभु कपर्दी जानि । नाम पिनाकी कहत सबलिए पिनाकसुखानि ॥

॥ ❁ ॥ चौपाई ॥ ❁ ॥

चाक्षुष मन्वन्तर सुचिता भे । द्वादश सुरवर गुरुतप धामे ॥ तुषिता एक नाम सबकेरा । तिन सब संमत निज मति हेरा ॥ इनको अंतर बीतन लागे । वैवस्वतको लागने लागे ॥ उभे संधिमो यह मन त्यागी । अदित गर्भ है प्रगटे भागी ॥ तनु तजि अदित गर्भ बे जाए । तब द्वादश आदित्य कहाए ॥ शक्र बिशु अरु त्वष्टा धाता । सविता पूषा भग सुनु ताता ॥ मित्र अर्य्यमा अंशु बिराजे । बरुण बिवस्वा सुखसाजे ॥ जे नक्षत्र सताइस भाई । सोमप्रियाते बऊसुत जाई ॥ अरिष्ट नेमि पतिनीके आए । षोडश सुत बरतप कर पाए ॥ बऊ पुत्र तियाके चारी कुमारी । बिधुत नाम भई गुण भारी ॥ भे अंगिरस तनय सुचि भेषा । सुचवार नव अधिष्ठित देषा ॥ भे कृशाश्व शुभ बलगामी । देवअस्त्र अधिकारी स्वामी ॥ देवप्रभृत कहेजे नामी । इन्हें आदि बऊ अंतरजामी ॥ बिधिके दिन प्रमाण मन

धारी। फिरि तन तजि सुचि सुहृद सुखारी ॥ बिधिमें लीन रहे सब ऐसे। रहत बीजमें मिलि तरु जैसे ॥ प्रगट होहि यहि बिधिते तैसे। अस्त होत प्रगटत रबि जैसे ॥

॥ ॥ दोहा ॥ ॥

दितिके दोय तनै भए हिरण्यकसिपु बलवान। अरु हिरण्य चख बर गरब औगुन ओघ धाम ॥

॥ ॥ चौपाई ॥ ॥

हिरण्यकसिपके भे सुत चारी। ह्राद नाम संह्राद अनारी ॥ अनल्हाद फिरि भयो सुखारी। अरु प्रह्लाद सुतत्वबिचारी ॥ प्रह्लाद पुत्र अह्लद निरदंदा। संह्राद तनै हैं सुंद निसुंदा ॥ अनल्हाद सुत आपू एका। नृप प्रह्लाद जु सहित बिवेका ॥ बिष्णुभक्त भावत अपारा। भयो बिरोचन तासु कुमारा ॥ तनय बिरोचनको बलि धीरा। बान बार बलिको बरबीरा ॥ हे बलिके सुत बली अनेका। तिनमे बडे बान सबिबेका ॥ इंद्रदमन सुत बान बलीके। लोहिति तियसो प्रगटे नीके ॥ पांच हिरण्य नैनके बेटे। रहे बली बर बिरद लपेटे ॥ रही हिरण्य नैनकी चाही। सुता सिंहिका छाया ग्राही ॥ इति दितिवंश। अथ दनूवंश ॥ शत सुत भए दनूके भूपा। तिनमे कहे प्रधान अनूपा ॥ बिप्रचित स्वर्भानु पुलोमा। बैश्वानर हयग्रीव सजोमा ॥ अरु वृषपर्वा सुनु नृप ज्ञानी। कहे कहांलो सब अभिमानी ॥ स्वर्भानुकी प्रभा कुमारी। अरु पुलोमकी सची दुलारी ॥ बैश्वानरको दुहिता दोई। काली और पुलोमा सोई ॥ हयग्रीवकी तनया जानी। उपदानवी सुनु नृप ज्ञानी ॥

॥ ॥ दोहा ॥ ॥

वृषपर्वाकी हो सुता शर्मिष्ठा यह नाम। तिनके बंश कहे सुनो भूपति आनंदधाम ॥

॥ ॥ चौपाई ॥ ॥

प्रभापुत्रके नहुष उदारा। नृप जयंत है सचीकुमारा ॥ पौलोमा कश्यपसो जाए। साठि हजार पुत्र मनभाए ॥ चौदहशत कालोसो कीन्हा। तिन सब बिधिसो यह बर लीन्हा ॥ देवनसो नहि मरो बिधाता। तिन्हे फाल्गुण जाइ निपाता ॥ उपदानवी तासुके जाए। मेदुकंत महत बल गाए ॥ सरमिष्ठाको पुर भो पूता। तासो बाढ्यो बंश बहूता ॥ सिंहिका हिरण्याक्षको जाई। बिप्र चित पति अनुपम पाई ॥ तासुत जेठो राहु बखानो। बातापी सुचि इल्बल जानो ॥ इन्ह हि आदि सुत शतक ताके। पुत्र पउत्र अनगिने ताके ॥ इति दनूवंश ॥ अथ ताम्रावंश। षट तनया ताम्राकी जानो। काकी श्येनी भाषी मानो ॥ सुग्रीवा सुचि गृध्रा कहिये। तिन जाए जेहि तेहि स्मृति लहिये ॥ काकी काक उलूकनि जाई। श्येनी बाजप्रभृति नृपराई ॥ भाषी भाषादिक रचि दीन्हा। गृध्रा गीधन प्रकटित कीन्हा ॥ सुची अर्द्ध जलजंतु ससोखा। सुग्रीवा हय खर लखगीवा ॥

इति नागवंश । अथ विनतावंश । अरुण गरुड विनताके बालक । सुरसाके अहि उरगति बालक । कद्रूके नाग कहावें ॥ एक अनेक फणनिसो भावें । तक्षक वासुकि शेष प्रधाना ॥ विनता कद्रुवंश बखाना ॥ दोऊ वंश बढ़त बढ़िजाते । बीरहबहुत सुपर्ण निपाते ॥ जबलगु बहुता पक्षी जेते । कीन्हो प्रगट धरा सबतेतें ॥ गाय महिष ए सुरभीके है । तरु तृण लता [illegible] ताके ए है ॥

॥ ❀ ॥ दोहा ॥ ❀ ॥

भए यक्षाके तनय ए यक्ष राक्षस सर्व । भूतिके अपरहंद है अरिष्टाके गंधर्व ॥
कश्यपसों भूपाल मनि भई सृष्टि एहि भांति । सारोचिष मनुको रह्यो अंतर हेमरकांति ॥

॥ ❀ ॥ चौपाई ॥ ❀ ॥

अब आगे सुनु कथा सोहाई । वैवस्वत मन्वन्तर पाई ॥ देव दैतवों भयो विरोधा । देव दैत्य बधि कीन्हे उ बोधा ॥ तब दिति तपि कश्यपकहं तोषी । माग्यों बर यह अन्तर रोषी ॥ देव देउ मोहि सुत बलबीरा । बधे सुरपति हि जो रणधीरा ॥ होय पुत्र यह कश्यप भाषी । जो मनवरित गर्भ बकु राखी ॥ सहित अचार विचार सुदाई । तेई तब कहा सधिहि समसाई ॥ तब निजतेज तासु जिय थापी । करन गए तप कश्यप जापी ॥ रहि तब ता ढिग करि कछु भेसा । शंकि असुपति सेवन सुरेसा ॥ कछु दिन प्रभेद कहा अनुसारे । दिति सोई बिनु पाय पखारे ॥ नासुपथ तनुतन धारि नृप याहू । वज्रपानि सात सात करि तासू ॥ रुदन करनते लगे दुखारे । मारुद मारुद इंद्र पुकारे ॥ तिन्ह सहित बाहेर काढ़ि आए । तबते मारुत नाम धराए ॥ ते श्वासाश्वास वायु भू स्वामी । तबते भए इंद्र अनुगामी ॥ अनाचार सुनु भूतल प्रासन । जनको होत सर्वविधि नासन ॥ ताते अनाचार नहि कीजे । श्रुति पुराणको सिख सिखि लीजे ॥ ❀〰❀〰❀〰❀〰❀〰❀

॥ ❀ ॥ दोहा ॥ ❀ ॥

तिन्ह इंद्र कीन्हा तदन सात सात करि एक । सात सात मंडल अधिपअनुमिए सहित विवेक ॥

॥ ❀ ॥ चौपाई ॥ ❀ ॥

सुनऊ नृप अब विधिकी बाते । सहित प्रेम मुद मैं हि अघाते ॥ लोक लोक अवलोक सुमेधा । किए इतना अधिकारी वेधा ॥ द्विजवल्ली ग्रह नख तम तारहि । किया अधिप यात्रि अपन सुधाके ॥ यक्षके बरुण कुबेर धनपनके । बसुके पावक रुद्र वृषभनके ॥ विष्णु अधिप द्वादशआदितके । पति मखवाद हि दनुज दुहितके ॥ सागर नदी नेव करुणाके । किशो अधिप पर्जन्य सदाके ॥ [illegible] धिप [illegible] कीन्हे । नागअधिप वासुकि करि दीन्हे ॥ प्रेतनको धिप तक्षक भीके । [illegible] पति कीन्ह इन्हीके ॥ तिमि अब बार बार पद भाख । [illegible] कथाआदि वेश्यार ॥ तासु अधिप तक्ष

[illegible] । विप्रमधिप [illegible] मानो ॥ अरु [illegible] सूत [illegible] । [illegible] मुरमंडल राखो ॥ सिंधु सरितके स्वामी [illegible] । पर्वतपति हिमवंतहि आके ॥ साध्यनके [illegible] ॥ रुद्रनके वृषभध्वज नामो ॥ [illegible] के राजा । गजपति विधि ऐरावत साजा ॥ अश्व अधिप उच्चैः श्रव गाए । पच्छिनके पति गरुड़ [illegible] ॥ ❁ ❁ ❁ ❁ ❁ ❁ ❁ ❁

॥ ❁ ॥ दोहा ॥ ❁ ॥

चित्ररथहि गंधर्वपति कीन्हो विधि सब [illegible] । [illegible]पति [illegible] सुनिए भूप सुनीति ॥

॥ ❁ ॥ चौपाई ॥ ❁ ॥

गोपति किएउ वृषभकहं भूपा । वनस्पतीपति [illegible] अनूपा ॥ तदनु भूपमहि [illegible] बालक । अभिषेकेउ नृप अज दिग्पालक ॥ किया सुधन्वहि प्राचीदिशि पति । [illegible] ॥ कर्दमसुत दच्छिण दिशि पाला । नाम शंखपद किएउ भूपाला ॥ पच्छिमदिशि [illegible] सुत भूपा । केतुमंत तेहि किएउ अनूपा ॥ सुत प्रजन्यको उत्तरदिशेशा । नाम हिरण्यरोम शुभभेषा ॥ ते सब जथा प्रदेश महीपा । [illegible] पालत सब दीपा ॥ मुनिमुखकंज [illegible] । [illegible] बोले नृप अति ज्ञानी ॥ अब मुनिवर तपतेजनिधाना । कहहु मन्वन्तर केर विधाना ॥ [illegible] कहेउ नृपतोसों । कौरववंश हर सुनु मोसों ॥ मनुस्वयंभु स्वारोचिष आनो । औत्तम [illegible] मानो ॥ चाक्षुष वैवस्वत सावरणू । चारि मेरु सावरण सुवरणू ॥ भौत्य रौच्य ए [illegible] आनो । एहि प्रकार चौदह मनु मानो ॥ तिनके ऋषि सुत देवन कहिये । जो सुनि पुरुष [illegible] सुद [illegible] ॥ अत्रि मरीचि पुलस्ति मुनीशा । अंगिर भार्गव मुनि [illegible] ॥ अरु वशिष्ठ ए ऋषि [illegible] । मनु स्वयंभुके सुत शुभवेषा ॥ ❁ ❁ ❁ ❁ ❁ ❁ ❁ ❁ ❁

॥ ❁ ॥ दोहा ॥ ❁ ॥

मेधावसु अभिघ्न अरु [illegible] द्युतिमान् । हव्यश्रवण अरु पुत्र कहि कहिए ज्योतिष्मान् ॥

॥ ❁ ॥ चौपाई ॥ ❁ ॥

[illegible] मेधातिथि सुनु नृपज्ञानी । मनु स्वयंभुके सुत सुखदानी ॥ [illegible] और्व [illegible] प्राणा । अत्रि [illegible] गुरु ऋषिरा आना ॥ तुषितो देव पुत्र [illegible] । [illegible] ॥ प्रथित नभस्वद विप्रसु मनुके । ऊर्जसुत स्वारोचिष मनुके ॥ [illegible] । [illegible] वैवाग्निष्ठ कहाए ॥ ते ऋषि द्वितीय मन्वंतरके हे । जानु देवता तासु [illegible] । [illegible] बखाने । औत्तम मन्वंतरके आने ॥ [illegible] ॥ धाता ए ऋषि [illegible] सुसाजा । धुतिहि आदि दश सुत [illegible] ॥ [illegible] समनुमे हे गुण आकर ॥ वेदबाहु परजन्य मुनीशा । वेदशिरा पुत्र सुनु अवनीशा ॥ सत्य नेत्र

चर [illegible] । [illegible] चरित्रहु ॥ एकमि रैवत आदि सुभेता । [illegible] केता ॥ भूनिहि चारि [illegible] तपधामा । हे रैवत मनुके सुखिधामा ॥ [illegible] विरत [illegible] सुधाता । वीर धनिर्मोक सुनु ताता ॥ चत [illegible] । देव [illegible] विनिधीमा ॥ ❁ ❁ ❁ ❁ ❁ ❁ ❁ ❁ ❁ ❁ ❁ ❁

॥ ❁ ॥ दोहा ॥ ❁ ॥

[illegible] दिवोकस ए देवत [illegible] । चाक्षुषमनुके सुवन दश [illegible] ॥

॥ ❁ ॥ चौपाई ॥ ❁ ॥

गौतम अत्रि वसिष्ठ विराजे । भरद्वाज कश्यप तपभ्राजे ॥ विश्वामित्र विदित तपराशी । जामदग्नि सुनु [illegible] ॥ विश्वेदेव साध्य वसु वायू । चव आदित्य सुनहु वरआयू ॥ आश्वि नेय ए देव बखाने । सुत इक्ष्वाकु आदि दश जाने ॥ वैवस्वतमनुके सुनु भूपा । वर्तमान जे लसत अनूपा ॥ वर्तमान अरु भूत बखाना । अब भविष्य मनु सुनहु सुजाना ॥ अष्टम मनु सावर्ण सुभाषो । सुनि [illegible] के सुत मेधावी ॥ परशुराम अरु व्यास पुनीते । कृपाचार्य गालव मो जीते ॥ दुर्वासा अरु उर्वस लीने । अश्वत्थामा ए ऋषि कीने ॥ बारांबान आदिक दश पावन । [illegible] सुत सावर्ण सुहावन ॥ चारि मेरु सावर्ण गनाए । कश्यप प्रिया प्रियाके आए ॥ मेरु शिखर तिन वरतप कीन्हा । तब ते सुनो नाम यह लीन्हा ॥ ये जे चारि मेरु सावर्णू । रौच्य भौत्य ए है वर्णवरणू ॥ सातहु ऋषि अरु सुत सुरलहिते । जथा प्रमाण भोगि है मनहिते ॥ चौदह मनुजे कहें सुभाखे । सहस चौकडीयुग मांहि राखे ॥ बीते सहस चौकडी भूपा । बीत विधिको दिवस अनूपा ॥

॥ ❁ ॥ दोहा ॥ ❁ ॥

शयन करहि विधि प्रलय तब होइ सृष्टि संहार । युगसहस्र निशि सोइ फिरि जागि रचे संसार ॥

॥ ❁ ॥ चौपाई ॥ ❁ ॥

सुनि मुनीशके वचन पुनीता । फिरि इमि बोले नृपति सुनीता ॥ मन्वंतर युग विधि दिन नाहु । [illegible] ॥ मुनि सुनि कहा सुनहु नृपज्ञानी । कियो प्रश्न ता उत्तर आनी ॥ [illegible] प्रमाण बखानी । काष्ठा कहत गणितमय ज्ञानी ॥ काष्ठातीस कला पर माहा । [illegible] जाला ॥ [illegible] कोउ । कहत भागवत निशु दिन दोउ ॥ [illegible] ॥ दोय मासको ऋतु सुनु भूपा । तीनि [illegible] अनूपा ॥ दोय [illegible] रूप पूजे । बरिस मीरा यह सब कोउ बूझे ॥ मास [illegible] । सो [illegible] निशु दिन होई ॥ [illegible] दिन विकता [illegible] । [illegible] सो राति अपारा ॥ [illegible] प्रमाण लपाला । देवनको निशु दिवस बिशाला ॥ उत्तरायण

दिन अरु रात बखानी । दक्षिणायन जो सो शुभवानी ॥ यहि विधि जो नृप देववरीसा । तीसगुण मनु नितुदिन दीसा ॥ नितुदिन दशगुण पक्ष कहावै । यहि दशपक्ष मास मनु पावै ॥ द्वादश मास छहे ऋतु होई । छहि ऋतु होइ अयन मनु कोई ॥ दोय अयन यहि पूरित होई । मनुको वरिस कहै सबकोई ॥ देववरिस वर चारिहजारू । सतयुगको वर भोग विहारू ॥ ❀❀—❀❀

॥ ❀ ॥ दोहा ॥ ❀ ॥

चारि चारि सतसंधि दै भूपति करो विचार । चारि सहस्र अरु आठ शत सतयुगको संचार ॥

॥ ❀ ॥ चौपाई ॥ ❀ ॥

वरिस हजार तीनि परमाना । त्रेतायुगको भोग विधाना ॥ तीनि तीनि सतसंधि विचारे । तीनिसहस्र षटसत अधिकारे ॥ द्वापर दोयहजार वरीसा । भोग भोगवत सुनु अवनीसा ॥ द्वै द्वैशत देसंधि समेता । दोय हजार चारिसत एता ॥ कलजुग वरिस हजार विराजै । शत शत वरिस संधि सुभ साजै ॥ एक हजार दोयशत मानो । द्वादश सहस वरिस सब जानो ॥ ए जुगचारि चौकडी नामी । ता एकहत्तरिके मनु स्वामी ॥ सहस चौकडी जुगते हि माहीं । चौदह मनुगण भोगिनसाहीं ॥ सो कलपांत कहत सब लोका । बीते विधिको दिवस अशोका ॥ बीतमए दिन संध्या आवै तब वेधा निद्रित नृप होवै ॥ तब कछु लखि ईश्वरकी आसैं । द्वादश आदित प्रचंड प्रकासैं ॥ भसम होहिं चर अचर जहांते । सुरनआदि सब कहैं कहांते ॥ विविध विधान विधिसों वगरे । लीन होहिं विधिमे सिगरे ॥ होहिं स्वतेज भसम रवि जेऊ । लीन होहिं विधिमे सब तेऊ । पसरे पूर पयोधि पसारा । यहि ईश्वर ईछा अनुसारा ॥ सयन करहि तब सुचित विधाता । सकल पसारु धारि निजगाता ॥ सहस चौकडीके परमाणा । बीते निसि तब सुनऊ सुजाना ॥ ❀—❀—❀—❀

॥ ❀ ॥ दोहा ॥ ❀ ॥

जागि विरंचि विचार करि विरचैं विश्व अखेद । ताही क्रम वेदं सकल प्रजा प्रजापति वेद ॥
जथा दुकान समेटि सब सोवै बनिक सुजान । भोर पसारै जागि तब सोई वसतु अमान ॥

॥ ❀ ॥ चौपाई ॥ ❀ ॥

वैसंपानि कहा सुनु भूपा । वैवस्वतको जन्म अनूपा ॥ रवि कश्यपके तनय सोहाए नाम लिया तिन पाए ॥ विसुकरमाकी तनया सोई । रविके तेज दुखित वो होई ॥ तीठि तीठि सो द्वै सुत आई । वैवस्वत यह जम सुखदाई ॥ दुहिता एक सरस अभिरामा । कालव आदि जग जमुना नामा ॥ थिरि न सकी सहि तेज अमाना । तब सज्ञा हियकरि अनुमाना ॥ निज छायाकहं तियतैं कीन्हो । निज अनुरूप ताहि लखि चीन्हो ॥ कहेसि रहऊ सुत नृपने पाला । पीहरक तीन करऊ प्रति पाला ॥ ताते न पावैं रवि यह भेदा । इमि कहि पितुघर गई अखेदा ॥ विसुकरमा ते

हि लखि रिषि कीन्ही। निदरि मिलामन बहु बिधि दीन्ही ॥ सो सुनि संज्ञा फिरी लजाई। भई अवनी रूप बनाई ॥ उत्तर दिसा कुरु एक देसा। तहां आइ बिहरै तिहि भेसा ॥ छाया रूप भई रवि घरनी। सो आरसि है सुत बरबरनी ॥ जेठे मनु सावरण बिलासी। दूजे सनि सुभ सुखमा रासी ॥ निज सुतमें माया अधिकारी। छाया करै सगुण अनुसारी ॥ सो प्रभाव सब यम लखि पावा। मारणको निज चरण उठावा ॥ तब तेहि शाप दीन्ह रिषि रानी। तेरे चरण गलें उतपाती ॥

॥ ❀ ॥ दोहा ॥ ❀ ॥

सो सुनि डरि जम सूरसों कही कथा सब आइ। जननी दीन्ही शाप सो दीजे पिता बराइ ॥

॥ ❀ ॥ चौपाई ॥ ❀ ॥

सो सुनि कह्यो सूर गुणज्ञाता। जननी शाप मिटिहि नहिं ताता ॥ यह पग गलि दूसर पग होइहि। तो मनको सब संशय खोइहि ॥ तासु बोध करि तिय ढिग आए। बूझन लगे भेद मनभाए ॥ कहे न भेद सूर तब तेखे। तब धरि ध्यान बिधान निरेखे ॥ गच्छ गहि शाप न चहे रिसाई। तब तेई सब बिरतांत बताई ॥ सो सुनि बिशुकरमा पे आए। लखि अतिनी हिय कोप बसाए ॥ रबिहि पेखि बिशुकरमा डरपे। अर्घ्य पदारथ बहु बिधि अरपे ॥ रविसों बिशु करमा कर जोरी। कह्यो न संज्ञाकी कछु खोरी ॥ तुव प्रताप अति उग्र गोसाईं। सहि न सकै नैंनकी नाई ॥ जौं दिनेश प्रभु देउ निदेशू। तेज सुधारि करौं शुभ भेशू ॥ तब रवि तेहि अनुशासन दीन्हा। तेज छेलि तेई तनु सम कीन्हा ॥ सुरनें तेजपुंज भे न्यारे। ते द्वादश आदित बपु धारे ॥ मित्र बरुण भग त्वष्टा धाता। पूषा इंद्र अरयं सुभ ताता ॥ बिबस्वान् अरु बिष्णु सुलेखे। ए द्वादश आदित बपुभेखे ॥ और जगतें तेज निकारे। बिशुचक्र सुचि तासु सुधारे ॥ तब रवि आपु अश्वबपुधारी। गए तहां जहं तिय शुभ धारी ॥ [illegible] सुखद मुख तासू। रतिचेष्टित भा बीर्ज खलासू ॥

॥ ❀ ॥ दोहा ॥ ❀ ॥

[illegible] सो भए दोऊसुत तासु। नसत्य अरु दस्र जे सुरबद्य गुणरासु ॥

॥ ❀ ॥ चौपाई ॥ ❀ ॥

ते [illegible] तन धारी। बिहरैं सुचित चित शुभ चारी ॥ बैबस्वत भे मनु अधिकारी। पितृ [illegible] भारी ॥ मनु सावरण भविष्यत रेखा। तबै मेरु तप सुभभेखा ॥ [illegible] यम [illegible] सुत सोऊ ॥ जमुना भई नदी वरपावन। ए रविके सुत सुता सुहावन ॥ रविसुत बैबस्वत मनु भूपा। पालक [illegible] अनुरूपा ॥ जाहो न सुत तिन

[illegible] दिन बीते । करनलगे मख पुत्र पिरीते ॥ [illegible] सुता सुभद्राकृति ॥ सो यह इला नाम सुखदाई । [illegible] आई ॥ [illegible] निदेशा । सो मैं करों रहो तेहि वेशा ॥ तब तेन कहा नृपतिपह जाऊ । होऊ सुदुम्न [illegible] लाऊ [illegible] तब मनु नृप पाही । [illegible] बुध मग मांही ॥ सुत पुरुरवा [illegible] । [illegible] लसे [illegible] ॥ तबनु इला पुरुष तनु धारी । नाम सुदुम्न महोतम [illegible] ॥ सुत सह [illegible] आई । [illegible] बिरतांत सुनाई ॥ मनुके [illegible] भे इक्ष्वाकू । प्रगट नासिका तें शुभ साकू ॥ मनुकी तिया आठ सुत जाई । नाभाग धृष्ट सर्याति नृपराई ॥ *⁓*⁓*⁓*

॥ ❀ ॥ दोहा ॥ ॥ ❀ ॥

यह निरिष्य कहि प्रांशु फिरि कहिये नागादिष्ट । भूप करुष इषध्र ए पावक प्रजा सुदिष्ट ॥

॥ ❀ ॥ चौपाई ॥ ❀ ॥

भे सुदुम्नके सुवन सोहाए । उतकल अरु बिनताश्व गणाए ॥ उतकल नृप उत्तर दिशि पाए । गय लहि पूरब गया सोहाए ॥ बिनताश्वहि पश्चिम दिशि दीन्हा । [illegible] ॥ प्रतिष्ठान जो देश सुराजा । सो सुदुम्न कह दीन्हेउ राजा ॥ जो अब [illegible] कहावै । [illegible] लिंग महिमा पावै ॥ दंड आदि सुत तीनि सोहाए । प्रगटे फिरि सुदुम्नको जाए ॥ [illegible] रचे प्रवीना । पावन परमा पूर चहोना ॥ इलीवपुमें बुधसों जाए । जो पुरुरवा [illegible] ॥ प्रतिष्ठानको नृप तेहि करिकै । गए सुदुम्न स्वर्ग मुद भरिकै ॥ भे नाभाग [illegible] । [illegible] भागवत बखाना ॥ धृष्ट पुत्र धर्ष्टक रणधीरा । सुत नरिष्यके सका सुबीरा ॥ [illegible] ते कारुष नाम गुण गाने ॥ भे नाभागदिष्टके बारा । ते [illegible] ॥ [illegible] फिरि बरमागी । लहैं द्विजत्व कर्म अनुरागी ॥ भए इषध्र प्रांशुके बालक । [illegible] बालक ॥ प्रांशु तनय भे भूतलभरता । नृप सर्याति दुवन दल दरता ॥ भे सर्याति [illegible] नृप आनर्त नाम अभिरामा ॥ कन्या एक सुकन्या नामी । भे [illegible] ॥ भे आनर्त तनै बलभारी । रैवाद्यपवर भूमिविहारी ॥ रैवतको सुत रैवत लायक । [illegible] सुखदायक ॥ ⁓*⁓*⁓*⁓*⁓*⁓*⁓*⁓*⁓*⁓*⁓

॥ ❀ ॥ दोहा ॥ ❀ ॥

रैवतके सुत सौरहैं शत परमित अभिराम । तिनमें रैवत है बडे नीतिनिपुण गुणधाम ॥

रैवतकै कन्या भई तासु रेवती नाम । [illegible] ॥

॥ ❀ ॥ चौपाई ॥ ❀ ॥

गगण गुमन विधिको लखिठाढे । देखि [illegible] रहे मुद बाढे ॥ [illegible] बूझेउ विधिसों चित चाही । इंम देउ कन्या यह काही ॥ बिधि हसि कहा जाइ जग देखो । [illegible] सेखो ॥

[illegible] विजपुरी सुधामी। सो भई बस्ती द्वारिका नामी॥ औरे जुगजन [illegible] महिमा [illegible]॥ है वसिरामहि सुता सोहाई। बैठे आपु मेरुपै आई॥ [illegible] भूप। परम तपस्या करी अनूपा॥ वैवस्वतके सुवन सलोने। [illegible] इक्ष्वाकु [illegible]॥ [illegible] पति तिनकहं कीन्हे। गुरु वसिष्ठको आसन लीन्हे॥ ताके सब सुत [illegible] सोहाए। ताते बड़े विकुक्षि गनाए॥ तासु अजोध दूसरो नामा। तिन यह रच्यो अयोध्या धामा॥ भे विकुक्षिके तनै [illegible] नृप ककुत्स्थ जे विश्व बखाने॥ चढे ककुद जे इंद्रवृषभके। नाम ककुत्स्थ लह्यो [illegible]॥ असुरनसों वर संगर कीन्हा। मारि तिन्है दुर्लभ जय लीन्हा॥ ताके सुवन अनेन अमाना। सुत अनेनके पृथ बलवाना॥ तनै भाइ पृथके धनुधारी। ताइ तनै युवनाश्व विचारी॥

॥ ❀ ॥ दोहा ॥ ❀ ॥

भए तनै युवनाश्वके नृप श्रावस्त सुजान। प्रगटे सुत श्रावस्तके नृप वृहदाश्व अमान॥

॥ ❀ ॥ चौपाई ॥ ❀ ॥

[illegible] तनैगुणखानी। नृप कुवलाश्व महीतल जाना॥ धुंधमार भो नाम विख्याता। तासु धुंधको [illegible] निपाता॥ मुनि बोले जनमेजय जैसे। को हो धुंध बध्यो तेहि कैसे॥ वैशंपायनि कहा [illegible] कथा अनुपा॥ वैशंपायनउवाच॥ है कुवलाश्वहि राज्य विलासा [illegible] वनवासा॥ चले [illegible] मिनि आई। मुनि उतंक निज सोच सुनाई॥ भूपति [illegible] धोरे। भूमि बालुका मांझ धंकघोरे॥ तहं मधु सुत है अत तन घोरे। धुंधनाम [illegible] कठोरा। छोडे स्वासवायु अतिघोरा॥ धूरि धूमसों धुंधूरि [illegible] भूमि [illegible]॥ बरषै आगि अमोघ अपारा। तामधि तपत बालुका छारा॥ [illegible] नहि कबहु विसारै॥ ताहि मारि नृपकानन ब्राऊ। होई [illegible]॥ नृप कुवलाश्वहि दीन निदेशु। मारऊ सठहि जाइ मुनि देसु॥ नृपति [illegible]। [illegible] वीरले अरु धनु हाथा॥ सत सुत रहे तिन्है संग लीन्हे। धुंध [illegible]॥

॥ ❀ ॥ दोहा ॥ ❀ ॥

तबतै नृप कुवलाश्वके विष्णुतेज तेहि काल। प्रविश्या जाइ अनीव जो है अत कुलकोकाल॥

॥ ❀ ॥ चौपाई ॥ ❀ ॥

नृप [illegible] निरेखी। [illegible] सुवन तन देखी॥ लहि निदेस ते हेरन लागे। [illegible] सरोष खनि दिशिदिशि पागे॥ पश्चिमदिशि [illegible] कृपालु। मुखते काढि कराल कृपानु॥ तिनमें सुत सतासमें जरिगे। पिरि जलको [illegible]॥ तब नृप करि अतिकोप विहारा। मान

[illegible] करि [illegible] प्रकारा ॥ यहि बरिमि [illegible] ॥ [illegible] नाम [illegible] ॥ [illegible] कहिं सुरनग हरषे । सुमन समूह भुपपैं बरषे ॥ धुंध नाम [illegible] ॥ भो [illegible] भूपा ॥ भै कुवलाश्व तनै [illegible] । [illegible] तीनि बचेरहि ह्वरे ॥ हे [illegible] सुत [illegible] । [illegible] भे हरि [illegible] ॥ तासुत भै [illegible] धनुधारी । तासुत संहताश्व [illegible] ॥ द्वै सुत [illegible] जाए । [illegible] ॥ [illegible] सुत जगजेतां । भै प्रसेनजित नीति निकेता ॥ तासु तने युवनाश्व [illegible] । मांधाता सुत तासु [illegible] ॥ द्वै सुत मांधाताके ताता । पुरुकुत्स मुचुकुंद सुदाता ॥ पुरुकुत्सके सुत बिख्याता । भै [illegible] ॥

॥ ❀ ॥ दोहा ॥ ❀ ॥

ताके सुत शंभू भए तासु सुधन्वा पूत । [illegible] त्रिधन्वा ताके सुत धनुधारी मजबूत ॥

॥ ❀ ॥ चौपाई ॥ ❀ ॥

तनै त्रिधन्वाके सुखरासी । भै त्रैय्यारुण भूमि बिलासी ॥ भयेउ तासु सुत [illegible] । नाम सत्यव्रत अति उनमादी ॥ पाणिग्रहण समैकों तेही । [illegible] मुनि त्रैय्यारुण अति कोपी । तासों कह्यो जानि पथलोपी ॥ तू चण्डालकर्म अधिकारी । [illegible] कहि दीन्हेउ ताहि निकारी ॥ गुरवसिष्ठ नहि कीन्ह निवारण । [illegible] ॥ नृप त्रैय्यारुण मुनिव्रत धारी । बसे जाइ बन [illegible] ॥ [illegible] पालहि सब तेते ॥ त्रैय्यारुणकों तनै सदोषा । गुरुवसिष्ठपै दुइ बिधि रोषा ॥ [illegible] अवरषण भयज । ताके पाप मोर सब गयज ॥ [illegible] उपाधी । [illegible] गरगुण बाधो ॥ कौशिकको तिय बेचन लागी । सो [illegible] ॥ [illegible] धीरज दीन्हे । [illegible] बंधन मोचन कीन्हे ॥ [illegible] मारि तासु [illegible] । [illegible] खिलावै ॥ एक दिना मृग पायसि नाही । गुरु सुरभी [illegible] ॥ [illegible] अतिकोपे । तासु त्रिशंकु नाम आरोपे ॥

॥ ❀ ॥ दोहा ॥ ❀ ॥

पितु अवज्ञा प्रथम कहि गोवध करिबो दोय । तीजे [illegible] त्रिशंकु [illegible] ॥

॥ ❀ ॥ चौपाई ॥ ❀ ॥

इतनेमे कौशिक मुनि आए । [illegible] अति सुख पाए ॥ [illegible] एहि ठांउ । [illegible] ॥ कौशिक [illegible] बजाइ नगारा ॥ मुनि तेहि यज्ञ करावन लागे । [illegible] पागे ॥ [illegible] तहां न आए । सुर मखभाग न लीन्ह सुभाए ॥ [illegible] । [illegible] सब जुदे

अधरमू ॥ तब कौशिक मुनि कोप बढावा । भूप हि सरग सदेह पठावा ॥ चला वशिष्ट हि गरब सुनाई । अधबिच कहा वशिष्ट रिसाई ॥ गिरत देखि तेहि गगण मझारे । उतरहु कौशिक बचन उचारे ॥ रहा त्रिशंकु लटकि नभ कैसे । बिचि चुंबक बिच लोहा जैसे ॥ भे त्रिशंकुके सुत भूभरता । नृप हरिचंद दुवन दल हरता ॥ तासुत रोहित अरिमदहारी । हरित तासु सुत हित हियहारी ॥ ता सुत चंचु चंचु सुत होई । बिजय सुदेव कहत सब कोई ॥ भए हरुक बिजय सुत बीरा । तासुत हरुक सब गुणन गंभीरा ॥ हरुकके पुत्र बाहु बलवाना । ते न लखे नृप नीति बिधाना ॥ नृपति बाहु पे अरि चढि आए । तिनसों बाहु पराजय पाए ॥ *⊂⊃*⊂⊃*⊂⊃⊂⊃*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

बाहु जाय बनमे बसे और्वस ऋषिके पास । तहांभए सुत सगर नृप जाको सुजश प्रकाश ॥
दोरदंड कुदंडसों धरि कोदंड कराल । सगर रोष परचंड करि जीत्यो तिन्हें उताल ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशीवासिगोकुलनाथात्मजेन गोपीनाथकविना विरचिते भाषायां भारतान्तर्गते हरिवंशदर्पणोनाम चतुर्थोऽध्यायः ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

जनमेजयउवाच । केहि औगुण नृप बाहु पराजे । सहे कहो मुनि शंसै भाजे ॥ सगर नामताके सुतकेरा । सो काहे करि कहो निबेरा ॥ कहा मुनीश सुनहु परबीना । बाहु भूप हे व्यसन अधीना ॥ जुवा सिकार खेलि दिन खोए । कै जुवतिनके संग परि सोए ॥ असती निरगुण हास्य प्रवीने । तिन्हे सभासद करि हित चीन्हे ॥ मंत्री सुभट गुणी जितितोके । तिन्हे न कीन्हो प्रियसम जीके ॥ सो सुनि अरि अब गाजन लागे । लरि न सके तब एहि गुण भागे ॥ काल जंघ सक हैहय आदी । क्षिय राजवंश ए उन मादी ॥ सगर मातुकी सौति अयानी । गर्वसमे गर दीन्हेसि जानी ॥ गरसों भयो न कछू अकाजा । गरसह भयो पुत्र गुनु राजा ॥ ताते सगर नाम मुनि कीन्हा । मंत्र दीव्य बाबल कर होबना तिन अबल नृप रिपुदल जीता । पालेउ प्रजा पुनीत सुनीता ॥ सगर नृपतिकी तिया पुनीती । रहि दोय शुभचरित सुनीती ॥ और्वसऋषि तिनकह बर दीना । है इमि कहा लोक अरना ॥ साठिहजार पुत्र एक नारा । होहि एकके एक कुमारा ॥ जेठी तिये एक सुत मागी । छोटी साठिहजार अनुरागी ॥ भई गुर्बिणी दोउनारी । ईश्वरकी माया अधिकारी ॥ *⊂⊃⊂⊃*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

कछौकालबीते तिय एकके तूंबाके आकार । भरे पुत्र तेहि बीजसम तिलमित साठीहजार ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

घृतभरि कुम्भ भूप धरवाए। साठिहजार मोदसों छाए॥ एक एक सुत तिनमें कीन्हा। एक एक प्रति धाइ न दीन्हा॥ सबै पाइते भए सयाने। अतिबलवान जगतमें जाने॥ जेठीतियके सुत शुभ करणी। भे असमंजस पालक धरणी॥ भूप सगर जग जीतन चोपे। अश्वमेध बरबस आरोपे॥ साठिहजार पुत्र संग लागी। चले अश्वरक्षण अनुरागी॥ अग्निकोणमें अश्वचोराई। बांधो इंद्र कपिल ढिग जाई॥ अश्व अद्दिश्य भए नृप बारे। मही खोदि सागर करिडारे॥ जाई पताल कपिल कहं देषे। अश्व निकट लखि अतिसै तेषे॥ तब तिन तहां कीन्ह उतपाता। कपिल कोप करि तिन्है निपाता॥ सगर आइ बहु अस्तुति कीन्हा। कपिल ताहि शुभ आशिष दीन्हा॥ सगर सुतनके खंधे बनाए। ताते सागर नाम कहाए॥ सगर सुवन असमंजस नामी। ते भे भूरि भूमितल स्वामी॥ असमंजसके सुवन महीपा। अंशुमान भे पालक दीपा॥ तासुत भूप दिलीप सुसाजा। तासुत भए भगीरथ राजा॥ तासु सुवन श्रुति स्मृतिपथ गामी। श्रुतिके सुत नाभाग सुधामी॥ भे नाभाग तनै बरबीरा। अंबरीष रणकर्कस धीरा॥ तासुत सिंधुदीप दलवाहक। तासुत अयुताजित गुण गाहक॥ *◆*◆*◆*◆*◆*◆*◆*◆*◆*◆*◆*◆*◆*◆**

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

अयुताजितके सुवन शुचि भे रतबरण सुजान। तासुत आर्त्तापर्णि नृप शोसक धनुष विधान॥
तासुत भए सुदास नृप तासुत कल्मषपाद। दुतियनाम है मित्रसह जो पूरक अहलाद॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

तासुत सर्वकर्म जगजाने। तासु तनै अभरण्य बखाने॥ ताके तनै निघ्नपथ गामी। ताके सुत आनमित्र सुनामी॥ ताके सुत दुलिदुह गुणग्रामा। ताके सुत दिलीप छबिधामा॥ भें दिलीपसुत रघु नरनाऊ। रघुके सुत अज दीरघबाऊ॥ अजके सुत दशरथ बडभागी। तासुत राम स्वजन अनुरागी॥ श्रीपति सियराम सुस्वामी। बंदौं श्यामक अंतरजामी॥ भरथ लछिमन सरस सोहाए। अरु शत्रुघ्न शत्रुहन गाए॥ राम अनुज ए परम पिआरे। सुंदर नृप दशरथके बारे॥ रामचंदके सुत धनुधारी। भे कुश लव जगआनदकारी॥ कुशके सुवन अतिथि श्रुति लहिये। तासुत निषध गुने मुदगहिये॥ तनै निषधके नल नय नागर। नलके सुत नभ सब गुण आगर॥ पुंडरीक नभ सुत सुत ताहू। भए क्षेमधन्वा सुखराहू॥ तासुत देवानीक प्रवीना। तासुत अहीनगू गुणनि अहीना॥ तासुत भए सुधन्वा गाए। तासुत नल नय निपुण कहाए॥ नलके सुवन उक्थ्य परतापी॥ तासुत वज्रनाभ दलदापी॥ तासुत शंख पुष्प सुत ताके। तासुत अर्थसिद्धि उरभाके॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

भए सुदर्शन तासु सुत अग्निवर्ण सुत तासु। अग्निवर्णके शीघ्र सुत मरु तनै भे आसु॥

भए मनुके सनय नृप विश्रुतबल मतिधाम । शुभद वंश बरण्यो सु जेहि प्रगटे राजाराम ॥
सूर्य्यवंशके एकहे जे जे पुरुष प्रधान । इनतें भयो पसार सो को कहि सकै सुजान ॥
आद्धदेव बर देव हैं सूर्य्यधामके धाम । तासु वंश बरणे न घटै सो इत उत अभिराम ॥

श्रीमत्श्रीकाशीराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशीवासिगोकुलनाथात्मजेन गोपीनाथकविना बिरचिते भाषाश्रीमहाभारथान्तर्गते हरिवंशदर्पणोनाम पंचमोऽध्यायः ५॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

सूरज श्राद्धदेव मुनि कैसें । को हैं पितर कहो सब तैसें ॥ जासु नाम लैं पीडा देहीं । पेर कर्म गतितें किमि लेहीं ॥ तेहिसें इतर पितर कोउ होई । कहो प्रगट करि मुनिबर सोई ॥ बिधिवत श्राद्ध किए जे तोषैं । श्राद्ध करै तेहि बहुविधि पोषैं ॥ सुनै बेदबिदसों यह बानी । पितरहि पूजहिं सुरशुभजानी ॥ सो सब कहो मुनीश बुझाई । सुनि तबकहा हरषि मुनिराई ॥ पूछेउ प्रश्न भूप तुम सोई । नृपति जुधिष्ठिर आनंद भोई ॥ भीष्म पितामह सो इमि बूझे । जाके बाण बार बहुजूझे ॥ सो सुनि बोले भीषम तातें । सुनहु भूप एकदिनकी बातें ॥ हमहूं करत श्राद्ध सुखदाता । भूतें काढि हाथ मम ताता ॥ मागन लगे पितरनि जु पानी । सो प्रकारहों अनुचित आनी ॥ कुशपैं धरो पिंड कमहीसों । भो अतिहर्षे प्रसन्न पितु ओसों ॥ कह्यो सुवन हम कीन्ह परीछा । तुम बिधिसों करिहो अनरीछा ॥ चले कुपथ जो भूमलकामी । तेहि मग चलै प्रजा अनुगामी ॥ ताते धर्मशास्त्र विधि लोपै । सो अनुचित लखि ईश्वर कोपै ॥ हो तुम निपुण नीति अनुसारी । बिहित अबिहित विधानविचारी ॥ मृत्युकहत जेहि जगत पुकारै । सो सुत रैहैं सुबस तिहारे ॥ दै आशिष इमि सहित सनेहू । कह्यो मांगि सुतवर तुम लेहू ॥ इहै प्रश्न तब भूप तुम्हारा । हम बूझा तिनकहि निरधारा ॥ *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

आदिदेवके सुवन है पितर प्रसिद्ध उदार । बिधिवत अर्चनहारकों सुख संपति दातार ॥
गोत्र नाम लै जासु जन करत पिण्डको दान । सो जेहि गतित नाहि तित पोषत सुजान ॥
प्रश्नोत्तर संक्षेपसों बरणि कहा हम तात । कहिहूं सब बिसतारसों मार्कण्डे अबदात ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

यह कहि भे पितु अंतरध्याना । हम तिनसों सब कहा बिधाना ॥ मार्कण्डेय कहा सुनु भूपा । पितरप्रभाव प्रकार अनूपा ॥ मेरुशिखर शुचि निरखि सुहावन । हमहे करत तपस्या पावन ॥ तहां बिमान चारु आसीना । आए सनतकुमार प्रवीना ॥ लसै बिमान मध्यतें कैसें । ज्वलत अगिनिभ सबरण जैसें ॥ तब हों करि दंडवत प्रणामा । अर्घ पाद्य दै बूझेउ नामा ॥ तब

तिन आपन नाम उचारा । सुनु मुनि हैं हम सनतकुमारा ॥ ब्रह्मविधि [illegible] कुमार [illegible] आई । निरखि भए हम तुम्हहि लखाई ॥ इच्छित होइ बूझिये सोऊ । तब हम बूझा [illegible] संदेह ॥ पित्रनको प्रभाव विख्याता । सो तुम बूझेउ नृप सुखदाता ॥ सनतकुमार [illegible] । [illegible] सुनो कहों सो तैसे ॥ ब्रह्मादिक देवकहं आए । निज आराधन हित [illegible] ॥ [illegible] विधि हि भुलाए । चाहि [illegible] सुख मैं मन लाए ॥ सापदियो विधि निरखि भुलाने । मूढ़ हृदय तुम होऊ सयाने ॥ ते निजहृदय मूढ़ लखि आई । विधिसों कियो विनै गुरुआई ॥ [illegible] हसि कहा सहु अतआहु । अब तुम निजसुतपै चलि जाहु ॥ *******

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

वे जो कहैं विचारिबो आश्रित करो अखेद । होइ हि तव चैतन्य चित मिटि हि हानि निरवेद ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

सो मुनि ते निजसुत पहं आए । तिनसों सब [illegible] सुनाए ॥ सुनि ते तिन्है उपाय बताए । सो करि ते सब विधि सुख पाए ॥ तब सुत कहा [illegible] बानी । [illegible] सुखमानी ॥ सो सुनि आदिदेव [illegible] । कार विवाद ब्रह्मापहं आए ॥ विधिसों कह्यो कहा सुनि वेधा । सत्य कह्यो है परम सुमेधा ॥ देव जनक तुम वै तुववाचे । [illegible] पितर तुम्हारे ॥ तुम दोउ जने पितर अरु देवा । है अन्योन्य पिता सुत भेवा ॥ आदि देव [illegible] । सुतपद आइ पितर कहि भाषे ॥ प्रथमं पूजि तुमकहं सब लोगू । [illegible] सुर [illegible] भोगू ॥ [illegible] पूजन करि हि हमारा । सुर अरु असुर सकल संसारा ॥ तबते सुतो पितरीय [illegible] भए पितर प्रसिद्धि अगार ॥ पितर निमित्य कर्म जो करहीं । [illegible] ॥ पितर तम न्है चंद्रहि पोषैं । चंद ओषधी सस्यहि तोषैं ॥ सनतकुमार [illegible] बानी । सुनि [illegible] कोन प्रश्न अनुमानी ॥ किते पितृगण हैं सो कहि ये । बसत लोक [illegible] ॥ [illegible] कुमार कहा सो जानो । हैं गणसात पित्र अनुमानो ॥ *******

॥ दोहा ॥

मूर्तिमंत गण चारि हैं हैं अमूर्तिगण तीन । लखत सात इमि [illegible] सुनु मुनि [illegible] प्रवीन ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

तिनके लोक वंश सब भाषैं । तुमसों मुनि [illegible] अभिलाषैं ॥ तिनमें तीनि अमूर्तिगणाए । भूप तासु तिननाम बताए ॥ [illegible] कहै [illegible] । [illegible] ॥ [illegible] कहं उचारैं । लोक सनातन तहां बिहारैं ॥ [illegible] मानस आए । मनमय सुचि सुभ मन जे पाए ॥ इन्है देवअरचैं करि आदर । और विमान तासु सुनु सादर ॥ पितर विदित वैराज

कहाए। सुता मानसिक ते उपजाए॥ मेना नाम तासु करि लीन्हे। सो हिमवंतनगेशै हि दीन्हे॥ सुत मैनाक तासु सुभ देखा। क्रौंच तासु सुत उन्नत भेखा॥ तीनि सुता मैनाकी आई। ते दुस्सतर तप करता गाई॥ जेठीसुता अपरणा याही। परण अहार कीन्ह जिन नाही॥ दुतिय एक परणा मुनि लीन्हा। एक परण तिन भोजन कीन्हा॥ त्रितिय एक पाटला कहाई। पाटल पुष्प एक तिन खाई॥ भई अपर्णा शिवसंयोगिनी। दुतिय भई देवल सभागिनी॥ एक पाटला नगप दुलारी। जैगीषव्य कीन तेहि नारी॥ अमिसाता पितर सुचारि। तातनया तासु अच्छिदा सरिता॥ कहत अच्छिदा सरिता जासों। भयो अच्छोद सरोवर तासों॥ सो सरिता बिनु पितर निरखे। व्याकुल तासों निजहिय भेखे॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

बिनु देखें निज पितर नृप बिनुआने तुए नाम। लज्जित न्है अतिसोच करि भई अछिदा छाम॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

चली सरग तब पितर निरेखन। देखिपरे तहं पितर अभेखन॥ तहां अमावसुको तेइ देखा। सहित अद्रिकाति आसु भेखा॥ तासों कहेसि सुन ऊ करि छोहू। तुम दोउ मातु पिता मम होहू॥ आपन पितर ताहि बिनु चीन्हे। और हि देखि पितर करि लीन्हे॥ निजगरिमा हित तेहि सब सोई। गिरी तहांते तप बल खोई॥ देखेसि तब सुचि चढे बिमाना। तेजपुंज त्रसरेणु प्रमाणा॥ त्राहि त्राहि लखि तिन्हें पुकारेसि। तासु कृपा लहि थिरता धारेसि॥ ते बोले हम पितर तुम्हारे। तुम और हि कहि पितर उचारे॥ योग भ्रष्ट ह्वै तातें ऐसें। गिरिऊ भूमि कौऊ रोखें कैसें॥ सुर अरु असुरआदि सब लोगू। भोगसि भोग वै निजकृत भोगू॥ बिधि बिरच्यो जो बिहित बिधाना। बिबिध भांतिसों बिधि बलवाना॥ ताते कहो भविष्य तुम्हारा। जो ईश्वर इच्छा अनुसारा॥ व्है है नृप अमावसु आई। द्वापरमे निजकृत गति पाई॥ तासु अद्रिका होइ हि नारी पति व्रत पूरित पति हि पियारी॥ पितर बितिक्रम फल तुम पाई। मत्स्जोनिजा ह्वै हो आई॥ लहिं पितु मातु इन्हें सुख भै हो। यव इन्छे ऊ तब परतछ पैहो॥ *~*~*~*~*~*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

पारासरसों सुवन तव उतपति करि हो एक। एक बेदसों चारि जे करिहै सहित बिवेक॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

फिरि कहि रूप संतनु पति प्यारे। उतपति करिहौ द्वे सुभ वारे॥ बिदित बिचित्र बीर्ज बलकाला। अरु चित्रांगद वार सुजाना॥ तब वर तन तजि सब सुख वोका। पाइ भांति हो यह निजलोका॥ कह्यो पितर यह सब जैसेंहीं। लह्यो अछिदा सो तैसेंहीं॥ पितर बरहिषद जो

शुभराशी। सो वैभ्राजलोकके वासी॥ ते पुलस्तिके सुवन सोहाए। मानस सुता पीवरी जाए॥ द्वापरमे सो यह वरवरनी। होइ हि व्यासपुत्रकी घरनी॥ चारिपुत्र यक कन्या ह्वै हि। शुकाचार्य्यके मन अतिभाइ है हि॥ तस गौर प्रभु अनुकरै है। पुन अजकी शुभगति गैहै॥ कत्वानाम सुता शुभचारी। होइ हि सोई अनुहको नारी॥ तासुत ब्रह्मदत्त गुणधारि है। तपबल बंश हाहि न करि है॥ ए अमूर्तिवर पितर बखाने। जे गण तीनि जगतमे जाने॥ सुर गंधर्व असुर अरु किन्नर। अप्सर अस इन्हें अरचैं वर॥ मूर्तिवंत गण चारी बताए। तिनके नाम सुनऊ मनभाए॥ शुकुल आंगीरस शुभ्वधा जानो। शुभद सोमपा मुनि सुख मानो॥ कहै सुकुल गण पितर सयाने। ते वसिष्ठके सुवन बखाने॥ *◆*◆*◆*◆*◆*◆*◆*◆*◆*◆*◆*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

दिव्यलोक तिनको महत पूजक ब्राह्मण तासु। तनया ताकी मानसिक प्रगट नाम गो जासु॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

सो शुककी पतिनी गुणखानी। ह्वै है शुभु मुनि वर गुणज्ञानी॥ जे आंगीरस पितर गण कहिये। ते अंगीरस तनै श्रुति लहिये॥ ते क्षत्रिन कहं पूज्य पुणीता। देनहार अरचक चित चीता॥ सुता यशोदा मानस ताकी। ता पति विश्वमहान सुताकी॥ सुवन दिलीप राज ऋषि ताके। खटिम सराह्यो सुचिमख जाके॥ पितरसु स्वधा पुलहके बारे। ते निति कामग लोक विहारे॥ पूजहि तिन्है वइश्य विचारी। विरजा ताकी सुता दुलारी॥ तापति भूप नहुष नथणामी। सुवन ययाति भूमिके स्वामी॥ बरणे पितर सोमपा जाहो। हिरण्य गर्भ उपजाए ऊ ताही॥ मानस लोक विहार हि सोऊ। पूज हि ताहि शूद्र सब कोऊ॥ मानस सुता तासु अघ हरिता। नाम नर्मदा पावनि सरिता॥ पुरुष कुलपति अनुपमा पाई। त्रसद नाम सुत तेइ उपजाई॥ आद्यदेव हे एपोल दायक। ए निति अरचन करिवे लायक॥ पितर प्रभाव भूप अतिभारी। सनत कुमार कह्यो मख चारी॥ रहे पूर्व युगमे शुभु ताता। भरद्वाजके सुत गुण ज्ञाता॥ योगभ्रष्ट ह्वो ते एकै बारा। गिरे सुमान सरोवर पारा॥ कछुदिन पैं ते तन तजि जाई। योग किए हे तापस पाई॥ *◆◆◆*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

ह्वो सुमनस सो भोगि फल कुरुक्षेत्रमो आई। कौशिक को फिरि सुत भए विधिगति कही न जाई॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

उन ह्वै वे वर ब्रह्म धनुधारे। पिता कर्म निसि तृण बळ मारे॥ मांस बनाइ उदर भरि सोही। जूंव निहारा पितर हि देही॥ हिंसा यचते सहे कुजोनी। निज कृत कर्म कहा वत होनी॥ पितर

अभाग [illegible] मुनि [illegible] । रही तिन्है [illegible] पूर्ण [illegible] ॥ ताते यदपि सुधर्म सुभाये । तेहि गुणमे [illegible] ॥ [illegible] सुधर्म [illegible] के मन भाए । [illegible] ते अनुपम पद पाए ॥ ताते [illegible] मुनीश ॥ [illegible] सुधर्म मुनि [illegible] ॥ [illegible] सुधर्म प्रकारा । [illegible] करे [illegible] बिचारा ॥ [illegible] न [illegible] हि न आवे । पर [illegible] राखे ॥ [illegible] धरई । [illegible] करई ॥ करै [illegible] धीरा । [illegible] सोच न करइ गभीरा ॥ करै काज सो लेइ बिचारी । [illegible] धारी ॥ सदा अनालस रहे प्रवीना । [illegible] न काल अधीना ॥ [illegible] जोग न करिये जोगू । कहे करे नहि सो सिधि [illegible] ॥ [illegible] न बढ़वे [illegible] । [illegible] ॥ साधु कहे [illegible] न जोते । अहंकार [illegible] धररीते ॥ ***

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

पहिले कहे बिचारि फिरि करै कहे जो सोइ । सर्वधर्ममे श्रेष्ठ लखि पर उपकारक होइ ॥
[illegible] सुधर्म के [illegible] साधे याहि । जोपद [illegible] सो पद सुरलभ ताहि ॥
[illegible] सुमति [illegible] बिधि करि उपदेश । सनतकुमार [illegible] ह्वै गए फेरि निजदेश ॥

[illegible] श्रीवन्दीजनकाशीवासिगोकुल [illegible] बिरचिते भाषायां भारथान्तर्गते हरिवंशदर्पणोनाम षष्ठाध्यायः ॥

बंदौ सीताराम सुस्वामी । जेहि लहि भए जनक जगनामी ॥ मार्कण्डेय उवाच ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

दिव्यदृष्टि [illegible] मुनीशा । भए देव दे शुभग असीशा ॥ तब ह्वै दिव्यदृष्टि [illegible] । [illegible] के सुत [illegible] ॥ [illegible] जिन हिंसा कीन्हो । फिरि जे ब्राह्मणको बपु लीन्हो ॥ रहे [illegible] नृप [illegible] । जन्म कर्म तिनके सब लेखे ॥ तिनमे सप्तम [illegible] सयाना । ब्रह्मदत्त [illegible] भयो सुजाना ॥ [illegible] की सुता सयानी । [illegible] भूपकी रानी ॥ तिनसो प्रगट भए ए ज्ञानी । [illegible] प्रियबानी ॥ भीष्म उवाच ॥ तिनको वंशविभूति बिधाना । मुनिवरसो [illegible] सुनि नृप [illegible] ॥ सो सब कहे युधिष्ठिर तुमसो । सुनिए सावधान ह्वो मनसो ॥ पौरववंश [illegible] । भे [illegible] ॥ तासुत भे [illegible] बर राजा । तासुत भए [illegible] राजा ॥ तासुत [illegible] रणधीरा । भए [illegible] तासुत बीरा ॥ भए बिश्वजित ताके बारे । भए [illegible] ॥ भए [illegible] के सुत चारी । [illegible] केतु बलभारी ॥ [illegible] । [illegible] के सुत [illegible] ॥ ताके तने पार बलवाना । तने पारके नीप सुजाना ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

भए सुवन सतनीपके नाम सबनको नीप। भूप देश पंचालके भूषित कीन्हे दीप ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

जेठेके सुत समर कहाए। तीनि सुवन तिनके गुण गाए ॥ पर सदश्व पारापर बालक। परके सुत भे पृथु पुरपालक ॥ पृथुके पुत्र सुकृत धनुधारी। तासुत भे विभ्राज विचारी ॥ तासुत अणुह मारग निधि चीन्हे। कृत्वा सुता ताहि शुक दीन्हे ॥ तासुत ब्रह्मदत्त भे आए। समन कौशिक सुत जे गाए ॥ नृप विभ्राज बहुरि जग आये। ब्रह्मदत्तके सुत व्है आए ॥ विश्वक्सेन नाम भो ताको। दंडसेन प्रगट्यो सुत जाके ॥ ब्रह्मदत्तको सुत एक औरो। सर्बसेन ताको हो बौरो ॥ जाको चारु आंखि रंगराती कोरेसि पालित पक्षीघाती ॥ दंडसेनको सुत बल भाख्यो। सो भल्लाक रन तेहि मास्यो ॥ तासु भयो उग्रायुध बारा। सतीनीप कहं जेइ सदमारा। सो ग्रुधि काननमें नम बाणन। मारो परो पुरुष पंचानन ॥ शुनि उग्रायुधको यह काजा। बूझ्यो विहसि युधिष्ठिर राजा ॥ पूर्वजन्मको कोय हु पापी। केहि गुण यहि मारे ऊ परतापी ॥ भीषम कह्यो सुनऊ भूपति वर। अजमीढको सुवन जबीनर ॥ *✽*✽*✽*✽*✽*✽*✽*✽*✽*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

तासुत भे धृतिमन्त अरु तासु सत्यधृति जानि। ताके सुत द्रिढ नेमिनृप तासु सुधर्मा मानि ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

तासुत सर्बभौम नृप जानो। सुत महान ताके अनुमानो ॥ भए रुकुमरथ ताके बारा। तासुत भयो सुपार्श्व उदारा ॥ तासुत भयो सुमति बलवाना। ताको तनै सुन्नति मुखवाना ॥ तासु पुत्र कृत बेद बिचारी। तासुत कार्ति भयो बलभारी ॥ सोइ उग्रायुध भयो मचीपा। जेइ किये नीपकुलदीपा ॥ उग्रायुधको सुत शुनु ताता। सेमनाम भो दीरघराता ॥ तासुत भयो सुवीर सुबीरा। तासुत भयो नृपंजय बीरा ॥ बहुरथ ताको सुवन रसाला। इते वीरवंश विशाला ॥ उग्रायुध उनमत्त अचेतू। जाउर सागर औगुण सेतू ॥ हति नीपन फिरि चहहि कलेसू। भेजेसि धूत दूत निरदेसू ॥ राज काज जुत जीवन चाहो। मर्मानिदेश तौ भीषम पाहो ॥ काली निज माता। देहु मोहि तुम ममबलज्ञाता ॥ कै सन मुख चढि करो लराई। कोपि ताहि कै आऊ पराई ॥ सो शुनि हों कारि कोप कराला। कह्यो सजन शुभ सुभट बिसाला ॥ मंत्रिन तब नृप तोलि शुनावा। क्रमशो करिबो उचित बतावा ॥ साम दान अरु भेद उपाई। पछिले करि लोडो नृपराई ॥ ताहि न जो मानै सठ कोई। करै दंड तब नृप मत जोई ॥ *✽*✽*✽*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

सो शुनि ताको पास हों दूत पठायो बढ। तेइ समुजायो भांति बऊ एक न मान्यो मूढ ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

तब देश [illegible] पढि ताता । कियो आइ सो तासु निपाता ॥ [illegible] तीनिदिन लरि उनमाही । [illegible] समरथ वाही ॥ तासु मरण सुनि अतिसुख साजे । रहे नीपके सुत जे भाजे ॥ [illegible] मन धाइ निदेसु । बसि कीन्हेउ पालन निज देसु ॥ तासुत द्रुपदराज अधिकारी । जीति [illegible] अरजुन धनुधारी ॥ ताकर देश द्रोण कहँ दीन्हा । सो बहु द्रोण भाग हु कीन्हा ॥ आधा लियो द्रोण धनुधारी । आधा द्रुपदहि दियो बिचारी ॥ भूप युधिष्ठिर मुद मे बानी । [illegible] भीषमसों बूझेउ ज्ञानी ॥ [illegible] पोरोंस आंखे । केहिगुण चटक आपु सो भाखे ॥ भीषम कहा सुनउ नरनाह । [illegible] बर दीरघ बाहू ॥ ब्रह्मदत्त नृप तपकर ज्ञानी । बूझहि सब जीवनकी बानी ॥ [illegible] एका ते घरमे राखे । सहित सनेह सखा कहि भाखे ॥ सो बहु घरण देशांतर आवे । [illegible] सब कथा सुनावे ॥ ब्रह्मदत्त भूपतिके बारे । सर्वसेन हे परम दुलारे ॥ भयो चटकके प्राण [illegible] । एक चेटुवा अति सुकुमारा ॥ करत कुतूहल भूप कुमारा । तासु नरम नर [illegible] चेटुवग्रीव दबाने । ब्रह्मदत्त सो सुनि पछिताने ॥ आइ चटक तहं [illegible] देखी । भई मोह बस बिकल बिशेखी ॥ ********

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

सुरछित व्है फिरि चेति सो करि रोदन परलाप । आइ कहेसि फिरि भूपसों निजहियको संताप ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

भूपति सुन [illegible] मारे । किमि तुव सुत ममसुत कहँ मारे ॥ पीडित क्षुधितदीन शरणागत । [illegible] ॥ कहु दिनको सेवक सुखरासी । बहुदिनको निजघरको बासी ॥ इन सों [illegible] सो करई । कुंभीनरक चौदिस सो परई ॥ इमि कहि चटक चटकाई कीन्हो । नृपसु [illegible] ॥ आंखि फोरि नभ चली उडाई । तब तेहि भूपति कहि समुझाई ॥ उचितै [illegible] ताही हम असमर्थ तुव पुधि बल पाही ॥ आइ रहो फिरि पूर्व बिधाना । सो सुनि बोली [illegible] ॥ राज नीति हम जान हि भूपा । करै काज जाही अनुरूपा ॥ कुतुन कुमित्र कुनारि कुदेसा । [illegible] कुनरेसा ॥ अपकारी चारि बिनै प्रकाशै । तज न ज्ञानवान बिसवासै ॥ [illegible] । बुधिवर तासु धीय नहि राखे ॥ जो आरसों निज बढती होई । तज न [illegible] ॥ [illegible] इमि नगिचाही । जिमि नभ चौरि तबहि [illegible] ॥ [illegible] परस्पर जो जानै । तो तनदोषकी गति जाने ॥ [illegible] न चाही । तिन्है बिचारे तो अतिमाही ॥ *********

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

वेदक मधुर [illegible] ॥

॥ [illegible] ॥

भीषम फेरि कहा जनमेजय । भूप युधिष्ठिरसों हर्षि मुदमय ॥ कौशिकके सुत सात बताए । तिनके जन्म कर्म सब गाए ॥ ज्ञान कुत्सित करि जे सब बिगरे । पितृ प्रसाद भलीविधि सुधरे ॥ आनि तिन्हें कर धीके छोटे । कौशिक तिन्हें कियो चषचोटे ॥ गार्ग्यसुशिष्य ते भे मनभावन । तासु गाय बन गए चरावन ॥ तेहि हति सबिसों मासु बनाए । पितर न अरपि मूढ सो खाए ॥ गुरुसों कहेनि वत्स मुनि सोई । धेनु हिं हतेसि बाघ बन गेऊ ॥ सुद्ध हृदय मुनि सो सति माने । कछुदिन मे ते मरे अयाने ॥ व्याधा भए सहोदर जाइ । तेहि अघको फल ते सब भाई ॥ पितर प्रभाव सुद्धिमति तिनकी । भई रही सुधि पूरब दिनकी ॥ घोर जीव मारि की तोषैं । आगे मता पिता कहँ पोषैं ॥ तिनके मता पिता तन छाडे । ते सब मन हिंसाबों ओडे ॥ बनमें बहि मन त्यागन कीन्हे । तब फेरि जनम मृगाकर लीन्हे ॥ भए कालींजर शैल बिहारी । सबै पूर्व सुधि [illegible] बिचारी ॥ कछुदिन मुनिवत रहि तन त्यागे । फिरि भे चक्रबाक संग लागे ॥ तितहु पूर्वजन्मके ज्ञानी । ब्रह्मचर्य व्रत धारे जानी ॥ सो तन तजि भे हंस उदारे । मानसरोबर सुघर बिहारे ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

सुभग सहोदर सात ते जोगि सार परबीन । ब्रह्मचर्यव्रतधारि हे जोग जुगतिमें लीन ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

गए तहां तिय सहित बिहारण । नृप बिभ्राज अरिंद बिदारण ॥ तिनको सुत [illegible] अति नीको । सो भ्यो एक हंस सुचि जीको ॥ जो कछु तप कीन्हो एहि दीपा । तो सह भेसे होउँ महीपा ॥ औरो द्वै बोले फलचीते । हम मंत्री व्हैहैं हित होते ॥ रहे चारि ते मुनि ऋषि भोए । [illegible] तप फल नाहक खोए ॥ इनको बंश प्रगटि हो जाई । ए दोउ व्हैहैं मंत्रीभाई ॥ [illegible] तुम लीन्हे । राज्य लाख सो नहि भल कीन्हे ॥ सुनो तात यह भावी भाखे । क्षिति जोग [illegible] कहि राखे ॥ पुहुप एक असलोक सुने हे । सो मुनि के सुबचित समझे हे ॥ [illegible] गहहौ । तेहि प्रसाद उत्तिम पद लहिहौ ॥ तिन हंसनकहं लखि सुख पाए । नृप बिभ्राज बहुरि घर आए ॥ तासुत अनुह धर्म धर आगर । सील समर सर्व गुणसागर ॥ कत्वा सुता ताहि सुक दीन्ही । चितचैतन्य चारुता चीन्ही ॥ तब नृपमणि बिभ्राज बिचारी । सुत कहँ कियउ राज्य अधिकारी ॥ सब तजि आपु जोग व्रत धारी । बैसे जाइ तेहि सर सुभ चारी ॥ इन्हे देखि जित हंस लोभाने । ए जित हंस सरब सुभ माने ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

नायाहि [illegible] जानि वे तीनों हंस सुजान । जो अब इच्छा नृप गहि सो तब [illegible] ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

[illegible] राज [illegible] सो राजा । अनुरूप [illegible] ह्वै बिशद बिराजा ॥ ब्रह्मदत्त भो नाम सुराजा । आहि [illegible] सुरपति लाजा ॥ वेई मंत्री भए सुभाए । पांडरीक पंचाल कहाए ॥ सब [illegible] बानी । ब्रह्मदत्त नृप नित [illegible] ॥ ब्रह्मदत्तकर राज सुधारी । लह्यो परमपद [illegible] ॥ देवल नृपकी सुता दुलारी । सन्नति ब्रह्मदत्तकी नारी ॥ वे जे चारि हंस वर योगी । [illegible] बुद्धि [illegible] के भोगी ॥ सो [illegible] ते तेहि पुर आए । ब्रह्मदत्त जाके पति गाए ॥ [illegible] के सुत सुख [illegible] भए सहोदर भाई ॥ कछु दिन मैं ते तजि पितु माता । कानन गवन चले दुहु भ्राता ॥ ताके पिता शोक बड़ कीन्हा । तेहि अशोक एक तिन दीन्हा ॥ सचिव सहित नृपकहँ [illegible] । यह अशोक सुनाएउ ताही ॥ देइ भूप सो लेइ मुद भरियो । भगवत भजन सुचित ह्वै करियो ॥ तब ते आइ भए वनवासी । योग जुगुतिके बिशद बिलासी ॥ ब्रह्मदत्त लै तिय बरब्रीडा । [illegible] एक दिन [illegible] क्रीडा ॥ तहँ पीपीलिका दंपति भोले । रति चेष्टित आपुसमैं बोले ॥ * * ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

सो सुनि सुखद ज्ञान नृप समुझि हसे तेहि काल । सो लखि जान्यो नृप घरणि मोहि हसे छितिपाल ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

हठि बुझेसि हंसिबेको कारण । सो बिरतांत कह्यो भू धारण ॥ सो सुनि सन्नति साच न मानी । [illegible] पतिसों कहि मृदुबानी ॥ गिरा पिपीलिककी तुम जाना । केहि कारण सो कहो बिधाना ॥ योग [illegible] तुम हौ व्रतधारी । कै ईश्वर आशिष अनुसारी ॥ तब भूपति अनशन व्रत लीन्हे । नारायण आराधन कीन्हे ॥ छठईं निशि नारायण आए । [illegible] दुमि ताहि सुनाए ॥ [illegible] भावना हौ नृप जोई । होइहि प्रगट काल्हि सब सोई ॥ यह कहि भे प्रभु अन्तरध्याना । धन्य आपु कहँ भूपति जाना ॥ प्रात न्हाय सर सचिव समेता । रथ चढ़ि भूपति चले निकेता ॥ इतनेमें नृप ब्राह्मण सोई । चारौ हंस जासु सुत होई ॥ दै अशोक भए वनवासी । सो वह ब्राह्मण [illegible] बिलासी ॥ भरो भार मद सन्मुख आयो । भूपहि सो अशोक सुनायो ॥ व्याधा सात दसा रण देखा । गिरि कालींजर पै मृग भेशा ॥ [illegible] सरदीप रहे ह्वै कोका । मानस सरमें हंस अशोका ॥ सुभ उत्तम पद जात सयाने । तुम चेतहु मति रहहु भुलाने ॥ सुनि नृप दोउ मंत्रिन तनुजा है । सब बिरतांत समुझि मन माहि ॥ *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

फिरि भूपति चैतन्य ह्वै तेहि विप्रहि सनमान । गोगन दै भूमि दै हियो प्रसन्न सुजान ॥

विष्वक्सेनकुमार कहँ करि राजा सुखदान । वहुतिय सचिव सुजान नृप साधे जोग विधान ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजाधिराजश्रीउदितनारायणसिंहाज्ञाभिगामिना श्रीमन्महाजनकाशीवासिनेकुल मायात्मजेन गोपीनाथकविना विरचितेभाषायां भरिवान्तर्गते हरिवंशदर्पणेनाम सप्तमोऽध्यायः ॥

॥ * ॥

॥ कियो प्रश्न अनुमानी ॥ बुधवृत्ति वंश वेवहारा । सो अब कहैं सहित विसतारा ॥ ब्रह्माके मानस सुत जाए । अत्रि मुनीश वेद विद गाए ॥ ऊर्धवाहु ह्वै अत्रिमुनीशा । कियो तपस्या गुनु अवनीशा ॥ तीनि हजार वरिस जुग ठाढे । तरुसमा ह्वै अचल ह्वै ठाढे ॥ दिव्य वरिस इतनेके बीते । तब कछु रचना मनमैं चीते ॥ सबहि कौरि सो मत्य सचेता । चखपथ काढे जरध रेता ॥ दिशनै कवन बारि की धारा दस दिसि देवी निज उरधारा ॥ तें न सकी सो गर्भ सम्हारी । भूपै गिरे। गर्भसो भारी ॥ भूमिभवन ... सुधा कर । तेज पुंज सतगुरसे भावर ॥ शशिहि भूमि पे लखि ब्रह्मलाए । ... ॥ सहस सुभेस वाजि जेहि लागे । सोभा शीव सेत रंग पागे ॥ सोमहि ... देखी । ... किए शुभाशिष भेली ॥ बारए केस सोम पत धारी । भूमिप्रदक्षिण किय ... ॥ तबते ... काला । तासु औषधी भई रसाला ॥ पदुम हजार वरिस तपकीन्हे । ... ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

विधि वत विधि कीन्हे नृप तिन शशिहि राज्य अभिषेक । विप्र औषधी ... विवेक ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

राजसूयमख विधि तब कीन्हें । कियो काज तेइ विधि सुर चीन्हे ॥ ... थारा । हुतो बृहसतिकी तिय तारा ॥ अंगिर सुवन बृहस्पति कोपे । ... ॥ तब भे शशिके शुक्र सहाई । लै असुरनै कहँ किए लराई ॥ सुर अरु असुर ... । ... प्रबल न हारे कोऊ ॥ तब सुर गुनिता विधिपै आई । सब यह कथा कही समुझाई ॥ सुनि विरंचि तब सादर धाए । ... शशि हि समुझाए ॥ सो तारहि ... । ... सुरगुर चीन्हा ॥ सुरगुर कह्यो गर्भ यह नाहीं । यह परधीन ... तारा सो गरभ गिराई । धरि दीन्हो गाडरपे जाई ॥ तेज पुंज बालक ... । ... ॥ दिखि माहि विलसति न्है देखा । बूझो तारा सो यह ... ॥ ... कै सुरको कहु जाको ॥ सो सुनि तारा उतर न दीन्हा । तब सो सुवन कोप अतिकीन्हा ॥ मम

पितुको नहि नाम बतावै । साप नवच्छे बुद्धि एहि भावै ॥ करि तेहि घनित विरंचि अखेदा । पूछ्यो तारासों यह भेदा ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

तब तारा विधिसों कह्यो है शशिको यह बार । सो मुनिकै सुत अंकमें लीन्हो सोम उदार ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

कीन्हो सोम नाम बुध ताको । सुत पुरुरवा भूपति जाको ॥ भए इलासों जो नृप आछे । आए अबहि कथा सो पाछे ॥ नृप पुरुरवा भो भूभरता । दानशील अगिनित मखकरता ॥ ताहि उरवशी बरेसि सकामा । तेजपुंज लखि अति अभिरामा ॥ तासंग भूप तासु शुचि हि हरे । नन्दन बनमें कछुदिन बिहरे ॥ बन चइत्रथ अलका तामें । मेरु गंधमादन सुखदा में ॥ अरु मंदाकिनि पाइ निधारा । तहं पुरुरवा कियो बिहारा ॥ जनमेजय बूझा यह भावा । नृप उरबशि हि कौनि बिधि पावा ॥ बैशंपायन हरषि बताए । सो उरबसी साप ही पाए ॥ ह्वै मानुषको संयोगिनि । भई पुरुरवाकी संभोगिनि ॥ लीन्हेसि करि करार करि शोचन । सोइ करार हो साप बिमोचन ॥ भूपति नगन दरश मति देऊ । मम इच्छा लखि रतिसुख लेऊ ॥ एकबार घृत भोजन करऊं । नित्य निरंतर पन मन धरऊं ॥ शयन पास द्वै छाग सोहाए । राखौ बांधि करौ मनभाए ॥ एहि करारसों जहि दिन टरिहौ । तेहिदिन हमें अद्रिश्य निहरिहौ ॥ यह करार भूपति दिढ धारे । तासंग चौंसठि बरिस बिहारे ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

है चिंतत गंधर्वगण आनि निबंध बिधान । आइ तहां निशिमें हर्‍यौ एकछाग सुखदान ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

छाग हरन लखि नृप हि जगाई । कहेसि उरबसी लेऊ छुड़ाई ॥ नृपहुं न नगन उठे बिचारी । दुतिय छाग तिन हरे निहारी ॥ फिरि उरबसी कहेसि अनखाई । तब नृप छाग छोड़ायो धाई ॥ तब गंधर्व सुयोसर आनी । बिजुरी प्रगट किए अभिमानी ॥ ताहचि नृपकहं नगन निरेखी । भई अद्रिश्य उरबसी तेखी ॥ तेहि बिनु लखे नृपति अकुलाने । मोह भए बहुते पछिताने ॥ है व्याकुल घर तजि बन हेरत । कुरुक्षेत्र मेंवे तेहि टेरत ॥ बदन करत अतिमाया भेषे । सरमें न्हात तहं ते देषे ॥ लखि भूपहि बोली सो धीरे । भूप तुम्हार गर्भ हम धीरे ॥ बीते बरिस पास तुव आई । एक राति बसि हौं सुखपाई ॥ कहि सो भई अद्रिश्य सनेहा । सोछिन नृप आए निजगेहा ॥ बीते बरिस भूप पै आई । रमि उरबसी उपाय बताई ॥ गंधर्वनकहं भूप अराधो । तुम गंधर्व होउ सो साधो ॥

मुनि नृप तिन्हें अराधि समागे । हम गंधर्व होहिं यह मागे ॥ पूरि अग्नि थाली तिन्ह दीन्हा । करो यज्ञ कहि नृपकहं दीन्हा ॥ यज्ञ किए निज इच्छित पैहो । तब यहि लोक मोदसों रैहो ॥ कहि दीन्हे सुत सात सोहाए । जो उरवसी भूपसों जाए ॥ *~*~*~*~*~*~*~*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

अग्नि थाली बनमें नृपति सुतन सहित धर आय । तिन्हें यथोचित राजकं दै आप लखैवन जाय ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

तहां न भूपति अग्नि निरेखा । तेहि थर पीपरको तरु देखा ॥ तामें अवसमी लखि भूपा । गए जहां गंधर्व अनूपा ॥ तिनसों यह किरतांत सुनाए । मुनि गंधर्व उपाय बताए ॥ ताकेर अरणी रचि गुर बाढो । अग्नि ताहि मथिकैं नृप काढो ॥ नृप पुरुरवा सो सिद्ध कीन्हा । अग्निकाढि मंजुल मख कीन्हा ॥ एक अग्नि आगे परधाना । तब ते त्रेताग्नि अनजाना ॥ यज्ञ सिद्ध करि कै मनभावा । शुभ गंधर्व लोक नृप पावा ॥ जे पुरुरवाके सुत गाए । तिनके नाम सुन उ मन भाए ॥ आयू और अमावसु जानो । सता विदित बनायु पुमानो ॥ विश्वायू श्रुतायू ताहि भो । भूप अमायू सुनि मुद अहि भो ॥ अमावसुके सुवन अधीना । भूमीन को देवत कहंभीना ॥ ताके सुत कांचन प्रभ नीके । ताके सुवन सुहोत्र सु जीके ॥ सुत सुहोत्रके जन्हु अमीले । यज्ञ करत ते रहे रमीले ॥ ताकहं पति करिवेके लोभा । गंगा आई गई सहसोभा ॥ जन्हु न मान्यो तब रिसि आई । दई यज्ञ सामान बहाई ॥ सो लखि कै तब जन्हु रिसाने । गंगहिं पान कियो अनजाने ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

तब ऋषिगण अस्तुति कियो मुनि सजन्य है भूप । छोड्यो धारा सोतमन सुंदर सुधासरूप ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

निज संकल्प सत्यहित गंगा । कियो दोय निज सुवन सुधंगा ॥ है आधे कावेरी सरिता । भई जन्हुकी तिया सुचरिता ॥ तिनसों सुवन सुनउ नृप जाए । पुच सुनहके आवद पाए ॥ कुशके भए चारि सुत चारू । कुशिक और कुशनाभ उदारू ॥ नृप कुशांब अरु बिरद बखाने । मूर्तिमान मंजुल आने ॥ कियो उग्रतप कुशिक महीपा । इंद्रहि इन्द्रसम सुत कुलदीपा ॥ तीन सहस बरिस तप जाई । तब कुशिकसों कह्यो सुजाई ॥ नृप मम आयिव आय सनकिना । ये हो सुवन उग्र जिमि सविता ॥ कुशिक सुवनभो गाधि सोहाए । सुत अगाधि कौशिक अहि पाए ॥ पुरुकुत्स्य तिय तासु पियारी । सत्य मती सासुता दुलारी ॥ ताहि ऋचीक मांगि लिन्ही कहि सौं । तब भरे सुकिन सुत औरौ ॥ ऋचीक रिचोक यह चारु बनाए । पुत्रहेत है नवन सनाए ॥ ब्रह्ममय मंत्रित एक कीन्हा । क्षेम क्षात्र दूजे मे दीन्हा ॥ तासु भेद तजि हेत बताई । निज तिय कहं दीन्हेउ मुनिराई ॥ पुत्रहेत खाद चाहिय सुम लेऊ ॥ यह चरु निजमाता कहं देऊ ॥ *~*~*~*~*~*~*~*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

तब दै ऋषि [illegible] तब आय । [illegible] भयो [illegible] ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

सो सुनि गाधि भूपकी नारी । [illegible] कछु भेद विचारी ॥ सुनि [illegible] तासु आपु लै खायो । [illegible] वो [illegible] ॥ मुनिवर [illegible] भेद सो जाने । निज पत्निसों कह्यो सयाने ॥ होइहि सुत तुम्हारे धनुधारी । [illegible] अपकारी ॥ क्रूर सुभव कठोर कराला । [illegible] वीर रणधीर [illegible] ॥ तुव माताको सुत तब धाता । होइहि ऋषि वर तप विधिखाता ॥ सत्य [illegible] मुनि [illegible] । [illegible] कही विनयमय बानी ॥ मम सुत ऐसो होइ न जाई । तपनिधि होइ तुम्हारि [illegible] ॥ [illegible] प्रभाव जो [illegible] न जानै । [illegible] सो [illegible] ॥ एवमस्तु तब कह्यो मुनीशा । [illegible] गिरह्यो [illegible] ॥ तपवर [illegible] आए । [illegible] जमदग्नि [illegible] ॥ [illegible] नृप [illegible] । तासु रेणुका सुता सयानी ॥ मुनि जमदग्नि तासुके भरता । [illegible] तब करता ॥ तासुत परशुराम धनुधारी । भे तेहि [illegible] प्रभाव अनुसारी ॥ [illegible] सुत [illegible] कीन्हे । मुनि जमदग्नि मोद वर लीन्हे ॥ शुनःसेप मुनपुच्छ [illegible] । [illegible] आए ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

गाधि [illegible] भूप । [illegible] जे विश्वामित्र अनूप ॥
भे सुत विश्वामित्रके तपकरता सविवेक । [illegible] कतिवय अरु गालव आदि अनेक ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

जो जमदग्निकेर सुत दूजा । सुनःसेप नामक [illegible] ॥ सो कौशिकको मानि निदेशा । भयो [illegible] ॥ [illegible] नामे । [illegible] ते आने ॥ विश्वामित्र [illegible] । [illegible] गुरुता दीन्हा ॥ सुत पुरूरवाके जे भाये । [illegible] राजे ॥ [illegible] आयूके [illegible] ॥ प्रभा तिया आयूकी सुचिता । [illegible] ॥ [illegible] तने [illegible] । [illegible] ॥ [illegible] आयूके [illegible] ॥ [illegible] आए । [illegible] ॥ [illegible] भयो [illegible] । [illegible] ॥ [illegible] धनुधारी । को [illegible] ॥ [illegible] । [illegible] ॥ [illegible] भाए ॥ कह्यो सुरनसों [illegible] सुभाषी । [illegible] हम [illegible] ॥ [illegible] कहि लेहू । जे लहि [illegible] इन्द्रपद देहू ॥

॥ दोहा ॥

कीन्हों सुरन कराय त्यों तब चढि रजिय सुकाय । तनि सबुरन बैठे बिसद इन्द्रासनवहं आय ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

तब सुरराज मिले रिषिराजा । इस तुम धर्मपुत्र हैं राजा ॥ सुरसमाज आपन करि लेहु । उचित भूमि थिति इमकहं देहु ॥ सो सुनि नृपति रजि सुखपाए । इन्द्र हि उतै स्वर्गहि रत आए ॥ रजिभूमिपति जब तनुत्यागे । तब नृपके सब सुत बलपागे ॥ ते सतपांच इन्द्रपैं आई । पदकरि लीन्हों राज्य छुड़ाई ॥ ते तहं भोग बऊत दिन कीन्हे । इन्द्रहि कछू भाग नहि दीन्हे ॥ इन्द्र दुखित गुरुपैं आई । कह्यो सकल बिरतांत बुझाई ॥ सुनि गुरु इंद्र हि साहस दीन्हे । मत नास्तीक प्रगट तब कीन्हे ॥ गुरु कृत सुनि नृपसुत सिखि लीन्हा । वेद त्याग स्वाचरण पाप हि कीन्हा ॥ ताते धर्मभ्रष्ट भे सिगरे । तेजपराक्रम व्है अतिबिगरे ॥ लखि तिन्ह तेज आपुनो राजे । वज्रपाणि चढि तिन्हे निपाते ॥ गुरप्रसाद लहि सबबाराजे । तीनिलोकपति व्है फिरि साजे ॥ आयूके सुत रंभ कहाए । ते स्वकर्मबस पुत्र न पाए ॥ नृप आयूके सुत सुखदाने । हैं अनेनु तासंस बखाने ॥ नृप अनेनके सुवन बखाने । नृप प्रतिक्षत्र सब बिधि जाने ॥ तासुत सृञ्जय जय सुत ताके । तासुत बिजय सुवनकृत जाके ॥ * ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

हर्यश्वन ताके सुवन ताके सुत सहदेव । भे नदीन ताके सुवन हरण दीनदुख भेव ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

तासुत जयत्सेन जयकरता । तासुत संकृत अरिदल हरता ॥ तासुत क्षत्रधर्म शुभरूपा । ए अनेन के वंशज भूपा ॥ क्षत्रवृद्ध आयूके बारे । तासुत भे सुनहोत्र दुलारे ॥ तासुत तीनि काससुत मानो । और गृत्समद बरहद मानो ॥ भूपगृत्समदको सुत बीरा । सुनक महीप मत्त रणधीरा ॥ सुवन सुनकके शौनक नामी । भए भूप अनगिने सकामी ॥ चारो बरन भए ते ज्ञानी । नितहित धरम करम गति जानी ॥ कासनृपतिको सुत बल भारा । काश्य भये भे भूप उदारा ॥ तासुत भये सुतप नरनाहू । जासों लह्यो न जय अरि काहू ॥ काश्यभूपको सुत सुनु ताता । भयो दीर्घतप दीह प्रतापा ॥ भूपदीर्घतप बरतप कीन्हे । पुत्रकामना मनमें लीन्हे ॥ गुदासवन ते सुत पाए । जे धन्वन्तरि बिदित कहाए ॥ कढे चीर सागरते जोई । प्रगटे आइ धन्वन्तरि सोई ॥ भूपदीर्घतपके सुत जाए । धन्वन्तरि द्वापर मैं आए ॥ धन्वन्तरिके सुत सुखरासी । केतुमान प्रगटे सुखदासी ॥ तासुत भए भीमरथ रूपी । तासुत दिवोदास नरभूपो ॥ *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

दिवोदास काशीपको छितिभोगवत अनूप । भो बिचित्र कथा कहु सो अब सुनिए भूप ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

काशी पति रवकीय निदेशो। आश्रो लिये शंभु मुअनेशो ॥ कहनिकुंभको दियो निदेश। तुम काशीमें करो प्रवेश ॥ करि प्रवेश कछु कला बढ़ायो। दिवोदासको खोरि लगायो॥ खोरि लगाइ शाप फिरि देह। दिवोहि शाप तेज हरिलेह ॥ ज्वै निहतेज छोडि सो भाजै। तब उन ऋषियेकी विधि साजै॥ सो मुनि कहनिकुंभ तह आए। कंठक नाउ हि सपन देखाए॥ मम मूरति अथधापन करहू। करि पूजन शुद मंगल भरहू ॥ सो मुनि कंठक आनद लीन्हे। तासु मूर्ति थ संथापित कीन्हे ॥ पूजनको सब पुर जन आवैं। जो फल जो माँगैं सो पावैं॥ सो सुनि दिवोदास हरखाई। निज पतिनीको दियो पठाई ॥ दिवोदासकी पतिनी आई। करि पूजन बहु भांति मनाई॥ सुवन सुफल मांगि घर आई। परिखेसि बहुत दिवस मन लाई ॥ भयो न सुत तब भूप रिसाई। मठ मूरति तुरि दियो बहाई ॥ तब निकुंभ गए औसर पाई। उग्र शाप दीन्हो अन खाई ॥ रहै शून्य यह सुन्दर काशी। बरिस हजार यमानव वाशी ॥ शाप प्रभाव भयउ तहं घोरा। छेमक नाम दैत तह ओरा॥ किहेसि उपद्रवता भय आगे। पुरजन छोडि काशिका भागे ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

शुन्य देखि काशी पुरी देवदास नृप धीर। चिंति शाप फल आइ तब बसे गोमती तीर ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

लखि शिव शिवा सहित सुख साजे। आइ काशिकामें तब राजे ॥ कही एक दिन शिवा सो हाई। सुपति शंभु सों समया पाई॥ चलो नाथ कहं अनत विहारैं। कानन शैल पेखि सुख धारैं ॥ कह्यो शंभु तियसों चितचावन। आविमुक्त यह मम गृहपावन॥ याहि छोडि हम अनत न जैहैं। सब युग नित्य इतही रैहैं ॥ रहैं तीनि युग प्रगट महेशा। कलिमें रहत गुप्त करि भेषा ॥ देव दासके सुत बलधारी। भए प्रतर्दन भूतलधारी ॥ भए प्रतर्दनके दै बारे। बत्सभार्ग नृप भूमि विहारे॥ भूप अलर्क बत्सके आए। कुंभजकी तियसों मखाए ॥ छासठि सहस बरिस तन धारे। ते छेमक राछसको मारे ॥ फिरि काशीमें बसि मुदभारे। खलकुलके बल बिरद बिदारे॥ सुत अलर्कके संनति आए। ताके सुवन सुनीथ कहाए॥ ताके सुवन सेमवर चेतो। तासुत केतुकाम नृप नेतो ॥ तासुत भए सुकेतु सुकेतू। तासुत धर्मकेतु अघसेतू ॥ तासुत सत्यकेतु रतिवकता। तासुत विभु हरिगुणरतअकता॥ नृप आनर्त तासु सुत बीरा। तासु सुवन सुकुमार सुधीरा ॥ * ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

सुत भूपति सुकुमारके धृष्टकेतु बलवान। वेणुहोत्र ताके सुवन तासुत भर्ग सुजान ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

एते काव्य अनुसारानी । नहुष वंश अब आगे बखानी ॥ विश्वामित्र सुता मनहरणी । नहुषभूमि पतिकी सो धरणी ॥ भे तिनके षट सुत कुलदीपा । यति ययाति संयाति अयातीपा ॥ अरु रायाति यातिवर राजे । ए षट नहुष तने सुखसाजे ॥ नृपककुत्स्थकी सुता दुलारी । सो ययाति पतिकी नारी ॥ यति दंपति व्है आगविलासी । भए जाइ काननके वासी ॥ भए ययाति महीप विवेकी । वेदविहित भूधर अभिषेकी ॥ तासु देवजानी तिय प्यारी । सुता शुक्रकी पतिव्रतधारी ॥ तासुत यदु अरु तुर्वसु जाए । यदुवंश यदुवंशी गाए ॥ विषपर्वा हो असुर सुनामा । तासु सुता वर मिष्टा वामा ॥ सो ययातिकी दूजी नारी । तासुत भए तीनि सुभकारी ॥ द्रुह्यु दुकमादर अरु अनु आछे । प्रगट भए पुरु तिनके पाछे ॥ नृप ययातिको पुरयाति दीन्हे । भरि अनु रथ सो भूपति लीन्हे ॥ शुभ्र मनोजव हय जेहि लागे । तापै चढि ययाति मुद पागे ॥ षट दिनमें सब धरणी जीते । जाहिर जग जेता जयहीते ॥ भूपति भोगि बहुतदिन धरणी । भए बहुकरता शुभकरणी ॥ विषै भोग सो तोषन पाए । व्है आरत पुत्रन पह आए ॥ कह्यौ बुलाइ सुतनसों बानी । जैसी करिहौ करौ सो ज्ञानी ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

भूमि विषैके भोगसों मो मन लहै न तोष । है तृष्णा आतुर भई करौ तासु पिर पोष ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

मम बिरधापन सुत तुम लेहू । आपन तरुणापन मोहि देहू ॥ क्रमसों चारिसुतनसों भाष्यो । भूपति वचन न काहू राख्यो ॥ दिए श्राप तब नृप रिसिभारे । होहि अराजक सुवन तुम्हारे ॥ तिन्है श्राप दे पुरु पंह आए । पुरुसों कहि तेहि भांति बुझाए ॥ सुनि पुरु तासु बिरधई लीन्हे । निज तरुणापन भूपहि दीन्हे ॥ जुवापुरुष व्है मोहित भूपा । लगे भोगवन विषै अनूपा ॥ बहु विधि किए भोगअनुराग जासों । विश्वाची आदिक तरुणीसों ॥ जितो भोग वै विषै बिहारी । होइ तितक तृष्णा अधिकारी ॥ बहुविधि भोगि बहुत मन लाए । काम भोगको अंत न पाए ॥ तब भा भूपतिके उरज्ञाना । विषै त्याग तब कियो सुजाना ॥ पुरुको तरुणापन नृप दीन्हा । आपन बिरधापन सो लीन्हा ॥ तब नृप भूमि पांचधा करिकै । पांचो सुतहिं दियो मुदभरिकै ॥ चारि सुदेश चारिकहं दीन्हा । मध्यदेश भूपति पुरुकहं कीन्हा ॥ कह्यौ ययाति ज्ञानमें बानी । सबै पाय हृदयंगम पहिचानी ॥ जीरण भएहु जीरण होई । आहि न त्यागि सकै सबकोई ॥ जो तनतजत रोगसम लागी । कबहुं जीरण न होइ अभागी ॥ *◇*◇*◇*◇*◇*◇*◇*◇*◇*◇*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

सो यह तृष्णा प्रबल है याहि तजे सुख होइ । जबलों यह तन मे रहै तबलों सुखी न कोइ ॥

सोनिले कको दैस सो कोटिमा रिपति होय । औ बत्तीसारै नतो सोदिन कबऊं न सोए ॥
जितो बढैनृपको तितो नृपमानोवति मानि ॥ ऐसे याज्ञतिको दिए अयवन [illegible] ॥
योरो लखि तिनको बढै तिय अनधन परधान । ग्रानीजन संतोषसें पावत सो इहनदान ॥
कहि ऐसो भूपालनहि तियवन करि बनवास । साधि योगविधि तासि तन कीन्हे । स्वर्गनिवास ॥
सर्वतश्रीकाशीराजाधिराजश्रीउदितनारायणसुस्ताज्ञाभिगामिना श्रीमन्दीजनकाशीवासिगोकुलनाथात्मजेन गोपीनाथकविना विरचिते भाषायां भारतान्तर्गते हरिवंशदर्पणोनाम अष्टमोध्यायः॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

सुनिजनमेजय भूपति ज्ञानी । मुनिसों कह्यो मनोहर बानी ॥ नृपजजातिके सुवन बखाने । यदु पुरु अनु अरु द्रुह्यु बखाने ॥ अरु तुर्बसु ए पांच गनाए । इनके बंश कहैं मन भाए ॥ बैसंपायनि कह्यो गुनभूपा । पुरुके पुत्र प्रवीर अनूपा ॥ तासुत भए मनस्यु मनस्वी । तासुत अभयद भए यशस्वी ॥ तासु पसु धन्वा सुत धनुधरता । तासु सुबाहु तनै भूभरता ॥ भेरोद्राश्व तासु सुत राजा । भई तासु दशसुता सुभाजा ॥ अभिलाषी तमुद्धा मणदा । भद्रा खला पला अरु मलदा ॥ मद्रा सुरथा बलदा जांनो । गोचपला ए गणिदश मानो ॥ अत्रिबंश ऋषिवर तपभारी । नाम प्रभाकर परम अचारी ॥ दशो सुता तेहिकों नृपदीन्हा । ऋषिकी रिचा सुरवि कहि लीन्हा ॥ जेसुत इनके होंहि दुलारे । ते सिगरे सुत होंहि हमारे ॥ एक एक सुत तिनके जाए । तिन्हें भूप निजसुत करि भाए ॥ नृपकक्षेपू अरु कृकणेपू । स्थण्डिलेयु सर्वेप सनेपू ॥ नृपति कृतेपु वनेपु जलेपू । धीरधनपु महीप थलेपू ॥ तोनि सुवन कक्षेपू केहं । भूपसभा नरचक्षुपतें ह ॥ *◆*◆*◆*◆*◆*◆*◆*◆*◆*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

अरु परमेषु प्रवीण नृप ज्ञाता धनुषविधान । भए सभानरके सुवन काला नल बलवान ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

काला नलके सृंजय जाए । सृंजय सुवन पुरंजय गाए ॥ ताके सुत जनमेजय नामी । महासाल ता सुत महि स्वामी ॥ तासुत महामना नयगामी । तासु दोय सुत भए सुधामी ॥ भए उसीनर जेठे वासें ॥ भोतितिक्षु लहुरो जो तासें ॥ पांच उसीनरकी तिय जांनो । नृगो क्रिमो अरु नवा बखानो ॥ सुवन क्रिमीके क्रिमी कहु बाए । तनै नवाके नव कहि गाए ॥ दर्बाके सुत सुव्रत बीरा । दृषद्वतीके सिबि रणधीरा ॥ जो सिबि भूप चारि सुत ताके । नृप वृष दर्भ सुबीर सुसाके ॥ मद्रक अरु कैकेय बिचारो । पौच उसीनरके ए चारो ॥ नृपतितिक्षुके सुतजग जेता । भए उशद्रथ सुवर पुरसेता ॥ तासुत फेन सुतप सुत ताके । तासुत बलि बरणे गुण जाके ॥ दियो तिन्हें बर कृपानिधाना । विधि आयु करि कल्प प्रमाना ॥ बलि है जोगी इन्द्री जेता । ज्ञान गेह अरु ऊरधरेता ॥ तातें निज

तियते मन भाए। मुनि सों पांच पुत्र कर बाए॥ अंग बंग अरु सुंभ सराहे। पुंड्र कलिंग प्रजा जिन पाहे॥ अंगपुत्र दधिवाहन बीरा। तासुत दिविरथ सुभट गभीरा॥ भए धर्मरथ तासुत राजा। तासु चित्ररथ सुबनद राजा॥ *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

भए चित्ररथके सुवन लोमपाद परवीन। श्रृंगी ऋषिको ब्याहजे शांता सबुता दीन॥
शृंगी ऋषि को कृपातें लोमपाद छितिपाल। पायो सुवन सपूत शुचि नृप चतुरंग सुचाल॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

भे चतुरंग भूप के बारे। नृपपृथु लाक्ष सह गुण बारे॥ तासुत भए चंप नृप चारू। तासुत भे हरि अंग उदारू॥ ऋषि बैभांडकि आहित धारे। ऐरावतगज भूमि उतारे॥ भे हर्यंग भूपके बेटे। नृपति भद्ररथ बिरद लपेटे॥ तासुत बृहत्कर्म बल बाना। ताके सुत बृहद्भर्भ सुजाना॥ तासु बृहन्मन सुत धनुधारी। ताके द्वै पतिनी पति प्यारी॥ एक यशोदेवी शुचि बामा। सत्या द्वितिय सुबुधि सब आमा॥ सुवन यशोदेवीके आहिर। भए जयद्रथ सब गुण माहिर॥ द्रिढरथ भए तासु सुत नामी। तनै बिश्वजित तासु सुधामी॥ तासुत भए करण शुभ करणी। तासु बिकर्ण तनै बरबरणी॥ इनके बंश बहुत नयचीन्हे। अंगभूपकी कीरति कीन्हे॥ भए मित्रे सत्याके बालक। ताके सुत धृति खलकुल घालक॥ तासुत धृतिब्रत धीरज धारी। सत्यकर्म तासुत बलभारी॥ सत्यकर्म भूपतिके आए। भे अधिरथ जे सूत कहाए॥ तेई करण हि पालि बढाए। करण ताहि गुणसूत जगाए॥ सुवन करणके बिष्वक्सेना। तासुत बृषबाहक बरसेना॥ *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

ए बंशज कद्रुपुके पुत्रवंत सबधीर। अबऋचेपुके कहत हैं रौद्रपुत्र जे बीर॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

ज्वलनानत्तक सुतादुलारी। सो ऋचेपुकी पतिनी प्यारी॥ ताके सुत मतिनार महीपा। तासुत तीनि भए कुलदीपा॥ अंसु प्रथम फिरि प्रतिरथ मानो। अरु सुबाहु नृप धार्मिक जानो॥ अरु एक कन्या गौरीनामा। तासुत मांधाता गुणग्रामा॥ भए कर्णप्रतिरथके बारे। मेधातिथि भे तासु दुलारे॥ इलिनी तासु सुता ब्रतधारी। ताको किए अंसु प्रियनारी॥ तासुत भए सुराध सुजोधा। ता तिय उपदानवी सुबोधा॥ ताके चारि सुवन गुणवंता। नृपदुष्यंत भए सुखकंता॥ अनघ प्रबीर धीर ए चारी। बरबे बीर शुभे सुदधारी॥ नृपदुष्यंत भूपमणि जाए। दनि शकुन्तलासों सुत पाए॥ भरतनाम नयबिद महिदाता। जांबंश अतन भारत ख्याता॥ नमें भरत के द्वै बरदापा। ते निजजननीको लहि शापा॥ नमे तिन्है नाशित लहि राजा। भरत बृथ कीन्हो यह काजा॥

भरद्वाज सुरगुरके बारे। पुत्र वधूसों तिन्हें बिहारे॥ सुवन वितथ नामक नव जायो। अभिषेकित भूपाल कहायो॥ सुवन वितथके पांचल लाभैं। भए सुहोत्र जेठ हे नामें॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

॥ सुहोत्रके सुवन द्वै कास गृत्समति नाम। भए गृत्समतिके सुवन ब्राह्मण क्षत्रा आम॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

काशभूपको सुत शुनु ताता। भयो दीर्घतप दीरघ दाता॥ भूप दीरघ तपकी सुत गाए। धन्वन्तर द्वापरमे जाए॥ धन्वन्तरिके सुत सुखदानी। प्रगटे केतुमान बरज्ञानी॥ तासुत भए भीमरथ दापी। तासुत दिवोदास परतापी॥ दिवोदासके सुत बलभारी। भए प्रतर्दन भूतल चारी॥ भए प्रतर्दनके द्वै बारे। बत्स भार्ग नृप भूमिविहारे॥ भूप अलर्क बत्सके जाए। लोपामुद्रासों बर पाए॥ सुत अलर्कके सन्तति जाए। ताके सुवन शुनीथ कहाए॥ ताके सुवन छेमवर छेमी। तासुत केतुमान बरनेमी॥ तासुत भए सुकेतु सुहेतू। तासुत धर्मकेतु जशसेतू॥ तासुत सत्यकेतु सतिबकता। तासुत विभु हरि गुण रसछकता॥ नृप आनर्त तासु सुत बीरा। तासु सुवन शुकुमार सुधीरा॥ धृष्टकेतु सुत तासु सुजाना। वेनुहोत्र तासुत बलवाना॥ तासुत भर्ग भए बलभारी। एते कासवंश अधिकारी॥ जे सुहोत्रके सुवन द्वतीये। ताको बृहत नाम सुनि लीयें॥ ताके सुवन तीनि अजमीढा। अरु धीमीढ तृतीय पुरमीढा॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

तीनि तिया अजमीढके नीलि निकेशिनि जानि। अरु धूमिनि सुकुमारि सुचि सरस शील सुजानि॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

अजमीढके शिनिसो जाए। जन्हुभुप बरतप कर गाए॥ नृप युवनाश्व सुता शुभचरिता। ताकी तिय कावेरी सरिता॥ तिनसों सुवन शुनह नृप जाये। पुत्र सुनहके अजक कहाये॥ तासुत बलाकाश्व बलभारी। ताके सुत कुश आनद कारी॥ कुशक भए चारिसुत चारू। कुशिक और कुशनाभ उदारू॥ नृप कुशांब अरु भूरमति मानू। सुवन कुशिकके गाधि सुजानू॥ तासुत विश्वामित्र कहाए। तिनके सुवन अनगिने गाए॥ ए अजमीढ भूपके जाए। केशिनिसों ते तुम्हे बताए॥ जे नीलिनिसों प्रगटे बारे। ते अब तुमसों कहे पुकारे॥ भे सुसनि नीलिनिके जाए। पुरू ताके सुवन कहाए॥ नृपति पुरूके बाह्य सुबालक। तासुत पांच भए छिति पालक॥ मुद्गल सृञ्जय बृहदिषु कहिये। औ क्रिमिलाश्व जयी नर लहिये॥ एप्रांतो जो देश बसाया। सोई सुदेश पंचाल कहाया॥ जेठो सुत मुद्गलको आई। इंद्रसेन कह बाएउ सोई॥ इंद्रसेनके सुवन सयाने। भे बध्यश्व जगतमे जाने॥ ताको तिया मेनका नामा। सासाय

हि आएसि अभिरामा ॥ दिवोदास सुत पालक धरनी । सुता अहिल्या गौतमघरनी ॥ तासुत सता नंद शुचि जीके । ताके सुवन सत्यधृति नीके ॥ ********

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

देखि अपसराको भयो ताको बीज स्खलास । परिसरईके पुञ्ज पै सो शुचि लह्यो सुपास ॥

तासों भूप तहां भएसुत अरु सुता अरूप । कृपाचार्य्य जो विदित है कन्या कृपी अनूप ॥

तिनपैं संतन करिकृपा लै आए निजधाम ॥ शुनो भूप तातैं भयो कृपा कृपी यह नाम ।

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

दिवोदासके सुत सुनु राजा । भए मित्रयुः कृत शुभकाजा ॥ ए मुद्गलके बंश बखाने । अब सृंजयके सुनु सुखमाने ॥ सामदत्त सृञ्जयके बारे । भए तासु सहदेव दुलारे ॥ तासुत भे सोमक महिसाईं । ता सुत जंतु पिताकी नाईं ॥ शत सुत जंतु यज्ञ करि पाए । सबते छोटे पृषत कहाए ॥ तनै पृषतके द्रुपद प्रवीना । धृष्टद्युम्न ता तनै अहीना ॥ धृष्टकेतु ताकोसुत सूरा । सर्वशस्त्रविद्यासों पूरा ॥ ए अजमीढभूपके बंशज । भे नीलिनिसों ईश्वर अग्रज ॥ अब धूमिनिके बंश बखाने । जेहिमें तुम्है प्रभृति सुखदाने ॥ धूमिनिपुत्र हेत व्रतधारी । अयुतबरिस कीन्ही तपभारी ॥ ऋक्षनाम ताके सुत जाए । ताके सुत संवरण कहाए ॥ ताके सुवन कुरू नयलीन्हे । तज प्रयाग कुरुक्षेत्र सुकीन्हे ॥ ताके बंशज कौरव गाए । जे कुरुके सुत चारि सोहाए ॥ भूपसुधन्वा सुधनु महीशा । नृपति परीक्षित भे कुलदीपा ॥ चौथा सुत अरिमेजय चारू । भयो धनुर्धर परम उदारू ॥ भयो सुधन्वाको सुत बीरा । भूप सुहोत्र सरस रणधीरा ॥ *********

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

नृपसुहोत्रके च्यवन सुत ताके सुत कृतयज्ञ । चैद्योपरि चर तासु सुत भूपति परम कृतज्ञ ॥

अतरिक्ष गणनाश बसु ताको है अवतार । षटसुत एक तनया लहो चैद्योपरिचर चारु ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

नृपति बृहद्रथ मगधअधीशा । अरु प्रत्यग्रथ बर अवनीशा ॥ नृपकुश अरु सलिवाहन साकल । अरु यदु आदिर शुधिकर माकल ॥ सुता मत्स्यकाली अतिपावनि । पतिव्रताव्रतभावत हिआवनि ॥ तनै कुशाग्र बृहद्रथकेरे । तासुत वृषभल ए अरिखेरे ॥ तासुत पुष्पवान महिंत्राता । नृपतिसत्यहित तासुत ख्याता ॥ तासुत जर्ज सकलगुणखानी । तासुत संभवनृप गुरुज्ञानी ॥ ताकेतनै भयो द्वैफारा । लखि अनिष्ठ सो बाहेर डारा ॥ लखि तेहिं जराराक्षसी कीन्हो । सारकीन्ह दै प्रिसंत कीन्हो ॥ तातें जरासंधि भे राजधौ । विसद्बीर दशदिशिसें गाजौ ॥ तासुत भे सहदेव नरेशा । तासुत उदायु तनै शुभभेशा ॥ तासुत श्रुतश्रर्मा महितोषक । मगधअधीश धीर जयघोषक ॥ कहे सुधन्वा

कुरुके बारे । तिनके वंशज कहि निरवारे ॥ नृपति परीक्षितके अवकाहि च्वै । कौरो वंश विदित जो लहि च्वै ॥ सुवन परीक्षितके जनमेजय । तासुत तीनि सुनो जनमेजय ॥ उग्रसेन श्रुतिसेन सुसेना । भीमसेन जिनको पनदेना ॥ ए सुत एकप्रियासों जाए । दूजी तिया एकसुत पाए ॥ * ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

सो जनमेजयको सुवन भयो सुरथबलवान । भूपविदूरथ तासु सुत सीखक धनुषविधान ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

सुवन विदूरथके बलवाना । भए रिक्षनृप परम सुजाना ॥ भीमसेन ताके सुत जाने । ताके सुवन प्रतीप बखाने ॥ भे प्रतीपके तीनि कुमारा । सन्तन अरु देवापि उदारा ॥ अरु बाल्हिक भे लोकनिबाहू । तासुत सोमदत्त जयचाहू ॥ तासुत भूरिश्रवा भो भूपा । महारथी विरदैत अनूपा ॥ देवापी संतनके भाई । ते मुनि भए व्यपन ठिग जाई ॥ संतननृप नृपसेवक जाके । भीषम भे अनुपम सुत ताके ॥ गंगासुत भीषम धनुधारी । इंद्रीजित जोगीश्र अचारी ॥ रही गन्धकाली तिय दूजी । संतनको प्रियपावनि कूजी ॥ तासु दोयसुत जानत सिगरे । नृपतिविचित्र वीर्ज हैं अगरे ॥ जेठे चित्रांगद गुणसागर । सूर वीर धनुधरमैं आगर ॥ इछि कुभाव गुहता चाहे । ए दोउ बंधु देह निजदाहे ॥ तिनकी तिया नेचपबआनी । किए व्यास क्षेत्रज सुत ज्ञानी ॥ भूपपांडु धृतराष्ट कहाए । भए बिदुर भागवतकनाए ॥ पांडवके सुत अर्जुन बीरा । तासुत भे अभिमन्यु सुधीरा ॥ तासु परीक्षित भए सुसाजा । तासुत तुम जनमेजय राजा ॥ * * * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

रही पांडुक्षितिपालकी शुभद्रा दुहिता एक । नाम शुभद्रा तासुको कीन्हे सहित बिवेक ॥

शत सुत हैं धृतराष्टके गांधारीसों बीर । तिनमैं जेठे हैं नृपति दुरजोधन रणधीर ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

नृपति ययातिभूपके बारे । कहे पांचज भूमि बिहारे ॥ पुरु तुर्वसु अरु द्रुह्यु सुलारे । अरु अनु यदु बरमा भारे ॥ तिनमैं पुरुके वंश सुनाए । जे पैारव कौरव कहि गाए ॥ तुर्वसुको सुत वन्हि बिख्याता । तासु तनै गोभानु सुदाता ॥ तासुत भैत्रैसांदिसु सानी । ताके सुत मारुत बिज्ञानी ॥ नृपति मरुतके दुहिता एका । भई संमता सहित बिवेका ॥ नृपति ताहि संवर्तहि दीन्हे । सुत दुष्यंत तासु निजकिन्हे ॥ सुतदुष्यंत भूपको आयो । करुत्यामवर भूप कहायो ॥ तासुत नृप आक्रीड शुभेवो । भेताके सुत चारि सुदेवो ॥ केरल पार्थिव पांड प्रवीने । अरु नृपगोल बीररसभीने ॥ नृपतुर्वसुके वंश बखाने । कहै द्रुह्युके अब मनमाने ॥ भए द्रुह्युके द्वैसुत नागर । ब्रह्मसेतु गुणदीप उजागर ॥ नृप अंगारसेतुके बारे । तहिं युवनाश्व समरमे मारे ॥ अयजोवको आश अबभो । चौदह

मास जुद्ध के जूझे ॥ ताको सुत गांधार महानो । एते द्रुह्युवंश नृप जानो ॥ अब अनुवंशज भूप बखानै । अनुके पुत्र धर्म जगजानै ॥ **********

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

तासुत धृति ताके दुदुह ताके तनै प्रचेत । प्रगटे तनै प्रचेतके नैबिद भूप सुचेत ॥
पुरु तुर्वसु अनु द्रुह्युके बरणि कहे एवंश । अब आगे यदुको कहैं सुनिये नृपअवतंश ॥

श्रीमच्छ्रीकाशीराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशीवासिगोकुलनाथात्मजेन गोपीनाथकविना विरचिते भाषायां भारथान्तर्गते हरिवंशदर्पणोनाम नवमोऽध्यायः॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

नृपययजातिके सुत यदु ज्ञानी । तिनके भए पांच सुत दानी ॥ नृपति सहस्रद सदसद्ज्ञाता । अरु पयोद क्रोष्टा महिख्याता ॥ भूप नील अरु अंजिक जाने । ए यदुके सुत पांच बखाने ॥ तीनि सहस्रदको सुत कहिये । सो सुनि पुरुषसिंह मुदगहिये ॥ हैहय हय एदोय सुनामो । भूप वेणुहय तृतिय सुधामो ॥ हैहयनृपको पुत्र विसाला । धर्मनेत्र भो अरिकुल काला॥ भए कीर्ति ताके सुत भूभर । नृप साहंज तासु सुत कूपर ॥ ताके तनै महिष्मत मानी । भद्रसेन ताके सुत ज्ञानी ॥ ताके सुत दुर्दम नरनाऊ । कनक तासु सुत दीरघबाऊ ॥ चारि कुमार कनकके जाए । ते कृतवीर्य्य कृतोज कहाए ॥ अरु कृतबरमा कहें सयाने । है कृताग्नि चौथो सुनि जाने ॥ भो कृतबीर्य्य तनै भूस्वामी । कार्तिवीर्ज सहस्रार्जुन नामी ॥ अयुतबरिस करि तप मनमाना । दत्तात्रयसों लहि बरदाना ॥ सातोदीप अवनिसो लीन्हे । सतमत मख प्रतिदीपन कीन्हे ॥ जीति रावणै बांधि लेआयो । ताको आइ पुलस्ति छोडायो ॥ तासों लरनजोग जे जोऊ । रह्यो न भूपै भूपति कोऊ ॥ *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

बरिस पचासी सहस सों कीन्हो भूमि बिहार । परशुराम तब कोप करि कियो तासु संघार ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

शतसुत रहे तासु बरवीरा । तामे बचे पांच रणधीरा ॥ सूरसेन अरु सूर सुसूरा । नृप धृष्टोक्त छत्तबलपूरा ॥ पंचयो पूत जयध्वज पूता । कार्तिबीर्य्यसुत बली अकूता ॥ भयो जयध्वजको सुत बांको । तालजंघनृप बड़ेभुजाको ॥ताके वंश भए बहु राजा। तामें बृष है बिदिश बिराजा ॥ वृषके मधुनृप मधुके बालक । भए वृषगण परजा प्रतिपालक ॥ मधुके वंशज माधव ख्याता । वृषण वंशजा वृष्णि सुज्ञाता ॥ यदुके पुत्र सहस्रद नामी । तिनको वंशज ए महिस्वामी ॥ जदुसुत जे क्रोष्टा बरदानी । अब तावंश सुनो नृपज्ञानी ॥ नृपक्रोष्टाके ही द्वै नारी । मंजुल माद्री अरु गंधारी॥ गांधारीके सुवन बखाने । हे अनमित्र जगतमें आने ॥ भे अनमित्र भूपके बारे । भूपशिरोमणि

शुनि मुदभार ॥ तासु सुवन सत्यक बलभारी । तासु सुवन सात्युकि धनुधारी ॥ ताको सुवन असंग कहाए । तासु सुवन भे भूमिसदाए ॥ ताके पुत्र जुगंधरराजा । किए सदानय निमिहतकाजा ॥ क्रोष्टा गांधारीके अंगज । नृप अमित्र तिनके ए वंशज ॥ *~*~*~*~*~*~*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

यदु सुत क्रोष्टाभूपकी माद्री तिया सुजानि । ताके वंशज अब कहैं सुनो भूप सुखदानि ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

माद्री सुवन युधाजित कूजे । भूप देवमी दुष हैं दूजे ॥ नृपति युधाजितके द्वै सुत भे । वृष्णि अंधते नृप नयजुत भे ॥ भए वृष्णिके द्वै सुत वीरा । श्वफलक अरु चित्रक रणधीरा ॥ काशि राज भूपतिकी तनया । रही यथार्थ गांदिनी सनयाः ॥ सो श्वफलक भूपतिकी प्यारी । तासु तनै अक्रूर अचारी ॥ तासु अनुज हैं बारह चोरी । सुत श्वफलक नृपके सति सौरी ॥ उग्रसेनकी सुता दुलारी । सो अक्रूर केरि प्रियनारी ॥ द्वै सुत तिनसों भए सयाने । ते प्रसेन उपदेव बखाने ॥ वृष्णि तनै दूजो महिपाता । जो चित्रक श्वफल्कके भ्राता ॥ तिनके सुवन कहैं सो मानो । पृथु विष्टषु ए जेठे जानो ॥ बाहु सुबाहु सुपार्श्व सुसींवा । और सुधर्मा अश्वग्रीवा ॥ अरिष्टने मि गवेषिण वीरा । अश्वबाहु सब गुणन गंभीरा ॥ सर्मिष्ठा श्रवणा द्वै कन्या । चित्रकनृपको धनी सुधन्या ॥ क्रोष्टा अरु माद्रीसों आए । दोय सुवन जो तुम्हे बताए ॥ जेताग्रह्ज युधाजित कूजे । भूप देवमीदुष हैं दूजे ॥ वंश युधाजितके ए जानो । अब दूजेको सुनि सुख मानो ॥ नियादेवमीदुषकी ज्ञानी । रही अश्मकी सरस सयानी ॥ तिनके तनै सूर नृप अतनो । भोज वंश जाताकी पतिनी ।

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

भए सूरके दश सुवन सुता पांच शुभभेष । तिनमें सबते हैं वडे भाग्यवान बसुदेव ॥
तासु जन्ममें दुंदुभी सुरन बजायो आम । ताते भो बसुदेवको आनकदुंदुभि नाम ॥
देवभाग गंडूष फिरि अनाधृष्टि अरु श्याम । देवश्रवा रजिम वकरि बलावत अभिराम ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

अरु समीक कम बक उर आनो । तनै सूरके ए दश जानो ॥ जेठी पृथा तदनु श्रुतदेवा । पृथु कीर्ती श्रुतश्रवा सुभेवा ॥ अरु राजाधि देविरा पांचो । सुता सूरकी सुनि सुखरांचो ॥ राजा कुंत सूरसों मांगे । पृथा सुता तेहि मुदपागे ॥ तेहि निजसुता कियो भूस्वामी । पृथा भई तब कुंती नामी ॥ कुंतहि कुंत पांडुको दीन्हे । लोक वेद विधिसों मुदलीन्हे ॥ भे कुंतीके तीनि कुमारा । भूपति युधिष्ठिर भीम उदारा ॥ और धनंजय क्रमसों आनो । जम अरु वायु इंद्रसों मानो ॥ कुंत्यभूमि

पतिको पति पाइ । देवश्रवा जन्मको सुत आइ ॥ वृद्धशर्मको पति सहिकै । पृथुकीर्तीसों वर मुद गहिकै ॥ दंतवक्र सुत उतपति कीन्ही । उपनेअनै तेहि लखि लीन्ही ॥ सूर सुता श्रुतश्रवा कहाई। सो चैद्यपति अनुपम पाई ॥ व्है शिसुपाल तासु सुत आयो । जो हिरण्य कश्यप कहि गायो ॥ सूर भूपकी सुता सयानी । तिनके वंश कहे नृपज्ञानी॥ कहे सुवन जे दश गुणज्ञाता । तिनके वंश सुनो अब ताता ॥ जेठे नृप वसुदेव सोहाए । जाके सुवन कुल गुणगाए ॥ *◆*◆*◆*◆*◆*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

देव भाग गंडूष अरु अनाधृष्ट अरु श्याम । देवश्रवा श्टञ्जय बकरि वत्सावत अभिराम ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

अरु समी ककन बक उर आनो। सुवन सूरके ए दशजानो ॥ देवभागके सुत वरज्ञानी । ऊधो भए परम परमानी ॥ अनाधृष्टिके सुवन बखाने । भए निमर्त जगतमें जाने ॥ देवश्रयाके सुत सुख भोए । भे शत्रुघ्न शत्रुजित ओए ॥ देवश्रवाके सुवन सराहे । एक लक्ष्य जे परपुर दाहे ॥ वत्सावतके सुत न हि आयो । तव ताको करिकै मनभायो ॥ तेहि वसुदेव सुवन निज दीन्हे । कौशिक तेहिते निजसुत कीन्हे॥ सूर सुवन गंडूष उदारा । तिनके भयो न आत्मज वारा॥ निजसुत चारि तिन्हे हरि दीन्हे ।कृष्ण कृपामय करुणा चीन्हे॥ तासु नाम क्षतलक्षण चारु। चारु दोष्ण पचाल सुचारु॥ सन्निपाल तंत्रिज द्वै वारे । भे कलवकके परम दुलारे ॥ हनु विश्वास्व दोय सुत वीरा । भे श्टञ्जनके हरहित धीरा ॥ सुवुविस्यामको सुवन सुशीला । भे सुमित्र सहसा भट शीला ॥ सुत समीकको परम प्रवीना । भो अजात अरिजय जगलीना ॥ हौं वसुदेवभूपको रानी । चौदह चातुरि चारु सयानी॥ सवसों बडी रोहिणी रानी । फिरि मदिरापी हो गुरज्ञानी॥फिरि वैशालो अरु सहदेवा । तदनु सुनामा कहि श्रीदेवा ॥ *◆*◆*◆*◆*◆*◆*◆*◆*◆*◆*◆*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

तिया सांतिदेवा सुरुचि देवरच्छिता रानि। वृकदेवी अरु देवकी उपदेवी सुखदानि ॥

सुतनु सुतनु बडवा बडारए चौदह गणि लेऊ । नृपमणि श्रीवसुदेवको पत्नि सरस सनेऊ ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

पौरवनृप वाल्हीक असोला । तासु रोहिणी सुता सुशीला ॥ आठ सुवन दुइ दुहिता ताके । नृपवसुदेव सुवन हैं जाके ॥ जेठे श्रीवलिराम कहाए । फिरि सारण अरु दुर्दम गाए ॥ दमनस्भ भू पिंडारक आनो । उश उशीनर एवसु मानो ॥ चित्रावास सुता एक आई । सो मन तजि फिरि ताउर आइ ॥ सोइ सुभद्रा भई सोहाई । जो पतिव्रता वार्थपति पाई ॥ राम रेवतीरमण उदारा । तासों प्रगट्यौ निशठ कुमारा ॥ भए देवकीके सुत नागर। कृष्ण कृपानिधि करुणासागर ॥ भए

शांतिदेवाके वारे । भोज विजय द्वै जयरुचि धारे ॥गद वृकदेव सुबीर करेरे । ए द्वै सुवन नामासु केरे ॥ वृकदेवीके सुत अघ ईलक । भए अनावह धनुधर सीलक ॥ सुता नृगनिरराजकी ज्ञानी । वृकदेवी ह्वौं सरस सयानी ॥ ता भूपतिके रहे पुरोहित । शिशिरायण बरतप सजपोहित ॥ ताहि नपुंसक काहू भाष्यो । सो रिसिते मनमें गहि राख्यो ॥ बीते द्वादश बरिस प्रमाना । तब लहि औसर करि अनुमाना ॥ गोपसुता लहि रतिसुख लीन्हे । निज मनुशापन प्रगटित कीन्हे ॥ * ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

सो शापित ह्वौं अपसरा गोपसुता जो बाल । मुनिसंग रमी अनेकदिन सहित सुप्रेम सुचाल ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

सुवन एक प्रगट्यो तहं वासों । तब सो गई स्वर्ग भरि भासों ॥ मुनिं निसपृह नहिं सुतहि निहारे । सो कानन तजि अनत विहारे ॥ रह्यो जमनराजा यक कोई । लख्यो आइ तहंसो सुत सोई ॥ सो सुत लै नृप निजसुत कीन्हे । कालजमन सोइ शिवबर लीन्हे ॥ कालजमनके रथके बाजी । रहे वृषभ मुख वर जयसाजी ॥ शुनक्र भपजंनमेजय ज्ञानी । अबजो कहे सकुचि शुचिवानी ॥ क्रोष्टा भूपतिके बलवाना । भयो एक सुत और सुजाना ॥ तासु नाम वृजनीव सुनीको । तासुत स्वाहि सूर शुचि जीको ॥ ताको सुवन रुसद्गु सुवीरा ॥ ताके पुत्र चित्ररथ धीरा ॥ ताको सुत सरबिंदु नरेशा । तासुत पृथुसवा शुभभेशा ॥ ताके सुत अंतर महिस्वामी । ताके सुत सुयज्ञ शुभनामी ॥ ताके पुत्र उसत विख्याता । ताके सुवन सिनेयु सुदाता ॥ ताके तनै मरुत महिखाता । कंबलबरहिष ता सुत ज्ञाता ॥ शत प्रसूति तासुत सुखदायक । रुक्म कवच तासुत सब लायक ॥ तासुत अपराजित रणजेता । तासुत पांच भए जयलेता ॥ रुक्मेषु पृथु रुक्म महाना । अरु ज्यामेघ अमोघ सुजाना ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

पालित अरु हरि पांच ए बरणे बीर बिशाल । सुवन पराजित भूपके अरिवृन्दनके काल ।

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

भूप बिदेहनाहिं नृप दीन्हे । पालित हरि द्वै सुत गुहुलीन्हे ॥ भे रुक्मेषु राज्य अधिकारी । भे पृथु रुक्म तासु सहचारी ॥ ए दोउ मिलि बिरोध हिय धारी । लरि ज्यामेघ हि दियो निकारी ॥ ते मुनि संग बसि मुनिसों पायो सब मंत्र जे जयविधि छाये ॥ तब चढि रण ज्यामेघ सचायक । बिदित बीरबर बिना सहायक ॥ नदी नर्मदा तट भट भारे । रिक्षवंत गढपति कहु भारे ॥ बसि तहं राज्य कियो सबिबेका ॥ हिए टिकाये रणजय टेका ॥ हों ज्यामेघभूपकी रानी । सैव्या नाम प्रगल्भा मानी ॥ लह्यो न भूपति पुत्र उछाहू । तिय भय करै न दूजिय ब्याहू ॥ जीति कछु भूपतिकी दुहिता । ल्याए निज तिय हितकरि सुहिता ॥ लखि सैव्या बोली रिसिभारे । यह को तिय है साथ तुम्हारे ॥

मुनि डरि भूपति कहा विचारी।पुत्रवधू यह तिया तुम्हारी॥ तबतेइ कहा मूढमति सोऊ। पुत्रहीन किमि लह्यो पतोऊ ॥ कह्यो भूप मति रिति उरआनी। सुत भविष्यको पतिनीजानी॥ तब वह सुता किया तपभायो। ताके भाग्य भूप सुतपायो ॥ मे ज्यामेघ भूपको बारा । ताको नाम विदर्भउदारा ॥ ताके भए तीनि सुतमानो । लोमपाद अरु कौशिक जानो ॥ *****

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

लोमपादुके बभ्रुसुत ताके सुत आह्वाव।तासुत कौशिक चेदिता तासुत चेदि विख्यात॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

भे विदर्भके सुत एक औरो। बलगुणगर्व गहे जो गौरो ॥ भूपति भीम भूरिबलभीमा। एक बिहित जो विदित महीमा ॥ तासुत कुन्ति नीति विधि चीन्हे । जेकुन्तहि निज तनया कीन्हे॥ ताके तनै धृष्ट छितिकंता। तासु तीनिसुत गणनि अनंता॥ नाम अंवन दसाह सुहावन। बिषहर परपुर दुंद मचावन ॥ सुतदसाहके व्योम सुनोता। ताके सुत जीमूत पुनीता॥ तासुत वृहती अरिदल कूटन।तासु भीम रथ परपुर लूटन ॥ तासुत नवरथ रिपुरथ खूंदन । दशरथ तासु भुवन दलदूदन॥ तासुत सकुनि सुशोल सराहे।तासु करंभ सुनय जे चाहे।देवरात तासुत असिबाहक। तासु देवक्षिति बर असचाहक ॥ तासुत मधुमंजुल महिभरता। ताहिसु है सुत अरिदलदरता॥ महबध सत्व सत्यप्रतिपालक। पुरुहान मरुवंसके वालक॥ तनय सत्वके चारि उजागर। कौशल्या सो भे गुण सागर॥ नृप भजमान देवभृथ जानो। अंधक वृष्णि भूप ए मानो॥ है भजमान भूपकी रानी। तिनमें बडी बाह्यका ज्ञानी॥ उपवाह्यकी दुतीय सयानी। भए बाह्यकाके सुत दानी॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

धृष्ट विदूरथ व मन क्रम और पुरञ्जयु पाठ । अयुताजित सुसहस्त्रजित सतजित सहए आठ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

उपवाह्यक के सुत बलभारी। देववृद्ध भे भूतलचारी॥ सुवन सपूत हेतव्रतधारी। कीन्ही तप हो परम सुखारी ॥ जाय सरिततट संध्या करहीं। लहि त्रिकाल जल परमन करहीं॥ नृपकी चित्त प्रतिशुचि देखो। सुरिता भए प्रसन्न विसेखी ॥ तब ह्वै मूर्तिमान वह सरिता। कही भूपसों सकचि सुचरिता॥ छितिपति अब निज इच्छित भाषो। किए कर्मको सुचि रस चाषो॥ भूपति कही कृपा यह कीजे। मोहि सहस मोहि गतसुत दीजे॥ सुनितेइ सुनी तियाकी बरी।भागवान सुचि सुहृद सदेली॥ जो ऐसो सुत उतपति करिहै। भूपहि अति आनन्दसों भरिहै॥ यह गुणि आपुहि सुचि तन धारी। भई भूपकी पतिनी प्यारी॥ रमि तासों भूपति मुदलीन्हें।बभ्रु नाम सुत उतपति कीन्हे॥ ताके पुत्र पउत्र बिधाना। भे वंशज सतसहस बखाना॥ जे भजमान भूपके बारक।

वीर विदूरथ बैरि बिदारक॥ नृप राजाधिदेव सुत ताके। दत्त अदत्त सुवन भे जाके॥ तीजो सुत शोणाश्व हि जानो। चतुर श्वेतवाहनको मानो॥ सुवन दत्तके अरिबल खोऊ। शमीदंड शर्मा ए दोऊ॥ अवर्ण अरु सरनिष्टा तनया। दत्तभूपकी शुचि रुचि तनया॥ भे प्रतिक्षत्र शमीके जाए। तासुत स्वयंभोज जनभाए॥ ताके सुवन हृदीक बिख्याता। ताके बहुत तनै गुणज्ञाता॥ जेठे कृत बर्मा गुणज्ञाता। भिषगु सुधन्वा शोमहिताता॥ तनया दोय कामदा नामी। कामदंतिका लहै सुस्वामी॥ इनके बंशज शतसह जानो। सबको धीरबिर अनुमानो॥ *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

सत्वाभूपतिके सुवन नृप भजमान उदार। ताके बंशज ए कहे नरपति सह बिसतार॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

सत्वाको सुत अंधक भाषा। सुनो तासु बंशजको साषा॥ नृप द्रिढाश्वकी तनया चारू। ताके अंधक नृप भरतारू॥ तिनसों भए चारि सुत उतपति। तिनमें बडे कुकुर भे नरपति॥ अंभजमान तदनु सम सांचे। कंबल बरहिष बर जस रांचे॥ तनय कुकुरके धृष्णु कहाए। ताके सुवन कपोतरु गाए॥ तैतिर नृपति भए सुत ताके। प्रगटे सुवन पुनर्बसु जाके॥ ताके सुत अभिजित महिमाथा। ताके भए सुता सुत साथा॥ सुता आहुकी भई सुशीला। आहुक नामक सुवन जशीला॥ नृप अवंति पति निज सम जानो। दियो आहुकी सुता सयानो॥ भे बाहुकके दोय कुमारा। देवक उग्रसेन बल भारा॥ देवकके सुत चारि बखाने। देववान उपदेव सयाने॥ अरु सुदेव शुभ कारज करता। और देवरक्षित हियहरता॥ तनया सात देवकी प्यारी। और शांतदेवी शुभवारी॥ देवरक्षिता अरु उपदेवी। श्रीदेवी अरु शुचि वृकदेवी॥ सातहु सुता सुजान सुनामा। भव बसुदेव भूपकी बामा॥ नव सुत उग्रसेनके जानो। कंस न्यग्रोध सुनामा मानो॥ कंकु शुभूमिप सुधनु सुधर्वी। राष्टपाल अरु संकु सुमर्वी॥ अनाधृष्ट बलधीरज गेहू। पुष्टिमान ए नव गनिलेहू॥ * ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

कंसा कंसवती सुतनु कंका जेहिं प्रिथघांव। रही राष्टपाली सहित बहिनि कंसकी पांच॥
यदुबंशज परधान जे बरणे सुनाए भूप। वीर धीर दाता बिदित जेता जशी अनूप॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशीवासिगोकुलनाथात्मजेन गोपीनाथकविना बिरचिते भाषायां भारतान्तर्गते हरिबंशदर्पणेनाम दशमोऽध्यायः॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

यदुसुत कोष्टानृपकी नारी। मंजुल माद्री औ गंधारी॥ गंधारी महिषीके जाए। भूपति जे

अनमित्र सदाए॥ माद्रीपुत्र युधाजित अकूजे। और देवमीढ़ुष हैं दूजे॥ तिनके वंश भेद बेवहारा। प्रथमहिं कहा सहित विसतारा॥ और एक माद्रीके आए। ते भूपति अनमित्र कहवाए॥ अनमित्रके सुत निम्न महीपा। ताके दोय तनै कुलदीपा॥ नृपप्रसेन सत्राजित जेता। विदित बीर विरदैत सचेता॥ सब जदुबंशी कृष्ण समेता।बिहरैं द्वारावती सनेता॥सत्राजित हैं सूर्य्य अराधक। परमभक्त अविछिन्न अबाधक॥ ते एक दिवस समुद्रतट आई। रवि सनमुख है बांह उठाई॥ रवि तहं खरो खरो लय लाए। ह्वै प्रसन्न रवि भूपै आए॥ रविहि समीपहूं आए लेखे। तेजपुञ्ज नहिं मूरति देखे॥ तब नृप कह्यो सूर्य्यसों ऐसे। देखत रहे तुम्है प्रभु जैसे॥ नभपै तैसे इतहूं लेखें। तेजपुञ्ज मैं मूर्ति न देखें॥ सो सुनि रवि निज गरसों तूरी। मणि स्यमंत धरि दीन्हेउ दूरी॥ तब रवि सउमि तेज ह्वै भाए। नृप ह्वै मुचित मूर्ति लखि पाए॥ *—*—*—*—*—*—*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

करि संभाषण भूपसों रवि चढि चले विमान। मांग्यो नृप सोमन्त मणि दियो सूर सुखदान॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

सो मणि बांधि कंठ मुद जोहे। भूपति भूमि सूर्य्य ह्वै सो है॥ सत्राजित सो मणि मुद लीन्हे। नृप प्रसेनजित भाइहि दीन्हे॥ सो मणि देखि कृष्ण प्रभु माना। दिये न सो शठ लालच पागा॥ सो चलि मणि सह बिपिनि बिहारेसि। मणिहित ताहि सिंह तहं मारेसि॥ मणि लहि ह्वै वह सिंह अहूरै। लाग्यो बनमैं इत उत कूरै॥ मोदित लखि तेहि बधिरिसि आई। जांबवान मणि लियो छटाई॥ जब सेनाजित घर नहि आए। तब नागरजन कपट बढ़ाए॥ मांग्योकृष्ण न तेइ मणि दीन्हा। ताते ताहि मारि तिन लीन्हा॥ कहन लगे इमि सबै अयाने। सो सुनि कै हरि अनुचित माने॥ प्रभु लै संग सुभट शुभ भेसा। लगे लगन करि बिपिनि प्रवेशा॥ तहां मरो तेहि नृपकों देखे। ताके कण्ठ न सो मणि लेखे॥ चलि आगे सब सिंह निरेखे। रिछ चरन तहं उपटे पेखे॥ उपटेचरण लखतचलिआगे। दीरघ गुहा देखि मुद पागे॥ सुन्यो तहां वाणी एहि भावे। कासुत होओ धाय सुनावे॥ उर प्रसेनको सिंह बिदार्‍यो। सिंहहि जांबवान मणि मार्‍यो॥ कत तुम रोदन करत कुमारा। हैं यह चारु स्यमंत तुम्हारा॥ सो सुनि सबहि राखि बिलि द्वारे। प्रविशे कृष्ण रोस बरधारे॥ जांबवान हरिकह लखि जपयो। घोर सजोर शब्द करि जपयो॥ *—*—*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

ह्वै सक्रुद्ध सोउद्ध भड बाऊ जुद्ध करि मोर। एक इस दिनपै जानि प्रभु परो पाय सह जोर॥
जांबवती कन्या दियो सह स्यमंत मणि चारु। सो लै मोदित द्वारिका आए कृष्ण उदारु॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

सो मणि सत्राजितकहं दीन्हे। जूठो लांछण लोपित कीन्हे ॥ हीं सत्राजितके दशनारी। तिनके शतसुत भूमिविहारी ॥ तिनमें तीनि प्रसिद्ध सुकामी। हेमङ्गार वातपति नामी ॥ विश्व ख्यात ए सुत त्रय नामी। तनया तीनि प्रवीण बखानी ॥ चारु सत्यभामा अरु व्रतिनी। प्रस्वापिनि हरि रतिरस रतिनी ॥ सत्राजित नृपनिज भलचीन्हे। तीनौ सुता कृष्णकहं दीन्हे ॥ द्वै सुत भंगरा जके जाने। नृपं सभास नारेय बखाने ॥ ऋच्छ मारि जो मणि प्रभू ल्याए। सत्राजितको दै सुखपाए॥ नित्य सुवर्णभरै मणि सोई। रहै तहां न अवर्षण होई ॥ यहगुण लखि अक्रूर लोभाने। मणि लीबेको मत हिय माने॥ सुनि पांडवको कौरव जारे। कृष्ण राम तहं गए पियारे ॥ तब अक्रूरसु औसर पाई। शत धन्वाको मंत्र सिखाई ॥ सत्राजितको हति मणि ल्यावो। निशिमें हमकों दै मुद पावो ॥ शतधन्वा तेहि हति मणि लीन्हे। सहित प्रेम अकरूर हि दीन्हे॥ कह्यो अक्रूर करो पन भाई। हमें दियो तुम जो मणि ल्याई॥सो मति काऊहि भेद बतावो॥किनो कष्ट जो वासो पावो॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

पितामरण लखि दुखित ह्वै सतिभामा रिसि आइ। रथ चढि आइ गोविन्दपैं कहो दशा बिलखाइ ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

सुनि हरि तहां सात्यकिहि राखे। आप द्वारिका गे रिसि राखे॥ शतधन्वाकों घेरयो जाई। लख्यो निकसि सो सनमुख आई ॥ कछु छिन लरि फिरिचल्यो पराइ। रथमें एक अश्वनी लाइ ॥ सो वाजिनि शत गामिनि नामा॥शत जोजन चलि मरी सुकामा॥तब शतधन्वा भयसों पाग्यो। रथसों उतरि पयादे भाग्यो॥ पीछे राम कृष्ण तहं आए। रथ की दशा देखि सुख पाए॥ निज रथ सह तहं राम हि राखी। ता पीछे हरि चले सुसाखी॥लखि ताको इमि कियो झपटैं। जिमि गइन्दको सिंह दपटैं॥ मिथिला पुर पञ्चत तेहि मारे। तेहि मणि बिनु ताकउ निहारे॥ फिरि गे भ्राताऊं मुद पागे। राम लखनकों सो मणि मागे॥कह्यो रामसों कृष्ण बुझाई। तासों रह्यो न सो मणि भाई॥ सो सुनि राम कपट अनुमाने। मिथ्या बचन जानि रिसिआने ॥ रूसि आइ मिथिला सुख साजे। मिथिला पतिसों पूजित राजे ॥ लहि मणि कनक प्रसूति सुखारे। सुणि अक्रूर यज्ञ मन धारे ॥ नित्य निरन्तर शुचि मख करहीं। दै असंख्य दक्षिणा मुद भरहीं ॥ साठि बरिस यहि विधि मख कीन्हें। मणि प्रभाव से काहुं चीन्हे ॥ मत मारगमें रत तेहि लेखे। कहि न सकै कोउ बिनु देखे ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

एहि अन्तरमें रामपैं मिथिलापुरमें आय। गदा युद्ध सीख्यो सुभट दुरजोधन नृपराय ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

अंधक कृष्णि रामपै आई । वृष्णिन कृष्ण से गए मनाई ॥ मणिकारण भी अंतरयामी । भे अकरूर दूरिके बासी ॥ गे अकरूर दूरि कढि.जबते । भो निज देश अवर्षण तबते ॥ तब अंधकनृप जाइ बुझाए । अकरूरहि निजपुरमह ल्याए ॥ सुनऊ भूप तब मणिके भेवा । बरष्यो हारा बतिमे देवा ॥ सुधि अकरूर कृष्णकहं दीन्हो । निजधनया हिय आनद लीन्हो ॥ सभामध्य अक्रूरहि देखी । कह्यो कृष्ण बाणी रिसिभेखी ॥ मणि स्यमंत हैं तुम्हरे गेऊ । निजभल चाहि हमें सो देहू ॥ सुनि अकरूर न उत्तर भाखे । सो मणि हरिके आगे राखे ॥ लखि सो मणि प्रभु निजकर लीन्हे । ह्वै प्रसन्न अकरूरहि दीन्हे ॥ बाधि कंठ मनि मुदसों सोहे । नृप अकरूर सूर समसोहे ॥ जांबवानके घरके द्वारे । प्रभुजो शुन्यौ शब्द पुन धारे ॥ भादों चौथि चंद जों देखे । हिय कलंकके भयसों भेखे ॥ तौ यह शब्द पठन जों लागे । झूठ कलंक न ताको लागे ॥ हिय प्रसेनको सिंह बिदाह्यो । सिंहहि जांबवान गहि माह्यो ॥ कत रोदन तुम करत कुमारा । है यह चारु स्यमंत तुम्हारा ॥ श्लोक ॥ सिंहः प्रसेनमवधात्सिंहोजांबवता हतः । सुकुमारक मारोदीस्तव ह्येष स्यमन्तकः ॥ *⁕*⁕*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

तीनि बार एहि जो पढै नि हचेसों हिय मेषि । झूठ कलक न तेहि लगै चौथि चंदको देषि ॥
फिरि बूझ्यो मुनिराजसों जनमेजय छितिपाल । विदित विश्वभरविष्णुकी पावनि कथा रसाल ॥

॥ * ॥ छन्द ॥ * ॥

शुचि सुबुधि सकल पुराणबिदसों सुरुचि यह बाणी लहै । भेविसद विभु बराह ताकर शुभ कथा सुनिबो चहै ॥ आचरण चरित सुभाव कारण रूप गुण तिनको कहो । अरु विश्वसृज भगवान कत बसुदेवके सुत भे अहो ॥ जेहि अखिल अमर विरंचि आदिक ध्यान धरि लखि हृदि धरे । निज लोक तजि एहि लोक प्रभुने नरनसंग क्रिडाकरे ॥ ओ रचन पालन करत गोपन विश्व बहुविधि बहु घने । ते गोप कहवाए सर्वचि गोपाल गोपोपति बने ॥ अरु बिबिध बिधिके विविध विधिसों विविध बर बिधिसों भए । बहु विश्व जाके उर बसत उरवास सो प्रभु कत लए ॥ ते यज्ञते यज्ञांग ताई यज्ञ कारक यज्ञ यशी । ते युगुति पावक ज्वलन जाहिर बासुकी रति पगबसी ॥ जे बरण बिद्या वेदव्यापक चर अचर समुदा यहैं । सत आदि जुग परजन्त ताके भेदमे जे काय हैं ॥ जे गरुडगामी क्षीरसागर शयन कर अभि राम हैं । जेहि भजे गोपीनाथ जनगण लहत आनद धाम हैं ॥

॥ * ॥ बर्णा छन्द ॥ * ॥

और एक । बात नेक ॥ तासु भेद । का अखेद ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

रससों शोणित होत अरु शोणितहोसों मासु। होत माससों मेद त्रिठ होत हाड जिहि मासु॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

तासों मज्जा होत गोसांई। तासों होत शुक्र शुभठांई॥ होत शुक्रतें गर्भ विधाना। सबको मूलक रस परधाना॥ तातें प्रथम भाग रस जानो। आंकर तासु सुधाकर मानो॥ तातें सोमात्मक सबकोई। शुक्रहि कहत अनुक्रम जोई॥ दुतिय भाग जो रज रमणीको। सो पावकआत्मक है नीको॥ हैं कफवर्ग शुक्र शुनि जाने। रजकहं पित्तगर्व अनुमाने॥ हृदय होइ कफका असथाना। रहत नाभिमें पित्त प्रधाना॥ हैमन नित्य हृदयको वासो। मनको देव चंदसुखरासो॥ नाभि देश रज पित्त शुभेवा। ताकोसदा ऊनाशन देवा॥ रज अरु शुक्र एक से व्है कै। बाढै अंकुर सम दोउ भैकै॥ तब तेहि गर्भ मध्य शुभदेशा। करि ईश्वरमय बायु प्रवेशा॥ अंगभेद प्रगटित करि येषैं। तामें आपु पांच व्है तोषैं॥ प्राण अपान समान कहाए। अरु उदान अरु व्यान गनाए॥ अध अपान हृदि प्राण विआरै। अरु उदान ऊधर संचारै॥ नाभिदेशमें बसै समाना। सर्व देहमें विहरै व्याना॥ ऐसी दशा देहकी जानो। पंचभूतमें सो अनुमानो॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

पृथिवी वायु अकाश जल अगनि पांच ए भूत। दश इन्द्रीते हैं सबै मन जंताके सूत॥
प्राणबायु तन भूंमिमें चखु जोतिमें चारु। रंध्र अकाश अदृश्य जो जल प्रसेद अरु लारु॥
सब प्रकार निर्मित कियो व्यामक ईश्वर जौन। सोई आपु प्रभु नर भए सो यह कारण कौन॥
गर्भ वासको महत दुख बरणत हैं सबकोय। तासु बास ईश्वर कियो कहो कौन गुण योय॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

इतनों प्रश्न भूप कहि लीन्हे। तब मुनिबर यह उत्तर दीन्हे॥ अहो भूमिपति तुम बड भागी। पावनि विष्णु कथा अनुरागी॥ निमिष मात्र भूमें मन लावै। सो अपूर्व उत्तम पद पावै॥ नृप तुम भाग्यवान सब सोतें। जो प्रभु कथा श्रवण चित चीते॥ एक मूर्त्ति प्रभु की सुखरासी। जोनि रासि वैकुण्ठ बिलासी॥ दुतिय छीरसागरके बासी। सहित योग माया शुभदासी॥ सहस चौकडी युग परमाना। शोय जानि ते करि अनुमाना॥ नाभि कमलपै विधिहि बिलासें। ताहित मधुकैटभको मासें॥ रचैं जगत ब्रह्मा मनभाए। जेहि प्रकार पीछु कहिआए॥ प्रभु जेहि हेतु लेत अवतारा। सो अब शुनिये भूप उदारा॥ जब जब दैत होहिं मदमाते। अति उतपात करैं दिसि राते॥ तब तब धर्म लोप जग होई। दुखत होहिं ऋषि सुर सब कोई॥ तब प्रभु लै अवतार महाशै। करुणा

निधि कलसकों कुंभ लारी ॥ असुर हिरण्यनैन मद भारा । धरि बराह ताकंहं प्रभु मारा ॥ अंग अंग जितनो श्रुति धारो । ते बराह प्रति अंग बिचारो॥ तासे अंश बराह बिख्याता । धरेउ देहमें नहि हिम बाता ॥ जल प्रवाहमें बूडत देखो । उरध कियो लोक हित पेखो ॥ *＠*＠*＠* ॥

॥ दोहा ॥

यह बराह की सुचि कथा तुम्हें सुनायों भूप । अब सुनिये नरसिंहके पावन चरित अनूप ॥

॥ * ॥ छंद तामर ॥ * ॥

शुभ सत्य युगमें आम । सु हिरण्य काश्यप नाम॥खल दैत्यवर बलधाम॥तप कियो अति अभिराम॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

सहस इग्यारह पांचशत बरिस निरंबु विधान । तपत देखि विधि आइ तब कह्यो मांगु बरदान ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

व्है मोदित तब तहं बर मागा । सब जग जीतनकी मन पागा ॥ देव असुर गन्धर्व कहाए । किंनर यक्ष पिशाच गणाए ॥ अरु मनुष्य ऋषि तप बल भारे । हों न मरों प्रभु इनके मारे॥ अस्त्र शस्त्र अरु पर्वत भारी । तिनतें मरों नमाहि कोउ मारी ॥ सूखे गीरे आयुध जेते । मोतन व्यर्थ होंहि सब तेते ॥ इनतें इतर निरायुध आवे ।करे पराक्रम जो चहि भावे॥सो सुनि एव मस्तु कहि वेधा । सुर सेवित गे स्वर्ग सुमेधा ॥ बर प्रभाव अति उग्र निरेखी । सुरन कह्यो विधिसों भयपेखी ॥ प्रभु किमि बर दीन्हें तुम वाको । निमित मृत्यु करो तिमि ताको ॥ सुनि बिधि कहा सुनो सब कोई । तप प्रभाव मिथ्या न हि होई ॥ तप फल भोगि गर्व हिय भारे।मरिहि विष्णुतें उदर विदारे॥ व्है हिरण्य कश्यप बलभारी । जीतेसि तीनि लोक धनुधारी ॥ तब सुरगण विष्णुपें धाए।आरत व्है निज व्यथा सुनाए ॥ प्रभु सुरगण कंहं साहस दीन्हे। ता बध करिवेकों मन कीन्हे॥ घन सम नपुत्रल घोज कठोरा । करि घनबेग घनस्वन घोरा ॥ व्है सक्रुद्ध नरहरि बपु धारे । दुष्ट दैत को उदर बिदारे ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

जेहि हित प्रभु नरसिंह भे सो बरणे क्षिति पाल।अब कहियत जेहि हेतु मे बावन विदित बिसाल॥

॥ * ॥ रोला छन्द ॥ * ॥

शक्र स्वर्ग हित विरच्यो वलि सहस मख जूप । तब जिनै मुनि पुरहूतकी प्रभु भए बावन रूप ॥
जाय बलिपें मांगि साढे तीनि पग महि पाय । लगे मापन ताहि व्है अति अमल उन्नत काय ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

तहं प्रभुके कटि आसु सो भए निशेश दिनेश । ता दिन की सुषमा न कहि सकै सारदा शेष ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

सकल लोक असवल लखि धाए। असुर जिते पहिले कहि आए ॥ दिति अरु दनुके वंशज जेते। प्रभुसों हते गए तहं तेते ॥ फिरि प्रभु बलिहि पताल पठाए। सह सुर शुक्र सरस सुख पाए॥ फिरि प्रभुले अवतार सुहावन। दत्तात्रेय भए चित पावन ॥ वेद धर्मको लोप निरेखो। भए अत्रिके भुवन सुभेखी ॥ वेद धर्म मख बरण बिबेका। रोपित कियो सुरिति अनेका ॥ दत्तात्रेयहि पूजि सुआपी। कार्ति वीजे भो परम प्रतापी ॥ प्रथम रह्यो सो द्वै भुज गायो। लहि प्रभु कृपा सहस भुज पायो ॥ सातदीपको पति ह्वै राज्यो। माहिष्मती पुरी बसि गाज्यो ॥ ताकापापकर्म लखि कोपा। भे प्रभु परशुराम पन रोपी ॥ परशुराम जयशब्द निवेदन। कियो तासु बध करि भुज छेदन ॥ बार एकैस जीति महि लीन्हे। सो बिधिवत विप्रनकहं दीन्हे ॥ अब नृप चित्त एक तं ल्याई। सुनु सप्रेम हिय भक्ति बढ़ाई ॥ जेहि बिरंचि सनकादिक ध्यावैं। सो उदार अवतार बतावैं ॥ भव सागरको केतु सो छायो। जासु नाम शुभ धाम गनायो॥ प्राणपयान समै जेहि नावें बसि काशीमें शंभु सुनावें॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

राम नाम अभिराम अति महिमा सागर चारु। अमल अगाधि अमीर शुचि अनुपम सरल सुतारु ॥ श्री श्रीपति सिय राम ह्वै कीन्हो भूमिबिहार। सह कारण सो शुनि सजन ओसि लहत भवपार ॥ विधि वर लहि अति प्रबल ह्वै रावण निशिचरराज। सुर सुरपति अरु ऋषिनको कीन्हो महत अकाज ॥ * * * * * * ॥

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

लंकपतिके कर्म कुत्सित देखि अति दुख पाय। भूमि धरि गोरूप विधिसों कही बड़ बिधिजाय ॥ कह्यो सो शुनि समुझि वेधा सहित सुर ऋषि भीर। समुद करुणासमुद ढिगगे पयसमुंदके तीर ॥ कीयो अस्तुति सरुचि रचि रचि जोरि कर सुखपाय। भक्ति बत्सल प्रगट भे प्रभु दिशा प्राची आय ॥ रमा सह इमि गरुड़ पे प्रभु लूर परमार्पूर। उदै गिरिपे उदित मानहुं कला कोटिन सूर ॥ * * * * * * * * * *

॥ * ॥ तोटकछन्द ॥ * ॥

मुदभे शुनिकै बिनती बिधिसों। बिधिके मनकी करिबो बिधिसों ॥ कहिकै प्रभु अन्तरध्यान भए। सुरसो करता निज धाम गए ॥ * * * * * * ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

पूरणब्रह्म बिश्वपति स्वामी। रमारमण नागान्तक गामी ॥ जन हित हेतु हरषि पुरुषोत्तम। भे नरेंद्र अज इंद्र पुरोगम॥ शुनऊ तासु शुभ चरित नरेशा। जेहि शुनि रहै न पातक लेशा ॥ विधि

की विनै मानि मुदभारे । भे दशरथके सुवन सुखारे ॥ शंख चक्र सह गदा सुखारी । भए चाहि न्हे चार सुचारी ॥ राम भरथ अरु लखन पियारे । अरु शत्रुघ्न भए लघु बारे ॥ रामहि परब्रह्म नृप जानो । अनुज नीति शंखादिक मानो ॥ रचि रचि बालचरित चित चायन । बहु विधि विहरि भोरार भावन ॥ न्हे कछु दिनमें शुभग सयाने । गहि सर धनु विधि धनुधर आने ॥ कौशिक वचन मानि मुद लीन्हे । दशरथ नृप कौशिक कहं दीन्हे ॥ अति अभिराम राम सब जामिहि । पुरुष सिंह लछिमन अनुगामिहि ॥ मगमें मारि ताडके खामी । गे मुनि बन शत रवि सम धामी ॥ तहं मुनि यज्ञ विध्वंसन हारे । आदि सुबाहु दइत बहु मारे ॥ लखि मारीच हि शर एक छाडे । सो लै गयो समुद तट चाडे ॥ ऋषि सह चलि तहते मुद धारे । गौतम घरणि अहिल्य हि तारे ॥ तहतें चलि सुरसरि तट आई । गुनि केवटसों विनै सोहाई ॥ **✽*✽*✽**

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

सुर सरि उतरि उदार प्रभु ऋषि अरु अनुज समेत । लखे मनोहर मंजु पुर मिथिला छपा निकेत ॥

॥ * ॥ [illegible] ॥ * ॥

[illegible] उरभरे । कर धनुष धरि सो धनुष धरि करि द्विधा धरणी पैं धरे । निज प्रिया परमा पूर पावन करणि सिय तेहि पुनि वरे । करि लोकरीति सप्रीति फिरि निज तेज भृगुपति सों हरे ॥ सुख औधि जाय सु औध पुर बर बरिस द्वादश लों रहे । पितु वचन मिसि सिय लक्षण सह फिरि सुरन हित बन मगगहे ॥ लहि शृंगबेर निषादपैं करि त्रिपा फिरि सुरसरि तरे । मिलि सुमुणि भारद्वाज सो फिरि उतरि जमुनाबल खरे ॥ चलि बालमीकमुनीशसों मिलि चित्रकूटहि चाहिकै । कछु दिन रमे तित भरत आए तेहि सुवचननि पाहि कै ॥ शुचि पादुका दे बिदा करि फिरि अत्रिमुनिपै प्रभु गए । तब तहातें चलि नदी तरि लखि बधि विराधहि बर दए ॥ फिरि सुघन दण्डक चाहि जेहि तरु बलि अति सुन्दर जमे । सरभंग सुतप सुतीक्षण मुनिगण सहित तह बहु दिन रमे ॥ करि कुम्भसंभवसों समागम जाय पंचवटी बसे । ते धन्य गोपीनाथ जाहिय बन विहारी प्रभु लसे ॥*✽*✽*✽*✽*✽*✽*

॥ तोटकछन्द ॥

तह रावणकी भगिनी बलमें । तह सूर्पनखा ठगिनी छलमें ॥ चित चायन सों अति चातुरि न्है । प्रभु पास गई मदनातुरि न्है ॥*✽*✽*✽*✽*✽*✽*✽*✽**

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

प्रभुको आज्ञा लहि तहां लछिमन वीर निसंक । सूर्पनखाको गहि लियो नाकिकान अरु नंक ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

तासु प्रताप निशाचर जाय । चौदह सहस सहित सब आए ॥ खर दूषन त्रिशिरा सब मारे । लछमनै तेहि श्रीराम सम्हारे ॥ तब सो देखि रुदन करि भागी । रावणके ढिग गई अभागी ॥ ताको दशा दशानन सुनिकै । गो मरीचपैं हिय कछु गुनिकै ॥ करि विचित्र मृग ताहि पठायो । पीछे आपु भूत बनि आयो ॥ लखि विचित्र मृग प्रभु पहिचाना । निज संकल्प किए अनुमाना ॥ करि तब सियहि अगिनीमें लीना । किय माया आसन आसीना ॥ लखनहि राखि गए बन वारी । कथ्यो आइ तेहि असुर बिचारी ॥ मत्यो रामवत वचन सुनाई । सो सुनि लखनहि सिया पठाई ॥ माया सियपैं रावण आई । हरिलै चल्यो सुरथ बैठाई ॥ लखि जटायु तेहि पथन मास्यो । खेद जटायुको पत्त बिदास्यो ॥ शेष प्राण व्है परे जटायू । गयो सियहि लै सो लघु आयू ॥ प्रभु फिरि आइ सियहि नहि देखे । व्याकुलतासों निज हिय भेखे ॥ यह सुनि भूपति भ्रम मति कीजो । लीला प्रौढ हेत लखि लीजो ॥ लखि जटायु कहं सुचि गति दीन्हे । चलि कबन्ध भुज छेदन कीन्हे ॥ सोतन दहि सो निज पद पायो । तिमि सबरिहि निज धाम पठायो ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

पम्पा सर जल परस करि आगू चले उदार । तंह पठए सुग्रीवके आए पवन कुमार ॥
भक्ति सहित दंडवत करि बूझि कथा सुखदाय । बिप्रिपै सह भ्राता प्रभुहि लैगे कंध चढाय ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

तंह सुग्रीव परे पग आई । कीन्हे ताहि सखा रघुराई ॥ तासु दशा सुनि प्रभु पन कीन्हे । बालिहि मारि राज्य तेहि दीन्हे ॥ बालि सुवन अंगद बलवाना । कियो ताहि जुवराज प्रधाना ॥ राज काजमें कपिहि लगाई । बसे प्रवर्षण पैं प्रभु जाई ॥ तंह सुग्रीव अङ्गद अथोरे । कलकराज कपि कटक बटोरे ॥ लखन जाइ तेहि प्रभूपैं ल्याए । सियहि निरेखन हेत पठाए ॥ जांबवान अंगद हनुमानहिं । आदिवीर दश वर बलवानहिं ॥ निजनामांकित अमल अंगूठी । प्रभु हनुमानहिं दई अनूठी ॥ लै तेहि कपिवर चले सदाए । बीचहि एक निशाचर पाए ॥ व्है सरोष ताको बध करिकै । पेखि जोगिनीकों मुद भरिकै ॥ गएसमुद तट आनद भेजे । तंहं सम्पाति गृध्र कंह देखे ॥ लहि उदेश सियाको तासों । पौनकुमार चले भरि भावों ॥ सुरसासों संभाषण करिकै । प्राणसिंहिका कों परि हरिकै ॥ समुद समुदके पार कपीशा । जाइ निसहू लंकपुर दीशा ॥ तब कपिवर लघुतम वपुधारी । लंकापुर मधि चले सुखारी ॥ मगमें मिली लंकिनी धीरा । सीक्षि ताहि पुर प्रविश्यो बीरा ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

सियहि दरसि करि बारतादि मणिमुदरी आय । लै चूडामणि शशि कह्यो उपवन को संहार अक्षकुमारहि मारि अरु अखि रावणहि जाय। जारि लंकपुर फिरि लख्यो प्रभुपद पंकज आय॥

॥ * ॥ मौक्तिकदामछन्द ॥ * ॥

कह्यो बिरतान्त सबै प्रभुपास । कह्यो उत जो बलवान बिलास॥ सुन्यो प्रभु सो अतिसै सुखपाय । लियो हनुमानहिं अंक लगाय ॥ **❦*❦*❦*❦*❦*❦**

॥ * ॥ जैकरीछन्द ॥ * ॥

कर जोरि कहि सियको संदेस । मन मुदित दै मुख मणि सुवेस ॥ अवचक्क प्रभु नति करऊ देरि । कहि मंजु मूरति रह्यो हेरि ॥ *❦*❦*❦*❦*❦*❦*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

सो सुनि सेनासहित चलि प्रभु बिरदैत सुबीर । सुघरे सुघरे देखि बल उतरे सागर तीर ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

आयो तहं प्रभू शरण बिचारी । भगत बिभीषण बुधि बलभारी ॥ तीनि दिवस रहि सागर तीरा । तब तेहि भय दीन्हो रघुबीरा ॥ तब सागर ब्राह्मण बनि आयो । बिधिवत बिनै करि भेद बतायो ॥ सेत बांधि सहसेना स्वामी । जाऊ पार प्रभू अतर आमी ॥ सेत बांधि प्रभू उतरे पारा । धराधीश मर्दन खलधारा ॥ प्रभु निदेश लहि सुभट प्रचारे । गढ लंकाके चारिउ द्वारे ॥ लहि रावणको उग्र निदेशा । राक्षस कढे कराल कुभेशा ॥ भिरे बीर रण धीर प्रचारी। कपि अरु निशिचर बपु बलभारी॥हनुमान अङ्गद बलवाना। जांबवान नल नील सुजाना॥ द्विविद मयन्द केसरी बीरा । तार सुषेन सरभ रणधीरा ॥ गव गवाक्ष ए जूथप भारे । दैत्यन दल बल दलि मलि डारे॥ दै दै ताल कगुरण चटिकै जैति राम टेरे बल बढिकै॥ मनुदम गिरके बिरन सुसाजें। काल कराल बिशाल बिराजें ॥ सो लखि मेघनाद भट बीरा । बाण वृष्टि कीन्हेसि घन तीरा॥ कै अदिस्य अति त्रसत अघाया । लाग्यो जुद्ध करण रचि माया ॥ सो लखि प्रभू करि कोप कराला। लीन्हो करशर धनुष बिशाला ॥ कै सभीत चल बल दल भाग्यो । प्रबल रामदल गाजन लाग्यो ॥ *❦* ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

कै सक्रुद्ध तब जुद्धको दशकंधर क्षिति पाल । चढो मूढ शा शिरचढ़ेो । निरतत काल कराल ॥ बीस भुजनि आयुध बिशद धरे लख्यो एहि चाल। मनु लख्यो नव है सघन साला सहित बिशाल ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

तारे भिरे सुभट रणधीरा । हनूमान आदिक बल बीरा ॥ पर्वत तरुवर लै लै डारैं । निशि

चर सना सुभट सधारैं ॥ दशकंधर निज बंधुहि देखी । शक्ति अमोघ चलाए सिनेखी । सो लखि लछिमन निज उरलीन्हे । रघुबर पाहि अमैवर दीन्हे ॥ तातें प्रभुलीला अनुसारी । परे भूमिपै मनोदुखारी ॥ लखि लषनहि प्रभु सब अनाए । औषध हित प्रिय कपिहि पठाए ॥ वायुवेग चलि वायुकुमारा । मगमै कालनेमि कहं मारा ॥ तदनु जाय द्रोणाचल ल्याए । लषनहि औषध दे सुखपाए ॥ सुनि दशकंधर अतिदुख पाएहि । कुम्भकरण कहं लरन पठाएहि ॥ जिहि सम वीर रावणको भ्राता । कठिन युद्ध कीन्हेसि मदमाता ॥ निज कर रघुबर ता वधकीन्हा । तातें तेहि उत्तिम पददीन्हा ॥ सो सुनि रावण अति दुखपायो । मेघनाद नवनेहि समुझायो ॥ थल भिक्षिखामें फिरि आई । लाग्यो अग्नकरण मन लाई ॥ सोयह भेद विभीषण जानो । प्रभुसों कह्यो विनय मय बानी ॥ प्रभु अब आज्ञा लखनहि देऊ । मेघनाद कर बध सुनिलेऊ ॥ प्रभु तब आज्ञालखनहि दीन्हो । लषन जाइ ताकर बधकीन्हा ॥ *⬭*⬭*⬭⬭*⬭*⬭*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

मेघनाद को मरण सुनि व्है व्याकुल दशकंध । पाइ मंत्र भृगु सों करन लाग्योमखमति अंध ॥
प्रभु आज्ञा लखि कोटि इश सुभट सराहे जाय । ता मख ध्वंसन करि बहुरि पेखे प्रभुके पाय ॥
रावण निशिचरराज तब उन्नत रथपं राजि । उमडि घनोघन घोर सम चटो प्रबल दलसाजि ॥

॥ * ॥ मोदकछन्द ॥ * ॥

आवत ताहि त्रिलोकि बली वर । मारुत नंदन दैत दलोदर ॥ कोप कराल कियो जय
चाहक । वानरयूथ सयूथपपाहक ॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥ *⬭⬭*⬭*⬭*⬭*
हनूमान बलवान नरपि अरपि घन सम गरजि ॥ मूका बज्र समान रावणके उर मैं दयो ॥

॥ * ॥ भुजंगप्रयात छन्द ॥ * ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

लगे दीह मूका भयो मूक मूका । रहे व्है दशौआस्य ज्यों मंजु मूका ॥ उठ्योचेतिकै होतिकै युद्ध भारी ॥ सराहे हनूमानकों गर्व धारी । कहा मांहि रे तु सराहै सुखारे ॥ लखे फेरि चौगान जौं प्राण धारे । अरे एक मूका हमै मारि लेतू ॥ लगे फेरि मैं तो तनें छाडि देतू । सुने सो हनूमान कां मूक मास्यो । न तातें कछु दंद सो वीर धास्यो ॥ भयो लोकि लक्ष्मि सकोप जानो । गयो फेरि यों रामपै मनमानो ॥ कसे कै कसैनै भलेकै करालो तजे कृत्त्या बाण भिंडान भाले ॥ भयो मोहमै मूढ माया पसारै । तिन्हे अर्थ हरि नाम का विचारै ॥ *⬭*⬭*⬭*⬭*⬭⬭*⬭*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

मायानिधि प्रभु सो करै यों माया विस्तार । चहै मनायो अज्ञ निधिहि मउप्रभेदहो पार ॥

निशिचर पतिहि रथी निरखि प्रभु हि पदाती देखि शक्र पठायो मातलिहि निज रथ अवनि मेखि॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

चढि तेहि रथपै प्रभु मुद भारे। गहि प्रचंडकोदंड निवारे॥ वीरक यूक सुरोमनि भावे। निज ज्ञान फल लहि शिशु मन त्यागे॥ कहि वर बाणनि मारन लागे। ताके तनहि विदारन लागे॥ दशशिर बीस भुजा प्रभु काटैं। नए प्रगटि फिरि सुख माठाटैं॥ गिरैं शीश रावणके कैसें। ताल वृक्षते वर फल जैसें॥ कटैं कटैं इमि भुज सिर ताके। अदरश दरश यथा समराके॥ एहि विधिनि शि दिन सात प्रमाना। सोहि ताहि वर युद्धविधाना॥ प्रभु निशिचरपतिको वध कीन्हे। बरषि सुमन सुजन मुदलीन्हे॥ लखि विभीषणहि सहित विवेका। कियो लंकपति करि अभिषेका॥ माथव सीतहि अगिनि प्रवेशी। लहि शुचि सीता महिमा भेशी॥ चढि पुष्पक पैं सहित समाजा। आए प्रभु जहं भारद्वाजा॥ एक निसीथिनि तहां बिताए। फिरि शुभ्रशोध औध पुरं आए॥ गुरु अरु मातु बन्धु पुरवासी। मिलि सबसों प्रभु आनद रासी॥ फिरि प्रभु महि मंगल सों साजे। विधिवत विप्रद राज्य लहि राजे॥ पाइ प्रभुहि प्रति पालन परणी। भई धन्य ता दिनते धरणी॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

प्रतिरोमनि ब्रह्माण्ड जो पालन करत अनूप। महिपालन की ता कथा कहैं कहांलों भूप॥
शुभद चरित श्रीरामके पावन करण उदार। बरणि कहे संक्षेपसों भवनिधितारणहार॥
अब कहिय तु श्रीकृष्णके चरित चारु संचार। जे प्रभु व्है बसुदेवसुत कियो दैत संघार॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

हो तब माथुर कल्पअनूपा। भए कृष्ण अज अनुपम रूपा॥ मे बसुदेव तनै जग स्वामी। दुष्ट दलन हित अन्तर आमी॥ मंत्री सखा सुभट सुत भ्राता। सहित कंसको कियो निपाता॥ और जिते खल नृप मदमाते। कौतुक सौतुक तिन्है निपाते॥ प्रभुके चरित कहांलों गावैं। ताते भेद निदान बतावैं॥ लखौ सुनौ जो गुणि अनुमानो। सो सब कृष्णचरित करि जानो॥ मत्स्य कच्छ आदिक अवतारा। ए बरणे शुनु भूप उदारा॥ व्यास कपिल सनकादिक आदिक। प्रभु अवतार असंख्य सुवादिक॥ चाहि जानिबो जासु प्रमाना। लहैं देवगण नाहिं महाना॥ अब भविष्य अवतार महीपा। शुनु सप्रेम कौरव कुलदीपा॥ होइहि संभल पुरको वासी। नाम विष्णुजश द्विज सुखरासी॥ तासुत व्है व्है हैं विख्याता। सु प्रभु कलकी पुहुमीत्राता॥ अन्तर्वेद मध्य करि वासा। करि हैं प्रभु दुष्टनको नासा॥ असती पुरुष सबै मिटि जैहैं। सुसती प्रगटि सुधर्म बढैहैं॥ शुनो भूप तब कलि युग जाइहि। परम पुनीत सत्ययुग आइहि॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

जो प्रभुकी अवतारके सुनै सुचरित सप्रेम। सो धनि परमारथ धनी इत उत लहैं सुछेम ॥
याहीसों सब बनतहैं एहि बिनु सबै नसाय। नहि एहि कीन्हे श्रम आधक लखे न सुख सरसाय॥
बिना बिचारे सहजहीं बादाद बडो नसाय। किए बिचार सु सहजहीं बडी बात बनिजाय ॥
स्वस्तिश्रीकाशीराजाधिराजश्रीउदितनारायणसिंहाज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशीवासिगोकुलनाथात्मजेन गोपीनाथकविना बिरचिते भाषायां भारतान्तर्गतेहरिवंशदर्पणेनाम कादशोऽध्यायः

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

परब्रह्म ईश्वर गुणगाए। सुरसबित बैकुण्ठ कहाए ॥ ते प्रभु मानुष ह्वै गुणधारो। हंस कहाए भूतलचारी ॥ जे प्रभु छीरधिउदधिबिहारी। बिरच्यौ बिधिहि स्वरुचि अनुसारी ॥ क्रमसों बिधि जग उतपति कीन्हे। गुणमें बिबिधिभांति मुद लीन्हे ॥ सबमें रहैं व्यापि प्रभु ऐसे। उपल दारुमें पावक जैसें ॥ अदितिपुत्र ह्वै निजजन पालक। भे उपेंद्र राक्षसकुलघालक ॥ करुणा निधिकी कीरति नीकी। पावन करणि सुनक प्रियजीकी ॥ भयो कृतयुगमें बल बाना। वृत्रासुर अघ वोघ अमाना ॥ सुमल प्रमाण रोज सो फैलै। भयो प्रमत्तसुरन सो ठेलै ॥ लै दधीचको हाड सोहायो। बिदत बिडौजा बज्र बनायो ॥ तासों वधि वृत्रहि जय लीन्हे। तातें असुर इंद रिसि कीन्हे ॥ चल्यो कोपि मय बर बल भारी। लख्यौ सुरनसों सुजय बिचारी ॥ कीन्हेसि क्रुद्ध युद्ध अति घोरा। माया व्यापित करि चहुंवोरा ॥ गरजे घूमि घनो घनछायो। अतिसै अंधकार महि आयो ॥ तडपै तडित भयानक भेसा। जेहि लखि रहै न धीरज लेसा ॥ मारुत सात प्रबल ह्वै डोलै। अतिप्रचंड दशदिशिसोंबोलै ॥ तपित वारि बरसै वर बूंदन। उलका पतन होइ दिशि दूदन ॥ सुर बिमान परवस तेहि माहीं। उलटैं पलटैं झुकैं उडाहीं ॥ वर बीची सागरमें जैसे। छोभित बोहित बिहरैं तैसे ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

सुरपति सहित समस्त सुर ह्वै तब तहां अचैन। त्राहि त्राहि करुणायतन आरत बोले बैन ॥
सो सुनि करुणासिंधु प्रभु दीनोद्धरण उदार। ता छिन तहं प्रगटित भए लखि निज बिरद बिहार ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

है जितने उतपात महाने। ते तेहि छिन एहि भांति नसाने ॥ ज्वलित जोति जिमि दिनमणि सुभेसा। रहैं न घरमें तमको लेसा ॥ घनसम श्याम मेरुसम भारी। चारु चतुर्भुज आयुध धारी ॥ गरुडध्वज रथपै आसीना। जासु चक्रभासि सूर अहीना ॥ कील आसु मन्दर तनुधारी। नव्हे अनंत किंकिणिसों भारी ॥ जामें सुमनगुरु सम लागे। तारा ग्रह नक्षत्र छबि पागे ॥ राव रथके बाजी

जेहि बाधे। जे जयलीबेकी बिधि साधे॥ प्रभु हि पेखि भे सुमन सुखारे। सहित इंद्र जे जैतिपुकारे॥ कह्यो शक्र सों सारंगपानी। होऊ निशंक दैत बध जानी॥ साथ संकलीसुनि यह बानी। भए अशंक सुमन सुख मानी॥ सुमन सुरपतिहि निरभै देखी। दानव दोह चढे अतितेखी॥ द्वादश शत बर हाथ प्रमाना। चारि चक्रको सुरथ अमाना॥ कंचन मय परदलको दाहक। सहस रिछ बल जाके बाहक॥ अस्त्र बिशेष भूरिसों भाखो। तापै चढि मय समर पधाखो॥ कोलमरे को जासु पसारा। सोह भयो असनि सँभारा॥ *<>*<>*<>*<>*<>*<>*<>*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

जामें लगे सहस्र खर जाके खैंचनहार। तेहि रथ चढ्यो प्रबल भे दैत बीर बर तार॥
हयग्रीवबह राऊ खर अरु अरिष्टबाराह। प्रबल बीर रथ चढि लसे करत युद्धको चाह॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

बिप्र चित दनुजेश कहायो। श्वेत नाम भट ताको जायो॥ चलो बिरोचन बर रणधीरा। बलिको तने अरिष्ट प्रवीरा॥ ईन्हे आदि दैत्यन बर बढिके। हय गज रथ खर कटक चढिके॥ ब्यूह बांधि भे सनमुख ठाढे। बीर धीर सुद उनमद बाढे॥ सिंह बराह रिछ आरोहे। कितने बीर पदाती सोहे॥ नाना रूपनके बल भारे। बिबिध भांतिके आयुध धारे॥ दैदै ताल काल सम गरजैं। लखि लखि सुमन समूहन तरजैं॥ प्रभु प्रसाद सुरपति दल साजे। ऐरावत गजपै चढि राजे॥ रुद्रादित्य आदि सब देवा। तैंतिस कोटि संग शुभ भेवा॥ पूरब दिशि पुरहूत बिराजे। दछिण दिशि गरबी जम गाजे॥ पश्चिम दिशि रहि बरुण प्रचारे। उतर दिशा कुबेर बिहारे॥ सहित साज सुर सेना पाहैं। करदम परदल मरदन चाहैं॥ किन्नर यक्ष गंधर्व सोहाए। मुनिगण सर्व मध्य रहि भाए॥ बाजि सहस जेहि रथमें लागे। तापैं चढि शशि सुमनापागे॥ मारुत सात प्रबल भे डोलैं। भे सनमुख अरि दलपैं बोलैं॥ उमडि मेघ अरि दलपैं गरजैं। जानें परे दैत उरदरजैं॥ तडिता असनि भयानक बरषैं। निरभै असुर लखे जेहि डरपैं॥ *<>*<>*<>*<>*<>*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

तक्षक बासुकि बिशद बिष जुरे सहित परिवार। दैत्यन दल प्रति तजत तजि फूतकारकी धार॥
शर धनु खड्गादिक बिशद आयुध धरे सुबीर। सोभे सब सुमनस शुभल संगर करता धीर॥

॥ * ॥ तोटकछन्द ॥ * ॥

शुभदं शुभ मंगल आशिषनें। सुमनें सु अजी असुरें बिषनें॥
तप पुंजबमय मुनि छंदपढे। सुनि सो मुदसों सुर चाव चढे॥

॥ * ॥ मन्हिसरीछन्द ॥ * ॥

इति सजी सुर शुभसेन तामधि बिधु सुर स्वामी लसे। प्रभू गरुड गामी गरुडकेतु बिलोकि

जेहि परबल चले ॥ धरि शंख चक्र गदारि पंकज सरसि सारंग धनु गहे । काटि खड्ग नंदक नंदकर तूणीर अक्षय छबि लहे ॥ लखि प्रभुहि विधिवत बंदि सुरपति सहित सेन अडिचले । जिमि नाचिबेला उदधि फैलत तिमि असुर दलपैंरले ॥ सरखड्गमल्ल सुमलि मुद्गर भिंडपालहि चालिते । सब चले आयुध दुहूं दिशिसो घोर शब्दनिनादिते ॥ सरसैन दोउ दुहू ओर सों चलिहो समुद्र सें भिरि मिले । जिमि प्रले मारुत पाय बीची उठति तिमि भट गणखिले ॥ भट जुटैं कुटैं कुटैं जुटैं कुटैं भट फिरि जुटि धरैं । बढि मारु मारु पुकारि मारैं मरैं जुधि कीडा करैं ॥ इमि मचो घोर अनोघ संगर देखि मय मायामयो । सर गर्व माया फांस सो सब बांधि सुरसेना लयो ॥ तेहि फांसे सुरब्है जडी भूत न सकहि हिलि चिचित भए । तबदेखि सुरपति बज्रसों बहुकाटि वर बंधन दए ॥ *❧*❧*❧*❧*❧*

॥ दोहा ॥

मायाफांसहि काटिके दानव दलमें आय । तामस अस्त्र अमोघतेहि तज्यो सुरेश सभाय ॥
ताते निशिचरसैनपें भयो घनो तम छाय । जाते नहि दानवनको निज परपरे लखाय ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

अंधकार व्यापे चहुंओरा । भए बिलप कोजनी घरदेरा ॥ निज दल बिकल देखि मेधावी । माया प्रगटेसि मय मायावी ॥ तामस भई अग्नि की ज्वाला । कीन्हेसि प्रगट अग्नि मनि लाला ॥ तमभो दूरि दैत मुद पागे । व्है के तपित सकल सुर भागे ॥ अग्निके पास आइ भे ठाढे । लखि सुरेश अति अमरष बाढे ॥ कह्यो बरुण सों मय मतिपावो । करि उपायद्रु अगिनि बरावो ॥ सो सुनि कह्यो वरुण सुद दाता । यहि माया की गति सुनु ताता ॥ रह्यो पूर्व युग मे तप राशी । ब्रह्म र्षि ऋषिज कानन को बासी ॥ उर्व नाम दुस्तर व्रत लीन्हे । तपके तेज तपित महि कीन्हे ॥ ताके पास तपित व्है आए । सुर ऋषिगण करि ताहि मनाए ॥ तात तजउ दुस्सहव्रत भारी । सुत उतपत्ति करउ लहि नारी ॥ सो सुनि उर्व कोप करि बोले । ब्रह्मचर्य की महिमा खोले ॥ धोरज धर्म तप जाने । ब्रह्मचर्य के बस ते माने ॥ ब्रह्मचर्य को ब्रत निबाहैं । ते यागोश करैं जो चाहैं ॥ बिना योग नहि सिद्धि अधीना । सिद्धि बिना नहि सुजस यहीना ॥ *❧*❧*❧*❧*❧*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

आसु सुजश संसार मे होत लहे संसार । ताको इत उत्तम सर्ग हैं उभ सुरथ बिहार ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

ति अ संग्रह करि सुत उपजावत । तुम जो कहे यहे बिस भावत ॥ प्रथम सृष्टि उतपत्ति विधि कीन्हे । तब ते कहो तियाहे लीन्हे ॥ ब्रह्मचर्य व्रत धारी जोगी । मानस पुत्र रचैं मुद भोगी ॥

एहि प्रकार बहु विधि सों भाषे। फिरि मुनि उर्व पुत्र अभि लाषे ॥ दच्छिण आनु अगिनिमैं राखी। कुशसों मंथन कियो सुसाखी ॥ भेदि उर्वको उरू चारू। औरवेलनल भे प्रगट उदारू ॥ जगत दहन ह्वैहैं रिषि भारे। तीनि लोक निज तेज पसारे ॥ ताऊन कहे सि पितासों ऐसा। रोष भयो रुख करे अनैसो ॥ मैंहोंक्षुधित देऊ मोहि शासन। हों जग भखौं सुनो सुभासन ॥ इतने मैं तहं वेधा आए। बहुत भांति उर्व हि समुझाए ॥ सुनि निज सुतको तेज अपारा। शमित करा बहु ज्ञान अपारा ॥ हम देहैं तुव सुतके लायक। आसन असन चारु चित चायक ॥ सोसुनि उर्व सरस सुख मानी। विधि सों कह्यो परम प्रिय बानी ॥ नाथ कियो काकित अनुमाना। मम सुत जोग यसन असथाना ॥ कह्यो विरंचि सुनऊ मुनि ज्ञानी। वडवा कहत अखनिहि ज्ञानी ॥ ता मुख संद्रुम समुद को आनन। परम सुहावन मरुचि सुकानन ॥ ******

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

तामधिवसिहों करत हों सदा उदधि जल पान। सो जल तुव सुतको असनसो मुख शुचि असथान॥
सो शुनिकैं मन मुदित व्है मुनि सुत अनल महान। वडवा मुखमैं बसि करै सदा समुद जलपान ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

विधि मुनिगण गे निज निज धामा। यह कौतुक लखिकै अभिरामा ॥ दइत हिरण्यकशिपु बर जोरी। कहेसि उर्वसों करि चित चोरी ॥ तात बिलक्षण चरित तुम्हारो। लखि मोहित मन भयो हमारो ॥ तातें हमैं सिष्य करिलेहू। यह सुप्रयोग मंत्र मोहि देहू ॥ शुनि मुनि कृपा तासुपें कीन्हे। और्व प्रयोग मंत्र तेहि दीन्हे ॥ कहि निज बंश अह एहि मानो। सोई यह प्रयोग है जानो ॥ ताते अब मोहि देऊ सहाई। सोम शीतकर कं हं सुख दाई ॥ शशि सुधांशु करि शीत प्रकासन। करिहैं ज्वाल जालको नाशन ॥ सो शुनिकै सुरपति मुद भारे। शशिसों कहे सराहि सुखारे ॥ तुम अरु बरुण स्वतेज प्रकासो। रजनीचर की माया नासो ॥ शासन शुनि सुधांशु सुख पागे। व्है हरषित हिमि बरषण लागे ॥ ज्वाल जालमैं माया छनमैं। सोपित करि पूरे यन मनमैं ॥ प्रलै काल के धारा धरसे। तुहिन धारु अरि दल पर बरसे ॥ बरुण पाश धर मुदित ननरदैं। पास डारि देअत दल मरदैं ॥ जल आकर जलपति ए दोऊ। इनसों जीति सकै नहि कोऊ ॥ व्है व्है हिमितें बिकल पिरारे। गिरे दैत जिमि पर्वत भारे ॥ *******

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

सो लखि भय निशिचर अधिप करिकै कोप कराल ॥
शैलमयी माया प्रगट कीन्हेसि बरबिशाल ॥
परन लग्यो सुर सैनपै शिला बिटप चहुं ओर ॥
आकसमाद अमोघ अतिमड्यो शब्द अति घोर ॥

हरिगीतछन्द ॥

सुर मथन मधि गिरि बिपिनि कन्दर सरित सर अनगिन बने। जेहि एक राकहि लषत नहि रहि बरनिधर अन्तर घने ॥ बज्र सिंह ब्याघ्र बराह गिर्गित भालु भीषण लखि परैं ह्वै छार बायु प्रकर्ष उन्नत अमित धनि दिसि रज भरैं ॥ शशि बरुण आदि समस्त सुर गण चकित रहि ब्याकुल भए। लखि असुर बलहि प्रमत्त गरजहि मेघ सम मन मद भए ॥ सुर असुरको यह लखत संगर गरुड गामी प्रभु खरे। बर दइत पतिको बध समय करि छमा परखत धनु धरे ॥ *◆*◆*◆*◆*◆*◆*◆*◆*◆*◆

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

तब प्रभु मारुत अगिनि कंह आज्ञा दयो उदार। करौ प्रबल ह्वै आसुरी मायाको संघार ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

प्रभुसें लहि निदेश ते कोपे। ह्वै अति प्रबल प्रलय आलोपे ॥ गिरि कानन जे माया बारे तेहि उडाइ पर दलपर डारे ॥ प्रबल पौनको पाइ सहायक। ह्वै प्रकर्ष अति अनल सुभायक ॥ घूमि जूमि दैअत दल जारे। जरे मरे ह्वै दैत पिरारे ॥ मरैं किते अधजरें पराने। किते भागि सर सरित समाने ॥ सुरपति सेनाके भट गाजे। सुखद जोतिके दुंदुभि बाजे ॥ मय निशिचर पतिकी सुनि हारी। कालनेमि दानव बल भारी ॥ शत मस्तकसें शोभित तैसें। शत शृंगनको पर्बत जैसें ॥ शत भुज बीर बली बरणनको। कठिन कराल जई पंररणको ॥ शत आयुध लीन्हे मद माता। आयो मयपैं बिबि रस राता ॥ तेहि लखि मय उठि अंकलगायो। ह्वै आरत निज दशा सुनायो ॥ सो सुनि काल नेमि रिसि भरिकै। सुरन जीतिबेको पन करिकै ॥ धीगधकैत धुरंधर धीरा। धारा धरसें बर बपु बीरा ॥ संगले चह्यो दानवी सेना। मय आदिक निशि चर जग जेना ॥ कठिन कराल काल सम घोरा। बिशद बाण बरषत चहुँवोरा ॥ बिबिधि भांतिके आयुध धारे। अंग भयानक भूषण भारे ॥ कालनेमि को लखि सुर नायक। किए सजुष सेना सरसायक ॥ * ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

भिड्यो आय सुरसैनसों बाजत शस्त्र अघात। धिरे सघन बन मे मनो बरसत मेघ सबात ॥

॥ * ॥ भुजंगप्रयातछन्द ॥ * ॥

भिरे ताल दै पायदे पायदे सें। रथी सें रथीने लरे काय देसें ॥ भिरे बाजि बारे न सें बाजि बारे। लरे मै बली मै मली रोस धारे ॥ सुभान्हें तभालें तसें जंग मान्यो। जुवाने तवाने तसें रंग राच्यो ॥ सबैवोर चौंसं भिरे जोर जोरें। अमानै नकेऊ मनै नेकु

मारैं॥ किते बीर बांके बजीजे निवारी। किता शीशके ह्वै परे खड्गधारी॥ बने घाव खाये किते बीर झूमै। छके शोणके ह्वै किते घोर भूमै॥ किते मस्तकैं काटिकै [illegible] डारैं। [illegible] किते चर्मपै ताहि धारे॥ भिदे भल्लतें के किते बीर येवैं। किते [illegible]॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

यहि युद्धकों करैं भिरे बीर बलवान। हांकि हांकि दै हांक बहि धारे [illegible]॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

भेरी दुंदुभि को घहोरा। अरु कोदंडनको टंकोरा॥ बीरनकी गर्जन तें घोरा। शब्द अनेक भयो घहंधोरा॥ बाढ्यो शोणित समुद महाना। तामधि सब अवतानु समाना॥ पवि [illegible]को [illegible] संगर आयो। कालनेमि दानव रिस राचो॥ लाग्यो युद्ध करन अति भारी। लंबी भुजवों सब आयुध धारी॥ लैलै मृग सुरगणपै भोलै। चलमंदर मनु कंदुक खेलै॥ धन गर्जन तनको गुंज कीन्हेसि। मघ दृष्टिको दुरदिन कीन्हेसि॥ सरमै बंधन रचि भरि भाखैं। गहेसि बांधि सुरपति कह ताखैं॥ यम कुबेर जे बरुण कहाए। शशि सूरज जे प्रबल गनाए॥ [illegible] गंधर्व जिते शुभ चरिता॥ सबहि जीति निज बस करि भायो। [illegible]॥ बेद धर्म [illegible] सोहाई। सुखद सत्य अरु शील [illegible]॥ ए सब नारायण [illegible] गति लीना॥ सुरन जीति मन जनतानो रेसि। तब सो नारायण मन हेरेसि॥ गरवो [illegible]॥ बलिन्है प्रभूके सनमुख ठाढो॥ लाग्यो कहन बढि बचन कठोरा। भयो काल बसि ह्वै मति भोरा॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

तुम मम बैरी विदित हो बनि सुरगणके नाथ। करें बहुत अपराध है चूपि सुरपतिके साथ॥
मरे सनेनोलखि परे भलो बन्यो यह काजु। सोहौं सब दिनको बयर बध तुम्हार करि आजु॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

सो सुनि हसि बोले सुरस्वामी। श्रीश्रीपति नामांतक नामी॥ हम जाना तुम हो बलवाना। बहुभुज बहुत धरे धनुबाना॥ हो बहुमुख बहुबिधिसें बोलो। निज महिमाकी पट्टी खोलो॥ रहै एक मुखके सब पाये। कहि न सके हमि ते रिस पाये॥ [illegible] फल पाए। अबतुम बहुत करन दिन आए॥ तातें कहत अधिक फल चाखो। सो यह आनि चहुं हम दीन्हो॥ अस अंतर गर्वित यह बानी। सुनि के कालनेमि अभिमानी॥ [illegible] सी। खगपति का मस्तक मारेसि॥ ह्वै मूर्छित तेहि लगे कलेशा। [illegible]॥ सो लखि कालनेमि मुद पायो। बाण पवाननि मारन लाग्यो॥ कहि सुलक्षण अपरज जानो। अस्तुति करण लगे शुभवाणी॥ अस्तुति सुनि प्रभु अंतरजामी। बर्धित भए गरुड अह स्वामी॥ नभ किरीट महि

परत सो छाए । अरु विशाल भुजा तिमि गाए ॥ उप भजतो महिमा ठाढे । कालनेमिके शिर भुज काटे ॥ तिन कुल कटेऊ रथ सिर बाडे । मारा ताम पृथवी डाढो ॥ हुवो पहतो तेहि उरमारी । समर निमिको देवमनमारी ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

मय तारकहि आदिक रथी जिते दनुज परिवार । बज गदा सों प्रभु कियो तिन सबको संहार ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

॥ * ॥ मालिनीछन्द ॥ * ॥

सुर सबको इमि कहेउ प्रभु हति दनुजको समुदाय । निज निज पदन बसि करहु अब निज भवन पालन जाय ॥ शुक देव सह चढि कह्यो हम सब असुरको संघार । बलि राउ बांधे भागि तिनसों रहेउ निति अधिकार ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

तआसन तब आयकरि अस्तुति मोरमन की । निज निज लोक लवाए अति अनोखा आनंद भरे ॥

स्वस्तिश्री काशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीवंदीजनकाशीवासी गोकुलनाथात्मजेन गोपीनाथकविना विरचिते भाषायां भारतान्तर्गते हरिवंशदर्पणे मयतारका मयदेवासुरसंग्रामोनाम द्वादशो ऽध्यायः ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

वैशंपायनको बर बानी । सुनि बोले जनमेजय ज्ञानी ॥ ब्रह्मलोक विधिके संग जाई । कियो कहा प्रभु कहो बुझाई ॥ कौन कारज हित प्रभु अभिरामहि । गे लवाय वेधा निज धामहि ॥ लहि आषाढको शयनी नामा । शुक्लपक्षकी अति अभिरामा ॥ एकादशि शुचि सुषमा रासी । शयन करहि श्री विश्वविलासी ॥ एकादशि कार्तिक की चारू । लहि जागहि लोकप भरतारू ॥ क्षीरसमुद्रमे बस चवमासा । कोस करै विश्व प्रति पासा ॥ प्रश्न भूपको सुनि सुख दायक । बोले मुनि सुनु नृप सब लायक ॥ प्रभुकी गति अति सूक्षम जानो । सुर न सकहि अहि खास ठान मानो ॥ विष्णु लोकमय महिमा पूरे । लोक विष्णुमय है सब रूरे ॥ अवतारनकी गति उर आनो । कंचन भूषण सम अनुमानो ॥ प्रभु महिमा सागरको पारा । करि विचारको पावन हारा ॥ सुनक आदु वेधाके साथा । ब्रह्मलोक प्रभु कियो सनाथा ॥ ताको बरन सुषमा सो भेषे । शम्भु करत प्रणाम गए कहि दे ॥ पाइन श्री निकट प्रभु वरे । नभदिशा पावक आगरे ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

सर्व पायदे धाम । परब्रह्म भगवानकी अस्तुति कियो उदार ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

मुनि अस्तुति व्है प्रमुदित स्वामी । जे निज नाम विश्वपतिनामी ॥ संजुल महतें जासु घऊ घोरा। अंधकार अतिसें अति घोरा ॥ जहां न अनल निशेश दिनेशा । प्रभुके तेज दीपित सो देशा ॥ तहां सहस्रशीर्षा व्है स्वामी । शयन कियो प्रभु अंतरजामी ॥ बरिस हजार शयन तहं कीन्हे। कृत युग द्वापरलों मुद लीन्हे ॥ तब ऋषि गण सहित विधि आई। प्रभुहि जगाए गुर गुण गाई ॥ आसि कह्यो विधिसों वर बानी । विश्वंभर प्रभु आनंद दानी ॥ कहो सुमंत कासों भय पाए। जा हित तुम मोहि आइ जगाए ॥ तासु निपात करों होसादर । विधि बोले मुनि बाणी सादर ॥ सुरन कुतो भय डरि पुचालक । प्रभु किपाल जिनके प्रति पालक ॥ सुमन समूह सुचिन्त विलासै । सह सुरपति सुषमासों भासै ॥ यथा काल वर्ष घनकारी । तातें परजा परम सुखारी ॥ नृप करि नीति प्रजन सुख देहीं । छठवा भाग भाग निज लेहीं ॥ नृप समूह धरणीपै बाढे । ते बल दल सों विदित उकाढे ॥ नगर ग्राम गढ मानुष भारे । अप्रमेय अति बने विहारे ॥ तिनके भार भई इमि धरणी । ज्यों प्रमाण बोझी जिमि तरणी ॥ *❖*❖*❖*❖*❖*❖*❖**

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

तातें धरणी दीन व्है आतुरि मम ढिग आइ । भरी भूरि भय निज दशा कहति विकल बिलखाइ ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

ताहित सत्वर हों ईत आयों । तासु दशा प्रभु तुम्हहि सुनायो ॥ सहि नहिं नरपतिको बर भाए। धरणी पीडित भई अपा ए ॥ याको एक आपुकी गति है । मुझे सर्वदा सों यह रति है ॥ ते सब धर्मसेतुके गामी । भूमि भार किमि हरिहो स्वामी ॥ बिनु अपराध नृपन कह मारे । रहिहि न प्रभु कछु धर्म बिचारे ॥ भार हरे बिनु महि दुख मारहि । सकि हि न थांभि पातालहि जाईहि॥ तातें चलउ मेरुपें सांई । सह सुर करउ मंत्र तेहि ठांई ॥ एवमस्तु कहि प्रभु तब आए । मेरु शिखरपैं सुधमा छाए ॥ अज सुरपति सुर त्रिविष्टप सबेता । बैठे तहं प्रभु क्षमा निकेता ॥ भूमि जोरि कर व्है तहं ठाढी। लगी कहन अति करुणा बाढी ॥ तुम सुमोहै मनमथ नेमिरथ करुणा नाथ तुम असुर संहारण ॥ अब नहि रह्यो सृष्टि बेवहारा। जो पुनि भास पुर पसारा ॥ तहां शेष साई तुम माह । नाभि कमल पैं विधिहि रमाए ॥ तब तहं कानन सो मल काढे । ते भै मधुकैटभ बल बाढे ॥ ते मारिबे कंह विधिहि मचारे । विधि हित प्रभु तुम तिनको मारे ॥ करि त सहस युद्ध करि घोरा । ते दोउ मरे सरस सह जोरा ॥ *❖*❖*❖*❖*❖*❖*❖*❖*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

जललहरिनसों मथि जमी जल पर बर बिसतार । तासु मेदकी मेदनी आपैं विश्व पसार ॥

हिरण्याक्ष हरि लै चल्यो तव बराह ह्वै आप । ता बध करि उरध कियो मोहि भरी परताप ॥

॥ * ॥ हरगीतिछन्द ॥ * ॥

ह्वै भारवति क्षत्रीनसों जब भई हों व्याकुल महा । तव परशुराम उदार ह्वै प्रभुपरशु तीक्षण तुम गहा ॥ सोविदित बार एकीस हनि क्षत्रीन कों आनद लए । करिपितार्थों शुभ श्राद्ध लौकिक मोहि कश्यप कों दए ॥ बर साव भौम महीश जोग मिरे क्षि सर्व सुगुण भए । दै मोहि वैवस्वतमनुहिं तपहेतु कश्यप बन गए॥ईक्ष्वाकु आदि नरेंद्र दिनकर वंश मम पालन करे । अब मोरि हों तुव शरण आई पाहि करुणा कर हरे ॥ सुनि भूमि की इमि बिनै सुरगण सहचिद्रनि विधिसों कहो ॥ समुझि आसय विष्णुकी चित चाहसों करिबो चहे॥ जिमि कहउ तिमि सब सुमन गण हम जाय मानुष तन धरैं । तहं विष्णु की रचि रुचिरकी अनुशासन करि महि धुर हरैं॥सुनि कह्यो विधि तुम कहेउ सो करतव्य निश्चय करऊहे । महि प्रगट भारत वंश तेहि तुम जाय सब अब तरऊहे ॥ रचि योग राख्यो पूर्वसो हों कहत सो तुम सब सुनो । हिय जानि ईछित विश्वपतिकी शीघ्र सो करिबो गुनो ॥ * * * * * * * * * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

एकसमै कश्यप सहित लवण समुद पैं जाय । करत कछू बातैं रहे ईश्वरके गुण गाय ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

ताछिन समुद उमडि करि हेला । गंगा सहित नांघि निज बेला ॥ पूर्ण चंद्र लखि आनद पागो । लहरिन सों मोहि भेवन लागो । तब हों कह्यो सांत हो सागर । सो सुनि तन धरि उदधि उजागर ॥ सो अति राज सिरी सों बाढो । सुरसरि सह मम आगे ठाढो ॥ तब तिन सो हों कहो निरखो । तुम भे राजतुल्य वपु भेखी ॥ तातें जाय भूमिपति होऊ । शांतन नाम पुण्ययश पोऊ ॥ तित ऊंए गंगा तुव पत्निनी । तन धरि ह्वैहै पतिव्रत व्रतिनी ॥ च्युत ह्वै वसुवसुमहि पय ऐहै । ते गंगाके गर्भज ह्वैहै ॥ अष्टम बसुसों सुनु सह कारण । होइहि महिको भारनिवारण ॥ तातें अब तुम सादर जाहू । हो शुभार्य वंशज कह लाहू ॥ यह विधान पहिले रचि राख्यो । लखि भविष्य सोतुम सों भाख्यो ॥ सो अब गंगासुत महि चारी । बिद्यमान भीषमधनु धारी ॥ दुतिय तिया संतन की तासों । द्वैसुत भए भरे बर भासों ॥ तिनके भए दोय सुत ज्ञानी । पांडु और धृतराष्ट्र सुदानो ॥ ऊ द्वै तिया पांडुके नीकी । कुंती अरु माद्री शुचि जीकी ॥ द्वै धृतराष्ट्र भूपकी प्यारी । गांधारी तिय पतिव्रत धारी ॥ * * * * * * * * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

जिनके पुत्रन सों सुनो विग्रह बढ़ो महान । द्वापर युगको अंतमें सुनो सुमन सुखदान ॥
दोउ निज निज पक्ष ले करिहैं युद्ध विनाश । ताते ह्वैहै भूमिपै भूमि पतिनको नाश ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

तब कलि युग कर होइ हि पसारा । मिटिहै सर्व धर्म व्यवहारा ॥ शिव अरु शिव कुमार है देवा । ह्वै हैं पूज्य उग्र करि सेवा ॥ तातें तुम सब सुमन उदारा । निज निज अंश लेऊ अवतारा ॥ कुंती अरु माद्रीके बारे । धर्म अंश सों होउ सुखारे ॥ कलि प्रभाव सें मनता छाए । प्रगटऊ गांधारीके जाए ॥ सो सुनि भूमि गई निज आसन । लहि सुरगण विधिको अनुशासन ॥ कुरु पांचाल वंशमें आए । कर बलमें गुण गरिमा गाए ॥ अंश युधिष्ठिर धर्म राजको । भीमसेन मारुत द्विराज को ॥ अंश शक्रके अर्जुनवीरा । अरिमर्दन जय वर्धन धीरा ॥ नासत्यके अंश बारू । भए नकुल सहदेव उदारू ॥ रविके अंशज करण कहाए । गुरुके अंश द्रोण ह्वै आए ॥ जमके अंशज विदुर विख्याता । शशि अंशज अभिमन्यु सुज्ञाता ॥ भूरिश्रवा सुकांमज आयो । सो वसुसोम सुतायुध गायो ॥ शिवको अंशज अश्वत्थामा । सिंधाग्रज भे कालिक सुनामा ॥ अरु गंधर्व असुर सिगरे । भे दुःशासन आदिक सिगरे ॥ एहि विधि सुर निज अंश सुधारी । अव आए महि पैं सुभचारी ॥ *—*—*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

तब नारद मुनि कलह प्रिय देव सभामें जाय । कह्यो विहसि इमि विष्णुसों अस्तुति करि गुणगाय ॥
प्रभु अंशावतरण जो कीन्हे सुमन समूह । तिन सों नहि कारज सधिहि काहे सोच करिजह ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

नर नारायण सों सुरस्वामी । सधिहि काज यह अंतरजामी ॥ जे तुम हते असुर बलुधारी । युद्ध तारका मय में भारी ॥ ते सिगरे पृथिवीपैं आए । वे कैटभस विरद बढाए ॥ मथुरा नाम पुरी एक पावनि । यमुनाके तट सरस सोहावनि ॥ रह्यो पूर्व राक्षस मधुनामा । तेहि मधुबन विरच्यो अभिरामा ॥ तासुत रह्यो लवण वपु पोषक । दीह दाप दानव दुज दोषक ॥ लंका जीति राम जब आए । चौथ पुरीमें मनता छाए ॥ तवंसो लवण दूत एक आतुर । भेजिय कठोर वचन कहि चातुर ॥ भेजोस राम पास पनधारो । युद्ध हेत पठ भांति प्रचारी ॥ रामचंद्र सों सुने संदेश । शत्रुघ्नहि इमि दियो निदेश ॥ तुम मम शासनु सुनि मन धरहू । जाइ लवणासुर वध हठि करहू ॥ सुनि शत्रुघ्न उपायन कीन्हे । जाइ दूर आइ तासु वध कीन्हे ॥ तापस कारि करि सोवन छेदन । पुरी रच्यो जय शत्रुनिषेदन ॥ सो मथुरा यह आनद रासी । परम सोहावनि सुषमा रासी ॥ सुरसेन ह ताके

स्वामी। ताकुल उग्रसेन हैं नामी॥ ताके सुत भे कंस कहाओ। दानव कालनेमि जो गायो॥ हय ग्रीवसों भो अभिरामा। तातुल कंस को केसी नामा॥ *⬬*⬬*⬬*⬬*⬬*⬬*⬬**

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

वृषा भासुर हैं तहं आयो हैत अरिष्ट समान। रिष्ट दैत तह है भयो कुवलय गज बलवान॥
लंब नाम दानव उते भौ प्रलंब है आय। खर नामक दानव उते धेनुक रह्यो कहाय॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

जे वाराह किशोर हते तें। भे मुष्टिक चाणूर उतैतें॥ ए सब उतें भयानक भेषी। हैं तब सुभट कथाके देषी॥ सबको अधिप कंस बलवाना। उग्रसेनको तनै अमाना॥ दिव सागर अरु पृथिवी पाहीं। हैं तुमसों ए वध्य कदाहीं॥ और सुमन गए जेतने आंही। तिनसों वध्य कदाचित नाहीं॥ तातें आय भूमि पै स्वामी। मथुरा कृष्ण धरहु नय नामी॥ दानव कुलको करहु निपाता। हर हु भार पृथिवीको त्राता॥ सुनि नारदको वचन सुहावन। बोले कृपा सिंधु प्रभु पावन॥ तुम जो कहे त्रिकाल विचारद। सो सब हम जानहि हे नारद॥ जो हैं इत उत जो भे राजे। कंसादिक दानव सुख साजे॥ मम अवतार हेतु तुम भाखे। सो विचार हम द्रिढ करि राखे॥ इमि कहि नारदसों सुर स्वामी। बोले विधिसों अंतरजामी॥ काके गर्भ बास करि वेधा। जन्म लेहिं हम कहहु सुमेधा॥ सोसुनि कह्यो विरंचि विचारी। एक समै कश्यप पन धारी॥ हर्यो वरुण की कामद गाई। सो माग्यो कहि बहुत सुभाई॥ दियो न कश्यप तब अनखाए। सुंदर वरुण पास मम आए॥ * ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

कह्यो तातमम जनक भे कश्यप अनय विचारि। कामपयद मम गाय सो हरि लीन्हे ऋषि धारि॥
माग्यो हों कहि भांति बहु पिता न मान्यो एक। अदिति सुरभि द्वै तियनको लहि ममता इक टेक॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

सो सुनि पद्म विविक्षु प्रिय जानी। हौं इमि दियो श्राप अनुमानी॥ कश्यप हरण गायको कीन्हे। अदिति सुरभि जो संमत लीन्हे॥ तातें होहिं गोप भुवि जाई। अदिति सुरभि सह तन फल पाई॥ ताते कश्यपांश गुरु ज्ञाता। हैं महिपै वसुदेव विख्याता॥ अदिति देव की भे अभिरामा। सुरभी चारु रोहिणी नामा॥ भई तासु सुखदा इमि वामा। करै भूरि भूषित सुचि धामा॥ तिनके गर्भ बास हौं स्वामी। होहु प्रगट भे भूतल गामी॥ निज भक्तनको करहु सनाथा। करि क्रीडा प्रभु तिनके साथा॥ इमि कहि गे वेधा निज आसन। क्षीरधि तीर गए नरका सन॥ क्षीरधिके उत्तर तट चारू। गुहा पार्वती नाम उदारू॥ तहं निज तेज विभज्य सो छाए। मह वसुदेव भली

के आए॥ नारद सु मुनि भेद यह जानी। [illegible] सुजानी ॥ भल तुम्हार [illegible] जिय सो [illegible]। ताते कंस तुम्हें हनि लीन्हें ॥ सुर [illegible] सहित [illegible] करि [illegible]। तुव [illegible] प्रभु मन लीन्हे॥ सो मुनिके [illegible] आदर आए। सहित प्रेम [illegible] सुनाए ॥ [illegible] अभिरामा। जो तुव सखा देवकी नामा ॥ *❧*❧*❧*❧*❧*❧*❧*❧*❧*❧*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

ताके अष्टम गर्भसो है ईश्वर अवतार। [illegible] करि हैं अवसि तुव वंश संघार ॥
ताते [illegible] रहि करियो जल विचारि। यह कहि नारद [illegible] गए हरि दे आनंद धारि ॥

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

कंस सचिव सावानको हनि दियो चाहि निदेश। देवकी को गर्भ रक्षन करउ भीषण भेश ॥
एक सो अरु आठलों जे होहिं ते सुततासु। [illegible] मारे [illegible] तासु ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

मन हित दुखी द्रिढता गहि कै। रितु दिन भये तासु [illegible] रहि कै ॥ [illegible] सुने निश दिन मैं। अति चैतन्य रह्यो छिन छिन मैं ॥ जनम [illegible] सुत मो ढिग [illegible] के सुख पाएऊ॥ निति वसुदेव हि [illegible] राखौ। वचन कठोर कछू नहि भाखौ ॥ [illegible] प्रभु हरि अंतर ध्याना। कह्यो कंसको द्रिढ अनुमाना ॥ भावी भूत [illegible] स्वामी [illegible] ॥ तहं षट दैत रहे खल पूरे। ते षट गर्भ नाम [illegible] ॥ ते हैं कालनेमिके आय [illegible] के जाए॥ तप करि विधिहि मुदित ते कीन्हें। अब [illegible] सुर [illegible] ॥ ताते [illegible] दिखाई। दैत हिरण्यकशिपु अनखाई ॥ कत तुम मम महत्वको बाधे। [illegible] ॥ मोहि अराधि मांगि तुम लेते। वर अमोघ चाहत हैं जेते॥ [illegible] ताको फल पावहु ते आगे॥ निज पितुके हाथनि सो सिगरे। बधे [illegible] ॥ [illegible] पितु जोहे। सोई मथुरा कंस भयो है॥ [illegible] ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

तहां आई जनन भंगे सोवत तिन्हे निरेखि। [illegible] भेखि ॥
तिन्हे [illegible] दियो करिहै [illegible] ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

देखि देवकीको रितु भेषा। [illegible] ॥ [illegible] ॥ भूत भविष्य सबै [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]

करिहि हन षट्कों।अब नृप कंस कालनेमी सठको॥ तब मा सप्तम गर्भ बिहाई।करिहि घात मम अंश उदारू॥ सप्तम मास होइ जब तासू। तब सो गर्भ करषि तुम आसू॥ उदरहिं रोहिणीकेसु धावसों। ताहि राखियो गुपि सुभावसों॥ तातें संकर्षण पद पाई। ह्वै हैं मम अग्रज प्रियभाई॥ तासु गर्भ अष्टम जो भाखो।ताते हौं प्रगटिहों गुनि राखो॥तब तुम ताहि घात बर धरणी। जशुदा नन्दगोपकी घरणी॥ताके गर्भ बास तुम कीजो।जानि अनघ मम सार्थहि लीजो॥सरवि जशोदा पें हम आउब।तुम्है देवकी पास पठाउब॥ आनि जन्म तव कंस मरैया।गहि तव चरण मृत्यु उहैया॥ पटकन लगिहि शिलापै आयउ। ताके करसों छुटि तुम ताघण॥आइ गगन पै बिदित बिहारेउ। दिव्य सरूप अनूपम धारेउ॥ चारि भुजनि सों चारि अतूलहि। खड्ग कंज मधुपात्र त्रिशूलहि॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

भूषण बसन बिचित्र धरि तेजपुञ्ज अधिकाय। उग्र उदार अमन्द तेहि निजस्वरूप दरशाय॥
घोर भूतगण यूथसों सेवित परम अपार। सानद आएउ स्वर्ग धरि व्रत कौमार उदार॥

॥ * ॥ हरिगीतीछन्द ॥ * ॥

तहं समुझि भगिनी सहित सुर सुरराज विधिवत पूजिहैं। प्रिय करनि मङ्गल भरणि मंजुल बरणि अस्तुति कूजिहैं॥ फिरि मघ देहैं बास तुम्हहि सुविंध्य गिरि रमणीय पे। तहं बसि बिबिध धरि रूप रमेउ अनेक यत्न अवनीय पे॥ अवलोक धारिणि चारु चरिता बिंध्यगिरि निवासिनी। हे दैत शुंभ निशुंभ ह्वै हैं तासु दर्प बिनाशिनी॥ त्वं सिद्धि आर्या कीर्ति धृति अरु कामदा कात्यायनी।तुम रात्रि संध्या प्रभा निद्रा कौशिकी बरदायनी॥ बहु रूपिणी सुबिरूपिणी नारायणी जनरञ्जनी। तुम उग्रजमकी स्वसा जेठी दैत कुलकी भञ्जनी॥ तुम जया बिजया क्षमा दाया अग्नि जोति सरूपिणी। अरु विश्वबाहनि अरु सूर पताकिनी सु अनूपिणी॥ तुम रमा बाणी पार्वती इंद्राणि श्री परजा बसो। तुम सर्व व्यापिनि सर्वमें हो सर्वदा चित चायसों॥ जे जानि जन परभाव मम बर प्रेम तुम कहं ध्याइहैं। ते सर्व रहिहैं सबसुमें जो चाहिहैं सो पाइहैं॥ *~*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

इमि कहि प्रभु महिभारहर भे तहं अन्तर्ध्यान। मुदित महामाया करी क्रमसों सकल बिधान॥
हर्ई देवकी के उदर षट गर्भन कों बास। सक्रम कंस तिनको कियो जन्म भए पें नास॥

॥ * ॥ रोलाछंद ॥ * ॥

गर्भ सतयों मास सतये गए आधीरैनि। देवकी को नींद बसि लखि करषि सो अनजैनि॥

राखि उरमैं रोहिणीके दइ भेद बताय। रोहिणी सुनि रही चुपह्वै मनहूलानन्दपाय। देव की निज गरभलख कर सपनकी विधि टोहि। जागि उर त्रिभुवनेश लखि हियरहो पुलकैं मोहि॥ तासु अठयें गर्भ मैं तब बसे श्रीपति आय। नन्दकी तियके उदरमधि बसी माया जाय॥ देवकी को गर्भ अठयो जानि कंस नरेश। कियो चौकी हेत नियमित सुहित सुभट सुभेस॥ मास दशएं भाद्र पदकी कृष्ण पक्षी भाति। अष्टमी को रोहिणी लहि गए आधी राति॥ देवकीके जनम लीन्हे आपु त्रिभुवननाथ। भई जसुदाके प्रगट जगदेव प्रभुके साथ॥ मोह मैं ह्वै लोग सबकोउ नहियह लखे जो भे रहे चित चैतन्य दंपति देवकी वसुदेव॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

निज सरूप सों प्रगट भे प्रभु सरवज्ञ उदार। लखि वसुदेव कह्यो दबै कंस भीतके भार॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

यह सरूप प्रभु गोप न करहू। ह्वै प्रसन्न लौकिक वपु धरहू॥ सो सरूप प्रभु गोपन करिकै। बोले तासु सोच सब हरिकै॥ मोहि लै चलहु नंदकें गेहा। जसुदाकें ढिग सरस सनेहा॥ ताके पास मोहि धरि आवो। ताकें सुता भई सो ल्यावो॥ सो सुनि प्रभुहि गोद मैं लीन्हे। तुरित पयान तहां को कीन्हे॥ सुत जसुदाके ढिग धरि दीन्हे। ताकी सुता गोद मैं लीन्हे॥ निज गृह आए आनद सानै। द्रूत उत काहू भेद न जाने॥ दियो देवकिहि सुता सभागी। तब सो तनया रोवन लागी॥ चौकीदार रुदन सुनि जागे। सावधान ह्वै आनद पागे॥ गे वसुदेव कंसपै आतुर। कन्या भई सुनायो चातुर॥ सो सुनि आइ कंस तहं सादर। कन्यहि मांगि लिहसि हठि कादर॥ तासु चरण गहि आनद पागे। खैंचि शिलापै पटकन लागे॥ तब ताके करसौं छुटि कन्या। दिवपै दिव्य रूप धरि धन्या॥ करि अट्टाट्टहास सुखदानी। कंसहि टेरि सुनाएसि बानी॥ तुम जो आत्म कुशलके काजा। मम बध बिहित बिचारेउ राजा॥ कछु दिन बीते तब बध होई। ताहि नैवारिसकै अब कोई॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

लख्यो इमि कहिकै भई देवी अन्तर्ध्यान। पाय पर्‌यो सो देवकीकै करि बिनै महान॥
कहि निज मुखसों खोरि निज भयो शोचसोंछाम। शीस नवाएं दीन सम गयो आपने धाम॥

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

रोहिणी यों प्रथमहीसों नन्दको घर आय। रही ही तिन भयोहो सुत सबपि सुन्दरकाय॥
जातकरम करोति तिनको कियो श्रीतहराय। मोदसों गन धेनु मणिगण बसन बेस लुटाय॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

कीन्हो जेठे कुमरको संकरषण यह नाम। कियो कुमार कनिष्ठको कृष्णनाम अभिराम॥

इतिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणसिंहाज्ञाभिधानिना श्रीबन्दीजन काशीवासिनोगोकुलनाथात्मजेन गोपीनाथकविना विरचिते भाषायां भारतांतरगते हरिवंशदर्पणे कृष्णजन्मान्तरचरित्रेनोनाम त्रयोदशो ऽध्यायः ॥*—*—*—*—*—*—

॥ * ॥ वैशंपायनउवाच ॥ * ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

कथा कृष्णकेजनमकी बरनि कहे सह हेत। चरित कहत अब कृष्णके जे चितहर चितचैन ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

एक दिन कृष्णचन्द्र अभिरामहि। बाल चरित विचरत छवि धामहि ॥ लाय तहां जा अरध भारो। बांधो रह्यो सकटमहिभारी ॥ गई जसोदा जमुना तीरा। भाग्यवती जग धन्या धीरा ॥ इत लीला विधि कृष्ण उदारू। कूपल बढाय चरण चल चारू ॥ दयो गिराय सकट वह भूपर। अधर हि आपु ताहिले ऊपर ॥ रुदन करण लागे किलकाई। तिमि तहं लख्यो जसोमति आई ॥ निज उर ताडि धाइ तंह आई। खैंचि सुतहि लै अंक लगाई ॥ विसमित सोचि कहत इमिलागी ॥ हरष विषाद भावसों पागी ॥ आजु कुसल यह ईश्वर कीन्हो। नयो जन्म करि सुत मोहि दीन्हो ॥ बनते तहां नन्द तब आए। सकट लेखि बिसमयसों छाए ॥ लागे साचरज बचन उचारण। कैसें गिर्‍यो सकट बिनु कारण ॥ रहे लखत ते बाल बताए। एइ पगसों सकट गिराए ॥ सो सुनि काहू सांच न माने। दैवोगति हिय मै अनुमाने ॥ एक समै निशिमैं तंह आई। दारुनि कंस भूपकी धाई ॥ नाम पूतना पापिनि गाई। कुच कुम्भनिमैं जहर लगाई ॥ अरध रातिमैं सूनो देखी। प्यावन लगी कृष्णकहु तेखी ॥ *—*—*—*—*—*—*—*—*—*—*—*—*—

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

मुखसांसन गहि सिग्र करषि तासुप्राण प्रभु जानि। घोरं पूतना घोर धुनि करि गिरिपरी उतानि ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

सो धुनि सुनि नंदादिक आये। तेहि लखि विसमित बोलन लागे ॥ को बलवान याहि जो मार्‍यो। को गहि ल्याय याहि इत डार्‍यो ॥ बिरचि अथाई सब अनुमाने। पै काहूं कछुभेद नजाने ॥ क्रमसों रामकृष्ण दोउ भाई। घुटुवन चलन लगे सुघराई ॥ खेलै इत उत आंगण माहीं। कृष्ण चपल कढि बाहेर जाहीं ॥ खीझि एकदिन जसुदा माई। कृष्णहि नहि बाहेर सो जाई ॥ कटिमैं बांधि दाम मुदलीन्ही। ताहि बांधि ऊखलमैं दीन्ही ॥ कछु कारजमैं आपु भुलानी। ओखरिसह चलि प्रभू अनुमानी ॥ जुरे बढेहैं छितवर छाए। जमलार्जुन है वृक्ष सुहाए। तिनके मधि ह्वै कढि मन भाए। तिनमैं बर ओखर अटकाए ॥ खैंचि मूलसो तिन्हैं उखारे। बालभाव

प्रभु द्वौ सुखारे ॥ तब निशि तेहि मह सोवत बिचारे । बाहर अघुरवि आइ पुकारे ॥ सुनि सो दृश्य जसोदा धाई । हा हा करत पुत्र पहं आई ॥ माइ उबार अंकहि कीन्हो । विस्मित सुचित सोचबहु कीन्हो ॥ सुनि नंदादिक गोप महाने । जुरे आइ तह विस्मय बखाने ॥ **

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

वृक्ष पात लखि विस्मित कीन्हे । नंद विचार । कारण लखि पावे न कछु करै कहा उपचार ॥
दाम उदर मैं कृष्णके बांध्यो गयो ललाम । ताहीते गोपिन कह्यो दामोदर यह नाम ॥

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

राम कृष्ण उदार सुषमा सींव आनद धाम । गौर कंचन बरण वे वे घनक वर घनश्याम ॥
बाल्य चरित अनेक विधिते विरचि कीन्हे जौन । कहै गोपीनाथ सो नहि पार पावै कौन ॥

॥ * ॥ हरिगीती छंद ॥ * ॥

बलिराम कृष्ण उदार क्रमसों सात बरिसन के भए । धरि नील पीत अमंद अंबर अखिल सुषमा सों मए ॥ सुचि श्वेत पीत सुअंग रंगनि चारु तन चित्रित करे । बनमाल चारु बिशाख अरु शिखिपक्ष अति मंजुल धरे ॥ लै गोप सुतनि समेत बछनि आय बन विहरण लगे । तह करैं क्रीडा बंधु दोउ बहु भांति अति आनद पगे ॥ तब एकदिन बलि रामसों श्रीकृष्णचन्द्रजु इमि कहे । यह बन बिरल रमणीय नहि एहि तजन सो मन चहत है ॥ है कालिंदीके पार वृन्दावन परम रमणीयसों । ता निकट गोवर्धन संयम छवि सीवमे कमनीयसों ॥ सो सुबन बिहरण जोग निबिड सकुंज हरित सुता रहै । तह गोप गोपिन हूं सुखद हित गउनकों अति चारहै ॥ उतवास विरचन हेत हम वृक रहै प्रगटित करत हैं । उतपात चरित दरसाय गोपनि भूरि भयसों भरतहैं ॥ तबकरपिके नंदादि सब इत छोडि चलि बसिहैं उतै । तहं मोदसों दोउ बंधु विविध विलास करिहैं बहुतैं ॥ * ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

इमि सुमत बलिरामसों करि श्रीकृष्ण अनूप । प्रगट किए रुहजूथ तहं विकट भयानक रूप ॥
तिनसों लहि उतपात डरि नन्दादिकं सब गोप । वृन्दावन में आइके पुरवचि बसे सचोप ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

जोजन भर को चौडो चारु । दुइ जोजन बिसतरित उदारु ॥ रच्यो पुरी पुनि अति रमणीया । पुन कित होइ आहि लखि हीया ॥ चारिउ दिसा रचाल बजार । पृथक पृथक परकोट बनाए ॥ रमैं तहां तिनरे पुंज बासी । राम कृष्ण प्रभु निर्भय विलासी ॥ एक दिन कृष्ण बिना बलिभाई । गोप सुतनि काह संगलवाई । बत्सन लाए रमत वर कानन ॥ परम धुरीन पुरुष पचानन । जोय

जल बहविटप सोहायो । [illegible] ॥ [illegible] बनो नवीनो । मंडो सतमिते। घरच रुचीनो ॥ [illegible] लेषि [illegible] बसु कीन्हे । [illegible] कीन्हे ॥ [illegible] यह अब [illegible] । [illegible] या नंद पावे ॥ बर नहांयो यमुना तीरा ॥ [illegible] के गोभीरा ॥ अति रमणीय तासु तट देषी । इत उत [illegible] सबे सुचि वेषी ॥ सबे नहां [illegible] यह अति भारी । [illegible] तारी ॥ [illegible] अंतुनंदीना । पावे [illegible] अति [illegible] ॥ [illegible] न धावे । भूरि भयानक लखि भय पावे ॥ * * * * * * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

ब्रजौं [illegible] देखने [illegible] । चाहि चाहि चितवे [illegible] आनंद [illegible] ॥
काली आवै बसतहैं सहित सब परिवार । यह बर सूनो ताहिके फूतकारके भार ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

यह विचारि [illegible] । कूदे कृष्ण कदम पैं चढिके ॥ जलमें भयो शब्द अति घोरा । उमडि गयो [illegible] ॥ घोर शब्द सुनिके रिसि छायो । काली प्रभुके सनमुख आयो । फूतकार [illegible] । [illegible] को अंग लखो ॥ सह परिवार गर्व भरि मनमें । लपटि गयो [illegible] ॥ [illegible] । बाहर ब्रज मे आय पुकारे ॥ सुनके नंद अधोमति भए । बालक वृद्ध युवा सब धाए ॥ हाय हाय कहि इत उत हेरत । कृष्ण कृष्ण कहि टेरत ॥ [illegible] । यह गति [illegible] ॥ बोले [illegible] ॥ [illegible] । अवमति कृष्ण विलंब लगायो ॥ [illegible] ॥ तब काली प्रभुकह गहि धानी । [illegible] विने करि [illegible] ॥ [illegible] स्वामी । देउ बास [illegible] अन्तरयामी ॥ कहें कृष्ण सुन सह परिवारा । करो आइके [illegible] ॥ प्रभु निर्दय काली उरधारे । मुदित उर काहे [illegible] ॥ * * * * * * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

प्रभु [illegible] नंद अधोमति [illegible] । [illegible] पुलकि लीन्हे अंक लगाय ॥
धन्य [illegible] मुदित मन [illegible] ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

[illegible] । [illegible] ॥ [illegible] । बन विचरत [illegible] ॥ [illegible] । अति रमणीय [illegible] ॥ [illegible]

ताल वृक्ष जेहि फूले । जिनमैं करिकरसम फल झूले ॥ तिनको पाय मुद्द सोहायो । संकरषण सों कृष्ण सोहायो ॥ लखो तालफल बरस सुहावन । [illegible] ॥ ताको स्वाद अपूरब ल्यै कै । करए मन आनंद सो ल्यै हैं ॥ सो सुनि रोहिणेय सुख पाए । तबहि तालतरु तुरित हलाए ॥ भो अति शब्द तरुनके हाले । फलके गिरे धमके चाले ॥ सुनि धेनुक दैत्य अघखानी । ता बनको रक्षक अभिमानी ॥ गरदभ रूप भयानक भारी । संग सम रूप लए अनुचारी ॥ ख्याल भौंकते चपल निकसिके । संकर्षणहि दांत सों डसिके ॥ फिरि पछलातनि मारन लाग्यो । दारुण दुष्ट दोषसों पाग्यो ॥ तासु चरण दोउ पूरब वारे । गहि अरधकों राम पवारे ॥ उन्नतताके शिखापै धरिकै । गिरो मूढ तहं महिपै मारकै ॥ रहे जिते ताके संगचारे । ताही विधि गहि तिन कांह मारे ॥ तिन्हे मारि अति आनंद पावे । वीर धीर बन विहरण लागे ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

गोपन संग क्रीडा करत लै गोधन समुदाय । बड विशाल भांडीरके ढिग प्रभु गए सचाय ॥
तहां आय पेषण लगे बालापनके खेल । दोय गोलकरि आवती विरचि वरण चितमेल ॥

॥ * ॥ जयकरिछन्द ॥ * ॥

असुर प्रलंब नाम बलवान । गोप सुवन बनि कुटिल [illegible] ॥
आए तऊ जहं हैं व्रजनाथ । खेलन लगो सखा बनि साथ ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

खेलत रहे खेल बलधामैं । यह करार निरमित हो तामें ॥ हारै सो निजकंध चढाई । जो जीतै ताको लै आई ॥ सुबिटपबट भांडीर कुआवैं । फेरि चढाए इत लै आवै ॥ दों श्रीदाम नाम प्रियवादी । भयो कृष्णको तहँ प्रतिवादी ॥ जो प्रलंबहो कपटव्योरी । सो भो संकरषणको जोरी ॥ जोर विरचि एहि भांति सभागे । चतुर चावसें खेलन लागे ॥ कृष्ण सबंधु सकल सुयोते । [illegible] प्रतिवादिहि जीते ॥ निज निज वादिनपैं चढि धावन । लगे गोप सब आवन जावन ॥ संकरषण कंह कंध चढाई । चल्यो प्रलंब सुखैांसर पाई ॥ बटढिग जाय रोष [illegible] । है महाप्राण निज वपु दरसाएसि ॥ उन्नत कज्जल गिरिसा भारी । भूरि भयानक भेष सुधारी ॥ संकरषणहि लै लै भाग्यो । मत्त अनन्त गर्बसों पाग्यो ॥ तापैं संकरषण हैं कैसे । [illegible] गिरि [illegible] जैसे ॥ तब संकरषण हिए विचारी । कहे कृष्णसों भीषण भारी ॥ मोसों तुम [illegible] सुरारी । का करिये सो कहौ पुकारी ॥ सुनि हसि कह्यो कृष्ण [illegible] । [illegible] तुम बानी ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

जगदाधार अनंत तुम हौ अनंत परभाव । नहि धारत तुम [illegible] प्रीति गहो चितचाव ॥
हम तुम एक न भिन्न है भए एकसों दोय । धारण पोषण जगतके हेतु विचारो सोय ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

तातें कंसु वचन मन गुनिकै। मानि वचन्न ताहुकों सुनिकै॥ वली दैत को कपट करिकै। हमसों आइ मिल्यो सुरभरिकै॥ सो सुनि संकरषन रिसिभारे। मूका तासु मोरवहिं मारे॥ मूका मारि फोरि सिर दीन्हे। फेरि आंतुको ताडन कीन्हे॥ तब मरि गिर्यो भूमिपैं सोइ। कृष्ण ग्वाल हरषे सब कोइ॥ रहि अदृश्य सो लखि सुमनसगन। बरषि सुमन हंसि कहैं मुदित मन॥ बलसों हते दैत्य अपिराले। ए बलदेव नाम अब ताते॥ करि प्रलंबको वध सुख पाए। सहित समाज कृष्ण ब्रज आए॥ ता दिन सखा प्रभु ब्रजमें राजे। मानु पुरी सुखमासों साजे॥ लहि बरषाको अन्त सोहाए। गोप वृन्द आनद सों छाए॥ इंद्र जज्ञ आरोपण चाहे। तब हंसि बोले कृष्ण उछाहे॥ को है इंद्र यज्ञ सो भाषो। तासु प्रभाव गोपिगनि राखो। सो सुनि वृद्ध गोप एक बोल्यो॥ मघ यज्ञको महिमा खोल्यो। इन्द्र मेघके अधिपति सरसैं॥ तासु निदेश पाय घन बरसैं। बरसें होइ वृत्ति सब धरणी॥ सब अब शस्य होइ बऊ बरणी॥ तरु तृण लता फूलि फलि भावैं। जीव जात सब आनद पावैं॥ * * * * * * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

जल तृण अन्न कृष्णवों औषधीनवों तात। जगमें सब जीवीनको जीवन बरमो जात॥
वृन्द मंडनको मद्दि मधुनृप मैके पुरुष विभात। देहि वृजन पय ताहि तें गोपनिको प्रति प्रात॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

याही हेत सुनहु प्रिय कूजन। करैं इन्द्रको हम सब पूजन॥ गोप वृद्धकी सुनि यह बानी। हंसि हंसि बोले कृष्ण सुजानी॥ गोप जाति हम बिपिनि बिहारी। गोधन जीवन वृत्ति हमारी॥ गोधन गिरि काननमें चारी। गिरि काननसों रहें सुखारी॥ तातें हमैं पूज्य गिरि कानन। अरु गोधन करि विविध विधानन॥ जीवनवृत्ति जासु है जासों। सोइ तासु देव सर्वदासों॥ तिन्हें छाडि जे औरहिं पूजै। ताहिं जनम सुगुधि जन कूजै॥ गिरि प्रभाव यक और सुनत हैं। सो निज प्रियमैं साच गुनतहैं॥ गिरि मैं थित कानन भारी। करैं वनको नित रखवारी॥ गिरिवरको पूजैं जन कोई। तासु विपत्ति कबहू नहिं होई॥ बिनु गिरि पूजे बिपिनि बिहारे। बाघ सिंघ व्है गिरि तेहि मारें॥ तातें तजि कुयोजन हिय धरहू। गिरि गोधनकार पूजन करहू॥ सो सुनि गोप वृन्द हर माने। कृष्ण कहे जो सो मानमानि॥ पूजि गऊनकाइ भूषित करिकै। गो गोवरधन पै मुद भरिकैं॥ पय दधि घृततें कुंड भराए। भोज्य वस्तुके गांज लगाए॥ नर नारिन सह आनद लीन्हे। गोवरधनकार पूजन कीन्हे॥ * * * * * * * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

पूजनांतमें कृष्ण प्रभु माया विरचि उदार। गिरिवत वपु धरि अम्बरों दिय सुदर्शन दिखाय ॥
भोज्य बहु भोजन करे पय दधि कीन्हे पान। देखि अपूरव कौतुक हरषे गोप सुजान ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

गोपन सहित कृष्ण बलिरामू। कीन्हे तेहि दंडवत प्रणामू ॥ प्रभु कौतुकी कुतूहल कीन्हे। आपुहि आप दंडवत कीन्हे ॥ शैल मूर्तिधर सों करजोरी। कहे गोप करि प्रीति अथोरी ॥ आज्ञा करौ नाथ अब जोइ। करैं नेमसों हम सुख सोइ ॥ सो सुनि कहे शैलवपुधारी। प्रति वरषन करि पूजा म्हारी ॥ सहित समाज प्रदक्षिण करिहौ। सरस संपदासों तौ भरिहौ ॥ हम तुव आदिदेव उपकारी। अपर न पूजेउ हमें विचारी ॥ गिरिवपुधारी कृष्ण सुजाना। इमि कहिके भे अन्तरध्याना ॥ सहित समाज गोप हर्षिछाए। गिरिहि प्रदक्षिण करि ब्रज आए ॥ चले चाव चातुर चित चाहे। कृष्णहि भाँति अनेक सराहे ॥ निज पूजन विधि ध्वंसन देखी। इन्द्र सताप अति मन मैं लेखी ॥ संवर्तक गण बली बलाहक। तेहि निदेश दीन्हे सुरपाहक ॥ मम निदेश लहि मम हित चाऊ। तुम सिगरे चलि ब्रजपै जाऊ ॥ ब्रजको नाश करनको चोपौ। वात वृष्टिसों प्रलया रोपौ ॥ सात रातिदिन अतिसै घोरा। करउ वृष्टि ब्रजपै चहुँओरा ॥ ऐसो सक्रोध निदेश जु दीन्हे। सो सुनि चले मेघ विधि कीन्हे ॥ *—*—*—*—*—*—*—*

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

सजल मेघ असंख्य उन्नत सब दिशिनितें घेरि। चले इमि ब्रजपै गजगजन गर्जत उर अहि हेरि ॥
क्षुधित मग्न अनन्तमें गज सुवन बिनु गढदार। जूकन जिमि चढ़ि घाए न लखि जलनिधी कदार ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

ब्रजमण्डलको घेरिके घिरि घन घने अपार। छोड़न लगे सरोष अति करि करषन जलधार ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

गरजि तरजि नभ करि अधियारी। लहि प्रचंड मारुत उपकारी ॥ प्रलयकाल आरोपित कीन्हे। ब्रज वासिनको अतिदुख दीन्हे ॥ ब्रज वासिनकह आरत देखे। तब श्रीकृष्णचन्द्र अति तेखे ॥ करि अनुमान प्रबल विचारे। गोवर्धन गिरि करपै धारे ॥ तातर सब ब्रज सुन्दरी ते। गो गोपी गोपाल अहाते ॥ छप्पन पहर बलाहक बरसे। काहुके तन बूँद न परसे ॥ ब्रह्म लज्जित सब शक सुनामा। गेयन सहित गए निजधामा ॥ ऐसे कृष्ण राम ब्रजराज। यथा प्रदेश गिरिहि प्रभु राखे ॥ गिरि धारत ब्रजरक्षा जोके। सुरपति मनमें विस्मित होके ॥ ऐरावतपै चढ़ि छवि छाए। परम प्रेम गहि प्रभु पै आए ॥ गोवर्धनको शिखर सोहावन। ताते बैठ हे प्रभु पावन ॥

श्रीघनश्याम पितांबर धारी। मञ्जु मुकुटधर विपिन विहारी॥ वनज कुसुमके भूषण धारे। जेहि लखि आँखि कामशत वारे॥ उर श्रीवत्स सुलांछन सोहैं। देखि आहि सुर मुनि नर मोहैं॥ रहि तहँ तुम सुवेष सुकाया। कीन्हे हे घनमिसी छाया॥ किये इन्द्र लखि हर्षित सुखालियन। आलस त्याज भरे घनमिषियन॥ लहे नेन्ह तहँ यश सुभेषी। घनमिषियन पंखियन सों देषी॥ *॥*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

प्रभुहि पेखि अति मोद लहि सुरपति सरस सुजान। मधुर मनोहर वचन सों करन लगे गुणगान॥
करपर गिरि धरि हत्या तुम लीन्हे श्री बृजराषि। सो अमोघ गुण अपुनको सकै न कोऊ भाषि॥

॥ * ॥ हरगीतिछन्द ॥ * ॥

सुर असुरन सबहनहूंको काज यह दुस्तर रह्यो। तुम सहजहीं मे किए सो यह जात गुण कापै कह्यो॥ निज यज्ञध्वंसन देखिहो रिसि मानि अति अनुचित करे। निज काज लीन्हे साधि तुम कछुरोष नहि हिय मे धरे॥ अतिदिपित उग्र समस्त वैभव तेज तुम गोपन किए। को सकै बूझि विचारि कहि अति अमल गुण तुम श्री लिए॥ जो आपु विधि तुव गुणगणनिको अन्त कछु लहिबो चहैं। तेरोदेखि गिरिवर पंगु जिमि तिमि बूझि मन सों थकित हैं॥ हैं पूर्व हम तुम अदित गर्भज तब हों अग्रज सुनो। सो जानि मम अपराध हियसों दूरि करिबोई गुनो॥ हैं कोल दण्डसमान अलपे मेरु महि तापै बनी। हैं भूमि पैसव आदि मानव जाति जितनी अनगिनी॥ अरु तासु ऊरध गगनमे गति खगनकी सब कहत हैं। ता ऊर्ध हैं रवि स्वर्गको शुचिद्वारता आगहत हैं॥ हैं तासु पर मम स्वर्ग लोक सु तासु पर विधि लोकहैं। हैं तासु पर गोलोक शुचि आनन्दको जो लोकहैं॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

सुरन सहित निज लोकमैं हौं निति करत बिलास। ब्रह्मऋषिण सह विधि करैं ब्रह्मलोकमें बास॥
करत साध्य गोलोकमे गोपालन व्रत धारि। तासों अति ऊरध तहां तुम बिलसत भुजचारि॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

जासु भेद सुर मुनि नहि पावैं। बहुत भांति विधि जऊँ बनावैं॥ पृथिवी कर्मलोक है पावन। इतै कर्म करि जीव सुभावन॥ पद अनरूप कर्मके पावैं। सब फल आहिं बहुरि इत आवैं॥ उत्तम पद तुम्हार जे पावैं। ते न कबहुं फिरि महिपैं आवैं॥ कुत्सित कर्म तमोमय कारहीं। ते भूमिहुते अघ सञ्चरहीं॥ कहुं सुकृत कहुं दुष्कृत करिके। धर्म मगन मारतमवस परिकै॥ शुद्ध सुकर्म सुकृत जे करहीं। पाय स्वर्ग ते आनद भरहीं॥ ध्यान ब्रह्मतप करि अनुगामी। पावै ब्रह्मलोक गरज्ञानी॥

गज लहैं गोलोक उदारा । औरहि दुर्लभ तासु बिहारा ॥ जो तव भक्त मुमुक्षु अकामक । पावै ते तव लोक सुनामक ॥ इमि कहि सुरपति आनद छाए । कनक कुम्भभरि सुजल मगाए ॥ सुचि अभिषेक कृष्णको करिकै । कहे इन्द्र हिय आनद धरिकै ॥ हम देवनके इन्द्र विख्याता । तुम गाइनके इंद्र सुज्ञाता ॥ अबसों तुम गोविन्द कहावो । निज जनको हिय आनद छावो ॥ शुभव वार्षिक चातुर मासा । मम पूजन दिन विहित बिलासा ॥ तिनमैं दोय मास हम लेहैं । दोय मास सुचि तुम कहं देहैं ॥ *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

बरषा रितु द्वै मासमैं हमहि पूजि हैं लोग। करिहैं सखि बिनु सरदकों तव पूजन उपयोग ॥
यह कहिकै फिरि कृष्णसों इमि भाषे सुरराज। शीघ्र करो बध कंसको सहित सुखल समाज॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

कंसहि मारि मोद हिय धारौ । ब्रजमण्डलमैं शुचित बिहारौ ॥ तुव पितु भगिनी कुन्तानामा । ता गर्भज अर्जुन अभिरामा ॥ सो मम पुत्र धीर धनुधारी । तापैं करिकै कृपा बिचारी ॥ कीजो सखा सप्रेमहि याते । कछु हमरे कछु अपने नाते ॥ सो तुव चित्त वृत्ति अनुगामी । होइहि समर भूमिमैं नामी ॥ कहे सचीपति जो सो सुनिकै । सादर कहे कृष्ण इमि गुणिकै ॥ चाहि सुरेश इतैं तुम आए । तासों हम अति आनद पाए ॥ भाव तुम्हार अहैं हम जाने । सो करिबो मतहै अनुमाने ॥ अति प्रिय सखा अर्जुनहि करिकै । बरु बरु तासु भृत्तता धरिकै ॥ भूमि भार तिनसों हर वैहौं । तीनि लोकमैं आनन्द छैहौं ॥ सो सुनि सुरपुर गये उछाहैं । दै आशिष बहु भांति सराहैं ॥ काज अमानुष लखि ह्वै बिसमित। आनद भरे कहैं इमि गोपिमित ॥ बालापनलों अब लौं कीन्हे । तुम जे कारज आनद लीन्हे ॥ देवनहूं दुस्तर ते कारज । करे सहजहीमैं तुम आरज ॥ तातें हम सब बिसमित ह्वै कै । बूझैं कहो सत्य मुद ल्वै कै ॥ *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

हो तुम को सुरगणनमैं अरु केहि कारण आय । ह्वै मनुष्य प्रगटित भए कहौ कृष्ण समुझाय ॥
पद्मदलेक्षन कृष्ण प्रभु सो सुनि बोले बैन । तुम जो कहे बिचार करि इनमैं हमकोउ हैन ॥
है हम गोप सजाति तुव जौ जानेहु यह मानि। तो कछु दिन चुप रहहु फिरि आपुहि लहो जानि ॥

इति श्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणसिंहाज्ञाभिगामिना श्रीवन्दीजनकाशीवासिगोकुलनाथात्मजेन गोपीनाथ कविना विरचिते भाषायां भारतान्तर्गते हरिवंशदर्पणे बालचरित्रे कृष्णमखसमाप्तोनाम चतुर्दशोध्यायः ॥ *

॥ ✻ ॥ चौपाई ॥ ✻ ॥

श्री श्रीकृष्णचन्द्र गुणसागर। परम धुरन्धर धीर उजागर॥ गाय चरावत भावे मनहर। भए कुमार मारहून सुन्दर॥ पांच सारदी निशा उदारू। आहि चाँदनी चन्द सुचारू॥ रसिकराज अति आनद पाए। मोहनि मुरली मञ्जु बजाए॥ सो सुनि गोप बधू मुद ल्वै कै। गई कृष्ण पै मोहित ह्वै कै॥ भांति अनेक रमे प्रभु तिन सों। कहीजाइ सो सुषमा किनसों॥ बहु विधि रमे नवल निशि नागर। अन्तरजामी सुषमा सागर॥ सो बिसतारि कहांलों कहिये। बहुत गाद घोरो कहि लहिये॥ सुनो एकदिनकी मनभावनि। कृष्णचंदकी कथा सुहावनि॥ नाम अरिष्ट दैत बलभारी। रह्यो अमान वृषभ बपुधारी॥ गोरूपनिमें परलय साधक। छोटे बड़े वृषभको बाधक॥ गाइनझुँको दुखद अन्याई। संध्या समै एक दिन आई॥ प्रभुके सनमुख गरजन लाग्यो। भयो कालबस अति रिसि पाग्यो॥ तेहि लखि हरि करताली दीन्हें। सुनि सो चलो डकाडि रिसि लीन्हें॥ कसि शरीर पुरपूछि उठाए। चोंच तिरीछे शृङ्ग उठाए॥ ✻ ✻ ✻ ✻ ✻ ✻ ✻

॥ ✻ ॥ दोहा ॥ ✻ ॥

एहि विधि आवत ताहि लखि कूदि शृङ्गगहि वीर। घूमि घुमाइ गिराइ तेहि बधे कृष्ण रणधीर॥
वृषभासुरको देखि बध सिगरे गोप सुजान्। ह्वै मोदित श्रीकृष्णकी अस्तुति किए महान्॥

॥ ✻ ॥ चौपाई ॥ ✻ ॥

सिगरे चरित कृष्णके सुनिकै। कंसभूप निज हियमें गुणिकै॥ उग्रसेन बसुदेव निशंकहि। बभ्रु अक्रूर भोज अरु कङ्कहि॥ सात्विकि दारुक अरु कृतबरमा। कंकाबरण बिकद्रु सु परमा॥ विपृथु पृथु प्रिय अरु वैतरणू। ए यदुवंशी आनद भरणू॥ अरधरातिमें इन्हें बोलाई। करि तिनकी बहुभांति बड़ाई॥ हिए त्रसित ऊपर अभिमानी। कहन लगो एहि विधिकी बानी॥ मम बिनाशको कारण गाढ़ो। नन्द गोपको सुतह्वै बाढ़ो॥ कृष्णनाम अति उद्भट बीरा। दुस्तर कारज कर रणधीरा॥ मंत्रीचार बिचारण हीना। हों यह पायो शोच अधीना॥ जिमि आलससों रोग बढ़ावै। तबचेतै अब अति दुख पावै॥ तिमि अबलों हम चेत न कीन्हो। अब सुनि तासु चरित चित दीन्हो॥ खेलत हों पलनापैं जबसों। अदभुत काज करपै तबसों॥ एक समै नारदमुनि आए। दुतिय बार इमि मोहि सुनाए॥ तुव बिनाश करता हों टेरो। अठवों पुत्र देवकी केरो॥ तेहि बसुदेव जशोदहि दीन्हे। तासु सुता निज तनया कीन्हें॥ बिंद सोचमें विदित बिराजें। शोणित शुंभ निशुंभ दराजें॥

॥ ✻ ॥ दोहा ॥ ✻ ॥

अठवों सुत बसुदेवको तुव बध करता बीर। नन्दगोपके गेहमें बिलसत है रणधीर॥
सो तुम सब बसुदेवको देखो कुतसित कर्म। मम बिनाशचित चाहिकै कैसो कियो अधर्म॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

मम हित रचि करि बोल बिलासा। ये मृतक चाहे मम नाशा॥ मखबस रचि आव निज राये। अब निज सुतहि राज्य अभिलाषे॥ आपुहि चातु मोद हिय धारि। मम बध करोंगे सहज बिचारे॥ वृध्द कहाय मान्य सबहीके। हैं ए अब कुटिल अति जीके॥ बारपनेते वृद्ध न कोई। वृद्ध होई बरबुधिको जोई॥ इन्हहिं न बधउँ बूभिन्यह काजू। जाति वृद्ध सिय बधब कुकाजु॥ तातें हे अक्रूर सुज्ञानी। आज नंदपै सुनि मम बानी॥ कहेउ नन्दसों मम हित बाचें। उचित दण्ड दे आनद छावे॥ सबकोउ उनके सुतन सराहें। तिनहूको हम देखन चाहें॥ तिन हूको संग लीन्हे ऐहैं। जैं है नवसँग लीन्हे जैं हैं॥ धनुषयज्ञ हम रचन कीन्हे। तामें तिनके गुद सुत कीन्हे॥ मेरे मल्लनसों लरि जीतीं। माँगि लेहि ते जोचित चीतें॥ एहि प्रकार बहु भाँति बुझाई। ल्यावो तिन्हें बिश्वास बढाई॥ सो करिबोजेहि इनसों आवैं। उन छलको कछु भेद न पावैं॥ कह्यो कंस जो सो सब सुनिकै। चले अक्रूर नन्दपै गुनिकै॥ प्रभुहि लखनको उत्सुक कैसे। तृषित जेठको अषाको जैसे॥ सबके मान्य वृद्ध शुचि भेषहि। देव तुल्य वर बुद्धि बसुदेवहि॥ अति कठोर बानी रिसि सानी। कहेसि जु कुटिल कंस अभिमानी॥ *⬬*⬬*⬬*⬬⬬*⬬*⬬*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

सो सुनि नहि बोले कछू श्रीवसुदेव सुजान। सब यदुबंसी व्यथित ह्वै मूँदि रहे निजकान॥
अति अवाच्य बातैं कहे ताहि काल असमानि। उग्रसेनके पितामह अंधक बोले आनि॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

अहो कंस तुम शुचि मति नाषे। बसुदेवहि जो एहि बिधि भाषे॥ ए नहि ऐसो कहिबे जोगू। इन्हे सराहत हैं सब लोगू॥ यदुबंसज वीरध अरु पोषू। सब माँने इनको संतोषू॥ तासु निरादर इमि तुम कीन्हे। सबके हृदय भल्ल यह दीन्हे॥ मान्य पुरुष कहँ निदरै कोइ। ताको भलो कबहूं नहि होई॥ निज सुतको इनरक्षण कीन्हे। सो अब आनि रास तुम लीन्हे॥ नीकी निज पितुसोंतो बूझो। याही बिधि उनहूसों जूझो॥ नाहक तुमको पोषि सुधारे। अनमत चाहैं मारिनडारे॥ सुनपै करैं नेह पितु जैसो। वे तुमसों करिहैं सो तैसो॥ पीछे किए करम तुम जेते। सो बिचार करि पछिले तेते॥ निज अघ समुझो कहँ करिहै आवत। सो तुम जानी सो सुगुरु अनघा॥ तुमहूं अब रथ लीन्हे पीछे। अब अबहूं करिबोइ इच्छे॥ तातें इन अति अघगुन जोइ। राजि ह्यको नाशक जोइ॥ शंकरबक अरु हन्या सुओधा। तिनसों तुमतो बढो बिरोधा॥ तातें मन धीवा हिय धरिके। श्रीवसुदेवहि तोदित करिकै॥ जो बसुदेवहि गंम उदारा। अबो कंसहै वापत बिहारा॥ ⬬*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

जनजनकों यह सुनि बचन बोले काहू न बैन । भे उठिके निज भौनमें करि रिसियाते नैन ॥
अन्य आदि यादव गए निज निज घर सुखदानि । जानि कंसकों काल बस हरि ईहत अनुमानि ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

रह्यो दैत एक केशी नामा । बाजि बेसधर बर बल धामा ॥ रहैं सदा वृन्दावन मांहीं । गो मानुष हति खाइ सदाहीं ॥ तेहि पठए हो कंस संदेशू । कृष्ण नाशको उग्र निदेशू ॥ सो यह केशी काल बिशाला । आयो ब्रजपैं कठिन कराला ॥ तेहि लखि ब्रजवासी भय पाए । आरत भाजि कृष्णपैं आए ॥ ब्रजबासिनकों साहस दैकै । ताढिग चले कृष्ण मुद लैकै ॥ कृष्णहि आवत सनमुख देषो । आइ हयेन्द्र झपटि भय भेषो ॥ हींसत पोंछ सु पूंछि उठाए । घूम्यों प्रभुके दहिने बाँएँ ॥ बार अनेक घूमि चहुँ घेरा । शठ मारेहि पछलात कठोरा ॥ फिरि अति घोर शब्द करि डांढेसि । बाहुमूलमें रदसों काढेसि ॥ बर अशके मनलासों छायो । चाहेसि उरसों ठेलि गिरायो ॥ तब हरि निज भुज बरधित कीन्हे । डारि दैतके मुखमें दीन्हे ॥ करि ता उरमें भुज बिस्तारा । कीन्हे केशीकों दुइ फारा ॥ केशिहि मरो देखि ब्रजबासी । अति मोदित भे बिपिनबिलासी ॥ यथा उचित कहि कहि प्रिय बानी । बहु बिधि प्रभुहि सराहे ज्ञानी ॥ नारद मुनि परभाव अतोले । रहि अदृश्य नभपैं तहँ बोले ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

या केशीको बध रह्यो दुस्तर हे असुरारि । याके बधिबे जोग हैं तुमही के त्रिपुरारि ॥
तुम केशीको बधकरे ताते महिमा धाम । होइहि जगमें प्रगट तुव अनुपम केशव नाम ॥

॥ * ॥ हरिगीतीछन्द ॥ * ॥

लखि तुम्हहि तुव चरितानि अब हम जातहैं आनन्द भए । फिरि आइ इत लखिहैं सरुचि अब चरित करिहौ जे नए ॥ इमि कृष्णसों कहि प्रेम पूरि मुनीश नारद दिव गए । सह गोप कृष्ण उदार प्रभु प्रिय परम ब्रज प्रबिसत भए ॥ तेहि द्यौस संध्यासमें तहँ अकरूर पहुँचे सुधि खरे । तुर उतरि रथसों नन्दके घर गए अति सुखसों भरे ॥ गोवत्सके व्यापारमें तहँ देखि कृष्णहि तकि रहे । रोमांचितो व्है पुलकि पसिजि सुनैन जल भरि जकि रहे ॥ एक समैमें बत्सपनमें शिशुरूप प्रथम सरुचि करैं । तेऊ आइ महिपै गोप बनि एहि भाँतिके कारज करैं ॥ इमि बूझि मनमें ज्ञान बर चखि कृष्ण कृप सुढरिकै । गहि मिले अङ्क लगाइ कहि बहु मूर्ति चखमें घेरिकै ॥ सह कृष्णमें अंह मंद है तहँ झटिकै तिनसों मिले । बलि रामसों मिलि ताहि समय ते कदम किंशुकसे खिले ॥ तहँ वृद्ध गोपन सहित बैठि सुकुशल कहि सुनि मुद लहे । फिर कह्यो कंस महीपकों तहँ नन्द अरु हरिसों कहे ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

आगम कंसमहीपको सुनऊ नंद सहघोष। वार्षिक करबो कबऊ उत चले संग लिये तोष॥
कंस नृपति कीन्हे महत धनुमखको आरोप। चलें तहां तेहि लखनको राम कृष्ण वर चोप॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

इमि कहि चहे कृष्णसों ऐसो। कहत रह्यो निज मनको जैसो॥ तुव पिता वसुदेव तिहारे। परवस परे जन्मते हारे॥ रहति देवकी जननी धारी। तुमहिं लखे बिनु सदा दुखारी॥ तुमसों पुत्र पाइ ते दंपति। लहै शोच सो अनुचित संपति॥ तुम्हरे कारन करकंटसि लीन्हे। कंस तिन्हें अतिसै दुखदीन्हे॥ तातें उत चलि सहित सनेहू। मातहि पितहि सरस सुखदेहू॥ सोसुनि कृष्ण नरिसि कछुकीन्हे। उत चलिबेके शासनदीन्हे॥ रामकृष्ण अक्रूरसोहाए। निशि कहि कथा प्रसंग बिताए॥ चले भोर सब संमत करिकै। पयदधि वृषभ महिष घृत लैकै॥ राम अक्रूर कृष्ण तहँ चढिकै। दुसरे एक सुरथ पें चढिकै॥ निरखि कालिंदी तीरवहा नद। कहे अक्रूर कृष्णसों सानंद॥ तात एकछण तुम दोउ भाई। रथ मह इतै रहौ सुखदाई॥ न्हाइ आइ मैं अहि इत अबलों। नहि आवों मोहि परिखेऊ तबलों॥ इमि कहि आइ कालिंदी भीतर। [illegible] अभीतर॥ सेवित तक्षकादि अहि गणसों। शोभित शेष सहस्र सुफणसों॥ तासु उछंग विष्णु आसीना। निकट विराजे राम प्रवीना॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

लखि विष्णुहि इमि तहँ कछू चाहे कहन अक्रूर। कहिन गयो कछु तकिरहे अनुपम परमापूर॥
बाहेर कढि औं लखे तो श्याम गौर अभिराम। रथपें बैठे हंसतहैं रामकृष्ण छविधाम॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

जलमें बूडि निकसि फिरि देखे। ताही विधि उत इतै निरेखे॥ तब तजि जल अक्रूर सोहाए। साचरजित से रथढिग आए॥ बोले बिहँसि कृष्ण तेहि चाहे। हो आचरजितसे तुम काहे॥ सुनि अक्रूर कहे प्रभुपाहीं। तुमकँह ये कछु अचरज नाहीं॥ चाह्यो सो करि आनंद छायो। एक अनेक रूप दरशायो॥ उत तुम्हरे सनमुख मन भायो। हमसों कछु बोलि नहि आयो॥ इत इहि भांति रमो सबही सों। लागो इतक आचरज जीसों॥ इमि कहि रथ चढि चले उतालहि। पहुँचे मथुरा सांझकालहि॥ ने अक्रूर निज गेह लवाई। साहूर तहां उतारे आई॥ बोले तहां अक्रूर सुवाम्नी। सुनऊ नृप बलराम सुशामी॥ कछु दिन इत उत बैठि बिताइऊ। अबैन निज पितुके घर आइऊ॥ जौ उतको जैबो सुनिलेइहि। तो नृप उनहि अधिक दुखदेइहि॥ सुनि हँसि बोले केशव आरज। उत जैबेको मोहिन कारज॥ जहं तहं आइ पुरी यह पेखब। धनुष यज्ञको

आज्ञादेखब॥सुनि चकवर मोदहिय धरिकै।हरिहि प्रणाम मनहि मन करिकै ॥गए कंसपै आनंद पावै।रामकृष्ण पुर पेखन लागे॥ यथा मत्तगज सुभ गज भारी । अहं तह विहरे स्वेच्छाचारी ॥ ** ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

राज मार्गमें रजकहों रंगकार तेहि देखि । तासों मांगन लागे शुचि बसन विचित्र निरेखि ॥
रजक कह्योसि तुम कौन हो कोहि बनके रखवार । कंसनृपको बसन लखि मांगन लगे गवार ॥

॥ * ॥ सम्अनन्तसिखाछन्द ॥ * ॥

सठक रजक कर संकल बचन सुनि रिसिकरि तेहि हरिहनि करतलसों ।
सिर धरसन भिन्न करि दिये तब गइ रजकिनि कहन नृपति वरबलसों ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

बसन पहिरि तब प्रभु दोउ भाई। ढूंढे शुचि माला छविछाई॥चलि कछु दूरि सुसदन नि भेषे। गुणकसु नामक मालिहि पेषे ॥ तासों कहे लस छबि गेहू । हमहिं जोग शुचि माला देहू ॥ सो सुनि कहेसि प्रियंवद माली । लीजै सुषमा निधि बलशाली ॥ इमि कहि तिन्हहि हार पहिरा एसि । श्रिय वर्धन शुचि आशिष पाएसि ॥ राज मार्गमें फिरि ते डगरे । तँह देखे कुबजहि गुण अगरे ॥ अंगराग कर भाजन लीन्हे । लखि तेहि कृष्ण प्रश्न इमि कीन्हे ॥ कमलनयनि यह शुचि अनुलेपन । करिहो काके अंगमें लेपन ॥ सुनि हसि कुबुजा चितै तिरीछे । बोली मन मथ सरसों सीछे ॥ आवहु तुम मोहि अति प्रियलागे । अमल अलौकिक छबिसों पागे ॥ कंस भूपकी दुहिता प्यारी । हों ता अनुलेपन अधिकारी ॥ तुम को कहो कहांसों आए।कोहि हित मोहि मोहि बेलमाँए ॥ सस्मित कृष्ण कहे तब तासों । भरे भूरि मनभावनिभासों ॥ हम दोउ बंधु अतिथ एहि पुरके । मर्दन मल्ल मल्ल बलपुरके ॥ अंगराग सह तुमकहँ चाहे । सोनिज अंग लगावन चाहे ॥ जथायोग अनुलेपन भावन । भामिनि देऊ मनोज्ञ सुहावन ॥ *◆*◆*◆*◆*◆*◆*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

दै प्रमुदित कुबुजे दई अंगराग सित पीत । सो लै लाए अंगमें हलधर कृष्ण अभीत ॥
तदनंतर तापर कृपा करि केशव यदुराय । ठोढी तर दै आंगुरी लीन्हे ताहि उठाय ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

सीधतनेसो पीठि लखाएसि । कै करिक तिय भाव लखाएसि ॥ सदैनयो मिलि कूबर नासैं । प्रभुप्रभाव सो आनंद ननमैं ॥ कामक ललाती सुन्दरि ह्वैकै । प्रभुसे कहेसि मादसों स्वैके ॥ अए मोहि तुम अनुपम लाहू । अब मोहि छोडि कहाँ मतिजाहू ॥ सुनहु कांत अब सहित सनेहू । बसि करिये पावन मम गेहू ॥ बाणी तासु प्रेममें सुनिकै । कमलचन्द्र बोले इमि गुणिकै ॥ कछुदिन

सुन्दरि धीरज राखौ । अबै न आतुर ह्वैके भाखौ ।। कछु दिनमें हम सादर आइब । बसि तुम्हरे घर आनंद पाइब ।। ताहि प्रबोधि वीर दोउ भाई । धीर विलोके धनु गृह आई ।। जहँ बसि बहुत धनुष तहँ राखे । रक्षित धनुषपालसों भाखे ।। सो बह कौन धनुष है जोठि । भूपति जासु धनु आरोपै ।। तेहं दरशाए सो धनु भारी । कठिन जाहि इन्द्र गहि टारी ।। लखि उठाइ तेहि प्रभु गुण जोरे । बलअहि खैंचि बीचसों तोरे ।। टूटत धनुष शब्द अति घोरा । भयो गुरुतर व्यापित चहुँ ओरा ।। धनुष तोरि दोउ बंधु सुखारे । सो गृह तजि कहुँ अनत बिहारे ।। चकित धनुषपाल तब आई । कहेसि कंससों कथा सुनाई ।। *—*—*—*—*—*—*—*—*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

पुरुष सिंह द्वै वीरवर गौर श्याम शुचिगात । तेजपुञ्ज अति प्रभामें विबुधोपमित बिभात ।।
आइ लखे तहँ धनुष तव कस पुरुष वरवीर । बड़ो धनुष गहि तोरियो कितै गए रणधीर ।।

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

धनुष भङ्गको दुसह संदेसा । कहेसि तासु करि बिदा नरेसा ।। कीन्हे अन्तह भवन प्रवेशा । मनमें गहे अमोघ अंदेसा ।। राम कृष्णको पौरुष भारी । समुझि विलक्षण भयो दुखारी ।। मुनिको वचन सांच करि जान्यो । निज हत कर्म सुमुझि पछितान्यो ।। हम घट बालिक नाहक मारे । विधि चाहत सो टरत न टारे ।। इमि चिन्तित कढि बाहेर आयो । मल्लशालाको कृत्य बतायो ।। मञ्चादिक की रचना जेती । करि आज्ञा भृत्यन कहँ तेती ।। जुद्ध धर्मविद अरु बुध करता । अरु जे जुद्धमेंहि मुदभरता ।। ते सब प्रातर ह्वैं ईत आई । शामि जाहि बैठो बरमें आई ।। मुष्टिक अरु चाणूर सुनामा । दोय मल्ल हैं बरबल धामा ।। तिन्हें बोलाइ तहाँ मुद भरिकै । अस्तुति तिनकी बहुविधि करिकै ।। कहे कंस लखि सूर सुजीके । सुनउ वीर तुम मम हित नीके ।। जे वसुदेव तनै द्वाउ भाई । बरधित भए नन्द घर जाई ।। संकरषण अरु कृष्ण कहाएते मम घातक ते इत आए ।। ते दोउ बिसद वीर विख्याता । जुद्ध भेदके सरस सुज्ञाता ।। तिनसों तुमसों जुद्ध महाना । होइ हि कालिहँ सुनउ बलधामा ।। *—*—*—*—*—*—*—*—*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

साम धाम हो युद्ध करि पग धरि सकरि पछारि । जीवत तिन्हे न छोड़ियो [illegible] हिये बिचारि ।।
सो सुनि भाखे मल्ल नृप उनकी आयु सिराय । तौ लौं [illegible] लखाय ।।

॥ * ॥ आर्यागीतीछन्द ॥ * ॥

ते दोउ मल्ल वचन [illegible] इमि कहि गे निज घर अति गौरव सों । तब नृप कंस बलायसि कुबलय गजपालहि रवधर वरसों ।। तोटक छन्द ।। कुबलै गज पालक सो द मयो ।

नृपके किन आइ खरो जु भयो ॥ तेहि देखि कहे इमि कंस बली । हिय दंभ भरे मति अंध छली ॥ तुम लौ कुबली गज मल्ल महा । मम हार रहो मम मानि कहा ॥ पुनको बलको बह रोष किए । रहियो निज पास सुपक्ष लिए ॥ *~*~*~*~*~*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

नहँ जातिके वसुदेवके तनयनको करि जेर । गजसों बध करवाइयो कीजो कछू न देर ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

तिनको बचन देखि सुद लहिके । तब हों घोर रोष हिय गहिके ॥ भए मोहि यदुवंशी खली । तिनहे राम कृष्णके पक्षी ॥ तिनको नाशकरों फिरि सादर । उग्रसेन आदिक जे कादर ॥ उग्रसेन नहि पिता हमारे । कहिहो हूँ सुनि कारण पियारे ॥ सो सुनि के बोल्यो मम पालक । यह बिरतांत कहउँ सब बालक ॥ कहे कंस एक ग्रास बिशारद । मम ढिग आइ सुमुनिवर नारद ॥ मोसों इमि हसिकहे सुखारे । उग्रसेन नहि पिता तुम्हारे ॥ तब हों उठि नारदसों बूझे । सुनिबेको बिरतांत अरूझे ॥ नारद कहे सुनउ महिपाला । कछु दिन बीति मोहिन तुव माता ॥ गिरि जो आइ सुजामुन नामा । तापे सखिनसहित छबिधामा ॥ गई लखन वर बनकी शोभा । कुसुमित बिपिनि देखि मन लोभा ॥ कूजनि सुनि सुखदानि खगनकी । गूंजनि सुने मत्त अलि गणनकी ॥ मारुत सुखद त्रिबिध तब लागे । तिय सुभाव मन मनमथ जागे ॥ अति अनोख आनंदसों पागी । तियन सहित बन बिहरन लागी ॥ बिधिबस ताही बन तंह आयो । द्रुमिल नाम दानव छबिछायो ॥ रथसों उतरि लखनलइ सोऊ । लख्यो रमण बनमें छबि जोऊ ॥ *~*~*~*~*~*~*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

जहँ तहँ बिहरत रूरिसों तुव मातहिसों जोहि । बिलमित बोल्यो खगसो मनमें अभिलेष ओहि ॥
यह अपूर्व मनमोहनि अति रूपवती नारि । बन बिहरति मो मन भयो बिहवल याहि निहारि ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

यहयों कौन भूपकी नारी । लगी मोहि यह अतिसे प्यारी ॥ याको भेद कौनि बिधि पावों । किमि बसकरि एहि अंक लगावों ॥ तब अघ परसि ध्यानबिधि ठानेसि । उग्रसेनकी तिय यह आनेसि ॥ तब सो उग्रसेन बनि लीन्हेसि । आइ तहां तासों रति कीन्हेसि ॥ प्रथम ताहि तिन चीन्ही नाही । अति आनंदित रमी उछाही ॥ पीछे रतिगौरव लहि ताहू । बोली अति क्रोध करि आहू ॥ को तू मम पति सम बनि आएउ । जो मम पतिव्रत धर्म नसाएउ ॥ रे शठ दुष्ट पतित अपराधी । धिक तोहि खल परतिय रतिबाधी ॥ सो बोल्यो मैं हों बरज्ञानी । द्रुमिल नाम दानव अभिमानी ॥

इमि कमरोप करऊ गजगामिनि। ये जो कहौं सुनऊ सो भामिनि॥ केतीतिय परपति रति छमिये। किते पुरुष परतिय रति गुमिये॥ है तिय पूरुष को यह कामा। भयो कहा यह अनुचित वामा॥ मम संभोगज सुत अब लहिहौ। तब कामिनि वर आनंद गहिहौ॥ को तुम इमि तोहि कूजेऊ वामा। ताते तासु कंस यह नामा॥ होइहि सो अतिसे बलवाना। करि मर्दन अमनीत अमाना॥ सुनि सो बोली सुनु मति विमरे। पुरुष न लंपट तोहि सम तिगरे॥ होहिं न सब तिय परपति कामी। कहुं एक कोउ भई हरामी॥ ताते ए निंद्य न है तिय सिगरी। जे विगरीहैं तेई विगरी॥ तुव संभोगज सुत जो होइहि। सो सब धर्म लोककर खोइहि॥ तब कोउ एक पुरुष अवतारी। होइहि यदुकुलमैं बलभारी॥ *❁*❁*❁*❁*❁*❁*❁*❁*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

तब तुव संभव पुत्रको कर्म निरखि गहि रोष। बध करि करिहै सोइ पुरुष यदुकुलको परिपोष॥ यह सुनि सो निज पुर गयो ए आई निजधाम। इमि कहि मोसो दिवि गए नारद मुनि अभिराम॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

ताते सुनु हे वारप आरज। इने न मातुपितासो कारज॥ तुम नय कहो मोरहीं कीजे। फिरि जो होइहि सो लखि लीजे॥ इमि कहि तेहि गजपास पठाए। नृप चिन्तित सो निशा बिताए॥ भोरहि सुभट सचिव सुखदाई। जुरे अखारमैं सब आई॥ युद्ध विसारद आवत आए। आए मल्ल वीररस छाए॥ पुरजन आए आनंद साने। युद्ध देखिबेको ललचाने॥ तब नृप कंस मत्त मद छायो। रङ्गभौनके द्वारे आयो॥ कुवलहि गजहि राखिके द्वारे। भयो आपु भीतर मुद धारे॥ सब समान तँह देखि नरेशा। यथा उचित को देइ निदेशा॥ अति उन्नत हो मंच बनायो। चित्रिन रचित सब भाँति सोहायो॥ तापैं जाइ गर्बगहि बैठो। मोछ उमेठि औरसों ऐंठो॥ इतर दारुने मञ्च बनाए। तिनमे बसि जदुवंशी आए॥ मंचे निपन जोग जे खासें। तिनपै बैठि सभी रमि वासें॥ लसै मंच मनुदेवन लीन्हे। सपद बिमान भूमि पद दीन्हे॥ मुष्टिक आदि मल्ल बलवाढे। करिकै तीनि गोल भे ठाढे॥ बहुविधि बाजन बाजन लागे। जय साजन जन गाजन लागे॥ **

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

ताहीसमै सुबंधु दोउ राम कृष्ण बलवान। रंगभूमि के द्वार पै आए बीर अमान॥
मग रोके कुवलय गजहि खरो देखि बनमालि। कहो कंसछितिपालको लिए लेउ प्रभु आनि॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

प्रभुहि निकट लखि गजप रिसाए। कीन्हेसि कुवलय गजहि इसाए॥ कुवलय करको कुंडल करिकै। प्रभुपैं चलो दुसहरिसि धरिकै॥ तब प्रभु तालठोकि हरकीले। द्वै पग पाछूं हटे लसीले॥

सिंधुर धरिबो मनमें धारेसि । सुण्डा दण्ड उदण्ड पसारेसि ॥ लखि नहि झपटि कृष्ण रिसिपागे । झपटि सुण्डमें झूलन लागे ॥ रद चरननके अन्तर हारे । अविसे कठै सुण्ड उरधारे ॥ दोहू दसन अरु सुण्ड चरननसों । करि न सक्यो कछु द्विरद रननसों ॥ कछु छन गजसन कृष्ण बिलसिके । इमि दावे कमकर कर कसिके ॥ आर्त भई पीडित गजराजू । बैठि गयो गिरि सदृश दराजू ॥ तब प्रभु पग कुंभन डिक धरिके । लए उखारि दसन दोउ धरिके ॥ वज्र सदृश सोइ दसन प्रहारे । मत्त गिरिको सिर शृंग बिदारे ॥ पूंछि उपारि लिए हलवाहक । कौतुक लागि युद्ध जय चाहक ॥ गिरि बिलिमें मधि प्रविश्यो नागहि । ईंचिलेहि जिमि गुधि परनागहि ॥ गज गजवानहि बधि गजमर्दन । धीर धराधर धर जग वर्धन ॥ गज रक्षक हे सुभट घनेरे । बली कंस भूपतिके प्रेरे ॥ गज दन्तनसों ते दोउभाई । तिनको नाम किये सुखदाई ॥ फिरि धरिकन्धनपें रद प्रविंसे । सुपुरुष सिंह रंगघर प्रविसे ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

तहां आइ निरखत भए भट मल्लनको जूथ । सिंह सरोष लखै यथा गजगणके रद रूथ ॥
गजबध सुनि लीन्हे दसन लखि दुख पायसि भूप । लागे चतमें लवण जिमि प्राणी होत विरूप ॥

॥ * ॥ हरगोतीछन्द ॥ * ॥

बलिराम अरु बलि बीर बीर सुबीर भेष सबधि धरे । बर बीर रससों भरे धीर प्रबीर थंचर अरु कारे ॥ तँह घूमि इत उत देखि संकल समाज जन मुदसों भए । लखि रंग घरको मध्यदेश सुभेष प्रभु ठाढे भए ॥ नृप कंस लखि अति क्रोध करि चाणूरकों आयसु दए । तुम कृष्णसों बलिरामसों मुष्टिक लरहु चेतन भए ॥ चलि चावसों चाणूर मल्ल व्रज चंदके सनमुख भयो । जुध चाहि चंचल अचल सम चौगानमें ठाढो भयो ॥ रणरूढ दीरघ काय ताहि बिलोकि जदुवंशी कहे । यह मल्ल मास्त बिरुद्ध जुद्धत होत अति अनुचित अहे ॥ हैं मल्लयुद्ध समान बपु बयको सुकोविद कहतहैं । तिमि जैन हैं बलभद्र सुभद्र जु करे गौरव गहतहैं ॥ सुनि कृष्णचंद बिचारि जदुवंशीनसों इमि कहतभे । ए मल्ल दीरघ काय हमसों लरनको मुद गहतभे ॥ ए धर्म जुद्ध बिरुद्ध करत सकुच नहि हम हैं सुने । ए मारि कितने मल्ल महि पै एक आपु हि हैं गुने ॥ * * *

* ॥ दोहा ॥ * ॥

जैसा करिबो चाहि है हमसों ए बलवान । तैसो इनकों आनि हम करि है सुनो सुजान ॥
इमि धीरज दे जादवन ह्वै मोदित यदुनाथ । तालठोंकि चाणूरके सनमुख कीन्हे हाथ ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

हाथहि हाथ पकरि दोउ बीरा । लपटि गए हरकेल सु धीरा ॥ लपटि छूटि भिरि छूटन

लागे। पंथ विधाननि जूटन लागे॥ करैं पेंच अरु पेंच बचावैं। चलितें चंचलता दरसावैं॥ पकरहिं भूमि कोउ जान लगावैं। कोउ ऊपरते पेंच बचावैं॥ फिरि उठि भिरैं नाचहि चावन। करि करि विविध भांतिके दावन॥ जैसे सिंह गजहि गहि पावैं। झपटि लपटि तजि लपटि गिरावैं॥ फिरि उठाइ फिरि दाबि गिरावैं। तिमि तिमि विहरैं जिमि जिमि भावैं॥ यो श्रीकृष्णचन्द्र प्रभु तैसें। गहि चाणूरहि कोपि सुकैसें॥ दक्षिण करसों कंध निवारे। पे जे बाजत बाजन भारे॥ चढे विमानन सुरगण आवैं। सदय सप्त ऋषि समुद सुभावैं॥ जैति कृष्ण कहि आनद छावैं। बहुत भांति दुंदुभी बजावैं॥ किए कंसपें रिषि प्रभु मनमें। कांपित भई भूमि तेहि छनमें॥ हाल्यो मंच मुकुटतें ताके। मुचि मणि गिरे सुदन सुषमाके॥ नव पल्लवित वृक्षते जैसें। भरे अनूपम सुमन तैसें॥ इमि भिरि लरैं दोऊ भट भारे। जिमि बनमें मैंगल मद वारे॥ यो चाणूर रोष रकराता। होइ न नेकु मानु मदमाता। **।

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

चाणूरको बध भए पैं अति क्रोध करि बलिराम। वीर मुष्टिक सों भिरे वर वीर ताके धाम॥ द्वौ नाम तोसल सल्ल मल्ल सुविदित बल बलवान। भिरे तासो कृष्ण सीतक मल्ल रुद्र सुविशाल॥ राम मुष्टिककों वधे करि पंच पांच पछारि। कृष्ण पकरि उठाइ मारे बाहि महिपें डारि॥ नाश करि मल्लनको श्रीराम कृष्ण सुवीर। ताल दै दै खरे भे रमणीय अति रणधीर॥ तीनि पुरको एक ते लहि मनो है त्रिपुरारि। उग्ररूप अनूप कहे लसे तिनको मारि॥ तहां तिनको देखि जो सुख नंद अरु बसुदेव। लहे सो नहि लहे कबहू देव देवसुभेव॥ कंसको मुख श्वेत भो अरु स्वेदकण भे छाय। हारि हियसों लणक चंकित रह्यो भीषनभाय॥ फेरि साहस आनि गरवी गटनको दिय हेरि। सबल रक्षिए करहिं करि इमि कहन लाग्यो टेरि॥ *◆*◆*◆*◆*◆*◆*◆*◆*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

बाल बनेचर जे जुरे तिनको देहु निकारि। नंदहि गहि कै पै करे देहु पायसे डारि॥
धनधान्य धेनगण सकल ले धनको हरि लेहु। सबल है मम राज्य में इनहि बसन नहि देहु॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

सो सुनि कोप भए रणधीरा। कूदि मंच पै गए सुवीरा॥ जानन काहू सम्भवदेव। धरे मंचसे सबको जैसे॥ मुकुट गिराइ केस गहि लीन्हे। कंसहि अचेत भूमि काहि कीन्हे॥ केधरिके झपटे गज जैसा। हेत सको सो भूपति तैसा॥ चले आयु तब नेकु न राखी। भूलि गयो बल कुटिल कराखी॥ प्रभु हिन बहि सबको भय पूरो। रह्यो नाहि अब व्याकुल पूरो॥ गह कुसबलहि सहित

साहाए । कूदि मंचते महिपै आए ॥ बली कंस नाम हो जाको । प्राण विहीन भयो तन ताको ॥ जित तित ताहि कठोरि सुखारे । रंग भूमिके बाहेर डारे ॥ जेहि मन भयो कठोरि बेमारा तह भो कंस कठो रणखारा ॥ रह्यो सुनाम कंसको भाई । बधे ताहि हलधर सुखदाई ॥ तब सह बंधु हास आनन्दीमातु पिताके गुचि पग बन्दे ॥ सिगरे यदुबंशिन सों हरषे । मिलि घनश्याम मोद अस बरषे ॥ यथा उचित मिलि शुभग सोहाए । यदुबंशिनसह पितुघर आए ॥ कंस भूमिपति की सब नारी । पतिको मरण निरखि दुखारी ॥ जाइ मृतक ढिग रोवन लागी । आंसुनसों अग धोवन लागी ॥ *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

हाय नाथ कैसे भए कत ह्वै रहे अबोल । आलिंगण करि करि बकति काचण करो निचोल ॥
पुरुषसिंह पुरुषार्थ तजि कत सोए हिय हारि । अब हम सब करिहैं कहा सो किन कहो पुकारि ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

अब को तुम्हे बिना हे स्वामी । निरखि समान तियन प्रियकामी ॥ सरस बचन कहि कहि हिय समुझाइहि । गहि सप्रेम सादर उर लाइहि ॥ चलत न कहि लीन्हे तुम भरता । कैसे भए निठर हरता ॥ तुम तियलहि उतहूं सुख लहिहो । अब मम सुधि काहे को गहिहो ॥ इमि प्रलाप बहुबिधि कहि कहिकै । कटि उर भुज जरु गहि गहिकै ॥ कीन्हो रुदन कंसकी पतिनी । परम पिआरी पति ब्रत ब्रतिनी ॥ रुदति आइ तेहि नृपकी माता । उरपैं करति स्वकरतल पाता ॥ सुत शिर निज ऊरुन पर धरिकै । बहु बिलाप कीन्हो दुख भरिकै ॥ सुत तुम हे राजन के राजा । गए शीघ्र कत छाडि समाजा ॥ रथ गज तुरै छत्र भट नारी । लै न गए संग कहा बिचारी ॥ कहि गो हो रावण सुनि लीजै । बंधुहि बैरी कबहु न कीजै ॥ बंधु बिरोध किए भल नाहीं । बंधु प्रयोग छाडि नहि आंही ॥ सो अब हमैं प्रतक्ष लखाना । बंधु बैर हत अगुण समाना । एहि बिधि बिलपि कही ब्रजपतिसों । बूझो जाइ कृष्णजदुपतिसों ॥ जो वे कहैं सोई उर धरहू । कृत्यकाज बाही बिधि करहू ॥ उग्रसेन सुनि दुखित पधारे । गए जहां हैं प्रभु सुदहारे ॥ * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

बैठे यदु बंशिन सहित करुणा सिंधु बिभात । रुदन कंस को तियनको सुनि सुनि हैं पछितात ॥
यदुबंशी मुखियानको लेकैसंग सहाय । उग्रसेन संध्यासमैं कृष्ण लगे ढिग आय ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

तात कंस निजकृत फलपाई । गयो स्वर्ग निज देह बिहाई ॥ तुम बीराधि बीर जगमाही । तुम्हे सदृश कोउ महिप नाही ॥ अब सुनि भूमि पाल सब डरिहैं । बिना प्रयास उचित कर भरिहै ॥

प्रवृतिति धर्म अधर्म नशाइहि । सुजस तुम्हार भूमि पर छाइहि ॥ जदुकुल बरधित सोहित होइहि । कोउ अनर्थ कबहूँ नहि जोइहि ॥ देश कोश सेना भट जेते । करऊ राज्य निज बश करि तेते ॥ देऊ निदेश कृपा हिय धरिकै। प्रेतकर्म हम सुतकर करिकै ॥ तिय अरु पुत्र बंधुन सह जाई । बसब जाइ बन नगर बिहाई ॥ उग्रसेनकी आरत बानी । बोले कृपा सिंधु सुखदानी ॥ उग्रसेन तुम सब बिधिज्ञानी । तजऊ शोच-सुनि गुणि मम बानी ॥ कर्म कालके बस बश लोका । भ्रमत रहत सह शोक अशोका ॥ तन धरि कर्म करै सबकोई । तन धरि शोसि काल बस होई ॥ कर्म फेर परि तन धरि सोई । कृत फल भोगि कालबश होई ॥ तातें कर्म प्रधान बिचारी । तजो शोक सहस उर धारी ॥ करौ सुराज्य ग्रहन तुम आरज । हमैं न कछू राज्यसों कारज ॥ हम सुतंत्र बिहरब महि पाहीं । जिमि खग पुर थल बन गिरि माहीं ॥ *❁*❁*❁*❁*❁*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

ताके कर्म निरेखिकै ताहि काल बश जानि । हों कीन्हो बध तासु नहि राज्य हेत अनुमानि ॥
सादर प्रभुके बचन सुनि उग्रसेन सुख पाय । उत्तर नहि दीन्हे रहे चुप ह्वै शीस नवाय ॥
इमि कहि यदुबंशिन सहित कृष्णचंद सबिबेक । उग्रसेनपै करि कृपा किए राज्य अभिषेक ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

यदुबंशिन सह जाय उग्रसेन अभिषेक लहि । प्रेत कृत्यमन लाय पुत्रनको कीन्हे सबिधि ॥
करि पुत्रनको कृत्य उग्रसेन भूपाल मणि । आपु भए कृत कृत्य पाइ सहाई कृष्णकों ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशीवासि गोकुलनाथात्मजेन गोपीनाथकबिना बिरचते भाषायां भारतन्तर्गते हरिवंशदर्पणे कंसबधउग्रसेन राज्याभिषेकोनाम पंचदशोऽध्यायः ॥ *❁*❁*❁*❁*❁❁*❁*❁*❁*❁**

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

राम कृष्ण प्रभु स्वेच्छाचारी । उग्रसेन कँह राज्य सुधारी ॥ युवती युवा यशी अरु जेता । कछु दिन मथुरा बिहरि सनेता ॥ प्रिय दरशन पावन दोउ भाई।पुरी अवंतीमें चलिजाई।तहँ है सांदी पन तपरासू । तिनसों शीखे धनुष बिलासू ॥ चौसठि दिनमें चाहि उदारू । सीखे चौसठि बिद्या चारू ॥एहि बिधि बुद्धि बिलक्षण देखी।सांदीपन मनमें अव रेखी ॥ रूप बुद्धि गुण निरखि सयाने । अति उतकृष्ट देव करि आने ॥ पैंसठ ए दिन कृष्ण सुज्ञानी । कहे गुरुसों आनद दानी ॥ सरुचि मांगि गुरदछिणा लेहु । घर जैबेको शासन देहु ॥ सो सुनिकै गुरु गुरसुख पाई । करि प्रभुकी बहु भांति बडाई ॥ कहे सुनऊ हे कृष्ण सुदाता । रह्यो तम्हार एक गुर भ्राता ॥ लवण उदधिमें तीर्थ प्रभासू । सो अन्हान गो सुषमारासू ॥ गिल लि ताहि जलमें गाह मीना । सो सुत आन

देऊ परबीना ॥ एव मथुकहि सागर तीरा । गए राम अरु कृष्ण सुबीरा ॥ किए समुद्रमें आइ प्रवेशा। तंह आयो सागर धरि भेशा ॥ तासों कहे कृष्ण छवि नेहू । सांदीपन मुनिकर सुत देहू ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

सो सुनि सागर जोरि कर बोल्यो सुनऊ कृपाल। पृष्चजन्य नामक असुर है जलरूप बिसाल ॥
सांदीपन के तनय को पकरि गयो सो खाय। निज गुरके बर तनय को लेऊ ताहि बहि जाय ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

यह सुनि रामकृष्ण रिसि लीन्हे। शीघ्र जाइ ताकर बध कीन्हे॥ पांचजन्य शुचि शंख सोहायो। हो ता तनमें आ गुण गायो ॥ लीन्हे शंखनसो सुत देखे । तब यमपुर गे रिसिसों भेखें॥ जमहि जीति गुरको सुत लैकै । आइ भूमिपें गुरुको दैकै ॥ मथुरा आइ मोदसों पागे । यदुबंसिन सह बिहरण लागे ॥ जरासंधनृपकी दुइ दुहिता । कंस भूपकी हीं तिय सुहिता॥ ते वै जाइ पितासों रोई । पति बियोग अति दुखसों भोई ॥ दई सुनाइ दशा ते सिगरी । सो सुनि कै ताकी मति बिगरी ॥ कारुष दन्त बक्र शिशुपालू। शाल्विनि कालजमन महिपालू ॥ भिष्मकसुत सह अरु भगदंतू । दुरजो धनके शिक छितिकंतू ॥ भूरिश्रवा जयद्रथ बीरा । चित्रसेन अरु सत्य सुधीरा ॥ अंगबंग कलिंग देशपति । कोशलकाशोको पति बरमति ॥ माद्रिदेशपति आदिक जितने । रहे भूमि भूपति तितने॥ लै संग चढ्यो कोप करि भारी । जरासंध चितियनि धनुधारी॥ मथुरहि घेरि लिहसि सऊ दिशिसों । बरबानैंत भरो अति रिसिसों ॥ *⬭*⬭*⬭*⬭*⬭*⬭*⬭*⬭*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

तासु चमू लखि मंत्र करि राम कृष्ण सहचाव। यदुबंशिनकों संगलै कीन्हे ब्यूह बनाय ॥
कहे बिहंसि बलि रामसों बिशद बीर बलबीर । परम धुरंधर धराधुरहरण धनुर्धर धीर ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

लखऊ कालबस व्है चढि आयो । जरासंध रिसिरुजसें छायो ॥ भूमि पाल सिगरे संग लैकै । निज भुजबलसों तिन्हे अभैकै ॥ हंस राशि सम राजत जेहै। शुचि सित छत्र नृपनके ते है ॥ ए सब अतिथ सु प्रथम समरके । बलिपशुसे संगर मख बरके ॥ अब इनसों करि संगर भाई। हरे भूमिको भार भलाई ॥ केहि निशि अरातिं धुकी सेना । करि नेवास जाहिर जगजेना ॥ भए प्रात नृपगण हें जेते । जरासंधके ढिग गे तेते ॥ जरासंधमतिअध नरेशा । दयो तिन्है कृति उग्र निदेशा ॥ तुम सब निज निज सेना लैकै । लगऊ शौनिदिशि गन निरभैकै ॥ रामकृष्ण बधि जांहि न जालों । लरेऊ सरोष भूप सब तालों ॥ इमि निदेश दै बररिसि पाग्यो । आपु जाइ दक्षिण दिशि लाग्यः ॥ लै शिशुपालहि संग सोहायो। अति अमोघ अमरष सो छायो ॥ चारि जूथ करि पुर कों

कढ़िके। लरण लगे जदु वंशी बढ़िके॥ रथचढ़ि रामकृष्ण धनुधारी। लागे करण युद्ध बलभारी॥ तीक्षण बाणनि मारण लागे। पर दल व्यूह विदारण लागे॥ अति सवेग चऊ दिशि रथ फेरे। परबल भटके तनशर मेरे॥ *⬭*⬭*⬭*⬭*⬭*⬭*⬭*⬭*⬭*⬭*⬭**

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

इतने में तहँ स्वर्गतें आए आयुधवेद। हल मूशल अरु धनु गदा दिव्य प्रभाव अभेद॥ सो नन्दक नामक मुशल संवर्तक हल चारु। तिन्हें धारि शोभित भए श्रीबलिराम उदारु॥

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

शार्ङ्ग धनु अरु गदा धरि कौमोदकी यह नाम। भए शोभित समरमें श्रीकृष्ण प्रभु अभिराम॥ करषि हलसों आनि ढिग बरभटनकों बलिराम। मारि मूशलसों लगे संवार करण ललाम॥ विकल व्है नर नहि सब तब भागि जाइ अचैन। जरासंध नरेन्द्रके ढिग कहे आरत बैन॥ तिन्हेंलखि करि क्रोध अति नृप जरासंध सुवीर। कथ्यो धिक धिक कहत तिनको धनुषधर रणधीर॥ विदित क्षत्री धनुष धारे जीवको करि लोभ। भागि आए समरसों सो किए काज अशोभ॥ प्रबल अरिसों लरऊ अब कै शीर धरि उत जाय। के सुचित मम युद्ध देखो बैठि पीछे आय॥ बचन सुनि व्है भूप तिनके लज्यमान सचेत। जाय निज निज थरण लागे लरण जय जय हेत॥ विविध विधिके सस्त्र लागे चलन दुऊदिशि भूरि। धनुषके टंकार रवसों रह्यो दिशिदश पूरि॥ *⬭*⬭*⬭*⬭

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

गरुडध्वज सुरथस्थ श्रीकृष्णचन्द्र बरवीर। जरासंधके तन हने आठबाण रणधीर॥ बेधे ताके सारथिहि मारि बाण बर पांच। नर तुरंगनके बध करे मारि विमद नाराच॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

जरासंधकों विकल निरेखी। चित्रसेन नृप अतिसै तेखी॥ आइ सामु है प्रभुहि प्रचारी। हांकेसि बाण चपलरथधारी॥ कैशिक सेनामी रिसि धारेसि। तीनि बाण बलिरामहि मारेसि॥ तब बलदेव क्रोध करि डांटे। तासु धनुष बर सरसों काटे॥ तब नृप चित्रसेन बलदेवहि। नव सुबाण मारे युध भेवहि॥ पाँच बाण कौशिक रिसि भरिके। मारे कोपि तृतिय धनु करिके॥ जरासंध शर सात बिशाले। मारेसि कोपि सैन करि लाले॥ तब हरि शर तीक्षण कर धारे। तीनि तीनि तीनोंको मारे॥ पाँच पाँच नाराच सुधारू। मारे तिनकों राम उदारू॥ नृप श्री चित्रसेन हो बांगा। काटे ताके रथकी तांगा॥ अरु श्रीराम हृदत भुजदंडा। काटे तासु कठिन कोदंडा॥ विरथ विधनु व्है निकट गदाले। चित्रसेन नृप महत मदाले॥ रथसों उतरि क्रोधसों धायो। संकरषणके

नमुख धायो ॥ चित्रसेनको नाम विचारी। लाए शरधनुसों हलधारी ॥ सो लखि जरासंध नृप ताहू । सरसों द्वै कोटि सर नाहू ॥ जरासंध धनुधर धनु भेदी। संकरषणको सर धनु छेदी ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

सत्वर निज रथसों उतरि गरजि गदासों मारि। रथ बाहक हय रामके दीन्हे महिपै डारि ॥
उद्ध युद्धको चाह करि ह्वै सक्रुद्ध बलिराम। लखय युद्ध लागे करण गदा युद्ध अभिराम ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

संकरषण मगधेश सोहाए। दोउ गदा युद्ध बिदवाए॥ कर लै गदा प्रचारि प्रचारी। किए युद्ध अतुलित बलभारी ॥ भांति भांतिके घातनि मारैं। गहबे गदा गदासों टारैं ॥ लागे गदा नेकु नहि मानै। नहि थकि रोष धारि युद्ध ठानै ॥ ठौर ठौर एहि बिधि घञ घोरा। मचत युद्ध माच्यो अति घोरा ॥ लखि सकुलहिं केशव धनुधारी। हते न तात भविष्य विचारी॥ दिवस सताइस लों एहि विधिको। भयो युद्ध अति सुभट समृधिको ॥ हलधर जरासंध रणधीरा। लरि ह्वै विरथ विधनु बर धीरा ॥ घाव गदा कर मै लै लै कैं। खरे गदा धनमे लै दै कैं ॥ गदायुद्धमै तेहि दृढ देखी। श्रीसंकरषण अति रिस लेखी ॥ जरासंधको बध अनुमानी। लीन्हे नन्दक मुशल सुज्ञानी॥ मुशल अमोघ अमोघ प्रभावा। जब हलधर भरि व्याम उठावा ॥ तब भइ नभवाणी गंभीरा। थमउ क्रोध हलधर रणधीरा ॥ बध्य न तुमसों यह मगधेशा। तातें छमा धरहु शुभ भेसा॥ याको बधन हार जय चारी। है अगप्रांड बधिहि सो याही ॥ सुखदानी यह बानी सुनिकै। अभय भए हलधर हिय गुनिकै ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

क्रोध रोष करि न हि करे मुशल प्रहार सुभाव। जरासंध सोउ भयो सुनि बिसमित तजि चाव ॥
इतनेसे संध्या निरखि राम हल्या ले सैन। शंखध्वनि करिकै करे पुर प्रवेश लहि चैन ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

भए प्रात जम्बीय महीपा। नृपन सहित भौ दिनको दीपा ॥ मग धरि मगध गयो मतमैलो। इत बरबधैन अनुगोन्यैलो ॥ फिरि सुनि निज दुहितन कीबानी। रिसि करि चढो मगध पति मानी॥ याही विधि फिरि भई लराई। पृथक पृथक सो बरनि न आई ॥ फिरि हलधर गहि मुशल सुधारे। तिमि नभ बाणी सुनि न प्रहारे ॥ लहि प्रभात फिरि नृप मगधेशा। बिसमित व्यथित गयो निज देशा। कलीकलक कंस को चहियो। सबकहु चाप हारि इमि चहियो ॥ बीस चोहिणी दलको स्वामी। जरासंध नरपति जय कामी ॥ चढि अष्टादश बार अयाना। मथुराकहँ फिरि फिरहि पयाना ॥ सो सुनि रामकथा मलभारी। अनुकंपित वह सकलहि सुखकारी ॥ आगे करण मंत्र मनभाए। तेहँ इमि बचन विकहु सुनाए॥ सूर्यबंश इक्ष्वाकु नरेशा। हंतासुत हर्यश्व सुभेशा ॥

मधु दइत्यकी तनया चारू । है ते ताके प्रिय भरतारू ॥ हो हरजश्वकीर गुरुभ्राता । अभिषेकित नरपति माइजाता ॥ सो हरजश्वहि इथो निकारी । सो तजि अवध गए बनचारी ॥ नृप हरजश्व बिपिनमैं बसिकै। अतिदुख लहे शोचमैं गसिकै ॥ **********

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

तहँ एकदिन नृपसों कह्यो इमि मधुमती सुनीरि। कुल राज्यको शोक अब तजउ धीरता धीरि॥
तजि शंके मधुबन चलो मम पितु मधुके गेह। वैभादिक करिहैं तुम्हें सादर सहित सनेह॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

सो सुनि नृपहरजश्व सुखारी । मधुबन गए सहित प्रियनारी ॥ मधु लहि निकट भूप आगमा तहिं । सादर मिलि बूझें कुशलातहिं ॥ सुनि बिरतांत कहे इमि मानद । तब उँछाव हिय धारउ आनद ॥ मधुबन शिवा राज्य मम जेतो । सोऊ सनेऊ देउ मैं तेतो ॥ मधुबनमें मम लवण कुमारा । बसि निति करिहि सहाय तुम्हारा ॥ दक्षिण समुद कूलसों धरणी । होइहि नृप तुव सुवस सुवरणी ॥ इमि कहि नृप राज्यवर दैकै । मधुदानव हिय आनद लैकै ॥ आइ लवण निधि तट शुचि ज्ञानी । तप साधन कीन्हे हित जानी ॥ पाइ राज्य हरजश्व सुखारी । पालन लगे प्रजा नयधारी ॥ पुर आनर्त सुनाम बसाए । दुर्गम दीरघ दुर्ग बनाए ॥ मधुजा जो मधुमती सुनामा । तासों भयो पुत्र यदुनामा ॥ सम्वत्सर दश सहस सुनामी । बिहरि भूमिपै नृप नयगामी ॥ तन तजि जाय स्वर्ग बसि भाए । इत यदु लहि अभिषेक सोहाए ॥ नीति निपुण यदु करि महि पालन । अति शोभितभे खलकुल घालन ॥ हित वर्धन अरिमर्दन वीरा । धरम धुरंधर धनु धर धीरा ॥ एक दिवसप्रिय तियन समेता । जाइ समुद तट क्रिपा निकेता ॥ *********

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

लागे जलक्रीडा करण भरण मोद सुनु तात । सहित नखत नखतपति सम शोभित शुचिगात ॥
सर्पराज तह जदुनृपहि गहि लैगे निज धाम । आइ नृपति अहिपुर लखे सुषमामें अभिराम ॥

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

चारु मणिमैं बारिजासन बनो हो अतिवेष । नृपकों बैठाइ तापै सर्पराज सुभेश कहे
इमि भूपालसों सब भांतिसों हित जानि। कन्यका है पांच म्हारी बरहु सुनि सुखबानी॥
पितृव्य अरु तव पिताजे युवनाश्व अरु हरिजश्व । तासु भगिनी कौं सुता ए लिखे गुण
सुरवश्य ॥ पाणिग्रहण सरोति इनसों प्रीतिसों करि भूप । आज लौं निज सदन सुबदन
महद्भु कदन सरूप ॥ सुवन ह्वे हैं पांच इनसों परम पावन पूर । सर्वगुण संपन्न भूमिप
समरजेता सूर ॥ जग बृहत ह्वे हैं बिशद यदुवंश इनसों ख्यात । देवे पसत्र नृपति इनसों

प्रगटभये हैं तात ॥ भीम अंधक कुकुर भोज दशाह वृष्णि उदार । पुरुषवर परसिद्ध भे हैं वंश तिनके द्वार ॥ वंशवर्धन पाई यह बरदान बरगुण आनि । तातको न विचार कीन्ह नृपति यदु सुखदानि ॥ *❁*❁*❁*❁*❁*❁*❁*❁*❁*❁*❁*❁

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

पाइके वरदान बरसोंति करि पांचो तियम समेत । कैवे उदधिके बाहिरे सबकों आनद देत ॥ नाग नरथकी कन्यकन नृपति मिलाप कराय । पुर प्रवेश कीन्हे समुद समुदकूल तजि आय ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

कछु दिनमें अहिपतिकी तनया । पांचो लही पांच सुत सनया ॥ पद्म वर्ण मुचकुन्द नरेशहि । माधव सारस हरित शुभेशहि ॥ ते सब मातसों बरधित ह्वैके । कहे पितासों मुदसों भ्वैके ॥ तात हमें जो आज्ञा देहू । सो भलिविधि हम सब करहिं सनेहू ॥ सो सुनि इमि बोले यदुराजा । प्रिय सुत मम मुचकुन्द समाजा ॥ विंध्यरिक्ष गिरिको मधि देशा । तँह पुर रचि बिलसैं शुभ भेशा ॥ सह्य शैलपें जयके काजै । पद्मवर्ण पुर रचि बसि राजै ॥ पश्चिम दिशि तहि गिरिपै नीकी । सारस रचे पुरी प्रियजीकी ॥ धूम्र वर्ण अहि पतिको दीपा । पालन करहिं हरित कुलदीपा ॥ जेठे सुत माधव शुभ साजू । मम पुर पालहिं ह्वै जुबराजू ॥ पितु निदेश अभिषेक समेता । लहि लहि ते बल बुद्धि निकेता ॥ जथा निदेश देश बसि राजे । राज राजसी सुषमा साजे ॥ यदुनृप राज्य माधवहि देके । गए स्वर्ग निज कृत फल लैके ॥ माधव नृपके सुत गुण गाए । भए सत्व बरसत्व सोहाए ॥ सुवन सत्वके भीम कहाए । भूपति भूमि भावतिहि भाए ॥ *❁*❁*❁*❁*❁*❁

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

भीमहि महि शीषतसमें दाशरथी श्रीराम । को निदेश सत्रुघ्न लहि हति लवणहि अभिराम ॥ मधुवन छेदन करि बिरचि मथुरापुरी सप्रेम । सुतहि राज्य दे रामपद सेवन करे सप्रेम ॥

॥ * ॥ मधुभारछन्द ॥ * ॥

जब राम चन्द्र उदार । कुश लवहिं दे महिभार ॥ वर स्वरगद्वारि प्रविशय । प्रभु भे स्वयंभु अशय ॥ तब भीम नृप निज आनि । बसि भए मथुरा आनि ॥ तँह लहे सुत नृप भीम । सो नाम अन्धक भीम ॥ **❁*❁*❁*❁*❁*❁*❁*❁*❁

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

अन्धकके सुत रेवत भया । ताके सुवन ऋक्ष अनुरूपा ॥ रैवत नाम ऋक्षको दूजा । विश्वगभ नामसुत कृत पूजा ॥ विश्वगभको तीनि कुमारी । रहीं प्रियपतिहि परम पियारी ॥ लहीं चारि सुत ते कमलाचा । वसु अरु बभ्रु सुषेण सभाचा ॥ ये यदुवंश वंशके करता । वसुमदादिके ह्व मुद

भरता ॥ बसुके सुत बसुदेव सुखारे। भाग्यवान जे जनक तुम्हारे॥ यह सुबंस उतपति तिमि भाखे। जिमि द्वैपायनसों मुनि राखे॥ होय बंस सदैव यदूषित। तुमहि पाइ भो अतिसै भूषित॥ सुनऊ कृष्ण यदुबंसज जेते। हैं तब सुबस युद्ध सब तेते॥ यह नृप जरासन्ध बलवाना। बीस अछोहिनीपति जग जाना॥ अरु हमी थोरे गिनतीके। लरे बहुत दिन सूर सुजीके॥ अब अति खिन्न भए सब लोगू। एक बार नहिं लरिबेजोगू॥ नहिं संधक वहि सहर पनाहू। अरु गढ़ यह बिरच्यो नहि काहू॥ तातें लरें न अब बरि आइव। ईंधन अन्न बिना दुख पाइव॥ हैं सिगरे पुर जन भय भारे। अवरोधनते भए दुखारे॥ ताते मम सुमंत्र यह सुनिकै। उचित होइ सो करिये गुणिकै॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

सुनि बिकद्रुके बचन इमि हरषि कहे बसुदेव। उचित मंत्र यह तुम कहे राजनीतिके भेव॥
सो सुनि बोले कृष्णप्रभु तुम भाखे सत मंत्र। याको कहैं उपाय सो सो न्है सुनऊ स्वतंत्र॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

है बिरोध या नृपसों हमसों। यासों कछु न बैर तुम सबसों॥ तातें कछुक यासों लरिकै। हम बलिराम मोद हिय धरिकै॥ कढि जैहैं दक्षिण दिशि दुरी। तब यह मनमें भरै भरिभूरी॥ इतकाहूके निकट न आइहि। जित हम जाब तहां चलि जाइहि॥ तुम सब रहेऊ सुचित सुखपाई। हम यासों उत लेब बनाई॥ इतनेमें नृप पुरढिग आये। अति गहवर दुन्दुभि बजवाये॥ सुनि पुरतें कढि दोऊ भाई। राम कृष्ण जगके सुखदाई॥ कछु दिन तासों लरि युद्ध अपारे। हरकीले दक्षिण दिशि डगरे॥ शैल अनेकनि सैरि सुखारे। गए सह्य गिरिपें मुद धारे॥ पद्मवर्ण नृप जहां सोहावन। पुर करवीर रचेहैं पावन॥ बेणु सरित तट तँह बट मत तर। बैठे हैं भृगुपति मुनि तप बर॥ तेज पुंज सुषमासों छाए। परशुकांधपें धरे सोहाए॥ राम कृष्ण भृगुरामहि लखि कै। आइ निकट हिय आनंद रखिकै॥ करि प्रणाम ढिग बैठि सुज्ञानी। बोले कृष्ण मनोहर बानी॥ प्रथम तासु गुण कीर्तन कीन्हे। फिरि निज कथा कहे मुद लीन्हे॥ उत्तर दिशि यमुनाके तीरा। मथुरा नामा पुरी गंभीरा॥ *∞*∞*∞*∞*∞*∞*∞*∞*∞*∞*∞*∞*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

यदुबंसज तंह बिदित है श्रीबसुदेव उदार। एसंकरषण कृष्ण हम तिनके युगल कुमार॥
कारण बश नृपकंससों हमसों बढो बिरोध। तातें हम बधकंसको करि कीन्हे निज बोध॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

जरासंधको सो जामाता। सो तातें सो सुनि रिसिराता॥ कपटी कंस नृपके जनक हि। दयो राज्य सो सुभद बचन कहि॥ जरासंध बर बल दल साजी। आइ खरो नऊबार सकाजी॥ सेन

साजि बऊरो चढि आयो। अति प्रमत्त मम तासों छायो॥ तेहिते पुरजन अति दुखपाए। तब हम पुर तजि इत चलि आए॥ अब भृगुपति तुम मंत्र बिचारि। कहौ करैं हम सो व्रतधारि॥ सो सुनि परशुराम हँसि बोले। परम प्रेमकी पदवी खोले॥ तुम जो हौ जो कीन्हे कारज। जिहि हित जो अब करिहौ आरज॥ सो हम भली भाँतिसों जाने। भूत भविष्य सबै अनुमाने॥ तुम सर्वद सरबज्ञ सयाने। बूझऊ हमसों मनऊँ अयाने॥ सो कहिवेकी आज्ञा जानी। हम अब कहैंउ वित अनुमानी॥ यह करबीर नाम पुर चारू। निरम्यो यदुकौ सुवन उदारू॥ ताके बंशज सों लरि जैसे। नृप शृगाल बिलसत निज कैसे॥ सो अति क्रूरसुभाव कुचाली। तातें तुम यह पुर तजि हाली॥ बेणुनाम जे नदी अगारे। तेहि तरि जाऊ पार मुदभारे॥ चारु यज्ञ गिरि हैं एक आगे। तापैं बसि एक निशि अनुरागे॥ ताढिग नदखयोग महाना। उठि प्रातहि तेहि तरेऊ सुजाना॥ *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

कनक कमलके उपलसों भूषित ताके कूल। तेहि लखि फिरि आगे चलेऊ मुदमंगलके मूल॥
यदुसुत सारसको रचो तहां क्रौंच पुर चारु। नृपति महाकपि है तहां ताके बंश उदारु॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

तहँ बसि नृपसों मिलि मुददाता। गिरि गोमंत लखेऊ चलि ताता॥ अति उन्नत नभचत एक सानू। है तेहि गिरिको मंजु महानू॥ तहँ बसि तेहि महिमासों भेखेऊ। जहँलों रविशशि तहलों देखेऊ॥ जरासंध नृप जबते आई। तब तासों तुम किहेऊ लराई॥ है यह कामद बऊ हमारी। करऊ तासु पंथपान सुखारी॥ पंथपा चलऊ शीघ्र मुदप्यारे। हमहूँ चलिहैं साथ तुम्हारे॥ पथ करि पान चले दोउ भाई। परशुराम मुनिसंग सहाई॥ चलि कछुदिनमें ते सुखदाई। गिरिगोमंत लखे ढिग आई॥ अति रमणीय मनोहर नीको। अतिउन्नत आनददा जीको॥ चढि तापै ते द्रुमि छबिसाजे। मनुषय त्रिदश त्रिदिवपैं राजे॥ बोले तहँ भृगुपति गुरज्ञानी। सुनऊ कृष्ण सादर मम बानी॥ इत बसिकै कछु दिवस बितावो। गिरि सोभा लखि आमद पावो॥ इत ऐहैं सब शस्त्र निहारे। उग्र अमोघ प्रभावनि भारे॥ जरासंध नृपसों जय लैहौ। यदुबंशिनको आनद देहौ॥ इमि कहि बऊ विधि आसिष दैकै। भृगुपति गए सबल मुद लैकै॥ राम कृष्ण प्रभु आनद पागे। सुन्दर बनगिरि बिहरण लागे॥ *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

हलधर बिनु एकदिन बनबिहरत बलिराव। पुंसुपिन आय कदंबतर तर बैठे अभिराम॥
तहां मधकोग। लहि पीवेको ललचाय। उठि कदंब कोटर लखो बंध ढोर नहि आय॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

तेहि कोटर में मदिरानीकी । भरी लखे सुखदाइनि जीकी ॥ बरषामें जल तेहि तरु मांही । परि थिरिरहे सुकोटर मांही ॥ सोई होइ मदिरा अभिरामा । उनमादक कादंबरि नामा ॥ सोले करे पान हलधारी । मदिरा मधुकी अलिवत भारी ॥ ललनमें ताके रसरंग राते । भे उनमत्त मत्तमदमाते ॥ मूर्तिमान इतनेमें आई । बरुण कुमारि बारुणी गाई ॥ सो तहँ आरि पाणि है ठाढी । करि बहु बिनै प्रीति मुहि बाढी ॥ श्रीबलिरामं बीरके तनमें । भई लीन आनद गहि मनमें ॥ तदनु आइ तहँ कांति सोहाई । मूर्तिमान सुषमासों छाई ॥ हलधरसों संभाषण करिकै । सोऊ भई लीन मुद भरिकै ॥ तदन्तर तँह श्रीसुखदाता । आई प्रभा पुञ्जमय गाता ॥ मणिमैमाल विचित्र सुहावन । हलधर कहँ पहिराय सचावन ॥ जोति जालको चारु निकेता । कुण्डल और किरीट सु सुहेता ॥ नील बसन अरु हार अनूपा । अमल अलौकिक अरु अनु रूपा ॥ सो सरूपके ए तव भूषण । कहि धारण करवाइ अदूषण ॥ संकरषणके तनमें लीना । भई तेज बर्धन परबीना ॥ * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

सोथल तजि बलिराम प्रभु हलधरपै आय । बैठि लगे बतलान तिमि जिमि गृहमें सुखदाय ॥
बैलख चारु किरीटलै तेहि लगतहँ खगराज । आइ हलधके शीसपै तकि तजि करे खकाज ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

प्रभुके मौलि यथोचित चारू । सोभित भयो मुकुट हियहारू ॥ सो बिरतांत जानि खलगंजन कहे बंधुसो मुनि मनरञ्जन ॥ छीरधिमें हम शयन सोहायो । करतहे तहँ बलि बलि आयो ॥ बनि सुरपतिसम मम ढिग आई । हरि किरीट लै गयो दुराई ॥ कछु दिनमें सो समुझि खगेशा । तासों जाइ लरे शुभ भेशा ॥ अब तासों जय लहि यह लीन्हे । सादर आइ हमें इत दीन्हे ॥ अबतजि सोच मोद हिय आनौ । यह शुभकर्म जयद अनुमानौ ॥ इतनेमें वा नृपकी सेना । देखि परी दारुणि दुखदेना ॥ तेहि लखि हल कहे कित लेखौ । जरासंधकी सेनादेखौ ॥ चतुरंगी यह सेना भारी । धूरि धार सह परयि निहारी ॥ जलद जलदभनु संग करि भावैं । अतिरव श्रम सोंउमडे आवैं ॥ जरासंधके भयसों पागे । सबनृपगण याके सँग लागे ॥ भये कालवश आए कोही । ठग संग मंचित जथा बटोही ॥ इतनेमें भूपतिमग धेशा । घेरेसि जाई मैल चकदेशा ॥ तेहि निशि तहँ निवास करिराजा । भोरहिँ बैठो सहित समाजा ॥ सबभूपनकोँ पास बोलाइ । दियोनिदेशरोषसों छाई ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

घनकूद दारिमसो कठिन शिला समूह बिदारि । समकरि गिरि सहसैन चढि लेहु तिन्हे बहिमारि ॥
जेदुर्गम दुरगम्य नृप मस्तकुसल रणधीर । हरपूरबलके लरैं ते आगे रहि बीर ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

सुनि बोले शिशुपाल बिचारी । नहि यह मंत्र उचित श्रुतिधारी ॥ फोरें ते नहि फूटइ पहारू । बिनु देखे कत मन महँ हारू ॥ एहि उपाय सो उन्हे न पैहै । ऐहैं अमित हारि फिरि अइहै ॥ ताते सूखे काठ मगाई । पर्वतके चहुँ ओर धराई ॥ आगि लगाइ देउ बनमाही । सहजहि जरि मरिहैं गिरि माहीं ॥ जौ अध जरे बाहेरे ऐहैं । तौ वै मल्लनसों बधि जैहें ॥ यह सलाह सुनि नृप सुख पाई । चहुँदिशि दए आगि लगवाई ॥ लागो बरन बिपिनि चहुँ घोरा । जरन लगो गिरि उन्नत घोरा ॥ अर्धकोश पयद लंघइ जाई । खरेभए भूपति सुखपाई ॥ रहे शैलपै जीव जहांते । व्याकुल सिगरे भए तहांते ॥ लखि हलधर हिय दाया भेखी । बोले कृष्णचन्द्रसों तेखी ॥ तात अरे यह गिरि गिरि चारी । होइहि अजश भूमिपैं भारी ॥ हों अब उतरिए गिरिसों तबही । हउँत जाइ भूपनकों जबहीं ॥ इमि कहि कूदि शैलते धीरा । गये भूपके दलमैं बीरा ॥ तदनु कृष्ण पगसों गिरि दाबो । कूदि सैनमैं गे मेधावो ॥ दाबेसों गिरिते जल धारा । चहुँ दिशि अविरल कढी अपारा ॥ * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

अगिनि शांति तातें भई भे सब जीव सचेत । निरखि अलौकिक कर्म यह डरपे नृपति अचेत ॥
इनमेने तहँ गगनतें आए आयुध बान । हल मूशल धनु अरु गदा चक्र महान अमान ॥

॥ * ॥ महीधरीछन्द ॥ * ॥

बलिराम कृष्ण सुधीर या तँह सिमिटि सब नृप भिरत भे । बहु बाहि आयुध बिबिधि बिधिके रोषरससों भिरत भे ॥ हल मुशल गदा प्रहारसों तहं सुभट कितने नशत भे । हिय हारि कितने अमित ह्वै मुरि मन मसूसन मसतभे ॥ बलिराम अरु मगधेश भिरि तहँ गदा युद्ध सु करतभे । बर बीर दोउ कालसों हठि घने घातनि लरत भे ॥ तजि गदा तब बलिराम कर मैं मंजु मूशल धरत भे । बध चाहि नृप मगधेशको अति क्रोधसों हिय भरत भे ॥ नहि नृपति तुमसों बध्य यह इमि नभ गिरा तब सुनत भे । सुनि रोक मुशल्ल प्रहार नृप तिहि गुर गदा सो धुनत भे ॥ सुनि दिव्य पुरुष उदार इन कँह मगधपति करमलत भे । अति बेगसों रथ हांकि बल तजि निज निलय प्रति चलत भे ॥ जिमि बातके संग पात तिमि ता संग सब नृप भगत भे । जिमि सिंहके भै भगत गैवर जूथ तिमि ते लगत भे ॥ बलिराम कृष्ण उदार तिनसों बूझि नहि कछु कहत भे । हाचेदिराज महीप जेश शिसु पाल ते तहँ रहत भे ॥ *********

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

नृप शिशुपाल बुद्धि बल पूर । जाइ कृष्णके ढिग अगरूर ॥ जोरि पाणि ह्वै खरे सभाय ।

लागे करन विनय गुणगाय ॥ को शय तुम करुणाके अैन । शील सिंधु वकता प्रिय बैन ॥ हम तव पितु भगिनीके बार। तातें तुम मम बंधु उदार ॥ जरासंधके भयसों नाथ । रहत रहे हम वाके साथ ॥ कहत रहे बहु भांति बुझाय । नहि वह मानत हो हठकाय ॥ भल तुम्हार मनबचक्रम काय । चाहत हैं हम देव मनाय ॥ सो अब मोपर जो कछु भूरि। हो हियधरे करहु सो दूरि ॥ *❦*❦*❦*❦*❦*❦*❦*❦

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

अब हम तुव अनु गमन निति करि हैं रहि आधीन। सद्य अद्य करतव्य जो सो सुनि करहु प्रवीन॥ पद्म वर्ण यदु सुवनको विरच्यो पुर करवीर । तिहि भुज बलसों निज करे हैं शृगाल नृपधीर ॥ पुरुषसिंह यदुवंश तुम मम दल सह चलि घेरि । मारि शृंग लहि सो नगर जीतिलेहु वरिफेरि ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

सुनि सबंधु प्रभु मोदि सन्द सेना शिशु पाल सह ।तेहि पुरके चहुँ कोद घेरि लए दिनतीनिचलि ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्वाज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशीवासि गोकुलनाथात्मजेन गोपीनाथकविना विरचिते भाषायां भारतान्तर्गते हरिवंशदर्पणे गोमंतगिरि दहनो जरासिंधुपराजयोनाम षोडशोध्यायः ॥ *❦*❦*❦*❦*❦*❦*❦*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

पुररूंधित लखिकै कढो नृपशृगाल सहसैन । धनु टंकार करत कहत गर्वी गर्वित बैन ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

शुचि हरितश्व सुरथपैं चढिकै।आयो हरिके सनमुख बढिकै।हरि हलधरहि प्रचारण लाग्यो। बरबाणनसों मारन लाग्यो ॥सल्य सदन सु शयलसम भारी।बरणो एक वीर धनुधारी॥ हो शृंगर जुधि जययश लीन्हे । गहि प्रभु चक्र तासु बध कीन्हे ॥ नृपति शृगालकेर बध देखि । भाग सैनिक भटभय भेखि॥पति बध सुनि भूपतिकी नारी । उर शिर ताडन करति दुखारी ॥पति ढिग आइ पीन दुख पागी।रुदन प्रलाप करन सब लागी॥पद्मावती नाम पठ रानी।धरि धीरज लै सुतहि सयानी॥ रुदन कराति प्रभुके ढिग जाई । लगी कहन करि बिनै बडाई ॥जा नृपको बध प्रभु तुम कीन्हे । यह ताकोबालक भय लीन्हे॥पाणि बांधि तुव पगढिग आई।ठाढो भयो.लखहु यदुराई॥जो करि कृपा देहु अनुशासन । सो यह करै सुनहु भय नाशन ॥सो सुनि कृपासिंधु यदुनंदन।दए ताहि धीरज जग बंदन ॥ ताके मंत्री सखा पुरोधा । तिन्हैं बोलाइ हास करि बोधा ॥ नृपसुतकों अभिषेकित करिकै। लै हरिताश्व सुरथ मुद धरिकै ॥ निज पुर चले कीर्त्ति लहि बरणी । शक्रदेव कीन्ही पितु करणी ॥ *❦*❦*❦*❦*❦*❦*❦*❦*❦*❦*❦*❦*❦*❦*❦*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

पांच रजनि मधनमें विहरि रामकृष्ण शुभ भेस । छठए दिन शिशुपाल सह मथुरा किय प्रवेश ॥
बन्दि चरण वसुदेवके जननीके सह प्रीति । गुरु लघु सबसों फिरि मिले यथाउचित सह रीति ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

तहँ फिरि राम कृष्ण अनुरागे । यदुवंशिन सह विहरन लागे ॥ एकसमै बलिराम सुखारे । कृष्णबिना गे ब्रज मुद धारे ॥ नन्दादिक गोपनपैं आई । सादर मिले प्रेम दरशाई ॥ सबसों मिले मिलनतें जैसें । सानद संभ्रम सुभावन तैसें ॥ कुशल बूझि कहि आनद पाए । हरि वियोगको दुख तिन नाए ॥ कहे गोप अति आनंद लीन्हे । तुम दोउ बंधु दया जो कीन्हे ॥ यथप्रभूत जे जगके कारज । सो हम सुनत रहे हैं आरज ॥ तुमहिं देखि अब अति सुख पाए । कहैं कहांलो है मन भाए ॥ सो सुनि कहे राम गुरु ज्ञानी । जनम भूमि यह मम सुखदानी ॥ तुव घर हम सुख पाए जैतो । लहिहिं न कोउ निजघरमें तेतो ॥ दधि पय माखन बहुविधि खाए । संग सखनके गाय चराए ॥ इमि गोपनसों बातें करिकै । लै संग सखन राम मुदभरिकै ॥ वर वृन्दावन देखन लागे । फूलनसों अंग भूषन लागे ॥ तहँ प्रिय सखा वारुणी ल्याए । सो करि पान सरस छवि छाए ॥ सखन संग मिलि [illegible] डगरे । अति उनमत्त भए गुण अगरे ॥ लखि कालिंदिहि न्हाइबो चाही । कहे कालिंदिहि सो हल वाही ॥ मम अस्नान हेत इमि आवो । सुनि मो वचन विलम्बन लावो ॥ जब देखे यमुना नहि आई । तब हलाग्र ता तटमें आई ॥ निज ढिग करषि विमद जल धारा । कीन्हे मज्जन बीर अपारा ॥ तब ह्वै मूर्तिमन्त सुखदाई । यमुना कहन लगी ढिग आई ॥ **~**

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

हलधर तुम हठ गहि करे मम धारा अवरोध । कोहि मगन्है हम आहि अब सो कहि कीजै बोध ॥
सो सुनिकै हलधर कहे लहि अति आनद साज । जल प्रवाहसों तोरि महि याही मगसों आज ॥
यमुनाको भेदन निरखि मोदित गोपसुजान । हलधर तिनसों ह्वै विदा मथुरा गए प्रमान ॥
हलधरको आवत निरखि उठि मिलि हरि सुखदान । कुशल प्रश्न व्रजजननको बूझि सुने मतिमान ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

एक समै प्रभु मोदित मनमें । हे बैठे शुचि सभा सदनमें ॥ तहँ बलाक चारण चलि आयो । करि प्रणाम कर जोरि सोहायो ॥ ईक्षित अति प्रिय खबरि सुभावन । लग्यो कहन सो सुबुधि सुधावन ॥ नाथ रुकुम नृप कुण्डिनपुरको । सुवन भूप भीष्मक वर पुरको ॥ भगिनी ताको रुकुमिनि नामा । परमा पूर सर्व गुण धामा ॥ तासु स्वयंवर रचि शुभ साजा । किय एकत्र देशके

राजा ॥ तिसरे दिवस आजुके नामी । होई तासु स्वयंबर स्वामी ॥ यह सुनिकै हों सादर आयो। प्रभु पाहँ सब बिरतान्त सुनायो ॥ सुनि प्रभु उग्रसेन बलिरामहिंपुर रचन हित तजि बलधामहिं॥ साजि सैन चतुरंगिनि भारी । कुण्डिनपुरप्रति चले सुखारी ॥ तिमरे यदुवंशी चतु धारी । कछु संग तहँ गए सुखारी॥ संध्या समै सैन सह आई।पहुँचे कुण्डिन पुर सुखदाई॥निज प्रभाव तह प्रगट न कारज।गरुडहि सुमिरें केशव आरज॥सुमिर तहाँ नागान्तक आए।पवन मारुतसों दिशि छाए॥ गिरे बास सह पटापटिनके। जुरे रहे जे भूपति तिनके ॥ लखि गरुडहि प्रभु आनदलीन्हे । प्रेम पूरि अनुशासन दीन्हे ॥ मम ढिग रहि सब आनंद धरहू । खलछितिपनकहँ भयसो भरहू ॥ * ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

इमि कहि सेनासहित ते कैशिक नृपके गेह । ते प्रभुको आगमन सुनि चलि ले गए सनेह ॥
जनि बिचित्र मन्दिर बिशद जाको बर बिसतार । तामें प्रभुहि नेवास दै किए उचित सत्कार ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

प्रभु आगमन गरुड सह सुनिकै । नृप समूह सब मनमें गुणिकै ॥ भीष्मक नृपके सुभा सदनमें । जुरे आइ सब चिन्तत मनमें ॥ लागे करण मंत्र शुभ भेशा । कियो तहँ भूपति मगधेशा ॥ इनका प्रभाव लेऊ सुनि मे।सो ॥कहेउ करेऊ फिरि भारहि तोसों ॥ इमि कहि मगध भूप बरनारा। कहि सबकीर्त्य कीर्ति बेवहारा ॥ वृन्दावनमें जो जो कीन्हे । जनसों सो सब कहि सुर लीन्हे ॥ मथुरामें जिमि मैगल मारे । मल्लमत्त नपको संघारे ॥ सत्रहवार आपु अरि हारे। क्रमसों सोरव कहेसि सुखारे ॥ फिरि गोमन्तशैल पर जारो । कहत भयो सब सभा बिचारी ॥ गरुडबिना ए कीन्हे ऐसे । गरुड सहित धौ करिहैं कैसे ॥ *~*~*~*~*~*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

ए अग्रज भगवान हैं लीला बिग्रह धार । अवकरि इनसों प्रीति दिढ तजहु सुद्र बेवहार ॥
जरासिंधुको बचन सुनि नृपति सुनीथ सुजान । कहे कह्यो मगधेशको हैंअनन्त भगवान ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

यदु नाथ अरविन्द॥फिरि दंतवक्र महीप॥इमि कहत भोकुलदीप॥ ए कृष्ण आनन्द ऐन । हैं सकल शीश सचैन ॥ बन बालपन दै धारि । लहि आपु ए जनमारि ॥ बहि किए कलहहारि । यहि छेऊ बूझि बिचारि ॥ जो भिरो गाहक चाप । इन दिए ताहि सजाप ॥ ए बरभ्रात बलराय । धरधो कौशिके जाय ॥ बलि रहे हैं बहसैन । हैं सकल सायक ऐन ॥ इनका करै घो सखुन्यानि । अब करउ निज हित आनि ॥ *~*~*~*~*~*~*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

नृप समाज सब तब यें भलि के सहित सनेह । पूजि जथोचित बचन कहि परम प्रेम करि देह ॥
नृपकन्या आकर बरिहिं सो तोहि लखी सवन । नाहकहीं बिग्रह किए सुनो भला कछु हैन ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

इमि बकाकी सुनि शुभ बानी। बोल्यो साल्व नृपति अभिमानी ॥ तुम सब बचन कहे जे सांचे । ते श्रुति परि नहि मम मनराचे ॥ सबी धनुधर धीर कहाई । एहि बिधि तिनसो बैर बढ़ाई ॥ तजि तजि ग्रम दीन ह्वे जांई । ग्रारत भाषे कहा बड़ाई ॥ बिना काल कोउ सकै न मारे । प्राप्तकाल कोउ सकै न टारी ॥ काल अप्राप्त असुर बलभारे । तिन्हें न हठि प्रभु कृष्णहुं मारे ॥ बिना कालबस बलिहि निहारे । छलि पताल पठए नहि मारे ॥ तातें धीर रहौ सब कोई । जो होनी होइहि सोइ होई ॥ बचन हमार धीर यह सुनहू । सो यह सांच हिए मे गुनहू ॥ ए महिभार हरन मुदभारे । छितिप सँहारन हित मन धारे ॥ बैर करहु के प्रीति बढ़ावो । रहो दूरि के निकट रहि आवो ॥ सबै पाय इनसों सब कोऊ । लहिहो नाश सेउ सुनि सोऊ ॥ तातें आनि नमहु अति भाई । बैर प्रीति निबहेहिं भलाई ॥ नृपति साल्वकी सुनि यह बानी । चुप ह्वे रहे भूप सब मानी ॥ आगत संध्या सबै निहारी । निज निज डेरन गे धनुधारी ॥ संध्याकृत्य करि सोइरिन तनमें । जुरे आइ फिरि सभासदनमें ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

उत बिदर्भपुरमें सुखद देव दूत एक आय । पाती कौशिकभूपकौं दीन्ही अति सुखदाय ॥
पातीं पढ़ई इंद्रकी जब कौशिक नृप देखि । आइ कृष्णसों जोरि कर लगे कहन मुद भेखि ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

नाथ नाथ तुम तिहुं पुरके हो । तुव इच्छा माया तुमते हो ॥ सो प्रभु तुम मुद मम दृग द्वारे । भए कृपा करि अतिथ हमारे ॥ तातें तुव इत आर सुभावन । करि इम भयो बहत हैं पावन ॥ यह मम राज्य समाज समाजा । सो करि ग्रहण होउ महिराजा ॥ जे नृप तुम्हहिं बराजा कहिहैं । अनुचित बचन कहें रिसि बहिहैं ॥ तुव प्रभाव मम आसन मानी । इम मोहि ते हव अभिमानी ॥ सुनि अभिषेक तुम्हहिं सब करिहैं । आपुहि भव्य आनि मुद भरिहैं ॥ इमि कहि दोउ बंधु वर आय । पाती कुंडिन नगर पठाए ॥ जो ही पाती लिखे सुभेसा । भूपति सुनहु कहि सन्देसा ॥ सुरपति हमीं निदेश पठाए । सो सब सुनो लिखे मनभाए ॥ कहकौशिक इम आसन मांगो । कृष्णहि करउ अधिकारो ॥ रत्नमयो सिंहासन चारू । जो नृप थे जे परम उदारू ॥ तापर कृष्णहि करि आसीना । सर्पहु आपन राज्य अधीना ॥ कुंडिन पुरमें भूपति

ज्ञेते। जुले [illegible] लेज नंह नेने ॥ जिन्हे सहित प्रमुख [illegible] ।कछ [illegible] विधि सहित विवेका ॥
गुण [illegible] सुनि जे नहि चेहैं। ते सब बाम कृष्णसों नहैं ॥ ****

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

गुरनिदेश सुरराजको [illegible] यह देत पठाय । सो सुनि [illegible] शीघ्र इत तजि विरोध [illegible] ॥
पाती कौशिक [illegible] कुण्डिनपुरमें जाय । नृपसभाजमें देतभो धावन [illegible] ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

[illegible] नृपति [illegible] । लागे [illegible] अनुमाना ॥ इतनेमें तहँ सुरप पठायो ।
सुधि [illegible] दूत सोहायो ॥ अन्तरिक्ष रहि सो गुरज्ञानी । [illegible] कहन रहि विधिकी बानी ॥
तुम [illegible] निदेसा । दीन्हे सो सुनि [illegible] नरेसा ॥ तजि विरोध [illegible] ।
[illegible] अभिषेक उछाहू ॥ उनसों बैर किए [illegible] । [illegible] विष्णु [illegible] ॥
जरासन्ध [illegible] । नृपति सुनीय [illegible] ॥ इत [illegible] ॥
[illegible] नृपति जे रहि पुरमाहीं । ते [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] स्वयंवर हेरे ॥ इमि कहि [illegible] मुदित
मन [illegible] ॥ [illegible] सुनि यह बानी । भोजक [illegible] नृप [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] । ले बिमान तै सब सुर भरिके ॥ [illegible] पताके [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ सुभट दुंदुभि सुर बजवावैं । नर दुंदुभी रव [illegible] छावैं ॥ [illegible]
साने । [illegible] जाने ॥ ************

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

विमद सिंहासन [illegible] सुचि तापैं आसीन । [illegible] कौशिक [illegible] सभा [illegible] ॥
[illegible] दिव्य [illegible] । सो भूषित [illegible] ॥

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

गंधर्व [illegible] विद्याधर सु [illegible] । [illegible] आननि करैं [illegible]
[illegible] ॥ मुदित [illegible] बिमान [illegible]
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible] नृपति [illegible]
[illegible]
[illegible]
रहे [illegible] दिसि पुरि ॥ नगर [illegible] तेहि [illegible] भो एक नगर समान । इन्द्र परम उपेंद्र

सुरनर रहे निरखि सुख दान ॥ सवहि अभिषेकित प्रभुहि दे अर्घ्य नृप समुदाय । शौरि मंगल कर बैठत उचित आसन पाय॥ *◆*◆*◆*◆*◆*◆*◆*◆*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

नृपकौशिक तहँ ह्वै खरे प्रभु सनमुख कर जोरि।सुविधि अरज करि नृपनकी माफ कराए खोरि॥
नृप भीष्मक फिरि जोरि कर प्रभुसों बोले बैन । प्रभु प्रभाव लखि चित्तमैं चिंतित भए अचैन॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

प्रभु मम आत्मज रुकुम सुनामी। सो ह्वै बाल भाव अनुगामी ॥ चाहे कियो स्वयंवर सोई। निज भगिनीको निज बस होई॥ सो प्रकार हम नहि अनुमानै। कह्यो हमार न सो कछु मानै ॥ तातें करैं क्षमकी नाई। क्षम तासु अपराध गोसांई ॥ सो सुनि हंसि हंसि केशव बोले। कपट भूपके मनकी खोले॥ तुव सुत बाल भावमैं ऐसो। करै प्रौढह्वै करिकै कैसो॥तुम जो कहो स्वयंवर काधो । और भूपकी कन्या दीधो ॥ हम नहि चहैं सुता बरिआई। करैं कहो सो शिशुकी नाई॥ इतने पति निहारें आए। चलि आगे तुम तिनकहँ ल्याए॥ तिन्हे देखि तुम अति सैतोषे । करि सतकार भांति बहु पोषे ॥ मम आगमन तुन्है नहि रोच्यो। सो प्रकार हम आपुहि शोच्यो॥ मम सतकार न तुम कछु कीन्हे। ताते हम इत आसन लीन्हे ॥ बस बिश्राम हेत अबलों इत। रहे न तहं आते निज पुरनित॥ कन्या जेहि चाहहु तिहि देहू। भय हमार मति हियमैं लेहू॥ कन्या बरत बिघ्न जो करई।रौरव नरक अवसि सो परई ॥ कृष्णचंदकी सुनि यह बानी। बोले नृप भीष्मक भयखानी॥ हे हम चर्म दृष्टि प्रभु तबलो । तुव दरशन नहि पाए अबलों॥ अब ह्वै दिव्य दृष्टि हम ताता । भए असत सत बिधिके ज्ञाता ॥ *◆*◆*◆*◆*◆*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

शरणागत ह्वै आपुनकी नाथ हमै भय नाहि।अब चिन्तित निज चित्तकी कहौं साच प्रभु पाहि॥
बिरचि स्वयंवर अब न हम कन्या देब बिचारि । करहु कृपा प्रभु छीयते रोस दीजिये टारि ॥

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

भीष्मक भूपतिके ए बैन।सुनि बोले प्रभु करुणा ऐन॥सुता तुम्हारि लेउ करि गौर। देउ न देउ कहे की और ॥ पै हम कथा कहैं यह एक। सो तुम सति जानहु सविवेक ॥ लिए विष्णु नरदेह अवतार। कहे रमासों तब करतार ॥ तुम कुण्डिन पुरमैं चलि जाउ। होउ भीष्म करि तनया आउ॥सो रुकुमिनि तब सुता सुनाम। याहि न आनेहु चौकिन काम॥ है नहि एह नरपतिके जोग।इतो रुक्मिणी जोग अजोग।।तुम अब रचो स्वयंवर तासु

तब सुरपतिसों आज्ञा आसु॥लहि दूत आये बसो सुपर्ण ।विधु कारणके हेत सुवर्ण॥इमकहं आए सहज सुभाव । उत सब देखनको नहि चाव॥क्षमा करण तुम कहे सुनीक।सो यह लगे हमैं अति नीक ॥ बुधिवर कहैं क्षमा गुण जोय । क्षमा किए सिधि कारज होय ॥ तुमसों प्रथम निरादर पाय । हम दूत बसे क्षमा करि आय ॥क्रथकैशिक मम करि सनमान । दए मोहि निजराज्य महान ॥ तेहि प्रभाव इनके दश पूर्व । पाए उत्तम लोक अपूर्व ॥ इनहि आदि द ग्यारह और । लहिहैं उत्तमलोक सुठौर ॥ ****

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

जे नृप मम अभिषेक यह आए लखन सचाय । तेऊ सुमन सुलोक शुचि लहिहैं समया पाय ॥
इमि कहि प्रभु सब नृपनकहँ दीन्हे संहित विधान।वसन रतन हाटक अमल करि सबको सनमान॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

एहि विधि सबको मोदित करिकै । सदल चले निजपुर मुद भरिकै ॥ इत ठिग आश्रम भीष्मक भूपहि । दरशाये प्रभु निज वर रूपहि ॥ सो लखि भीष्मक आनद लहिकै । अस्तुति कीन्हे गुरगुण कहिकै ॥ प्रभुकी अस्तुति करि मुद लीन्हे । अस्तुति विहगराजकी कीन्हे ॥ व्है प्रसन्न सुनि अस्तुति स्वामी । चले सुरथ चढ़ि अन्तरजामी ॥ नृपसब परम प्रेमसों पागे । गए कोश भरि प्रभु संग लागे । तब प्रभु तिनसों कहि प्रिय बानी । बिदा किए सबकहँ सनमानी ॥ फिरि फिरि क्रथकैशिकसों मिलिकै । बिदा किए अति मुदसौं रलिकै ॥ इत बिदर्भपुरमैं सुर आई । गे सिंहासन लै सुखदाई ॥ व्है प्रभुसौं नृप बिदा सुखारी । गे कुण्डिनपुर विस्मित भारी ॥ सभा सदनमैं सभा सोहाई । रचि बैठे तहँ सबकोउ आई ॥ जरासंध आदिक सब राजा । बैठे तहँा नवके काजा ॥ समाचार हो उतको जेतो।भीष्मक सबहि सुनाए तेतो॥समाचार कहि भीष्मक भूपा । कहे सपथिकरि बदन बिरूपा ॥ जनित स्वयंवर दोष विशाला । भएऊ मोर सिगरे महि पाला ॥ समाचार सब जानऊ भाई ।अब न स्वयंवर किए भलाई ॥ किए स्वयंवर बिघन महाना । होइहि जानऊ करि अनुमाना ॥ *************

* ॥ दोहा ॥ * ॥

इमि कहि कै सब नृपनकों कीन्हे बिदा नरेश।गए नृपति निज निज पुरन किए मलिन मन वेश॥
जरासंध नृप शाल्व नृप अरु सुनीथ छितिपाल। दन्तवक्र नरनाह अरु महाक्रूर नरपाल ॥
क्रथकैशिक बीभत्स अरु वेणुदार नरनाह।काश्मीरको भूप अरु अधिरथ सुहित पनाह॥
इतने भूपति तहँ रहे मन्त्र कारणके हेत । जनमेजय छितिपालमणि सुनिए बुद्धि निकेत॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशीवासि गोकुलनाथात्मजेन गोपीनाथनकविना विरचिते भाषायां भारतान्तर्गते हरिवंशदर्पणे रुकुमिनी स्वयंवर कृष्णाभिषेकोनाम सप्तदशोऽध्यायः॥ *⁓⁓⁓⁓⁓⁓⁓⁓⁓⁓⁓⁓⁓*

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

चिन्तत भूपति भीष्मक ज्ञानी। बोले जरासंधसों बानी॥ नीति निपुण हो तुम सब राजा। तुव संमत लहि हम यह काजा॥ कीन्हे सो गुणि धीरज गहहू। अब जो उचित होइ सो कहहू॥ इमि कहि भीष्मक रुकुमहिं चाहे। तेहि निदरण हित प्रभुहि सराहे॥ धनि बसुदेव देवकी दोऊ। इन्हे समान न महिपैं कोऊ॥ जाके सुवन कृष्ण धनुधारी। विदित बीर सद असद विचारी॥ रिपुदल दलन धीर नयगामी। गुणी ज्ञाननिधि अन्तरजामी॥ ऐसाई सुत देइ बिधाता। बिना सुवन कइ राखइ ताता॥ इमि बाणी भीष्मककी सुनिकै। बोले शाल्व नराधिप गुणिकै॥ भीष्मक जो तुम एहि विधि कहिकै। रुकुमहि निदरे रिसि हिय गहिकै॥ राम कृष्ण कहँ जीतन लायक। को तीजो महिपैं चित चायक॥ राम कृष्ण बिनु ताजो को है। रुकुमहि जीतन लायक जो है॥ रुकुम एक धनुधर विख्याता। नीति निपुण विधिवत महिख्याता॥ परशुरामसों धनु बिधि सीखो। रिपुदल मर्दन बलमैं तीखो॥ कृष्णहि देव सनातन जानो। निज पुत्र हि मति निदरि बखानो॥ तातें हमजो कहैं बिचारी। सो उत जोग करऊ दृढधारी॥ *⁓⁓⁓⁓*⁓⁓⁓⁓*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

कालजवननृपको पिता गार्ग्यगोत्र मुनिराज। माग्यो शिवहि अराधि वर लखि कछु कारणकाज॥
दीजै सुवन सुबीर मोहि धनुधर धीर धुरीन। मथुराहुवबीरनसों जो अजेय परबीन॥
तातें माथुरभटनसों कालजवन सुत नीति। है अबध्य जयजस लहिहि उनसों रणमें जीति॥
तातें दूत पठाइकै करो सहाई ताहि। हमकहँ तो यह बचनहै कहौउचै जो जाहि॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

वाही शाल्व तो सुनि सबराजा। कहे श्रेयसि करिए यह काजा॥ सब नृपतिनके सुनि यह बानी। बोलो जरासंध अभिमानी॥ अबलों मम आश्रित तुम रहिकै। कहौ राज्य मोसों किरि लहिकै॥ भए चहत अपराश्रित तैसें। कुलटा तिय परपतिरत जैसें॥ सो अब कछु संशय मति धरहू। जाते भल आनऊ सो करहू॥ मम बिर तात सुनऊ सब लोगू। पर आश्रय नहि हमकहँ जोगू॥ हमैं हांकि लरि मरे भलाई। पर आश्रय गहिबो कदराई॥ तुम सब कँह हम मना न कीजै। बरु एहि जोग दूत कहि दीजै॥ शाल्व भूमिपति है बरज्ञानी। इम कहँ दूत करऊ हित जानी॥ हैं ए विहित अविहित विचारी। है इनको रथ नभपथ चारी॥ अन्तरिक्ष चलि ए उत जैहैं। सहिते

केशव भेदमपैहैं ॥ नृप गणसों इमि कहि मगधेशा । शाल्वनृपतिकौ दिए निदेशा ॥ नृप तुम काल जवन पहँ जाई । किए मंत्र सो साधऊ भाई ॥ जाते कालजवन चलधाई । आइ कृष्णसों करै लराई ॥ जीति तिन्हैं दुन्दुभी बजावै । नृपसमूह आनदसों छावै ॥ एहि विधि मम निदेश अनुसारा । कहेऊ बढाइ विशद व्यौहारा ॥ *⬬*⬬*⬬*⬬*⬬*⬬*⬬*⬬⬬⬬⬬

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

इमि निदेश दै मगधपति सदल गए निजदेश । और नृपति तेऊ गए निज पुर सबल सुभेश ॥
शाल्व नृपति नभपथ गे रथपै ए मुदित महान । कालजवन नरनांहपैं सादर गए सुजान ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

कालजवन नृपशाल्व हि देखी । सानद उठि सादर शुभभेखी ॥ चलि कछु मंत्रिन सहित उमाहे । उचित अर्घ लै अरपन चाहे ॥ तब रथतें नृपशाल्व उतरि कै । बोले हिय आनद सों भरिकै ॥ हम नहि अर्घ जोग एहि काला । हमहि अर्घ मति देऊ नृपाला ॥ जरासंध आदिक नृप गाए । तासु दूत व्है हम इत आए ॥ याते टेरि कहैं तुमपाहीं । नृपहि दूत अरघारह नाहीं ॥ सो सुनि कालजवन नृपज्ञानी । बोलो बिहँसि विहित बरबानी ॥ नृप यह भेद प्रथम हम जानी । तातें तुम्हे पूज्य अति मानी ॥ सबके संमतसों तुम आए । अतिसै सुखद सरूप लखाए ॥ तुम्हहि पूजि मनु सब कँह पूजे । कहे शोच नहि मिथ्याकूजे ॥ इमि कहि दोऊ नृपति सयाने । मिले परम आनदसों साने ॥ कुशल बूझि कहि नृप सुखदाई । बैठे सिंहासनपर आई ॥ बोले कालजवन सुखपाई । जेहि हित चले कहहु सो भाई ॥ जासु कृपा लहि हँम सबराजा । सदा अधीन रहे सहसाजा ॥ सोमगधेश तुम्है केहि कारण । भेजे कहहु जुकरहु अवारण ॥ यह सुनि शाल्व भूप सुख पाये । जरासन्धका बचन सुनाये ॥ ⬬*⬬*⬬*⬬*⬬*⬬*⬬*⬬*⬬*⬬*⬬*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

जरासंध नरनांहपति जो कहि शुभद सुदेश । पठए मोहि सो सुनऊ नृप काल जवन शुचिभेश ॥
इमि कहि शाल्व महीपमणि क्रमसों कहे सहर्ष । भयो कृष्णसों शैलहित जिमि संगर उतकर्ष ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

तहँ द्वादश अक्षोहिणि सेना । हने सबंधु कृष्ण अनऐना ॥ अरु जिमि भई विशद मंभवानी । सो सब कहे शाल्व नृपज्ञानी ॥ कहि नृप कहे सुनऊ जवनेशा । यह कहि कहे भूप मगधेशा ॥ गार्ग्य गोत्र मुनि पिता तुम्हारे । ते सुत हेत उग्रव्रत धारे ॥ अति दुरन्त तप विधि साधे । शंभुहि द्वादश बरिष अराधे ॥ बर बूझि यह शिवकी बानी । सुनि मांगे तेंह बर बरजानी ॥ सुत उदग्रबर्चस बरबीरा । देहि धनुर्धर सुगुण गभीरा ॥ जो माथुरभटगणकहँ जीते । शिशि सहै सो जो शिव

चौते एकनतुकाहि तब शिव दीन्हे । तुम्ह पति उग्र सर्वगुण लीन्हे ॥ ताते रामकृष्णके जेता । हो तुमउ एक नृपनके नेता॥तासों हम यह मत्र विचारी । तुमसों कहें सुनउ धनुधारी॥ सैनसाजि चतुरंगिनि भारी । मथुरापैं चढि आउ सुखारी ॥ कृष्णहि जीति नृपन सुखदेहू । उद्भुत सुजस लोकपैं लेहू ॥ यह मगधपको मंहत निदेशा ।शाल्वनृपति इमि कहे संदेशा॥ सो सुनि कालजवन मुद लहिकै । बोले रणको उतसव गहिकै ॥ *✿*✿*✿*✿*✿*✿*✿*✿**

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

सुनउ भूपमणि धन्य हम भए धरापर आजु । तप कीन्हे जेहि हित पिता भयो सिध्य सो काजु ॥
राम कृष्ण जनजैनके जीतन जोग विचारि । दीन्हे भूप निदेश मोहि संशय हियसों टारि ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

तब नृपगणके वचन प्रभावन।जीति लहब जय अस मनभावन॥ नृप हित हारि लहब जो भाई । कोटि जीति सम्मत मनआई ॥ इमि कहि कालजवन मुदलीन्हे । विप्रन बोलि दान बहुदीन्हे ॥ पठीं सुभट सभासद धावे । दान मान करि तिनकँह तावे॥ सो दृश्शण शुभदिन समुजि सुजाना । मथुरा कँह कीन्हे पयाना ॥ तब ल्हे बिदा शाल्व नरनाहू । रथ चढिगे निजपुर वरवाहू ॥ इत मृगपाणि जोरि जगधारी । बोले प्रभुसों वचन विचारी ॥ प्रभु तुव वासजोग मन भावन । है रैवत गिरि परम सोहावन ॥ रजनीचर विहरै तेहि कानन । अरुजे दुष्ट जीव पंचानन ॥ जों प्रभु सों अनु शासन पावों।तावन निष्कण्टक करि आवों॥सो सुनि प्रभु अनुशासन दीन्हे ।गए गरुड तहँ आनंद लीन्हे ॥ प्रभु पंचवर्षसम तहँ सुरहाए । चलि मथुरापुरके ढिग आए ॥ वैसंपायनसों इमि सुनिकै । बोले जनमेजय नृप गुणिकै ॥ जिमि विदर्भ पुरमें मनभाए । भो प्रभुको अभिषेक सोहाए॥ उग्रसेन नृपसों सुधि पाई।किए कहा सोकहउ बुझाई॥जनमेजयकी सुनि यहबानी।बोले वैसंपायन ज्ञानी॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

जबसों प्रभु अभिषेकको सुनि विरतान्त सभाय । उग्रसेन मथुराधिपति अतिसै आनंद पाय ॥
दिए दान द्विजवरनको पूजे देवी देव । अतिसै उतसव किए सब निज विभूतिके भेव ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

बहु विधि उतसव करि मनभाए । उग्रसेन नृप आनंद छाए ॥ सुख निधि लूटत सहित सनेहा । गे वसुदेव देवकी गेहा ॥ उनको सब विरतांत सुनाए । ते सुनि अतिसै आनंद पाए ॥ समाचार कहि बोलित राजा । राम सहित रथ चढे सुसाजा ॥ ताही छन प्रभु पुरहिग आए । पाञ्चजन्य सुचि शंख बजाए॥सुनि सुनि उग्रसेन छत्रधारी । चले शीघ्र प्रभु मिलन विचारी॥पुरजन युवा वृद्ध अरु बाला।नरनारी सब चले उताला ॥ है जैसे तैसे उठि धाए । सिगरे पुरजन आनंद

...जैसें॥ जिमि शैलस्थ रवि हि लखि
...की॥उतरे महिपैंनिजरथ रोंकी ॥
रतनमयो रथ प्रभा अहीना। तापै प्रभु हि पेखि आसीना॥दिव्य बसन भूषणसों भूषे।कोटि मैनको महिमा दूषे ॥ चामर ब्यजन सुछ्त्र उदारू। अति उन्नत गरुडध्वज चारू ॥ राज चिन्ह संपूरण देखी। नृप निज हिय आनदसों भेखी ॥ बोले श्रीहलधरसों बैना। मोद वारिसों पूरे नैना॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

अब रथ चढि मोहि कृष्णके सनमुख जाब कुजोग। हैं उदार ए विष्णु प्रभु गहे कछू उतजोग ॥
रहि मथुरापैं गुप्त ए पुरविदर्भमें जाय। प्रगटित कीन्हे आपुकों लहि अभिषेक सचाय॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

तातें पायन चलिबो चाहैं। विधि वत अस्तुति करण उमाहैं ॥ उग्रसेनकी सुनि यह बानी। बोले राम परमप्रिय मानी॥ भूपहिं अस्तुति करब न जोगू। देवहिं चलत कहत बुध लोगू ॥ तुमसों प्रभु प्रसन्न वे रहीं। मिलहु मिलतहिं जिमि ते रहीं ॥ इमि बतरात भूप अरु हलधर। चलि पहुंचे प्रभुके ढिग बुधिवर ॥ अर्घपात्र ले भूप उछाहे। कृष्णचन्द्र तहँ अरपन चाहे॥ तिमि रथ रोकि कृष्ण नयगामी। कहे भूपसों त्रिभुवन स्वामी॥ मथुरा अधिपति करि अभिषेका। कीन्ह तुम्हे हम सहित विवेका। तुम मति अर्घपाद्य मोहि देहू। सीख हमार मानि यह लेहू ॥ तुव अभिप्राय बूझि हम एहा। कहे करहु सो तजि संदेहा॥ सहित समाज यदुकुल पालहु। निज पुर पहुंचि पूर्व तो पालहु॥ जितने नृप महिपैं अहलादे। मान्य हमहि तुम सबसों ज्यादे॥ इमि कहि कृष्णचन्द्र प्रभु मानद। दीन्हे उग्रसेन कहँ सानद ॥ दिव्य आभरण बस्त्र जथोचित। जिमि दीन्हे हे नृपन सुरोचित॥आदि विकद्रु भूपके संगमें। हे जेतें यदुवंशी मगमें॥ दश दश सहस द्रव्य मुद दीन्हे। भूषण बसन तिन्हे प्रभु दीन्हे॥ *⊂⊃*⊂⊃*⊂⊃*⊂⊃*⊂⊃*⊂⊃*⊂⊃*⊂⊃*⊂⊃*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

परिजन पुरजन सुभटगण बन्दीजन हि समोद।सहस सहस बसु दे सविधि कीन्हे विशद विनोद॥
गणिका अरु गायननिकों शत शत द्रव्य अमंद। दीन्हे प्रभु यदुवंश शशि पूरित प्रेम अनंद॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

विधिवत करि सबको सतकार। कृष्णचंद्र प्रभु भूभरतार॥उग्रसेनसों बोले बेन पूरे मोद वारिसो नैन॥ तजि संदेह भूप विरताज। चढो स्वरथपें सनृप समाज॥इमि कहि रथप नृपहि चढाय। पुरप्रवेश कीन्हे यदुराय॥ भेरी दुंदुभि मदल विशाल। तूर शंखको स्वन

सुरमाल ॥ बन्दीजनकी स्तुति धुनि वेश । जय उच्चरत सु सुभट सुभेश ॥ गज बृंहित हय हींसन भूरि । रथ धुनि रही दिशनमें पूरि ॥ श्रीश्रीकृष्णचन्द्र घनश्याम । बसु बरसावत आनद धाम ॥ उग्रसेन नृप अरु बलिराम । अरु यदुवंशिन सह अभिराम ॥ बरस सुखद प्रभु सहित सनेह । सोभित गे निज पितुके गेह ॥ ह्वै मोहित बसुदेव सुजान । पतिनिन सह लहि मोद महान ॥ प्रभु हि निरेखि रहे तेहि ठोर । करि न सके कछु कारज ओर ॥ दै तँह प्रभुहि अर्घ मुद धारि । चातुरि उग्रसेनकी नारि ॥ कंस किएहो अरजन जौन । अरपण कीन्ही धन सब तौन ॥ तब प्रभु परम कृपाके ऐन । बोले उग्रसेनसों बैन ॥ पुर धन राज्य बाजि गज राज । इनसों नहि कछु हमसों काज ॥ *◇*◇*◇**

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

इन सबको नृपनाथ तुम करहु अचिन्तित भोग । करहु यज्ञ विधिवत विविधि तजहु कंसको शोग ॥
एहि विधि कहि भूपालसों सोधन दै फिरि ताहि । सहित राम श्रीकृष्ण गे अन्तर्भवन सचाहि ॥

॥ * ॥ मधुभारछन्द ॥ * ॥

ये ग्रहण कीन्हे जौन । शुभ सस तजि तहँ तौन ॥ करि नित्य नियमित कर्म । दोउ बंधु पालक धर्म ॥ तहँ करन लागे काम । बर बारता अभिराम ॥ तेहि समैं आकस माद । सुनि पर्यो दीरघ नाद ॥ अति बढ्यो रंध्र सवात । जेहि बढ़ो अति उतपात ॥ सब विकल भे अनुमानि । प्रभु किए स्मित मुसुकानि ॥ सो सुभद मारुत मानि । प्रिय गरुड पतग जानि ॥ लखि परे प्रगट सुपर्ण । बर पन्नगासन कर्ण ॥ ते दिव्य गंध सुमालं । है धरे विग्रद विशाल ॥ लखि प्रभु हि आनद धाम । कार दण्डवत परिनाम ॥ ढिग राजि राजे भूरि । अति अनघ आनद पूरि ॥ प्रभु बूझि स्वागत तासु । सहबंधु तेहि सह आसु ॥ चलि बैठि एक थल जाय । भे करत मंत्र सचाय ॥ तहँ गरुडसों एहि भांति । प्रभु कहत भे बरकांति ॥ यह काल जवन नरेश । अरु भूमिपति मगधेश ॥ ए बध्य हमसों है न । हम लहब इनसों जै न ॥ *◇*◇*◇*◇*◇*◇*◇*◇*◇*◇*◇*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

तातें अब एहि नगरमैं हम बसि लहब न छेम । याहि छोडि कहुं अनत चलि बसिबो चहैं सप्रेम ॥
गरुडध्वजके बचन सुनि गरुड कहे ए बैन । नाथ आपसों ह्वै बिदा जो हों गया सचैन ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

पश्चिम दिशिमैं जाय निरख्यो परम विचित्र थल । रैवत गिरि सुखदाय सागरतट रमणीय अति ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

अतिपावन सो सुघर गोसांई । सुन्दर सुभद सुखद शुभ ठांई ॥ है तब बसिबे जोग सोहावन । बन उपवन पुरसों मन भावन ॥ वैनतेयको सुनि यह बानी । कृष्णचन्द्र मुद मंगलदानी ॥ ईछित

कारबको बाँधि लीन्ह । उनको बासथ रोचित कीन्ह ॥ सो सुनि उग्रसेन मुद ह्वैके । कह्यो कृष्णसों सोचित ह्वैके ॥ आप अनंतको बास विचारे । सो सुनि हम सब भए दुखारे ॥ तुम्हहि बिना हम व्याकुल ह्वै हैं । जल बिनु मीन सदृश दुख ज्वै हैं ॥ तुमहि बिना हैं हम सब वैसे । बिना पुरुषकी पतिनी जैसे ॥ तातें हम सिगरे हे स्वामी । हैं मन बच क्रम तुव अनुगामी ॥ तातें जहां चलहु नय गामी । लए चलहु तित सबहि सुनामी । कहे तथास्तु कृष्ण सुनि सोई । सो सुनि हरषित भे सब कोई ॥ एहि बिधि कृष्ण बारता भावनि । रहे करत रचि सभा सोहावनि ॥ कालजवन इतने मैं आई । पुरढिग परो निसान बजाई ॥ तासु आगमन सुनि यदुनायक । विधिवत कौतुक बितरण चायक ॥ यदुवंशी बर कृष्ण हि आदिक । मंत्र निपुण नयबिद प्रिय बादिक ॥ विधिवत तिनसों मंत्र द्रिढाए । बिषद भयानक व्याल मँगाए ॥ घटमैं ताहि मूंदि धावनसों । तापैं भेजि दिए धावनसों ॥ सो घट खोलि देखि नृप व्यालहि । समुझि सु कृष्णचंद्रके ख्यालहि ॥ बहु पिपिलिका तुरित मंगाइ । भेजि दियो तेहि घटमैं नाई ॥ सो लखि कृष्णचन्द्र मुसुकाने । जवनहि बुधिमान अतिजाने॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

तासु बुद्धिबल प्रबल लखि कृष्णचंद्र सुखदान । बोले यदुपुङ्गवनसों यह नृप बली महान ॥
हमहि आदि माथुरभटनसो अबध्य यह बीर । रण चढि यासों जीति नहि सहब सुनऊ रणधीर॥
तातें तुम सब शीघ्र अब तजि मथुरा सह सैन । रैवत गिरिढिग चलि बसऊ समुद माझि मम बैन॥
प्रभु आज्ञा लहिके कढे यदुबंशी सह साज । सहकलत्र दृढधन सदल रथ हय गय गज राज ॥
पश्चिम दिशि सब चलत भे सहकुटुम्ब परिवार । सुभट असंख्य निशंक मति प्रभु आज्ञा अनुसार॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

जे भट बीर धीर गणतीके । मर्दन परदल सुभट अनीके॥ तिन हि सहित प्रभु सबके पीछे । भेरि निसान चले जय इंछे ॥ बन गिरि सहर नदी नद सेरत । गे रैवत गिरिढिग प्रभु औरत ॥ रैवत गिरिके ढिग अति पावन । सिखर मंदरोदार सोहावन ॥ हो नृप एकलव्य ता स्वामी । हो तहँ ताको रची सुनामी ॥ पुरी द्वारिका अति रमणीया । प्रमुदित होत जाहि लखि हीया ॥ सो लखि प्रभु हिय आनद लीन्हे । निज निवास हित रोचित कीन्हे ॥ दै तहँ सबहि निवास सुपासू । मथुरा प्रति पलटे प्रभु आसू ॥ एकाकी पायन पथ चारी । मथुरा प्रविशे प्रभु धनुधारी ॥ प्रभुहि देखि सह सैन नरेशा । चढो कालबस ह्वै जमनेशा ॥ प्रभुकी सनमुख बाण चलावन । लाग्यो भरे बीररस भावन ॥ प्रभु तापैं कछु बाण चलाई । फिरि फिरि चले इतहते धाई ॥ कालजवन गरबी मद पागो। दलसह प्रभुके पीछे लागो॥ मांधाताको सुत जयवर्धन । है मुचकुन्द भूप अरिमर्दन ॥ पूर्व देवासुर संगर कीन्हे। तबते लरि इन्द्रहि जयदीन्हे॥ कहे इन्द्र तब सरस सनेहू। नृप मुचकुन्द मांगि बरलेहू॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ।

सो सुनिके पुरुहूतसों ऐसो कहे नरेश । बहुत काल करि युद्ध अति होंहीं श्रमित सुरेश ॥
ताते चाहत करण हौं निद्रा दिवस बहूत । दीजे मोहि बरदान यह पुरपालन पुरुहूत ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

सोवत मोहि जगावै आइ । भसम होइ मों देखत सोई ॥ एवमस्तु मुनि कहे सुरेशा । सो सुनि छितिपर आइ नरेशा ॥ दीरघ गुहा देखि मुद मोए । सोए ते हैं तबलों सोए ॥ सो बिरतांत समुझि प्रभु नागर । कलित कौतुकी कौतुक सागर ॥ ताके देखत प्रबिशे ताभें । सोवत हो नृप उंहि सुगुहामें ॥ जाइ भूपके अमल उसीसे । बैठे छपि बिनु ताके दीसे ॥ कालजवननृप प्रभुके पीछे । प्रविश्यो ताभें जय जश इंछे ॥ खरो पांयते व्हे धनुधारी । हनेसि पायसों कृष्ण बिचारी ॥ लागे लात जागि नृप सोई । आँखि खोलि देखे रिसि भोइ ॥ सुरपतिके बरके अनुसारा । कालजवन नृप जरि भो छारा ॥ तब श्रीकृष्ण परम सुखपाए ॥ उठि भूपतिके सनमुख आए । कहे भूपसों आनंद भोए । नरपति आप बहुतदिन सोए ॥ जेहि कारण तुम सोए जबसों । नारद मुनि भाषे सब हमसों ॥ नृप तुम महत काज मम कीन्हे । तुमहि देखि हम अति मुद लीन्हे ॥ अति हरष्य बपुबर्च सुभेखो । पुरुष बिलक्षण प्रभुकहं देखो ॥ जुग बिभेद मनमें अनुमानो । कहे भूप इमि प्रभुसों बानी ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

को तुम कित आए इतै केहि जुगमें इत आय । सोऐ हम अब कौन युग सो सब देऊ बताय ॥
सो सुनि बोले कृष्ण प्रभु चंद्रवंश कुल चंद । नृपति नहुषके तनय हे नृपति ययाति स्वछंद ॥
नृपययातिके चारि सुत तिनमें गुरु यदु भूप । ताके कुल बसुदेव भे वंश बिरद अनुरूप ॥

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

नृपति ताको सुवन हाम कृष्ण मेरो नाम । दुबन मेरो दुष्ट हो यह कालजवन सकाम ॥ रह्यो हमसों यह अबध्य सुहेत एहि तुवपास । आइ भूछितिपाल मणि हों लख्यो याको नाश ॥ सैन कीन्हे आपजब तब रह्यो त्रेताताल । अंतद्वापरको अहे कलि प्राप्त कलमष बात ॥ कृष्णके ए बचन सुनि मुचकुन्द तजि गिरिगेह । निकसि बाहेर खरे भे सह हाल पूरित नेह ॥ अल्प बुधि बल बीर्ज अल्प हरख लखि नर नारि । हीन संपति छीण कांति मलीन भूमि निहारि ॥ और वंशजकों निरखि निजराज्यपति अनुमानि । कृष्णसों व्हे बिदा श्रीमुचकुन्द नृप बुधखानि ॥ जाय गिरि हिमिवंतपै करि उग्रतप कुदपानि । भए स्वर्ग सुकर्म फल कहि मुचित बुधि तब तापि ॥ कृष्णचन्द्र उदार प्रभु नृप अवनके दृग आइ

[illegible]

अश्व गज रथ सबध्वज धनु कोष हरि सुखछाय॥जाय द्वारावतीमें सब कहे इनको हाल।
मौन सुनि यदुवंश सिगरे लहे मोद बिशाल ॥ भोर लहि फिरि सबन सह यदु राय
प्रभु कुलचंद। देखि बन गिरि सुघर चहुँ दिशि पूरि परम अनन्द॥ हर्ष बर्धन करण चाय
मङ्गल मुभद महान। रोहिणीमें द्विजनको सनमान करि दै दान॥ स्वस्तिवाच्य पुनीत
मुनि विधिपूर्व करि शुभकाज । दुर्ग रचनाको किए आरम्भ प्रभु यदुराज॥ कहे इमि
यादवनसें प्रभु बचन प्रिय कमनाय। पुरी निर्मित करत हौं इत सुखद अति रमणीय॥
नाम प्रिय द्वारावती अमरावतीसी बेस।बिरचि निज निज गेह तुम सुर सद्म लसऊ सुभेस॥
चौक चत्वर सौध सुन्दर राज मार्ग बनाय।पन्न पौर बिचित्र रचि रचि रमऊ सुचित सचाय॥
कृष्णके सुनि बचन यादव लहि सुदिन कर छेम। लगे रचनाकरन पुरको परम पूरित प्रेम॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

पुर रचिवेके काज प्रभु बिश्वकर्म्माके हेत । मनसि शक्रसों कहत भे यदुपति कृपानिकेत॥
लहि सुदेश सुर राजको बिश्वकर्म्मा तहँ आय। जोरि पाणि प्रभुसों किए बिनै परम सुखपाय॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

मोहि इन्द्र अनुशासन दीन्हे। जाऊ उपेंद्रपास मुद लीन्हे॥ सो सुनि प्रभु नव मैं ढिग आयों।
पदपंकज लखि अति सुख पायो ॥ जो अनु शासन देऊ गोसांई। सो मैं करों दासकी नाई॥ तासु
बचन सुनि प्रभु मुद लीन्हे । पुर रचिवेको शासन दीन्हे ॥ सुनि निदेश सो निरखि बिचारी।
प्रभुसों कहे जोरि जुग वारी॥ नाथ चहुंदिशि सागर जोहै। शांत संकीर्ण किए सो सोहै॥ नाथ
देहु जो महि कछु सागर। तौ पुर रचना बनै उजागर॥ बिश्वकर्म्माकी सुनि यह बानी। कहे सरित
पतिसों प्रभु मानी॥ मम पुर रचना हित सुनि लेहू।द्वादश जोजन छिति शुचि देहू॥ जौं सरिते
शमान्य मोहि जानौ। तौ मम बचन शीघ्र यह मानौ॥ प्रभु की आज्ञा जलनिधि सुनिकै। करषि
प्रवाह दए महि गुनिकै॥ सम बिस्तरित भूमिसों ज्वैकै। बिश्वकर्म्मा आनदसों म्वैकै। सासन पुरी
रचे नव भावनि॥ चाऊत चख्चित चाव चढावनि। चामीकर मैं बिरचित साहु॥ रतन बिचित्रित
आल उदार। जथा जोग गृह सबके लायक॥ रचि दीन्हे भरि भावों भायक॥ भाँति भाँतिके
सौध बनाए। रचि बिचित्र सुधर्मासों छाए॥ *********

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

बिरचे बिशद बजारवर बिबिध बिधान बनाय।निवसे सबसे बनिक जेहि बिबिधि बस्तुपाय॥
बापीकूपतडाग वर उपवन बिशद बिचारि।चित्र कला बिरचें सकल सउचित सुघर बिहारि॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

प्रभुहि जोग अति उत्तम गेहा । मणिमय विरचे सहित सनेहा ॥ अन्तहु पुर बहु बहु विधि विरचे । हीरा हेमनि हरषनि हिरचे ॥ कृष्णचन्द्र श्यामक वरभाके । विश्वकर्मा ने विरचो आके ॥ तापुर महलकी सुषमा को कहि । सबके सर्व सुखकी गरिमा गहि ॥ रचि पुर विशद समुद विश्वकरमा ॥ प्रभुहि बन्दि गे स्वघर सुधरमा ॥ शैल निर्धिहि तब कृष्ण बोलाई । ताहि दइ आज्ञा सुखदाई ॥ द्वारावतिमें सानन्द सरसो । सर्व संपदा घर घर बरसो ॥ प्रभु निदेश लहि निधिपति हरसे । सरस संपदा घर घर बरसे ॥ फिरि एकान्ते बैठि सोहाए । सुरमर्दन मारुतहि बोलाए ॥ प्रभु ढिग आइ जोरिकर सानंद । मारुत कहे सुनऊ प्रभु मानंद ॥ जिमि हम देव दूत शुभ भेशा । तिमि तुम दीजै सुखद निदेशा ॥ यह सुनि प्रभु जो है अभि लाखें । सो सादर मारुत सौं भाखे ॥ आऊ शक्रपै मम हित मानी । सभा सुधर्मा ल्यावऊ ज्ञानी ॥ सुनि मारुत सुर पति पैं आए । सभा सुधर्मा दीन्हें ल्याई ॥ सभा पाय प्रभु आनंद पागे । यदु वंशिन सह विहरन लागे ॥ फिरि प्रभु नीति रीतिके चारी । नियमित किए काज अधिकारी ॥ *═*═*═*═*═*═*═*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

उग्रसेनको नृप करे सत्य सभ्य भगवान । अनाधृष्टको करत भे सेनापति बलवान ॥
उद्धव कंक विकद्रु गद स्वफल्क विपृथु ताहिं । चित्रक पृथु सात्यकिहि किय मंत्री बुधि बर चाहि ॥
अधिकारी बर युद्धको किए सात्यकिहि जानि । साम्दीपनको करत भे पुरोहित हित मानि ॥
दारुकको प्रभु करत भे निज रथकेरो सूत । धीर वीर बुधिमान लखि संगर विद मजबूत ॥
एहि विधानको बन्ध रचि कृष्णचन्द्र सुखदानि । विहरण लागे द्वारिका में मुद मंगल सानि ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

रैवत नृपतिहु आए ल्याय रेवती निज सुता । बलिरामहि सुखदाय ब्याहि गये बन तपकरन ॥

स्वस्ति श्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबंदीजनकाशीवासि गोकुलनाथात्मजेन गोपीनाथेन कविना विरचिते भाषायां भारतान्तर्गते हरिवंशदर्पणे कालजयन मरणे द्वारावतीनिर्माणोनाम अष्टादशोऽध्यायः ॥ १८ ॥ *═*═*═*═*═*═**

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

निर्मित करि द्वारावती रमि यदु अंधक कृष्ण । भूपति सो अब कहत हौं किए चरित जो कृष्ण ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

प्रभुकी बसब द्वारिका जानी । जरासंध भूपति अभिमानी ॥ सब भूपन कहँ पास बोलाए । सबसों कहि यह मंत्र दिढाए ॥ रुकुमिनिको नृप सहित उछाहू । दै शिशुपाल भूपसों ब्याहू ॥ तुम सब

कोउ [illegible] सुखारी। रहत करुक वीर धनु धारी ॥ दन्त वक्रको सुवन महीपा। नाम सुवक्र धीर [illegible]पा ॥ पांडुदेशको भूप सुभेवा। सुदेवके सुवन सुदेवा ॥ एकलव्य नृपको सुत बीरा। पाण्डुदेशपतिको सुत धीरा॥ वेणुदारि सुत बरमा राजा। अंशुमान अरु क्राथ सुराजा ॥ नृप कलिंग देशको जोसो। अरु गांधार देशपति होसो ॥ काशीपति आदिक नृप जेते। ते शिशुपाल संग सजि तेते ॥ मुनि वैसम्पायनसों यह सुनि। बुझे जनमेजय नृप हिय गुनि ॥ कवन देशके हैं रुकुमिनि जू। भई प्रगट्यो कहि श्री मुनिजू ॥ यदुसुत हें क्रोष्टा महि स्वामी। ताबंशज अपराजित नामी ॥ तासुत हें वृजनीवसु मानीं। ता बंशज अपराजित ज्ञानी ॥ ताके पांच सुवन हें नामी। तीजो सुत ज्यामेघ सुदानी ॥ भो ज्यामेघ भूपके बारा। ताकोनाम विदर्भ उदारा॥ ताके भए तीनि सुत मानो। लोमपाद क्रथकौशिक जानो ॥ *❦*❦*❦*❦*❦*❦*❦*❦*❦*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

लोमपादके बभ्रुसुत ताके सुत अहात। ता सुत कौशिक चेदिता सुत चैद्य विख्यात ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

क्रथसुत अंशुमान शुभ समाजा। कौशिकके सुत भीष्मक राजा॥ भीष्मकके सुत रुकुम विख्याता। सुता रुकुमिनी श्रीजगमाता ॥ विंध शैलके दक्षिण देशा। कीन्हे राज्य विदर्भ नरेशा ॥ तहँ कुण्डिन पुरमैं नय चारी। हें भीष्मक भूपति धनुधारी ॥ सुत ययातिके पुरके बंशज। हें चैद्यो परि चर बसु अंशज ॥ ताके सुवन वृहद्रथ गाए। जरासंध ता बंशज भाए ॥ बंशज चैद्यो परि चर होके। हे दमघोष भूप शुचि जोके ॥ रही श्रुतिश्रवा ताकी पतिनी। जो बसुदेव भूपकी भगिनी ॥ तासों भए पांच सुत ताके। शिशुपालहि आदिक बरभाके॥ जरासंध नृप आनंद साने। शिशु पालहि निज सुत करि जाने ॥ तेहि सम्बन्ध चावसों चोपे। जनरथ सूता ब्याह आरोपे ॥ ले संग नृपन मोदसों छाए। साजि सेन कुण्डिनपुर आए॥ रुकुम भूमिपति आगेचलिके। ल्याए तिन्है मोदसों भरिके ॥ सुनि शिशुपाल बंधुको ब्याऊ। रामकृष्ण मनमानि उछाऊ॥ सह यदुबंशिन साजि सुसेना। आए कौशिक पुर जगजेना ॥ क्रथ कौशिक चलि आगे लीन्हे। मुदित यथोचित पूजन कीन्हे ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

कौशिक पुरमे वास करि प्रभुवो निशा विताय। प्रातकृत्य करि सैन सह रथ चढि [illegible]॥ ताहोसमै रुकुमिनि गई रथ चढि सखिन समेत। इंद्राणिको मूर्तिको शिव पूजनके हेत ॥

॥ * ॥ गुरुतोमरछन्द ॥ * ॥

तहँ रुकुमिनी तो देखिके। प्रभु हिए आनंद लेखिके ॥ करि [illegible]। जब सची जूकों पुजिके। वर बरणि अकुलि कूजिके ॥ लखि प्रभुहि हीरे नेहको भरि

...आये नेहको ॥ तब पाणि गहि बलवीर अम्बरधनुधर रणधीर ज्यु ॥ रुकुमिनिहि रथमें आनिके। बैठाय रमणी आनिके ॥ अति चपल बाजी हांकिके । काढि चले बीरन हांकिके ॥ बलिराम नृप उपारिके। पर बर भटनकहँ मारिके ॥ सहयादवनदिशि धारिके।थिर रहे तहँ धनुधारिके॥तब जरासंधहि आदिजे। नृप रहे हैं उनमादिजे ॥ ते नृपति बर दल साजिके। सब भिरे तिनसों गाजिके॥ चढि आइबौ भट भावसों। भिरि सन्मुख आवे चावसों ॥ तहँ दुंदुभीके जेरको। हय मैगलनके टेरको ॥ बर धनुषके टंकारको। बहु भटनके झंकारको ॥ बज्र मल्ल तोमर बाणको। असिझिलिम टोप मिलानको ॥ रव रह्यौ पूरि दिशानमें। तेहि समें केयससानमें ॥ *<>*<>*<>*<>*<>*<>*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

रुकुमिनिकों हरि कंसहा निज रथपै बैठाय । लए जात हैं सुनि रुकुम महत रोषसों छाय ॥
गहि कोदंड उदंड भट भुजदंडन तन देखि । किए प्रतिज्ञा प्रलयकर प्रबल प्रकर्ष विशेखि ॥

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

मारि कृष्णहि जो न ल्यावों रुकुमिनीको फेरि।तौ न आवों या नगरमें बचन येसो टेरि॥ चलो रथ चढि चावसों चित चाहि जय जश पूर। सबल सत्वर साजि सेना सरस साथन सूर ॥ चले संग सजि रुकुमके नृप अंशुमान सुधीर । बेणुदार महीप बर भट श्रीश्रुतवा बीर ॥ बेगसों चलि सुभट ते बज्रकोस वीथी जाय।नर्मदाके तीर प्रभुसों भिरे धीरे धाय ॥ रुकुम मारे कृष्णकहँ तहँ बाह चौसठि बान। बाण सत्तरि रुकुमके तन हने कृष्ण सुजान॥ रुकुमके ध्वज सूतकोसिर बाणसो प्रभु काटि । तजे अगनित बाण धनु सों बिकट बीरन दाँटि ॥ अंशुमान महीप दश नृप सुतर्वा पांच । बेणुदारिक सात प्रभुको हने तब साचको॥ अंशुमान महीपके उर हने प्रभु एक बान । जिन्हें तातें बिकल ह्वै सो बिदित बीर महान॥ श्रुतवायमहीपके बर बाजि सरसों मारि । बेधि ताको हृदय रथपै दए तावो डारि। बेणुदारमहीपको ध्वज काटिकै यदुनाह ॥ मारि भीषण बाण दीन्हे बेधि दक्षिण बाँह॥क्रोध करि ए सुभट प्रभु पै झूके तब एक बार । मुदित ह्वै प्रभु किए तबहि भाँति युद्ध बिहार ॥बलाधव अलब करि हमि तजे सरस बिधान । सुभट तिनहू तजे आगे बिकल ह्वै तजि बान ॥ रुकुम निजबल अर्थ लखि ह्वै विकल करि अफसोस । हनें प्रभुके हृदय मधि शर पांच करिअति रोस॥तीनि शर बर हनत भो फिरि सारथीके देह। प्रभु तब काटि शर तन रुकुमके सहनेह ॥ काटि दीन्हे रुकुमको फिरि धनुष

शरसों साधि। रुक्मनृप लै और धनु तब इष्टदेव अराधि ॥ दिय शर अनेक बाहत भए जय अभिलाखि। काटि ते सब बाणतैं प्रभु नए महिपैं नाखि ॥ *⁓*⁓*⁓*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

काटि शस्त्र सब रुक्मके प्रभु काटे फिरि तासु। रथकी ईषा चारु अरु धनुष बाणसों आसु ॥
कटे चाँप रथ क्रोध करि रथतें उतरि उताल। खड्ग चर्म लै चलत भो प्रभुपैं सो छितिपाल ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

तब प्रभु धनुधरकी विधि ठाटे। शरसों खड्ग मूठि ढिग काटे॥ खड्ग काटि कछु रिपि हिय धारे। तीनि बाण वर उरमैं मारे॥ तातें रुकुम मूरछित ह्वै कै। महिपै गिरे घावसवल्यै कै॥ रुकुमिनि भ्रातहि मुरछित ज्वै कै। प्रभुके चरण परी दुखभ्वै कै॥ अब मति याहि हनऊ कमुदद्रानी। यह रुकुमिनिकी आरत बानी॥ सुनि कै कृष्ण क्रोध परिहरिकै। गए द्वारिका आँनद भरिकै॥ कृष्ण आदि यादव समुदाई। भूपन जीति निशान बजाई॥ सेना सहित द्वारिका आए। मिलिकै सबसों आँनद पाए॥ उतै सुतबा नृप धनुधारी। रुकुम भूपकहँ रथपैं डारी॥ कुण्डिन पुरप्रति चलो दुखारी। चेति रुकुम तब स्वपन विचारी॥ होन प्रतिज्ञा भे हे तातें। गए न कुण्डिन नगर हि याते॥ कुण्डिन पुरके दच्छिण आसा। कीन्हे पत्तन विरचि विलासा॥ नाम भोजकट पुर भो सोई। तामे बसे रुकुम सुख भोई॥ कुण्डिन पुरमैं भीष्मक राजा। रहे पूर्ववत सहित समाजा॥ उतै कृष्ण विधिवत मुद लीन्हे। पाणिग्रहण रुकुमिनिको कीन्हे॥ निज अनुरूप प्रिया वर पाई। बहु दिन रमि संप्रेम सुख दाई॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

उतपति कीन्हे दश सुवन प्रवल प्रद्युम्न उदार। चारु देष्ण सुदेष्ण सुत सुत सुषेण सुकुमार ॥
चारु गुप्त सुत चारु अरु चारु बाँहु रणधीर। चारु विन्द अरु चारु कहि भद्र चारु पर बीर ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

कन्या चारुमती शुभवा(री)। प्रगटी रुकुमिनिसों शुभचारी॥ महिषी सात और प्रभु कीन्हे। तिनके नाम सुनऊ मुदलीन्हे॥ कालिन्दी कमनीया सोई। सुता सूर्य्यकी यमुना जोई॥ मित्रविंदा सुखदाइनि सनया। सो आवंत्य भूपकी तनया॥ भूप नग्नजित अवध अधीशा। सत्या तासु सुता नयदीशा॥ जाम्बवानकी सुता सयानी। जांबवती सुखदाइनि मानी॥ केकैपतिकी सुता सुखामो। भद्रा दुतिय रोहिणी नामो॥ मद्रराजकी सुता ललामा। नाम सुशीला अति अभिरामा॥ सत्राजितकी सुता दुलारी। सतिभामा अति पतिहि पिआरी॥ सैंध्यराजकी तनया ज्ञानी। नाम लछमणा नवई रानी॥ सोरह सहस और शुभनारी। लहि प्रभु कीन्हे अतिसै प्यारी॥ प्रगटे सुवन हजारन तिनके। धीर वीर दाता गिनतिनके॥ तिन्हहि सहित प्रभु आनँद ढारे। द्वारावतिनमैं

मुदित बिहार ॥ रुकुम नृपतिकी शुभद कुमारी । नाम सुभागी सुखमा भारी ॥ रुकुम भूमिपति आनंद लीन्हे । तासु स्वयंवर रोपित कीन्हे ॥ देश देशके भूप बलाए । तहँ प्रदुम्न गे आनद छाए ॥ तहा स्वयंवर सभासदन मैं । बैठे नृप सब मोहित मनमैं ॥ *

॥ * ॥ दोहा । * ॥

रुकुम भूमिपतिकी सुता आइ स्वयम्बर गेह । निरखि प्रदुम्नहि सो तँहा बरत भई सहनेह ॥ विधिवत पाणि ग्रहण करि सतिय प्रदुम्न सुभेश । आए द्वारावति गए निज निज पुरण नरेश ॥

॥ * ॥ महीधरीछन्द ॥ * ॥

कछुद्यौस रमि ते सरुचि दंपति शुभग सुत उतपति किए । अभिराम ताको धाम लखि अनरुद्ध पद ताकों दिए ॥ क्रमसों सुवर्धित ह्वै विशदगुण सर्व शास्त्र सविधि दिखे । अरु धनुषबेद विधान सो शुभमन्त्र सह सांनद शिखे ॥ तेहि लखि अनुपम अरु अपूरब अति अलौकिक गुणभरे । शुचि सावधान सराहिवेके जोग सुषमा लय लरे ॥ ह्वै रुकुमके सुतकी सुता तेहि जोग सुन्दर वर गुनी । लिखि रुकुम नृपको विहित पाती कियो संमत रुकुमिनी ॥ तब साजि वेस बरात बर प्रभु भोजकट पुर प्रति गए । बलिराम रुकुमिनि सहित यादवजूथ मन आनद मए ॥ तहँ रुकुम नरपति करि उचित बेवहार लहि शुभ दिन सुखी । दीन्हें सविधि अनिरुद्ध कह शुभसुता रुतको शशि मुखी ॥ अति भयो उत्सव दुहूँ दिशिसो सरस आनदसों भयो । लहि दान अरु सनमान जाचकगणनको दारिद गयो ॥ तँह एकदिन सब नृपतिगण व्है एकमति मत करि गए । नरपति रुकुमके पास तहँ एहि भांति सो भाषत भए ॥ नृप अक्षखेल विधानमैं तुम महत चातुर हो कहे । अरु हम सबे जन अक्ष खेलनमैं परम पटुहैं अहे ॥ बलिराम कह है अक्षप्रिय पर खेलि नहि जानहि सुनो । हम सबहि मिलकर जीतहैं यह बात मनमैं तुम गुनो ॥ इत बोलि ताते उन्हहि उनसो दामलीजै दावसों । कटु बचन व्यंग प्रसिद्ध कहि कहि कूट कीजै चावसे ॥ सुनि मोदि रुकुम नरेश मिसिसो बोलि बलिराम हि लए । करि बारता कछु चातुरीसों अक्षखेल तहा गए ॥ बदि दाव धरि धरि द्रव्य दुऊदिशि घने घातनि खेलिकै । नृप रुकुम जीते बलहि पासा कितव ताके झेलिकै ॥ तब राम अमरष करि दए धरि कोटि मुद्रा कनकको । सोउ जीति लीन्हे रुकुम पासा डारिकै बर बरणको ॥ सो जीति रुकुम विदर्भपति हिय गर्ब अतिसै गहतभे । गहि गर्ब हसि हसि नृपनसो कटु बचन एहि विधि कहत भे ॥ *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

अबल अबुधि अति अपटु ए अरु अविद्य असमर्थ । इत आए हैं द्यूत मिसि द्रव्य देनके अर्थ ॥

यह सुनिके कालिंगपति विहसि हस्यो करि सोर। चाह दसन दरसाय के लखि हलधरकी ओर॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

सुनि हलधर अति मनमें मांखे। कहे न कछू रोकि रिषि राखे॥ कोटि सहस दस मुद्रा मांखे। बोलि दावपें खेलन लागे॥ रुकुमनरेश जीति ललचाने। अछपात कीन्हे मुदसाने॥ पस्यो रामके जयके पासा। बोले रुकुम तज कटु भाषा॥ यह मम दाव जीति यह मेरी। कहि जूके झगरे झगरेरी॥ भई दूनमें तँह नभबानी। जीते हलधर आनद दानी॥ सुनि नभगिरा राम अति कोपे। नृप मण्डलमें प्रलया रोपे॥ मोहर भरी मंजुल थैली। धरी रही आनदद अनेली॥ तिन मेतें ले एक रिसारे। रुकुम भूपके उरमें मारे॥ ताके लगे रुकुम नृप मरिके। शोभित भए पुडमिपें परिके॥ दाँत निकासि हसो हो जोई। नृप कलिंगपति आनद भोई॥ सगरब तेहि अमरषसों पूरे। लात मारि ताके रदतूरे॥ सिंह समान सक्रुद्ध गरजिके। दिरद सहस नृप भटन तरजिके॥ कृष्णचंद्रपें सानद जाइ। कहे सकल बिरतान्त बुझाई॥ सो सुनि कृष्णचंद्र नहि बोले। निज अन्तगत कछू न खोले॥ बन्धु मरण सुनि रुकुमिनी रानी। करि रोदन अतिसे बिलखानी॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

दैवीगति कहि रुकुमिनिहि केशव प्रभु समुझाइ। सहित यादवन द्वारिका आवत भे सुखदाइ॥

वरणे या अध्यायमें प्रभुरुकुमिनिकोव्याह। उतपति व्याह प्रदुम्नको बरणन किए सचाह॥

कहे जनम अनिरुद्धको अरु बिबाह उतसाह। अछ खेलि जिमि रामसों भे रुकुम नरनाह॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीवन्दीजनकाशीवासि गोकुलनाथात्मजेन गोपीनाथकविना विरचिते भाषायां भारतान्तर्गते हरिवंशदर्पणे रुकुमिनीलयंवरोनाम ऊणविंशोऽध्यायः॥ *~*~*~*~*~*~*~*~*~*~*~*

॥ * ॥ जनमेजयउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

कहे स्वयंवर रुकुमिनीको तुम बर बरणि सहेत। सो सुनि हों आनद लह्योसुनिये ज्ञान निकेत॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

अब कहिये मुनि बर तपराहू। श्रीहलधरको चरित विलाहू॥ जनमेजयनृपकी बाणी सुनि। बोले वैसम्पायन मुनि गुनि॥ अनघ अनन्त अमोघ सुज्ञाता। शेष धरा धर जो विख्याता॥ हैं बलिराम हलायुध सोइ। जाने ज्ञानमान सबकोई॥ अयुत नागके बलसों भारो। जरासन्ध हो पूरब बारो॥ बाहूजुद्ध करि जीते तासों। भूषित भए भूरि भरभासों॥ दरजोधनकी सुता सोहाई। हरि ले चले सांब तेहि जाई॥ लखि दुरजोधन नृप रिसि भारे। गहि तेहि कारागृहमें

डारे ॥ जांबवतीके सुवन दुलारे । सांब कृष्णकँह परम पियारे ॥ सुनि तँह आइ राम रिसिपागे । सांबहि दुरजोधनसों माँगे ॥ दिए न दुरजोधन मदमाते । तब बलिराम अधिक रिसिराते ॥ पुर परिखाको वप्र सोहावन । तामें लाय हलाग्र सो भावन ॥ ब्रह्म मंत्रसों बिधिवत कीन्हे । ऐंचि ताहि पुर उलटन दीन्हे ॥ पुर उलटत लखि नृप दुरजोधन । बर कन्या दै कीन्हे बोधन ॥ सुतिय सांबकँह ले सुखछाए । तंत उन्नत पुर तजि घर आए ॥ *—*—*—*—*—*—*—*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

धेनुक और प्रलम्ब अरु मुष्टिक आदिक बीर । को बधिवो कहि कहे जो यमुना कर्ष्यो धीर ॥
सुनि मुनिके ए बचन बर जनमेजय छितिपाल । फिरिबूझे मुनिराजसों पूरित प्रेमबिशाल ॥

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

रुकुम भूपके बधके अन्त । आइ द्वारिका कृष्ण अनन्त ॥ गुणनिधि कीन्हे कहा बिलास । सो कहिये मुनि ज्ञान प्रकास ॥ नृप जनमेजयके ए बैन । सुनि बोले मुनिआनद ऐन ॥ रह्यो प्राग्ज्योतिष पुर ग्राम । तहँ बसि नरकासुर बलधाम ॥ प्रबल प्रमत्त भरो उनमाद । करै सुरनसो हठि अनवाद ॥ सुरगंधर्बनको सुकुमारि । लखि चतुर्दशी तनया बारि ॥ सोरह सहस एकशत जानि । किद्देसि एक ते हरि हरि आनि ॥ महि सागरतें हरि गहि नेम । हरंषित जोरेसि हीरा हेम ॥ सुवन भूमिको अतिबलवान । नरकासुर अघ बोघ अमान ॥ प्राग्ज्योतिष पुरपति निरदन्द । सब असुरनको अधिप अमन्द ॥ रतननिको पुरढिग बर फैल । रचेसि चारू अतिसुन्दर शैल ॥ पुरमें रकवा चारिउद्दार । द्वारे चारि चारि रखवार ॥ हयग्रीव जूथप सरदार । पालत हो सो पहिलो द्वार ॥ निसुन्दवती द्वार निसुन्द । तीजो पौंरि पंचजन तुन्द ॥ चौथी पौंरि रहै अम नैत । सुवन सहस्र सहित सुरदैत ॥ **—*—

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

नरकासुर असुराधिपति निज भुजबलके जोर । हरेसि सुकुण्डल अदितिके पारि स्वर्गमैं सोर ॥
ऐरावत चढि इंद्रतब आए प्रभुके पास । चिन्ति चित्तमै चाहिक नरकासुरको नास ॥

* ॥ चौपाई ॥ *॥

रामकृष्ण आदिक यदुबंशी । हैवे ठाँह कृष्णप्रसंशी ॥ तँह सहसा सहि आवन देखी । उठि कोदित ते सरुचि सुभेखी ॥ अर्घ पाद्य दै मोदित कीन्हे । जथा उचित शुचि आसन दीन्हे ॥ आसनस्थ सहसाक्ष सोहाए । सानंद प्रभुसो बचन सुनाए ॥ जो हित हेति इहां हम आए । सो प्रियबंधु सुनऊ मनभाए ॥ महिसुत नरकासुर बलभारी । है अति पापकर्म्म अधिकारी ॥ तपि बिधिसों

बर पाइ अघाने। है अवध्य सुरगणसें जाने ॥ सुर गंधर्व जक्ष अपसरगन। अहनिशि देइ तिन्हैं दुखगहिपन ॥ हरेसि अदितिके कुण्डल सोई। कुटिल कलंकी कुमती सोई ॥ सुनि मन बचन मोदसें मागी। करउ तासु बध सुरहित लागी ॥ खगपति इत आए मन मोहन। करउ शीघ्र तापैं आरोहन ॥ चक्रपाणि चातुर जगनेता। बधउ ताहि नैऋतकुल जेता ॥ इम शताक्रकी बाणी सुनिकै। कृपासिंधु प्रभु मनमैं गुणिकै ॥ सतिभामा सह आनद दाता। चढि खगेशपैं त्रिभुवन त्राता ॥ सायहि चले शक्रके मानद। गहि निज आयुध पूरित आनद ॥ इंद्र उपेंद्र धनुष शरधारी। ऊरध चले गगन पथ चारी ॥ *—*—*—*—*—*—*—*—*—*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

आवह प्रवहिहि आदि देवायु मार्ग जे सात। क्रमसें तिनपैं चलि भए इंद्र उपेंद्र बिभात ॥
महिसें यदुबंशीतिन्है लखे ऊर्द्ध करिगैार। गजपति खगपति सहित शुचि रवि शशि सम एकठौर ॥
अप्सर अरु गन्धर्वसें तहँ अस्तुति सुनिधीर। शक्र गए निज लोक प्रभु प्राग्ज्योतिष पुर बीर।

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

करि अतिबेग बिहंगके स्वामी। क्षणमैं तहँ पहुंचे नभगामी ॥ दूरहिसें प्रभुद्वारे देखे। षट सहस्र भट आयुध भेखे ॥ भट गजस्थ बाजिस्थ सयाने। अरु रथस्थ पैदर उमदाने ॥ तिन्ह हि लेखि प्रभु आनद माने। धनुटंकार किए मनमाने ॥ तब लखि प्रभुहि दैत मुरमानी। आनेसि बिष्णुबेश अनुमानी ॥ गहि कर शक्ति क्रोधसें छायो। सेनासह उठि सनमुख धायो ॥ दीरघ शक्ति हेमसें भूषित। सोप्रभुपैं छाडेसि मति दूषित ॥ तेहि आवत लखि कृष्ण अखेदे। शर क्षुरप्रसें बीचहिं भेदे ॥ तब मुरदैत क्रोध अतिधारेसि। गहि मुर गदा दूरसें मारेसि ॥ प्रभु लखि बाण गदा मधि मारे। काटि बीचसें महिपैं डारे ॥ करि अतिक्रोध दानवन डांटे। मुरको शीश क्षुरसें काटे ॥ मुरको मारि धनुष शरधारे। ताके संगकें सुभट संघारे ॥ तिन्हहि मारि प्रभु महि पैं डारे। नाघे प्रथमप्रकार सुखारे ॥ द्वितिय पौरिके तँह रखवारे। भिरे आइ ते अति रिसि भारे ॥ असुर पंचजन बर बलवाना। दरतिमि सुण्ड उदण्ड अमाना ॥ हयग्रीव दितिसुत बल भारी। भिरे आइ तहँ सब धनुधारी ॥ *—*—*—*—*—*—*—*—*—*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

सयन सहित ते असुर तँह कीन्हे जुद्ध महान। बिदित बीर बानैतबर प्रबल प्रकर्ष समान ॥
रथ चढि बीरनिसुंद तंह प्रभुके सनमुख आय। मारत भो दशबाण बर नचत क्रोधसें धाय ॥

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

निज शरसें प्रभु ताशर काटि। मारे ताहि सात शरडाटि ॥ सो सुभटन सहबाण

चलाय। दीन्हेसि शरको जाल बनाय ॥ तब श्रीकृष्णचंद्र जय देखि। उग्र प्रजन्य मंत्रसों पेखि ॥ बाण सबै सुभटनके मारि। पांच पांच शर तिनकों मारि ॥ दीन्हे मारि भूमिपर डारि। तब निसुंद अति रिसि विसतारि॥ मारि बाण बरभुजके जोर। शर पञ्जर कीन्हेसि घनघोर ॥ तब शार्ङ्गिघ भल्ल तजि धारि। शरपंजर प्रभु दए विदारि ॥ तब शरमों रथ धनुं ध्वज भेदि। अरु हय शीस सूतको छेदि॥अंठ निसुंदपैं भल्ल चलाय। कीन्हे तासु शीश बिनु काय ॥ सत्वर दीरघ शिला उठाय। मारेस प्रभु पैं सबल चलाय ॥ लखि श्रीकृष्ण बाण बर बाहि। बीचहि दए चूर्ण करि ताहि ॥ प्रभु चलाय बरबाण अलेष। राक्षस सेना कीन्हे शेष। हयग्रीव तब अति रिसि धारि ॥ लीन्हेसि दीरघ वृक्ष उखारि। सो द्रुम श्याम आसु बिसतार ॥ सो प्रभु पैं डारेसि दृढसार। प्रभुतजि शिघ्र बाण हजार ॥ काटि किए तेहि तिलके तार ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

फिरि गरुडध्वज कृष्णप्रभु मारि एक बरबाण। हयग्रीव बरबीरको कीन्हे तनबिनुप्राण ॥
पच जनहि आदिक सुभट आठलाख बरबीर। मारि तहां श्रीकृष्ण प्रभु शोभित भे रणधीर ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

प्राग्ज्योतिष पुर ध्वंसन करिकै। श्रीश्रीकृष्णचन्द्र मुद भरिकै॥ मध्य कहूँ मैं हो कवि छायो। नाम यवनर विशद बनायो ॥ नरकासुर असुराधिप ताको। मंजु महत पुर पृथधर भाको ॥ ताके पास गए छवि छावत। पांचजन्य शुभ शंख बजावत ॥ धुनि सुनि तन धनके मद मातो। है नरकासुर अति रिसि रातो ॥ लोह हेम रतननि मय भारो। पूरित शस्त्र सहस हय धारो॥ रथ विशालपैं चढि धनुधारो। प्रभुके सनमुख चलो सुखारो ॥ बिबिधि भांतिके आयुध धारे। सुभट असंख्य वीजबल भारे ॥ चले संग बलकत गरबीले। हय गज रथ चढि बने छबीले ॥ बीर पदाती धीरनि कीले। चले चावसों छकि छरकीले। घननादोपम बाद्य बजावत ॥ घने समान निसान घुमावत। सो सबैम तहँ जहँ हैं स्वामी ॥ सारंग धर नागांतकगामी। सैनिक सुभट सहित मद पाग्यो ॥ अस अनगिने मारण लाग्यो। शक्ति शूल शर पास सोहाए ॥ भिंडिपाल बर गदा बनाए। तोमर भल्ल आदि हैं जेते।शस्त्र चलाए ते तहँ तेते।।सौहित सुभट सुगौरव कीन्हे।नभ माहि पूरि शरणसों दीन्हे॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

कृष्णाहुद लखि कृष्णप्रभु गहि कोदण्ड बिशाल। तजे समन्त अमोघ इषु कौणपकुलके काल ॥
सकलाश्च राक्षसनके निज बाणनसों भेदि। सिरभुज कटि पग भूमिपैं डारे तिनके छेदि ॥

॥ * ॥ गुरतोमरछन्द ॥ * ॥

छिरक टे कितने डोलहीं । धह मार कितने बोलहीं ॥ भुज कटी जिनकी हाहिनी । ते बाँमकर अंग पाहिनी ॥ सो लरे अनुपम भावसों । हुं कितें भट मरवावसों ॥ भट जिते निशिचरराजके । हुं दहत दापद राजके ॥ते लगे प्रभुके बाणको।सब गिरन्है बिनु प्राणको॥ गज बाजि रथ धनु बाणसों । प्रभु दए काटि विधानसों ॥ परसैनमें जेते रहे। नहि एक बिनु भेदे रहे ॥ यह दशा लखि निज सैनकी। अतिदुसह बिपदा चैनकी ॥ असुराधिपति जय चापसें । कोदंड गहि अति कोप सों ॥ वर दिव्य अस्त्र बनावसों । भो तजत प्रभु पें चावसों॥ सो अस्त्र चक्र मलायकें।प्रभु दए काटि बचायकें॥फिरि तासु ध्वज हय सूतको । धनु कवच रथ मजबूतको ॥ प्रभु मारि बाण विवेकसों । करि खंडन दीन्हे एक सों॥न्है विरथ बिधनु सुबीरसों।वर तजेसि शूल सुधीरसों ॥ सोउ बाणसों प्रभु काटिकें । असुराधिपतिकों डाटिकें ॥तेहि युद्ध विधि इमि सीछि कै ।भे मुदित निज जय ईछिकै ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

उग्र प्रभाव उदग्र रुचि चक्र अमोघ चलाय।नरकासुरको बध किए कृष्णचन्द्र यदुराय॥
नरकासुर निज सुवनको मरण देखि दुख पाय । कहत भई श्रीकृष्णसों भूदेवी तँह आय॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

नाथ याहि तुम दीन्हेउ मोही । तुम मारेउ एहि अवगुण जोही ॥ हो तुम स्वेछाचारी सोई । क्रीडा करहु बालकी नाई ॥ अदिति देविके कुण्डल जोई । नरकासुर ल्यायो दिवि सोई ॥ सो यह मोहि दए हो ल्याई । लीजे यहि प्रभु रोष बिहाई ॥ राज्य रतन धन हय गज नारी । सोऊ तासु लीला विसतारी ॥ इमि कहि पृथिवी कुंडल दैकै । गई प्रभुहि लखि आनंद लैकै ॥ तब प्रभु अति सुषमासों भेखे । मोदित जाइ कोसगृह देखे ॥ मरकत मणि आदिक मणि जेते । लखे असंख्य जहां प्रभु तेते ॥ मुकुता अरु प्रवाल छबि छाए । चंद्रकांतके ढेर लगाए ॥ जांन रुप्य कलधौत सोहाए । लखे अतोल न जात बताए ॥ हो नरकासुरके घर जेतो । अगनित अनाधिपके घर तेतो ॥ कोष सदनके रक्षक आए । पृथक पृथक सब प्रभुहि लखाए ॥ तिनमें जितनो सुषमा छायो । कृष्णचंद्रके मनमें भायो ॥ राक्षस गणके शीस चढाई । दीन्हे सो निजपुर पठवाई ॥ फिरि कपिपति राजको आदर । चढि गे मणिपर्वतपें सादर ॥ बैठे पक्षिराजपें सानंद । लखत भए तँह केशव मानंद ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

मध्य शैलमें कन्दरा बनो बिशद रमणीय । रतनमयो आवास तहा चित्रित अति कमनीय ॥
सुरगंधर्वनकी सुता तहँ देखे अभिराम । सोरह सहस सु एक शत कंचनकीसी दाम ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

ते सब नरकासुरकी आनी । अती कुमारी तेजस सानी ॥ ते सब प्रभुहि पेखि प्रभु कीन्ही । अति मोहित मुख अंजलि दीन्ही ॥ अंजलि नाथ कृपाल निहारी । कृपा कटाक्षहिसों असुरारी ॥ सुन्दर दिनमणि सुरुचि सुदिनके । पाणि ग्रहण किए प्रभु तिनके ॥ दै अंजलि ते सरस सयानी । कहत भई प्रभुसों वर बानी ॥ नाथ एकदिन भारत आई । ने हैं औसो वचन सुनाई ॥ सोई वचन महत मुनि नारद । कहि ये हैं वर विदित बिशारद ॥ शंखचक्रधर खगपति गामी । गदा धनुष गहि अन्तरजामी ॥ सबयन नरकासुरकों मरिहैं । तुमहिं प्रिया करि मोदित करिहैं ॥ नाथ आशु तुम सोई कीन्हे । व्है प्रसन्न निज दरशन दीन्हे ॥ यह सुनि कृष्ण प्रेम अति गहि कै । उचित वचन प्रिय तिनसों कहिकै ॥ रहे वृद्धराक्षस तँह रक्षक । तिनकों दै आज्ञा प्रभु दक्षक ॥ शिविका आन सवाह मगाए । सादर तिन पैं तिनहि चढाए ॥ सँग करि सुभट समूह सोहाए । वेगि द्वारिका तिन्है पठाए ॥ तेहि गिरिको आश्रम सोहावन । मणिमै अरचित हो मनभावन ॥ तामैं जे थसथावर जंगम । हैं कीन्हे अति अनुपम संगम ॥ *◆*◆*◆*◆*◆*◆*◆*◆*◆*◆*◆*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

पवि राजतें उतरि प्रभु तिन्हहि सहित सो शैल । गहि उखारि धरि गरुडपैं गहे स्वर्गकी गैल ॥
प्रभु आज्ञा लहि विहंगपति मेरो परि व्है जाय । शक्र सचीके द्वार पैं उतरत भए सचाय ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

उतरि गरुडसों प्रभु सतिभाँमा । गे जँह शक्र सची अभि रामा ॥ यथा योग जेहें यश जिनसों । बन्दि मिले तँह ते तिमि तिनसों ॥ कुशल प्रश्न कहि सुनि मुद लीन्हे । प्रभु सो कुण्डल शक्रहि दीन्हे ॥ लै कुण्डल सह सची सुखारे । सतिय कृष्ण सह इंद्र पधारे ॥ गए अदितिके सदन अनंदे । दै युग कुण्डल शुचि पग वंदे ॥ इंद्र उपेंद्र सची सतिभाँमहि । दिव माँह पाशन कर अभिरामहि ॥ आशिष दीन्हो अदिति सुमाता । सुनि प्रमुदित भे दोऊ भ्राता ॥ समाचार तब इंद्र सुनाए । जेहि विधिके सब कुण्डल ल्याए ॥ सतिय अदितिसों शासन लहिकै । श्रीश्रीकृष्णचंद्र मुदगहिकै ॥ सादर बिदा शक्रसों व्हैकै । चढि खगपतिपैं नन्दन ज्वै कै ॥ पारिजात तह सरस सोहायो । पुष्पित तँह प्रभुके मनभायो ॥ गहि उपारि तेहि लीन्हे पावन । चले गरुडपैं धरि मनभावन ॥ सो सुनि शक्र रोकि रिसि राखे । बूझि प्रभाव कछू नहि भाखे ॥ सुर मुनिगणसों अस्तुति भाए । सुनि श्रीकृष्ण द्वारिका आए ॥ उग्रआदि सब यादवगणसों । मिले यथोचित गुरु लघु जनसों ॥ सह परिवार सोदसों पागे । बहुरि पूर्ववत विहरण लागे ॥ *◆*◆*◆*◆*◆*◆*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

बरणे एहि अध्यायमें हलधरकेर प्रभाव । अरु द्वारावति पुरीमें प्रजा गमन सचाव ॥
नरकासुरको वध बहुरि सह सदन्य परिवार । तियसमूहको लाभ फिरि बरणे बहु बिस्तार ॥
स्वर्ग गमन फिरि कृष्णको मातु अदितिते संभास । बहुरि आइकै द्वारिका बरणे विशद बिलास ॥
स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणसिंहाज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशीवासि
गोकुलनाथात्मजेन गोपीनाथेन कविना विरचिते भाषायां भारतान्तर्गते हरिवंशदर्पणे नरकासु
रवधोनाम त्रिंशतध्यायः॥ *◆*◆*◆*◆*◆*◆*◆*◆*◆*◆*◆*

॥ जनमेजयउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

कृष्णचन्द्रके चरित सुनि मोमन तृप्ति लहैं न । तातें कहिये और अब चरित सुमुनि तपयैन ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

सुनि नृपबचन कहे मुनि आज । किए कृष्णप्रभु फिरि जे काज ॥ एक दिवस प्रभु अन्तरजामी ।
सहित रुकुमिनी त्रिभुवन स्वामी ॥ रैवत गिरिपैं आइ सुखारे । रुकुमिनिको संमत अनुसारे ॥
उत्सव कीन्हे निज अनुरूपा । आनद जैन अपूर्व अनूपा ॥ तहां वासस्थल विशद रचाए । संपूरण
परिवार बसाए ॥ द्विजसमूहको अरचन कीन्हे । करि सनमान दान बहु दीन्हे ॥ बन्दीजन अरु
अरथी जेते । प्रभुसों लहे दान तँह तेते ॥ बंधुबर्गके करि रुचि रोचित । बेस बास बसु दिए यथोचित ॥
बहुविधि तहँ उत्सव करि मोदे । सह कंसव करि बास बिनोदे ॥ रुकुमिनिके घरमें तँह सानद ।
बैठरहे कृष्ण प्रभु मानद ॥ तेथर मुनिवर नारद आए । पूजि जथोचित प्रभु बैठाए ॥ पारिजातको
पुष्प सोहावन । दिए कृष्ण कँह मुनि मनभावन ॥ कृष्ण अपूर्व पुष्प सो चीन्हे । प्रेमसहित रुकुमिनि
काँह दीन्हे ॥ रुकुमिनि पति इच्छा अनुसारी । भामिनि भावन भावबिचारी ॥ राखत भई शोभपै
ताको । ताते लहो दुगुण बरभाको ॥ तब नारद रुकुमिनिसों बोले । पारिजातकी महिमा खोले ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

देवि तुम्हारे योग यह पारिजातको फूल । ईछित सौरभको सदा देनहार अनुकूल ॥
शीत उष्ण मनमानको देनहार सुखदानि । बांच्छित रसको स्रवत यह मनकी बांछा जानि ॥
क्षुधा पिपासा जराको हैयह बरजनहार । संबत सरपरजन्त यह ईछित देत बिहार ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

राति दीपसम सुमन उजेरी । रहति पुष्पके चहुँदिशि घेरी । जिमि उमा अरु शची सोहाई ।
रम्भादि आदि सुरतिय सुखदाई ॥ पुष्प एक प्रतिसंबत धारैं । सचि सेवहाँ पतिव्रत बिचारैं ॥ श्री

यह फूल कृष्णके करसों। लहेऊ देवि तुम अति आदरसों ॥सांच बचन मानऊ मनमाहीं ।तिय न तुम्हहि सम कोउ जगमांहीं ॥ सतिभांमा आदिक जे रानी । निज सुषमाकी हैं अभिमानी ॥ तिनके सतिभांमा बरमानी । निज सोहागकी सगरब जानी ॥ तुव सोहाग लखि सब सिरैहैं । सतिभांमा सहि हारि लजैहैं ॥ निज सोहागकी इहा तजि तजि। लहिहैं अब सब तियगुन सजि सजि ॥ नारदमुनि हिय कछु अभिलाषें । यह सुबचन रुकुमिनिसों भाषे ॥ आजुहि पतिहि एक जिय आनों । श्रोर तियन कँह न्यारो मानों ॥ सो सुनि सखी सकल मानिनिकी । सति भांमा आदिक रानिनिकी ॥ कही जाय निज निज स्वामिनिसों । गजगामिनि भामिनि कामिनिसों ॥ सो बिरतांत सबै तिय सुनि सुनि। चिन्तित भई चित्तमें गुनि गुनि॥सखियनसों सो सुनि सतिभामा। रूप सील गुन गर्बित बामा ॥ मानि अमान मानकरि मानिनि । ठानि अटास ठानकी ठानिनि ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

भूषन बसन सु अँगसरिस तेहि न्हैसरिस उतारि । प्रबिश्यो कोपनिकेतनें बसन सेत सुचिधारि ॥
तनु अँसुक सुचि सेतसों बेष्ठि भाल शुभदेश। लेपि अरुण चन्दन कियो गोपित बन्धनभेष ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

जभि उसांस लेति रिषि रानी । ज्योंर तरेरि भांति अबदानी ॥ सुमिरि सुमिरि सिरकंपन करि करि । जलपति गिरा रोससों भरि भरि ॥ धरि करतलपें चारु कपोलैंतकि अनिमेष पलक नहि बोलें॥ सुपति सेजपै उठि फिरि सोवै । अति उदवेग दशा संभोवै ॥ आसनि जुरे कमल संपूरण । तजति मसलनसों करि करि चूरण ॥ चरण अंगूठासों महि लेखति । समुझि समुझि अमर पतैं तेखति॥ उतैं कृष्ण प्रभु अंतरजामी । यह बिरतांत जानि महि स्वामी ॥ रुकुमिनिके गृहसों उठि आतुर । पठै प्रदुम्नहि मुनि ढिग चातुर ॥ चिन्तित संकितसे मन भाए । सतिभांमाके आलय आए॥ दुर्खित सत्राजितजाके । लखि अनुभाव भावबर भाके ॥ चंपें चरण चलि आंनद साने। अलिके ओट आइ नगिचाने ॥ अब बजारि बदनपें अंचल । रही सोय तब आतुर चंचल ॥ आइ पिछौरें बीजन लीन्हे ।नैन सैन सखियनकहं कीन्हे ॥ हो जैसें तैसेंही रहहू । मम आगमको भेद न कहहू ॥ रनिकहि कौतुकके रंग पागे। बीजन मंद डोलावन लागे ॥ उत जो पारिजातको पावन । हैं लीन्हे कर कुसुम सोहावन ॥ तेहि प्रभाव शुभ सौरभ नीको।बगर्यो चरनैं मोदह जीको ॥ **

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

तेहि अपूर्बसौरभ सुखद कोअहि घ्राण सुजानि। सतिभाँमा व्है चकित उठि बैठी अचरज मानि॥
यह सौरभ तोहि पुष्पको परतनही पहिचानि । आवत कितसों सखिनसों कहत भई अनुमानि ॥

सखीगण सुनि कृष्णके भय सका न इह कछु भाख। साक सत्यहि भई अपमानित शीश बहियै राखि ॥ ताहि परिमलको प्रभाव तहँ चहूँदिशि चलपेरि। लगी ऐरब सत्यभामा परे प्रभु तब हेरि ॥ लसतहीं जब कमलतें कढि चले अलिजल बूंद। पेखि जेहि श्रीकृष्णके मन कियो मनमथ बूंद ॥ गौरवों करि ल्लोर तिरछें हो रहीं समुदाय। पोंछि मुख धरि पाणि तलपैं रही शीश नवाय ॥ तजतही तिय नैननें जोँ बारि अति अनखाय। पाणि पुटमें ताहि लै प्रभु लए उरमें लाय ॥ बारि हियसों लायके निजप्रेम बर दरसाय। कहे बचन विनीत विधिवत बहे पटुता भाय ॥ प्राणप्यारी हेत केहि अब को कनदतें बारि। तजति हो मन खेदटायक शोच चित सम्हारि ॥ सुरंग बसन उतारि कत धरि सेत सारी वेश। देव पूजन विना बैठिऊ धारि अनुचित भेश ॥ भूरि भूषण रतनके कत धरे दूरि उतारि। सुखद विचरे सेज हठि कत दिहेऊ किनसों टारि ॥ मान दिन लहि आभरण सुभ कृत विनु मृगनैनि। बदन ससिलविभात अति समिमानहे पिकबैनि ॥ पूर्ववत लखि सरस कत नहि देतिहो मोहि मोद। भूलिसी कत गई हो तिय आजु सकल बिनोद ॥ जानि किंकर आपनो मोहि करऊ सूधे नैन। मंजु मन मनभवन मन मव बाणसे अपन्नैन ॥ कृष्णके इमि बचन सुनि इमतनी करि हृयमान। हती न्है हतकाय करि हतहृयको अनुमान ॥ कोप इचिम मोचि हृपिणी नेहकी कमनीय। कृपाकी करि क्रिया बोली करषि मन कमनीय ॥ नेह निजकी निपुणतासों साथ कारो नेह। रहो आनत आजुलों निजनेह सहस अनेह ॥ देखि सुनि परतचसो बह परो अब पहिचानि। बचन कहिवो मधुरसों तुव चातुरीकी बानि ॥ ******

॥ * ॥ दोहा । * ॥

जोपै करऊ सनेह जो है ताको अनुभाव। दत पुरुषके कितव जो ताको बिसद बनाव ॥
सुद्ध हृदय मन ओरसों गहे नेहकी नीति। हमसों भावनहो गहे सहज लोककी रीति ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

सहज नेहहो मोपै जोऊ। अब तुम चोरहि अरपेऊ सोऊ ॥ नाथ हमैं नहि सुखकी देहा। तप करि हैं गहि निर्जन ठोहा ॥ निमु पाए पतिआज्ञा नेको। उचित न तियको तपव्रत एको ॥ पति आज्ञा विनु हठि तिय कोई। करै क्रिया सो निहफल होई ॥ ताते मोहि देऊ अनुशासन। करौं सुचित न्है व्रत उपवासन ॥ इमि कहि नैन बारि भरि प्यारी। तजन लगी न्है महत दुखारी ॥ पतिको पीत बसन नहि भामिनि। ईचि दोऊ करपै धरि कामिनि ॥ बदन सनैन मूंदि सुखदाइनि।

मञ्जु मनोहर भाव सवारनि ॥ तौ लखि कामदानि गुणसागर । बोले सतिभाँमासों नागर ॥ मानि निमानु [illegible] कारण । दहइ गात मम सो केहि कारण ॥ कहि हितिय राउ [illegible] [illegible] । अमिनुष वचन सुधासम ज्ञाविनि ॥ सुनि मतिवचन प्रिया सतिभाँमा । पतिव्रत [illegible] अभिरामा ॥ वच गर भरे हरेलखि बोली । मानदानको कारण खोली ॥ मम सोहाग [illegible] कीन्हे । अब श्रीमतिनिमैं गुरु लीन्हे ॥ मम सोहाग लखि सबै सिहांहीं । सत्या सहश प्रिया कोउ नाहीं ॥ ते सब रही सखिनसों सुनि सुनि । हसिहैं हमहि न्यून अब गुनि गुनि ॥ * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

पारिजातको कुसुम जो अनुपम अति सुखदाय । नारद मुनि तुमकहु दए समुद स्वर्ग ते ल्याय ॥

सो लै तुम वाको दए जो अति तुमहि पियारि । मोपैं रह्यौ पियार सो हियते ध्यारे डारि ॥

॥ * ॥ अथकरीछन्द ॥ * ॥

जब तुम दए सुमन सनमानि । तब मुनि अधिक प्रिया तेहि जानि ॥ किए तासु अस्तुति बहुभांति । सो तुम सुने मोहसों राति ॥ अस्तुति किए करै मुनिराय । तुमहूँ सुने सुमौ गहि जाय ॥ पर मम भाग्यहीनिको नाम । कत लीन्हे नहँ मुनि तपधाम ॥ गौरव तासु न्यूनता मोहि । अरर कहे बहोरि बहोरि ॥ सो तुम सुनो आप अधिकाय । यह दुख मोसों [illegible] ॥ तातें सुनहु कहउ परियाय । देहु निदेश करउ तप जाय ॥ जाति बनमैं कै अति दीन । रहिबो तातें मरिबो पीन ॥ मानसहित नीको संसार । मान गए मरिबो अधिकार ॥ सुनि सतिभाँमाके ए बैन । हँसि बोले प्रभु राजिवनैन ॥ सुनहु प्रिया यह सुमन सराहि । निजकर दीन्हे नारद ताहि ॥ इतनोई मम दोष बिशाल । सुमनहि न बरजि दिए तेहिकाल ॥ छमहु प्रिया मम सो अपराध । मानि लेउ मम बिने अगाध ॥ पुहुप सुपारिजातको एक । ताके हेत गही तुम टेक ॥ तजहु मान देहौं सुखदानि । पारिजातको तरु तोहि आनि ॥ तासु कुसुम लैबै मनमान । बिहरहु कामिनि जथा बिधान ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

प्रियपतिके ए वचन सुनि सतिभांमा सुखपाय । कहतभई हसि नाथसों न्है कै सौम्य सुभाय ॥

[illegible] बिन्दु [illegible] कीनातें ल्याय ॥ [illegible] नाथ तौ अपुनको सांचो नेह लखाय ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

तौ सब तियनमें मम भाविनि । [illegible] दिन [illegible] ॥ तब [illegible]

[illegible]

निपुनाई । सुनि करि हैं सबलोक बड़ाई ॥ कहे तथास्तु कृष्ण शुभकामी । चले चाई घर यदुपति नामी ॥ भई सरस तब मान बिहाई । सतिभामा सखिमुखी सोहाई ॥ सतिभामा यह आनद पाई । तावे कृष्ण समुद्रतट आई ॥ करि निर्तिकाम्य पाक स्नेह चाए । तब तहं प्रभु मुनिवरहि बताए ॥ करि सतकार यथोचित मानद । पूजे मुनि हि कृष्णप्रभु सानद ॥ हेमपात्रसों प्रभु जल ढारे । सतिभामा शुचि पाय पखारे ॥ आसनस्थ फिरि मुनिकँह करिकै । भोजन करवाए मुद भरिकै ॥ करि भोजन मुनि आशिष दीन्हे । सो सुनि दम्पति आनंद कीन्हे ॥ नारद मुनिकी आज्ञा लहिकै । भोजन किए कृष्ण मुदगहिकै ॥ प्रभु निदेश लहि प्रिया सोहाई । भोजन कीन्ही स्नेह चाई ॥ करि भोजन व्है शुचि सुखदाई । राजति भई नाथढिग आई ॥ तदनन्तर प्रभुसों मुनि ज्ञानी । कहत भये एहि विधिकी बानी ॥ अब हम तात शक्रपुर जाहीं । उत्सव बड़ो शक्र ग्रह माहीं ॥ करि शिवको पूजन चित चायक । करिहै अति उत्सव सुरनायक ॥ **

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

पूर्वदिवसमें देइहैं सुमन हमें सुरराज । दिए निमंत्रन चाहिकै उत चलबेके काज ॥
इन्द्रराजको फूल यह वांछितको दातार । सची पूजि सहिनी तिनहि नित्य सोहाग बिहार ॥

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

पति कश्यप कहँ अदिति अराधि । करि प्रसन्न पूरण व्रत साधि ॥ मांगत भई सदा जनु मानि । देऊ मोहि सो मुनि सुखदानि ॥ ईप्सित फल जो देइ महान । पूरब भरे मोद मन मान ॥ सो सुनि करि मारीच विचार । मन्दर गिरिको करषि सुसार ॥ पारिजात तरुराज विख्यात । दिए अदितिको सो अवदात ॥ पारिजात तरुमें गुणखानि । अदिति बांधि पतिके शुभ मानि ॥ दई समर्पि मोहि विधि जानि । पुण्य सोहाग अर्थ अनुमानि ॥ दे पतिको निजव पश्चात । लई छोड़ाय पतिहि सुनुतात ॥ सो तिमि कीन्ही सची सुजानि । करी रोहिणी सो विधिमानि ॥ सुरतरि पार भयो अभिराम । तातें पारिजात यह नाम ॥ मन्दर तरुको सार उदार । तातें नाम भयो मन्दार ॥ कौन दाह यह वृक्षी कोव न मानै कोविदराहि सोय ॥ दिव्यवृक्ष संत सौम्य सुभाव । चेतन चारु पुनीत प्रभाव ॥ एहि विधि पारिजातको सोय । कहि प्रभुसों नारद मुनिदेव ॥ कहे चलन सुरपतिके गेह । तब हरि बोले कृपा सनेह ॥ सुरपतिको हम कहि संदेश । सो सुनि लीजे सुमुनि सुभेश ॥ *****

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

भवन कहेउ सुरराजसो बूझि उचित बेवहार । आपपुकारेऊ भुजाय कहि गए सबुको निरधार ॥
फिरि मम चरण सुरेशसों कहियो सुमुनि सुजान । सिंह होइ जाते करै लीन काहियो सावधान ॥

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

आनंदानि अनंतगुणमय पारिजात अहाम । पूजि तेहि जिमि अदिति कीन्हों ब्रह्म सचीपति दान ॥ तासु पुण्य प्रभाव सुनि मन सत्यभामा बान । चहति तिमि तेहि पूजि कीन्हों सोइ विधि अभिराम ॥ दान पुण्य सुधर्म हेत बिचारिके सुरराज । पारिजात विख्यात तह द्रुत भेजि देहिं सुबाज ॥ पूजि दानविधान करि फिरि पारिजातहि नाथ । भेजि द्रुम देहैं सुनो उत रहतहैं वह यथ॥ नारदा कहि यहसो सुनि किहेऊ सो उतओय। देहिं आने शक सुरतरु अबहिं द्रुत सबलोग ॥ कृष्णके ए वचन सुनि हसि कहे मुनि सिरताज। कहव द्रुम यहभांति पर नहि देहिंगे सुरराज॥शक्रसों एकसमैं मांगे पारिजात सचाव। उमाके प्रियहेत शंकर आपु सुरपुर जाय ॥ सचीके बिश्रामको करि प्रथम तब सुरनाथ। दिए नहिं सो बिने करिके जोरिके युगहाथ ॥ शंभु तब करि कृपा नहि हठि लिए तरुवर तान। चारु मंदरशैलमें तब रचे गिरजा रोन॥कोस युग परमानसों तरुराजको बनवेश । सर्वके किरनामिकी गति है न कछु तेहि देश ॥ उमा शिव यह जवन तेहि वन बिहरहि नित्य बिभात।इनहिं तजि तँह औरको नहि गतागत हे तात॥ भयो तहँ एक समै अंधक नाम असुर अमान । इनतें दशगुण सबल तेहि हते शंभु सुजान ॥दियो नहि जो शिवहि सो किमि तुम्हहि देहै शक्र। उभय ओर बिचारि मोहि यह लगा कारन बक्र ॥ वचन ए सुनि कहे केशव सुनऊ नारद दक्ष । कहे तुम जो बात तामें भेद है परतक्ष ॥ शंभु उनसों बडे हैं नाहदिए तौ न हि दोष । सचीको सुनि व्याज अघु गुनि किए शंकर तोष ॥शक्रके लघु अनुज हैं हम लालनीय सप्रेम । बूझि सब बिधि तोहि यह दिए देहैं चेम ॥कियो पन हम भामसों सो सुनऊ ज्ञाननिकेत । स्वर्गतें तरुराज देहैं आय फूलनहेत ॥ बचन सो नहि व्यर्थ व्हे है सत्य बिस्वेबीय । बचन मिथ्या भए होत सुधर्म छोय मुनीश ॥सुरासुर गंधर्व पन्नग सब हैं न समर्थ। कियोहों पन उप ता को करैं मनसों व्यर्थ ॥जों न देहैं आपुसों हठि पारिजात सुरेश।एक पन तौ करों औरौ सुनऊ सो शुभभेश॥ *⬬*⬬*⬬*⬬*⬬*⬬*⬬*⬬*⬬*⬬*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

तिय प्रियके अनुलेपसों चिन्हित जो उर तासु । मारि गदा तामधि सुनो लैहों सुरतरु आसु ॥
यह सुनि नारद चुपरहे बोले कछु न बेन।सादर प्रभुसों व्हे बिदा गए शक्रके ऐन ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

तहां जाइ आनदसों भेंटे। नारद मुनिवर उत्सव देखे ॥ सुरसमूह करि नमन चरन कमल ।

आवत गान सुपर्व मुदितमन ॥ जब सिव गंधर्व सोहाये। डमरु तुम्बर किन्नर गाये ॥ अपराहि सुरलोक बिहारी । राजे तँह निजपद अनुसारी ॥ बाद्य नृत्य अरु गान सोहायो । अति उत्सव सुरपुरमें छायो ॥ तँह सुरमंडलके मधि पावन । सिंहासन अति उच्च सोहावन ॥ तापै गौरीपति आसीना । देवदेव परब्रह्म प्रवीना ॥ गंदिहि आदिक गण छबिवाढ़े । सेवैं तँह चहुँदिसिमें ठाढे ॥ बहु उपचार शक्र मुद लीन्हे । सविधि शंभुको पूजन कीन्हे ॥ ह्वै प्रसन्न शंकर सुखधामा । शांत सौम्य चलि गे निजधामा ॥ तब जे सब आए हे तेहां । ते ह्वै बिदा गए निज गेहां ॥ सहित सभासद सुरपति सोहे । आवत तँह नारदकहँ जोहे ॥ उठि सहसाक्ष सुमुनि कँह पूजे । आदरसहित करि अस्तुति कूजे ॥ तब सुरपतिसों नारद ज्ञानी । कहत भए एहि बिधिकी बानी ॥ सुनहु शक्र मम बचन सोहाए । हमहिं कृष्ण करि दूत पठाए ॥ कछूकाज हित भूतल स्वामी । सो सुनिए ऐरावतगामी ॥ * * * * * * * * * * * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

नारद मुनिके सुनि बचन शक्र कहे हरषाय । कहुन कहे केशव कहा सो कहिए मुनिराय ॥

सुनहु नरेन्द्र मुनीन्द्र तब कहे इन्द्रसों चाहि । तव लघु अनुज उपेन्द्र प्रभु लखन गए ब्रज ताहि ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

सुरतरुको लै फूल गए हे । सो हम तिन कहं तहां दए हे ॥ अति अपूर्व लखि कुसुम सोहावन । बिस्मित भई तिया सब चावन ॥ पारिजातके गुण मनभाए । अरु उतपति बिधि उन्है बताए ॥ अरु पतिदान बेवस्था जैसी । सबिधि सुनाए सो सब तैसी ॥ सो सुनि एक कृष्णकी बामा । मानिनि पतिप्यारी सतिभामा ॥ सो पति दान धर्म अभिलाषी । पतिसों आंचल भई सुभाषी ॥ अति अभिलाष तियाको जानी । हमसों कहे कृष्ण मृदवानी ॥ नारद तुम सुरपतिसों जाई । मम प्रणाम कहि कहेउ बुझाई ॥ वे मम गुरुभ्राता सुरत्राता । हम उनके लघु अनुज बिख्याता ॥ सुतसम सदा दुलारन जोगू । उपेन्द्र अनुज कहत सबलोगू ॥ अनुज बधू उनकी सतिभामा । पारिजातको गुण सुनि कामा ॥ तेहि लहि दान सुधर्म उछाहू । करि चाहति सो अनुपम लाहू ॥ धर्म हेत अब थोरि दिनाई । बूझि देहि सुरतरुहि पठाई ॥ नारदसों यह प्रभुकी बानी । सुनि बोले सुरपति अनुमानी ॥ सकल प्रश्न केशवसों कहि सुनि । फिरि मम बचन कहेउ नारद मुनि ॥ सुरतरु आदिक जितक पदारथ । मम सो उनको कहउ जथारथ ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

स्वर्गसों कार कारज सकल तिभुवन सहित हुत जाय । भोगी भोगहि बिमल तो सुरहि अहिचाय ॥

अधिक पदारथ स्वर्गको स्वल्प काजके हेत । लै जैबो नरलोकमें अनुचित ज्ञाननिकेत ॥

॥ * ॥ अथचवरीछन्द ॥ * ॥

विरचे वेधा जो जेहि लोक। सकल पदारथ दुख सुख थोक॥ ताही लोक तासु अधिकार। उलटि सबै को सो वेवहार॥ औ हम पारिजात उत तात। भेजि देहि तो सुनि यह बात॥ करता कोपि देहिं मोहि साप। करें सुमनगण निदरि अपाप॥ तातें तात कही मन मानि। कहे बात सो अनुचित आनि॥ उतै पदारथ जितें अदोष। तिनसों भोगि करऊ संतोष॥ इतै पदारथ जे अवदात। भोगिहैं तिन्हें आइ इत तात॥ नारद इच्छा भूमियें आइ। आमिषभोजन किए अघाइ॥ तातें न्है उनमत्त मोटाय। भए पाप रत परौ सुभाय॥ गहे मानुषी बुद्धि सचाय। इतौ बसिभे ज्ञान भुलाय॥ वडे मधुको थोले वैन। कहि पठए तजि लाज सचैन॥ पारिजाततरु नहि पै पाय। महिजन सबै मोद अधिकाय॥ पाइ स्वर्गको फल उत वेस। तजें स्वर्गको ईहा लेस॥ मख तप धर्म करे नहि कोय। तरु प्रभावतें निरभै होय॥ जरा मृत्यु आदिक जे ईति। तिनकी लहे न कोऊ भीति॥ तातें पारिजात सुख दान। नहि देहैं हम महिपें जान॥ *◇*◇*◇*◇*◇*◇*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

मृत्युलोकके जोगहैं जितने वस्तु विभात। भूषन वसन विचित्रमणि सो हम देहैं तात। देव राजके वचन सुनि वोले मुनि परवीन। औसि कहब हम तुम कहे जे ए वचन अहीन॥ तुम सों बूझेंहीं विना हम उतही समुझाय। कहे शक्र दीन्हे न तरु संभुहि विनै सुनाय॥ तब पै बोले शंभु हे गुर नहि कीन्हे रोष। हम सो तरु लीन्हे विना करिहैं नहि संतोष॥

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

कियो पन हम कामसों सो सुनऊ ज्ञान निकेत। स्वर्गतें तरुराज देहैं ल्याय पूजन हेत॥ वचन सो नहि व्यर्थ न्है है सत्य विस्वेवीस। वचन मिथ्या भए होत सुधर्म लोप सुनीस॥ सुरासुर गन्धर्व पन्नग सर्व हौ न समर्थ। कियो हों प्रण उग्र ताको करे बल सों व्यर्थ॥ औ नदेहें आपुसों हठि पारिजात सुरेश। एक मन तो करों औरो सुनऊ सो शुभभेश॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

अनुलेपनसों सचीके चिन्हित जो उरतासु। नारि मदा तासधि सुजो लेहौं सुरतरु आसु॥ सुरतरु लेहें जीति वे जिमि देहो सुरराज। तातें मंत्र विचारि के करो उचित जो काज॥ सुरतरुदीजे कृष्णकहं सधि उचित वेवहार। हित तुम्हार मेम मंत्र यह परम मंत्रको सार॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

नारद मुनिकी सुनि यह बानी । रिसि करि कहे शक्र अभिमानी ॥ जेठो बन्धु सहोदर तोहीं । एहि बिधि कहे कृष्ण जो मोही ॥ तो अब मुनि [illegible] कहाहे । [illegible] [illegible] उपकार बहुत मैं कीन्हे । सबको सो सब हम बहि लीन्हे ॥ जब वृत्रासुर [illegible] भारी । [illegible] शरण पधारी ॥ तब सहाय हित उनहि बोलाए । बूझि कछू नहि तब वे धाए ॥ देवासुर [illegible] भई लराई । तब वे सबेन सम हित आई ॥ कौतुक देखतहैं छिन ठाढे । [illegible] ॥ उनसों भिरे धाइ मय अपहीं । लेरि निदान सुनो वे तबहीं ॥ अर्जुनको [illegible] । मम प्रिय खांडिव बन जरवाए ॥ मम पूजन व्यवहार मिटाये । जो मनसों गिरिवर पुजवाये ॥ धरि गोवर्धन [illegible] । कीन्हे तीन निजपुर आना ॥ और बहुत अब कहँलगि कहिये । [illegible] ॥ हम विरुद्ध मति कबहुन राखो । नारद तुम सबदिनके साखो ॥ अब मम उरमें [illegible] । कहे [illegible] हठि तियके कारण ॥ राजस तामस गुणनहि भाई । तियहित [illegible] ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

राजस तामस काम तिय क्रोधिकहै तपचैन । जामस [illegible] गुरबन्धुहि [illegible] ॥
कश्यपके अरु दक्षके कुलकी जे है रीति । ताहि छोडिके मग गहे नारद सुनहु अनीति ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

कहे बिचारि बचन यह बेधा । जो जगकरता सरस सुमेधा ॥ सहसन सुत तिय [illegible] जगमाहीं । एक सुबंधुसरिस कोउनाहीं ॥ भाइ समान न हित कोउहोई । कश्यप [illegible] ॥ तिनमें सरस सहोदर भाई । करत सदा बिनुकपट हिताई ॥ अब एहि [illegible] । हैं अलवास किए मम त्राता ॥ ए केशवके बचन [illegible] । हैं निजु तिन्हहि सुनावन लायक ॥ निज आननसों निज प्रभु ताई । बडे कहे नहि लाज बिहाई ॥ तदपि प्रयोजनबसि कहि आवै । तातें कछू कहों सति भावै ॥ एकसमै वे धनुष चढाई । [illegible] ॥ [illegible] निसिचर आइ । [illegible] ज्या काटेसि दुखदाई ॥ लगे तीर तब तुरित पधारे । [illegible] सिरन्यारे ॥ तब हम तहँा कृपाकरि आए । तनसों सीस लगाइ जिआए ॥ [illegible] प्रभुता तेहि [illegible] । [illegible] मुदितहैं मनमें ॥ जो मम भाग रह्यो [illegible] । [illegible] ॥ जब असुरनसों भई लराई । तब हमें उन्हे आनि [illegible] ॥ [illegible] जरपिहै राजा ॥ * * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

[illegible] वे मम गेहके अपरकीन्हे गेह । [illegible] हम [illegible] आनि [illegible] ॥ *

पारिजाती अरु मान्य पुढ अरु सरवग्य कलग्य । जानत हैं जे बली उन्हें अब पहिचाने अग्य ॥

॥ * ॥ अथकरीछन्द ॥ * ॥

तब सादर नारद मुनिराय । कही कृष्णसों एहि विधि आय ॥ मङ दिग जाहि नभ्यान अपराध । अब नहि समय नेकु चल बाध ॥ ताते भावे अब मननाहिं । तब चढि गरुड़ जाय सुरपुरमाहिं ॥ वज्रिसे मारि लेहि वे आय । चक्रतान वा गदाचलाय ॥ नापोके हम बाहर कृत । जेहि प्रकार बनि आवहि तत ॥ लरब जयेष्ठ प्रीति सब नाहि । गुरता लघुता न्यारे राखि ॥ बिनु जीते नहि दे हैं तात । पारिजातको आधो पात ॥ इतनो उनधों कहेउ सुभाय । मनि तरुवर लै आहि चोराय ॥ सुनि महेंद्रके बचन अमान । बोले नारद मुमुनि सयान ॥ सुरपति तुम सब विधि मतिमान । सुनो कहे जो हम व्याख्यान ॥ बंधु बिरोध न नीको होय । यह करि लहोन आनंद कोय ॥ सुबुधि अरम्भै कारज सोय । जाको अन्त सो पावन होय ॥ एहि कारजको अन्त मलीन । करि विचार देखो परवीन ॥ कारण रूप जौन प्रभु एक । परें प्रकृतिसों किए बिबेक ॥ अगुण अव्यक्त जाहि कहु बेद । तासु व्यक्त जो भ्रम अभेद ॥ जगजतपनि कर जे सुनु जिष्णु । तासु आतमा है प्रभु बिष्णु ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

जीव आतहैं जहां लों तिन में चेतन रूप । पावन आत्मा आपुहैं न्यामक विष्णु अनूप ॥
परा प्रकृति अव्यक्त जो व्यक्त रूपहै तासु । गिरिजा सीता रुकुमिनी नाम प्रगटहै जासु ॥
करि ताको संसर्ग ह्वै सगुणी निगुणी जौन । करै चाहि कारज सुनो विविधि भाति के जौन ॥
नारायण अव्यक्त सो करि सुव्यक्त निज अंश । रुद्र विष्णु ब्रह्माहि रचे सगुण सरूप प्रसंश ॥
कहो रुद्र अरु विष्णु सों गुणो न कछु विशेष । प्रभव प्रभावन एक हैं नाम दोय ह्वै भेष ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

आपु विष्णु तजि खेद जाने मे तुव लघु अनुज । सुनऊ यक्त सो भेद सावधान ह्वै सची सह ॥
अदिति रेखि अनुमानि निष्कृति सर्वबिधि अराधिकै । बरमाग्यो सुखदानि तुमहि सहश सुत हों लहों ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

[illegible] कहे विष्णु पाइ बानी । जेहि संज्ञा को इतिय सयानी ॥ मै निज अंस तोर सुत होंहौं । सुन्दर रूपनी आनद ह्वैहौं ॥ एहि विधि भए विष्णु तव भाई । भए न जननि कर्म वसि आई ॥ [illegible] गर्भ अदितिके आए । कश्यप सुत उपेंद्र कहाए ॥ तुव हित विष्णु रूप बड़ धारे । प्रबल दैतके इन्द्र सँहारे ॥ बलिहि छले प्रभु तुव हित लागी । पर उपकार धर्म अनु रागी ॥ जग उपकार हेत [illegible] । भए कृष्ण ही [illegible] ॥ अच्युत अव्यय अरु अनन्त तहै । न्यामक

व्यापक त्रिपुरकान्त है ॥ तातें पुज्य कश्यपहि मानो । मनमें आपपु मति अनुमानो ॥ हिए तोषपनहि राष विहाई । सादर सुरतरु देऊ पठाई ॥ सुनि मुनि बचन सुराधिप बोले । भुजबल बज्र बिलोकि अतोले ॥ तासु प्रभाव सुमुनि तुम भाखे । सो सब हम पहिले सुनि राखे ॥ बह याते कछु अधिक सुने हैं । ताही ते नहिं देन गुने हैं ॥ महत प्रभाव पुरुषजे ज्ञानी । कसिम धरैं ते ईर्षा आनीं ॥ महत पुरुष वै तरुके कारण । नहि क्रसि करि करिहैं धनुधारण ॥ क्षमाशील सत पुरुष सुज्ञानी मानहि सुनि बृद्धनकी बानी ॥ *✱*✱*✱*✱*✱*✱*✱*✱*✱*✱*✱*✱*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

परम पुरुष अगरइमवे रिसि करि तरुके काज । करिहैं बन्धु बिरोध नहि यह निहचे मुनिराज ॥
यह बिचारि निहचिन्तरहि तरुवर हम देहैंन । सुनि बिचार करिये सुमुनि और कहैं जो बैंन ॥

* ॥ चौपाई ॥ * ॥

जिमि मम अब नीको बर देकै । भए सुरनवे आनद लेकै ॥ तेहिं बिधि जेठ बंधु मोहि जानी । राखैं मान उचित अनुमानी ॥ जो असो करिबो हो उनको । तो जेठा किन किए अपुनको ॥ ए बातें सुरपतिकी सुनिकै । नारद मुनि भविष्य कछु गुणिकै ॥ ह्वैकै बिदा मोदसों हाय । सादर द्वाराबतिपुर आय ॥ गे तहँ जहां सहित सतिभांमा । बैठे हैं प्रभु प्रिय अभिरामा ॥ आवत नारद मुनिहि निहारी । उठि चलि तियसह कृष्ण सुखारी ॥ बिधिवत मुनिको पूजन करिकै । बैठाये आनदसों भरिकै सुखासीन नारदसों मानद । बूझे बिहँसि कृष्ण प्रभु मानद ॥ उनके बचन प्रलाप सोहाय । पृथक पृथक सब सुमुनि सुनाय ॥ सो मुनि बोले कृष्ण बिसारद । अमरावती जाय हम नारद ॥ इमि कहि सुमुनि समुद तट आई । न्हाइ सुमुनिसों कहे बुझाई ॥ नारद कहेउ इंद्रसों जाइ । मतिहठि हमसों करहि लराई ॥ मम सन्मुख ह्वै करैं लराई । असे समरथ नहि सुरराई ॥ नाहक लरि मति होहिं हसाई । सादर सुरतरु देहिं पठाई ॥ सुनि ह्वै बिदा जाइ मुनि भाए । सुर पतिसों ए बचन सुनाए ॥ *✱*✱*✱*✱*✱*✱*✱*✱*✱*✱*✱*✱*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

बहुत भांति मुनिबर कहे नहि मानी सुरराज । तब सुरपतिसो ह्वै बिदा अनतरगे मुनिराज ॥
बरने या अध्याय मैं सतिभामांको मान । कृष्ण भक्त नारद सुमुनि कोसम्वाद बिधान ॥

इति श्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणआज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशीवासि गोकुलनाथात्मजेन गोपीनाथेनकविना बिरचिते हरिवंशदर्पणे नारदसम्वादोएकविंशोध्यायः ॥ *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

नारद मुनिकी करि बिदा शिघ्र जीवपैं जाय । समाचार सब कहत भे सुनि गुरु रहे सुभाय ॥

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

धरि कछु पाय चिन्ति सुरपतिसों। कहे वृहस्पति इमि रिसि अतिसों॥ अहो सुरेश न तुम भल कीन्हे। प्रथमहिं मोंहि बूझि नहि लीन्हे॥ शक्र अरम्भेहु काज अनीको। आसु अन्त दुखदायक जीको॥ कर्मज कछु भवितव्य सुरेशा। प्रेरि कहेसि जो यह उपदेशा॥ ब्रह्मलोक छाड़ि गए विहारण। भयों इतो अनरथको कारण॥ साहस करिकै बिना विचारो। कियो काज दुखदानि उचारो॥ यह सुनि कह्यो शक्र सुनि लीजै। भए काजको शोच न कीजै॥ होइ प्राप्त जब जो व्यवहारा। बुधोजन ताको करैं विचारा॥ तातें अब जो करिबेलायक। सो करि कृपा कहो सुखदायक॥ दशसताचकी सुनि यह बानी। शोष नवाइ चिन्ति गुरुज्ञानी॥ अब तो खरिबेइको कारज। सहित जयन्त लरेउ लखि आरज॥ इमि कहि शक्रहि गेह पठाए। आपु शीघ्र चीरधि मधि आए॥ तँह हे कश्यप अदिति सोहाए। समाचार सब तिनहिँ सुनाए॥ सो सुनि कश्यप रिसिसो भोई। कहे कर्म फल निहचै होई॥ गौतम घरणि अहिल्या नामी। सो जो किए कुकर्म कुकामी॥ ताको शान्त विधान विचारी। हों जलबास करौ व्रतधारी ॥ *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

कहे वृहस्पति अब करौ मुनि कछु उग्र विधान। कर्मज फलके प्राप्तिको समै आइ नगिचान॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

तंह देवास्तुति शिवको कीन्हे। ह्वै प्रसन्न शिव दर्शन दीन्हे॥ दरशन दै करुणाके सागर। औ हर ठरण सुदानि उजागर॥ बोले कश्यपसों जगस्वामी। देवदेव प्रभु अन्तरजामी॥ मंजु तुम्हार मनोरथ जानी। कहैं सुनो कश्यप गुरुज्ञानी॥ जाइ इन्द्रके गृहमधि संप्रति। करउ बास तुम तपविधि दंपति॥ मेहि प्रसाद तंव सुत सुख साजिहि। चिरंजीव ह्वै सुरपुर राजिहि॥ बर लहि कश्यप दम्पति भाए। शिवहि नौमि तुर सुरपुर आए॥ प्रातहि कृष्ण नित्यकृति कैकै। संग प्रद्युम्न सात्यिकिहि लैकै॥ मृगया मिसि रथचढि धनुधारी। रैवत गिरिपैं गए विचारी॥ तँह सात्यिकि सह सरस सुखारे। चढे गरुडपैं आनद धारे॥ दारुकिको यह दिए निदेशा। तुम रथ लै इत रहो शुभेशा॥ नभग रथस्थ प्रद्युम्न कुमारहि। संग लाइ बरबीर उदारहि॥ चलि दिवदिशि आयुधसो भेखे। नन्दन जाई शक्र बन देखे॥ तहां देवजोधा भट भारे। नन्दन बनके हे रखवारे॥ ते लखि भाँकि कछु नहि भाखे। पारिजात लखि प्रभु मुदराखे॥ मूल सहित सुरतरुहि उखारी। राखि गरुडपैं कृष्ण विचारी॥ * * * * * * * * * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

मन्द मन्द चलि दन्दहर नन्दनन्द समेत। परदक्षिन लागे करन सुरपुरकी सहहेत ॥
तदनन्तर सुरवनके रक्षक सत्वर धाय। समाचार यह कहत भे सुनासीरसों आय ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

सो सुधि सुनि सुरेश रिसि भरिके। चढि ऐरावतपैं धनुधरिके ॥ सब रक्षक अयगाहि सोवै। चले कृष्णपैं हियो अभयके ॥ पूरवद्वार कृष्णकहं देखी। कहे पुरन्दर अन्दर तेखी ॥ केशव कौन कर्म यह कीन्हे। ब्है अभरम मम मरम अचीन्हे ॥ सुनि हँसि प्रभु धीरजकी अतिसो। कहे गौमि एहि बिधि सुरपतिसो ॥ दानधर्म सुनि भई उछाही। अनुज बधू तव यह तरचाही ॥ ताके हेत सुनहु पविधारो। लए जात हम यह तरुभारी ॥ शकु बचन सुनि शक्र रिसाई। कहे न इमि कौ भए बडाई ॥ लरि मम उरमैं गदा लगाई। तरु लैजाव कहे तुम भाई ॥ लरि मम उरमैं गदा प्रहारी। तब सुरतरु लै जाहु सुखारी ॥ सुनि प्रभु एक सुवाण निकारे। ऐरावत गजवर कहं मारे ॥ तबै सुरराज एक इषु चोखो। गरुडहि मारे अनल अनोखो ॥ केशव शर सुरपति कहं मारे। शरसों कृष्णहिं शक्र प्रहारे ॥ बिष्णु हि जिष्णु जिष्णु कहं बिष्णु। मारण लगे बिष्णु कहँ जिष्णु ॥ दोउ रणकर्कस धर्कस धीरा। दोऊ बर कर्कस धकस वरवीरा ॥ धनुधिवि निहित बाणवर प्रेरे। बीरशब्दसम रोषित टेरे ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

जे शर मारे कृष्णते छेदे शक्र सुजान। जे इषु मारे इंद्र ते काटे कृष्ण अमान ॥
जिष्णु बिष्णुके धनुषके टंकारणसों पूरि। रह्यो स्वर्गमोहित भए दिववासी बसिभूरि ॥

॥ * ॥ तोमरछन्द ॥ * ॥

तँह मचो संगर घोर। सुत शक्रको सह जोर ॥ रथ हांकि नीरे आय। तरू लियो चाह्यो धाय ॥ प्रभुकी सुआज्ञा पाय। तँह चलि प्रद्युम्न सचाय ॥ रथ हांकि आडे आय। शर हनो ताके काय ॥ तेहि लखि जयन्तौ कोधि। शर तजे मंचन सोधि ॥ ते बिशद बीर महान। बहुपठे धनुष बिधान ॥ तँह तजे बाण अमान। जलबूंद मेघ समान ॥ तँह सुमन जनगण सर्व। जुरि लखैं युद्ध सुपर्व ॥ हो प्रवर नामक एक। भटविकट पालक टेक ॥ सो पूर्व ब्राह्मण जाति। करि उग्रतप सुद राति ॥ वर पितामहसों पाय। वह ह्वै अवध्य सचाय ॥ तजि भूमि सुरपुर आय। भो देवदूत सुकाय ॥ सुरराजको प्रिय मित्र। सो धनुषधारि विचित्र ॥ गुणि सुनासीरहि देन। भो रक्षका सुरतरू सेन ॥ तिमि देखिकै सब ताहि। इमि सात्यकीसो चाहि ॥ कहि रए ... ताड। तुम करउ वारण आसु ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

यह यह ब्राह्मणजाति है रोकेउ रोष अनान। निरदय होय मति मारियो याके तनमें बान ॥
सात्युकि भट मकरध्वज तँह प्रभु आज्ञा हित आनि। डाटत भे परप्रवरको शीघ्र शारवनि तानि ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

तब भट प्रवरक्रोध हिय भारे। साँठवाण सात्युकि कँह मारे॥ सात्युकि शरसों ताधनु छेदे। फिरि मारो इमि कहे अखेदे॥ हे ब्राह्मण चलु द्विजके पथपें। मति हठि पांव राखु अनरथपें॥ ब्राह्मण जानि क्रोध मैं वारों। प्राण हरण शर तोहि न मारों॥ यह सुनि कहे प्रवर मुसुकाई। क्षमा छोडि अब करउ लराई॥ क्षमा युद्धमें कादर करहीं। हियसों हारि व्याज विधि धरहीं॥ यामदग्निसों शर विधि शीखो। मैं धनुधरमें पहिले लीखो॥ केशवके भय सुरगण कोई। लरैं न सुरपतिके संगहोई॥ सखा शक्रको विदित कहायो। निरभय हो तातें चढि आयो॥ अब मति क्षमा व्याज करि बरजु। लोभ जीवको तजिकै लरजु॥ इमि कहि धनुधरि धनुधर धायो। सात्युकिपैं बर बाण चलायो॥ तब सात्युकि अतिरिससो पागे। तेहि बाणनसो मारण लागे॥ तेहि सात्युकि सात्युकिकँह सोई। मारन लगे बाण रिसि भोई॥ मारहिं कोटहिं डाटहिं मारैं। प्रबल प्रबीन प्रशंसि प्रचारैं॥ भांति भांतिके शरदोउ छाडैं। बीचहिं तिन्हे शरनसों आडैं॥ एहि विधि ते अति उग्र लराई। कीन्हे सो नृप बरणि न जाई॥ * * * * * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

वीर जयन्त प्रदुम्न तँह करिकै युध्द अघात। पूरि दिए नभ बाणसों कहे कहांलों तात॥
इंद्र उपेन्द्र तने दोउ बरणे बीर अमान। निज निज जयइच्छुक सुभट शीलक धनुष विधान॥

॥ * ॥ महिवरीछन्द ॥ * ॥

तँह आनि प्रबल प्रदुम्नको मघवानको सुत रिसिभरो। भो दिव्य अस्त्र अमोघ छाडत चपल आतुर बलखरो॥ लखि रुक्मिणीसुत ताहि आवत दिपत तेजविशालसो। क्षण एकलो तेहि मगहि रोके सुभट निज शरजालसो॥ फिरि दिव्य उग्रप्रभाक शस्त्र प्रदुम्नके रथपैं गिरो। जार बयो रथ पर वासु तेज प्रदुम्नके तन नहिं भिरो॥ नहिं दहति अंगिनिति अग्नि अगिनिहि भेद याको यह गुनो। हो विरथ बीर प्रदुम्न बोले शचीसुतसों इमि सुनो॥ नहिं जीति लहिहो छांडि तुन एहि भांतिके शर अधम हे। नभि छुवन पैहो सुतरको दस कोटि विधि करि बह सहे॥ यह सुनि जयंत रिसाय जारे जारि शर मन्त्रित किए। ते जाय चारिउ दिशि प्रदुम्नहि घेरि तंचित रिलि कए॥ तब पुरुषसिंह प्रदुम्न शरसों काटि उनको शरदए। शर काटि डाँटि विशाल बाणनि विहसि तेहि मारत भए॥ तकि उन्हहि वेंवे उन्हहि प्रति तकि बाण बर अनगिन तजे। सर मारि काटि बचाय भार सरस सुषमासो सजे॥ * * * * * * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

वीर जयन्त प्रद्युम्नको उद्ध युद्ध मह चाहि। साधु साधु कहि सुमनभि प्रमुदित तिन्हें बरसाहि॥
महारथी सात्यकि सुभट प्रवर वीरको डांटि। शरसों ताको धनुषकी दई प्रत्यंचा काटि॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

तब भट प्रवर दुतिय धनु गहिकै। अब बचाउ सात्यकिसो कहिकै॥ सात्यकिको धनु काटि सुखारे। शीघ्र बाण अगनगनि मारे॥ सात्यकि शीघ्र दुतियधनु धारे। शरसों प्रवरहि बेधि प्रचारे॥ गहि बर अष्टधार शर चोखो। ईडलखा भट प्रवर अनोखो॥ सात्यकि भटके इषुको शासन। छेदि हनी तेहि तीनि शरासन॥ फिरि सात्यकिहि लेत धनु देखी। मारेसि गदा प्रवर अति तेखी॥ तब सातकुकी शरासन लीन्हे। खड्ग चर्मलै सनमुख कीन्हे॥ काढि खड्ग तब प्रवर प्रबोरा। तजन लगो शर प्रदप अधीरा॥ तब प्रद्युम्न चंचलता लीन्हे। निज सुखड्ग सात्यकि कह दीन्हे॥ मारि भल्ल तब प्रवर अखेदे। सोउ खड्ग मूठिढिग छेदे॥ फिरि प्रवर सात्यकिहि प्रचारी। बरजो शक्ति हृदय मधि मारी॥ तदनु सात्यकि हि मुरछित देखी। सुरतरु लेन चलो मुद भेखी॥ खगपति प्रवरहि आवत हेरे। पवन मारुत तापैं प्रेरे॥ तातें रथसह प्रवर उडाई। मुरछित परो कौसयुग जाई॥ तेहि जयंत तहँ जाइ उठाए। रथपैं डारि समरमहि ल्याए॥ मुदित प्रद्युम्न गरुडपैं आए। करि उपाय सात्यकि हि चेताए॥ * * * * * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

सुरतरुके दक्षिण तरफ रहे प्रद्युम्न सुबीर। लसे सात्यकि बांमदिशि विशद वीर रणधीर॥
सखापुत्र जानस्थको बांये दहिने राखि। कहे शक्र मति लरहु मम युद्ध लखहु भयमाखि॥

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

इमि कहि तिनसों शक्र सनेह। मारे बाण गरुडकी देह॥ तब खगराज रोस बिसतारि। भिरे गजाधिपसों मुद धारि॥ रद कर मस्तकसो गज राज। नील नखन पक्षन खगराज॥ मारन लरन लगे अति कोपि। दोउ प्रबल प्रलैं आरोपि॥ किए मुकुतंक युद्ध महान। तब अति कोपि सुपर्ण अमान॥ मर्ख अंकुश अति कठिन कराल। मारत भे गजपतिके भाल॥ तातें ही व्याकुल गजराय। मूछित परे भूमिपैं आय॥ पारिजात शिरपैं सह जिष्णु। आए तलहों सगरुड विष्णु॥ ऐरावत जब भये सचेत। तब सुरनायक सत्व निकेत॥ अतिसै प्रबल गरुडको लेखि। मारन लगे बज्रसों तेखि॥ जितने बज्र हने सुरराज। तितने पंख तजे खगराज॥ बज्र बज्रप्रति एक एक पंख। अमित प्रभावहि तजे सुपंख॥ लहि अमान खगपतिको भार। सो गिरि दबिगो भूमि मझार॥ बाहेर रह्यो कछु जब शेष। तब गिरि आरत धरिके भेष॥ कीन्हेसि बिनै कृपासों चाहि। तब प्रभु वारि आश्वारित नाहि।

खगपतिको। यह दिए निदेश। तुम जहि यौं रहौ नभदेश ॥ प्रभुकी आज्ञा पाइ दिआल। अन्तर्हित [illegible] ॥ तब प्रद्युम्न कंडपुरी पठाय। निजरथ पीछे लाय लगाय॥ रथकछुक [illegible] नहि [illegible]। [illegible] आपु चढे प्रभु आय॥ सात्युकि औ प्रद्युम्नहिं भाखि। शोभित किए [illegible] ॥*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

सात्युकि सहित प्रद्युम्नवर बलपति परमा पूरि। रथके पीछे चलतभे हिय भरे [illegible] ॥
सुन्दर प्रभु ने जाँहि रथे सुरपति सहित गजेंद्र। [illegible] फिरि चले करत नवीन्द्र [illegible] ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

आतिहि अमित गजेंद्रहि देखी। कहे इंद्रसों कृष्ण सुभेखी॥ करि खगपतिको किय प्रचारा। है अतिबलित गजेंद्र उदारा॥ करि नहि सकै कछू पुरुषारथ। तात सुनहु हम कहैं यथारथ॥ ताते युद्ध निवारण करिये। संध्या भई हृदय अनुसरिये॥ सिमि गजपति अस बोलहिं बिचारी। फेरि भोर चढि करब लराई॥ कोटि प्रनाम सहमंत्र दिखाइ। पुष्करतट उतरे दोउ भाई॥ [illegible] अदिति लोहाए। सुर मुनिगण बहु सुख तहँ आए॥ पारिजात गिरिपर विश्रामा। [illegible] प्रभु आशिष कामा॥ मेरु सुमिरिते बाधा महिमा। होइहि पारिजात तव महिमा॥ [illegible] प्रभु निशाशेष [illegible] कीन्हे। आवाहन सुरसरिको कीन्हे॥ आइ तहां सुर सरि शुचिधारा। महिमा जासु अनूप अपारा॥ [illegible] करि चयनतान मनावन। किए शंभुको बहु आवाहन॥ प्रगट भए तहं त्रिपुरारि कूजन। विधिवत तासु किए प्रभु पूजन॥ गंगोदक दल बिल्व चढाई। वेदास्तुति बर कहे बनाई॥ वेदास्तुति सुनि शिव सुखदाई। ईश्वर दक्षिण हाथ उठाई॥ प्रभुहि दए बरदान [illegible]। [illegible] प्रभु अति आज रुपाए॥ *◆*◆*◆*◆*◆*◆*◆*◆

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

[illegible] कहे शंभु अभिराम। होइहि इत मम मूर्तिवर बिल्वोदक यह नाम॥
[illegible] विषय इत आवे तुम जौन। सुरसरि सरि इत रहिहि यहि नाम [illegible] तौन॥

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

जे [illegible] तीनि दिन इत न्हाय। पूजिहैं बिल्वोदकहि [illegible] करि सुत पाय॥ [illegible] ते [illegible] पाय। [illegible] कहि कहे फिरि शम्भु [illegible]॥ [illegible] तरे [illegible] पहुन [illegible]। [illegible] चलत हैं [illegible] कारक तरु॥ [illegible] निशि [illegible] भए [illegible] ते [illegible] नरत [illegible]॥ [illegible] पति [illegible]। [illegible] आपन हैं [illegible]॥

मघु इमि कहि जात भे तब कृष्ण प्रभु अनुमानि । पारिजात सुमेरसों इमि कहे यानदजानि ॥ सुमन श्रेष्ठ तव अध वसत दुष्ट सुरारि । करउ तिनके नाश जिमि हम कहहि यल निवारि ॥ सीहिल मल दानवनि तुम देहु दलमकि दाबि । वास मम तव उपरि रैहै नित्यहे मेवाबि ॥ शिला सो तव मूर्त्ति मम रचि पूजि हैं जे जानि। पाइ हैं चितह्चित फल रहि मुचित ते सुखदानि ॥ पारिजात गिरिंद्रकों इमि दै निदेशु सुकाम । सौरि सौरि सगौरिकों चढि सुरथपै अभिराम ॥ आय पुष्करतीर मध्यहि भए टेरत घोर । टेर सुनि रथ चढि भिरे बढि पाकशासन घोर ॥ रणी अरवरी सुरनके मुख पयो पूरण क्रुद्ध । सुद्ध अथके लुब्ध ते तहँ किए उद्धत युद्ध ॥ सर्वरि बहुभांति भई वाणित दिशनि जहँलगि छोर । घोर धनुटङ्कारकों इमघोर भरिगो शोर ॥ देखि वेधा करे कश्यप अदितिसों मुसुकाय । आय वर्धित युद्ध वारहु सुतन कहँ समुझाय ॥ मानि रथचढि शीघ्र दम्पति तेजपुञ्ज उकाढ । जाय इन्द्र उपेन्द्रके भे मध्यमहिमैं ठाढ ॥ देखि मातहि पितहि रथन उतरि ते तजि मल । नौमि विधिवत गए चलि वैं खरे हैं तहँ यत्र ॥ **⁂**⁂**⁂**⁂**

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

गहि कर तिनके अदिति इमि कहत भई मुद पूरि। सोदरह्वै कोउ लरतहै एहि विधि भरिरिसिभूरि॥
मानि वचन मम क्रोधतजि सङ्ग निरायुध जाय। न्हाय आय द्रुत करहु सुत जो हम कहैं बुझाय ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

मातु वचनसुनि ते सुख पाए। जाइ समुद सुरसरिमैं न्हाए ॥ करत यथोचित बातैं भाई । पितरपास आए दोउभाई ॥ सो प्रियसंग प्रणाम शुभेशा। तब सो भयो सुनो मनुजेशा ॥ तब सब सुर सुरपुरकहँ उमारे। चढि चढि आनन सरस उजमारे ॥ कश्यप अदिति सक्र युक्तायक । एकाजानपे चढि मुददायक ॥ आय शक्रके सदन सुखारे। अदिति चित्र रजनीश निहारे ॥ पेखि सची अति आनद लीन्ही । सासु ससुरको पूजन कीन्ही ॥ तेहि दिन तहँ निवास करि नीके । सादर सह परिवार विनोदे ॥ भोर भए कश्यप गुरुज्ञानि । कहे कृष्णसों इमि अनुमानी ॥ सुमक तात सुरतरु लै आइ । करउ जाइ विधिवत उतसाह ॥ फिरि सुरेश इत निकट पठाई। सदा सनेह रहेउ दोउभाई ॥ इमि कहि विदा कृष्णको कीन्हे । चले कृष्ण अति आनद भीने ॥ चलतीबार सची करि रोचित। दीन्ही भूषण वसन यथोचित ॥ सो सुरपतिसों विदा लै जाय । प्रभु रैवतगिरिवरपहँ आए ॥ राहि तहँ सुरतरु सहित शुभेशा । सात्यकिकहँ इमि दिये निदेशा ॥ तुम अब शीघ्र द्वारिका जाई । मोहउ यह विरतान्त सुनाई ॥ *⁂*⁂*⁂*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

पारिजातको करब हम नगरप्रवेश न आजु । ता दिन सब पुरजन करहि मंगल उतसव साजु ॥

प्रभुहिं प्रस्तुति [illegible] द्वारावतिमें जाय। ब्रह्मादिक सबकहं दए सबविधि तात सुनाय॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

सुनि यदुबंसी अति सुखपाए। पुरजन परम मोदसों छाए॥ घर घर मंगल बाज सुबाजे। बंदनवार मनभाए साजे॥ सांबहि आदि कुमार सुखारे। यदुबंसी पुरजन मुदधारे॥ चढ़ि [illegible] गज रथ अश्वनि धाए। सात्यकि के संग प्रभुपहं आए॥ यथाउचित सबसों मिलि स्वामी। [illegible] सुदर्थे अन्तरजामी॥ पारिजातसह खगपति पाछीं। चढ़ि प्रद्युम्न मोदे मनमाहीं॥ एहि बिधि पुरप्रवेस प्रभुकीन्हे। लखि पुरजन अति आनंद लीन्हे॥ पारिजातकहँ लखि मनभाए। जेजन जो चाहि सो पाए॥ प्रभु निजग्रहमें आइ अनंदे। पितु जननी गुरजन कहं बंदे॥ रामहि आदिक जादव जितने। मिले उचित जिमि मिलबो जितने॥ फिरि प्रभु निज [illegible] आई। सतिभामासह गे सुखदाई॥ कामरूप तरुवर कहं सानंद। सतिभामाकहँ दीन्हे मानंद॥ पारिजात तरुवर लखि आंगा। भई परम मोदित सतिभामा॥ तब प्रभुदान हेतुकी सामा। संपादित [illegible] किए ललामा॥ दानग्रहण हित आनंद लीन्हे। आवाहन नारदकर कीन्हे॥ आनि हेतु नारद तहँ आए। पूजि यथोचित प्रभुबैठाए॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

भोजनादि बेवहारकरि दान पतिग्रह हेत। मुनिहि निमंत्रन दिएप्रभु बुधिबल ग्यान निकेत॥
[illegible] करि आतपी हेमकूट मय रत। भूषन बसन सुधाब्यके बिरचे कूट सयत्न॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

पतिब्रितेप्रतहि तब सतिभामा। लेबिचित्र कुसुमन की दामा॥ पारिजातमें कृष्णहि बांधी। प्रमुदित मंजुमनोरथ सांधी॥ सकल पदारथ सह मुद लीन्हो। सविधि समर्पि सुमुनि कहँ दीन्हो॥ [illegible] ले मुनि अभिलाषे। हास्यबचन बहु बिधिके भाषे॥ तिय अधीन पिय सुनि [illegible]॥ अब यह बचन साच हम जाने॥ बांधि गरे तव पुस्पित गुणको। दीन्ही सत्य जोति अपुनकों॥ अबप्रभु केशव मम आधीना। चलाउ संग मम सुमङ प्रबीना॥ एहि बिधि कहि प्रभुसों [illegible] सतिभामासों कहे सुबानी॥ सतिभामा अब निज पति सोइ। [illegible] हि सो है॥ कपिलागऊ सवत्सा चारू। कृष्णांजिन तिलपूर्ण सिंगारू॥ सोदे सति[illegible] मुदद्दीनो [illegible] पतिहि प्रेम सोराती॥ [illegible] तब दानद मानद। प्रभु बोले मुनिवरसों [illegible] नारद [illegible] बर मनभावन। सो अब तुमहि देहिं इत पावन॥ सुनिमांगेमुनि [illegible] अब [illegible] गवनि गति पावनि॥ जनम [illegible] निज [illegible] गोसाई। होउ [illegible] अबकी नाई॥ [illegible] तब कृष्ण उचारे। सुनि नारद से परम सुखारे॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

द्वारावतिपुरको गए तिन्है सतिभामा महि मोद । ज्योतिं बलाएहीं मिले त्रिभुवन हत विनोद ॥
एक एक तिन कँह दए सानद सुभद सुभेस । भूषण बसन विचित्र जे दए सचीके वेस ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

कृष्णचन्द्र तहँ रेवति बखाए । लखन हेत आनदसौं छाए ॥ पारिजातकी विषद विभूती । अनुपम अपूर्व अनूप अकूती ॥ सुभद सुभद्रा कुन्तारानी । सहित द्रोपदी पाण्डव ज्ञानो ॥ भीष्मक आदि सहित जे राजा । तिन्है बोलाय लए महसाजा ॥ यदाकाल प्रभु तिन्है रमाइ । कीन्हे विविध प्रीति दरसाई ॥ पारिजात अनुपम सुरसाली । सम्वत्सर प्रमाण तहँ राखी ॥ गए स्वर्ग ले आपहि विचारी । कृष्णचन्द्र चातुर नंथचारी ॥ वन्दि अदिति कश्यपके पावन । शक्रहि दए देव कहपावन ॥ कश्यप अदिति सु आशिष दीन्हे । सुनि केशव अतिआनंद लीन्हे ॥ कुण्डल यह किरीट छबि छाये । दए कृष्णकँह शक्र सोहाये ॥ कहे शक्रसों प्रभु अनुमानी । देवराज सुनिये मम बानी ॥ पारिजात गिरितह जनमारी । हे राक्षस सुरगणके बारी ॥ करण तासु हम बध धनु धै के । तब तुम प्रवर जयन्तहि लैकै ॥ तेहि गिरिके जरध नभचारी । रहियो खरे खरे धनुधारी ॥ इमि कहि माधव निज पुरआइ । वधे जाइ राक्षस समुदाइ ॥ फिरि पुरआइ मोदहिय महिकै । किए विहार पूर्ववत रहिकै ॥ *◆*◆*◆*◆*◆*◆*◆*◆*◆*◆*◆*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

बरने एहि अध्यायमें पारिजातके हेत । किए युद्ध जो कृष्ण अरु शक्र सुरव्यनिकेत ॥
पारिजात गिरिराजपैं जेहि विधि भयो मिलान । सो कहि कहे यथा करी सतिभामां प्रतिदान ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

पारिजात लै जाय प्रभु दे आए शक्र कहँ । सो कहि कहे सुचाय तरतुअबिना न पुर रमन ॥ इति श्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणसिंहाज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशीवासिगोकुलनाथात्मजेन गोपीनाथेनकविना विरचिते हरिवंशदर्पणे पारिजातहरणोनाम द्वाविंशोध्यायः ॥ * ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

वैशम्पायनसों कहे फिरि जनमेजय भूप । मुनिवर तुम सर्वज्ञहो तप बर परम अनूप ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

व्यासहि प्रिय शक्रसुत गुरज्ञानी । सुखदायक कथा प्रियबानी ॥ सुनि तव वचन अनुपम अमृत । बल उत्पत्ति तात अब कहहु ॥ सुनि भूप तिके वचन अमोले । प्रेम पूरि मुनिवर इमि बोले ॥

व्रतविधि प्रथम उमा उपजाई। सविधि सुनहु सो नृप मनभाई ॥ षडपुरस्थ दनुजनकहँ मारी। जब प्रभु भए द्वारिकाचारी ॥ तब नारद मुनिवर तहँ आए। पूजि यथोचित प्रभु बैठाए ॥ प्रभुके सनमुख रुकुमिनिरानी। व्रतविधि बूझी मुनिसों मानी ॥ रहीं तहां आठौ पटरानी। अरु षड दशसहस्र सबरानी ॥ रुकुमिनि कही सुनहु मुनिराई। व्रतउतपत्ति कहहु समुझाई ॥ अरु विधिसमय दानफल बेलू। संजम नियम सुदेव प्रयोगू ॥ मुनि बोले इमि सुमनि विरागी। सुनु रुकुमिनि पतिव्रतअनुरागी ॥ पूर्व उमा पुण्यकव्रत कारके। व्रतके अन्त सुविधि अनुसरिके ॥ ज्योति यशावत भई भवानी। सकल देवपतिनी शुभदानी ॥ दक्षप्रजापतिकी सब तनया। सब ऋषिमुनिकी पतिनी सनया ॥ सबदिगपालनकी प्रियनारी। सिद्ध साध्यकी पतिनी प्यारी ॥ स्वाहा सावित्री शुभ चरिता। अरु गंगा आदिक सब सरिता ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

तिया पितृपतिकी विशद अष्टवसुनकी नारि। ह्री श्री धृति अरु कीर्त्ति मति मेधा मुददातारि ॥
सन्नति आशा प्रीति अरु बारु सुव्रता ख्याति। आइ शिवाके ढिग भई एसब तहा विभाति ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

इनसबकँह तहं पूजि भवानी। देतभई विधिवत विधिजानी ॥ परबत रचि तिल धान्य रतनके। भूषण वसन सु विविध यतनके ॥ हमऊँ एक शैल तँह पाए। हम ले दए द्विजनकँह भाए ॥ विरचि सभा तँह सकल सयानी। लगी कहन शुभकथा कहानी ॥ तब लहि सबको सम्मत सुहिना। अरुन्धती शुचि शंसिकी दुहिता ॥ पत्नी मुनिवशिष्ठकी ज्ञानी। कहत भई गिरिजासों बानी ॥ पुन्यकाविधि प्रभाव सुखदाता। कहहु उमा त्रिभुवनकी माता ॥ कहत भई तब शैलकुमारी। व्रतप्रभाव सुनु पतिव्रतचारी ॥ व्रतविधि कामद सुकृतीजनको। होन होत नहि कुटिल कुमनको ॥ जे पतिव्रता साधु प्रियवादिनि। शुचि सउत्य प्रियहियअहलादिनि ॥ सुबुधि सुशील सुकारजकरता। मन बच क्रम पतिमन अनुसरता ॥ व्रत अरु धर्म सुफल है तिनको। नहि कुतसित सुभाव है जिनको ॥ दुष्टा अप्रियवचन प्रलापिनि। इष्ट सकुइ अशुचि सन्तापिनि ॥ स्वामी दुखी रहत है जाके। व्रत संजम सब निष्फल ताके ॥ ते तिय चौसि नरक अधिकारी। इत उत रहहि न कबहू सुखारी ॥ जो ए चेति पतिव्रत धरहीं। तौ करि प्राश्चित चौसि उधरहीं ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

पतिवञ्चक परपुरुषरत तिनको नहि उद्धार। और नरकमें परि करै तें तिधनह विहार ॥
कुलघालजोमिनमें मरमि औ पावैं नरदप। तौ वैं डोमनि व्है बऊरि परै नरकके कूप ॥

क्रोधी कपटी कूर शठ कुपथी मूढ़ मलीन। दीनदारदी दुष्ट अरु अशुचित रोगी छीन ॥
ऐसेहु पतिको तिया जाने देव समान । सो तिय पतिसह स्वर्ग लहि विहरै कल्पप्रमान ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

जे पतिभगता तिया सुजानि । तिनकहं व्रत सज्जम सुखदानि ॥ तिनकेहित व्रतको सुविधान । कहौं कहे जो प्रभुसुजान ॥ सुबुधि तिया उठि प्रात अन्हाय। लै पतिकी आज्ञा सुखदाय ॥ बन्दि सशुरके चरण सुजानि । सकुश ताम्रभाजन लै पानि ॥ दक्षिण शृङ्ग सुरभिको धाइ । सींचि लेइ तामें जलधार ॥ धरि पतिके आगे जल सोय। पतिसह करि मार्जन सुखहोय ॥ तीनिलोकके तीर्थ महान । मनु कीन्ही तिनमें अस्नान ॥ एहि मार्जनको चारु प्रयोग । नारी पूरुष सबके जोग ॥ अमल अधोर आसन डारि । महिपै शयन करै व्रतधारि ॥ अश्रुपात रिसि कलह बचाव। कीन्हे रह न व्रतको भाव ॥ धारण करै वस्त्र शुचि सेत । शोच्य शृंगार न करै सकेत ॥ दन्तकाष्ट नहि करै सचाव । मलै न बार मसाला लाय ॥ मृत्तिकासो सब करै विचारि । छुवै न कबहू तेल व्रतधारि ॥ गोवाहन करि चलै न नेक । नंगे न्हाइ न जानि विवेक ॥ रुचिसों न्हाय सरितमें आय कै अन्हाय उरणाजल पाय ॥ कै तडाग कै वापोबेस । क्रमसे ए असनान शुभेस ॥ * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

ए अलभ्य जो होइ तौ नूतनघट भरवाय । स्नान करै तिय शीससों व्रतविधि धारि सचाय ॥
सम्बत्सर पर्य्यन्त कै कै षटमास सनेम । मास एक कै तिय करै एहि विधि सुव्रत सप्रेम ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

शुक्लपक्षकी नवमी लहिकै । व्रत आरम्भ आनद गहिकै ॥ शुक्लपक्षकी नवमी पाई । व्रत उद्यापन करै सोहाई ॥ तिय ब्राह्मणो शुभग एकादस । विधिवत तिनकहं पूजि अनालस ॥ सविधि समर्पि अघार्घ्य हि देकै । दे निम्न्त्रय फिरि तिनकहं लैकै ॥ दाम मानसों तोषि सुज्ञानी । विदा करै तिनकहं विधि जानी ॥ करि उपवास ताहि दिन यामिनि । उत्सव दान करै बर कामिनि ॥ क्षौरकर्म पतिसह करवावै । जेहि जस उचित बूझि तेहि भावै ॥ स्नान सिंगार यथोचित नारिन । करै प्रविणि प्रिया प्रियवादिन ॥ स्नानहेत शुचि कुम्भ भराई । घरै धन्य यह तिय सुखपाई ॥ आपोदेव्यः पयोनां हि विश्वधान्या दिव्यामदंयो यमहरा धर्मधन्या हिरण्य वर्णाः पावकाः शिवतमेन रसेन श्रेयसे मां जुषंतु ॥ इतिमंत्रः ॥ यह पौराणिक मंत्र सुहावन । पढ़ि अस्नान करै तिय पावन ॥ स्नान करत बाड़िहन फल मांगै । सो जाइ तिय आगमको पागै ॥ भूमि वायु नभ जल शशि सूरहि । साखी करै अग्नि गुण पूरहि ॥ दिशि देविन अस साखी करिकै । धार वसन शुचि आनद भरिकै ॥ निजकर तिल विरचित मधुसुचिसों । देइ पतिहि

तव सगुद सब्बिसा । गातए अन्य सुबसन संगाइ ॥ निजकामो एक सूत मिलाइ । देइ पतिहि. तदंमंम्नर नारी ॥ पूजि द्विज बरहि पतिव्रतधारी ॥ *◆*◆*◆*◆*◆*◆*◆*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

भोजन ताहि कराइके धउतवस्त्र दे देय । गऊ देइ फिरि देइ तेहि यथाशक्ति सुखसोय ॥
पय दधि घृत मधु लवण गुडपै प्रतिमा रचि सारि।देइ द्विजनकहं सादरो पूरित प्रीति अपारि॥
रजत हेम अंह तामको प्रतिमा विप्रहि देइ । देइ चारु तिलपात्र अरु गऊ सवत्सा देइ ॥
देइ तिलनसों पूर्ण करि कृष्णमृगाको चर्म । भूषण बसन सुआदरस देइ पूरि बरधर्म ॥
भांति भांतिके सुफल अरु सुमन द्विजनकहं देइ।जीवघात नहि करइ यह शोध सुखद भिखिलेइ॥
भाग्यवती शुचि सुतवती अरु धनवती सुजानि।यह व्रत करि तिय होतिहै लहि बांछित सुखदानि॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

वर बांछित फलपाय भोगि भूमिपै भावती।फिरि लहि स्वर्ग सचाय पतिसह बिलसति कलप मिति॥
सुनि शशिसुता सुजानि प्रथमहि यह व्रत हमकरो। तातें यह सुखदानि भयो उमाव्रत नामवर॥

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

अब व्रत कहउ दुतिय सुखदानि । सुनहं अरुन्धति सरस सुजानि ॥ जेहिविधि मोसा कहे इशान। मैं तुमसा सो कहौं विधान॥जेठ अषाढ मासमें मानि । एक एक के दूनो जानि ॥ करि आचरण कहे जिमि पूर्व । कामिनि यह व्रत करै अपूर्व ॥ जल पय दधि घृत मधु गुड चारु । तिल सर्षपमें करक उदारु॥पूरि पूरि व्रतके अवसान। देइ द्विजनकहँ सहित विधान॥काञ्चन रजत सवत्सा गाय। भूषण बसन धान्य सुखदाय ॥ यथाशक्ति द्विजबरकहँ देइ । मोदित करइ चरण शुचि सेइ ॥ भोजन करवावइं मनमान । देइ दक्षिणा करि सनमान ॥ खाय सुअन्न प्रथम दिन जौन । व्रत पर्य्यन्त खाय तिय तौन ॥ पहिले ग्रास ग्रास भै खाय । भोजन करै ग्रास तौ पाय ॥ भोजन करै प्रथम जौ शालि । तौ व्रत भरि निशिमें सुदशालि ॥ दिनमें भोजन करि व्रतधारि । कञ्चनको रबि देइ सुनारि ॥ निशिके मंग चन्द्रग्रहे देइ । सुनऊ अरुन्धति व्रत यह सेइ ॥ लहै सुपुत्र सकचि सो बाल ।भाग्यवान धनवान विशाल ॥ कन्या इंछै जौ तिय सोइ । कन्या लहै न मिथ्या होइ ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

सम्वतसर पर्य्यन्तलौं करै तिया व्रत एक । संयमसों रहि नियमयुत पूरित परम सनेह ॥
लहि आज्ञा पतिको शुभद देइ द्विजनकहं दान।जेहिविधि कहि आए सुफल करकादिक सुखदान॥
मास मास प्रतिदान बर करै सशक्ति अकूत । देइ कार्त्तिकी पूर्णिमा मैं कञ्चनके सूत ॥
सौ वा भंट अनिशन हि भोजन करै सुजानि । कञ्चनकी सीकी बिरचि देइ द्विजन सनमानि॥

यह व्रतकरि युवती लहै यौवन सुपुष्ट सुजान । सावित्री रहि सर्वसुख भोगि लहै द्विजदान ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

अति उत्तम वपु चाहइ जोई । अब जो कहँउ करै निशि सोई ॥ दीरघ कुटिल श्याम कच चारू । कोमल जेहि मोहै भरतारू ॥ चाहै तिय सो असिती नीकी । पाइ अष्टिनी सुखदा जीकी ॥ बसन सेत धरि सरस अपारू । कन्दमूल फल करइ अहारू ॥ प्रात ब्राह्मणहि भोजन दैके । भोजन करै आपु मुद लैके ॥ एहि विधि सम्वत्सर भरि नारी । करै विशद व्रत विहित विचारी ॥ सम्वत्सर पूरे सुधर्मा वर । देइ द्विजहि सित चारु सुचामर ॥ चमरीगौको असित सुकेशा । देइ दक्षिणा सहित सुभेशा ॥ होहिँ अपूर्व केश तौ ताके । अति दीरघ शुचि श्याम प्रभाके ॥ शीश निरोग चाहु जो कोई । गोमयसो कच मीजे सोई ॥ अवरा बेलगरीसो पोछे । मीजे चिकुर अरुज सिर दछे ॥ अलसा धोइ करै अस्नाना । निति गोमुख करै शुचिपाना ॥ छाया चारु चौदशी पाई । यह विधि करै तरुणी सुखदाई ॥ भाग्यवती निरुजा सो कामिनि । होइ परम पतिकी मन भामिनि ॥ अति सुन्दर ललाट जो चाहै । सो अब कहौ बचन सो पाहै ॥ प्रति प्रतिपदकँह द्रिढ व्रतधारी । अलवण भोजन करै विचारी ॥ एकबार पय घृत सो खाई । सुखद सुयश मोदसौँछाई ॥ *⁀*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

सम्वत्सर पर्य्यन्त इमि व्रत करि सहित विधान । पत्र रजतको भाल मिति देइ विप्रकँह दान ॥
अतिसुन्दर भ्रू जो चहै सुनो तासु उपचार । प्रति द्वितियाको व्रत करै करि फल मूल अहार ॥
सम्वत्सर पर्य्यन्त करि एहिविधि सु व्रतविधान । माष लवण घृत दक्षिणा देइ द्विजनकहँ दान ॥
श्रुत अतिसुन्दरि चाहि तिय श्रवन नक्षत्रहि पाय । सम्वत्सर पर्य्यन्त रचि सबशुचि अवकौं खाय ॥
सम्वत्सरके अन्तमै श्रुति सुवरणको दोय । देइ विप्रकहँ डारिकै घृतमैं आनदभोय ॥
सुन्दरि नासा सो चहै जो सुन्दरि सुखपाय । तिलको कुसुम सरोपि कै सींचन करै सचाय ॥
प्रथमदिवस व्रत करइ योहि सींचन लायक जानि । दूजेदिन सींचन करै चाही क्रमसौं गानि ॥
जब वह फूलै फूल तब वाके घृतमैं डारि । सहित दक्षिणा द्विजनकहँ देइ परम मुदधारि ॥
कबहुँ ताकी नासिका मै नहोइ रुज आय । अति सुन्दर चख जे चहै अब सुनु तासु उपाय ॥
सम्वत्सर पर्य्यन्त सो कामिनि अलवण खाय । सम्वत्सरको अन्त लहि उत्पलपत्र मंगाय ॥
सीरे पय मय डारि तेहि देखि तरुनि सुखदानि । सहित दक्षिणा द्विजनकहँ देइ दान मनमानि ॥
मनमोहन सुन्दर अधरचाहै यो शुभनारि । सोमृत्तिकाके पात्रमें मिश्री बहिभरि बारि ॥
शुचि ह्वैके शुचि गेहमैं नौमीको दिन पाय । बैठि रहै तहँ आपुसों देइ कोऊ सो खाय ॥
एहि विधि संवत्सर बिते करै सुविद्रुम दान । होहि अधर तेहि तरुणिके कुंदरूरूप समान ॥

याह दसन चाह तरुणि एक बारतौ खाय। शुक्लपक्षकी अष्टमी मैं भरि बरिस सचाय ॥
संवत्सरके अन्तसों दसन रजतके देइ । डारि दूधमैं दसन मित द्विजपदपङ्कज सेइ ॥
शुभ अतिसुंदर चाहिं तिय प्रतिपूनो लहि जानि। चंद्रोदय लखि न्हाइकै विप्रनकँह सनमानि ॥
अक्षी आउरि चाह शुचि सघृता सविता ताहि । प्रियभोजन करवाइकै देइ दक्षिणा चाहि ॥
संवत्सर परजंत इमि व्रत करि तिय अभिलाखि । देइ भूसुरहि रजतको चंद कमलपै राखि ॥
शुभ श्रीफलवत चारुकुचहि तिय प्रति दशमी पाय । रहै मौन ह्वै बैठि जब देइ कोऊ तब खाय ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

द्वै कंचनके बेल सम्वत्सरके अंतमैं । करि सुधर्मसों मेल देइ भूमिसुर कहं तरुणि ॥
चाहि कृशोदरनारि एक ग्रास भोजन करइ । बरिस दिवस व्रतधारि पुण्यशील रहि शुचि सदा ॥
अन्त तोय संगखाय सवचि पञ्चमीके दिवस । मांस बारहो पाय सहित मान द्विजवरणकँह ॥
चारु चवेंली बेलि पुष्पित देइ सदक्षिणा । सो तिय करता केलि होइ कनकको बेलिसी ॥
तिय अति सुन्दरपाणि चाहि द्वादशी केदिवस ।करि फल भोजन जानि बरिसएक वर व्रत करइ ॥
द्वादशमास बिताय कमल देय सुचि कनकके । विप्रहि देइ सचाय होहिं तासुकर कमलसे ॥
वर्तुल उन्नत पीन चाहिं नितम्ब नितम्बिनी । प्रतित्रयोदशि प्रवीन एकबार भोजन करै ॥
पूरे बरिस उछाह कमलासन रचि लवणके । अरु कञ्चनके चारु देइ सबल महीसुरनि ॥
मधुरवचन अभिलाषि बरिसएक वा मांसभरि । लवण छोडि मुदराखि दानदेइ फिरि लवणको ॥
मांसल चारु सुवेष चाहि गुलुफ कामिनि सुनऊ । प्रतिषष्ठी शुभभेष खाइ उदक ओदन सरूचि ॥
बन्हि विप्र अरुगाय छुवै न कबहूँ चरणसों । औ धोखे छुइजाय तौ ससोच बंदै तिन्है ॥
चरणकमलसों भेक धोवै कबऊँ भूलिनहि । देइ द्विजहि सविबेक दोय कुर्मरचि कनकको ॥
दोय कमलके पूल उपरहि राखि तेहि पूजिकै । कामद आनंदमूल देइ सहेम द्विजातिकह ॥
अतिसुन्दर सबदेह कामिनि चाहि वसन्तमें । तीनि दिवस घृतनेह करै सुव्रत अतिमोदसों ॥
मधुर मास अषाढ आश्विन कार्तिक जेठकी । लहि पूनो गुणबाढ विधिवत व्रत कामिनि करै ॥
करि शुचिसुन्दरगेह चित्रितकरै सुचूर्णसों । मधुर बचन सनेह दासिनहूं सों कहइ प्रिय ॥
मिथ्या कबहूं नहिकहै सदा सउन्य दयाल । देवाराधन नितिकरै रहै सदा शुचिहाल ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

ब्राह्मण भोजन प्रेमसे करवावै सुखदानि । होइ परम सुन्दरि तरुणि पियप्यारी सुखदानि ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

ब्रत सुबन्धु इही तिय जोइ। प्रति सतिमीमै ब्रतकरि सोइ ॥ चौंसिठ सप्तमी लहि भामिनि अरपै वृष हेमको कामिनि ॥ दछिना देइ द्विजनकँह भूरी। तो मतबन्धु कहैं मतिपूरी ॥ दियत दीप कञ्चनके बारी। देइ दीप घरमैं धरि नारी॥दिपै दीपवत ते सब तियमैं। रमैनिरन्तर पियके हियमै॥ जे शुचि सदाचार रत भामिनि। सौम्य सुशील सु मतपथ गामिनि ॥ पतिव्रत रत पतिको अल्हादिनि। प्रियकर प्रकृति सदा प्रियवादिनि॥ सासु ससुरकी सेवा करहीं। ते विशु ब्रतहि मोदसौं भरहीं ॥ दैव योग जे तिय पतिबरता। विधवा होंहि सुपथ अनु सरता ॥ ते मृण्मय वा कागद पाहीं। पूजहिं रचि पतिरूप सदाहीं ॥ तासों अज्ञा मांगि सुभावै। ब्रतकरि मृत्युलोक न पावै ॥ ब्रतविधि गिरिजासौं सुनि सुनिकै। बन्दि सतिहि करिवे गुणि गुणिकै ॥ ह्वो है विदा उचित कहि कहिकै। गई सकल आनद गहि गहिकै ॥ सो ब्रत अदिति प्रेमसौं कीन्ही। जेहिबिधि गिरिजासौं सुनि लीन्ही ॥ पारिजातसह पतिको दाना। कीन्ही अधिक नवीन विधाना ॥ तबसौं भयो अदित ब्रत नामा। सो ब्रत कीन्हो सब सतिभांमा ॥ *******

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

सावित्रीसों सुब्रत करि कीन्ही अधिक इतेक। संध्या लहि देवारचन दुगुणित अब सविवेक ॥
इन्द्राणीसो उमाब्रत करी इतक अधिकाय। कँवे चौथे दिन दई कुम्भसहस्र भराय ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

सोईब्रत फिरि सुरसरि कीन्ही।इतक विधान अधिक करि दीन्ही ॥ जवाकाल अस्नान सोहावन। करै सप्रेम सदा चितचावन ॥ कुम्भ सहस्र पूर्ण करि देई। गंगा तटमैं आनद लेई ॥ यहं सब ब्रत सनेम जो करई।मुद मंगलसौं इत उत भरई॥सातसात पूर्वनकहँ तारै। रूपति स्वर्गलहि मुदित विहारै॥कीन्ही बर ब्रत यमकी पतिनी। फटनु हिमन्तम पतिब्रतव्रतिनी॥नाम जामरथ ब्रत सुखदाई। यह करि कोउ जमलोक न जाइ ॥ देय अनाछादित नै रहिकै। प्रात न्हाइ हिय आनद गहिकै ॥ पतिहि बन्दि बांछित फल मांगै। सोलहि कामिनि आनद पागै ॥ विप्रनकह भोजन करवावै। देइ दछिना बांछित पावै ॥ ए ब्रत शिव गिरिजासौं भाखे । ते हम गिरिजासौं सुनिराखे ॥ ते पौराणिक ब्रत मनभाए। तुम सवकहँ हम सविधि सुनाए॥ मम बरतपके उग्र प्रभावन। ब्रतफल तुमसब लहउ सुभावन ॥ सुनउ भूप नारद प्रियबादिक। सो सुनि हरषी रुकुमिनि आदिक॥ रुकुमिनि प्रथम उमाब्रत धारी। कीन्हो वृषभदान अधिकारी ॥ फिरि करि जौवती सुखदाई। रतनवृष दीन्ही अधिकाई ॥ सतिभामा करि ब्रतअधिकारी ॥ दीन्ही पीतवसन पियधारी ॥ * ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

सर्वकामप्रद उमाव्रत जे करिहैं सुखदानि । सर्व सम्पदा सर्वफल ते लहिहैं सुखदानि ॥
बरने यहि अध्यायमैं नारदको सम्वाद । रुकुमिनिसों सुचि उमाव्रत को बिधिबर अह्लाद ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना· श्रीवन्दीजनकाशीवासिगोकुलनाथात्मजेन गोपीनाथेनकविना विरचिते हरिवंशदर्पणे त्रिंशोध्यायः ॥ *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

बैसम्पायन सुमुनिसों बूझे नृपसिरताज । पारिजातके हरणमें कहे आप मुनिराज ॥
षटपुरके दानवनको कीन्हे कृष्ण निपात। काहे वे किमि बधे सो कहो सविस्तार तात ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

जनमेजय भूपतिकी बानी । सुनि सुमोद बोले मुनि ज्ञानी ॥ त्रिपुरहि हते शंभु रिसि रांचे । साठिहजार दइत तब बांचे ॥ जम्बू मार्गविषे ते जाई । लगे करण तप मंत्र दृढाई ॥ जंबूतर बैठें तहँ केते । कितने मूलबिलर मुदहेते ॥ बट कपित्थतरु किते सुखारी ।बैठि लगे तप करण बिचारी॥ अरु शृगाल बाटीतर कितने । बैठे निज निज कारज हितने ॥ बिधिहि अर्पै धरिधीर अपारा । रहि रविमुख करि बायु अहारा ॥ शिवहि जीतिबेकी करि ईहा । लगे करण तप महिपैं ढीहा ॥ बटतर जे बैठे अनुमानी।ब्रह्मचिन्त व ते गुरज्ञानी ॥ आइ तथा ब्रह्मा मुदराखे । जम्बूतर वारेनसो भाखे । मांगऊ बंर ते नहि अभिलाषे ॥ शंभुहि जीतनकँह हियमांषे ॥ तब बटतर वारेनसों बेधा । बर बूझि बोले बरमेधा ॥ शिवमहिमाके जाननिहारे । ते अकामता सरुचि उचारे ॥ फिरि जंबूतर बेधा आई । तिनसों कहत भए समुझाई ॥ उतपति प्रलय नाशके करता । शिव अनादि ईश्वर जग भरता ॥ तिनसों बैर न कबहूँ पैहो । श्रमकरि व्यर्थ परे दुतरैहो ॥ *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

तात शिवसों जीतिकी बांछा तजि अनुमानि । चहो और बरदान सो मागिलेऊ हितजानि ॥
तब ते करतासों कहे अबध्यत्व मोहिं देऊ । सर्व सुमनसों सर्बसों स्वामी सहित सनेऊ ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

षट्पुर देऊ भूमितर स्वामी । तहँबसि हम सब रहैं मुदामी ॥ एवमस्तुकहि बिधि मुसुकाई । तासु मरणदिन दए बताई ॥ जब तुम बैर बिप्रसों करिहो । तब नारायणसों निज मरिहो ॥ब्रिधि त्रिदेश जाहि तब ते जाई ।वसे भूमितर षटपुर बनाई ॥ जे हैं बटतर आनद लीन्हे। तिन्हे आपु हर दरशन दीन्हे ॥ श्वेत वृषभपै चढे सोहावन । आइ कहे तिन सों मन भावन ॥ बैर दंभ अरु ईषा कोहा । तजि तुम मोहि भजेऊ तजि मोहा ॥ तातें हम अबि तव ढिग आए ।

देन तुम्हें बरदान सोहाए ॥ जे इन तप करिहैं मरदाने । वाणप्रस्थ विधान सोहाने ॥ मास बरिस या बिधिवत रैहैं । सहस बरिसको फल ते पैहैं ॥ नाम श्वेतपाहन मम होई । अर्पिहि चाहिहि वांछित फल सोई ॥ जंबूमार्ग आइ हम बसिहैं । यह इच्छिहैं ते नम ढिग लसिहैं ॥ इमि कहि तिनके सुवनि सुखारे । जे कपित्थ गुल्मवितरवारे ॥ अरू शृगाल वाटितरवारे । तिनहि सहित निज लोक सिधारे ॥ अंबूतरवारे जे तिनरे । अटपुरबसे आइ मति बिनरे ॥ समै आइ ते गर्व भरो ने । भए कालबस बुद्धि मलीने ॥ *◈*◈*◈*◈*◈*◈*◈*◈*◈*◈*◈*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

ताहि समै तिनके निकट रहत रह्यो तपधाम । याज्ञवल्क्यको शिष्य वर ब्रह्मदत्त यह नाम ॥
रह्यो कराए विप्रसों अश्वमेध वर यज्ञ । श्रीवसुदेव सुजानके परम प्रवीन कृतज्ञ ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

तब सों ताहि सखा करि भाषे । श्रीवसुदेव प्रेम अभि लाषे ॥ सावंत्सरिक यज्ञ आरोपन । करतभयो सो द्विजवर चोपन ॥ तँह वसुदेवहि नेवति बसाए । ते दम्पति में आनदछाए ॥ हे मुनिव्यास हमहिं सह नेहा । याज्ञवल्क्य जैमिनि सहनेहा ॥ आवालि देवल आदि मुनीशा । रहे बकल तहँ सुनकछ महीशा ॥ ताही समैं तहां बलपूरे । षटपूरके ते राक्षस बरे ॥ आदि निकुम्भ आइ अवसाने । ब्रह्मदत्तसों कहे अयाने ॥ देऊ सुरनकहँ जिमि गौँहि मैंह । यज्ञ भाग तिमि हमकहँ देह ॥ हैं अनेक जे सुता तुम्हारी । देऊ हमहिं ते सुखमा भारी ॥ रतन अनोलिक जितने आरे । हो सो देऊ बिनामननोरे ॥ यह सुनि ब्रह्मदत्त मुनिज्ञानी । कहतभई तिनसों बरबानी ॥ उचित न यज्ञ भाग दइतनको । बूझि लेऊ तपवर मुनिगणको ॥ हैं सबसुता समर्पित कोन्ही । श्रुति पारग विप्रनकहँ दोन्ही ॥ रतन मागिहो बिनै समेता । तौ देहैं हम क्रपानिकेता ॥ बलसो चाहो तौ नहि देहैं । बली कृष्णके बल हम हे हैं ॥ यह सुनि ते सब अतिरिसि करिके । लेगे तासु सुता सब हरिके ॥ *◈*◈*◈*◈*◈*◈*◈*◈*◈*◈*◈*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

तब बसुदेव गोबिन्दकहँ कहि पठए सन्देश । सुनि श्रीकृष्ण प्रदुम्नकहं दीन्हे उचित निदेश ॥
रक्षा मुनिजनयज्ञनकी शीघ्र करऊ तुम जाय । जबलों आइ सबैनहम उत कछु करैं उपाय ॥

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

सो सुनि आइ प्रदुम्न उताल । रचि मायां बल बुद्धि बिशाल ॥ मायामई सुता तँह राखि । व्याए सब तनया अभिलाखि ॥ ते सब नहिं जाने यह भेद । तिनसों बिलसन लगे अखेद ॥ लागे करए यज्ञ तब विप्र । मोदित मुनिगण सहित अचिप्र ॥ इतनेम आए सबभूप । पूर्व निमंत्रित

सबल अनुरूप ॥ जरासन्ध शिशुपाल महीप । दुरजोधन पाण्डव कुलदीप ॥ दन्तवक्र अरु रुकुम नरेश। आदिक और छितिप शुभवेश॥ ते मुनिके पुरके ढिग आय। भए निवास करत हरषाय ॥ तब नारद मुनि कलहविलास । गए तुरित दनुजनके पास ॥ पूजित तिनसोँ बैठि सनेह । कह निकुम्भ दूतनसोँ एह ॥ सुनो कहैँ हम तुमसोँ सांब।जुवती चारु चपल शतपांच॥ ब्रह्मदत्त हैं राखे ल्याय। हित प्रद्युम्नके आनदछाय ॥ ब्राह्मणकी तनया शत दोय। शत क्षत्रिनकी आनद ओय॥ शत वइश्यकी तनया वेस । शत सूद्रनकी सुता सुवेस ॥ब्रह्मदत्तकी आज्ञा पाय। ते सब दुरवासा पहं जाय॥ सेवाकरत भई मुदआनि। आशिष दए सुऋषि हित मानि॥ सरस सोहाग भाग्यसो पूरि। बिलसऊ पतिसह लहि मुदभूरि ॥ *◆*◆*◆*◆*◆*◆*◆*◆*◆*

॥ * ॥ दोहा । * ॥

सुवन सुता एकैक सँग प्रतिसम्बत्सर पाय । भए करैँ सबकँह दए यह आशिष मुनिराय ॥
आशिषको विरतांत सुनि ब्रह्मदत्त सुखपाय । आय ल्याय सब कन्यका देन कहे गहिचाय ॥
पृथक पृथक कहि आदवन कह सुन्दरि शतचारि । अहैँ अमनसी छबिलसी तिनमेँ ते शतनारि ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

आय तिहे निज हित हरि लाई। है अशोच लक आनद पाई॥ तिनकेहेत कृष्ण धनुधारी। लरिहै तुमसोँ रोसि बिचारी ॥ यदुवंश अमरषसोँ राते । आवंत चढे वीररसमाते ॥ तात हम जो कहैँ उपाई । करऊ बूझि सो सादर जाई ॥ जरासन्ध आदिक मनुजेशा । हैँ आए तव निकट शुभेशा ॥ दान मान अरु बिनै भलाई । करि तिनकँह अब करऊ सहाई ॥ बीर निकुम्भ बचन यह सुनिकै। मंत्रिन सहित गयो तहँ गुनिकै ॥ जरासन्ध आदिक नरपतिसोँ। मिलि भो देत रतन बऊ जतिसोँ ॥ दान मान लहि मोदित ह्वैकै। तासोँ कहे भूप मुद ज्वैकै ॥ केहि कारण आएऊ दनुजेशा । कहऊ शीघ्र सो बीर शुभेशा ॥ तब नैँद्र कहा कहै। यह तुमसोँ। बढो बिरोध कृष्णसोँ हमसोँ ॥ उन्हहिं हमहि अब होइहि लराई। तुम सबकोउ मम होऊ सहाइ॥सुनि कहि एवमस्तु महिरथी।सिगरे भए तासु प्रनपथी ॥ तासु बचन नहि पाण्डव माने। कृष्णहि आत्म परमहित आने ॥ राखि आऊ कहि निज पुररक्षक । सब यदुवंशीसह प्रभु दक्षक ॥ आइ सु ब्रह्मदत्तके धोर। किए निवास शयन बरजोरे ॥ *◆*◆*◆*◆*◆*◆*◆*◆*◆*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

आवतंक शुभ सरितसोँ अंठि प्रभु प्रात अन्हाय। बिल्वोदक शिवके चरण बन्दि परम सुखपाय ॥
सात्युकि अरु बलिराम सह चढेगरुड़मेँ धीर । मखरक्षण हित पाण्डवन कहं निदेश दे बीर ॥

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

सुभ रक्षणहेत नियमित करि प्रद्युम्नहि आनि। सैनसह चलि शीघ्र त्यागी कौतुकी अनुमानि ॥ पारिजात गिरीन्द्र कोनहो गुहा गुरु बिसतार। विकटपुरको प्रगटसो तट अघट अनुपमदार॥ सैन ओजित करि तहाँ प्रभु बोली लीन्हे आसु। प्रकरसहित जयन्तकहँ करि शुभद सुमिरण तासु॥ कहे तिनसों गमनमधि तुम रहहु धीरधुरीन। चले नभपथ असुर तिनकहँ नेउ परम प्रवीन॥ रचत भे तहँ मकरव्यूह समूहभट करि जूह। सांब सारण विश्व पृथु गद अनाधृष्टि सजूह॥ वीर कृतवर्मा बली अरु चारुदेष्ण सुधीर। रहे चहुँदिशि मध्यमैं है सकल यादव धीर॥ रहे रक्षक पृष्ठदिशि अनिरुद्ध कुंअर सक्रुद्ध। पाइ शासन कृष्णको तब बजे बाजे जुद्ध॥ सुनतही गह गहे मारु बाद्यके रव कोपि। धीन धौंसा धुनत धाए धीर दानव चोपि॥ नाग हय रथ ऊंट खर सूकर महिष मकर महान। पै चढे ते कढे सिगरे बढे रोष अमान॥ विविध आयुध धरे वीर असंख्य दीरघ काय। उमडि घनसे घुमडि बढि बढि लए दशदिशि छाय॥ दैतराज निकुम्भकी दिशि सकल नृपदल साजि। आइ सनमुख यादवनसों भिरे गरजित गाजि॥ चले आयुध दुहूँ दिशिसों प्राणहरण अनेक। भिन्दिपाल त्रिशूल तोमर शक्ति भल्ल अनेक॥ मचे संगर घोर वीर निकुम्भ बाणनि मारि। यादवी दल विकल कीन्हे विशद बल बिसतारि॥ यादवी सेनाधिपति तब अनाधृष्ट रिसाय। डांटि वीर निकुम्भ पै शर तजत भे एहि भाय॥ ध्वजाली भो गोपि जातें शरणसों वहदैत। विकल ह्वै तब असुर माया रचत भो श्रम नैत॥ अनाधृष्टहि पकरि माया फांससों अन खाय। अन्धमैं वरगुहामैं लै जरि दीन्हेसि जाय॥ *⬬*⬬*⬬*⬬*⬬*⬬*⬬*⬬*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

कृतवर्मा अरु भोज अरु चारुदेष्ण अरु बांकु। हिय करि अरु भट रिस तहँ दीन्हेसि डारि सुबांकु॥
इनहि आदि भट बहुत गहि दिए गुहामैं डारि। आपु निकुम्भ अदृश्य रहि गुरुमाया बिसतारि॥

॥ * ॥ गुरुतोमरछन्द ॥ * ॥

यह देखि कृष्ण रिसाइ कै। शर सांधे धनुष चढाइ कै॥ शर तजे ताकी सैनमैं। इमि चले पूरे चैनमैं॥ जिमि दीह दावा ओरसों। बन घनेमैं एक ओरसों॥ इमि लरत कृष्णहि देखि कै। सब दैत अतिसै तेखि कै॥ इमि जुके रिपि बिसतारि कै। जिमि सलभ पावक निहारि कै॥ बहु शस्त्र गह पाषाणसों। अरु लगे मारन बाणसों॥ निज बाणसों प्रभु डांटि कै। सब शस्त्र तिनके काटि कै॥ वरबाण संचित मारिकै। भट कोटि महिपै डारिकै॥ गह घरिन [illegible] करि दई पाइ अपारको॥ बकि सके ते न सचेत ज्यो। अस भये विकलाचेत ज्यो॥ तब दैत [illegible]॥ उडि चले ऊपर भागिकै॥ तिन इन्द्रको सुतहेरिकै आय किए तिनको घेरिकै॥ [illegible] शरसन्धानसों।

भो बधत तिनहि विधानसों ॥ ते राऊ केतु अनेक से । नहिं गोरे रूप नरएकसे ॥ भुज गिरत केचांपसे । लसि पांच फणके सांपसे ॥ भरि रुधिरसों भट भानसे । तह गिरे पणका पानसे ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

माया भइ गुहा बिरचि तब प्रद्युम्न समझाय । रहि अदृश्य पहि नृपन कहँ डारे तामधि ल्याय ॥ जरासन्ध दुर्योधनहि द्रुपदहि सकुनिहि आदि । धृष्टद्युम्न आदिक नृपन दए डारि अहलादि ॥ दन्तवक्र शिशुपाल अरु रुकुमहि तहां निहारि । कहे मात गुहता समुझि देहिँ तुम्हे हम नारि ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

सुनि शिशुपाल महत रिषि पागे । दसवैं बाण चलावन लागे ॥ साम्बादिक यादव सों तिन सा । लागे होन युद्ध सु रथिनसों ॥ इतने मैं तहँ नन्दी आए । लिए अनेक पाश मनभाए ॥ दे प्रद्युम्नकहँ पाश सोहाए । हरको कहो संदेश सुनाए ॥ इन फांसनिसों नृपतिन बांधौ । हति असुरण जयकारज साधौ ॥ मुदित प्रद्युम्न फांसि सब लीन्हो । बन्दन बिलोदक करको कीन्हो ॥ दन्त वक्र शिशुपालहिं आदिक । बचे रहे जे नृप अनवांदिक ॥ सदल बांधि तिनकँह रिषिछाए । मायामई गुहामैं नाए ॥ अनरुद्धहि तिनकी रखवारी । राखे वीर प्रद्युम्न बिचारी ॥ बांधि तिन्हे हो मुचित सुखारे । असुरन पैं शरजिधि बिसतारे ॥ सुतको सत्व देखि प्रभु हरखे । असुरसैनपर बर शर बरखे ॥ भगे असुर हो परम पिरारे । तिन्हे बुझाइ निकुम्भ निवारे ॥ सबमैं तिनकहँ हाथ बिनाशे । असुराधिपहि शरणसों पासे ॥ तब निकुम्भ नभ गए उडाइ । तहँ जयन्तसों भई लराइ ॥ तब निकुम्भ अति रिषि बिसतारी । प्रबरहि हने परिघ गहि भारी ॥ मुरछित प्रबर भूमिपैं आए । तब जयन्त तहँ आइ उठाए ॥ *—*—*—*—*—*—*—*—*—*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

ओसत प्रबरहि आनि के तुरत तहां फिरि आय । मारे बाण जयन्त कहँ अति मत्सरसोछाए ॥ परिघ जयन्तहि मारिकै भट निकुम्भ अमलाय । रहि अदृश्य मारित भयो परिघ कृष्णकहँ आय ॥ बलदाऊ अरु साम्बकहँ अरु प्रद्युम्नकहँ आनि । मारत भो पांडवनकहँ परिघ जोरसों तानि ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

ताके बिना तेहि सब आकरजे । प्रभु तब ध्यान शम्भुको सरजे ॥ शिव प्रभावसो परयो निरेखी । तब धनुधर अरजुन अति तेखी ॥ दुष्ट दइतको नाश बिचारे । बाण अनेक तासुतन मारे ॥ ताके तनमैं शर जुरि जुरि के । बसे न एक फिरे मुरि मुरिके ॥ तब अरजुन अति बिसमित होके । प्रभुसों कहे आयचक होके ॥ ए सब सुरवर शैल बिदारण । भए भए आपैं कोहि कारण ॥ तब प्रभु पूर्व वृत्तान्त सुनाए । आपुनसो बध नाहि बताए ॥ यदुविदेह हो अतिबलभारो । तिनमैं एक पूर्व हम मारो ॥

भानुमतीके हरणसमै मैं । हनि तेहि कीन्हो सुरण अभै मैं ॥ सेवँ दितिकहं एक सुखारी । हो यह एक बीर बलभारी ॥ वातैं किए कृष्ण इमि औखैं । गयो निकुम्भ गुहामधि तैखैं ॥ तब प्रभु शीघ्र गुहामधि जाई । लागे तासों करण लराई ॥ प्रभुके पाछे तहँ सबकोई । जे पांडव यादव सुख भोई ॥ मरै न मरसों सो रणधीरा । कहे शंभु तब इहि अमरीरा ॥ अब केशव शरधनु धरि दीजे । याको नाश चक्रसों कीजे ॥ सुनि धरि धनुष चक्र प्रभु लीन्हे । मारि तासु शिर छेदन कीन्हे ॥ तब प्रद्युम्न विराधिप अगरे । स्याए मोचि रहे जे पकरे ॥ रहे आपु नृपजनकहं बांधे । छोडि तिन्हे जयकारज साधे ॥ ते सब लज्जित शीस न वाई । खरे भए तहं डीठि बचाई ॥ * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

असुरनकी बरकन्यका यदुन दए यदुनाथ । हय गज धन रथ देतभे हे जितने तँह साथ ॥
षटसहस्र रथ पाण्डवन कंह दीन्हे यदुभूप । देतभए सब नृपनकहुँ गज रथ रतन अनूप ॥
ब्रह्मदत्त यदुराजकह दै षटपुर रमणीय । नृपगण अरु पांडवनकँह किए बिदा कमनीय ॥
बिल्वोदक शिवके निकट करि उत्सव अभिराम । यज्ञपूर्ण लखि कृष्ण प्रभु आए सदल स्वधाम ॥
बरने एहि अध्यायमैं षटपुरको सङ्गर । ब्रह्मदत्त यदुराजको सिद्ध यज्ञ बेवहार ॥

स्वस्ति श्रीकाशीराजाधिराजश्रीउद्धितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशीवासिनोकुलनाथात्मजेन गोपीनाथेन कविना विरचिते महाभारतान्तर्गते हरिवंशदर्पणे षटपुरवधो नाम चतुर्विंशोऽध्यायः ॥ * * * * * * * * * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

बैसम्पायनसों कहे फिरि जनमेजय भूप । भानुमतीको हरण अब कहिये सुमुनि अनूप ॥
पारिजातके हरणमैं नारदमुनि विख्यात । अन्धकको बध शिव किए कहे कहउ सो तात ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

सुनि बोले मुनिवर विज्ञानी । जनमेजय नृपकी यह बानी ॥ अब देवासुर सङ्गर मांही । असुरन हते विष्णु नभ पाहीं ॥ तब दिति अतिसै शोचित ह्वैके । तपि कश्यपहि मोदसों स्वैके ॥ यह बर मांगत भई सनेहू । सुरगणसों अवध्य सुत देहू ॥ एवमस्तु तब कश्यप भाखे । अंगुरि तासु उदरपर राखे । कछुजप करि इमि कहे सुखारे । होइहि सुत मनमान तुम्हारे ॥ सब सुरप्रभाव मम भारी । बरजि सु आदिदेव त्रिपुरारी ॥ सर्बहि बिना सर्व सुरगणसो । होइहि सो अवध्य भरि पनसों ॥ इमि कहि गए तपन तप मुनिवर । लहत भई दिति सुत अनुपम धर ॥ शिर भुज सहस दुगुन पगनैना । अति दीरघ बसखी सबैना ॥ बलके मद तेहि अब निरेखी । अंध नाम सब कहे बिसेखी ॥ अतिवै सो जनमादि दुरारी । लगो अनीति करण बलभारी ॥

तिय धन रतन बाजि रथ गज गन । हरण लगो सुरगणके गहि पन ॥ तीनि लोक जीतनको पन करि । चाहेसि लरण इन्द्रसों धनुधरि ॥ तब कश्यप पैं सुरपति जाई । कहत भए बहुभांति बुझाई ॥ ताहि अवध्य किए तुम तातें । बांचब अब हम केहि बिधि यातें ॥ *❂*❂*❂*❂*❂

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

सुनि धीरज दै इन्द्र कहं कश्यप दिति सह जाय । बरजत भे अन्धक बलिहि बहुत भांति समुझाय ॥

तउ जाय सुरलोकमैं करै उपद्रव नित्य । बाधै ऋषि मुनिके करम अधरम पितुबर चिंत्य ॥

ताकी इच्छा सों चलैं रवि शशि ग्रहगण पौन । चढि बिमान सुर सिध्यगण सकै गौण करि कौन ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

एहि बिधि तासु कर्म लखि पोचे । ह्वै एकत्र सब ऋषि मुनि शोचे ॥ कहे तहां सुरगुर ऋषि गणसौं । बध्य दुष्ट यह मदन कदनसौं ॥ तात चलि सब नारद मुनिसौं । कहहु दशा समुझाइ सु धुनिसा ॥ शिवबर कृपाकरैं उनपाहीं । वै चाहैं तब शिवपहं जांहीं ॥ वै शिव सों सब दशा सुनैहै । तासों तासु नाश करवैहैं ॥ यह सुनि सब मुनिगण मुदराखे । जाइ व्यथा नारदसौं भाखे ॥ सो सुनि नारद मुनिवर रोषी । शिव पहं गए मुनिनकँह तोषी ॥ पारिजात कर बिपिन सोहावन । तहां शंभुप जाइ सचावन ॥ एक राति तहँ बसि सुख पाए । बिधिवत सब बिरतांत सुनाए ॥ सुनि शिवको निदेश मुद गहिकै । पारिजात की माला लहिकै ॥ डारिगरे अन्धकपँह आई । बैठे पूजित ह्वै सुखदाई ॥ पारिजातको गन्ध सोहायो । करिकै घ्राण अन्ध मदछायो ॥ बूझत भयो दुशृमहि भारद । पारिजात यह कितको नारद ॥ जाको ऐसो सुमन अनूपा । सरस सौरभित अनुपम रूपा ॥ बहुदिन लखे अब बनमाहीं । ऐसे कुसुम उतैहूं नाहीं ॥ तातैं कहहु सांच मनभाए । यह माला तुम कहं सो ल्याए ॥ *❂*❂*❂*❂*❂*❂*❂*❂*❂*❂*❂*❂

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

सुनि मुनि दक्षिण पाणिसौं सो श्रग चारु उठाय । हंसि अन्धक मति अन्धसौं कहत भए सुख पाय ॥

मन्दर गिरिपैं शूलधर पारिजातको बेश । है बिरचे बन बिशद अति सुनु सुबीर असुरेश ॥

॥ * ॥ मधुभारछन्द ॥ * ॥

तेहि बिपिनि कुसुम उदार । बहुभांति यासों चारु ॥ धन रतनके दातार । मनमान देत बिहार ॥ शुचि गन्ध इच्छित देत । अरू तरूणि मोद.निकेत ॥ तेहि बिपिनिम निशि एक । जो बसै सुनहु सटेक ॥ सो लहै कबहु न भीति । कोउ सकै ताहि न जीति ॥ पर कठिन उतको जाब । उत प्रबल शिवको दाब ॥ गण धीर बीर सुभेश । सो रक्षप निति सो देश ॥ तहं सदा शभु उदार ।

सह शिवा करत विहार ॥ नहि आन पुरूष सचाय । उत सकत कैसेऊ आय ॥ सुनि सुमुनिके ए बैन । करि अंध अरुण सु नैन ॥ बरवीर सेना साजि। चढि चलो सिवप बाजि ॥ चलि शीघ्र शठ बद्फैल। भो लखत मन्दर शैल ॥ गिरि श्रेष्ट तब गहि काय । भे खडे ता ढिग आय ॥ गिरिराजको लखि दैत । इमि कहत भो असनैत ॥ जौं चहो निज कुशलात । तौ मानि मेरो बात ॥ तरुराजको वन यत्र । मोहि चलऊ ले तुम तत्र ॥ *❁*❁*❁*❁*❁*❁*❁*❁*❁*❁

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

नातरु हम मर्दैव तुम्है कौन उबारणहार । हौ अवध्य पितु कृपाते जानत सब संसार ॥
अंधक के ए बचन सुनि भे अदृश्य गिरिराज । तब अन्धक बोलत भयो गरबित गिरा दराज ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

ह्वै अदृश्य मन्दरकँह जैहौ । मोहि तजि शरण कौन को लैहौ ॥ अब तुव सानु चूण हम करहूं । इतसौं डारि अनत ले धरहूं ॥ इमि कहि दीरघ सानु उपारी । लग्यो देन शृङ्गन प डारी सुभटन सह तंह शृङ्ग उपारण । लग्यो लग्यो शृंगन पँह डारण ॥ इमि बऊशृङ्ग चूर्ण करि दीन्हे। तब शिव कृपा शैलपँह कीन्हे ॥ भए पूर्ववत सिगरे सानू । लखि बिसमित भो दैत अमानू ॥ शृङ्ग उपारि असुर परि हरहीं। तिनसा दबि दैअत गण मरहीं॥ यह बिपरीत दशा लखि कोही । कहत भयो अन्धक सुरद्रोही । गिरि तुमसौं हमसौं नहि कारज। हैं कित शम्भु बने जे आरज ॥ हम बल सा उनपै चढि आए । जीतन चहैं उन्है मुद छाए ॥ सोवै अब कित रहे लुकाई । सनमुख ह्वै किन करहि लराई ॥ इतनेमैं शङ्कर अति कोहे । बृषभारूढ शूलगहि सोहे॥ तेहि क्षण अन्धक के दल मांहीं । असगुन भए कुशल जेहि नाहीं ॥ आइ तासु सनमुख छबिछाए । शम्भु अमोघ त्रिशूल चलाए ॥ लगि त्रिशूल अन्धक को तनमैं। कीन्हे ताहि भसम तेहि क्षणमैं॥ लखि सुर मुनि गण आनद पागे। अस्तुति करण शम्भुकी लागे ॥ *❁*❁*❁*❁*❁*❁*❁*❁*❁

* ॥ दोहा ॥ * ॥

देव बजाए दुन्दुभी हरषे बरषे फूल । गान किए गन्धर्बगण अप्सर नृत्य अनूल ॥
अन्धक के बधतैं भयो निहकण्टक सबलोक। आनंद पूरो महत सुर मुनि नर गणके ओक॥

॥ * ॥ तोटकछन्द ॥ * ॥

सुनि अन्धकको बध आनदसौं । जनमेजय भूपति मानदसौं॥ फिरि बूझत भे मुनि राजकहो । अब जो हम बूझत चित्तचहो ॥ प्रभु सारथ पारथ सौं जु कहे । युधि दैत निकुम्भहि के उनहे ॥ यह होव धुर्मीति मरो बलसौं। तेहिमैं यह एक मढो छलसौं॥ दितिकौं निति सेवन एक सुनो। हम एकहि पूब बधे सो सुनो ॥ एहि भांति धनञ्जयसों कहिबो । प्रभुको मुद पारथ को लहिबो ॥ तुम भाषेऊ जो

अब सो मुनि जू बिसतार समेत कहो गुणि जू॥ बरवीर निकुम्भहि की अरजी॥ गिरिशो गुर जो वह देऊ दुजी ॥ तेहि विष्णु बधे जेहि कारणसा॥ जेहि भांति जित पन धारणसा॥ सुनिके जनमेजय को सुगिरा। मुनि वैशम्पायन जू रुचिरा ॥ इमि बोलत भे नृपसों सरितै । पहिले सुनिये प्रभुके चरितै ॥ फिरि बूझेऊ सो वह जयरिहौं। सब संशय आपुनको हरिहौं॥ प्रभु एक समै तियको गण लै। जलमैं जलक्रीडनको मन लै॥ बसुदेवहि औ नृप वृद्ध सभै। पुरद्वारवती महँ राखि अभै॥ सगँ यादव लै सिगरे सुखसौं। करि मोदित आनद मैं रुखसौं॥ *❧*❧*❧*❧*❧*❧

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

निज युवतिनको वृन्द लै आपु चले सुख पाय। गणिका सब यादवनके दीन्हे संग लगाय॥
संग रेवतीको लए चले राम बलवान। पिंडारक बर तीर्थमैं कीबेकों असनान॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

गए समुदतट तहँ बलभारे। दरत बसत हैं तिन्हे सधारे ॥ फिरि युवतिन सह आनद पागे। पैठि सिंधुम क्रीडन लागे॥ रहीं जिती युवती रगँराती। पटरानी रानी बिख्याती॥ कामरूप व्है तितने स्वामी। बिहरे सबसौं अन्तरजामी॥ निज निज ढिग निज निज बश जानी। क्रीडत भई सकल सुखदानी॥ भाव अनेक भांतिके करि करि। बिहरण लगीं तरुणि मुद भरि भरि॥ प्रेम छाकसौं छकी उछाही। जे जेहि बिधिसौं बिहरण चाहीं॥ तिन्हे बिहारे तेहि बिधि नागर। सागर गत प्रभु कौतुक सागर॥ नख रदछतसौं चिन्हित व्है व्है। मोदित भई आदरश जै जै॥ युवतिनके शुचि अनु लेपनसौं। अरु चिकुरनको गथित सुमनसौं॥ कै यक योजनलौं सरितेशा। भयो सौरभित सुखद सुभेशा॥ प्रभु प्रभावतें भो अति निरमल। पय सुस्वाद लवणनिधिको जल॥ जानु लङ्क कुचलौ बर सीके। रहो उदधिजल तहँ सबहीके॥ कादम्बरी पानकरि माते। राम रेवतीके रस राते॥ बऊ बिधि रमे स्वइच्छा चारी। व्है जल गिरिवर बिपिनि बिहारी॥ यादवगण गणिकनसंग मोदे। सागरमैं बऊभांति बिनोदे॥ *❧*❧*❧*❧*❧*❧*❧*❧*❧*❧**

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

हरिणाक्षिणि के हियो हरि जलमैं हरि जलजाच्छ। रमित तृप्तिता लहे तकि तीछण तरल कटाच्छ॥
निज प्रभावसौं कृष्ण तहँ दिव्यो भरण बलाय। संग यादवन के रमऊ आज्ञा दए बचाय॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

प्रभु निदेश सुनि ते मुदपागीं। यदुवंशिन संग बिहरण लागीं॥ सजल मेघ गण संग जिमि दामिनि। तिमि तिनम बिलसीं ते कामिनि॥ बाद्य गान अरु नृत्य सोहाए। अलसम करैं बारिप भाए॥ भाव बताय अनेक जतनके। हरत भई मन जादव गणके॥ मन्दिर बंस प्रमत्त बल पूरे। छवि

सागर यादवगण रूरे॥ तिन्हे सहित जरध बलि आई।बाऊकंध धै तिन्ह हि रमाई ॥ फिरि सागर बन गिरि मह ल्यावै। रमि रमाय फिरि उतैं रमावै ॥तियन सहित तिनके सँग लागे। इत उत रमे कृष्ण मुदपागे ॥ मोद अलभ्य अपूर्व अनूपा । यादव इमि लहि अदभुत रूपा ॥ कृष्ण प्रभाव चिन्ति सुखसाने। सो प्रकार नहि अचरज माने॥ भोज्य लेह अरु चोष्य पेय शुचि। भोजन भावन भूरि यथा रूचि ॥ प्रभुप्रभावतैं अति अनुपम तहँ। भयो प्राप्ति नरनारि सबन कहँ ॥ प्रभुकी इच्छातैं बिसु करमा । आइ तहां अति पूरित परमा ॥ बिबिधि भांति को नांव सोहाई। बिरचत भए सरस छबिछाई ॥ तह राजी निरमे तिन माहीं। नन्दन सदृश चारू चितचाहीं ॥ फूले फरे पल्लवित चारू। जरत फरत फल फूल उदारू॥ *❦*❦*❦*❦*❦❦*❦*❦*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

सुन्दर सुचि अति सुखद रव कूजत बिहँग अनेक। बिलसत ते तिन तरुण पहं बहुरंग सहित बिबेक॥
साध दलान सुकोठरो सुख दायक रमणीय। रचत भए नौकानपैं बहुबिधिके कमनीय ॥
पृथक पृथक तियगण सहित सबके रमिबे योग । रचत भए नौका बिशद तहं बिलसे सब लोग ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

अति बिसतरित अमन्द रतन मई रमणीय अति।बिरचे नाव स्वच्छन्द सब तिय सह प्रभु जेहि रमे॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

बलिराम आनद कन्द । करि पान मद्य अमन्द॥ अति अरुण नयन बिशाल । व्है घूर्णमान सुगात॥ भरि रेवती को अङ्क। ह रमत मुदित निशङ्क ॥ तंह जाय प्रभु यदुनाथ। लै अप्सरन कह साथ ॥ लखि नृत्य गान सुभेश। को भए देत निदेश ॥ तव अप्सरा अभिराम । करि बलि सति यहि प्रणाम ॥ शुभ नृत्य गान समोद । तंह बिशद भाव बिनोद ॥ ते करण लागीं भूरि। स्वर सुखद उत्तम पूरि॥ बलि कृष्ण कीन्हे जोग । छति बालपन ते तोन ॥ तह भई नाचत जानि । अप्सरा सुरस सुजानि॥ सुनि अति मुदित व्है राम। उठि सहित सुखदा बाम॥ तंह लगे नाचन चाहि । तव कृष्ण लखि तिमि ताहि ॥ सह सत्यभामा मोदि। उठि लगे रचन बिनोदि॥ गद सात्युकी अकरूर। भरि परमा परम पूरि॥ उठि लगे नाचन देखि। हिय महत आनद भेखि॥ हे जिते यदु परधान । सब नचे तब सुजान॥ *❦*❦*❦*❦*❦*❦*❦*❦*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

सहित सुभद्रा आरजुनं तंह यावाके हेत । आए ह तेऊ लगे नाचत रति समुचेत ॥
कुंवर प्रदुम्न सुसांब अरु चारु देष्ण शुभचारु ।नाचन लागे तहं रूचि मुदित प्रेम अपारु ॥
निसठोल्मुक सुत रामके अतिहै आनद पाय।नांचन तंह लागे सुनो जनमेजय गहि चाय॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

भयो रासि मंडल एहि विधिको। आलय भो सुषमामय सिधिको॥ इतनेम सुषमासों छाए। प्रेमपूरि नारद तहं आए॥ बंने बेस आनद सो पागे। जाय मध्यमैं नाचन लागे॥ गान नृत्य अति उत्सव करिकै। सबको हिय आनदसों भरिकै॥ कौतुक लीला विधि अभिलाषे। हास्य बचन बक्र विधिके भाषे॥ हास्य करण चेष्टा बक्र कीन्हो। लखि लखि तियन मोद अति लीन्हो॥ प्रभुहि सहित सब नर नारी गन। अतिसै हास्य किए प्रमुदित मन॥ प्रभुको भाव जानि नर नारी। मुनिकहं दए दान मुद धारी॥ प्रभु प्रभावसों नौका ताछन। बढि इतेक सुनु रञ्जन जनमन॥ जामैं सबकोउ सुखसों राचे। विलसि विहारि फेलि फिरि माचे॥ रास निवारि कृष्ण मुद लहिकै। नारद मुनिको शुचि कर गहिकै॥ सतिभामां अरजुन सह मोदे। कूदि सिन्धु मैं सरुचि बिनोदे॥ तब अक्रूरहि दिए निदेशा। आधे यादव सुखद सुभेशा॥ हैं हिं रामकी दिसि मुदराते। होहि अध सो दिसि मदमाते॥ सो दिसि होंहिं रामके बारे। बलकी दिसि मम सुवन सुखारे॥ एहि विधि रचि द्वै गोल सु लीजे। तियन सहित जल क्रीडा कीजे॥ ******

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

अथ समूर्ति सांजलि खरो सिन्धुहि दए निदेश। सागर तुम सादर करऊ जन्तु हीन यह देश॥
होऊ सगन्ध सुस्वाद जल अति निरमल रमणीय। जातें इतसों लखि परै शरवर तन कमनीय॥
मद्य कुम्भ अरु कनकके पानपात्र इत ल्याय। राखेऊ सो जो तवचहैं तव तेहि दिहेऊ सचाय॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

सद्यपद वारिज भाव भयो करऊ निज वारि शुचि। बांछित विहित विहारु देऊ सर्बजनकहं मुदित॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

इमि कहि सागर सों अनुरागे। अरजुनसों प्रभु क्रीडन लागे॥ पियको नैन सैन लखि कामिनि। चातुरि सतिभामां गज गामिनि॥ बारिजात से बारि सोहावन। मेलैं बारि बारिके भावन॥ लगी सु मुनिके मुखपर डारन। भए मुदित मुनि लखि प्रभु कारण॥ तदनु राम मदके मद छाए। सहित रेवती सनमुख आए॥ कहे रहे प्रभु जेहि विधि तैसे। दुऊदिसि बन्धो गोल लखि जैसे॥ वारिजंत्र लै लै बर भावन। दुऊ दिसिसों जल लगे चलावन॥ कितने बारि बारिसों वारैं। किते बारि बारि जबैं धार॥ एहि विधि तरल तरणि दुऊ दिसिसों। बिरचे चारि युद्ध बिनु रूपिसों॥ प्रभु अग्सर आज्ञा अनुसारी। क्रूर बाद्य तहं उचित विहारी॥ दर्दुर बाद्य बाजैं मुदं राती। अरु जल बाद्य गान अवदाती॥ बारिध कामिनि बारिज विध मय। भो तेहि छण बारिध सुषमा लय॥ एहि

विधि बारि युद्ध करि छाके । कृष्ण प्रबल प्रभु प्रभु प्रभुताके ॥ बारि युद्धको बारण करिकै । बाहेर कढे मोदसों भरिकै ॥ प्रभुके कढे कढे सब कोई । धारण किए बसन सुख भोई ॥ *◆*◆*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

अनु लेपन तन सुमुनिके निज करसों प्रभु लाय । लगवाऐ निज गातमें तियन सहित सुख पाय ॥
यादवगण नरनारि सब लावत भे तनराग । कृसचन्द भगवानके पूरित बर अनुराग ॥
तब प्रभु भोजन करण कँह बैठत भे सुख पाय । यादवगण अरु तियनकह यथाउचित बैठाय ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

व्यञ्जन बनो अनेक सामिष सुखद सुस्वाद अति । मानस सहित बिबेक सानद तहं भोजन किए ॥
न्यारे बैठि प्रवीन ऊधो आदिक वृष्णबर । शुचि सुस्वाद अमलोन भोजन कीन्हे बैसवी ॥

॥ * ॥ मोदकछन्द ॥ * ॥

पाय निशीथिनी ता थरमैं फिरि । केशव राम रचे मुदसों घिरि ॥ नारद राज बिशारद मोदित । गांन किए सबिधान बिनोदित ॥ माधवके चित चोन्लित को लखि । आइ तहां हिय आनद को रखि ॥ बारवधू सुरनायक की सब । रूपनिधांन समांन सुनी तब ॥ *◆*◆*◆*◆**

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

रम्भा मञ्जुलि मैंनका अरु उरवसी सुजांनि । हैं मां तरुणि तिलोत्तमां आदि सरस सुख खानि ॥
एहि बिधि सर्व सखानसह सहस सबेरो तानि । प्रभु बिताय कीन्हो विदा हौं सुर गणिका जानि ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

क्रिपासिन्धु सुखदानि पुत्रन आदिक लघुन सह । परम सखासम मानि रमें तहां बुझभांति इमि ॥

॥ * ॥ महिखरीछन्द ॥ * ॥

एहिभांति क्रीडा मग्न प्रभुकहँ देखि अतिसै हर्षिकै । हो दैत बीर निकुम्भ औसर लखत सो तब परखिकै ॥ हो बज्रनाम सुबन्धुता तेहि मारि तासु प्रभावती । हीं सुता ताहि प्रदुम्न हरिलै किए हैं प्रिय भावती ॥ तेहि बैरसों तब द्वारिका मैं आइ कौतुक करतभो । तहं भानु यादव की सुता हीं भानुमति तेहि रहत भो ॥ अै गुप्त लै तेहि धीर भूप सधाम की मग धरत भो । इति भानुको सह नारि नरके रूदनसों नभ भरतभो ॥ सुनि शीघ्र तहं बसुदेव आऊक आय नहि तेहि तकभे । तब पूरि बिसमय भूरि घरिक बिसूरि नहि कछु सकताभे ॥ तब हांकि रथ चलि आय प्रभुसों इमाय यह सब कहत भे । सुनिकृष्ण अतिसै कोपि ताके नाशको मन गहतभे । सबजादवन कहं हारि काका बिदा तब गुप्ति करतभो ॥ तहं बोलि खगपति कहं सपारथ चढि सु मखगनि भरतभो ॥ तिम बीर प्रबल प्रदुम्न रथचढि पाय शासन चलत भो ॥ तेहि समैं सामंद सैल बिगरे सहित सौवा कलतभो ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

नभ पथपें अति वेगसों चलि ते बीर बिभात । दैत निकुम्भहि लखत भे बज्र नगर कहं जात ॥
प्रभु प्रदुम्न पारथहि लखि मायावी सो दैत । तीनि मूर्त आपुक्ष भयो अति अमान अमनैत ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

बज्र कण्टक ले गदा बिशाला। लगि लरन रचि जो बिकराला॥ लीन्हे सुता बाम कर बरम। लरे गदा ले दक्षिण करमैं॥ कृष्ण प्रदुम्न पार्थ धनुधारी। मारहिं शरसों ताहि बिचारी॥ कन्याहि लगे न शर बर जाते। शङ्कि अशीघ्र तजैं शरताते॥ तज धनुर्धरकी बिधि लीन्हे । मारि दैतकहं ब्याकुल कीन्हे ॥ तब सह तनया सो मायावी। भो अदृश्य सकपट मेधावी ॥ अधम आदू अब करि बिधि अच्छी। भागत भो बनि हारित पच्छी ॥ माया बिनके रिपु प्रभुज्ञानी। लगे तासु पीछे अनुमानी॥ बारहि बार बाण बज्र मारैं । मुदित तासु संग लगे बिहारैं ॥ साती दीप फिरो सो भागो। थिरि न सको कितहूं भय पागो॥ थकि गोकर्ण शैल ढिग आई। सुरसरि कूल गिरो भय पाई॥ तब प्रदुम्न अति जब गति कीन्हे । तासों खैंचि कन्यकहि लीन्हे ॥ प्रभुके बाणनि व्है सो पीडित। चलो भागि दक्षिण दिशि ब्रीडित॥ गुहा द्वारिमैं प्रबिशि सशङ्कित । जो षटपुर शरसत सों अङ्कित॥ गुहाद्वारि कंह रोकि सुखारे । तेहि निशि पारथ कृष्ण बिहारे ॥ लहि प्रदुम्न प्रभु शासन भाए । कन्या भानुहि दै तहं आए॥ *❦*❦*❦*❦*❦*❦*❦*❦*❦

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

भोर भीम बल दैतसों बीर निकुम्भ अमान । कढो जुद्धको चाव गहि गर्जत मेघ समान ॥
कढत देखि मातुल लगे पारथ बाणनि ताहि। तडपि हनेसि तब तेंड गदा शिरसि पार्थकेचाहि॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

रक्त बमत व्है घूर्णित पारथ । मूर्छित गिरे भूलि शर बारथ ॥ फिरि हनि गदा प्रदुम्नहिं ओइ। करत भयो मूर्छित तहं सोई ॥ तब प्रभु कृष्ण गदा ले आपैं । सत्वर चले कोपकरि तापैं॥ चलि निकुम्भ अतिसे रिसि पागो। प्रभुसों लडन गदा ले लागो॥ घूमि चक्र सम निज जय ईछे। गदा युद्धतैं बजघण सीछे॥ ऐरावत चढि सुरपति ठाढे। सुरसह लखैं युद्ध मुदबाढे॥ मढो आह घनहासो घोरा।सो गुरगदा निकुम्भ कठोरा॥प्रभुके शीस हनेसि मत वारे। हने ताहि प्रभु खजन बिचारि ॥मोाद काहू चिन कौतुक चाही।हने चक्रसें केशव ताही॥चक्रहि आवत लखि सोइ माई। तजि निज तन कज अनबहि आई ॥ आयो धरि अतिदीर्घ शरीरस । बनि दश सहस निकुम्भ प्रबीरा॥ कृत घुन सखा सहित धनुधारी । प्रभु दइत्य को कपट बिचारी ॥ सो तन खण्ड खण्ड करि तोरैं ।राखे बच फिरि आयो औरलैं॥ अयुत निकुम्भ बीर बनि आयो। तिन्है पेखि प्रभु अति सुख

पाथो ॥ पारथ अरु प्रद्युम्न रिसि पागे । तिन्है शरनसों मारण लागे ॥ तब ते कोटक सहस दश दिशित । झपटि एकसंग भरि अति रिसितें ॥ ********

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

पाणि पाद कटि शीश धनु प्रति अंगनि लपटाय। गहि बर जोरी अरजुनहि लै गे ऊर्ध उठाय ॥
तह प्रद्युम्न तहं जाइ प्रभु करि निज मूर्ति अनेक । द्वैद्वै खण्ड करे लगे शरसों तिन्है सटेक ॥

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

करे जेहि द्वै खण्ड ते व्है दोय दीरघ काय। लरे प्रबल प्रकर्ष भट भरि रोष चहुंदिशि धाय ॥ बूझि यह बिरतान्त प्रभु धरि ध्यान चितमें चाहि। रह्यो सत्य निकुम्भ लीन्हे अरजुनहि जो ताहि॥ मारि शरसों दोय कीन्हे गिरे सो तजि प्रान ।भय माया मय असुर सब बारि बुद बुद मान ॥ गगन ते अरजुनहि महिपें गिरत कृष्ण निहारि । दए शासन सुतहि ते चलि लए रथपैं धारि ॥ मारि इबिधि निकुम्भ कहं सह सखा सुत प्रभु जाय।द्वारिका में शोक शोकनि दए आनद छाय॥आइ तह तेहि समै नारद भानुसों एहि भांति। कहे कन्या हरणको मति करऊ शोच सुकान्ति ॥ एक दिन तुव सुता रैवत शैलपैं अभिराम । रही खेलत ताहि निजढिग टेरि द्वारि सकाम ॥ दए दुरबासा सरिसि व्है शाप अनु चित मानि। कौन को तूं सुता परिहे खल असुरके खानि ॥ ***

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

तब हौं मुनिन समेत तेहि बऊ बिधि कहे बुझाय । सुनि दुरबासा कहत भे शीस नवाय लजाय ॥
अब न होइहि मम गिरा असुरहाथ यह जाय।छुटि तासें। फिरि सुपति लहि भिलविहि अतिसुखपाय॥

॥ * ॥ छन्द ॥ * ॥

सुनु भानु। सुनि मानु ॥ यह भेद। तजि खेद ॥ दुहिताहि। चितचाहि ॥ सहदेव। शुभभेद ॥
तेहि देह। सहनेह ॥ मुनिबैन। सुनिचैन ॥ लहिभानु। बरज्ञानु ॥ *****

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

करि सम्मत श्रीकृष्णसों सह देवहि तहँ आनि।भानुमती निज कन्यकहि कहि दिए सनामि गहिपानि॥
माद्रीसुत पाण्डव शुभग पतिनी सह सहदेव। भानु कृष्णसों व्है बिदा गे निज स्दह शुभ सेव ॥
अन्धक वध कहि कहि कहे प्रभुको बारि बिहार।भानुमती को हरण अरु बध निकुम्भ को प्यार ॥
भानुमती को शाप हो दुरबासा को जौन ॥कहे व्याह सहदेवसों भानुमती को तौन ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराज श्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशीवासिगोकुलनाथात्मजेन गोपीनाथेन कविना बिरचिते भारतांतर्गतेहरिवंशदर्पणे षटपुरबधो नामपञ्चबिंशोऽध्यायः ॥ ************

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

वैसम्पायनसौं कहे जनमेजय छितिपाल। सुनि निकुम्भकोवध लह्यो मनमें मोद बिसाल॥
भानुमतीके हरण मैं बज्रनाभके घात। प्रभावतोको हरण तुम क्रडे कहऊ सो तात॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

वैसम्पायनकी यह बानी। सुनि बोलो मुनिवर बिज्ञानी॥ जाइ मेरु गिरिपैं बल भारी। दितिसुत बज्रनाभ ब्रतधारी॥ बिधिहि अराधि उग्रतप करिकै। बर बूझि सुनि आनद धरिकै॥ इन्द्रहि जीतनके पन पाग्यो। अवध्यत्व सुरगणसौं माग्यो॥ और बज्रपुर माग्यो बिसतर। बज्रमयो बिरचो अति दुसतर॥ बिनतासुत ईछा तह आई। सकै न बापु महत भय पाई॥ तेहि पुर ज्ञातिन सह बसे सोई। बिहरण लागो निरभय होई॥ बिधिबरके प्रभाव मुद पागो। करण उपद्रव जगमैं लागो॥ जाइ इन्द्र सौं कहेसि दिपारो। बिधिबर बल मदसों मतवारो॥ तीनिलोक पतिता हम चाहैं। सो मोहि देऊ देखि मम बांह॥ बऊदिन तीनिलोक पति ह्वैकै। बिलसे तुम आनदसों ल्वैकै॥ देऊ हमैं अब राखि बडाई। कै सनमुख चढि करऊ लराई॥ कश्यपके सुत हम तुम भाई। कत तुम भोगऊ हमैं बिहाई॥ बज्रनाभ को बाणी सुनिकै। कहे शक्र निज गुरसौं गुणिकै॥ कश्यप यज्ञकरतहै भाई। तौलौं तू धीरज धरु भाई॥ भए यज्ञ सब पितहि सुनाइब। जो कहिहैं सो करि सुख पाइब॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

बज्रनाभ यह बचन सुनि कश्यप मुनि पँह जाय। कहत भयो बिरतांत सो सुनि कश्यप सुखदाय॥
बज्रनाभसौं कहत भे अबहिं बज्रपुर जाऊ। यज्ञ भए पैं कहब हम सो कोन्हेऊ लखि लाऊ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

बज्रनाभ पितु बचन सोहायो। सुनि सत्वर चलि निजपुर आयो॥ सादर शक्र द्वारिका आए। केशवसौं सब कथा सुनाए॥ कहे शक्रसौं कृष्ण सुखारे। यज्ञ करतहैं पिता हमारे॥ बाजपेय मख पूरण ह्वैकै। करिहौं तासु नाश मुद ल्वैकै॥ बासु नामकी बिधिकी करिकै। संमत शक्र गए मुद भरिकै॥ यज्ञोत्सव मह तँह नट आयो। निज बिद्यामैं अति पटु भायो॥ सुबिधि नाट्यबिधि करि मुदकीन्हे। मोहित सर्व ऋषिगण कहँ कीन्हे॥ ह्वै प्रसन्न मुनिगण अभिलाषे। बर मागऊ नटबरसों भाषे॥ भद्रनाभ नट सुखसौं ल्वैकै। प्रभु ईछासौं प्रेरित ह्वैकै॥ यह बरमागत भो सो सबसौं। सबका भोग्य होऊँ मैं अबसौं॥ सात दीपमै सब थरमाहीं। मम गति होइ कहो तुमपांहीं॥ सबसौं होंउ अवध्य सुखारो। होंउ ईछित भेष सुधारी॥ मृतक अमृतक भविष्यऊ के तन। प्रतिसब शक्ति लहउं प्रमुदित मन॥ सुनि ऋषिगण आनदसौं भारे। एवमस्तु बर बचन उचारे॥ उतै सर्मपै

शंक बिचारी।कह सहँसों ए बिधि दुखारी॥मन सुबन्धु कश्यप कुल आए।है तुम हंस सुभग मन भाए

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

सुर बाहन सुर सदृश तुम हंस परम प्रिय मोहि।कछु निदेश चाहौं कियो बुद्धिमान लखि तोहि ॥
बज्रनाभके नगरमैं आनद गहि तुम आऊ । तहँ बनबापिनमैं बिहरि मम हित करहो कबाऊ ॥

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

बज्रनाभकी सुता सुजानि । प्रभामती है सरस सयानि ॥ तासों करि सम्भाषण आनि । चातुरतासों निज बश आनि॥कहि प्रद्युम्नको कुलगण नाम । सुषमा बय सुभाव अभिराम॥ पुर साख्य आदिक स रङ्ग।कहि तांको मन करि सउमंग।लै मिलापको शुभद निदेश।कहेउ आइ प्रिय सुपद सँदेश॥ तब हँस केशव करि अनुनान । करब उपाय सुनऊ बुद्धिमान॥सुनि बासवके बचन सकाम।मोदित जाय हंस नहि थांम ॥ बिहरण लगे बज्रपुर बीच । बनबापिनमधि निकट स भीच ॥ बोलि मनोहर बाणी बेस । इत उत लागे रमण सुबेस ॥ बज्रनाभ तहं तिन्है निरेखि । कहत भयो करि कृपा बिशेखि ॥ तुम दम्पति मोहि प्रिय निति अब । रमौ स्व इच्छा सों सरबत्र ॥ तब ते है अति सुचित सचाय । रमण लगे अन्तहपुर आय ॥ नरभाषा तहँ बोलि सुबोल । लागे कहन कथा बन मोल॥सो सुनि सुनि तियगण गहि चाव।लगीं करन अति आदर भाव॥आनद ते तहं करत बिलास। गे चलि प्रभा नदीके पास ॥ तिन्है लेखि सो लहि अति मोद । लगीं करन बऊभांति बिनोद ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

जानि तिन्है मतिमान अति प्रभामती गुणखानि । हंसिनि शुचि शुचिमुखी तेहि कीन्ही सुखी सुजानि॥
प्रभामतीके सङ्ग बिहरि कछु दिन तहँ सुखदानि । समै पाय हंसिनि सुबुधि कहत भई अनुमानि ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

प्रभामती मैं कहँउ बिचारी । नहि तोहि सम तिऊपुर महं नारी ॥ सुन्दरि सुबुधि सुशील उजागरि । बिधि तोहि रचे अतुलि गुण आगरि ॥ तातैं बूझि कहउ तुम पाहीं । कछु प्रदार्थ तोहि दुर्लभ नाहीं॥रति सुख बिनु निरफल से सिगरे। ब्यर्थ जात सुखके दिन निकरे।।यौबन गयो बऊरि नहिँ आवहि । कहि प्रबाह के जलसम जावहि ॥ बज्रनाभ बऊ भूप बलाए । तुव सु [illegible] इत मन भाए॥ ते नर असुर गरब गुण धारे। रुचे न तुम्है सबै हिय हारे॥तातें तुम्हरे योग उदारू । बर अनुमान कियो हौं चारू ॥ सुवन कृष्णको परम उजागर । धीर धुरीन धीर [illegible] ॥ यदुकुल पुऊमी को नेता। अमर असुर सुरगणको जेता ॥ [illegible] प्रभा [illegible] फिरि पुन प्रभु बूझि सुधारबहि॥ नाम प्रद्युम्न पुऊमनि के मण्डन । मंजु मनोहर बीर [illegible] ॥ बालपने मैं जो धनु धारे । हत्यो सम्बरहि भूतल पारो॥ [illegible] तिन्हैं [illegible] सुमल सर्व गुणागुण

सो बानी ॥ निज अनुरूप अनूपम जो है। काञ्चन रत्न सदृश मिलि सोहै ॥ बचन शुचिमुखीके ए सुनिकै।प्रभावती निज हियमैं गुणिकै।।बोलत भई यथोचित बानी।पुलकि पसीजि मोदसोँ सानी ॥

॥ * ॥ दोहा । * ॥

आपु विष्णु प्रभु कृष्ण भे दैत विनाशन हेत। सो सब हैं विधिवत कहे नारद ज्ञान निकेत ॥
सकल चरित्र प्रद्युम्नके हैं हम सुने सभेद । पर एहि कारज सिद्धिमैं हैं व्यापित गुरु खेद ॥
केशवसोँ मम पितासों है स्वाभाविक बैर।शुचिमुखि केहि विधि सधिहि यह कारज पूरित बैर॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

परम पंडिता शुचिमुखि आरज । जो तू सिद्ध करै यह कारज ॥ तैा हों तोहि स्वामिनि सम मानों। आपुहि तुव दासी सम आनों ॥ यह सुनि शुचिमुखि प्रमुदित ह्वैकै। कहतभई संशय सब ख्वैकै॥ सुन्दरि हम गुरु निरहि अराधब। करि बहु जतन काज तुव साधब ॥ निज पितु पास बहोरि बहोरी। बहु विधि करहु बड़ाई मोरी॥ प्रभावती सुनि आनद गहि कै। अन्तहपुरमैं भूपति लहि कै ॥ कथा कहनकी बिसद बड़ाई। कहत भई शुचिमुख की भाई ॥ सो सुनि दनुआधिपति सुरखि सों। बूझत भयो सरुचि शुचिमुख सों ॥ तुम जो कथा कहहु अति नीकी। सो अब मोसोँ कहहु सुनीकी ॥ शुचिमुखि लहि ताको अनुशासन। लागी करन कथा सम्भाषन ॥ सुनु दनुजेश शांडिली नामा। परमतपस्विनि अति अभिरामा ॥ निकट मेरुके बर तप चारत । तेहि निरखि हम तहाँ बिहारत ॥ तासोँ नहि अति दूर सोहावन। भद्रनाभ नटवर मन भावन ॥ रहै तासु गुण अनुपम देखी। तुमसोँ कहउं सुनहु शुभ भेखी ॥ ऋषिगणसोँ बांछित बर पाए। है जग निज महिमासों छाए ॥ देव गन्धर्बन सम सो गावै। करि मन मोहन अनुपम भावै ॥ * * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

काम रूप नटमाहसों सात दीपमैं आत । सोमन्तनकहँ मोहि नट ह्वै सु प्रशंसित भात ॥
बज्रनाभ इमि कहत भो सुनि सुप्रसंशा तासु।आइ मासु ढिग शुचिमुखी लै आवहु तेहि आसु॥
तब दनुआधिपसोँ बिदा ह्वै ते सादर जाय । नारद इन्द्र उपेन्द्रको दीन्हा कथा सुनाय ॥
सो सुनि कृष्ण प्रद्युम्नकहँ दिए निदेश बनाय। इति असुरहि ताकी सुता ब्यावहु तुम उत जाय॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

देवी माया बेष रचि नटवर बनि साम्ब सह । अरु यादव शुभ भेष संग लेउ साजात सजि ॥
सुनि प्रद्युम्न नटसम बनो बिदूषक साम्ब तजि। यादव अन्य सुकाय भेेष बनाऔ मुदित मन ॥
पाचजन्य आइ सिद्ध अजीकरि मोदसोँ । नटवर भद्र उदार तासु बड़ाई संग लै ॥
चढि बिमान तैं मोहि मायापुर पर बरसो । रचो सु पुर बिच मोदि सह समाज तहँ आत भे ॥

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

आगमन नटनाटकको सुनि दैतपति हरषायं । सुपुर पुरमैं रहत हैं जे दैत मुख्य सचाय ॥ दियो
ताहि निदेश उनकौं करऊ तुम बेवहार । पाय आज्ञा आइ कीन्हे ते उचित सतकार ॥ नाट्य
निपुण विधान भे फिरि लखत निकट बसायं । नाट्य विधि ते किए उत्तम राग उत्तम गाय ॥
कथा रामायण बिशद को नाट्य विधिमैं ठानि । तिन्है दरशाए सकलहित आपनो अनुमानि ॥
रही शान्ता सुता दशरथ भूपकी तेहि आय । लोमपाद महीप मांगे पुत्रहीन अचाय ॥ दए दश
रथ सुता तेहि लै भूप निज पुरजाय । बारबधुन पठाय निजअस्टह सु ऋषिशृंगिहि ल्याय ॥
दए शान्तहिं ब्याहि सो यह सहश बेष बनाय । गाय रामायण दए परतच्छ सकल लखाय ॥
रहे हैं तेहि सभै मैं जे हुइ दानव भूरि।देखि ते सब समुझि सो अति रहे आनद पूरि॥देखि मोदत
व्है दइतगण।दए तिन्हहि सचैन ।बसन भूषण रतन अगिनित बोलि प्यारे बैन ॥ तोषि तिनकँह
असुर ते सब असुरपतिपहँ आय । कहे कौतुक सर्व सुनि सो तुरित तिन्हहि बलाय ॥ परम उत्तम
गेह तामैं बासु तासु कराय।करि सविधि सतकार तिनको परम प्रेम बढाय॥पाय पर्वणि विहसि
बैठे। सभा बिरचि विशाल। जाल वेष्टित सुरथमैं बैठाय सिगरी बाल ॥ बोलि ले नटवेष बिरच
यारवनकहँ तब।करि उचित सनमान बोल्यो नाम करिये अब॥पाय शासन मुदित व्है ते बिरचि
बेष बनाव । प्रथम कीन्हे बाद्य अनुपम बाद्य बिधिके भाव ॥ गान करि गांधर्व तिनकहँ मोहि
फिरि परबीन । नाट्य विधि भे करत ते तहँ कौतुकी घन हीन ॥ आनि नलकूबर सहचियैं रही
रम्भा बाम । आइ तासों रच्यो बलसों लङ्कपति बलधाम ॥ *⬬*⬬*⬬*⬬*⬬*⬬*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

नलकूबर सुत धनदके यह वृत्तान्त लखि कोपि । नलकूबर पौलस्तिकँह दिए शाप अतिचोपि ॥
यह रामायणकी कथा नाट्य भेषन भेखि । दरशाये असुराधिपहि निज कारज अवरेखि ॥
नलकूबर प्रद्युम्न भे शूर भए लङ्केश । मनोवती गणिका भई रम्भा विरचि सुभेश ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

मायामे कैलाश रचि नटवर मतिमान तहँ । दरशाए सविलास सो शुभकथां अभेद करि ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

बज्रनाभ लखि अति हरषाई । देत भयो गजबाजि मँगाई ॥ भूषण बसन रतन बहु बिधिको । देत
भयो तहँ बहो सहधिको ॥ भूषण बसन रतन बज तियगन । देत भई अति करि मल्हदित मन ॥
सोमवती भै बिदा सुखारी । गए वासथर नट पनधारी ॥ प्रभावतीसों उत यह हंसिनि । कहत
भई इमि परम प्रशंसिनि ॥ वीर द्वारिकामें हों जाइं । वीर प्रद्युम्नहि प्यारे पाईं ॥ भक्ति तुम्हारि

प्रेम उतसाऊ । अरु अभिलाष सुभाव सचाऊ ॥ दइ सुनाइ सबिधि सो सुनिकै। आवन आजु कहे मै गुनिकै ॥ तातें आजु अवसि वे ऐहैं । मिलि तुमसौं आनद सरसैहैं ॥यह सुनि बिहँसि प्रभावति तासौं । कहतभई अति पूरि प्रभासौं ॥ सखि शुचिमुखि तुम मो ढिग आजू । रहि मिसिने साधहु यह काजू ॥लालच लाज भोगति मोहि घेरे । बनि न परिहि कछु उनकँह हेरे ॥ हंसि तब तासु कहि हंसिनि ता संग । गई सौधपैं गहि अनुपम मग ॥ तहँ प्रद्युम्नके योग सोहाए । फरस पावड़े पलँग सजाए ॥ परदे चहू छतपोस सोहावन । लगवाए मणिनै मनभावन ॥ अतर गुलाब अबर घनचन्दन । धरवाए तहँ चौरस चन्दन ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

चलि चिन्तित उत आय कह रहे प्रद्युम्न उदार। ताही लए तिन ह्वै चली तहँ मालिनि लै हार ॥
प्रभावती पैं जाति है लखि प्रद्युम्न करि गौर । भौंरनके संग भौंर बनि गे तहँ करत सुभौर ॥
उत चवँर धरि फिरि गई मालिनि अपने धाम । सांझ भए उठि भौंर गे रहे अकेले काम ॥

॥ * ॥ बरवाछन्द ॥ * ॥

प्रभावती बिरहाकुलि ह्वै तब तात । कहति भई सुचिमुखिसों हियकी बात ॥ सखि पूरण शशि बाहन दाहन आजु । तजि निज बानि करत कहा अनुचित काजु ॥ त्रिबिधि बायु सुखदायक से यहि काल । मोहि लूक सम परसत करत बिहाल ॥ चन्दन चौसर अगर सु अतर गुलाब । बेगि हटाउ सखि मानहु तनतजि जाब ॥ शर सम लागत परसत सरसिज सैन। बिकल होत तन ब नत ब कहत सुबैन ॥ कम्पित उर रोमाञ्चित टूटत गात । मुख सूखत रुज नूतन प्रगटत जात ॥ औ सखि प्रथमहि ओरत प्रेम बिआधि। तौ न बिकल इमि होइति यह शत साधि ॥ जाहि लागि हो ब्याकुलि ताहि न लागि । लागि तोहि धिक बियवति एकहि लागि ॥ प्रभावतीके सुनि ए बचन सप्रेम । भे प्रद्युम्न तहँ प्रगटित पालक नेम ॥ लखि प्रद्युम्न कहँ प्रमुदित हिए सकाम । लज्जित अवनि अध करि रही सुबाम ॥ तब गहि दच्छिण करसौं तासु सु हार । कहत भए एहि बिधि शुभ पुलकित मार ॥ प्रिया मोहि लखि घुघुन्हैं शीस नवाय । रहिऊ मोनि कत मुद ह्वै देऊ बताय ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

एहि बिधि कहि बहुभांति तेहि करि सनमुख गहि मोद।करि गन्धर्व बिवाह तहँ कीन्हे बिमद बिनोद
सौध द्वारपैं हंसिनिहि द्वारपालिका राखि । बिहरि रहे कछु निशि गए निशि लहि आइब भाखि॥

॥ * ॥ सर्वगामिछन्द ॥ * ॥

याभांतिसौं रातिमैं चौर लौ भे सदा भूरि भामीनि पैं आय ताही । निःशंक परजहपै अङ्कम लाय

आलिंगनके चाहि जो चित्त चाही ॥ कै कोककी रीतिकी नीतिके आगरी ह्वै सु आनन्द आनन्द चाही। प्रद्युम्न ज्यौं कमलके पत्रसे गातमे तन पै भौंरकी भृंगि नाही ॥ ✱✱✱✱

॥ ✱ ॥ दोहा ॥ ✱ ॥

भोर आय मठ गेहमें विलसैं रूप उदार। प्रभावतीपै जाय निशि विरचैं कामविहार ॥
कबहूँ दिनहूँमें रमै इतहूँ उत अभिराम । रति सम भाम सकाम लहि कामरूप श्रीकाम ॥

॥ ✱ ॥ चौपाई ॥ ✱ ॥

इमि विहरे बहुदिन मुदपागे । निज कारजके घातन लागे ॥ बज्रनाभके वधकी बेरा । निरखत कीन्हे तहा बसेरा ॥ दैत दैतपति भेद न जाने।नाट्य देखि अति आनद माने ॥वासव वासुदेव पँह आई ।सरुचि संधान हंस सुखदाई ॥ उनको सब विरतान्त सुनाई।आँहि बहुरि उत आनदछाई॥ बज्रनाभको सोदर भ्राता । रह्यो सुनाभ असुर मत माता ॥ रहीतासु द्वै सुता सयानी । चन्द्रवती गुणवती सुमानी ॥ एक समै ते आनद राती । प्रभावती पै गई सोहाती ॥ प्रभावतिहि रति चिन्हित देखी । ते निज हिय विसमयसों भेखी ॥ बूझत भई भेद मन भावन। प्रभावती तब बोली पावन॥ पूर्व मोहि दीन्हो दुरवासा । विद्या दायक विशद विलासा॥ सो पढि जो कामिनि गहि चावै । रति हित पति चाहै तेहि पावै ॥ सो विधि साधि आधि सो भावन।भरउ समाज माज लहि पावन॥तुमहू चाहउ तौ सिखि लेहु।वांछित पति हित सहित सनेहु॥अपि हंसन इंछित पति पाई। विहरौ विधिवत शोच विहाई ॥ सुनि तथास्तु कहि ते मुदपागी।सिखि सो मंत्र जपन तह लागी ॥

॥ ✱ ॥ दोहा ॥ ✱ ॥

कहतभई प्रद्युम्नसों प्रभावती सुखमोद । इन्है योग द्वै रावरे बन्धुवर्गमें कोद ॥
कहे प्रद्युम्न सुबन्धु मम साम्ब अनूपम वीर । अरु गदहै पितृव्य मम अति प्रसिद्ध रणधीर ॥

॥ ✱ ॥ चौपाई ॥ ✱ ॥

प्रभावती सुनि बोली पतिसों ।ल्यावउ तिन्है इतै भरि रतिसों ॥ तब ते नट मन्दिरमे आई। सांब गदहि विरतान्त सुनाई ॥ भेष बनाइ छपाइ लवाई । जांइ तहां तिनकहँ दरशाई ॥ चन्द्रवती कहँ गदसों व्याही । सांब गुणवतिहि व्याहि उछांह ॥ करि गन्धर्व व्याह नट नायक । विहँसत भए तहाँ ते लायक ॥ बरषा आइ देखि घन घमडे ।गदहि घेरि चहुदिशिसों घुमडे॥ चपला छहरनि को छवि छावनि । सुपद बकनकी पांति सुहावनि ॥ तरुगणकी सुषमा अस फूलित। सारि दादुर कृषसों अति फूलित ॥ बरषि रहे को मारुत शीतल। परसे गात तृपितकर शीतल ॥ जुति सुख दायक रस [illegible]के ।सुनि प्रद्युम्न गिर मणि दक्षिणके॥ शिषहि बुलाइ [illegible] । बरषत बरषा ऋतुको कीन्हे ॥ कश्यपको मखपूरण मुनिके । बज्रनाभ गिरा [illegible]के ॥ समर

कश्यपके ढिगजाई । कहत भयो निज चरब बुझाई ॥ कश्यप मुनि ने वचन अथाए । वज्रनाभ कहँ बऊ समुझाए ॥ सुन तुम औ यह मंत्र विचारे । सो विजनाश हेत मन धारे ॥ हैं वासवके विष्णु सहाई । तासों लरे न तुम्है भलाई ॥ तुम निज जीवन जानऊ तबलों । करऊ न रारि शक्रसों अबलों ॥ * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

तातें निजपुर जाइ सुत करऊ अकण्टकराज ॥ जानि मुहित निज मम वचन जिन चिंतऊ यह काज ॥

कश्यपके ए वचन नहि इमि मानेसि मादान । करैं न औषध पान जिमि काल विवस म्रियमाण ॥

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

बंदि कश्यपहि वीर विशाल । आय वज्रपुर करि चख लाल ॥ सेना पतिकहँ दियो निदेश । सेना साजन कहँ उद्देश ॥ सुनासीरके जीतन हेत । भुजबल के मद भयो अचेत ॥ उत एकंत व्है बैठि सुमंत । यादव वासुदेव करि मंत ॥ भेजे प्रद्युम्नहि संदेश । वधो असुर कहँ तजि अंदेश ॥ सुनि गद आदिक यादव सर्व । व्है एकत्र करि मंत्र अखर्व ॥ हंसहि पठए प्रभुके पास । कहि संदेश इमि आनद रास ॥ गर्ववती हैं दूत तिय तीनि । लहे प्रसवदिन प्रभा अहीनि ॥ होनहार अरु करिबो तीन । होइ सरोष कहि भेजऊ तौन ॥ सो सुनि इन्द्र उपइ विचारि । कहि पठए इमि आनद धारि ॥ तिनके कोखें सुत छवि चैन । सकलशास्त्रविद अरिदल जैन ॥ प्रगटतहीं ते सव बल धाम । व्है हैं युवा पुरुष अभिराम ॥ तिन्हें सहित तरुणिन कहँ राखि । कीजो नाश दैत दल लाखि ॥ कछु दिनमें तिनके सु कुमार । क्रमसों प्रगटत भए कुमार ॥ जनमतहीं ते सव गुण पूरि । भए युवा दीरघ बल भूरि ॥ प्रभु प्रभाव निधिको यह होत । नतरु भूप कँऊ ऐसो होत ॥ *ꕤ*ꕤ*ꕤ*ꕤ*ꕤ*ꕤ*

॥ दोहा ॥ ॥

तिन वारण कहँ अटनि पैं विहरत इत उत देखि । नभग चार दनुजेशसो कहत भए अवरेखि ॥

पुरुष तिहु वय प्रबल वर अति सुन्दर सुकुमार । अन्तह पुरके अटनिपैं सानद करैं विहार ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

यह सुनि व्है क्रोधित दनुजेशा । सुभटनकहँ यह दिए निदेशा ॥ मम गृह धर्षक जे अनि आई । जाइ तिन्हें गहि ल्यावऊ धाई ॥ सुनि संदेश देखत गण धाए । ले ले शस्त्र रोषसों छाए ॥ घेरि हर्म्य चऊ दिशि भय भारण । मारु बांधु धरु लगे पुकारण ॥ प्रभावतीसों सुनि है आरत । लागी रुदन करण व्है आरत ॥ तव प्रद्युम्न साहस दै तासों । कहत भए भरि भूरि प्रभासों ॥ मानि भामिनि हिय मैं भय लेहू । मम सुप्रश्न सुनि उत्तरु देहू ॥ पिता पितृव्य बन्धु सब यारो । ए औ तुम काह चाहि पियारे ॥ तो कामिनि तव प्रियहित लागो । तजि जय ईहा आयुध त्यागो ॥ इनके शस्त्र देह पर लैकै । मरे इहां हम मन निरभै कै ॥ मातरु तुम सव सम्मत करिकै । आसन देऊ मोहि

जुद्ध भरिक ॥ गहि आयुध हम आनद रातैं । असुराधिपहि समेत निपात ॥ यह सुनि प्रभावती गज गामिनि । कहति भई प्रिय पतिसों कामिनि ॥ सुतन सहित प्रभु निज मन पाही । कहंउ उचित लखि जो चित चाही ॥ कहि अनुमानि अमल चलि आनी । देत भई पति कहं सुख दानी ॥ चन्द्रवती गुणवती सोहाइ । निज निज पतिहि दई मन भाइ ॥ ******

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

तब प्रद्युम्न गद साम्बसों कहे विलसि तुम अब। रहि समुत युवतीन कहं करौं समर शुभ अब ॥
असुर सुभट सँग ले चढो असुराधिप बलवान। चऊंदिशि फिरि फिरि हैं। करे जिनसों युद्ध महान ॥
इमि कहि मायासों रचे सुरथ तहां अनुमानि। जासु सारथी सहसफणि नागजरा भयदानि ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

तापै चढे वैररस पागे । युद्ध करण असुरनसों लागे ॥ तृण बनमें जिमि पावक दरसे । यथा वायु वारिदपै सरसे ॥ तिमि प्रद्युम्न पर बलमें बिहरे । शर परिहरे अनगिने जिहरे ॥ विविध धनक के बाण चलाई । विकल किए पर भट समुदाई ॥ चऊंदिशिसों भट असुर प्रचारैं । शस्त्र चलाइ प्रद्युम्नहि मारैं ॥ तिनके शस्त्र काटि धनुधारी । वीर प्रद्युम्न विदित रण चारी ॥ शिर भुज उर कटि पग अग काटे। असुर सुभटसों छितितल पाटे ॥ सुर गण सहित सुराधिप आई । रहि अरथ चलि आ गद पाई ॥ लेखन लगे समरकी सुषमा । जेहि प्रद्युम्न रविकी वर उपमा ॥ जे बचिगे गद साम्ब अहांहे । भे ते भट सब तरल तहां हे ॥ परे कहर सागर परमाना । अस्त्र अस्त्रजात अंहाज समाना ॥ गद साम्बहि बिनु वाहन देखी । सुनासीर हियमें अब रेखी ॥ साम्बहेत पठए रिपु नायक । रथ करि मातलिको सुत गायक ॥ गदके हित पठए ऐरावत । करि आरूढ प्रवर मन भावत ॥ लक्ष्मण सुवनके समर सहायक । भेजत ते जयन्तकहं नायक ॥ रथ गज सहित जयन्त सोहाए । सत्वर चलि प्रद्युम्न पहं आए ॥ ************

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

प्रवर प्रद्युम्न अन्तान मिलि मातलि सुत यह वीर । अरिदल मदन गे जित हैं गद साम्ब सुधीर ॥
गज रथ दे गद साम्बकहँ कहि विरतान्त सहर्ष । विरचे कोटि प्रद्युम्न तहँ प्रबल प्रद्युम्न सहर्ष ॥

॥ * ॥ भुतिमोदकाछन्द ॥ * ॥

रमणी वरंग । वर विशद अंग ॥ धनुधर सुढंग । प्रति भटन संग ॥ तह जैत अंग । करि गहि उमंग ॥ अरि गरब भंग । करि करत तंग ॥ अस आत नैन । प्रभु तनय मैन ॥ वश विरद चैन । कहि घोर बैन ॥ तेहि पलक चैन । दे दुवन जैन ॥ पुर प्रबल सेन । कान्हे अचैन ॥ हे सुभट नेक । वरषे जितेक ॥ तहं भिरि तितेक । गहि डारे मेक ॥ एहि विधि सढेका दिन रैनि एक ॥ कारि सह विवेक ।

तन धरि अनेक ॥ भट भागि तीनि । हनि कला छीनि ॥ पर गिरी दीन । करि दई छीन ॥ जग जीति छीन । निज कीर्त्ति पीन ॥ तामैं अहीनि । करि सुबुधि छीनि ॥ *⬬⬬*⬬⬬⬬*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

मारियो देखि जयन्तको । सुमन सुखद पुरहूत। किए प्रशंसा भांति बहु लखि व्यवसाय अकूत ॥
भोर कृष्ण चढ़ि गरुडपैं आइ शक्रके पास । राजि बजाए शंख वर पाञ्चजन्य सविलास ॥
सुनि प्रदुम्न धुनि शंखकी प्रभु आगमन बिचारि । जाइ बन्दि पगढिग खरे भए जोरि जुग बारि ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

निज मन्दरमहि निहारि नन्दि वृष्णिकुलनन्दन निपुण । नागरिन बहु बिचारि दीन्हे नाथ निदेश इमि।

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

चढ़ि तुम खगपैं जाइ बिहारौ । सादर बज्रनाभकहं मारौ ॥ सुनि खगपतिप चढि सुख पाई । गहि प्रभुपद पङ्कज सुखदाई ॥ सो जहं बज्रनाभ तहं आई । लागे तासों करण लराई ॥ दोऊ भुज बलके मद माते । घोरयुद्ध कीन्हे रिसिराते ॥ गहि गुरु गदा प्रदुम्न सुखारे । रकत बमन करि घूमि धरीखा । गिरि अचेत लहि असुर अजीलौं ॥ बज्जर चेति गहि गदा प्रचारी । हनेसि प्रदुम्नहि भट बलभारी ॥ ताके लगे मूर्छि गरुडोपर । गिरे प्रदुम्न निरखि हरषोपर ॥ कृष्ण प्रदुम्नहि मूर्छित देखी । शंख बजावत भे अवरेखी ॥ सुनि सुखदा शंखध्वनि संचण । भे चइतन्य प्रदुम्न सुलक्षण ॥ तब प्रभु मनग चक्र तेहि धरमैं । आवत भे प्रदुम्नके करमैं ॥ इन्द्र उपेन्द्रहि नामि उछाहे । चक्र प्रदुम्न शंखपै बाहे ॥ बज्रनाभकोवर सिर छेदो । प्रभुपैं गयो चक्र अरि भेदी ॥ गद सुनाभ हित दनुज निपाते । अन्य भटनकहं शाम्ब सोहाते ॥ बज्रनाभको बध लखि भागो । षटपुर गो निकुम्भ भय पागो ॥ बरषे सुमन सुमन सुख लहिके । जैति कृष्ण केशव कहि कहिके ॥ *⬬*⬬⬬*⬬*⬬**

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

सुमन पुरन्दर सहित तब कृष्ण बज्रपुर आय । शासित कीन्हे प्रजन कहं नीति सहित सुखदाय ॥
चारि भाग तेहि राज्य कहं कीन्हे तहं करिमंत्र । सुत जयन्तको बिजय तेहि दीन्हो एक स्वतंत्र ॥
हे प्रदुम्न गद शाम्बके तहं जे शुभग कुमार । तीनिभाग तिन कहंदए क्रमसों कृष्ण उदार ॥
चारि कोटि हैं ग्राम वर शाखा ग्राम अनेक । तुल्य भागसों दै तिन्हे कीन्हे प्रभु सविवेक ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

शक्र कृष्ण करि चैन गे निज निज पुर मोद लहि । तहं षटमास सप्रेम रहि गद शाम्ब प्रदुम्न गे ॥
अबलों राज्य सचैन ते चारों तहं करत हैं । सुनहु भूप सुदचैन उत्तर दिशा सुमेरके ॥

॥ * ॥ प्रभाकरछन्द ॥ * ॥

परलोरव भारथ को लखि अन्त । गए साम्ब प्रद्युम्न प्रभाव अनन्त ॥ चलि आय तहां कछु धीस बिलोरि । फिरि आन भए दिव मञ्जुल मोदि ॥ बरणे एहि अध्यायमैं कारण सहित सप्रेम । बज्रनाभ को बध किए जिमि प्रद्युम्न गहि नेम ॥ स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणसिंहाज्ञाभिलाषिणा श्रीबन्दीजनकाशीवासिगोकुलनाथात्मजेन गोपीनाथेन कविना विरचिते भाषायां भारतान्तगते हरिवंशदर्पणे षड्विंशोऽध्यायः ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

कमलनयन कमनीय अति करुणा सिन्धु कृपाल। कला कुशल प्रभु कौतुकी कोशलकुलके काल ॥

॥ * ॥ दिगदेशोछन्द ॥ * ॥

तासु ईहा आनि । शक्र निजहित मानि ॥ बिश्वकर्मंहि टेरि । कहे आनद घेरि ॥ द्वारिकापुर जाय । रचौ फेरि सचाय ॥ महत आनद पाय । बिश्वकर्मा आय ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

पुरकी रचना फिरि किए अति सुन्दर रमणीय। सुनक्ष भूप को करि सकै सो सुषमा कमनीय॥
प्रभुके रहिबे को सदन योयन अर्ध प्रमान । अति उन्नत सुरपति भवनसम बिरचे मतिमान ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

चढि गरुडोपर नभपैं धाई। रहि निजपुर लखि प्रभु सुखदाई ॥ शंख बजावत निकयहु आए। मिलि यादव गणसों छबि छाए ॥ करि प्रियबचन चारु सो अर्चन । किए गरुडको तहां बिसर्जन ॥ सह यादवगण सुख सरसाई । बैठे सभा सदनमै जाई ॥ यथा उचित सबको आदर करि । दीन्हे मणि धन बसन मोदभरि ॥ आदि रोहिणी सिगरी माता । अरु यसुदा सुनु भूतल त्राता ॥ सुनि आगमन मोदसों छाई । प्रभुहि लखन हित तहं चलि आई ॥ तिन्हे लेखि प्रभु सुखसों सरसे । चलि सबन्धु सबके पग परसे ॥ बार बार सब हिए लगाई । मोदित भई जनम फल पाई ॥ कहि कहि उचित बचन चित भावन । अति सुखदए कृष्ण प्रभु भावन ॥ आवति भई तहां तेहि छनमैं । बिधनिवासिनि मोदित मनमैं ॥ लखि भगिनिहि सानद मन कीन्हे । राम कृष्ण आगे चलि लीन्हे ॥ अति सप्रेम व्है मिलि दोउ भाई । करि सतकार प्यार अधिकाई ॥ मातुन सह करि बिदा सुखारे । बिमल सभा मध्यमध्य सिधारे ॥ सकु जननिगण के अग जननी । गई गेहमांधि दैयत दलनी ॥ कृष्णचन्द यदुगण सह मोदन । नीति रीतिसों लगो बिनोदन ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

इतने मैं सुरराजके अनुशासन तें तत्र । आए नारदमुनि मुदित रहे कृष्ण प्रभु यत्र ॥

पूजित विधिवत कृष्ण सों बैठि यथोचित ठौर । कहत भए सब यदुन सों मुनिगणके सिरमौर ॥
शाखा प्रश्न अब नाहिं हैंम लों जितने शुभकर्म। किये परम बलवाने असुर संहारनकी धर्म ॥
पृथक पृथक यदुरायके सब गवने गए गाय । मुनिकेयशवसों है विदा गए स्वर्ग सुखपाय ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

यदुगण आनंद पूरि सहि अनेत धन कृष्णसों। दे दै दक्षिणा भूरि रुचित यज्ञ लागे करन ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

अथ फिरि जनमेजय भूभरता। मुनिसों बूझे अरिदलदरता॥ जे प्रधान माधव की रानी। तिनके वंश कहौ मुनि ज्ञानी ॥ सुनि मुनिवर हिय आनंद राखे। एहि प्रकार नरपति सों भाखे ॥ रुकुमिनि जाम्बवती सतिभामा। नाग्नजिती सैव्या अभिरामा ॥ तदनि सुदंता यमुना प्यारी। और लक्ष्मणा ये व्रतधारी ॥ चारु मित्रविन्दा गजगामिनी। सरुचि सुभीमा भरतहि भामिनी ॥ आठ दोय प्रभुकी तिय नामी। ए सुनु जनमेजय महिस्वामी ॥ हैं प्रद्युम्न रुकुमिनिके गुर सुत । सम्बरके मारक बर बल युत ॥ चारुदेष्ण ताके लघुभ्राता । चारुभद्र फिरि विदित सुदाता ॥ चारुगर्भ संहष्ट बऊरि हे। सुत सुषेण ए दोउ फिरि हे॥ चारु गुप्तरण जय यश लेता । चारु विन्द सुहितन सुखदेता ॥ ए दश सुत रुकुमिनि के जाए। कन्या चारुमती सह भाए ॥ सुवन एकादश भानुहि आदिक । सतिभामाके हैं प्रिय वादिक ॥ कन्या चारि चारु अलि गुणिये। अब सुत जाम्बवती के सुनिये ॥ सांब आदि सुत पांच बखाने। तनया एक सहित सुख माने ॥ है सुत नाग्नजीति के नागर। ह बरणे भट परम उजागर ॥ *◆*◆*◆*◆*◆*◆*◆*◆*◆*◆*◆*◆*◆*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

सुता एक है सुवनहि लहे सुन्दरता नारि।सैव्या के सुत ए कहो अरि जेता धनु धारि ॥
सात सुभीमांके सुवन करता कीर्त्ति अदीन।तीनि लक्ष्मणाके सुवन कन्या एक प्रवीन॥
श्रुत नाम सुत प्रगट भो यमुनासो जयजैन।ताहि दए सुतसेन कहं केशव करुणा ऐन॥
सोरह सहस तियान मिलि लाख सुवन रणधीर । भए कृष्णके प्रबल अति विदित बखाने वीर ॥
भे अनिरुद्ध प्रद्युम्नके सुवन परम बलवान । जेठो सुत अनिरुद्धको बज्रनाभ मतिमान ॥
भे प्रतिरथ सुत बज्रके ताके सुवन सुचारु । सुत कनिष्ठ अनिरुद्धके हैं अनमित्र उदारु॥
शिनि सुत भे अनमित्रके सत्यवाक सुत तासु। सत्य वाकके सूर सुत सुत युयुधान सु आसु ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

तासु असङ्ग कुमार सुनितासु सुत प्रगट भे । तासु युगन्धर बार वंश प्रशंसित कृष्णके ॥
इतने कहे प्रधान माधव वंश असंख्य हैं । पुत्र पौत्र प्रमाण अरु प्रपौत्र विधानसों ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

वैसम्पायन के ए बैन। सुनि बोले भूपति लहि चैन ॥ जिमि प्रदुम्न सम्बरको नास। किए कहौ सो ग्रान प्रगास ॥ बैसम्पायनि कहे सुनु भूप। भो प्रदुम्नको जन्म अनूप ॥ यादिन ताकी सतई रैनि लहि निशीथ बोला भूवमैनि ॥ आइ सम्बरासुर गुर काय। निठुर सूतिका ग्रहमधि आय ॥ लै प्रदुम्नकहँ सो निज भौन। काहुं जान्यो भेद न तौन॥केशव जानि भविष्य बिचारि। रहे मौन ह्वै धीरज धारि ॥ हीं सम्बर को प्यारी तीय। मायावती परम शुचि हीय ॥ दिहेसि प्रदुम्नहि तेहि कहि मोहि। सुतबत पालऊ याहि बिनोहि ॥ हरषि प्रदुम्नहि लै सो सङ्ग। लागी निरखन बदन मयङ्क ॥ निरखत भो ताके हिय मान। है ए मम पति काम समान ॥ यह दृढ जानि सु करि अनुमान। दियो न तेहि निज अस्तनपान ॥ धाईके अस्तनको छीर। पान करावत भई स्वतीर ॥ पालन पोषण बिधि निज हाथ। करत भई आने निज साथ ॥ क्रमसों कछू दिवसमैं बार। बरधि अवस्था लहे कुमार ॥ तब रति दृढ़ि असुरकी बाम। लागी करण बिनोद ललाम ॥ **

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

जानत ताहि प्रदुम्नहैं निज जननी नहिं आन। तकि बिकार चेष्टा कहे सोचितन्है मतिमान ॥ जननी ह्वै कत करतिहो इमि चेष्टा अनुमानि। भूलि पुत्रको भाव हठि रति मति पतिसम आनि ॥ मे तुव सुत हौं के नहीं कहऊ शीघ्र यह भेद। दूरि होइ जेहि जो भयो तुव सुभाव लखि खेद॥

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

बचन सुनि प्रद्युम्नके मायावती मुसुकाय। कहत भई से भई सिगरो भेद आनद छाय ॥ हौ न तू मम सुवन हे। तुम कत मम छबिवन्त। हे न सम्बर पिता तूय तब पिता कृष्ण अनन्त ॥ मंजु महिषी कृष्णकी रुकमिनी हैं छबिभौन। तासु तनुज भये तुम फिरि भयो सुनिये तौन॥जन्मतें निशि सातई उत सम्बरासुर आय। हरि तुम्हे लै आइ मोकह देतभो गहि चाय ॥ प्यारि पत्र तिय चोर को मैं तुम्हे सेयो मोहि।करऊ अब मम आस पूरण केलि कलन बिनोहि ॥ तजऊ तोसौं जननिको हो भ्रांति कीन्हे जौन। तुमहिं देखे बिनु जननि तुव परम दुखित सरौन ॥ सुनि प्रदुम्न सरोषन्है यह भरे करत बिचार। कोपि सम्बर बरै मोसौं बीरउ सो उपचार ॥ यह बिचारि चढाय धनुशर लाय श्रुतिलो टानि। काटिदीन्हे रत्यमै ध्वज परम प्रिय पहिचानि ॥ ध्वजाको बिध्वंस सुनिके ध्वजाधीश रिसाय। रहे सतसुत तिन्हैं शासन दयो निकट बलाय ॥ जाइ तुम सब सुभट शीघ्रहि बाण शोण्ण मारि।केतु छेदी दुष्टके हृदि देऊ महिपै डारि॥मानि शासन निज जनकको सबखे लै सर्व। गे समीप महीपैं प्रदुम्नहि टेरि बचन सगर्व ॥ सब गर्वित सुरथपैं चढि भट प्रदुम्न महान। जाइ तिनसौं भिरो लखि गजजूथ सिंहसमान ॥ किए उद्धत युद्ध क्रुद्धि दुबुद्धि सिगरे वीर। तिनमत भो

दशसन तिन्हहि सुत कृष्णको रणधीर ॥ सहित सुरगंधर्वगण तहं आइके सुरराज । लखनलागे सुभटजनके वीरताके काज ॥ देखि अद्भुत युद्ध तँह गन्धर्व अद्भुत नाम । कहतभो सुरराजसों करजोरिके तेहि ठाम ॥ एक सुभट प्रद्युम्न वे शतवीर दीरघकाय । पाइहैं प्रद्युम्न तिनसों कोजे किमि लहि चाय ॥ *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

सुनासीर गन्धर्वको सुनि यह वचन सदन्द । प्रबल प्रकर्ष प्रद्युम्नको कहे प्रभाव अमन्द ॥
ए प्रद्युम्न छविधामहैं पूर्वप्रशंसित काम । भस्मकिए शिव तव इन्है लखि कछु दोष सकाम ॥
रतिके अस्तुतिके किए कहैं कृपाकरि ईश । मानुष व्हेहैं विष्णुप्रभु जनहित विस्वेबीश ॥
तासु तनय व्है हैं प्रगट तुव पति नाम अनंग । हरि लै जाइ हि निज सदन तेहिं सम्बर खलसंग ॥
तातें प्रथम हिं जाइ तुम मायावती कहाय । सम्बरकी तिय व्हैरहौ मोहि ताहि महिवाय ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

पाइहि तुम्है सप्रेम तुवपतिकहं हरि ल्याइ वह । पालेउ ताहि सप्रेम बरधि बधिहि सो सम्बरहि ॥
बकरि द्वारिका आय तुमहिं सहितविहरिहिलषि । इमि कहि शिवसुखदाय गए कलित कैलासमे ॥
एहि विधिको बरदान लहे काम सुतकृष्णके । ए यमजैत अमान भ्रम न करउ कछु चित्तमे ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

यह सुनि सुरगण संशय त्यागे । लखन लगे संगर सुदपागे ॥ सम्बरके शतसुत भरि रिसिसों । लगे प्रसव मारण चहुं दिशिसों ॥ तिन शस्त्रणकहं काटि सुधारे । धीरप्रद्युम्न वीररस भारे ॥ बाण अमोघ अनगिने मारे । शतते असुर शतक बधिडारे ॥ तासुणलसे सुरथपैं जैसे । हतिगज सिंह शिखरपैं जैसे ॥ सुतबध सुनि सम्बर रिसि छायो । चतुरंगिनि सेना सजवायो ॥ सानुमान समरथ अतिभारी । चल्यो ताहिपैं चढि धनुधारी ॥ मंत्री चतुर चारि रणधारी । चले संग परप्राणप्रहारी ॥ दुर्धर वीर प्रमर्दन बीरा । तृतिय केतुमाली रणधीरा ॥ चौथ शत्रुहन्ता शरवाहक । चलो प्रचारत संगर चाहक ॥ बीसअक्ष सहसदश नरते । द्वैशत रथी रुधिर महि भरते ॥ आठसहस्र हयसब सजाती । बरणे बरभट अयुत पदाती ॥ चलो संगले सम्बर राजा । बजवा बत बहु जंगी बाजा ॥ असगुण बहुत भये तेहि छणमैं । नहि मानेसि सो गर्वित मनमैं ॥ रणमहि मध्य प्रद्युम्नहि देखी । सबपु सम्बरासुर अति तेखी ॥ शीघ्रगवाण सहस्र प्रहारे । तिन्है प्रद्युम्न काटि महिडारे ॥ *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

मचोयुद्ध अतिघोरतँह आयुध चले अनेक । हत्यो अनगिने असुरकह तनय कृष्णको एक ॥

हो प्रदुम्नके शरनत व्याकुल ह्वै अत भागि । सम्बरके पीछे भए हरेजाय भयपागि ॥
तब सम्बर सारि सचिव को यह दए निदेश । सुरि मम अप्रियकार कहि हनऊ शीघ्र शुभभेश ॥
॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

निजस्वामीको सुनि अनुशासन । ते चारौ भट युद्ध विलासन ॥ कीन्हे घोरयुद्ध बलभारे । क्रमसौं तिन्हे प्रदुम्न सघारे ॥ ता परतैं शोणितकी तरणी । बहति भई वीरतिसी धरणी ॥ तिनको नाश देखि कै सम्बर । लाग्यो आपु करण गुरसंगर ॥ हने प्रदुम्न लाय धनु गुरसैं । एक बाण संबरके उरमैं ॥ ताके लगे मूर्छि असुरेशा । चेतिहने शर सात सुभेशा ॥ तिन्हे प्रदुम्न बीचहीं काटे । फिरि हनि सत्तरि शर तेहि डांटे ॥ फिरि असंख्यशर तजि रणधारी । छाइ दिशनि करिदिय अंध्यारी ॥ अन्धकार लखि सम्बर धनुधर । वैष्णवअस्त्र तजतभो बुधिवर ॥ अन्धकार लोपनकरि पवयैं । वरशीशर प्रदुम्नके रथपैं ॥ करि प्रदुम्नकर लाघव निनितिसैं । डारे काटि सबशर तितिनैं ॥ तब तबरच्यो सो मायावी । तजे अमितशर ए मेधावी ॥ शिलावृष्टि कीन्हेसि वैं जबहीं । मारुतशर छांडे ए तबहीं ॥ सो गजजूथ रचे अति कोपे । ए रचिसिंह तुरित तेहि लोपे ॥ सम्बर कीन्ही माया जितनी । किए प्रदुम्न व्यर्थ वह तितनी ॥ तब सम्बरकरि चव रचराते । प्रकटित किए सिंह मदमाते ॥ ***

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

तब प्रदुम्न कीन्हे प्रगट शलभ अष्टपद भूरि । सिंहजूथको नाश ते करत भए बलपूरि ॥
तब सम्बर शोचत भयो मैंपाल्यौ निजकाल । बालपने एहि नहिवध्यौं बूझि चातुरी चाल ॥
एहिविधि शोची घारकलौं फिरि हिय साहस आनि । दई शम्भुकी पन्नगी मायाकरते महानि ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

बमतज्वाल पन्नगगण धाए । चँऊदिशिसौं अति रिसिसों छाए ॥ तब प्रदुम्न तार्क्ष्यकी माया । करि लोपित कीन्ही सो माया ॥ यह लखि शोचित संगर सम्बर । हिय विचारत भो गुरनहर ॥ श्री गिरिजाको दीन्हो सुन्दर । भीम अमोघजयद आयुधवर ॥ है मम पास आसको पाहक । पावक सम अरिबनको दाहक ॥ तेहि बलाद एहि शीघ्र निपाती । अयलहि परम मोदसों राती ॥ यह बिचार श्री सम्बर कीन्हे । तुरित सुरेश आनि सो लीन्हे ॥ सो नारदसौं कहि सुरस्वामी । कहत भए शमि अन्तरजामी ॥ कवच सुभमलय इन्द्रव चारू । अमल अभेद अमोघ उदारू ॥ पढ़ली सादर सहित सनेहू । जाइ प्रदुम्नहि गुरु कहि देहू ॥ सुनि लै कवच अब मुनिनारद । गे प्रदुम्नपैं परम बिशारद ॥ अन्तरिक्ष रहि नभपैं नारद । कहे लक्ष्मणके सुतसौं शारद ॥ मै नारदसौं सुनु रिपुघालक । पठए मोहिं सहचि सुरपालक ॥ पूर्वभाव निज सुमिरऊ पावन । तुमहौ कामदेव

प्रतिपादन॥ शिवके क्रोधानलसों जरिकै। भएउ कृष्णके सुत तनधरिकै॥ बाल्यापनमें सोहि छबि छायो। हरि तुमकहं इत सम्बर ल्यायो॥ *@*@*@*@*@*@*@*@**

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

जो सम्बरकी बरनिहै मायावती प्रवीनि। सो तव तिय रति रतिप्रिया है रतिभरी नवीनि॥
तुव पालनके काजहूँ सोहि सम्बरहि अब। मारि सम्बरहि नाहिले जाउ कृष्णप्रभु जब॥

॥ * ॥ अथकरोछन्द ॥ * ॥

कवच सुभग्र वरसब चारु। अमल अभेद्य अमोघ उदारु॥ सुमामोर यह तुमकहँ दीन। अब यह धारण कीजै प्रवीन॥ अब मनदै सुनिये मम बैन। यह जो सम्बर दैत सचैन॥ दियो पावतीको करि टेक। है यासों गुरमुद्गर एक॥ सो अमोघ अति उग्र प्रभाव। नेहि वंह फाउनचहै सचाव॥ सम्बर ताके बारणहेति। गिरिजहि ध्यावउ सविनय चेति॥ गे सुरपतिढिग मुनि कहि नेम। रथतें उतरि प्रद्युम्न सप्रेम॥ धरिहिय शैलसुताको ध्यान। अस्तुति करत भए मतिमान॥ सुनि अस्तोत्र कृपाकरि गौरि। कहतभई निज महिमा बोरि॥ मैं प्रसन्नहौं लखि तव कर्म्म। मांगि लेउ बांछित बरधर्म्म॥ जगदम्बाके बचन उदार। सुनि अतिमोदि प्रद्युम्न कुमार॥ करि प्रणाम बोले करजोरि। अम्ब सुनउ यह बिनती मोरि॥ जो मोपर तव कृपा सचैन। तौवरदेउ सर्व अरिजैन॥ अरु आपुनको दीन्हो जौन। है सम्बरसों मुद्गर तौन॥ पद्ममाल सम लगि मम ग्रीव। सधि सोहै गुर सुषमा सींव॥ यह सुनि एवमस्तुकहि हर्षि। भई अदृश्य अम्ब मुदवर्षि॥ ** ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

तव प्रद्युम्न चढि रथपै बैठे गहि धनुबान। लखि सम्बर मारतभयो मुद्गर बज्र समान॥
सो मुद्गर कमनीयह्वै चारु कञ्जकी माल। लगि प्रद्युम्नके ग्रीवमें शोभितभयो विशाल॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

तब प्रद्युम्न गहि बाणशरासन। जो मुनिदीन्हे करि सम्भाषन॥ कहत भए इमि जो नहिं माता। केशव रुकुमिनि मम पितु माता॥ तौ एहि शरसों यह खल मरई। सुर नर मुनिकर संशय टरई॥ कहि धनु श्रुतिलौं इंचि सुखारे। बाण अमोघ तासु उर मारे॥ भेदि ताहि उर महिमें प्रविसो। पर्वतफोरि घोरगुर पविसो॥ दुस्सहतेज बरष्याव शरको। लहि भो भस्म असुर बरधरको॥ सुर गन्धर्वनके गण हरषे। साधु साधु कहि सुमन सुबरषे॥ असुरहि बधि प्रद्युम्न धनुधारी। आइ रिसवतपुरी सुखारी॥ लैतिय मायावतिहि स्वरथपैं। गए द्वारिका चढि नभपथपैं॥ सम्बर प्रभुके महपैं जाई। उतरत भए परम सुख पाई॥ रथतें उतरि सतिय सुखदाता। चले जतैहों रुकुमिनि माता। देखि तिन्हे सब तियगण रूरी॥ विस्मय हर्ष भी तसौं पूरी। कुतहि

देखि रुकुमिनि मृगनैनी ॥ पुत्रशोकतें आरत बैनी । सोहत सपतिन सवतियनगणसों ॥ करत भई कछु मोहित मनसों ॥ अर्थ रातिके ऊपर सजनी । सपन लख्योमैं सुभग सुबरनी ॥ दए मोहि को यत प्रभु ल्याई । सुरतरुको पल्लव सुखदाई ॥ ********

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

अति सुन्दर रमणीय रुचि शुचि मुकुतनको हार । पहिराये मोहि लाय उर प्रीतम कृष्ण उदार ॥
श्वेत वसन धारे सुरुचि श्यामा तिय लखि मोहि । गहि अम्बुवार सुवारिसे शीश भूमि मम मोहि ॥
माला कञ्चनकी विमल पहिराई करि प्रेम । निरख्यों मैं शुभ सपनए शीघ्रहि करता छेम ॥

॥ * ॥ गहिलदोछन्द ॥ * ॥

यह कहि कह्यो प्रद्युम्नसे इमि निकट लहिकै रुकुमिनी । तुव सुवन वरके करी अँइ वर पुत्रको पदवी घनी ॥ तव सहश होतो सुवन मम प्रद्युम्न होतो औ सुनो । तेहि गयो हरिले बालपनमें असुर सम्बर अरिगुनो ॥ तहँ आइ इतने में समुद प्रभु कृष्ण रुकुमिनि सों कहे । यह पुत्र तव सुप्रद्युम्नहैं यह पुत्रकी पतिनी अहे ॥ रतिनामहै ए यह रति रहति उत रही मायावति कही । निज शक्तिसों निज सहश तिय रचि सम्बरहि मोपतिं रही ॥ अब मारि रणमें सम्बरहि लै तियहि इत आवत भए । लहि सतिय सुत तुम करहु अब बेवहार लौकिक मुदमए ॥ ए सुनि सभाग सराहि रुकुमिनि पाइ प्रिय प्रफुलित भई । चलि अङ्कलाइ सुपुत्र गहि सुखसिन्धु मधि मनु हलि गई ॥ तब मुदित श्री प्रद्युम्न बन्दे पग जनक अरु जननिके । बलिरामके पग बन्दि बन्दे चरण सब गुरुजननिके ॥ सबदए आशिष लाइ अङ्कनि हरषसों गद गद महा । तेहि समयके सुखके प्रवाह न जात अब नेसुक कहा ॥ *********

*॥ दोहा ॥ * ॥

फिरि कीन्हे बलिराम प्रभु पूरित प्रेम स्वनंद । रक्षाहित प्रद्युम्नके पावन आन्हिक मंत्र ॥

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

विष्णु विधि हर गुरु सुरासुर पितर ऋषि मुनि पातु । पातु शुचि ओंकार अरु मिलि वषट्कार सुपातु ॥ पातु वेद पुराण अरु व्याख्यान सर्व्वस पातु । पातु पृथिवी वायु नभ दिशि नदी गिरी पातु ॥ सर्व सागर सर्व पर्वत सदा लवपति पातु ॥ सर्ववसु आदित्य सर्व सु अश्विनौ द्वौ पातु । पातु श्रीश्री स्वधा मेधा तुष्टि पुष्टि सु पातु ॥ पातु स्मृति धृति अदिति दिति दनु स्वधा स्वाहा पातु । प्रात ग्यारह रुद्र अरु सब रुद्रके गण पातु ॥ तीर्थपति सब तीर्थ पाहि सुतीर्थ बासी पातु । पातु गणपति श्यामकार्त्तिक सदा नन्दी पातु ॥ पातु सब पर्जन्य अरु नक्षत्र ग्रह सब पातु । पातु देवी सदा किंनरी सप्तमातर पातु । पातु तीनो अग्नि शुचि अरु सर्व मख निति पातु ॥ शेष वासुकि

नचकादिक सप सिगरे पातु । पातु अमृत गज सुबरन दूध दधि मिति पातु ॥ पातु ऋषि पतिनी सकल ऋषिकन्यका सब पातु । पातु सिगरे प्रजापति सुत प्रजापतिके पातु ॥ कियो श्रीबलिरामको यह चारु रक्षा मंत्र । पढ़ै जे अरु सुनै जे जन राखि चित्त स्वतंत्र ॥ लहहिं कबहुँ न क्लेश ते जन लहैं कबहुँ न भीति । लहहिं वांछित फल अपूरब लहहिं रणमें जीति ॥ *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

बरणे एहि अध्यायमें बंश कृष्णके जौन । हरि प्रद्युम्नको लै गयो सम्बर दैयत तौन ॥
बधि सम्बरे हि प्रद्युम्न लै मायावती स्वतीय। फिरि आए पुर द्वारिका सो बरणे कमनीय ॥
फिरि बरणे बलिराम जो कीन्हे रक्षामंत्र। जाहि पढे जन रहि अभै बिहरैं स्वरुचि स्वतंत्र ॥

इति श्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशीवासि गोकुलनाथकवीश्वरात्मजेन गोपीनाथकविना विरचिते भाषायां भारतान्तर्गते हरिवंशदर्पणे संबर बधो नाम सप्तविंशोऽध्यायः ॥ * * * * * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

वैसम्पायनउवाच॥ हरि प्रद्युम्नकहं लै गयो सम्बरजाही मास। जाम्बवतीके शाम्ब भे सुनो भूप तेहिमास ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

करि बलिराम छोह अति तापा। ग्रन्थ शास्त्र विधि शिखए आपैं ॥ सिगरे यादव लखि मुद भर हीं। अतिसैं छोह शाम्ब पर करहीं ॥ सहित सबय यदु द्वारावतिमें । बिहरैं मन दीन्हे सुतमतिमें ॥ प्रभु प्रभाव तेहि बर पट्टनमें। पूरित निधि रिधि सब हि ग्रहनमैं ॥ लखि बिभूति सिगरे यदुगणकी। लही हारि श्री सब नृपजनकी ॥ एकसमै दुर्य्योधन राजा । किए यज्ञ बर सरस समाजा ॥ तहँ सिगरे चहुँदिशिके महिपति । न्योते गए रहे हित्थ गहि रति ॥ तहँ ते सब गुणि सरस उछाहे। पुरी द्वारिका देखन चाहे ॥ सिगरे नृपसह पाण्डव कौरव । गए द्वारिका गहि गुर गौरव ॥ सुने कृष्ण सिगरे नृप आए। रैवत गिरिढिग बास कराए ॥ सेना अष्टादश अक्षौहिनि । सिगरे नृपगणकी मन मोहनि ॥ योयन योयनमें निज निज दल । लै लै परे भूप सब बर बल ॥ यदुबंशिन सह कृष्ण सुखारे। गए तहां सुषमासों भारे ॥ मिले जथोचित सब नृपगणसों । सबनृप लहे मोद अति मनसों ॥ चारु सिंहासन रचित रतनसों । मधिमें ताहि धराय यतनसों ॥ तापैं सरूचि प्रभुहि बैठाए। नीके निरखि नैनफल पाए ॥ * * * * * * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

यथा उचित आसननिपैं यदुन सहित सबभूप । चहुँदिशि बैठत भे बहुरि सुषमा पाइ अनूप ॥

यदुगण नृपजन सहित तहँ सोहे प्रभु छवि छाजि। सुर असुरनकी रचि सभा राजत मनङ्ग विराजि॥

॥ * ॥ मधुभारछन्द ॥ * ॥

तहँ लगे होन समोद। अतिवार तास विनोद॥ भे ताहिछण घनघोर। अब बढ्यो मारुत ओर॥ इमि महत दुरदिन देखि। सब रहे चकित अवरेखि॥ घन घोरते छविछाय। तब प्रगटि नारद आय॥ लहि अर्घ्य पाद्य प्रवीन। भे सभामधि आसीन॥ तब मिटो दुरदिन सर्व। भे सुचित नृपति अखर्व॥ तब कह्यसो मुनिराज। इमि कहत भे निजकाज॥ आचरज धन्य महान। हो कृष्ण तुम सुखदान॥ सुनि कहे प्रभु मुसुकाय।मुनि कहे तुम सतिभाय॥ हे आचरज अरु धन्य।लहि दछिणा हम गन्य॥ यह सुनि सुमुनि सुखदाय। इमि कहत भे हरषाय॥ एहि प्रश्नको करि सोध। अब लह्यो प्रभु मैं बोध॥ इमि भाषि सुमुनि सुजान। फिरि चहे जरध आन॥ एहि बारताको भेद। बिन लहे नृप लहि खेद॥ इमि कहे प्रभुसों बैन। मुनि किए प्रश्न सचैन॥ तुम दए उत्तर ऐन। करि प्रगट कहिये तैन॥ * * * * * * * * * * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

सुनि प्रभु भूपनसों कहे नारदसों सुनि लेऊ। कहे सुमुनिसों भेद यह भूपनसो कहि देऊ॥
सुनि मुनि भूपनसों कहे सुनऊ सकल छितिपाल।बूझेऊ सो हम कहत हैं यह बिरतान्त बिसाल॥

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

न्हान सुरसरि गए हम निशि रहे आधी याम। लख्यो तटमे तहां कछप एक अति अभिराम॥एक योयन ऊच्च चौडो तासु दुगुण अनन्य। परसि तेहि हम कहे तुम आचरज वपु हो धन्य॥ बचन यह सुनि कहेसि सो मति कहऊ मुनि इमि बात। आचरज धनि सुरसरित जामधि छिते हमसे भ्रात॥ जाय तब सुरसरितको लखि कह्यो हम यह बात। आचरज मति धन्य तुम सुनि कह्यो तिन सुनु तात॥आचरज धनि सिन्धु जामधि कोती हमसी जाति। जाय सिन्धुहि कहे तब आचरज धनि तेहि भांति॥ सिन्धु मोसो कहे मुनि आचरज धन्य उदार। भूमि जापै सातसागर बसत सह परिवार॥ जाय तब हम भूमिसों इमि कहे आनंद धारि।आचरज अरु धन्य हो तुम कहे हम निरधारि॥ भूमि यह सुनि कहो मुनि तुम कहऊ मति यह बैन। आचरज यह धन्य गिरिजे धरे मोहि सचैन॥जाइ तब भूधरनसों हम कहे साधक कार्य्य। आचरज गुण भरे हो तुम धन्य सिगरे आर्य्य॥ सुनि कहे गिरि कहऊ इमि मति कलहप्रिय मुनिराज। आचरज अरु धन्यविधि जो रचत सकल समाज॥ जाय तब हम कहे विधिसों धन्य तुम करतार। आचरज हो आचरजने रचत हो सब बार॥ कहे विधि इमि कहऊ मुनि मति बिना जाने भेद। आचरज अरु धन्य हैं अम चार चारिउ बेद॥ वेदसों हम कहे तुम आचरज धनि सरवज्ञ। कहे वेदन कहऊ इमि आचरज धनि है यज्ञ॥ यज्ञसो हम कहे

तुम आचरज धन्य प्रभाव। कहे यज्ञ न कहऊ इमि मुनि कलहप्रिय गहि चाव ॥ आचरज अह धन्य है प्रभु विष्णु पुरुष पुरान। आइतव इत कृष्णसों हम कहे सोइ विधान ॥ आचरज अरुधन्य हो तुम कृष्ण प्रभु अभिगत्य। कहे प्रभु आचरज धनि हम दक्षिणासह सत्य ॥ सुनऊ नृपति आचरज धनिको करि एहि विधि सोध। आइ इते श्रीकृष्णको बचन सुने भो बोध ॥ *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

इमि कहि नारद स्वर्ग गे नृपसब निज निज धाम। गए कृष्णसों ह्वै बिदा बर बिक्षित अभिराम ॥
सब भूपनको करि बिदा केशव रुकुमिनि रौन। यदुवंशिन सह मुदित मन आए अपने भौन ॥
बरणे एहि अध्यायमें नारदके सम्बाद। सुपद धन्य आचरजको प्रभुके मुख निर्बाद ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशीवासिगोकुलनाथकश्रीश्वरात्मजेन गोपीनाथकविना विरचिते भाषायां हरिवंशदर्पणे आचरजधन्यपदयो र्निर्बिबादोनाम बसुबिंशोऽध्यायः ॥ *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

वैसम्पायनसो कहे फिरि जनमेजय भूप। मो मन तृप्ति न होइ मुनि सुनि प्रभु चरित अनूप ॥
तातें कहिये कृष्णके चरित और अभिराम। जे इत उतके सुखद शुचि परम धरमके धाम ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

जनमेजयके बैन वैसम्पायन मुनि कहे। कहि को सके सचैन कृष्णचन्द्रके सब चरित ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

मति अनुरूप कहैं सो सुनिये। पाप मूल गिरिको शिखि गुणिये ॥ ज्ञानवान पटु सुगति बिलासी। भीषम शरसय्याके बासी ॥ कहे अरजुनसों बरचावन। कहो कृष्णके चरित सोहावन ॥ यह निदेश भीषमको लहिकै। कहत भए अरजुन मुद गहिकै ॥ एकसमै हम द्वारावतिमें। गे हे मति बोरति अतिमें ॥ तहां एकदिन प्रभु ह्वै दिक्षित। भे एकान्हिक मख रचि दीक्षित ॥ तेहिक्षण आयो ब्राह्मण आरत। पाहि कृष्ण प्रभु पाहि पुकारत ॥ सुनि प्रभु कहे करब हम रक्षक। कऊ निज अरम्र अजल करि अच्छक ॥ कह्यो विप्र सुनिये खलघालक। जनमत हीं मेरे त्रय बालक ॥ हरे गए काहौं कुल नाहिये। ससूति समुभि तोष गहि रहिये ॥ चौथो आजु होय गो सुनिये। रक्षण तासु आसु हठ गुनिये ॥ सुनि यह आरत बचन सुद्विजके। कृष्ण कृपाल भेषज भव रुजके ॥ मोतन हेरि कहत भो ऐसो। उभय सन्धि परि करिये कैसो ॥ मख बिधि त्यागत बनत न कैसेऊ। द्विजहि न रक्षिप बनत न ऐसेऊ ॥ मैं तव कहेउ कृष्णसों बानी। मोहि देऊ शासन गुरु ज्ञानी ॥ हो उत करि बर भयको लछ्रण। करि हो द्विजके सुतको रक्षण ॥ *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

यह सुनि प्रभु मुसुकाय कै कछुक सुवीं वहलाय। तुम समर्थ हौ राखिहौ कहे सकल सुभाय ॥
इमि कहि लज्जित देखि मोहि कहे फेरि सुखदाय। रच्छण द्विजके तनयकेउ करहु सैन सह आय ॥
इमि कहि राम प्रद्युम्न कहँ राखि आपने साथ। सिगरे यादव कहँ दए मम संग करि यदुनाथ ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

सह यादव समुदाय तब हम प्रभुसों ह्वै बिदा। चलि अति जबसा आय उतरे द्विजके गेह ढिग ॥

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

उते यादवबीर बरणे जे परम रणधीर। रहे ग्रहके चहुँदिसि ते सहित सेना भीर ॥ आय ग्रहमें रहे हम गहि धनुष शर अभिराम। विविधि विधिके भयद असगुन होत भे तेहि याम ॥ गए आधी राती सो द्विज आइकै मम पास। प्रसवको यह समय है मम हियो पूरत बास ॥ होउ रच्छण करण मे चइतन्य अब बलवान। भाषि इमि फिरि गयो ग्रहमे गहे शोच महान ॥ आतहीं उत लगो रोवन विप्र तियन समेत। लए पुत्रहि जात कहि उर ताडि शोक निकेत ॥ लख्यो कितनो पस्यो नहि लखि बाल हरता जौन। आइ नभते परी शिशुके रुदनकी धुनि श्रौन ॥ सुनत हौं नभ छाय शरसों दयो मै करि रोक। रुक्यौ नहि सो गयो लै सुत विप्रको निजलोक ॥ विप्र सो तब करत रोदन आर्त मो ढिग आय। बचन व्यंग कठोर लागो कहन अति रिसिआय ॥ कहे प्रभु सो टेरि तुम हम राखिहैं द्विजपुत्र। सके इत नहि राखि सो वह गयो शोरुप कुत्र ॥ रहे जो वोहि जोग नहि तुम कहे कत वोहि योर। कहे है न महान ताहे किरे कारज गोर ॥ विप्रके सुनि बचन मै नहि कह्यो कछु भय पूरि। सहित यादव कृष्णके ढिग गए लज्जित भूरि ॥ मोहि लज्जित देखि प्रभु रिसिभरो विप्रहि हेरि। कहे शोच न करहु लै हौ बालकनि मै फेरि ॥ बोलि प्रभु तब दारुकहि इमि भए देत निदेश। सुरथ साजहु शीघ्र सानँद सुभद शुभ्र सुवेश ॥ शैब्य अरु सुग्रीव बाजी मेघ पुष्प बिचित्र। अरु बलाहक चारि हय ए नाधिकरता चित्र ॥ सजो रथ लखि सहित आदर द्विजहि कृष्ण चढाय। आपु चढि मोहि सारथी करि शीघ्र रथ हकवाय ॥ बिपिनि गिरि शर सरित तरि करि दिशा उत्तर गौन। गए सागर कूललौं चलि मुदित रुकुमिनि रौन ॥ * ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

आइ सिन्धु तहँ कृष्णको करि पूजन लहि चैन। जोरि पाणि युग कहत भो कहा कहो यहै बैन ॥
तब प्रभु सागरसौं कहे सुपथ मोहि तुम देउ। यह सुनि जलनिधि दीन ह्वै कहत भयो फिरि एउ ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

हौ मै तब थापित हे स्वामी। तब प्रसाद ते अनुपम नामी ॥ पथ को प्रभु अहो तुम जैसें। जैहैं

मन्त्र भूप सब तैसैं॥ छोड़हु नाथ ढिनाई मोरी।लखऊ बिचारि कहउँ कर जोरी॥ बिनय सिन्धुकी सुनि यदुनायक। बोले कृपासिन्धु चित चायक ॥ द्विजके अरथ मानि मम बानी । देऊ मार्ग अम्बुधि वर ज्ञानी॥ तुमहिं न नांघि सकिहि कोउ मानुष।वीर प्रमत्त गने जे धानुष॥यह सुनि सिन्धु कह्यो गुणनिधि सौं । रथनिति जल मै सोषउ विधिसौं ॥ तेहि पथ जाइ करो प्रिय जीको। कहे कृष्ण नहि यह मत नीको॥ तुम्हे दए हौं हौं आशिष बर । रहो अगाध अदृश्य रतन बर ॥ ते बर व्यर्थ करऊ मति सागर। करऊ बारि थम्भन गुण आगर।सुनि बारिधि जल थम्भन कीन्हे।तेहि पथ पार जाइ मुद लीन्हे। उत्तर कुरु तरि आनंद पागे। गए गन्धमादन के आगे॥ तहां रूप धरि आनद छाए।पर्वत सात सामुहे आए॥मेरु जयन्त रजत गिरि भारी। बैजयन्त अरु नील सुखारी॥ इन्द्रकूट कैलाश सोहाए। पूजि प्रभुहि बोले मन भाए॥ नाथ आपु अनुशासन दीजे। सो हम सिगरे सादर कीजे॥ ************

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

कहे कृष्ण भूधरन सो बिबर मार्ग रचि देऊ । यह निदेश सुनि शैलबर कहे तथास्तु सनेऊ ॥
भे अदृश्य सब शैल तब गिरिनधि बिबर लखाय । तामधि रथ प्रविशाय प्रभु चलत भए हरषाय।
यथा घने बनको पटल भेदि होहि रबि पार । तथा शैल मधि चलि सरथ गे उत कृष्ण उदार ॥
अन्धकार अति घोर तहँ मिल्यो सुनऊ नरनाह । जानि परै जो चलतमे कर्दम सम तन माह ॥
नीठि नीठि रथ ईंचि हय रहे खरे व्है हारि ।तब प्रभु दीन्हे चक्रसो सब तम तुरत बिदारि ॥

॥ * ॥ जैकरीछन्द ॥ * ॥

तब कुंण्ठित मति सुनऊ नृपाल। दरशे तेज समूह बिशाल॥ तीनि लोकमे किए पसार । ज्वाल जाल प्रज्वलित अपार॥ तासु निकट रथ ठाढ कराय। कृष्ण तेजमे गए समाय॥ द्विज सह रहि हम रथपैं तत्र। निरखत हेमनाकि एकत्र॥ बीते दोय घरी तेहि बार।कढे योति सौं कृष्ण उदार॥ लए संग बर बालक चारि। आइ दए बिप्रहि मुद धारि॥ पुत्रन लखि द्विज लहि मुद पर्म । लगो प्रशंसन प्रभुको धर्म॥ फिरि वाही मग सुरथ चलाय। क्षण मे पहुँचे प्रभु पुर आय॥ करि याचा लहि प्रात खलाम। आए दिवश गए है जाम॥ ससुत द्विजहि भोजन करवाय। देइ दक्षिणा प्रीति बढाय॥ कीन्हे बिदा कृष्ण अभिराम। गयो सुतन ले द्विज निज धाम ॥ द्विज अनेक फिरि कृष्ण बोलाय। भोजन करवाए सुख पाय॥ सहित यादवन ले मोहिं साथ।भोजन कीन्हे प्रभु यदुनाथ॥ तदनु सभा लहि मे गहि मोद । बैठि करत भे कथा बिनोद ॥ बिस्मित हम तहँ कर युग जोरि । कहत भए गहि प्रीति अथोरि॥ मग मे तव चरित्र प्रभु देखि । हौं मै अति बिस्मित अवरेखि ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

करि थंभन जे उदधि जल किए कृष्ण तुम गौन । तदनु सात गिरिवरनमें किए विवर प्रभु जौन ॥
किए नाथ जो चक्रसों तमको तुङ्ग अलेश । ज्वाल जाल मे जो किए रुचि सों आपु प्रवेश ॥
द्विज भुवन कहं को हरे रह्यो कहा अनुमानि । सो सब भेद बताइये चिरंजीव मोहि जानि ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

सुनि यह बचन कृष्ण मुसुकाई । कहत भए एहि भांति बुझाई ॥ मम दरशन हित द्विजके बालकाहरे गए हैं सुनु खलघालक ॥ ब्रह्मतेज तेहि तेजहि गुणिये । मै हौं ब्रह्मतेज मम सुनिये ॥ सो मम परम प्रकृति है जानौ । व्यक्ति अव्यक्ति सनातनि मानौ ॥ जल समुद्र गिरिवर तम मै हौं । मै जगकारण काज सबै हौं ॥ मै शशि सूर सरित सर सिगरे । मै हौं बेद बर्ण जे निगरे ॥ कारण कार्य्य रूप मोहि जानो । करो दूरि बिसमय सब ज्ञानो ॥ तादिन ते हम भये सयाने । कृष्णहिं परब्रह्म दृढ जाने ॥ सुनि अर्जुन के बचन सोहाते । धर्मराज आनद सों राते ॥ बैसम्पायन की यह बानी । सुनि बोल्ल जनमेजय ज्ञानी ॥ मुनिवर चरित कृष्णके सुनि कै । नहि सन्तोष गहे मन गुणिकै ॥ तातें और चरित्त कछु कहिये । कृपापात्र लखि दया गहिये ॥ बोले मुनि गुणि नृप मन माही । प्रभुके गुणकी इयता नाही ॥ तदपि कहउ कछु तव हित लागी । सुनु नृप जनमेजय बर भागी ॥ यदुवंशिन के हित प्रभु मानद । हते विचक्र दानवहि सानद ॥ लोहित दह मै बर्णहि ओते । किए हराइ गर्वसों रीते ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

दन्तवक्र कारुष नृपति सौभ शाल्व शिशुपाल्त । हयग्रीव आदिकं हते जीति किते छितिपाल ॥
भ्रष्टराज्यपाण्डवन कों दिए राज्य करि पच्छ । रच्छण तव पितुकों किए गर्भहि मे प्रभु दच्छ ॥
बानर द्विविद मयन्द कहँ जीते भुज के जोर । जाम्बवान सों जय लहे मल्ल युद्ध करि घोर ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

बलिको सुत बलवान बीर सहसभुज को बली । दुर्मद परम अमान जीते तेहि प्रभु सबविधि ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

बरणे एहि अध्याय मै भीष्मार्जुन सम्बाद । बिप्र सुवन के हरणकी कथा देनि आल्हाद ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीवन्दीजनकाशीवासिगोकुलनाथात्मजेनगोपीनाथकविना विरचितेहरिवंशदर्पणेकृष्णचरित्रवर्णनोनामअष्टत्रिंशोध्यायः ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

बैसंपायनसों कहे जनमेजय इमि बैन । अब बाणासुर की कथा कहिये मुनि तप ऐन ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

बोले मुनि सुनु भूपति ज्ञानी । बलिको गुरसुत बाण सुमानी ॥ शिव ढिग जाइ पेखि सेनानिहि । भई महत ईहा अभिमानिहि ॥ वर व्रत साधि उग्र तप करऊं । शिवहि तोषि सुतव्है मुद धरऊं ॥ यह बिचारि दुस्तर व्रत चरिकै । शिवहि प्रसन्न कियो तप करिकै ॥ व्है प्रसन्न शिव आनंदहारे । वरबूहि यह वचन उचारे ॥ यह वर माग्यो बाण सुखारी । मोहि करैं सुत शैलकुमारी ॥ एव मस्तु कहि तब कैलाशी । कहे शिवासों इमि अविनाशी ॥ एहि पुत्रत्व मानि व्है माता । जानऊ निज सुतकी सब भ्राता ॥ जित सेनानि सौखि सों प्रगटे । तेजपुञ्ज बर प्रभा अरगटे ॥ सो शोणितपुर रुचित सनेहू । बाणहि बसिबे कहं तुम देहू ॥ लहि निदेश तब बाण उमाही । बस्यो जाइ शोणितपुर माही ॥ बाणहि शम्भु परम प्रिय जानो । ध्वज अरु शिखि बाहन सेनानो ॥ सगण शम्भु सेनानी सानद । रक्षाकरैं बाणको मानद ॥ सह परिवार सदल बल भारो । विलसत भो तहँ बाण सुखारी ॥ सुरगन्धर्व आदि दिव बासी । सेवहिं तेहि लहि हारि उदासी ॥ शिव प्रसाद के मद मतवारो । जीतेसि तीनि लोक बल भारो ॥ *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

लखे बिना त्रैलोकमें निज लरिबे के जोग । गो शिवपैं निज प्रतिम भट लरिबेके उतजोग ॥
बन्दि चरण तहं शम्भुसों कहत भयो इमि बान । जीतो मैं त्रैलोक तव बर बलसो बलवान ॥
व्है सन्मुख सुर असुर कोउ लरि न सक्यो पल आध । हारि मानि रहि निकट मम सेवन करैं अबाध ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

बिनालरे मम सहस भुजा ए । फरकत रहत महत छबि छाए ॥ युद्ध किए बिनु सकल बिभूती । मोहि न भावति जिती अकूती ॥ प्रभुसों आजु कहौं सतिभावै । लरे बिना नहि जीवन भावै ॥ तातैं कहऊ मोहि चित चायक । बीर मिलिहि कोउ लरिबे लायक ॥ यह सुनिके शङ्कर मुसुकाई । कहे बाणसों इमि समुझाई ॥ सेनानी को दीन्हो ध्वज जब । पतन होइ यह जानेउ निजु तब ॥ अब कोउ सुभट बीर रस राते । लरिहि आइ बीर बीर्य्य बिभाते ॥ यह सुनि बाण परम सुखपाई । आनद बारि चषनमैं छाई ॥ पग गहि कहत भयो हे स्वामी । अबमैं धन्य भएउ अरु नामी ॥ इमि कहि सहस पाणिमैं लेकै । कुसुम पञ्च शत अञ्जलि देकै ॥ बिदा शम्भुसों व्है धनुधारी । निजपुर आयो परम सुखारी ॥ आइ ध्वजागृह मैं तब बैठो । सगरब बीर ऐंठसों ऐंठो ॥ तहँ कुम्भाण्ड सचिव सों भाख्यो । दयो मोहि शिव बर अभिलाख्यो ॥ बाणहि अति मोदित सो लेखी । बूझत भो एहि बिधि अवरेखी ॥ कहो कहावर पायऊ सांई । जातैं अति मोदित एहिठांई ॥ बिष्णुहि जीतन को बर लीन्हे । कै निज पितहि पूर्ववत कीन्हे ॥ *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

चक्रपाणिके भीतिसों दइत समुदम जायं । दूरे रहत तिनकहं कहा अभै किए वर पाय ॥
इन्द्रहि गहि पाता लमैं रावनको बरदान । लहे कहा तुम अपुनको होवेको भगवान ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

सो यह होजै शीघ्र बताई । मोसों गहर सहो नहि जाई ॥ यह सुनि बाणगोद नहिं रोसेसि । मागेसि जो पाएसि सो भाषेसि ॥ सो सुनि सचिव कहतभो ऐसो । नाथ लहेउ बर दुखद अनैसो ॥ इतनेही मैं बिना प्रयासे । गिरतभयो वहं ध्वजा अन्यासे ॥ लखि ध्वजपतन बाण हरखाना । निकट युद्धको उत्सव जाना ॥ भे तब तहां दशो दिशि चारी । असगुन बिबिधि भांतिके भारी ॥ तिन्हैन बाण चित्तमैं आने । गे अन्तह पुरम हरषाने ॥ मंत्री फल असगुणके जानी । भयो व्यथित अनरथ अनुमानी ॥ कछु दिन गए मोदि गिरिजा हर । जाय नदी के तट भवभयहर ॥ गणनि सहित आनद सों पागे । बारि बिहार करन तहं लागे ॥ बाणासुर की चारु कुमारी । ऊषा नामा परम दुलारी ॥ सो गिरिजा को लहि अनुशासन । गईरहो तहँ बारि बिलासन ॥ नृत्य गान अरु बाद्य सो हाए । अप्सर करत तहँ सुख सरसाए ॥ पारिजातको गन्ध सोहावन । बगस्यो चहुंदिशि मन उमगावन ॥ बन्दीजन सम अप्सर केती । शिवहि प्रशंसहि सुबुधि सुचेती ॥ नाम चित्रलेखा सुखदानी । रही अप्सरा सो अनुमानी ॥ ******************

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

तहं गिरिजाको भेष करि शिवके सन्मुख जाय । नृत्यगान लागी करन भाव अनेक बताय ॥
सो लखि शङ्कर गौरिसों कीन्हे हास्य मचाय । कह्यो शिवा तब गणनिसों शम्भु मनऊ सुखपाय ॥

॥ * ॥ मद्दिवरीछन्द ॥ * ॥

तहं अप्सरा सब गौरि अरु सब सुगणगण शङ्कर बने । इमि लगे क्रीडा करन मिलि लखि लहे शिव आनद घने ॥ यह देखि क्रीडा कुवरि ऊषा चावसों सरसत भई । ते धन्यतिय पतिसङ्ग जे इमि रम यह मन सतभई ॥ यह तासु आशय समुझि गिरिजा चारु कर जुग परसिकै । इमि कहति तासों भई तेहि अति प्रेमसों ढिग करषिकै ॥ सुनु धीरधरु कछु दिवस मनमैं प्रिये ऊषे सकुचिहे । अब गनेदिनम पाइ प्रियपति मोदिहौ इमि संरुचि हे ॥ **************

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

ओ माधवकी द्वादशी निशि सपनेमैं आय । पुरुष रमिहि तोसों तहिं सो तोहि पति सुखदाय ॥
सुनि ऊषा सुख लहिरही सकुचित शीस नवाय । करतभई तब हास्य तहँ अमरगणहरषाय ॥
संध्या लखि तब गौरि शिव आवत भे निज धाम । ऊषा आई निजभवन गई सबै निजग्राम ॥

॥ ❀ ॥ अथकरिछन्द ॥ ❀ ॥

पारवतीको बचन बिसूरि । ऊषा ह्वै बिरहाकुलि भूरि ॥ चौसर चन्दन सुरंग दुकूल । तजत भई जिमि दुखको मूल ॥ दिनभोजन निशिनिद्रा त्यागि । सूखि भई अति दुखमें पागि ॥ अनुदिन ले लै ऊभि उसास । करत भई मनु अवा अवास ॥ परी रहै निति मूदे नैन । मुरछित भई न बोलै बैन ॥ दासी सखी दशा यह देखि । ह्वै विसमित हिय भयसों पेखि॥ हारी करि कितनो उपचार । तब सब करि कै मंत्र बिचार ॥ ऊषा की जननीपै जाय । देति भईं सब दशा सुनाय ॥ सुनि सो शीघ्र सुतापैं आय । भई देखावत बैद बोलाय ॥ कहत भए इमि बैद बिचारि । जलक्रीडा कीन्ही सुकुमारि॥करि श्रम कीन्हे बारि बिहार।शीत गरमको भयो बिकार॥सुनि बोलि ऊषाकी माय । सखी देहि उर चन्दन लाय॥चुरण लगे सो जिमि लहि आगि।यह श्रम कहा कहो हित लागि ॥ कहे भिषज तब सुनु हे रानि । अतिसुन्दरि तब सुता सुजानि ॥ तातें भयो डीठिको रोग । मंत्र जंत्रको करो प्रयोग ॥ यह कहि भिषज गए निजधाम । जानि हिए एहि नियबत काम ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दोहा ॥ ❀ ॥

दासी सखी सुजानि सब लखति भईं यह भेद । काम नरेन्द्र अमान यहि करत सुबसहै खेद ॥
एहि बिधि रहि कछु दिवसमें लहि वर माधवमास । शुक्लपक्षकी द्वादशी पुरणकेता आस ॥

॥ ❀ ॥ सोरठा ॥ ❀ ॥

निशिमें सखिन समेत सोई ऊषा हर्म्यपैं । सुषमा सत्वनिकेत पुरुष रम्यो तहं स्वपनमें ॥

॥ ❀ ॥ दोहा ॥ ❀ ॥

प्रथम समागम की भई चेष्टा सकल अनूप । सोणितादि बेवहार सों भयो सुरतिको रूप ॥

॥ ❀ ॥ चौपाई ॥ ❀ ॥

मन्द मन्द रोवत बैठी उठि । भरो स्वेदसो गात शिथिल सुठि ॥ लखि सखिजन समुझावन लागी । जानि कुवँरि कछु भयसों पागी ॥ ऊषा कहो नमै डरपानी । सखिन जाति कहि हानि गलानी ॥ पुरुष एक सपनेमें आई । मम कुमारिपन गयो नशाई ॥ किमि माताके ढिग मैं जैहौं । बूझे दशा उत्तर का दैहौं ॥ जागतसी मैं रहिउ इहा करि । वह बलसों करि गयो चहा धरि ॥ कुलमें लगी कालि के सजनी । अब भो धर्मलोप एहि रजनी ॥ इमि कहि नैननितें जलधारा । मोचन लगी शशोच अपारा ॥ इतने मैं एक सखी सयानी । कहत भई सुनु ऊषा बानी ॥ मन बिकार करि कारज कीन्हे । धर्म नशाय माव कहि दीन्हे ॥ स्वपन दशाज परबस जैसो । भए नयो नहि धर्म अनैसो ॥ तब कुम्भाण्डसचिवकी तनया । कहति भई इमि चातुरि सनया ॥

सुमुखि सुजानि बचन सुनु मोरो । सुधिकरु शिवा कही जो तो सो ॥ सोई भयो शोचु मति कामिनि । आनु अपूर्व सुखद यह जामिनि ॥ मिलो पुरुष सपने म तोही । होइहि सो तव पति अति छोही ॥ सुर गन्धर्व असुर गण ओज । निशि पुर प्रविशि सकै नहिं कोज ॥ ऐसो बाण बालको भारो । घर घर डरपहिं सब धनुधारी ॥ *✿*✿*✿*✿*✿*✿*✿*✿

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

ताके अन्तह भौनमें आइ निमड़ प्रवीर । ताकी तनयासों बिहरी गो निजघर रणधीर ॥
सो यह नहि प्राकृतपुरुष यह कोउ पुरुष महान । है जेता त्रैलोकको वीर उदण्ड अमान ॥
धनि धरणीपै धन्य तूं धनी अपूरव पाय । शोच त्यागि पतिके मिलनको अब करो उपाय ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

प्रिया सखीकी बाणी सुनिके । कहत भई इमि ऊषा गुणिके ॥ निज्ञपै परै भीरि जन सोहै । करि न सकै कछु करिबो जोहै ॥ जिमि रुजग्रसित वहुय विचारो । ताते तुम यह काज सुधारो ॥ यह सुनि बोली सुता सचिवकी । सुन ऊषा प्यारी तुव जीवकी ॥ सखी चित्रलेखा जो अपसर । तेहि त्रैलोक विदित है सवथर ॥ ताहि बलाई कहो है आरज । शीघ्र करिहि सो विधि यह कारज ॥ तब ऊषा तेहि तहां बोलाई । कहति भई कर जोरि बुझाई ॥ हे सखि औ मम जीवन चाहो । तौ मैं कहौं बचन सो चाहो ॥ जो सपनेमें मम ढिग आयो । पुरुषसिंह सुख मोसों छायो ॥ तेहि इत ल्याइ मिलावऊ मोसों । यह हठि कहो बिनै करि तोसों ॥ यह सुनि सो अपसरा सयानी । कहतभई ऊषासों बानी ॥ सुनु बिनु नाम ग्राम कुल जाने । अरु बिनु तासु मूर्त्ति पहिचाने ॥ केहि विधि तेहि आनउंहो कामिनि । करि बिचार कह तूं गजगामिनि ॥ करिहौं एक उपाय उजागर । है जितने त्रयपुरमें नागर । तिनके चित्र लेखि ले ऐहौं । पृथक पृथक सो तुम्हे देखैहौं ॥ तेहि लखि चीन्हि लिहऊ तव रसकर । धन कुंमारिपनको जो तसकर ॥ *✿*✿*✿*✿*✿*✿*✿*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

असुर अमर गन्धर्वमें जितने पुरुष विभात । तिनके चित्र विचित्र लिखि ल्याइ ताहि दिनरात ॥
ऊषहिते सिखै दई पृथक पृथक दरशाय । लखि सुचित्र अनिरुद्धको अबै सरै उठाय ॥
कह्यो प्रेमसो लाइ उर पुलकि प्रतीजी सचाय । सखि यह जाको चित्र है सो मम पति सुखदाय ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

ये काके है सुवन सलोने । केहि कुल प्रगटे मम पति होने ॥ कही अपसरा सुन मृगनैनी । पुरी द्वारिका सिधिकी श्रेनी ॥ विष्णु कृष्ण है तहँ सुनु ऊषे । हैं यदुकुल महिमाको भूषे ॥ तासु सुवन प्रद्युम्न कहाए । कामरूप हैं काम सोहाए ॥ हैं अनिरुद्ध तासु सुत धीरा । सुषमा सींव

सरस रणधीरा ॥ है यह तासु चित्र मनभावन । सो उर रमणि सुरस रसायन ॥ यह सुनिके ऊषा प्रेमातुरि । कहत भई सुन हे सखि चातुरि ॥ समैं परे जो होइ सहाई । सोइ सखा पिता सुत भाई ॥ करि दूतत्व साधु मम कारज । ल्याइ मिलाउ शीघ्र पति आरज ॥ सुनु सखि होत दूते पटु जैसो सिध्य होत है कारज तैसो ॥ ताते तू सब भांति सयानी । अरु अति मम हितरत सुखदानी ॥ हे सखि हे तू नभपथ चारिनि । जोगिनी चाह रुचित वपु धारिनि ॥ यहँ कारज सिधि करबे लायक । है तूं हीं मम हितू सहायक ॥ कही अपसरा सुनऊ कुमारी । धरऊ धीर मति मानऊ हारी ॥ अब चलि शीघ्र द्वारिका जाइब । करि उपाय अनिरुद्ध हि ल्याइब ॥ ह्वै सो विदा सकुद इमि कहिके । सत्वर चली गगनपथ गहि कै ॥*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

क्षणमैं चलि द्वारावती लखत भई सो जाय । नभते अमल अटान लखि होत भई सहचाय ॥
तब नभ तजि तरि भूमिपैं नगरद्वारपैं आय । सरिताके तट ह्वै खरी मनसन लगी उपाय ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

तहँ चऊँ ओर निहारि देखि सरितटट नारद हि । कारज सिद्ध निहारि जाति भई ढिग सुमुनिको ॥

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

जाइ मुनि पैं चित्रलेखा दूरिहीसों नौमि । पाइ आशिष भई ठाढी शीश नत करि सोमि ॥ सु मुनि तासों भए बूझत आइबेको हेत । दइ सो कहि त्यादिसों सब भेद मोदनिकेत ॥ जानि मुनि अनिरुद्धको लैं जाइवो असाध्य । दए तामस मंत्र कारज सिद्धकरण अराध्य ॥ मंत्र लै अनिरुद्धके स्दह जाइ सो गहि मोद । अलख रहि तहं लगी लेखन तासु सर्व विनोद ॥ युवति गण मधि लसत तारणिमध्य जिमि निशिनाह । नृत्य गान वरांगना तह करति रजि मनमांह ॥ गाम नयन युवतिगणनैं रमत ताको चित्त । देखि लीन्हीं चित्रलेखा जानि कारण वित्त ॥ स्वप्नमे ए रमैं हैं मिलि बाणजासों जैन । उतै तेहि चित लगो इनको हैं नहँ एहि भौन ॥ बूझि यह निज काज सिद्ध विचारि मोहन मंत्र । दयो मुनिको ताहि सो तहँ भई पढत स्वतंत्र ॥ तियन सह अनिरुद्ध तब जहं रहे सोय सुनेहि । चित्र लेखा मोदि तब चख फेरि इत उत आहि ॥ चावसों अनिरुद्धकों गहि हर्म्य पैं लै आय । तह ताहि जगाइ ऐसे भई कहत सचाय ॥ सपनसै दुरदशा जाकी किए तुम चितचोर । लहे बिनु सो तुम्हें व्याकुल लखति है चहवोर ॥ रुदति जृम्भति श्वसति पसिजति कम्पति मुरछि अचैनि । लिखो सो तव चित्र लेखि बितीति है दिन रैनि ॥ देइ जपहि तुम्हहि पति गिरिसुता दै बरदान । चलो तापैं वेगि नातो तजैगी वह प्रान ॥ सुवन बलिको बाण ताकी सुता ऊषा चाव । तासु शोणितनगरमैं चलि होऊ तुम भरताव ॥ चित्रलेखाके बचन सुनि कहत भे

अनिरुद्ध । रह्यो उनके विषे बढि मम प्रेम पूरण सुद्ध ॥ सपनके रतिरंगमें उन करी आन समृद्ध । कम्पि सुसुकि अरुण बांधि नितम्ब चालि स लुद्ध ॥ हहा करि मम करधिका गहि अमबरितमें डूबि । सजल लज्जित चखन चितई लई स्वासा ऊबि॥भई सो जो दइ ए दई कहति गृह बऊ बार॥ कोलि गे छुटि छविनिलौं जो सरस सुथरे बार॥लाइ छोरैं लयो सो जो भयो पीरो गात।सरस कंचन दाम समभा भरो भूरि बिभात ॥ तजै पै उठि जतनसों जो लगी सुसुकन बैठि । नयन है मम हियो ए सब चरित चितमैं पैठि ॥ ❁*❁*❁*❁*❁*❁*❁*❁*❁*❁*❁*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

प्राणप्रिया मम बल्लभा की तूं सखी सयानि । शीघ्र सत्य कह स्वप्न यह कहो जोरि युगपानि ॥
यह सुनि अति आनन्द लहि लै अनिरुद्ध हि तौनि । अन्तरिच्छ पथ गहि गई सी जित उषा रौनि ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

अनिरुद्धहि लखि बाणकुमारी । ह्वै प्रमुदित भरि नैननि बारी ॥ पुलकि पसी जि दुरै परिता पहि । मानत भई धन्यतन आपहि ॥ अर्घ पाद्य दै पूजन करि कै । कुशल प्रश्न बूझो मुदभरि कै ॥ बऊरि सखीसो मिलि गजगामिनि । अस्तुति करत भई प्रियकामिनि ॥ भाषि सखीसों पितुके गरमैं । गई पतिहि लै गोपित घरमैं ॥ करि गन्धर्वब्याह मुद गहिकै । बिहरण लगे गोपिते रहिकै ॥ बिधिवश तिनकह तहां बिहारत । लै सुतभयो चारदिशि चारत ॥सो लखि कहेसि बाणसौं आइ । युवापुरुष तुव म्हहमैं आई ॥ बिहरै ऊषाके संग सोई । बनमैं मत्तसिंघकी नाई॥ सुने बाण क्रोधा गिनिसों जरि । कियो घोरधुनि तन चञ्चल करि॥ भेजत भयो तुरित दलभारी । कहि निडरहि गहि डारऊ मारी ॥ चले बीर बल कत भय भारत । मारु मारु धरु मारु पुकारत ॥ ऊषा लेखि सुभट भय भावन।पतिबध भीती लगी तह रोवन॥लखि अनिरुद्ध युद्धके चावन।तियसों कहे बचन मनभावन॥मति कर रुदन तिया भयभेखी।सुख लऊ मोरि बीरता देखी॥बिनु भट आजु बाणका करिहौं । शोनितपुर शोणितसा भरिहौं ॥ *❁*❁*❁*❁*❁*❁*❁*❁*❁*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

इतने मैं तहँ आइ कै नारद मुनि सचैन । कहत भए अनिरुद्धसौं अन्तरिच्छ रहि बैन ॥
हौं आयो अनिरुद्ध तव युद्ध लखन हित अत्र । तबहि मह लखि युद्धसो जैहैं केशव यत्र॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

सुनि नारदके बचन सोहाते । श्री अनिरुद्ध बीररसराते ॥ केहरि सम कढि तेहिघर बलसौं । घिरे दिरद रजनीचर दलसौं ॥ शस्त्र शक्ति तोमर परिघातिक । गजतभए सब असुर प्रमादिक ॥ परिघ कपाटवद अतिभारी । लै अनिरुद्ध बीर प्रनधारी ॥ अति सरोष करि तासु प्रहारण।

असुर वृन्दकहॅ लगे संहारण ॥ सहस वीर असंख्य संहारे । किते वीर भागे अधमारे ॥ रुधिर वमंत अति भयसों भारे । गए बाणके पास पिरारे ॥ कादर जानि तिन्हे तिमि ज्वै कै। ध्वंसन किहेसि बाण रिसिस्वैकै ॥ अयुत सुभट फिरि और पठाए । बलकत गरब भरेते आए ॥ तोमर भिन्दिपाल शर घावन । देखतहीं ते लगे चलावन ॥ अति अवसा तिनके मधि जाई । कीन्हे कुवर परिघ की घाई ॥ अप्र तप्र विप्लुत उद्भाता । अरु आविद्ध भ्रांत विभ्रांता ॥ इन्हहि आदि बत्तिस अस्थाननि । किए प्रहार अनेक बिधाननि ॥ करि चापलता अति मनमाने । जे अनिरुद्ध सहस सम जाने ॥ पल मैं काढ़के सहस भट मारे । बचे रहे ते भगे दुखारे ॥ गिरत एक पैं एक भभर सों । नभपथ गहे बाणके डरसों ॥ *************

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

ऋषि गगणतें मुनि कहे धन्य धन्य अनिरुद्ध । सो सुनि अरु निज सैन लखि भयो बाण अतिक्रुद्ध ॥
रथ सजाय कुम्भाण्डसों चढि बरणो बलवान । चलो बाण अनिरुद्ध पैं गरजत मेघ समान ॥

॥ * ॥ गुरुतोमरछन्द ॥ * ॥

सो सहस पाणि अखेदसों । बरभूषि आयुध ते दसों ॥ अनिरुद्ध बीरहि देखिकै । अघ समुजि अतिसे तेखिकै ॥ धनुष्यानको टङ्कार कै । भो कहत दोहक पुकारकै ॥ अब भागु मति भय पागि कै। नहिं बचैगो तुम भागिकै ॥ अनिरुद्ध ताको पेखि कै । निजवधीं सम अवरेखि कै ॥ कर खड्गचर्म महान लै । हैं खडे बीर बिधान लै ॥ तब बाण बाण अनेगिने । तकि तजे जौन बनेगिने ॥ अनिरुद्धते सर चर्मसों कछु दए टारि अभर्म सों ॥ फिरि बाण सहसनि बाणसों । भो हनत बाणबिधानसों ॥ अनिरुद्ध निर्भय प्राणके । तब चले सम्मुख बाणके ॥ सु महोत्त ताकि किसानकों । जिमि चलै त्यौं रि बिसानकों ॥ सर भिन्दिपालहि आदिकै । तेइं तजे कितने नादिकै ॥ सहि सबै रथढिग आइकै । अनिरुद्ध रथपैं जाइकै ॥ सब बाजि बाणको मारिकै । रथ जुवादण्ड बिदारिकै ॥ फिरि फिरे सत्वर बाणपै । भुजसहस बीर अमानपै ॥ इमि बाण ताहि निहारिकै । भो गुप्त अनर बिचारिकै ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

उतसों सर बरषण लगो तब रथतजि अनिरुद्ध । महिपैं ठाढे ह्वै लगे इत उत लखन सक्रुद्ध ॥
तब बाणासुर ह्वै प्रगट धोर शक्ति अतिघोर । तजत भयो अनिरुद्ध पैं क्रुधि भुजनके जोर ॥
कूदि बीर अनिरुद्ध सों शक्ति लए निजपानि । ताही सों बाणहि हने कोपि व्यामभरि तानि ॥

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

लागे शक्ति भो मूर्छित बाण । कर ते छूटि परे धनुबाण ॥ घरीइक लों मूंदि सु नैन । रह्यो

ध्वजा मैं लागि अचेन ॥ गहेसि धनुष फिरि होइ सचेत । तब बोलत भो सचिव सहेत ॥ याकी जरि प्रतीत सनीति । भूपति तुम नहि लहिहो जीति ॥ तातें मायाविधि यमनाहि । जारि भूपति रहिए जीतउ याहि ॥ वचन तासु यह सुनिके बाण । भो रथध्वजसंग अन्तरध्यान ॥ छाडि सर्प सर तब अराधि । दीन्हेसि श्रीअनिरुद्धहि बाँधि ॥ सर्पनसों बंधिके अनिरुद्ध । कीलित अहिते भए सक्रुद्ध ॥ तब व्है प्रगट रकपुर रैन । कह्यो सचिव सों एहि विधि तैन ॥ हरो शीघ्र हति याको प्राण । सो सुनि बोल्यो सचिव सुजाण ॥ भूपति बूझि लेउ यह कौन । तब फिरि करउ उचित है जौन ॥ यह है कोउ पुरुष अनूप । बरबंसज जगजेता रूप ॥ याविधि बांधो तउ बिभात । तुम्हे लेखि नहि नेकु सकात ॥ जथा सों गान्धर्व बिवाह । करि यह रमो चित्तकी चाह ॥ निश्चल व अस कीन्ही उतजोग । तातें यह नहि बधिबे जोग ॥ यह सुनि कहेसि बाण तेहि याहि । एहि राखउ कारागृह माहि ॥ ************

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

कारा रक्षण कहँ सउँपि अनिरुद्धहि बलवान । गयो सभाके सदनमें सुनत बाण अजान ॥
नारदयह विरतांत लखि गए कृष्णके पास । सुनिहि आन अनिरुद्ध लखि बहुदुहनकी आस ॥
कारागृह में आइकै श्रीअनिरुद्ध प्रवीन । अस्तुति गिरिजाकी किए कहि कहि पद्य नवीन ॥
सुनि दुर्गा तहँ प्रगट व्है नागबंधकहं भाजि । अरु असिपंजर तोरिकै कहत भई सुनि भाजि ॥
जौलों केशव आदि लै आहिंन गरुड चढाय । तौलों बान्धन हनहनो रहियो मुद सरसाय ॥
यह सुनि फिरि अस्तुति किए श्रीअनिरुद्ध सकाम । दै आशिष गिरिजा गई पावन आपने धाम ॥
वरणे एहि अध्याय में कारण यह विस तारि । जथा अरु अनिरुद्धको सिखम्म जयोर निहारि ॥
बाणासुर अनिरुद्धको करे युद्ध फिरि वर्णि । बन्धन कीन्हि अनिरुद्धको बंध मोक्ष फिरि कर्णि ॥

इतिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशीवासि गोकुलनाथकवीश्वरात्मजेनगोपीनाथकविनाविरचितेहरिवंशदर्पणेअनिरुद्धोषासमागमोनामत्रिंशोध्यायः

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

हरि अनिरुद्धहि लै जेहि ज्ञाम । कंई अप्सरा मोहित मनमें ॥ ता पीछे द्वारावति पुरमें । श्री अनिरुद्ध कुमरके घरमें ॥ सोवति रही मोहि जे नारी । ते सब चेति उठी पतिप्यारी ॥ बिनु अनिरुद्धहि लखे दुखारो । रुदन करन लागीं भल भारी ॥ सो सुनि कृष्णादिक सब जागे । सुनि वृतान्त मोह सों पागे ॥ सुनि रोदन यादव भय छाए । निज निज घरतें छडि उठि धाए ॥ सभासदन में आइहि देखे । करि उदास सोच अति तेखे ॥ बैठत भये तहां यादवगण । सोचित दुरि दुख भरि भय सों मन ॥ तब विपृथु केशव सों भाखे । इनके सोच मन मनमें राखी ॥ तव भुज बलते निरभय

सुरपति । रह भए हम सब निरभय अति ॥ सो प्रभु तुम कत चिन्तागहहू । आदर उचित होइ सो कहहू ॥ सुनि प्रभु कहे शोच परिहरि कै । लै गो कोउ अनिरुद्धहि हरिकै ॥ यह बिरतान्त नृपति सब सुनिकै । हसिहैं हीनपराक्रम गुनिकै ॥ तब प्रभुसों एहि विधिकी बानी । कहत भए सात्यकि गुरज्ञानी ॥ प्रभु चारहु वसु दिशा पठावहू । को लै गो यह खबरि मँगावहू ॥ ...फिर तान्त करव जो भाइहि । लै अनिरुद्धहि कह सो आइहि ॥ *******

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

यह सुनि चारहु अनगिने केशव तहां बुलाय। बिदा किए प्रति दिशनि कँह विधि बिरतान्त बुझाय॥
बन गिरिवर तरु गुहन प्रतिसगर नगर प्रति ग्राम। खोजि फिरि आए चार नहि मिलो कुवर अभिराम॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

तब मुनि बोलत भो अभिमानो। अनाधृष्टि बरबल सेनानो॥ नहि कोउ महिवासी यह कारज। जीति सकिहि करि सुनिये आरज ॥ शक्रहि जीति पराभव दैकै। प्रभु तुम मोदे सुरतरुहि लैकै॥ ताहिव पर सुरपति दूत आई । अनिरुद्धहि लै गए चोराई ॥ मम अनुमान परै लखि ऐसो । आपु बिचारि कहैं हो जैसो ॥ प्रभु बोले नाहिं इमि मन धरिहैं। शक्र कबहू नहि ऐसो करि हैं ॥ सुरहन्ता जु पराक्रम हीने। करैं चोरवत दशा मलीने ॥ विपदा परे प्राण परिहरहीं । उत्तम पुरुष न लघु गति धरहीं॥ तब बोले अक्रूर सयाने । सब कल्याण शक्र हित जाने ॥ तासु काज तुम निज सम माने । तब कारज वै निज अनुमाने ॥ तब प्रभु कहत भए अनुमानी । सब कोउ सुनहू सत्य मम बानी ॥ सुर गन्धर्व असुर किन्नर नर । नहि लैगे अनिरुद्धहि बल बर ॥ कोउ पुंश्चली असुरकी भामिनि । रमणहेत लैइ गई सो कामिनि ॥ इतने मैं तहं नारद आए। पूजि कृष्ण सादर बैठाए ॥ लखि बोलत भे मुनिवर ज्ञानी । कत शोचित हो तुम सब मानी ॥ कहे कृष्ण निशि मैं पग धरिकै । लै गो कोउ अनिरुद्धहि हरिकै ॥ *********

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

बिनु जाने यह भेद हैं हमसब पूरित खेद । मुनि तुम आनत होउ तौ शीघ्र कहहु यह भेद ॥
तब नारद मुनि कहत भे गांव ठांव बेवहार। बरनि भिरनि गहि परनि सब विधिवत कह बिस्तार॥
अहि बन्धनते कुवर है बाछित लेउ बिचारि । तातें चलिये शीघ्र उत हियतें संशै टारि ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

तब उत जैबेको मद कीन्हे। प्रभु सुभटन कहँ शासन दीन्हे ॥ तब इमि कहत भए मुनि नारद। सुनहु बचन मम कृष्णहि सारद ॥ बहस इग्यारह योजन सो पर । नधि बन नदी अनगिने गिरि बर ॥ तातें गरुडहि लेहु बुलाई । तापै चढ़ि चलिये दोउ भाई ॥ यह सुनि कृष्ण गरुड कहँ

ध्याए। शीघ्र गरुड तहँ सानद आए॥आइ गरुड प्रभुके पग बन्दे। बन्दि कहत इमि भए अनन्दे॥ नाथ कृपा करि करिए शासन। सो म करउँ सुमङ्ग अरि नाशन॥ सुनि प्रभु अति आनद हिय छाए। समाचार खगपतिहि सुनाए॥ तदनु गरुडकी अस्तुति करिकै। कहत भए आनद बिल रिकै॥ मोहि शीघ्र शोणित पुर ले चलि। जीतउँ बाणहि असुरहि दलि मलि॥ यह सुनि कहे गरुड हरषाने। धनि हौं जेहि प्रभु आपु बषाने॥ मो मे जितो संलकी पुरता। सो तुव अनुकंपा की पुरता॥ नाथ तुम्हार भक्त जो होई। धन्य धन्य तिऊ पुर मैं सोई॥ कारण कार्य्य आपु सब जगके। दर्शक दर्शावक सब मगके॥ लहिं तव कृपा होइ सब आरज। करैं सिद्ध अतिदुस्तर कारज॥ ले शत सखा बन्धुगण गोहन। करऊ शीघ्र मोपर आरोहन॥ ✻✻✻✻

॥✻॥ दोहा ॥✻॥

तब गरुडहि आलिंग्य प्रभु सह प्रद्युम्न बलिराम। चलत भए चढि मोदसों गहि आयुध अभिराम॥
कछू दूरि बलि कृष्ण प्रभु भए असृमुङ्करूप। सहस शीरषा पुरुष ज्यो भो गिरि सदृश अनूप॥
सङ्ग चक्र शर बर गदा दच्छिण करन निहार। लसे शङ्ख धनु पवि चरम बाम करनि म धार॥
सहस शीरषा राम भे गिरिवत गुरु बलवान। स्वाम कार्तिक को गहे रूप प्रद्युम्न महान॥

॥✻॥ सोरठा ॥✻॥

एहि विधि चलि बलधाम शोणितपुर के निकटभे। तहाँ कहत भे राम बिशद बचन श्रीकृष्णसों॥

॥✻॥ रोलाछन्द ॥✻॥

इत हम सुत सहित तुम ह्वै निज प्रभा सों हीन। भए काञ्चन बरण कारण कहा यह परबीन॥
कहे यह सुनि कृष्ण शोणितनगरमे चऊ ओर।दिपति ज्वाला अगिनि की प्रज्वलित अतिसै घोर॥
परे ताकी प्रभा हम तुम भए ऐसे रूप। कृष्ण सों सुनि कहे फिरि बलिराम बचन अनूप॥
आवते ढिग तासु हम तुम भए जो वे बर्ण। कहा आगे करहिं गे पुर सार्थ तौ गहि पर्ण॥ बचन सुनि प्रभु विहँग पतिकों दए तत्र निदेश। गरुड सुनि अति बेग सों उडिजात भे नभ देश॥
सहसमुख करि सुर सरितकों बारि भरिले आय।बरषि धारनि देत भे सब ज्वालजाल बिमाय॥
अग्नि बर हवनीय की लखि शान्ति शिवगण बन्हि।आइ सन्मुख लरन लागे कृष्णसों तेहि अग्नि॥
नेसु तिनके युद्धको स्वन बाण बीर उदार। तहाँ भेजे अग्नि रहिं जो अगिनिको सरदार॥ हरम शोषण कुसुम यत कल्माष तपन सुलाल। पाँच लाखा कार विषये प्रगट अग्नि बिशाल॥पिठर पतग अगाध स्वर्ण सुंभाज पावक पांच। सुधा कानाग्रई ए दग्ध अग्नि हौरव आंच॥ बिभाग ज्योतिष्टा मए है अग्नि अति अभिराम। बषटकाराग्रई तिन सह सरिसं सहस ललाम॥
बेग सानहँ आइके सो अगिरा बलवान। बैठि रथ आग्नेय म तकि तजन लागो बान॥ कृष्णप्रभु

तब अंगिरासों लरो रुद्र धरि धीर । शीघ्र मेरे अस्त्रसों तुव जरत दीघशरीर ॥ वचन यह सुनि अंगिरा भो हन्यो शूलउदण्ड । काटि शरसों बीच ही तेहि किए प्रभु द्वैखण्ड ॥ स्थूलकर्ण विशाल शर फिरि हने प्रभु उर तासु । ह्वै विदीरण हियो अंगिर गिरो महियैं आसु ॥ सर्व ऋषि उठाए तब अंगिर हि भरिश्वास । गए शोणित भरे शोणितनगरपतिके पास ॥ *〰*〰*〰*〰

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

तब शोणितपुर प्रतिचले अति अवधों बिडगेश । लखि प्रभुसों नारद कहे यह शोणितपुर वेश ॥ इत सुनगण गिरिजा सहित रहत रुद्र सबयाम । बाणवीर असुरेशके रक्षणहित अभिराम ॥ सुनि प्रभु बोले शम्भु जो न्है दैयतकी वोर । लरि है उनहूंसों करैं तो संगर अति घोर ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

ऐसों कहत नगरढिग आए । तब तंह केशव शङ्ख बजाए ॥ सुनि धुनि दैत्यतगण समुदाई । निकसत भए निसान बजाई ॥ कोटिन ज्ञिकर मदसों छाए । लरनहेत बलि आगे आए ॥ कहे राम प्रभुसों सुनि लीजै । इनको शीघ्र नेवारण कीजै ॥ सुनि प्रभु अग्निबाण तब लीन्हे । क्षणमें तिन्है भसम करि दीन्हे ॥ तब जूथन सह सहसन जूथप । आए सनमुख परदल क्षयप ॥ गिरि सम वपुके नगसम आयुध । गहे वीर बरणे करता जुध ॥ ते सब प्रभुहि प्रचारण लागे । शस्त्र समूहनि मारण लागे ॥ तब बल लागे भटनसा जूटन । हलसों खैंचि मुशलसों कूटन ॥ शङ्ख बजाय बजाय सुखारी । बाण गदा अरु बज्र प्रहारी ॥ कृष्णचन्द्र निमि युद्ध निहारे । यूथन यूथपतिन संहारे ॥ घन प्रद्युम्न सनसम शर बरसे । तृण सम प्राण अपरके सरसे ॥ पवन नन्दन चोचसों खगपति । हने असंख्ये भट बरबल अति ॥ भए परनि कल्पांत समयके । धारि काल सम दायक भयके ॥ करि संगर अति व्याकुल ह्वै कै । बचे असुर भागे भय मैके ॥ तब प्रभु अतिआनदसों छाए । सुखद दुखद शुभशङ्ख बजाए ॥ *〰*〰*〰*〰*〰*〰*〰*〰*〰*〰*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

तब सहाय असुरनके आवत भो तंई तौन । ज्वर अज्वलित अहानको शैन आहिरो जौन ॥ शीनिचरण औ तीनिशिर षटभुज अरु नव नैन । भस्मायुध सुरेश्वर अति करुणासिन्धु सचैन ॥ निद्रित सो जम्भुवात अरु अरुण भयद बल चक्रान्वसत लरो सनमुख भयो घनसम गरजत तब ॥

॥ * ॥ महिहरीछन्द ॥ * ॥

घनसम गरजि प्रभिरामको लखि रोष अतिशै गहत भो । भरि भस्म तीनि मूठि लीन्हे आय ढिग हनि कहत भो ॥ मति भांगु अब रुद्र लरो हनि कहि भसम डारत चहत भो । बल सके सो न बचाय भस्म हि बाहि धुव थिर रहत भो ॥ तब दाहसों ह्वै राम व्याकुल भूमिमें गिरि परत भे । अति

जबि उससन जृंभि केशव कृष्ण यह जब धरत भे ॥ सुनि कृष्ण उरनै लाय रामहि व्यथा सिगरी हरत भे। लखि ज्वरहि निपट निशङ्क मो ढिग आंउ यह धुनि करत भे॥ सुनि भसम तीनिउ मूंठि सो ज्वर कृष्णके तनमधि हने। हरि क्षणक मुरछित चेति फिरि प्रभु भिरे ज्वरसौं सुखसने ॥ लरि घरिक गहि तेहि कृष्ण पटके छूटि करसौं ज्वर सुनो। तंह प्राविसि प्रभुके देहमधि भो करत पीडित युर सुनो ॥ तब कृष्ण वैष्णव ज्वर प्रबल निजदेहते प्रगटित किए। सो ल्याइ गहि तेहि ज्वरहि तारण कृष्णके करमह दिए॥ फिरि ताडि महि पैं पटकि प्रभु शतखण्ड करिबो गुणत भे। तेइ त्राहि त्राहि पुकार बहुधा कियो सो नहि सुनत भे ॥ *******

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

तात्क्षण नभवाणी भई यह मति हतहु कृपाल। सो सुनि कृष्ण न तेहि बधे सुनि यो हे छितिपाल॥
तब रौद्र ज्वर कृष्णके बन्दि चरण अभिराम। कह्यो दुतिय ज्वरको समन करहु कृष्ण अभिराम ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

एवमस्तु तब प्रभु कहि दीन्हे। निजज्वर मिलै आपु मैं लीन्हे ॥ निजज्वर सोपि रौद्र सु ज्वरसा। कहत भए केशव आदरसों ॥ अब ह्वै तीनि भाग अति अंग मैं। बिलसहु ज्वर तुम सिग रै जगमै ॥ द्विपद चतुष्पद थावरगण मैं। बिहरहु क्रमसौं मोदित मनमैं ॥ एकाहिक द्याहिक अरु त्राहिक। बिचरो मानुषमैं ए द्याहिक॥ वारिजमै हिम कार्इ अलम। ज्वर रूप रमौ महिथल मैं॥ गेरु रूप रमौ गिरिवर मैं। सुनो कहौ जेहि बिधिसौं तरु मैं॥ सकुचनि और पाण्डुता दलमैं। कीट काठ मे कृमिता फल मैं॥ परको झरिबो पक्षी जन मैं। खुरक अंपस्मार चौपद गनमैं ॥ मानुष देव भेव तुव सहि हैं। और न आन सु धीरज रहि हैं॥ यह सुनि एवमस्तु कहि ज्वर वर। कहत भयो इमि प्रभुसों तेहि वर ॥ त्रिपुर दैतके संगर बरनै। सुनहु नाथ मोहि शङ्कर निरमै॥ सोहि तव कृपा आजु रहि ठांई। भएउ धन्य मैं सुनहु गोसांई ॥ अब कछु मोसौं कहिये सांई। सो मै करउ दासकी नाई ॥ यह सुनि कृष्ण कहत भे ऐसे। मम तुव युद्ध आम यह जैसे ॥ मोहि प्रनम्य पढै नर जोई। सो न ज्वरनसो पीडित होई ॥ ********

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

स्वामी होइ हि यों सि यह कहि ज्वर प्रभुपद बन्दि। आनभयो रणभूमि ते वर लहि परम अनन्दि॥
तौलौं साजि असंख्य दल आयो बाण प्रवीर। सुतगण सह मिव तासु संग रक्षक दायक धीर ॥
गिरिसम बपुके वीर जे बरणे घोर अमान। भिरे कृष्णसौं आइ ते साहस वीर महान॥
गरजि गरजि डारण लगे शस्त्र अमोघ अपार। काटि तिन्हैं प्रभु वीचही करण लगे संहार॥
जिमि दावानलज्वाला जरैं घूनो गहन कानीन। तथा कृष्णके शस्त्रसो जरे असुर भाजीन॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

श्रीशीलव्य शुभेश राम प्रद्युम्न लगन लरि । कीन्हे खंडित शेष दैयन सैन असंख्यको ॥
रहे शेष जे बीर ते सब बसि भागत भए । धरे न काहू धीर फिरे फेरे न बाणके ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

इहिविधि बाणकी निरजय देखी । शङ्कर मनमें अतिसै लेखी ॥ रथ चलाइ बढि प्रभुके सनमुख। आए भए वीररस सौं रुख॥सहसन भेख अति भयानक गण गन॥ बल कत सङ्ग परम प्रमुदित मन॥ शिव हि देखि प्रभु आनद छाए। लरन हेत चलि आगे आए ॥ शत शर हरि हि लखत हर मारे। तब पार्जन्य अस्त्र प्रभु डारे ॥ ज्वलत जाइ सो शिवको नेरे। ह्वै शतसहस बाण रथ घेरे॥शिव आग्नेय अस्त्र तब छांडे। सो चलि जाइ कृष्ण प छांडे ॥ ज्वाल जालमें ताखों यदुपति । छादित भए दशोदिशिसों अति ॥ भए अदृश्य सुनो तेहि छनमें॥तब करि कृष्ण कोप अति मनमें॥तजिवरुणास्त्र मोद अति लीन्हे । अस्त्र शम्भुको लोपित कीन्हे ॥ तजत भए तब यदुकुल नायक। सायहि चारि अस्त्र भयदायक॥वासव अरु वायव्य बखानेमोहन अरु सावित्र महाने॥आठो अस्त्र एकता धरि के। खलित होत भे शीर्णहि बरि के ॥ फेरि वैष्णव अस्त्र सोहाए। छाडत भए कृष्ण रिपिछाए॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

उग्र वैष्णव अस्त्रको करत हि उग्र प्रयोग । अन्धकार उठि गो दिशनि विकल भए सब लोग ॥
अन्धकारमो छन्न ह्वै शङ्कर करि अति कोप । तजन चहे सो अस्त्र जेहि किए त्रिपुरको लोप ॥

॥ * ॥ तोटकछन्द ॥ * ॥

शिवके मनकी यह जानि लिए। प्रभु जृम्भन अस्त्र प्रयोग किए ॥ धनुसो शिव छावत हे सरसों। इकुतो लगि आइ लगो बरसों॥जिनि जृम्भन अस्त्र लगो तन में। अति व्याकुल ह्वै शिवा तायनमें॥ शर चापहि सोंति बिसाइ रहे। अरु बारहि बारज भाइ रहे ॥ *⬭*⬭*⬭*⬭*⬭*

॥ * ॥ मोदकछन्द ॥ * ॥

शम्भु किये जड़ि के प्रभु सानद । शङ्ख बजावत भे तहँ सानद ॥ देयनके गणदीहल हे भय । कौश्यपके कुलको गुनि के क्षय ॥ शङ्करके गणके अतिवे रिसि । घेरि लिए तहँ आय दशोदिशि॥ कोमल के सुलपेँ भयछावत । भे सब अस्त्र अनेक चलावत ॥ *⬭*⬭*⬭*⬭*⬭*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

मायावी प्रद्युम्न तब मोहन अस्त्र चलाय । करि निद्रित सब गणनिको दीन्हे तुरित सोवाय ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

यदि दरशा इनि संगर माचे । बर ब्रह्माण्ड भीतिवा राचा ॥ कश्यप कोश्च शेष दहलाने ।

दिगवासी दिग्गज दहलाने ॥ उछलन लगे सिन्धु तजि बेला। हत जल भजे जीव करि रेला ॥ लगे गिरन गिरि शृङ्ग उखाडे । बिरल भए बन जे अति गाढे ॥ सब दिगपाल चकित तहँ जाईं । हरे भए कर उदय लाईं ॥ सुर गन्धर्व यक्ष किन्नरगण । चकित लखे सब करि चिन्तित पण ॥ व्याकु प्रथम हीं सौं तहँ वेधां । चिन्तित ठाढे रहे सुभेधा ॥ लहि अतिभार भूमि ह्वै व्याकुल । आइ तहाँ अति दुखसौं आकुल ॥ कहत भई बिधिसौं कर जोर । करहु सहाय लोकहित मोर ॥ बारहु बेगि युद्ध हर हरिको । मानत सकिहि मोहि अब धरिको ॥ बेला नाघि समुद्र मढि ऐहै । जीव जात सिगरे बहि जैहै ॥ सुनि पृथिवी कहँ धीरज देके । मे शिवपैं बिधि आनन्द लेके ॥ कहत भए एहि बिधि.बिधि बानी । सुनहु बचन मम शङ्कर ज्ञानी ॥ युद्ध जोग तुमही एहि दीन्हे । अब कत आपु खरत रिपि कीन्हे ॥ तुम्ह हि न हरिसौं उचित लराई । करि बिचार देखो मन लाई ॥ तुम बिचार बिनु किए भुलाने । आपुहि हरि हि दोष करि जाने ॥ करि बिचार पहिले लखि लीजे । फिरि जो उचित होइ सो कीजे ॥ *—*—*—*—*—*—ए—*—*—*—

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

यह सुनि शम्भु बिचारि लखि कछुहि आपुहि एक। धनुषबाण तजि चाहिते तजे चरन की टेक ॥
शम्भु लख्यो तब सिखन भे बरधित प्रेम महान । चतुराननसों कहत भे लखौन कारु आन ॥
प्यारे हो लोचन लगे सहित गिरा वर्हँ शम्भु । धीर धोर बाधेतके युद्ध चरन आरम्भु ॥

॥ * ॥ अथकरिछन्द ॥ * ॥

तब चतुरानन हिए बिचारि । बूझत भे तब पुत्र निहारि ॥ मार्कण्डे मुनिसौं कुहराति । अब नारद मुनिसा यहि भांत ॥ मन्दर गिरि ढिग सुनहु अमोघ । देखो मे नलिनीके बीच ॥ सपने मै हरि हर सुखदानि । बिहरें संग सकल गुणखानि ॥ गहे आपु हरि हरको रूप । बिरचे हर हरि रूप अनूप ॥ सकल साजसौं भए अभेद । पगे प्रेमसों रमे अखेद ॥ यह लखि बिसमय भयो महान । अथा तत्व सो कहो सुजान ॥ मार्कण्डेय कहे कुरनाथ । तजि बिसमय सुनि ये सब बात ॥ रूप दोउ हरि हर हैं एक । ईश्वर बिहरैं सहित बिवेक ॥ मध्यम निधन अनादि बिख्यात । हरी हराग्मक ते ए तात ॥ जोइ बिष्णु रुद्र है सोइ । रुद्र पितामह एक न दोइ ॥ एक रूप है ए त्रय देव । सुचि सयम्भु करता शुभभेव ॥ रुद्र अचिंत्य उग्र अभाव । सोमात्मक हैं बिष्णु महान ॥ करता कारण कारज कर्म । पुरुष पुरान बिष्णु शिव पर्म ॥ उमापति पालन अरु संहार । करत शूर ए पुरुष उदार ॥ परम गुह्य यह जाने जोन । सदा लहे बांछित फल तोन ॥ —————

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

अब हरि हरकी करत हौं अस्तुति परम उदार । मनरञ्जन मञ्जन अघनको सुनत होत भवपार ॥

यह कहि हरिहर को किए अस्तुति मुनि सुखदाय।महाराज क्षितिपाल मणि सो सुनिये मनलाय॥

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

कृष्ण रुद्र उदार हरिहर विष्णु शिवहि प्रणाम। द्वै नेत्र अरु त्रैनेत्र प्रभुको परम प्रणत प्रणाम॥ चारु वारिज नेत्र पिङ्गक नेत्रकों सु प्रणाम। धीर धरणी धरण गंगाधरहि प्रणत प्रणाम॥ मुण्डमाला धरहि औ वनमालधरहि प्रणाम। चक्रपाणि त्रिशूलपाणिहि परम प्रणत प्रणाम॥ पीत अंशुकधरहि अरु चर्म्माम्बरीहि प्रणाम। रमापति अरु उमापति कौं परम प्रणत प्रणाम॥ अङ्गरागिहि भस्मरागिहि प्रेम पूरि प्रणाम। गरुड वाहन वृषभ वाहन प्रभुहि प्रणत प्रणाम॥ दैतबलि के दक्ष क मख ध्वंशनहि सु प्रणाम। देव रिपु हन त्रिपु रहन कौं परम प्रणत प्रणाम॥ सहस शीर्षा पुरुष अरु बहु शीरषहि परणाम।सहस बाहु असंख्य बाहु सु प्रभुहि प्रणत प्रणाम॥ यर्जुर्वेदी सामवेदी ख्यात प्रभुहि प्रणाम। सौम्य रौद्र सुभाव त्र्यामक प्रभुहि प्रणत प्रणाम॥ *॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

कथित यह श्लोकवर हरिहरातमक वेश। वांछित को दातार है गुणिये सत्य नरेश॥
युद्धकरण को त्याग जब कीन्हे शम्भु सुजान। रथ चढाय लै गुहहि गे तब कुष्मांडि अमान॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

कार्त्तिकेय बलवांन हने तीस शर कृष्णपैं। तीस तीस बरवाण राम प्रदुम्न अमान को॥

॥ * ॥ चौपाई॥ * ॥

तब वायव्य अस्त्र प्रभु डारे। शर आग्नेय राम तकि मारे॥ शर पार्जन्य प्रदुम्न चलाए। विकट अस्त्र ए गुहप्रति धाए॥ तब गुह वारुण शैल सु हेरे। अरु सावित्र अस्त्र त्रय प्रेरे॥ बीचहिं अस्त्र अलखा वारि। हने अनगिने बाण प्रचारि। तब प्रभु तजि शर माया शर से। बीचहिं शर कुमार के उर से॥ लखि कुमार अतिसै रिसि कीन्हे। अस्त्र ब्रह्मशिर कर मैं लीन्हे॥ उग्र प्रभाव अस्त्रसों छाडत। हाहा कार महाभय मांडत॥ चले चक्र के भे सो निहफल। जिमि रवि चले चलो घन को दल॥ व्यर्थ ब्रह्मशिर अस्त्रहि देखी। षटमुख मनमे अतिसै तेखी॥ लए अमोघ शक्ति अति भारी। जो युगान्त पावकसम भारी॥ तजे शक्ति सो गुह करि दपटैं। चली दूरि महि नभ लौं लपटैं॥ सहित सुमनगण शक सकाने। जरे कृष्ण यह ध्रुव अनुमाने॥ ताहि निकट लखि प्रभु अनखाए। ऊँ कहि महिपैं ताहि गिराए॥ साधु साधु श्रीकृष्ण महाशय। कहै सुमन लखि प्रभु को आशय॥ फिरि प्रभु चक्र पाणि मै लीन्हे। गुहके नाशन को मन कीन्हे॥ इय लखिके गिरिजा बररूपा। सुतके रक्षण हेत अनूपा॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

लहि आसन त्रिपुरारि को धरत भई द्वै देह। सात भागसों कोटवी देवी भइ सनेह ॥
एक भाग वरसों भई देवी लम्बानाम। नहि युग रूप अनूप अति दिग्वसना अभिराम॥
आइ कृष्ण के सामुहैं खरी भई पंथ जोरि। देखि कृष्ण नत नयन करि कहे भई मति तोरि॥
गच्छ गच्छ अपगच्छ तू मति कर देवि अकाजु। कार्त्तिकेय को वध अवसि मैं करिहौं हठि आजु॥

॥ * ॥ मौक्तिकदामछन्द ॥ * ॥

इवात महान सुनो मुनिके जू। कहो गिरिराजसुता गुनिकै जू॥ कुमारहि रच्छण हेत अवास। खरी इत आइ भई तुव पास॥ *

॥ * ॥ सुखीछन्द ॥ * ॥

तौलगि मैं अंशुक नहि लैहों। यो नहि ह्याते अनतहि जैहों॥ याविधि याही वर थिर रैहों। याहऊँ सेनानिहि इमि कैहौं ॥ *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

जौलगि चक्रहि समित करि क्रोध हिए ते टारि। कार्त्तिकेय को अभयवर नहिं देहो असुरारि॥
वचन कोटवी देविके सुनि बोले श्रीरंग। अभै कियो मैं तव सुतहि लिए जाऊ निज संग॥
यह सुनि गिरिजा गुहहि लै गई शम्भुके पास। चक्रहि कीन्हे शमित प्रभु करुणाकर सुखरास॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

युद्ध भूमि ते गुहको लै कै। गई भिन्ना जब मन निरभै कै॥ तब रणधीर बीर बरबाना। गह्यो युद्धको चाव समाना॥ चढि उन्नत रथपैं रिसिछायो। सदल कृष्णके सन्मुख आयो॥ विविधि भांतिके बाजन बाजत। संग असुर भट गरजत गाजत॥ सुतप पुरोहित विप्र हजारन। पठत स्वस्तयन विघ्न निवारन॥ सहस भुजनिमें आयुध धारे। दर्प सम्बर्न गर्व हियधारे॥ गर्व कुटिलता विषसों सानी। कहत भयो केशवसों बानी॥ काल विवस ह्वै तू इत आई। चाहत मोसों करण लराई॥ आठभुजा सा आयुध धारी। सहस भुजासों लरन विचारी॥ आये हो अतिमै हरषाने। तातें तुम्हें मूढ हम जाने॥ अब जीवत नहिं निजपुर जैहो। मरि निवास यमपुर मे लैहो॥ मेघमन्द्र ग्रत चाप शरासन। को धुनि सुनि मरिहौ काँपि कासन॥ वज्र सदृश मम अस्त्र प्रहारण। किमि सहिहो तू भूमि विहारण॥ यह सुनि नारदमुनि नभ चारी। अट्टहास कीन्हे धुनि भारी॥ यह सुनि कृष्ण बुद्धिबल सागर। हँसि इमि कहे बाणसों नागर॥ सुनु सठ अपजय नहि मनुसाई। यह कादर जन की कदराई॥ निज मुख भाखे निज प्रभुताई। मिले न अथ बिनु किए लराई॥ जिनसों लरन हेत बसु बाहैं। कीन्हे तो हित द्वै भुज चाहैं॥ इमि कहि केशव द्वै भुज ह्वै कै। मारे बाण बाण कहँ ज्वै कै॥ तब अर दृष्टि बाण प्रभु पांहो। करत भयो गर्वत मनमांही॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

अस्त्र एक हौं बाणपैं याहि पूर्व अनुरागि। हौं हिरण्यकश्यपु लहे विधिसौं तपि बर मांगि ॥
ताहि चलावत भे प्रबल प्रलय अग्निसम जौन । ज्वाल जालसौं छाइ दिशि चखो कम्पन तौन ॥
पारजन्य बर अस्त्र तब तजे कृष्ण करि कोप । ज्वाल जालमैं अस्त्रको करत भयो सो लोप ॥

॥ * ॥ तोमरछन्द ॥ * ॥

निज अस्त्रको लखि लोप । करि बाण अतिसै कोप ॥ भो तजत शस्त्र अनेक । अरु अस्त्र विविध सटेक ॥ ते सबै मगमैं काटि । प्रभु हने बाणहि डांटि ॥ तजि शार्ङ्गधनुसौं बाण । प्रभु दए काटि महान ॥ रथध्वज धनुष हय तासु । अरु मुकुट कवचहि आसु ॥ फिरि बाणके हिय बीच । शर हने एक नभीच ॥ शर लगे ते भट बान । तहँ परो मुर्छि अयान ॥ तेहि दिए हे गुण जौन । सु मयूर वाहन तौन ॥ तब गरुडसौं सो धाय । भो भिरत दीरघ काय ॥ नख तुण्ड पक्ष चलाय । ते लरत भे रिसिआय ॥ लरि शिखिहि खगपति मारि । फिकि दए महिपैं डारि ॥ यह बाण को गति देखि । मुनि कलहप्रिय अवरेखि ॥ व्है मुदित कुच्छ बजाय । हंसि लगे नचन सचाय ॥ तब चेति बाण सकानि । भो करत महत गलानि ॥ सह शक्र समुदा सोय । इमि लखे सोकहचाय ॥ इमि बूझि मनवै खेदि । तिमि रहत भो निरवेदि ॥ *◆*◆*◆*◆*◆*◆*◆*◆*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

चिन्ति बाणके चित्तकी चिन्ता श्री त्रिपुरारि । नन्दीश्वरसौं कहत भे करुणासिन्धु विचारि ॥
मम रथ लै अब जाइ तुम बाणहि शीघ्र चढाय । युद्ध करावहु कृष्णसो व्है सारथि सुखदाय ॥
सुनि निदेश गिरिनाथ को रथ लै नन्दी जाय । प्रभुके सन्मुख करत भे बाणहि तुरित चढाय ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

शिवकी कृपा पाइ मुदपागो । बाण पूर्ववत बलकन लागो ॥ परम रौद्र उग्र अति जोई । अस्त्र ब्रह्मशिर छाडेसि सोई ॥ केशव ताहि चक्रसौं बारी । कहे बाणसौं आयुध धारी ॥ पूर्व सहसभुज अर्जुन को गति । कीन्ही परशुराम जो बरमति ॥ सो गति करउं शीघ्र मै तोरी । थिर रहि देखु बीरता मोरी ॥ यह कहि चक्र पाणिमैं लीन्हे। बाणहि नाशन को पन कीन्हे ॥ कहे शिवासौं शङ्कर चाहो। सादर जाइ बचावहु याहो॥ सुनि कोठवी शंभु की बानी। लज्जा सहित सरस सुखदानी॥ सादर दिग्वसना सुखदाई। ठाढी भई मध्यमै आई ॥ लखि प्रभु बोले नैन नवाई। कहो कहा काहेो अब आई ॥ बोली तब कोटवी भवानी। बाण मोहि प्रिय जिमि सेनानी ॥ इतनो कहो मानि मम लेहू। अभै दान बाणहि अब देहू। सुनि प्रभु बोले सुनहु भवानी। बधब न याहि मानि शुभ बानी ॥ सब भुज काटि दोय भुज राखब। गर्ब बाणके तनते नाखब॥ भाषि कोटवी सौं

इमि मानद। कहे बाणसों केशव सानद ॥ कुरु कुरु युद्ध रहो कत जकि सों। इतनेहीं संगरमें छकिसो ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

कै शोणितको सिन्धु लखि गयो भीतसों मोहि। सहसभुज बलवान तूं पैरि न आवत तोहि ॥
इमि कहि चक्रसुदर्शन छाडे कृष्ण अखर्व। तेजपुञ्ज त्रैलोक्य को जामें पूरित सर्व ॥

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

परसि गुरु वपु बाणको सो घूमि गहि गति बक्र। राखि द्वै भुज काटि सिगरे गयों प्रभु ढिग चक्र ॥ सहस शाखी दीर्घ शाखो सहस हो बलवान। दोय शाखो चारु शाखो सहस भो सो बान ॥ क्षतन ते कढि कढि रूधिर को धार परम ललाम। लगो बढि बढि गिरन दशदिशि भाँति एहि अभिराम ॥ साहसी सब दिशिसुखी अति दोह जिमि जल जंत्र। भारती के बारि भारी छुटत केलि स्वतंत्र ॥ कढे हूँपै भुजनिके अति क्रुद्धि गरज्यो। बाण। कृष्ण सुनि फिरि किए उद्यत चक्र सोषक प्राण ॥ आइ तब सुत सहित हर करि कृष्णके गुणमान। क्रोध शमित कराय मागे तासु अभयप्रदान ॥ मानि शिव को कहो प्रभु तजि क्रोध करि मन शुद्ध। गरुड गामी चले तह जहं रहतहैं अनिरुद्ध ॥ कहे तब असुराधिपति सों निरखि नंदी बैन। शीघ्र शिवके निकट चलि अब करऊ नृत्य सचैन ॥ जाइ तब ढिग सम्भुके करि नृत्य बऊविधि बान। शिवहि करि परसन्न लीन्हें मांगि वर मनमान ॥ सम्भुगे निज धाम तब गे बाण अपने ग्राम। कहे तब मुनि कलहप्रिय सों कृष्ण प्रभु अभिराम ॥ चलऊ लै मोहि सुमुनि तहँ अनिरुद्ध है जेहि गेह। बचन सुनि संग आइ नारद गहे सरस सनेह ॥ दए अनिरुद्धहि लखाइ सु लखत प्रभु भरि नैन। गए ढिग अनिरुद्धके करुणा यतन जग जैन ॥ देखि गरुडहि भगे अहि जे रहे बन्धन घोर। गहे श्रीअनिरुद्ध प्रभुपद गहे मोद अथोर ॥ राम अरु प्रद्युम्न अरु खगनाथ के गहि पाय। किए अस्तुति कृष्णकों प्रभु लए उरसों लाय ॥ सेवकिनि सब सहित ऊषहि गरूड पैं बैठाय। चलन चाहे कहत भे तिमि सुमुनि नारद आय ॥ सहित सुर सुरराज चाहत सुनो गालिप्रदान। करऊ तातें व्याह इत अनिरुद्धको सुखदान ॥ ***************

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

एव मस्तु प्रभु कहत भे तिमि बिवाहको साज। लै आयो कुम्भाण्ड तहँ मंत्री करन सुकाज ॥
प्रभुपद बन्दत भो सचिव करि ताको आश्वास। किए बिवाह पौत्रको सविधि सरस सविलास ॥
मुदित विवाहोत्तर गए वेधा अपने लोक। सह परिवार खगेन्द्र पैं चढे कृष्ण मुदओक ॥
सखिन सहित ऊषहि उमा दै आशिष सुखदाय। कीन्हीं विदा मयूरपैं चौंहि सभाव चढाय ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

घंसतीवार सचाय कहत भयो कुम्भाण्ड इमि । नाथ बाणकी गाय है असंख्य घर वरुणके ॥
रखै अष्टत युधिवीर ते किंगरी सुखदा सुरुचि । चाहउ जौ रणधीर तिन्हें लेत जैये सदन ॥
कहि तथास्तु श्रीरंग चलत भए आनन्दअयन । चले मुदित ह्वै संग सुरपति सुर गन्धर्व सह ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

सहित स्वपुत्र सुगेंब सु भाई । चले गरुड पैं प्रभु सुखदाई ॥ पूरब ठिग जपाको वाहन । चाह मयूर हि राखि सुचाहन ॥ नभंपथ चले वारुणीदिशि पति । सुरगन्धर्व सहित सह सुरपति ॥ पश्चिम समुद्र निरखि यदुनायक । कहे गरुडसों वचनं सभायक ॥ खगपति अहो बाणको गोधन । चलौ तहां करि कै मग सोधन ॥ यह सुनि गरुड झारि पर भारि हि।मारि वारि तहं तउरव वारिहि ॥ चखे वरुण प्रति गुरुसों भेखे । चलि जबसों वरुणालय देखे ॥ निजदिशि आवत तिन्हें निहारे । सुभट वरुणपुरके रखवारे ॥ को तुम कत आवत भय त्यागे । कहि शस्त्रनसों मारण लागे ॥ करि ते कठिन युद्ध रिसिराते । खगपतिसों तहँ भए निपात ॥ यह सुधि पाय वरुण रिसिछाए । झाकटि प्रत भट रथी पठाए ॥ ते करि घोरयुद्ध भरि बलसों । जरे कृष्णके बाणानलसों ॥ यह सुनि वरुण सैन सजि भारी । आए लरन चापु धनु धारि ॥ जलपति अखल अब आइ सुधारे । बाण अनेक कृष्णकहँ मारें ॥ शङ्ख बजाय कृष्ण प्रभु हरषे । बाण अमान वरुण पैं वरषे ॥ * ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

वरुणहि प्रभु प्रभुकहँ वरुण मारे बाण अनेक । तुमुल युद्ध कीन्हे प्रबल गहे युद्ध की टेक ॥
तजे कृष्ण तब वरुण पैं वैष्णव अस्त्र प्रचण्ड । चल्यो चण्डकर सदृश सो ज्वालपुञ्ज उदण्ड ॥
वारुणास्त्र तब-तजत भै वारण वरुण विचारि । भिरो वैष्णव अस्त्रसों सो बरषत बर वारि ॥
वारुणास्त्रको वारि सब वारि वैष्णव अस्त्र । प्रलयाग्निनि सम वरुणपैं दहत भयो शुभशस्त्र ॥

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

अबहि आवत लखि मन मोरि । प्रभुसों कहे वरुण कर जोरि ॥ सारण करऊ निज प्रतिनि उदार । जेहि सुबीजको तव संसार ॥ तेहि समर्द जो मम संहार । उचित होइ तौ करौ न बार ॥ इमि कहि अस्तुति किए बनाइ । तब इमि बोले श्रीयदुराइ ॥ दीजै शीघ्र बाणकी गाय । जो तुम कुशल चहैा निज काय ॥ प्रत्युत्तर कहे सुनि यै गुण गेऊ । हौं मैं किए प्रतिज्ञा एऊ ॥ गोधन तुम दीन्हे सो बाणा । आनहि देव न चाहत प्राण ॥ हौ सुधर्म पालक तुम ईश । करौ उचित लखि विश्व बीश ॥ औ चाहौ गोधनको लाऊ । तौ प्रभु मोहि मारि लै जाऊ ॥ यह सुनि कहे

लख्यो प्रभु पर्म । रात्रअ नाय सहित निजधर्म ॥ यह सुनि बहुत विनै करि कूजि । भए सनाथ कृष्णकहं पूजि ॥ ह्वै पूजित सहसुमन समाज । आए निजपुर श्रीव्रजराज ॥ निज आगम सूचक सुखदाय । शङ्ख बजाए पुरढिग आय ॥ धुनि सुनि यदुवंशी सुखपायं ॥ पूजत भे पुरबाहेर आय ॥ यथा उचित सब पुरके लोग । पूजे प्रभुहि सहित उतयोग ॥ अस्तुति सुने बरष सुख साज । पुर बाहेर उपबनमैं राजि ॥ *⬬*⬬*⬬*⬬*⬬*⬬*⬬*⬬*⬬*⬬*⬬*⬬*⬬

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

फिरि उपबनमैं सबक प्रभु सादर निजग्रह आय । उतरि गरुडतैं कहत भे यदुगणसा हरषाय ॥
अन्तरिख ढिग लसत जे सुर मुनि सह सुरनाथ । तिन्है पूजि अस्तुति करौ बन्दि जोरि युग हाथ ॥
मुनि सब यादव करत भे पूजन सह उपचार । यदुगणसों तब इमि कहे श्रीपुरहूत उदार ॥
जीति अपि शिव कार्त्तिकहिं विग्रह बाण विधि ठाटि । करि सहस्रभुज बाण कहँ द्वै भुज सब भुज काटि ॥
करि विज्वर त्रैलोक्यकहं तिननैं मोहि विशेखि । आए इत श्रीकृष्ण प्रभु लहो मोद अवरेखि ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

कहि एहि विधि के बैन करि अस्तुति श्रीकृष्णको । सुनासीर लहि चैन सुरन सहित निज धाम गे ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

तब प्रभु मिलि सब यादवगणसों । कुशल प्रश्न बूझे सब जनसों ॥ बैठि सभा रचि आनंद पागे । कथा प्रसंग कहन कछु लागे ॥ आदि रोहिणी सिगरी तियगन । गावत मंगल चारु मुदित मन ॥ सहित सखीगण ऊष हि विधिसों । अन्तहपुर लै गई सु विधिसों ॥ विधिवत लोकाचार तहँ कीन्हो । शुभद बधु हि लखि आनद लीन्हो ॥ हां कुष्माण्ड सचिवकी तनया । राम्या नाम सुबुधि शुचि सनया ॥ ताहि साम्बसों सविधि विहाहे । करि संमत श्रीकृष्ण उछाहे ॥ और सखी जे रही कुमारी । ऊषाके संग शुभ गुणभारी ॥ तिनकहं यथायोग कुवरणसों । दए विवाहि सविधि सुबरणसों ॥ अति मंगल मुद मञ्जु नगरमैं । होत भयो तब सब घर घरमैं ॥ सुनियै जनमेजय छितिशासन । इमि बाणहि जीते गरुडासन ॥ असुरण जीतत्र हित प्रभु स्वामी । विष्णु कृष्ण भे अन्तरजामी ॥ देखे सुने परे सब जे है । तिनके प्रभव पुरुष प्रभु ते है ॥ प्रभु आचरज धन्य गुणवारे । एहि विधि कृष्ण कहाइ विहारे ॥ नृप यह युद्ध कथा जे सुनि हैं । ते नर सो लहि हैं जो गुनि हैं ॥ कृष्ण बाणको युद्ध सोहावन । कहे सुने मंजुल मन भावन ॥ *⬬*⬬*⬬*⬬*⬬*⬬*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

बरणे एहि अध्यायमैं सह बिसतार प्रबुद्ध । हित ऊषा अनुरुद्धको कृष्ण बाणको युद्ध ॥
बाधन हित फिरि बरुणसों बरणे युद्ध सचाय । बहुरि आगमन द्वारिकाको बरणे ए सुखदाय ॥

इतिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशी-वासिनोकुलनाथात्मजेन गोपीनाथकविना विरचिते भाषायां हरिवंशदर्पणे वाणयुद्धेमानैकचिं शोऽध्यायः॥ ३१॥ **************

॥ *॥ दोहा॥ *॥

सौतिकसाें यह सुनि कथा लहि सौनक आनन्द। फिरि बूझे मुनिराजसाें पावणि कथा अनन्द॥
जनमेजय नरनाहकाे सुनि अब कहि श्रीवंश। सुनि पौराणिक कहत भे सुनि श्रीऋषिअवतंस॥

॥ *॥ चौपाई॥ *॥

काशीराजकी सुता सुबरणी। ही जनमेजय नृपकी घरणी॥ तासाें भए दोय सुत ज्ञानी। जेठे चन्द्रापीड सुदानी॥ सूर्य्यापीड दुतीय कुमारा। चन्द्रापोड गहे महि भारा॥ ताके शत सुत भे अभिरामी। सकल जानमेजय यह नामी॥ जेठो सात्यकर्ण अरिदरता। सो भो परम भूमिको भरता॥ तासुत श्वेतकर्ण भे राजा। ते तजि राज्य समूह समाजा॥ गए बसंन बन ह्वै सु बिरागी। पतिनी एक गई संगलागी॥ याद मालिनी नामा नारी। रही गुर्विणी पतिव्रतधारी॥ उत्तरदिशि अति निर्जन बन मैं। भयो पुत्र तेहि ताही छण मैं॥ ताहीपर तजि नृप अरु रानी। गए महत पथ गहे सुज्ञानी॥ सो सुत परो रह्यो तहँ रोवत। इतनो मैं आए बन जोवत॥ सुवन अनिष्टाके शुभ आकर। पैप्पल अरु कौशिक करुणाकर॥ ते लै सुतहि वारिमैं धोए। सूखो रुधिर छूटो नहि जोए॥ घसि पाथर पैं ताहि छुडाए। ब्रण भो रुधिर कढो दुखपाए॥ बेमक नाम रह्यो काउ ताके। ते दौन्हे सो सुतबर भोके॥ बेमक कीर्ति अमुत सम जानी। बढि त ताहि करी सुखदानी॥

॥ *॥ दोहा॥ *॥

पाथरपैं रगरे तहां भयो अजासम श्याम। ताते तेहि सु कुमारको भो अजपार्श्व सुनाम॥
तिनके पुत्र पौत्रसाें बढो बंश अति भूरि। ते बिलसे वोहि देशमैं बर बिभूतिसो पूरि॥

॥ *॥ चौपाई॥ *॥

यह सुनि शौनक ऋषि बिज्ञानी। बूझे फिरि सौतिकसों बानी। वैसम्पायन मुनिसों सुनिकै। भारत जनमेजय नृप गुनिकै॥ महत सर्पमख पूरण करि कै। किए कहा कहि श्रीमुद धरिकै॥ सौतिक कहे सर्पमख कीन्हे। तब जनमेजय आनंद लीन्हे॥ अश्वमेध मख करिबो चाहे। सुनि सु महातिमि परम उछाहे॥ ऋतुज मंत्रि हि दिए निदेसा। सजो समान अश्व शुभ भेसा॥ यह सुजानि ब्यास तहँ आए। पूजि यथोचित नृप बैठाए॥ कुशल प्रश्न कहि बूझि सुखारे। कहे भूमिपति आनद धारे॥ मुनि जो किए आपु मनभावन। भारत अति रमणीय सोहावन॥ तासु कथा सुनि कै मन मेरो। होइ न तृप्ति चाहसो घेरो॥ मुनि हम भारत सुनि अनुमाने। सो तुमसों

बूझत भय माने ॥ राजसूय अनरथको कारन । कीन्हे धर्मराज भय भारन ॥ प्रथमहि राजसूय मख भारी । कीन्हे सोम सरस व्रतधारी ॥ ताकों अन्त युद्ध अनवासन । भयो तारकामय अन नासन किए वरुण सो मख अभिरामा । भो तब देवासुर संग्रामा ॥ नृप हरिचन्द किए फिरि आछे । भो आडीव युद्धता पाछे ॥ *⬬*⬬*⬬*⬬*⬬*⬬*⬬*⬬*⬬*⬬*⬬*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

राजसूय मख जो भयो तव भो प्रश्न अघात । ज्ञाता भूत भविष्यके तुम सब विधिसों तात ॥
तुव अनुशासनको न हो लङ्घन करता कोइ । प्रभु तुम कस दीन्हे करण राजसूय क्रतु जोइ ॥

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

यह सुनि कै बोले हसि व्यास । सत्य कहे तुम ज्ञान प्रगास ॥ वैन मोहि बूझे यह बात । बिनु बूझे हम कहेउ तात ॥ तदपि न याते कहे बिचारि । होननार कोउ सकै न टारि ॥ कालरूप प्रभु निरमे जान । कीन्हे यतन बरे नहि तान ॥ करि हो कहा भयको शोचि । अब जो कहों करऊ सो रोचि ॥ वाजिमेध मख चाहो कीन । सो नहि होइहिहि विप्र प्रवीन ॥ होइहि विप्र कलङ्क महान । ताते मति कीजे मतिमान ॥ पै यह विधि राखे विधि लेखि । करि हो जोसि सुखद अवरेखि ॥ अश्वमेध मैं विप्र अमान । मेखि करि बङ्कविधि मघवान ॥ सोऊ भूपति मखको संभारि । अश्वमेध तो करौ सुधारि । कहे भूप सुनि यो मुनिराय । दीजे भावी विप्र बताय ॥ भाषे व्यास विप्रपै क्रोध । भूप करिहि मखको अवरोध ॥ अब आगे सुनु नृपसिरमौर । करिहि न वाजिमेध कोउ और ॥ कहे भूप यह गुरु परिताप । सब विनाशक द्विजको शाप ॥ सुनते अश्वमेधको रोक । होइहि इहां अयश एहि शोक ॥ पत्र वन्धित वर खगकी भांति । अयशी लहै न स्वर्ग सुक्रांति ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

यह बिचारि अतिसै भए लज्जा भय परधान । तातैं फिरि बूझो कछू सो कहियो मतिमान ॥
अश्वमेध वरयज्ञके आवृतिको सञ्चार । अब होइहि कै नहि कहो फिरि करि सु मुनि बिचार ॥
सुनु मुनि कहे नरेश सुनु भूपति यौ द्विज वाम । होइहि काश्यपगोत्र द्विज क्षत्रि युवनैं अभिराम ॥
अश्वमेध मख करि हि सो फिरि ताहीके वंश । राजसूय मख करिहि कोउ सुनिये नृप अवतंस ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

कहे व्याससों भूप अब भविष्यकहि यो सु मुनि । जो आचरब अनूप नहि हैं कलिमें नर वरस ॥
सुनि मुनि कहे बिचारि सुनि यो जन्मेजय नृपति । जोव आचरण आदि नहि है कलि वारो वरस ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

ह्वै ह भीति बिमुख महिस्वामी । दुखद प्रजनके असुपथगामी ॥ द्विज निज धरम करम सो

हीने। ह्वैहैं द्विज तनतेज मलीने ॥ विप्रावरण शूद्रगुण गहि हैं। शूद्राश्रित ह्वै द्विजजन रहि हैं॥ छोटो जन जो सम्पति पाइहि। सोई महत पुरुष कहँ धाइहि ॥ इमी जन ह्वै सु बस बिलासिनि। कच मुडाइ होइहैं सन्यासिनि॥ सिद्ध अन्न जन बिक्रय करि हैं। द्विजगण बेद बेंचि मुद भरि हैं॥ तियगण योनि बेंचि धन सञ्चन। करिहैं करि निज पतिको बंचन ॥ तिय ठगि पतिहि औार सों रमि हैं। पति ठगि तियहि और सों गमि हैं॥ म्लेच्छमध्य मैं द्विजगण इत उत। बसिहैं कलि युग मैं आनंद युत ॥ निज निज धर्म कर्म कहं खोई। सब कोउ वणिक कर्म रत होई॥ बुधि बल प्रभा हीन नर ह्वै हैं। सत्य असत्य बिबेक न ज्वै हैं ॥ युवती अधिकी पुरुष थोरे। ह्वै हैं कलि युग मैं मति भोरे ॥ दानी एक न शतसह याचक। ह्वै हैं धम अन्याय के पाचक ॥ कलि मैं वृष्ट विषम सम होई। अल्प शस्य की उतपति जोई ॥ मन सों सुखी जीव सब ह्वै हैं। सुख पदार्थ सपने नहि ज्वै हैं॥ अन गोधन को संग्रह त्यागी। अजा पालि हैं पय हित लागी ॥ *✿*✿*✿*✿*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

दुराचार रत आपु ते सब सैं कहिहैं दोष। सतपथगामी आपुकों निज सुख कहि हैं सोष॥

करि हैं कुत्सित कर्म अरु कवि हैं ब्रह्मविलास। कहिहैं आपुहि परम पटु आनहि मूढ सहास॥

इमी बस ह्वै हैं पुरुष मातहि पितहि दुराय।तिमि दुश्शीला तरुणि सब ह्वै हैं कलियुग पाय ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

तहँ प्रतक्ष अनुमान को प्रमाण करिए सबधि। बेद उक्त पैं कान नहि दैहैं नर मन्दमति॥

मत नास्तीक विधान को प्रमाण होइहि अधिक। क्षुद्र वृत्तिको ठाम करि हैं कलि मैं नर सकल॥

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

ह्वै अभक्ष्य भक्षक सब लोग। सदा अदन्त्रीजित हत भोग॥ याचन वृत्ति विप्र की जीनि। करि हैं क्षत्रिहि आदिक तीनि ॥ परधन पर तियहारक सर्व। ह्वै हैं कलि के मानव खर्व ॥ होइहि तस्कर कै अधिकार। नाना करिहि कपट बेवहार ॥ ह्वै हैं बहुत शस्य के चोर। चोरी करिहि चोरके चोर ॥ पुत्र पिता पैं करिहि निदेश। बहिं सुशील को रहि है लेश ॥ आपुहि पालक आपुहि चोर। इमि बस ह्वै हैं भिक्षुक घोर ॥ प्रीति रीति को करि अनुरोध। बढिहि परस्पर परम बिरोध॥ एहि बिधि लहि कलियुग को अन्त। बढिहि पापको पुञ्ज अनन्त॥ लखि बहु कुत्सित कारज छिद्र। आइहि जग मैं पूरि दरिद्र॥ उतपति ह्वै हैं मानव थोर। बढिहि भूमि पैं बन चहुँ ओर ॥ अन्न बसन औ मानव छोडि। बसि हैं आइ बननि मैं औडि ॥ लग मूल मान कन्द फल खाय। जीहैं वल्कल धारि अघाय॥ जे पदि रैहैं ग्रामन माह। तिन्हे कष्ट दैहैं नरनाह॥ राजा

प्रजा अनीति अधर्म। करि है निशि दिन कुत्सित कर्म॥ ह्वै है अति नर नारि ह्रस्व। लघु बुधि,बल वीरज सरवस्व॥ तीस बरिस लिति आयुर्दाय। करि हैं भोग रोग सों छाय॥ *~*~*~*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

तब कछु दिन मैं जाइ गो कलियुग करि निज भोग। आइहि सतयुग पुण्यमय सुख लहिह सब लोग॥
व्यासदेव के वचन ए सुनि जनमेजय भूप। ह्वै विस्मित कर जोरि इमि बोले वचन अनूप॥
ऐसे पापी जीव इमि परे पाप के धाम। किमि सतयुग लहि ते लहैं मोद परम् अभिराम॥
कहे व्यास सुनिये नृपति ह्वै नर सबविधि छीन। व्याधि आदि बहुभांति की लहि पीडा ह्वै दीन॥
ह्वै आरत तब विषय तैं विमुख होत हैं चेति। चाहि चाहि भगवान इमि रट लावत हित हेति॥
पापपुञ्ज मिटि जात हैं ह्वै ते सिगरे शुद्ध। पुण्यपुरुष ह्वै जात हैं रहत न नेक विरुद्ध॥
तब एहि विधि सतयुग प्रवृति होत सुनहु नृप तौन। जिमि क्रम सौं बढि होत हैं पूरन राकारौन॥
तिथि अरु बार नक्षत्र सम भ्रमत रहत युग चारि। तथा लेहु नृप जीवको गमना गमन विचारि॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

लहत जीव यह भूप सुख दुख आयू पुण्य यश। निजकृत के अनुरूप युग अरु समय प्रमाण ते॥
सूत पुराणिक पर्व इमि कहि फिरि ऋषि सों कहे। यह भविष्य कलि धर्म कहि मुनिव्यास स्वपद गए॥
ऋषि आस्तीकहि आदि सब ऋषि निज निज पदनि गे। जनमेजय आल्हादि आए हस्तिन नगर नपि॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

कछु दिन मैं बर फल हित चोपे। अश्वमेध मख नृप आरोपे॥ तहं अध्वर्यु वेद विधि कीन्हे। हय हिय प्राण मंत्र पढि दीन्हे॥ तेहि वपुष्टमा नृप की रानी। पूजन करे मोद सों सानी॥ तासु प्रभा लखि इन्द्र लोभाई। प्रविशि मृतकहय बधि हरषाई॥ करि वपुष्टमा रानिहि निज बस। कीन्हे सत्वर मैथुन बर्बस॥ यह सुनि जनमेजय रिसिआई। कहे अध्वर्युहि बिकट बनाई॥ तुम बध किए बाजि को कैसो। जाते भयो उपद्रव ऐसो॥ सुनि बोलो अध्वर्यु विचारी। यह वृषकियो शक अपकारी॥ कहे भूप सुनु द्विज मन लाई। यह तव तप की दुर्बलताई॥ तजि मम देश जाहु मति बिगरे। सुनि तजि देश गए ते सिगरे॥ दिए श्राप तब इन्द्रहि राजा। लम्पट शक्र किए यह काजा॥ अबते बाजि मेध मख कोई। करिहि न भाग लोप तुव होई॥ फिरि नृप अन्तःपुर मैं आई। कहत भए अति रोष बढाई॥ असती वपुष्टमहि गहि अबसौं। मैथुन कीन्हे वासव तबसौं॥ तासु त्याग मै कीन्हे। ऐसेविषद मलिन यश कों जैसे॥ वेगिं कढे मम गृह तैं सोई। तासु हेत कछु कहे न कोई॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

यह सुनिकै गन्धर्व पति विश्वावसु परवीन। कहत भए छितिपाल सों ऐसो वचन अहीन॥

नृप वपुष्टमा तरुणि है रम्भा को अवतार।रम्भ के नहि भयो कछु अघ को संचार ॥
किए नोमित्त यज्ञ तुम तातें सुरपति तेहि । किए विघ्न एहि भांति एहि सूने वरमैं देहि ॥
दोष रित्विजन को न कछु अरु वपुष्टमा को न । भावी भाषे व्यास सो भयो दोष कछु तौ न ॥
करऊ त्याग मति रित्विजन को न तरुणि को भूप।क्रोटि भांति सों होति है होनी जानि अनूप ॥
यह सुनि जनमेजय नृपति ग्रहण किए तजि कोप।तिय अरु विप्रण पूर्ववत करि सुधर्म सों चोप ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

यह शुभ कथा रसाल सुने गुने अरु पढहिं जे।ते फल चारि विशाल लहैं लहैं वांच्छित सकल ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

वर्णे एहि अध्याय मैं कहे व्यासमुनि शौन । जनमेजय छितिपाल सों कलि भविष्य सव तान ॥
अरु जनमेजय नृप किए अश्वमेध वर यज्ञ । सो वर्णन विस्तार सौं सुनिए सकल कृतज्ञ ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशीवासि गोकुलनाथकवीश्वरात्मजेनगोपीनाथेनविरचिते हरिवंशदर्पणे भविष्यवर्णनोनाम द्वात्रिंशोऽध्यायः

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

वैसम्पायन सों कहे जनमेजय छितिपाल । मो मन होत न तृप्त सुनि प्रभुकी कीर्ति विशाल ॥
नारायण कितने दिवस करैं उदधि मधि सैन । करैं हेत केहि शैन प्रभु करुणासिन्धु सचैन ॥
किमि प्रभुहि विरच जगत सो कहिये समुझाय ।जो सुनि होउँ सनाथ म सव संशै मिटि जाय ॥
सुनि वैसम्पायन कहे धन्य धन्य तुम भूप ॥ जासु सुमति ऐसी भई निज अन्वय अनुरूप ॥
आदि पुराणनि वांचि अरु व्यासदेव सो कहि।गुणि राख्यो जेहि भाँति तिमि सुनो कहत हो वर्णि॥
सो सम्पूरण कहि सकै को विधि आदिक सर्व । निज निज मति सम सव कहत नारायण गुणपर्व ॥
वैदिक ज्ञानी ग्रभुविधि सुर ऋषि गणको नित्य।जो गुण विविध विधान सों लाय चारु चित चिंत्य॥
सो निगुणी सो सगुण सो करता कारण,कार्य। सो मन बुधि क्षेत्रज्ञ प्रभु न्यामक सम समार्थ॥
सो सुदेव अधिदेव सो सो सुभूत अधि भूत।सो वक्ता वक्तव्य सो सो नर सुर पुरुहूत ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

श्रीछितिपाल उदार युग प्रमाण सुनिये प्रथम । अरु युग को व्यवहार धर्म अधर्म सुकर्म को ॥
वर सुर वरिस हजार चारि सत्ययुग भोगवत ।दयो सन्धि शुभचारि चारि चारिशत वरिस के ॥
चारि सहस शत आठ वरिस सत्ययुग मैं विशद। पूरण धर्म सुआढ चारु चारि शुभि चरण सो॥
तप श्रम शुचिरत विप्र राजशक्ति रज क्षात्र सव । कृषी वराग्य अचिप्र सवहि शूद्र सेवत सदा ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

बरिस हजार तीनि परमाना । त्रेता युग को भोग बिधाना ॥ तीनि तीनि शत सन्धि बिचारे । तीनि सहस षट शत अधिकारे ॥ तीनि चरण सों धर्म बिराजै । ह्वै द्वै चरणू अधर्म बिभिसाजै ॥ द्वापर दोय हजार वरीशा । भोग भागवत सुनु अवनीशा ॥ द्वै द्वै शत द्वै सन्धि समेता । दोय हजार चारिशत एता ॥ तहां धर्म द्वै पद सों सोहै । ह्वै द्वै पद अधर्म जग मोहै ॥ कलियुग सहस बर्ष लों दिलसै । शत शत वर्ष सन्धि द्वै सरसै ॥ एक हजार दोयशतं मानो । धर्मएक पद ता मधि ठानो ॥ ह्वै अधर्म चौपद बलवाना । चारि बरणमें रमै सुजाना ॥ एहि बिधि सहस्र बार युग चारो । बीते बिधिको दिवस बिचारो ॥ एहि प्रकार बिधिको दिन बीते । तब प्रभु नाश जगत को चीते ॥ तब श्रीनारायण प्रभु योगी । ह्वै प्रचण्ड रबिसरस प्रयोगी ॥ करि आतपित शरीरिण जनके । जीव करैं वायु ह्वै सबके ॥ ह्वै क्रशानु जारैं सब तनको । मही बिपिनि सिगरे गिरि गण को ॥ सिन्धु सरित सर सागर जेते । भस्माशेष होंहि सब तेते ॥ सबते प्रात्मयंश परिहरही । सानद लीन आपु में करही ॥ **

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

सुरपति लों अरु कीट ला इहे व्यवस्था भूप । करि प्रभु ह्वै सहसाब्घन बरिसैं बारि अनूप ॥
जलमय करि ब्रह्माण्ड बर अमल अनूप अगाध । सैन करैं तामधि सुचित प्रभु अद्वैत अबाध ॥

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

सुनऊ नृप हम सुने तबकी कथा एक बिचित्र । चिरञ्जीवि मार्कण्डेयमुनि सर्वज्ञ परम पवित्र ॥ तीर्थहित प्रभुके उदर मधि भ्रमत भ्रमत उदार । बदन मग सों आइ बाहेर कढत भे एकबार ॥ आइ होन अगाध तँह जल पूर पसरो देखि । मोहि थमिचकि गुणत भे निज हियो भ्रमसों भेखि ॥ लोक हैं यह कौन जँह नहि सूर शशि गिरि ग्राम । पूरि बारि अपार चऊं दिशि रह्यो अति अभिराम ॥ शोचि इमि शयनीय पुरुषहि लखत भे तेहि काल । सजल जलद समान श्याम सु शैल सदृश बिशाल ॥ चले ढिग बिरतान्त बूझन तहां देखहि हेरि । स्वास मारुत मे बिबस ह्वै गए उरमें फेरि ॥ लखे दृढ सो तहां मुनि गुणि स्वप्न बिधि अनुमानि । पूर्ववत फिरि रमण लाग तीर्थ प्रति सुखदानि ॥ बरिस सहसन परिजटन करि लखे तँह सब लोक । नदी गिरि बन उदधि सातोदीप पुर चऊंओक ॥ नाग नर सुर असुर सिगरे इंद्र बिधि शिरमौरि । देखि मुनि फिरि कढे बाहेर पाय शुचि सुखपौरि ॥ लखे तहँ जल राशि मधि बर इंच बरबर पत्र । पत्रपैं करि शैन शोहत बाल अद्भुत तत्र ॥ ताहि लखि मुनि चले पेरत तासु ढिग भयपूरि । मुनिहि लखि सो बाल बोलो मेघस्वन बल भूरि ॥ भ्रमत कित हे पुत्र सादर आउ मम ढिग अत्र । बचन यह सुनि क्रोध करि मुनि रहे गुणि हे यत्र ॥ दीर्घ जीविहि मोहि बिधि इमि सक्यो कबऊं न भाषि । कहन तिमि यह कौन बालक हिए आनद राषि ॥

समुझि आसँ सुमुनिको प्रभु कहे फिरि एहिभाँति। सुनउ मुनि तव जनक है हम हृषीकेश सुकाँति ॥
अंगिरा तव पिता मागे पुत्र मोहि आराधि। दए तव हम तुम्हे करि दीर्घायु अति विधि साधि ॥
परम आत्मा मेरे तुम मोहि परम प्रिय तपधाम। नतरु को इत मोहि लेखनहार इमि एहि ठाम ॥
नारायणके बचन सुनि मार्कण्डे तपशैन। सिर धरि पाणि प्रणाम करि सानद बोले बैन ॥
प्रभु मै जान्यो चहत हौं तुव मायाको भेद। को तुम बटदलपै करौ शिशु है शैन अखेद ॥
सुनि प्रभु बोले ब्रह्म हो नारायण अभिराम। हौ मै जग उतपति करे न कारण कारज काम ॥
शशि रबि मारुत अगिनि महि नभ दिशि ग्रह गिरि सर्ब। सिन्धु सरित सर युग कलप हौं ऋतु दिन सबपर्ब ॥
हौं तप व्रत मख मंत्र सब हौं विधि हरि हर शेष। सो सब हौं जो कछु सुनो देखो सुमुनि शुभेश ॥
सुनि मुनि लहि मुद फेरि ह्वै स्वाश वायु बस जाय। प्रभुके उर मधि पूर्बवत बिहरन लगे सचाय ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

सहस चौकडी चारि युग शिति निशि इमि तहं बितैं। ईक्षित किए उदारू जग रचना प्रभु चावसों ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

तव प्रभु हरए दए हलाई। बारि विचारि कछु सुखदाई ॥ उरमी भई बारिके हालत। भयो शब्द तेहि नभे गुण पालत ॥ मारुत भयो प्रगट फिरि तातें। मन्थित भयो उदधि वह जातें ॥ प्रगटो तहुँ मारुतसों पावक। जारण लग्यो बारिसों भावक ॥ जरे बारिके सुनु हे आरज। महत अकाश खुलो हलकारज ॥ खुले गगन प्रभु आनंद लीन्हे। बारिज प्रगट नाभिते कीन्हे ॥ सहस पत्र रविसम शोभारा। योयन कइक जासु विसतारा ॥ तव जाके मधि परम प्रवीना। रूचिसो किए विधिहि आसीना ॥ तेहि कमल हि भूदेवी जानो। केसरकन रुव परवत मानो ॥ सुमन सगण निति बिहरैं जिनमैं। ते गुर शैल व्यक्त है तिनमैं ॥ मध्यदेश बारिजको जो शुचि। सो वर जम्बूद्वीप सरस रुचि ॥ सबै सुरसौं तीरथ सब हैं। जे विख्यात पूतकर अब हैं ॥ अथपत्रनके अन्तर जितने। है पताल आदिक सब तितने ॥ हो बारिजके चहुदिशि बारि। चारि समुद्र ते चहुँदिशि चारि ॥ सबके अध पत्रावलि जै हैं। जाहि तामसी जित तेते हैं ॥ एहि विधि मानस सृष्टि सोहावन। विरचे प्रभु परमानिधि पावन ॥ *〰*〰*〰*〰*〰*〰*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

तव प्रभु कछु अनुमान करि तामस राजस रूप। मधुकैटभ द्वै असुर बर कीन्हे प्रगट अनूप ॥
तेजञ्जम गिरिसे महन प्रबल सरोष रउद्र। पाणि पाशके चलनसों मन्थन किए समुद्र ॥
फिरि ते उतपल मैं बिहरि प्रभु चतुरास्य हि देखि। युद्ध कारणको उदित ह्वै इमि बूझत भे तेखि ॥

को तुम काशों हो प्रगट कत बिलसत हो यत्र। गणत न मोकों मोहवस बनि मंजुल चौवक्त्र॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

मोहमये ए बैन सुनि मधुकैटभ असुरके । सस्मित राजिवनैन कमलासन इमि कहत भे॥

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

योग इति विख्यात जगमैं परम पुरुष महान । तासु संभव हो सरुचि इत करत योग विधान॥
कहत भे तब असुर मोसौं परम नहि कोउ आन। लोक मोहित करत हम द्वौ प्रगट युगल महान॥
कहे विधि जो योग युक्त न तें परे अभिराम । रचत गुणमय सृष्टिस्रष्टा ज्ञान आनदधाम॥ हृषी
केश उदार उतपलनाभ प्रभु कमनीय। असुर सुर करि समर करि है तुमहिंते समनीय॥ बचन
सुनि पुनि असुर ते भगवानके ढिग जाय । कहे करि अस्तुति हमहि वर दीजिए बरदाय॥ मरै
जहँ तहँ मरै याको हमै नहि कछु शोच । होऊ आपनके सुवन वर बीर्य्यवान अपोच॥ कहे प्रभु
तुम होऊ गे मम पुत्र वर बलवान। हिरण्य कशिपोत्पत्तिसमय प्रवृत्ति मैं मतिमान॥ भांति एहि
बरदान दै फिरि रोस अति बिसतारि।नाशं तिनको किए प्रभु उरूणप धरि मारि॥ तदनु ब्रह्मा
ब्रह्मविद तेहि कमल पैं गहि चाय । किए दुस्तर घोरतप वर बाऊ ऊर्ध उठाय॥ फिरि स्वयम्भु
अचिन्त्यआत्मा आत्म आत्मा ताहि । द्विधा करि युगरूप चारौ कहे तिनसौं चाहि॥ सुनि पत
ञ्जलि कपिल मुनि ज्वलनार्क सदृश शुभेश।किए ते भगवान विधिकी सविधि अस्तुति बेश॥ बचन
तिनके समुद सुनि विधि जपे व्याहृती तीन। तीनिलोक समान जे हतवान विग्रह दीन॥ प्रगटि
कमसौं कहे ते चतुरास्यसौं यह बात। देऊ शुभद निदेश जो हम करहि सो अवदात॥ कहे
विधि इन ब्रह्मविदसौं बूजि करऊ सचैन। कहे व्याहृत मुनिनसों जिमि कहे विधिसौं बैन॥
कहे विधि तुम ब्रह्मको अनुसरण करऊ सप्रेम। लहे ते ब्रह्मत्व ब्रह्महि सुमिरि सतय सनेम॥
फेरि विधि निज अर्धतनसो प्रगट कार वर बाल। विहरि आए प्रजापतिन प्रभाव अनघ विशाल॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

त्रिपदा जननी बेदकी गायत्री शुभखानि। कों सिरजे सिरजे बऊरि वर्ण अकारहि जानि॥
गायत्री सम्भव बऊरि सिरजे चारो बेद। फेरि धर्म बिश्वेशकों आए समुद अखेद॥
दक्ष मरीची अत्रि मुनि पुलह पुलस्ति वशिष्ट। क्रतु गोतम भृगु अङ्गिरस प्रजा करण वरइष्ट॥
निज द्वादश दुहितानको दक्ष योग्यता चाहि। सुत मरीचिके कश्यप हि दीन्हे विधिवत ब्याहि॥
अदिति दिति दनु मुनि कही काला अथा सुजानि। सुरसा क्रोधा सिंहिका अरु अनायु सुखदानि॥
बिनता अरु कद्रू प्रभृति ए द्वादश तपनिष्ठि। कश्यप इनमैं करत भे बिबिध भांतिकी सृष्टि॥
फेरि सताइस निज सुता दीन्हे दक्ष सुजान। सुवन अत्रिके चन्द्रमहि करि सुयोग्य अनुमान॥

मिथुनि दए विधि धर्मकहं लक्ष्मी कीर्त्ति विचारि । साध्या और मरुत्वती विश्वा पांच सुनारि ॥
निज तनआधे सौं रचे हे विधिपतिनी जौनी । गजरूप धारत भई कार्य्यसाधनी तौनी ॥
विधि ताके अनुरूप ह्वै रमि कीन्हे उतपत्ति।प्रथम एकादश रुद्र जे कामदानि अभिमत्ति॥
अजैकपात मृगव्याधि अरु अपराजित भगवान । दहन पिनाकी ईश्वर सेनानी सुखदान ॥
अहिर्बुध्न्य कामद सुप्रभु और कपाली जानि । निरिति सर्पज्ञा रुद्र परम रुद्र लेउ अनुमानि ॥
गऊ वृषभ औ..य सकल अज अमृत अन्नष्ट । एकवंश महिषादि बहु प्रगटित भए कनिष्ठ ॥
प्रभव च्यवन महिष बलध्रुव अरु तनूज ईशान । विश्वावसु सु विभूति अरु विश्वात्मन परधान ॥
सुरभी अरु विधिसौं भए इतने सह विसतार ।अब कहियतु हैं धर्मसौं प्रगटे जिते कुमार ॥
लक्ष्मीसौं अरु धर्मसौं प्रगटे काम अमान । साध्य शैल वृष नाग भे साध्यासौं मतिमान ॥
धर ध्रुव विश्वावसु निऋति चम अरु योग सुमान । सोम वायु ए धर्म शत सुरसासौं सुखदान॥
भे विश्वा अरु धर्मसों विश्वेदेवा सर्व । और धर्मके सुतनके सुनि ए नाम अखर्व ॥
अभिचरु हविज्योति अरु विरज सुक्र साविच। विश्वावसु सावृष्टि अरु पन्नग अमृत मित्र ॥
निजुधि अपोन विभावसु आहुती औ चारिच । परतापन वसन्त अरु अरु चिररश्मि पवित्र ॥
बृहद्भूत अरु बृहन्मत बर इते मरुत गण वेश । धर्म मरुत्वतिसौं प्रगटि सो हे सरुचि सुभेश ॥
दक्ष सुधर्मा सर्पा और बपुष्मा देव । विश्वावसु अरु विश्वसु अरु सुर्पवान शुभ भेव ॥
और अनुत्तम ह्वारिन हि अरु हरू तेजस शक्त ।विश्वदेव विश्वेशकों विश्व तननि किय व्यक्त॥
भे कश्यप अरु अदितिसों ए द्वादश आदित्य । विष्णु इन्द्र त्वष्टा वरुण भग रवि पूषा नित्य॥
मित्र वरद अरु अर्य्यमा अरु मनु अरु परजन्य । एद्वाश दस आदित्य है सुखद परम अनन्य॥
प्रगट भए आदित्यसौं सरस्वती म आम। रूपश्रेष्ठ बपुश्रेष्ठ ए दोउ पुत्र अभिराम ॥
भे दइत्य दितिके सुवन दनुके दानव वीर । कालकेय राक्षस असुर कालाके सुत धीर ॥
व्याध व्याध ए प्रगट भे अनायुषासों वार । भए सिंहिकासो प्रगट ग्रह गरिमाके गार ॥
भई अपसरा प्रधासों मुनिसों भे गन्धर्व। अरुण गरुड विनताहि सों कद्रु गिरि अहि सर्व ॥
गुह्यक यक्ष पिशाच गण भे क्रोधासों भूप।अरु चौपद सिगरे सुनो बरजि गरू शुभ रूप॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

एहि विधि प्रादुरभाव ह्वै बरधित भो लोक सब । तिमि बरणे गहि चाव जिमि द्वैपायनसो सुने॥
सुनि बरके ए बैन सुनि जनमेजय नृप कहे । पुनि कहिए तप ऐन गुबिनि आह्निक पावनि कथा ॥
वैसम्पानि सुजान यह सुनि आनद गहत भे । मनं बस करि मतिमान सुनउ भूपसो कहत भे ॥

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

ब्रह्मके सम्बन्धसों सम्बन्ध जो इतिहास । सुनऊ सो सन्नद्ध ह्वै नृप राखि मन मम पास ॥ ब्रह्म प्रभु अव्यक्त सत ह्वै आत्म योनिज रूप । व्यक्त असत अव्यक्त सत ह्वै लसत परम अनूप ॥ दिव्य अवपुष दिव्य वपुवर भूतपति बिभु ईछि । प्रभव युग जग कल्पकै करि सकल कल्पित माँछि ॥ अचर चरचर अचर चर चित अचर खचर अभिराम । दारुगत सत दहन समजात कर्म कारण काम ॥ सुनऊ भूपति प्रथमसों यह कथा अति रमणीय । जब हि पुरुष पुराण रचि निधिक्षीर निधि शयनीय ॥ रचो जगमैं किए यह अनुमान ह्वै गुणवान । भए गुणसों तब हि प्रगटित पञ्चभूत महान ॥ आत्म योनिज तदनु ह्वै कमलस्थ करि अनुमान । रचे जग पूर्ववत गुणि लखि वेदको करि ध्यान ॥ वारिमधि महि घुलन लागी तब हि आरत भाखि । कहो प्रभु मोहि उद्धरौ जै हिए करुणा राखि ॥ भूमि को सुनि विनै प्रभु वाराहको वपु धारि । दात पैं धरि महि हि कीन्हे ऊर्ध्व लजग बिचारि ॥ भेदि मधिमैं महिहि उरध कढ़ो तेज बिशाल । चण्डरश्मि उदण्ड जिमि मार्त्तण्ड प्रचल ज्वाल ॥ कढत भे तेहि तेज मण्डल मध्यतैं शुचि नाम । सोम मण्डल रूप ह्वै बिधिलोक कृत हविधाम ॥ सोमके मुख चारुतैं भो कढत साम अवेद । बायु अक्षर मयो जानऊ नृपति सोई बेद ॥ योगमैं बर ज्ञानतैं सो भयो सृजत अमंद । लोक काय बिराट पूरुष दिव्यकाई शुभ छन्द ॥ भूत भौतिक भौतकी सब तासु म चद्दसन्य । भूत भव्य भविष्य दृश्य अदृश्य सतमय गन्य ॥ जीवबस इन्द्रियनके ह्वै मोहि नाहि भुलाय । विषय प्रिय ह्वै कर्म करि करि भ्रमत सुख दुख पाय ॥ ज्ञान बलतैं बस्य करि इन्द्रियनकऊँ कृत योग । चेति तेहि ब्रह्मत्व पावत साधि परम प्रयोग ॥ परमात्म हि जीवातमा परमात्मा सविधान । करता है अज्ञान अरु योगज निरमल ज्ञान ॥ कढो तेज जेहि बेधि छिति तेहि सु बिवरमधि भूप । ईस्वर राखे खरचिसों निर्मि सुमेरु अनूप ॥ जेहि सुबरणमैं मेरु प लसे आप्रमय जोति । जासु जोति त्रैलोकमें निजरुचि अमल उदोति ॥ प्रगट किए निज आस्यसों प्रभु चतुरास्य हि तन्न । प्राण बायु द्विज इन्द्रकहु अरु अग्नि हि कृत सत्र ॥ ब्रह्म लोक सो अंग भो गिरि सुरगणको भौन । एकलाख अरु एकशत योयन ऊंचो तौन ॥ इतनोई चऊदिशि गुणित है बिस्तरित बिसाल । अरु असंख्य तेहि कहत हैं जे ब्रह्माण्ड रसाल ॥ शत शत योजन उच्च हू चऊदिशि मैं बर शैल । ब्रह्म बिचारी कहत हैं गुणि असंख्य शुभ शैल ॥ सुर सुरपति आदित्य बसु मनु मुनि मारुत आम । सहित बिष्णु प्राज्ञत जगत करुणानिधि अभिराम ॥ जौन ब्रह्ममे तेज है व्यापित सबमैं ताहि । ब्रह्म कहत है ब्रह्मविद ज्ञानसिन्धु अवगाहि ॥ तीनिलोकम प्रगट है प्राण प्रतिष्ठित ब्रह्म । ब्रह्माके दिनको भयो है अंततैं आरम्भ ॥ बेदउक्ति यज्ञादि जे कर्म सकल सुखदानि । ते हैं गुणि क्रियमान निति परम आत्महित जानि ॥ ब्रह्म

भूत आत्मनिको विशद बकत्व निरेखि । अरु सुभाव जग जनन के बकविधि को अवरेखि ॥ इन्द्र मरुत बरुणादि के शब्दन कर्म अनेक । कहे सर्व पैं सर्बमें हैं सबई प्रभु एक ॥ स्थूल सूक्ष्म देहीन को बुद्धि रूप गुण लेक । समरूप दर्शन सदृश ज्ञानी कहैं अनेक ॥ सोई बिधि भगवान तेहि देवी सहित बिनोदि। बिरचि भोगबक बरत हैं अनुगण सहित सुमोदि॥गङ्गा तासों प्रगट व्है करि शिव को अभिषेक। तीनिसम बंक धार व्है त्रिपुरनि धरी सटेक ॥ नाद किए ते नदी अरु गङ्गा बिहरी स्वर्ग । व्है बिख्यात दाता बिशद पुरुषनाको अपवर्ग ॥प्रभुके मुखतें प्रगट जे चारि बदन सम चारि । बेद तदक्षर सिद्धमैं हैं दाता फल चारि ॥ चारि चरण हैं यज्ञ के पूरित तप ऐश्वर्य्य। ऋत्विज अरु उद्गाता अरु होता अरु अध्वर्य्य॥ चारि चरणहैं धर्म के ब्रह्मचर्य्य गृहबास। दुस्तर बाणप्रस्थ अरु व्है भगस्थ संन्यास॥ बेद बाँचि कीन्हे मनन उपजे ज्ञान अमन्द । निवृत होत हैं कर्म सब पूरन परम अनन्द ॥ अब नृप कहिये योगविधि जौन ज्ञानमय यज्ञ । अमल अहिंसा मोक्षपद करहिं जाहि सर्बज्ञ॥ उत्तम शुचि सु पदस्थ करि सिध्धासन सु प्रयोग। उन्नत उरनत ग्रीव रहि दशननि अक्षत संयोग॥ बाम पाणितल पैं सुधरि शुभ करपृष्ठ सु दक्ष। राखि नाभिढिग रहि अचल मूँदि ओठ दृग पक्ष॥ मनहि स्वबस करि यतन सों जीव ब्रह्म लै जाय।राखि मूर्द्धि पैं ज्ञानचष सों निरखैं सुखपाय॥ प्रणवात्मक पुरुषहि अपैं लहि भ्रूमध्य निकेत । सो सु बिम्ब तें बिम्ब शिव बिभु अचिंत्य सचेत ॥ बिशद बेद मय यज्ञ यह योग ज्ञान मै रूप। मोक्षद अबल अनन्य क्षत अप्रतिम परम अनूप ॥भए ब्रह्म के नेत्रतें ऋग अरु यजुर सुबेद । साम अथर्बण जीभि अरु सिरते भए अखेद॥ शीस अथर्बण बेद व्है ग्रीवबाहु ऋग्वेद । हृदय पार्श्व हैं साम अरु यजु कटि चरण सभेद ॥ बैसम्पानि मुनीश सो सुनिकैं योग बिधान । बूझत भए बिचारि इमि जनमेजय मतिमान ॥ मनसों जासु अलभ्य बिधि ऐसो दुस्तर योग । मुनिबर ताके लहन को कहिये प्रगट प्रयोग ॥ सुनि मुनि कहे महीप सुनु कर मुख बल धन भृत्य। मित्रन तैं नहि बाध सों सिद्धहोत यह क्षत्य ॥ अन्तर्गत मानस अमल शारीरिक कृतकर्म्मपूर्ब अरु को ज्ञान मय सो कारण है धर्म्म॥बिदित तत्व अरु ब्रह्मबिद ब्राह्मण बिदुष बिनीत। ब्रह्मकर्मरत नियत ब्रत दृढमति इंद्रीजीत ॥ अपुंनर्भव भावज्ञ तजि और भाव के कर्म्म । साधे क्रमतें योग सो जानि युक्तिको मर्म्म ॥ छुटि इंद्रिणकें बन्ध सों लहै परम पद तौन। इंद्रादिक सुरगणनि कों है दुर्लभ पद जौन ॥ तेज मूर्द्धिपैं राखि जब करत योगबिद योग। उठत धूम तहं बकु बरण कहत श्रुतिज्ञ सु लोग॥ तहां धूमतें मेघव्है बर्षत बारि उदार। प्रबल होत तब मूर्द्धिपै मानस अग्नि बिहार॥ परसत हैं सब अंगनैं सुहसन तासु फुलंग। प्रबल होत तब बायु लहि अग्नि बारि को संग॥ अग्नि बायु जल भूमि ए सर्ब धातु सम्पन्न। सम सुभाव तें होत हैं बर बीजोत

प्राज्ञ ॥ तब भूमधि जो ब्रह्म प्रभु सूक्ष्म बिराट सरूप। ते तहँ बिरचत हैं बहुत सूक्ष्म प्रभूति अनूप॥ ते सब प्रेरित ब्रह्म सों सुख दुख के ज्ञातार। बसि योगी के मूर्द्धि मधि नृप सुनु करत बिहार॥ अथ चेष्टा आरब्धते मूर्त्ति सूक्ष्म छितिपाल। तासु स्थूलतन ते निकसि दशदिशि जात उताल॥ ते बहु भूतहि लहतहू लय लहि कै तत्रैव। कर्म बन्ध तें छुटत हैं जिमि जाए यथैव॥ यज्ञादिक शुभ कर्म करि पितृमार्ग व्है जाय। पुण्य भोगकरि पतन व्है जन्म लेत इमि आय॥ पदतें गिरि नभ बायु अरु तेज धूम घन बारि। महिमैं मिलि फलहोत हैं कमसों लोक बिचारि॥ फिरि जीविन को उदर लहि होत सक्रम रस रेत। गर्भवास लहि प्रगटि पुर होत सु लहिकै चेत॥ व्है अव्यक्त सो व्यक्त इमि ब्रह्म सनातन आप। विद्याविद्या सहित नृप बिहरत नित्य अताप॥ ब्रह्म सनातन ईश इमि करि युग कइक बिहार। लीन आपु मे लेत करि करि सबको संहार॥ *◆*◆*◆*◆*◆*

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

मुनिबर बैसम्पानि फिरि नृपसों इमि कहत भे। प्रश्नोत्तर अनुमानि परम प्रसंशा योग की॥
ब्रह्म यज्ञबर योग करण लगत जब ब्रह्मबिद। कहत बेदबिद लोग होत बिघ्न तब अनगिने॥
सहि सब बिघ्न महान जब योगी थिर रहत हैं। तब ऐश्वर्य्य महान प्राप्त होत ईछे बिना॥
प्रथम गगन ऐश्वर्य्य बिशद बायु ऐश्वर्य्य फिरि। बहुरि तेज ऐश्वर्य अरु रसमै ऐश्वर्य बर॥
अरु पार्थिव ऐश्वर्य क्रमतें ताकहँ करत हैं। जनमेजय नृप वर्य सुनहु प्रथम्निन के सगुण॥

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

परम नभ ऐश्वर्य्य लहि अरु बायुमैं अनुरक्त। स्थूल तन तें निकसि रवि सो नभसि रमहिं अव्यक्त॥ तेजमै ऐश्वर्य लहि रवि अग्नि सदृश बिभात। होत रसमै ते वरुण पर्यन्य अग्नि सम तात॥ पारथिव ऐश्वर्य्य लहि निति लहत दिव्यसुगन्ध। दिव्य वार्ता सुनत लहि जन दिव्य को सतगन्ध॥ सिध्य करिकै योग नृप नर होत ब्रह्म समान। तुछ गणि ऐश्वर्य्य सब हठ भिन्ति ब्रह्म महान॥ अन्य धारण धारि जगदाधार ब्रह्मा ब्रह्म। परम योगी करत मानस ब्रह्म कर्म अरम्भ॥ चक्षुते अप्सरनि जाए नासिका तें सर्व। यक्ष तुम्बर किन्नरादिक गान्धिबर गन्धर्व॥ ब्रह्म योग बिधान सों योगज्ञ योगी आनि। रचे ऋग्यजु सामहूँ अथर्वबाणी मानि॥ भाव योग सुभाव सों बिधि रचे करि अनुमान। भूत आत्माश्रित भवमधि भ्रमतहैं भूत प्राण॥ रचे पदतें सिंह गज मृग हस तृण सब जाति। गउहि हियतें बाहु तें पशीन आनद राति॥ रचे भूतें अङ्गिरस अरु भृगुमुनिहि अभिराम। भालतें मुनि नारदहि बिधि रचे आनद धाम॥ मूर्द्धिते बिधि रचे सनतकुमार तपबर ताहि। सोम को अभिषेक करि द्विजराज कीन्हे चाहि॥ लोक अरु अस्थान अरु तपस्य भांति अनेक। रचे ब्रह्मा सरुचि सों बहु रूप सहित बिबेक॥ तत्व सांख्य सु योग यज्ञ सुभाव बर बिज्ञान। क्षेत्र अरु क्षेत्रज्ञ सम्भव

निष्म काल प्रमान ॥ सर्वनै सो रच्यो सर्वहि सविधि विधि सुखदान। सुनऊ जनमेजय महीपति शास्त्रविद गुरज्ञान ॥ योग विधि यह कहे जो करि मुक्त पद जन लेत। कहत अब हलकर्म क्रम सों जोन यह बह देत॥ यज्ञ अरु व्रत दान तप अति उग्र करि मुदश्लोक। स्थूल तन तजि सूक्ष्म तन मैं जाय विधिके लोक ॥ कल्पभरि बसि लीन विधिमे होत लहि कलपांत। कल्प प्रगटित भए पैं फिरि होतहैं ते दांत ॥ दक्ष ऋषि मरीचि नारद आदि आनद ऐन। दक्ष को इतिहास कहियतु सुनऊ नृपति सचैन ॥ *✦*✦*✦*✦*✦*✦*✦*✦*✦*✦*✦*✦*✦

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

दक्ष प्रजापति करत भे उतपति प्रजा सधर्म। ब्राह्मण क्षत्री वैश्य अरु शूद्र चारि ए वर्ण ॥
शुद्ध सत्व मे विप्र अरु सत्वर जो मैं क्षत्र। सुधर जो मैं वैश्य अरु शूद्र तमो मैं पात्र ॥
पृथग्धर्म ए सर्व भे एक रूप अभिराम। हैं अधिकारी वेद के तीनि वर्ण तपधाम॥
वेद क्रिया संस्कार के योग्य न शूद्र मलीन। यज्ञकर्म हतअग्नि जिमि नही धूम दुति हीन॥
भए और सुत दक्ष के बुद्धिमान बलवान। तिन सों बूझे दक्ष इमि सुनऊ सकल मतिमान ॥
जग जननी माया महा देवी ताको भेद। तुम सब जानतहोऊ तो मोसों कहऊ अखेद ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

ते ज्ञानी करि गैार दक्ष प्रजापति सों कहे। को माया के हि ठैार रहै न हम जानै कछु ॥

॥ * ॥ चैापाई ॥ * ॥

वैशम्पायन सों यह सुनि कैं। बोले जनमेजय नृप गुणि कै ॥ सतयुग को यह धर्म सोहावन। सुनि सुनि भरो हियो मम पावन ॥ शुभ आचरण कहऊ अब सोई। समीचीन त्रेता के जोई ॥ यह सुनि कै मुनिवर मुद राखे। प्रश्नोत्तर एहि विधि सों भाखे ॥ योगी दक्ष अर्ध निज तन सों। नारी प्रगट किए गुणि मन सों ॥ तासों बिहरि परम मुद लीन्हे। सुता पचास सु उतपति कीन्हे ॥ तदनु दक्ष तेहि तियहि बिचारी। तनहैं मिले लए व्रतधारी ॥ तब दक्ष तनया दीन्हे धर्महि। दए सताइस सोम सुकर्महि ॥ तेरह लहि कश्यप सुत जाए। जेहि प्रकार पीछू कहिआए ॥ विधिवत दक्ष कन्यकन दै कै। ब्रह्म लोक मै वर व्रत लै कै॥ किए तपस्या संग मुनिगण के। ब्रह्मा यज्ञ क्रत जे शुचि मन के॥ ब्रह्मलोक तीरथपति जानो। अरु ब्रह्माण्ड इतिय विधि मानो॥ मुनि गण यज्ञ वायु अनुमानो। ब्रह्म बिचार यज्ञविधि ठानो॥ क्रिया तीन भाडिन को जे है। यजन तामि ब्रह्मके ते है ॥ मंत्र यज्ञ पंर अन हित मै रत। जे ते पञ्च सुस्वर धृत पय सत ॥ औपि अग्निहि शुभ अग्नि निकासी। तीनि करे तेहि यज्ञ बिलासी॥ दै करि और पांच गिनि गावै। ठाव भेद ते नाव बतावै॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

हिय अरणिहि मथि वायु सौं सुनिए भूप सुजान। करि ऊर्धित जठराग्नि कहँ योगी सहित विधान॥
पञ्चवायु अस्थान गत करि तेहि पांच प्रकार। योग यज्ञ साधन करैं दक्ष सहित उपचार॥
सोमकलश अरु समिध अरु पंच सवत्सागाय। ब्रह्मभाजन हविआज्य द्विज तहां मानसिक ध्याय॥
मंत्र वेद उच्चार तें ब्रह्मलोक सम पर्भ। योग यज्ञ वर होत भो भूपति सुनो सुधर्म॥
योग यज्ञ करि लहत हैं विष्णु ब्रह्म पद वेश॥ यज्ञ योग तें होत है सुमनस सिद्ध सुरेश॥
व्रत यज्ञादिक वासनिक करि के कर्म सचाय। विहरैं सुरपुर पैं सतिय परमदिव्य तन पाय॥
नहिं छूटति तऊ नृपति यह अहं अविद्या बुद्धि। निज पुर गुरु लघु कर्म की रहति भावना शुद्धि॥
वाक्य तत्वमसि आदि सुनि गुणे न जो लौं भूप। तौ लो छुटि रागादि सो ग्रहै न लहि ध्रुव रूप॥
शुचिविद्या वुधि सत्यविनु लहै उच्च पद जौन। भोगि अविद्या सत्य फल फेरि पतन तजि तौन॥
ब्राह्मणादि त्रय वर्णता लहि फिरिक्रम सो बुधि। मतपद रथ व्है सुनत इमि सत गुरु सों असपर्धि॥
इन्द्रिए बसकरि मन सहित आत्मनिष्ठ लहि ज्ञान। योग सिद्ध करि लहत हैं अव्यय पद मतिमान॥
यह विधि दुस्तर जानि तेत्तण रहि मौन विचारि। आविमुक्ति मैं वसत भे शुचि आश्रम व्रतधारि॥
गृहस्थ सु वाणप्रस्थ अरु ब्रह्मचर्य्य सन्यास। वेद उक्त विधि ग्रहण करि विधिवत करत प्रयास॥
वेद पढै विनु सुनि गुनै गुरु गृहस्थ पद त्यागि। साधन आश्रम तीनि को करै न निजहित लागि॥
वेद पढै नहि विप्र जो सो शूद्रवत अधर्म। कर वावै तासों सनय नृपति शूद्र के कर्म॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

इमि कहि वैसम्पायि ज्ञान गेह अरु ब्रह्म विद। स्वाभाविक विधि ठानि इमि जनमेजय सौं कहे॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

अब सुनिये जनमेजय मन दै। जो सुनि साधुन को मन अमदै॥ शुभ अरु अशुभ भाव इंद्रिए के। सुर दइत्य बल जाहिर जिनको॥ सम दम कांम क्रोध सुख दाई। भट दुजादिमि के सखा सहाई॥ लरे उमगि निज निज जय धुनिके। रुके न रोके मति बुधि मुनि के॥ भई विकल महि वपु व्है मर्दित। भए इढत्व शैलगण अर्दित॥ भई मथित सब नाडी सरिता। योग युक्ति तरणी की चरिता॥ तामस मधु दइत्यपति जब्बर। रजस दनुजपति सह चढि गब्बर॥ गिरिवपु के अन्तह गह्वरमैं। विश्वमोह बन्धन सौं फर मैं॥ आत्मा इन्द्रहि बांधि स्ववस की। विहरण चहो तेजकर चष के॥ प्रार्थित समुह बचन वर विधि सौं। सतगुण विष्णु स्वरत भे विधि सौं॥ मन साधन आयुध अति चोखे। लगे चलावन चितमें रोखे॥ नाम बाणके अपन यतन सौं। मारै याज्य हरो लहि पन सौं॥ ज्ञान गरुड कहं चपलित करिके। लागे मर्द्दन पर बल घेरि के॥ तत्व विचार परज

न्यमारुतसों। दिए उडाय तिन्है बलयुत सों ॥ मन परपञ्चो परदिशि चारी । तेहि गहि निजवस किए विचारी ॥ पर चारण इन्द्रिण कहँ गहिकै । सञ्चम अति शङ्कर सों लहिकै ॥ शुचि ब्रत कारागृह मे डारे। सुमति सुबुधि मुनि जयति पुकारे॥ *◆*◆*◆*◆*◆*◆*◆*

॥ *॥ दोहा ॥ *॥

प्रभु तामै प्रभु सत्यगुण का सहाय इमि पाय। जीव इन्द्र सबकाम लहि भो चैतन्य सचाय॥
सतसङ्गत शुभ सिद्ध सों सुनत भए बरबैन। बेदतत्व विधि विहित जो प्रभु कीर्तन गुण ऐन॥
तेज भूत बरब्रह्म अरु इंद्रेन्द्रिय सों युक्त। जीव कर्मबश होत नहि इत उत गति सों मुक्त॥
प्रलै काल मै होतहैं ध्रुबकारण मे लीन। गंहत फेरि आरम्भ मैं बक्र बपु लघु अरु पीन॥
कामद कारण रूप प्रभु सर्व देह मे आप। काय रूप ह्वै करत हैं बक्र कार्य कारि थाप॥
कच्छप शेष बराह ह्वै जिमि महि धारण काज। करत करत तिमि सर्वमै सर्व कार्य सह साज॥
बसत बेद ह्वै द्विजनमै क्षत्रिणमे ह्वै युद्ध। दानकर्म विधि वैश्य मे शूद्रनि सेवा शुद्ध॥
सात अन्न प्रभु रचत भे सुनऊ तासु बेवहार। एक अन्न जो करत हैं भोजन सब संसार॥
दोय अन्न सुर शक्ति को अर्पण करियतु जोन। चौथो अन्न पितृण के पिण्ड दान को तौन॥
चारि अन्न ए एक गण हैं पोषक सुख दानि। प्राण बाक मन तीनि ए अन्न सप्त इमि जानि॥
सूर्यात्मक हैं तीनिजे चन्द्रात्मक हैं चारि। ते प्रकाश अप्रकाश हत क्रम सों लेऊ विचारि॥
तीनि अन्न कहँ सेइ करि कर्मज फलको भोग। अर्चि रादि पथ जाइ फिरि लहत न तन को योग॥
चारि अन्न सेवन करैं धूमादिक पथ जाय। भोगि कर्म फल करत हैं देह बास फिरि आय॥
अग्निवायु अरु यज्ञ तुम तुम प्रचण्ड रबिरूप। निज किरणानि युगान्त मै दाहत जगत अनूप॥
कर्म लोप जेहि होइ नहि यह बिचार अनुमानि। यज्ञादिक सब कर्म तुम करत परम हित जानि॥
नूतन रस के बृद्धि हित बनस्पतिन मे आय। बसत अमावस लहि शशी सो तुम जग सुखदाय॥
लीलाकर अप्रमेय तुम पुरुष पुराण बिराट। भूलि रहे हो आपु को निज करतब के ठाट॥
यह सुनिकै चैतन्य ह्वै समुझि आपनो रूप। जीव इंद्र जय लहत भो कहँ कहांलो भूप॥
योग सिद्ध करि सविधि फिरि ब्रह्महि चिन्ति अखेद। अहं ब्रह्म शुभ बचन यह उचरण लगो अभेद॥
सो मन गर्व तें भूप मणि भए अद्वैत सु ज्ञान। श्रुति स्मृति बेद पुराण को दृढ अनुमानि प्रमान॥
अन्तर गत मृग टब्बिका सम मया व्यवधान। ज्ञान चक्षु सों तेहि परखि ब्रह्महि लहे सुजान॥
अहङ्कार शाश्वत अचल गुण हैं ताके प्रान। हार तासु गुरु के बचन सुखदायक सुखदान॥
तेहि मग तेहि गिरि मै प्रबिशि तासु पुरातन प्रान। त्रिगुण अबिद्यात्मकहि हठि देइ निकारि अमान॥

आयत स्वप्न सुषुप्त मैं यथा जीव को भास। तेहि विधि प्रभु चित अचित ह्वै करत वपुन मैं वास ॥
सब बुधि इन्द्रिहि राखि बस त्यागैं सकल विभूति । उदासीन बैराग्य मत पावत विद्या पूति॥
अभिमानी जे देह के ते नहि जानैं नेक । विष्णुभक्त निष्काम ते पेखैं प्रभुहि सटेक ॥
धनि यम धर्म पथस्थ नर आराधन सोपान । पैं चढि क्रम सौं लहत हैं प्रभु को पर अस्थान॥
विद्या को साभ्यास करि प्रादुर्भाव सु भक्त। इत हूँ उतहूँ लहत ह पूरण आनद व्यक्त॥
दीन छुधित अर्थी द्विजन देत सविधि जे दान । सर्वचहि शुभ सर्व सुख पावत ते मति मान ॥
यज्ञादिक शुभ कर्म जे करत बेद श्रुति उक्त । लहहिं सुगौरी सिद्धि ते विद्योद्भव क्रत मुक्त ॥
यह कहि वैस्पानि फिरि कहत भए समुझाय। पूर्व किए हे योग जे जिमि दिन जिते सचाय ॥
शुचि तुर्यावस्थांस ह्वै दिग मित बरिस हजार। योग किए प्रभु विष्णु गुणि मोक्षण सविधि उदार॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

नव हजार सुरवर्ष किये योग वर चन्द्रमा । जाते लहे सहर्ष ब्राह्मी सिद्धि अनूप अति ॥

॥ * ॥ महिकरीछन्द ॥ * ॥

एकाग्रत नव सहस बरिस सु योग शङ्कर प्रभु करे। वर वृषभ रूप विशाल योगी योग युगतन अनु भरे ॥ तेहि रूप के शुभ चरण को शुचि नाम व्याख्या नृप सुनो । दिशि नाम के जे चरण पावन यज्ञ मै तिनकई गुनो ॥ ते चरण हिंसात्मक सकाम अकाम क्रम सों आनिए । पद चारु दक्षिणओर क ते योग मै शुचि मानिए ॥ ते युग अहिंसात्मक सकाम अकाम अमिलो ताहि हे । हे करैं आगे धर्म मैं अनुमानि अति मुद सों न हे ॥ तहं योग भावज सलिल पावक वायु हिलि मिलि फेन ह्वै । भे गिरत मुख तैं गोंदसम नहि द्रवित हठ तन को न ह्वै ॥ ते पृथक पृथक सजीव माहेर बारि सों फिरि भरत भे । तब अन्य मारुत बसि गगनं नभि आय घन ह्वै परत भे ॥ फिरि योग साधे वायु ब्राह्मण रूप बहि अति मोद सों । आत्म दर्शी कइक बरिस हजार ब्रह्म विनोद सों ॥ फिरि अमि कीन्हे उग्र तप बहु अठो ह्वै व्रत धारिक । रहि मौन आत्महि दर्शि बरिस हजार चारि विचारि कै ॥ वर बरधि याको तेज दैवी भूत अब अरम भये। हिम भूमि भूषित किए शुभमय कार्य्य क्रत अनुपम लये । फिरि पुर्व्यमित्र सु आन दश महान व्रत धरि तपत भे। रहि कइक बरिस हजार आत्मा निज ब्रह्महि जपत भे ॥ धरि जानु महि पैं रविहि विधि मिधि नित्य नियमित सकल भोजेहि रवि मैं प्रतिबिम्बयत बहु नेत्र ह्वै अम पावत भे॥ तप अत्य फल लहि अपयोर्ई स्थान धनद कुबेर हैं। सहमध्य जाके रतन गण के अतनिते बहु ढेर हैं॥ बहुमोर्ष वास्तु कि कैलमत नहि उग्र तप बहु दिन किए। फिरि मेघ तरु गहि अधोमुख रहि उग्र तामस व्रत लिए। जब गिरे। मुखतें भूमिधैं विष कालकूट महा सुने। ते प्रगट यातें जीव विषधर अब अहर जितने

सुनो ॥ विधि किए तिनके मनन स्थित तब मंत्रन्यास विधान सों । शुभ गरुड है बालक अपूरब ध्यान सह अनुमान सों । तेहि जपे सह उपचार विष को दोष तन तें दूरत है। सो मंत्रन्यास महौप सुनु परभाव जाको फुरत हैं॥ * ॥ मंत्र श्लोकः ॥ * ॥ गरुत्माम्वितनैर्पक्षैर्मखाग्रैः सलिलं मही । समा सहस्रं सम्पूर्णं चूलाग्रेणावलम्बिना ॥ * ॥ अथध्यानम् ॥ * ॥ पर्णभारैस्व विकचे विस्तीर्णै वसुधातले। रराज वसुधा चैव पर्णैवैक्र विचिचितैः ॥ * ॥ अथन्यासः ॥ * ॥ ॐवाक्रगरुत्मान् हृदयाय नमः अंगुष्टयोः॥ॐ विं गरुत्मान् शिरसे स्वाहा । तर्ज्जन्योः ॥ ॐवूक्रगरुत्मान् शिखायै वषट् मध्यमयोः ॥ ॐवैंगरुत्मान् कवचाय ऊं अनामिकयोः ॥ ॐ वैंगरुत्मान् नेत्रत्रयाय वौषट् कनि ष्टयोः ॥ * ॥ मंत्रः ॥ * ॥ ॐवंलाक्रः वषड् इति ॥ ब्रह्मा ऋषिर्गायत्रीछन्दः गरुत्मान् देवतावं बीजं हसशक्तिः सं कीलकं विषनाशने विनियोगः ॥ * * * * * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

तपकीन्हे अलाय फिरि प्रभुहि ध्याइ हिमवान। पृथिवी कीन्ही उग्रतप दै ब्रह्म विधि वसुदान ॥
एक सहस अरु एक शत बीते बरिस अमन्द । भई सूर्य्य मे लीन तब भूमि सुनो कुलचन्द ॥
जिमि अस्थूल शरीर सों होति वारि मे लीन। तिमि सूक्षम तन सों मिली रवि मे सुनो प्रवीन॥
फिरि रविमण्डल तें कढी व्है सुरसरि शुचि धार।भव हारणि तारणि त्रिपुर तारणि प्रभा उदार॥
सर्व्वात्मक ता योग तें फिरि अभिरामा पर्ण । ब्रह्म बदन शोभा भई सरस्वती मे वर्ण ॥
वेदवादिनी ईश्वरी सो करि कै अनुमान। निर्गुण प्रभु अद्वैत को चाहि कियो गुणगान ॥
अलख अनिर्वचनीय गुण कहिबो दुस्तर जानि। महत मोद मे मगन व्है भई मौन अनुमानि ॥
कहत भई तब द्वैत करि सुनो भूप एहि रीति।तरु शाखा पै शशिहि जिमि दरशावत गहि नीति॥
सरस्वती सों उक्त सो सोभा देहों याहि । मुद मङ्गल मे मगन निति हरन सकल कलि ताहि॥
प्रभु विष्णु, विष्णु त्व गहि ले बहु बिधि अवतार।रचत सोचत जननि को ईहत सगुण बिहार॥
अमि विप्र हवि आज्य वसु यज्ञ यज्ञकरतार । वेद वेदविधि देव प्रभु फल अरु फलदातार॥
मन कु प्रेरक श्रेष्ठ वसु घन जल उर्वी यत्र । दाता भोक्ता ईश प्रभु हैं सब मे सम्यत्र ॥
प्रभु ते जीवन जीव ते प्रभु इमि लेऊ बिचारि ।जिमि तरङ्ग हैं वारि तें नदी रङ्ग त वारि ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

सुनि द्विजवर के बैन जनमेजय भूपति कहे । कहिये मुनि तप ऐन तप करि ते फिरि का कर्यो॥
यह सुनि वैशम्पायि जनमेजय नृप सों कहे।सुनहु भूप सुखदानि प्रश्नोत्तर एहिभांति शुभि॥

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

जन्म आदिक कर्म करि लहि सर्व फिरि इत आर्य । यश करि फिरि कर्म लहि फिरि आइ इत

सुखदाय ॥भांति एहि बहुबार श्रम सों उच्च उच्चस्थान । भोगि तेहि संस्कारते फिरि लहत उत्तम ज्ञान ॥योग यज्ञ महान को फिरि कहत साधन चेति ।यज्ञ योग विधान को फिरि करन बर अंत हेति॥सिद्धि जय बरलहे लरितम देत सो सह सैन। कहे जेहि विधिपूर्व तेहिं विधिआनियेगुण अैन॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

फिरि नृप मुनिबर सों कहे सुनि सुवचन मुनि उक्त ।यज्ञ योग रत जे न ते होत भांति केहि मुक्त॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

यह सुनि वैसम्पानि पांडवकुलपतिसों कहे। जनमेजय सुखदानि प्रश्नोत्तर सुनिए सरुचि॥
होत जीवतें मुक्त विष्णु भक्त जे धर्म रत। हैं श्रुतिस्मृति मैं उक्त नहि एहि बिनु सो योग करि॥

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

धर्मासीन नीति रत भूप । सींचत प्रज न उचित अनुरूप ॥ तब नहिँ धर्म शील जे अहि । होंत धर्म रत तेऊमहि ॥ बेणु नृपति कहं शीचत भूम । रहो अधर्म चहुँदिशि घूमि ॥ ऋषिन सहित सब विधि सविवेक। पृथुकहं किए राज्य अभिषेक ॥ तासों व्है शोधित गहि धर्म। करण लगे सब प्रजा सुकर्म॥ त्रेतामे पृथुकहँ पति पाय । बिलसत भए प्रजा गहि चाय ॥ लागे करण सरूचि सों योग।ब्रह्म चिन्तवन मैं हत भोग॥ पाय कछू दिन मैं गति हृद्धि। क्षुधापिपासा बर्जनि सिद्धि॥ इतनेही मैं गर्बि समोद। हटके ते भटके चक्र कोद ॥जे दृढ करि यह रहे विचार। यह दिनप्राप्त बसन्त उदार ॥ योग वृक्ष बर ब्राह्मण फूल। को इहि गुण परिमल अनुकूल॥ प्रापति भयो इतो उतकर्ष। सिद्धि सुफल लहि कितनो हर्ष॥ होइहि इन्हि मति मत अनु सानि। किए बिचार योग गुरजानि॥ अन्तःकरण बारि निधि ताहि। मथिविवेक मन्दर सों चांहि॥ काढि सोमरस अमृत सनेम।कीजे निसुदिन पान सप्रेम॥यह गुणि कै तेदृढ व्रत धारि।सो विधि लागे करण विचारि

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

प्राणायामादिक करणि सो करि थके उपाय । नहि विवेक मन्दर उठो भे विस्मित श्रम पाय॥
ध्यान धारि तब दीन व्है कहे ईश्वरहि बन्दि । करो कार्य यह सिद्ध प्रभु करुणासागर नन्दि ॥

॥ * ॥रोलाछन्द ॥ * ॥

मानिवो करुणायतन दै ताहि निर्मल ज्ञान । गिरा व्याहृति सों कराये तासु हिय इमि भान ॥ सुमनजे इन्द्रीणके ले तिन्है सङ्ग सहाय। कार्य करियै सिद्ध रहि चैतन्य दृढता काय॥तम दुरत्य रज दनुज भे तब सङ्ग लगत अछोभ। करो कारय सिद्ध गौरव गहि अमृत को लोभ॥ सुर असुर ए तीन मन्दर मन समुदमै डारि। किए मथन दयड दमहि बिचार अहि गुण धारि॥ मथे कछु नहि लह तब व्है सँमित करि अनुमान। सत्य विशुद्धि पार्थि लहि बैराग्य बल सुखदान॥मथे

फिरि तब कढे आरोग्यता वेद महान । योग विधिके स्थान मधुसमि आदि मध्य विधान ॥ वेद विद्या मूर्त्ति श्रीभणि प्रभा शशि अह्लाद।दूर दरशन श्रवण गुण ऐश्वर्य्य हय तेहि बाद॥दिव्यसौरभ घ्राण पार्थिव भूतिसो पार्जात । विशद बाकनि सिद्धि भल अनु पर्म शङ्ख विभात ॥ सर्व ईछिन कर षण शक्ति सु धेनु सुनिए भूप । तदनु प्रगटित भयो शुचि कैवल्य अमृत अनूप॥ ताहि लहि कै जीव सुरपति भए मोदित पर्म । कहत हैं इमि बेदबिद सब सुनहु पालक धर्म ॥ योग विधिकी सिद्ध सुनि फिरि कहत भे क्षितिपाल। तमस रजमें यज्ञ कर गति लहत कौन बिशाल ॥ कहे मुनि ते राज्य भोगत शुचि सुकुलमें आय। कैसु द्विज ह्वै योग करि कहि होत मुक्त सचाय ॥ **

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

तम रज चेष्टित भिज जननिकरि रज तमसों मुक्त ।तारण गणि प्रभु करत है जिमि बलिकी बिधि उक्त॥
रज तम बेष्टित दक्षकँह दैकै साँभव दंड । जिमि कीन्हे प्रभु सत्य मैं तिमि है नृपति उदंड ॥
निज तनकों करि द्विधा शिव आधेतनसें चारु । भे नन्दीश्वर उग्र बपु बरंद बिशाल उदारु ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

नन्दिहि आदिक सर्बगण लै संग बहुभांति को । जब कीन्हे प्रभु सर्बमखविध्वंसन दक्ष को ॥
तेहिक्षण हाहाकार यज्ञ भूमिमैं मचत भा । सबको हिय बिकरार भूरि भीतिसों रचत भो ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

पात्र स्रुवा अरु जूपसो हारा । मंडप तोरण जिते बनारा ॥ तिन्है तोरि गण दूरि बहाए। डारि बारि मय अगिनि बुलाए ॥ मोदित हबिष द्रव्य लै खाए । आज्य पान करि इत उत धाए॥ पिये सोम पशु बध करि दोपे । प्रलैकार बहुभाति अरोपे ॥ बिभिदित सुसुचि सुलुपि ते देखी । सकल साज तहँ मख अतितेखी ॥ रूपवान है घनसम गरजे । मखबिध्वंसकारकन तरजे ॥ तब शिव जानु भूमि पैं लाई। ह्वै सरोष कोदंड चढाई ॥ मारे बाण तासु तनमाही । तब मख भागि गयो विधि पाही ॥ मृगारूप अति सो छायो । पाहि पाहि इमि बचन सुनायो ॥ परमारत बाणी यह सुनि कैं। धीरज ताहि दिए बिधि गुणि कै ॥ तजहु शोच अब नहि भय तुमकों । सुनहु यज्ञ तुम अतिप्रिय हमकों॥ इमि मगरूप धरे अब बिलसौ।ह्वै मृगशिर नक्षत्र दुति सरसौ॥ तारण सहित सोमके सङ्ग मैं । चरहु सदा दिवमधि शतमगमें॥ बिधि पैं जात मृगाके सतत। शोनित धार गिरी इत उत तें ॥ सोई इन्द्र धनुष है आनो । कामरूप बहु रङ्ग अनुमानो॥तहितें प्रगटि गगण मधि आई। लीन होइ निजतन दरशाई ॥ ******

॥ * ॥ दोहा. ॥ * ॥

ज्ञानाधिष्ठित देव शिव हसत भए जब देखि । धर्म प्रभव शुभ कर्म मख कह इमि अतिशै तेखि ॥

धर्माधिपति विष्णु तब लै करमै धनु बान । युद्ध करणके भे खरे सुनो भूप मतिमान ॥
लखि शिव मारे विष्णुकहँ बाण महान अमान । विष्णु हनत भे शम्भुकहँ शर सोषक अरिप्रान ॥
तब शङ्करके कण्ठमे झपटि लपटि गे विष्णु । नीलकण्ठ तातें भए रुद्र सुनऊ नरजिष्णु ॥
तब ते सुने गगणबचनं सिद्ध गणनसों युक्ति । नमो सनातन आदि भजि होत जीव सब मुक्ति ॥
लपटो शिवके कण्ठ मैं विष्णु हि लखि करि कोप। धनुं उठाय मारण चहे हेह पौरव गोप ॥
हँसि लखि नन्दि हि विष्णु तब कीन्हे स्तम्भीभूत । रहे मिलित गुरमृग सम ऊर्ध बाहँ पूत ॥
ज्ञान धर्मके देव फिरि हिलि मिलि भए सप्रेम । यज्ञ भाग वर शम्भुकहं दीन्हे विष्णु सनेम ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

लहे यज्ञ फल दक्ष लहि सहाय प्रभु विष्णुकी । का न लहे को दक्ष मुनि गुणि कीर्ति सहिष्णु ॥
योग यज्ञमे तब पुष्कर प्रादुरभाव शुचि ।सुनि गुणि लहि गुर तब लहिं है उत्तम पद सरुचि ॥
पुष्कर प्रादुर्भाव शुभ छबि सुअध्याय वर । सुनि गुणि याको भाष जे बूझै ते धन्य नर ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीवन्दीजनकाशीवासि गोकुलनाथात्मजेन गोपीनाथकविना विरचिते भाषायां भारतान्तर्गते हरिवंशदर्पणे पुष्कर प्रादुर्भाव वर्णनोनामत्रयस्त्रिंशोऽध्यायः ॥ * * * * * * * * * * *

॥ * ॥ जनमेजय उवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

अब मुनि जु बराहको प्रादुर्भाव महान । कीर्ति क्रियाकर की करो कीर्तन सहित विधान ॥
मुनि वैसम्पायन कह्न सुनिये नृपति सुजान । पावनकीरणि बराहको भावन कथा विधान ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

सहस चौकडी दिनके बीते । विधिको दिन प्रमाण सो रीते ॥ तब प्रभु अग्नि वायु रबि ह्वै के । सर्ब लोक कौतुक सम ख्वैकै ॥ सान्द्र लीन आपुमे करिकै । वर ब्रह्माण्ड बारिसों भरिकै ॥ निद्रारूप रत हि निज तनमें ।नीरि शुचित शोवै प्रभु वनमें ॥ ऋषि सुर तासु अन्त नहि पावैं । तातें तेहि अनन्त कहि गावैं ॥ निर्गुण परब्रह्म कहि कूजे । प्रादुर्भाव रूप लखि पूजे ॥ कोटिन युवा सूर्य्य सम धामी । सहस चौकडी युग मितिस्वामी ॥ शोय जागि करि कौतुक भावन ।प्रगटित करै अंड बर पावन ॥ तातें रचै लोक बहुविधिके । विधिवत पृथक पृथक बहु रिधिके ॥ अण्ड हिरण्मय भेदित कीन्हे । दशधा दिशा व्यक्त करि दीन्हे ॥ जिते अंडके सकल सुहावन । ते भे मेघ बारि बरिसावन ॥ ऊरध भाग अंडको तातें । कन जल चुत भो भरो प्रभातें ॥ सो भो कनकमयो गिरि अद्भुत । अति उन्नत बिसतरि प्रभायुत ॥ अधकन जल भे प्रगठित जेते । ठौर ठौर सब गिरि भे तेते ॥ तिनको भूरि भार सम तरणी । भई अशक्त धरण कह धरणी ॥ दुःसह भारते जवन लागी । जल प्रवाह मधि डूबन लागी ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

तब प्रभुको अस्तुति करी ह्वै आरत कर जोरि । सुनि लखि प्रभु करुणाउदधि करिकै कृपा अथोरि ॥
कहे भूमि मति शंकु मौ स्वस्थ, करतहौं तोहि । सो सुनि महि साहस लई कृपा ईशकी ओहि ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

इमि कहि ईश विचारि भूसों ज्ञत भूभृत भू भरण । बपु बराहको धरि शोभित भे जनदुखहारण ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

शत योजन उन्नत अति अनुपम । दश योजन बिसंतरित शुभद सम ॥ वेद चरण क्रतु दशन सो हाए । जूप ढाड ऊरध छबि छाए ॥ रसना अग्नि रोम कुश जानो । निशि दिन नेत्र अनूप समानो ॥ श्रुति बेदाङ्ग अभूषण गाये । आज्य नाक स्रुवतुण्डकहाय ॥ पशु उरुण सबरा उदगाता । होम लिंग फल बीज सु त्राता ॥ पग अन्तर मन्तर अनुमानो । शोनित सोम गन्ध हबि जानो ॥ बेदी कन्ध कहे श्रुतिज्ञाता । हृदय दक्षिणा आनददाता ॥ रदछद उपाकर्म्म मनभावन । कुण्ड नाभि आवर्तक पावन ॥ शुभगति नाना छन्द बिख्याता । आसन गुह्यप निषद सो हाता ॥ सद छाया पतिनी सहचारी । मख बाराह बिशद ब्रतधारी ॥ व्है अधमहि सुदात पैं धरिकै । धरणि हि फिरि ऊरध गति करिकै ॥ जलपर गुर नौका सम राखे । तब महि भाग करण अभि लाखे ॥ शैल नदी चऊंदशिमै निरमै । सुर नर मृग पक्षी जेहि बिरमै ॥ चऊँदिशि समुद अन्त धरणीके । किए अगाध अगम अति नीके ॥ मधिमै मेरु स्वर्नमै कलपित । कीन्हे अनुपम प्रभा अनल पित ॥ शैल कन्धबर चऊँदिशि ताके । निरमित कीन्हे पूर प्रभाके ॥ *❦*❦*❦*❦*❦*❦***

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ * ॥

उदया चल बर रचत भो तदनु पूर्वदिशि जाय । शत योजन बिसतरित अरु तासु त्रिगुण गुरकाय ॥
शैल सोमनस दुतिय तहँ फिरि बिरचे कमनीय । ऊंचो योजन साठिको मणिमय अतिरमणीय ॥
सावनकी संध्या सदृश सहस शृंगवत तीन । बिश्वसृज तापैं किये रुचिसो अपनो भौन ॥
शिशिर शैल तहँ फिरि रचें समतुषारके धौल । शिशिर प्रभावा नदी तहँ रचे प्रभाव अतौल ॥
फिरि दक्षिण दिशि जाय प्रभु बपुष्मंत गिरि तीन । रचे सरस सिकांति है एक एक दिशि तीन ॥
भानुमन्त गिरि फिरि रचे अति उन्नत बर फैल । कुञ्जर निभ फिरि रचत भे उन्नत कुञ्जर शैल ॥
ऋषभ शैल फिरि तहँ रचे कादर कन्दर चारु । अरु महेन्द्र शैलेन्द्र तहँ बिरचे उच्च उदारु ॥
मलय शैल मैनाक अरु पर्बत बिंध्य महान । सरिता चारु पयोधरा बिरचे सहित बिधान ॥
फिरि पश्चिम दिशि जाय प्रभु गिरिवर साठिहजार । कञ्चन मणि गणसों रचित बिरचे प्रभाऽपार ॥
कीन्हे तिनमै श्रेष्ठ प्रभु गिरि सहस्र जलधार । ऊंचो अरु बिसतरित यो योजन साठिहजार ॥

इतनोई मिति तहं रचे निज रूपोपम वेश। गिरि वराह मणिमै विसद पावन करण सुभेश॥
चक्रवन्त गिरि तहं रचे चक्रवन्त अभिराम। शङ्खवन्त गिरि फिरि रचे शङ्ख सदृश छविधाम॥
घृतधारा शुभदा नदी रचि तित पावन रूप। उत्तर दिशि फिरि जात भे प्रभु वाराह अनूप॥
सौम्य नाम गिरि तहँ रचें सूर्य्य प्रभ एहि भांति। सूर्य्यके बिनु उद्योतनि हि जासु कान्तिकी पांति॥
सु गिरि गन्धमादन रचे अरु मन्दर सहनेह। अम्बु जाम्बुनद मई तहं बिरचें छविगेह॥
त्रिशिखर गिरि पुष्कर शैल शुभ्र शुभद कैलाश। अरु हिमवान नगेश ए उत्तरदिशि छविरास॥
सिगरे शैल रूपस ए निरमित करि मनमान। मधुधारा सरिता रचे उत्तर दिशि सुखदान॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

सरित शैल एहि भांति निरमित करि वाराह प्रभु। करत भए मयकान्ति परजोत्पत्तिकी भावना।

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

भावना को करत प्रभुके बदनते तेहि जाम। प्रगट भे भू भरण ब्रह्मा परम आनदधाम॥ प्रगट ह्वै सो पुरुष प्रभु वाराह सो सहनेऊ। कहे जो मैं करऊ प्रभु तुम जौन आज्ञा देऊ॥ विभज आशा भाषि इमि प्रभु भए अन्तरध्यान। कहे इनसो करौं किमि इमिविधि अनुमान॥भए चिन्तित कढो विधिके बदनतें ओंकार। भूमि नभ सभ दिशनि पूरो जासु परम पसार॥ अभ्यनत तेहि बढो हियतें वषटकार महान। फेरि प्रगटित भए व्याहृत सुनो नृप मतिमान॥ चतुर्थि अक्षरा जननीवेदकी अभिराम। भई गाइत्री प्रगट फिरि सरस दायक काम॥ भए मनतें प्रगट विधि पुनि सनक सनकु उदार। अरु सनातन अरु सनन्दन कपिल सनतकुमार॥ फेरि विधि सुत किए सु प्रगट मरीचि आदिक आठ। अत्रि पुलह पुलस्ति क्रतु भृगु अङ्गिरस मनु पाठ। भए इनत प्रजा प्रगटित परम सुविख्यात वंश। वेदविद तपपुञ्ज व्रतभृत धर्मधरण प्रसंश॥ फेरि विधिके चरण दक्षिणको अंगुष्ठ ललाम। भए तातें दक्ष अरु तिमि वामतें ता बांम॥ भई तिनकी कन्यकनसों प्रगट बहुविधि सृष्टि। कहे सो बहु बार तैसें जानियो शुचि दृष्टि॥ कल्प कल्पनि होहि प्रगटित पुरुष तेई आय। भेद नाम अस्थानको बस कर्म कछु कछु पाय॥ किए फिरि विधि वर्ग वर्गनि अधिप करि अभिषेक। कहे सोजिमि आदि मैं तिमि जानियो सविवेक॥ सविधि लहि अभिषेक विधिसों अरु यथाविधि लोक शोक। सकल विहरण लगे सगण सुधारि निज निज लोक॥एकदिवस पयपर्वत दिशाप्राची आय। दैतराज हिरण्यअक्षहिसों कहे समुझाय॥ इन्द्र अदितज भोगवत कत तीनलोक विशाल। एक पुर लहि तेहि कत तुम रहे हित अँ कराल॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

हिरण्याक्ष यह बचन सुनि करि अति दीरघ कोप। तीनिलोक बसि लेनको गहत भयो गुर चोप॥
साजि सैन चतुरङ्गिनी दैअत मई कराल। गरजि इन्द्र पैं चलत भो जेरि निसान विशाल॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

विविधि भांतिके आयुध धारे । बलकत चले बीर मतवारे ॥ गज रथ हय खर ऊटन चढि चढि । चले मातक बच नसो मढि मढि ॥ बरण बीर असंख्य पदाती । चले उँमगि पर दलके घाती ॥ हिरण्याक्ष अधिपतिकहँ घेरे । बढे बीररससा मन मेरे ॥ सुनासीर बब यह सुधि पाए । सुरन सहित चढि समन मुख आए ॥ लागे चलन शस्त्र दुहुँ दिशिसों । बलकन लगे जोर भरि रिसिसो ॥ गरजि गरजि भट डाटन लागे । बाणनसो भट काटन लागे ॥ शरधनु कढे किते भट डोले । कितने शस्त्र बाहिजे बोले ॥ कितने शस्त्र शस्त्रसों काटै । किते बीर पिलि सन्मुख डाटै ॥ विरथ विधनु ह्वै किते परस पर । बाहुयुद्ध भिरि करैं सुभट बर ॥ हिरण्याक्ष सहसाक्ष हि देखी । बाण वृष्टि कीन्हेसि अतितेखी ॥ सर पञ्जर चहुँदिशि कार दीन्ही । लक्ष्मीभूत सुरपति हि कीन्ही ॥ भे अप्रपन्न बिकल सुर सिगरे । मोदित भए दैत मतिबिगरे ॥ सुर सुरपति हि सहारि निहारी । करुणासिन्धु दयो हिय धारी ॥ निरमित है बराह गिरि जोई । आयो तहँ बराह बनि सोई ॥ शङ्ख चक्र रवि शशि सम लीन्हे । बपुयन्त गिरि सम छवि कीन्हे ॥ आय चमूढिग शङ्ख बजाए । ध्वन सुनि असुर महत भय पाए ॥ *——*——*——*——*——*——*——*——*——*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

हिरण्याक्ष सो शङ्ख सुनि चौंकि लखत भो तच । को यह कहि क्रोधित चलो है बराह प्रभु यत्र ॥
सर्व असुर एकबार झूकि मारे शस्त्र अनेक । यथा बारिकन सैल पैं तिमि ते भए सटेक ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

हिरण्याक्ष तब तेहि मारे शक्ति अमोघ अति । व्यर्थ भयो तेहि देखि साधु साधु विधि कहत भे ॥

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

तब बराह प्रभु चक्र कराल । सो काटे शिर तासु विशाल ॥ भिन्न शृङ्ग गिरि सम गुरु काय । परो भूमि पैं दैत्यन राय ॥ बसु दिशि भागे असुर तजि चाय । उर शिर ताडत करि हा हाय ॥ जै जै कहे सुमन हरषाय । बन्धन मोचे प्रभु सुखदाय ॥ तब बराहसों सुर सुरनाथ । कीन्हे विनै जोरि युग हाथ ॥ करि अनुकम्पा तुम भगवान । कीन्हे मम रक्षण सुखदान ॥ यम मुखगत सम हे हम सर्व । मोचे तुम प्रभु ईश अखर्व ॥ अब अनुशासन दीजै जान । हम सब दास करैं तिमि तान ॥ पुण्डरीक चख सुनि यह बैन । कहे सुनो सुर सुरप सचैन ॥ पूर्ब लहे जो जो अधिकार । सो सो पालत नेक उदार ॥ दै निदेश मम सुरपति शोर । कीजो नीतो सहित करि गौर ॥ यज्ञ धर्म व्रत तप जप दान । हात सुकर मरत जे मतिमान ॥ सत्य शूर रण सूर अडोल । उपकारक बकता

सति बोल ॥ शुचि दाया दिहि दये अभिराम । नव साधन साधम ज्ञान ध्यान ॥ निज पतिनो व्रत धृत ओसूर । आश्रमधर्म शील गुण पुर ॥ पुरुष आहिंसक जे दृढ नेम । इनकहं दीजो स्वर्ग सप्रेम ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

जे नास्तीक अधर्मरत कामी धूर्त-मलीन । तिन्है कीजियो नर्कगत सुनि मम शीख प्रबीन ॥
इमि कहिकै बाराह प्रभु भे तह अन्तरध्यान । निज निज पद दिगपाल वे सुरपुर सुर सह ज्ञान ॥
तब सुरपति सर्वागिरिनकहुँ करि करि यथा प्रदेश । पक्ष काटि कीन्हे अचल सुविष नृपति शुभेश ॥
सम्मतसा सुरगणनिके सत्वर सिन्धु समाय । अति चातुर मैनाक गिरि रह्यो सपक्ष सचाय ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

प्रादुरभाव अनन्द यह श्रीप्रभु बाराहको । पढि नर परम अनन्द बांछित लहि इतक अन्त ॥

स्वस्ति श्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणसिंहाज्ञाभिलाषिना श्रीबन्दीजनकाशीवासिगोकुलनाथकवीश्वरात्मजेन गोपीनाथेनकविना विरचिते हरिवंशदर्पणेबाराहप्रादुर्भाववर्णनो नाम चतुस्त्रिंशोऽध्यायः ॥*◆*◆*◆*◆*◆*◆*◆*◆*◆*◆*◆*◆**

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

प्रादुरभाव नृसिंहको अब सुनिये क्षितिपाल । पावनकर अभिराम जो दैत्य कुलको काल ॥

॥ * ॥ तोमरछन्द ॥ * ॥

शुभसत्य युगमे नाम जु हिरण्य कश्यप नाम । खल दैत्य बर बलधाम तप कियो अति अभिराम ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

सहस इग्यारहँ पांचशत बरिस निरम्बुधि विधान । तपत देखि विधि आइ तहँ कह्यो मांगु बरदान ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

भै मोदित तेइ बर मागा । सब जग जीतनके मन पागा ॥ देव असुर गन्धर्व कहाये । किन्नर यक्ष पिशाच बरनाए ॥ अरु मनुष्य ऋषि तप बल भारे । करता जितने रूप सँमारे ॥ मैं न मरौं प्रभु इनके मारे । नहि निशि नहि दिन शस्त्र प्रहारे ॥ अरु भेद अरु पर्वत भारी । तिनसो सकै न मोहि कोउ मारी ॥ सूखे बोरे आयुध जेतें । मोपें व्यर्थ होहि सब तेतें ॥ इनते इतर निरायुध आवै । करै पराक्रम जो मोहि भावै ॥ सो सुनि एवमस्तु कहि वेधा । सुर सेवित गे स्वर्ग सुमेधा ॥ बर प्रभाव अति उग्र निरेखी । सुरन कह्यो विधिसों भयभेखी ॥ प्रभु तुम बर दीन्हे जिमि ताको । निर्मित मृत्यु करऊ तिमि ताको ॥ सुनि प्रभु कह्यो सुनो सब कोई । तप प्रभाव नहि मिथ्या होई ॥ तपफल भोगि गर्व हियधारे । मरिहि विष्णु सों उदर बिदारे ॥ सुनि सुरगण निज निज थह आई । बसे धीर धरि शोच नशाई ॥ सो हिरण्य कश्यप बल भारी । तीनिलोक जीतेसि पनधारी ॥ सुर

अधिकाह पद च्युत करि दीन्हे । यज्ञभाग भुज असुरन कीन्हे ॥ तब सुर गए विष्णु प धाए । आरत ह्वै निज व्यथा सुनाए ॥ प्रभु सुरगण कहं साहस दीन्हे । ता बध करिबेको मन लीन्हे ॥ ॥

॥ ॥ दोहा ॥ ॥

तब प्रभु सुरगण विसर्जि कै हिमवत शैल प्रपन्न । अनुत्पन्न नर सिंह को वपु कीन्हे उतपन्न ॥

तेज पुञ्ज अति उग्र वपु नारसिंह अभिराम । आय लखे दैतेशको सुन्दर उन्नत धाम ॥

लम्बो योजन डेढ़ शत शत योजन को याम । ऊंचो योजन पाञ्च हो तासु सभा गृह आम ॥

बज्र रत्नके रतन सों बहुविधि रचित अनूप । बिसुकर्माके कारिसों तासु बिभो अनुरूप ॥

बहु गुल्मनिम उपवननि सों अतिशै रमणीय । कुसुम सरोवर बिहग गण सो मनहर कमनीय ॥

जरतीले बसननिसों छादित यथा प्रदेश । उन्नत अनुपम ध्वजनि सों शोभित सरस सुभेश ॥

नानाविधिके शस्त्रधर शरीदार बलधाम । भृत्य असंख्य खरे जहं करे महत इतमाम ॥

॥ ॥ सोरठा ॥ ॥

सिंहासन अतिकाम महत चारिशत को विशद । तापैं बैठो आम जो हिरण्यकश्यप असुर ॥

॥ ॥ रोलाछन्द ॥ ॥

कुण्डलादिक सर्व भूषण धरे अति रमणीय । दीर्घ मणिसे श्याम गिरिसम लसत अति कमनीय ॥ अमर किन्नर यक्ष तुम्बर सुमुनि द्विजवर सर्व । खरे सेवे तहां ताकंह गुह्यको गन्धर्व ॥ सौरभेयी मिश्रकेशी समीची गुणग्राम । चित्रसेना मेनका उरबसी रम्भा बाम ॥ चारु बिश्वाची घृताची अपसरा बहुसंग । गान नृत्य बिधान करि तहं करे अद्भुत रङ्ग ॥ प्रिया सहसन तिया ताकी तासु बैठी पास । मध्य कीन्हे पान करत सहास बिबिधि बिलास ॥ बलि बिरोचन नरक पृथवी बिप्रचित्त बरिष्ट । क्रोधहन्ता लम्ब अहन्ता सुमन कथन बरिष्ट ॥ संह्राद अरु प्रहलाद आदिक असुर बहु सरदार । उग्र तपकरि लहे बरसों सत्व अगम अपार ॥ तिन्हे सहित समर्व राजत दैतपति गुरसत्व । लखे श्रीनरसिंह प्रभु तेहि आय सनमुख तत्व ॥

॥ ॥ दोहा ॥ ॥

गुप्त भसमसम अनल सम बपु नृसिंहको गुप्त । प्रभु हि देखि दैत्यनको भयो गर्व बल लुप्त ॥

ताकि बिस्मितसे चकित ह्वै कहे सकल भय पूरि । सुने न चैसो आजुलों मृगपति वर्चस भूरि ॥

लखि नृसिंह प्रभुकहं कहे निज पितुसों प्रहलाद । सह अतुल मृगपति हि लखि तजौ गर्व अह्लाद ॥

॥ ॥ सोरठा ॥ ॥

एहि मृगपतिकहँ सोहि ज्ञानहगनिते निरखि गुनि । जानि परो यह मोहि ए अव्यय अयतन प्रभु ॥

दैत्यकुलको नाश करण हेत अद्भुत सुतनु । नहिं हुत बिमद बिलास इत आए निहचै गुनो ॥

यहि मृगपतिके देहमें विधि हरि आदिक देव । तीनिलोक ब्रह्मांडवर निरखो परै सुभेव ॥
इमि कहिके प्रह्लाद ह्वै भक्तिनदीमें मग्न।ध्यानधारि प्रभु व्यक्तको थिर ह्वै रहे अभग्न॥
सुनि दैत्यपति चाहि कहत भयो इमि भटनसों।जियत लेउ गहि याहिकै शस्त्रनसो बध करो॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

दैत्याधिपकी शासन सुनिकै। उठि भट प्रबल मृगपतिहि गुनिकै॥ विदित वीर दैत्यन जे जे हैं। तेउ निकट न जाइ सकैहैं॥ तब वर अस्त्र प्रहारण लागे। लाखन भट अमरखसों पागे॥ प्रभुपैं परे अस्त्र सब ऐसे। गिरिपै बूंद मघाके जैसें॥ तब प्रभु कालमेघ सम गरजे। भागे डरि दैत्यन भट बरजे॥ टुट सुभटनको भागत देखी।धीर हिरण्य कशिपु अति तेखी॥ उठि कै आपु गर्व सों पागे।दिव्यास्त्रनसों मारण लागे॥ मुद्गर मुशल दंड अति घोरा॥ शूल शक्ति ब्रह्मास्त्र कठोरा॥ शैशिर ऐषिक एड्र अस्त्रवर। कौंच रौद्र कंकाल प्राणहर॥ हयशिर अस्त्र ब्रह्मशिर भारी। अरु वायव्य अस्त्रदल हारी॥ अरू आग्नेय अस्त्र दलदाहक।अस्त्र पृजन्य प्राणको गाहक॥ अरु पैशाच अस्त्र जयदायक। अरु सोमास्त्र ओतिवे लायक॥ मोहन सोषण दर्पण तापन। अरु गान्धर्व अस्त्र प्रस्वापन॥ संवर्तन प्रमथन अरु वारुण। पातन अस्त्र पाशुपत दारुण॥ सार्प्प कपाल अस्त्र भय व्यापन। अशनि और त्वष्टास्त्र समापन॥ काल चक्र रिपुचक्र कराला। अरु पैतामहँ चक्र विशाला॥ **********

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

विष्णु चक्र अतुल्य अरु धर्म चक्र अतिघोर। महाचक्र अरिदल दरन रौद्रव चक्र कठोर॥
इतने अस्त्र अमोघ सो मारत भयो अमान। ते प्रभुके ढिग जाइ भे तृण अरु तूल समान॥
अस्त्र असंख्य हने बहुरि दैत्यन यूथ अनेक। प्रभुके तनको परस नहि करत भए ते एक॥
शस्त्रजाल लहरिन कहर जलनिधि सहश महान। तामधि लसे नृसिंह प्रभु गिरि मैनाक समान॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

दैत्याधिप तब देखि छाडेसि शक्ति अमोघ अति। प्रभु नृसिंह तेहि देखि है कीन्हे हुङ्कारसों॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

तब सब असुर सगण मधि आई। बरषत भए शिला समुदाई॥ प्रभु तन परशि शिला सम्पूरण। इत उत गिरत भए ह्वै चूरण॥ तब ते मायावी छिप धर मे। अति छिन्न धारा अस बरषे॥ छीट परी नहि प्रभुके तन म। गयो बारि भरि तासु सदनमें॥ तब ते दैत्ययुथ गुर काया। कीन्हे अग्नि वायुको माया॥ छाइ लए ते सर्वदिशनकों। परसे नहि नृसिंहके तनकों॥ लहि सुरेशकी आज्ञा आए। मेघ बरषिके अग्नि बुताए॥ तब ते तामसि माया कीन्हे। दशदिशि अन्धकार नहि

दीन्हे ॥ प्रभु निज वर्षत सों तम नासे । ज्यों रविसम सब दिशा प्रकासे ॥ माया व्यर्थ भए दनुतेशा । करत भयो अति कोप कु भेशा ॥ कीन्हे कोप दैतपति जबहीं । मारुत सप्त सुभित भे तब हीं ॥ आवह विहव प्रवह अरु सम्वह । और परावह परिवह उदसवह ॥ असगुण सकल भए तेहि ज्ञण । सो लखि शोधि असुरपति मन में ॥ निज गुरसों बूझे तेहि ठांई । कहिये सकुन प्रभाव गोसाँई ॥ कहे शुक्र अहै ऐसो होई । मरै तहां को अधिपति सोई ॥ इमि कहि शुक्र बिदा व्है तासों । निज निकेत गे भरे प्रभा सों ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

हिरण्यकशिपु गुणि हरिकलों कोपि गदा लै पानि । चलत भयो नरसिंह पैं गर्व हिए मैं आनि ॥

चलो गदा लै दपटि जब दैताधिपति समर्थ । कम्पित भे तब गिरि मही सरिता सागर सर्व ॥

साध्य विश्व आदित्य वसु सुमन मरुत तँह आय । अन्तरिक्ष रहि कहत भे प्रभु सों आनँद छाय ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

याको मारनहार नहिं तुम ते कोउ आन प्रभु । करिये अब संहार शीघ्र दुष्ट खल असुर को ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

सुनि नृसिंह प्रभु कोपि तरपि कै । काल मेघसम गरजि झरपि कै ॥ नव अमोघ आयुध बिसारे । उर हिरण्य कश्यप को फारे ॥ वज्र प्रहारित भिन्न अचल सो । परो भूमि पैं असुर प्रबल सो ॥ कढत भई शोणित की सरिता । गुर गुद यादवती महि चरिता ॥ भगे असुर गण सुरगण हरषे । ऐजै टेरि सुमन शुचि बरषे ॥ कार करि अस्तुति सुरगण बोले । सानद पूरित प्रेम अतोले ॥ प्रभु तुम यह नृसिंह वपु धारी । सुरमुनिगण कहँ किए सुखारी ॥ प्रति युग यह अपूर्व वपु ध्याई । सब सुद चाहि हैं बाक्षित पाई ॥ तदनु बिरंचि मोद अति लीन्हे । प्रभु नृसिंह की अस्तुति कीन्हे ॥ सांख्य योग तत्वज्ञ सुज्ञानी । वेदोद्भवविद्यायुत ध्यानी ॥ मोहैं तव महिमा कछु जानी । कहि न पार पावैं अनुजानी ॥ तैजस विश्व प्राज्ञ तुरिया शुचि । धर्ममूर्ति तुम ईश यथारूचि ॥ परम देव परसिद्धि प्रसिधि हो । परम मंत्र मन पर पर विधि हो ॥ परम रहस्य परम बर बानी । तुमहिं परम गति भावहि ज्ञानी ॥ परम धरम तुमकहँ मुनि गावैं । परम धर्म तत्वज्ञ बतावै ॥ परम तेज तुम तुम जग करता । तुम कारण कारज मुद भरता ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

तुम पुरुषोत्तम परम प्रभु तुम पर सों परज्ञान । तुम पद सों परतत्व हो निरगुणपुरुष पुरान ॥

इमि अस्तुति करि बिधि तहं लहि आनँद निज लोक । करि प्रणाम मोदित गए सुरगण मिश्रितजशोक ॥

उत्तर तट क्षीराब्धिके तब नृसिंह प्रभु आय । तहँ नृसिंह वपु राखि गे निजपद आनँद छाय ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

यह अत्युग्र अपूर्व प्रादुर्भाव नृसिंह को । पढ़िहैं जे गुण पूर्ण ते लहिहैं वांछित परम ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

अब नृप वामन को सुनो पावन प्रादुर्भाव । प्रभुता प्रभव प्रभाव अरु कारण कार्य सुभाव ॥
सुत मरीचि के कश्यप तासु तिया सुखदान । सुता दक्ष की अदिति दिति प्रतिव्रतरत गुणखान ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

भे द्वादश शुभ सुवन अदितिके । धाता मित्र अर्यमा मितिके ॥ वरुण अंशु भग इन्द्र बखाने । विवस्वान पूषा जग जाने ॥ अरु पर्जन्य त्वष्टा ए ग्यारहं । और विष्णु भूपति ए बारह ॥ दितिसुत द्वै हिरण्य कश्यप बर । हिरण्याक्ष दूजो गुरु धनु धर ॥ हैं सुत पांच हिरण्य कशिपु के । प्रह्लादहि आदिक सुर रिपु के ॥ प्रह्लादहि के सुवन विरोचन । तासु सुवन बलि नित्र यश रोचन ॥ राजनीति गुरु गुण को आकर । धीर धनुर्धर वीर प्रभा बर ॥ बर बल वीर्य मान अभिमानी । सत्यवाक गुणग्राहक दानी ॥ ऐसो बलिहि विचारि असुरगण । मंचि कहे बलिसों प्रमुदित मन ॥ करि उपाधि सुरगण मुद छाए । गुव प्रपितामहँ कहँ मरवाए ॥ तिरभे तीनि लोक बसि सरसैं । हम सभसों देखनकहँ मरसैं ॥ ताते लहि अभिषेक विराजे । चतुरङ्गिनि सेनावर साजे ॥ चढ़ि सुरपति सों करऊ लराई । जीति बसो फिरि निजपुर भाई ॥ बन्धु असंख्य वीर हम जेते । सुरण जितिबे लायक तेते ॥ तजि संकल्प विकल्पहि मानो । सादर रारि इन्द्र सों ठानो ॥ इमि कहि असुरवृन्द मुद लीन्हे । बलिहि सविधि अभिषेकित कीन्हे ॥ *—*—*—*—**

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

बर असुराधिपतित्व को लहि अभिषेक सुभेश । सुरपति पैं दलं सजि चलन को बलि दए निदेश ॥
सुनि निदेश सजि सजि चले यूथप दैत अमान । महा प्रह्लानी कुम्भ अरु कुम्भकर्ण बलवान ॥
काञ्चनाक्ष कपिकन्ध अरु क्षितिकंपन मैनाक । उर्द्धवक्त्र सितकेश अरु विकच सुबाहु निशांक ॥
सहस्रबाहु व्याघ्राक्ष अरु वज्रनाभ एकाक्ष । गजस्कन्ध गजशीर्ष अरु अश्वजिह्व कपिलाक्ष ॥
कलभ सलभ क्रत मासप धेनुक बालि अखर्ब । इन्हैं आदि सहस्रन चले यूथप वीर सगर्व ॥
बलिको सुवन सहस्रभुज चलो बाण रणधीर । रथीअति रथी तासु सँग चले कोटि बर बीर ॥
रथस्वाह शतहस्तको ह्वै तापैं आसीन । सर्व शस्त्र गहि चलत भो बाहुक अस्त्र प्रवीन ॥
रक्षक ताके सुरथ के रहे पांच बर बीर । मेघनाद आदिक गनो मल्लकुमार रणधीर ॥
कश्यपकी तिय पतिव्रता धनापुषा हीं तासु । सुवन बली बल चलत भो लाख रथी सङ्ग आसु ॥
समर [illegible] चलत सुरथ पैं चढ़ि शुचि आयुध सर्व । उमड़ि चलो घनघोर सम गरजत मेघ सगर्व ॥

दूहसव्याघ्र युत सुरथ प चढि कै नमुच दइत्य ।. साठि हजार रथीन सह चलो गुणे जय नित्य ॥
चतुर्विंश सहस तहँ सुतुर सहरिस युत ाम । रथ ताप चढि चलत भो मय दइत्य हो ओम॥
रथी लाखदश तासु सँग चले गहे उतकर्ष । मणिन जडित कञ्चन घटित सिगरे सुरथ सधर्ष ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

दैत पुलोमा बीर सहस ऊँट युत सुरथ पैं । चढि भो चलत सुधीर साठि हजार रथीन सह ॥
हयमुख दइत हजार युत रथ पैं चढि चलत भो । हयग्रीव अरिमार सानद सहस रथीन सह ॥
शतक्रतु कित प्रहलाद सहस दैतसरदार सह । चले गहे अहलाद चढि मणि मैं वर सुरथ पैं ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

सहस बाजि युत रथ अति भारी । चढि तापैं शम्बर धनुधारी ॥ रथी लाखत्रय सह पन करि कै । चलो बीररस हा मनु भरि कै ॥ बाजि व्याघ्रमुख दश शत तिन सौं । युत रथ जडित सु मणि चमगिन सौं ॥अनुह्लाद तापैं चढि उगरो। हिरण्यकशिपु को सुत गुणआगरो ॥कोटिरथी ताके सँग क्रूरे । चले अस्त्रविद्या सौं पूरे॥ बाजि सहस कौलुकहत पथ पैं । तिन सौं जुत मणि म वर रथपैं ॥ चढि बलि को पितु चलो बिरोचन । श्रीमन्तन सह आयत लोचन ॥ दैत बिरोचन को लघु भ्राता । बीर कुजम्भ वीर्यमदमाता ॥ असुर सहस्रनि आवृत सोई । रथचढि चलो सगर्वित होई॥ रथ चढि चलो बीर असिलोमा । सहस रथिन सह सरस सजोमा ॥ एकचक्र दैत्यत अभिमानी। चढि रथमैं कढि समरथ बानी ॥ असी हजार रथिन सह चावन । चलो शत्रु दल द्वन्द मचावन ॥ सुवन सिंहिका को अति घोरा । राहु शैलसम दीर्घ कठोरा ॥ चले सर्व्व सुरथ पैं चढि कै । मणिमय कवचन सौं तन मढि कै ॥ विप्रचित्ति दानव अरिदरता । विदित धनुर्द्धर शङ्कर करता ॥ रथ त्रैलोक्य बिजैकरनामा । चढि ताम रविसम अभिरामा ॥ *⬬⬬*⬬*⬬*⬬*⬬*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

पुत्र पौत्र सु बन्धुगण भृत्य असंख्यन बीर । रथी अतिरथी सह चलो बिदित बिशद रणधीर ॥
स सहस महिष रथस्थ ह्वै चलो रथी लै लाख । शतपत्र भुज दानव प्रबल केशी अरिमदनाख ॥
मणि मैं रथ पैं चढि चलो वृषपर्वा बलवान । प्रबल मन्दराष्ट्र सदृश दीरघ कठिन समान ॥
सुत धनायुषा को प्रबल बिघनाम अरिजैन । सहस बाजि युत सुरथ प चढि कै चलो सचैन ॥
कनक बिन्दु दैत्यत प्रबल रथचढि चलो सगर्व। मन्थन परदल जलधि को मन्दर सदृश अखर्व ॥
नाम हेममाली असुर अूपम करता कोल । सुवन सु बलि को बाण भो ताकहँ करत हरौल ॥
रथ चौसठिशतहाथ युत कनकरचित अभिराम।रतन अमोलिक सौं जडित बिरचि आलयत दाम।
गजमुख असुर सहस्र सौं शोभित अद्भुत रूप । ताप चढि कै चलत भो बलि दइतेन्द्र अनूप ॥

पैदर सुभट असंख्य सौं आवृत प्रभा अमन्द। छरीदार इतमाम कार बोलत अमित सुछन्द ॥
विप्र पुरोहित मंत्रविद पढि स्वस्त्ययन समेत। आसिर्वचन कहैं तिन्हैं सुबरण मणिगण देत ॥
मणिमै बालव्यजन सों बोज्य मान रमणीय। शोभित तासु मेरुस्थ मनु अंसुमान कमनीय ॥
शिवि अयसिर अयश्वतिर कुपथ संताद्य मतङ्ग। निकट निकुम्भ कलाप ए भूपप दश सउमङ्ग ॥
रहत दशदिशि सुरथको गिरिवर सँगम गुरु काय। दशदिग्गज दिगपाल सम अचपल चपल स्वभाव ॥
गज हय ऊँट रथानि पैं बाद्य दुन्दभिहि आदि। बजे असंख्य घनसमे यूथनि यूथ प्रमादि ॥
मणि कञ्चन असि रजत मै सभ रथ प्रभा अनन्त। शख्ननि पूरित सर्व सव घण्टा किंकिणिवन्त ॥
वर रथ जे भूपपनि के ध्वजावन्त ते सर्व। अस्त्र कुशल सिगरे असुर सिगरे सूर सगर्व ॥
कवच चारु भूषण विविध मणि कञ्चन मै पर्म। सो भूषित सिगरे सुभट करता दुस्तरकर्म ॥
यहि विधि साजि प्रचण्ड दल गहि घमण्ड दइतेश। मारतण्ड सौं चण्ड ह्वै चलो इन्द्र के देश ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

प्राविट मै घनघोर उमडि खेत जिमि छायनभ। तिमि दल प्रबल अथोर छाय लिए सब दिशिविदिशि ॥
जात भूमि पैं पूरि बेला तरि जलरासि जिमि। तिमि सेना भटभूरि पूरि गए नभ पैं घने ॥

॥ * ॥ चौपई ॥ * ॥

यह सुनि शक्र क्रोधमों राते। चले सङ्ग ले सुमन बिभाते ॥ विद्याधर गन्धर्व अघ मन। उम्बर तुम्बर किन्नर वर पन ॥ वसु आदित्य मरुतगण जेती। सहित समाज चलत भे तेते ॥ रुद्र कुबेर बरुण यम अगरे। सगण सवर्ग साजिदल डगरे ॥ सिद्ध पितर राजर्षि महाने। चले सगर्व बीररस साने ॥ चले अश्वनी के सुत दोऊ। सोम विख्यात चले सजि सोऊ ॥ दिग्प्र मरन्द युद्ध के चावन। चले चले अहिगण छविछावन ॥ किते बाजि पैं चढि छवि छाए। कितने गजारूढ मनभाए ॥ कितने चले आहिन पैं चढि चढि। कितने चले मृगनि चढि चढि बढि ॥ हयभारूढ चले सुर कितने। चले रथन चढि सुमन अनगिने ॥ निज निज यूथ ध्वजन सौं भूषे। चमूओज असुरन की दूषे ॥ सिगरे तन मैं कवच बिहारे। बिविधि भांति के आयुध धारे ॥ तैंतिसकोटि सुमन भय भारद। चले स क्रुद्ध सु युद्ध बिशारद ॥ मणिमै मंडत सुरथ अति नीको। बिसुकर्माको रचो सुघीको ॥ अति उन्नत शुचि ध्वज सौं शोभित। हेंचहि जाहि लखि दैअत लोभित ॥ हरिताश्वन सह शोभित ऐसो। हरित पत्र रजताचल जैसो ॥ अस्त्र भेद अगिनित सौं भारो। मातलि के कर सकषि सवारो ॥ *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

तिहि रथ चढि सुरसैन मधि शोभित भए सुरेश। यथा निशा लहि सारदी उडुगनमधि राकेश ॥
चषि बृहस्पति यमदग्नि नारद मुनि तप धाम। अरु वसिष्टमुनि पढत तह शुभ स्वस्त्ययन ललाम ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

सुर अरु असुर सकै न दमि बजि चढि बढि बढि भिरे ।मिले दोय जलसेन बेला नाघि सतेज मनु॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

शूल शक्ति मूशल दुहुँदिशि सोँ । मारत भए बीर भरि रिसिसोँ ॥ भिन्दिपाल तोमर असि शरसोँ । कूटपाश दीरघ मुदगर सोँ ॥ दुहूदिशिसोँ भट मारण लागे।सगरव बैन उचारण लागे॥ द्वै द्वै धीर बीर भिरि भिरिकै । कीन्हे कठिन युद्ध थिरि थिरिकै ॥बलि को सुवन बाण जो तासोँ भिरे मरुत पञ्चम भरि भासोँ॥ ध्रूव बसु भिरे भरे व्वर बल सोँ। अनायुषाको सुत भट बलसोँ ॥ भिरे नमुचि सोँ धर बसु परणी । बिशुकर्म्मा मयसो भट्ट भिरणी ॥ भिरे बायु अरु दहत पुलोमा। सम्बर भग आदित्य सजोमा ॥ सरभ शलभ दैयत मदमाते। शशि सोँ लरे बीररस राते ॥ बिषक सेन साध्य शुचिमेति सोँ ॥ लरे बिरोचण भरि रिसि अति सोँ ॥ बिचासुर पूरो अय पनसोँ। भिरो अश्वनीके सु सुतनसोँ ॥ भिरो अंशु आदित्य प्रबलसोँ । बली कुम्भ दैत कल छल सोँ ॥ अजैक पाद रुद्र धनुधर सोँ । भिरो राहु गरबो चढियरसोँ ॥ अनुह्राद धनपति सोँ भिरि कै । कीन्हे कठिन युद्ध तहँ थिरिकै ॥ बिप्रचित्ति दानवपति घोरा। भिरो बरुणसोँ बिदित कठोरा ॥ जो प्रह्लाद धर्म्म अधिकारी । भिरे सकुद्र बीर धनुधारी ॥ बलि अरु इन्द्र अधिप अधिकारी । लरत भये फिरि सुयश बिचारी॥एहि बिधि धीर बीर इत उत के। भिरि भिरि लरत भये बल युत के॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

ब्रह्मा निजसुत ऋषिन सह अन्तरिक्ष महि आय । लखत भये सुर असुर को युद्ध अमोघ सचाय ॥
इत उतके बहु बाद्यबर घण्टनके रव भूरि । सुभटहाँक ज्याघोष बर गयो दिशनि मैं पूरि ॥

॥ * ॥ सावन्तछन्द ॥ * ॥

बर अस्त्र इत उत तेँ चले। जे गात अरिगण के मले ॥ भट डाँढि दुहुँ दिशि सोँ हने। दुहुँ बीर बीर मरे घने ॥ बहि धार शोणित की चली। चहुँदिशि तरल तासोँ रली ॥ शिर बाहु पग धनु ध्वज कटे ।जल जीव समतहि मधि अटे ॥ *●*●*●*●*●*●*●*●*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

मरुत धीर सावित्र तिहि बलिको सुत भटबाण । आलवद्ध सम करि दयो मारि अनगिने बाण ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

तब सावित्र क्रोध करि छांडे । उत्तम शक्ति बाणपैँ चांडे ॥ बाण शक्तिकहँ आवत देखी ॥ शरसुरप्र सोँ काढे तेखी ॥ तब सावित्र खड्गकरि लीन्हे । जेहि बिसुकर्म्मा निर्म्मित कीन्हे ॥ सो कर

विद्युताख्य असिवांकी। गये बाण के ढिग रथ हांकी ॥ निरखि बाण कटु बचन उचारे ॥ मंत्रित बाण अन जिन मारे॥ तब सावित्र विकल ह्वै भागे। बलि ढिग गये बाण सुदपागे ॥ भट बल असहनदा गुरु गहि कै। ध्वनिधूत सुहि थिरहि थिर कहि कै॥ तब सिगरे बसु अनगिन बाणन। भवलिहि हनत भे धनुष विधानन॥ तब बलि गदा पाणिमें लै कै । तजि रथ चपल चित्त निरभै कै ॥ मत्त मतङ्ग सदृश बिरुंजानो। गदा प्रहारि प्रलै दिन ठानो॥ सब बसु लरि लरि व्याकुल ह्वै कै।भागत भये भीतसा स्वै कै॥ थिरि ध्रुव बसु अनलनसों लरि कै । फिरि भिरि बाऊयुद्ध अति करि कै॥ थिरि न सके तुलवलसों हारे। भागि शक्रको पास पधारे ॥ *◆*◆*◆*◆*◆*◆*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

भृगु सुतसा कृत:जयक्रिया बढि सगर्व प्रहलाद। यमके सनमुख जात भे करत सहास प्रवाद ॥
लउ बैर निज पूर्ब को बध करि यमको आजु। मोदित बिलसैं असुर गण तजि हियको दुख लाजु ॥

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

प्रबल सत्तरि सहस सुभट गजस्थ तितक हयस्थ ॥ सहित राजथै प्रलयदिनके मेघ सदृश गरस्थ ॥ सुभट साठिहजार सुरथो चन्द्रदिग्नि बलवान। लाख भटसह प्रास मधिम कालनेमि अमान ॥ बांधि व्यूह अभेद्य यहि विधि जेरि बिबिध निसान। लगे यमके सैन प्रति तकि तजत अनगिन बान ॥ रथी साठिहजार हे प्रहलादके सुत बीर। चलयसैल सप्रलये ते लरत भे रण धीर ॥ रक्तलोचन क्रोधि अन्तक गहे दीरघ दण्ड। व्याधि आधि उपाधि गणकी सजे सैन प्रचण्ड ॥ लोह दण्ड प्रहारि भटन संहारि व्यूह बिदारि। भिरत भे प्रहलादसों पिलि तासु नाश विचारि॥ दण्ड मुद्गर शक्ति पट्टिस जष्टिस मूसल बान। खड्ग तोमर भिन्दिपाल हि आदि अस्त्र अमान ॥ व्याधिगणपैं असुर छांडे असुर गणपैं व्याधि। किए सङ्गर घोर ते तहँ यमकी गति बाधि ॥ कटे अनगित सुभट करि करि द्वन्द युद्ध अपार। बही सरिता रुधिरकी अति अगमं अप अकरार ॥ अरे सुभ समूह तामै परे इत उत जात । भारतिमधि मेरु गिरि सम लहरि बसमे भात ॥ घोर सङ्गर होत भो तहँ भूरि भयको दानि। कटे कटिसों भूमि पटि भई बाउकी घानि ॥ लरे रण क्रम निविड मै प्रहलाद अरु यमराज। मत्त द्वै गजराज सम भिरि कीर्त्ति करवी काज॥ उभै घनसे उभै बरसे उभैश हत दुन्द । कवच छणयुत देह माहिपैं बाण बन बर बृन्द ॥ घोरवर प्रहलादसों शरी आनि दसतर भीति । द्वन्द्वपैं यमराज मे बर भूमिसों तजिभीति॥ दीह दुन्दुभि जीतिको बजावय तब प्रहलाद। लगे मरदन अन्य बढि सुर सैन लहि अहलाद ॥ जिते भट सिर कटे तितने पिले जपटे जात। शृङ्ग भिन्न सपक्ष गैरिक सैल सदृश लखात ॥ *◆*◆*◆*◆*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

अनुल्हाद प्रह्लादको अनुज धनुर्धर वीर । कोटि रथि सह भिरत भो धनपतिसों लहि तीर ॥
अस सुभट अनगिनित सह धनपति धृत धनुबान । अनुल्हादसो भिरत भे गिरिसों मेघ समान ॥

॥ * ॥ भुजङ्गप्रयातछन्द ॥ * ॥

भिरे वीर वीरानसें रोस बाढे । प्रशृङ्गै गिरिन्दै न से जेउ काढे ॥ तजे शूल औ तोमरे शक्ति बाने। गदा मूसलै भिन्दिपालै अमाने॥ घने चक्र बक्रा युधे वज्र औ से। हने दाकि कै किहांकै अनेसे॥ कटे सूरलाखे इतैहूँ उतैके । गये वीर बांके तितैहूँ तितैके ॥ बही धारता शोनितोघा नदीकी । अछारा कछारा अपारा इदीकी ॥ सुसे वाल अग्रा वलोग्राह रुडे । परी पाणि मीने महाकूर्म मुंडे॥ ध्वजा चाप अन्यायुधो वृन्द शाखे। गिरे कूल ह्वै मत्तमातंग लाखे॥ रथैं नाव औ भौंर जे चक्र टूटे। लसे फेन सो जे बहे बाणकूटे॥ पदातीह लेम जनी सुच डूंडे। सबै शस्त्र शाखनि मैं साबु सीछे॥ भरे खपरे कुम्भ निर्भीति जीकी । बनी वारि हारी अनी योगिनीकी ॥ खबीसैं सुजांवो अजाची विहारैं। जलासो पक्षि गीध कागैं विहारैं ॥ गिरे धाइलै ते खुलै फेरि डूबैं। थके परि आलटै प्राण ऊबैं ॥ भिरैं वीर मातंग पैतें असूरैं। वडे कूल पैतें अथा धीर कूदैं॥ कटे मुण्ड केते बली बार सैरैं। मनो भारतीपैं घने केतु पैरैं ॥ बही मेद जूदा निकी धारतै में। लसै भारती मैं धसैं बंगजे सें॥ कठी वांहिनी सै ते वांहिनी जो। कहे नाहि जौ भूप तौ जानि लीजो ॥ *⬭*⬭*⬭*⬭*⬭*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

धनपति गुणि अद्भुत अनघ मस्त्र मस्त्रकी सृष्टि । अनुल्हादके सैनपैं करे बाणकी वृष्टि ॥
निज दलव्याकुल निरखिके अनुल्हाद्व अति तेखि। अति उन्नत विसतरित तह लिये ऐंचि ढिग देखि॥
तासो मारि कुबेरके रथकों प्रबल तुरङ्ग । ह्वै मोदित सैनिकन सह कस्यो कठिन रणरङ्ग ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

नाना विधिके आयुध मोखे । कठिन कराल शैलभिद चोखे। गहि गहि गरजि गरजि वढि वढिकै। भिह भिह कहि सब मनु पढि पढि कै॥ असुरन हने सुमन रिषि राते। असुरण हने सुनि दैयत मद माते ॥ दैयत ह्वै चलनसो अरदित। किए सुरणसो अरि दल मरदित॥ शिला धरे काढे भुज दीखे । जनु युग अहि महिधरण सोखे ॥ लखि सुरपतिसा निज दल रोधित। लै गुरु शिला दैत पति क्रोधित॥ धनाधीशकी रथ पैं मारे । तिहि लखि धनपति अनत विहारे ॥ भे रथ रथी बाजि ध्वज चूरन । लखि मोदे दैयत सम्पूरन ॥ फिरि लै अन्य शिला अति भारी । अनुल्हाद दैयत रणचारी ॥ चाहि धनदपैं करण प्रहारा । गरजत चलो क्रोधको भारा ॥ लखि कुबेर हिय अति रिस भारे। तदपि तासु हिय गदा प्रहारे ॥ सहि सो गदा कांपि दैतेशा । कीन्हेवि शिला प्रहार

कु भेशा ॥ तातें धनपति मोहित व्है कै । महि प गिरे चावचित ज्येंकै ॥ तहँ धनेश कहँ मुरछित देखी । सिगरे यक्ष धीर अति तेखी ॥ दैतन मारि दूरि करि दीन्हे । धनाधीशकर रक्षण कीन्हे ॥ एक मुहूर्त्त मूरछित रहि कै । चेति धनेश उठे मुद लहि कै ॥ *~*~*~*~*~*~

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

गदा पाणि अति क्रोध करि गरजि दैतदल घोर । चले वरपि जक्षाधिपति तेज पुञ्जमें घोर ॥
अनुल्हादके करनितें दुसतर शिला प्रहार । व्यर्थ निरेखि अवध्य गुणि भगे दैत विकरार ॥

॥ * ॥ गुरुतोमरछन्द ॥ * ॥

तब भजत निज दल देखि कै । दैतेश अतिसे तेखि कै ॥ बर बचन संगर बटेरि कै । करि अभैय तिनकहँ फेरि कै ॥ बऊ जूथ जूथपसों भिरो । बढि आइ सुरदल सो भिरो ॥ बर अस्त्र बऊ बऊ भाँतिके । असि हेममे मे कान्ति के ॥ तहँ चलत भो दुऊ ओरसों । नभ पूरि गो रव घोरसो ॥ भट कटे बऊ दुऊओरके । दउ प्रवण बीर अघोरके ॥ तकि दैतपति धनुबाण सों । भो भिरत धनद अमान सो ॥ तहँ युद्ध कठिन कराल भो । ब्रह्माण्ड सिगरे लाल भो ॥ *~*~*~*~

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

अनुल्हादके बाण सो व्है व्याकुल अलकेश । गदापाणि मे ले गरजि सनमुख चले शुभेश ॥
गदापाणि आवत निरखि धनु तजि शिला उठाय । चलो गरजि वैश्रवणपैं अनुल्हाद गुरकाय ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

धनाधीश भय भूरि शिलापाणि असुरहि निरखि । सहित यक्षभट भूरि गे सुरपति पैं समर तजि ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

गुणि प्रचेत दानव बल भारो । गुर मृगेन्द्र सम रण बन चारो ॥ उलका सहस सदृश सम भारा । कालदण्ड सम परिघ अपारा ॥ लीन्हे प्रबर प्रबल जगजेना । भिरो बरुणसों बढि सह सेना ॥ तासु प्रभाव सुजान निहारे । भे सिगरे सुर सु मुनि उरारे ॥ घन सम दनुज घोर धुनि करिकै । भूरि भीत सुरदल मे भरिकै ॥ परिघ अमोघ बरुणके दलप । हने इन्द्र पवि यथा अचल पैं ॥ मरे लाख भट तासु प्रहारे । फिरि सों परिघ बरुण पैं मारे ॥ लागि परिघ आपबके तनमे । चूरचूर व्है उडो गगणमैं ॥ दश दिशि उडे चूर बऊ जैवै । लसे अमित उलका सम तैवै ॥ धीर बरुण तब अति रिषि कीन्हे । निज शुभटन कह शासन दीन्हे ॥ बढि दानव दल मरदउ भाई । सहज जीति यश बिसद बडाई ॥ सुनि सांवय बीर रस पागे । दोह दनुज दल मर्दन लागे ॥ सक्ष भूर्त्तिमत सिगरे सागर । सिगरे नाग युद्धबिद नागर ॥ और प्रबल बऊ सुभट घनेरे । लागे कारुण युद्ध घऊ फेरे ॥ विप्रचित्ति अरु बरुण अभय के । घनुंग बीर बर अरथी अयके ॥ लागे बऊ विधि अस्त्र चलावन । मारु मारु धरु धरु कहि धावन ॥*~*~*~*~*~*~*~*~*~*~*~

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

विप्र चित्ति अरु वरुण भिरि कीन्हे युद्ध प्रकर्ष । दोउ धीर धुरी न भट धनुधर गिने अधर्ष ॥
लरि नागन ते भे विकल सिगरे दनुज समान । किते चले भजि समर तजि किते गिरे तजि प्रान ॥

॥ * ॥ तोटकछन्द ॥ * ॥

लखि दानव राज सरोष भयो । महडाह तजे शुभ मंत्र ठयो ॥ तिन बाणन तें भय व्याकुल ह्वै । अहि जूथ दुरे अति व्याकुल ह्वै ॥ तजि आय प्रज्वाल भये विखिलै । बरषि रश्मि उदंडनि सों सखिलै ॥ दनुजाधिप को दल भीतित कै । मुमुदे सहशासन रीतितकै ॥ भट आयव के तजि बाण घने । दनुजाधिप के बड़ बीर हने ॥ दनुजेश महा रिसिसों सरस्यो । शर आपव के तन पैं बरस्यो ॥ बड़ बारनि बाणन काटि दिए । जितने धनु आपव छानि लिए ॥ बड़ बार जलाधिप चाय गहे । पर मारण को नहि दाव लहे ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

तब व्याकुल ह्वै वरुण ते सदल इन्द्रके पास । भजे दुन्दुभी जीति के दानववृन्द सहास ॥
देखि पराजय सुरन को अग्नि क्रोध सों पूरि । उग्र प्रभाव किए प्रगट दुस्सह वर्चस भूरि ॥

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

वायुचक्र लोहित हय युक्त । धूमकेतु रथ परम प्रयुक्त ॥ प्रज्वलित ह्वै कठिन कराल । पूरे दैत्यन दलमें ज्वाल ॥ भए कोटिभट सामा सेष । कोटिन भए अधजरे भेष ॥ सुहित सखा को सतगुण पास । मारुत प्रबल चलो तेहि काल ॥ प्रले परो दैत्यनदल मध्य । भयो दहत जे प्रबल अवध्य ॥ प्रहलादादिक जे बर बीर । थिर न रहे कोउ धरि धीर ॥ तब मय अरु सम्बर मतिमान । माया बो दैत्यन बलवान ॥ वारुण अरु पार्जन्य महान । माया प्रगटित किए अमान ॥ दशदिशि पूरि बारि को धार । कीन्हे शमित ज्वाल विस्तार ॥ ह्वै निशङ्क फिरि दैत्य सक्रुद्ध । लागे करन सुरण सो युद्ध ॥ फिरि दैतन कहँ प्रमुदित देखि । सुर गुरु निज मन मैं अवरेखि ॥ किए अगिनि को अस्तुति बेस । भए प्रबल फिरि अगिनि सुभेस ॥ फिरि अग्निहिं बर्धत लखि दैत । तजि साहस सिगरे असमैत ॥ बलिके पास जाइ भट भूरि । त्राहि त्राहि टेरे भयपूरि ॥ तब बलि सों प्रहलाद सुजान । कहत भए इमि करि अनुमान ॥ तुम विधि सों लहि बर मनमान । हो त्रैलोक्य जयन गुणमान ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

ज्वाल ज्वालत डरि असुर लीन्हे तुव अवलम्ब । शीघ्र इन्द्र सों लेउ जय अब मति करउ विलम्ब ॥
सुनि सुवचन प्रहलाद के बलि दैतन्ह सक्रुद्ध । चलो इन्द्र प गुणि करन दुस्सह दुस्तर युद्ध ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

प्रलयकाल को घोर घन मण्डल सों मढि दिशनि। धनुघोसन को सोर पूरित करि ब्रह्माण्ड मे॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

ध्वज धनुषक्क आदिश मन माए। अस्त्र अशनि सों दश दिशि छाए॥ बरषत बाण बारि भय पूरत। बेग बायुपर धृति बन तूरत॥ एहि बिधि बलि कहँ आवत देखी। सब दिगपाल सुमन गण तेखी॥ जुरि अति जव सों बढि कै आगे॥ तेहि प्रतिकूल बायु सम लागे॥ लागे चंसन अस्त्र द्रुत उतंसों। अभिरे धीर बीररस युतसों॥ कालदण्ड सम कठिन कठोरा। बर कोदण्ड बज्र सम घोरा गहि बलि मारि शरण मुद लीन्हे। सिगरे सुरण पराजित कीन्हे॥ भागि सुमन सुरपति पैं आई। अस्तुति करि दीन कहे बुझाई॥ हम सब हाँहि दइत सो पीडित। तुम लखि होउ नेक नहि व्रीडित॥ है सरोष कर आयुध लेहू। सुरगण कहँ निर भय करि देहू॥ सुनि पुरहूत क्रोध बिसारे। अगिनित आयुध बलि पैं डारे॥ तिन आयुधन अस्त्र सों भेदो। हने अस्त्र बहु बलि धनुबेदी॥ अस्त्र कृशानु इन्द्र तब मारे। बलि पार्जन्य अस्त्र सो बारे॥ तब पुरहूत बज्रमहि ताने। तासुनाश हियमें अनुमाने॥ ताछण भई बिशद नभ बानी। बज्र तजहु मति सुरपति ज्ञानी॥ उग्र तपस्या पूरण करि कै। लहि बिधि सों बरशतब्रत चरि कै॥ है अजेय बलि रिसि परिहरहू। बज्र प्रभाव व्यर्थ मति करहू॥ *✿*✿*✿*✿*✿*✿*✿*✿*✿*✿*✿*✿*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

जेय सर्बथा बिष्णु सों हैं यह सुनो निदान। समर भूमि तजिभजहु अब भजहु ताहि मतिमान॥
यह सुनिकै रणभूमि तजि सहित सुरण बल चैन। युबतिन सह बलि जात भे पूरब दिशि बहुनैन॥
जय दुन्दुभि बजवाइ तब है मोदित दैतेश। सदल इन्द्र पुरमैं किए सानद शुभद प्रवेश॥
शुक्रादिक निज पुज्य द्विजगण सों लहि अभिषेक। त्रिपुराधिप इन्द्रत्व लहि बिहरे बलि सु बिबेक॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

सहित गर्ब समुदाय लोकपालना नीति युत। यथा उचित सुखदाय करत भए बलि धर्म्मबित॥
है प्रशन्न तहँ आय बलिहि प्रशंसि सुप्रेम युत। श्रीपुरमासुखदाय बसी तासु उरहबर्म मै॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याभिशमिना श्रीबन्दीजनकाशीबासि गोकुलनाथात्मजेन गोपीनाथेन कविना बिरचिते भाषायां भारतान्तर्गते हरिवंशदर्पणे बामन प्रादुर्भावे बलिबासवयुद्धो नाम पञ्चत्रिंशोऽध्यायः॥ *✿*✿*✿*✿*✿*✿*✿*✿*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

बलि बासव के युद्ध को सुनि बिरतांत सभेद। बैसम्पायन सों कहे जनमेजय सहि खेद॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

बलिसौं इन्द्र पराजित ह्वै कै। कीन्हे कहा कहौ मुद भ्वै कै ॥ वैसम्पानि कहे सुनु राजा। रणतजि सुरपति सहित समाजा ॥ प्राची दिशा अदिति पैं जाई। कहे सकल बिरतांत बुझाई ॥ सो सब दशा शक्र सौं सुनि कै। अदितिदेवि निज हिय मे गुणि कै ॥ सुरगण सह शक्रहि सँग लै कै। पति पैं गई शोच बढ़तै कै ॥ पितहि पुरन्दर दशा सुनाए। सुनि शक्रहि कश्यप समुझाए ॥ हानी औरसि होय ध्रुव जानो। सबकरि कर्म्म लहैं फल मानो ॥ करै कर्म्म जो जेहि फलयोग। अवशिकरै सो सो पद भोग॥इमि कहि तिनसह दम्पति आरज। गे विरञ्चि प गुणि शुभ कारज॥ सनक सनन्दनादि ऋषि गण सौं।अरु इत उत्तम कर्म्म सुजन सौं ॥ सेवित चतुरास्यहि तहँ देखे। तेज पुञ्जपरभा सौं भेखे ॥ शास्त्रबेद की धुनि सुनि हरषे। मूर्त्तिमान तहँ सब कहँ परषे॥सुर सुरपति सह कश्यप विधि कौ। बन्दे चरण दानि सब सिधि कौ ॥ कहे विरञ्चि सुनो सब कोई। हम जाने है तुव हित ओई॥अब धरि धीर शोच परिह रहू। तासु उपाय कह सो करहू॥ आपत परे धीर ह्वै रहिये। ताहि बारिबे की विधि गहिये॥ *◆◆*◆*◆*◆*◆*◆*◆*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

उत्तरदिशि चीराब्धि के जाइ उदीचीकूल । ध्यावहु प्रभु भगवान कहँ जो बिश्वहुज मूल ॥
ब्रत समाप्त मैं सुनिहिं जो बर बाणी मुददानि।बर मांगहु सो देहिँ हम सर्ब सम्पदा जानि॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

प्रभु मम आत्मज होऊ यह मांगेउ कश्यप अदिति।मम सुबन्धु करि छोऊ होउ कहेउ सुरसह सुरप॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

सुनि बिरञ्चि के बचन सोहाए। सुरन सहित कश्यप सुख पाए ॥ सविधि बन्दि विधि के पद भाए। गए शीघ्र ते जहां बताए ॥ अमृतस्थान नामथर पावन। बैठे तहां जाय सब चावन ॥ अन्धकार म सो शुभ देशा। जहां न कछु पवनहु को लेशा ॥ तहँ कश्यप सौं दिच्छित ह्वै कै। सुब्रत सहस बारषिक लै कै ॥ प्रभु चरणांबुज मैं मन दीन्हे। सुरन सहित सुरपति तप कीन्हे ॥ कश्यप बेद बिहित मन भाए। अस्तव पढि प्रभुके गुण गाए ॥ अस्तव सुनि प्रभु आनद दानी। बोले बर ब्रूहि बर बानी॥ सुनि ते पृथक पृथक बर मांगे। जिमि विधि सौं सुनि हैं अनुरागे॥सुनि कहि एव मस्तु प्रभु मानद। कीन्हे तिन्है बिदा तब सानद ॥ सुनि सुरगण सह आनद छाए। कश्यप दम्पति निज ग्रह आए॥ कछु दिन गए अदिति ब्रत धारिणि। भई गर्ब युत मङ्गल कारिणि ॥ सहस बरिष बीते तेहि दिन सौं। भे प्रभु प्रगट भये विधि जिन सौं॥सुर समूह अति आनद कीन्हे पढि अस्तोत्र दण्डवत कीन्हे ॥ तुम्बर अरु गन्धर्ब सुखारे। बहु प्रकार करि गान बिहारे ॥ सब अप्सरा मोद सौं राची। करि करि गान भांति बहु नाची ॥ *◆*◆*◆*◆*◆*◆*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

सर्व प्रजापति सर्व ऋषि सर्व नाग तहँ आय । करि प्रणाम अस्तुति करे भरे मोद सों छाय ॥
कहे पितामह आइ तहँ कश्यप सों लहि मोद । भए पुत्र तव विष्णु प्रभु दायक परमविनोद ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

दरसि नौमि सुख पाय गए पितामह निज अयन । सुरगण सों सह पाय सानुकूल ह्वै प्रभु कहे ॥

॥ * ॥ रोलाछंन्द ॥ * ॥

सुनो सुरगण सहित सुरपति कहहु जो निज अर्थ । करैं सो हम शीघ्र करि तव सुखम कोविद अर्थ ॥ कहे सो सुनि सुमन सुरपति सुनहु प्रभु मम बैन॥पाय विधि सों बिशद बर बलि दैत्यपति बल ऐन ॥जीति भोगत नीति जुत त्रैलोक्य ह्वै निर भीत । देहु सो फिरि हमहि करि तेहि सासना सों रीत ॥ वाजिमेध महानमख सो करत हैं एहि काल । भए बिनु तेहि सिद्ध मम हित सिद्ध करि यै हाल ॥इन्द्र के ए बचन सुनि प्रभु बिष्णु बावन रूप ।कहे संक्षित करि अविक्षित बचन सुखद अनूप ॥ मोहि ताके यज्ञमह लौं चले सँग लै जीव । जाइ तहँ हम करव जो करतव्य श्रेष्ठ अतीव ॥ बचन यह सुनि प्रभु हि लै तहँ गए जीव सुजान । करत हो जहँ यज्ञ बैठो दइतपति मतिमान ॥ मंजु मूँजी धरे अरु उपवीत अति रमणीय । लए दच्छिण पाणि मैं शुचि लकुट बर कमनीय ॥ बाम करमैं छत्र पूर्ण नक्षत्रपतिहि उदार । रश्मि गहि मनु लए बारिज बाल रवि पैं चारु ॥ रूप अनुपम बिशद बामन ब्रह्मचर्य्य शुभेश । जाय निरखत भए दितिज बलिहि सुनहु नरेश ॥ शुक्र आदिक ऋषि सभासद गणनि सह उपविष्ट । करत उत्तम यज्ञ मङ्गल करन हरन अनिष्ट॥ जाय तहँ प्रभु यज्ञ बरणन ब्याज बलिहि प्रशंसि।पढे नूतन यज्ञ बिधि बेदोक्त पर बिधि दंशि ॥ शुक्रआदिक ऋषि बिलक्षण यदु बिचक्षण पर्म्म । मौन ह्वै तकि रहे सुनि सो सत्य अद्भुत कर्म्म ॥ उपाध्यायन लखि निरुत्तर कहत भो दइतेश । आपु के सुत कौनके हो प्रगट भे कोंहि देश ॥ हहु सहस अवृद्ध बय सु प्रवृद्ध बुद्धि अनन्य । तुम्हहि सुतलहि भयो को सुर पितृ अहि ऋषि धन्य ॥ तुमहि देखि अपूर्व गुणि मैं भयो परम प्रसन्न।कहो तुम सो देउ आहित भए अवकप्रपन्न॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

यह सुनि बामन प्रभु कहे सुनु हे बलि सरबज्ञ । मांग्यो साढे तीनि पग महि मम गुरु हत यज्ञ ॥
सो मामन हो पास तव आयों सहित सनेह। देन कहे तुम आपु तौ सो मागत हौं देउ ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

यह सुनि बलि दैतेश कहे बिप्र चूकत कहा । जैहो कितनो देश निजपग सांढे तीनि सों ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

राज्य हेम मणि हय गज मागौ। जेहि लै लहि विभूति अनुरागौ ॥ सुनि बोले बामन सुनु राजा। एतनिहि चाहत सकल समाजा ॥ हम द्विज निति तप ब्रत अभिलाषैं। राज समाज तुच्छ गुणि नाषैं ॥ इतनोतो गुरु के हित मागैं। अधिक मागि नहि भृतब्रत त्यागैं ॥ है जिनके संतोष पदारथ। ते नहि चाहत हैं अन्यारथ॥ यहँ मुनि गुणि बलि सहित सनेहू। साढे तीनि पग महि देहू ॥ तब तथास्तु कहि बलि बैठाए। गहि सुदर्भ भृङ्गार उठाए॥ कहे शुक्र सुनु हे बलि ज्ञानी। महि मति देऊ कहा मम मानी ॥ इन्हें देखि तुम आनद लीन्हे। पर विचार करि इन्हें न चीन्हे॥ मायाछल कौतुकी हरि हैं। बंचि विभूति सर्व तव हरिहैं ॥ प्रभु भगवान इन्द्र हित कारण। आए करि बामन बपु धारण ॥ बलि ए बचन शुक्र सौं सुनि कै। चुप रहि घरीएक लौं गुणि कै॥ ऐसो पात्र मिलिहि को दूजा। देव दान करि जाकर पूजा॥ कहि बिचारि फिरि दैन बिचारे। लखि तब फिरि इमि शुक्र पुकारे ॥ बलि एहि महि मति दे मति देतू। मम सुबचन निज हित गुणि लेतू॥ सुनि बलि कहे कहो मति ऐसो। धर्म्म रहे हित गए अनैसो॥ * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

बोले तब प्रहलाद मति देऊ भूमि दैतेश। तेई बामन रूप धरि आए फेरि सुरेश ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

जे नृसिंह चलि आय बधि हिरन्यकश्यप हि जो। किए सुखित सुखदाय सहित सकल सुर सुरपतिहि ॥

॥ * ॥ तोमरछन्द ॥ * ॥

सुनि कहे बलि यह बैन। इमि कहन लायक है न ॥ असपात्र परम अनन्य। नहि लह्यो कोऊ अन्य॥ तेहिं आपु दोबा भाषि। नहि देहि किमि ब्रत नाषि॥ कहि बचन पालन कर्म्म। है परम उत्तम धर्म्म ॥ कहि बचन नकरत जौन। है उग्र पातक तौन ॥ गुरुपाप लोबोदान। यह कहत सब मतिमान॥ जे दान रोकत देत। ते पाप पुञ्ज निकेत ॥ बर पात्र भाग्यन पाय। महिदेव औसि सचाय॥ लहि पात्र उत्तम देव। है काँचुदै मणि लेव ॥ इमि भाषि दैत उदार। लै कनक मैं भृङ्गार ॥ जल डारि करि संकल्प। महि दए अल्प अनल्प ॥ कर विजय करण पसार। प्रभु लए जल कुश धारि ॥ भे मुदित बलि दै ताहि। जिमि दिपत अग्निनिहि चाहि ॥ शुभ दीप बारि देखाय। जन होतहै युत चाय॥ तब भए बरधित विभु। प्रभु विश्व सृजन सहिभु ॥ बढि नाघि लै सब लोक। भेकत सुरण अशोक ॥ * * * * * * * * * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

प्रहलादादिक सुभट बहु रोके पद तेहि ठौर। शत कोटिन भट लए प्रभु नापि लोक करि गौर॥

जीति दए प्रभु इन्द्रकहँ तीनि लोक अभिराम। सुतल नाम पाताल मधि बलि को दीन्हे धाम ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

नागफाँससौं बाँधि बलिसो बोले विष्णु प्रभु । यज्ञहि सदा अराधि सुखलहि हो बसि सुतलमधि ।

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

तब बलि कहे जोरि युगपाणी । मोहि असन कछु दीजै ज्ञानी ॥ सुनि प्रभु कहे सुनो बलि सोऊ । करिहि श्राद्ध बिनु श्रोत्री कोऊ ॥ बिनु रित्विज के आहुति जेते । अन्त दक्षिणा बिनु मख तेते ॥ दानं बिना श्रद्धा को जोई । तासु पुण्यफल तुव हित होई ॥ यह सुनि कै प्रभु सौं बलि राजा । गए सुतल मधि सहित समाजा ॥ प्रभु सुरगण कहँ आसन दीन्हे । यथा प्रदेश बसे मुद लीन्हे ॥ लहि आसन सुर शुभदिन बर मैं । बसे पूर्ववत निज निज घर मैं ॥ बसे पाकशासननिज पद पैं । भयो जगत रत निज निज हद पैं ॥ सिगरे लोक मोद सौं राते । गे क्षीरधि मधि विष्णु सोहाते ॥ कंबलाश्वतर आदिक व्याला । सकल सप्तशिर कठिन कराला ॥ पीडित भे बलि तिन सौं बाधे । तब आरत ह्वै प्रभुहि अराधे ॥ ताही क्षण तहँ नारद जाई । बलि सौं कहत भए समुझाई ॥ बन्धन मोक्ष उपाय उदारा । कहौं करो सो करि सु बिचारा ॥ अस्तव श्रीपति को मन भावन । पढो ताहि गुणि शोक नसावन ॥ बन्धन मोक्ष नाम भव हरता । मन वांछित सुख सम्पति भरता ॥ इमि कहि मुनि अस्तोत्र पढाए । ताहि पाठ करि बलि सुख पाए ॥ *
———*———*———*———*———*———*———*———*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

जासु नाम लै होत जन भव बन्धन सौं मुक्त । पढि ताको अस्तोत्र बलि किमि न होहिँ मुदयुक्त ॥

मंत्रः ओं नमोऽस्त्वनन्तपतये अच्युताय महात्मने। अजेयाय देवाय पद्मनाभाय विष्णवे॥ सप्तसूर्य्यवपुः कृत्वा त्रीन् लोकाक्रान्तवानसि। भगवान् कालकालस्त्वन्तेन सत्येन मोचय॥ नष्टचन्द्रार्कगगणे क्षीण यज्ञतपःक्रिये। पुनश्चिन्तयसे लोकांस्तेन सत्येन मोचय॥ ब्रह्माद्देन्द्रवरुणाग्निसरिद्भुजगपर्वताः त्वत्स्थाद्दष्टाद्विजेन्द्रेण तेन सत्येन मोचय॥ मार्कण्डेयः पुराकल्पे प्रविश्य जठरन्तव। चराचरगतन्दृष्ट मीन सत्येन मोचय॥ एकोविश्वस्सहायस्त्वं योगी योगमुपागतः। पुनस्त्रैलोक्यमुत्सृज्य तेन सत्येन मोचय॥ जलशय्यामुपासीनोयोगनिद्रामुपागतः। लोकांश्चिन्तयसे भूयस्तेन सत्येन मोचय॥ वाराहं रूप माश्रित्य वेदयज्ञपुरस्कृतं॥ धराजलोद्धृता येन तेन सत्येन मोचय। उद्धृत्य दंष्ट्रया यज्ञान् लोकान् पिण्डानकृतवानसि। त्वम्पितृणामपि हरेस्तेन सत्येन मोचय॥ प्रदुद्रुवुः सुरास्सर्वे हिरण्याक्षभयार्दिता परित्राता त्वया देव तेन सत्येन मोचय॥ दीर्घवक्त्रेण रूपेण हिरण्याक्षस्य संयुगे। शिरोजहार चक्रेण तेन सत्येन मोचय॥ भग्नमूर्द्धास्थि मस्तिष्को हिरण्यकशिपुः पुरा। ओंकारेण हतो दैत्यस्तेन सत्येन मोचय॥ दानवाभ्यां हृता वेदा ब्रह्मणः पश्यतः पुरा। परित्राता त्वया देव तेन सत्येन मोचय॥

हत्वा हयशिरो रूपं हत्वातु मधुकैटभौ । ब्रह्मणे त्वर्पिता वेदास्तेन सत्येन मोक्षय ॥ देवदानवगन्धर्वा यक्षा सिद्धा महोरगाः । अन्तन्तव न पश्यन्ति तेन सत्येन मोक्षय ॥ अपान्तरतमा नाम जातो देवस्य वै सुतः । ख्याताश्च तेन वेदार्थास्तेन सत्येन मोक्षय॥ वेदयज्ञाग्निहोत्राणि पितृदत्तहवींषि च । रहस्य न्तवदेवस्य तेन सत्येन मोक्षय ॥ ऋषिर्दीर्घतमा नाम जात्यन्धो गुरुशापतः । त्वत्प्रसादाच्च चक्षुष्मां स्तेन सत्येन मोक्षय ॥ ग्राहग्रस्तं गजेन्द्रञ्च दीनं मृत्युवशङ्गतं । भक्तं मोचितवांस्त्वंहि तेन सत्येन मोक्षय ॥ अव्ययस्याव्ययश्च त्वं ब्रह्मण्यो भक्तवत्सलः उच्छ्रितानां नियन्तासि तेन सत्येन मोक्षय ॥ शङ्खं चक्रं गदां पद्मं शार्ङ्गं गरुडमेवच प्रसादयामि शिरसा ते बन्धान्मोक्षयन्तु मां । **

॥*॥ दोहा ॥*॥

सुनि अस्तव भगवान् प्रभु गरुडहि दए निदेश । बन्ध मोक्ष बलि को करो जाइ सुतल शुभ देश ॥
गरुडहि आवत निरखि गे सर्पि सर्प तजि गात । भेटे बलि निर्बन्ध व्है पढि अस्तव अवदात ॥
तव खगपति बलिसों कहे प्रभु को सुखद सँदेश। याथर सौं युग कोस औ ॐ है नाथि निदेश ॥
मरिहो ताही क्षण तहाँ तातैं सह परिवार । बसि याही थर सर्वदा कीजौ उचित बिहार ॥
पढि हैं यह अस्तोत्र जे व्है श्रद्धा सौं युक्त । ते लघु गुरु युग बन्ध ते औसि हौं हि गे मुक्त॥
बामन प्रादुर्भाव यह जे पढि हैं मन लाय । ते नर लहि हैं उच्चपद जिमि सुरपति युत चाय ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीवन्दीजनकाशीवासि गोकुलनाथात्मजेन गोपीनाथकविना विरचते भाषायां भारतान्तर्गते हरिवंशदर्पणे वामनप्रादुर्भावो नामषट्त्रिंशोऽध्यायः ॥ ************

॥*॥ दोहा ॥*॥

वैसम्पायन सो कहे जनमेजय क्षितिकन्त । अब कहिये जेहि हित गए शिव पैं कृष्ण अनन्त ॥
सुनि वैसम्पायन कहे सो सुनु पाण्डव भूप । कृष्णहि नौमि कहो कहे जेहिविधि व्यास अनूप ॥

॥*॥ चौपाई ॥*॥

प्रभु नरकासुर को बध करि कै । सोरह सहस युवति परिहरि कै॥ बिहरि द्वारिका म मुद लीन्हे । बन्धु वर्ग शुभ श्रीयुत कीन्हे ॥ एक दिवस शशि युत निशि बर मैं । हैं विहरत रुकुमिनि के घर मैं ॥ कही तहां प्रभु सों कर जोरी । सुखदा रुकुमिनि प्रभा अथोरी ॥ नाथ मोहि निज सम सुत देहू । जासु चरित लखि आनद लेहू ॥ सुनि बोले प्रभु आनद दानी । प्रिये कही तुम अति प्रियबानी ॥ लहि सुपुत्र बर शुचि पद पावै । जाहि कुसुत लहि निरय कुठांवै ॥ तातैं उत्तम सुत हित जाई । सेइ शिवहि करि तप बर पाई ॥ आइ इतै तुम सों रमि भावन । भामिनि लहब पुत्र मन भावन ॥ इमि कहि अन्त निशा को लहि कै । प्रातकृत्य करि प्रभु सुदगहि कै ॥ करि

गोदान बन्दि द्विजगण के। चाह चरण शुभ दायक जन के ॥ जाइ सभामह शोभन घर पैं। बैठे सुखद सिंहासन वर पैं ॥ तहँ यादवगण कहँ बलि वाए। उग्रसेन आदिक सब आए ॥ तिन सों बोले बचन सो हाते। सुबड सर्व यादव मुद राते ॥ हम सुणि कछु कारज मम माहीं। आजु प्रभु पैं सादर जाहीं ॥ ताते तुम सों कहैं बिचारी। सो करियो तुम सब धनुधारी ॥ *—*—*—

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

जरासन्ध को युद्ध लखि लखि रुकुमिनि को ब्याह। बिगरे नृपगण हैं तजे यदुप्रीति को चाह ॥
है नरकासुर को सखा पौंड्रभूप बलवान। समय परेखत रहत सो अमरष भरो अजान ॥
हमैं बिना लखि नगर सो ऐहैं ओसि निशङ्क। जीति जाइ है तौ हमैं ह्वै है बडो कलङ्क ॥
याते रहियो सजग सब निसुदिन रहि संनद्ध। राखेऊ पुर प्राकार के तीनि द्वार नित बद्ध ॥
एक दिशा के द्वारते सदांगतागतहोय। धमनन पावै नगरमैं बिनु जानो जन कोय ॥
आवै सो निज भेद कहि लहै मुद्रिका अङ्क। तब प्रविशन पावै कठन ताहीं भांति निशङ्क ॥
द्वार पाल जूथप रहैं द्वारनि धीर अधीर। चातुर चार चलांक ते रहैं फैलि बसु ओर ॥
पुर तजि कोई बननि मैं नित मृगया कों जाय ॥ सब दिन सब छिन सत्र रहैं गहे शस्त्र समुदाय ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

इमि कहि करुणा ऐन सात्युकि सों फिरि इमि कहो सात्युकि सुणि मम बैन पुर रक्षण तुम कीजियो ॥
शिष्य द्रोण को वीर है पतङ्ग वर अस्त्र श्रिर। पुर राखेऊ रण धीर तजि निद्रा चैतन्य रहि ॥
राम आदि बलवान यादवगण सों भाषि इमि। लखि मंत्रीमतिमानउधव सों इमि प्रभु कहे ॥

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

उधो तुमे मंत्रि मतिमान। नितिपुर राखेऊ सहित विधान ॥ आवैं होइ न हसो हमारि। तिमिपुर राखेऊ नीति निहारि ॥ सुनि बोले उधो सुख पाय। तुम सर्वद सर्वज्ञ सुभाय ॥ साम दाम अब दण्ड बिभेद। अरि सों ए कारतव्य अखेद ॥ न्यून देखि कै कीजे दण्ड। दीजे दाम आनिबल चण्ड ॥ सम सों करिकै साम उपाय। रचित कीजिये समया पाय ॥ जहां न लागै इनमैं एक। तहां कीजिये भेद बिबेक ॥ करै नीति युत कार्य्य बिचारि। तो सो लहै न कबहूँ हारि ॥ प्रभु की कृपा सबै विधि होत। हम करिबे मैं करब न ओत ॥ आऊ त्यागि सन्देह अशिघ्र। इहां न होइहि नेको बिघ्न ॥ आपर राउरि या बिधि प्रीति। कबऊ न आइहि ता ढिंग ईति ॥ अस सुनि ताहीक्षण यदुराय ॥ करि कै बिदा यदुन मह चाय ॥ सुमिरण किए गरुड को तब। आए गरुड कृष्ण ढिग जब ॥ गरुडो पर प्रभु भो आसीन। चलि उत्तर दिशि पुरुष प्रवीन ॥ सुरगणसों उचरित सु छन्द ॥ सुनत निजस्तुति आनन्द कन्द ॥ गए बदरिकाश्रम मैं शिघ्र। जहँ राजितवर तप रतविप्र ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

जहां पूर्व प्रभु विष्णु करि निजतन द्विधा अनूप । अयुत वर्ष तप किये प्रभु नरनारायण रूप ॥
गङ्गा जाके मध्य व्है बसीं परम रमणीय । जहां तपस्या करि सुमन हैं।हि सुमन कमनीय ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

विश्वसुर कहँ नारि ब्रह्मज्या के शान्ति हित । जहां सुरेन्द्र विचारि अयुत वर्ष कीन्हे सु तप ॥

॥ * ॥ चोपाई ॥ * ॥

संध्या समै तहां प्रभु आई । उतरे सहित सुमन समुदाई ॥ मुनिगण सब प्रभु आगम आनी । सायंकृत्य पूर्ण करि ज्ञानी ॥ याज्ञवल्क्य कश्यप प्रियबादि । गैातम अत्रि वशिष्ठहि आदि ॥ ऋषिगण आइ प्रभुहि तहँ पूजे । अति आनन्द लहि अस्तुति कूजे॥ बूझि कुशल शुचि आसन लहि कै । बैठे सुर ऋषि सह मुद गहि कै ॥ जो सुख ऋषिन लहे ता छण मैं । सो कहि सकै कौन गुणि मन मैं ॥ करि आतिथ्य कन्द फल दीन्हे । सुरण सहित प्रभु भोजन कीन्हे ॥ भे प्रभु शासन पाय अहीना । सब निज निज आसन आसीना ॥ गए तहां तब कृष्ण विचारी । हैं जहँ पूर्व विशद ब्रत चारी ॥ उत्तर तट सुरसरि के पावन । परम रुचिर थल अति मन भावन॥ तहँ प्रभु ध्यानावस्थित व्है कै । बिलसन लागे योतिनि ज्वै कै ॥ भयो इते मै हरगिरि ओरा । मृगया शील शब्द अति घोरा ॥ छोडऊ छोडऊ स्वानसभन को । मारऊ धरऊ खाऊ मृगगण को ॥ मिलैं शीघ्र काऊ खग पति गामी । तौ मैं होउँ धन्य शुभ नामी ॥ मोक्षद जासु नाम मुनि गावैं । ब्रह्मादिक जेहि निसु दिन ध्यावै ॥ मै अभाग्य बस ताहि न ध्यायौं । तातैं महा अधम तन पायौं ॥ ***

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

निसुदिन जासु सुभाव सौं हिंसा आदिक पाप । जानि जानि करि लहत हौं निति नूतन परिताप॥
हिंसारत निर्वेद युत सुनि औसो आव्हान । चित न लगे अनज्ञान सम श्रीमाधव तजि ध्यान ॥
को यह औसो कहत है मम सुभक्ति सौं पूरि । गुणि इमि लेखन लगे तिमि परे लखि बल भूरि ॥
मांसु खात पीवत रुधिर भयद पिशाच अनेक । तिन मै दोय प्रमत्त अति सब के अधिप सटेक ॥
मांसु खात पीवत रुधिर अंत्रावलि की माल । पहिरे माधव कृष्ण हरि रटत परम सुविहाल॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

निर्वेदज युत ग्लानि बचन बकत निन्दत तिजहि । प्रभु के गुण सुखदानि कहत बारहूँ भाँति बक॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

ते पिशाचपति प्रभु पँ जाई । को तुम कहे कहाँ समुझाई ॥ तुम मानुष इत कित सौं आए ।

अति सुन्दर सुकुमार सोहाए॥ पद्मेक्षण पद्मानन सुशोभन । पद्मापति सम मनसिज शोभन॥ सिंह बराह पिशाच निकर मैं। कत आए तुम दुर्गम थर मैं॥ सुर गन्धर्व किन्नर कहवावौ। कै नृसिंह कहि श्रम बिलगावौ॥ सुनि हँसि बोले कृष्ण प्रसंशी । हम मनुष्य साँची यदुवंशी ॥ चाहि आन हरि गिरि पैं सानद । प्रभुहि देखन हित सुनु मानद॥ यह थर देखि परम रमणीया ।बास किए मुनि श्रम शमनीया॥ कहि प्रभु कहे कहौ तुम को हौ । सेना सहित वीर युत जो हौ ॥ मुनिगण सेवित सुभ थर पावन । तहँ तुम आन चले कत धावन ॥ तुम सब हिंसक भेष अपावन। उतै आज मति धर्म न सावन ॥ जौ आगे चलिहौ बरि आई। तौ सबबिधि जैहौ इहि ठाँई॥ तिनहुँ मे ते एक सुबानी। कहत भयो प्रभु सौं अनुमानी॥ हम पिशाच अनुचर धनपति के। आलय शिव के पूर्ण भगति के॥ नाम घण्टाकर्ण मम जानो । यह मम लघु भ्राता बलखानो ॥ सुनो एक मम बर अपराधा । जेहूँ कीन्हो ईछित को बाधा॥ *⬬*⬬*⬬*⬬*⬬*⬬*⬬*⬬*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ * ॥

घण्टा बाध्यो श्रुतिन मे यह गुणि मैं अघधाम। जा रव ते नहि सुनि परै कबहुँ विष्णु को नाम॥
गहि अनन्य शिव की भगति तप करि शिव पैं जाय। मागि मुक्ति शिव सौं सुन्यो यह उत्तर सुखदाय॥
मुक्ति दानि हैं विष्णु प्रभु मागहु तिन्हैं अराधि। बदरीबन मैं जाय कै तासु भक्ति ब्रत साधि॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

यह सुनि भो मन सेर घण्टा ग्लानि निरन्तर कौं। विष्णुनाम सौं बैर करि दिन खोयो हाय मैं॥

॥ * ॥ मत्तसवैयाछन्द ॥ * ॥

सुनि शम्भु सौं यह बचन विष्णु हि परम प्रभु अनुमानि कै । अजप्रभव सर्वर सर्व मे अव्यक्त अव्यय जानि कै ॥ इत आइ प्रभुहि अराधि लहि शुभ मुक्ति चाहत हौं सुनो । वे भक्त बत्सल कृपानिधि सो आसि देहैं ध्रुव गुनो॥ इहि भाँति प्रभु सौं भाषि तहँ पिशाच मुदित बोधित प्रान कै। अरु परसि बिशद बिदर्भ आसन पर बिराजि सु ध्यान कै॥ कै सहत आरत नाय मुख करि बिनय इहि लय लाय कै । भो गुणत छण मैं कृपानिधि को ध्यान दरशन पाइ कै ॥ प्रभु किए बोसर कृपा तातैं दिए दरशन जानि कै । जिहि लहैं इमि नहिं कबहुँ योगिन सबिधि करत बढ़ाबि कै॥ अब भयो धन्य कृतार्थ लहि कै शुभद बाँछित आजु मैं॥ इमि बिषय लहि मम बन्धु ह्वै है करि सुरति सतकाजु मैं ॥ यह शमुक्षि मोदित ध्यान तजि सो प्रभुहि सन्मुख देखि कै । लहि ध्यान दरशन स्वच्छमति परतच्छ प्रभु अवरेखि कै॥ उठि पुलकि नत्यन लगो हँसि हँसि शोच बिसरो नाशि कै । ए विष्णु प्रभु ए विष्णु प्रभु ए विष्णु प्रभु इमि भाषि कै ॥ *⬬*⬬*⬬*⬬*⬬*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

ब्रह्मा सह ब्रह्माण्ड बर अगिनित अमित प्रभाव। ईछि बिरंचि एई सदा ईछित मोहत भाव॥
एई प्रभु अव्यक्त महि वपु व्है व्यक्त अव्यक्त। कौतुक करत अनेक विधि व्है कौतुक अनुरक्त॥
इमि गुणि निर गुणसगुण करि अगिनितगुणगणगान।पुनिपुनिसुधुनिसवछन्दसों मुनिजनसममतिमान॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

लखत ध्यानधरिजौन प्रभु अव्यक्तहि धन्य से।मो सम धन्य न तौन लख्योअव्यक्तहि व्यक्त इमि॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

प्रमुदित बार बार इमि कहि कै। मृतक विप्र को शुचि तन गहि कै॥ करि इटूक पाद पैं धरि कै।जल लै विधिवत अर्पण करि कै॥बन्दि चरण मन्दित करजोरी।कहत भयो गहि प्रीति अथोरी॥ प्रभु यह मांसु विप्र को पावन। नूतन निर्मल सद्य सो हावन॥ अरप्या यज्ञ आपु के जानी। ग्रहण करहु करि कृपा महानी॥ भक्षण करै आपु जो जोई। देव पितर कहँ अरपै सोई॥ यह श्रुति उक्त सु बचन बिचारी। ग्रहण करहु मम दोष बिसारी॥ प्रेम मई यह आरत बानी। सुनि बोले प्रभु आनद दानी॥ ब्राह्मण सदा पूज्य निरधारो। नहि वध भक्षण योग बिचारो॥ मृतक न छुवन योग शुचि अन कों। अब न कहहु एहि असन बचन कों॥ हम प्रसन्न तुव भक्ति निहारो। होउ अशोच यज्ञ तजि भारी॥ इमि कहि तासु गात प्रभु परसे। कृपा कटाक्ष सुधा सम बरसे॥ परसत भयो दिव्य तन सोई। पारस परसि लोह जिमि होई॥ परसत भयो तौन भरि भाखौं। तब प्रभु कहत भये इमि यासौं॥अनुज सहित तुम सुरपुर जाहू।बिहरहु लहि अपूब सुर लाहू॥ कर बास सुरपति तहँ जौलौं। करौ बिहार तहां तुम तौलौं॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

मदनन्तर सायुज्य मम लहिहै सो सुनो सुजान। यह कहि ताहि किए बिदा कृपासिन्धु भगवान॥
बिहरत भयो पिशाच सो इन्द्रलोक मैं जाय। इत प्रभु द्विजहि जिआइ कै अस्तुति सुने सचाय॥
अस्तुति सुनि तेहि करि बिदा मुनि मण्डल मैं आय।कहे सकल बिरतांत प्रभु कृष्ण चन्द्र सुखदाय॥
करि अस्तुति मुनि जन कहे इतो आचरज कौन। बिश्वअज भगवान प्रभु चहौ करौ तुम तौन॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

सुनि सुबचन अघदाव प्रभु इमि मुनिजन सों कहो।हम हर गिरि पैं जात आएहु तुमसब समय लहि॥

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

कहि खगपति पैं व्है आसीन। दरसे गिरि ओ प्रभा अधीन॥ जहाँ अराधहिं शिवहि धनेश। करैं तपस्या सिद्ध सुभेश॥ गङ्गादिक सरिता अभिराम। प्रगट भई जहसों गुणग्राम॥ जहँ बेधा को पञ्चम शीश। काटे अवत करत लखि ईश॥ पूर्व जहां हरि करि सह प्रेम। सहस कमल अर्पण का

बम ॥घटे एकदिन बारिज एक। कमलनयन पाहक धृत टेक ॥ काटि अरपि निज चष सुखदान। लहे शम्भु सों चक्र महान ॥ अति सुन्दर मानसरवर यत्र। गए कृष्ण प्रभु सादर तत्र ॥ सरवर के उत्तर तट जाय। बैठि लगे तप तपन सचाय। द्वादश वार्षिक करि सङ्कल्प। किए तपस्या परम अनल्प ॥ गरुड तहां ईंधन हूँ देत। पुष्प देत ह चञ्चल चेत ॥ दर्भ देत हूँ बहु सुभेश। रचत रहे सङ्ग सो देश ॥ गदा धनुष शुभ सत्व निकेत। परिचर्या हूँ करत समेत ॥ प्रथम दिवस करि शाक अहार। दूजे दिन रहि बिना अधार ॥ शाक बहुरि तीजे दिन खाय। फिरि खाए दिन तीन बिताय ॥ खाए फेरि गए दिन चारि। फेरि पांचदिन बिते बिचारि ॥ *〰*〰*〰**〰*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

शाक खाय कै एकदिन एहि बिधि के क्रमचाल। अन्तर दै दै दिवस बहु पत्त मास अरु साल ॥
दुस्तर व्रत जप हवन अरु बेद पाठ सविधान। मास ऊन द्वादश बरिस कीन्हे कृष्ण महान ॥
आए तब बिष्णुहि लखन सुरगण सहित सुरेश। पितर धर्म रिषिगण वरुण किन्नर सकल सुभेश ॥
अप्सर अरु गन्धर्वगण सब सत्वर तहँ आय। तपत उग्र तप प्रभुहि लखि निरखि रहे टक लाय ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

व्रतसमाप्त मे सर्व उमा सहित आए तहाँ। धनद सखागण सर्व साथ भरे अति मोद सा ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

दर्भदीपिका डिण्डिम शूला। धारि चारिभुज सों अनुकूला ॥भसम गरल शशि सुरसरि धारे। कर कपाल को माल बिहारे। अहिगण के भूषण सों शोभित। करे कोटि कन्दर्पहि लोभित ॥ भूत ब्रन्द बहु रूप बिभाते। सङ्ग अनगिने आनद राते ॥ धृत्ति शिवा श्रुति कूजत मोदत। बहु पिशाच के जूथ बिनोदत ॥ पठत बेद मुनिगण बहु पावन। आए सङ्ग शम्भु के पावन ॥ तिनके मध्य वृषभ चढि भाए। प्रभु के निकट शम्भु प्रभु आए ॥ लखि हरि हरहि निकट मुद लीन्हे। जैति जैति सुर रूषिगण कीन्हे ॥ जगन्नाथ जै जै प्रभु शङ्कर। चक्र शूल धर जै अभयङ्कर ॥ जै कौस्तुभधर जै अहिभूषण। जै अघ ओघ तमस के पूषण ॥ जै श्रीलपड भसमधर स्वामी। उमा रमापति खग पसु गामी ॥ जै भृगु चरणअङ्क बिषधारी। जै चीरधि कैलास बिहारी ॥ जैति श्याम सित रूप सलोने। जै जग प्रभव अनादि अजोने ॥ एहि बिधि कहि कहि सकल अनन्दे। श्रीप्रभु हरि हर के पग बन्दे ॥तब उठि केशव शम्भुहि पूजे। करि प्रणाम शुभ अस्तुति कूजे ॥सुनि अस्तुति शिव हिय मुद सों भरि। कहे बिष्णु के कर कर सों धरि ॥ *〰〰〰〰〰〰〰〰〰〰*

॥ * ॥दोहा ॥ * ॥

तुम अनन्त तुम बिश्वसृज बहु ब्रह्माण्ड निकेत। पुत्र हेत इत तप करे को आने यह हेत ॥

निरमे ह हम पूर्वहीं तुवहित पुत्र अनूप । सुनौ तीन इतिहास अब निज बांछित अनुरूप ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

कृतयुग मैं तप पर्म अयुताब्दिक हम हैं करत । तहँ परिचर्या कर्म उमा सर्बदा ही करत ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

तहँ सुरपति को शासन लहि कै। आयौ काम बाणधनु गहि कै॥ सँग सहाइ लै गइ रितुराजहि। हने सि कुसुमशर तजि डर लाजहि ॥ सो बिचारि हौं क्रोधित ह्वै कै। ज्वालजाल मैं चष सौं ज्वै कै ॥ भस्मीशोष कियौं तेहि छण मैं। पाकू इन्द्रकृत्य गुणि मन मैं ॥ सुनि विधि बचन कृपा तब कीन्हे। तुव सुत ह्वै को बर दीन्हे॥ रुकुमिनि मैं तुमसौं सुत होई। नाम प्रद्युम्न काम वह सोई ॥ इमि कहि शम्भु जोरि युग बारी। अस्तुति किए तत्व अनुसारी ॥ अस्तुति करि शिव फिरि अभिलाषे। सुरमुनि जन सौं एहि बिधि भाषे॥ एई बिष्णु रुद्र विधि जानो। इन्द्र कुबेर बरुण रबि मानो॥ इनहीं सौं सब जग उतपति हैं। लीन होत इनही मैं सति हैं॥ एई ईश्वर त्र्यात्मक शबदी कै। ए चित कारण चारु शुचि होकै ॥ ए निरगुण जग रचना ईक्षत। तब ह्वै सगुण बिरचि जग सीक्षत ॥ आपु अव्यक्त रहत सबही मैं। जैसे माखन दूध दही मै॥ मथे ज्ञान मन्थन सौं दरशैं। जेहि प्रकार योगी जन हरशैं॥ ए सब मैं बभव लक्षण सौं। प्रगट निरेखि परत अचण सौं॥ देखे सुने परत सब जे है। ते सब एते भे इन ते है ॥ *—*—*—*—*—*—*—*—*—*—*—*—*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

सुनि शङ्कर के बचन ए भए मोदयुत सर्ब। सुर सुरपति दिगपाल ऋषि यक्षासुर गन्धर्ब॥

श्रीनारायण बिष्णु ते अन्यदेव नहि कोइ। बिष्णुहि जपत सप्रेम निति धन्य धन्य जन सोइ।

बिष्णु सदा जपतव्य हैं हैं पठितव्य त्रिमूर्ति। इन मैं कछू न भेद है जौ निरखै करि स्फूर्ति॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

यक्षासुर गन्धर्ब सुर सुरपति दिगपाल ऋषि। भए मोदयुत सर्ब सुनि शङ्कर के बचन ए॥

॥ * ॥ महिखरीछन्द ॥ * ॥

एहि भांति प्रभुहि प्रशंसि हर फिरि किए अस्तुति चाव सा। जो बेद कच्छन कथित ग्रथित अनूप अनघ प्रभाव सौं॥ श्रीनाथ केशव नमस्तुभ्यं नमः शशिसूर्य्यात्मने। ॐ नमो बेदात्मने तुभ्यन्नमः श्री ब्रह्मात्मने ॥ ॐ नमो सर्वात्मने तुभ्यन्नमः श्रीमरुतात्मने। विधि विष्णुरुद्रात्मने तुभ्यन्नमः श्रीविश्वात्मने ॥ ॐ नमस्तुभ्यं रूपरसगन्धस्पर्श शब्दात्मने। ॐ सहस्रशीर्षापुरुष तुभ्यन्नमः श्रीत्रिगुणात्मने॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

करि अस्तुति एहि भांति शिव भे तँह अन्तरध्यान। शिवा रहित सबगननि सह पूरित मोद महान॥
बन्दि बन्दि प्रभु के चरण लोकप दिगप अशोक। लहि लहि मोद अमोघ गे थोक थोक निज ओक॥
शङ्खी चक्री प्रभु गदी खड्गी धन्वी जिष्णु। आए गरुडारूढ ह्वै बदरीवन मैं विष्णु॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

मुनिजन सौं विधिपूर्व पूजित ह्वै बैठे जहां। पाए मोद अपूर्व प्रभुहि लेखि ते मुनि सकल॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशीवासिगोकुलनाथात्मजेन गोपीनाथ कविना विरचिते भाषायां भारतान्तर्गते हरिवंशदर्पणे कैलासयात्रावर्णनो नाम सप्तत्रिंशोऽध्यायः॥ * * * * * * * * * * *

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

उतैसु पौंड्र भूप धनुधारी। कृष्णचन्द्र सौं रारि विचारी॥पास बोलि सब दिशि को राजा। कहत भयो गुणि जय जय काजा॥ हमहिँ दण्ड सब भूपति देहीं। सुनत निदेश शीश धरि लेहीं॥ नहिं मानै यदुवंशी हम कौं। सुनि मम तेज न लहैँ भरम कौं॥दण्ड न देहिँ रहै निलि कल सौं। भए निशङ्क कृष्ण के बल सौं॥ सुनियै कृष्ण गोप को करणी। बासुदेव मम नाम सु बरणी॥ सो कछु बोच मोद सौं रातैं। और सुनो यह अनहद बातैं॥ मम धनु गदा खड्ग को जो है। नाम विख्यात अमोघ गुनो है॥ निज धनु गदा खड्गको सोंसो। राखि नाम चाहत भो मोसो॥ अब ओहि बासुदेव जो कहि हैँ। सो अति दुसह क्रोध मम सहि है॥ निज पन यौवन को पन लेहैँ। शत शत भार हेम मणि देहैं॥ नरकासुर मम सखा प्रबल को। है यह गोप दवन बर दल को॥ मारि याहि निज दुसह गदा सों। लेँ। बैर मित्रको यासौं॥ यह सुनि किते भूप मुसुकाई। समुझि रहे चुप शीस नवाई॥ कितने निलज मूढ हरखाने। मूढ कालबस ह्वै उमदाने॥ इतने मैं तहँ नारद आए। हरगिरि त गुणि आनद छाए॥ * * * * * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

पूजि मुनिहि बैठाय सो कहत भयो विरतान्त। जिमि नृपगण सौं सो कहे गरजित बचन अशान्त॥
सुनि मुनि नारद कहत भे सुनु पौंड्र क्षितिपाल। कृष्णहि ऐसो सो कहत चढत जासु शिरकाल॥
शार्ङ्गी खड्गी गदी श्री बासुदेव प्रभु पर्म। सो कहाइबो तुम चहत सो यह दुलर कर्म॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

सुनि पौंड्र यह बैन ह्वै दरोष फिरि रोकि रिसि। तुम अवध्य तप ऐन चहौ कहौ सो इमि कह्यो॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

शीघ्र उत्तर कहुँ आजु गोसांई। अब फिरि मति आएहु एहि ठांई ॥ मुनि उठि तुरित कृष्ण पैं आए। विधिवत यह बिरतान्त सुनाए ॥ सुनि प्रभु कहे गर्व बल तासू। मुनि हम करब शमन अब त्रासू ॥ इतै पवण्ड्र सेन सजि भारी। चढ्यो द्वारिका पैं धनुधारी ॥ एकलव्य आदिक बहु रांजा। चले सङ्ग सजि सहित समाजा ॥ रथ गज हयारूढ पद चारी। सुभट असंख्य बीर अरिदारी ॥ सङ्ग बजवाई भेरि करणालै। दिपित कराइ असंख्य मसालै ॥ सत्वर जाइ भरो अति रिसि सौं। घेरि द्वारिका पुर सब दिशि सौं ॥ सुभटन दयो निदेश लरनको। यदुबंशिन के मान हरण को ॥ तिन्है देखि पुर के रखवारे। शस्त्र समूह क्रोधकरि मारे ॥ लागे लरन भूप भट तिन सौं। मारि मारि आयुध अगनित सौं ॥ यह सुनिकै सिगरे यदु बंशी। उग्रसेन आदिक सुप्रशंसी ॥ गहि आयुध वाहन पैं चढि चढि। लागे लरन नगर तैं कढि कढि ॥ भिरे गजस्थ गजस्थ भटन सौं। रथी रथी जै शब्द रटन सौं ॥ भिरे हयस्थन सौं हय सादी। पैदर पैदर सौं उनमादी ॥ लागो होन युद्ध अति घोरा। लगे चलन बहु शस्त्र कठोरा ॥ *‿*‿*‿*‿*‿*‿*‿*‿*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

तहँ निषाद प्रति प्रवल भट शिष्य द्रोण को बीर। बाणवृष्टि अति करत भो एकलव्य रणधीर ॥
सात्यकि हार्दिक राम गद जे भट ऊधो आदि। करत भये व्याकुल तिन्है मारि बीरधुनि नादि ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

ह्वै अदिंत तजि युद्ध प्रविशत भे सब नगर मैं। तब लखि जीति सक्रुद्ध पौंड्र कहत भो भटन सौं ॥
परशु कुठार कुदारिसौं बिदारि प्राकार बर। पुरमैं प्रविशि प्रचारि लूटि लेहु मणि धन युवति ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

यह सुनि सकल सुभट मुद पागे। पूरबदिशि लगि खोदन लागे ॥ हाहाकार मचो पुर माहीं। कृष्ण बिना कोउ रक्षक नाहीं ॥ राम आदि सब भट यह सुनि कै। पलटे बचन कृष्ण को गुणि कै ॥ सत्वर आए तहां प्रचारत। जहँ हैं भट प्राकार बिदारत ॥ तिन्है देखि सात्यकि धनुधारी। तजे अस्त्र वाइव्य बिचारी ॥ ह्वै तासौं प्रेरित मति बिगरे। गए पूर्व थल पैं ते सिगरे ॥ गे निशि तहां हांकि रथ हेरत। कहां पवण्ड्र बार बहु टेरत। आजु तासुशिर काटि गिरावौं। रण देबिहि बलिदान चढावौं। जो सठ निलज मोह सौं छायो। निशि मैं दूत तस्कर सम आयो। सुनि सात्यकि के बचन अनैसे। बोलत भो पवण्ड्र नृप ऐसे ॥ हैं कहु कृष्ण गोप बन चारी। इस्त्री पशु हन्ता अघकारी ॥ जो मम नाम आपनो कीन्है। जहँ तहँ बिहरत आनद लीन्है ॥ ब्राहि बलाउ लरा मै ओसौं। तूँ नहि लरन योग है मो सौं ॥ जौ तूँ बीर आपु को जानै। तौ लरि करि ले निज उरमानै

॥ जब तुव मरण खबरि सो पाइहि । तब व्याकुल ह्वै आपुहि आइहि ॥ यह सुनि सात्युकि अति रिसि करि कै । तासों कहे बाणधनु धरि कै ॥ रे सठ तोहि काल जो घेरे । नृत्यत चढो शीस पै तेरे ॥ सो जब उतरि जीभि पैं आवत । तब एहि विधि के बचन बकावत ॥ हृ्वै मौन सो बकि ले तौलौं । गिरै न शीस भूमि पैं जौलौं ॥ घरी चारि मैं रसना तेरो । खै हैं गिद्ध बात सति मेरी ॥ इमि कहि धनुष कान लौं ठाने । बाण तासु उरछिनि हरषाने ॥ *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

लगे बाण अति क्रोधकरि भोर रुधिर सों गात । पौंड्र भूप मारत भयो सात्युकि को शर सात ॥
सात्युकि तेहि सो सात्युकिहि मारे बाण अनन्त । मारेसि एक प्रचण्ड शर तिन कहँ सो चितिकन्त ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

सात्युकि भट बलवान ताके लगे घरीक लौं । मूर्छित रहे अजान लागि ध्वजा के दण्ड सो ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

तौलौं दश शर तिनि तेहि मारो । हनि पचीस शर हयन बिदारी ॥ गरजत भयो पौंड्र थमाना । सुनि सचेत भे तिनि बलवाना ॥ सूत गजन कहँ अरदित देखी । दुस्सह बाण हने अति तेखी ॥ लगे बाण मूर्छित भे दोऊ । रथ पैं गिरो मूदि चष दोऊ ॥ तब लौं सात्युकि शर विधि ठाटे । सिगरे चक्र तुरग के काटे ॥ सिगरे गात हयन के भेदे । धर सों शीस सूत को छेदे ॥ तब सो चेति गदा ले धायो । कढि सात्युकि के रथढिक आयो ॥ सात्युकि गदा पाणि लै तासों । कीन्हे गदायुद्ध भरि भासों ॥ बड़ विधि गदायुद्ध ते कीन्हे । लखि इत उत सब विस्मय लीन्हे ॥ गदा तासु भू पै तिनि मारे । मूर्छित करि तेहि महि पैं डारे ॥ चेति शीघ्र उठि सो रणचारी । मारेसि तिनिहि गदा अति भारी ॥ तब सात्युकि अति भुजबल बर सों । तोरें तासु गदा लै कर सों ॥ तब सोचा बक बीर न चूका । मारें सात्युकि के उर मूका ॥ सात्युकि डारि गदा शुचि मन मैं । मूका हने तासु उर तन मैं ॥ तेहि सात्युकि सात्युकि कहँ सोई । मुष्टिक हनत भए रिसि भोई ॥ बल छल करि घातन सों मारे । बाहुयुद्धविद नेकु न हारे ॥ *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

भो इमि सात्युकि पौंड्र सों संगर परम प्रचंड । एकलव्य बलिराम सों भो तिमि युद्ध उदंड ॥
एकलव्य कहँ राम अरु रामहि धीर निषाद । मारत भए अनेक शर बीर शब्द करि नाद ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

एकलव्य को चाप दए काटि बलवान सों । तब सो करि परिताप खड्ग फेंकि मारत भयो ॥

॥ * ॥ गुरुतोमरछन्द ॥ * ॥

तेहि देखि आवत ठानसों। बल काटि दीन्हे बाणसों ॥ असि हन्यो दूजो हेरि सों। बल काटि दीन्हे फेरि सों ॥ फिरि शक्ति घण्टा माल मैं। अय हेम मय मणि जाल मैं ॥ ले एकलव्य बली हनो। बलवार पैं गरबी गनो ॥ चल कूदि तेहि निज पाणि कै। तेहि हनो तासो जानि कै ॥ उर शक्ति लागे भूमि कै। सो गिरो रथ पैं घूमि कै ॥ तब ताहि मुरछित देखि कै। सब तासु सैनिक तेखि कै ॥ एकबार भुंकि चक्रवीरसों। बज्र शस्त्र धर बर जोरसों ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

सहस अठासी धीरते बीर निषाद सटेक। मारत भे बलिराम पैं आयुध अगम अनेक ॥
हल मूशल ले राम तब हने तिन्हें गहि मोद। तिन मैं करत भए तहाँ शिवा पिशाच बिनोद ॥
गिरिकन्दर मे दुरत भे तिनमैं कितने भागि। एकलव्य हय लखत भो उठि मुरछासों जागि ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

ले गुर गदा शक्रुद्ध जाइ राम पैं बेग सों। गदायुद्ध अति उद्ध करत भयो दारुण सुभट ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

चारि पुरुषवर भिरि तेहि निशि मैं। युद्ध करत भे भरि अति रिसि मैं ॥ एकलव्य अति राम प्रबीरा। अरु पौण्ड्र सात्युकि रणधीरा ॥ अति प्रचंड सङ्गर नहं माचो। घोर शब्द दश दिशमैं राचो ॥ इतने मैं शशिकी दुति मैली। भई सुरुचि दिनमणिकी फैली ॥ लखि प्रभात प्रभु बदरीबनतें। चले बिदा ह्वै सबमुनिगणतें ॥ रमासोज नभतें धुनि सुनि कै। आय पौण्ड्र लरत यह गुणि कै ॥ पाञ्चजन्य शुभ शङ्ख बजाए। सुनि यदुबंशी अतिसुख पाए ॥ आए पुर में प्रभु सुद लीन्हे। बन्दीजन जुरि अस्तुति कीन्हे ॥ उरतरि खगपति छिं रुपुर पठाए। दारुकिसों निज रथ मगँवाए ॥ चढि रथ पैं आए रणभूमैं। जहँ अगनित भट घायल घूमैं ॥ भूप पौण्ड्र कृष्णकहं देखो। तजि सात्युकिसें युद्ध अदेखी ॥ प्रभु पैं चले क्रोधसों हठि कै। तब सिनि रोके आगे बढिकै ॥ रे शठ भूपमोहि बिनु जीते। जात आन पैं सङ्गर चीते ॥ यह नहि क्षत्रिणको सुधरम है। यह कादरजनको कुकरम है ॥ हमहिं जीति कै जब कछु अनते। जैबेकी शुचि रुचि गुणु मनते ॥ इतनेहूं पैं पलटिनवाजा। चला कृष्ण पैं गरबित राजा ॥ * * * * * * * * * * * * * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

तब सुप्रसंशित कृष्णसों सात्युकि करि कै गौर। तासु पीठमें हनि गदा परे रहे तेहि ठौर ॥
महाराज पुन पौण्ड्र तब प्रभुके सनमुख जाय। गरबित अरबित भो कहत गरबितबचन अवाय ॥

गो युवती द्विज वृद्धके बधकरता है गोप। नरकासुर निजसखाके बैर करौं तो लोप ॥
॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥
तो बध करि गहि टेक चक्री शार्ङ्गी अरु गदी। वासुदेव अब एक न कहवै हो जगतमें ॥
॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥
पौण्ड्रके ए बचन सुनि प्रभु कहत भे मुसुकाय। सत्य जो तुम कहे हमने एक है न अवाय। गो कहत महि दिव दिज निहम तासु पालनहार। खलनको बर बोजर्थ बधिके गोपको करतार॥ बृषभ तिय द्विज बृद्ध मारत कियो हम न बिचार। बध्य तुमसेहुँ पाय बधत न नेकु हमहि अबार॥ चक्र धनु तो गदा तो हूँ नाम रूप समान। पै न हैं मम गदा धनु अरु चक्र सम गुणवान॥ शोच हमको इहै तुम तो जाऊ मैं तजि देह। बूझि है को तुम्हैं बिनु गुण अगुणता गहि नेह॥ सुनहु जो मुव अस्त्र अरु मम अस्त्र है इक नाम। क्षणक मैं मम अस्त्र ते तैं करहिँ गे तो काम॥ करहु अब मति बेर रथ चढि लरहु गहि निज अस्त्र। जाऊ तो प्रिय सखा नरकासुर गयो है जत्र॥ बचन यह सुनि क्रोपि रथचढि पौण्ड्र भट बलवाण। लगो अरजन हने तीलौं कृष्णप्रभु बरबाण॥ कृष्णकौं दस बाण दर अरु सात्युकि हि दस पांच। हनत भो सब हयनकहुँ सो बीर दस नाराच॥ कृष्ण तैलौं तासु ध्वज अरु सूतको सिर काटि। मारि चारो बाजि मारे तर्पहि शरवर डांटि॥ कूदो रथतैं पौण्ड्र मारत भयो खड्ग चलाय। बीच हीं तेहि काटि दीन्हे बाणसों यदुराय॥ तज्यो सो तब घोर चक्र अमोघ करण अनर्थ। कूदि अन तैं अस्त्रके सब दए तेहि करि व्यर्थ॥ धरिकर्तों इमि मोहि ताको चक्रसों जगदीश। डारि उरबी पै दए तहँ काटि ताको शीश॥ मरो ताको देखि ताके सुभटके समुदाय। भगे ताडत हियो रोवत करत हाहा हाय॥ रामसों लरि हारि भागो एक लव्य निषाद। लए करमैं गदा भागो गहे दाह बिसाद॥ क्रोध बसगे तासु पीछे दूरिलौं बलि राम। दुरो जो तब पलटि आए कृष्ण पैं बलधाम॥ ********
॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥
यदुबंसिन सह कृष्ण तब सभामदन मैं जाय। हरगिरिजाताको कहे सब बिरतान्त सदाय॥
सो कहि मोदित करि यदुन अस्तुति करि बिसर्जि। अद्भियन अनदित करे कहि बिरतान्त अवर्जि॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीवन्दीजनकाशीवासिगोकुलनाथात्मजेन गोपीनाथकविना बिरचिते भाषायां समप्तान्तर्गते हरिवंशदर्पणे कैलाशयात्रायां पौण्ड्रबधवर्णनोनाम अष्टत्रिंशोऽध्यायः॥ *********
॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥
मुनिवर सुनि प्रभुकी कथा मो मन तृप्त न होत। को अस जेहि प्रभु गुण सुनत गुणत होत है वोत॥

जाते कहि मैं जो किए हंस डिभकके सङ्ग। चारु कुतूहल पावसा श्रीकेशव श्रीरङ्ग॥
॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

सुनि मुनि कहे सुतङ्क नृपवरणी। प्रथम तासु उत्पत्ति अरु करणी॥ हो शुभ शाल्वदेशको स्वामी। ब्रह्मदत्त भूपति नयगामी॥ रही तासु द्वै तिय बरलाजा। तिनसों रमे बहुतदिन राजा॥ लहे न सुत तब शुचिव्रत साधे। शम्भु हि दिगमित वरिष आराधे॥ तब शिव क्षिप्र दरश तेहि दीन्हा। सुतहित वर दे मोदित कीन्हा॥ नाम मित्रसह ब्राह्मण ज्ञानी। रहो भूपको सखा सुमानी॥ बहुदिन पुत्रहीन रहि सोऊ। चिन्तित भे पतिनी पति दोऊ॥ तेउ पांच वरिष हरि पूजन। करि कीन्हे शुभ अस्तुति कूजन॥ दीन्हे विष्णु ताहि वर पावन। पुत्रोत्पत्तिकर शोक नशावन॥ ब्रह्मदत्तके द्वै सुत जाए। हंस डिभक शुभ नाम सोहाए॥ भो सुत एक विप्रके आरज। नाम जनार्दन अंत शुभ कारज॥ नृपके अरु द्विजके सुत साथ हि। वरधि पढे विद्या गुण गाथ हि॥ सर्वशास्त्र धनुवेद पुराणा। सुनि गुणि करि अभ्यास विधाना॥ हंस डिभक हिमगिरि ढिग जाई। शिवहि अराधे हि दृढलय लाई॥ पांच वरिष जल वायु आहारा। करि तप कीन्हे सहित विचारा॥ तब तहँ आइ शम्भु मुदराखे। वर बूझि नृप सुत सों भाखे॥ * * * * * *
॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

मागे शम्भु हि बन्दि ते प्रभु हम होंहि अभेय। अमर असुर गन्धर्वगण नरसों सदा अजेय॥
दिव्य शस्त्र निज सर्व प्रभु पूर्ण कृपा करि देऊ। कवच अभेद्य अछेद्य धनु देऊ निरखि मम नेऊ॥
॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

द्वै द्वै गण बलवान रहैं सहाई सङ्ग मम। सुनि ए वचन ईशान एवमस्तु कहि गुप्त भे॥
॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

ते नृप सुत लहि कैं बरदान। आए निज पुर मधि मतिमान॥ शम्भु अराधन रत रहि नित्य। चित चिंतन करि भए अचिंत्य। द्विज सुत रहे जनार्दन जौन। विष्णुहि पूजि लह्यो वर तौन॥ क्रमते भे सदार ते सर्वभूप पुत्र द्विज सुनङ्क अखर्व॥ एकदिवस ते नृपके बार। द्विज सुत सह युत सैन अपार॥ मृगयाशील विपिनमे जायं। विधिवत किए विहार सचाय॥ गयो बीति जबदिन युग याम। तब तजि मृगया करण अराम॥ गे तडागतट सहित समाज। जहं वारिज बनवुधिबन्त। लसत सभ्राज॥ बैठे तहँ जल परशि समीर। करण लगे सबसखा बिनोद॥ तहां बेद धुनि सुनि लहे मित्र सह मोद अनन्त॥ ते त्रय पुरुष गए तब तत्र। मुनिजन करत रहे धुनि यत्र॥ बन्दि मुनिनकहँ ते द्वै भूप। आमिष अर्घ लहे अनुरूप॥ विधिवत तिन्हे पूजि ते विप्र। सादर बैठा त भे क्षिप्र॥ बन्धु विप्र सह बैठि सप्रेम। कहे मुनिनसों हंस सनेम॥ उत्तम राज सूय शुभ यज्ञ।

किधौ चहत मम सिसु सरबज्ञ ॥ विधिवत तेहि साधनके कार्य्य । आए ऊ तहँ तुम चिनरे आजर्य ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

सबंधु सदार ससुता आए ऊ तुम तहँ हाल । सुनि मुनिजन नृपसौं कहे आइब हम तेहि काल ॥
तब मुनिगणसौं व्है बिदा, हंस डिभक अरु बिप्र । दक्षिण दिसिसौं जात भे शरके उत्तर क्षिप्र ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

दुरबासा तपधाम पांच हजार ऋषीन सह । तपत रहे अभिराम जहँ धरि सन्यासन ब्रत ॥

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

श्रेष्ट शुचि सन्यास आश्रम तपत मुनि तपरास । अभिलं अतिथ अवास दण्डी धृत कमण्डलु पास ॥ बन्यबिसके भरे शुचि कौपीन सुषमाकन्द । ब्रह्म चिन्तत ध्यान ततपर लहत परमानन्द ॥ देखि तिनकहँ गुने मनमे हंस डिभक अमान । तजि ग्रहाश्रम लसत है ए कौन परम अयान॥ ग्रही पटु धर्मज्ञ धर्माचाररत शुचि रूप। ग्रही सर्वाश्रमिनको प्रतिपाल करण अनूप॥ ताहि त्यागि कुभेष कीन्हे गहे सुद्राचार । इन्है दै कै दण्ड करिबो ग्रही उचित विचार ॥ गुणत इमि ढिग जाइ कीन्हे अहंणचख अति क्रुद्धि। कहे दुर्बासा सुमुनिसों दुष्टमति दुर्बुद्धि॥ धूर्तताके बचन कहि कै मोहि द्विज समुदाय। धर्म कर्म बिहीन कीन्हे लाज डर बिसराय॥ शीघ्र तजि एहि आश्रम हि हो ग्रही जीवन ईछि । नतरु खणमो करौं सबको नाश प्र.सौं सीछि ॥ हंसकौं यह बचन सुनि जो बिप्र ताको मित्र । भयो बरजत ताहि सो कहि बचन परम पवित्र ॥ क्रोधि दुर्बासा कहे तब हंससौंहेमूढ । गच्छि इतसौं शीघ्र जो जहँ पिता तेरो बूढ ॥ गहे हौं सन्यास ब्रत नहि तजो रिषि करि धर्म । नतरु अबलौं बन्धु सह तुम जानते मम मर्म ॥ सर्वक्षत्री इन्द्रकौं मैं भस्म करण समर्थ । गहे उत्तम ब्रतन ताते करत बूजि अनर्थ॥ कछू दिनमे क्रष्ण करि है ध्वंस तेरो दम्भ। आजु भो तो नाशके ध्रुव हेतुको आरम्भ॥ भाषि इमि उठि अनत जैबो चहे मुनि अनुमानि । गह्यो त्योहीं हंस मुनिको चारु कोमल पानि ॥ तोरि अनुपम दण्ड फारत भयो शुचि कोपिन। फोरि बिमल कमण्डलु हि भो कहत बचन मलीन॥ देखि मुनिको हाल यह सब जती गए डरपाय । शीघ्र लैलै पात्र दण्डहि दुरे बनम जाय॥ * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

विप्र जनार्दन धृष्टि तेहि दीन्हो तब बिलगाय। बिप्रहि दए आशीष मुनि जानि सुबुधि सुखदाय॥
तब देखो नृपपुत्रसो बहि ताहीथर मगवाय । सकल सहित भोजन करत भयो मांस बनवाय ॥
तदनु सैन सह जात भो निज पुर भरो उमङ्ग । तासु नाम ध्रुव गुणत भो मित्र बिप्र ता सङ्ग ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

तब मुनि यतिन बलाय बैठि एक ते मंत्र करि । गए जहां यदुराय भिन्न कमण्डलु दण्डलै ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

भुवि हि पूजि प्रभु आसन दीन्हे। कुशल प्रश्न बूझे मुद लीन्हे ॥ विशद भीर मुनिजनकी ज्यों कं। बूझत भे बिसमित से ह्वै कै॥ मुनि तपधाम मौन मति गहि के। इमि आवन को कारण कहि कै॥ यह सुनि सुमुनि शोच परिहरि कै। बोलो क्रोध नयो सो करि कै॥ जानि अजान मोहि तुम जाने। जाते बूझत सन कछु अज्ञाने॥ जानत भेद जौन मन जाको। उचित न तासो गोपन ताको ॥ भली भांति हम तुमकहँ जाने। जाने जानत आपु न जाने॥ तुम सरबज्ञ सर्वप्रद स्वामी। सबके न्यामक सबघट गामी ॥ जासु नाभिभव कमल सदन तें। प्रगटित ह्वै बिधि चारिबदन तें॥ गाय जासु गुण अन्त न पाए। सो तुम जगत योनि इत आए ॥ पांचतत्वमयतन सब मानत। सो सब तुम कत भेद न जानत ॥ प्राण बाक मनमें तुम सोई। बूझत किमि दूसरकी नाई ॥ इमि बहु विधि कहि मुनि अभिलाषे। करणी हंस डिभक की भाषे ॥ दण्ड कौपीन कमण्डलु भाए। टूटो फाटो फुटो देखाए ॥ मम यह दशा जानि तुम पावन। बूझत कुशल हास सम भावन ॥ दीन बन्धु मम यह गति देखो। हौ निहचिन्त कहा अवरेखो ॥ *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

पाणि जोरि मुनि सों कहे मर्यादा प्रतिपाल। छमहु सुमुनि अपराध मम लेव बैर मैं हाल ॥
बरुण इन्द्र विधि रुद्र के पास दुरै औ धाय।तितहूँ मारौं तिन्हहि हठि बचै न कितहूँ जाय॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

तोषि मुनिहि एहि भाँति दै सुनि मंत्र न कृष्ण प्रभु। सहं द्विजगण की पाँति भोजन करवाये रुचि॥

॥ * ॥ महिखरीछन्द ॥ * ॥

सुनि योग्य सुन्दर सुघर मै फिरि बास मुनि कहँ देत भे।लहि बास प्रभु को निकट को मुनि परम आनद लेत भे ॥ उत हंसडिम्भक नरेश सुत नृप हृय को अनुमान कै। द्विज वरजनार्दन मित्र सों इमि कहत भे पन ठान कै ॥ निज पिता सों हम यज्ञ करवायो चहत जाग जोतिकै। सुनि विप्र गुणि मुनि सो विधि की सिद्धि बोलो भांति कै ॥ नृप सूनु सुनु तू गुणे सो यह परम दुस्तर मंत्र हैं। यह अल्प जीवी जननि कौं जमराज को क्रित तंत्र हैं॥ *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

जरासन्ध बाल्हीक अरु यादव सब अधर्ष। अरु भीषम जिन भृगपति हि जीति लहे जय हर्ष ॥
रामकृष्ण त्रैलोक्य का त्रय मै जीतन सक्त। तिन्हे समुझि एहि मंत्र मै मनकी जै अनुरक्त॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

आं हम सो मिलि मेल ग्राम दान सों लेऊ करि। तौ रचि कै रण खेल जीति विप्र मख सिद्धि करऊँ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

यह सुनि ते हर बर बल वारे। बचन सगर्व सरोष उचारे॥ भीषम् ल्है कहा बल ताको। उग्र प्रभाव कहत हौ जाको॥ एकलव्य कहँ भट मै औरे। तुम्है न कहब उचित मम धोरे। जरासन्ध मम बन्धु प्रशंसी॥ व्है है कबऊ न मम हित ध्वंसी॥ यदुबंशी कहि लेखे माही। तिन को हमै भटक कछु नाहीं॥ ताते प्रथम कृष्ण पैं जाई। मम निदेश तुम कहऊ बुझाई॥ यज्ञ हुत कर देहिँ पठाई। आइ सवर्ग करै सेवकाई॥ भोजन समै स्वाद उपचारा। वै हैं लए लवण बऊ भारा॥ मोरि सपथ तुम कहँ बऊ बेरी। जाऊ शीघ्र अब करऊ न देरी॥ यह मम कार्य सिद्ध अभिलाषी॥ अब मति दीर्घ सूत्रता भाषी॥ यह सुनि विप्र जनार्दन ज्ञानी। होनी प्रासि होति अनुमानी॥ फिरि न कछू नृप सुत सो भाषे। प्रभु दरशन हित अति अभिलाषे॥ शीघ्र बिदा व्है यात्रा कीन्हे। चले अश्व चढि आनद लीन्हे॥ पावनकर प्रभु के गुण गावत। आपुहि धन्य जानि सुख छावत॥ सुमिरत चारु रूप मन भावन। परमानन्द सुरस सरसावन॥ घनसम श्याम पीतपट धारी। मणि मै भूषण धृत हिय हारी॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

अनुपम अमल अपूर्व अति धरे किरीट अनूप। वारिजाक्ष सुषमा सदन कदंन मदन को रूप॥
कौस्तुभ मणि की रुचिर सों रचित सु वक्ष विशाल। भृगुपति के पग चिन्ह पैं बिहरत बर बनमाल॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

मणि मै परम विचित्र सिंहासन बिस्तारित पैं। बैठे करत चरित्र विश्वयोनि कहँ कब लखत्र॥

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

गहे शर कोदण्ड खण्डन समर मख ध्वज जूप। सभासदन समेत भूषे सभासदन अनूप॥ प्रभुहि पेखि कृतार्थ व्है हौं धन्य सो क्षण सत्त। होहिँगे अब धन्य मेरे अमल आयत अत्त॥ ध्यान धरि धरि हेरि जेहि सनकादि पावत मोद। ताहि मै परतत्त लखि हौं करत लोक विनोद॥ इतो दुख मोहि दुसह प्रभु सों कहन परि है हाय। चलो कलर हंस पैं यह करि कुबुद्धि कुभाय॥ गुणत उत्सुक दरशको इमि हांकि बाजि हि विप्र॥ गयो प्रभु के द्वार पैं अति भयो प्रमुदित विप्र। द्वार पाल प्रवीण प्रभु सों अरज करि कै तासु। गए ताहि हजूर मै लै आय सो तहँ आसु॥ प्रेम अलसों भरे चख भो करत प्रभुहि प्रणाम। हंस नृप को दूत हौं कहि कहत भो निज नाम॥ कहे प्रभु इत आय सुख सो बैठि हे द्विज आर्य। कहो त्रै जो कहे तुमसों कहन करिबो कार्य॥ बचन यह

सुनि मोदि ब्राह्मण बैठि तहँ करजोरि। कह्यो प्रभु तुम जानि सब मोहि कहन कहत बहोरि॥ पाइ शासन आपु को सो कहत हौं मनमोरि। कृपासिन्धु सुजान सो सुनि गुणब मोरि न खोरि॥ भाषि इमि सो कह्यो द्विज करि लाजते नत बैन। हंस होजी कहे प्रभु सो कहन कुत्सित बैन॥ हंस को सन्देश सुनि यह कहे कृष्ण सहास। दए बिनु कर करब कैसे तासु पुर मे बास॥ बचन यह सुनि राम सात्युकि आदि यादव हर्षि। पाणि तल दै लै सु हँसिहँसि कहें बचन अमर्षि॥ कहे प्रभु फिरि बिप्र सो व्है भूप केर सुत ढीठ। मांगि हम सों कर चहत हैं भयो जग मे ईठ॥ मुक्त निज कर धनुष सों शर प्राण हर कर पत्र। देब नहि हम औरसि ताको निरखि के थल मर्म॥ जाय तिन सों कहो निर्मित करे जो शुभ देश। आइ तहँ हम देहिं कर जो करन कठिन कलेश॥ *◆*◆*◆*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

तुम नहि कहि सकिहो इतो नृपसुत सों भय पाय। सात्युकि जैहैं साथ तो कहिहैं सब समुझाय॥
लखितो भयनि प्रबीणता तोपर मम अति प्रीति। जपि मम नाम सप्रेम निति लहिहो कबऊ न भीति॥
सुनि यह बचन कृतार्थ व्है बन्दि चरण सुखदाय। चलो बिदा व्है बिप्र सो हियमे मूर्ति बसाय॥
तब प्रभु सात्युकि सों कहे तुम द्विज के सङ्ग जाय। बासो कहि सुनि बारता आओ शीघ्र सचोय॥
सुनि सात्युकि चढि अश्व पैं एकाकी द्विज साथ। गए हंस के निकट जिमि मृग के ढिग मृगनाथ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

तहां बिप्र मतिमांन कहत भयो इमि हंस सों। सात्युकि बीर अमान बासुदेव के दूत ए॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

सुनि तुव प्रश्न कृष्ण रिसि छाए। इनकहँ उत्तर देन पठाए॥ ए प्रिय सखा कृष्णके आरज। दक्षिन भुजसम कृत शुभ कारज॥ कह्यो हंस हम इनकी करणी। सुनत रहे सब बिधि सो बरणी॥ धीर बीर शास्त्रज्ञ बखाने। हैं ए आजु देखि सति माने॥ इमि कहि कै सो कपटी मन को। बूझो कुशल कृष्ण यदुगणको॥ यह सुनि सात्युकि बोलि अरुचि सों। कहे सर्ब कुशलो मति शुचि सों॥ सो सुनि हंस प्रशंसि अनुज सों। बूझत भयो जनार्दन द्विज सों॥ बिप्र जाय तुम कृष्णहि देखी। कहे सुने सो कहो बिशेखी॥ कह्यो बिप्र सुनु नृप सह भाई। हम जिमि लखे कृष्णकहँ जाई॥ इन्दीबरदल सदृश सोहावन। चारु गात रुचि अति मन भावन॥ अति रमणीय पीतपट धारे। गरु उर पैं बनमाल बिहारे॥ मणिमै भूषण सो तन भूषे। कोटि मदन की सुषमा दूषे॥ चारु किरीट शीश पै सोभित। करत हर की छबि कौं शोभित॥ चामर छत्र बिचित्र बिभाते। राजसिरी की रुचि सों राते॥ पर धनु गदा शङ्ख असि पावन। धरे पार्श्व अरिबृन्द नसावन॥ पुरुषसिंह सिंहासन पांहीं। बैठे लसत सभा मह मांहीं॥ *◆*◆*◆*◆*◆*◆*◆*◆*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

रामआदि यदुगण सहित राजत धीर धुरीन। शस्त्र शास्त्र की बारता कहत सुनत परबीन ॥
बन्दीजन अस्तुति करत करत अप्सरा नृत्य। कान्ति भरे करि पांति ह्वैं खरे करीधृत भृत्य ॥
दुर्बासा नारद सुमुनि बैठे जतिन समेत। प्रभुहि लेखि आनद भरे जन्म तप को फल लेत ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

एहिबिधि प्रभुहि निरेखि व्है कृतार्थ अति धन्य मैं। कहत भयो अवरेखि तब मुँदेश अन्देश तजि।
सो सुनि के अति तेखि भेजे तो ढिग सात्यकिहि। सुनि उत्तर अवरेखि करौ जौन कीन्हें बनै ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

सुनि बोलो नृप सहसा करमी। रे द्विज अधम निलज्ज अधरमी ॥ मो सँग खाय मोटाय अभागे। अब पर को गुण जलपन लागे ॥ रे खल कुटिल कुकरमी खोटे। शीघ्र गच्छमो चष के ओटे ॥ इमि कहि फिरि सात्यकि सों बोलो। भरो रोष गहिगर्ब अतोलो ॥ रे यादव कछ मो भय राखो। नन्दनन्द जो भाषण भाखो ॥ तासु बचन सुनि शिनि मुसुकाने। बोले बचन बीररस साने ॥ दुरबासा सों तो अघ सुनि के। सत्यसन्ध तो बध ध्रुब गुणि कै ॥ हेरत हैं मिसि इतने ही मैं। तुव संदेश सुनि सके न ही मैं ॥ तातें तुम्हे पाव गुणि स्वामी। देन चहे कर प्रभु नयगामी ॥ चक्र अमोघ पाणि मे ले हैं। सो तुवनाश करण कर दे हैं ॥ जोथर कह्यौ आइ तेहि थरमें। देहि चक्र कर कर तुव कर मे। फसो पङ्क मे जिमि नर कोई। निकसन चाहत कर गहि सोई ॥ तिमि तो प्राण फसो एहि तन मे। मागत कर प्रभु सों गुणि मन मे ॥ ता कहँ कृपासिन्धु मुद द्वारे। करिहैं तन कर्द्दम सों न्यारे ॥ यह सुनि हंस क्रोध सो भरि कै। बोलो नैन लाल सम करि कै ॥ यादव तूं तन बचन उमाहैं। मोहिं कलङ्क दयो निजु चाहैं ॥ *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

दूत कर्म मे आइ हूँ आपुहि जानि अबध्य। बचन कहत एहि भांति के मम सुभटन के मध्य ॥
दूत जानि नहिं बध करौं सहि तो बचन अन्याय। करिहौं ताको नाश जो पढयो तोहि सिखाय ॥

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

अरि को बधब न दूतहि जोग। कहँ शास्त्रविद सिगरे लोग ॥ तातें आजु छोडि तो प्रान। जात कृष्ण प धृत धनुवान ॥ करिहो कहां युद्ध तुम आय। शीघ्र ठौर सो देहु बताय ॥ कह्यो हंस पुष्कर पैं तूटि। लेत्र यदुन सह सम्पति लूटि ॥ सात्युकि ताहि कालबश जानि। नहिं उत्तर दीन्हे अनुमानि ॥ रथ चढि शीघ्र कृष्ण पैं जाय। दीन्हे सब बिरतान्त सुनाय ॥ सुनि प्रभु साजि सैन चतुरङ्ग। गे पुष्कर पैं भरे उमङ्ग ॥ दश अक्षोहिणि सेना साजि। आए हंस डिम्भक तहँ भाजि ॥ शिव के द्वै गण

बीर महान। आए तासु सङ्ग बलवान ॥ अरु विचक्र दानवपति बीर। तथा हयको अतिरणधीर॥ दंभासुर सङ्कर नै औन। इन्द्र हि जीति बुद्धि बलभौन ॥ लरो विष्णुसोँ वर बाणेत। आयो सहस तीन अक्षौहित ॥ राक्षस बली हिडम्ब अमान। सो विचक्रको सखा समान ॥ सहस अठासी राक्षस भीर। सह सुहाय आयो रणधीर ॥ जरासन्ध नहि कियो सहाय। प्रभु प्रभावविद जानि अन्याय ॥ अरु युद्धार्थैं दोउ सैन। किए निवास आय तेहि रैन ॥ प्रातकृत्य करि करि लहि प्रात। करण लगे भिरि युद्ध प्रपात ॥ *********

॥*॥ दोहा ॥*॥

कुढ़ि कढ़ि भिरि उद्भट लगे लरन हो युद्ध। धीर धनुर्द्धर शर निकर हँकि हँकि जयलुद्ध ॥
भिरे गजस्थ गजस्थसोँ भिरे रथस्थ रथस्थ। भिरे हयस्थ हयस्थसोँ पैदर पैदर लस्थ ॥

॥*॥ सोरठा ॥*॥

चंड चंड शर छंडि बीर प्रचंड प्रचंड भिरि। खंड खंड तन खंडि करे उदंड उदंड घुमि ॥

॥*॥ भुजङ्गप्रयातछन्द ॥*॥

जुड बीर बांधे छुटे कोरि जूटैं। महामुद्गरो मारि हन्ती न चूटैं ॥ खरे खेलवारे गुलैं खड्ग टूट। खरे हांकि आड हने ते नछूटैं ॥ थमे धर्मवादी गहे सर्व ते सैं। रथीजे धनी सर्व शस्त्रास्त्रि जेत ॥ तजैं तोमरैं भिन्दिपालैं सुबानैं। हनै शक्ति भालैं त्रिशालैं अमानै ॥ दटै हांकि केते कटै हाँकि केते। अड़े हाँकि जेते खड़ैं हांकि तेते ॥ बडे बीर केते कटे शीश घूमैं। भिरे मल्ल भूरि सावन्य भूम ॥ गिरैं बाजितैं ते किते बीर जूझे। फरे पायसों पायरैंमो अरुझे ॥ मरैं स्वामि बाजी गज भीत भागे। इतैते उतैते फिरै भूरि भागे ॥ *********

॥*॥ दोहा ॥*॥

दानव बीर विचक्रसोँ भिरे कृष्ण यमकाज। भिरे हंससोँ राम प्रभु सात्युकि डिंभक सुधाज ॥
उग्रसेन बसुदेव ए भिरि हिडम्बसोँ क्रोधि। करत भए तहँ युद्ध वर शर समूह सोँ रोधि ॥

॥*॥ सोरठा ॥*॥

राक्षस दानव सर्व अरु यादव भिरि लरत भे। तिनरे बीर सग द्वन्द्व युद्ध घिरि करत भे ॥
भूत पिशाच खवीश जूथ योगिनीके जुरे। शोणित पिये हदोश डकारि डकारि खेल खुरी ॥

॥*॥ रोलाछन्द ॥*॥

जूझि कितने सुभट रणम दिव्य शुचि तन पाय। अपसरन सह चढि बिमाननि लखत ह निजकाय ॥ दुजे दर्शिके सुभट कितने लरत उनहूँ रोषि। अपसरन हित गहे मत्सर करि सु

युद्ध अतोषि ॥ हने कृष्ण विचक्रके उर बर निहन्मरि बान । कृष्णके तन हनत भो वज्र बाण दुःख अमान ॥ तीक्ष्ण बाण क्षुरप्रसों रथ छत्र ध्वज धनु तासु । काढि भारे कृष्ण ताके सूत अरु हय आसु ॥ कूदि रथसों हनत भो सो गदा गहि कै त्यागि । काटि दीन्हे बाणसों तेहि कृष्ण आनद पागि ॥ शिला मारत भयो सो तब दई प्रभु तेहि काटि । फेरि तेंड़ तरु हन्यो तेहि प्रभु काढि दीन्हे डाँटि ॥ कोपि परिघ अमोघ लै कर तब विचक्र प्रवीर । कहत भो इमि कृष्णसों अब खरो रञ्च सहि पीर ॥ असुर मुरके युद्धमें मम लखे बल हिं भुलाय ॥ फेरि आयो लरन ताको लहत शीघ्र सजाय ॥ भाखि इमि भो हनत सो तेहि काटि बीचहि विष्णु । काढि शरसों शीघ्र ताको किए महिगत जिष्णु ॥ बचे हे जो बीर ताके भगे ते भय पाय । जयति केशव सुमन बोले इन्द्र सह हर पाय ॥ हंससों अरु रामसों तिमि भयो सङ्गर घोर । हने हंसहि राम रामहि हंस बाण कठोर ॥ रामको ध्वज धनुष पथ बर काटि शरसों तीन । हते चारो बाजि सूत हि बाणसों बलभीन ॥ गदासों तब चूर्ण कान्हे तासु ध्वज रथ राम । मारि अश्वन हते सूतहि बार बर बलराम ॥ गदाविधिविद गदा सों ते लरे तब सक्रुद्ध । अमर नर सब भए बिसमित लखि अद्भुत युद्ध ॥ डिम्भक सात्यकि किए तिमि भिरि युद्ध परमप्रचण्ड । तजि परस्पर बाण अगनित गहे बर कोदण्ड ॥ एकशे दश धनुष काटि डिम्भकके सिनि धीर । खड्ग गहि तब डिम्भक धायो कहत बचन गँभीर ॥ ****

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

लखि सात्युकि भट खड्ग गहि रथतें उतरि सचाय । स्थान भेदते भे खरे ताके सनमुख जाय ॥
खड्ग युद्धके भेद जे बत्तिस विधिके पर्म्म । ते करि करि ते भे लरत करता दुस्तर कर्म्म ॥
उग्रसेन वसुदेव ए बृद्ध बली रणधीर । हने हिडम्ब हि बाण बज्र करता दुस्सह पीर ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

बली हिडम्ब अमान सहि तिनके बरबाण सब । मर्दन भये महान चतुरङ्गीदल यादवो ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

गजन उठाइ गजन कहँ मारत । भयो रथनसों रथन बिदारत ॥ हयके यूथ हयनसों मर्दित । करिभो करत सर्ब दल अर्दित ॥ अति यबसों बलि चलि ढिगहि लहि । भक्षत भयो मानुषनि गहि गहि ॥ मुखम प्रविशि नासिकाकी मङ्ग । कढे किते नर मारुतके सङ्ग ॥ फेरि वायु बस ह्वै ते प्रविशैं । कढै फेरि तिमि फिरि तिमि प्रविशैं ॥ खाइ असंख्य भटन इमि पापी । कुम्भकरण सम दुस्तर दापी ॥ उग्रसेन बसुदेव हि भक्षण । चलो पसारि बदन बर तत्क्षण ॥ ते लखि बज्र शर मुख सधि मारे । रुको न सो कल बल करि हारे ॥ तब प्रभुके दिखि चले पराइ । शीघ्र चलो हिडम्ब अदाई ॥ यह लखि कोपि राम सुखदाई । तुरित हंससों छाडि लराई ॥ जाइ हिडम्ब हि

ष्टिक भारे। भिरे हंससौं कृष्ण सुखारे ॥ सो राम हि तेहि राम प्रहारे। मूका वज्र सदृश बल भारे ॥ एहि विधि घरी द्वैकलौं लरि कै। मारे बैलकर तलबल भरि कै ॥ गिरो भूमिपैं मूरछित ह्वै कै। तब गहि तेहि बल फेंक्यो ज्वै कै ॥ जाय कोस युग पैं परि चेतो। फेरि न युद्ध करणसो हेतो॥ भागि जाय भागर तहं बन मैं। दुरो हिडम्ब भए भय मन मैं ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

इतने मैं संध्या भई लई अस्तगति सूर। युद्ध करणसौं भे नृपत्ति सिगरे भट बलपूर ॥
हंस कहत भो कृष्णसो करव युद्ध फिरि भोर। गोवर्धन गिरिके निकट सूरसुता की वोर ॥
महाराज तेहि द्योसमैं पुष्कर शरके तीर ॥ सहस सता सी गज्ज कठे लाखरथी रणधीर ॥
दनुज मनुज राक्षस प्रबल अरु बाजी सहदूश। तीसकोटि जूझे तहां ह्वै बिनु कर पग शीश॥
तेहि निशि पुष्कर पैं किए प्रभु सह सैन निवास। सैन सहित नृप हंस गे गोवर्धनके पास॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

प्रातकृत्य करि भोर सहित सैन तहं कृष्ण गे। गिरिके उत्तरवोर भिरत भए फिरि भट बली॥

॥ * ॥ मल्लिकाछन्द ॥ * ॥

तह उग्रसेन प्रदुम्न सात्युकि साम्ब सारण बर बली। बसुदेव बिपृथु कङ्क ऊधो अनाधृष्ट सुवाङ्क कली ॥ ए वीर दश भिरि हंस डिम्भकहि तकि शरण मारत भए। ते बाण इनके काटि दश दश सबकें बाण तन दए ॥ तब लगे ताके बाण यादव सर्व ए व्याकुल भए ॥ तजि समर सत्वर हांकि रथ श्रीकृष्ण प्रभुके ढिग गए॥ यह देखि केशव हंस भट बर सों सरस रिसि भरि भिरे। बलिराम डिम्भक प्रमत्तभट सों युद्ध विधि सिधि मधि थिरे॥ सुर सिद्ध ऋषि गन्धर्व सर्व बिमान चढि चढि मुद भरे। सो युद्ध देवासुर समर सम लखत हे नभ मधि खरे॥ जे भूत शिवके दोय तासु सहाय हित शङ्कर हतहे। ते शूल गहि गहि प्रगटि प्रभुसौं बचन कटु भे कहव हे ॥ प्रभु यकारि तिन्हहि घुमाइ बलसों दिशि उदीची प्रतित जे। ते भ्रमत नभपथ जाय शिवके निकट गिरि अति लचि लजे॥ यह देखि हंस प्रबीर प्रभुके भाल मधि बर शर हने। तब कोपि मनसे कृष्ण ताकहं हिए हनिदो शर घने॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

तब सात्युकि कहं सारथी करि केशव अनुमानि। तजे अस्त्र आग्नेय बर धनुष कानलौं टानि ॥
वारुणास्त्र तजि हंस तब दयो अस्त्रसौं बारि। दिव्य अस्त्र वायव्य फिरि मारे कृष्ण बिचारि॥
महेन्द्रास्त्र तजि हंस फिरि व्यर्थ करत भो ताहि। तब माहेश्वर अस्त्र प्रभु तजे ताहि प चाहि ॥
रौद्र अस्त्रसों हंस फिरि किए अस्त्र सो व्यर्थ। चारि अस्त्र तब साथ हीं मारे कृष्ण समर्थ ॥
राक्षस अरु पैशाच अरु गन्धर्वास्त्र ब्रह्मास्त्र। चारि अस्त्र तव तजत भो शीघ्र हंस बिद शास्त्र ॥

आसुर अरु अग्न्यास्त्र अरु याम्य अस्त्र कौवेर। आडे प्रभु क अस्त्रकहु मार, ए अस्त्र अजर औ।
अस्त्र ब्रह्म शिरनाम तब मारे कृष्ण रिसाय। रोक्यो ताको हंस फिरि, मोर अस्त्र चलाय ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

तब श्रीकृष्ण बिचारि गहे वैष्णव अस्त्र वर। जाते असुरण मारि राज्य दिए हैं इन्द्रकों ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

लखि सो अस्त्र हंस भय पागो। रथ तजि यमुनाकी दिशि भागो ॥ रथ तजि चले कृष्ण जय पूछे। यथा केशरी गजके पीछे ॥ जाय हंस भयभंरसो दूदो। कादर कालीदह मधि कूदो ॥ ताप तुरत कूदि रिसि भारे। लात तासु शिरमैं प्रभु मारे ॥ सो मरि गडो पङ्कमधि आई। अबलों फिरि न भयो लखाई ॥ प्रभु कढि आइ सुरथ पैं राजें। सैनिक तासु समर तजि भाजे ॥ बन्धु बन्धु करि डिम्भक दुखारो। धसो कालन्दीमधि धनु डारो ॥ बहु बिधि खोजि वाहिर आयो। रोवत भयो कृष्ण पैं धायो ॥ कहत भयो व्याकुल बिलखाई। रेरे गोप कहा मम भाई ॥ कहे कृष्ण यमुनासों जाई। बूझो देहैं जाहि बताई ॥ यमुनातीर जाय फिरि रोवत। भो धसि इत उत वारि बिलोकत ॥ हाहा हंस हंस कहि जलसों। कहि उर शिर ताडत करतलसों ॥ निज करसों निज जीभि उखारी। तन तजि भयो निरय अधिकारी ॥ तिनके मरे कृष्ण मुद लीन्हे। बास गोवर्धन गिरिप कीन्हे ॥ सुनि तहँ नन्द जशोमति आए। गोपन सहित मोदसो छाए ॥ दधि घृत माखन दूध सोहाए। अरु शुचि भोज्य पदारथ ल्याए ॥ *✿*✿*✿*✿*✿*✿*✿*✿

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

तिन्हे देखि प्रभु उठि तुरित मिलि सप्रेम हरषाय। बार बार बूझे कुशल निज समीप बैठाय ॥
गोधन गोपी गोप जे युवा वृद्ध अरु बाल। पृथक पृथक सबको कुशल बूझे त्रिभुवन पाल ॥
पुर अरु बन तरु कुञ्जके पृथक पृथक लै नाम। बूझे जशुदा नन्दसों कृष्ण कृपाके धाम ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

सुनि प्रभुके ए बैन नन्द जशोमति दोन है। भरैं बारिसों नैन कहु बचन करुणामयेन ॥

॥ * ॥ तोमरछन्द ॥ * ॥

इत कुशल हैं सब ठौर। तव कृपातैं शिरमौर ॥ दुख दु सहु इतनो भूरि। तुम बसे जो अति दूरि ॥ मम सर्व सुखहै व्यर्थ। बिनु लखे तुमहिं समर्थ ॥ यह सुनि तिन्हे समुझाय। प्रभु बिदा करि गहि जाय ॥ चलि गए पुष्करतीर। जहँ लसत बञ्जुल भीर ॥ जे लसत अति तपतोम। जिमि उदित दिनकर सोम ॥ बल अतुल दुरवस बेश। बढि लसत शुचि नखकेश ॥ नहि बन्य बल कल धाम। रबि परणको सुअवास ॥ बसि ध्याय प्रभुहि स्वछन्द। जे लहे परमानन्द ॥ सबँ उभहि

वखि ते पूजि। बैठाय अस्तुति कूजि॥ करि करि उचित सतकार। सुख लहे अपर अपार ॥ नव विश द्यौ सह सैन। गे स्वपुर आनँद ऐन ॥ तहँ जाय सह परिवार। भे करत विशद विहार ॥ प्रभु विश्व योनि सनेह। गहि आय मानुष देह ॥ इमि करैं कौतुक रङ्ग। हित जननिके सउमङ्ग ॥ एहि पढे ते नर धन्य। नहि तिन्हि सम कोउ अन्य ॥ *~*~*~*~*~*~*~*~*

॥ ॥ दोहा ॥ ॥

इत पांव ते परमपद उत पद परम प्रकर्ष। सुने गुणे जे प्रभु चरित ध्यावे प्रभु हि सहर्ष ॥

श्रीमत्काशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीवन्दीजनकाशीवासिगोकुलनाथकवीश्वरात्मजेन गोपीनाथकविना विरचिते भाषायां भारतान्तर्गते हरिवंशदर्पणे हंसडिम्भकोपाख्यानो नाम ऊणचतारिंशोध्यायः ॥ *~*~*~*~*~*~*~*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

जनमेजय भूपति कहे अब कहि मै मुनि पर्म। विधि भारतके सुननकी अरु स्वाभाविक धर्म ॥

॥ * ॥ वैसम्पायनउवाच ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

विश्वसृज भगवानको है जितो परम प्रबन्ध। भारत रचि मुनि कियो तितनो एकने शुचि सन्ध ॥ भारत पढि सुनि गुणि सविधि नर होहि सुमन समर्थ। कह्यो यह मुनि व्यासको यह होइ कबहुँ न व्यर्थ ॥ परम पटु धर्मज्ञ धर्मी सतपथी सरवज्ञ। सत्यवादी शुचि अक्रोधी भागवत शास्त्रज्ञ ॥ धीर सुबुधि सुसील द्विजसों सुनै सनियम भार्थ। सुनै जो सो गुणै मन मैं जानि सकल यथार्थ ॥ धेनु सुवरण अन्न पट घट पर्व पर्वण दान। व्यास आदिक द्विज बरनकहँ देइ करि सनमान ॥ पर्व पर्वणि भार पुस्तक पर्व पर्व लिखाय। देइ व्यास हि मुदित करि सह और द्रव्य सचाय ॥ पर्व पर्वणि विप्र भोजन जथा शक्ति कराय। रहि संसञम अर्थ सागर भारत सब सुनि जाय ॥ पार लहि हरिवंशको नर भाग्यवान प्रवीन। करै उत्सव परम करि कै प्रेम पूरण पीन ॥ पूजि पुस्तक करै अर्पण हेम मणि पट आदि। वस्तु उत्तम शक्ति मितियुत भक्ति श्रुति अहलादि ॥ पूजि व्यासहि सुमनके सम देइ जितने देय। अधिक दीन्हे अधिक उत्तम अधिक फल अप्रमेय ॥ भीष्म द्रोणादि कनको करि स्राद्ध आनद पूरि। सहस विप्रन देइ भोजन देइ दक्षिणा भूरि ॥ एकलौं दशवारलौं सुनि भारत सुनऊ नरेश। विष्णुको सालोक्य क्रमसो लहै तौन सुभेश ॥ विविधि विधिके मणिन मै शुचिमान पै आसीन। सुमन सम सँग सुमन गणके रमै सुषमा पीन ॥ भूप भारत श्रवणको है पुण्य अकथ अनन्त। धन्य जे नर सुनत है अति धन्य जे नर सन्त ॥ धन्य सो घर होत है जहँ भारत कथन

अनूप। धन्य सो घर रहत है जहँ भांति पुस्तक रूप॥ धन्य तुम जो किए हमसों प्रश्न यह सुख दानि। धन्य तुम हम भए कथि एहि भांति आनन्द आनि॥ *✱*✱*✱*✱*✱*✱*

॥*॥ दोहा ॥*॥

फिरि भूपति मुनिसों कहे अब कहि कै सविलास। कामादिक दैत्यनन को ज्ञान प्रभुसों नास॥

॥*॥ चौपाई ॥*॥

कहे सुमुनि सुन भूपति ज्ञानी। त्रिपुर अवस्था त्रय अभिमानी॥ विश्व तैजस प्राज्ञ बखाने। माया धातुमए छबिसाने॥ बने कारण काश विशद पैं। घन सम अति विचित्र ता हृदपैं॥ पिण्ड अन्नमय वर प्राकारा। युत गन्धर्व नगर बेवहारा॥ प्रथम करो रथ खण्ड अनेगा। अति उन्नत अरु अकथ असेगा॥ काम क्रोध मत्सर मद लोभा। मोह सर्व दैत्य अछोभा॥ इन्द्री है सुख दुख परवारे। तासु अथक वाहन बल भारे॥ आलम्बन उद्दीपन जेते। विषय तासु आयुध सब तेते॥ कुमत कठोर कवच सब धारे। व्यसन गर्व मदसों मतवारे॥ योग कर्म्म सुर अरु पितृनके। भाग मयख रोके बर पर्वके॥ तब ह्वै जीव इन्द्र अति व्याकुल। सुर समादि सह भयसों आकुल॥ गुरु विरञ्चिके ढिग गे धाए। ह्वै आरत निज दशा सुनाए॥ ते करि क्रिया कहे समुझाई। ज्ञानधर्म्मसुकहँ ध्यावहु जाई॥ तिनसों बध्य दैत ए सिगरे। भए प्रचण्ड जिते मति बिगरे॥ सुनि सुरपति सुरगण सह मोरे। आश्रम महि पैं आइ विनोदे॥ किए तपस्या वर व्रत धरि कै। तृष्णा तियहि वियोगिनि करि कै॥ *✱*

॥*॥ दोहा ॥*॥

हृदाकाश कैलाशमें विहरि ईश्वर हि ध्याय। शङ्कर ज्ञान अमन्दको लै कै सङ्ग सहाय॥
नभ उपासना मार्ग पर लरत भए सब आय। असुर इन्द कामादिसों सुमन समादि सचाय॥

॥*॥ रोलाछन्द ॥*॥

प्रणव धनु शर तत्व चिन्तन सो सु शङ्कर ज्ञान। कामादिक असुरगण कहँ किए मृतक समान॥ लिङ्ग देह सुभूमि मधि रहि वासनामय सब। काम आदिक दैतगण तजि दर्प गुरुता पर्व॥ पाय जय ऐश्वर्य्य अदभुत जीव इन्द्र विनोदि। गर्बि सालस भए सोई सपा लहि कै मोदि॥ प्रबल ह्वै तेहि क्षणहि आलस रजनिचर ते दैत। लगे मारण विषय आदिक शरण बर बाणैत॥ दशा यह लहि गए फिरि ते ज्ञान शिवके सर्ण। किए शिव तब तेज क्रोध हि भिरि प्रकर्ष सुवर्ण॥ श्रवण मननहि सुनि ए ध्यासन वर त्रिशूल उदण्ड। वाहि असुरण किए मुर्छित सुरन परम प्रचण्ड। भूलि जय लहि जीव सुरपति स्थूल तनु दन ठौर। त्यागि सूक्षम देह रथ चढि चलो ऊर्ध सगौर॥ तहां अमर सिद्ध अरु गन्धर्व ताकहँ देखि। किए अस्तुति वासु सो सुनि भे सगर्व विसेखि॥ प्रबल ह्वै ज्यों असुर गण ते युद्ध करि फिरि तत्र। घेरि ल्याए फेरि ताकहँ पूर्व है जिमि

क्श॥ किये तहँ गुरु गुरु शुचि खलतयन शुभ उपदेश।फेरि त्यों चैतन्य ता विधि लखे लक्ष सुरेश॥ सर्व साधन शस्त्र गहि सामादि सुरन समेत। युद्ध कोन्हे दोस बश तहँ जीवे इन्द्र सचेत॥ ज्ञान शिव नव धारि कै अद्वैत मत सिधान्त। बाण धनुष अमोघ तीक्षण विष्णुमैं युत शान्त॥ धर्म्म अर्वी सुरथ पैँ आसीन ह्वै भरि भाज। मारि कै ब्रह्मास्त्र क्रमसों किए भस्म सराज॥ स्थूल आयत सूक्ष्म स्वम सुमहत्तत्व सुशुभ। देह चय ऐ त्रिपुर तिनको भाव सों करि लुप्त॥ तुर्य्य ब्रह्मानन्द मै मै भूति सुर पुर पर्म। मध्य विहरत भए योगी इन्द्र करि शुचि धर्म्म॥ धर्म्मसौं सब लहत सब पद धर्म्म दायक श्रेय। धर्म्म निति करतव्य सब क्षण धर्म्म निति अनुमेय॥ *****

॥*॥ दोहा ॥*॥

जीव इन्द्र इमि लहत नृप इम असुरनसों जीति। कै कीन्हे सियरामके पदपङ्कज पैँ प्रीति॥

स्वस्ति श्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीवन्दीजनकाशी वासिगोकुलनाथात्मजेन गोपीनाथकविना विरचिते भाषायां चत्वारिंशदध्याये भारतान्तर्गतहरि वंशदर्पणः समाप्तिमगमत्॥ शुभमस्तु शकाब्दाः १७५१ सम्वत् १८८६ सौरश्रावणस्य २१ दिवसे हरिवंशदर्पणस्य मुद्रा समाप्ता॥ * * * * * * * * * * * * * * * * *॥

